राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों

की

ग्रंथ-सूची

(पंचम भाग)

(राजस्थान के विभिन्न नगरों एवं ग्रामों के ४५ शास्त्र भण्डारों में संग्रहीत २० हजार से भी अधिक पाण्डुलिपियों का परिचयात्मक विवरण)

आशीर्वाद :

मुनि प्रवर १०८ श्री विद्यानन्दजी महाराज

पुरोवाक् :

डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी

सम्पादक :

डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल
एम. ए., पी.-एच. डी., शास्त्री

पं० अनूपचन्द न्यायतीर्थ
साहित्यरत्न

प्रकाशक :

सोहनलाल सोगाणी

मन्त्री :

प्रबन्ध कारिणी कमेटी

श्री दि० जैन अ० क्षेत्र श्रीमहावीरजी

विषय–सूची

१ शास्त्र भण्डारों की नामावली
२ प्रकाशकीय — सोहनलाल सोगाणी
३ आशीर्वाद — मुनि श्री विद्यानन्द जी महाराज
४ पुरोवाक् डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी
५ आभार एवं प्रस्तावना आदि

	ग्रन्थ संख्या	पत्र संख्या
६ आगम सिद्धान्त एवं चर्चा	८६७	१–८६
७ धर्म एवं आचार शास्त्र	६२२	९०–१७६
८ अध्यात्म, चिंतन एवं योगशास्त्र	७२३	१८०–२४७
९ न्याय एवं दर्शन शास्त्र	१७५	२४८–२६३
१० पुराण साहित्य	४८७	२६४–३१३
११ काव्य एवं चरित	१००६	३१४–४२०
१२ कथा साहित्य	७००	४२१–५०६
१३ व्याकरण शास्त्र	२२४	५१०–५३०
१४ कोश	१०५	५३१–५४०
१५ ज्योतिष, शकुन एवं निमित्त शास्त्र	२५२	५४१–५७२
१६ आयुर्वेद	२०४	५७३–५९२
१७ अलंकार एवं छन्द शास्त्र	६८	५९३–६०२
१८ नाटक एवं संगीत	६०	६०३–६०९
१९ लोक विज्ञान	९६	६१०–६१९
२० मंत्र शास्त्र	४७	६२०–६२५
२१ शृंगार एवं कामशास्त्र	३९	६२६–६२९
२२ रास फागु वेलि	१३२	६३०–६५०
२३ इतिहास	५३	६५१–६५७
२४ विलास एवं संग्रह कृतियां	१११	६५८–६८०
२५ नीति एवं सुभाषित	२७३	६८१–७०८
२६ स्तोत्र साहित्य	६८०	७०९–७७६
२७ पूजा एवं विधान साहित्य	१६७५	७७७–९३९
२८ गुटका संग्रह	१२३५	९४०–११७२
२९ अवशिष्ट साहित्य	२९९	११७३–१२०८

३० ग्रंथानुक्रमणिका १२०६-१३००
३१ ग्रंथ एवं ग्रंथकार १३०१-१३६४
३२ शासकों की नामावलि १३६५-१३६७
३३ ग्राम एवं नगर नामावलि १३६८-१३८०
३४ शुद्धाशुद्धि विवरण १३८१-१३८६

शास्त्र भण्डारों की नामावलि

१	शास्त्र भण्डार	भ० दि० जैन मन्दिर, (बड़ा घड़ा) अजमेर
२	,,	दि० जैन खण्डेलवाल पंचायती मन्दिर, अलवर
३	,,	दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर, अलवर
४	,,	दि० जैन मन्दिर, दूनी
५	,,	दि० जैन बघेरवाल मन्दिर, टोंक
६	,,	दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, बूंदी
७	,,	दि० जैन मन्दिर आदिनाथ, बूंदी
८	,,	दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी
९	,,	दि० जैन मन्दिर महावीर स्वामी, बूंदी
१०	,,	दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ स्वामी, बूंदी
११	,,	दि० जैन मन्दिर बघेरवाल, नैणवा
१२	,,	दि० जैन मन्दिर तेरापंथी, नैणवा
१३	,,	दि० जैन मन्दिर अग्रवाल, नैणवा
१४	,,	दि० जैन मन्दिर, दबलाना
१५	,,	दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, इन्दरगढ़
१६	,,	दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, फतेहपुर (शेखावाटी)
१७	,,	दि० जैन पंचायती मन्दिर, भरतपुर
१८	,,	दि० जैन मन्दिर फौजूराम, भरतपुर
१९	,,	दि० जैन पंचायती मन्दिर, नयी डीग
२०	,,	दि० जैन बड़ो पंचायती मन्दिर, नयी डीग
२१	,,	दि० जैन मन्दिर, पुरानी डीग
२२	,,	दि० जैन खण्डेलवाल पंचायती मन्दिर, कामां
२३	,,	दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, कामां
२४	,,	दि० जैन नेमिनाथ मन्दिर, टोडारायसिंह
२५	,,	दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर, टोडारायसिंह
२६	,,	दि० जैन मन्दिर, राजमहल
२७	,,	दि० जैन मन्दिर, बोरसली कोटा
२८	,,	दि० जैन पंचायती मन्दिर, बयाना
२९	,,	दि० जैन छोटा मन्दिर, बयाना
३०	,,	दि० जैन मन्दिर, वैर
३१	,,	दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर

३२	शास्त्र भण्डार	दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर, उदयपुर
३३	,,	दि० जैन संभवनाथ मन्दिर, उदयपुर
३४	,,	दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर, बसवा
३५	,,	दि० जैन पंचायती मन्दिर, बसवा
३६	,,	दि० जैन मन्दिर कोटडियोंका, डूंगरपुर
३७	,,	दि० जैन मन्दिर, भादवा
३८	,,	दि० जैन मन्दिर सोधरियान, मालपुरा
३९	,,	दि० जैन आदिनाथ स्वामी, मालपुरा
४०	,,	दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी, मालपुरा
४१	,,	दि० जैन पंचायती मन्दिर, करोली
४२	,,	दि० जैन मन्दिर सोगाणीयों का, करोली
४३	,,	दि० जैन बीसपंथी मन्दिर, दौसा
४४	,,	दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर, दौसा
४५	,,	दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर

प्रकाशकीय

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी की प्रबन्धकारिणी कमेटी की ओर से गत २४ वर्षों से साहित्य अनुसंधान का कार्य हो रहा है। सन् १९६१ में राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की ग्रंथ सूची का चतुर्थ भाग प्रकाशित हुआ था। तत्पश्चात् जिणदत्त चरित, राजस्थान के जैन सन्त-व्यक्तित्व एवं कृतित्व, हिन्दी पद संग्रह, जैन ग्रंथ भंडार्स इन राजस्थान, जैन शोध और समीक्षा आदि रिसर्च से सम्बन्धित पुस्तकों का प्रकाशन हुआ है। जैन साहित्य के शोधार्थियों के लिये विद्वानों की दृष्टि में ये सभी पुस्तकें महत्वपूर्ण सिद्ध हुई हैं। शास्त्र भण्डारों की ग्रंथ सूची पंचम भाग के प्रकाशनार्थ विद्वानों के आग्रह को ध्यान में रखते हुये और भगवान महावीर की २५०० वीं निर्वाण शताब्दि समारोह हेतु गठित अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन समिति द्वारा साहू शान्तिप्रसाद जी की अध्यक्षता में देहली अधिवेशन में राजस्थान के जैन ग्रन्थागारों की सूचियां प्रकाशन के कार्य को वीर निर्वाण संवत् २५०० तक पूर्ण करने हेतु पारित प्रस्ताव का भी ध्यान रखते हुये क्षेत्र कमेटी ने ग्रंथ सूची के पंचम भाग के प्रकाशन के कार्य को और गति दी और मुझे यह लिखते हुये प्रसन्नता है कि महावीर क्षेत्र कमेटी ने दिगम्बर जैन समिति के प्रस्ताव को क्रियान्वित करने में सर्व प्रथम पहल की है।

ग्रंथ सूची के इस पंचम भाग में राजस्थान के विभिन्न नगरों व कस्बों में स्थित ४५ शास्त्र भण्डारों के संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा के ग्रंथों का विवरण दिया गया है। यदि गुटकों में संग्रहीत पाण्डुलिपियों की संख्या को जोड़ा जाय तो इस सूची में बीस हजार से अधिक ग्रंथों का विवरण प्राप्त होगा। समूचे साहित्यिक जगत् में ऐसी विशाल ग्रन्थ सूची का प्रकाशन सम्भवतःप्रथम घटना है। ये हस्तलिखित ग्रंथ राजस्थान के प्रमुख नगर जयपुर, अजमेर, उदयपुर, डूंगरपुर, कोटा, बूंदी, अलवर, भरतपुर, एवं प्रमुख कस्बे टोडारायसिंह, मालपुरा, नैणवा, इन्द्रगढ, बयाना, वैर, दबलाना, फतेहपुर, दूनी राजमहल, बसवा, भादवा, दौसा आदि के दिगम्बर जैन मन्दिरों में स्थापित शास्त्र भण्डारों में संग्रहीत हैं। इनकी ग्रंथ सूची बनाने का कार्य हमारे साहित्य शोध विभाग के विद्वान् डा० कस्तूरचंद जी कासलीवाल एवं अनूपचन्द जी न्यायतीर्थ ने स्वयं स्थान स्थान पर जाकर अवलोकन कर पूर्ण किया है। यह उनकी लगन एवं साहित्यिक रुचि का सुफल है। यह सूची साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। ग्रंथ सूची के अन्त में दी गई अनुक्रमणिकाएं प्राचीन साहित्य पर कार्य करने वाले शोधार्थियों के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण सिद्ध होंगी। शोधार्थियों एवं विद्वानों को कितनी ही अज्ञात एवं अनुपलब्ध ग्रंथों का प्रथम बार परिचय प्राप्त होगा तथा भाषा के इतिहास में कितनी ही लुप्त कड़ियां और जुड़ सकेंगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

भगवान महावीर के जीवन पर निबद्ध नवलराम कवि का "वद्धमान पुराण" कामा के शास्त्र भंडार में उपलब्ध हुआ है वह १७ वीं शताब्दी की कृति है तथा भगवान महावीर के जीवन से सम्बन्धित हिन्दी कृतियों में अत्यधिक प्राचीन है। श्रीमहावीर जी क्षेत्र की ओर से भगवान महावीर के जीवन से सम्बन्धित प्रमुख हिन्दी काव्यों के शीघ्र प्रकाशन की योजना विचाराधीन है।

अभी राजस्थान में नागौर, कुचामन, प्रतापगढ, सागवाड़ा, आदि स्थानों के महत्वपूर्ण ग्रंथ भण्डारों की सूची का कार्य अवशिष्ट है। इनकी सूची दो भागों में समाप्त हो जायगी, ऐसी आशा है। इस प्रकार राजस्थान के महत्व भण्डारों की ग्रंथ सूची के ७ भाग प्रकाशित हो जाने के पश्चात् ग्रंथ सूची प्रकाशन की हमारी योजना भगवान महावीर की २५०० वीं निर्वाण शताब्दी तक पूर्ण हो सकेगी।

प्रबन्धकारिणी कमेटी उन विभिन्न नगरों एवं कस्बों के शास्त्र भण्डारों के व्यवस्थापकों की आभारी है जिन्होंने विद्वानों को ग्रंथ सूची बनाने के कार्य में पूर्ण सहयोग प्रदान किया है। आशा है भविष्य में भी साहित्य सेवा के पुनीत कार्य में उनका सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

क्षेत्र कमेटी पूज्य १०८ मुनिवर श्री विद्यानन्दजी महाराज की भी आभारी है जिन्होंने इस सूची में प्रकाशनार्थ अपना पुनीत आशीर्वाद प्रदान करने की महती कृपा की है। साहित्योद्धार के कार्य में मुनिश्री द्वारा हमें बराबर प्रेरणा मिलती रहती है। हम साहित्य के मूर्द्धन्य विद्वान् डा० हजारीप्रसादजी द्विवेदी के भी आभारी हैं जिन्होंने इसका पुरोवाक् लिखने की कृपा की है।

महावीर भवन
जयपुर

सोहनलाल सोगाणी
मंत्री

आशीर्वाद

धर्म, जाति और समाज की स्थिति में जहां संस्कृति मुख्य कारण है, वहां इनके संवर्धन और संरक्षण में साहित्य का भी महत्वपूर्ण स्थान है। संस्कृति एवं साहित्य दोनों जीवन और प्राणवायु सदृश परस्परापेक्षी हैं। एक के बिना दूसरे की स्थिति संभव नहीं। अतः दोनों का संरक्षण आवश्यक है।

आदि युगपुरुष तीर्थंकर वृषभदेव से प्रवर्तित दिव्य देशना ने तीर्थंकर वर्द्धमान पर्यन्त और अद्यावधि जो स्थिरता धारण की, वह साहित्य की ही देन है। यदि आज के युग में प्राचीन साहित्य हमारे बीच न होता तो हमारा अस्तित्व ही समाप्त प्राय था। भारत के प्रमुख शास्त्रागारों में आज भी विपुल साहित्य सुरक्षित है। न जाने, किन किन महापुरुषों, धर्मप्रेमियों ने इस साहित्य की कैसे कैसे प्रयत्नों से रक्षा की। पिछले समयों में बड़े बड़े उतार चढ़ाव आये। मुगल साम्राज्य और विद्वेषियों के कब कब कितने कितने धर्मद्रोही झंझावात चले, इसका तो अतीत इतिहास साक्षी है। पर हां यह अवश्य है कि उस काल में यदि संस्कृति, साहित्य और धर्म के प्रेमी न होते तो आज के भण्डारों में विपुल साहित्य सर्वथा दुर्लभ होता। संतोष है कि ऐसे साहित्य पर विद्वानों का ध्यान गया और अब धीरे धीरे तीव्रगति से उसके उद्धार का कार्य जनता के समक्ष आने लगा, यह सुखद प्रसंग है।

राजस्थान के शास्त्र भण्डारों की ग्रंथ सूची का पंचम भाग हमारे समक्ष है। इसके पूर्व चार भागों में लगभग पच्चीस हजार ग्रंथों की सूची प्रकाशित हो चुकी है। इस भाग में भी लगभग बीस हजार ग्रंथों की नामावली है। प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत, राजस्थानी और हिन्दी सभी भाषाओं में लगभग एक हजार लेखकों, आचार्यों, मुनियों और विद्वानों की रचनायें हैं। इन रचनाओं में दोहा, चौपई, रास, फागु, वेलि, सतसई, बावनी, शतक आदि के माध्यम से तत्व, आचार विचार एवं कथा संबंधी विविध ग्रंथ हैं।

श्री डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल समाज के जाने माने शोध विद्वान् हैं। भंडारों के शोध कार्य पर इन्हें पी--एच. डी. भी प्राप्त है। बृहत्सूची के उक्त संकलन, संपादन में इन्हें लगभग बीस वर्ष लग चुके हैं और अभी कार्य शेष है। इस प्रसंग में डा० साहब एवं उनके सहयोगियों को पैदल, ऊंट गाड़ी व ऊंटों पर सैकड़ों मीलों की यात्रा करनी पड़ी है, उन्होंने अथक परिश्रम किया है। यह ऐसा कार्य है जो परम आवश्यक था और किसी का इस पर कार्य रूप में ध्यान नहीं गया। डा० साहब के इस कार्य से वर्तमान एवं भावी पीढ़ी के शोधार्थियों को पूरा पूरा लाभ मिलेगा ऐसा हमारा विश्वास है। साथ ही तीर्थंकर महावीर की २५०० वी निर्वाण शती के प्रसंग में इस ग्रंथ का उपयोग और भी बढ जाता है। ग्रंथ भण्डारों में उपलब्ध तीर्थंकर महावीर सम्बन्धी अनेक ग्रंथों का उल्लेख भी इस सूची में है, जिनके आधार पर तीर्थंकर महावीर का प्रामाणिक जीवन प्रकाश में लाया जा सकता है। और भी अनेक ग्रंथ प्रकाशित किये जा सकते हैं। समाज को इधर ध्यान देना उचित है। डा० साहब का प्रयास सर्वथा उपयोगी एवं अनुकरणीय है।

प्रस्तुत प्रकाशन के महत्वपूर्ण कार्य से श्रीमहावीरजी अतिशय क्षेत्र कमेटी, उसके तत्कालीन मंत्रियों श्री ज्ञानचन्द्र खिन्दूका व श्री सोहनलाल सोगाणी के साहित्योद्धार प्रेम की झलक सहज ही मिल जाती है। अन्य तीर्थक्षेत्रों के प्रबन्धकों को इनका अनुकरण कर साहित्योद्धार में रुचि लेना सर्वथा उपयोगी है। ग्रंथ संपादन के कार्य में श्री पं० अनूपचंद न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न से० डा० साहब को पूरा पूरा सहयोग मिला है। हमारी भावना है कि समाज और देश इस अमूल्य सूची का अधिकाधिक लाभ ले सके।

विद्यानन्द मुनि

उज्जैन
३०-१२-७१

पुरोवाक्

मुझे राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की इस पांचवीं ग्रंथ सूची को देख कर बड़ी प्रसन्नता हुई। डा० कासलीवालजी ने विभिन्न नगरो एवं ग्रामों के ४५ शास्त्र भण्डारों का आलोडन करके इस ग्रंथ सूची को तैयार किया है। इसमें लगभग बीस हजार पाण्डुलिपियों का विवरण दिया हुआ है। इस ग्रंथ सूची में कुछ ऐसी महत्वपूर्ण पुस्तकें भी हैं जिनका अभी तक प्रकाशन नहीं हुआ है। मुझे यह कहने में जरा भी संकोच नहीं है कि डा० कस्तूरचन्द जी एवं पं० अनूपचन्द जी ने इस ग्रंथ सूची का प्रकाशन करके सारी शोध कर्त्ताओं और शास्त्र जिज्ञासुओं के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण ग्रंथ दिया है। इस प्रकार की ग्रंथ सूचियों में भिन्न भिन्न स्थानों में सुरक्षित और अज्ञात तथा अल्पज्ञात पुस्तकों का परिचय मिलता है और शोध कर्त्ता को अपने अभीष्ट मार्ग की सूचना में सहायता मिलती है। इसके पूर्व भी डा० कासलीवालजी ने ग्रंथ सूचियों का प्रकाशन किया है। वे इस क्षेत्र में चुपचाप महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। मेरा विश्वास है कि विद्वत् समाज उनके प्रयत्नों का पूरा लाभ उठाएगा।

यद्यपि इन ग्रंथों की सूची जैन भण्डारों से संग्रह की गई तथापि यह नहीं समझना चाहिए कि इसमें केवल जैन धर्म से संबद्ध ग्रंथ ही है। ऐसे बहुत से ग्रंथ हैं जो कि जैन धर्म क्षेत्र के बाहर भी पड़ते हैं और कई ग्रंथ हिन्दी साहित्य के शोध कर्त्ताओं के लिए बहुत उपयोगी जान पड़ते हैं। इस महत्वपूर्ण ग्रंथ सूची के प्रकाशन के लिए श्री महावीर तीर्थ क्षेत्र कमेटी के मन्त्री श्री सोहनलाल जी सोगाणी तथा डा० कस्तूरचन्द जी और पं० अनूपचन्द जी न्यायतीर्थ साहित्य और विद्या प्रेमियों के हार्दिक धन्यवाद के अधिकारी हैं।

हजारी प्रसाद द्विवेदी

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी

ग्रंथ सूची-एक झलक

क्रम संख्या	नाम		संख्या
१	ग्रंथ संख्या	....	५०५०
२	पाण्डुलिपि संख्या	....	२०,०००
३	ग्रंथकार	....	१०८०
४	ग्राम एवं नगर	....	६२०
५	शासकों की संख्या	....	१३५
६	अज्ञात एवं अप्रकाशित ग्रंथ विवरण	....	१००
७	ग्रंथ भण्डारों की संख्या	....	४५

आभार

हम सर्वप्रथम क्षेत्र की प्रबन्ध कारिणी कमेटी के सभी माननीय सदस्यों तथा विशेषतः निवर्तमान मंत्री श्रीज्ञानचन्द्र जी खिन्दूका एवं वर्तमान अध्यक्ष श्री मोहनलाल जी काला तथा मंत्री श्री सोहनलालजी सोगाणी के आभारी है जिन्होंने ग्रंथ सूची के इस भाग को प्रकाशित करवाकर साहित्य जगत् का महान् उपकार किया है। क्षेत्र कमेटी द्वारा साहित्य शोध एवं साहित्य प्रकाशन के क्षेत्र में जो महत्वपूर्ण कार्य किया गया है वह अत्यधिक प्रशंसनीय एवं श्लाघनीय है। आशा है भविष्य में साहित्य प्रकाशन के कार्य को और भी प्राथमिकता मिलेगी।

हम राजस्थान के उन सभी दि० जैन मन्दिरों के व्यवस्थापकों के आभारी हैं जिन्होंने अपने यहां स्थित शास्त्र भण्डारों की ग्रंथ सूची बनाने में हमें पूर्ण सहयोग दिया। वास्तव में यदि उनका सहयोग नहीं मिलता तो हम इस कार्य में प्रगति नहीं कर सकते थे। ऐसे व्यवस्थापक महानुभावों में निम्न लिखित सज्जनों के नाम विशेषतः उल्लेखनीय है—

डूंगरपुर—	स्व० श्री मोराचन्द जी गांधी
	स्व० श्री रत्नलालजी कोटडिया
	सुरजमलजी नन्दलालजी झंडू सर्राफ
फतेहपुर—	श्री बाबू गिरीलालजी जैन
अजमेर—	समस्त समाज दि० जैन मन्दिर बड़ाघडा (भट्टारक) अजमेर
कोटा—	श्री डा० नेमीचन्द जी
	श्री स्व० ज्ञानचन्द जी
नैणवा—	श्री बाबू जयकुमार जी वकील
बूंदी—	श्री सेठ मदनमोहन जी कासलीवाल
	श्री केशरीमल जी गंगवाल
दूनी—	श्री मदनलाल जी
मालपुरा—	श्री समीरमल जी छाबडा
टोडारायसिंह—	श्री मोहनलालजी जैन
	श्री रतनलाल जी जैन
भरतपुर—	श्री बा० शिखरचन्द जी गोधा
उदयपुर—	श्री सेठ पन्नालाल जी जैन
	श्री मोतीलाल जी मींडा
बयाना—	श्री रोशनलाल जी ठेकेदार
जयपुर—	श्री मुंशी मैंदीलाल जी साह

इस अवसर पर स्व० गुरुवर्य पं० चैनसुखदास जी सा० न्यायतीर्थ के चरणों में सादर श्रद्धाञ्जलि अर्पित है जिनकी सतत प्रेरणा से ही राजस्थान के इन शास्त्र भण्डारों की ग्रंथ सूची का कार्य किया जा सका। हम हमारे सहयोगी स्व० सुमनचन्द जी जैन की सेवाओं को भी नहीं भुला सकते जिन्होंने हमारे साथ रह कर शास्त्र भण्डारों की ग्रंथ सूची बनाने में हमें पूरा सहयोग दिया था। उनके आकस्मिक स्वर्गवास से साहित्यिक कार्यों में हमें काफी क्षति पहुंची है। हम उदीयमान शोधार्थी श्री प्रेमचंद रांवका के भी आभारी हैं जिन्होंने ग्रंथ सूची की अनुक्रमणिकायें तैयार करने में पूरा सहयोग दिया है।

हिन्दी के मूर्धन्य विद्वान् डा० हजारी प्रसाद जी द्विवेदी के हम अत्यधिक आभारी हैं जिन्होंने हमारे निवेदन पर ग्रंथ सूची पर पुरोवाक् लिखने की महती कृपा की है। जैन साहित्य की ओर आपकी विशेष रुचि रही है और हमें आशा है कि आपकी प्रेरणा से हिन्दी के इतिहास में जैन विद्वानों की कृतियों को उचित स्थान प्राप्त होगा।

राष्ट्रसंत मुनिप्रवर श्री विद्यानंदजी महाराज का हम किन शब्दों में आभार प्रकट करें। मुनि श्री का आशीर्वाद ही हमारी साहित्यिक साधना का संबल है।

१-१-७२

कस्तूरचन्द कासलीवाल
अनूपचन्द न्यायतीर्थ

प्रस्तावना

राजस्थान एक विशाल प्रदेश है। इसकी यह विशालता केवल क्षेत्रफल की दृष्टि से ही नहीं है किन्तु साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से भी राजस्थान की गणना सर्वोपरि है। जिस प्रकार यहां के वीर शासकों एवं योद्धाओं ने अपने बहादुरी के कार्यों से देश के इतिहास को नयी दिशा प्रदान करने में महत्वपूर्ण योग दिया है उसी प्रकार यहां के साहित्य सेवी समूचे भारत का गौरवमय वातावरण बनाने में सक्षम रहे हैं। यहां की संस्कृति भारत की आत्मा है जो अहिंसा, सहअस्तित्व एवं समन्वय की भावना से ओतप्रोत है। यही कारण है कि इस प्रदेश में युद्ध के समय में भी शांति रही और सभी वर्ग भारतीय संस्कृति के विकास में अपना अपना योग देते रहे। भारतीय साहित्य के विकास में, उसकी सुरक्षा एवं प्रचार प्रसार में राजस्थानवासियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। संस्कृत भाषा के साथ-साथ यहां के निवासियों ने प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी एवं गुजराती के विकास में भी सर्वाधिक योग दिया। राजस्थानी यहां की जन भाषा रही और उसके माध्यम से हिन्दी का खूब विकास हुआ। इसीलिये हिन्दी के प्राचीनतम कवियों की कृतियां यहीं के ग्रंथागारों में उपलब्ध होती हैं। यही स्थिति अन्य भाषाओं के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है।

राजस्थान के शास्त्र भण्डारों का यदि मूल्यांकन किया जावे तो हमारे पूर्वजों की बुद्धिमत्ता एवं उनके साहित्यिक प्रेम की जितनी भी प्रशंसा की जावे वही कम रहेगी। उन्होंने समय की गति को पहिचाना, साहित्य निर्माण के साथ साथ उसकी सुरक्षा की ओर भी ध्यान दिया और धीरे-धीरे लाखों की संख्या में पाण्डुलिपियों का संग्रह कर लिया। मुसलिम शासन काल में जिस प्रकार इन्होंने साहित्यिक धरोहर को अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय समझ कर सुरक्षित रखा वह आज एक कहानी बन गयी है। यहां के शासक एवं जनता दोनों ने ही मिल कर अथक प्रयासों से साहित्य की अमूल्य निधि को नष्ट होने से बचा लिया। इसलिये यहां के शासकों ने जहां राज्य स्तर पर ग्रंथ संग्रहालयों एवं पोथीखानों की स्थापना की, वहां यहां की जनता ने अपने-अपने मन्दिरों एवं निवास स्थानों पर भी पाण्डुलिपियों का अपूर्व संग्रह किया। बीकानेर की अनूप संस्कृत लायब्रेरी एवं जयपुर का पोथीखाना जिस प्रकार प्राचीन पाण्डुलिपियों के संग्रह के लिये विश्वविख्यात हैं उसी प्रकार नागौर, जैसलमेर, अजमेर, आमेर, बीकानेर एवं उदयपुर के जैन ग्रंथालय भी इस दृष्टि से सर्वोपरि हैं। यद्यपि अभी तक विद्वानों द्वारा इन शास्त्र भण्डारों का पूर्णतः मूल्यांकन नहीं हो सका है फिर भी गत २० वर्षों में इन संग्रहालयों की जो ग्रंथ सूचियां सामने आयी हैं उनसे विद्वान गण इस ओर आकृष्ट होने लगे हैं और अब शनैः शनैः इनमें संग्रहीत साहित्य का उपयोग होने लगा है।

जनता द्वारा स्थापित राजस्थान के इन शास्त्र भण्डारों में जैन शास्त्र भण्डारों की सबसे बड़ी संख्या है। ये शास्त्र भण्डार राजस्थान के सभी प्रमुख नगरों एवं कस्बों में मिलते हैं। यद्यपि अभी तक इन शास्त्र भण्डारों की पूरी सूची तैयार नहीं हो सकी है। मैंने अपने Jain Granth Bhandars in Rajasthan में ऐसे १०० शास्त्र भण्डारों का परिचय दिया है लेकिन उसके पश्चात् और भी कितने ही ग्रंथागारों का

अस्तित्व हमारे सामने आया है, इसलिये राजस्थान में दिगम्बर एवं श्वेताम्बर शास्त्र भण्डारों की संख्या को जावे तो वह २०० से कम नहीं होनी चाहिये। श्वेताम्बर शास्त्र भण्डारों की ग्रंथ सूचियां एवं उनका सामान्य परिचय तो बहुत पहिले मुनि पुण्यविजय जी, मुनि जिनविजयजी एवं श्री अगरचन्द जी नाहटा प्रभृति विद्वानों ने साहित्यिक जगत को दे दिया था लेकिन दिगम्बर जैन मन्दिरों में स्थापित शास्त्र भण्डारों का परिचय देने एवं उनकी ग्रंथ सूची बनाने का कार्य अनेक प्रयत्नों के बावजूद सन् १९४७ के पूर्व तक योजना बद्ध तरीके से प्रारम्भ नहीं किया जा सका। यद्यपि पं० परमानन्द जी शास्त्री, स्व० पं० जुगलकिशोर जी मुख्तार एवं श्रद्धेय स्व० पं० चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ द्वारा इस ओर लोगों को बराबर प्रेरणाएं दी जाती रही लेकिन फिर भी कोई ठोस कार्य प्रारम्भ नहीं किया जा सका। आखिर पं० चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ की बार बार प्रेरणाओं के फलस्वरूप श्रीमहावीर क्षेत्र के तत्कालीन मंत्री श्री रामचन्द्रजी सा० खिन्दूका ने इस दिशा में पहल की तथा क्षेत्र की ओर से साहित्य शोध विभाग की स्थापना की गयी। इस प्रकार दिगम्बर जैन मन्दिरों में स्थित शास्त्र भण्डारों की ग्रंथ सूची का कार्य प्रारम्भ हुआ। इसके पश्चात् ग्रंथ सूचियों के प्रकाशन का कार्य प्रारम्भ किया गया और सन् १९४९ में सर्व प्रथम राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की ग्रंथ सूची प्रथम भाग (आमेर शास्त्र भण्डार की ग्रंथ सूची) प्रकाशित हुआ। इसके पश्चात् तीन भाग और प्रकाशित हो चुके हैं जिनमें बीस हजार से भी अधिक ग्रंथों का परिचयात्मक विवरण दिया जा चुका है।

ग्रंथ सूची का पांचवां भाग विद्वानों एवं पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। इसमें जयपुर नगर के शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर लश्कर के अतिरिक्त सभी शास्त्र भण्डार राजस्थान के विभिन्न नगरों एवं कस्बों में स्थित है। प्रस्तुत भाग में ४५ शास्त्र भण्डारों में संग्रहीत २० हजार से भी अधिक पाण्डुलिपियों का परिचयात्मक विवरण दिया गया है। एक ही भाग में इतनी अधिक पाण्डुलिपियों का परिचय देने का हमारा यह प्रथम प्रयास है। इन शास्त्र भण्डारों की सूचीकरण के कार्य में हमें दस वर्ष से भी अधिक समय लगा। एक एक भण्डार को देखना, वहां के ग्रंथों की धूल साफ करना, उन्हें सूची बद्ध करना, अस्तव्यस्त पत्रों को व्यवस्थित करना, पुराने एवं जीर्ण शीर्ण वेष्टनों को नये वेष्टनों में परिवर्तित करना, महत्वपूर्ण पाठों एवं प्रशस्तियों की प्रति लिपि तैयार करना, पूरे ग्रंथ भण्डार को व्यवस्थित करना आदि सभी कार्य हमें करने पड़े और यह कार्य कितना श्रम साध्य है इसे भुक्त भोगी ही जान सकता है। फिर भी, यह कार्य सम्पन्न हो गया हम तो इसे ही पर्याप्त समझते हैं क्योंकि कुछ ऐसे शास्त्र भण्डार भी हैं जिन्हें पचासों वर्षों से नहीं खोला गया और उनमें कितनी २ साहित्यिक निधियां विद्यमान हैं इसे जानने का कभी प्रयास ही नहीं किया।

इस ग्रंथ सूची में बीस हजार पाण्डुलिपियों के परिचय के अतिरिक्त सैकड़ों ग्रंथ प्रशस्तियों, लेखक प्रशस्तियों तथा अलभ्य एवं प्राचीनतम पाण्डुलिपियों का परिचय भी दिया गया है। इस सूची के अवलोकन के पश्चात् विद्वानों को इसका पता लग सकेगा कि सैकड़ों ग्रंथों की कितनी २ महत्वपूर्ण पाण्डुलिपियों की जानकारी मिली है जिनके बारे में साहित्यिक जगत अभी तक अन्धेरे में था। कुछ ऐसे ग्रंथ है जिनकी पाण्डुलिपियां राजस्थान के प्रायः सभी शास्त्र भण्डारों में उपलब्ध होती है जो उनकी लोकप्रियता को द्योतक है। स्वयं ग्रंथकारों की मूल पाण्डुलिपियों की उपलब्धि भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। इन पाण्डुलिपियों के आधार पर प्रकाशन के समय पाठ भेद जैसा दुरूह कार्य कम हो जावेगा और पाठ की प्रामाणिकता में उहापोह नहीं करना पड़ेगा। महापंडित टोडरमल के आत्मानुशासन भाषा की विभिन्न भण्डारों में ४८ प्रतिलिपियां संग्रहीत हैं इसी प्रकार मनोहरदास सोनी की धर्मपरीक्षा की ४७ पाण्डुलिपियां, किशनसिंह के क्रियाकोश की ४५, ज्ञानतराय के चर्चाशतक की ३७,

पद्मनन्दि पंचविंशति की ३५, ऋषभदास निगोत्या के मूलाचार भाषा की ३३, शुभचन्द्र के ज्ञानार्णव की ३४, भूधरदास के चर्चासमाधान की २० पाण्डुलिपियां उपलब्ध हुई हैं। सबसे अधिक महाकवि भूधरदास के पार्श्वपुराण की पाण्डुलिपियां हैं जिनकी संख्या ७३ है। पार्श्वपुराण का समाज में कितना अधिक प्रचार था और स्वाध्याय प्रेमी इसका कितनी उत्सुकता से स्वाध्याय करते होंगे यह इन पाण्डुलिपियों की संख्या से अच्छी तरह जाना जा सकता है। पार्श्वपुराण की सबसे प्राचीन पाण्डुलिपि संवत् १७६४ की है जो रचना काल के पांच वर्ष पश्चात् ही लिखी गयी थी। इसी तरह प्रस्तुत भाग में एक हजार से भी अधिक ग्रंथ प्रशस्तियां एवं लेखक प्रशस्तियां भी दी गयी हैं जिनमें कवि एवं काव्य परिचय के अतिरिक्त कितनी ही ऐतिहासिक तथ्यों की जानकारी मिलती है। इतिहास लेखन में ये प्रशस्तियां अत्यधिक महत्वपूर्ण सहायक सिद्ध होती हैं। उनमें जो तिथि, काल, वार नगर एवं शासकों का नामोल्लेख किया गया है वह अत्यधिक प्रामाणिक है और उन पर सहसा अविश्वास नहीं किया जा सकता। प्रस्तुत ग्रंथ सूची में सैकड़ों शासकों का उल्लेख है जिनमें केन्द्रीय, प्रान्तीय एवं प्रादेशिक शासकों के शासन का वर्णन मिलता है। इसी तरह इन प्रशस्तियों में अनेकों ग्राम एवं नगरों का भी उल्लेख मिलता है जो इतिहास की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

इस भाग में राजस्थान के विभिन्न नगरों एवं ग्रामों में स्थित दिगम्बर जैन मन्दिरों में संग्रहीत ४५ शास्त्र भण्डारों की हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का परिचय दिया गया है। ये शास्त्र भण्डार छोटे बड़े सभी स्तर के हैं। कुछ ऐसे ग्रंथ भण्डार हैं जिनमें दो हजार से भी अधिक पाण्डुलिपियों का संग्रह मिलता है तथा कुछ शास्त्र भण्डारों में १०० से भी कम हस्तलिखित ग्रंथ हैं। इन भण्डारों के अवलोकन के पश्चात् इतना कहा जा सकता है कि १५ वीं शताब्दी से लेकर १८ वीं शताब्दी तक ग्रंथों की प्रतिलिपि तथा उनके संग्रह का अत्यधिक जोर रहा। मुसलिम काल में प्रतिलिपि की गयी पाण्डुलिपियों की सबसे अधिक संख्या है। ग्रंथ भण्डारों के लिये इन शताब्दियों को हम उनका स्वर्णकाल कह सकते हैं। आमेर, नागौर, अजमेर, सागवाड़ा, कामां, मोजमाबाद, बूंदी, टोडारायसिंह, चम्पावती (चाटसू) आदि स्थानों के शास्त्र भण्डार इन शताब्दियों में स्थापित किये गये और इन्हीं स्थानों पर ग्रंथों की तेजी से प्रतिलिपि की गयी। यह युग भट्टारक संस्था का स्वर्ण युग था। साहित्य लेखन एवं उनकी सुरक्षा एवं प्रचार प्रसार में जितना इन भट्टारकों का योगदान रहा उतना योगदान किसी साधु संस्था एवं समाज का नहीं रहा। भट्टारक सकलकीर्ति से लेकर १८ वीं शताब्दी तक होने वाले भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति तक इन भट्टारकों ने देश में जबरदस्त साहित्य प्रचार किया और जन जन को इस ओर मोड़ने का प्रयास किया।

लेकिन राजस्थान में महापंडित टोडरमल जी के क्रान्तिकारी विचारों के कारण इस संस्था को जबरदस्त आघात पहुंचा और फिर साहित्य लेखन का कार्य अवरुद्ध सा हो गया। जयपुर नगर ने सारे जैन समाज का मार्गदर्शन किया और यहां पर होने वाले पं० दौलतराम कासलीवाल, पं० टोडरमल, भाई रायमल्ल, पं० जयचन्द छाबड़ा, पं० सदासुखदास कासलीवाल जैसे विद्वानों की कृतियों की पाण्डुलिपियां तो होती रही किन्तु प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी राजस्थानी भाषा कृतियों की सर्वथा उपेक्षा कर दी गयी। यही नहीं ग्रंथों की सुरक्षा की ओर भी कोई ध्यान नहीं दिया गया। और हमारी इसी उपेक्षा वृत्ति से ग्रंथ भण्डारों के ताले लग गये। सैकड़ों ग्रंथ चूहों और दीमकों के शिकार हो गये और संस्कृत एवं प्राकृत की हजारों पाण्डुलिपियों को नहीं समझ सकने के कारण जल प्रवाहित कर दिया गया।

लेकिन गत २५-३० वर्षों से समाज में एक पुनः साहित्यिक चेतना जाग्रत हुई और साहित्य सुरक्षा एवं उसके प्रकाशन की ओर उसका ध्यान जाने लगा। यही कारण है कि आज सारे देश में पुनः जैन ग्रंथाकारों के ग्रंथ सूचियों की मांग होने लगी है। क्योंकि प्रादेशिक भाषाओं का महत्वपूर्ण संग्रह आज भी इन्हीं भण्डारों में सुरक्षित है। विश्वविद्यालयों में जैन आचार्यों एवं उनके साहित्य पर रिसर्च होने लगी है क्योंकि आज के विद्वान एवं शोधार्थी साम्प्रदायिकता की परिधि से निकल कर कुछ काम करना चाहता है। इसलिये ऐसे समय में ग्रंथ सूचियों का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण कार्य है। प्रस्तुत ग्रंथ सूची में राजस्थान के जिन शास्त्र भण्डारों का विवरण दिया गया है उनका परिचय निम्न प्रकार है—

शास्त्र भण्डार भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर

भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर का शास्त्र भण्डार राजस्थान के प्राचीनतम ग्रंथ भण्डारों में से एक है। इस ग्रंथ भण्डार की स्थापना कब हुई थी इसकी तो अभी तक निश्चित खोज नहीं हो सकी है किन्तु यदि भट्टारकों की गादी के साथ शास्त्र भण्डारों की स्थापना का संबंध जोड़ा जावे तो यहां का शास्त्र भण्डार १२ वीं शताब्दी में ही स्थापित हो जाना चाहिये, ऐसी हमारी मान्यता है। क्योंकि संवत् ११६८ में भट्टारक विशाल कीर्ति प्रथम भट्टारक के रूप में यहां की गादी पर बैठे थे। इसके पश्चात् १६ वीं शताब्दी से तो अजमेर भट्टारकों का पूर्णतः केन्द्र बन गया। इन भट्टारकों ने पाण्डुलिपियों के लिखने लिखाने में अत्यधिक योग दिया और इस भण्डार की अभिवृद्धि की ओर खूब कार्य किया।

इस भण्डार को सर्व प्रथम स्व० श्री जुगलकिशोरजी मुख्तार एवं पं० परमानन्दजी शास्त्री ने वहां कुछ समय ठहरकर देखा था किन्तु वे इस की ग्रंथ सूची नहीं बना पाये इसलिए इसके पश्चात् दिसम्बर १६५८ में हम लोग वहां गये और पूरे आठ दिन तक ठहर कर इस भण्डार की ग्रंथ सूची तैयार की।

इस भण्डार में २०१५ हस्तलिखित ग्रंथ एवं गुटके हैं। कुछ ऐसे अपूर्ण एवं स्फुट पत्र वाले ग्रंथ भी हैं जो सम्पुटों में भरे हुए हैं। लेकिन समयाभाव के कारण उन्हें नहीं देखा जा सका। शास्त्र भण्डार में संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी इन चारों भाषाओं के ही अच्छे ग्रंथ हैं। इनमें प्राचीन पांडुलिपि समयसार प्राभृत की है जो संवत् १४६३ की लिखी हुई है। यह प्राकृत भाषा का ग्रंथ है और आचार्य कुंदकुंद की मौलिक कृति है। इसके अतिरिक्त आत्मानुशासन टीका (प्रभाचन्द्राचार्य) हरिवंश पुराण (ब्रह्म जिनदास) सागार धर्मामृत (आशाधर), धर्मपरीक्षा (अमितगति), सुकुमाल चरित्र (भ० सकलकीर्ति) की प्राचीन पांडुलिपियां हैं। महा पं० आशाधर का 'अध्यात्म रहस्य' एवं भीतसार समुच्चय (वृषभदास। चिन्तामणिस्तोत्र (मेधावी) पासचरिउ (तेजपाल) की ऐसी पाण्डुलिपियां हैं जो प्रथम बार इस भण्डार में उपलब्ध हुई हैं। हिन्दी की कितनी ही ऐसी कृतियां उपलब्ध हुई हैं जो साहित्यक की दृष्टि में अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। भगवतीदास की रचनाएं जिनमें 'सीतासतु' 'शील बत्तीसी', राजमती गीत, अगैलपुर जिन वंदना, राजावली, 'बनजारा गीत' 'राज मती नेमीश्वररास' के नाम उल्लेखनीय हैं, और एक ही गुटके में उपलब्ध हुई हैं। ठाकुर कवि का शांति पुराण (संवत् १६५२) हिन्दी का एक अच्छा काव्य है धेल्ह कवि का 'बुद्धि प्रकाश' तथा बूचराज का 'भुवनकीर्ति गीत' एवं 'धर्मकीर्ति गीत' इतिहास की दृष्टि से भी अच्छी रचनाएं हैं। इसके अतिरिक्त भण्डार में 'सामुद्रिक पुरुष लक्षण' की पाण्डुलिपि है, जिसकी लेखक प्रशस्ति संवत् १७६३ भादवा सुदी १४ की है और उसमें यह लिखा हुआ है कि इस प्रति को जोधनेर में पंडित टोडरमल के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी। इससे महा पं० टोडरमलजी के

जीवन एवं आयु के सम्बन्ध में विशेष प्रकाश पड़ता है। यदि इस प्रशस्ति का सम्बन्ध पं० टोडरमलजी से ही है तो फिर टोडरमलजी की आयु के सम्बन्ध में सभी मान्यताएं (धारणाएं) गलत सिद्ध हो जाती हैं। यदि संवत् १७९३ में पंडितजी की आयु १५-१६ वर्ष की भी मान ली जावे तो उनके जीवन की नयी कहानी प्रारम्भ हो जाती है, और उनकी आयु २५-२६ वर्ष की न रहकर ५० वर्ष से भी ऊपर पहुंच जाती है लेकिन अभी इस की खोज होना शेष है।

अलवर

अलवर प्रान्त का नाम पहिले मत्स्य प्रदेश था जो महाभारत कालीन राजा विराट का राज्य था। मछेरी के नाम से अब भी यहां एक ग्राम है। जो मत्स्य का ही अपभ्रंश शब्द है। यही कारण है कि राजस्थान निर्माण के पूर्व अलवर, भरतपुर, धौलपुर और करौली राज्यों के एकीकरण के पश्चात् इस प्रदेश का नाम मत्स्य देश रखा गया था। १९ वीं शताब्दी के पूर्व अलवर भी जयपुर के राज्य में सम्मिलित था लेकिन महाराजा प्रतापसिंह ने अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित किया और उसका अलवर नाम दिया। अलवर नगर और देहली जयपुर के मध्य में बसा हुआ है।

जैन साहित्य और संस्कृति का भी अलवर प्रदेश अच्छा केन्द्र रहा है। इस प्रदेश में अलवर के अतिरिक्त तिजारा, अजबगढ, राजगढ, आदि प्राचीन स्थान हैं और जिनमें शास्त्र भण्डार भी स्थापित हैं। यहां ७ मन्दिर हैं और सभी में ग्रंथ भण्डार हैं। सबसे अधिक ग्रंथ खण्डेलवाल पंचायती मंदिर एवं अग्रवाल पंचायती मंदिर में हैं दि० जैन खण्डेलवाल पंचायती मंदिर में भक्तामर स्तोत्र एवं तत्वार्थसूत्र की स्वर्णाक्षरी प्रतियां हैं जो कला की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। जयपुर के महाराजा सवाई प्रतापसिंह द्वारा लिखित आयुर्वेदिक ग्रंथ 'अमृतसागर' की भी एक उत्तम प्रति है इसका लेखन काल सं० १७९१ है। खण्डेलवाल पंचायती मंदिर के शास्त्र भण्डार में २११ हस्तलिखित ग्रंथ एवं ४६ गुटके हैं जिनमें अध्यात्म बारहखडी (दौलतराम कासलीवाल), यशोधर चरित (पद्मकीर्ति) राजवार्तिक (भट्टाकलंक) की प्रतियां विशेषतः उल्लेखनीय है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मंदिर दूनी

जयपुर से देवली जाने वाली सड़क पर स्थित दूनी एक प्राचीन कस्बा है। यह टोंक से १२ मील एवं देवली से ९ मील है। जयपुर राज्य का यह जागीरी गांव था जिसके ठाकुर रावराजा कहलाते थे। यहां एक दि० जैन मंदिर है। मंदिर के एक भाग पर एक जो लेख अंकित है उसके अनुसार इस मन्दिर का निर्माण सं० १५८५ में हुआ था और इसीलिये यहां का ग्रंथ भण्डार भी उसी समय का स्थापित किया हुआ है। यहां के ग्रंथ भण्डार में १४३ हस्तलिखित ग्रंथ हैं। जिनमें अधिकांश ग्रंथ हिन्दी भाषा के हैं। ग्रंथ भण्डार में सबसे प्राचीन पाण्डुलिपि संवत् १५०० में लिपि की हुई जिनदत्त कथा है। विद्यासागर की हिन्दी रचनाएं भी यहां संग्रहीत हैं जिनमें सोलह स्वप्न, जिनराज महोत्सव, सप्तव्यसन सवैया, आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इसी तरह तानुशाह का झूलना, गंग कवि का 'राजुल का बारह मासा' हिन्दी की अज्ञात रचनाएं हैं।

गंग कवि पर्वत धर्मार्थी के पुत्र थे। भट्टारक शुभचन्द्र के जीवंधर स्वामी चरित्र की संवत् १६१५ में लिखी हुई पाण्डुलिपि भी उल्लेखनीय है। बाण कवि कृत कलियुगचरित्र (संवत् १६७४) की हिन्दी की अच्छी कृति है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन बघेरवाल मंदिर आवां

टोंक प्रांत का आवां एक प्राचीन नगर है। साहित्य एवं संस्कृति की दृष्टि से १६-१७ वीं शताब्दी में यह गौरव पूर्ण स्थान रहा। चारों ओर छोटी २ पहाड़ियों के मध्य में स्थित होने के कारण जैन साधुओं के लिये चिन्तन करने का यह एक अच्छा केन्द्र रहा। संवत् १५६६ में यहां मंडलाचार्य धर्मकीर्ति के नेतृत्व में एक बिम्ब प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न हुआ था जिसका एक विस्तृत लेख मंदिर में अंकित है। लेख में सोलंकी वंश के महाराजा सूर्यसेन के शासन की प्रशंसा की गयी है इसी लेख में महाराजा पृथ्वीराज के नाम का उल्लेख हुआ है। नगर के बाहर समीप ही छोटी सी पहाड़ी पर भ० प्रभाचन्द्र, भ० जिनचन्द्र, एवं भ० धर्मचन्द्र की तीन निषेधिकाएं हैं जिनपर लेख भी अंकित हैं। ऐसी निषेधिकाएं इस क्षेत्र में प्रथम बार उपलब्ध हुई हैं जो अपने युग में भट्टारकों के जबरदस्त प्रभाव की द्योतक हैं।

यहां दो मंदिर हैं एक बघेरवाल दि० जैन मंदिर तथा दूसरा खण्डेलवाल दि० जैन मंदिर। दोनों ही मंदिरों में हस्तलिखित ग्रंथों का उल्लेखनीय संग्रह नहीं है केवल स्वाध्याय में काम आने वाले ग्रन्थ ही उपलब्ध हैं।

बूंदी

बूंदी राजस्थान का प्राचीन नगर है जो प्राचीन काल के वृन्दावती में नाम से प्रसिद्ध था। कोटा से बीस मील पश्चिम की ओर स्थित बूंदी एवं झालावाड़ का क्षेत्र हाड़ौती प्रदेश कहलाता है। मुगलशासन में बूंदी के शासकों का देश की राजस्थान की राजनीति में विशेष स्थान रहा। साहित्यिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से भी १७ वीं १८ वीं एवं १९ वीं शताब्दी में यहां पर्याप्त गतिविधियां चलती रहीं। १७ वीं शताब्दी में होने वाले जैन कवि पद्मनाभने बूंदी का निम्न शब्दों में उल्लेख किया है—

बूंदी इन्द्रपुरी जखिपुरी कि कुबेरपुरी
रिद्धि सिद्धि भरी द्वारिकि कासी घरीघर में
धीमहर धाम, घर घर विचित्र दाम
नर कामदेव जैसे सेवे सुख सर में
बापी बाग वरुण बाजार वीथी विद्या वेद
विबुध विनोद बानी बोले मुखि नर में
तहां करे राज भावसिंघ महाराज
हिन्दू धर्मलाज पातसाहि आज कर में

१८ वीं शताब्दी में कवि दिलाराम और हीरा के नाम उल्लेखनीय हैं। बूंदी नगर में ५ ग्रन्थ भण्डार हैं जिनके नाम निम्न प्रकार हैं—

१	ग्रंथ भण्डार	दि जैन मंदिर	पार्श्वनाथ
२	,,	,,	आदिनाथ
४	,,	,,	अभिनन्दन स्वामी
४	,,	,,	महावीर स्वामी
५	,,	,,	नागवो (नेमिनाथ)

ग्रंथ भण्डार दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ

इस भण्डार में ३३४ हस्तलिखित ग्रंथ एवं गुटके हैं। अधिकांश ग्रंथ संस्कृत एवं हिन्दी भाषा के हैं तथा पूजा, कथा प्रक्षाल एवं स्तोत्र व्याकरण विषयक हैं। इस भण्डार में ब्रह्म जिनदास विरचित' रामचन्द्र रास' की एक सुन्दर पाण्डुलिपि है। इसी तरह भक्तामरस्तोत्र हिन्दी गद्य टीका की प्रति भी यहां उपलब्ध हुई है जो हेमराज कृत है।

ग्रंथ भण्डार दि० जैन मंदिर आदिनाथ

इस मन्दिर के ग्रंथ भण्डार में १६८ हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह है इस संग्रह में ज्योतिष रत्नमाला की सबसे प्राचीन प्रतिलिपि है जो संवत् १५१६ में लिपि की गई थी। इसी तरह सागारधर्मामृत, त्रिलोकसार एवं उपदेशमाला की भी प्राचीन प्रतियां हैं।

ग्रंथ भण्डार दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी

इस ग्रंथ भण्डार में ३६८ हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह है। यह मंदिर भट्टारकों का केन्द्र रहा था और यहां भट्टारक गादी भी थी, और संभवतः इसी कारण यहां ग्रंथों का अच्छा संग्रह है। भण्डार मे अपभ्रंश भाषा की कृति 'करकण्डु चरिउ की' अपूर्ण प्रति है जो संस्कृत टीका सहित है। संग्रह अच्छा है तथा ग्रंथों की प्राचीन प्रतियां भी उल्लेखनीय हैं।

ग्रंथ भण्डार दि० जैन मंदिर महावीर स्वामी

यह मन्दिर विद्वानों का केन्द्र रहा है। यहां के ग्रंथों का अधिकांश संग्रह हिन्दी भाषा के ग्रंथों का है। इसमें पुराण, कथा, पूजा एवं स्तोत्र साहित्य का बाहुल्य है। ग्रंथों की संख्या गुटकों सहित १७२ है। अधिकांश ग्रंथ १८–१९ वीं शताब्दी के हैं।

ग्रंथ भण्डार दि० जैन मंदिर नागदी (नेमिनाथ)

नेमिनाथ के मंदिर में स्थित यह ग्रंथ भण्डार नगर का महत्वपूर्ण भण्डार है। यहां पूर्ण ग्रंथों की संख्या २२२ है जो सभी अच्छी दशा में है। लेकिन कुछ ग्रंथ अपूर्ण अवस्था में हैं जिनके पत्र इधर उधर हो गये हैं इस संग्रहालय में 'माधवानल प्रबन्ध' जो गोकुल के सुत नरसी की हिन्दी कृति है, की संवत् १६५५ की अच्छी प्रति है। श्रेणिक चरित्र (र० काल सं० १८२४-दौलत ओसेरी) चतुर्गतिनाटक (डालूराम), आराधनासार (विमलकीर्ति), भागवत पुराण (श्रीधर) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इस संग्रह में एक गुटके में बूचराज कवि की हिन्दी रचनाओं का अच्छा संग्रह है।

इस प्रकार बूंदी नगर में हस्तलिखित ग्रंथों का महत्वपूर्ण संग्रह है।

नैणवा

बूंदी प्रांत का नैणवा एक प्राचीन नगर है जो बूंदी से ३२ मील है और रोड से जुड़ा हुआ है। यह नगर प्रारम्भ से ही साहित्य का केन्द्र रहा है। उपलब्ध हस्तलिखित ग्रंथों में प्रद्युम्नचरित की सबसे प्राचीन पाण्डुलिपि

है जो सन् १४६१ में इसी नगर लिखी गई थी। भट्टारक सकलकीर्ति के गुरु भट्टारक पद्मनन्दि का नैणवा मुख्य स्थान था और सकलकीर्ति ने आठ वर्ष यहीं रह कर उनसे शिक्षा प्राप्त की थी। भट्टारक पद्मनन्दि द्वारा प्रतिष्ठापित संवत् १४७० की जिन प्रतिमायें टोंक के बाहर जैन मंदिरों में विराजमान हैं। इसी तरह सन् १७१६ में केशवसिंह कवि ने भद्रबाहुचरित की यहीं बैठ कर रचना की थी लेकिन वर्तमान में अतीत के महत्व को देखते हुए यहां कोई अच्छा संग्रह नहीं है। यहां तीन जैन मन्दिर हैं और इन तीनों में करीब २२० हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह है। लेकिन यहां पर प्रतिलिपि किये हुए ग्रंथ आज भी बूंदी, कोटा, दबलाना, इन्दरगढ़, आमेर, जयपुर, भरतपुर एवं कामां के भण्डारों में उपलब्ध होते हैं। इससे यहां की साहित्यिक गतिविधियों का सहज ही में पता चल जाता है। पुष्पदंत कवि का णायकुमारचरिउ एवं सिद्धचक्रकथा की प्राचीन पाण्डुलिपियां जयपुर के ग्रंथ भण्डारों में सुरक्षित है। इसी तरह समाधितन्त्र भाषा-पद्यवन्धमाथी (सन् १७१६), क्रियाकोश भाषा-किशनसिंह (सन् १७५७) पार्श्वपुराण भूधरदास (संवत् १८०६) समयसार नाटक-बनारसीदास (सन् १८४१) आदि कुछ ऐसी पाण्डुलिपियां हैं जिनका लेखन इसी नगर में हुआ था।

शास्त्र भण्डार दि० जैन बघेरवाल मंदिर

यह यहां का प्राचीन एवं प्रसिद्ध मन्दिर है जिसके शास्त्र भण्डार में १०४ हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह है। सभी ग्रंथ सामान्य विषयों से सम्बन्धित हैं। इसी भण्डार में एक गुटका भी है जिसमें हिन्दी की कितनी ही अज्ञात रचनाओं का संग्रह है। कुछ रचनाओं के नाम निम्न प्रकार हैं—

सारसीखामणिरास	भट्टारक सकलकीर्ति	१५ वीं शताब्दी
नेमिराजमतिगीत	ब्रह्म यशोधर	१६ वीं शताब्दी
पञ्चेन्द्रियगीत	जिनसेन	,,
नेमिराजमति वेलि	सिंहदास	,,
वैराग्य गीत	ब्रह्म यशोधर	,,

शास्त्र भण्डार दि० जैन तेरापंथी मन्दिर

इस शास्त्र भण्डार में पुराण, पूजा, कथा एवं चरित सम्बन्धी रचनाओं का संग्रह मिलता है। भट्टारक सकलकीर्ति के शिष्य श्री लालचन्द द्वारा निर्मित सम्मेदशिखर पूजा की एक प्रति है जो संवत् १८४२ में देवपाड नगर में छन्दोबद्ध की गयी थी। यहां तीन मन्त्र हैं जो कपड़े पर लिखे हुए हैं। ऋषिमंडल मंत्र संवत् १५८५ का लिखा हुआ है। तथा २२ × २३ इन्च वाले आकार का है। मन्त्र पर दी हुई प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्री श्री श्री शुभचन्द्रसूरिभ्यो नमः। अथ संवत्सरेस्मिन् श्री नृपविक्रमादित्य गताब्दः संवत् १५८५ वर्षे कार्तिक बदी ३ शुभ दिने श्री रिषीमंडल यंत्र ब्रह्म अज्जूयोग्य प० अहदासेन शिष्य पं० गजमल्लेन लिखित ग्रंथ भवतु। वृहद् सिद्धचक्र यंत्र का लेखन काल संवत् १६१६ है और धर्मचक्र यंत्र का लेखन काल संवत् १६७४ है।

ग्रंथ भण्डार दि० जैन अग्रवाल मन्दिर

इस मन्दिर में कोई उल्लेखनीय संग्रह नहीं है। केवल ३७ पाण्डुलिपियां हैं जो पुराण एवं कथा से सम्बन्धित है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मंदिर दबलाना

बूंदी से १० मील पश्चिम की ओर स्थित दबलाना एक छोटा सा गांव है, लेकिन हस्तलिखित ग्रंथों के संग्रह की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यहां के भण्डार में ४२३ हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह है। संग्रह से ऐसा पता लगता है कि यह सारा भण्डार किसी भट्टारक अथवा साधु के पास था। जिसने यहां लाकर मंदिर में विराजमान कर दिया। भण्डार में काव्य, चरित, कथा, रास, व्याकरण, आयुर्वेद एवं ज्योतिष विषयक ग्रंथों का अच्छा संग्रह है। बूंदी, नैणवा, गोठडा, इन्दरगढ, जयपुर, जोधपुर सागवाडा एवं सीसवाली में लिखे हुए ग्रंथों की प्रमुखता है। सबसे प्राचीन प्रति 'षडावश्यक बालावबोध' की पाण्डुलिपि है जो संवत् १५२१ में मालवा मंडल की राजधानी उज्जैन में लिखी गयी थी। संवत् १४९६ में विरचित मेहउ कवि का आदिनाथ स्तवन, लालदास का इतिहाससार समुच्चय, साधु ज्ञानचन्द द्वारा रचित सिंहासन बत्तीसी, रामयश (केशवदास) रचना काल सं० १६८०, आदि ग्रंथों के नाम उल्लेखनीय हैं। भण्डार में संग्रहीत पाण्डुलिपियां भी प्राचीन एवं शुद्ध है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ़

इन्दरगढ कोटा राज्य का प्राचीन शहर है। यह पश्चिमी रेलवे की बड़ी लाइन पर सवाईमाधोपुर और कोटा के मध्य में स्थित है। यहां के दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर में हस्तलिखित ग्रंथों का एक संग्रह उपलब्ध है शास्त्र भण्डार में हस्तलिखित ग्रंथों की संख्या २८९ है। इसमें सिद्धान्त, स्तोत्र, आचार शास्त्र, से सम्बन्धित पाण्डुलिपियों की संख्या सर्वाधिक हैं कुछ ग्रंथ ऐसे भी है। जिनका लेखन इस नगर में हुआ था।

शास्त्र भण्डार दि० जैन अग्रवाल मन्दिर फतेहपुर (शेखावाटी)

फतेहपुर सीकर जिले का एक सुन्दरतम नगर है। चुरु से सीकर जाने वाली रेलवे लाइन पर यह पश्चिमी रेलवे का स्टेशन है। जैन साहित्य और कला की दृष्टि से फतेहपुर प्रारम्भ से ही केन्द्र रहा। देहली के भट्टारकों का इस नगर से सीधा सम्पर्क रहा और वे यहां की व्यवस्था एवं साहित्य संग्रह की ओर विशेष ध्यान देते रहे। यहां का शास्त्र भण्डार इन्हीं भट्टारकों की देन है। शास्त्र भण्डार में हस्तलिखित ग्रंथों एवं गुटकों की संख्या २७५ हैं। इनमें गुटकों की संख्या ७३ हैं जिनमें कितने ही महत्वपूर्ण कृतियां संग्रहीत है। पं०जीवनराम द्वारा लिखा हुआ यहां एक महत्वपूर्ण गुटका है जिसके १२२२ पृष्ठ है अभी तक शास्त्र भण्डारों में उपलब्ध गुटकों में यह सबसे बड़ा गुटका हैं इसमें ज्योतिष एवं आयुर्वेद के पाठों का संग्रह हैं। जिनकी एक लाख श्लोक प्रमाण संख्या है। इस गुटके को लिखने में जीवनराम को २२ वर्ष (संवत् १८३८ से १८६०) लगे थे। इसका लेखन चुरु में प्रारम्भ करके फतेहपुर में समाप्त हुआ था। इसी तरह भण्डार में एक "णमोकार महात्म्य कथा" की एक पाण्डुलिपि है जिसमें १३" × ७½" आकार वाले ७८९ पत्र हैं। यह पाण्डुलिपि सचित्र है जिसमें ७६ चित्र हैं जो जैन पौराणिक पुरुषों के जीवन कथाओं पर तैयार किये गये है। ग्रंथ भण्डार में हस्तलिखित ग्रंथ की अधिक संख्या न होते हुये भी कितने ही हिन्दी के ग्रंथ प्रथम बार उपलब्ध हुए जिनका परिचय आगे दिया गया है। यहां ग्रंथों की लिपि का कार्य भी होता था। त्रिलोकसार भाषा (संवत् १८०३), हरिवंश पुराण (संवत् १८२४) महावीर पुराण, समयसार नाटक एवं ज्ञानार्णव आदि की कितनी ही प्रतियों के नाम गिनाये जा सकते हैं। ग्रंथ सूची के कार्य में नगर के प्रसिद्ध समाज सेवी एवं साहित्य प्रेमी श्री सिंघीलाल जी जैन का सहयोग मिला उनके हम आभारी है।

भरतपुर

राजस्थान प्रदेश का भरतपुर एक जिला है। जो पर्याप्त समय तक साहित्यिक केन्द्र रहा था। ब्रज भूमि भूमि में होने के कारण यहां की भाषा भी पूर्णतः ब्रज प्रभावित है। भरतपुर जिले में भरतपुर, डीग, कामा, बयाना, बैर, कुम्हेर आदि स्थानों में हस्तलिखित ग्रंथों का अच्छा संग्रह है।

भरतपुर नगर की स्थापना सूरजमल जाट द्वारा की गयी थी। १८ वी शताब्दी की एक कवि श्रुत-सागर ने नगर की स्थापना का निम्न प्रकार वर्णन किया है —

देश काठहड विरजि मैं, वदनस्यंघ राजान।
ताके पुत्र है भलो, सूरिजमल गुणधाम।
तेज पुंज रवि है भयो लाभ कीर्ति गुणवान।
ताको सुजस है जगत मैं, तपै दूसरो भान।
तिनह नगर अब साइयो नाम भरतपुर तास।

शास्त्र भण्डार दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर

ग्रंथों के संकलन की दृष्टि से इस मन्दिर का शास्त्र भण्डार इस जिले का प्रमुख भण्डार है। सभी ग्रंथ कागज पर लिखे हुए हैं। शास्त्र भण्डार की स्थापना कब हुई थी, इसकी निश्चत तिथि का तो कहीं उल्लेख नहीं मिलता लेकिन मन्दिर निर्माण के बाद ही जिले के अन्य स्थानों से लाकर यहां ग्रंथों का संग्रह किया गया। १६ वीं शताब्दी में ग्रंथों का सबसे अधिक संग्रह हुआ। भण्डार में हस्तलिखित ग्रंथों की संख्या ८०१ है जिनमें संस्कृत एवं हिन्दी भाषा के ही अधिक ग्रंथ हैं। सबसे प्राचीन पाण्डुलिपि बृहद तपागच्छ गुर्वावली की जो मुनि सुन्दरसूरि द्वारा निर्मित है तथा जिसका लेखन काल संवत् १४६० है। इसी भण्डार में संवत् १४६२ की दूसरी पाण्डुलिपि है। इसके अतिरिक्त गंगाराम कवि का सभाभूषण, हर्षचन्द का पद संग्रह, विश्वभूषण का जिनदत्त भाषा, जोधराज कासलीवाल का सुखविलास की पाण्डुलिपियां उल्लेखनीय हैं। इसी भण्डार में भक्तामर स्तोत्र की एक सचित्र पाण्डुलिपि हैं जिसमें ५१ चित्र है। मध्यकाल की शैली पर चित्रित सभी चित्र कला, शैली एवं कलम की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। इस पाण्डुलिपि का लेखन काल संवत् १८२६ है। जैन कला की दृष्टि से कलाकारों को इस पर विशद प्रकाश डालना चाहिये।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर फौजदारान

भरतपुर नगर का यह दूसरा जैन मन्दिर है जहां हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह है। मन्दिर के निर्माण को अभी अधिक समय नहीं हुआ इसलिये हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह भी करीब १०० वर्ष पुराना है। इस भण्डार में ६५ हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह है। इसी भण्डार में कुम्हेर के गिरावरसिंह की तत्वार्थसूत्र पर हिन्दी गद्य टीका उल्लेखनीय कृति है। इसकी रचना संवत् १६३५ में की गयी थी।

शास्त्र भण्डार पंचायती मन्दिर, डीग (नयी)

'डीग' पहिले भरतपुर राज्य की राजधानी थी। आज भी फव्वारों की नगरी के नाम से यह नगर प्रसिद्ध है। पंचायती मन्दिर में हस्तलिखित ग्रंथों का छोटा सा संग्रह है जिसमें ८१ पाण्डुलिपियां उपलब्ध होती

हैं। हिन्दी के प्रसिद्ध कवि सेवाराम पाटनी इसी नगर के थे। उनके द्वारा रचित मल्लिनाथचरित की मूल पाण्डुलिपि इसी भण्डार में सुरक्षित है इस चरित काव्य का रचना काल संवत् १८५० है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन बड़ा पंचायती मन्दिर डीग

इस मन्दिर में पहिले हस्तलिखित ग्रंथों का अच्छा संग्रह था। लेकिन मन्दिर के प्रबन्धकों की इस ओर उदासीनता के कारण अधिकांश संग्रह सदा के लिये समाप्त हो गया। वर्तमान में यहां ५६ ग्रंथ तो पूर्ण एवं अच्छी स्थिति में है और शेष अपूर्ण एवं त्रुटित दशा में संग्रहीत है। भण्डार में भगवती आराधना भी सबसे प्राचीन पाण्डुलिपि है। जिसका लेखन काल संवत् १५११ वैशाख शुक्ला सप्तमी है। इसकी प्रतिलिपि मांडलगढ़ में महाराणा कुंभकर्ण के शासन काल में हुई थी। इसके अतिरिक्त राजहंस के षट्दर्शन समुच्चय, अपभ्रंश काव्य भविसयत्त चरिउ (श्रीधर), आत्मानुशासन (गुणभद्र) एवं सकलकीर्ति के जम्बुस्वामी चरित की भी अच्छी पाण्डुलिपियां हैं।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर पुरानी डीग

पुरानी डीग का दि० जैन मन्दिर अत्यधिक प्राचीन है और ऐसा मालूम देता है कि इसका निर्माण १४ वीं शताब्दी पूर्वही हो चुका होगा। मन्दिर की प्राचीनता को देखते हुए यहां अच्छा शास्त्र भण्डार होना चाहिए लेकिन नयी डीग एवं भरतपुर बनने के पश्चात् यहां से बहुत से ग्रंथ इधर उधर चले गये। वर्तमान में यहां के भण्डार में हस्तलिखित ग्रंथों की संख्या १०१ है लेकिन वे भी अच्छी तरह रखे हुए नहीं है। भण्डार के अधिकांश ग्रंथ हिन्दी भाषा के हैं। नथमल कवि ने जिणगुणविलास (रचना काल सं० १८६५) की एक पाण्डुलिपि यहां संवत् १८६६ की लिखी हुई है। मुकुन्ददास कवि के भ्रमरगीत की पाण्डुलिपि भी उल्लेखनीय है। कवि चुन्नीलाल की चौबीस तीर्थंकरपूजा की पाण्डुलिपि इस भण्डार में सर्व प्रथम उपलब्ध हुई है। पूजा का रचना काल संवत् १९१४ है। इसकी रचना करौली में हुई थी। इसी भण्डार में खुशालचन्द्र काला की जन्म पत्री की प्रति भी संग्रहीत है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर कामा

राजस्थान के प्राचीन नगरों में कामा नगर का भी नाम लिया जाता है। पहिले यह भरतपुर राज्य का प्रसिद्ध नगर था लेकिन आजकल तहसील का प्रधान कार्यालय है। उक्त मन्दिर के शास्त्र भण्डार में संगृहीत ग्रंथों के आधार पर इतना अवश्य कहा जा सकता है कि यह नगर १७-१८ वीं शताब्दी में साहित्यक गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र रहा। हिन्दी के प्रसिद्ध महाकवि दौलतराम कासलीवाल के सुपुत्र जोधराज कासलीवाल यहां आकर रहने लगे थे जिन्होंने संवत् १८८४ में सुखविलास की रचना की थी। इसी तरह इनसे भी पूर्व पंचास्तिकाय एवं प्रवचनसार की हेमराज के हिन्दी टीका की पाण्डुलिपियां भी इसी भण्डार में उपलब्ध होती है।

भण्डार में गुटकों सहित ५७८ पाण्डुलिपियां उपलब्ध होती हैं। ये पाण्डुलिपियां संस्कृत, प्राकृत अपभ्रंश, हिन्दी, ब्रज एवं राजस्थानी भाषा से सम्बधित रचनायें हैं। यह भण्डार महत्वपूर्ण एवं अज्ञात तथा प्राचीन पाण्डुलिपियों की दृष्टि से राजस्थान के प्रमुख भण्डारों में से है। कामा नगर और फिर यह शास्त्र भन्डार साहित्यिक गतिविधियों का बड़ा भारी केन्द्र रहा। आगरा के पश्चात् और सांगानेर एवं जयपुर के पूर्व कामा में ही एक अच्छा संग्रहालय था। जहां विद्वानों का समादर था इसलिए भण्डार में संवत् १४०५ तक की पाण्डुलिपियां मिलती है। यहां की कुछ महत्वपूर्ण पाण्डुलिपियों के नाम निम्न प्रकार है—

१ प्रबोध चिंतामणि	राजशेखर सूरि	संस्कृत	लिपि संवत् १४०५.
२. आत्मानुशासन टीक	प्रभाचन्द्र	,,	१४६१
३. आत्मप्रबोध	कुमार कवि	,,	१५४७
४. धर्मपंचविंशति	ब्रह्म जिनदास	अपभ्रंश	—
५. पार्श्व पुराण	पद्मकीर्ति	,,	१५७४
६. यशस्तिलक चम्पू	सोमदेव	संस्कृत	१४६०
७. प्रद्युम्न चरित	सधारू कवि	ब्रज भाषा	१४११ (रचना काल)

उक्त पाण्डुलिपियों के अतिरिक्त भंडार में और भी अज्ञात, प्राचीन एवं अप्रकाशित रचनाएं हैं।

शास्त्र भण्डार अग्रवाल पंचायती मन्दिर कामां

इस मन्दिर में ग्रंथों की संख्या अधिक नहीं हैं। पहिले ये सभी ग्रंथ खण्डेलवाल पंचायती मन्दिर में ही थे लेकिन करीब ७० वर्ष पूर्व इस मन्दिर में से कुछ ग्रंथ अग्रवाल पंचायती मन्दिर में स्थापित कर दिये गये। यहां ८१५ हस्तलिखित ग्रंथ हैं। इस भण्डार में सधारू कवि कृत एक प्रद्युम्न चरित की भी पाण्डुलिपि है। जिसमें उसका रचना काल सं० १३११ दिया हुआ है। किन्तु यह प्रति अपूर्ण है। इसी भण्डार में नवलराम कृत वर्द्धमान पुराण भाषा की पाण्डुलिपि है जो प्रथम बार उपलब्ध हुई है। इसका रचना काल सं० १६९१ है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह

टोडारायसिंह का प्राचीन नाम तक्षकगढ था। जैन ग्रंथों की प्रशस्तियों, शिलालेखों एवं मूर्ति लेखों में तक्षकगढ का काफी नाम आता है। इसकी स्थापना नागाओं ने की थी तथा १५ वीं शताब्दी तक यह प्रदेश उदयपुर के महाराणाओं के अधीन रहा। जैन धर्म एवं साहित्य का तक्षकगढ से काफी सम्बन्ध रहा। बिजोलिया के एक लेख में वर्णन आता है कि टोडानगर में राजा तक्षक के पूर्वजों ने एक जैन मन्दिर बनाया था। जब से यह नगर सोलंकी वंशी राजपूतों के अधीन हुआ बस उसी समय से जैन साहित्य के विकास में इन राजाओं का काफी योगदान रहा। महाराजा रामचन्द्र राव के शासनकाल में यहां बहुत से ग्रंथों की प्रतिलिपियां सम्पन्न हुई। इनमें उपसकाध्ययन, णायकुमार चरिउ (सं० १६१२), यशोधर चरित्र (सं० १५५५) जम्बूस्वामी चरिउ (सं० १६१०) आदि ग्रंथों के नाम उल्लेखनीय हैं।

यहां दो मन्दिरों में हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह मिलता है। जिनका परिचय निम्न प्रकार है —

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह

नेमिनाथ स्वामी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में २१६ हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह है। इस भण्डार में सबसे प्राचीन पाण्डुलिपि त्रिलोकसार टीका माधवचन्द्र त्रैविद्य की है जो सं० १५८८ सावण सुदी १४ की लिखी हुई है एक प्रवचनसार की संस्कृत टीका है जो सं० १६०५ की है। इनके अतिरिक्त चौबीस तीर्थंकरपूजा (देवीदास), आस्रवत्रिभंगी टीका (पं० सोमदेव), गुणस्थान चौपई (ब्र० जिनदास) रविव्रतकथा (विद्यासागर) आदि ग्रंथों की पाण्डुलिपियां भी उल्लेखनीय हैं। भण्डार में ऐसी कितनी ही रचना जिनकी लिपि तक्षकपुर। (टोडारायसिंह) में हुई थी। इससे इस नगर की सांस्कृतिक महत्ता का स्वतः ही पता चल जाता है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह

इस मन्दिर में छोटा सा ग्रंथ भण्डार है जिसमें केवल ८१ पाडुलिपियां है जिनमें गुटके भी सम्मिलित हैं। यहां विलास संज्ञक रचनाओं का अच्छा संग्रह है जिनमें धर्म विलास (द्यानतराय) ब्रह्मविलास (भगवतीदास) सभाविलास, बनारसीविलास (बनारसीदास) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं वैसे यहां पर ग्रंथों का सामान्य संग्रह है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर राजमहल

राजमहल बनास नदी के किनारे पर टोंक जिले का एक प्राचीन कस्बा है। संवत् १६६१ में जब महाराजा मानसिंह का आमेर पर शासन था तब राजमहल भी उन्हीं के अधीन था। इसी संवत् में राजमहल में ब्रह्म जिनदास कृत हरिवंशपुराण की प्रति का लेखन हुआ था।

इस मन्दिर के शास्त्र भण्डार में २२५ हस्तलिखित पाण्डुलिपियां हैं जिनमें ब्रह्म जिनदास कृत रामरासो, मुनि शुभचन्द्र की होली कथा, त्रिलोक पाटनी का इन्द्रिय नाटक आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। भण्डार में हिन्दी के अधिक ग्रंथ है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा

दि० जैन मन्दिर में स्थित शास्त्र भण्डार नगर के प्रमुख ग्रंथ संग्रहालयों मे से है। इस भण्डार में४०५ हस्तलिखित ग्रंथों का अच्छा संग्रह है। वैसे तो यहां प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, राजस्थानी एवं हिन्दी सभी भाषाओं के ग्रंथों का संग्रह है लेकिन हिन्दी के ग्रंथों की अधिकता है। १८वीं शताब्दी में लिखे गये ग्रंथों का यहां अधिक संग्रह है इससे यह प्रतीत होता है कि इस शताब्दी में यहां का साहित्यिक वातावरण अच्छा था। महीपाल चरित (संवत् १८२६), पर्वरत्नावली (संवत् १८५१) समाधितन्त्र भाषा (संवत् १८३३) ज्ञानदर्पण-दीपचन्द्र (संवत् १८३५) आदि कितनी ही पाण्डुलिपियां यहीं लिखी गयी थी। भण्डार में सबसे प्राचीन पाण्डुलिपि आचार्य शुभचन्द्र के ज्ञानार्णव की है जिसका लेखन काल संवत् १५४८ है। पल्यविधानरास (भ० शुभचन्द्र) चन्द्रप्रभस्वामी विवाहलो (भ० नरेन्द्रकीर्ति) चेताबणी, रविव्रत कथा (मुनि सकलकीर्ति), पारवाडरो परशीलरास (कुमुदचन्द्र) नेमिविवाह पच्चीसी (वेगराज) आदि कुछ हिन्दी रचनायें इस शास्त्र भण्डार की महत्वपूर्ण कृतियां हैं जो भाषा, शैली एवं काव्यात्मक दृष्टि से अच्छी रचनायें हैं।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर बयाना

राजस्थान प्रदेश का बयाना नगर प्राचीनतम नगरों में से है। यहां का किला चतुर्थ शताब्दि से पूर्व ही निर्मित हो चुका था। डा० अल्तेकर को यहां गुप्तो कालीन स्वर्ण मुद्राएं प्राप्त हुई थी। जैन संस्कृति और साहित्य की दृष्टि से भी यह प्रदेश अत्यधिक समृद्ध रहा था। यहां के दि० जैन मन्दिर १० वीं शताब्दि के पूर्व के माने जाते हैं इस दृष्टि से यहां के शास्त्र भण्डार भी प्राचीन होने चाहिये थे लेकिन मुसलिम शासकों का यह प्रदेश सदैव कोप भाजन रहा इसलिये यहां बहुमुल्य ग्रंथ सुरक्षित नहीं रह सके।

पंचायती मन्दिर का शास्त्र भण्डार यद्यपि ग्रन्थ संख्या की दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण नहीं है लेकिन भण्डार पूर्ण व्यवस्थित है और प्रमुख रूप में हिन्दी पाण्डुलिपियों का अच्छा संग्रह है जिनकी संख्या १५० है।

इनमें व्रत विधान पूजा (हीरालाल लुहाड़िया), पद्मप्रभपुराण (जिनेंद्रभूषण) बाहुबलि छन्द (कुमुदचन्द्र) नेमिनाथ का छन्द (हेमचन्द) नेमिराजुलगीत (गुणचन्द्र) उदरगीत (छीहल) के नाम उल्लेखनीय हैं।

शास्त्र भण्डार दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना

इस मन्दिर के शास्त्र भण्डार में १५१ पाण्डुलिपियों का संग्रह है। और जो प्रायः सभी हिन्दी भाषा की है। षोडशकारणाद्यापनपूजा (सुमतिसागर) समोसरन पाठ (लल्लूलाल-रचना सं० १८३४) लीलावती भाषा (लालचन्द रचना सं० १७३६) अक्षरबावनी (केशव दास रचना संवत् १७२६) हिन्दी पद (खान मुहम्मद) आदि पाण्डुलिपियों के नाम विशेषतः उल्लेखनीय हैं।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर बैर

बयाना से पूर्व की ओर 'बैर' नामक एक प्राचीन कस्बा है, जो आजकल तहसील कार्यालय है। यह स्थान चारों ओर परकोटे से परिवेष्टित है। मुगल एवं मरहठा शासन में यह उल्लेखनीय स्थान माना जाता था। यहां एक दि० जैन मन्दिर है जिसका शास्त्र भण्डार पूर्णतः अव्यवस्थित है। कुछ कृतियां महत्वपूर्ण अवश्य हैं इसमें साधु-वंदना (आचार्य कुंवर जी रचना काल सं० १६२४) अध्यात्मक बारहखडी (दौलतराम कासलीवाल) के अतिरिक्त पं० टोडरमल, भगवतीदास, रामचन्द्र, खुशालचन्द्र आदि की कृतियों का अच्छा संग्रह है।

उदयपुर

उदयपुर अपने निर्माण काल से ही राजस्थान की सम्मानित रियासत रही। महाराणा उदयसिंह ने इस नगर की स्थापना संवत् १६२६ में की थी। भारतीय संस्कृति एवं साहित्य को यहां के शासकों द्वारा जो विशेष प्रोत्साहन मिला वह विशेषतः उल्लेखनीय है। जैन-धर्म और साहित्य के विकास की दृष्टि से भी उदयपुर का विशिष्ट स्थान है। चित्तौड़ के बाद में इसे ही सभी दृष्टियों से प्रमुख स्थान मिला। मेवाड़ के शासकों ने भी जैन-धर्म संस्कृति एवं साहित्य के प्रचार एवं प्रसार में अत्यधिक योग दिया और उन्हीं के आग्रह पर नगर में मन्दिरों का निर्माण कराया गया। शास्त्र भण्डारों में हस्तलिखित ग्रन्थों का संग्रह किया गया। इस नगर में जिन ग्रन्थों की पाण्डुलिपियां की गयी वे आज राजस्थान के कितने ही शास्त्र भण्डारों में संग्रहीत हैं। महाकवि दौलतराम कासलीवाल ने अपने जीवन की १५ शरद ऋतुएं इसी नगर में व्यतीत की थी। और जीवंधर चरित, क्रियाकोश, श्रीपालचरित जैसी रचनायें इसी नगर में रची थी। कवि ने वसुनन्दि श्रावकाचार एवं जीवंधर चरित में यहां का अच्छा उल्लेख किया है। यहां तीन मन्दिरों में शास्त्र भण्डार स्थापित किये हुए मिलते हैं। जिनका परिचय निम्न प्रकार है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन अग्रवाल मन्दिर

दि० जैन अग्रवाल मन्दिर के शास्त्र भण्डार में हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का अच्छा संग्रह है जिनकी संख्या ३८८ है। इनमें हिन्दी के ग्रन्थों की संख्या सबसे अधिक है। पूज्यपाद की सर्वार्थसिद्धि की सबसे प्राचीन पाण्डुलिपि है जो संवत् १३७० की है। इसकी प्रतिलिपि योगिनीपुर में हुई थी। महाकवि दौलतराम कासलीवाल का यह मन्दिर साहित्यिक केन्द्र था। उनके जीवंधर चरित की मूल पाण्डुलिपि इसी भण्डार में सुरक्षित है। इस शास्त्र भण्डार में वर्धमान कवि के वर्धमानरास की एक महत्वपूर्ण पाण्डुलिपि है। इसके अतिरिक्त

अकलंकयतिरास (जयकीर्ति) अजितनाथरास, अंबिकारास (ब्र० जिनदास) श्रावकाचार (धर्मविनोद) पंचकल्याणक पाठ (ज्ञानभूषण) चेतन-मोहराज संवाद (खेम सागर) आदि इस भण्डार की अलंकृत प्रतियां हैं।

शास्त्र भण्डार दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर

इस शास्त्र भण्डार में १८५ हस्तलिखित ग्रन्थों का संग्रह है जिनमें अधिकांश हिन्दी के ग्रन्थ हैं। इनमें नेमीनाथरास (ब्रह्म जिनदास) परमहंस रास (ब्रह्म जिनदास) ब्रह्म विलास (भैया भगवतीदास) बणजारागीत (कुमुदचन्द्र) दानफल रास (ब्र० जिनदास) भविष्यदत्त रास (ब्र० जिनदास) रामरास (माधवदास) आदि के नाम विशेषतः उल्लेखनीय है। भण्डार में भ० सकलकीर्ति की परम्परा के भट्टारकों एवं ब्रह्मचारियों की अधिक कृतियां हैं।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर संभवनाथ, उदयपुर

नगर के तीनों शास्त्रों में इस मन्दिर का शास्त्र भण्डार सबसे प्राचीन, महत्वपूर्ण एवं बड़ा है। भण्डार में संग्रहीत सैकड़ों पाण्डुलिपियां अत्यधिक प्राचीन है एवं उनकी प्रशस्तियां नवीन तथ्यों का उद्घाटन करने वाली है। तथा साहित्यिक दृष्टि से इतिहास को नयी दिशा देने वाली है। वैसे यहां के हस्तलिखित ग्रन्थों की संख्या ५२४ है लेकिन अधिकांश पाण्डुलिपियां १५ वीं, १६ वीं, १७ वीं, एवं १८ वीं शताब्दि की हैं। भ० ज्ञानभूषण, ब्र० जिनदास के ग्रन्थों की प्रतियों का उत्तम संग्रह है। भट्टारक सकलकीर्ति रास एक ऐतिहासिक कृति है जिसमें भ० सकलकीर्ति एवं भुवनकीर्ति का जीवन वृत्त दिया हुआ है। आचार्य जयकीर्ति द्वारा रचित रचना "सीताशीलपताकागुणवेलि" की एक सुन्दर प्रति है जिसका रचना काल सं० १६२४ है। इसी तरह ब्र० वस्तुपाल का रोहिणीव्रत (रचना संवत् १६५४) हरिवंशपुराण-अपभ्रंश (यशःकीर्ति) धर्मशर्माभ्युदय (महाकवि हरिचन्द्र) संवत् १५१४ णमोकाररास (ब्र० जिनदास) जसहरचरित्र टीका प्रभाचन्द्र (सं० १५७४) आदि पाण्डुलिपियों के नाम उल्लेखनीय है। इसी शास्त्र भण्डार में एक ऐसा गुटका भी है जिसमें ब्रह्म जिनदास की रचनाओं का प्रमुख संग्रह मिलता है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा

बसवा जयपुर प्रदेश का एक प्राचीन नगर है। इसमें हिन्दी के कितने ही विद्वानों ने जन्म लिया और अपनी कृतियों से हिन्दी भाषा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन विद्वानों में महाकवि पं० दौलतराम कासलीवाल का नाम प्रमुख है। पंडित जी ने २० से भी अधिक ग्रंथों की रचना करके इस क्षेत्र में अपना एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। सेठ अमरचन्द बिलाला भी यहीं के रहने वाले थे। यहां कितनी ही हस्तलिखित ग्रंथों की प्रतिलिपि हुई थी जो राजस्थान के विभिन्न भण्डारों में एवं विशेषतः जयपुर के भण्डारों में संग्रहीत हैं।

तेरहपंथी मन्दिर के शास्त्र भण्डार में यद्यपि ग्रंथों का संग्रह १०० से अधिक नहीं है किन्तु इस लघु संग्रह में भी कितनी ही पाण्डुलिपियां उल्लेखनीय हैं। इनमें पार्श्वनाथस्तुति (पासकवि) राजनीति सर्वैय्या (देवीदास) अध्यात्म बारहखडी (दौलतराम) आदि रचनायें उल्लेनीय हैं।

शास्त्र भण्डार दि० जैन पंचायती मंदिर बसवा

इसी तरह यहां का पंचायती मंदिर पुराना मंदिर है जिसमें १२ वीं शताब्दी की एक विशाल जिन प्रतिमा है। यहां कल्पसूत्र की दो पाण्डुलिपियां है जो स्वर्णाक्षरी हैं तथा सार्थक हैं। इनमें एक में २६ चित्र तथा दूसरे में ४२ चित्र हैं। दोनों ही प्रतियां संवत् १५३१ एवं १५२८ की लिखी गई हैं। यहां पद्मनन्दि सट्टाकाव्य की एक सटीक प्रति है जिसके टीकाकार प्रहलाद हैं। इस ग्रंथ की प्रतिलिपि संवत् १७६८ में बसवा में ही हुई थी। महाकवि श्रीधर की अपभ्रंश कृति भविसयत्त चरिउ की संवत् १४६२ की पाण्डुलिपि एवं समयसार की तात्पर्यवृत्ति की संवत् १४४० की पाण्डुलिपि उल्लेखनीय है। प्राचीन काल में यह भण्डार और महत्वपूर्ण रहा होगा ऐसी पूर्ण संभावना है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर भावडा

भादवा फुलेरा तहसील का एक छोटा सा ग्राम है। पश्चिमी रेलवे की रिवाडी फुलेरा ब्रांच लाइन पर भैंसलाना स्टेशन है। जहां से यह ग्राम तीन मील दूरी पर स्थित है। जैन दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान स्व० पं० चैनसुखदास न्यायतीर्थ का जन्म यहीं हुआ था। यहां के दि० जैन मन्दिर में एक शास्त्र है जिसमें १५० से अधिक हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह है।

शास्त्र भण्डार में हिन्दी कृतियों की अच्छी संख्या है। इनमें खानतराय का धर्म विलास, भैय्या भगवतीदास का 'ब्रह्म विलास' तथा धर्मदास का 'श्रावकाचार' के नाम विशेषतः उल्लेखनीय हैं। गुटकों में भी छोटी छोटी हिन्दी कृतियों का अच्छा संग्रह है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर डूंगरपुर

डूंगरपुर नगर प्रारम्भ से ही जैन साहित्य एवं संस्कृति का केन्द्र रहा। १५ वीं शताब्दी में जब से भट्टारक सकलकीर्ति ने यहां अपनी गादी की स्थापना की, उसी समय से यह नगर २-३ शताब्दियों तक भट्टारकों एवं समारोहों का केन्द्र रहा। संवत् १४८२ में यहां एक भव्य समारोह में सकलकीर्ति को भट्टारक के अत्यन्त सम्माननीय पद की दीक्षा दी गयी।

चऊदय व्यासीय संवति कुल दीपक नरपाल संघपति।
डूंगरपुर दीक्षा महोछव तीणि कीया ए।
श्री सकलकीर्ति सह गुरि सुकरि दीधी दीक्षा आणंदभरि।
जय जय कार सयलि सचराचइए गणधार॥

भ० सकलकीर्ति के पश्चात् यहां भुवनकीर्ति, ज्ञानभूषण, विजयकीर्ति एवं शुभचन्द्र जैसे महान् व्यक्तित्व के धनी भट्टारकों का यहां सम्मेलन रहा और इस प्रकार २०० वर्षों तक यह नगर जैन समाज की गतिविधियों का केन्द्र रहा। इसलिए नगरके महत्व को देखते हुए वर्तमान में जो यहां शास्त्र भण्डार है वह उतना महत्वपूर्ण नहीं है। यहां का शास्त्र भंण्डार दि० जैन कोटडिया मन्दिर में स्थापित किया हुआ है जिसमें हस्तलिखित ग्रंथों की संख्या ५५३ है। जिनमें चन्दनमलयगिरि कथा, आदित्यवार कथा, एवं राग रागनियों की सचित्र पाण्डुलिपियां है। इसी भण्डार में भ० जिनदास कृत रामरास की पाण्डुलिपि है जो अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इसके

अतिरिक्त ब्र० जिनदास की भी रासक कृतियों का यहां अच्छा संग्रह है। वेणीदास का सुकौशलरास, यशोधर चरित्र (परिहानन्द) सम्मेदशिखर पूजा (रामपाल) जिनदत्तरास (रत्नभूषणसूरि) रामायण छप्पय (जयसागर) आदि और भी पाण्डुलिपियों के नाम उल्लेखनीय हैं। यहां भट्टारकों द्वारा रचित रचनाओं का अच्छा संग्रह है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर मालपुरा

मालपुरा अपने क्षेत्र का प्राचीन नगर रहा था। तत्कालीन साहित्य एवं पुरातत्व को देखने से मालूम होता है कि टोडारायसिंह (तक्षकगढ) एवं चाटसू (चम्पावती) के समान ही मालपुरा भी साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का अच्छा केन्द्र रहा। जयपुर के पाटोदी के मंदिर के शास्त्र भण्डार में एक गुटका संवत् १६१६ का है जो यहीं लिखा गया था। मालपुरा का दूसरा नाम द्रव्यपुर भी था। यहां सभी जैन मन्दिर विशाल ही नहीं किन्तु प्राचीन एवं कला पूर्ण भी हैं तथा दर्शनीय हैं। ये मन्दिर नगर के प्राचीन वैभव की ओर संकेत करते हैं। यहां की दादावाड़ी ओसवाल समाज का तीर्थस्थान के रूप में प्रसिद्ध है।

यहां तीन मन्दिरों में मुख्य रूप से शास्त्र भण्डार हैं। इनके नाम हैं चौधरियों का मन्दिर, आदिनाथ स्वामी का मन्दिर तथा तेरापंथी मन्दिर। यद्यपि इन मन्दिरों में ग्रंथों की संख्या अधिक नहीं है किन्तु कुछ पाण्डुलिपियां अवश्य उल्लेखनीय हैं। इनमें ब्रह्म कपूरचन्द का पार्श्वनाथरास तथा हर्षकीर्ति के पद हैं।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर करौली

करौली राजस्थान की एक रियासत थी। आजकल यह सवाईमाधोपुर जिले का उपजिला है। १८ वीं १६ वीं शताब्दी में यहां अच्छी साहित्यिक गतिविधियां रहीं। नथमल बिलाला, विनोदीलाल, लालचन्द आदि कवियों का यह नगर केन्द्र रहा था। यहां दो मन्दिर हैं और दोनों में ही शास्त्रों का संग्रह है। इन मन्दिरों के नाम हैं दि० जैन पंचायती मन्दिर एवं दि० जैन सोगाणी मन्दिर। इन दोनों ग्रंथ भण्डारों में २७५ हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का संग्रह है। अधिकांश हिन्दी की पाण्डुलिपियां हैं। अपभ्रंश भाषा की वरांग चरित्र की पाण्डुलिपि का भी यहां संग्रह है। संवत् १८४८ में समोसरनमंगल चौबीसी पाठ की रचना करौली में हुई थी। इसकी छन्द संख्या ४०५ है। यह संभवतः नथमल बिलाला की कृति है। ग्रंथ भण्डार पूर्णतः व्यवस्थित एवं उत्तम स्थिति में है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन बीस पंथी मंदिर दौसा

दौसा ढूंढाहड प्रदेश का प्राचीन नगर रहा है। यहां पहिले मीणा जाति का शासन था और उसके पश्चात् यह कछवाहा राजपूतों की राजधानी रहा। इसका प्राचीन नाम देवगिरि था। यहां दो जैन मन्दिर है और दोनों में ही हस्तलिखित ग्रंथों का संकलन है।

इस मन्दिर के प्रमुख वेदी के पिछले भाग में अंकित लेखानुसार इस मन्दिर का निर्माण संवत् १७०१ में हुआ था। यहां के शास्त्र भण्डार में हस्तलिखित ग्रंथों की संख्या १७७ है जिनमें गुटके भी सम्मिलित हैं। अधिकांश ग्रंथ हिन्दी भाषा के हैं जिनमें परमहंस चौपई (ब्र० रायमल्ल) श्रावकाचार रास (जिणदास) यशोधर चरित्र (संस्कृत–पूर्णदेव) सम्यकत्वकौमुदी भाषा (मुनि दयानन्द) रामयश रसायन (केशराज) आदि ग्रंथों के नाम विशेषतः उल्लेखनीय हैं।

शास्त्र भण्डार दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बौसा

इस मन्दिर के शास्त्र भण्डार में हस्तलिखित ग्रंथों की संख्या १५० है लेकिन संग्रह की दृष्टि से भण्डार की सभी पाण्डुलिपियां महत्वपूर्ण हैं। अधिकांश ग्रंथ अपभ्रंश एवं हिन्दी के हैं। अपभ्रंश ग्रंथों में जिणयत्त चरित (लाखू) सुकुमाल चरित (श्रीधर) वड्ढमाणकहा (जयमित्तहल) भविसयत्तकहा (धनपाल) महापुराण (पुष्पदंत) के नाम उल्लेखनीय हैं। हिन्दी भाषा के ग्रंथों में चौदहगुणस्थान चर्चा (अजयराज पाटनी) बिलहण चौपई (संघरा) प्रियव्रतिक चौपई (समयसुन्दर सिंहासन बत्तीसी (हीर कलश) की महत्वपूर्ण पाण्डुलिपियां हैं। इसी भण्डार में तत्वार्थसूत्र की एक संस्कृत टीका संवत् १५७७ की पाण्डुलिपि भी उपलब्ध है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर

जयपुर के अधिकांश शास्त्र भण्डारों की सूची इससे पूर्व चार भागों में प्रकाशित हो चुकी है लेकिन अब भी कुछ शास्त्र भण्डार बच गये हैं। दि० जैन मन्दिर लश्कर नगर का प्रसिद्ध एवं विशाल मन्दिर है। यहां का शास्त्र भण्डार भी अच्छा है तथा सुव्यवस्थित है। पाण्डुलिपियों की संख्या ८२८ है। संग्रह अत्यधिक महत्व पूर्ण है। यह मन्दिर वर्षों तक साहित्यिक गतिविधियों का केन्द्र रहा है। दौलतराम साह ने अपने बुद्धिविलास एवं मिथ्यात्व खंडन की रचना इसी मन्दिर में बैठ कर की थी। केशरीसिंह ने भी वर्द्धमान पुराण (संवत् १८२५) की भाषा टीका इसी मन्दिर में पूर्ण की थी। यह मन्दिर बीसपंथ आम्नाय वालों का आश्रय दाता था। यहां संस्कृत ग्रंथों का भी अच्छा संग्रह उपलब्ध होता है। प्रमाणनयतत्वालोकालंकार टीका (रत्नप्रभाचार्य) आत्मप्रबोध (कुमार कवि) आप्तपरीक्षा (विद्यानन्दि) रत्नकरण्डश्रावकाचार टीका (प्रभाचन्द्र) शांतिपुराण (पं० असग) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। भट्टारक ज्ञानभूषण के आदीश्वरफाग की संवत् १५८७ की एक सुन्दर प्रति यहां के संग्रह में है।

विषय विभाजन

प्रस्तुत ग्रन्थ सूची में हस्तलिखित ग्रन्थों को २४ विषयों में विभाजित किया गया है। धर्म, आचार शास्त्र, सिद्धान्त एवं स्तोत्र तथा पूजा विषयों के अतिरिक्त पुराण, काव्य, चरित, कथा, व्याकरण, कोश, ज्योतिष, आयुर्वेद, नीति एवं सुभाषित विषयों के आधार पर ग्रन्थों की पाण्डुलिपियों का परिचय दिया गया है। इस बार संगीत, रास, फागु, बेलि एवं विलास जैसे पूर्णतः साहित्यिक विषयों से सम्बन्धित ग्रन्थों का विशेष विवरण मिलेगा। जैन भण्डारों में इन विषयों के सार्वजनिक उपयोग के ग्रन्थों की उपलब्धि से इन भण्डारों की सहज उपादेयता सिद्ध होती है। साहित्य की ऐसी एक भी विधा नहीं है जिस पर इन भण्डारों के ग्रन्थ नहीं मिलते हों इसलिये शोधार्थियों के लिये तो ये शास्त्र भण्डार साक्षात सरस्वती के वरदान के समान हैं। चाहे कोई विषय हो अथवा साहित्य की कोई विधा, ग्रन्थ भण्डारों में उन पर हस्तलिखित ग्रन्थ अवश्य मिलेंगे। रास, फागु, बेलि, गीत, विलासात्मक कृतियों के अतिरिक्त चौढालया, अष्टक, बारहमासा, द्वादशा, पच्चीसी, छत्तीसी, शतक, सतसई, आदि पचासों संख्यावाचक काव्यों का अपरिमित साहित्य इन शास्त्र भण्डारों में उपलब्ध होते हैं। यही नहीं कुछ ऐसे काव्यात्मक विषय हैं जिन पर अन्यत्र इतने विशाल रूप में साहित्य मिलना कठिन है। इनमें धमाल एवं संवादात्मक प्रमुख हैं। जैन कवियों ने अपने काव्यों की लोक प्रियता बढाने के लिये उनको नये नये नाम दिये। यह सब उनकी सूझ-बूझ का ही परिणाम है।

सैकड़ों ऐसी कृतियां हैं जो अभी तक प्रकाश में नहीं आ सकी हैं और जो कुछ कृतियां प्रकाश में आयी है उनकी भी प्राचीनतम पाण्डुलिपि का विवरण हमें ग्रन्थ सूची के इस भाग में मिलेगा। किसी भी ग्रन्थ की एक से अधिक पाण्डुलिपि मिलना निःसन्देह ही उसकी लोकप्रियता का द्योतक है। क्योंकि उस युग में ग्रन्थों का लिखवाना, शास्त्र भण्डारों में विराजमान करना एवं उन्हें जन जन को पढने के लिये देना जैनाचार्यों की एक विशेषता रही थी। ये ग्रन्थ भण्डार हमारी महान साधना के ज्वलन्त पुंज हैं।

महत्वपूर्ण साहित्य की उपलब्धि

प्रस्तुत ग्रन्थ सूची में सैकड़ों ऐसी कृतियां आयी हैं जिनका हमें प्रथम बार परिचय प्राप्त हो रहा है। ये कृतियां मुख्यतः संस्कृत, हिन्दी तथा राजस्थानी भाषा की हैं। इनमें भी सबसे अधिक कृतियां हिन्दी की हैं। वास्तव में जैन कवियों ने हिन्दी के विकास में जो योगदान दिया उसका अभी कुछ भी मूल्यांकन नहीं हो सका है। अकेले ब्रह्म जिनदास की ६० से भी अधिक रचनाओं का विवरण प्रस्तुत सूची में मिलेगा। इसी तरह और भी कितने ही कवि हैं जिनकी बीस से अधिक रचनाएं उपलब्ध होती हैं लेकिन अभी तक उनका विशद परिचय हम नहीं जान सके। यहां हम उन सभी कृतियों का संक्षिप्त रूप से परिचय उपस्थित कर रहे हैं जो हमारी दृष्टि में नयी अथवा अज्ञात रचनायें हैं। हो सकता है उनमें से कुछ कृतियों का परिचय विद्वानों को मालूम हो। यहां इन कृतियों का परिचय मुख्यतः विषयानुसार दिया जा रहा है।

१ कर्मविपाक सूत्र चौपई (८१)

प्रस्तुत कृति किस कवि द्वारा लिखी गयी थी इसके बारे में रचना में कोई उल्लेख नहीं मिलता। लेकिन कर्म सिद्धांत पर यह एक अच्छी कृति है जिसमें २४११ पद्यों में विषय का वर्णन किया गया है। चौपई की भाषा हिन्दी है जिस पर गुजराती का प्रभाव है। इसकी एकमात्र पाण्डुलिपि अजमेर के भट्टारकीय शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है।

२ कर्मविपाक रास (८२

कर्म सिद्धान्त पर आधारित रास शैली में निबद्ध यह दूसरी रचना है जिसकी दो पाण्डुलिपियां राजमहल (टोंक) के शास्त्र भण्डार में उपलब्ध होती हैं। रचना काफी बडी है तथा इसका रचना काल संवत् १८२४ है।

३ चौदह गुण स्थान वचनिका (३३२)

अक्षयराज श्रीमाल १८ वीं शताब्दि के प्रमुख हिन्दी गद्य लेखक थे। 'चौदह गुण-ठ्यान वचनिका' की कितनी ही पाण्डुलिपियां मिलती हैं लेकिन उनका आकार अलग अलग है। दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा में इसकी एक पाण्डुलिपि है जिसमें ३६६ पेज हैं। इसमें गोम्मटसार, त्रिलोकसार एवं लब्धिसार के आधार पर गुणस्थानों सहित अन्य सिद्धान्तों पर चर्चा की गयी है। वचनिका की भाषा राजस्थानी है। अक्षयराज ने रचना के अन्त में निम्न प्रकार दोहा लिख कर उसकी समाप्ति की है।

चौदह गुणस्थान कथन, भाषा सुनि सुख होय ।
अखयराज श्रीमाल ने, करी जथामति जोय ।।

४ चौबीस गुणस्थान चर्चा (३४१)

दादूपंथ के साधु गोविन्द दास की इस कृति की उपलब्धि टोडारायसिंह के दि० जैन नेमिनाथ मन्दिर के शास्त्र भण्डार में हुई है। गोविन्द दास नासरदा में रहते थे और उसी नगर में संवत १८८१ फागुण सुदी १० के दिन इसे समाप्त की गयी थी। रचना अधिक बड़ी नहीं है लेकिन कवि ने लिखा है कि संस्कृत और गाथा (प्राकृत) को समझाना कठिन है इसलिये उसने हिन्दी में रचना की है। प्रारम्भ में उसने पंच परमेष्टि को नमस्कार किया है।

५ तत्वार्थ सूत्र भाषा (५३०)

तत्वार्थ सूत्र जैनधर्म का सबसे श्रद्धास्पद ग्रन्थ है। संस्कृत एवं हिन्दी भाषा में इस पर पचासों टीकायें उपलब्ध होती हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ सूची में २०० से अधिक पाण्डुलिपियां आयी है जो विभिन्न विद्वानों की टीकाओं के रूप में है।

प्रस्तुत कृति साहिबराम पाटनी की है जो बूँदी के रहने वाले थे तथा जिन्होंने तत्वार्थ सूत्र पर विस्तृत व्याख्या संवत १८१८ में लिखी थी। बयाना के शास्त्र भाण्डार से जो पाण्डुलिपि उपलब्ध हुई है वह भी उसी समय की है जिस वर्ष पाटनी द्वारा मूल कृति लिखी गयी थी। कवि ने अपने पूर्ववर्ती विद्वानों की टीकाओं का अध्ययन करने के पश्चात् इसे लिखा था।

६ त्रिभंगी सुबोधिनी टीका (६२३)

त्रिभंगीसार पर यह पंडित आशाधर की संस्कृत टीका है जिसकी दो प्रतियां जयपुर के दि० जैन मन्दिर, लश्कर के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है। नाथूराम प्रेमी ने आशाधर के जिन १९ ग्रन्थों का उल्लेख किया है उसमें इस रचना का नाम नहीं है। टीका की जो दो पाण्डुलिपियां मिली है उनमें एक संवत् १५८१ की लिखी हुई है तथा दूसरी प्रसिद्ध हिन्दी विद्वान् जोधराज गोदीका की स्वयं की पाण्डुलिपि है जिसे उन्होंने मालपुरा में स्थित किसी श्वेताम्बर बन्धु से ली थी।

धर्म एवं आचार शास्त्र

७ क्रियाकोश भाषा (९९६)

यह महाकवि दौलतराम कासलीवाल की रचना है जिसे उन्होंने संवत १७९५ में उदयपुर नगर में लिखा था। प्रस्तुत पाण्डुलिपि स्वयं महाकवि की मूल प्रति है जो इतिहास एवं साहित्य की अमूल्य धरोहर है। उस समय कवि उदयपुर नगर में जयपुर महाराजा की ओर से वकील की पद पर नियुक्त थे।

८ चतुर चितारणी (१०५८)

प्रस्तुत लघु कृति महाकवि दौलतराम की कृति है जिसकी एक मात्र पाण्डुलिपि उदयपुर के दि० जैन अग्रवाल मन्दिर में उपलब्ध हुई है। महाकवि का यही मन्दिर काव्य साधना का केन्द्र था। रचना का दूसरा नाम भवजलतारिणी भी दिया हुआ है। यह कवि की संबोधनात्मक कृति है।

९ ब्रह्म बावनी (१४५७)

ब्रह्म बावनी एक आध्यात्मिक कृति है। इसके कवि निहालचन्द है जो संभवतः बंगाल में किसी कार्यवश गये थे और वहीं मकसूदाबाद में उन्होंने इसकी रचना की थी। वैसे कवि कानपुर के पास की छावनी में रहते थे इनकी एक और कृति नयचक्रभाषा प्रस्तुत सूची के २३३४ संख्या पर आती है जिसमें कवि ने अपना संक्षिप्त परिचय दिया हैं। नयचक्रभाषा संवत् १८६७ की कृति है इसलिये ब्रह्म बावनी इसके पूर्व की रचना होनी चाहिये क्योंकि उन्होंने उसे धर्म के साथ बैठ कर लिखने का उल्लेख किया है। बावनी एक लघुकृति है लेकिन आध्यात्मिक रस से ओत प्रोत है।

१० मुक्ति स्वयंबर (१५३९)

मुक्ति स्वयंबर एक रूपक काव्य है जिसमें मोक्ष रूपी लक्ष्मी को प्राप्त करने के लिये स्वयंबर रचे जाने का रूपक बांधा गया है। यह रचना काफी बड़ी है तथा २१८ पृष्ठों में समाप्त होती है। रूपककार वेणीचन्द कवि है जिन्होंने इसे लश्कर में प्रारम्भ किया था और जिसकी समाप्ति इन्दौर नगर में हुई थी। वैसे कवि ने अपने को फलटन का निवासी लिखा है और मलूकचन्द का पुत्र बतलाया हैं। रूपक काव्य का रचना काल संवत् १९३४ है। इस प्रकार कवि ने हिन्दी जैन रूपक काव्यों की परम्परा में अपनी एक रचना और जोड़ कर उसके विकास में योग दिया है।

११ वसुनन्दि श्रावकाचार भाषा (१६६४)

वसुनन्दि श्रावकाचार पर प्रस्तुत भाषा वचनिका ऋषभदास कृत है जो झालरापाटन (राजस्थान) के निवासी थे। कवि हूंमड़ जाति के श्रावक थे। इनके पिता का नाम नाभिदास था। इस ग्रन्थ की रचना करने में आमेर के भट्टारक देवेन्द्र कीर्ति की प्रेरणा का कवि ने उल्लेख किया है। भाषा टीका विस्तृत है जो ३४७ पृष्ठों में पूर्ण होती है। इसका रचनाकाल संवत १९०७ है जिसका उल्लेख निम्न प्रकार हुआ है—

ऋषि पूरण नव एक पुनि, माघ पूनि शुभ श्वेत।
जया प्रथा प्रथम कुजवार, मम मंगल होय निकेत॥

कवि ने झालरापाटन स्थित शांतिनाथ स्वामी तथा पार्श्वनाथ एवं ऋषभदेव के मन्दिरका भी उल्लेख किया है।

१२ श्रावकाचार रास (१७०२)

पद्मा कवि ने श्रावकाचार रास की रचना कब की थी उसने इसका कोई उल्लेख नहीं किया है। इसमें पद्यात्मक रूप से श्रावक धर्म का वर्णन किया गया है। रास भाषा, शैली एवं विषय वर्णन की दृष्टि से उत्तम कृति है। इसकी एक अपूर्ण प्रति दि० जैन मन्दिर कोटा के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है।

१३ सुख विलास (१७९१)

जोधराज कासलीवाल हिन्दी के प्रसिद्ध महाकवि दौलतराम कासलीवाल के सुपुत्र थे। अपने पिता के समान ही जोधराज भी हिन्दी के अच्छे कवि थे। सुख विलास में कवि की रचनाओं का संकलन है। उनका यह

काव्य संवत् १८८४ में समाप्त हुआ था जब कवि की अन्तिम अवस्था थी। दौलतरामजी के मरने के पश्चात् जोधराज किसी समय कामां नगर में चले गये होंगे। कवि ने कामां नगर के वर्णन के साथ ही वहां के जैन मन्दिरों का भी उल्लेख किया है। कामां उस समय राजस्थान का अच्छा व्यापारिक केन्द्र था इसलिए कितने ही विद्वान भी वहां जाकर रहने लगे थे। सुख विलास की तीनों ही प्रतियां भरतपुर के पंचायती मन्दिर के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत हैं।

सुख विलास गद्य पद्य दोनों में ही निबद्ध है। कवि ने इसे जीवन को सुखी करने वाले की संज्ञा दी है।

सुख विलास इह नाम है सब जीवन सुखकार।
या प्रसाद हम हूं लहैं निज आतम सुखकार।।

अध्यात्म चिंतन एवं योग

१४ गुण विलास (१९८८)

विलास संज्ञक रचनाओं में नथमल बिलाला कृत गुण विलास का नाम उल्लेखनीय है। गुण विलास के अतिरिक्त इनकी 'बोर विलास' संज्ञक एक कृति और है जो एक गुटके में (पृष्ठ संख्या ९६२) संग्रहीत है। गुण विलास में कवि की लघु रचनाओं का संग्रह है। यह संकलन संवत् १८२२ में समाप्त हुआ था। कवि की कुछ प्रमुख रचनाओं में जीवन्धर चरित्र, नागकुमार चरित्र, सिद्धान्तसार दीपक आदि के नाम उल्लेखनीय है। वैसे कवि भरतपुर में अर्थोपार्जन के लिए आकर रहने लगे थे और संघ के साथ श्रीमहावीरजी की यात्रा पर गये थे।

१४ समयसार टीका (२२८७)

भट्टारक शुभचन्द्र १६-१७ वीं शताब्दी के महान् विद्वान थे। संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, गुजराती भाषा पर उनका पूर्ण अधिकार था। अब तक शुभचन्द्र की जितनी कृतियां मिली हैं उनमें समयसार टीका का नाम नहीं लिया जाता था। इसलिए प्रस्तुत टीका की उपलब्धि प्रथम बार हुई है। टीका विस्तृत है और कवि ने इसका नाम अध्यात्मतरंगिणी दिया है। कवि ने टीका के अन्त में विस्तृत प्रशस्ति दी है जिसके अनुसार इसका रचना काल संवत् १५७३ है। इस टीका की एक मात्र प्रति शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर कामां में संग्रहीत है। इसका प्रकाशन होना आवश्यक है।

१५ षटपाहुड भाषा (२२५६)

षट्पाहुड पर प्रस्तुत टीका पं० देवीदास छाबड़ा कृत है। जिसे इन्होंने संवत् १८०१ सावण सुदी १३ के दिन समाप्त की थी। देवीसिंह प्राकृत, संस्कृत एवं हिन्दी के अच्छे विद्वान थे तथा भाषा टीकाएं लिखने में उन्हें विशेष रुचि थी। षट्पाहुड पर उनकी यह टीका हिन्दी पद्य में है। जिसमें कवि ने आचार्य कुन्दकुन्द के भावों को ज्यों का त्यों भरने का प्रयास किया है। भाषा, भावशैली की दृष्टि से यह टीका अत्यधिक महत्व पूर्ण है।

१६ ज्ञानार्णव गद्य टीका

आचार्य शुभचन्द्र के ज्ञानार्णव पर संस्कृत और हिन्दी की कितनी ही टिकाएं उपलब्ध होती हैं। इनमें ज्ञानचन्द द्वारा रचित हिन्दी गद्य टीका उल्लेखनीय है। टीका का रचना काल सं० १८६० माघ सुदी २ है। टीका की भाषा पर राजस्थानी का स्पष्ट प्रभाव है। इसकी एक प्रति दि० जैन मन्दिर कोटडियान डूंगरपुर में संग्रहीत है।

१७ चेतावणी ग्रंथ (२००२)

यह कविवर रामचरण की कृति है जो राजस्थानी भाषा में निबद्ध है। कवि ने इसमें प्रत्येक व्यक्ति को सजग रहने की चेतावनी दी है। कृति का उद्देश्य सोते हुए प्राणियों को जगाने जा रहा है। इसमें २१ पद्य हैं जिसमें कवि ने स्पष्ट शब्दों में विषय का विवेचन किया है। भाषा भाव एवं शैली की दृष्टि से रचना उत्तम है। इसकी एक मात्र प्रति दि० जैन मन्दिर कोटा के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है।

१८ परमार्थशतक (२०६६)

परमार्थ शतक भैय्या भगवतीदास की है जो प्रथम बार उपलब्ध हुई है। रचना पूर्णतः आध्यात्मिक है जिसकी एक मात्र पाण्डुलिपि पंचायती मन्दिर भरतपुर में संग्रहीत है।

१९ समयसार वृत्ति (२३०५)

समयसार पर पं० प्रभाचन्द्र कृत संस्कृत टीका की एक मात्र पाण्डुलिपि भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर के शास्त्र भण्डार में उपलब्ध हुई है। प० प्रभाचन्द्र ने कितने ही ग्रंथों पर संस्कृत टीकायें लिखकर अपनी विद्वत्ता का प्रदर्शन ही नहीं किया किन्तु स्वाध्याय प्रेमियों के लिये भी कठिन ग्रंथों के अर्थ को सरल बना दिया। श्री नाथूराम प्रेमी ने समयसार वृत्ति का "जैन साहित्य और इतिहास" में उल्लेख अवश्य किया है, लेकिन उन्हें भी इसकी पाण्डुलिपि उपलब्ध नहीं हो सकी थी। प्रस्तुत प्रति संवत् १६०२ मंगसिर सुदी ८ की लिपिबद्ध की हुई है। वृत्ति प्रकाशन योग्य है।

२० समयसार टीका (२३०६)

भ० देवेन्द्रकीर्ति आमेर गादी भट्टारक थे। वे भट्टारक के साथ २ साहित्य प्रेमी भी थे। आमेर शास्त्र भण्डार की स्थापना एवं उनके विकास में भ० देवेन्द्रकीर्ति का प्रमुख हाथ रहा था। समयसार पर उनकी यह टीका यद्यपि अधिक बड़ी नहीं है। किन्तु मौलिक तथा सार गर्भित है। इस टीका से पता लगता है कि समयसार जैसे आध्यात्मिक ग्रंथ का भी इस युग में कितना प्रचार था। इसकी एक मात्र पाण्डुलिपि शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी में संग्रहीत है। इसका टीका काल संवत् १७८८ भादवा सुदी १४ है।

२१ सामायिक पाठ भाषा (२५२१)

श्यामराम कृत सामायिक पाठ भाषा की पाण्डुलिपि प्रथम बार उपलब्ध हुई है। इसका रचनाकाल सं० १७४६ है। कृति की पाण्डुलिपि दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर में संग्रहीत है। रचना अच्छी है।

पुराण साहित्य

२२ पद्मचरित टिप्पण (२८७१)

रविषेणाचार्य कृत पद्मचरित पर श्रीचन्द मुनि द्वारा लिखा हुआ यह टिप्पण है। टिप्पण संक्षिप्त है और कुछ प्रमुख एवं कठिन शब्दों लिखा गया है। प्रस्तुत पाण्डुलिपि संवत् १५११ की है जो जयपुर के लश्कर के मन्दिर में संग्रहीत है। श्रीचन्द मुनि अपभ्रंश भाषा की रचना रत्नकरण्ड के कर्त्ता थे जो १२ वीं शताब्दी के विद्वान थे।

२३ पार्श्वपुराण (३००६)

अपभ्रंश के प्रसिद्ध कवि रइधू विरचित पार्श्वपुराण की एक प्रति शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा में संग्रहीत है। पार्श्वपुराण अपभ्रंश की सुन्दर कृति है।

२४ पुराणसार (३०१३)

सागर सेन द्वारा रचित पुराणसार की एक मात्र पाण्डुलिपि शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर अजमेर में संग्रहीत है। कवि ने रचनाकाल का उल्लेख नहीं किया है लेकिन यह संभवतः १५ वीं शताब्दि की रचना मालूम पड़ती है। कृति अच्छी है। भट्टारक सकलकीर्ति ने जो पुराणसार ग्रंथ लिखा है सम्भवतः वह इस कृति के आधार पर ही लिखा गया था।

२५ वर्धमानपुराण भाषा (३०८२)

वर्द्धमान स्वामी के जीवन पर हिन्दी में जो काव्य लिखे गये हैं वे अभी तक प्रकाश में नहीं आये हैं। इसी ग्रंथ सूची में वर्द्धमान पर कुछ काव्य मिले हैं और उनमें नवलराम विरचित वर्धमान पुराण भाषा भी एक काव्य है। यह काव्य संवत् १६९१ का है। महाकवि बनारसीदास जब समयसार नाटक लिख रहे थे तभी भगवान महावीर पर यह काव्य लिखा जा रहा था। नवलराम बुंदेलखंड के निवासी थे और मुनि सकलकीर्ति के उपदेश से नवलराम एवं उनके पुत्र दोनों ने मिल कर इस काव्य की रचना की थी। काव्य विस्तृत है तथा उसकी एक प्रति दि० जैन पंचायती मन्दिर कामां में उपलब्ध होती है।

२६ वर्धमानपुराण (३०७०)

वर्धमान स्वामी के जीवन पर यह दूसरी कृति है जिसे कविवर नवल शाह ने संवत् १८२५ में समाप्त की थी। इसमें १६ अधिकार हैं। पुराण में भगवान महावीर के जीवन पर अत्यधिक सुन्दर रीति से वर्णन किया गया है। इस पुराण की प्रति बयाना एवं दो प्रतियां फतेहपुर शेखावाटी के शास्त्र भण्डार में उपलब्ध होती हैं। कवि ने पुराण के अन्त में रचना काल निम्न प्रकार दिया है—

उज्जयंत विक्रम नृपति, संवत्सर गिनि तेह।
सत अठार पच्चीस अधिक, समय विकारी एह॥

२७ शांतिनाथ पुराण (३०६५)

यह ठाकुर कवि की रचना है जिसकी जानकारी हमें प्रथम बार प्राप्त हुई है। हिन्दी भाषा में शान्तिनाथ पर यह पुराण सर्वाधिक प्राचीन कृति है जिसका रचनाकाल संवत् १६५२ है। इस पुराण की एक मात्र पाण्डुलिपि अजमेर के भट्टारकीय शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है।

२८ शान्तिपुराण (३०६४)

महापंडित आशाधर विरचित शान्तिपुराण संस्कृत का अच्छा काव्य है। कवि ने इसकी प्रशस्ति में अपना विस्तृत परिचय दिया है। श्री नाथूराम प्रेमी ने आशाधर की जिन रचनाओं के नाम गिनाये हैं उसमें इस पुराण का नाम नहीं लिया गया है। इसकी एक प्रति जयपुर के दि० जैन मन्दिर लश्कर में संग्रहीत है। पुराण प्रकाशन योग्य है।

काव्य एवं चरित्र

२९ जीवन्धर चरित (३३५९)

महाकवि बोलतराम कासलीवाल की पहिले जिन कृतियों एवं काव्यों का उल्लेख मिलता था उनमें जीवन्धर चरित का नाम नहीं था। उदयपुर के अग्रवाल दि० जैन मन्दिर में जब हम लोग ग्रंथों की सूची का कार्य कर रहे थे। तभी इसकी एक अस्त व्यस्त प्रति पं० अनूपचंद जी न्यायतीर्थ को प्राप्त हुई। कवि का यह एक हिन्दी का अच्छा काव्य है जो पांच अध्यायों में विभक्त है। कवि ने अपने इस काव्य को नवरस पूर्ण कहा है जिसे कालाडेहरा के श्री चतुरभुज अग्रवाल एवं पृथ्वीराज तथा सागवाड़ा के निवासी श्रीवेलजी हूंबड़ के अनुरोध पर उदयपुर प्रवास में संवत् १८०५ लिखकर मां भारती को भेंट की थी। उदयपुर में अग्रवाल दि० जैन मन्दिर के शास्त्र भण्डार में जो प्रति प्राप्त हुई थी, वह कवि की मूल पांडुलिपि है जिससे इसका महत्व और भी बढ़ गया है। काव्य प्रकाशन होने योग्य है।

३० जीवंधर चरित (३३५८)

महाकवि रइधू द्वारा विरचित जीवन्धर चरित अपभ्रंश की विशिष्ट रचना है। इस काव्य की एक प्रति दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है। पाण्डुलिपि प्राचीन है और संवत् १६५८ में लिपि बद्ध की हुई है। यह काव्य प्रकाशन योग्य है।

३१ जीवन्धर चरित्र प्रबन्ध (३३६०)

जीवन्धर चरित्र हिन्दी भाषा का प्रबन्ध काव्य है जिसे भट्टारक यश: कीर्ति ने छन्दोबद्ध किया था यश:कीर्ति भट्टारक चन्द्रकीर्ति के प्रशिष्य एवं भट्टारक रामकीर्ति के शिष्य थे। ये हिन्दी के अच्छे विद्वान थे। प्रस्तुत काव्य हिन्दी को कोई बड़ा काव्य नहीं है किन्तु भाषा एवं शैली की दृष्टि से काव्य उल्लेखनीय है। इसकी एक पाण्डुलिपि उदयपुर के संभवनाथ मन्दिर के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है। इसकी रचना संवत् १८७१ में हुई थी। कवि ने गुजरात देश के ईडर दुर्ग के पास भोलोडा ग्राम में इसे समाप्त किया था। उस ग्राम में चन्द्रप्रभ स्वामी का मन्दिर था और वही इस प्रबन्ध का रचना स्थल था।

संवत अठारासं इकहोत्तरं भादवा सुदी दशमी गुरुवार रे ।
ए प्रबंध पुरो करो प्रणमी जिन गुरु पाय रे ।
गुर्जर देश में सोभतो ईडर गढ ने पास रे ।
भीलोडी नुग्राम है तिहा श्रावक नो सुभवासरे ।
चन्द्रप्रभ जिनधाम है ते भव्य पूजे जिन पाय रे ।
तिहां रहिने रचना करी, यशकीर्ति सुरी राय रे ।

३२ धर्मशर्माभ्युदय टीका (३४६१)

धर्मशर्माभ्युदय संस्कृत भाषा के श्रेष्ठ महाकाव्यों में से है । यह महाकवि हरिचन्द की रचना है और प्राचीन काल में इसके पठन पाठन का अच्छा प्रचार था । इसी महाकाव्य पर भट्टारक यशःकीर्ति की एक विस्तृत टीका अजमेर के शास्त्र भण्डार में उपलब्ध हुई है जिसका संदेहध्वान्त दीपिका नाम दिया गया है । टीका विद्वत्तापूर्ण है तथा उसमें काव्य के कठिन शब्दों का अच्छा खुलासा किया गया है ।

३३ नागकुमार चरित (३४८०)

नथमल विलाला कृत नागकुमार चरित हिन्दी की अच्छी कृति है जिसकी पाण्डुलिपियां राजस्थान के विभिन्न शास्त्र भण्डारों में उपलब्ध होती है । प्रस्तुत पाण्डुलिपि स्वयं नथमल विलाला द्वारा लिपिबद्ध है । इसका लेखन काल संवत् १८२९ है ।

प्रथम जेठ पूनम सुदी सहस्त्र राश्या वर वार ।
ग्रंथ सुलिख पूरन कियो हीरापुरी मंझार ।
नथमल नै निजकर थकी ग्रंथ लिख्यो धर प्रीत ।
भूल चूक यामें लखो तो सुध कीजो मीत ।

३४ बारा आरा महा चौपई बंध (३६६०)

भट्टारक सकलकीर्ति की परम्परा में होने वाले भट्टारक रामकीर्ति के प्रशिष्य एवं पद्मनन्दि के शिष्य ब्र० रूपजी की उक्त कृति एक ऐतिहासिक कृति है जिसमें २४ तीर्थंकरों का शरीर, आयु वर्ण आदि का वर्णन है । इसमें तीन उल्लास है । यह कवि की मूल पाण्डुलिपि है जिसे उसे महिसाना नगर के आदि जिन चैत्यालय में छन्दोबद्ध किया था । इस चौपई की एक प्रति उदयपुर के संभवनाथ मन्दिर में उपलब्ध होती है ।

३५ भोज चरित्र (३७२१)

हिन्दी भाषा में भोज चरित्र भवानीदास व्यास की रचना है । यह एक ऐतिहासिक कृति है जिसमें राजा भोज का जीवन निबद्ध है । कवि ने इसका निम्न प्रकार उल्लेख किया है—

पढ जोधाण सतोल धाम आई विलाडे ।
पीर पाठ कल्याण सुजस गुण गीत गवाडे ।।

भोज चरित तिन सौ कह्यो कवियण सुख पावै ।।
व्यास भवानीदास कवित कर बात सुणावे ।।
सुणी प्रबंध चारण मते भोजराज बीन कह्यो ।
कल्याणदास भूपाल को धर्म ध्वजा धारी कह्यो ।

३६ यशोधर चरित्र (३८२४)

महाराजा यशोधर के जीवन पर सभी भाषाओं में अनेक काव्य लिखे गये हैं। हिन्दी में भी विभिन्न कवियों ने रचना करके इस कथा के लोकप्रियता में अभिवृद्धि की है। इन्हीं काव्यों में हिन्दी कवि देवेन्द्र कृत यशोधर चरित भी है जिसकी पाण्डुलिपियां डूंगरपुर के शास्त्र भण्डार में उपलब्ध हुई है। काव्य काफी बडा है। इसका रचनाकाल संवत् १६८३ है। देवेन्द्र कवि विक्रम के गुरु थे जो स्वयं भी संस्कृत एवं हिन्दी के अच्छे कवि थे। विक्रम एवं गंगाधर दो भाई थे जो जैन ब्राह्मण थे। गुजरात के कुतलूखां के दरबार में जैनधर्म की प्रतिष्ठा बढाने का श्रेय ब्र० शांतिदास को था और उसी के प्रभाव के कारण विक्रम के माता पिता ने जैनधर्म स्वीकार किया था। इन्हीं के सुत देवेन्द्र ने महुआ नगर में यशधोर की रचना की थी।

संवत १६ आठ बीसि आसो सुदी बीज शुक्रवार तो
रास रच्यो नवरस भर्यो महुआ नगर मझार तो।

कवि ने अपनी कृति को नवरस से परिपूर्ण कहा है।

३७ रत्नपाल प्रबन्ध (३८८८)

रत्नपाल प्रबन्ध हिन्दी की अच्छी कृति है जो ब्र० श्रीपती द्वारा रची गयी थी। इसका रचनाकाल सं० १७३२ है। भाषा एवं शैली की दृष्टि से रचना उत्तम प्रबन्ध काव्य है तथा प्रकाशन योग्य है।

३८ विक्रम चरित्र चौपई (३९३१)

भाउ कवि हिन्दी के लोकप्रिय कवि थे। उनकी रविव्रतकथा हिन्दी की अत्यधिक लोकप्रिय रचना रही है। विक्रमचरित्र चौपई उनकी नवीन रचना है। जिसकी एक पाण्डुलिपि दबलाना के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है। रचना काल संवत् १५८८ है। इस रचना से भाउ कवि का समय भी निश्चित हो जाता है। कवि ने रचना काल का उल्लेख निम्न प्रकार किया है—

संवत् पनर अठासिइ तिथि बलि तेरह हुंति
मंगसिर मास जाण्यो रविवार जते हुंति।
चडी तणइ पसाउ सचउउ प्रबन्ध प्रमाण।
उवझाय भावै भणइ बातज आवा ठाण।।

३९ शांतिनाथ चरित्र भाषा (३९६५)

सेवाराम पाटनी हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे। शांतिनाथ चरित्र उनके द्वारा लिखा हुआ विशिष्ट काव्य है। कवि महापंडित टोडरमल के समकालीन विद्वान् थे। उनको उन्होंने पूर्ण आदर के साथ उल्लेख किया

है। इन्हीं के उपदेश से सेवाराम काव्य रचना की ओर प्रवृत्त हुए थे। शांतिनाथ चरित्र हिन्दी का अच्छा काव्य है जो २३० पद्यों में समाप्त होता है। सेवाराम ढूंढाहड देश में स्थित देव्याड (देवली) नगर के रहने वाले थे। कवि ने काव्य के अन्त में निम्न प्रकार उल्लेख किया है--

देश ढूंढाहड आदि दे संबोधे बहुदेश।
रच्यो रची ग्रन्थ कठिन टोडरमल महेश।
ता उपदेश लवांस लही सेवाराम सयान।
रच्यो ग्रंथ रुचिमान के हर्ष हर्ष अधिकान ॥२३॥
संवत् अष्टादश शतक पुनि चौतीस महान।
सावन कृष्णा अष्टमी पूरन कियो पुरान।
अति अपार सुखसो बसे नगर देव्याढ सार।
श्रावक बसे महाधनी दान पूज्य मतिधार ॥२४॥

४० श्रीपाल चरित्र (४०५०)

श्रीपाल चरित्र ब्रह्म चन्द्रसागर की कृति है जो भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति के प्रशिष्य एवं सकलकीर्ति के शिष्य थे। जो काष्ठासंघ के रामसेन के परम्परा के भट्टारक थे। कवि ने सुरेन्द्रकीर्ति एवं सकलकीर्ति दोनों की प्रशंसा की है तथा अपनी लघुता प्रकट की है। काव्य की रचना सोजत नगर में संवत् १८२३ में समाप्त हुई थी।

सोजत्या नगर सोहामणु दीसे ते मनोहार।
सासन देवी ने देहरें परतापुरे अपार।
सकलकीर्ति तिहां राजता छाजता गुण भंडार।
ब्रह्म चन्दसागर रचना रची तिहां वेसी मानाहार ॥३०॥

चरित्र की भाषा एवं शैली दोनों ही उत्तम है तथा वह विविध छन्दों में निर्मित की गयी है। इसकी एक प्रति फतेहपुर के शास्त्र भण्डार में उपलब्ध होती है।

४१ श्रेणिक चरित्र (४१०३)

श्रेणिक चरित्र महाकवि दौलतराम कासलीवाल की कृति है। अब तक जिन काव्यों का विद्वत जगत को पता नहीं था उनमें कवि की यह कृति भी सम्मिलित है। लेकिन ऐसा मालूम पड़ता है कि कवि के पद्मपुराण, हरिवंशपुराण, आदिपुराण, पुण्यास्रव कथाकोश एवं अध्यात्मबारहखड़ी जैसी वृहद कृतियों के सामने इस कृति का अधिक प्रचार नहीं हो सका इसलिए इसकी पाण्डुलिपियां भी राजस्थान के बहुत कम भण्डारों में मिलती है।

श्रेणिक चरित्र कवि का लघु काव्य है जिसका रचनाकाल संवत् १७८२ चैत्र सुदी पंचमी है।

संवत सतरैसै बीयासी, श्री चैत्र सुकल तिथि जान।
पंचमी दीने पूरण करी, वार चंद्र पंचान ॥

कृति ५०० पद्यों में समाप्त होती है जिसमें दोहा, चौपई, छन्द प्रमुख है। रचना की भाषा अधिक परिष्कृत नहीं है। इसकी एक प्रति दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर में संग्रहीत है।

४२ सुदर्शन चरित्र भाषा (४१८८)

सुदर्शन के जीवन पर महाकवि नयनन्दि ने अपभ्रंश भाषा में संवत् ११०० में महाकाव्य लिखा था। उसी को देख कर जैनन्द ने संवत् १६३३ में आगरा नगर में प्रस्तुत काव्य को पूर्ण किया था। जैनन्द ने भट्टारक यशःकीर्ति क्षेमकीर्ति तथा त्रिभुवनकीर्ति का उल्लेख किया है। इसी तरह बादशाह अकबर एवं जहांगीर के शासन का भी वर्णन किया है। काव्य यद्यपि अधिक बड़ा नहीं है किन्तु भाषा एवं वर्णन की दृष्टि से काव्य अच्छा है। काव्य की छन्द संख्या २०६ है। काव्य के प्रमुख छन्द दोहा, चौपई एवं सोरठा है। कवि ने निम्न छन्द लिख कर अपनी लघुता प्रकट की है।

छंद भेद पद भेद हौं, तो कछु जानें नांहि।
ताकौ कियो न खेद, कथा मई निज भक्ति वस॥

४३ श्रेणिक प्रबन्ध (४१०५)

कल्याणकीर्ति की एक रचना चारुदत्त चरित्र का परिचय हम ग्रंथ सूची के चतुर्थ भाग में दे चुके हैं। यह कवि की दूसरी रचना है जिसकी उपलब्धि राजस्थान के फतेहपुर एवं बूंदी के भण्डारों में हुई है। कवि भट्टारक सकलकीर्ति की परम्परा में होने वाले भट्टारक देवकीर्ति के शिष्य थे। कवि ने इस प्रबन्ध को बागड प्रदेश के कोटनगर के श्रावक विमल के आग्रह से आदिनाथ मन्दिर में समाप्त की थी। रचना गीतात्मक है तथा प्रकाशन योग्य है।

कथा साहित्य

४४ अनिरुद्ध हरण-उषा हरण (४२२३)

यह रत्नभूषण की कृति है जो भट्टारक ज्ञानभूषण के शिष्य एवं भ० सुमतिकीर्ति के परम प्रशंसक थे। अनिरुद्ध हरण की रचना भ० ज्ञानभूषण के उपदेश से ही हो सकी थी ऐसा कवि ने उल्लेख किया है। कवि ने कृति का रचनाकाल नहीं दिया है लेकिन भट्टारक ज्ञानभूषण के समय को देखते ही हुए यह कृति संवत् १५६० से पूर्व की होनी चाहिए। अनिरुद्ध हरण की भाषा पर मराठी भाषा का प्रभाव है कवि ने रचना को "रचना इ बहुरस कहु" बहुरस भरी कहा है। अनिरुद्ध प्रद्युम्न के पुत्र थे। कवि ने काव्य का नाम ऊषा हरण न देकर अनिरुद्धहरण दिया है।

४५ अनिरुद्ध हरण (४२२४)

अनिरुद्ध के जीवन पर यह दूसरा हिन्दी काव्य है जो ब्रह्म जयसागर की कृति है। ब्रह्म जयसागर भट्टारक महीचन्द्र के शिष्य थे। ये सिंहपुरा जाति के श्रावक थे तथा हांसोर नगर में इन्होंने इस काव्य को संवत् १७३२ में समाप्त किया था। इसमें चार अधिकार हैं। इस रचना की भाषा राजस्थानी है तथा उस पर गुजराती का प्रभाव है। रत्नभूषण सूरि के अनिरुद्ध हरण से यह रचना बड़ी है।

अनिरुद्ध हरणज में करयु दुःख हरण ए सार ।
सांभलां सुख ऊपजे कहे जयसागर ब्रह्मचार जी ॥

४६ अभयकुमार प्रबन्ध (४२२६)

उक्त प्रबन्ध पदमराज कृत हिन्दी काव्य है जिसमें अभयकुमार के जीवन पर प्रकाश डाला गया है। पदमराज खरतर गच्छ के आचार्य जिनहंस के प्रशिष्य एवं पुण्य सागर के शिष्य थे। जैसलमेर नगर में ही इसकी रचना समाप्त हुई थी। प्रबन्ध का रचनाकाल संवत १६५० है। रचना राजस्थानी भाषा की है।

४७ आदित्यवार कथा (४२५१)

प्रस्तुत कथा पं० गंगादास की रचना है जो कारंजा के भट्टारक धर्मचन्द्र के शिष्य थे। आदित्यवार कथा एक लोकप्रिय कृति है जिसे उन्होंने संवत १७५० में समाप्त किया था। कथा की दो सचित्र प्रतियां उपलब्ध हुई हैं जिनमें एक भट्टारकीय दि०जैन मन्दिर अजमेर में तथा दूसरी डूंगरपुर के शास्त्र भण्डार में उपलब्ध हुई है। दोनों ही सचित्र प्रतियां अत्यधिक कलात्मक हैं। डूंगरपुर वाली प्रति में स्वयं पं० गंगादास एवं भ० धर्मचन्द्र के चित्र भी हैं। कथा की रचना शैली एवं वर्णन शैली दोनों ही अच्छी है।

४८ कथा संग्रह (४२०८)

भट्टारक विजयकीर्ति अजमेर गादी के प्रसिद्ध भट्टारक थे। वे सन्त के साथ साथ विद्वान् एवं कवि भी थे इनकी दो रचनायें करणामृत पुराण एवं श्रेणिक चरित्र पहिले ही उपलब्ध हो चुकी हैं। कथा संग्रह इनकी तीसरी रचना है। इसका रचनाकाल संवत १८२७ है। इस कथा संग्रह में कनक कुमार, धन्य कुमार, तथा शालिभद्र की कथाएं चौपई छन्द में निबद्ध हैं। रचना की एक पाण्डुलिपि भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर में संग्रहीत है।

४९ चन्द्रप्रभ स्वामीनो विवाह (४२२६)

प्रस्तुत कृति भ० नरेन्द्रकीर्ति की है जिसे उन्होंने संवत १६०२ में छन्दोबद्ध किया था। कवि ने इस काव्य को गुजरात प्रदेश के महसाना नगर में समाप्त किया था। ये भट्टारक सुमतिकीर्ति के गुरु भ्राता भट्टारक सकलभूषण के शिष्य थे। विवाहलो भाषा एवं वर्णन शैली की दृष्टि से सामान्य है इसकी एक पाण्डुलिपि कोटा के बोरसली के मन्दिर में उपलब्ध हुई है।

५० सम्यक्त्व कौमुदी (४८२८)

जगतराय की सम्यक्त्व कौमुदी कथा हिन्दी कथा कृतियों में अच्छी कृति है। इसमें विभिन्न कथाओं का संग्रह है। कवि आगरे के निवासी थे। कवि की पद्मनन्दि पंचविंशतिका, आगमविलास आदि पहिले ही उपलब्ध हो चुकी हैं। रचना सामान्यतः अच्छी है।

५१. होली कथा (४६००)

यह मुनि शुभचन्द्र की कृति है। जो आमेर गादी के भट्टारक जगतकीर्ति के शिष्य थे। मुनि श्री हडोती प्रदेश के कुजडपुर में रहते थे। वहाँ चन्द्रप्रभ स्वामी का चैत्यालय था और उसी में इस रचना को छन्दोबद्ध किया गया था। रचना भाषा की दृष्टि से अच्छी कथा कृति है। इसकी रचना धर्मपरीक्षा में वर्णित कथा के अनुसार की गयी है।

मुनि शुभचन्द करी या कथा, धर्म परीक्षा में ली जथा।
होली कथा सुने जे कोई, मुक्ति तणा सुख पावे सोय।
संवत सतरासें पार जोर, वर्ष पचावन अधिक ओर ॥ १२६ ॥

५२ वचन कोश (५२३२)

बुलाकीदास कृत वचनकोश हिन्दी भाषा की अच्छी कृति है। कवि की पाण्डवपुराण एवं प्रश्नोत्तरोपासकाचार हिन्दी जगत की उत्तम कृतियां है जिन पर ग्रन्थ सूची के पूर्व भागों में प्रकाश डाला जा चुका है। वचनकोश के माध्यम से जैन सिद्धान्त को कोश के रूप में प्रस्तुत करके कवि ने हिन्दी जगत की महान् सेवा की है। इस कृति का रचनाकाल संवत १७३७ है। यह कवि की प्रारम्भिक कृति है। रचना प्रकाशन योग्य है।

आयुर्वेद

५३ अजीर्ण मंजरी (५५६२)

न्यामतखां फतेहपुर (शेखावाटी) के शासक कयामखां के शासन काल के हिन्दी कवि थे। उन्होंने आयुर्वेद की इस कृति को वैद्यक शास्त्र के अन्य ग्रन्थों के अध्ययन के पश्चात लिखी थी। इससे ज्ञात होता है कि न्यामतखां संस्कृत एवं हिन्दी दोनों ही भाषाओं के विद्वान थे। इसकी रचना संवत १७०४ है। कवि ने लिखा है कि उसने यह रचना दूसरों के उपकारार्थ लिखी है।

वैद्यक शास्त्र को देखि करी, नित यह कियो बखान।
पर उपकार के कारणै, सो यह ग्रन्थ सुखदान ॥ १०२ ॥

५४ स्वरोदय (५७६४)

आयुर्वेद विषय पर यह मोहनदास कायस्थ की रचना है। यद्यपि इस विषय की यह लघु रचना है। नाडी परीक्षा पर भी स्वर के साथ इसमें विशेष वर्णन है। संवत १६८७ में इस रचना को कन्नोज प्रदेश में स्थित नैमखार के समीप के ग्राम कुरस्थ में समाप्त किया गया था।

रास, फागु वेलि

५५ ब्रह्म जिनदास की रास संज्ञक रचनायें

ब्रह्म जिनदास संस्कृत एवं हिन्दी दोनों के ही महाकवि थे। दोनों ही भाषाओं पर इनका समान अधिकार था। इसलिये जहां इन्होंने संस्कृत में बड़े बड़े पुराण एवं चरित्र ग्रन्थ लिखे वहां हिन्दी में रास संज्ञक

रचनायें लिख कर १५ वीं शताब्दी में हिन्दी के पठन पाठन में अपना अपूर्व योग दिया। प्रस्तुत ग्रन्थ सूची में ही इनकी ६५ रचनाओं का परिचय दिया गया है। इनमें संस्कृत की ५, प्राकृत की एक तथा शेष ५९ रचनायें हिन्दी भाषा की हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ सूची में सबसे अधिक कृतियां इन्हीं की है इसलिये ब्रह्म जिनदास साहित्यिक सेवा की दृष्टि से सर्वोपरि है। कवि की जिन रास संज्ञक रचनाओं की उपलब्धि हुई है इनके नाम निम्न प्रकार है—

१. अजितनाथ रास	(६१३३)	२. आदिपुराण रास	(६१३५)
३. कर्मविपाकरास	(६१४६)	४. जम्बूस्वामी रास	(६१६२)
५. जीवंधर रास	(६१५७)	६. दानफल रास	(६१६१)
७. नवकार रास	(६१७१)	८. धर्मपरीक्षा रास	(६१६५)
९. नागकुमार रास	(६१७२)	१०. नेमीश्वर रास	(६१७९)
११. परमहंस रास	(६१८०)	१२. भद्रबाहु रास	(६१९१)
१३. यशोधर रास	(६१९७)	१४. रामचन्द्र रास	(६२०२)
१५. राम रास	(६२०३)	१६. रोहिणी रास	(६२०६)
१७. श्रावकाचार रास	(६२१४)	१८. श्रीपाल रास	(६२१५)
१९. श्रुतकेवलि रास	(६२२३)	२०. श्रेणिक रास	(६२२५)
२१. सोलहकारण रास	(६२३९)	२२. हनुमंत रास	(६२४३)
२३. अनंतव्रत रास	(१०२३९)	२४. अठाईसमूलगुण रास	(१०१२०)
२५. करकंडुनो रास	(६१४७)	२६. चारुदत्त प्रबंध रास	(१०२३९)
२७. धन्यकुमार रास	(६१६३)	२८. नागश्रीरास	(१०२३९)
२९. पानीगालण रास	(१०१२०)	३०. बंकचूल रास	(६१९०)
३१. भविष्यदत्त रास	(६१९३)	३२. सम्यक्त्व रास	
३३. सुदर्शन रास	(१०२३१)	३४. होलीरास	(१०२३९)

१५ वीं शताब्दी में होने वाले एक ही कवि के इतनी अधिक रास संज्ञक कृतियों की उपलब्धि हिन्दी साहित्य के इतिहास में सचमुच एक महत्वपूर्ण कहानी है। कवि का रामसीताराम ही महाकवि तुलसीदास की रामायण से बड़ी रामायण है। वैसे कवि की कुछ कृतियों को छोड़ कर सभी रचनायें महत्वपूर्ण तथा भाषा एवं शैली की दृष्टि से उल्लेखनीय है। कवि का राजस्थान का बागड प्रदेश एवं गुजरात मुख्य कार्य स्थान रहा था। इसलिये इनकी रचनाओं पर गुजराती भाषा एवं शैली का भी अधिक प्रभाव है।

ब्रह्म जिनदास की रचनाओं का अभी मूल्यांकन नहीं हो पाया है। यद्यपि कवि पर राजस्थान विश्व विद्यालय में शोध कार्य चल रहा है लेकिन अभी तक अनेक साहित्यिक दृष्टियां हैं जिनके आधार पर कवि का मूल्यांकन किया जा सकता है। एक ही नहीं बीसों शोध निबन्ध लिखे जा सकते हैं।

कवि भट्टारक सकलकीर्ति के भाई ही नहीं किन्तु उनके प्रमुख शिष्य भी थे। इन्होंने अपनी कृतियों में पहिले सकलकीर्ति को और उनकी मृत्यु के पश्चात भ० भुवनकीर्ति का स्मरण किया है जो उनके पश्चात भट्टारक गादी पर बैठे थे। ब्र० जिनदास रास संज्ञक रचनाओं के अतिरिक्त और भी रचनायें लिखी है, जिनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि कवि सर्वतोमुखी प्रतिभा वाले विद्वान थे।

५६ चतुर्गति रास (६१४६)

धरिचन्द हिन्दी के अच्छे कवि थे। इनकी अब तक कितनी ही रचनाओं का परिचय मिल चुका है। इन रचनाओं में चतुर्गति रास इनकी एक लघु रचना है। जिसकी एक पाण्डुलिपि कोटा के बोरसली के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है। रचना प्रकाशन योग्य है।

५७ वर्धमान रास (६२०७)

भगवान महावीर पर यह प्राचीनतम रास संज्ञक काव्य है जिसका रचना काल संवत १६६५ है तथा जिसके निर्माता हैं वर्द्धमान कवि। रास यद्यपि अधिक बड़ा नहीं है फिर भी महावीर पर लिखी जाने वाली यह उल्लेखनीय रचना है। काव्य की दृष्टी से भी यह अच्छी रचना है। वर्धमान कवि ब्रह्मचारी थे और भट्टारक वादिभूषण के शिष्य थे।

संवत सोल पासठि मार्गसिर सुदि पंचमी सार ।
ब्रह्म वर्धमानि रास रच्यो तो साभलो तम्हे नरनारि ॥

५८ सीताशील पताका गुणवेलि (६२३२)

वेलि संज्ञक रचनाओं में आचार्य जयकीर्ति की इस रचना का उल्लेखनीय स्थान है। इसमें महासती सीता के उत्कृष्ट चरित्र का यशोगान गाया गया है। आचार्य जयकीर्ति हिन्दी के अच्छे कवि थे। प्रस्तुत ग्रन्थ सूची में ही उनकी ६ रचनाओं का परिचय दिया गया है। इनमें अकलंकयतिरास, अमरदत्त मित्रानन्द रासो, रविव्रत कथा, वसुदेव प्रबन्ध, शीलसुन्दरी प्रबन्ध उक्त वेलि के अतिरिक्त हैं। कवि ने काव्य के विविध रूपों में रचनायें लिखी थी तथा अपनी कृतियों को विविध रूपों में लिख कर पाठकों की इस ओर रुचि जाग्रत किया करते थे।

भा० जयकीर्ति ने भट्टारकीय युग में भट्टारक सकलकीर्ति की परम्परा में होने वाले भ० रामकीर्ति के शिष्य ब्रह्म हरखा के आग्रह से यह वेलि लिखी थी। इस का रचना काल संवत १६७४ ज्येष्ठ सुदी १३ बुधवार है। यह गुजरात प्रदेश के कोटनगर के आदिनाथ चैत्यालय में लिखी गयी थी। प्रस्तुत प्रति की एक और विशेषता है कि वह स्वयं ग्रन्थकार के हाथ से लिखी हुई है जैसा कि निम्न प्रशस्ति में स्पष्ट है—

संवत १६७४ आषाढ सुदी ७ गुरो श्री कोटनगरे स्वज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थं भा० श्री जयकीर्तिना स्वहस्ताभ्यां लिखितेयं।

५९ जम्बूस्वामीरास (५१५४)

प्रस्तुत रास नयविमल की रचना है। इसमें अन्तिम केवली जम्बूस्वामी के जीवन पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। यह रास भाषा एवं शैली की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। रास में रचनाकाल नहीं दिया है लेकिन यह १८ वीं शताब्दी का मालूम देता है। इसकी एक प्रति शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा में संग्रहीत है।

६० ध्यानामृतरास (६१७०)

यह एक आध्यात्मिक रास है जिसमें ध्यान के उपयोग एवं उसकी विशेषताओं के बारे में विस्तृत प्रकाश डाला गया है। रास के निर्माता हैं ब्र० करमसी। जो भट्टारक शुभचन्द्र के प्रशिष्य एवं मुनि विनयचन्द्र के शिष्य थे। रास की भाषा एवं शैली सामान्य है। कवि ने अपना परिचय निम्न प्रकार दिया है—

जिन शासण चिरंजयो विबुह पय पयासण सूर।
चउविह संघ सदा जयो विघन जायो तुम्ह दूर॥
श्री शुभचन्द्र सूरि नमी समरी विनयचन्द्र मुनिराय।
निज बुद्धि अनुसरि रास कियो ब्रह्म करमसी हरसाय॥

६१ रामरास (६२०४)

रामरास कविवर माधवदास की कृति है। यह कृति बाल्मीकि रामायण पर आधारित है। रचना संवत नहीं दिया हुआ है लेकिन रास १७ वीं शताब्दी का मालूम पड़ता है। संवत् १७६८ की लिखी हुयी एक पाण्डुलिपि दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर में संग्रहीत है।

६२ श्रेणिकप्रबंधरास (६२२४)

यह ब्रह्म संघजी की रचना है जिसे उन्होंने संवत् १७७५ में समाप्त की थी। कवि ने अपनी कृति को प्रबंध एवं रास दोनों लिखा है। यह एक प्रबंध काव्य है और भाषा एवं शैली की दृष्टि में काव्य उल्लेखनीय है। भगवान महावीर के प्रमुख उपासक महाराजा श्रेणिक का जीवन का विस्तृत वर्णन किया गया है। रचना प्रकाशन योग्य है।

६३ सुकौशलरास (६२३५)

वेणीदास भट्टारक विश्वसेन के शिष्य थे। सुकौशलरास उन्हीं की रचना है जिसे उन्होंने १७ वीं शताब्दी में निबद्ध किया था। यद्यपि यह एक लघु रास है लेकिन काव्यत्व की दृष्टि से यह एक अच्छी कृति है। रास की पाण्डुलिपि अहमदाबाद के शान्तिनाथ चैत्यालय में संवत् १७१४ की माघ सुदी पंचमी को की गयी थी जो आजकल डूंगरपुर के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है।

६४ बृहद्तपागच्छ गुरावली (६२६८, ६२६६)

श्वेताम्बरीय तपागच्छ में होने वाले साधुओं की विस्तृत पट्टावली की एक प्रति दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर और एक प्रति पंचायती मन्दिर भरतपुर के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है। दोनों ही पाण्डुलिपियां प्राचीन है लेकिन भरतपुर वाली प्रति अधिक बड़ी है और ४४ पत्रों में पूर्ण होती है। अलवर वाली प्रति में मुनि सुन्दरसूरि तक के गुरुओं की पट्टावली दी हुई है। जबकि भरतपुर वाली प्रति स्वयं मुनि सुन्दर सूरि की लिखी हुई है और उसका लेखन काल संवत् १४६० फागुण सुदी १० है।

६५ भट्टारक सकलकीर्तिनुरास (६३१०)

भट्टारक सकलकीर्ति १५ वीं शताब्दी के जबरदस्त विद्वान संत थे। जैन वाङ्मय के निष्णात ज्ञाता थे। उनकी वाणी में सरस्वती का वास था एवं वे तेजोमय व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने वागड देश में भट्टारक संस्था की इतनी गहरी नींव लगायी कि वह आगामी २०० वर्षों तक उसने समस्त समाज पर एक छत्र राज्य किया। भट्टारक सकलकीर्ति स्वयं ऊंचे विद्वान एवं अनेक शास्त्रों के रचयिता थे। इसके प्रशिष्य भी बड़े भारी साहित्य सेवी होते रहे। प्रस्तुत रास में भट्टारक सकलकीर्ति एवं उनके शिष्य भ० भुवनकीर्ति का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। रास ऐतिहासिक है और यह उनके जीवन की कितनी घटनाओं का उद्घाटित करता है। रास के प्रारम्भ में आचार्यों की परम्परा दी है। और फिर भ० सकलकीर्ति के जन्म, माता, पिता, अध्ययन, विवाह, संयम ग्रहण, भट्टारक पद ग्रहण, ग्रंथ रचना आदि के बारे में संक्षिप्त परिचय दिया गया है। इसके पश्चात् २४ पद्यों में भ० भुवनकीर्ति के गुणों का वर्णन किया गया है। भ० भुवनकीर्ति की सर्व प्रथम संवत् १४८२ में डूंगरपुर में दीक्षा हुई थी। रास पूर्णतः ऐतिहासिक है।

ब्र० सामल की यह रचना अत्यधिक महत्वपूर्ण है जिसकी एक पाण्डुलिपि उदयपुर के संभवनाथ मन्दिर में संग्रहीत है।

विलास एवं संग्रह कृतियां

६६ बाहुबलि छन्द (६४७६)

यह लघु रचना भ० प्रभाचन्द्र के शिष्य वादिचन्द्र की कृति है। इसमें केवल ६० पद्य हैं जिसमें भरत सम्राट के छोटे भाई बाहुबलि की प्रमुख जीवन घटनाओं का वर्णन है। रचना अच्छी है। तथा एक संग्रह ग्रंथ में संग्रहीत है।

६७ चतुर्गति नाटक (६५०४)

डालूराम हिन्दी के प्रसिद्ध कवि थे। ग्रंथ सूची के उसी भाग में उनकी ६ और रचनाओं का विवरण दिया गया है। चतुर्गति नाटक में चार गति-देव, मनुष्य, तिर्यञ्च और नरकगति में सहे जाने वाले दुःखों का वर्णन किया गया है। यह जीव स्वयं जगत् रूपी नाटक का नायक है जो विभिन्न योनियों को धारण करता हुआ संसार परिभ्रमण करता रहता है। रचना अच्छी है तथा पठनीय है।

६८ संबोध संताणनु दूहा (६७७६)

यह वीरचन्द की रचना है जो संबोधनात्मक है। वीरचन्द का परिचय पहिले दिया जा चुका है। भाषा एवं शैली की दृष्टि में रचना सामान्य है।

स्तोत्र

६९ अकलंकदेव स्तोत्र भाषा (६७६४)

अकलंक स्तोत्र संस्कृत का प्रसिद्ध स्तोत्र है और यह उसी स्तोत्र की परमतखंडिनी नाम की भाषा टीका है। इस टीका के टीकाकार चंपालाल बागडिया है जो झालरापाटण (राजस्थान) के निवासी थे। टीका विस्तृत

है तथा वह पद्यमय है। टीकाकाल संवत् १६१३ श्रावण सुदी ३ है। टीका की एक प्रति बूंदी के पार्श्वनाथ मन्दिर के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है।

७० आदिनाथ स्तवन (६८०७)

यह स्तवन तपागच्छीय साधु सोमसुन्दर सूरि के शिष्य मेहउ द्वारा निर्मित है। इसका रचनाकाल संवत् १४२६ है भाषा हिन्दी एवं पद्य संख्या ४८ है। इसमें राणकपुर के मन्दिर का सुन्दर वर्णन किया गया है रचना ऐतिहासिक है। स्तवन का अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है—

भगति करूं सामी तणी ए छह दरसण दाण।
चिहुं दिसि कीरति विस्तरी, ए धन धरण प्रधान।
संवत चउदनवाणवइ ए धुरि काती मासे।
मेहउ कहइ मइ स्तवन कीउ मनि रंगि लासे॥ ४८॥
इति श्री राणपुर मंडण श्री आदिनाथ स्तवन संपूर्ण॥

७१ भक्तामर स्तोत्र भाषा टीका (७१७३)

भक्तामर स्तोत्र की हेमराज कृत भाषा टीका उल्लेखनीय कृति है। दि० जैन मन्दिर कामा के शास्त्र भण्डार में २६ पृष्ठों वाली एक पाण्डुलिपि है जो स्वयं हेमराज की प्रति थी ऐसा उस पर उल्लेख मिलता है। यह प्रति संवत् १७२७ की है। स्वयं ग्रंथकार की पाण्डुलिपियों में इसका उल्लेखनीय स्थान है।

७२ भक्तामर स्तोत्र वृत्ति (७१८५)

भक्तामर स्तोत्र पर भ० रत्नचन्द्र की यह संस्कृत टीका है। टीका विस्तृत है तथा सरल एवं सुबोध है। अजमेर की एक प्रति के अनुसार इसकी टीका सिन्धु नदी के तट पर स्थित श्रीनापुर नगर के पार्श्वनाथ चैत्यालय में की गई थी। टीका करने में श्रावक करमसी ने विशेष आग्रह किया था।

७३ वर्धमान विलास स्तोत्र (७२८७)

प्रस्तुत स्तोत्र भट्टारक ज्ञानभूषण के प्रमुख शिष्य भ० जगद्भूषण द्वारा विरचित है। इसमें ४०१ पद्य है स्तोत्र विस्तृत है तथा उसमें भगवान महावीर के जीवन पर भी प्रकाश डाला गया है। पाण्डुलिपि अपूर्ण है तथा प्रारम्भ के ३ पत्र नहीं है फिर भी स्तोत्र प्रकाशन होने योग्य है।

७४ समवशरण पाठ (७३५४)

संस्कृत भाषा में निबद्ध उक्त समवशरण पाठ रेखराज की कृति है। रेखराज कवि ने इसे कब समाप्त किया था इसके बारे में कोई उल्लेख नहीं मिलता है। रचना सामान्यतः अच्छी है।

इसी तरह समवशरण मंगल मट्टारकीय मायाराम का (७३५५) तथा समवशरण स्तोत्र (विष्णुसेन) भी इस विषय की उल्लेखनीय कृतियां है।

पूजा एवं विधान साहित्य

उक्त विषय के अन्तर्गत उन रचनाओं को दिया गया है जो या तो पूजा साहित्य में सम्बन्धित हैं अथवा प्रतिष्ठा विधान आदि पर लिखी गयी है। प्रस्तुत विषय की १६७५ पाण्डुलिपियों का परिचय इस भाग में दिया गया है ग्रंथ सूची के भाग में सबसे अधिक कृतियां इन्हीं विषयों की है। ये पूजाएं मुख्यतः संस्कृत एवं हिन्दी भाषा की है। पूजा साहित्य का मध्यकाल में कितना अधिक प्रचार था यह इन पाण्डुलिपियों की संख्या से जाना जा सकता है। इस विषय की कुछ अज्ञात एवं उल्लेखनीय रचनायें निम्न प्रकार है—

१	अकृत्रिम चैत्यालय पूजा	मल्लिसागर	(७४६४)	संस्कृत
२	अनन्तचतुर्दशी पूजा	शान्तिदास	(७४६१)	,,
३	अनन्तनाथ पूजा मंडल विधान	गुणचन्द्राचार्य	(७५०८)	,,
४	अनन्तव्रत कथा पूजा	ललितकीर्ति	(७५१६)	,,
५	अनन्तव्रत पूजा	पाण्डे धर्मदास	(७५१७)	,,
६	अनन्तव्रत पूजा उद्यापन	सकलकीर्ति	(७५३१)	,,
७	अष्टाह्निका व्रतोद्यापन पूजा	पं० नेमिचन्द	(७५५६)	,,
८	आदित्यवार व्रतोद्यापन पूजा	जयसागर	(७५७१)	,,
९	कल्याण मन्दिर पूजा	देवेन्द्रकीर्ति	(७६४७)	,,
१०	चतुर्दशी व्रतोद्यापन पूजा	विद्यानन्दि	(७६८१)	,,
११	चौबीस तीर्थंकर पूजा	देवीदास	(७७२७)	हिन्दी
१२	चतुर्विंशति तीर्थंकर पंचकल्याणक पूजा	जयकीर्ति	(७८४४)	संस्कृत
१३	जम्बूद्वीप पूजा	पं० जिनदास	(७८६८)	,,
१४	तीस चौबीस पूजा	पं० साधारण	(७९२५)	,,
१५	त्रिकाल चतुर्विंशति पूजा	त्रिभुवनचन्द्र	(७९४९)	,,
१६	त्रिलोकसार पूजा	नेमीचन्द	(७९६२)	हिन्दी
१७	,,	सुमतिसागर	(७९७२)	संस्कृत
१८	दशलक्षणव्रतोद्यापन पूजा	भ० ज्ञानभूषण	(८०६५)	संस्कृत
१९	नन्दीश्वर द्वीप पूजा	पं० जिनेश्वरदास	(८२२९)	,,
२०	नन्दीश्वर द्वीप पूजा	विरधीचन्द	(८२३१)	हिन्दी
२१	पंच कल्याणक पूजा उद्यापन	गुजरमल ठग	(८२३९)	,,
२२	पंच कल्याणक पूजा	प्रभाचन्द	(८२४१)	संस्कृत
२३	पंच कल्याणक	वादिभूषण	(८२४४)	,,
२४	पंच कल्याणक विधान	हरी किशन	(८२८०)	हिन्दी
२५	पद्मावती पूजा	टोपण	(८३८८)	संस्कृत
२६	पूजाष्टक	ज्ञानभूषण	(८४५२)	,,
२७	प्रतिष्ठा पाठ टीका	परशुराम	(८६२३)	,,
२८	लघु पंच कल्याणक पूजा	हरिभान	(८७६०)	हिन्दी

२६	व्रत विधान पूजा	अमरचन्द	(८८०८)	हिन्दी
३०	षोडशकारण व्रतोद्यापन पूजा	सुमतिसागर	(८८६३)	संस्कृत
३१	सम्मेदशिखर पूजा	ज्ञानचन्द	(८६८१)	हिन्दी
३२	सम्मेदशिखर पूजा	रामपाल	(८६६८)	,,

गुटकासंग्रह

७६ सीता सतु (६१६६)

यह कविवर भगौतीदास की रचना है जो देहली के अपभ्रंश एवं हिन्दी के प्रसिद्ध कवि थे। अजमेर के भट्टारकीय शास्त्र भण्डार में एक बड़ा गुटका है जिसमें सभी रचनायें भगौतीदास विरचित हैं। सीतासतु भी उन्हीं में से एक रचना है जो दूसरे गुटके में भी संग्रहीत है। यह संवत् १६८४ की रचना है कवि ने जो अपना परिचय दिया है वह निम्न प्रकार है—

गुरु मुनि महिंदसेण भगौती, रिसि पद पंकज रेणु भगौती।
कृष्णदास धनि तनुज भगौती, तुरिय गह्यो व्रतु मनुज भगौती।
नगरि चूडिये वासि भगौती, जन्म भूमि विरु आसि भगौती।
अग्रवाल कुल वंस लगि, पंडित पद निरखि भमि भगौती।

सीतासतु की कुल पद्य संख्या ७७ है।

७७ मृगी संवाद (६१६६)

यह कवि देवराज की कृति है जिसे उन्होंने संवत् १६६३ में लिखी थी। संवाद रूप में यह एक सुन्दर काव्य है जिसकी पद्य संख्या २५० है। कवि देवराज पासचन्द सूरि के शिष्य थे।

७८ रत्नचूडरास (६३००)

रत्नचूडरास संवत् १५०१ की रचना है। इसकी पद्य संख्या १३२ है। इसकी भाषा राजस्थानी है तथा काव्यत्व की दृष्टि से यह एक अच्छी रचना है। कवि खडतपगच्छ के साधु रत्नसूरि के शिष्य थे।

७६ बुद्धि प्रकाश (६३०१)

घेल्ह हिन्दी के अच्छे कवि थे। बुद्धिप्रकाश इनकी एक लघु रचना है जिसमें केवल २७ पद्य हैं। रचना उपदेशात्मक एवं सुभाषित विषय से सम्बद्ध है।

८० वीरचन्द दूहा (६३६६)

यह लक्ष्मीचन्द की कृति है जिसमें भट्टारक वीरचन्द के बारे में ६६ पद्यों में परिचय प्रस्तुत किया है। रचना १६ वीं शताब्दी की मालूम पड़ती है। यह एक प्रकाशन योग्य कृति है।

८१ अर्गलपुर जिन वन्दना (१३७१)

यह रचना भी कविवर भगवतीदास की है जो देहली निवासी थे। इसमें आगरे में संवत् १६५१ में जितने भी जिन मन्दिर एवं चैत्यालय थे उन्हीं का वर्णन किया गया है। रचना ऐतिहासिक है तथा "अर्गलपुर पट्टणि जिण मन्दिर जो प्रतिमा रिमि राई" यह प्रत्येक पद्य की टेक है। प्रत्येक पद्य १२ पंक्ति वाला है। पूरी रचना में २१ पद्य है। आगरा में तत्कालीन श्रावकों के भी कितने ही नामों का उल्लेख किया गया है। एक उदाहरण देखिये....

साहु नराइनी करिउ जिनालय अति उत्तंग धुज सोहइ हो।
गंधकुटी जिन बिंब विराजत अमर खचर मोहइ हो।
जगभूषनु भट्टारक तिहु थलि काम करि छमइ यो हो।
श्रुत सिद्धान्त उदधि बुधि गणा हंस पंचम काल दिसिंद हो।
तिनि इकु श्लोकु सुनायो मुख भानी रामपुरी धनि लोक हो।
जिहु सरवरि निस हंस विराजइ सोभ खस वर स्तोक हो।
तृप मराल उडि जांति जहां ते तिहु सरि सोभा नांही हो।
जानी अरु दानी जग मंडण समुझि लखो मनमांही हो।
समुझि लखहि मन मांहि सगुण जण सुनि बानी गुरु देवा।
सुर सुखु देखि अभै पदु पावहि करहि साधु रिसि सेवा ॥१६॥

८२ संतोष जयतिलक (१४२१)

यह बूचराज कवि का रूपक काव्य है जिसमें संतोष की लोभ पर विजय का वर्णन किया गया है। संतोष के प्रमुख अंग हैं शील, सदाचार, सम्यक ज्ञान, सम्यक चरित्र, वैराग्य, तप, करुणा क्षमा एवं संयम। लोभ के प्रमुख अंगों में मान, क्रोध, मोह, माया कलह आदि हैं। कवि ने इन पात्रों की संयोजना करके प्रकाश और अन्धकार पक्ष की मौलिक उद्भावना प्रस्तुत की है। इसमें १३१ पद्य हैं जो सारिक, रड रंगिक्का, गाथा, दोहा, पद्धडी, अडिल्ल, रासा, आदि छन्दों में विभक्त है। इस काव्य की एक प्रति दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ बूंदी के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है।

८३ चेतन पुद्गल धमालि (१४२१)

यह कवि का दूसरा रूपक काव्य है। वैसे तो कवि का 'भयणजुज्झ' अत्यधिक प्रसिद्ध रूपक काव्य है। लेकिन भाषा एवं शैली की दृष्टि से चेतन पुद्गल धमालि सबसे उत्तम काव्य है। इसमें कवि ने जीव और पुद्गल के पारस्परिक सम्बन्धों का तुलनात्मक वर्णन किया है। वास्तव में यह एक संवादात्मक रूपक काव्य है। जिसके जड़ एवं जीव दोनों नायक हैं। काव्य का पूरा संवाद रोचक है तथा कवि ने उसे बड़े ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है। इसमें १३६ पद्य हैं जिनमें १२१ पद्य दीपकराग के तथा ५ पद्य अष्ट छप्पय छन्द के हैं। रचना में रचनाकाल का उल्लेख नहीं है। अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है—

जे वचन श्रीजिण वीरि भासे, तास नित धारह हीया।
इव भणइ बूचा सदा निम्मल, मुकति सरूपी जिया॥

८४ आराधना प्रतिबोधसार (१६४१)

यह कृति भ० विमलकीर्ति की है जो संभवतः भ० सकलकीर्ति के पश्चात् गादी पर बैठे थे लेकिन अधिक दिनों तक उस पर टिके नहीं रह सके। इस कृति में ५५ छन्द हैं। कृति आराधना पर अच्छी सामग्री प्रस्तुत करती है। इसकी भाषा अपभ्रंश मय है।

हो अप्पा संयम पालहु हो, अप्पा संयम जाण।
हो अप्पा गुण गंभीर हो, अप्पा शिव पद सार ॥५१॥
परमप्पा परमवलेद, परमप्पा अकल अभेद।
परमप्पा देवल देव, इम जाणी अप्पा सेव ॥५२॥

८५ सुकौशल रास (१६४१)

यह सांसू कवि की रचना है जो प्रमुख रूप से चौपई छन्द में निबद्ध है। प्रारम्भ में कवि का नाम सांसु भी दिया गया है। इसी तरह कृति का नाम भी "सुकोसल रास चउपई" दिया है। कवि ने अपने नामोल्लेख के अतिरिक्त अन्य परिचय नहीं दिया है और न अपने गुरु परम्परा का ही उल्लेख किया है। रास की भाषा सरल एवं सुबोध है। एक उदाहरण देखिये—

अजोध्या नगरी अति भली, उत्तम कहीइ ठाम।
राज करि परिवार सु, कीर्ति धवल तस नाम ॥१०॥
तस घरि राणी रूयडी, रूपवंत सुत सेष।
सहि देवी नामि सुणु, भक्ति भरतार विवेक ॥११॥

८६ बलिभद्र चौपई (१६४१)

यह चौपई काव्य ब्रह्म यशोधर की कृति है जिसमें त्रेसठ शालाका महापुरुषों में से ९ बलिभद्रों पर प्रकाश डाला गया है। इसका रचना काल संवत १५८५ है। स्कंध नगर के अजित नाथ चैत्यालय में इसकी रचना की गयी थी। ब्र० यशोधर भ० रामदेव के अनुक्रम में होने वाले भट्टारक यशःकीर्ति के शिष्य थे। चौपई में १०६ पद्य हैं।

संवत पनर पच्यासई, स्कंध नगर मझारि।
भवणि अजित जिनवर तणि ए गुण गाया सार ॥१०६॥

८७ यशोधररास (१६४१)

यह सोमकीर्ति का हिन्दी काव्य है जिसमें महाराजा यशोधर के जीवन पर प्रकाश डाला गया है। रचना गुढली नगर के शीतलनाथ स्वामी के मन्दिर में की गयी थी। सारा काव्य दश ढालों से विभक्त है। ये ढालें एक रूप से सर्ग का ही काम देती है। इसकी भाषा राजस्थानी है जिसमें कहीं कहीं गुजराती के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। रास की संवत १६८५ की पाण्डुलिपि बूंदी नगर के मन्दिर केगुटके में उपलब्ध होती है।

९० चूनड़ी, ज्ञान चूनड़ी आदि (१७०८)

चूनड़ी एवं ज्ञान चूनड़ी, पद संग्रह, नेमि ब्याह पच्चीसी, बारहखड़ी एवं शारदा लक्ष्मी संवाद आदि सभी रचनायें देवराज कवि की हैं। कवि १९ वीं शताब्दी के थे।

९१ नेमिनाथ को छन्द (१९२२)

'नेमिनाथ को छंद' कृति हेमचन्द्र की है जो श्रीभूषण के शिष्य थे। इसमें नेमिनाथ का जीवन चित्रित किया गया है। रचना विविध छन्दों में विभक्त है छन्द की भाषा संस्कृत निष्ठ है लेकिन वह सरल एवं सामान्य है। इसकी पद्य संख्या २०५ है। रचना प्रकाशन होने योग्य है।

९८ शालिभद्ररास (१६७८)

यह श्रावक फकीर की रचना है जो बघेरवाल जाति के खंडीग्या गोत्र के श्रावक थे। इसका रचना काल संवत् १७४३ है। रास की पद्य संख्या २२१ है। रचना काल निम्न प्रकार दिया गया है—

अहो संवत् सतरासे वरस तीयाल।
मास वैसाख पूरिणम प्रतिपाल।
जोग नीखतर सब भल्या मिल्या गुडामभी।
पूरणवास रखते अनरथ राजई।
अहो सगली मन की पूगजी आस सालिभद्र गुण वरणउ ॥२२१॥

९९ गुणठाणा गीत (१६८३)

गुणठाणा गीत (गुणस्थान गीत) ब्रह्म बर्द्धन की कृति है जो शोभाचन्द सूरि के शिष्य थे। गीत बहुत छोटा है और १७ छन्दों में ही समाप्त हो जाता है। इसमें गुणस्थान के बारे में अच्छा प्रकाश डाला गया है। भाषा राजस्थानी है।

९२ पद (१९३६)

यह एक मुसलिम कवि की रचना है जिसमें नेमिनाथ का गुणानुवाद किया गया है। नेमिनाथ के जीवन पर किसी मुसलिम कवि द्वारा यह प्रथम पद है। कवि नेमिनाथ के जीवन से परिचित ही नहीं था किन्तु वह उनका भक्त भी था। जैसा कि पद की निम्न पंक्ति से जाना जा सकता है—

छपन कोटि जादो तुम मुकुट मनि।
तीन लोक तेरी करत सेवा।
खान मुहम्मद करत ही बीनती।
राखिले शरण देवाधिदेवा ॥६॥

९३ धनकुमार चरित्र (१०,०००)

धन्यकुमार चरित्र महाकवि रइधू की कृति है। रइधू अपभ्रंश के १५ वीं शताब्दि के जबरदस्त महा कवि थे। अब तक इनकी २० से भी अधिक रचनायें उपलब्ध हो चुकी हैं। धन्यकुमार चरित इसी कवि की रचना है जिसकी पाण्डुलिपि कामा के दि० जैन मन्दिर के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है।

९४ तीर्थंकर माता पिता वर्णन (१०१३७)

यह संवत् १५४८ की रचना है जिसमें ६० पद हैं। इसके कवि हैं हेमलु जिसके पिता का नाम जिनदास एवं माता का नाम वेल्हा था। वे गोलापूर्व जाति के वणिक थे। इसमें २४ तीर्थंकरों के माता पिता, शरीर, आयु आदि का वर्णन मिलता है। वर्णन के भाषा एवं शैली सामान्य है। यह एक गुटके में संग्रहीत है जो जयपुर के लश्कर के दि० जैन मन्दिर में संग्रहीत है।

९५ यशोधर चरित (१०१८१)

मनसुखसागर हिन्दी के अच्छे कवि थे। इनका सम्मेदशिखर महात्म्य हिन्दी कृति पहिले ही मिल चुकी है। प्रस्तुत कृति में यशोधर के जीवन पर वर्णन किया गया है। यह संवत् १८८७ की कृति है। इसी संवत् की एक प्रति शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर फतेहपुर में संग्रहीत है। यह हिन्दी की अच्छी रचना है। मनसुखसागर की अभी और भी रचना मिलने की संभावना है।

९६ गुटका (१०२३१)

दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर में एक गुटका पत्र संख्या १८–२९८ है। यह गुटका संवत् १६११ से १६४३ तक विभिन्न वर्षों में लिखा गया था। इसमें १८८ रचनाओं का संग्रह है। गुटका के प्रमुख लेखक भट्टारक श्री विद्याभूषण के प्रशिष्य एवं विनयकीर्ति के शिष्य ब्र० धन्ना थे इसमें जितनी भी हिन्दी कृतियां है वे सभी महत्वपूर्ण एवं अप्रकाशित हैं। उन्हें कवि ने भिरि, देवपल्ली नगरों में लिखा था। गुटके में कुछ महत्वपूर्ण पाठ निम्न प्रकार है--

१	जीवंधररास	त्रिभुवनकीर्ति	रचना काल संवत् १६०६
२	श्रावकाचार	प्रतापकीर्ति	—
३	सुकमाल स्वामीरास	धर्मरुचि	—
४	बाहुबलिवोलि	शांतिदास	—
५	सुकौशलरास	सांगु	—
६	यशोधररास	सोमकीर्ति	—
७	भविष्यदत्तरास	विद्याभूषण	—

९७ भट्टारक परम्परा

डूंगरपुर के शास्त्र भण्डार में एक गुटका है जिसमें १४७१ से १८२२ तक भट्टारक सकलकीर्ति की परम्परा में होने वाले भट्टारकों का विस्तृत परिचय दिया गया है। सर्व प्रथम नागड देश के भूंभच राज्य में

होने वाले देहली पट्टस्थ भट्टारक पद्मचन्द से परम्परा दी गयी है। उसके पश्चात् भ० पद्मनन्दि एवं उसके पश्चात् भ० सकलकीर्ति का उल्लेख किया गया है। भ० सकलकीर्ति एवं भुवनकीर्ति के मध्य में होने वाले भ० विमलेन्द्रकीर्ति का भी उल्लेख हुआ है। पट्टावली महत्वपूर्ण है तथा कितने ही नये तथ्यों को उद्घाटित करती है।

९८ भट्टारक पट्टावलि (६२८६)

उदयपुर के संभवनाथ में ही यह एक दूसरी पट्टावली है जिसमें जो १६९७ मार्गशीर्ष सुदी ३ शुक्रवार से प्रारम्भ की गयी है इस दिन पं० क्षमा का जन्म हुआ था जो भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति के पश्चात् भट्टारक बने थे। इसके पश्चात् विभिन्न नगरों में विहार एवं चातुर्मास करते हुए, श्रावकों को उपदेश देते हुए सन् १७५७ की मार्गशीर्ष बुदी ४ के दिन अहमदाबाद नगर में ही स्वर्गलाभ लिया। उस समय उनकी आयु ६० वर्ष की थी। पूरी पट्टावली क्षेमेन्द्रकीर्ति की है। ऐसी विस्तृत पट्टावली बहुत कम देखने में आयी है। उनकी ६० वर्ष की जो जीवन गाथा कही गयी है वह पूर्णतः ऐतिहासिक है।

९९ मोक्षमार्ग बावनी (१५९३)

यह मोहनदास की बावनी है। मोहनदास कौन थे तथा कहां के निवासी थे इस सम्बन्ध में कवि ने कोई परिचय नहीं दिया है। इसमें सवैय्या, दोहा, कुंडलिया एवं छप्पय आदि छन्दों का प्रयोग हुआ है। बावनी पूर्णतः आध्यात्मिक है तथा भाषा एवं शैली की दृष्टि से रचना उत्तम है।

है नाही जामैं नहीं, नहि उतपति विनास।
सो अभेद आतम दरब, एक भाव परगास ॥ १३ ॥
चित थिरता नहि मेर सम, अथिर न पत्र समान ॥
ज्यौं तरु पवन झकोलतैं ठोर न तजत सुजान ॥ १४ ॥

१०० सुमतिनाथ पुराण (३१०४)

दीक्षित देवदत्त संस्कृत एवं हिन्दी के अच्छे विद्वान थे। उनकी संस्कृत रचनाओं में सगर चरित्र, सम्मेदशिखर महात्म्य एवं सुदर्शन चरित्र उल्लेखनीय रचनायें हैं। सुमतिनाथ पुराण हिन्दी कृति है जिसमें पांचवे तीर्थंकर सुमतिनाथ के जीवन पर प्रकाश डाला गया है। इसमें पांच अध्याय हैं। कवि जिनेन्द्र भूषण के शिष्य थे। पुराण के बीच में संस्कृत के श्लोकों का प्रयोग किया गया है।

ग्रंथ सूची के सम्बन्ध में

प्रस्तुत ग्रंथ सूची में बीस हजार से भी अधिक पाण्डुलिपियों का वर्णन है। जिनमें मूल ग्रंथ ५०५० हैं। ये ग्रंथ सभी भाषाओं के हैं लेकिन मुख्य भाषा संस्कृत, प्राकृत एवं हिन्दी है। प्राकृत भाषा के भी उन ही ग्रंथों की पाण्डुलिपियां हैं जो राजस्थान के अन्य भण्डारों में मिलती हैं। अपभ्रंश की बहुत कम रचनायें इस सूची में आयी हैं। अजमेर एवं कामा जैसे ग्रंथागारों को छोड़कर अन्यत्र इस भाषा की रचनायें बहुत कम मिलती है

संस्कृत भाषा में सबसे अधिक रचनायें स्तोत्र एवं पूजा सम्बन्धी हैं। बाकी रचनायें वही सामान्य हैं। समयसार पर संस्कृत भाषा की जो तीन संस्कृत टीकाएं उपलब्ध हुई है और जिनका ऊपर परिचय भी दिया जा चुका है वे महत्वपूर्ण हैं। लेकिन सबसे अधिक रचनायें हिन्दी साहित्य की प्राप्त हुई हैं। वस्तुतः अब तक जो हिन्दी जैन साहित्य प्रकाश में आया है वह तो ग्रंथ सूची में वर्णित साहित्य का एक भाग है। अभी तो सैकड़ों ऐसी रचनायें हैं जिनका विद्वानों को परिचय भी प्राप्त नहीं हुआ है और जो हिन्दी की महत्वपूर्ण रचनायें हैं। सैकड़ों की संख्या में गीत मिले हैं जो गुटकों में संग्रहीत हैं। इन गीतों में नेमि राजुल गीत पर्याप्त संख्या में हैं। इनके अतिरिक्त हिन्दी की अन्य विधाओं की भी रचनायें उपलब्ध हुई हैं वास्तव में जैन विद्वानों ने काव्य के विभिन्न रूपों में अपनी रचनायें प्रस्तुत करके अपनी विद्वत्ता का ही प्रदर्शन नहीं किया किन्तु हिन्दी को भी जनप्रिय बनाने में अत्यधिक योग दिया।

ग्रंथ सूची के इस विशालकाय भाग में बीस हजार पाण्डुलिपियों के परिचय में यदि कहीं कोई कमी रह गयी हो अथवा लेखक का नाम रचनाकाल आदि देने में कोई गल्ती हो गयी हो तो विद्वान् उन्हें हमें सूचित करने का कष्ट करेंगे। जिससे भविष्य के लिये उन पर ध्यान रखा जा सके। शास्त्र भण्डारों के परिचय हमने उनकी सूची बनाते समय लिया था उसी आधार पर इस सूची में परिचय दिया गया है। हमने सभी पाण्डुलिपियों का अधिक से अधिक परिचय देने का प्रयास किया है। सभी महत्वपूर्ण ग्रंथ एवं लेखक प्रशस्तियां भी दे दी गयी है जिनकी संख्या एक हजार से कम नहीं होगी। इन प्रशास्तियों के आधार पर साहित्य एवं इतिहास के कितने ही नये तथ्य उद्घाटित हो सकेंगे तथा राजस्थान के कितने ही विद्वानों, श्रावकों एवं शासकों के सम्बन्ध में नवीन जानकारी मिल सकेगी।

राजस्थान के विभिन्न नगरों एवं ग्रामों में स्थापित कुछ भण्डारों को छोड़कर शेष की स्थिति अच्छी नहीं है और यही स्थिति रही तो थोड़े ही वर्षों में इन पाण्डुलिपियों का नष्ट होने का भय है। इन भण्डारों के व्यवस्थापकों को चाहिये कि वे इन्हें व्यवस्थित करके वेष्टनों में बांधकर विराजमान कर दें जिससे ये भविष्य में खराब भी नहीं हों और समय २ पर उनका उपयोग भी होता रहे।

महावीर भवन
जयपुर
दिनांक २५-१२-७१

कस्तूरचन्द कासलीवाल
अनूपचन्द न्यायतीर्थ

कतिपय अज्ञात एवं अप्रकाशित ग्रंथों की नामावलि

क्रम संख्या	ग्रंथ सूची क्रमांक	ग्रंथ नाम	ग्रंथकार	भाषा
१	६७६४	अकलंकदेव स्तोत्र भाषा	चंपालाल बागड़िया	हिन्दी
२	५५६२	अजीर्ण मंजरी	न्यामतखां	,,
३	६१३३	अजितनाथ रास	ब्र० जिनदास	,,
४	४२२३	अनिरुद्ध हरण (उषाहरण)	रत्नभूषण	,,
५	४२२४	अनिरुद्ध हरण	जयसागर	,,
६	४२२६	अभयकुमार प्रबन्ध	पद्मराज	,,
७	४२५१	आदित्यवार कथा	गंगाराम	,,
८	१०१२०	अठाईस मूलगुणरास	ब्र० जिनदास	हिन्दी
९	६३७१	आगलपुर जिनवन्दना	भगवतीदास	,,
१०	६१३५	आदिपुराण रास	ब्र० जिनदास	,,
११	७८०७	आदिनाथ स्तवन	मेहउ	,,
१२	६१३५	आदिपुराण रास	ब्र० जिनदास	,,
१३	७५३१	अनन्तव्रत पूजा उद्यापन	सकलकीर्ति	संस्कृत
१४	४३०८	कथा संग्रह	विजयकीर्ति	हिन्दी
१५	८१	कर्मविपाक सूत्र चोपई	---	हिन्दी
१६	८२	कर्मविपाक रास	---	,,
१७	६६६	क्रियाकोश भाषा	दौलतराम कासलीवाल	,,
१८	६१४६	कर्मविपाक रास	ब्र० जिनदास	,,
१९	६१४७	करकण्डुनोरास	,,	हिन्दी
२०	१९८८	गुण विलास	नथमल बिलाला	,,
२१	६६८३	गुणठाणागीत	ब्रह्म बहूंन	,,
२२	७६८१	चतुर्दशी व्रतोद्यापन पूजा	विद्यानन्दि	,,
२३	७७२७	चौबीस तीर्थंकर पूजा	देवीदास	हिन्दी
२४	१०५८	चतुरचिंतारणी	दौलतराम कासलीवाल	,,
२५	६१४९	चतुर्गतिरास	वीरचन्द	हिन्दी
२६	६५०४	चतुर्गति नाटक	डालूराम	,,
२७	४३२६	चन्द्रप्रभ स्वामीनो विवाह	नरेन्द्रकीर्ति	,,
२८	३३२	चौदह गुणस्थान वचनिका	अखैराज	,,
२९	३४१	चौबीस गुणस्थान चर्चा	गोविन्दराम	,,

क्रम संख्या	ग्रंथ सूची क्रमांक	ग्रंथ नाम	ग्रंथकार	भाषा
३०	१०२३६	चारुदत्त प्रबन्धरास	ब्र० जिनदास	हिन्दी
३१	२००२	चेतावणी ग्रंथ	रामचरण	,,
३२	६४२१	चेतन पुद्गल धमालि	ब्र० सूचराज	,,
३३	६७०८	चूनडी एव ज्ञान चूनडी	वेगराज	,,
३४	७८६८	जम्बूद्वीप पूजा	पं० जिनदास	संस्कृत
३५	३३५८	जीवंधर चरित्र	रइधू	अपभ्रंश
३६	३३५६	जीवंधर चरित	दौलतराम कासलीवाल	हिन्दी
३७	३३६०	जीवंधर चरित्र प्रब ध	भ० यशःकीर्ति	हिन्दी
३८	६१५७	जीवंधर रास	ब्र० जिनदास	,,
३९	६१५३	जम्बूस्वामीरास	ब्र० जिनदास	हिन्दी
४०	५१५४	,,	नथमिमल	,,
४१	२०५५	ज्ञानार्णव गद्य टीका	ज्ञानचन्द	संस्कृत
४२	५३०	तत्वार्थ सूत्र भाषा	साहिबराम पाटनी	,,
४३	६२३	त्रिभंगी सूत्रोधिनी टीका	आशाधर	संस्कृत
४४	१०१३७	तीर्थंकर माता पिता वर्णन	हेमलु	हिन्दी
४५	१०,०००	धनकुमार चरित्र	रइधू	अपभ्रंश
४६	३४६१	धर्मशर्माभ्युदय टीका	यशःकीर्ति	संस्कृत
४७	६१६५	धर्मपरीक्षा रास	ब्र० जिनदास	हिन्दी
४८	६१७०	ध्यानामृत रास	ब्र० करमसी	,,
४९	३४८०	नागकुमार चरित	नथमल बिलाला	हिन्दी
५०	६१७१	नवकार रास	ब्र० जिनदास	,,
५१	६१७२	नागकुमार रास	ब्र० जिनदास	हिन्दी
५२	६१७६	नेमीश्वररास	,,	,,
५३	१०२३६	नागश्री रास	,,	,,
५४	६६२२	नेमिनाथ को छन्द	हेमचन्द	हिन्दी
५५	२१२१	परमात्मप्रकाश भाषा	बुधजन	,,
५६	२१२७	परमात्मप्रकाश टीका	ब्र० श्रीवरराज	हिन्दी
५७	२८७१	पद्मचरित टिप्पण	श्रीचन्द मुनि.	संस्कृत
५८	३५२०	पार्श्वचरित्र	तेजपाल	अपभ्रंश
५९	१०१२०	पानीगालण रास	ब्र० जिनदास	हिन्दी
६०	३०१३	पुराणसार	सागरसेन	संस्कृत
६१	२०९६	परमार्थ शतक	भगवतीदास	हिन्दी
६२	६१८०	परमहंस रास	ब्र० जिनदास	हिन्दी
६३	१४५७	ब्रह्म बावनी	निहाल चन्द	,,

क्रम संख्या	ग्रंथ सूची क्रमांक	ग्रंथ नाम	ग्रंथकार	भाषा
६४	६६४६	बलिभद्र चौपई	ब्र० यशोधर	हिन्दी
६५	,,	बाहुबलिबेलि	शांतिदास	,,
६६	३६६०	बारा आरा महाचौपई बंध	ब्र० यशोधर	हिन्दी
६७	६३०१	बुद्धि प्रकाश	धेल्ह	,,
६८	७१७२	भक्तामर स्तोत्र भाषा टीका	हेमराज	,,
६९	७१८५	भक्तामर स्तोत्र वृत्ति	म० रत्नचन्द	,,
७०		भट्टारक परम्परा	—	हिन्दी
७१	६२८६	भट्टारक पट्टावलि	—	हिन्दी
७२	६१६४	भविष्यदत्त रास	विद्याभूषण	हिन्दी
७३	३७२१	भोजचरित्र	भवानीदास व्यास	,,
७४	६१६६	मृगीसंवाद	देवराज	,,
७५	१५६३	मोक्षमार्ग बावनी	मोहनदास	,,
७७	१५३६	युक्ति स्वयंवर	वेणीचन्द	,,
७८	३८२४	यशोधर चरित्र	देवेन्द्र	हिन्दी
७९	६१६७	यशोधर रास	ब्र० जिनदास	हिन्दी
८०	६६४६	यशोधर रास	सोमकीर्ति	,,
८१	१०१८१	यशोधर चरित	मनसुखसागर	,,
८२	६३००	रत्नचूडरास	—	,,
८३	३८८८	रत्नपालप्रबन्ध	श्रीपति	,,
८४	६२०३	रामरास	ब्र० जिनदास	,,
८५	६२०२	रामचन्द्ररास	,,	,,
८६	६२०४	रामरास	माधवदास	हिन्दी
८७	५२३२	वचनकोश	बुलाकीदास	,,
८८	१६६४	वसुनन्दि श्रावकाचार भाषा	ऋषभदास	,,
८९	३०८२	वर्द्धमानपुराण भाषा	नवलराम	
९०	३०७०	वर्द्धमानपुराण	नवलशाह	,,
९१	६२०७	वर्धमानरास	ब्र० जिनदास	हिन्दी
९२	६३६६	वरिचन्द दूहा	लक्ष्मीचन्द	हिन्दी
९३	३६३१	विक्रम चरित्र चौपई	भाउ	,,
९४	१६६४	वसुनन्दि श्रावकाचार भाषा	—	
९५	६२९८	बृहद् तपागच्छ पट्टावली	—	संस्कृत
९६	७२८७	वर्धमान विलास स्तोत्र	म० जगद्भूषण	,,
९७	३०९४	शांतिपुराण	पं० आशाधर	संस्कृत
९८	३०९५	शांतिनाथपुराण	ठाकुर	हिन्दी

क्रम संख्या	ग्रंथ सूची क्रमांक	ग्रंथ नाम	ग्रंथकार	भाषा
९९	३१६५	शांतिनाथ चरित्र भाषा	सेवाराम पाटनी	,,
१००	६३७८	शालिभद्ररास	फकीर	हिन्दी
१०१	२७०२	श्रावकाचार	ब्र० जिनदास	,,
१०२	१०२३१	श्रावकाचार	प्रतापकीर्ति	
१०३	४०५०	श्रीपालचरित्र	ब्र० चन्द्रसागर	,,
१०४	४१०३	श्रेणिक चरित्र	दौलतराम कासलीवाल	,,
१०५	४१०५	श्रेणिकप्रबन्ध	कल्याणकीर्ति	,,
१०६	६२२३	श्रुतकेवलीरास	ब्र० जिनदास	,,
१०७	२२८७	समयसार टीका	भ० शुभचन्द्र	संस्कृत
१०८	२३०६	समयसार टीका	देवेन्द्रकीर्ति	,,
१०९	२३०५	समयसार वृत्ति	प्रभाचन्द्र	,,
११०	४८२८	सम्यक्त्व कौमुदी	जगतराय	हिन्दी
१११	७३५४	समवसरणपाठ	रेखराज	,,
११२	७३५५	,,	मायाराम	,,
११३	६३१०	सकलकीर्तिनुरास	ब्र० सामल	,,
११४	६७७६	संबोध संताणदुहुहा	वीरचन्द	,,
११५	५७२४	स्वरोदय	मोहनदास	,,
११६	६४२१	संतोष तिलक जयमाल	बूचराज	,,
११७	२५२१	सामयिक पाठ भाषा	श्यामराम	,,
११८	६२३५	सुकौशलराम	वेणीदास	,,
११९	६६४९	,,	सांगु	,,
१२०	३१०४	सुमतिनाथ पुराण	दीक्षित देवदत्त	,,
१२१	४१८८	सुदर्शन चरित्र भाषा	जैनन्द	,,
१२२	१०२३१	सुकुमाल स्वामी रास	धर्मरुचि	,,
१२३	१०२३१	सुदर्शन रास	ब्र० जिनदास	,,
१२४	१७६१	सुखविलास	जोधराज कासलीवाल	,,
१२५	४९५६	षट् पाहुड भाषा	देवीसिंह	,,
१२६	४६००	होली कथा	मुनि शुभचन्द्र	हिन्दी

राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों

की

ग्रंथ सूची-पंचम भाग

विषय-आगम, सिद्धान्त एवं चर्चा

१. अनुयोगद्वार सूत्र— × । पत्र संख्या ५६ । भाषा–प्राकृत । विषय–आगम । रचना-काल ×। लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—यह पांच मूल सूत्रों में से एक सूत्र है ।

२. अर्थप्रकाशिका—सदासुख कासलीवाल । पत्र सं० ४६८ । आ० १५×७½ इञ्च । भाषा–राजस्थानी (ढूंढारी गद्य) । विषय–सिद्धान्त । रचना काल सं० १९१४ वैशाख सुदी १० । लेखन काल × । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर । वेष्टन सं० १ ।

विशेष—इसका रचना कार्य सं० १९१२ में प्रारम्भ हुआ था । यह तत्वार्थसूत्र पर सदासुख जी की वृहद् गद्य टीका है ।

३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६५ । ले० काल सं० १९२९ वैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० २ **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर ।

४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४१९ । आ० १२×७½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन खण्डेलवाल पंचायती मन्दिर, अलवर । वे० सं० १४३ ।

५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३०९ । आ० १३×६½ इञ्च । ले० काल सं० १९६१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर महावीर, बूंदी ।

६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २८६ । आ० १०½×९ इञ्च । ले० काल सं० १९५० वैशाख बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, टोडारायसिंह ।

७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३२१ । आ० ११½×७½ इञ्च । ले० काल सं० १९३७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

विशेष—गणेशलाल पाण्ड्या चौधरी चाटसू वाले ने प्रतिलिपि कराई । पुस्तक साह भैरूंबगसजी कस्य धन्नालाल जी इन्द्रगढ़ वालों ने मथुरालाल जी अग्रवाल कोटा वालों की मारफत लिखाई ।

८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३१२ । आ० १२×७½ इञ्च । लेखन काल सं० १९३३ कार्तिक बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—श्रावक माधोदास ने इसी मन्दिर में ग्रन्थ को चढ़ाया था।

९. प्रति सं० ८। पत्र सं० ६१६। आ० १०½ × ७ इञ्च। लेखन काल ×। पूर्ण। वेष्टन संख्या ५६। **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

१०. प्रति सं० ९। पत्र संख्या १९३। आ० १२½×७ इञ्च। लेखन काल १९३०। पूर्ण। वेष्टन संख्या ५। **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा।

११. प्रति सं० १०। पत्र संख्या १२१। आ० १०×६½ इञ्च। लेखन काल संवत् १९५५ सावण सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन संख्या ४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटियोंका नैणवा.

१२. प्रति सं० ११। पत्र सं० ९०१। लेखन काल सं० १९२६। पूर्ण। वेष्टन संख्या ८५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष--रिखबदास जैसवाल रहने वाला हवेली पालम जिला दिल्ली वाले ने प्रतिलिपि कराई थी।

१३. प्रति सं० १२। पत्र संख्या १०९। आ० ११½×५½ इञ्च। लेखन काल सं० १९४० भादवा बुदी ९। पूर्ण। वेष्टन संख्या ४९५। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष--रिखबचन्द बिन्दायक्या ने प्रतिलिपि की थी तथा संवत् १९९६ कार्तिक कृष्णा ८ को लश्कर के मंदिर में विराजमान किया था।

१४. अर्थसंदृष्टि— ×। पत्र संख्या ५। आ० १२×४ इञ्च। भाषा-प्राकृत-संस्कृत। विषय—आगम। र० काल ×। लेखन काल ×। अपूर्ण। वेष्टन संख्या २१२। ६५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

१५. आगमसारोद्धार—देवीचन्द। पत्र संख्या ८०। आ० ८½×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। र० काल सं० १७४६। लेखन काल ×। पूर्ण। वेष्टन संख्या ३७०। **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर।

विशेष—गुटका के रूप में है। टीका का नाम सुखबोध टीका है।

१६. प्रति सं० २। पत्र संख्या १६। आ० १०×५ इञ्च। लेखन काल ×। वेष्टन संख्या १९९/१२६। **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोड़ारायसिंह (टोंक)

इति श्री खरतरगच्छे श्री देवेन्द्रचन्द्रसूरि विरचिता श्री आगमसारोद्धार बालावबोध संपूर्ण।

१७. अन्तगडदसाओ— ×। पत्र संख्या २१। आकार १०×४½ इञ्च। **भाषा**—प्राकृत विषय-आगम। रचना काल ×। लेखन काल ×। पूर्ण। वेष्टन संख्या ५३९। **प्राप्ति स्थान**--भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—इसका संस्कृत में अन्तकृद्दशासूत्र नाम है। यह जैनागम का आठवां अङ्ग है।

१८. अन्तकृतदशांग वृत्ति— × । पत्र सं० ८। आ० १०½×४ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-आगम। र० काल ×। लेखन काल सं० १६७५। पूर्ण। वेष्टन सं० ८६। **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है-सं० १६७५ वर्षे शाके १५४० प्रवर्तमाने आश्विनिमासे शुक्ल

पक्षे पूर्णिमास्यां तिथौ बुधवासरे श्री चन्द्रगच्छे श्री हीराचन्द सूरि शिष्य गंगादास लिखितमलं ।

१९. आचारांग सूत्र— × । पत्र सं० २८ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आगम । र० काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन संख्या २०९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—प्रति प्राचीन है कहीं कहीं हिन्दी टीका भी है । प्रथम श्रुतस्कंध है । आचारांग-सूत्र प्रथम आगम ग्रन्थ है ।

२०. प्रति सं० २ । पत्र संख्या ५ । लेखन काल × । वेष्टन सं० ६६८ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर, भरतपुर ।

२१. आचारांग सूत्र वृत्ति—अभयदेव सूरि । पत्र सं० १–१६५ । आ० १०½×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आगम । र० काल × । लेखन काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २५३ । **प्राप्ति-स्थान**–दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—प्रति प्राचीन है पर बीच के कितने ही पत्र नहीं हैं ।

२२. आचारांग सूत्र वृत्ति-× । पत्र सं० १०० । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत हिन्दी । विषय—आगम । र० काल—× । ले. काल— × । पूर्ण । वे. सं. १५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ, बूंदी ।

२३. आवश्यक सूत्र—× पत्र सं०—१० से ४४ । भाषा–प्राकृत । विषय–आगम । रचना काल–× । लेखन काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

विशेष—इसका दूसरा नाम षडावश्यक सूत्र भी है । ग्रंथ में प्रतिदिन पाली जानी योग्य क्रियाओं का वर्णन है ।

२४. आवश्यक सूत्र निर्युक्ति ज्ञानविमव सूरि—पत्र संख्या–४४ । भाषा–संस्कृत । विषय–आगम । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८८३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर, भरतपुर

२५. आश्रव त्रिभंगी–नेमिचन्द्राचार्य—पत्र सं० २–३२ । आ. १०×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय– सिद्धांत । र. काल × । ले. काल × । अपूर्ण । वे. सं. ३०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि. जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२६. प्रति सं. २ । पत्र सं० १० । आ. १२×५½ इञ्च । ले० काल । × वे० स० ६३३ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष— प्रति टीका रहित है ।

२७. प्रति सं. ३ । पत्र सं. ८७ । आ० १२×६ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वे. सं. १४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ, बूंदी ।

विशेष—८७ से आगे के पत्र नहीं है ।

२८. प्रति सं. ४ । पत्र सं. ६० । आ० १३×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३१ (२) **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका—इति श्रीनेमिचन्द्रसिद्धान्तचक्रवर्तीविरचितायां **श्री सोमदेव पण्डितेन** कृत टीकायां श्रीआश्रवबंधउदय उदीरणा सत्व प्रभृति लाटी भाषायां समाप्ता। प्रति सटीक है। टीकाकार पं० सोमदेव है।

२९. **दुक्कोस ठाणाप्रकरण—नेमिचंद्राचार्य**। पत्र सं० ७। आ०-१०×४½ इञ्च। भाषा-प्राकृत विषय—सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल सं० १८२०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी।

विशेष—नैणसागर ने प्रतिलिपि की थी।

३०. **प्रति सं २**। पत्र सं० १४। आ० १०×४½ इञ्च। ले० काल × । । वे० सं० १८९ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

३१. **प्रति सं. ३**। पत्र सं० ८। आ० १०×४ इञ्च। लेखन काल × । पूर्ण। वे० सं० ९७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

३२. **उक्तिनिरूपण**—× । पत्र सं० २१। आ० १०¼×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—आगम। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वे० सं० १७६। ५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर, इन्दरगढ़।

३३. **उत्तरप्रकृतिवर्णन**—× । पत्र सं० १२। आ०-१०×७½ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय—सिद्धान्त। र. काल—× । ले० काल—× । पूर्ण। वे० सं० १३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी।

विशेष पं० बिरधीचन्द ने स्वपठनार्थ सुदारा में प्रतिलिपि की थी।

३४. **उत्तराध्ययन सूत्र**–× । पत्र सं० ३६। आकार–१०×४½ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—आगम शास्त्र। र० काल ×। ले० काल × । पूर्ण। वे० सं० ३३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

विशेष—प्रति जीर्ण है। गुजराती मद्य टीका सहित है। लिपि देवनागरी है।

३५. **प्रति सं. २** । पत्र संख्या—७। भाषा–प्राकृत। लेखन काल—× । पूर्ण। वेष्टन सं० ७१६। **प्राप्ति स्थान**—पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—बीसवां अध्याय संस्कृत छाया सहित है।

३६. **उत्तराध्ययन टीका**—× । पत्र सं. ११४। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—प्राकृत-संस्कृत। विषय—आगम। र० काल ×। ले० काल × । अपूर्ण। वे० सं० ५४४। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

३७. **प्रति सं. २**। पत्र सं० ७६-३२८। आ० १०¼ × ५ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। वे. सं० ११२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली, कोटा।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

३८. **उत्तराध्ययन सूत्र वृत्ति**—× । पत्र सं. २-२१६। भाषा—संस्कृत। विषय—आगम। र० काल—×। ले० काल—× । अपूर्ण। वे० सं० ४५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

विशेष— बीच के बहुत से पत्र नहीं है ।

३९. उत्तराध्ययनसूत्र बालावबोधटीका- × । पत्र सं. २-२०५ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत-संस्कृत । विषय—आगम । र० काल × । ले० काल । सं० १६४१ कार्तिक सुदी १३ । अपूर्ण । वे० सं० ३१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—संवत् १६४१ वर्षे कार्तिक सुदी १३ वारसोमे श्री जैसलमेरमध्ये लिपिकृता श्रावकेः ऋषि श्री ज्येठा पठनार्थं ।

४०. उत्तराध्ययन सूत्र बालावबोध टीका × । पत्र सं० २१६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—आगम । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४१. उपासकादशांग—पत्र सं० ७८ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय- आगम । र० काल × । ले० काल सं० १६०७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष – मूल के नीचे गुजराती प्रभावित राजस्थानी गद्य टीका है । संवत् १६०७ में फागुण सुदी २ को साधु माणक चन्द ने ग्राम नाथद्वारा में प्रतिलिपि की थी ।

४२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४३. उवाई सूत्र—× । पत्र सं० ७८ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आगम । र० काल—× । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन पंचायती मन्दिर बसवा ।

विशेष—राजपाटिका नगर प्रतिलिपि कृतं ।

४५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८४ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन० मन्दिर बोरसली, कोटा ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा सटीक है ।

४६. एकषष्ठि प्रकरण × । पत्र सं० २१ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय—सिद्धांत । र० काल × । ले० काल सं० १७६४ फागुण बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२३ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन पंचायती मन्दिर, बवाना ।

विशेष—जिनेश्वरसूरि कृत गुजराती टीका सहित है । अर्थ गाथाओं के ऊपर ही दिया है ।

४७. एकसौअड़तालीस प्रकृति का व्यौरा—× । पत्र सं० ३ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—सिद्धांत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४८. अङ्गपण्णत्ती—× । पत्र सं० २५ । आ० १०×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आगम । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५–८ । आ० १२× ५$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल सं० १५९९ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है । संवत् १५९९ वर्षे पौष बुदी ५ भौमवासरे श्रीगिरिपुरे श्री आदिनाथ चैत्यालये श्री मूल संघे भट्टारक श्री शुभचन्द्र गुरुपदेशात् लिखितं ब्र० तेजपाल पठनार्थं ।

५०. कर्म प्रकृति—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं० १६ । आ. ११ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत विषय—सिद्धांत । र० काल—× । ले० काल—सं० १६८८ पौष बुदी अमावस । पूर्ण । वेष्टन सं० १३८१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६८८ वर्षे मिति पौषमासे असितपक्षे अमावस्यां तिथौ शुभनक्षत्रे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये मंडलाचार्य श्री ५ श्रीयशःकीर्तिस्तच्छिष्य ब्र० गोपालदासस्तेन स्वयमर्थं लिपिकृतं स्वात्मपठनार्थं नगरे श्रीमहाराष्ट्र राजा श्रीवीठलदासराज्ये ।

५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१८ । **प्राप्ति स्थान**–उपरोक्त मन्दिर ।

५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

५३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७२ । **प्राप्ति स्थान**–उपरोक्त मन्दिर ।

५४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०८० । **प्राप्ति स्थान**–उपरोक्त मन्दिर ।

५५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १३ । आ० १० × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३८३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

५६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ, बूंदी ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

५७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १२ । ले० काल—सं० १७०२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर, भरतपुर ।

विषय—त्रिलोक चन्द के पठनार्थ लिखा गया था ।

५८. **प्रतिसं० ९** । पत्रसं० १२ । आ० १२×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

५९. **प्रतिसं० १०** । पत्रसं० २६ । आ० १०½×४ इञ्च । लेखन सं० १८०६ माघ बुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनसं० १३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—कामा में जिनसिंह के शासन काल में पार्श्वनाथ चैत्यालय में रत्नचन्द ने स्व पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

६०. **प्रतिसं० ११** । पत्रसं० १४ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

६१. **प्रतिसं० १२** । पत्रसं० ४२ । ले०काल सं० १५८६ चैत्र बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । इस प्रति की खंडेलवालान्वय वैद गोत्रवाले पं० लाला भार्या लालसिरि ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

६२. **प्रतिसं० १३** । पत्रसं० १६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

६३. **प्रतिसं० १४** । पत्रसं० १२ । ले०काल सं० १७०० । पूर्ण । वेष्टनसं० २५२-१०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का, डूंगरपुर ।

प्रशस्ति—सं० १७०० वर्षे फागुणमासे कृष्णपक्षे ११ दिने गुरुवासरे डबुकग्रामे श्रीआदिनाथचैत्यालये श्रीमूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री रत्नचन्द्राम्नाये ब्रह्म केशवा तत् शिष्य ब्र० श्री गंगदास तत् शिष्य ब्र० देवराजाख्य पुस्तकं कर्मकांडसिद्धान्त लिखितमस्ति स्वज्ञानावर्णकर्म-क्षयार्थं ।

६४. **प्रतिसं० १५** । पत्रसं० १–१७ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ७४३ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६५. **प्रतिसं० १६** । पत्रसं० १० । आ० ११×५ । वेष्टनसं० १० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

६६. **प्रतिसं० १७** । पत्रसं० १८ । आ० ११×५ । लिपिकाल सं० १७६५ पौष सुदी २ । वेष्टनसं० १२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है । महाराजा श्री जयसिंह के शासन काल में अम्बावती नगर में पं० धोखचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

६७. वेष्टनसं० १८ । पत्रसं० १९ । आ० १०×४½ । वेष्टनसं० १२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

६८. **कर्मप्रकृति टीका-अभयचन्द्राचार्य** । पत्रसं० १५ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत विषय—सिद्धांत । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६९. **कर्मप्रकृति टीका—भ० सुमतिकीर्ति एवं ज्ञानभूषण** । पत्रसं० ५५ । आ० १०$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ । भाषा—संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल—× । लिपिकाल—सं० १६४५ चैत्र बुदी । वेष्टनसं० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

७०. **कर्मप्रकृति वर्णन**—× । पत्रसं० १२० । आ०-४$\frac{1}{2}$ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल—× । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टनसं० १८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी ।

विशेष-अन्य पाठ भी हैं ।

७१. **कर्मप्रकृति वर्णन**—× । पत्रसं० २ । आ० ११ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२०६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—१४८ प्रकृतियों का व्यौरा है ।

७२. **कर्मप्रकृति वर्णन**—× । पत्रसं० २४-८३ । आ० ११ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं०—२५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७३. **कर्मप्रकृति वर्णन**—× । पत्रसं० ११ । आ० ८ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । र० काल—× । ले० काल सं० १९११ । पूर्ण । वेष्टनसं० १५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

७४. **प्रतिसं०** २ । पत्रसं० ३५ । ले० काल सं० १९२० । पूर्ण । वेष्टनसं०—२३ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७५. **प्रतिसं०** ३ । पत्रसं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ९६ । २७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर टोडारायसिंह ।

७६. **कर्मविपाक**—× । पत्रसं० १५ । आ०—१२ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल - × । ले० काल - × । पूर्ण । वेष्टनसं० १५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदि-नाथ बूंदी ।

७७. **कर्मविपाक—बनारसीदास** । पत्रसं० १० । आ०—९$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सिद्धान्त । र० काल—१७०० । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टनसं० २६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

७८. **कर्मविपाक—भ० सकलकीर्ति** । पत्रसं० १६ । आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २३९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दिगम्बर जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—कर्मों के विपाक (फल) का वर्णन है ।

७९. **प्रतिसं०** २ । पत्रसं० ३३ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी ।

८०. **प्रतिसं०** ३—पत्रसं० २४। ले० सं० १६१७ ज्येष्ठ सुदी १३। पूर्ण। वेष्टनसं० ७७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

८१. **कर्मविपाकसूत्र चौपई**—×। पत्रसं० १२७। आ० ११½ × ५ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—ग्रंथ का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है :—

श्री परमात्मने नमः। श्री सरस्वत्यै नमः।

देव निरन्जणने नमुं, अलख अजर अभिराम।
घट घट अन्तर आतमा, परम जोत परणाम ॥ १ ॥
सावद्य वचन सवे तजि, राजरिध भंडार।
अनदासी मुनीवर नमुं, जे सुद्धा अणगार ॥ २ ॥
जिनवर वाणी ने नमुं, भविक जीव हितकार।
जनम मरण ना दुख थकी, छुटे ते निरधार ॥ ३ ॥
शीलवंत नर नार नै, समकीत वरत सहित।
हरष धरी तेहने नमुं, कर्म सुभट जेणें जीत ॥ ४ ॥

मध्यभाग (पत्र ७१)

देव तीरीय मनुष्य ते जाण! लेप काष्ट अने पाषाण।
ए च्यारे नो करुं बखाण, पण थे सूण जो चतुर सुजान ॥ १४०३ ॥
मन वचन काया ये जाण। एह मोकले धरमनी हाण।
ए वणें चोगणा च्यार। लेखे करतां था ये वार ॥ १४०४ ॥
करत करावत अनमोदना, तिगणावार करो एक मना।
एम करता छती से भया। इद्यी पंच गणा ते भया ॥ १४०५ ॥

अन्तिम—

संतोषी कवले सदा समता सहित सुजाण।
डरया विसरया रहे सदा ते पहुँचे निरवाण ॥ २४०७ ॥
आगमवाणी उचरै उर न बोले बोल।
दयापरुपै रात दिन हंसाये रहे अबोल ॥ २४०८ ॥
एक भगत चूके नहीं पाछे जल नो त्याग।
आतम हेत जाणे सही ते समझे जिनभाग ॥ २४०९ ॥
पर निंदा मुखनवि गमें हास्यादि न करंत।
संका कांक्षा कोए नहीं जीत्यो ते शिवमंत ॥ २४१० ॥
एहने मारग जे चले ते नर जाणो साध।
एण थी बीजा जे नरा ते सब जाणो बाध ॥ २४११ ॥

इति श्री कर्मविपाक सूत्र चौपई संपूर्णम्। श्री उदयपुर नगर मध्ये लिषि कृता।

८२. **कर्मविपाक रास**— । पत्रसं० १८३ । आ० ९½ × ५ इंच । भाषा— हिन्दी पद्य । विषय—सिद्धांत । र०काल सं० १८२४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक) ।

८३. **प्रतिसं० २** । पत्र संख्या १५६ आ० ९½×६ इंच । ले०काल सं० १८८२ फागुण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक) ।

८४. **कर्मविपाक सूत्र**—पत्रसं० १४ से १७ । आ० १० × ४ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल सं० १५१२ भादवा सुदी १३ । अपूर्ण । वे० सं० ५४५ । **प्राप्ति-स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—श्रीखानपेरोजविजयराज्ये श्रीनागपुरमध्ये बृहद्गच्छे सागरभूतसूरिशिष्य श्रीदेशतिलक तच्छिष्य मुनि श्रुतमेरुणा लेखि । रा० देल्हा पुत्र संघप मेघा पठनार्थं ।

८५. **कर्मविपाक सूत्र—देवेन्द्रसूरि— 'ज्ञानचन्द्रसूरि के शिष्य'** । पत्रसं० ११ । आ० १० × ४ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धांत । र०काल सं० × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

८६. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ५९ । आ० १०½ × ६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १७२ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मंदिर दबलाना ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है ।

८७. **कर्मसिद्धान्त मांडणी**— × । पत्रसं० ६ । आ०-१० × ४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल-× । ले०काल-× । पूर्ण । वेष्टनसं० ११३-९ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मंदिर बाड़ा बीस पंथी दौसा ।

विशेष—हिन्दी (गद्य) अर्थ सहित है ।

८८. **कल्पसूत्र—भद्रबाहु स्वामी** । पत्रसं० २०-५० । आ०-९½ × ४ इञ्च । भाषा-प्राकृत, विषय आगम् । र०काल × । ले०काल सं० १६१३ चैत्र सुदी ७ । अपूर्ण । वेष्टनसं० ६५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर जोरसली कोटा ।

विशेष—श्रीपत्तननगरे भट्टारक श्री धर्ममूर्त्तिसूरिलिखापितं **जयमंडनगणि** पठनार्थं ।

८९. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ८५ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ६५५ । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

९०. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० २-१५९ । ले०काल सं० १८२३ । अपूर्ण । वेष्टनसं० १३३७ । **प्राप्तिस्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

९१. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० ९ । ले०काल सं० १५८४ चैत्र सुदी ५ । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३३ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

९२. **प्रतिसं० ५** । पत्रसं० १४९ । ले०काल सं × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ७४८ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

९३. **प्रति सं० ६**। पत्र सं० १३४। ले० काल ×। पूर्ण (८ अध्याय तक)। वेष्टन सं० १६।५५ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पंथी, दौसा।

विशेष—पत्र सं० २५ तक गाथाओं के ऊपर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है। इसके बाद बीच में जगह २ अर्थ दिया है। भाषा पर गुजराती का अधिक प्रभाव है।

९४. **प्रति सं० ७**—पत्र सं० ७५। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

९५. **प्रति सं० ८**। पत्र सं० २-९३। आ० १२×४ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २८८। ६८५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रति प्राचीन है। अन्तिम पत्र के आधे हिस्से पर चित्र है।

९६. **प्रति सं० ९**। पत्र सं० १२२। ले० काल सं० १५३६। पूर्ण। वेष्टन सं० १। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बसवा।

विशेष—प्रति सचित्र है तथा चित्र बहुत सुन्दर हैं। अधिकतर चित्रों पर स्वर्ण का पानी या रंग चढ़ाया गया है। चित्रों की संख्या ३९ है। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बसवा।

९७. **कल्पसूत्र टीका**—×। सं० १२। आ० १०×४ इञ्च। भाषा—गुजराती। विषय—आगम। र० काल—×। ले० काल—×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३०१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

विशेष—प्रति प्राचीन है लिपि देवनागरी है।

९८. **कल्पसूत्र बालावबोध**—×। पत्र सं० १२८। आ० १०×४ इञ्च। भाषा—प्राकृत हिन्दी। विषय—आगम। र० काल—×। ले० काल—×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का, डूंगरपुर।

९९. **कल्पसूत्र वृत्ति**—×। पत्र सं० १४०। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—प्राकृत-संस्कृत। विषय—आगम। र० काल—×। ले० काल—×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बून्दी।

विशेष—१४० से आगे पत्र नहीं है। प्रति प्राचीन है। प्रथम पत्र पर सरस्वती का चित्र है।

१००. **कल्पसूत्र वृत्ति**—×। पत्र सं० १८३। भाषा—प्राकृत-गुजराती लिपि—देवनागरी। विषय—आगम। र० काल—×। ले० काल—×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बसवा।

विशेष—श्री जिनचन्द्रसूरि तेह तणी आज्ञाइ एवंविध श्री पर्यूषणीपर्व आराधनउ हूंतउ श्रीसंघ आचन्द्रार्क जयवंत वरतउ।

१०१. **कल्पाध्ययन सूत्र**—×। पत्र सं० १०२। भाषा—प्राकृत। विषय—आगम। र० काल—×। ले० काल सं १५२८ कार्तिक बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं०—२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बसवा।

विशेष—संवत् १५२८ वर्षे कार्तिक बुदी ५ शनौ तद्दिने लिलिखे। प्रति सचित्र है तथा इसमें ४२ चित्र हैं जो बहुत ही सुन्दर हैं।

१०२. कल्पावचूरि–× । पत्रसं० ४० । आ० १०½×४ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–आगम । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १८ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

१०३. कल्पावचूरि—× । पत्रसं०१४१ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आगम । र०काल—× । ले०काल—संवत् १६९१ आसोज बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३०८ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

१०४. कल्पलता टीका—समयसुन्दर उपाध्याय । पत्रसं० १२४ । भाषा—संस्कृत । विषय—आगम । र०काल—× । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टनसं०—६२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०५. कषायमार्गणा–× । पत्रसं० १–२५ । आ० १२½× ७ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय सिद्धान्त । र०काल—× । ले० काल—× । वेष्टनसं०—७३७ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर

१०६. कार्माणकाययोग प्रसंग—× । पत्रसं०—५ । **भाषा**—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल—× । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टनसं०—६७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० पंचायती जैन मन्दिर भरतपुर ।

विशेष –तत्वार्थ सूत्र टीका श्रुत सागरी में से दिया गया है ।

१०७. कूटप्रकार—× । पत्रसं०–२ । आ० १२×५ इञ्च । **भाषा**–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र०काल—× । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टनसं०—२१७—६४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—अनंतानुबंधी कषायों का कूट वर्णन है ।

१०८. क्षपणासार माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव । पत्रसं० १४२ । आ० ११ × ६½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी, कामा ।

१०९. गर्भचक्रवृतसंख्यापरिमाण—× । पत्रसं० २ । आ० १२ × ४ इञ्च । भाषा–प्राकृत संस्कृत । विषय—आगम । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २१६ । ६४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

११०. गुणस्थान चर्चा—× । पत्रसं० ३० । आ०—१०½ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त चर्चा । र०काल—× । ले० काल—सं० १७०५ माघ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टनसं० २०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ, टोडारायसिंह ।

१११. गुणस्थान चर्चा— × । पत्रसं० १८० । आ०—९ × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ, बूंदी ।

११२. गुणस्थान चर्चा— × । पत्रसं० २० । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय–चर्चा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर राजमहल ।

विशेष—पंचकल्याणकों की तिथि भी दी हुई है। गुटका साइज में ग्रन्थ है।

११३. **गुणस्थान चर्चा**— × । पत्रसं० ५१ । आ०—१२½ × ८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त चर्चा । र०काल— × । ले० काल— × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बड़ा बीस पंथी दौसा ।

११४. **गुणस्थान चर्चा**— × । पत्रसं० ५२ । आ० १२½ × ७½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त चर्चा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ११७-७५-**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा ।

११५. **गुणस्थान चर्चा**— × । पत्रसं० २-६७ । आ० १० × ४½ । **भाषा**—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल × । वेष्टनसं० २५ । अपूर्ण—प्रथम पत्र नहीं है । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

११६. **प्रति सं० २** । पत्रसं० १-१८ । आ० १०½ × ४½ । ले० काल × । वेष्टनसं० २६ । अपूर्ण—१८ से आगे के पत्र नहीं है । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

११७. **गुणस्थान चर्चा**— × । पत्रसं० १-८ । आ० ११ × ५ । भाषा—हिन्दी । विषय—चर्चा । र०काल × । ले० काल × । वेष्टनसं० ७०१ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दिगम्बर जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

११८. **गुणस्थान क्रमारोह**— × । पत्रसं० २ । आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चर्चा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ६५१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

११९. **गुणस्थान गाथा**—× । पत्रसं० ३ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धांत । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३४० । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१२०. **गुणस्थानचर्चा**—× । पत्रसं० १३ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चर्चा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २३४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

१२१. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ३० । ले०काल सं० १७०५ माघ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टनसं० २०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ, टोडारायसिंह ।

१२२. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० १८० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ, बूंदी ।

१२३. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० २० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, राजमहल

विशेष—पंच कल्याणकों की तिथियां भी दी हुई हैं। गुटका साइज में ग्रन्थ है।

१२४. **प्रतिसं० ५** । पत्रसं० ५१ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पंथी दौसा ।

१२५. प्रतिसं० ६ । पत्रसं० ५२ । ले० काल-× । पूर्ण । वेष्टनसं० ११७।७५ । **प्राप्तिस्थान-** दि० जैन मन्दिर भादवा (राज)

१२६. प्रतिसं० ७ । पत्रसं० २६७ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २५ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर

विशेष--प्रथम पत्र नहीं है ।

१२७. प्रतिसं० ८ । पत्रसं० १-१८ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २६ । **प्राप्ति स्थान—** उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—१८ से आगे के पत्र नहीं हैं ।

१२८. प्रतिसं० ९ । पत्रसं० १८ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ७०१ । **प्राप्ति स्थान—** उपरोक्त मन्दिर ।

१२९. गुणस्थान चौपई—ब्रह्म जिनदास । पत्रसं० ४ । आ०-९½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—चर्चा । र० काल—× । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टनसं० १९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ, टोडारायसिंह (टोंक) ।

१३०. गुणस्थान मार्गणा वर्णन—नेमिचन्द्राचार्य । पत्रसं०-५८ । आ०-१०×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल—× । ले० काल—सं० १८८४ चैत्र सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनसं० २४४-५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष---आमेर में प्रतिलिपि की गई थी ।

१३१. गुणस्थान मार्गणा चर्चा—× । पत्रसं०—१२१ । आ०—१२×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय--चर्चा । र० काल—× । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टनसं० २८१ । **प्राप्ति स्थान-** दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—इसमें अन्य पाठ भी हैं ।

१३२. गुणस्थान मार्गणा वर्णन--× । पत्रसं०--७५ । आ०-९×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र० काल—× । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टनसं०—१७९-३३ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर, इन्दरगढ़ (कोटा) ।

विशेष—यंत्र सहित वर्णन है । पंच परावर्त्तन का स्वरूप भी दिया है ।

१३३. गुणस्थान वर्णन--× । पत्रसं०—८-४४ । आ०—११×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल—× । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टनसं०—२९३ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

१३४. गुणस्थान वर्णन—× । पत्रसं०—७ । आ०—१०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल—× । ले० काल—सं० १७८७ । भादवा बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं०-६३७ । **प्राप्ति स्थान—**भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१३५. गुणस्थान रचना—× । पत्रसं०-२० । आ०-१२×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-

सिद्धान्त । र० काल- ×। ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टन सं०—१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा ।

१३६. गुणस्थान वृत्ति—रत्नशेखर सूरि । पत्र सं०—३५ । आ०—९½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल—× । ले० काल ×। अपूर्ण । वेष्टन सं०—४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बैर ।

विशेष—सूत्र सं० २-६-८ नहीं है ।

अन्तिम—प्रायः पूर्वर्षिरचितं श्लोकैः रुद्धतो रत्नशेखरसूरिभिः ।
बृहद्गच्छीय श्रीवज्रसेनसूरिशिष्यैः ।
श्रीहेमतिलकसूरिपट्टप्रतिवृत्तैः
श्रीरत्नशेखरसूरिः स्वपरोपकाराय प्रकरणरूप तथा ॥
ग्रन्थाग्रन्थ सं० ९६० ।

१३७. गोम्मटसार—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं०—१५ । आ०—११½×४½ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल—× । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं०—१३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

१३८. प्रति सं० २— पत्र सं०—१४० । ले० काल सं० १९४९ । पूर्ण । वेष्टन सं०—१४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर महावीरजी बूंदी ।

विशेष—धर्मभूषण के शिष्य जगमोहन के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१३९. प्रति सं०—३. पत्र सं०—२३ । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं०—२०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह ।

विशेष—अंतिम तीन पत्रों में जीव एवं धर्म द्रव्यों का वर्णन है ।

१४०. प्रति सं०—४. पत्र सं०-८७ । ले० काल—सं० १७५९ (शक सं० १६२४) पूर्ण । वेष्टन सं०—९४ । **प्राप्ति स्थान**—पंचायती मन्दिर बयाना ।

१४१. प्रति सं०—५. पत्र सं०-८७ । ले० काल-× । पूर्ण । वेष्टन सं०—१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बड़ा पंचायती मन्दिर, डीग

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१४२. प्रति सं०—६. पत्र सं०—६७ । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टन सं०—१७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर

विशेष—प्रतिक्रमण पाठ के भी कुछ पत्र हैं ।

१४३. प्रति सं०—७ । पत्र सं०—३-४५ । ले० काल सं०—× । अपूर्ण । वेष्टन सं०—२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१४४. प्रति सं०—८ । पत्र सं०— ८७ । ले० काल—सं० १६११ । पूर्ण । वेष्टन सं०-१८२, ७७ ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का, डूंगरपुर ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति कटी हुई है ।

१४५. गोम्मट्टसार—नेमिचन्द्राचार्य । पत्रसं०—५३७ । **भाषा**—प्राकृत । विषय —सिद्धान्त । र० काल—× । ले० काल—१७६८ द्वि० भादवा सुदी १ । **पूर्ण** । **वेष्टनसं०**—३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बड़ा पंचायती मन्दिर, डीग ।

विशेष—श्री हेमराज ने लिखी थी । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१४६. प्रतिसं० २ । पत्रसं०—२८१ । **आ०**—१२×५½ इञ्च । ले० काल— × । **अपूर्ण** । **वेष्टनसं०**—१६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१४७. प्रतिसं० ३ । पत्रसं०—२४१ । **आ०** १२½ × ८ इञ्च । ले० काल—× । **अपूर्ण** । **वेष्टनसं०**—२७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

विशेष—प्रति तत्व प्रदीपिका टीका सहित है ।

१४८. गोम्मटसार—नेमिचन्द्राचार्य × । पत्रसं० ३८७ । **आ०** १२½ × ६ इञ्च । **भाषा**—प्राकृत-संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १७०५ । अपूर्ण । **वेष्टनसं०** १५२ **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—बहुत से पत्र नहीं है । प्रति संस्कृत टीका सहित है । प्रशास्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १७०५ भादवा सुदी ५ श्रीरायदेशे श्रीजगन्नाथजी विजयराज्ये भीलोडा नगरे चन्द्रप्रभ चैत्यालये..... ।

१४९. गोम्मटसार टीका—सुमतिकीर्ति । पत्रसं० ३४७ । **आ०** १४×७ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल—सं० १६२० भाद्रपद सुदी १२ ले० काल—सं० १६६७ । **पूर्ण** । **वेष्टनसं०** १४४-२११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है ।

१५०. प्रति सं० २ । पत्रसं० ३२ । **आ०**— १२ × ४½ इञ्च । ले० काल— सं० १७६५ आसोज सुदी १२ । **पूर्ण** । **वेष्टनसं०** ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—वसुपर में पंडित दोदराज ने पार्श्वनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

१५१. प्रति सं० ३ । पत्रसं० ६५ । ले० काल सं० १८०६ । **पूर्ण** । **वेष्टनसं०** १८०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी ४ कामा ।

१५२. प्रति सं० ४ । पत्रसं० ४८ । ले० काल × । **पूर्ण** । **वेष्टनसं०** १६२ । **प्राप्तिस्थान** दि० जैन मंदिर दीवानजी, कामा ।

१५३. प्रति सं० ५ । पत्रसं० ६० । ले० काल × । अपूर्ण । **वेष्टनसं०** ६६ । **प्राप्तिस्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है। ग्रन्थ का नाम कर्म प्रकृति भी दिया है।

१५४. प्रति सं० ५। पत्र सं० १ से ६६। ले० काल—×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ×। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरह पन्थी मन्दिर, बसवा।

१५५. प्रति सं० ६। पत्र सं० ४७। आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। ले० काल सं० १ [illegible] सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन सं० ११६८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

१५६. गोम्मटसार (कर्म काण्ड टीका)—नेमिचन्द्र। पत्र सं० १४। आ० [illegible]$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—प्राकृत संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। र० काल—×। ले० काल १७५१ मार्गशीर्ष [illegible]५। पूर्ण। वेष्टन सं० २७१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—प्रशस्ति संवत १७५१ वर्षे मार्ग सुदी १५ बुधे श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्तिदेव तत्पट्टे भट्टारक श्री ३ सुरेन्द्रकीर्तिदेव तद्गुरु भ्राता पं० बिहारीदासेन लिखितं स्वहस्तेन ज्ञानावर्णी कर्मक्षयार्थं। प्रति संस्कृत टीका सहित है।

१५७. प्रति सं० २। पत्र सं० ५२। ले० काल—सं० १७६४ जेठ बुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० २८०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

१५८. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३-११६। ले० काल—×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २४। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मंदिर तेरह पंथी दौसा।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

१५९. गोम्मटसार कर्मकाण्ड—×। पत्र सं० १०। भाषा—प्राकृत। विषय—सिद्धान्त। र० काल—×। ले० काल—×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ८८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर, भरतपुर।

१६०. गोम्मटसार अर्थ—×। पत्र सं० ४। आ० १२×६ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—सिद्धांत। र० काल—×। ले० काल—×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३२-१८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का, डूंगरपुर।

१६१. गोम्मटसार चूलिका—×। पत्र सं० ७। भाषा—संस्कृत। विषय—सिद्धांत। र० काल—×। ले० काल—×। पूर्ण। वेष्टन सं० ६६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर, भरतपुर।

विशेष—हेमराज ने लिखा था।

१६२. गोम्मटसार पूर्वार्द्ध (जीवकांड)—×। पत्र सं० १२३। आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—सिद्धांत। र० काल—×। ले० काल—×। पूर्ण। वेष्टन सं० १०४३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

१६३. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) भाषा टीका—×। पत्र सं० ४०। आ० १०×५ इञ्च। भाषा—प्राकृत हिन्दी। विषय—सिद्धांत। र० काल—×। ले० काल—×। पूर्ण। वेष्टन सं० ६६६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर।

१६४. **गोम्मटसार (जीवकाण्ड) भाषा-महा पं० टोडरमल ।** पत्रसं० १०० । आ० १३ × ७½ इञ्च । भाषा—राजस्थानी (ढूंढारी गद्य) । विषय—सिद्धांत । र० काल—× । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टन सं० ११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

१६५. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ४८० । आ० १२ × ८½ इञ्च । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० ८६-१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पंथी दौसा ।

१६६. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० ६ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—केवल प्रथम गाथा की टीका ही है ।

१६७. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० २६ । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन भण्डार आदिनाथ स्वामी आलपुरा ।

१६८. **गोम्मटसार भाषा-महा पं० टोडरमल ।** पत्रसं० १-८० । आ० १२½ × ६ । भाषा-राजस्थानी गद्य । विषय—सिद्धान्त । र० काल—× । ले० काल—× । वेष्टन सं० ७३६ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१६९. **गोम्मटसार भाषा-महा पं० टोडरमल ।** पत्रसं० ५७२ । आ० १३ × ८ इञ्च । **भाषा**-राजस्थानी (ढूंढारी) गद्य विषय—सिद्धांत । र० काल—सं० १८१८ माघ सुदी ५ ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टन सं० १५७५ **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१७०. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ८९० । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० १४०० । **प्राप्ति-स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—सम्यक्ज्ञान-चन्द्रिका टीका सहित है ।

१७१. **प्रति सं० २** । पत्रसं० १०२० । ले० काल सं०—× । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५५-८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बीस पंथी मन्दिर दौसा ।

विशेष—सम्यक्ज्ञान-चन्द्रिका टीका सहित है ।

१७२. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० १०२१ । ले० काल सं०-× । पूर्ण । वेष्टन सं० २५२ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

विशेष—प्रति सुन्दर है ।

१७३. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० १०२६ । ले० काल सं० १९५६ भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर महावीर स्वामी, बूंदी ।

१७४. **प्रति सं० ५** । पत्रसं० ३२५ । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४२३ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१७५. **प्रति सं० ६** । पत्रसं० ७६४ । ले० काल सं० १८६० भादवा सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रति लब्धिसारक्षपणासार सहित है । कुम्हेर में रणजीत के राज्य में प्रतिलिपि हुई थी ।

१७६. **प्रतिसं० ७** । पत्रसं० ९८२ । ले० काल सं०—× । पूर्ण । वेष्टनसं० २३ । **प्राप्ति-स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

१७७. **प्रतिसं० ८** । पत्रसं० ३०६ । ले० काल—× । **पूर्ण** । **वेष्टनसं० १** । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मन्दिर चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—प्रति संदृष्टि सहित है । पत्रसं० १५९ तक लब्धिसार क्षपणासार है । ९७ वें पत्र में संदृष्टि भूमिका तथा अन्तिम ५० पत्रों में लब्धिसार, क्षपणासार तथा गोम्मटसार की भाषा है ।

१७८. **प्रतिसं० ९** । पत्रसं० ५०४ । ले० काल सं०—१८१९ । **पूर्ण** । **वेष्टनसं० ९** । **प्राप्ति-स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—पत्रसं० २७० से ५०४ तक दूसरे वेष्टनसं० में है ।

१७९. **प्रतिसं० १०** । पत्रसं० १००० । ले० काल सं० १९५८ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० ५७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्योंका नैणवा (बूंदी) ।

विशेष—सम्यक्ज्ञान चन्द्रिका टीका सहित है ।

१८०. **प्रतिसं० ११** । पत्रसं० ७३२ । ले० काल सं०—× । पूर्ण । वेष्टनसं० १५।१७१ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

१८१. **प्रतिसं० १२** । पत्रसं० ६८१ । ले० काल—× । **अपूर्ण** । **वेष्टनसं० १४५** । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोड़ारायसिंह टौंक ।

विशेष—६८९ के आगे के पत्र नहीं हैं ।

१८२. **प्रतिसं० १३** । पत्रसं० १३४६ । ले० काल सं० १९२२ सावण बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनसं० १ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन बड़ा मन्दिर फतेहपुर (शेखावाटी)

विशेष—यह ग्रन्थ ४ वेष्टनों में बंधा है । टीका का नाम सम्यक्ज्ञान चन्द्रिका है । लब्धिसार क्षपणासार सहित है । पं० सदासुखदासजी कासलीवाल ने उधव लाल पाण्डे चाकसू वालों से प्रतिलिपि करवाई थी ।

१८३. **प्रतिसं० १४** । पत्रसं० १२६५ । ले० काल सं० १८९० माघ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनसं० १५।६१ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

विशेष—सम्यक्ज्ञान चन्द्रिका टीका है संदृष्टि भी पूरी दी हुई है । यह ग्रन्थ तीन वेष्टनों में बंधा हुआ है ।

१८४. **प्रतिसं० १५** । पत्रसं० ७६-३८५ । आ०—१२×८ इञ्च । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टनसं० ८४-३८ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पंथी दौसा ।

१८५. **गोम्मटसार भाषा**—× । पत्रसं० २५ । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टनसं० ७८।५६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

१८६. **गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) भाषा—हेमराज** । पत्रसं० ६६ । आ० १४×८½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र० काल—१७३४ आसोज सुदी ११ । ले० काल सं० १९५४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४।१६ । **प्राप्तिस्थान** । दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

१८७. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ६६ । ले० काल—× । **पूर्ण** । वेष्टनसं० ५१ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

१८८. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० ६६ । ले० काल सं० १८९४ पौष बुदी ५ । **पूर्ण** । वेष्टनसं० ११४ । **प्राप्तिस्थान** --दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

१८९. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० १०७ । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टनसं० १४ । **प्राप्तिस्थान**-दि० जैन मन्दिर महावीर स्वामी बून्दी ।

१९०. प्रतिसं० ५ । पत्रसं० ४९ । ले० काल सं० १८२४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२५ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

१९१. प्रतिसं० ६ । पत्रसं० ५९ । ले० काल सं० १९३१ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३७६ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—रसिक लाल मुंशी ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१९२. प्रतिसं० ७ । पत्रसं० ९७ । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टनसं० ३१ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर, बयाना ।

विशेष—संवत् १९४१ में गूजरमल गिरथरवाका ने ग्रन्थ को मन्दिर में चढ़ाया था ।

१९३. प्रतिसं० ८ । पत्रसं० ६५ । ले० काल—× । पूर्ण । **वेष्टनसं० ७** । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर बीस पंथी दौसा ।

विशेष—श्रावक खेमचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

१९४. प्रतिसं० । ९ पत्रसं० ७९ । ले० काल— सं० १८६० । पूर्ण । वेष्टनसं० ८६ । दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—अनन्तराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१९५. प्रतिसं० १० । पत्रसं० १२७ । ले० काल—× । वेष्टनसं० १२७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

१९६. प्रतिसं० ११ । पत्रसं० ६२ । ले० काल सं० १८२३ प्रथम माघबुदी ९ । पूर्ण । वेष्टनसं० १८।२२ **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

१९७. गोम्मटसार 'पंचसंग्रह' वृत्ति—× । पत्रसं०-२३८ । आ०-१४×७ इञ्च । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल—× । ले० काल—× । **अपूर्ण** । **वेष्टनसं०**—११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है । २३८ के आगे पत्र नहीं हैं ।

१९८. प्रतिसं० २ । पत्रसं०—३२० । आ०—१४×६½ इञ्च । ले० काल—सं० १८२५ । पूर्ण । वेष्टनसं०—५३-३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१९९. गोम्मटसार (पंचसंग्रह) वृत्ति—अभयचन्द्र । पत्रसं० ४०१ । आ० १४×६ इञ्च ।

भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल—× ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं०—५३७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२००. **प्रति सं०—२** । पत्र सं०—१—१५७ । आ०—१०½ × ५½ इञ्च । ले० काल—× । वेष्टन सं०—७६४ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

२०१. **प्रति सं०—३** । पत्र सं०—१४६ । आ०—१२ × ५½ इञ्च । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं०—१८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

२०२. **प्रति सं०—४** । पत्र सं०—३३० । आ०—१४ × ६ इञ्च । ले० काल—सं० १७१७ भादवा बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं०—३४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—अर्जिका में श्वे० धर्मघोष ने प्रतिलिपि की थी ।

२०३. **गोम्मटसार वृत्ति—केशववर्णी** । पत्र सं०—३७६ । आ०—१४ × ५ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल—× । ले० काल—वीर सं० २१७७ ज्येष्ठ सुदी ५ । वेष्टन सं०—६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—सहसमल्ल के कहने से प्रति लिखी गई थी ।

२०४. **गोम्मटसार वृत्ति**— × । पत्र सं० ४२६ । आ० १२ × ८½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १७०५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर, उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—संवत् १७०५ वर्षे वैशाख शुक्ला द्वितीया भौमवासरे राय देशस्थ श्री पुलिंदपुरे श्री चन्द्रप्रभुचैत्यालये श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे ..... भट्टारक सकलकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० भुवनकीर्ति ..... तत् शिष्य मुनि श्रीदेवकीर्ति तत् शिष्याचार्य जी कल्याणकीर्ति तत् शिष्य ब्रह्म नेजपालेन स्वज्ञानावरणीयकर्मक्षयार्थं..... कल्याण कीर्ति तत् शिष्याचार्य श्री त्रिभुवनचन्द्र-पठनार्थं ।

२०५. **गोम्मटसार जीवकाण्ड वृत्ति (तत्त्वप्रदीपिका)**— × । पत्र सं० २९ से १६८ । आ०—१० × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल— × । ले० काल — × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नागदी, बूंदी ।

२०६. **गोम्मटसार संदृष्टि—आ० नेमिचन्द्र** । पत्र सं० ११ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × अपूर्ण । वेष्टन सं० २०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

२०७. **गौतमपृच्छा सूत्र**— × । पत्र सं० १३ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा—प्राकृत—हिन्दी । विषय—आगम । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना ।

विशेष—१२ वां पत्र नहीं है । प्राकृत के सूत्र सामने हिन्दी अर्थ सूत्र रूप में है । सूत्र सं० ६४ ।

२०८. **गौतमपृच्छा**— × । पत्र सं० १८ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—

आगम । र० काल— × । ले० काल-संवत् १७८१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पंचायती, दूनी (टोंक)।

विशेष—पंडित शिवजीराम ने शिष्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ दूणी नगर में प्रतिलिपि की थी।

२०६. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १६ । आ० ८ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । र० काल— × । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—(दि० जैन मंदिर पंचायती दूनी (टोंक)।

विशेष—श्री फतेहचन्द के शिष्य वृन्दावन उनके शिष्य शीतापति शिष्य पं० शिवजीलाल तस् शिष्य नेमिचन्द आत्मकल्याणार्थ ।

२१०. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ७६ । ले० काल सं० १८७५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४२ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

२११. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

२१२. **गौतम पृच्छा** · × । पत्र सं०—७६ । भाषा –संस्कृत । विषय-- सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल—१८७५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

२१३. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ४२ । भाषा—संस्कृत । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर ।

२१४. **गौतम पृच्छा**— × । पत्र सं० ४ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५४२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष--११६ पद्य हैं ।

२१५. **प्रति सं० २**--पत्र सं० ६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मंदिर उदयपुर ।

२१६. **चतुःशरणप्रकीर्णक सूत्र**—पत्र सं०— ४ । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल — × । ले० काल—सं० १७०३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैं० पंचायती मंदिर डीग ।

२१७. **चतुःसरण प्रज्ञप्ति**-- × । पत्र सं० २ से ५ । आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय—आगम । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १६० । **प्राप्ति स्थान**--भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

२१८. **चर्चा—भ० सुरेन्द्रकीर्ति** । पत्र सं० १३ । आ० ८ × ६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चर्चा । वेष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मंदिर राजमहल टोंक ।

विशेष—जैन सिद्धान्तों को चर्चा के माध्यम में समझाया गया है ।

२१६. **चर्चा**— × । पत्र सं० ३ । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ । भाषा—संस्कृत । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ६७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

२२०. **चर्चा**—पत्रसं० ३८ । आ० १३ × ६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल टोंक ।

२२१. **चर्चाकोश**—× । पत्रसं० १२४ । भाषा-हिन्दी । विषय—चर्चा । र० काल—× । लेखन काल—× । अपूर्ण । वेष्टन० सं० ८८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरह पंथी मंदिर बसवा ।

२२२. **चर्चा ग्रन्थ**—× । पत्र सं० २–६ । आ० ११×५½ इञ्च । **भाषा**-हिन्दी । मन्दिर विषय—चर्चा । ले० काल—× । र० काल—× । वेष्टन सं० ७१४ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन लश्कर, जयपुर ।

२२३. **चर्चा नामावली**—× । पत्र सं० ३३ । आ० १२×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चर्चा । र० काल—× । ले० काल०–सं० १९७९ माघ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—जैन सिद्धान्तों की चरचाओं का वर्णन है ।

२२४. **चर्चा नामावली हिन्दी टीका सहित**—× । पत्र सं० ५७ । आ०—१०×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत हिन्दी । विषय—सिद्धान्त चर्चा । र० काल—× । ले० काल०— सं० १९३९ सावन बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ११८ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

२२५. **चर्चापाठ**—× । पत्र सं० १८ । आ०—३×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय–सिद्धान्त । र० काल—× । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी ।

२२६. **चर्चाबोध**—× । पत्र सं० १४ । आ० १½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय-चर्चा । र० काल–× । ले० काल–× सं०१९७३ । पूर्ण । वेष्टन सं० । ९१ । २२ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

२२७. **चर्चाग्रंथ**—× । पत्र सं० ४० । आ० ११×५½ इंच । भाषा हिन्दी । विषय—चर्चा । र० काल–× । ले० काल–सं० १८०२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४५५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय शास्त्र भण्डार अजमेर ।

२२८. **चर्चाशतक—ज्ञानतराय** । पत्र सं० ६ । आ० १०¾×५इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । र० काल–× । ले० काल–× । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४५७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय शास्त्र भण्डार अजमेर ।

विशेष— सैद्धान्तिक चर्चाओं का वर्णन है ।

२२९. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ६२ । ले० काल–सं० १९४० काती सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४७७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय शास्त्र भण्डार अजमेर ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है ।

२३०. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० १७ । ले० काल०—× । पूर्ण । वेष्टन सं० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

२३१. **प्रतिसं० ४**। पत्रसं० १०२। ले०काल सं० १६५२ आसोज सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० ६१। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

विशेष—भगडावत कस्तूरचन्द जी तत् पुत्र चोखचन्द ने प्रताप गढ़ के चन्द्रप्रभ चैत्यालय में लिखवाया था।

२३२. **प्रतिसं० ५**। पत्रसं० १६। ले०काल—×। पूर्ण। वेष्टन सं० ७६। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

२३३. **प्रतिसं० ६**। पत्रसं० २६। ले०काल—×। पूर्ण। वेष्टन सं० १३६। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदा बूंदी।

२३४. **प्रतिसं० ७**। पत्रसं० ७१। ले०काल—×। अपूर्ण। वेष्टन सं० १६३। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है।

२३५. **प्रतिसं० ८**। पत्रसं० १००। ले० काल—सं० १६४२। पूर्ण। वेष्टन सं० २७। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

विशेष—प्रति टीका सहित है।

२३६. **प्रतिसं० ९**। पत्रसं० १५। ले०काल—×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २२३। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक।

२३७. **प्रतिसं० १०**। पत्रसं० ६६। ले०काल—सं० १६४३। पूर्ण। वेष्टन सं० ३६। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह टोंक।

२३८. **प्रतिसं० ११**। पत्रसं० १६। ले०काल सं० १८६२। पूर्ण। वेष्टन सं० ४५। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा।

२३९. **प्रतिसं० १२**। पत्रसं० १०२। ले०काल सं० १६२७। आसोज बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० ४०। **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ जैन मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)।

विशेष—प्रति टीका सहित है।

२४०. **प्रतिसं० १३**। पत्रसं० ६३। ले०काल सं० १६३८। ज्येष्ठ सुदी ३। वेष्टन सं० १२४/२०। **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ़।

विशेष—प्रति बहुत सुन्दर है तथा हिन्दी गद्य टीका सहित है।

२४१. **प्रतिसं० १४**। पत्रसं० १६। ले०काल—×। अपूर्ण। वेष्टन सं० १४३।१६। **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ़।

२४२. **प्रतिसं० १५**। पत्रसं० २५। ले०काल सं०—×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ६६। **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ़।

२४३. **प्रतिसं० १६**। पत्रसं० १५। ले०काल—×। पूर्ण। वेष्टन सं० १७०। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर।

विशेष—१६ वें पत्र से द्रव्य संग्रह है ।

२४४. **प्रतिसं० १७** । पत्रसं० ६६ । ले०काल सं० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७६ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—प्रति हिन्दी गद्य टीका सहित है । टीकाकार राजमल्ल पाटनी है ।

२४५. **प्रतिसं० १८** । पत्रसं० ७५ । ले०काल—× । वेष्टन सं० ४२ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—हिन्दी गद्यार्थ सहित है ।

२४६. **प्रतिसं० १६** । पत्रसं० ५६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×७ इञ्च । ले०काल सं० १६३८ वैशाख सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर बयाना ।

२४७. **प्रतिसं० २०** । पत्रसं० ६५ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० १३ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन दीवानजी का मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है ।

२४८. **प्रतिसं०—२१** । पत्रसं०—५३ । ले० काल—१८६४ । पूर्ण । वेष्टन सं०—३५८ ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२४६. **प्रतिसं०—२२** । पत्रसं०—५५ । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं०—३६४ ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२५०. **प्रतिसं०—२३** । पत्रसं०—१८ । ले० काल—१८१८ आसोज सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं०—३६५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—भरतपुर में प्रतिलिपि की गई थी । मूल पाठ हैं ।

२५१. **प्रतिसं०—२४** । पत्रसं०—५३ । ले० काल—१८६८ । पूर्ण । वेष्टन सं०—३६६ ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है । उपरोक्त मन्दिर ।

२५२. **प्रति सं०—२५** । पत्रसं०—५३ । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं०—४२२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२५३. **प्रति सं०—२६** । पत्रसं०—१० । ले० काल—सं० १६२२ । पूर्ण । वेष्टन सं०—११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष लश्कर में प्रतिलिपि हुई थी ।

२५४. **प्रतिसं०—२७** । पत्रसं०—८८ । **भाषा**—हिन्दी । ले० काल—सं० १६२८ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं०—८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

२५५. **प्रतिसं०—२८** । पत्रसं०—५४ । ले० काल—सं० १८२० । पूर्ण । वेष्टन सं०—२०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२५६. **प्रतिसं०—२६** । पत्रसं०—५३ । ले० काल—१६३१ माघ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डावालों का डीग ।

२५७. **प्रतिसं०**—३० । पत्रसं०-५६ । ले० काल-१६३२ । पूर्ण । वेष्टन सं०—५६ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पंचायती मन्दिर डूण्डावालों का, डीग ।

२५८. **प्रतिसं०—३१** । पत्रसं०—५६ । ले० काल—× । **अपूर्ण** । वेष्टन सं०—६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास, पुरानी डीग ।

विशेष—प्रति अशुद्ध एवं अव्यवस्थित है ।

२५९. **प्रतिसं०—३२** । पत्रसं०—१०४ । ले० काल—सं० १६४७ आषाढ़ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं०—६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पंथी दीसा ।

विशेष—हिन्दी गद्य में टीका भी है । जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

२६०. **प्रतिसं०—३३** । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १६३४ वैशाख सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

अशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है कास्टासिंघे माथुरगंधे पुष्करगणे लोहाचार्य आम्नाय भट्टारक जी श्री श्री १०८ श्री ललितकीर्ति भट्टारकजी श्री श्री १०८ श्री राजेन्द्रकीर्ति जी तत् शिष्य पंडित जोरावर चंद जी लिखायो फतेहपुर मध्ये लिपिकृतं प्रेममुख भोजक ।

२६१. **प्रतिसं०** ३४ । पत्र सं० १२ । ले० काल—सं० १६०० कार्तिक बुदी १४ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी ।

विशेष—साधी लूलचन्द ने लिपि की थी ।

२६२. **प्रतिसं०** ३५ । पत्र सं० ६२ । ले० काल—सं० १६३६ । पूर्ण । वेष्टन सं०—६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मंदिर उदयपुर ।

२६३. **प्रतिसं०** ३६ । पत्र सं०२६ । ले०काल—१६०३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२५-६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का, डूंगरपुर ।

२६४. **प्रतिसं०** ३७ । पत्र सं०—३८ । ले० काल— सं० १६९६ कार्तिक बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१३ ।

विशेष— त्रिपभचन्द बिन्दायक्या ने प्रतिलिपि कर लश्कर के मंदिर में विराजमान किया । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

२६५. **चर्चाशतक टीका—हरजीमल** । पत्र सं० ५६ । आ० १३×७ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य तथा गद्य) । विषय—चर्चा । र० काल—× । ले० काल—सं० १६३० । पूर्ण । वेष्टन सं०-३४ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर बयाना ।

विशेष—हरजीमल पानीपत वाले की टीका सहित है । १०४ पद्य हैं । सिंघ ठाकुरदास हिण्डौन वाले ने प्रतिलिपि की थी । लिखाइतं लालाजी माधोसिंहजी पठनार्थ सुखलाल कानूनगो का बेटा नाती हुलासी राम का, गोत्र चांदुवाड़ बयाना वाले ने माधोदास श्रावक उदासीन चांदवाड कारण अप घर से रिक्त होकर यह ग्रन्थ लिखवाकर चन्द्रप्रभु के पुराने मन्दिर में चढ़ाया ।

२६६. **प्रतिसं०** २ । पत्रसं० ७६ । विषय-चर्चा । र० काल-× । ले० काल-× । पूर्ण ।

वेष्टन सं० १०३ । **प्राप्तिस्थान**– दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—इति चर्चाशतक भाषा कवित्त दानतराय कृति तिनकी अर्थ टिप्पण दूरजीमल पाणीपथ की वणाई संपूर्ण । यह पुस्तक श्री अभिनंदनजी का मंदिर की छै ।

२६७. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० ६७ । ले० काल-सं० १६४६ पौष सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नागदी, बूंदी ।

२६८. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० ८० । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर महावीर स्वामी, बूंदी ।

२६९. **प्रतिसं० ५** । पत्रसं० ५३ । ले० काल-सं० १६५६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२१ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर महावीर स्वामी, बूंदी ।

२७०. **चर्चाशतक टीका- नाथूलाल दोसी** । पत्र सं० ८६ । आ० १२×८½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय-सिद्धांत-चर्चा । र० काल— × । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं०—८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर महावीर स्वामी, बूंदी ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है ।

२७१. **चर्चा समाधान**- × । पत्र सं० १३ । आ० ६½×७ इञ्च । भाषा—संस्कृत । **विषय**—चर्चा । ले०काल— × । र० काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

२७२. **चर्चासमाधान— भूधरदास** । पत्र सं० १५५ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—चर्चा । र० काल -सं० १८०६ माघ सुदी ५ । ले०काल—सं० १८८७ सावण सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०८४ । **प्राप्ति स्थान** –भट्टारकीय शास्त्र भण्डार अजमेर ।

२७३. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ८७ । ले०काल—सं० १६३६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

विशेष— संवत् १६३६ भाद्रपद कृष्णा २ बुधवारे लिखायतं पंडित छोगालाल लिखितं मिश्र रूपनारायण भीलाय मध्ये ।

२७४. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० ६१ । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११७ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर महावीर स्वामी बूंदी ।

२७५. **प्रतिसं० ४** । पत्र सं० ४७ । आ०—११×५½ इञ्च । ले०काल—सं० १८६७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर महावीर स्वामी बूंदी ।

२७६. **प्रतिसं० ५** । पत्र सं० १११ । आ०—१२½×६ इञ्च । ले०काल सं० १८८७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर पोटडियों का, नैणवा ।

विशेष- धर्ममूर्ति रोडू ने सीवसी विप्र से लोचनपुर में प्रतिलिपि कराई थी ।

२७७. **प्रतिसं० ६** । पत्र सं० ११४ । आ० ६×६ इञ्च । ले०काल—सं० १८७४ । वैशाख बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर डूगी ।

२७८. **प्रतिसं० ७** । पत्र सं० १२३ । आ० ९½×५½ इञ्च । ले०काल—सं० १८९६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल ।

विशेष—राजमहल का दूणी मध्ये लिखितं । कटारया मोजीराम ने राजमहल के चन्द्रप्रभ मन्दिर को भेंट किया था ।

२७९. **प्रतिसं० ८** । पत्र सं० ८६ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले०काल--सं० १८५० चैत्र सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल ।

विशेष—विजयकीर्ति जी तत् शिष्य पंडित देवचन्दजी ने लक्षकपुर में आदिनाथ चैत्यालय में व्यास सहजराम से प्रतिलिपि कराई थी ।

२८०. **प्रतिसं० ९** । पत्र सं० ९६ । आ० १०¾×५½ इञ्च । ले०काल--सं० १८८२ । पौष सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९५-३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह

विशेष—लक्षकपुर में गुमानीराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२८१. **प्रतिसं० १०** । पत्र सं ८४ । आ० ११×४ इञ्च । ले०काल—सं० १९७८ आषाढ़ बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५१ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी ।

विशेष— बाबूलाल जैन ने मार्फत बाबू वेद भास्कर से आगरे में लिखवाया था ।

२८२. **प्रतिसं० ११** । पत्र सं० ७७-१०८ । आ०—११×६ इञ्च । ले०काल सं० १८४८ । पौष बुदी ५ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ९४।८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ ।

२८३. **प्रतिसं० १२** । पत्र सं० १३५ । आ० १२×७ इञ्च । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ९।३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

२८४. **प्रतिसं० १३** । पत्र सं० ८५ । आ० १२×६ इञ्च । ले०काल सं० १८०६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

२८५. **प्रतिसं० १४** । पत्र सं० १९८ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१२ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

२८६. **प्रतिसं० १५** । पत्र सं०—१९१ । ले०काल सं० १८२३ जेठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—पुस्तक कामा में लिखी गई थी ।

२८७. **प्रतिसं० १६** । पत्र सं० ११८ । ले० काल सं० १९२४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१८ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी तथा दो प्रतियों का मिश्रण है ।

२८८. **प्रतिसं० १७** । पत्र सं० ९१ । ले०काल--सं० १८५४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

२८९. **प्रतिसं० १८** । पत्र सं० १३१ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल—सं० १८१५ । माह बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

२९०. **प्रतिसं० १९** । पत्र सं० ८६ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

२९१. **प्रतिसं० २०** । पत्र सं० १५८ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० ४९ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर झुण्डावालों का डीग ।

२९२. **प्रतिसं० २१** पत्र सं० ११८ । आ० ११¾×५½ इञ्च । ले० काल—सं० १८३४ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

विशेष— बंशालीमल छाबड़ा ने करौली नगर में प्रतिलिपि करवाई थी ।

२९३. **प्रतिसं० २२** । पत्र सं० १३५ । आ० ११×५½ इञ्च । ले० काल—सं० १८१४ आश्विन सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

२९४. **प्रतिसं० २३** । पत्र सं० १०३ । आ० १२¾×६ इञ्च । ले० काल—१८०७ जेठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२/२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

विशेष—चंद्रप्रभ चैत्यालय करौली में साहिबराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२९५ **प्रतिसं० २४** । पत्र सं० १३२ । ले० काल—सं० १८५२ ज्येष्ठ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०–३४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर बड़ा बीस पंथी दौसा ।

२९६. **प्रतिसं० २५** । पत्र सं० ९ । आ० ९×६ इञ्च । ले० काल—सं० १८१५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३१–६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरह पंथी दौसा ।

विशेष—चिमन लाल छाबड़ा ने प्रतिलिपि की थी ।

२९७. **प्रतिसं० २६** । पत्र सं० १२९ । ले० काल सं० १८२३ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७/४० **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर भादवा (राजस्थान) ।

२९८. **प्रतिसं० २७** । पत्र सं० १६७ । ले० काल–सं० १९२० । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४/१०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर भादवा (राज०) ।

विशेष—भंवरलाल पाटौदी ने प्रतिलिपि की थी ।

२९९. **प्रतिसं० २८** । पत्र सं० ११७ । आ० १३ × ५ इञ्च । ले० काल—सं० १९३१ आषाढ़ सुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५० । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—ईश्वरीय प्रसाद शर्मा ने प्रतिलिपि की थी ।

३००. **प्रतिसं० २९** । पत्र सं० १११ । ले० काल—सं० १८२८ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—साहु रतनचन्द ने स्वयं के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३०१. **चर्चा समाधान—भूधर मिश्र** । पत्र सं० ५३ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी

गद्य । विषय- -सिद्धांत चर्चा । र० काल—× । ले०काल—सं० १७५५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५-४७ । **प्राप्ति स्थान** -दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—हूंबड ज्ञातीय लघु शाखा के पाडलीय नवलचन्द ने प्रतिलिपि कराई थी ।

३०२. **चर्चासागर—पं० चम्पालाल** । पत्र सं०-३६० । आ० १३×६½ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धांत चर्चा । र० काल—सं० १९१० । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर, शेखावाटी ।

३०३. **चर्चासागर वचनिका**—पत्र सं० ३८६ । आ० ११×७¾ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चर्चा । र० काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० १२५२ । **प्राप्तिस्थान**—म. दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३०४. **चर्चासार-धन्नालाल**—पत्र सं० २७ । आ० १०½×६¾ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र० काल—सं० १९४७ फागुण सुदी १० । ले०काल—सं० १९४७ फागुण सुदी १२ । **प्राप्तिस्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ़ कोटा ।

३०५. **चर्चासार—पं० शिवजीलाल** । पत्र सं० १५० । आ० ११½×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चर्चा । र० काल—सं० १९१३ । ले०काल—सं० १९५२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

विशेष—पंडित शिवजीलाल ने ग्रंथ रचा यह सार ।

सकल शास्त्र की साखि नै देखि कीयो निराधर ॥

३०६. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० १०७ । ले० काल सं० १९३३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

३०७. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० १११ । ले०काल—× । **पूर्ण** । वेष्टन सं० ९६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर टूनी, टोंक ।

३०८. **प्रतिसं० ४** । पत्र सं० ५८ । ले०काल—× । **पूर्ण** । वेष्टन सं० ११२-५५ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह, टोंक ।

३०९. **प्रतिसं० ५** । पत्र सं० ६९ । ले०काल—सं० १९२९ । **अपूर्ण** । वेष्टन सं० ७९ । **प्राप्ति स्थान** -दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

३१०. **प्रतिसं० ६** । पत्र सं० १२७ । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८० । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

३११. **चर्चासार**—× । पत्र सं० ४० । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र० काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० १४७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३१२. **चर्चासार**—× । पत्र सं ९६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । विषय-सिद्धांत । र० काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० १५८० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३१३. चर्चासार—× । पत्र सं० ७६ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धांत चर्चा । र०काल—× । ले० काल—सं० १६२६ फागुन बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

३१४. चर्चासार—× । पत्र सं० ५३ । आ० ६½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धांत । र०काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूंदी ।

३१५. चर्चासार संग्रह—भ० सुरेन्द्र भूषण । पत्र सं० ६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धांत चर्चा । र०काल—× । ले०काल—सं० १७३४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—ब्राह्मण चंपे ने बूंदी में छोगालाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३१६. चर्चासार संग्रह—पत्र सं० २६६ । आ० १४½×७½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चर्चा । र०काल—सं० १६०० । ले०काल—सं० १६६० । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर, सीकर ।

३१७. चर्चा संग्रह—× । पत्र सं० १० । आ० ६×७ इञ्च । **भाषा**-प्राकृत । विषय—सिद्धांत । र०काल—× । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

३१८. चर्चा संग्रह—× । पत्र सं० २१ । आ० १२×६ इञ्च । **भाषा**-संस्कृत । हिन्दी । विषय—चर्चा । र०काल—× । ले०काल—× । वेष्टन सं० ७३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

३१९. चर्चासंग्रह—× । पत्र सं० २५ । भाषा-हिन्दी । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

३२०. प्रतिसं० २ । पत्र सं० २६ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६३ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

३२१. चर्चा संग्रह—× । पत्र सं० १५३ । आ० १२½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—चर्चा । र०काल—× । ले०काल—सं० १८५२ माघ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

विशेष—विविध प्रकार की चर्चाओं का संग्रह है ।

३२२. चर्चा संग्रह—× । पत्र सं० ६२ । आ०११×४ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय—चर्चा । अपूर्ण । र०काल—× । ले०काल—× । वेष्टन सं० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी, मालपुरा ।

३२३. चौदह गुणस्थान वर्णन—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं० ३४ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धांत चर्चा । र०काल—× । ले०काल—सं० १८३० आषाढ़ बुदी १ । पूर्ण ।

वेष्टन सं० ११३६ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—चौदह गुणस्थानों का वर्णन है ।

३२४. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ३८ । ले०काल सं० १२४८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२३ । **प्राप्ति-स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३२५. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० ११ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६१ । **प्राप्ति-स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३२६. चौदह गुणस्थान वर्णन—पत्र सं० २ । **भाषा**-संस्कृत । विषय—सिद्धांत । र० काल-× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० ७१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

३२७. चौदह गुणस्थान चर्चा—× । पत्र सं० ३६ । **आ०** ६½×६½ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र० काल— × । ले०काल—सं० १८४५ माघ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर ।

विशेष—भूरामल की पुस्तक से महादास ने प्रतिलिपि की थी ।

३२८. चौदह गुणस्थान चर्चा—× । पत्र सं० ३७ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—चर्चा । र० काल—× । ले०काल—सं० १८४४ कार्तिक सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर डयाना ।

३२९. चौदह गुणस्थान चर्चा × । पत्र सं० ६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र० काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३३०. चौदह गुणस्थान चर्चा × । पत्र सं० २६६ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—चर्चा । र० काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रश्नोत्तरों के रूप में गुणस्थानों एवं मार्गणाओं का वर्णन किया हुआ है ।

३३१. चौदह गुणस्थान वचनिका-अखयराज श्रीमाल—पत्र सं० १०२ । आ० १०½×४ इञ्च । भाषा राजस्थानी (ढूंढारी)—गद्य । विषय -चर्चा । सिद्धांत । र० काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३३२. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ३६६ । आ० १½×६ इञ्च । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरह पंथी दौसा ।

विशेष—नाथूराम तेरह पंथी ने चिमनलाल तेरहपंथी से प्रतिलिपि कराई थी ।

प्रारम्भ—

धर्म धुरन्धर आदि जिन, आदि धर्म करतार ।
मैं नमौं अब हरण तै, सब विधि मंगल सार ॥१॥
अजित आदि पारस प्रभू, जयवन्ते जिनराय ।
घाति चतुष्क कर्ममल, पीछे भये शिवराय ।

वरधमान वर्ती सदा, जिन शासन सुद्ध सार ।
यह उपगार तुम तणौं, मैं पाये सुखकार ।

× × × ×

अथ शास्त्र गोमट्टसार जी वा त्रिलोकसार जी वा लब्धिसार जी के अनुसारि वा किंचत और शास्त्रों के अनुसारि चर्चा लिखिये हैं सो हे भव्य तुं जानि सो ज्यासूं जाण्यां पदारथा का सरूप जथार्थ जाण्यां जाय । अर पदारथ का सरूप जांणि वा करि सम्यक्त्व की प्राप्ति होय । अर सम्यक्त्व की प्रापति से शुद्ध स्वरूप की प्रापति होय सो एही बात उपादेय जाणि भव्य जीवन के चर्चा सीखबो उचित है ।

अन्तिम पुष्पिका—

इति श्री चौदह गुणस्थानक की वचनिका करी श्री जिनेसर की वाणी के अनुसारि संपूर्ण ।

दोहा—चौदह गुणस्थानक कथन, भाषा सुनि सुख होय ।
अखयराज श्रीमाल नैं, करी जथामति जोय ।।

इति श्री गुणस्थान टीका संपूर्ण । ग्रन्थ कर्त्ता अखयराज श्रीमाल ।

३३३. **प्रतिसं०—३** । पत्र सं०—३६ । ले० काल—× । **अपूर्ण** । वेष्टन सं०—६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पंथी दौसा ।

विशेष—पत्र सं० ३० से ३४ व ३६ से आगे नहीं हैं ।

३३४. **प्रतिसं०**—४ । पत्र सं०—५२ । ले० काल सं० १७४१ कार्तिक बुदी ६ । वेष्टन सं० ६०६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

३३५. **प्रतिसं०—५** । पत्र सं०—२० । आ०—६×४½ इञ्च । **अपूर्ण** । वेष्टन सं०—२६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३३६. **प्रतिसं० ६** । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १८१२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सं० १८१२ वर्षे पौषमासे कृष्णपक्षे तीज तिथौ शनिवासरे गुणस्थान की भाषा टीका लिखी उदयपुर मध्ये ।

ग्रन्थ प्रमाण—प्रति पत्र १२ पंक्ति एवं प्रति पंक्ति ३५ अक्षर ।

३३७. **प्रतिसं० ७** । पत्र सं० ५३ । ले० काल सं० १८५४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११६/२८ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ ।

३३८. **प्रतिसं० ८** । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं० १७५० कार्तिक बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—कामा में गोपाल ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी ।

३३९. **प्रतिसं० ९** । पत्र सं० ६५ । आ० १०½ × ४¾ इञ्च । ले० काल सं० १७५८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३४०. **प्रतिसं० १०** । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १७४१ भादवा बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजीकामा ।

३४१. **चौबीस गुणस्थान चर्चा— गोबिन्द दास** । पत्र सं० ८ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-गुणस्थानों की चर्चा । र० काल सं० १८८१ फाल्गुन सुदी १० । ले०काल सं० १८....। पूर्ण । वेष्टन सं० ४३-११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

प्रारम्भ—

गुण छियालीस करि सहित, देव अरहंत नमामि ।
हुयो आठ गुण लिये, सिद्ध सब हित के स्वामी ।।
छत्तीस गुणां करि, विमल आप आचारिज सोहत ।
नमो जोरि कर ताहि, सुनत बानी मन मोहत ।
अरु उपाध्याय पच्चीस गुण सदा बसत अभिराम है ।
गुण आठ बीस फिरि साधु हैं, नमो पंच मुख धाम है ।।

अन्तिम—

संस्कृत गाथा कठिन, अरथ न समझ्यो जाय ।
ता कारण गोबिंद कवि, भाषा रची बनाय ।।
जो या कौ सीखे सुणै, अरथ विचारे जोय ।
सभा मांह आदर लहै, मूरिख कहै न कोय ।।
अक्षर अरथ मांहें घटि बढि होय ।
सुबुजन सबै सुधारज्यो माफ कीजिये सोय ।।
अठारासै ऊपरै गयूं, इक्यासी और
फागुण सुदी दशमी सुतिथि, शशि वासर शिरमोर ५६ ।।
दादूजी को साधु है, नाम जो गोबिन्ददास ।
तानै वह भाषा रची, मनमांहि धारि उल्हास ।।
नासरदा ही नगर में रच्योजु, भाषा ग्रंथ ।
जो याकूं सीखे सुणै लहै जैन मत पंथ ।।

३४२. **चौदह मार्गणा टीका**—× । पत्र सं० ८६ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३४३. **चौबीस ठाणा**— × । पत्र सं० २४ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चर्चा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३४४. **चौबीस ठाणा चर्चा— नेमिचन्द्राचार्य । टिप्पणकार— दयातिलक**— पत्र सं० १२३ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत-संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १८४०-अगहन । वेष्टन सं० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—महाराजा सवाई प्रतापसिंह के शासन काल में पं० रत्नचन्द्र ने जयपुर के लश्कर के मन्दिर में पूर्ण किया तथा प्रारम्भ "चम्पावती नगर में किया। ग्रन्थ का नाम "जैन सिद्धान्त सार" भी दिया है जिसको दयातिलक ने आनन्द राय के लिये रचा था।

३४५. चौबीस ठाणा चर्चा— × । पत्र सं० १०। आ० १६ × ११½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। र० काल × । ले० काल सं० १९४३ आषाढ सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० ८८। **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ, (कोटा)

विशेष—बडा नक्शा दिया हुआ है।

३४६. चौबीस ठाणा चर्चा—आ० नेमिचन्द्र। पत्र सं० २६। आ० १०½ × ४½ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय—सिद्धांत। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १६२७। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

३४७. प्रतिसं०— २ पत्र सं० ३०। आ० १०½ × ४½ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ९९६। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

३४८. प्रतिसं० ३ पत्र सं० २८। ले० काल–सं० १८२८ श्रावण बुदी ५। वेष्टन सं २२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—ठाकुरसी ने ब्राह्मण चिरंजीव राजाराम से प्रतिलिपि कराई थी।

३४९. प्रतिसं० ४ पत्र सं० ३२। ले० काल–। वेष्टन सं० २३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर।

विशेष—प्रति संस्कृत टिप्पण सहित है। कृष्णगढ के चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी।

३५०. प्रतिसं० ५। पत्र सं० ५२। ले०काल–सं० १७८४–फागुण सुदी १२। वेष्टन सं० २४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत्सरे १७८४ फागुणमासे शुक्लपक्षे द्वादशतिथौ रविवारे उदयपुरनगरे श्रीपार्श्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे भट्टारकेन्द्र भट्टारकजी श्री १०८ देवेन्द्रकीर्तिजी आचार्य श्री शुभचन्द्रजी तत् शिष्याचार्यवर्यार्यजी श्री १०८ क्षेमकीर्त्ति जी तच्छिष्य पांडे गोर्द्धनास्यस्तेनेदं पुस्तकं लिखितं।

३५१. प्रतिसं० ६। पत्र सं० ३०। ले० काल सं० १८८५। पूर्ण। वेष्टन सं० १७५–७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूँगरपुर।

३५२. प्रतिसं० ७ पत्र सं० २६। ले० काल सं० १७३१। पूर्ण। वेष्टन सं० ११०/११। **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैनमन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है— संवत् १७३१ वर्षे आषाढ़मासे बुदी ९ शुक्रे श्री गिरिपुरे श्री आदिनाथ चैत्यालये श्री काष्ठासंघे नंदीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री राजकीर्ति ब० श्री अमयरुचि पठनार्थं।

३५३. प्रतिसं० ८। पत्र सं० २६। ले० काल सं० १७१३। पूर्ण। वेष्टन सं० ४१२। १९७। **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

प्रशस्ति—सं० १७१३ कार्तिक सुदी ७ सोमवार को सागवाडा के मन्दिर में रावल श्री पुंज विजय के शासन में कल्याणकीर्ति के शिष्य तेजपाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३५४. प्रतिसं० ९ । पत्र सं० ३५ । ले०काल × । **अपूर्ण** । वेष्टन सं० ४१३ । १९८ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

३५५. प्रतिसं० १० पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १७७४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१४/१९९ **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—सं० १७७४ मंगसिर सुदी ४ रविवार को श्री सागपत्तन नगर में आदिनाथ चैत्यालय में नौसम चैत्यालय मध्ये ब्र० केशव ने प्रतिलिपि की थी ।

३५६. प्रतिसं० ११ । पत्र सं० १९ । ले० काल × । **अपूर्ण** । वेष्टन सं० २०० । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

३५७. प्रतिसं० १२ । पत्र सं० ४४ । ले० काल० × । पूर्ण । वेष्टन ८१–११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

३५८. प्रतिसं० १३ । पत्र सं० ३४ । ले० काल × । **अपूर्ण** । वेष्टन सं० ४९ । **प्राप्ति स्थान** द० जैन मन्दिर बड़ा बीस पंथी दौसा ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

३५९. प्रतिसं० १४ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १९४ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३६०. प्रतिसं० १५ । पत्र सं० २३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८४ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३६१. प्रतिसं० १६ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १७३६ मंगसिर सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३६२. प्रतिसं० १७ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३६३. प्रतिसं० १८ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३६४. प्रतिसं० १९ । पत्र सं० ६७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११२/४ **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्द्रगढ (कोटा)

३६५. प्रतिसं० २० । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १८४७ । पूर्ण । जीर्ण । वेष्टन सं० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

३६६. प्रतिसं० २१ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

३६७. प्रतिसं० २२ । पत्र सं० १७ । आ० ११ × ५½ इञ्च ले० काल— सं० १६१७ श्रावण

सुदी । पूर्ण । वे० सं० ३१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दनस्वामी बूंदी ।

प्रशास्ति— अथ संवतसरेस्मिन् श्रीविक्रमादित्यराज्ये संवत् १६१७ श्रावणमासे शुक्लपक्षे नक्षत्रे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे तदाम्नाये भ० श्री कुन्दकुन्दान्वये भ० जिनचंद्रदेवा सकलतार्किक-चूडामणि श्री सिंघकीर्तिदेव तत्पट्टे भ० धर्मकीर्तिधवलस्याथे संसारिश्रीतिलिका त्रयोदशविधिचारित्र-प्रतिपालक भव्यजनकुमुदप्रतिबोधित चंद्रोदये मेनार आचार्य श्री मदनचंद तत्शष्यि पंडिताचार्य श्रीध्यानचंदेन इदं चतुर्दशस्थान लिपिकृतं । प्रतितत्परः पुस्तकं कृत्वा लेखकानां श्रीमोहनवास्तव्येन सा० अरहदास पठनार्थं कर्मक्षयनिमित्तं ।

३६८. **प्रतिसं० २३** । पत्र सं० ४२ ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दनस्वामी बूंदी ।

३६९. **प्रतिसं० २४** । पत्र सं० ४८ । ले० काल—सं० १८५९ आसोज सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

३७०. **प्रतिसं० २५** । पत्र सं० २३ । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदीनाथ बूंदी ।

३७१. **प्रतिसं० २६** । पत्र सं० ३० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

३७२. **चौबीसठाणा चर्चा**—पत्र संख्या २१ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चर्चा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

३७३. **चौबीसठाणा चर्चा**—× । पत्र सं० २६४ । आ० ११×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । र० काल × । ले० काल सं० १७५५ कार्तिक सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४५७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७४. **चौबीसठाणा चर्चा**—× । पत्र सं० १६२ । आ० १२×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-चर्चा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४५८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७५. **चौबीसठाणा चर्चा**—× । पत्र सं० १५० । आ० ११$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-चर्चा । र० काल × । ले० काल सं० १९१५ आसोज सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २/४५ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ ।

विशेष—ब्रह्मलाल ने माधोगढ में प्रतिलिपि कराई थी ।

३७६. **चौबीसठाणा चर्चा**—× । पत्र सं० ७५ । आ० ८$\frac{1}{2}$ × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-चर्चा । र० काल × । ले० काल-पूर्ण । वेष्टन सं० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ ।

३७७. **चौबीसठाणा चर्चा**—× । पत्र सं० १ । आ० ४८×१४ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय-सिद्धान्त चर्चा । ले० काल × । र० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०/७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पंचायती मन्दिर बूंदी (टोंक)

३७८. चौबीसठाणा चर्चा—× । पत्र सं०-६ । आ०—१०×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । विषय—हिन्दी । (पद्य) विषय—सिद्धान्त चर्चा । र० काल—× । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टन सं०—३७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

३७९. चौबीसठाणा चर्चा—× । पत्र सं०—२३ । आ०—९.० ×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—सिद्धान्त-चर्चा । र० काल— × । ले० काल-सं० १८७४ । पूर्ण । वेष्टन सं०—४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक) ।

३८०. चौबीसठाणा चर्चा—× । पत्र सं०-४२ । आ०-१०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—सिद्धान्त-चर्चा । र० काल—× । ले० काल—× पूर्ण । वे० सं०—१९७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी ।

३८१. प्रति सं—२ । पत्र सं०—४५ । ले० काल—× । पूर्ण । वे० सं०—१४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

३८२. प्रति सं०—३ । पत्र सं०-५६ । ले० काल-सं० १८२९ । पूर्ण । वे० सं०- २४-१८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेष—भादवा ग्राम में प्रतिलिपि हुई थी ।

३८३. चौबीसठाणा चर्चा × । पत्र सं०—५४ । आ०—११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—सिद्धान्त चर्चा । र० काल—× । ले० काल—× । अपूर्ण । वे० सं०—१४०-६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

३८४. चौबीस ठाणा -- × । पत्र सं० ८ । आ० ११×३$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा— हिन्दी । विषय—सिद्धान्त चर्चा । ले० काल—× । पूर्ण । वे० सं०—१३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—बसवा में पं० परसराम ने चि० अनंतराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३८५. प्रति सं०—२ । पत्र सं०—६ । आ०—१०$\frac{3}{4}$×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं०—२९१ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

३८६. प्रतिसं०—३ । × । पत्र सं०—१४ । ले० काल- × । पूर्ण । वे० सं०-१८९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

३८७. चौबीसी ठाणा पीठिका—× । पत्र सं०-२-६५ । आ०—८$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । विषय—सिद्धान्त । र० काल—× । ले० काल—× । पूर्ण । वे० सं०—३८२-१४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

३८८. चौरासी बोल—× । पत्र सं०—८ । आ०—११$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चर्चा । र० काल— × । ले० काल-सं० १७२८ वैशाख बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—लिखित पं० जगन्नाथ ब्राह्मण लघुदेवगिरी वास्तव्य ।

३८९. छियालीस ठाणा चर्चा—× । पत्र सं०—१५ । आ०—१०½×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल—× । ले० काल—सं० १८५० आषाढ़ बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं०—१९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—त्रेपठ शलाका पुरुषों के नाम भी दिये हुये हैं । शेरगढ़ में पार्श्वनाथ चैत्यालय में लिखा गया था ।

३९०. छत्तीसी ग्रन्थ— × । पत्र सं० ११–६६ । आ० ११½ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—गुणस्थान चर्चा । र०काल × । ले० काल सं० १६४८ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६४८ वर्षे आसोज बुदी १३ दिने श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री त्रादिभूषण गुरूपदेशात् नागद्रा ज्ञातीय सा० अचला भार्या वंछा पुत्री राजा एतैः स्वज्ञानावरणीय कर्मक्षयार्थं इदं छत्तीसी नाम शास्त्रं लिखाप्य ब्रह्म भट्टारक श्री जिनचंकीर्ति ब्रह्म नारायणाय दत्तमिदं ..... पठनार्थं दत्तं । शुभं भवतु । छत्तीसी ग्रन्थ समाप्तं ।

पंक्ति १२ प्रति पंक्ति २९ अक्षर है ।

३९१. जीव उत्पत्ति सझाय—हरखसूरि । पत्र सं० २ । आ०—९½ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—नंदवेगा सज्झाय भी है ।

३९२. जीवतत्वस्वरूप— × । पत्र सं० १० । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६४ । २५१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

३९३. जीवविचार सूत्र - पत्र सं० १० । आ० ९ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत–हिन्दी । विषय— सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा शांतिसूरि कृत हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

३९४. जीवस्वरूप - × । पत्र सं० ७ । आ० ९ × ६ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय — सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५५ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मंदिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

३९५. जीवाजीव विचार— × । पत्र सं० ८ । आ०— १० × ४½ इञ्च । भाषा— प्राकृत । विषय— सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल सं० १८१९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७९, ४९ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

३९६. **ज्ञातृधर्म सूत्र**— × । पत्र सं० १०२ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आगम । र० काल × । ले० काल सं० १९३९ पौष सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ; **प्राप्ति स्थान**—दि० जै० मंदिर दीवानजी कामा ।

३९७. **जीवविचार प्रकरण**— **शांतिसूरि** । पत्र सं० ८ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धांत । र० काल × । ले० काल सं० १७२६ ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—मूल के नीचे हिन्दी की टीका है ।

३९८. **प्रति सं०—२** । पत्र सं०—७ । आ०—१०×४½ इञ्च । ले० काल सं० १७९३ पौष सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

३९९. **प्रति सं०—३** । पत्र सं०—८ । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं०—५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना ।

विशेष—मूल के नीचे हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

४००. **प्रति सं०—४** । पत्र सं०—७ । ले० काल—× । पूर्ण । वे० सं०—४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—मूल के नीचे हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है । पत्र ७ में दिशाशूल वर्णन भी है ।

४०१. **प्रति सं**—५ । पत्र सं०-७ । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं०-२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

४०२. **प्रति सं०—६** । पत्र सं०— ८ । आ०-१०×४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

४०३. **जीवसमास विचार**— × । पत्र सं०— ६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत-संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल—× । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं०—१२५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

४०४. **जीवस्वरूप वर्णन**— × । पत्र सं०—१ से १५ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत-प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल—× । ले० काल—× । वे० सं०—७५८ । **अपूर्ण** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । गोम्मटसार जीवकांड में से जीव स्वरूप का वर्णन किया गया है ।

४०५. **ज्ञान चर्चा**—× । र० काल—× । ले० काल—× । पूर्ण । वे० सं०—१३२६ ।

प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४०६. **प्रति सं०**—२ । पत्र सं०—२–५५ । ले० काल सं० १८२८ भादों सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं०—२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक)

४०७. **प्रति सं०**—६ । पत्र सं०—३७ । ले० काल—× । पूर्ण । वे० सं०—३५/११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—विभिन्न चर्चाओं का संग्रह है ।

४०८. **ज्ञानसार—मुनि पोर्मसिंह** । पत्र सं० ५ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ । **भाषा**—प्राकृत । विषय—सिद्धांत । र० काल—१०८१ श्रावण सुदी ६ । ले० काल—सं० १८२१ भादवा सुदी ११ । वेष्टन सं० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—पंडित श्री चोखचन्द्र के शिष्य श्री सुखराम ने नैणसागर से प्रतिलिपि कराई थी ।

४०९. **ठाणांग सुत्त**—× । पत्र सं०—१,१३–२३३ । आ० १०×३$\frac{1}{2}$ इंच । **भाषा**-प्राकृत । विषय—आगम । र० काल—× । ले०काल सं० १६५६ । **अपूर्ण** । वेष्टन सं० ३३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है । टीका विस्तृत है । संवत् १६५६ वर्षे कार्तिक सुदी द्वितीया भौमे लिपिकृतं आत्मर्थे । अभयदेव सूरि विरचिते स्थानाख्य तृतीयांग विवरणस्थानकाव्ये । अन्त में—ठाणांग बालावबोध समाप्तं च डीडवाणा स्थाने । २ से १२ तक पत्र नहीं है । इस ग्रंथ के पत्र १,१३–२३२ तक वेष्टन सं० १८२ में है । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

४१०. **प्रति सं०** २ । पत्र सं०—१ से ९६ । ले० काल—× । **अपूर्ण** । वेष्टन सं० ३५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

४११. **ढाढसी गाथा—ढाढसी** । पत्र सं०—२–९ । आ० ११×४ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले०काल × । **अपूर्ण** । वेष्टन सं० ४८० । २४७ । **संस्कृत टीका सहित है** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर, उदयपुर ।

४१२. **तत्वकौस्तुभ—पं० पन्नालाल पांडया** । पत्र सं०—८७४ । आ० १२×७$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय–सिद्धान्त । र० काल सं० १९३४ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० १३६—१३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—तत्वार्थराजवार्तिक की हिन्दी टीका है ।

प्रति दो वेष्टनों में है—पत्र सं०—१–४०० तक वेष्टन सं० १३६

पत्र सं०—४०१–८७४ तक वेष्टन सं० १३७ ।

४१३. **तत्वज्ञानतरंगिणी-भ० ज्ञानभूषण** । पत्र सं०७६ । आ० १३×७$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–संस्कृत, हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र० काल—सं० १५६० । ले० काल सं०—१९७९ । पूर्ण । वेष्टन सं०—१६९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी ।

४१४. प्रतिसं० २ । पत्र सं०—३० । आ० १०×६ इंच । ले० काल सं० १८४४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८/४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० मन्दिर कोटडियों का, डूंगरपुर ।

४१५. तत्वचर्चन—× । पत्रसं० ३ ३६ । आ० १०×४½ इंच । **भाषा** हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल— × । ले० काल × । **अपूर्ण** । वेष्टन सं० ६० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—गुजराती मिश्रित हिन्दी गद्य है ।

४१६. तत्वसार—देवसेन । पत्र सं० ४ । आ० १३½×६ । **भाषा**—अपभ्रंश । विषय—सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ४०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

४१७. तत्वानुशासन-रामसेन । पत्र सं० १७ । आ० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल— × । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४१८. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल- × । वेष्टन सं० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

४१९. तत्वार्थबोध—बुधजन । पत्र सं० १०६ । आ०-११×७ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सिद्धान्त । र० काल सं० १८७९ कार्तिक सुदी ५ । ले० काल सं० १८८२ फाल्गुन बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

४२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७४ । आ० १३×८ इंच । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । ५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा ।

४२१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४४ । ले०काल — × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

४२२. प्रति सं० ४ । पत्र सं०—८१ । ले० काल—सं० १९८० फाल्गुण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३५ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—पं० हरगोविन्द चौबे ने प्रतिलिपि की थी ।

४२३. तत्वार्थरत्नप्रभाकर—भ० प्रभाचन्द्र । पत्र सं० १२६ । आ० ११½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल सं०—१४८६ भादवा सुदी ५ । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र की प्रभाचन्द्र कृत टीका है ।

४२४. प्रति सं २ । पत्रसं० १७२ । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टन नं० ५४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर, भरतपुर ।

४२५. प्रति सं ३ । पत्र सं० ११८ । ले० काल सं०—१९८० कार्तिक बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर, करौली ।

४२६. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० ७८ । आ० ११×८ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं०—७२ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

४२७. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० १४३ । आ० १२×४½ । ले०काल सं० १६८३ वैशाख बुदी ५ । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

४२८. **तत्वार्थराजवार्तिक—भट्टाकलंक** । पत्रसं० ८७४ । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल—× ले० काल—× पूर्ण । वेष्टनसं० ३/१३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर, अलवर ।

४२९. **प्रति सं०—२** । पत्रसं० ६२ । आ०—१३×८ इञ्च । ले०काल- -× । अपूर्ण । वेष्टनसं० १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर, अलवर ।

४३०. **प्रति सं० ३** । आ० १४×८½ इञ्च । पत्रसं०-४१२ । ले०काल १६६२ पौष बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खण्डेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—प्रति उत्तम है ।

४३१. **प्रति सं०—४** । पत्रसं० १२ । ले० काल—× । वेष्टनसं० ३३ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—१२ से आगे पत्र नहीं लिखे गये हैं ।

४३२. **प्रति सं०—५** । पत्रसं० ५८० । आ०—११×४½ इञ्च । ले०काल - × । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४३३. **तत्वार्थवृत्ति -पं० योगदेव** । पत्रसं० १ से १४६ । आ०—१२×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय - सिद्धान्त । र०काल—× । अपूर्ण । वेष्टनसं० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । प्रति पत्र में ९ पंक्ति एवं प्रति पंक्ति में ३२ अक्षर हैं । १०० - ११६ तक अन्य प्रति के पत्र हैं ।

४३४. **तत्वार्थश्लोकवार्तिक आ० विद्यानन्दि** । पत्रसं० ५४३ । आ०-१२×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय - सिद्धान्त । र०काल—× । ले०काल सं० १९७६ पौष सुदी ९ । पूर्ण । वेष्टनसं० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौमान बूंदी ।

४३५. **तत्वार्थसार—अमृतचन्द्राचार्य** । पत्रसं० ३३ । आ० - ११×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल सं० १६३९ आसोज सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—इति अमृतचन्द्रसूरीणां कृति सुतत्वार्थसारो नाम मोक्षशास्त्रं समाप्तं ॥ अथ ग्रन्थाग्रन्थश्लोक सं० ७२४ ।

प्रशस्ति संवत् १६३९ वर्षे आसोज सुदी ३ बुधे श्री मोजिमपुर चैत्यालये श्रीमूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री सुमतिदेवास्तत्पट्टे भ० गुणकीर्तिदेवा ब्र० कर्मसी पठनार्थं देवे माहवजी लक्ष्मी तं..... ।

४३६ प्रति सं० २ । पत्रसं० ५६ । ले०काल १८१४ आषाढ बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० २१४ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर में लिखा गया था ।

४३७. **तत्वार्थसारदीपक—भ० सकलकीर्त्ति** । पत्रसं० ६३ । आ०- १०½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७६—४३ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष -प्रति प्राचीन है। **अन्तिम प्रशस्ति**-सागवाडा वास्तव्य सं० जावड भार्या लाई तिमणादे तयोः पुत्रो बाई अणु अरिक्सा पठनार्थं ।

४३८. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ६६ । आ० १२ × ५⅝ । ले०काल—सं० १८२६ । वेष्टनसं० ४५ । दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—महाराजा सवाई पृथ्वीसिंह के शासनकाल में जयपुर नगर में केशव ने प्रतिलिपि की थी ।

४३९. **तत्वार्थसूत्र मंगल**— × । पत्रसं० ४ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५६५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष— हिन्दी में तत्वार्थ सूत्र का सार दिया हुआ है ।

४४०. **तत्वार्थसूत्र-उमास्वामि** । पत्र सं० ३३। आ० ११ × ५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धांत । र०काल × । ले०काल सं०× पूर्ण । वेष्टनसं० ११०६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

विशेष—इसी का दूसरा नाम मोक्षशास्त्र भी है ।

४४१. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ११ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले०काल सं० १८५३ । पूर्ण । वेष्टनसं० सं० ६८४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४४२. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० १६ । आ० ६ × ५ इञ्च । ले०काल सं०१८२५ वैशाख बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १३२३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४४३. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० ५ । आ० १० × ४¾ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १००३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

४४४. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० ४० । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनसं० २२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी । हिन्दी टीका सहित है ।

४४५. **प्रति सं०**—६ । पत्र सं० १७ । ले०काल × । पूर्ण वेष्टनसं०—२२८ **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—मूल के नीचे हिन्दी टीका भी है ।

४४६. **प्रति सं०**—७ । पत्र सं० ४८ । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनसं० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—उक्त मन्दिर ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

४४७. **प्रति सं० ८** । पत्र सं० ७ । आ० १३ × ५½ इञ्च । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दनस्वामी बूंदी ।

४४८. **प्रति सं० ९** । पत्र सं० २९ । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दनस्वामी, बूंदी ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

४४९. **प्रति सं० १०** । पत्र सं० ९४ । ले०काल—सं० १८२७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५० **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है । पं० रतनलाल त्रिभवनलाल की पुस्तक है ।

४५०. **प्रतिसं०—११** । पत्र सं० १६ । ले०काल सं० १९४७ चैत्र सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूंदी ।

विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरों में लिखी हुई है । चंपालाल श्रावक ने प्रतिलिपि की थी ।

४५१. **प्रति सं०—१२** । पत्र सं० ५० । आ०—१०×५½ इञ्च । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं०—४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्योंका नेणवां ।

विशेष—इसके अतिरिक्त निम्न पाठों का संग्रह और है—

जिनसहस्रनाम— (संस्कृत) **आदिनाथजी की वीनती** किशोर—(हिन्दी) ।

श्री सकलकीर्ति गुरु बंदी कीर्ति स्याम दसेसी ।
विनती रचीय किशोर पुर केथोण वसै जी ।
जो गावे नर नारि सुस्वर भाव धरेजी ।
त्यां घरि नोनधि होई धन कोष भरे जी ।

पार्श्वनाथ स्तुति–बलु–हिन्दी (र० काल सं० १७०४ अषाढ़ सुदी ५)

आदिनाथ स्तुति–कुमदचन्द्र–हिन्दी ।

प्रारम्भ—प्रभु पायि लागु करु सेव थारी ।
तुम्हे सांभलो श्री जिनराज महारी ।

अन्तिम—घणु विनउ हूं जगनाथ देवो ।
मोहि राखि जे भवै भवै स्वामी सेवो ।।
या विनती भावसु जे भणीजे ।
कुमुदचन्द्र स्वामी जिसो हो खमीजे ।।

अक्षर माला—मनराम–हिन्दी ।

विषापहार स्तोत्र भाषा—अचलकीर्ति–हिन्दी (र० काल सं०– १७१५)

विशेष—नारनौल में इस ग्रन्थ की रचना हुई थी ।

४५२. **प्रतिसं०—१३** । पत्र सं० ४५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

४५३. **प्रतिसं० १४** । पत्रसं० ८ । ले० काल— × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १४४ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर, राजमहल ।

४५४. **प्रतिसं० १५** । पत्रसं०—५२ । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टनसं०—५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है ।

४५५. **प्रतिसं० १६** । पत्रसं०–३३ । ले० काल सं० १८५३ । पूर्ण । वेष्टनसं०–५६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—भक्तामर स्तोत्र भी दिया हुआ है

४५६. **प्रतिसं० १७** । पत्रसं०—५४ । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टनसं०—१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक) । हिन्दी टीका सहित है ।

४५७. **प्रतिसं० १८** । पत्रसं०—१२-३० । ले०काल सं० १८१६ पूर्ण । वेष्टनसं०—२८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष —इसी मन्दिर के शास्त्र भण्डार में तत्वार्थ सूत्र की पांच प्रतियां और हैं ।

४५८. **प्रति सं० १९** । पत्रसं०–३८ । ले० काल–सं० १९४० आषाढ़ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७८।४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर, इन्द्रगढ़ (कोटा) ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है । नसीराबाद की छावनी में प्रतिलिपि की गई थी । इस ग्रन्थ की दो प्रतियां और हैं ।

४५९. **प्रतिसं० २०** । पत्रसं०–२ से १० । विषय – सिद्धान्त । र०काल —× । ले०काल सं० १९३० । अपूर्ण । वेष्टनसं०—२९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४६०. **प्रतिसं० २१** । पत्र सं० ११ । ले०काल —× । पूर्ण । वेष्टन सं० २२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि. जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

विशेष – संस्कृत टब्बा टीका सहित है ।

४६१. **प्रतिसं० २२** । पत्र सं० १४ । ले० काल—सं० १७९७ कार्तिक बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

४६२. **प्रतिसं०—२३** । पत्र सं० १५ । ले०काल – × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५४ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

४६३. **प्रतिसं० –२४** । पत्र सं० २० । ले०काल—सं० १९४८ पौष शुक्ला १२ । पूर्ण । वेष्टन सं०१५३ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन खण्डेलवाल पञ्चायती मंदिर अलवर ।

विशेष—स्वर्णाक्षरों में बहुत सुन्दर प्रति है ।

४६४. **प्रतिसं० २५** । पत्र सं० २० । ले० काल—सं० १९४८ फाल्गुन सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पञ्चायती मंदिर अलवर ।

विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरों में लिखी हुई है। चिम्मनलाल ने प्रतिलिपिकी थी।

४६५. **प्रतिसं० २६**। पत्र सं० ३४। ले०काल- × । पूर्ण। **वेष्टनसं०६२**। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, भरतपुर।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है। बहुत सुन्दर है।

४६६. **प्रतिसं० २७**। पत्र सं० १५। ले०काल—×। पूर्ण। **वेष्टनसं० ६४**। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर।

४६७. **प्रतिसं० २८**। पत्र सं० ४७। ले०काल सं० १८८१। पूर्ण। **वेष्टनसं० २५७**। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर, भरतपुर।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है तथा अक्षर मोटे हैं।

४६८. **प्रतिसं० २९**। पत्रसं० ६२। ले०काल—×। पूर्ण। **वेष्टनसं० १८४**। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मंदिर, भरतपुर।

विशेष—सामान्य अर्थ दिया हुआ है। इस मन्दिर में तत्वार्थ सूत्र की १३ प्रतियां और हैं।

४६९. **प्रतिसं० ३०**। पत्रसं० १६। ले०काल—×। पूर्ण। **वेष्टनसं० १२१**। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मन्दिर, बयाना।

४७०. **प्रतिसं० ३१**। पत्रसं० २७। ले०काल—सं० १८३८। पूर्ण। **वेष्टनसं० ७२**। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मंदिर, बयाना।

विशेष—प्रति हिन्दी तथा टीका सहित है।

४७१. **प्रतिसं० ३२**। पत्रसं० २१। ले०काल—सं० १९०४। पूर्ण। **वेष्टनसं० ८६**। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर, बयाना।

विशेष—इसी मन्दिर में दो प्रतियाँ और हैं।

४७२. **प्रतिसं० ३३**। पत्रसं० ३०। ले०काल—×। पूर्ण। **वेष्टनसं० ६४**। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर, कामा।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है। इसी मंदिर में दो प्रतियां और हैं।

४७३. **प्रतिसं० ३४**। पत्र सं० २०। ले०काल—× । पूर्ण। **वेष्टनसं० ३०६**। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी, कामा।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है।

४७४. **प्रतिसं० ३५**। पत्र सं० १२। ले०काल— × । पूर्ण। **वेष्टनसं० १९**। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा।

विशेष—नीले रङ्ग के पत्रों पर स्वर्णाक्षरों की प्रति है।

४७५. **प्रतिसं० ३६**। पत्र सं० १२। ले०काल— × । पूर्ण। **वेष्टनसं० १०९**। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा।

४७६. **प्रतिसं० ३७** । पत्रसं० १२१ से १६२ । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ११० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

४७७. **प्रतिसं० ३८** । पत्रसं० २१ । ले०काल—सं० १८६० : पूर्ण । वेष्टन सं० ३३५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

४७८. **प्रतिसं० ३९** । पत्रसं० १६ । ले०काल— × । पूर्ण : वेष्टन सं० ६८ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डावालों का, डीग ।

४७९. **प्रतिसं० ४०** । पत्रसं० ७० । ले०काल—१६५४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति-स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

४८०. **प्रतिसं० ४१** । पत्रसं० १२ । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

४८१. **प्रतिसं० ४२** । पत्रसं० २-१६ । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७७ । जीर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

४८२. **प्रतिसं० ४३** । पत्रसं० ८ । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

४८३. **प्रतिसं० ४४** । पत्रसं० २० । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४ से १०१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

४८४. **प्रतिसं० ४५** । पत्रसं० ११ । ले०काल—सं० १९६७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५ से १०१ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—ईश्वरलाल चांदवाड ने प्रतिलिपि की थी ।

४८५. **प्रतिसं० ४६** । पत्रसं० २८ । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनसं० १५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—लिपि सुन्दर है । अक्षर मोटे हैं । हिन्दी गद्य में अर्थ दिया हुआ है ।

४८६. **प्रति सं० ४७** । पत्रसं० २० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३२ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—प्रति सुनहरी है पर किसी २ पत्र के अक्षर मिट से गये हैं ।

४८७. **प्रतिसं० ४८** । पत्रसं० १३ । ले०काल — सं० १८४३ आसोज बदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

४८८. **प्रतिसं० ४९** । पत्रसं० १६ । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं० १९५ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—**ऋषिमंडल स्तोत्र** गौतम स्वामी कृत और है जिसके पांच पत्र हैं ।

४८६. **प्रतिसं० ५०** । पत्रसं० ४२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८८ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मंदिर पलेलपुर बेलगांवी (कर्नाटक) ।

विशेष—एक प्रति और है । प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

४६०. **प्रतिसं० ५१** । पत्रसं० १० । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४६१. **प्रतिसं० ५२** । पत्रसं० ६-१३० । ले०काल सं० १८७७ चैत बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है । लेकिन वह अशुद्ध है ।

प्रमाण नयैरधिगम :– चत्वारि सजीवादीनां नव पदार्थ तत्व प्रमाण भेद द्वैकरि । नय कथिते भेद द्वयं प्रमाणं भवति । नय भवति विकल्प द्वयं । तत्र प्रमाण कोऽर्थः । प्रमाणं भेद द्वयं । स्वार्थ प्रमाणं परार्थ प्रमाणं । तत्र च अयं प्रमाणं को विशेषः । प्रधानश्रुतज्ञानगरिष्ठसिद्धांतशास्त्र स्वार्थ प्रमाणं भवति । यत् ज्ञानात्मकं भावश्रुतं श्रुतसूक्ष्मजल्पना अभ्यंतरि आत्मज्ञान । यस्य परमार्थं भवति । स्वार्थं प्रमाणं वचनात्मकं । परमार्थं प्रमाणं तस्य वचनात्मकं श्रुत ज्ञानस्य विकलाना एवं प्रमाण विशेषः । नय कोऽर्थः । नयस्य भेद-द्वयं । द्रव्यार्थनय व्यवहारनय । अधिगम्य कोऽर्थः उपयांतरं प्रमाणनयस्य । इति भावार्थः ॥

४६२. **प्रतिसं० ५३** । पत्रसं० २६ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है एवं हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

४६३. **प्रति सं० ५४** । पत्रसं० ३२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है ।

४६४. **प्रति सं० ५५** । पत्रसं० १८ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३६—६२ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

४६५. **प्रति सं० ५६** । पत्रसं० ८ । ले०काल × । वेष्टन सं० ४०७ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

४६६. **प्रति सं० ५७** । पत्रसं० २३ । ले०काल × । वेष्टन सं० ४२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

४६७. **प्रतिसं० ५८** । पत्रसं० ८२ । आ० ११ × ४½ इञ्च । ले० काल × । वेष्टनसं० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

४६८. **प्रतिसं० ५९** । पत्रसं० ८६ । ले० काल × । वेष्टनसं० ४४ । **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त मंदिर ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

४९९. **प्रति सं० ६०** । पत्र सं० २० । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५७ । १९० **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर संभवनाथ उदयपुर ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

५००. **प्रति सं० ६१** । पत्र सं० २४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५८ । १९१ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर । प्रति प्राचीन है ।

५०१. **प्रति सं० ६२** । पत्र सं० ८४ । आ० ११$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १९१२ चैत्र सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १९८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । भरतपुर में प्रतिलिपि करायी गयी थी । श्री सुखदेव की मार्फत गोपाल से यह पुस्तक खरीदी गयी थी ।

चढायतं जैन मंदिर कामा के रामसिंह कासलीवाल दीवान उमरावसिंह का बेटा बासी कामा के सावण सुदी ५ सं० १९२८ में ।

५०२. **प्रति सं० ६३** । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १९४९ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है । आनंदीलाल दीवान कामावाले ने प्रतिलिपि कराकर दीवान जी के मंदिर में चढ़ायी थी ।

५०३. **प्रति सं० ६४** । पत्र सं० ७८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा संस्कृत टीका सहित है ।

५०४. **तत्वार्थ सूत्र भाषा** × । पत्र सं० ५३ । आ० १२$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १९१३ भादवा सुदी ९ । अपूर्ण । वेष्टन सं० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर अलवर ।

५०५. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ३३ । आ० १२$\frac{1}{2}$×८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष - हिन्दी में टिप्पण दिया हुआ है ।

५०६. **तत्वार्थ सूत्र टीका—श्रुतसागर** । पत्र सं० ३१६ । आ०—११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १७९५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८३ । **प्राप्ति स्थान** -- दि० जैन मन्दिर अभिनन्दनस्वामी बूंदी ।

विशेष—जयपुर में श्वे० प्रयागदास ने प्रतिलिपि की थी ।

५०७. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ३६६ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती दूनी (टोंक) ।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है । ग्रन्थ के दोनों पुट्ठे सचित्र हैं ।

५०८. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ४७६ । ले० काल स० १८७९ । पूर्ण । वेष्टन सं० २९।१४ ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पंचायती डूंगी (टोंक)।

५०९. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३२३। ले० काल सं० १८४६ माघ सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० २९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक।

विशेष—ग्रन्थाग्रन्थ सं० ९०००। लिखायतं टोड़ानगर मध्ये।

५१०. प्रति सं० ५। पत्र सं० ३१५। ले० काल सं० १८२१। पूर्ण। वेष्टन सं० २५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

५११. प्रति सं० ६। पत्र सं० ४६३। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १७५। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामां।

विशेष—प्रति अशुद्ध है।

५१२. तत्वार्थ सूत्र भाषा—महाचन्द्र। पत्र सं० ४। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २३८-९३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर।

अन्तिम—सप्त तत्व वर्णन कियो, उमास्वामी मुनिराय।
दशाध्याय करिके सकल शास्त्र रहस्य बताय।
स्वल्प बचनिका इम पढ़ी, स्वल्प मती बुध चिन्ह।
महाचन्द्र सोलापुर रहि, पंचन कहे अधीन॥

५१३. प्रति सं० २। पत्र सं० ३७। ले० काल सं० १९५५ काती बुदी ९। पूर्ण। वेष्टन सं० २३३-५८३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर, उदयपुर।

विशेष—भट्टारक कनककीर्ति के उपदेश से हूंबड़जातीय महता फतेलाल के पुत्र ने उदयपुर के संभवनाथ चैत्यालय में इस प्रति को चढ़ाई थी। भीडर में गोकुल प्रसाद ने प्रतिलिपि की थी।

५१४. तत्वार्थसूत्र भाषा—कनककीर्ति। पत्र सं० २-९२। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० १६०४। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५१५. प्रति सं० २। पत्र सं० ५५। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३५।३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर मादवा (राज०)।

५१६. प्रति सं० ३। पत्र सं० ११८। ले० काल सं० १८४४ पौष बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० १५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)।

विशेष—आचार्य विजयकीर्ति के शिष्य पं० देवीचन्द ने प्रति लिखाई थी। लिखतं माली नन्दू मालपुरा का।

५१७. प्रति सं० ४। पत्र सं० २२०। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर।

५१८. प्रति सं० ५। पत्र सं० ९८। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ७८। **प्राप्ति-स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है।

५१९. **प्रतिसं० ६**। पत्र सं० १९७। ले० काल ×। **पूर्ण**। वेष्टन सं० ४०६–१५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

५२०. **प्रतिसं० ७**। पत्र सं० ८४। ले०काल ×। **पूर्ण**। वेष्टन सं० ७६। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा।

५२१. **प्रतिसं० ८**। पत्र सं० १९९। आ० ११×७½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २३-५०। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा।

विशेष—रतनचन्द पाटनी ने दौसा में प्रतिलिपि की थी।

५२२ **प्रतिसं० ९**। पत्र सं० १९३। ले०काल सं० १७८५ जेठ सुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० २५-४०। **प्राप्तिस्थान** दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा।

विशेष—पंडित ईसर अजमेरा लालसोट वाले ने प्रतिलिपि की थी।

५२३. **प्रतिसं० १०**। पत्र सं० ३७। आ० १२×५½ इञ्च। ले०काल सं० १८६१। अपूर्ण। वेष्टन सं० ९७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा।

विशेष—भवानीराम से प्रतिलिपि कराई थी।

५२४. **प्रतिसं० ११**। पत्रसं० १२९। आ० १०½×७½ इञ्च। ले०काल सं० १८५९ चैत्र सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन सं० ९८-३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा।

विशेष—प्रति उत्तम है। सेवाराम ने दौसा में प्रतिलिपि की थी।

५२५. **प्रतिसं० १२**। पत्रसं० ८८। ले०काल सं०१८१२ ज्येष्ठ सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं०—२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी।

५२६. **प्रतिसं० १३**। पत्रसं० ४-६५। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० १८०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

विशेष—इसका नाम तत्वार्थरत्नप्रभाकर भाषा भी दिया है।

५२७. **प्रतिसं० १४**। पत्रसं० ९०। ले०काल सं० १७५५ माघ सुदी १३। **पूर्ण**। वेष्टन सं०—३१। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर चेतनदास दीवान पुरानी डीग।

५२८. **प्रतिसं० १५**। पत्रसं० ७६। ले०काल × पूर्ण। वेष्टन सं० ३२। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष— तत्वार्थसूत्र की श्रुतसागरी टीका के प्रथम अध्याय की भाषा है।

५२९. **तत्वार्थसूत्र टीका—गिरिधरसिंह**। पत्र सं०— ७७। भाषा—हिन्दी। विषय—सिद्धांत। र०काल १९३५। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ६३। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, भरतपुर।

विशेष—टीका वही में लिखी हुई है।

अन्तमें—ऐसे स्वामी उमास्वामी आचार्य कृत दशाध्यायी मूल सूत्र की सर्वार्थसिद्धि नामा संस्कृत टीका ताकी भाषावचनिका तै संक्षेप मात्र अर्थ लैके दीवान बालमुकन्द के पुत्र गिरिवरसिंह वासी कुंभेर के ने अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार मूल सूत्रनि को अर्थ जानिवे के लिए यह वचनिका रची और स० १९३५ के ज्येष्ठ सुदी २ रविवार के दिन संपूर्ण कीनी ।

५३०. तत्वार्थसूत्र भाषा—साहिबराम पाटनी । पत्रसं० ४० । आ० ११½ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—सिद्धांत । र०काल सं० १८१८ । ले०काल सं० १८१८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६९ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन छोटा मंदिर बयाना ।

विशेष—ग्रन्थ गुटका साइज में है । ग्रन्थ का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

आदि भाग—सुमरण करि गुरु देव द्वादशांगवाणी प्रणमि ।
सुरगमुक्ति मग मेव, सूत्र शब्द भाषा कहौ ।
पूर्वकृत मुनिराय, लिखी विविध विधि वचनिका ।
तिनहूं अर्थ समुदाय लिख्यौ अन्त न लख्यौ परे ।

टीका—शिवमग मिलवन कर्मगिर भंजन सर्व तत्वज्ञ ।
बंदौ तिहुं गुण लब्धिकौ वीतराग सर्वज्ञ ।।

अन्तिम—कवि परिचय—हैं अजाना जिन आश्रमी वर्ण वनिक व्यवहार ।
गोत पाटणी वंश गिरि है बूंदी आधार ।। २१ ।।
बसुदश शत पारि दसरुदसु माघ विशति गुणग्राम ।
ग्रन्थरच्यौ गुरुजन कृपा सेवक साहिबराम ।। २२ ।।

ऋषि खुशालचन्द ने बयाना में प्रतिलिपि की थी ।

५३१. तत्वार्थ सूत्र भाषा—छोटेलाल । पत्रसं० ७५ । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—सिद्धान्त । र०काल सं० १९५८ । ले० काल सं० १९५९ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष—छोटेलाल जी अलीगढ़ वालों ने रचा था । कवि का पूर्ण परिचय दिया हुआ है तथा गुटका साइज है ।

५३२. तत्वार्थ सूत्र भाषा-पं० सदासुख कासलीवाल । पत्रसं० ८० । आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—सिद्धांत । र०काल सं० १९१० फाल्गुण बुदी १० । ले० काल सं० १९१० । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

५३३. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ८८ । ले० काल—सं० १९७९ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२ । **प्राप्ति-स्थान**—दि०जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

५३४. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० १७७ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । ले०काल सं० १९५२ । अपूर्ण । वेष्टन सं०—२६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना बूंदी ।

५३५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३७ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । ले०काल सं १९१४ आसोज सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६।६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़, कोटा ।

५३६. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० ७३ । ले०काल—सं० १६१३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२-३६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—भैरवबक्श ने प्रतिलिपि करायी थी ।

५३७. **प्रतिसं० ६** । पत्रसं० ६५ । आ० १२×५इञ्च । ले०काल सं० १६१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

५३८. **प्रतिसं० ७** । पत्रसं० ६६ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल सं० १६२५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

५३९. **प्रतिसं० ८** । पत्रसं० ६७ । ले०काल सं० १६६२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ११६ । **प्राप्ति स्थान** —उपरोक्त मन्दिर ।

५४०. **प्रतिसं० ९** । पत्रसं० १०७ । ले०काल १६६२ चैत्र बुदी ४ । वेष्टनसं० २० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

५४१. **प्रतिसं० १०** । पत्रसं० ६७ । आ० १४×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १६५६ भादवा बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० २६ **प्राप्ति स्थान** – उपरोक्त मन्दिर ।

५४२. **प्रतिसं० ११** । पत्रसं०५६ । आ० १५$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १६२३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन-छोटा मन्दिर बयाना ।

५४३. **प्रतिसं० १२** । पत्रसं० ७३ । आ० १४×८ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

५४४. **प्रतिसं० १३** । पत्रसं० ७२ । ले०काल सं० १६५५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डावालों का डीग ।

५४५. **प्रतिसं० १४** । पत्रसं० ६२ । आ० १३×७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

५४६. **प्रतिसं० १५** । पत्र सं० ३० । आ० १२×७ इञ्च । ले० काल सं० १६४३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

५४७. **तत्वार्थसूत्र भाषा—(वचनिका)**—पन्नालाल संघी । पत्र सं० ५५ । आ० १$\frac{1}{2}$×८ इञ्च । भाषा–राजस्थानी (हूंढारी) गद्य । विषय–सिद्धांत । र० काल सं० १६३८ । ले० काल सं०१६४६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६१ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर श्री महावीरजी बूंदी ।

विशेष—बीजलपुर में प्रतिलिपि हुई ।

५४८. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १६४२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूंदी ।

५४९. **तत्वार्थसूत्र भाषा–(वचनिका)–जयचन्द छाबड़ा** । पत्र सं० ३६३ । आ० ११$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । भाषा–राजस्थानी (हूंढारी) गद्य । विषय–सिद्धांत । र० काल सं० १८६५ चैत्र सुदी ५ । ले०काल–सं० १८८० माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

५५०. **प्रति सं० २**। पत्र सं० २६६। आ० १३×७ इञ्च। ले०काल सं० १६४१ माघ सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन सं० ११–३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

विशेष—धन्नालाल मांगीलाल के पठनार्थ लिखी गयी थी।

५५१. **प्रति सं० ३**। पत्र सं० ३५४। आ० १३×८½ इञ्च। ले० काल सं० १६४५ वैशाख सुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० १६६। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

५५२. **प्रति सं० ४**। पत्र सं० ३५४। आ० ११×६ इञ्च। ले० काल० सं० १६१८। पूर्ण। वेष्टन सं० १४२। **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूंदी।

५५३. **प्रति सं० ५**। पत्र सं० ३१०। आ० १४×६½ इञ्च। ले० काल सं० १६२६। पूर्ण। वेष्टन सं० ६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूंदी।

५५४. **प्रति सं० ६**। पत्र सं० ३५४। आ० १०×८ इञ्च। ले० काल० सं० १८६५। पूर्ण। वेष्टन सं० २१७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर।

५५५. **प्रति सं० ७**। पत्र सं० ५३। आ० ११×५ इञ्च। ले० काल सं० १६६७। पूर्ण। वेष्टन सं० १०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर।

५५६. **प्रति सं० ८**। पत्र सं० २६। आ० ११½×५½ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक)।

५५७. **प्रति सं० ६**। पत्र सं० ४४७। आ० १०½×७½ इञ्च। ले०काल सं० १६५८। पूर्ण। वेष्टन सं० ६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोठ्यांका, नैणवा।

५५८. **प्रति सं० १०**। पत्र सं० २०१। आ० १३×६ इञ्च। ले०काल सं० १६३२ आषाढ़ बुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० ५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मन्दिर बयाना।

५५९. **प्रति सं० ११**। पत्र सं० ३२१। आ० १२½×५½ इञ्च। ले०काल सं० १६११ आषाढ़ बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० ५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

५६०. **तत्वार्थसूत्र भाषा**—×। पत्र सं० ३८। आ०११×६½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—सिद्धान्त। र०काल— ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा।

५६१. **तत्वार्थसूत्र भाषा**……। पत्र सं० ६। भाषा—हिन्दी। विषय—सिद्धांत। र०काल— ×। ले०काल १७५५ आषाढ बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० ४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर डीग।

५६२. **तत्वार्थसूत्र भाषा**……। पत्र सं० ८४। आ० १२×६½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय–सिद्धांत। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ८२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

५६३. **तत्वार्थसूत्र भाषा**……। पत्र सं० ४३। आ० ११×६½ इञ्च। भाषा—संस्कृत—हिन्दी। विषय—सिद्धांत। र०काल ×। ले०काल १६५३। पूर्ण। वेष्टन सं० ३५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है।

५६४. **तत्वार्थसूत्र भाषा**·····। पत्रसं० २२। भाषा—हिन्दी। विषय—सिद्धांत। र० काल-× । ले०काल सं० १८२६ माह सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन सं० १३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

५६५. **तत्वार्थसूत्र भाषा**·····। पत्रसं० ३४। भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय-सिद्धांत।र० काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ५४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनपंचायती मन्दिर, भरतपुर।

५६६. **तत्वार्थसूत्र भाषा**·····। पत्रसं० ४१। भाषा—हिन्दी। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन-सं० ५५०। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

५६७. **तत्वार्थसूत्र भाषा**·····। पत्रसं० ५५। भाषा-हिन्दी। ले०काल १९६६। पूर्ण। वेष्टन सं० ५५१। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

५६८. **तत्वार्थसूत्र टीका**·····। पत्रसं० ८३। भाषा—हिन्दी। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ५५२। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—गुटका साइज है।

५६९. **तत्वार्थसूत्र भाषा**·····। पत्रसं०—१५। भाषा-हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ५५५।

विशेष—हासिये के चारों ओर टीका लिखी है। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

५७०. **तत्वार्थसूत्र भाषा** × । पत्रसं० ८२। भाषा—हिन्दी। र० काल—× । ले० काल—१७९९। पूर्ण। वेष्टन सं० ५५६। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—श्रुतसागरी टीकानुसार कनककीर्ति ने लिखा था।

५७१. **तत्वार्थसूत्र भाषा** × । पत्रसं० ६५। भाषा—हिन्दी। विषय—सिद्धांत। र० काल × । ले०काल १९२४। पूर्ण। वेष्टन सं० ५५८। **प्राप्ति स्थान**- उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—मूल सहित है।

५७२. **तत्वार्थसूत्र भाषा** × । पत्रसं० ३०। आ० ९$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। विषय-सिद्धांत। र० काल × । ले०काल सं० १८१९ माह सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० १०९६। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

५७३. **तत्वार्थसूत्र—भाषा** × । पत्रसं० ७६। आ० ७$\frac{3}{4}$ × ५ इञ्च। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय— सिद्धान्त। र० काल— × । ले०काल सं० १९०५ आसोज बुदी १। पूर्ण। वेष्टन स० ७२६। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५७४. **तत्वार्थ सूत्र भाषा** × । पत्रसं० ६६। आ० ११$\frac{3}{4}$ × ६$\frac{3}{4}$ इञ्च। भाषा—संस्कृत-हिन्दी। विषय—सिद्धान्त। र० काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १०२७। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५७५. **तत्वार्थसूत्र भाषा** × । पत्रसं० २०। आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—हिन्दी।

विषय—सिद्धांत । र०काल — × । ले०काल—सं० १८४६ सावन सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०२१। **प्राप्ति स्थान**— भट्टारकीय दि० जैन मंदिर, अजमेर ।

५७६. **तत्वार्थसूत्र भाषा** × । पत्रसं० ११६ । आ. ११$\frac{3}{4}$ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र०काल— × । ले०काल सं० १८०७ ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मंदिर, नैणवा ।

विशेष—जीवराज उदयराम ठोल्या ने तोलाराम वैद्य से नैणवा में प्रतिलिपि कराई थी ।

५७७. **तत्वार्थसूत्र—भाषा** × । —पत्रसं० ४२ । आ० ७$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५४ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

५७८. **तत्वार्थसूत्र भाषा** × । पत्रसं० १४३ आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत, हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३–४४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

५७९. **तत्वार्थसूत्र भाषा** × । पत्रसं० ६ से ५३ । आ० १२ × ५ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १०६–६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

५८०. **तत्वार्थ सूत्र भाषा** × । पत्रसं० ८१६ । आ० १० × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र०काल × । ले०काल सं० १६१३ मंगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर कोट्यों का, नैणवां ।

५८१. **तत्वार्थसूत्र भाषा** × । पत्रसं० १५७ । आ० ६ × ६ इञ्च । भाषा—संस्कृत, हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र०काल सं० × । ले०काल सं० १८८८ चैत्र सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटयों का, नैणवां ।

विशेष—नैणवां नगर में लक्ष्मीनारायण ने टोडूराम जी हूंडा के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

५८२. **तत्वार्थसूत्र भाषा** × । पत्रसं० २७ । आ० १२ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा - संस्कृत, हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का, नैणवां ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है ।

५८३. **तत्वार्थसूत्र भाषा** × । पत्रसं० ६३ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र०काल × । ले०काल सं० १७८३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर, उदयपुर ।

५८४. **तत्वार्थसूत्र—भाषा** × । पत्रसं० १०० । आ० = ६$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत-हिन्दी (गद्य) । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—हिन्दी गद्य टीका दी हुई है ।

५८५. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रसं० ६० । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत—हिन्दी (गद्य) । विषय सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल सं० १८८२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खण्डेलवाल पंचायती मन्दिर, अलवर ।

५८६. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रसं० ३४ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत हिन्दी (गद्य) । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल सं० १९२३ । पूर्ण । वेष्टन संख्या ११३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

५८७. तत्वार्थसूत्र—भाषा × । पत्रसं० २-३८ । आ० १४ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूंदी ।

५८८. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रसं० ६१ । आ० ६ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत-हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धांत । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दनस्वामी बूंदी ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति का पत्र नहीं है ।

५८९. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रसं० ४० । आ० १३ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धांत । र०काल × । ले०काल सं० १९०७ द्वि० जेठ बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर नागदी, बूंदी ।

५९०. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्र सं० ३९ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र०काल—× । ले०काल सं० १९६५ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४१० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

५९१. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्र सं० ९५ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा— संस्कृत । हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र०काल × । ले०काल सं० १९५४ कार्तिक सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५७२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५९२. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्र सं० ४३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र०काल— × । ले० काल—सं० १९०१ श्रावण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४-११ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५९३. तत्वार्थसूत्र—भाषा × । पत्र सं० १२ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र०काल सं० १८१८ । ले०काल सं० १८२९ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४६७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५९४. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्र सं० २१ । आ० १२ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १५३० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

५९५. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्र सं० १५१ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ८ इञ्च । भाषा—संस्कृत. हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र०काल × । ले०काल सं० १८४२ माह सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन

सं० १५७९ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय शास्त्र भण्डार अजमेर ।

५९६. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्र सं० १९६ । आ० ९ × ८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र०काल × । ले०काल सं० १८४३ चैत सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

विशेष—किशनगढ़ में पं० चिमनलाल ने प्रतिलिपि की ।

५९७. तत्वार्थसूत्र भाषा · · × । पत्रसं० ६१ । आकार १०$\frac{3}{4}$ × ७$\frac{1}{4}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल—सं० १९३२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११४ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन पंचायती मन्दिर, अलवर ।

५९८. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रसं० १२७ । आ० १०$\frac{3}{4}$ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी—(गद्य) । विषय—सिद्धांत । र०काल— × । ले०काल सं० १८७७ आषाढ़ बुदी २ । पूर्ण वेष्टन सं० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, राजमहल (टोंक) ।

विशेष श्लोक सं० ३००० प्रमाण ग्रन्थ है ।

५९९. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रसं० २५० । आ० १४ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य **विषय** सिद्धान्त । र०काल — × । **ले०काल** सं० १८९३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक) ।

६००. तत्वार्थसूत्र. भाषा × । पत्रसं० २२९ । आ० ८$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धांत । र०काल— × । ले०काल सं० १९१० । पूर्ण । वेष्टन सं० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन पंचायती मन्दिर, अलवर ।

६०१. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रसं० ६० । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) विषय—सिद्धांत । र०काल · · × । ले०काल सं० १८०० मंगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८/३३ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर यादवा राज) ।

विशेष—मालपुरा में प्रतिलिपि की गयी थी ।

६०२. तत्वार्थसूत्र भाषा— × । पत्रसं० ३८ । आ०—१० × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३९-२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

६०३. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रसं० ७६ । आ०—१२$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल—सं० १८८७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवान चेतनदास पुरानी शीश ।

६०४. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रसं० २९ । आ० ११ × ७ इञ्च । भाषा—संस्कृत—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल × । पूर्ण वेष्टन सं० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है ।

६०५. **तत्वार्थसूत्र** भाषा— × । पत्रसं० ५१ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । र० काल— × । ले०काल— × । **पूर्ण** । वेष्टन सं० १५६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

विशेष—केवल प्रथम अध्याय तक है ।

६०६. **तत्वार्थसूत्र** भाषा । पत्रसं० ४६ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र० काल— × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं०—८६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर, उदयपुर ।

६०७. **तत्वार्थसूत्र भाषा** — × । पत्रसं० १०० । आ०—११$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिंदी गद्य । विषय—सिद्धान्त । र० काल— × । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—केवल प्रथम अध्याय की टीका है और वह भी अपूर्ण है ।

६०७ (क). **तत्वार्थसूत्र** भाषा × । पत्रसं०३६ । आ०—१२$\frac{1}{2}$ × ६ इञ्च । र०काल । ले० काल सं० १६१६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है । ज्ञानचंद तेरापंथी ने दौसा में प्रतिलिपि की थी ।

६०८. **तत्वार्थसूत्र वृत्ति**— × । पत्रसं० ४० । आ० ८×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल— × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—इति श्रीमदुमास्वामी विरचितं तत्वार्थसूत्र तस्य वृत्तिस्तत्वार्थदीपिका नाम्नी समाप्तम् । इस वृत्ति का नाम तत्वार्थ दीपिका भी है ।

६०९. **तत्वार्थसूत्र वृत्ति**—× । पत्रसं० ३८४ । आ० १० × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धांत । र० काल— × । ले० काल—सं० १७६१ फागुण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

६१०. **तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति**— × । पत्रसं० २३ । आ० १२ × ६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल— × । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १६२-८० । **प्राप्ति-स्थान** दि० जैन मंदिर बोटड़ियों का डूंगरपुर ।

६११. **तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति**— × । पत्रसं० ६५ । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल— × । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टनसं० ११।३२५ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर, उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

६१२. **त्रिभंगीसार-नेमिचन्द्राचार्य** । पत्रसं० ७४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धांत । र० काल × । ले०काल सं० १६०७ वैशाख बुदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० १६२ । **प्राप्ति स्थान** । भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६१३. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ६१ । ले०काल सं० १६३३ । पूर्ण । वेष्टनसं० २६२ । **प्राप्ति**

स्थान – दि०जैन पंचायती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष– हिन्दी टीका सहित है तथा टीकाकार स्वरचन्द ने सं० १९३३ में टीका की थी ।

६१४. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० ३३ । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनसं० १५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर, डीग ।

विशेष—कठिन शब्दों का अर्थ भी है ।

६१५. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० ५६ । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टनसं० १६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

६१६. **प्रतिसं० ५**। पत्रसं० ४४ । आ० ११$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{1}{2}$ । र०काल— × । लिपिकाल— × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

६१७. **त्रिभंगीसार टीका—विवेकनन्दि** । पत्रसं० ५९ । आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । टीकाकाल— × । ले०काल सं० १७२७ आसोज बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

६१८. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ६७ । आ० ११ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल · × । पूर्ण वेष्टन सं० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

६१९. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० ६७ । आ० ११ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० ११५ ।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिररर दीवान जी, कामा ।

६२०. **त्रिभंगीसार भाषा** × । पत्रसं० ५८ । आ० ९ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—सिद्धांत र०काल— × । ले०काल सं०—× । अपूर्ण । वेष्टन सं० १७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६२१. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ६ । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२९ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

६२२. **त्रिभंगीसार भाषा** × । पत्रसं० २२ । भाषा—हिन्दी । विषय— र०काल— × । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर, भरतपुर ।

६२३. **त्रिभंगी सुबोधिनी टीका—पं० आशाधर** । पत्रसं० २७ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५ । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धांत । र०काल— × । लिपिकाल—सं० १७२१ माह सुदी १० । वेष्टन सं० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—ग्रंथ समाप्ति के पश्चात् निम्न पंक्ति लिखी हुई है—

"यह पोथी मालपुरा का सेतांवर पासि लई छै । तातै यह पोथी साह जोधराज गोदीका सांगानेर वालों की छै ।"

६२४. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ८६ । लिपिकाल—सं० १५८१ आसोज सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१ । **प्राप्तिस्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—हस्तिकान्तिपुर में गंगादास ने प्रतिलिपि की थी ।

६२५. **अपनभाव चर्चा**— × । पत्रसं० ४ । आ०— ६$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चर्चा । र०काल— × । ले०काल सं० १८७३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४। **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मन्दिर पंचायती दूनी (टोंक) ।

विशेष—अजमेर में प्रतिलिपि की गयी थी ।

६२६. **दशवैकालिक सूत्र**— × । पत्रसं० ५८ । भाषा—प्राकृत । विषय-आगम । र०काल × । ले०काल सं० १७५३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७४७ ।**प्राप्तिस्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष—गुजराती (लिपि हिन्दी) टीका सहित है गाथाओं पर अर्थ है ।

६२७. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० १७ । ले०काल—सं० १८२६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५६० । उपरोक्त मन्दिर । दि० जैन मन्दिर पंचायती भरतपुर ।

६२८. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० ५६ । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ । ले०काल सं० १६७६ माह बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

६२९. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० २० । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ६ इञ्च । ले०काल सं० १५९१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—संवत् १५९१ वर्षे प्रथम श्रावण सुदि ३ शनौ ज्ञानावरणादिक कर्मक्षयार्थं तेजपालेन इदं ग्रंथ स्वहस्तेन लिखितं ।

६३०. **प्रतिसं० ५** । पत्रसं० ६१ । आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १७४१ माघ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० १५१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६३१. **द्रव्यसमुच्चय-कंजकीर्ति** । पत्रसं० २ । आ० १२ × ५ । भाषा—संस्कृत । विषय सिद्धान्त । र०काल × । लिपि काल०— × । वेष्टन सं० ६ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—शुभचन्द्र की प्रेरणा से कंजकीर्ति ने रचना की थी ।

६३२. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ६ । आ० ११ × ५ । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । लिपिकाल · × । वेष्टन सं० ७ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

६३३. **द्रव्यसंग्रह नेमिचन्द्राचार्य** । पत्रसं० ८ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल—सं० १८४८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६२२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है ।

६३४. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ५ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनसं० २ । **प्राप्तिस्थान** - दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । इस मन्दिर में संस्कृत टीका सहित ४ प्रतियां और हैं।

६३५. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० ७ । आ० ११ × ५ इञ्च । लिपि सं० १६६८ । वेष्टनसं० ५ । **प्राप्तिस्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। आचार्य हरीचन्द नागपुरीय तपागच्छ के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी।

६३६. **प्रतिसं० ४**। पत्रसं० ४। ले०काल— ×। पूर्ण। वेष्टनसं० २६। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—इस मन्दिर के शास्त्र भण्डार में ४ प्रतियां और हैं।

६३७. **प्रतिसं० ५**। पत्रसं० ५। ले०काल—सं० १७५०। पूर्ण। वेष्टनसं० ३१४। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा।

विशेष—इस मन्दिर में ४ प्रतियां और हैं जो संस्कृत टीका सहित हैं।

६३८. **प्रतिसं० ६**। पत्रसं० २१। ले०काल—सं० १७२६ फाल्गुन सुदी १३। पूर्ण। वेष्टनसं० २२। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर दूण्डावालों का डीग।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है।

६३९. **प्रतिसं० ७**। पत्रसं० ५। ले०काल— ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ७। २०। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

६४०. **प्रतिसं० ८**। पत्रसं० ४। ले०काल—सं० १७६८ जेष्ठ सुदी १२। पूर्ण। वेष्टनसं०-५९-१९९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—गोनेर में महात्मा साहिबमल ने प्रतिलिपि की थी।

६४१. **प्रतिसं० ९**। पत्रसं० ४। ले०काल—सं० १९०० माह बुदी १३। पूर्ण। वेष्टनसं०-२७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

६४२. **प्रतिसं० १०**। पत्रसं० २४। ले०काल— ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ८७।१९१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

६४३. **प्रतिसं० ११**। पत्रसं० ४। ले०काल— ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ९८। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बून्दी।

६४४. **प्रतिसं० १२**। पत्रसं० ५६। ले०काल— ×। पूर्ण। वेष्टनसं० २४५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बून्दी।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

६४५. **प्रतिसं० १३**। पत्रसं० १०। ले०काल—सं० १९५२ भादवा सुदी ९। पूर्ण। वेष्टनसं०-१०८। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बून्दी।

विशेष—भगवानदत्त कस्तूरचन्द के पुत्र चोकचन्द ने लिखी थी।

६४६. **प्रतिसं० १४**। पत्रसं० ५। ले०काल—सं० १८७८ माह बुदी २। पूर्ण। वेष्टनसं०-२६०। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—पं० हीरानन्द ने प्रतिलिपि की थी।

६४७. **प्रतिसं० १५**। पत्रसं० ५। ले०काल— ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० १३। **प्राप्तिस्थान**—

दि० जैन मंदिर दबलाना (बून्दी) ।

६४८. **प्रतिसं० १६** । पत्रसं० ११ । आ० ६×४ इञ्च । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनसं०-१११-६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर, इन्दरगढ़ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

६४९. **प्रतिसं० १७** । पत्रसं० १४ । ले०काल—सं० १७१३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६८-१४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पाण्डेयों का घूंघरपुर ।

विशेष—पांडे जसा ने नागपुर में प्रतिलिपि की थी ।

६५०. **प्रतिसं० १८** । पत्रसं० १८ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर अलवर ।

६५१. **प्रतिसं० १९** । पत्रसं० १७ । आ० ८½×४½ इञ्च । ले०काल—सं० १९४९ सावन बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १५० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरी है । तथा सुन्दर है । चम्पालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

६५२. **द्रव्यसंग्रह टीका—प्रभाचन्द्र** । पत्रसं० १५ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल—× । ले०काल—सं० १८२० माघ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६८० । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६५३. **द्रव्य संग्रह टीका**—पत्रसं० १५ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल — × । ले०काल—सं० १८२२ । पूर्ण । वेष्टनसं० १३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

६५४. **द्रव्यसंग्रह वृत्ति—ब्रह्मदेव** । पत्रसं० ११६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल— × । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३११ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

६५५. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ११७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६५६. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० ५१ । ले०काल—सं० १७५३ चैत्र सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक) ।

६५७. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० ६ । आ० १२½×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं०-१४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर, उदयपुर ।

६५८. **प्रतिसं० ५** । पत्रसं० १०१ । ले०काल—सं०१७१० जेष्ठ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनसं०-१२२ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर, आदिनाथ बून्दी ।

विशेष—सं० १७१० ज्येष्ठ बुदी १ को आचार्य महेन्द्रकीर्ति के पठनार्थ विद्यागुरु श्री तेजपाल के उपदेश से वृंदावती में जयसिंह के राज्य में प्रतिलिपि हुई थी ।

६५९. **प्रतिसं० ६** । पत्रसं० ९४ । आ० ९½÷४½ इञ्च । ले०काल—सं० १८०७ आषाढ़ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६९।३१ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन सोगणियों का मन्दिर, करौली ।

६६०. **प्रतिसं० ७** । पत्रसं० १०६ । आ० १०×५½ इञ्च । ले०काल -- । अपूर्ण । वेष्टनसं०-२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६६१. **प्रतिसं० ८** । पत्रसं०—१७१ । आ० ११×४½ इञ्च । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६६२. **द्रव्यसंग्रह वृत्ति**— × । पत्रसं० ८६ । आ० ११×६½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६६३. **द्रव्यसंग्रह टीका**— × । पत्रसं० ८ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल—सं० १७६० ज्येष्ट सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६८३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६४. **द्रव्यसंग्रह टीका**—× । पत्र सं० ४७ । आ०—११½×७ इञ्च । भाषा—संस्कृत—हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र०काल—× । ले०काल—सं० १८१७ वैशाख सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० २३।२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करोली ।

६६५. **द्रव्यसंग्रह भाषा**—× । पत्र सं० १६ । ले०काल—सं० १८६७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२।१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी, टोंक ।

विशेष—टोडा के नेमिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी । प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

६६६. **द्रव्यसंग्रह भाषा टीका**। पत्र सं० ५-१० । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल—सं० १७१६ । वैशाख सुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टन सं० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति ।

सम्वत् १७१६ वर्षे बैसाख मासे शुक्लपक्षे १३ रवौ सागपत्तन शुभस्थाने श्री आदिनाथ चैत्यालये श्री काष्ठासंघे नंदीतटगछे विद्यागणे भ० रामसेनान्वये तदनुक्रमेण भ० श्री रत्नभूषण भ० श्री जयकीर्ति भ० श्री कमलकीर्ति तत्पट्टे भ० भुवनकीर्ति विद्यमाने भ० श्री कमलकीर्ति तत् शिष्य ब्रह्म श्री गंगसागर लिखितं स्वयं पठनार्थं ।

६६७. **द्रव्यसंग्रह भाषा** — × । पत्र सं०—१७ । आ० १०½×६½ इञ्च । भाषा-प्राकृत हिन्दी । विषय-सिद्धांत । रचना काल-× । लेखन काल सं० १६५० ज्येष्ठ बुदी अमावस । पूर्ण । वेष्टन सं० १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्दरगढ़, कोटा ।

विशेष—श्री धन्नालाल बघेरवाल पुत्र जिनदास ने इन्दरगढ़ को अपने हाथ से प्रतिलिपि की थी ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सम्वत् उन्नीस-सै-पचास शुभ ज्येष्ठ हि मासा । कृष्णा द्वादस चन्द्र पूर्णे करि चित्तहुलासा ।।
धन्नालाल बघेरवाल में गोत्र सूभंवर । लघु सुत मै जिनदास लिखी इन्दरगढ़ निजकर ।
पठनार्थ आत्महित सुद्ध चित्त सदा रहो सुभा भावना । हो भूल सुद्ध करियो तहां मो परि क्षमा रखावना ।

६६८. **द्रव्य संग्रह टीका** × । पत्र संख्या-५० । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-

सिद्धांत । रचना काल—× । लेखन काल-सं० १८६३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—बख्तलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

६६९. द्रव्यसंग्रह सटीक—× । पत्र सं० २९ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत-हिन्दी (गद्य) । विषय—सिद्धांत । र. काल × । ले० काल सं० १८९१ माह बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

६७०. द्रव्यसंग्रह भाषा—वर्तातधर्मार्थी । पत्र सं० ४३ । आ० १२×४½ इञ्च । भाषा—गुजराती । लिपि हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र० काल—× । ले० काल सं १७७० । वेष्टन सं० २१९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

६७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २३ । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल सं० १७५१ चैत्र बुदी ६ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना, बूंदी ।

६७२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७२ । लेखन काल सं० १७६२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०९-१५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियान, डूंगरपुर ।

६७३. द्रव्यसंग्रह भाषा—× । पत्र संख्या १६ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी विषय—सिद्धांत । र० काल—× । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—गाथाओं के नीचे हिन्दी अर्थ में अनुवाद है—

अन्तिम—सर्वगुन के निधान बड़े पंडित प्रधान ।
बहु दूषन रहित, गुन भूषण सहित है ।
तिन प्रति विनवत, नेमिचन्द मुनि नाथ ।
सोधियो जु जाको, तुम अर्थ जे अहित है ।
ग्रन्थ द्रव्य संग्रह, सुकीर्ति में बहुत थोरो ।
मेरी कक्ष बुद्धि अल्प, शास्त्र सोमहित है ।
तातैं मैं जु यह ग्रंथ रचना करी है ।
कुछु गुन गहि लीजो एती बीनती कहित है ।

६७४. द्रव्यसंग्रह भाषा—× । पत्र सं० २६ । आ० ९×७½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र० काल × । लेखन काल × । वेष्टन सं०६४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—गणेशलाल बिन्दायका ने स्वयं पठनार्थ लिखी थी ।

६७५. द्रव्यसंग्रह भाषा—× । पत्र सं० ३९ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । ले० काल—×। पूर्ण ।वे. सं. ९४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

६७६. द्रव्यसंग्रह भाषा—× । पत्रसं० ६१ । आ० १०½×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र० काल—× । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी, कामा ।

६७७. **द्रव्यसंग्रह भाषा**— × । पत्रसं० २५ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र०काल × । ले०काल सं० १७२१ फागुण बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७७।५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर भादवा (राज०) ।

विशेष—ब्रह्मगुण सागर ने प्रतिलिपि की थी ।

६७८. **द्रव्यसंग्रह भाषा**—× । पत्रसं० २० । आ०—१२ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा— हिन्दी। विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले० काल- सं० १८२२ चैत्र सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर कामा ।

विशेष—साहिबी पाण्डे ने भरतपुर में इच्छाराम से प्रतिलिपि कराई ।

६७९. **द्रव्यसंग्रह भाषा** × । पत्रसं० १३ । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल—× । ले०काल १९३१ । पूर्ण । वेष्टनसं० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर हण्डावालों का डीग ।

विशेष—मधुपुरी में लिपि की गई थी ।

६८०. **द्रव्यसंग्रह भाषा टीका — बंसीधर** । पत्रसं० ५१ । आ० ९$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा— हिन्दी । विषय— सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल सं०—१८१४ ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—पंचायती दि० जैन मंदिर करौली ।

विशेष—पंडित लालचंद ने करौली में प्रतिलिपि की थी ।

६८१. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० २८ । ले० काल— सं० १८६२ वैशाख बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७०-२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बड़ा बीस पंथी दौसा ।

विशेष—महात्मा गुलाबचंद जी ने प्रतिलिपि की थी ।

६८२. **द्रव्यसंग्रह भाषा-पं० जयचन्द छाबड़ा** । पत्रसं०—१ ५, २०-४५ । आ० ८×६ इञ्च। भाषा—राजस्थानी (ढूंढारी) गद्य । विषय—सिद्धान्त । र०काल सं० १८६३ । ले० काल × । वेष्टनसं० ६९७ ।अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६८३. **प्रतिसं० २** । पत्रसं०—६४ । । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

६८४. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० १३ । ले० काल × । अपूर्ण वेष्टनसं० १० । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन, मंदिर श्री महावीर बूंदी ।

६८५. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० १३ । आ० ९$\frac{1}{2}$ × ६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २४ । **प्राप्ति स्थान**— दिगम्बर जैन मंदिर श्री महावीर बूंदी ।

६८६. **प्रतिसं० ५** । पत्रसं० १३ । ले० काल सं० १९४० । पूर्ण । वेष्टनसं० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्री महावीर बूंदी ।

६८७. **प्रतिसं० ६** । पत्रसं० ४० । ले०काल सं० १९४५। पूर्ण । वेष्टनसं० १४८ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

६८८. **प्रतिसं० ७** । पत्रसं० ५० । ले०काल सं० १९५२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४८ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर, पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

६८९. **प्रतिसं० ८** । पत्रसं० ४४ । र० काल × । ले० काल सं० १९४० । पूर्ण । वेष्टनसं० १३२/३३ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्द्रगढ़ (कोटा) ।

६९०. **प्रतिसं० ९** । पत्रसं० ४७ । ले० काल सं० १८७६ कार्तिक दुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनसं० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरह पंथी दौसा ।

विशेष—मैजराम गोधा वासी गाजी का थाना का टोडाभीम में आत्मवाचनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

६९१. **प्रतिसं० १०** । पत्रसं० ५० । ले० काल सं० १८७० । पूर्ण । वेष्टनसं० १०२ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल पंचायती दि० जैन मन्दिर, अलवर ।

विशेष—जहांनाबाद में प्रतिलिपि हुई थी ।

६९२. **प्रतिसं० ११** । पत्रसं० ४६ । ले० काल सं० १८७९ कार्तिक वदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० ११७ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल पंचायती दि० जैन मन्दिर अलवर ।

६९३. **प्रति सं० १२** । पत्रसं०—६६ । आ० ८½ × ५½ इञ्च । ले० काल सं० १८८० । पूर्ण । वेष्टनसं० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन पंचायती मंदिर अलवर ।

६९४. **प्रति सं० १३** । पत्रसं०—४७ । ले० काल सं० १९८३ पूर्ण । वेष्टनसं०—१६१ (अ) । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर

६९५. **प्रतिसं० १४** । पत्रसं०—३९ । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टनसं०—३९।२१ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा ।

६९६. **धर्मचर्चा** ..... । पत्रसं० ४ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । **वेष्टनसं० ७७ प्राप्तिस्थान**–दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६९७. **धर्मकथा चर्चा** × । **पत्रसं०** २२ । आ० ९ × ४½ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी प० । विषय—सिद्धान्त । र० काल— × । ले० काल—सं० १८२३ । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ४३४–१६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—प्रश्नोत्तर के रूपमें चर्चाएँ हैं । भट्टारक धर्मचन्द्र के शिष्य पं० सुखराम के पठनार्थ भीलोडा में लिखा गया था ।

६९८. **नवतत्व गाथा** ..... । पत्रसं० २४ । आ०—१०½ × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत **विषय**—नौ तत्वों का वर्णन । र० काल × । ले० काल × । **अपूर्ण** । वेष्टनसं० २५५ । **प्राप्ति-स्थान**—दि जैन मंदिर दीवान जी कामा ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है ।

६९९. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ९ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले० काल × । **अपूर्ण** । वेष्टनसं० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बड़ा बीस पंथी दौसा ।

विशेष—बालावबोध हिन्दी टीका सहित है ।

७००. **नवतत्व गाथा भाषा—पन्नालाल चौधरी**—पत्रसं० ४१ । आ० १०½ × ७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धांत । र० काल १९३४ । ले० काल सं० १९३५ वैशाखबुदी ९ । **पूर्ण** ।

वेष्टन सं० ३८।१७८ । **प्राप्ति स्थान**—पंचायती दि० जैन मंदिर अलवर ।

विशेष—मूलगाथाएँ भी दी हुई हैं ।

७०१. **नवतत्व प्रकरण**—× । पत्र सं० ६ । आ० १०½ × ४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—नव तत्वों का वर्णन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—जीव अजीव आश्रव बंध संवर निर्जरा मोक्ष एवं पुण्य तथा पाप इन नव तत्वों का वर्णन है । इस भण्डार में ३ प्रतियां और हैं ।

७०२. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ९ । आ०—११ × ५ इञ्च । ले० सं० १७८५ वैशाख बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

७०३. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—४४ गाथायें हैं ।

७०४. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० ११ । ले० काल—× पूर्ण । वेष्टन सं० ३४२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—मूल के नीचे गुजराती गद्य में उल्था दिया है । मुनि श्री नेमिविमल ने शिव विमल के पठनार्थ इन्द्रगढ़ में प्रतिलिपि की थी । इस भण्डार में चार प्रतियां और हैं ।

७०५. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० १० । आ० १०½ × ५ इञ्च । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० १७८–७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है । इस भण्डार में एक प्रति और है ।

७०६. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १७७९ । पूर्ण । वेष्टन सं०—१२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

७०७. **प्रति सं० ७** । पत्र सं०–८ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले० काल—× । पूर्ण वेष्टन सं०—५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर खण्डेलवाल उदयपुर ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

७०८. **नवतत्व प्रकरण टीका—टीकाकार पं० भान विजय** । पत्र सं०—३१ । आ० ९ × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र० काल—× । ले० काल सं० १७४६ माघ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं०—२१–९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—मूल गथाएं भी दी हुई हैं ।

७०९. **नवतत्व शब्दार्थ**—× । पत्र सं०–१६ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल—× । ले० काल सं० १६६८ वैशाख सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१ ।

विशेष—रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्राकृत— जीवा १ जीवा २ पुन्न ३ पावा ४ आश्र ५ संवरोय ६ निज्जरणा ७ ।
बंधो ८ मुक्कोय ९ तहानव तत्ता हुंतिनायव्वा ।। १ ।।

व्याख्या—साची वस्तुनउ स्वरूप ते तत्व कहिवे । ते सम्यगदृष्टिनउ जाण्या चाहियउ । तेह भणी पहिली तेहना नाम लिखियइ छइं । पहिलिउ जीव तत्व बीजउ अजीव तत्व पुण्य तत्व ३ पाप तत्व ४ आश्रव तत्व ५ संवर तत्व ६ निर्जरा तत्व ७ । बंध तत्व ८ मोक्ष तत्व ९ तथा ए नव तत्व होंहि विवेकीएइं जाणिवा ।

अन्तिम—अनउसप्पिणी अणंतापुग्गाल परियट्टो मुणेयव्वो ।
तेणंतातिम अद्धा अणागयद्धा अणंतगुणा ।।

व्याख्या—अनंत उत्सर्पिणीइं अवसर्पिणी एक पुद्गल परावर्त होइ । मुणेयव्वो कहतां जाणिवउ । ते पुद्गल परावर्त अतीत कालि अनंता अनागत कालि अनंतगुणा इहां कहिउ उ पक्षइ श्री जिन वचन हुइ ते प्रमाणं इति नव तत्व शब्दार्थ समाप्तः ।

ग्रन्थ सं० २७५ । संवत १६६८ वर्षे वैशाख मासे कृष्ण पक्षे प्रतिपदा तिथौ सोमवासरे अर्गलापुर मध्ये कोफलिया गोत्रे सा० रेखा तद्भार्यां रायजादी पठनार्थं ।

७१०. नवतत्व सूत्र ×। पत्रसं० ८ । भाषा—प्राकृत । विषय—नव तत्वों का वर्णन । र० काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टनसं०—६९४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर, भरतपुर ।

७११. नाम एवं भेद संग्रह—× । पत्रसं०—२५ । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र०काल—× । ले० काल—× । वेष्टनसं० ४५४ **प्राप्ति स्थान**–दि जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७१२. नियलावति सुत्त— × । पत्रसं० ३८ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत विषय—आगम । र०काल × । ले० काल सं० १७०१ फागुन बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मंदिर खंडेलवाल उदयपुर ।

७१३. नियमसार टीका—पद्मप्रभमलधारिदेव । पत्रसं० १०३ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धांत । र०काल— × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १५९ । **प्राप्ति-स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—सं० १९४७ में भीमराज की बहू ने चढ़ाया था । मूल्य १५. ४४ पैसे ।

७१४. प्रतिसं० २ पत्रसं० १६४ । आ० ६½×६½ इञ्च । ले०काल सं० १०३५ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४२१ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७१५. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० ८३ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल सं० १७९५ मङ्गसिर बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर जीवानजी कामा ।

७१६. नियमसार भाषा- जयचन्द छावडा । पत्रसं० १५३ । आ० १२½×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । र०काल वीर सं० २४३८ । ले०काल सं० १९६४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बून्दी ।

विशेष—चंदेरी में प्रतिलिपि हुई थी ।

७१७. पंचपरावर्त्तन टीका × । पत्रसं० ४ । आ० १०×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—सिद्धांत । र०काल × । ले०काल× । पूर्ण । वेष्टनसं० ४३ । **प्राप्तिस्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७१८. पंचपरावर्त्तन वर्णन × । पत्रसं० २ । आ० १०$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-सिद्धांत । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०६५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७१९. पंचपरावर्त्तन वर्णन × । पत्रसं० ३ । आ० ८$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-सिद्धांत । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०६८ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७२०. पंचपरावर्त्तन स्वरूप× । पत्रसं० ४ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धांत । र०काल— × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७२१. पंचसंग्रह—नेमिचन्द्राचार्य । पत्रसं० २० । आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धांत । र०काल— × । ले०काल—सं० १८२१ । अपूर्ण । वेष्टनसं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७२२. प्रति सं० २ । पत्रसं० ६३ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कामा ।

७२३. प्रतिसं. ३ । पत्रसं० १७२ । आ० ११$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । ले०काल—सं० १७९७ चैत्र बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बून्दी ।

विशेष—जती नैणसागर ने पांडे खींवसी से जयपुर में लिखवायी थी । प्रति जीर्ण है ।

७२४. पंचसंग्रह वृत्ति—सुमतिकीर्ति । पत्रसं० २७४ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—प्राकृत संस्कृत । विषय—सिद्धांत । र०काल—सं० १६२० भादवा सुदी १० । ले०काल—सं० १८१२ श्रावण बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० २४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—इसका दूसरा नाम लघु गोम्मटसार टीका है ।

७२५. प्रतिसं० २ । पत्रसं० २०५ । ले०काल—सं० १७८४ सावन सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं०—२६६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—आगरा में केसरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

७२६. पंच संसार स्वरूप निरूपण × । पत्रसं० ५ । आ० १०$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धांत । र०काल— × । ले०काल—सं० १६३६ । पूर्ण । वेष्टनसं०१७६-७५ ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—सं० १६३६ वर्षे आसोज सुदी १२ उपाध्याय श्री नरेन्द्रकीर्त्ति पठनार्थ ब्रह्मदेवदासेन ।

७२७. पंचास्तिकाय-आ० कुन्दकुन्द । पत्रसं० ३५ । आ० ६ × ४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धांत । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर, बैर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

७२८. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १६ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ६ इञ्च । ले०काल सं० १६०६ । वेष्टन सं० ५०/१६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—प्रति संस्कृत टब्बा टीका सहित है ।

७२९. पंचास्तिकाय-कुंदकुंदाचार्य । पत्रसं० १४८ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल सं० १८[illegible] पौष सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३५४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—प्रति अमृतचन्द्राचार्यकृत संस्कृत टीका एवं पाण्डे हेमराज कृत हिन्दी टीका सहित है ।

श्री रूपचन्द गुरु कै प्रसाद थी । पाण्डे श्री हेमराज ने अपनी बुद्धि माफिक लिखित कीना । जे बहुश्रुत हैं ते संवारिकै पढियो ॥६॥ इति पंचास्तिकाय ग्रंथ समाप्त । संवत् १७१८ वर्षे चैत सुदी ११ दीतवार रामपुर मध्ये पंचास्तिकाय ग्रंथ स्वहस्तेन लिषी कृता पाण्डे सेखेन इदं आत्मपठनार्थं ।

७३०. प्रति सं० २ । पत्रसं० ७६ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले०काल सं० १५१३ । पूर्ण । वेष्टन-सं० १७५/२४१ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर संभवनाथ उदयपुर ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । प्रशस्ति—संवत्सरेस्मिन १५१३ वर्षे आश्विन बुदि ७ शुक्रवासरे श्री आदिनाथ चैत्यालये मूलसंघे ..... इससे आगे का पत्र नहीं है ।

७३१. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० ३० । आ० १०$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

७३२. पञ्चास्तिकाय टीका-टीकाकार-अमृतचन्द्राचार्य । पत्रसं० ५० । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ । भाषा—प्राकृत-संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल सं० १५७३ माघ सुदी १३ । वेष्टन सं० २८ । दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

७३३. प्रति सं० २ । पत्रसं० ११५ । ले०काल—सं० १७४७ माघ बुदी ६ । वेष्टन सं० २६ **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—महात्मा विद्याविनोद ने फागी में लिखा था ।

७३४. प्रति सं० ३ । पत्रसं० ४६ । ले०काल सं० १५७७ आसोज बुदी ६ । **अपूर्ण** । वेष्टन सं० २२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५७७ वर्षे आश्विन बुदि ६ बुधवारे लिखितं **तिजारास्थाने** अल्लावलखान राज्यप्रवर्त्तमाने श्रीकाष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्रीहेमचन्द्र तदाम्नाये अगरवालान्वये गोयल गोत्रे सा० महादास तत्पुत्र सा० छीपाल तेनेदं पंचास्तिकाय पुस्तकं लिखाप्य पंडित श्री साधारणाय पठनार्थं दत्तं ।

७३५. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० ७७ । ले०काल सं० १६१४ फागुण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन-सं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—राजपाटिकायां लिखितोयं ग्रंथः

७३६. **प्रतिसं० ५** । पत्रसं० १३७ । आ० १३ × ५ इञ्च । ले०काल संवत् १६३२ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर [illegible] ।

विशेष- -कुरुजांगलदेश सुवर्णपथ सुभस्थान योगिनीपुर में अकबर बादशाह के शासनकाल में अग्रवाल जातीय गोयल गोत्रीय साहु चांदणु तथा पुत्र अजराजु ने प्रतिलिपि कराई । लिखितं पाण्डे चंदू हरिचंद पुत्र ... । प्रशस्ति विस्तृत है । पत्र चूहे काट गये हैं ।

७३७. **पंचास्तिकाय टीका–अमृतचन्द्र** । पत्रसं० ४१ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१२ । **प्राप्ति स्थान**— भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७३८. **पंचास्तिकाय टीका**— × । पत्रसं० ४७ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल सं० १७४८ कार्तिक बुदी ७ पूर्ण । वेष्टन सं० २०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १७४८ वर्षे कार्तिकमासे कृष्णपक्षे सप्तम्यांतिथौ शनिवासरे श्री विजय गच्छे श्री भट्टारक श्रीसुमतिसागरसूरि तत् शिष्य मुनि वीरचंद लिपीकृतं श्रीअकबराबादमध्ये ।

७३९. **पंचास्तिकाय टब्बा टीका**— × । पत्र सं० ३० । आ० १० × ६ इञ्च । भाषा—प्रा० हिन्दी । विषय-अध्यात्म । र०काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० २०३-८४ । **प्राप्ति- स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

७४०. **पंचास्तिकाय बालावबोध**— × । पत्र सं० १३५ । आ० ८½ × ६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६८१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७४१. **पंचास्तिकाय भाषा-हीरानंद** । पत्रसं० १८६ । आ० ६ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दीपद्य । विषय—सिद्धान्त । र०काल सं० १७०० ज्येष्ठ सुदी ७ । ले०काल—सं० १७११ । अपूर्ण । वेष्टन सं० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—बीच के कितने ही पत्र नहीं हैं ।

७४२. **पंचास्तिकाय भाषा-पाण्डे हेमराज** । पत्र सं० १३८ । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—सिद्धान्त । र०काल—× । ले०काल—सं० १८७४ मंगसिर सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७४३. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १५४ । ले०काल—सं० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०४ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७४४. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० १७६ । ले०काल—१७२७ कार्तिक बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कामा ।

विशेष—लिखाइतं साह श्री देवीदास लिखतं महात्मा दयालदास महाराजा श्री कर्मसिंह जी विजय-राज्ये गढ़ कामावती मध्ये ।

७४५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४५ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० २२ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

७४६. प्रतिसं० ५ । पत्र सं० ११० । आ० १२ ½ × ५ ½ इञ्च । ले०काल—सं० १९२९ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२२ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर, बयाना ।

७४७. प्रतिसं० ६ । पत्र सं०—१२१ । आ० ११ × ६ इञ्च । ले० काल सं० १७४९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७४८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ९६ । आ० १२ × ६ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २८/२३ । जैन मन्दिर मादवा (राज०)

७४९. प्रति सं० ८ पत्र । सं० ९७ । आ० ११ ½ × ७ ½ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल—सं० १९३९ आसोज सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७५०. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १३६ । आ०१ १ ½ × ५ ½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल सं० १८४१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७५१. प्रति सं० १० । पत्र सं० १५० । आ० १० × ५ ½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल—सं० १८०५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४०-९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—अन्तिम दो पत्रों में ब्रह्म जिनदास कृत शास्त्र पूजा है ।

७५२. प्रति सं. ११ । पत्र सं० ११० । आ० १२ ½ × ५ ½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल— सं० १७४९ पोष सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४-६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

७५३. प्रति सं० १२ । पत्र सं० १८१ । आ०—१२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल सं० १८६२ माघ सुदी १३ पूर्ण । वेष्टन सं० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरह पंथी मालपुरा (टोंक) ।

विशेष—धनराज गोधा सुत रामचंद ने टोडा में मालपुरा के लिये प्रतिलिपि करवाई थी ।

७५४. पंचास्तिकाय भाषा—बुधजन—पत्र सं० ६३ । आ० ११×५ ½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सिद्धांत । र०काल सं० १८८२ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—दीवान अमरचन्द की प्रेरणा से ग्रंथ लिखा गया ।

७५५. । परिकर्माष्टक— पत्र सं० १० । आ० १२ ½ × ६ ½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—सिद्धांत । र०काल × । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—गोम्मटसार की संदृष्टि आदि का वर्णन है।

७५६. पक्खिय सुत्त— × । पत्र सं० ६। आ० ७½ × ३½ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—आगम। र०काल × । ले०काल—सं० १६५५। पूर्ण। वेष्टन सं० २८०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

विशेष प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६५५ वर्षे श्रावण वुदि द्वितीयायां सोमवासरे श्रीवृहत्खरतरगच्छे शृंगारहार श्रीमज्जिनसिंहसूरि राजेश्वराणां शिष्य कवि लालचन्द पठनार्थ लिखितं श्री लाभपुर महानगरे। इसके आगे श्री जिनपद्मसूरि का पार्श्वनाथ स्तवन (संस्कृत) भी लिखा हुआ है।

७५७. प्रति सं० २। पत्र सं १५। आ० १० × ४½ इञ्च। ले०काल— × । पूर्ण। वेष्टन सं० १८८। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

७५८. प्रति सं० ३। पत्रसं० ८। आ० ११×४½ इञ्च। ले०काल—सं० १६५५ वैशाख सुदी ५। पूर्ण। वेष्टनसं० ६५३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—इसी भण्डार में इसकी एक प्रति और है।

७५९. प्रति सं० ४। पत्रसं० २ से ५। आ० ८½ × ५ इञ्च। ले०काल— × । अपूर्ण। वेष्टनसं० २०४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है। लिपीकृतं जती कल्याणेन विजय गच्छे महिमा पुरे मकसूसाबादमध्ये।

७६०. प्रति सं० ५। पत्रसं० १८। आ० ११×४½ इञ्च। ले०काल— × । पूर्ण। वेष्टनसं० १११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना।

विशेष १०वें पत्र में साधु अभिग्रह एवं २४वें तीर्थंकर दिया हुआ है।

७६१. प्रति सं० ५। पत्रसं० ६। आ०१०½ × ४½ इञ्च। ले०काल—सं० १५९५ कार्तिक सुदी १४। पूर्ण। वेष्टनसं० ३१८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बून्दी)

विशेष प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत १५९५ वर्षे कार्तिक सुदी १४ सोमवासरे श्रीयोगिनीपुरे। श्रीखरतर गच्छ। श्री उहेम निधान तत्पहे श्री श्रीपाल तत्पहे श्री श्री मेदि ऋषि मुनि तत् शिष्य महासती रूप सुन्दरी तथा गुण सुन्दरी पठिनार्थं कर्मक्षय निमित्तं। लिखितं विभून।

७६२. पारखी सूत्र—× । पत्रसं० १४। आ० ९½×४ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—(चिंतन)। र०काल— × । ले०काल — × । अपूर्ण। वेष्टनसं० २५६। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

विशेष—१४ से आगे पत्र नहीं है। प्रति प्राचीन है।

७६३. प्रज्ञापना सूत्र (उपांग)— × । पत्रसं० ५४१। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—आगम ग्रन्थ। र०काल— × । ले०काल सं० १८२२। पूर्ण। वेष्टन सं० १०४-२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

विशेष—मलयगिरि सूरि विरचित संस्कृत टीका के अनुसार टब्बा टीका है। पं० जीवविजय ने गुजराती भाषा टीका की है। टीकाकाल सं० १७८४।

७६४. प्रश्नमाला— × । पत्रस० २१ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । **विषय**—चर्चा । र०काल— × । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४४५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—सुदृष्टि तरंगिणी आदि ग्रन्थों में से संग्रह किया गया है ।

७६५. प्रतिसं० २ । पत्रस० २८ । आ० १२½×६½ इञ्च । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर फतेहपुर (सीकर)

७६६. प्रश्नमाला बचनिका— × । पत्रसं०—२८ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धांत । र०काल— × । ले०काल—सं० १९९७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मंदिर नागदी (नेमिनाथ) बूंदी ।

७६७. प्रश्नव्याकरण सूत्र— × । पत्रसं० ५१ । भाषा—प्राकृत । विषय—आगम । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७६८. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ६७ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर ।

विशेष—प्रति संस्कृत टब्बा टीका सहित है ।

७६९. प्रश्नव्याकरण सूत्र वृत्ति—अभयदेव गणि । पत्रसं० ११९ । आ० १०½×५इञ्च । भाषा—प्राकृत संस्कृत । विषय—आगम । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष— श्री सविग्रहविहारिणा श्रुतनिधि चारित्रचूडामणि प्रशिष्येणाभयदेवाख्यसूरिणा विवृति कृता प्रश्नव्याकरणांगस्य श्रुत भक्त्या समासता निवृत्ति कुलनभसून चन्द्रद्रोणाख्यसूरि सूख्येन" पंडित गणेन गुणावतप्रियेया न गुरुवरप्रियेना संशोधिता वयं ।

७७०. प्रश्नशतक—जिनवल्लभसूरि । पत्रसं० ४७ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चर्चा । र०काल × । ले०काल सं०१७१४ अषाढ़ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति—सं० १७१४ वर्षे अषाढ सुदी २ शुक्रवासरे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये श्री सरोजपुर नगरे भट्टारक श्री जगत्कीर्त्ति देवस्य शिष्य गुणदासेन इदं पुस्तकं लिखितं ।

७७१. प्रश्नोत्तरमाला—× । पत्रसं० ५३ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चर्चा । र०काल × । ले०काल—सं० १९१७ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर फतेपुर शेखावाटी सीकर ।

विशेष—सुदृष्टितरङ्गिणि के आधार पर है ।

७७२. प्रति सं० २ । पत्रसं० ३८ । आ० १०½×५½ इञ्च । ले०काल—सं० १९२४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर ।

७७३. प्रश्नोत्तररत्नमाला अमोघवर्ष । पत्रसं० २ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चर्चा । र०काल × । ले०काल-सं० १७८६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७७४. प्रश्नोत्तरी—× । पत्रसं० २६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धांत । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६३–१०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का, डूंगरपुर ।

७७५. बासठ मार्गणा बोल । पत्रसं० ४ से ६ । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र०काल× ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ६२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७७६. बियालीस ढाणी—× । पत्रसं० २३ । आ० १०×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय-सिद्धांत चर्चा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४ । **प्राप्ति स्थान** - पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, टोडारायसिंह (टोंक)

७७७. बंधतत्व-देवेन्द्रसूरि । पत्रसं० ३ । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धांत (बंध) । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं ७०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७७८. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७२६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७७९. भगवती सूत्र × । पत्रसं० ६६० । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आगम । र०काल × । ले०काल—सं० १९१४ कार्तिक सुदी १० । वेष्टन सं० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

७८०. भगवती सूत्र वृत्ति—× । पत्रसं० ३५–५२२ । आ० ११½×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय—आगम । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३९१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रारम्भ के ३४ तथा ५२२ से आगे पत्र नहीं हैं ।

७८१. भावत्रिभंगी—नेमिचन्द्राचार्य । पत्रसं० ३२५ । आ० १०½×६ इञ्च । भाषा - प्राकृत । विषय—सिद्धांत । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है ।

७८२. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ५१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धांत । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

७८३. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० ३७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७८४. प्रतिसं० ४ । पत्रसं १४३ । ले०काल सं० १७२६ । पूर्ण । वेष्टन सं ८३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७८५. **भावसंग्रह-श्रुतमुनि** । पत्रसं० १३ । आ० ११½ × ५¾ । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल — × । लिपिकाल—सं० १७३४ । वेष्टनसं० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर ।

विशेष –अंबावती कोट में साह श्री बिहारीदास ने महात्मा डूंगरसी की प्रेरणा से प्रतिलिपि की थी ।

७८६. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ६८ । लिपिकाल सं० १७८७ माह बुदी ५ । **वेष्टनसं० १८** । **प्राप्ति स्थान** - उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष केशूरिण नगर में दुर्जनशाल के राज्य में लिखा गया था । त्रिभंगीसार भी इसका नाम है ।

७८७. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० ५-५१ । आ० १२½ × ५ इञ्च । लिपि काल० सं० १६२७ आषाढ़ बुदि १२ । वेष्टन सं० १९ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७८८. **प्रतिसं०** ४ । पत्रसं० ४६ । ले०काल सं० १७४७ कार्तिक बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं०—२१९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७८९. **मार्गणासत्तात्रिभंगी-नेमिचन्द्राचार्य**—पत्रसं० १७ । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धांत । र०काल — × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ९९/२०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर ।

विशेष—तीन प्रतियां और हैं । जिनके वेष्टन सं० १००/२०२, १०१/२०३ एवं १०२/२०४ है ।

७९०. **मार्गणास्वरूप**— × । पत्रसं० ६१ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनसं०—२५८ । **प्राप्ति-स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—संस्कृत टब्बा टीका सहित है ।

७९१. **रत्नकोश** - × । पत्रसं० १२ । आ० १२ × ४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल — × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४४७ । २८१ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन संभवनाथ मन्दिर, उदयपुर ।

प्रारंभ —.

जयति रणश्वबलदेवःसकलकलकेलिकोविद :
कुशलविचित्रवस्तुविज्ञानं रत्नकोषमुद्राहृतं ।

७९२. **रयणसार-कुंदकुंदाचार्य** । पत्रसं० ११ । आ०—११ × ५½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२५४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

७९३. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ११ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

७९४. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० ४-६ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १६६-६ । **प्राप्ति स्थान** — दिगम्बर जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दीसा ।

७६५. **प्रतिसं० ४**। पत्रसं० ११। आ० १०½ × ४⅝ इञ्च। ले०काल सं० १८२१ भादवा बुदी ७। वेष्टनसं० ८२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—पं० चोखचंद के शिष्य सुखराम ने नैणसागर तपागच्छी से जयपुर में आदीश्वर जिनालय में प्रतिलिपि करायी थी।

७६६. **लघु संग्रहणी सूत्र**। पत्रसं० ४। आ० १० × ४½ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—आगम। र०काल × । ले०काल सं० × । पूर्ण। वेष्टनसं० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर डबलाना (बूंदी)।

विशेष—मूल गाथाओं के नीचे हिन्दी में टीका है।

७६७. **लघुक्षेत्रसमासविवरण रत्नशेखर सूरि** । पत्रसं० ४१ । आ० १२ × ४ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—सिद्धांत। र०काल × । ले०काल सं० १५३२ सावण बुदी ५ । पूर्ण। वेष्टन सं० १४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

विशेष—प्रति मलयगिरि कृत टीका सहित है। कुल २६४ गाथाएं हैं। प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

संवत् १५३२ संवत्सर प्रवर्त्तमाने श्रावण बदि पंचम्यां शनौ अद्येह श्रीपत्तनवास्तव्या दीसावाल ज्ञातीय म० देवदासेन लिखितं। श्री नागेन्द्रगच्छे पं० जिनदत्त मुनि गृहीता।

७६८. **लब्धिसार भाषा वचनिका-पं० टोडरमल**। पत्र सं. १८४। आ० १०×७½ इञ्च। भाषा—राजस्थानी (ढूंढारी) गद्य। विषय—सिद्धांत। र० काल × । ले० काल। × । पूर्ण। वे० सं० १५६१। **प्राप्ति स्थान**—भा० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७६९. **प्रतिसं० २**। पत्र सं० १५। आ० १५ × ७ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण। वे० सं० २१८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर।

८००. **प्रतिसं० ३**। पत्र सं० १६६। आ० १२½ × ५½ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान (बूंदी)।

८०१. **प्रति सं० ४**। पत्र सं० २२७। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १४६। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पंचायती मन्दिर उदयपुर।

८०२. **लब्धिसार क्षपणासार भाषा वचनिका-पं० टोडरमल**। पत्र सं० ३३२। आ० १०½ × ७½ इञ्च। भाषा-राजस्थानी (ढूंढारी) गद्य। विषय-सिद्धांत। र० काल सं० १८१८ माघ सुदी ५। ले० काल—सं० १८६६ चैत्र बुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० ११६६। **प्राप्ति-स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८०३. **प्रति सं० २**। पत्र सं० २२७। ले० काल सं० १८७४ सावन बदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० ७१। **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

विशेष—अन्तिम दो पृष्ठों पर गोम्मटसार पूजा संस्कृत में भी है।

८०४. **प्रति सं० ३**। पत्र सं० २५४। आ० ११ × ८ इञ्च। ले० काल सं० १८६०। पूर्ण। वेष्टन सं० ८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन० मन्दिर तेरहपंथी दीसा ।

विशेष—नाथूलाल तेरापंथी ने प्रतिलिपि कराई थी।

८०५. **विचारसंग्रहणी वृत्ति**— × । पत्रसं० २४ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय—आगम । र० काल सं० १६०० । ले० काल सं० १७१२ पूर्ण । वेष्टन सं० ४६३ × । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियान डूंगरपुर ।

विशेष—प्रति संस्कृत टब्बा टीका सहित है । टीका काल सं० १६६३ है ।

८०६. **विपाक सूत्र**—× पत्रसं० ३० से ४६ । भाषा-प्राकृत । विषय-आगम । र०काल-× । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७५२ । दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

८०७. **विशेषसत्ता त्रिभंगी-नेमिचन्द्राचार्य** । पत्रसं० ५-३७ तक । आ० ११⅝ × ५½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल — × । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी ।

८०८. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ३० । ले०काल सं० १६०६ ज्येष्ठ बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० / १२४ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० शुभचन्द्रदेवा त० भ० जिनचंद्र देवा त. भ. सिद्धकीर्त्ति त. भ. श्री धर्मकीर्त्ति तदाम्नाये बाई महासिरि ने लिखवाया था ।

८०९. **शतश्लोकी टीका-त्रिमल्ल** । पत्रसं० १० । आ० ९ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धांत । र०काल × । ले०काल सं० १८६४ ज्येष्ठ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८८ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर डबलाना ।

विशेष— पं० रत्नसौभाग्येन चिरंदेवेन्द्रविमल वाचनार्थं संवत १८६४ वर्षे ज्येष्ठ कृष्णा ७ गुरुवसे महाराजा जी शिवदानसिंह जी विजयराज्ये ।

८१०. **श्लोकवार्तिक—विद्यानंदि** । पत्र सं० ३१६ । आ० ११⅞ × ४⅞ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल सं० १७२० । पूर्ण । वेष्टन सं० १४०, ७ । दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्द्रगढ़ ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है--

संवत् १७२० वर्षे कार्तिकमासे कृष्णपक्षे पंचम्यां रविदिने श्री मूलसंघो सरस्वतीगच्छे बलात्कार गणे भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति तत्पट्टे भट्टारक-कोहिमुकदायत्तमान भट्टारक श्री ५ रत्नचन्द्र तत्शिष्य पंडित कुशला लिखितं बूंदी नगरे अभिनन्दन चैत्यालये तत्वार्थ टीका समाप्तः ।

८११. **श्लोकवार्तिकालंकार** । पत्र सं० ७ । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धांत । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १७६/२१० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर ।

८१२. **सप्तत्रिभंगी—आ० नेमिचन्द्र** । पत्र सं० ४० । आ० १० × ६ इञ्च । भाषा—प्राकृत हिन्दी । र०काल × । ले०काल सं० १८७० पूर्ण । वेष्टन सं० ४३५-१६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—हिन्दी गद्य में अर्थ दिया हुआ है । मार्गणाओं के चित्र भी दिये हुये हैं ।

८१३. **सत्तास्वरूप**—× । पत्र सं० ४३ । आ० १३×७ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी पद्य । विषय—सिद्धांत । र०काल × । ले०काल सं० १९३३ कार्तिक सुदी ५ पूर्ण । वेष्टन सं० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

८१४. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० १० । आ० ६½×३½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

८१५. **सप्ततिका** × । पत्र सं० ३०–३९ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धांत । र०काल × । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टन सं० २२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर । इति कर्मग्रन्थ षटक सूत्र समाप्त ।

८१६. **सप्तपदार्थ वृत्ति** × । पत्र सं० २९ । आ० ११½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धांत । र०काल—× । ले०काल सं० १५४१ आसोज बुदी ११ । वेष्टन स० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—रत्नशेखर ने स्वयं के पठनार्थ लिखी थी ।

८१७. **सप्तपदार्थी टीका—भावविजयेश्वर** । पत्र सं० ३७ । आ० १३×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धांत । र०काल—× । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अग्रवाल उदयपुर ।

विशेष—इति भावविजयेश्वर रचिता चमत्कार ' ''' नाम सप्तपदार्थी टीका ।

८१८. **समयभूषण—इन्द्रनंदि** । पत्र सं० ३ । आ० १३×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धांत । र०काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६/४३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर ।

विशेष—इति श्री गदिन्द्रनंद्याचार्य विरचितो नाम समयभूषणाभिधेयं ग्रन्थ ।

८१९. **समवायांग सूत्र** । पत्र सं० ७७ । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धांत । र०काल—× । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४६ ४१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

८२०. **सर्वार्थसिद्धि—पूज्यपाद** । पत्रसं०—१४० । आ० ९×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धांत । र०काल—× । ले० काल सं १८३१ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं०—८६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—अजमेर में भट्टारक श्री त्रिलोकेन्दुकीर्ति ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

८२१. **प्रतिसं० २** । पत्रसं०—१ से १६१ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं०—११३२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

८२२. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं०—४ से १०४ । आ० ११½×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं०—१०३८ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

८२३. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं०—२१२ । ले० काल सं० १७४५ आषाढ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं०—१७०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

८२४. **प्रति सं० ५ ।** पत्रसं०-१८५ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं०--६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बड़ा पंचायती मन्दिर डीग ।

८२५. **प्रति सं० ६ ।** पत्रसं०--१६६ । आ० ११×५½ । ले० काल--सं० १७७६ आसोज सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं०--३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष--हिण्डौन में पं० नरसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

८२६. **प्रतिसं० ७ ।** पत्रसं०—२१६ । आ० ८½×६½ । ले० काल--× । पूर्ण । वेष्टन सं०-६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

८२७. **प्रतिसं०८ ।** पत्रसं० १११ । आ० १०½×६¾ इञ्च । ले०काल सं०—१६८० कार्तिक बदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८० । **प्राप्तिस्थान** दि० जैन मन्दिर पंचायती करौली ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है ।

८२८. **प्रतिसं० ६ ।** पत्रसं०—१५४ । आ० ११½×४¾ इञ्च । ले० काल--१६७० पौष सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६/१२ **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर सौगाणियों का करौली ।

८२९. **प्रतिसं० १० ।** पत्रसं० ३८-२०७ । ले०काल सं० १७७० पौष बुदी ७ । अपूर्ण । वेष्टन सं० १०१-१० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--प्रत्येक पत्र में १० पंक्ति एवं प्रति पंक्ति में ३१--३४ अक्षर हैं ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है---संवत १३७० पौष बुदी १० गुरुवासरे श्री योगिनीपुरस्थितेन साधु श्री नारायण सुत भीम सुत श्रावक देवधरेण स्वपठनार्थं तत्वार्थवृत्ति पुस्तकं लिखापितं । लिखितं गौड़ान्वय कायस्थ पं० गंधर्व पुत्र वाहडदेवेन ।

निष्पंदीकृत चित्तचंडविहगाः, पंचाप्यक्षकुट्यांतिका ।
ध्यानध्वस्तसमस्तकिल्विषविषा, शास्त्रां बुधे पारगाः ।
हेलोन्मूलितकर्मबंधनिचयाः कारुण्य पुष्पाशयाः ।
योगीन्द्रा भवनीभरैस्थदलनाः कुर्वन्तु वो मंगलं ॥
लेखक पाठयोः शुभं भवतु । इसके पश्चात् दूसरी कलम से निम्न प्रशस्ति और दी हुई है---

श्रीमूलसंघे भ० श्री सकलकीर्तिदेवास्तत्पट्टे श्री भुवनकीर्तिदेवाः चेली श्री गौतमश्री पठनार्थं शुभं भवतु ।

८३०. **प्रतिसं० ११ ।** पत्रसं० १७० । आ० १०½×७½ इञ्च । ले०काल--× । पूर्ण । वेष्टन सं० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अधेरवालों का, नैनवां ।

विशेष—सं० १९६३ आसोज सुदी ४ कोटड़ियों का मन्दिर में ग्रन्थ चढ़ाया ।

८३१. **सर्वार्थसिद्धि भाषा-- पं० जयचन्द ।** पत्रसं० २९६ । आ० १३×७ इञ्च । **भाषा**—राजस्थानी (ढूंढारी) गद्य । विषय--सिद्धांत । र०काल सं० १८६१ चैत्र सुदी ५ । ले०काल संख्या १८६९ माघ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५६६ (क) । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८३२ **प्रतिसं० २** । पत्र सं० २६४ । ले० काल सं० १८९० । पूर्ण । वे० सं० ५३८ ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पंचायती भरतपुर ।

विशेष लालसिंह बड़जात्या ने लिखवायी थी ।

८३३. **प्रति सं० ३** । पत्र संख्या—३१३ । लेखन काल सं० १८७३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—जोधराज कासलीवाल कामावाले ने लिखवाया था ।

८३४. **प्रति सं. ४** । पत्र सं. २४३ । ले०काल —× । पूर्ण । वे०सं० ५३६ । **प्राप्ति स्थान** — उपरोक्त मन्दिर ।

८३५. **प्रति सं. ५** । पत्र सं० ४७२ । ले० काल सं० १८७४ सावण बुदी १२ । पूर्ण । वे. सं० — ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

८३६. **सारसमुच्चय—कुलभद्राचार्य** । पत्र सं० १४ । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धांत । र०काल —× । ले० काल सं० १८०२ वैशाख सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० २४७ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८३७. **सिद्धांतसार —जिनचन्द्राचार्य** । पत्रसं० ८ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धांत । र०काल × । ले०काल सं० १५२४ आसोज सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—सांभर में प्रतिलिपि हुई थी । लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

८३८. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ८ । आ० ८ × ३½ इञ्च । ले०काल सं० १५२५ आसोज सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर ।

विशेष -- केवल प्रशस्ति अपूर्ण है ।

८३९. **प्रति सं ३** । पत्र सं० ७ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल सं० १५२५ । पूर्ण । वे० सं० ३३६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—सं० १५२५ वर्षे श्रावण सुदी १३ श्री मूलसंघे भ० श्री जिन चन्द्रदेवा दील्ही लिखापितं ।

८४०. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० १२ । आ० ८¾ × ३½ इञ्च । लेखन काल सं० १५२४ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—फागी ग्राम प्रतिलिपि हुई थी ।

८४१. **प्रति सं. ५** । पत्र सं० ६ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—कहीं कहीं संस्कृत में टिप्पणी भी हैं ।

८४२. **सिद्धान्तसार दीपक—भ० सकलकीर्ति** । पत्रसं० १२५ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल सं० १८१५ चैत सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं०—१०२३ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

८४३. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ११ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११८४ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

८४४. **प्रति सं० ३** । पत्र सं०— १२--१५१ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६५६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

८४५. **प्रति सं० ४** । पत्रसं०—१९० । आ० ९ × ६ इञ्च । ले० काल सं० १८४८ आषाढ़ सुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८१ । **प्राप्ति स्थान**-उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रारम्भ के ८१ पत्र वेष्टन सं० २२१ में है ।

८४६. **प्रति सं० ५** । पत्रसं० – १-४५,१९६ । ले० काल—१८२३ माघ बदी ११ । अपूर्ण । वेष्टन सं० २५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर में प्रतिलिपि की गई थी ।

८४७. **प्रति सं० ६** । पत्रसं०—५२ से १५७ । ले० काल - × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २-९४ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

८४८. **प्रति सं० ७** । पत्र सं०—२३१ । ले० काल सं० १७९० आसोज सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—जिहानाबाद में प्रतिलिपि हुई थी ।

८४९. **प्रति सं० ८** । पत्र सं० १६० । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर ।

८५०. **प्रति सं० ९** । पत्र सं० १३६ । ले० काल—१९१७ कार्तिक सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं०-६७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—प० जीवनराम ने फतेहपुर में रामगोपाल ब्राह्मण भीजपुर वाले से प्रतिलिपि कराई थी ।

८५१. **प्रतिसं० १०** । पत्र सं० ८२ । ले० काल सं० १७२८ चैत बुदी ३ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८५२. **प्रतिसं० ११** । पत्र सं० २--१९४ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टन सं० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

८५३. **प्रतिसं० १२** । पत्र सं० २५७ । ले० काल सं० १८४३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल ।

विशेष—श्लोक सं ५५०० ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—मिति पोष सुदी ९ नौमी शुक्रवासरे लिपिकृतं आचार्य विजयकीर्तिजी चि० सदासुख चौधे रूपचन्द की बाई खुशाला मिति पौष सुदी ९ सम्वत् १८४३ का नन्दग्राम नगर हांडा राज्ये महाराजाजी श्री उम्मेदसिंघजी राज्ये एकसार भाला गोत्रे राज्य आलिमसिंघ जी पंडितजी श्रीलाल जी नानाजी तत् स भौंमा गोत्रे साहजी श्री हीरानन्दजी तत् पुत्र साहजी श्री धर्ममूर्ति कुल उधारणीक खुस्यालचन्द जी भार्या कसुम्भलदे तत् पुत्र शाहजी श्री धर्ममूर्ति कुल उधारणीक साह छाजुरामजी भार्या छाजादे भाई चन्द्रा शास्त्र चटांपिसं । शास्त्र जी दीन्हु पुण्य अर्थ ।

८५४. **प्रति सं० १३** । पत्र सं० १६६ । ले० काल सं० १७६४ सावन सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष – सवाई माधोपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

८५५. **प्रति सं० १४** । पत्र सं० ३४६ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ । ले० काल सं० १७८६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८५६. **प्रतिसं० १५** । पत्र सं० २-२२६ । आ० १३ × ५ इन्च । ले० काल—१७५४ मंगसिर सुदी ४ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है । धर्मपुरी में प्रतिलिपि हुई थी ।

८५७. **प्रति सं० १६** । पत्र सं० १४० । आ० १३ × ६$\frac{1}{2}$ । ले० काल सं० १९१९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी नैणवा ।

विशेष—सं० १९२८ में खन्दालाल बैद ने चढ़ाया था ।

८५८. **प्रति सं १७** । पत्र सं० २७१ । आ० ११ × ५ इन्च । ले० काल सं० १८८५ सावन सुदी २ पूर्ण वेष्टन सं० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—श्री भावविमलजी तत् शिष्य पं० मोतीविमलजी तत् शिष्य सं० देवेन्द्रविमलजी तत् शिष्य सुखविमलेन लिपि कृतं ।

८५९. **प्रति सं० १८** । पत्र सं० ११३ । आ० १० × ४.६ इन्च । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

८६०. **सिद्धांत सारदीपक—नथमल बिलाला** । पत्र सं० ३७८ । आ० १२ × ६$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—सिद्धान्त । र० काल सं० १८२४ माह सुदी ५ । ले० काल सं० १८९५ कार्तिक सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

८६१. **प्रति सं० २** । पत्र सं० २४६ । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष—२०१ तथा २०२ का पत्र नहीं है ।

८६२. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० २०९ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ५६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८६३. **प्रतिसं० ४** । पत्र सं० २६६ । ले० काल सं० १८७७ । फागुण सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—ओधराज कासलीवाल के पुत्र उमरावसिंह व पौत्र लालजीमल वासी कामा ने लिखवाया था ।

८६४. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० १५८ । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डावालों का डीग ।

८६५. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १९५६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३ । **प्राप्ति**

स्थान – दि० जैन मन्दिर चेतनदास पुरानी डीग ।

८६६. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० २०६ । ले० काल सं० १८२५ वैशाख सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—२ प्रतियों के मिले हुए पत्र हैं । प्रथम प्रति के २६८ तक तथा दूसरी प्रति के २६६ से ३०६ तक हैं ।

८६७. **प्रतिसं० ८** । पत्रसं० २३७ । आ० १२½ × ४ इञ्च । ले०काल सं० १६२१ चैत सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—सं० १६३२ में इस ग्रन्थ को मंदिर में भेंट चढ़ाया गया था ।

८६८. **प्रति सं० ६** । पत्रसं० २११ । आ० १३ × ७½ इञ्च । ले०काल सं० १८३५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन छोटा मंदिर बयाना ।

८६६. **प्रति सं० १०** । पत्र सं० १२१ । आ० १२ × ६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

८७०. **प्रति सं० ११** । पत्र सं० २२३ । आ० १३ × ५½ इञ्च । ले०काल सं० १८६८ चैत्र सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक) ।

८७१. **प्रति सं० १२** । पत्र सं० २६५ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल सं० १८८८ चैत्र बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियों का मालपुरा (टोंक)

८७२. **प्रति सं० १३** । पत्र सं० १४३ । आ० १३½ × ६½ इञ्च । ले०काल सं० १८३५ भादवा सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पंचायती राजमहल (टोंक)

विशेष—महात्मा स्वंभुराम ने जयपुर में प्रतिलिपि की ।

८७३. **प्रति सं० १४** । पत्र सं० २११ । आ० ११ × ६½ इञ्च । ले०काल सं० १८८३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर, उदयपुर ।

८७४. **प्रति सं १५** । पत्र सं० १७६ । आ० १३½ × ४½ इञ्च । ले०काल सं० १८७२ फागुन बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर महावीर स्वामी बूंदी ।

८७५. **प्रति सं० १६** । पत्र सं० २७२ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले०काल सं० १६७० कार्ती सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०८-११ । **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्दरगढ़ (कोटा)

विशेष—इन्दरगढ़ में प्रतिलिपि हुई थी ।

८७६. **प्रति सं० १७** । पत्र सं० १२१ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल सं० १८६८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११६-५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियान डूंगरपुर ।

८७७. **प्रति सं० १८** । पत्र सं० २३६ । आ० ११ × ७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बीसपंथी दौसा ।

८७८. **प्रतिसं० १६** । पत्र सं० १८७ । आ० ११ × ७½ इञ्च । ले०काल सं० १८६४ आसोज बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६६-३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—श्री गौरीबाई ने पन्नालाल चुन्नीलाल साह से प्रतिलिपि करवाई थी ।

८७९. **प्रतिसं० २०** । पत्र सं० २०६ । आ० ११×७½ इञ्च । **ले०काल** सं० १८५९ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२/१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर, मादवा ।

८८०. **प्रतिसं० २१** । पत्र सं० १७७ । आ० १३×६ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० २११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी नेमिनाथजी बूंदी ।

८८१. **सिद्धांतसागरप्रदीप** × । पत्रसं० १२६ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय – सिद्धांत । र०काल × ले०काल – सं० १८७१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२८-५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियान डूंगरपुर ।

८८२. **सिद्धांतसार संग्रह—नरेन्द्रसेन** । पत्रसं० २६७ । आ० ११×७ इञ्च । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय— सिद्धांत । र०काल × । ले०काल सं० १६३३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

८८३. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ७८ । आ० १०×४½ इञ्च । **ले०काल** सं० १८७२ श्रावण सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०२० । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—महारोठ नगर में राठौड वंशाधिपति महाराजाधिराज महाराजा श्री विजयसिंहजी के शासनकाल में खुशालचन्द पांड्या ने प्रतिलिपि की थी ।

८८४. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० १०२ । आ० १२×६ इञ्च । **ले०काल** सं० १८०६ आषाढ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं २१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—जिहानाबाद में प्रतिलिपि हुई थी ।

८८५. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० ५ । आ० १०½×४½ । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० ११३ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

८८६. **सूत्र प्राकृत –कुंदकुंदाचार्य** । पत्र सं० ६ । आ० १२½×६ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय – अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं ३१० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

८८७. **सूत्र सिद्धांत चौपई**—× । पत्र सं० १० । भाषा- -हिन्दी पद्य । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०२ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८८८. **सूत्र स्थान**— × । पत्र सं० १३२ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धांत । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी नेमिनाथ बूंदी ।

८८९. **संग्रहणी सूत्र**—× । पत्र सं० ६१ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय—आगम । र०काल × । ले० काल सं० १७७७ चैत्र बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

८९०. **प्रति सं० २**। पत्र सं० १२। ले० काल सं० १७७१। पूर्ण। वे० सं० १७१–४६। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर, इन्दरगढ़।

विशेष—संवत् १७७१ वर्षे माह बुदी ८ दिने लिपीकृतं कोटडामध्ये।

८९१. **संग्रहणी सूत्र—मल्लिषेण सूरि**। पत्र सं० १२। भाषा – प्राकृत। विषय—आगम। र०काल × । ले०काल सं० १६५७। पूर्ण। वेष्टन सं० ८–४४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर, उदयपुर।

प्रशस्ति—संवत् १६५७ वर्षे आसोज बुदी १४ दिने शनिवासरे श्री मांगलउर नगरे वाणारसि श्री नयरंग गणि तत् शिष्य जती तेजा तत् शिष्य जती धासण लिखितं।

८९२. **प्रति सं० २**। पत्र सं० ३१। आ० ८×३½ इञ्च। ले० काल सं० १६०१ भादवा बुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० २८१। **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर दबलाना।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६०१ वर्षे भाद्रपद बुदी ७ शनौ भट्टारक श्री कमलसेन पठनार्थ लिखितं सम्मतं श्री बहोडा नगरे।

८९३. **संग्रहणी सूत्र—देवभद्र सूरि**। पत्र सं० २६। आ०–१०×४ इञ्च। **भाषा**—प्राकृत। विषय—सिद्धान्त। र०काल × । ले० काल सं० १७०७। अपूर्ण। वे० सं० २६६। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—संस्कृत में चूर्णि सहित है।

८९४. **संग्रहणी सूत्र**— ×। पत्र सं० ८। आ० १०×४ इञ्च। भाषा– पुरानी हिन्दी। विषय– आगम। र०काल × । ले० काल सं० १७०६। वे० सं० ६०१। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

विशेष—संवत् १७०६ वर्षे आषाढ मासे शुक्ल पक्षे १ दिने मेदवरे श्रीपोधपुरे सतिकीर्ति रलिखितयति।

८९५. **प्रति सं० २**। पत्र सं० ४४। ले० काल सं० १७१३ कार्तिक बुदी २। पूर्ण। वे० सं० ३१४। **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर दबलाना (बून्दी)

८९६. **संग्रहणी सूत्र भाषा—दयासिंह गणि**। पत्र सं० ४७। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—प्राकृत हिन्दी। विषय—आगम। र०काल × । ले० काल सं० १६४७ सावण सुदी १४। पूर्ण। वे० सं० १६१। **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर कामा।

विशेष—
वीयाइ सुयपरेसु इगहीणाऊ हुंतिपंतीउ।
सत्तमि महिपयरे दिसि इक्कक्के विदिसिनात्थं ॥ ८८

वीया कहतां बीजइ प्रतरइं। पंक्तई २ एके कउ उछउ करणं। सातमइ नरकइ उणपंचास मइं प्रतरइं दिसइं एकेकउ नरकावास उछइ। विदसाइं एकइ नरकावास उ नहीं ॥८८॥

समाप्ति—संवत् १४९७ द्वितीय सावण सुदी चउदसि शुक्रवार तिणइ दिवसइ तपागच्छ

नायक भट्टारक श्री रत्नसिंहसूरि तइं शिष्यदइं पंडित माहेमगणइं ए बालावबोध रच्चउ सवसौख्य मांगलिक्य नइ अर्थइ हुवउ ।

८६७. **संग्रहणी सूत्र**— ×। पत्र सं० १२। आ० १०×४½ इञ्च। **भाषा**—प्राकृत। विषय—आगम। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २१३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दनस्वामी बून्दी।

विशेष—गणि श्री जीव विजयग णि शिष्यणि गत्त जी विजयेन लिखितं मुनि जसविजय पठनार्थं ।

विषय -- धर्म एवं आचार शास्त्र

८९८. **अर्चानिर्णय**— × । पत्र सं० २५ । आ० ११½ × ५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय–चर्चा । र० काल × । ले० काल सं० १९१४ मंगसिर सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

विशेष—त्रेसठशलाका पुरुषों की चर्चा है ।

८९९. **अतिचारवर्णन**—पत्र सं० २ । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । र० काल—× । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

९००. **अनगारधर्मामृत— पं० आशाधर** । पत्र सं० २२–२८७ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—इसका नाम यत्याचार भी है । इसमें मुनि धर्म का वर्णन है प्रति स्वोपज्ञ टीका सहित है ।

९०१. **प्रति सं० २** । पत्र सं० २२४ । आ० १०½ × ४ इंच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १०७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—२२४ से आगे पत्र नहीं हैं । प्रति स्वोपज्ञ टीका सहित है ।

९०२. **अनित्यपंचाशत—त्रिभुवनचंद** । पत्र सं० ८ । आ० ११ × ५½ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—धर्म । र० काल × । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा ।

विशेष—मूलकर्त्ता पद्मनंदि है ।

९०३. **अमितिगति श्रावकाचार भाषा—भागचंद** । पत्र सं०—१८५ । आ०—१४ × ८ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । र० काल—सं० १९१२ आषाढ सुदी १५ । ले० काल— × । पूर्ण । वे० सं०—१५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी ।

९०४. **प्रति सं० २** । पत्र सं० २०१ । आ० १२½ × ५½ इंच । ले० काल सं० १९८१ । पौष बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

९०५. **अर्हत् प्रवचन**— × । पत्र सं० २ । आ०—११½ × ५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । र० काल— × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २९७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

९०६, **अष्टाह्निका व्याख्यान—हृदयरंग** ।पत्र सं० ११ । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७०७ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

९०७. **अहिंसाधर्म महात्म्य**— × । पत्र सं० ८ । आ० ११ × ६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल सं० १८८१ फागुण सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १४६१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

९०८. **आचारसार-वीरनन्दि** । पत्र सं० ६१ । आ० ६ × ६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले० काल सं० १८२३ आषाढ सुदी १। पूर्ण । वेष्टन सं० ३९६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

९०९. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १२६ । आ० ११ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १५६५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११८ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

९१०. **आचारसार वचनिका—पन्नालाल चौधरी** । पत्र सं० ६० । आ० १४×८½ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । र०काल सं १९३४ वैशाख बुदी ६ । ले० काल सं० १९७७ माघ बदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—पं० हीरालाल ने बाबू वेद भास्कर जी जैन आमरा निवासी द्वारा बाबूलाल हाथरस वालों से प्रतिलिपि कराई ।

९११. **आचार्यगुणवर्णन**— × । पत्र सं० ३ । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल— × । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

९१२. **आराधना प्रतिबोधसार-सकलकीर्ति**— पत्र सं० ३ । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । र०काल— × । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६१/२४८ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—अंतिम भाग निम्न प्रकार है—

जय भणइ गुणइ नर नार ते जाइ भवनइ पारि ।
श्री सकलकीर्ति कहि सुविचारि आराधना प्रतिबोधसार ।।
इति आराधनासार समाप्तं । दीक्षित वेणीदास लिखितं ।

९१३. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ४ । आ० ९×५ इञ्च । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

९१४. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ४ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल— × पूर्ण । वेष्टन सं० २८३–१११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

९१५. **आराधनासार—देवसेन** । पत्र सं० ३–७९ । आ० १२ × ४ इञ्च भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । र०काल— × । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३१९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रारम्भ के २ पत्र नहीं हैं। प्रति संस्कृत टीका सहित है।

६१५.(क) प्रतिसं० २। पत्रसं० ११। आ० ११ × ५ इंच। ले०काल— ×। अपूर्ण वेष्टनसं० १०/३२५। **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर।

६१६. आराधनासार—अमितिगति। पत्रसं० २–६६। आ० १० × ४½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—आचार शास्त्र। र० काल— ×। ले०काल— सं० १५३७ श्रावण बुदी ८। अपूर्ण। वेष्टनसं० १४६६। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६१७. आराधना— ×। पत्रसं० ६। आ० ६ × ४ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। र०काल— ×। ले०काल— ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ३३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर।

६१८. आराधनासार भाषा टीका— ×। पत्रसं० २१। आ० १० × ६½ इंच। भाषा—प्राकृत-हिन्दी (गद्य)। विषय—आचार शास्त्र। र०काल सं० १६२१। ले०काल—सं० १६५३ श्रावण-सुदी १५। पूर्ण। वेष्टनसं० १६७/६३. **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्दरगढ़ कोटा।

६१९. आराधनासार टीका— ×। पत्रसं० ३८। आ० ११ × ४½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—धर्म। र० काल— ×। ले०काल—सं० १६३२। पूर्ण। वेष्टनसं० ११७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

६२०. आराधनासार टीका—नंदिगणि। पत्रसं० ४०३। आ० ११ × ४½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—आचार शास्त्र। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रति प्राचीन है। प्रशस्ति पूर्ण नहीं है।

६२१. आराधनासार टीका—पं० जिनदास गंगवाल। पत्रसं० ६५। आ० १०×४½ इंच। भाषा—हिन्दी (गद्य)। विषय—आचार शास्त्र। र०काल सं० १८३०। ले०काल—सं० १८३० चैत सुदी १। पूर्ण। वेष्टनसं० ३७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

६२२. प्रतिसं० २। पत्रसं० १०६। आ० ११ × ६ इंच। ले०काल सं० १८३१ ज्येष्ठ सुदी १। पूर्ण। वेष्टनसं० ३३४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली, कोटा।

विशेष—भानपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

६२३. आराधनासार भाषा-बुलीचन्द। पत्रसं० २५। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। रचना काल २० वीं शताब्दी। ले०काल— ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४३६। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—सं० १९४० में भरतपुर मन्दिर में चढाया गया था।

६२४. आराधनासार वचनिका—पन्नालाल चौधरी। पत्रसं० ३०। आ० १२½ × ४½ इंच। भाषा—हिन्दी (गद्य)। विषय—आचार शास्त्र। र० काल सं० १९३१ चैत बुदी ९। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १८/१६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, भादवा (राज०)।

६२५. आराधना पंजिका—वेयकीर्त्ति । पत्र सं० १७८ । आ० १२ × ५ । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १७८० पौष सुदी ६ । वेष्टन सं ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मं० लश्कर, जयपुर ।

विशेष—सूरत बन्दरगाह के तट पर बद्रीदास ने लिखा था ।

६२६. आराधनासूत्र– सोमसूरि । पत्रसं० ३ । आ० ६$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत विषय—धर्म । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०१६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—लिखतं तिलकसुंदरगणि ।

६२७. प्रति सं० २ । पत्रसं० १२ । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १७४३ चैत्र सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—६६ गाथाएँ हैं । प्रति टब्बा टीका सहित है ।

६२८. प्रति सं० ३ । पत्रस० ५ । आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १६४८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७२६ । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

विशेष—सं० १६४८ वर्षे वैशाख सुदी १३ भृगुवारे लिखितां मु० हंसस्तेन सुश्राविका सवीरा पठनार्थ ।

६२९. आसादना कोश..... । पत्र सं० १५ । आ० १२ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ६३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६३०. इक्कावन सूत्र— × । पत्र सं० २८ । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय धर्म । र० काल सं० १७८० चैत्र बुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—धर्म का ५१ सूत्रों में वर्णन किया गया है

६३१. इन्द्रमहोत्सव – × । पत्र सं० ४ । आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय—भगवान के जन्मोत्सव पर ५६ कुमारी देवियां आदि के आने को वर्णन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०८१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन भन्दिर अजमेर ।

६३२. इष्ट छत्तीसी—बुधजन । पत्र सं० २ । आ० ७$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ६५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६३३. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । आ० १० × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ़, (कोटा)

६३४. इष्टोपदेश—पूज्यपाद । पत्र सं० २–२७ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६३५. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ६ । आ० १२×७ इञ्च । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४–१३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—पं० तिलोक ने बून्दी में प्रतिलिपि की थी । कहीं २ संस्कृत में कठिन शब्दों के अर्थ भी दिए हुए है ।

६३६. **उपदेशरत्नमाला**—**सकलभूषण** । पत्र सं० ६७ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र० काल सं० १६२७ श्रावण सुदी ६ । ले० काल सं० १८३१ श्रावण सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६३७. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० १४२ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल सं० १६७४ भादवा सुदी ६ । वेष्टन सं० ६७६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६३८. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० १४४ । ले० काल सं० १६८६ भादवा सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६३९. **प्रतिसं० ४** । पत्र सं० १२६ । आ० १०½×५½ इञ्च । ले० काल सं० १८५६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—जोबनेर के मन्दिर जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

६४०. **प्रतिसं० ५** । पत्र सं० १०५ से १७० । आ० ६½×४½ इञ्च । ले० काल सं० १८५३ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दनस्वामी बूंदी ।

विशेष—पं० जिनदास के लिये लिखी गई थी ।

६४१. **प्रतिसं० ६** । पत्र सं० १२४ । आ० ६½×६ इञ्च । ले० काल सं० १८५५ पौष सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—खंडारि में पं० सदासुख ने प्रतिलिपि की थी ।

६४२. **प्रति सं० ७** । पत्रसं० २१६ । आ० ६½×४½ इञ्च । ले० काल सं० १८२६ ज्येष्ठ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बून्दी)

विशेष—विमल ने इन्द्रगढ़ में शिवसिंह के राज्य में प्रतिलिपि की थी ।

६४३. **प्रतिसं० ८** । पत्रसं० ७६ । आ० १२×६½ इञ्च । ले० काल सं० १८७१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—सं० १८७१ आसोज सुदी १३ बुधवासरे लिखितं भरतपुर मध्ये पोथी आचारज श्री सकलकीर्तिजी ।

६४४. **प्रति सं० ९** । पत्रसं० १३६ । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४३–६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

६४५. **प्रतिसं० १०** । पत्रसं० १४४ । आ० १०½×५ । ले० काल सं० १७४० माह सुदी ११ । वेष्टनसं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—अम्बावती कर्वटे नगर में महाराजा रामसिंह के शासन काल में प्रतिलिपि हुई थी ।

६४६. **प्रतिसं० ११** । पत्रसं० १०१–१३८ । आ०१५×५½ इञ्च । ले० काल सं० १७७६ । अपूर्ण । वेष्टनसं० ७२२ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मन्दिर खपकर जयपुर ।

विशेष—हीरापुर में पं० नरसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

६४७. **प्रतिसं० १२** । पत्रसं० ४२ । आ० १२×५½ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ६८८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर खपकर जयपुर ।

६४८. **उपदेशसिद्धांतरत्नमाला-नेमिचन्द्र भण्डारी** । पत्रसं० १३ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । भाषा—प्राकृत-संस्कृत । विषय—धर्म एवं आचार शास्त्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—गाथाओं पर संस्कृत में अर्थ दिया हुआ है ।

६४९. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० १२ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६० **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

६५०. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० १६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष - प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

६५१. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० २१ । ले० काल सं० × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

६५२. **उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला-पाण्डे लालचन्द** । पत्र सं० ११४ । आ० १४ × ८½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—धर्म एवं आचार । र०काल सं० १८१८ । ले०काल सं० १९५२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पंचायती मन्दिर, अलवर ।

६५३. **उपदेशरत्नमाला-धर्मदास गणि** । पत्रसं० ५५ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय-धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—प्रतिजीर्ण है । मूल गाथाओं के नीचे हिन्दी में अर्थ दिया है ।

६५४. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० २७ । आ० १० × ४ इञ्च । ले०काल सं० १८६३ । पूर्ण । वेष्टनसं० २०६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

॥श्री॥ सं० १८६३ वर्षे कार्तिक सुदि ७ भौमदिने आगरा नगरमध्ये लिखापितं ऋषि टोडर । पठनार्थं सुश्रावक श्रीमाल गोत्र पारसान सु श्रावक भानसिंह तत्पुत्र श्रावक महासिंह तत्स्व भार्या सुश्राविका पुण्य प्रभाश्रिका देवगुरुभक्तिकारिका श्राविका रंभा पठनार्थं ।

६५५. **उपदेशसिद्धांतरत्नमाला—भागचन्द** । पत्र सं० २६ । आ० १२½ × ८ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—धर्म । र०काल सं० १९१२ आषाढ़ बुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२१८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

६५६, **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ४५ । आ० ६×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १६५४ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

६५७. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० ७५ । ले० काल सं० १६४० । पूर्ण । वेष्टन × । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

६५८. **प्रतिसं० ४** । पत्र सं० ३४ । आ० १४ × ८ इञ्च । ले० काल सं० १६३० चैत्र बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—ठाकुरचन्द मिश्र ने प्रतिलिपि की थी ।

६५९ **प्रतिसं० ५** । पत्र सं० ३३ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३०६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

६६०. **प्रति सं० ६** । पत्रसं० २८ । आ० १३ × ८ इंच । ले०काल—सं० १६३१ । वैशाख सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर करौली ।

विशेष—जती हरचंद के मंदिर विमाने में ठाकुर चंद मिश्र हिण्डौन वाले ने प्रतिलिपि की ।

६६१. **प्रतिसं० ७** । पत्रसं० ६४ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

६६२. **प्रतिसं० ८** । पत्रसं० ३४ । आ० १३×६ इञ्च । ले०काल सं० १६१६ मंगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर (शेखावाटी) ।

विशेष—इस प्रति में र०काल सं० १६१४ माघबुदी १३ दिया हुआ है ।

६६३. **प्रतिसं० ९** । पत्रसं० ४६ । आ० ६$\frac{3}{4}$ × ७ इंच । ले०काल सं० १६३८ फागुन बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्री महावीर स्वामी बूंदी ।

६६४. **प्रतिसं० १०** । पत्रसं० ४८ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० × । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

६६५. **प्रतिसं० ११** । पत्रसं० ४३ । आ० ११ × ८ इञ्च । ले०काल सं० १६३३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पंचायती मंदिर अलवर ।

६६६. **प्रतिसं० १२** । पत्र सं० ४० । ले०काल सं० १६३४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पंचायती मन्दिर, अलवर ।

६६७. **प्रतिसं० १३** । पत्रसं० ७१ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल सं० १६४० मंगसिर बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६२ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

६६८. **उपासकाचार–पूज्यपाद** । पत्रसं० ६ । आ० ११ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २०६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६९. **उपासकाचार–पद्मनंदि** । पत्रसं० १०५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १३९–६३ । **प्राप्ति स्थान**—

दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—१०५ से आगे पत्र नहीं हैं ।

६७०. **उपासकसंस्कार—पद्मनंदि** । पत्रसं० ४ । आ० १२ × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत विषय—आचार । र० काल × । ले० काल सं० १५४२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०१ । १५८ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

विशेष—

सूतक वृद्धिहानिभ्यां दिनानि दशद्वादश ।
प्रसूति-स्थान मारैकं वासरे पंच श्रोत्रिणां ।।
प्रसूति च मुनि बाले देशांतरमृते रणे ।
सन्यासे मरणे चैव दिनैकं सूतकं भवेत ।।

प्रशस्ति-सं० १५४२ वर्षे वैशाख सुदी ७ लिखतं ।

६७१. **उपासकाध्ययन-पंडित श्री विमल श्रीमाल** । पत्रसं० १८३ । आ० ६ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय- आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२३-१२१ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर ।

६७२. **उपासकाध्ययन टिप्पण**— × । पत्रसं० १-५ । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १५८७ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३४३/१६३ **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष- अंतिम पुष्पिका एवं प्रशस्ति निम्न प्रकार है—इति श्री वसुनंदिसिद्धांतविरचितमुपासकाध्ययनटिप्पणकं समाप्तं ।

संवत् १५८७ वर्षे चैत्र बुदी ६ रवौ श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये आचार्य श्री रत्नकीर्तिस्तच्छिष्य मुनि श्रीहरिभूषणेनेदं लिखितं कर्मक्षयार्थं ।

६७३. **उपासकाध्ययन विवरण**— × । पत्रसं० १७ । आ० ६$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६७४. **उपासकाध्ययन श्रावकाचार-श्रीपाल** । पत्रसं० १-२३७ । आ० ११ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १८२६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६७, १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संगवनाथ मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—अन्तिम छन्द—

त्रेपन किया ए त्रेपन क्रिया ए रास अनोपम ।
शुभ श्रावकाचार मनोहर
प्रबंध रच्यो रलियामणो सुललित वचन भविजन सुखकर ।
भणे भणावे सांभलो भावसु लखे लखावे सार ।
श्रीपाल कहे जे सांभलज्यो तेह घर मंगल घर तेह जय जयकार ।।

इति उपासकाध्ययनाख्याने श्रीपालविरचिते । संघपति रामजी नामांकिते श्रावकाचार अभिधाने प्रबंध समाप्तः ।

गांधी वर्द्धमान् तत्पुत्र गांधी पूषालजी भार्या पानबाई पुत्र ओतिसर जवेरचन्द्र जडावचन्द्र एते कुटुंबपरवार श्रावकाचारनी ग्रंथ लखावी ।

६७५. उपासकाध्ययन सूत्र भाषा टीका— × । पत्रसं० ४४ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–प्राकृत हिन्दी । विषय —आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल सं० १७०३ आषाढ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष– हिन्दी अर्थ सहित है । समणोपासक श्रावकमयपु आगेगत जिणधर्म पालतु विचरइ । ति द्वारइ तेह गोसालु मखली पुण्हवी । कथा वार्त्ता लाधा सांवली । इम खलु निश्चि सद्दालु पुत्र आजीविकाना धर्म छोटली गइ प्रोसा निर्ग्रंथु धर्म तेह पंडित ज्यो आदरसा ।

६७६. कल्पार्थ— × । पत्रसं० ४२ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १११-६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

६७७. कुदेव स्वरूप वर्णन— पत्र सं० २४ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर (भरतपुर) ।

६७८. कुदेव स्वरूप वर्णन—× । पत्र सं० ३७ । आ० ६½×५½ इञ्च । भाषा –हिन्दी गद्य । विषय –धर्म । र०काल × । ले०काल सं० १९११ द्वि० आषाढ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

६७९. कुदेव स्वरूप वर्णन—× । पत्र सं० २५ । आ० ११½ × ५ इञ्च । भाषा –हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल सं० १८६६ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७४/४६ । **प्राप्ति-स्थान** दि० जैन मंदिर भादवा (राज०) ।

विशेष—नेषराज सांवका भादवा वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

६८०. कुदेवादि वर्णन । पत्र संख्या २१ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

६८१. केशरचन्दन निर्णय ×। पत्रसं० १६ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष –संग्रह ग्रंथ है ।

६८२. क्रियाकलाप टीका—**प्रभाचन्द्राचार्य** ।। पत्रसं० २–६० । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १८०७ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

९८३. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ४३ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल० × । पूर्ण । वेष्टनसं० ९०-४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

९८४. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० ४४ । आ० ११½×४½ इञ्च । ले० काल × । **अपूर्ण** । वेष्टन सं० ८१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

९८५. क्रियाकोश -दौलतराम कासलीवाल । पत्रसं० ११० । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय आचार शास्त्र । र० काल सं० १७९५ भादवा सुदी १२ । ले० काल० × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष– इसका दूसरा नाम त्रेपन क्रियाकोश भी है ।

९८६. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ९३ । आ० १२×६ इञ्च । ले०काल सं० १८६७ मंगसिर बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर ।

विशेष—बैर में प्रतिलिपि की गई थी ।

९८७. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० ११२ । आ० ११×७½ इञ्च । ले०काल सं० १९५४ भादवा सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४८१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

९८८. प्रति सं० ४ । पत्रसं० १०६ । आ० ९½×६½ इञ्च । ले०काल सं० १८७७ सावन बुदी ऽ ऽ । पूर्ण । वेष्टन सं० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—भोपतराम बाकलीवाल बसवा वाले ने सवाई माधोपुर में प्रतिलिपि की थी ।

९८९. प्रति सं० ५ । पत्रसं० १०६ । आ० ९½×६½ इञ्च । ले०काल सं० १८६६ वि० आषाढ़ बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदीनाथ बूंदी ।

विशेष—सवाई माधोपुर में प्रतिलिपि की गई थी ।

९९०. प्रतिसं० ६ । पत्रसं० १३० । आ० १०½×७½ इञ्च । ले०काल सं १९४७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर अभिनन्दनस्वामी बूंदी ।

९९१. प्रतिसं० ७ । पत्रसं० १२७ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल सं० १९५२ । पूर्ण । वेष्टनसं० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—छबड़ा में प्रतिलिपि हुई थी ।

९९२. प्रतिसं० ८ । पत्रसं० १२५ । ले०काल सं० १९०१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११४ । **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

९९३. प्रतिसं० ९ । पत्रसं० ११२ । आ० १०½×५½ इञ्च । ले०काल सं० १९०४ पौष बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—गोमदलाल बटवाल ने सोनीलाल रो कोटा के रामपुरा में लिखाया था ।

९९४. प्रतिसं० १० । पत्रसं० ६० । आ० १३×६½ इञ्च । ले०काल सं०१८९९ आषाढ़ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मंदिर बयाना।

विशेष—गुमानीराम सांवका ने बयाना में प्रतिलिपि की थी । इस समय ईस्ट इण्डिया कम्पनी का।

शासन था। श्रावकों के ८० घर तथा १ मन्दिर था।

९९५. प्रति सं० ११। पत्र सं० ११०। आ० २½×६ इञ्च। ले० काल सं० १८९६ भादों बुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० ११-३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सोभाणी मन्दिर करौली।

विशेष—नाथिमराम द्वारा करौली में प्रतिलिपि की गई थी।

९९६. प्रतिसं० १२। पत्र सं० १३९। आ० १०×७½ इञ्च। ले० काल सं० १७९५। पूर्ण। वेष्टन सं० २१९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—स्वयं ग्रंथकार के हाथ की मूल प्रति है ग्रंथ रचना उदयपुर में हुई थी। अन्तिम भाग निम्न प्रकार है—

संवत् सत्रासौ पच्यासाय भादवा सुदी बारस तिथि जाणाय।
मङ्गलवार उदयपुर का है पूरन कीनी मंसै ना है ॥१८७१॥
आनन्दसुत जयसु····· को मन्त्री जय को अनुचार ज्याहि कहै।
सो दौलति जिन दासनि दास जिन मारग की सरण गहै॥

९९७. प्रतिसं० १३। पत्र सं० ९७। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४१९।१५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

९९८. प्रतिसं० १४। पत्र सं० ९३। आ० १३½×६ इञ्च। ले० काल सं० १९५७। पूर्ण। वेष्टन सं० ६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूंदी।

९९९. प्रति सं० १५। पत्र सं० १०६। आ० ९½×६ इञ्च। ले० काल सं० १८६० आसोज सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन सं० १३६। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा।

विशेष—नेनसुखराम छाबड़ा ने सवाई माधोपुर में प्रतिलिपि करवायी थी।

१०००. प्रतिसं० १६। पत्र सं० ८५०। आ० १२½×६ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा।

१००१. क्रियाकोश भाषा—**किशनसिंह**। पत्र सं० ७७। आ० १२×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—आचार शास्त्र। र० काल सं० १७८४ भादवा सुदी १५। ले० काल सं० १८०३ मंगसिर सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन सं० १४८३। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—गृहस्थों के आचार का वर्णन है।

१००२. प्रति सं० २। पत्र सं० ७९। आ० १०×४ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५१६। **प्राप्ति-स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

१००३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ९७। आ० १३×६½ इञ्च।। ले० काल सं० १८३१। पूर्ण। वेष्टन सं० १११।· **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बून्दी।

१००४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ११५। आ० १०½×५ इञ्च। ले० काल—सं० १८४८। पूर्ण। वेष्टन सं० २४७-९९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

१००५. प्रतिसं० ५। पत्र सं० ६९। आ० १२½×५ इञ्च। ले० काल सं० १८२२। पूर्ण।

वेष्टन सं० ९२-४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

१००६. प्रतिसं० ६ । पत्रसं० ३४ । आ० ९ × ६ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६६/१४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर ।

१००७. प्रतिस० ७ । पत्र स० ९६ । आ० ६३ × ७ इञ्च । ले०काल सं० १९३७ आषाढ़ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—लाला रामचन्द्र बेटे लालाराम रिखबदास अग्रवाल श्रावक फतेहपुरवासी (दूकान शहर दिल्ली) ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

१००८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ८० । आ० १२½ × ७ इञ्च । ले०काल सं० १८९५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर (सीकर)

विशेष –फतेहपुर वासी अग्रवाल लक्ष्मीचन्द्र के पुत्र मोहनलाल ने रतलाम में प्रतिलिपि करवाई थी । द. मंगलजी श्रावक ।

१००९. प्रतिसं० ९ । पत्रसं० १४५ । आ० १० × ६ इञ्च । ले०काल सं० १८३१ वैशाख सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५/१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर भादवा (राज०) ।

१०१०. प्रतिसं० १० । पत्रसं० १५१ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले०काल सं० १८६६ फागुण सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष पन्नालाल भाट ने प्रतिलिपि की थी ।

१०११. प्रतिसं० ११ । पत्रसं० १४३ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले०काल सं० १८१९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८८-५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर तेरापंथी दौसा ।

विशेष—भीगने से अक्षरों पर स्याही फैल गई है ।

१०१२. प्रतिसं० १२ । पत्रसं० २१४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३२ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पंचायती मंदिर हण्डायालों का डीग ।

१०१३. प्रतिसं० १३ । पत्रसं० ९९ । आ० १२½ × ९ इञ्च । ले०काल स० १८७८ । पूर्ण । वेष्टनसं० १५ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

१०१४. प्रति सं० १४ । पत्रसं० १५१ । आ० ८½ × ५½ इञ्च । ले०काल सं० १८५५ द्वि० श्रषाढ़ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ९२ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

१०१५. प्रतिसं० १५ । पत्रसं० १५९ । आ० १६ × ५ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४७७ । ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर, कामा ।

१०१६. प्रतिसं० १६ । पत्रसं० ८७ । आ० १३ × ८ इञ्च । ले० काल सं० १८९९ फागुण सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर बयाना ।

विशेष –बक्शीराम ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१०१७. प्रतिसं० १७ । पत्रसं० ११६ । आ० १३ × ८ इञ्च । ले०काल सं० १९७७ ज्येष्ठ बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर बयाना ।

१०१८. **प्रतिसं० १८** । पत्रसं० ५२ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २८२ । **प्राप्ति स्थान**—दिगम्बर जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०१९. **प्रतिसं० १९** । पत्र सं० १३२ । ले०काल—सं० १८७४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८३ । **प्राप्ति स्थान** -दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष – इसे कामा के जोधराज कासलीवाल ने लिखवायी थी ।

१०२०. **प्रतिसं० २०** । पत्र सं १११ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २८४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०२१. **प्रतिसं० २१** । पत्रसं० ८३ । ले०काल—सं० १८११ आषाढ़ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनसं० २८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—इसे जिहानाबाद में पं० भयाचन्द्र ने लिखवायी थी ।

१०२२. **प्रतिसं० २२** । पत्रसं० १४२ । ले०काल सं० १८२५ वैसाख सुदी १ । पूर्ण । वेष्टनसं० २८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर निवासी गूजरमल के लिए बसवा में प्रतिलिपि की गई थी ।

१०२३. **प्रतिसं० २३** । पत्रसं० ६४ । ले०काल— सं० १८४७ सावन सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—हुलासराय चौधरी ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१०२४. **प्रतिसं० २४** । पत्रसं० ५६ से १०४ । ले०कालसं० १७८५ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०२५. **प्रति सं० २५** । पत्रसं० ११२ । आ० १२×७ इञ्च । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

१०२६. **प्रतिसं० २६** । पत्रसं० ६२ । आ० १२½×५½ इञ्च । ले०काल—सं० १८०६ माह सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४/१६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

१०२७. **प्रतिसं० २७** । पत्रसं० १३४ । ले०काल सं० १९४६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४५/१४ । **प्राप्ति स्थान** -- दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

१०२८ **प्रतिसं० २८** । पत्रसं० १०५ । ले०काल—सं० १८७४ भादवा सुदी २ । वेष्टनसं० ४६/१५ । **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

१०२९. **प्रतिसं० २९** । पत्रसं०—३५--७९ । आ० १२×६ इञ्च । ले०काल—सं० १८८३ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरलसी कोटा ।

विशेष—कोटा में प्रतिलिपि हुई थी ।

१०३०. **प्रतिसं० ३०** । पत्रसं० १५२ । आ० १० × ५ इञ्च । ले०काल सं० १९२२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११८/७७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्द्रगढ़ (कोटा) ।

विशेष—लिखाइतं भुवानीलाल जी श्रावगी बासवान माधोपुर या लिखाई इन्द्रगढ मध्ये ।

१०३१. प्रतिसं० ३१ । पत्रसं० २ से ८४ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल— सं० १६०८ कार्तिक बुदी १० । अपूर्ण । वेष्टन सं० ११ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक) ।

१०३२. प्रतिसं० ३२ । पत्रसं० ११५ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल सं० १८८६ पौष बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष—राजमहल में प्रतिलिपि हुई थी ।

१०३३. प्रतिसं० ३३ । पत्रसं० ३१ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर बघेरवालों का आवां (उणियारा) ।

१०३४. प्रतिसं० ३४ । पत्र सं० १६४ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले०काल सं० १८५० वैशाख सुदी १ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती दूनी (टोंक) ।

१०३५. प्रति सं० ३५ । पत्रसं० ६४ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले०काल - सं० १८५८ माघ शुक्ला ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटयों का, नैणवा ।

१०३६. प्रतिसं० ३६ । पत्रसं० १०२ । आ० ११ × ६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटयों का नैणवा ।

१०३७. प्रतिसं० ३७ । पत्रसं० ७३ ।आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले०काल सं० १८१४ मंगसिर सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनसं० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

मिति मंगसर सुदी १५ रवी संवत् १८१४ का माल की पोथी संगही सुखदेव सांगानेर का की से उतारी छै : लिखत लोलाराम खुश्यालचन्द वैद की पोथी नय नैणवा मध्य लाचै जीनै श्री सवद बंचा । श्री तेरापंथी का मंदिर चढाया मिती फागुण सुदी ६ संवत् १६११ चिरंजी लालु ने चढ़ाया श्री गिरनार जी की यात्रा के चढ़ाया श्री सांवलयानाथ स्वामी के ।

१०३८. प्रतिसं० ३८ । पत्रसं० १६-६६ । आ० १० × ७ इञ्च । ले०काल सं० १६८६ । अपूर्ण । वेष्टनसं० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

१०३९. प्रतिसं० ३९ । पत्रसं० ११८ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल सं० १६३७ माह सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनसं० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—मालपुरा निवासी पं० जौहरीलाल ने टोडा में सांवला जी के मंदिर में लिखा था ।

१०४०. प्रति सं० ४० । पत्रसं० १२३ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले०काल सं० १८४६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—सहजराम व्यास ने प्रतिलिपि की थी ।

१०४१. प्रति सं० ४१ । पत्रसं० १५५ । आ० ६ × ७½ इञ्च । ले० काल सं० १६८० । पूर्ण । वेष्टनसं० ११३/६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्द्रगढ़ (कोटा) ।

विशेष— लाखेरी में प्रतिलिपि की गई थी ।

१०४२. प्रतिसं० ४२ । पत्रसं० १२५ । आ० ६½ × ६ इञ्च । ले० काल सं० १६१५ । पूर्ण । वेष्टनसं० १८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरखली कोटा ।

१०४३. प्रतिसं० ४३ । पत्रसं० ५५ । आ० १० × ७ इञ्च । ले० काल सं० १८२६ फाल्गुन बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ११६-४७ । **प्राप्तिस्थान**-दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

विशेष-लालसोट में प्रतिलिपि की गई थी ।

१०४४. प्रतिसं० ४४ ।पत्रसं० ६४ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले० काल—सं० १७९० फाल्गुण बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

विशेष पं० खुशालीराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१०४५. प्रतिसं० ४५ । पत्रसं० १४१ । आ०—१२½ × ५½ इञ्च । ले० काल सं० १८६१ चैत सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० १८१ । **प्राप्ति-स्थान**—दि जैन पंचायती मंदिर करौली ।

१०४६. क्रियाकोष भाषा—दुलीचन्द । पत्रसं० ५७ । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय—गृहस्थ की क्रियाओं का वर्णन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी भरतपुर ।

१०४७. क्रियापद्धति × । पत्रसं० ५ । आ० ८ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर भागचंदी (बूंदी) ।

विशेष -जैनेतर ग्रन्थ है ।

१०४८. क्रियासार-भद्रबाहु । पत्रसं० १८ । आ० ९½ × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय-आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

१०४९. क्षेत्रसमास × । पत्रसं० ५ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । **भाषा**—प्राकृत । विषय—धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १७४३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४९ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—अलवर नगर में प्रतिलिपि की गई थी ।

१०५०. क्षेत्रसमास प्रकरण—× । पत्र सं. ८ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०५१. गुणदोषविचार— × । पत्र सं० ५ । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३ । **प्राप्ति स्थान**- भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष— देवशास्त्र गुरु के गुण तथा दोषों पर विचार है ।

१०५२. गुरुपदेशश्रावकाचार--डालूराम । पत्र सं० २०३ । आ० १३ × ७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-आचार शास्त्र । र० काल सं० १८६७ । ले० काल सं० १९८४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५२१ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०५३. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२१ । आ० १०½ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १८७० सावन सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०५४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८५ । आ० १०×७½ इञ्च । ले० काल सं० १९५० । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीरजी बूंदी ।

१०५५. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० २३६ । आ० १२½ × ७ इञ्च । ले० काल सं० १९४८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन० मन्दिर कोट्या का नैरोया ।

१०५६. गृहप्रतिक्रमण सूत्र टीका—रत्नशेखर सूरि । पत्र सं० ५८ । भाषा संस्कृत । विषय—धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०५७. चउसरणवृत्ति— × । पत्र सं० १२ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

१०५८. चतुरचितारणो—दौलतराम । पत्र सं० २-५ । आ० १०×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—इह चतुरचितारणि भवजल तारणि ।

कारणि शिवपुर साधक हैं
आचौ अर राचो या में सांचौ
दौलति अविनाशी····· ।

इति श्री चतुरचितारणी समाप्त ।

१०५९. चतुर्दशी चौपई—चतुरमल । पत्र सं० २७ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १९५२ पोष सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर हण्डावालों का डीग)

१०६०. चतुष्कशरण वर्णन—पत्र सं० ८ । आ० १०½×३½ इंच । भाषा—प्राकृत हिन्दी । विषय—धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं ३०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—गाथाओं के ऊपर हिन्दी अर्थ दिया हुआ है ।

१०६१. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ३ । आ० ९½ × ४½ इंच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २२६ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

१०६२. चतुर्मास धर्म व्याख्यान— × । पत्र सं० ५ से १२ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०६३. चतुर्मास व्याख्यान—समयसुन्दर उपाध्याय । पत्र सं० ५ । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भरतपुर ।

१०६४. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ३–५ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६६६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

१०६५. चारित्रसार—चामुण्डराय । पत्र सं० ५१ । आ० ११½×५½ । **भाषा**—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले० काल सं० १५२१ ज्येष्ठ सुदी६ । वेष्टन सं० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

१०६६. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ६२ । आ० ११×५½ इञ्च । ले० काल × । **अपूर्ण ।** वेष्टन सं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—५७ से ६२ पत्रों पर संस्कृत में टिप्पणी भी दी गई है ।

१०६७. चारित्रसार—वीरनंदि । पत्र सं० २–१६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय– आचार शास्त्र । र०काल × । ले० काल सं० १५८८ चैत्र बुदी ११ । अपूर्ण । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

विशेष—फागुण शुक्लिती वर्षे संवत् १५० लिखते आचार्य श्रीसिंघनंदि देवासु आचार्य श्रीधर्मकीर्ति देवा तत् शिष्यणी क्षुल्लकीबाई पारो । लिखते ज्ञानावरणी कर्म क्षयार्थ ।। सं० १५८८ वर्षे चैत्र बुदी एकादशी मङ्गलवारे श्री स्वात्मपठनार्थ लिखते क्षुल्लकी पारो ।।

१०६८. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ७८ । आ० ½×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—७८ से आगे के पत्र नहीं है प्रति प्राचीन है ।

१०६९. चारित्रसार वचनिका मन्नालाल । पत्रसं० ६८ । आ० १२×६½ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । र० काल सं० १८७१ माघ सुदी ५ । ले०काल—सं० १९०३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३१–५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर ।

१०७०. प्रति सं० २– पत्रसं० १८३ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल—सं० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

१०७१. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० १६१ । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर, भरतपुर ।

१०७२. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० १०० । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ४१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

१०७३. चारों गति का चौढालिया × । पत्रसं० ८ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

विशेष—गुटके में है तथा अन्य पाठों का संग्रह भी है ।

१०७४. चौबीस तीर्थंकर माता पिता नाम— × । पत्रसं० ३ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं०-६०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

१०७५. **चौबीस दण्डक—धवलचन्द्र**। पत्रसं० ७। आ० १०×४½ इंच। **भाषा**—प्राकृत, हिन्दी। विषय—धर्म। र०काल × । ले०काल—सं० १८११ माघ सुदी ५। पूर्ण। वेष्टनसं०-१८०। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर, इन्दरगढ़।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है। संवत् १८११ माघ सुदी ५ भगत विमल पठनार्थं रामपुरे लिषी लुंत—नेमिजिन चैत्यालये।

१०७६. **चौबीस दण्डक—सुरेन्द्रकीर्ति**। पत्रसं० २। आ० १०×४¾ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—धर्म। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वे०सं० २०४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बून्दी।

१०७७. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० ३। आ० १०½×५। ले०काल × । वेष्टनसं०-२१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—एक पत्र और है।

१०७८. **चौबीस दंडक भाषा—पं. बौलतराम**। पत्रसं० ३। आ० ८½×५½ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। र०काल १८वीं शताब्दी। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १५०-६८। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

१०७९. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० ४। आ० १२×६½ इंच। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० २५४-१०२। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

१०८०. **प्रतिसं० ३**। पत्रसं० ६। आ० ११×४¾ इंच। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ५८६। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

१०८१. **प्रतिसं० ४**। पत्रसं० १२। आ० ६×६ इंच। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ५२२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर।

विशेष—प्रथम ८ पत्र पर व्रत उद्यापन विधि है।

१०८२. **प्रतिसं० ५**। पत्रसं० ४। आ० ११×५ इंच। ले०काल—× । पूर्ण। वेष्टनसं० १६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

१०८३. **प्रतिसं० ६**। पत्रसं० ४। आ० १२ × ४ इंच। ले०काल सं० १८७८ ज्येष्ठ सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० ३२। १३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

१०८४. **प्रतिसं० ७**। पत्रसं० ५। आ० १०×४½ इंच। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर, करौली।

१०८५. **चौबीस दण्डक** × । पत्रसं० ६। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। र० काल। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ४०८-१५३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियान डूंगरपुर।

१०८६. **प्रतिसं० २**। पत्र सं० ३। आ० १०½×४½ इंच। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

१०८७. **प्रतिसं० ३**। पत्रसं० ११। आ० ९½×५ इंच। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी।

१०८८. प्रति सं० ४। पत्रसं० ११ । **आ०** १२×७ इञ्च । ले०काल सं० १६२६ । **पूर्ण ।** वेष्टन सं० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लागदी बूंदी ।

१०८९. चौबीस दण्डक— × । पत्रसं० १० । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । र०काल—× । ले०काल सं० १८२३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लागदी बूंदी ।

विशेष—पाडे गुलाब सागवाडा वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

१०९०. चउबोली की चौपई—चतरू शिष्य सांवलजी । पत्रसं० ३७ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल सं० १७१८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

१०९१. चौरासी बोल— × । पत्र सं० १ । भाषा - हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७५ । **विशेष स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

१०९१. (क) चौरासी बोल- × । पत्रसं० १९ । आ० १० ×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल सं० १७५० पूर्ण । वेष्टन सं० १९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—काष्ठासंघ की उत्पत्ति, प्रतिष्ठा विवरण एवं मुनि आहार के ४६ दोषों का वर्णन है ।

१०९२ छियालीस गुण वर्णन—× । पत्रसं० ९ । आ० ९½ × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १८४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

१०९३. जिनकल्पी स्थविर आचार विचार—× । पत्र सं० १३ । आ०१० ×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत, हिन्दी (पद्य) । विषय आचार शास्त्र । र०काल—× । ले०काल—सं० १८०५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

१०९४. जिन कल्याणक-पं. आशाधर । पत्र सं० ५ । आ० ११×४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—धर्म । र०काल—× । ले० काल× । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१०९५. जिन प्रतिमा स्वरूप—× । पत्रसं० ६५ । आ० ११ × ७½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—धर्म । र० काल—× । ले०काल सं० १९४४ फागुण सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं०—३६ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

१०९६. जिन प्रतिमा स्वरूप—× । पत्रसं०—५४ । आ० १० × ७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्री महावीरजी बूंदी ।

१०९७. जिन प्रतिमास्वरूप भाषा-छीतरमल काला । पत्र संख्या—८२ । आ० ८½ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—धर्म । र०काल सं० १९२५ बैशाख सुदी ३ । ले०काल सं० १९३३ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८६।२१ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ़, (कोटा) ।

विशेष—उत्तमचन्द व्यास ने भलारणा डूंगर में प्रतिलिपि की थी। प्रश्नोत्तर रूप में है।

१०९८. जीव विचार प्रकरण। पत्रसं० ६। भाषा—प्राकृत। विषय—धर्म। र०काल × । ले०काल—सं० १८६१। पूर्ण। वेष्टनसं० ६२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—अलवर में प्रतिलिपि की गई थी।

१०९९. जीव विचार। पत्रसं० ३। आ० १२×५ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—धर्म। र० काल - × । ले० काल—× । पूर्ण। वेष्टनसं०—१७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, चौमान बूंदी।

११००. जीवसार समुच्चय—× । पत्रसं०—२८। आ० १२× ५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—धर्म। र०काल × । ले० काल—× । पूर्ण। वेष्टनसं० ३१।३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

११०१. जैन प्रबोधिनी द्वितीय भाग—× । पत्रसं० २६। आ० ८½ × ८½ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—धर्म। र०काल—× । ले० काल—× । पूर्ण। वेष्टनसं०६६८। **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

११०२. जैनश्रावक आम्नाय—समतारामः। पत्रसं०—२८। आ० १०½ × ७ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—आचार। र०काल × । ले० काल सं० १९१५ आसोज बुदी ७। पूर्ण। वेष्टनसं० २९१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा।

विशेष कवि भेलसा का रहने वाला था। रचना सम्वत निम्न प्रकार है—

संवत एका पर नौ उभै पंचदश जानो सोय।
कृष्णपक्ष अष्टमी सही भृगु वैमास जो होय।

पत्र २६ से २८ तक प्यारेलाल कृत अभिषेक बावनी है।

११०३. जैन सदाचार मार्तण्ड नामक पत्र का उत्तर—× । पत्र सं० २७। आ० ११½ × ८ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—आचार शास्त्र। र०काल—× । ले०काल—× । **अपूर्ण**। वेष्टन सं० ६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

११०४. ज्ञानचिन्तामणि—मनोहरदास। पत्रसं० ६। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। र० काल सं० १७००। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

११०५. ज्ञानदर्पण दीपचन्द। पत्रसं० ३१। आ० ११ × ६½ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—धर्म। र०काल × । ले० काल सं० १८७० जेठ सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन सं० ४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मंदिर अलवर।

११०६. प्रति सं० २। पत्र सं० ८२। आ० ८½ × ४ इञ्च। ले० काल—सं० १८६०। माघ बुदी ६। पूर्ण। वे० सं०—९६—१६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरह पंथी दौसा।

११०७. ज्ञानदीपिका भाषा × । पत्र सं० ३०। आ० १२ × ६ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—धर्म। र०काल सं० १८३१ सावन बुदी ३। ले० काल सं० १८६० फागुन बदी १३। पूर्ण। वे० सं०—९२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर करौली।

विशेष—सवाई माधोपुर में ही रचना एवं प्रतिलिपि हुई थी। लेखक का नाम दिया हुआ नहीं है।

११०८. ज्ञानपच्चीसी-बनारसीदास। पत्र सं० १। आ०-१०×४½ इञ्च। **भाषा**—हिन्दी। विषय—धर्म। र० काल × । ले० काल सं० १७७८। पूर्ण। वेष्टन सं० ६२३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—कोकिंद नगर में प्रतिलिपि हुई थी।

११०९. प्रति सं० २। पत्र सं०- १। ले० काल × । पूर्ण। वे०सं० ६८०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

१११०. ज्ञानपंचमी व्याख्यान-कमलकशाल। पत्र सं० ६। भाषा—संस्कृत। विषय—धर्म। र० काल × । ले० काल—सं० १६५५। पूर्ण। वे० सं० ७३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—मेड़ता में लिपि हुई थी।

११११. ज्ञानानंद श्रावकाचार-भाई रायमल्ल। पत्र सं० २२९। आ० ११×७½ इञ्च। भाषा—राजस्थानी (ढूंढारी) गद्य। विषय—आचार शास्त्र। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वे० सं०—१६०८। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर। अजमेर।

१११२ प्रति सं० २। पत्र सं० १३५। आ० १२ × ८ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जै० मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

१११३. प्रति सं० ३। पत्र सं० १२९। आ० १२ × ६⅝ इञ्च। ले० काल सं० १९५८। पूर्ण। वेष्टन सं० १५। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मंदिर श्री महावीर स्वामी बूंदी।

१११४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ११७। आ० १३½×५ इञ्च। ले० काल सं० १९५८। पूर्ण। वेष्टन सं० ८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर, नैणवा।

१११५. प्रति सं० ५। पत्र सं० २०९। आ० १२ × ८ इञ्च। ले० काल सं० १९५२ पौष शुक्ला ११। पूर्ण। वेष्टन सं० १३१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि की गई थी। लिपि कराने में १६।।।) खर्च हुए थे।

१११६. प्रतिसं० ६। पत्र सं० १८६। आ० १२½ × ८ इञ्च। ले० काल सं० १९५२ मंगसिर बुदी १०। पूर्ण। वे० सं० २५/४१ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर।

१११७. प्रतिसं० ७। पत्र सं० १८६। आ० १२½ × ७ इञ्च। ले० काल सं० १९६२ अषाढ़ बुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० ६९। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर।

विशेष—गृहस्थ धर्म का वर्णन है।

१११८. प्रतिसं० ८। पत्र सं० १९५। आ० १०½ × ६½ इञ्च। ले० काल—सं० १९२६। पूर्ण। वेष्टन सं० ७९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर।

१११९. प्रतिसं० ९। पत्र सं० १९६। आ० १२×६½ इञ्च। ले० काल १९०५ आषाढ़ बुदी ३। पूर्ण। वेष्टन सं० ७१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—टोंक में प्रतिलिपि हुई थी।

११२०. **प्रति सं० १०** × । पत्र सं० १४६ । आ० १३ × ६½ इञ्च । ले०काल सं० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर अलवर ।

११२१. **प्रति सं० ११** । पत्र संख्या २६३ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १६०५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा, (राज.) ।

विशेष— रूघनाथमढ़ में प्रतिलिपि हुई थी ।

११२२. **ढूंढियामत उपदेश** × । पत्र सं० १४ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । **अपूर्ण** । वेष्टन सं० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

११२३. **तत्वदीपिका** × । पत्र सं० २२ । आ० १२½ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५६० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

११२४. **तत्वधर्मामृत** × । पत्र सं० २० । आ० ११½ × ५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

११२५. **तीर्थवन्दना आलोचन पाठा** × । पत्र सं० १३ । आ० १०½ × ६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल– × पूर्ण । वेष्टन सं० ६१-१७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

११२६. **तीस चौबीसी** × । पत्र सं० ४ । आ० १० × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र० काल— × । ले० काल सं० १६३६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटयों का नैणवा ।

११२७. **तेरहपंथ खंडन—पन्नालाल बूनीवाले** । पत्रसं० १६ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । र० काल × । ले०काल सं० १६४८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौमान बूंदी ।

११२८. **त्रिवर्णाचार—श्री ब्रह्मसूरि** । पत्रसं० ५७ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा – संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पंचायती बूनी (टोंक) ।

ग्रन्थ का प्रारम्भ—ॐ नमः श्रीमच्चतुर्विंशति तीर्थेभ्यो नमः ।

अथोच्यते त्रिवर्णानां शौचाचार-विधि-क्रमः ।
शौचाचार विधि प्राप्तो, देहं संस्कर्तुमर्हतेः ॥

सन्धि समाप्ति पर—

इति श्री ब्रह्मसूरि विरचिते श्रीजिनसंहिता सारोद्धार प्रतिष्ठातिलक नाम्नि त्रिवर्णिकाचारसंग्रहे सूत्र प्रमाणेसंध्यावंदनदेवाराधनाद्याह्निक विश्वदेवसंतर्पणादि–विधानियं नाम चतुर्थं पर्व ।

११२९. त्रिवर्णाचार-सोमसेन । पत्रसं० १२१ । आ० १० × ६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार । र०काल सं० १६६७ कार्तिक सुदी १५ । ले०काल सं० १८९२ माह सुदी १० । पूर्ण वेष्टन—सं० १३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

११३०. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १४४ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले०काल सं० १८९८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—गोदूंन ने तक्षकगढ़ टोडानगर के नेमिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

११३१. प्रति सं० ३ । पत्रसं० १०-१५३ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल टोंक ।

११३२. प्रति सं० ४ । पत्रसं० १५२ । आ० ९½ × ४ इञ्च । ले०काल सं० १८९५ सावन सुदी ५ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—१०१ से ४९ तक के पत्र नहीं हैं । इसका दूसरा नाम धर्म रसिक ग्रंथ भी है ।

११३३. प्रति सं० ५ । पत्रसं० ४२ । भाषा—संस्कृत । ले०काल सं० १८७१ । पूर्ण । वेष्टन सं० २९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर । इस मन्दिर में एक अपूर्ण प्रति और है ।

विशेष—चुन्नीलाल ने भरतपुर में प्रतिलिपि कर इसे मन्दिर में चढ़ाया था ।

११३४. प्रतिसं० ६ । पत्रसं० १०५ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल सं० १८५२ पूर्ण । वेष्टन सं० ७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी काम्बा ।

११३५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १०१ । आ० १२ × ६½ इञ्च । ले०काल सं० १८७२ सावन सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

विशेष—गुमानीराम ने कल्याणपुरी के पंचायती मंदिर नेमिनाथ में प्रतिलिपि की थी ।

११३६. प्रति सं० ९ । पत्रसं० १०३ । आ० १२ × ४½ इञ्च । ले०काल सं० १८७० । चैत बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४-२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का, डूंगरपुर ।

११३७. दण्डक — × । पत्रसं० २१ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । विषय आचारशास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४१६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

११३८. दंडक— × । पत्र सं० ५ । आ० १० × ४¾ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०१४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

११३९. दंडक— × । पत्र सं० १२ । आ० १० × ४½ । भाषा—हिन्दी । विषय आचार शास्त्र । र०काल × ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

११४०. दंडक— × । पत्र सं० ४ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल सं० १८१३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१७ । भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

११४१. दंडक— × । पत्रसं० २७ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । र०काल— × । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

११४२. दंडक प्रकरण जिनहंस मुनि । पत्रसं० २६ । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । र०काल— × । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६०७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

११४३. दंडक प्रकरण—वृन्दावन । पत्रसं० २–२६ । आ० ६½ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार । र०काल— × । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ६२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर कोटयां का नैणवा ।

११४४. दंडक वर्णन × । पत्रसं० १६ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा हिन्दी गद्य । विषय—आचार । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १६३ । **प्राप्ति स्थान** । दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—१६ से आगे पत्र नहीं हैं ।

११४५. दंडक स्तवन-गजसार । पत्रसं० ५ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आचार । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है । लिखितं ऋषि श्री ५ धोमण तस्य शिष्य ऋषि श्री ५ गोपाल जी प्रसाद ऋषि जेतसी लिखितं पठनार्थ बाई कुमरि बाई ।

११४६. प्रति सं० २ । पत्रसं० ७ । आ० १०×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—संस्कृत टब्बा टीका सहित है ।

११४७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १७०६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष— प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

११४८. दशलक्षणधर्म वर्णन— × । पत्रसं० ३५ । आ० ८ × ६½ इञ्च । भाषा—संस्कृत, । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५५७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

११४९. दशलक्षणधर्म वर्णन × । पत्रसं० ४३ । आ० ८ × ६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११६५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर, अजमेर ।

११५०. दशलक्षणधर्म वर्णन— × । पत्रसं० १४ । आ० ८½ × ६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० ३६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

११५१. दशलक्षणधर्म वर्णन–रइधू । पत्र सं० २१ । **भाषा**—अपभ्रंश । विषय—धर्म । र०काल—× । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मंदिर, बसवा ।

११५२. दशलक्षण भावना—पं० सदासुख कासलीवाल । पत्रसं० २६ । आ०—१४½ × ८ इञ्च । भाषा—राजस्थानी (ढूंढाडी) गद्य । विषय – धर्म । र०काल— × । ले०काल सं० १९५५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—मांगीराम शर्मा ने दौसा में प्रतिलिपि की थी । रत्नकरण्ड श्रावकाचार में से उद्धृत है ।

११५३. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ३८ । आ० १२½×५ इञ्च । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टनसं० १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

११५४. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० २७ । आ० १२½ × ७ इञ्च । ले०काल सं० १९७७ फागुन सुदी १० पूर्ण । वेष्टनसं० १३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

११५५. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० ७२ । आ० ९×६ इञ्च । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टनसं० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक) ।

११५६. प्रतिसं० ५ । पत्रसं० ४९ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

१०५७. प्रतिसं० ६ । पत्रसं० ३० । आ० १३½ × ६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५८।१३९ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

११५८. प्रतिसं० ७ । पत्र सं० २१ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

११५९. दर्शनविशुद्धि प्रकरण—**देवभट्टाचार्य** । पत्रसं० १५९ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८९-५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—सोलह कारण भावना का वर्णन है ।

११६० दर्शनसप्तति—× । पत्र सं० ३ । आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल सं० १७८२ वैशाख सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं १८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, दीवानजी कामा ।

११६१. दर्शनसप्ततिका—× । पत्रसं० ७ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय–धर्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर डबलाना (बूंदी) ।

विशेष—मूल के नीचे हिन्दी गद्य में अर्थ दिया है । अंत में लिखा है—

इति श्री सम्यक्त्वसप्ततिकावचूरि ।

११६२. दानशील भावना—भगौतीदास । पत्रसं० ३-५ । आ० १०½ × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ११०-९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बीसपंथी दौसा ।

११६३. दानशीलतप भावना—मुनि असोग । पत्रसं० ३ । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । र०काल— × । ले०काल सं०—× । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७ ६४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

अंतिम—

छेदाइस छाए अयालायगं असोग नामा मुणि पुंगवणं ।
सिद्धंतनि सरेय इमि जिणंदीणाहियं सूरि खमंतु तणं । इति

११६४. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ६ । आ० १०×४ इञ्च । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० २६–८४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—४६ गाथाएं हैं ।

११६५. दानादिकुलकवृत्ति—पत्रसं० २०८ । भाषा—संस्कृत । विषय · आचार शास्त्र । र०काल— × । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२० । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर, भरतपुर ।

११६६. द्विजमतसार । पत्रसं० २१ । आ० १२½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय— धर्म । र०काल—× । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२३ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

११६७. धर्म कुंडलियां—बालमुकुन्द । पत्रसं० २६ । आ० १२½×८ इंच । भाषा— हिन्दी । विषय · धर्म । र०काल × । ले०काल सं० १६२१ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

११६८. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी भरतपुर ।

११६९. धर्मढाल— × । पत्र सं० १ । आ० ६½×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय— धर्म । र०काल× । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—और भी ढाल दी हुई है ।

११७०. धर्मपरीक्षा—अमितिगति । पत्र सं० ७० । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । र०काल सं० १०७० । ले०काल सं० १५२७ कार्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० १५१ । **प्राप्तिस्थान**—म. दि० जैन मन्दिर (अजमेर) ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है :—

संवत् १५२७ वर्षे कार्तिक बुदि ५ सोमे सहस्रवारी स्थाने श्री अजितनाथ चैत्यालय महाराजाधिराज—श्री अजयमल्ल—विजयराज्ये श्रीमत् काष्ठासंघे नंदीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री रामसेनान्वये भ. रत्नकीर्ति तत्पट्टे भ. लक्ष्मसेन तत्पट्टे भवरणधीर पट्टाचार्य भ. श्री सोमकीर्ति तत् शिष्य आचार्य श्री वीरसेन आचार्य विमलसेन मु. विजयसेन मु. जयसेन ब्र. वीरम । ब्र. नाना । ब्र. कान्हा । ब्र. गगीया । ब्र. भामण । आर्यिका बाई जिनमती आर्यिका विनयश्रिरि । आ. जिनश्रिरि । क्षुल्लिका बाई नाई । क्षु. गाजी । पंडित अस्सी । पंडित वेला । पं० जिनराज । पं० नरसिंह । पं० वीभपाली छाव आना ।

११७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५५ । आ० १०$\frac{१}{२}$ × ४$\frac{१}{२}$ इञ्च । ले०काल सं० १७३३ आसोज बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५५० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

११७२. प्रति सं. ३ । पत्र सं० १०० । आ० ११$\frac{१}{२}$×४$\frac{१}{२}$ इञ्च । ले०काल सं० १७२१ । वेष्टन सं० १२३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

११७३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८६ । आ० ११×५$\frac{१}{२}$ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२०/१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

११७४. प्रतिसं० ५ । पत्र सं० १ से ९६ । आ० १०×४$\frac{१}{२}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

११७५. प्रतिसं० ६ । पत्र सं० ११६ । ले० काल सं० १६८७ कार्तिक बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६-१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सौगाणी करौली ।

विशेष—संवत् १६८७ वर्षे कार्तिक बदि १३ शनिवासरे मोजमाबाद मध्ये लिखतं जोसी राधा । स्वस्ति श्री वीतरागायनमः संवत् १७१२ सांगानेरी मध्ये जीणा चैत्यालै ठोल्या कै देहुरै आर्यिका चन्द्रश्री बाई हीरा । चेलि नान्हि —धर्म्मपरिक्षा (धर्मपरीक्षा) शास्त्र अठाई के व्रत कै निमति । अर्यका चन्द्र श्री देहहुरै भेल्हो (कर्म) क्षमवै कं निमित मिति चैत्र वदी ८ भुमीवार ।

११७६. प्रति सं० ७ । पत्रसं० ११२ । आ० ११ × ४$\frac{३}{४}$ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

११७७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १०२ । ले०काल सं० १७६६ वैसाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बड़ा पंचायती मन्दिर डीग ।

११७८. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ११० । आ० १२ × ५ इञ्च । ले०काल सं० × । पूर्ण । वेष्टन सं० सं० २३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति अशुद्ध है ।

११७९. प्रतिसं० १० । पत्र सं० ८९ । ले०काल सं० १८५५ माह सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष— फरुखाबाद में प्रतिलिपि की गई । सं० १६२२ में भरतपुर के मन्दिर में चढाया था ।

११८०. प्रतिसं० ११ । पत्र सं० ८८ । र०काल × । ले० काल० सं० १७६२ मगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

११८१. प्रतिसं० १२ । पत्र सं० ११६ । आ० १२×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय— । ले०काल सं० १६६४ फागुण सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दोरसली कोटा ।

प्रशस्ति—संवत् १६६४ वर्षे फागुण बुदी ८ गुरुवासरे मोजवा वास्तव्ये राजाधिराज महाराजा श्री मानसिंह राजप्रवर्तमाने अजतिनाथ जिनचैत्यालये श्री मूलसंघे ब. स. गच्छे कुन्द० भ. शुभचन्द्र देवास्तत्पट्टे पद्मनंदिदेव खंडेलवाल दोसी गोत्र वाले संघवी रामा के वंशवालों ने प्रतिलिपि कराई थी । आगे पत्र फट गया है ।

११८२. प्रति सं० १३ । पत्र सं० ८७ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल सं० १८३६ सावण सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १५६/३६ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

११८३. प्रतिसं० १४ । पत्र सं० ८५ । आ० १२×६ इंच । ले०काल सं० १८७८ माघ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक) ।

विशेष—ग्रन्थ के पत्र एक कोने से फटे हुये हैं ।

११८४. प्रतिसं० १५ । पत्र सं० ८१ । आ० १३×६ इंच । ले० काल सं० १८७७ । पूर्ण । वे० सं० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती टूनी (टोंक) ।

११८५. प्रतिसं० १६ । पत्र सं० ५ । आ० १२×५ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ बूंदी ।

११८६. धर्मपरीक्षा - × । पत्र सं० २८ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । र० काल—× । ले०काल सं० १४४८ शाके फागुन सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—पार्थपुर नगर के पार्श्वनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी ।

११८७. धर्मपरीक्षा भाषा—मनोहरदास सोनी । पत्रसं० ६४ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र० काल सं० १७०० । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० १६१७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

११८८. प्रतिसं० २ । पत्र सं० १२१ । आ० १२$\frac{1}{2}$×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल सं० १८८३ भादवा सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०८८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

११८९. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० १३८ । आ० ६$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७५-४३ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर ।

११९०. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० ७२ । आ० ६$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १७९८ । पूर्ण । वेष्टन सं० २९१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—गुटका रूप में है ।

११९१ प्रतिसं० ५ । पत्र सं० ११८ । आ० ११$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । ले०काल सं० १९७२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

११९२. प्रति सं० ६ । पत्रसं० १८३ । आ० ७$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १८५२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

११९३. प्रति सं० ७ । पत्रसं० ८३ । आ० १३×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १८९० । पूर्ण । वेष्टन सं० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

मिति पौष सुदी ६ बृहस्पतिवार सं० १८९० का श्रीमान परमपूज्य श्री राजकीर्ति जी तत् शिष्य पण्डितोत्तम पण्डित श्री जगरूपदासजी तत् शिष्य पण्डितजी श्री दुर्लीचन्दजी तत् शिष्य लिपिकृतं पण्डित

देवकरणाम्नाय अजयगढ़ का लिखायितं पुन्यपवित्तं दयावंत धर्मात्मा साहूजी श्री तोलजी गोत्रे रांउका स्वात्मार्थ बोधनीय प्राप्ति भंवतु । ग्राम इन्द्रपुरी मध्ये ।

११९४. प्रति सं० ८ । पत्रसं० ९३ । आ० ११$\frac{3}{4}$ × ६ इञ्च । ले०काल सं० १९०७ वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावटी (सीकर) ।

११९५. प्रतिसं० ९ । पत्रसं० ८५ । आ० १२×६ इञ्च । ले०काल—सं० १८२५ कार्तिक सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२।५२ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

विशेष -- सीताराम के पठनार्थ परशुराम खुटाडिया ने प्रतिलिपि की थी ।

११९६. प्रतिसं० १० । पत्रसं० ८४ । आ० १२×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १८३७ वैशाख सुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४९।४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेष —सुखदास रांवका ने भादवा में प्रतिलिपि की थी ।

११९७. प्रति सं० ११ । पत्रसं० १४४ । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८०-७२ । **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन मन्दिर बेरहूपंथी दौसा ।

विशेष---दौलतराम तेरापंथी ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

११९८. प्रति सं० १२ । पत्रसं० ११३ । ले०काल सं० १८५१ । पूर्ण । वेष्टनसं० ९२।२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—महाराजा प्रतापसिंह जी के शासनकाल में दौसा में प्रतिलिपि की गई थी ।

११९९. प्रति सं. १३ । पत्रसं० १३३ । आ० ९$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० ५-६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सोगाणी करौली ।

१२००. प्रतिसं० १४ । पत्रसं० १०२ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १३० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर करौली ।

१२०१. प्रतिसं० १५ । पत्र सं० ७० । ले० काल सं० १८१३ आषाढ़ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बड़ा पंचायती मंदिर (डीग) ।

१२०२. प्रतिसं० १६ । पत्र सं० १२९ । ले०काल सं० १८१५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५ । **प्राप्ति-स्थान** – दि० जैन पंचायती मंदिर हण्डावालों का डीग ।

विशेष—सेवाराम पाटनी ने लिखवाया था ।

१२०३. प्रतिसं० – १७ । पत्र सं० ११३ । ले०काल—सं० १८८२ भादों वदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पञ्चायती मंदिर हण्डा वालों का डीग ।

१२०४. प्रतिसं० १८ । पत्र सं० १३३ । आ० १२ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल—सं० १८१८ पूर्ण । वेष्टनसं० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मंदिर कामा ।

१२०५. प्रतिसं० १९ । पत्रसं० १०४ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १८४१ भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर वैर ।

विशेष---वैर में प्रतिलिपि हुई थी ।

१२०६. प्रतिसं० २० । पत्रसं० ९३ । आ० ११ × ८ इञ्च । ले०काल सं० १८२० । मंगसिर सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—८६ पत्र के आगे भक्तामरस्तोत्र है । ले० काल सं० १८३४ दिया है । प्रति जीर्ण शीर्ण है ।

१२०७. प्रतिसं० २१ । पत्रसं० १८२ । ले०काल १८०५ फागुन बदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

विशेष—जोधराज ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

१२०८. प्रतिसं० २२ । पत्रसं० २२५ । ले०काल सं० १७४८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

विशेष—विद्याविनोद ने सांगानेर में प्रतिलिपि की थी । मुटका साइज ।

१२०९. प्रतिसं० २३ । पत्रसं० १५६ । लेखन काल १८२५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३२९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर में जवाहरसिंह जी के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई ।

१२१०. प्रतिसं० २४ । पत्रसं० ९९ । ले०काल सं० १७९१ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१२११. प्रतिसं० २५ । पत्रसं० ९८ । ले०काल सं० १८१३ पूर्ण । वेष्टनसं० ३३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—तक्षकपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

१२१२. प्रति सं० २६ । पत्र सं० १२५ । ले० काल १८१३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१२१३. प्रति सं० २७ । पत्र सं० १२३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१२१४. प्रति सं० २८ । पत्रसं० १३६ । आ० ११ × ७ इञ्च । ले० काल सं० १९२७ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८७ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन पचायती मन्दिर, अलवर ।

१२१५. प्रति सं० २९ । पत्रसं० ११३ । आ० १२×६ इञ्च । ले०काल सं० १८६९ ज्येष्ठ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० ४९/४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर, अलवर ।

१२१६ प्रति सं० ३० । पत्रसं०—१०३ । ले०काल सं० १९२२ कार्तिक बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

१२१७. प्रति सं० ३१ । पत्रसं० ८९ । आ० १२×८½ इञ्च । ले० काल-- × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

१२१८. प्रति सं०—३२ । पत्रसं० ८६ । आ० १२½×६ इञ्च । ले०काल - × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

१२१९. **प्रतिसं० ३३** । पत्रसं० १४२ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । ले० काल सं० १८१२ । पूर्ण । वेष्टनसं० २८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, दबलाना (बूंदी) ।

१२२०. **प्रतिसं० ३४** । पत्रसं० ८७ । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण शीर्ण । वेष्टनसं० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरह पंथी मालपुरा (टोंक) ।

१२२१. **प्रतिसं० ३५** । पत्रसं० १२ । ले० काल सं० १९०१ आषाढ़ सुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टनसं०-३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

१२२२. **प्रतिसं० ३६** । पत्रसं०४८ । आ० ८½ × ६ इञ्च । ले०काल × । वे० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं०१०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

१२२३. **प्रतिसं० ३७** । पत्रसं०—१३४ । आ० ९ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १८८५ । पूर्ण । वेष्टनसं०- ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष—भट्ट तोलाराम भवानीराम दसोरा ने प्रतिलिपि की थी ।

१२२४. **प्रति सं० ३८** । पत्रसं० ६५ । आ० १०×७ इञ्च । ले० काल— × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर आवां (उणियारा) ।

१२२५. **प्रतिसं० ३९** । पत्रसं० २–१०४ । आ० १०½ × ६½ इञ्च । ले०काल सं० × । पूर्ण । वेष्टनसं०—११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती टूनी (टोंक)।

१२२६. **प्रतिसं० ४०** । पत्र सं० १०९ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल× । पूर्ण । वेष्टन सं० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि. जैन मंदिर पंचायती टूनी (टोंक)

१२२७. **प्रति सं० ४१** । पत्रसं० १०७ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले० काल सं० १८४० फागुण सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० १९ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मंदिर कोटयों का नैणवा ।

१२२८. **प्रतिसं० ४२** । पत्र सं० १०१ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल सं० १८४० फागुण बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन तेरह पंथीमंदिर, नैणवा ।

१२२९. **प्रति सं० ४३** । पत्र सं० ११२ । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल सं० १८३४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११९ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मंदिर श्री महावीर स्वामी बूंदी ।

१२३०. **प्रति सं० ४४** । पत्र सं० ६० । आ० १०×४½ इंच । ले० काल सं० १७४० पौष सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष- अरणग्रपुर में विनयसागर के शिष्य ऋषिदयाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१२३१. **प्रति सं० ४५** । पत्र सं० ९९ । आ० १० × ६½ इञ्च । ले०काल—सं० १९२० पौष सुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—लोचनपुर में लिख गया था ।

१२३२. **प्रति सं० ४६** । पत्र सं० ९३ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले० काल—सं० १८४६ अषाढ़ सुदी ९। पूर्ण । वेष्टन सं० २९ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त ।

विशेष—सवाई माधोपुर के गढ़ रणथम्भोर में आमेर के राजा प्रतापसिंह के शासन काल में सगही पांथुराम के पुत्र निहालचंद ने प्रतिलिपि कराई थी ।

पुस्तक पं० देवीलाल चि० विरधूचंद की है।

१२३३. प्रति सं० ४७ । पत्र सं० १०५ । आ० १२½×७ इंच । ले०काल—सं० १९७६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—चंदेरी में प्रतिलिपि हुई थी ।

१२३४. धर्मपरीक्षा वचनिका-पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १८२ । आ० १०×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । र० काल सं० १९३२ । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० २१ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर श्री महावीर स्वामी, बूंदी ।

१२३५. प्रति सं २ । पत्र सं० ११७ । आ० १२½ × ८ इञ्च । ले० काल सं०—१९५१ आषाढ़ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, श्री महावीर स्वामी बूंदी ।

१२३६. धर्मपरीक्षा भाषा-बाबा दुलीचन्द । पत्र सं० २५१ । भाषा—हिन्दी । भाषा—धर्म । र० काल—× । ले०काल सं० १९८० वैशाख सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

१२३७. धर्मपरीक्षा भाषा सुमतिकीर्ति । पत्र सं० ७६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—धर्म । र० काल सं० १६२५ । ले० काल सं० १६४८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५ । **प्राप्ति स्थान** । दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

१२३८. धर्मपरीक्षा भाषा—वशरथ निगोत्या । पत्रसं० ११० । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । र० काल सं०—१७१८ फागुन बुदी ११ । ले०काल—सं० १७९० । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

१२३९. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ३५ आ० १०½ ×४ इञ्च । ले०काल सं० १८२० माह बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर, करौली ।

१२४०. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० २३५ । आ० १२×५½ इञ्च । लेखन काल—सं० १७५० । पूर्ण । वेष्टन सं० १९८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—मध्यांश

संसार में भैतां जीवां के सुखदुख को आतर होई केतौ भेर सिरस्यौजे तौ जाणिज्यो ।
भावार्थ से योजु ससारी जीवानै दुखतौ मेरू बराबर अर सुख न सरसौं बराबरि जाणज्यो ।। २१ ।।

अन्तिम पाठ—

साह श्री हेमराज सुत मालु हमीर दे जाणि ।
कुल नि गोत श्रावक धर्म दशरथराज बखाणी ।। १।।
संवत् सतरासै सही अष्टदश अधिकाय ।
फागुण तम एकादशी पूरण ग्रंथ सुभाव ।। २ ।।
धर्म परीक्षा वचनिका सुन्दरदास रहाय ।
साधर्मी समझिवै दशरथ कृति चित लाय ।। ३ ।।

इति श्री अमितगति कृता धर्मपरीक्षा मूल तिहकी वचनिका बालबोध नाम अपर नाम तात्पर्यार्थ टीका तस्य धर्मार्थ दशरथेन कृता समाप्ता ।

१२४१. धर्मपंचविंशतिका—**ब्र० जिणदास** । पत्र सं० ३ । आ० ११×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । र० काल—× । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० १६६ ।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

आदि भाग—भव्व कमल मायंडं सिद्धं जिणति हुयाणिंद सद पुज्जं ।
णेमि ससि गुरुवीरं पणमियतिय सुधिभव महणं ।।
संसामज्झि जीवो हिंडिममिच्छत विसयसंसत्तो ।
अलहंतो जिणधम्मं बहुविहयञ्जाय गिएहेइ ।। २ ।।
चउगइ दुह संतत्तो चउरासी लक्ख जोणि अइक्खिणो ।
कम्मफलं भुंजंतो जिण धर्म विवज्जिउ जीवे ।। ३ ।।

अन्तिम—जिणधम्मं मोक्खछं अणंण हवेहि हिंसगायरणं ।
इय जाणि भव्वजीवा जिणआखिय धम्मु आयरहि ।। २० ।।
णिम्मल दसणभत्ती वयअणुवेहाय भावणा चरिया ।
अंते सलेहणा करिज्जइ इच्छहि मुत्तिवररमणी ।। २५ ।।
मेहा कुमुइणि चंद भवदु सायरछं जाणणत्तमिणं ।
धम्मविलासमुदहं भणिदं जिणदास वम्हेण ।। २ ।।
इतिधर्म पंचविंशतिका सम्पूर्णम् ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१२४२. धर्मप्रश्नोत्तरी । पत्र सं० १ । आ० ८ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा हिन्दी । र० काल—? । ले० काल सं० १८८६ अषाढ़ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक) ।

विशेष—जन्म पत्र की साइज का लम्बा पत्र है ।

१२४३. धर्मखंडन भाषा—लाला नथमल । पत्र सं० ७० । आ० ६$\frac{3}{4}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र० काल × । लेखन काल सं० १६३६ पूर्ण । वेष्टन सं० १३०-५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

१२४४. धर्मरत्नाकर—जयसेन । पत्र सं० ६० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—धर्म । र० काल सं० १०५५ । ले० कालसं० १८३४ चैत सुदी ३ । पूर्ण । वे. सं. १०३६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—अजमेर मध्ये लिखितं ।

१२४५. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ६१ । आ० ६ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १८४८ कार्तिक सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२०२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—पं० गोपालदास ने अजमेर में प्रतिलिपि की थी ।

१२४६. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० १६५ । **आ०** ९×४½ इञ्च । **ले० काल सं०** १७७५ बैशाख सुदी ७ । वेष्टन सं० ८७ । **प्राप्ति स्थान**—शास्त्र भण्डार दि० जैनमन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—महात्मा धनराज ने स्वयं पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१२४७. धर्मरसायन—पद्मनन्दि । पत्र संख्या १३ । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । र० काल—× लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० ५०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१२४८. प्रतिसं० २ । पत्र सं० १० । आ० १० × ५½ इञ्च । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन सं० ५८ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१२४९. धर्मशुक्लध्यान निरूपण—× । पत्र सं० ३ । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । र० काल—× । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२।२४९ । **प्राप्ति स्थान**— संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

१२५०. धर्मसंग्रह श्रावकाचार—पं० मेधावी । पत्र सं० ६३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार । र० काल सं० १४४० । ले० काल सं० १५२६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१२५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४५ । आ० १२ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १७८८ श्रावण सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—द्रव्यपुर नगर के चन्द्रप्रभ चैत्यालय में यशकीर्ति के शिष्य छाजूराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१२५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८६ । आ० ९½×५½ इञ्च । ले० काल सं० १८३५ । वेष्टन सं० ८० । **प्राप्ति स्थान**— शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—महाराजा प्रतापसिंह के शासनकाल में बख्तराम के पुत्र मेवाराम ने नेमिजिनालय में लिखा था ।

१२५३. धर्मसार—पं० शिरोमणिदास । पत्रसं० ३६ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय धर्म । र० काल सं० १७३२ वैशाख सुदी ३ । ले० काल सं० १८५९ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६२२ । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन भण्डार अजमेर ।

१२५४. प्रति सं० २ । पत्रसं० ५९ । आ० १० × ५ इञ्च । ले० काल सं० १७७९ अगहन सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन संख्या ५११ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन भण्डार अजमेर ।

१२५५. प्रति सं० ३ । पत्रसं० ७२ । आ० ९ × ६ इञ्च । ले० काल सं० १८४६ भादवा सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१२५६. प्रति सं० ४ । पत्रसं० ३५ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले० काल सं० १८६१ चैत्र सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८६-९ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—श्री नानूलाल दौसा वाले ने सवाई माधोपुर में ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी । ग्रंथकर्ता ने सकलकीर्ति के उपदेश से ग्रंथ रचना होना लिखा है ।

१२५७. प्रति सं० ५ । पत्रसं० ४४ । आ० १३ × ६ इञ्च । ले० काल सं० १८५८ सावन सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

१२५८. प्रति सं० ६। पत्र सं० ५३। आ० १३×६ इञ्च। ले०काल × पूर्ण। वेष्टन स० १२८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

१२५९. प्रति सं० ७। पत्र सं० ५६। आ० ९½×६½ इञ्च। ले० काल सं० १८५९ वैशाख सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० १४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

१२६०. प्रति सं० ८। पत्र सं० ५५। आ० ९ × ५¾ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २९३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—७६३ पद्य हैं।

१२६१. प्रति सं० ९। पत्रसं० ६९। ले०काल स० १८९९। पूर्ण। वेष्टन सं० २९६। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा।

१२६२. प्रति सं० १०। पत्रसं० ५६। आ० ११ × ५ इञ्च। ले०काल सं० १८९५। पूर्ण। वेष्टन सं० ४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर, कामा।

विशेष—हेमराज अग्रवाल सुत मोतीलाल शेखावाटी उदयपुर में प्रतिलिपि करवायी थी।

१२६३. प्रति सं० ११। पत्रसं० ५३। **ले०काल**—१८७९। पूर्ण। वेष्टन सं० ३७०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

१२६४. प्रतिसं० १२। पत्रसं० ६९। ले०काल—×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३७१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर, भरतपुर।

१२६५. प्रतिसं० १३। पत्रसं० ६८। ले०काल सं० १८७९ ज्येष्ठ सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन स० ३७२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन पंचायती मन्दिर, भरतपुर।

विशेष—दीवान जोधराज के पठनार्थ लिखी गई थी।

१२६६. प्रतिसं० १४। पत्रसं० ४९। आ० ९ × ५ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मंदिर नैणवां।

विशेष—सकलकीर्ति के उपदेश से ग्रन्थ रचना की गई थी।

१२६७. प्रतिसं० १५। पत्रसं० ४२। आ० ११ × ७ इञ्च। ले०काल सं०— १९५१। पूर्ण। वेष्टन सं० २५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

१२६८. प्रतिसं० १६। पत्रसं० ४७। आ० १० × ७½ इञ्च। ले०काल सं० १९५१। पूर्ण। वेष्टन सं० २१०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

१२६९. प्रतिसं० १७। पत्र सं० ४८। आ० १० × ७ इञ्च। ले० काल सं १९५१ वैशाख शुक्ला १५। पूर्ण। वेष्टन सं० २६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

१२७०. धर्मसार—×। पत्र सं० २६। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—धर्म। र० काल—×। ले० काल स० ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)।

१२७१. धर्मसारसंग्रह—सकलकीर्ति। पत्र सं० २६। आ० १२½ × ५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—धर्म। र० काल × । ले० काल- सं० १८२२। पूर्ण। वेष्टन सं० ९३-४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर।

१२७२. धर्मोपदेश-रत्नभूषण । पत्र सं० १५८ । आ० १०½ × ५ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय—आचार । र०काल सं० १६६६ । ले०काल सं० १८०३ । पूर्ण । वेष्टनसं० २९६-११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटड़ियों का डूंगरपुर ।

अन्तिम पुष्पिका—श्री धर्मोपदेशनाम्नि ग्रंथे श्रीमत्सकलकलापंडित कोटीरहीवं भूतभूतल विख्यातकीर्तिः भट्टारक श्री त्रिभुवनकीर्तिपदसंस्थित सूरिश्रीरत्नभूषण विरचिते प्रह्नोदपादि सकल दीक्षाग्रहण शुभगतिः गमनोनाम एकादश सर्गः ।

देवगढ मध्ये भट्टारक देवचन्द जी हूंबड जाति लघु शाखायां ।

१२७३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७४ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल सं० १७७६ वैशाख सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—मालपुरा के श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय में श्री भुवन भूषण के शिष्य पंडित देवराज ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१२७४. धर्मोपदेश— × । पत्रसं० १६ । आ० ८½ × ६½ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर, फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

१२७५. धर्म्मोपदेश रत्नमाला-भण्डारी नेमिचंद । पत्रसं० २३ । आ० ६ × ४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टनसं० १०० । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

१२७६. धर्मोपदेश श्रावकाचार-ब्र.नेमिदत्त । पत्रसं० २० । आ० १०½ × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल सं० १६५८ आषाढ़ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० १३२७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर, अजमेर ।

विशेष—इसका दूसरा नाम धर्मोपदेशपीयूष भी है ।

१२७७. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ३१ । ले०कालसं० १८२५ । पूर्ण । वेष्टनसं० २९१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष—थाणा में केसरीसिंह ने लिखी थी ।

१२७८. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० ३१ । आ० ९½ × ४½ इञ्च । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनसं० २२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर, दीवानजी कामा ।

१२७९. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० ३१ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २२६ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

१२८०. प्रतिसं० ५ । पत्र सं० ६-२६ । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २६४ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१२८१. प्रतिसं० ६ । पत्र सं० ३५ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले०काल—सं० १८१२ चैत बुदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० २ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

१२८२. प्रतिसं० ७ । पत्र सं० २३ । आ० ११½×४½ इंच । ले० काल सं० १६८१ भादवा सुदी २ । वेष्टन सं० १२५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१२८३. प्रति सं० ८ । पत्रसं० २३ । आ० ११½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । र० काल— × । ले० काल × । वेष्टन सं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१२८४. प्रति सं० ९ । पत्र सं० २६ । आ० ११½×४½ । ले० काल × । वेष्टन सं० १०७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१२८५. प्रति सं० १० । पत्र सं० २४ । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टन सं० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मन्दिर डीग ।

१२८६. धर्मोपदेश श्रावकाचार—पं० जिनदास । पत्र सं० ११७ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र० काल— × । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—साह टोडर के आग्रह से ग्रंथ रचना की गयी थी । प्रारम्भ में विस्तृत प्रशस्ति दी गई है ।

१२८७. धर्मोपदेश श्रावकाचार-धर्मदास । पत्र सं० ४५ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आचार शास्त्र । र० काल सं० १५७८ वैशाख सुदी ३ । ले० काल सं० १६७४ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—चंपावती में प्रतिलिपि की गयी थी ।

१२८७. धर्मोपदेशसिद्धान्त रत्नमाला—भागचन्द । पत्रसं० ७७ । आ० ६ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । र० काल सं० १९१२ आषाढ़ बदी २ । ले० काल सं० १९३९ भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७-११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

१२८९. प्रतिसं० २ । पत्रसं० २९ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । ले० काल सं० १९५१ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७९४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१२९०. नमस्कार महात्म्य— × । पत्रसं० २ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय— धर्म । र० काल— × । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११९ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

१२९१. नरक दुःख वर्णन-भूधरदास । पत्रसं० ५ । आ० ७½ × ७ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय—धर्म । र० काल— × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५९६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—कविवर ज्ञानतराय की रचनायें भी हैं ।

१२९२. नमस्कार अर्घ— × । पत्र सं० ३ । आ० ९½ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय—धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १७३३ कार्तिक बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

१२९३. नवकार बालावबोध। पत्रसं० ४। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। र०काल × ले०काल— × । पूर्ण। वेष्टन सं० ७२२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

१२९४. नित्यकर्मपाठसंग्रह। पत्रसं० १०। आ० ११×५½ इंच। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—धर्म। र०काल—× । ले०काल सं० १९३७। पूर्ण। वेष्टन सं० १८२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

१२९५. पंच परम्मेठी गुण वर्णन—× । पत्रसं० २३। आ० १०½×६½ इंच। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—धर्म। र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरह पंथी दौसा।

विशेष—ग्रन्थ बही की साइज में है।

१२९६. पंचपरावर्तन वर्णन× । पत्रसं० ४। आ० १२×४½ इंच। भाषा—हिन्दी(गद्य)। विषय—धर्म। र०काल—× । ले०काल— × । पूर्ण। वेष्टन सं० २९९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

१२९७. पंचपरावर्त्तन वर्णन—× । पत्रसं० ३। आ० ११½×५½ इंच। भाषा—हिन्दी (ग०)। विषय—धर्म। र०काल—× । ले०काल— × । पूर्ण। वेष्टन सं० २०७। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

१२९८. पंचपरावर्त्तन वर्णन— × । पत्रसं० ६। आ० ११×७ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—चिंतन धर्म। र०काल—× । ले०काल—× । पूर्ण। वेष्टन सं० ७९/५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)।

१२९९. पंचप्रकार संसार वर्णन—× । पत्रसं० ४। आ० १०½×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय - धर्म। र०काल—× । ले०काल—× । पूर्ण। वेष्टन सं० ३६। **प्राप्ति स्थान**—शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

१२९९. (क) प्रतिसं० २। पत्रसं० ३। आ० १०½×५½ इंच। ले०काल × । वेष्टन सं० ३७। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

१३००. पन्द्रहपात्र चौपई—भ. भगवतीदास। पत्रसं० ३। आ० १०×६½ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। र० काल × । ले०काल— × । पूर्ण। वेष्टन सं० ८२-४४। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का इमरपुर।

आदि—

नमो देव अरिहंत को नमौ सिद्ध शिवराय।
नमें साध के चरण कों जोग त्रिविध के भाव।
पात्र कुपात्र अपात्र के पनरह भेद विचार।
ताकी हूं रचना कहूं जिन आगम अनुसार॥

अन्तिम—

गिरे तो दम में पुर निरवार
मरण करे तो चौथे सार।

ऐसे भेद जिनागम मांहि
त्रिलोकसार गोमतसार ग्रंथ की छांहु ॥
भाषा करहि भविक हहि हेत
पाछि पढत अर्थ कहि देत ।
बाल गोपाल हहि जे जीव
भंया ते सुख लहि सदीव ॥

१३०१. पद्मनंदि पंचविंशति—पद्मनंदि । पत्रसं० १३२ । आ० १०½×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल—× । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११६४ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१३०२. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १३१ । आ० १०½×४½ इंच । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—साहमलू ने इस ग्रंथ की प्रतिलिपि करवाई थी ।

१३०३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८५ । आ० १२ × ५ इंच । ले० काल × । वेष्टनसं० १२० । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—८५ से आगे पत्र नहीं हैं ।

१३०४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १–५० । आ० १०½×४½ । ले०काल × । वेष्टनसं० ७६६ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

१३०५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७–६६ । आ० ११×४½ । ले०काल × । विषय—आचार अपूर्ण । वेष्टन सं० ८२२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । पत्र मोटे हैं । प्रति १६वीं शताब्दी की प्रतीत होता है ।

१३०६. प्रतिसं० ६ । पत्रसं० ५३ । आ० १०½×५ इंच । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६०-७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

१३०७. प्रतिसं० ७ । पत्रसं० १४–१५ । आ० १३½×५ इंच । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३०८/२४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रतिजीर्ण है तथा सभी पत्र सील से चिपके हुए हैं ।

१३०८. प्रतिसं० ८ । पत्र सं० १६२ । आ० १३×४ इंच । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४०६/२४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

१३०९. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ८० । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ४१०/२४५ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

१३१०. प्रतिसं० १० । पत्र सं० ७७ । ले०काल सं० १५६१ । अपूर्ण । वेष्टनसं० ४११/२४३ । प्रतिजीर्ण है एवं प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

संवत् १५६१ वर्षे प्रथम श्रावण बुदी २ शुक्रवासरे स्वस्ति श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्ति तत्पट्टे भुवनकीर्ति तत्पट्टे श्री ज्ञानभूषण तत्पट्टे विजयकीर्ति

तत्पट्टे शुभचन्द्र प्रवर्तमाने रायदेशे ईडर वास्तव्य हुंबड ज्ञातीय भोडा करमसी भार्या पूतलियो सुत हो भाडा मेघराजचात्रु डोभाडा चांपा भार्या चांपलदे तयो सुत डोभाडा सिंहराज भार्या दाडमदे एते स्वज्ञानावर-णादि कर्म क्षमार्थे स्वभावरुच्चते श्रीपद्मनंदि पंचविंशतिका लिखित्वा ईडर सुभस्थाने श्री संभवनाथालये सुस्थितायां श्री विजयकीर्ति शिष्याय प्रदत्तं। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथमन्दिर उदयपुर।

१३११. प्रतिसं० ११। पत्र सं० १४४। आ० ६×८ इंच। ले० काल सं० १७८३ आसोज सुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं०—११-६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा।

विशेष—संस्कृत पद्यों के ऊपर हिन्दी अर्थ दिया हुआ है।

१३१२. प्रति सं० १२। पत्रसं० ८४। आ० ९×६½ इंच। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

१३१३. प्रतिसं० १३। पत्रसं० १३१। ले०काल सं० १९१४। पूर्ण। वेष्टनसं० ७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर हण्डावालों का डीग।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

१३१४. प्रति सं० १४। पत्र सं० ७२। आ० १०½×६½ इंच। ले०काल—सं० १८३२। पूर्ण। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

१३१५. प्रतिसं० १५। पत्रसं० ५३। आ० ११½×५½ इंच। ले०काल—×। अपूर्ण। वेष्टनसं० ३१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

१३१६ प्रतिसं० १६। पत्र सं० ५७। आ० १३×५½ इंच। ले० काल सं० १७३२। पूर्ण। वेष्टनसं० १०७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

१३१७. प्रतिसं० १७। पत्र सं० ३२। आ० ९×६½ इंच। ले०काल सं० १९३२। पूर्ण। वेष्टन सं० ११८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

विशेष—प्रति हिन्दी गद्य टीका सहित है।

१३१८. प्रतिसं० १८। पत्र सं० ६५। ले० काल सं० १७५० आसोज सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन सं० ४७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

१३१९. प्रतिसं० १९। पत्र स० १६४। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर।

१३२०. प्रतिसं० २०। पत्र सं० ८९। आ० १२×५ इंच। ले० काल०×। पूर्ण। वेष्टन सं० १७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

१३२१. प्रतिसं० २१। पत्र सं० ११४। आ० ११½×४½ इंच। ले० काल सं० १७३५ पौष बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० १७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—इस प्रति को आचार्य शुभकीर्ति तत् शिष्य जगमति ने गिरधर के पठनार्थ लिखी थी।

१३२२. प्रतिसं० २२। पत्र सं० ९७। आ० ११×५ इंच। ले० काल×। पूर्ण। वेष्टन स० ३३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

१३२३. प्रतिसं० २३ । पत्रसं० १६१ । आ० ५×६ इञ्च । ले०काल संवत् १८३१ आषाढ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

१३२४. प्रतिसं० २४ । पत्रसं० ६७ । आ० ११½ × ४½ इञ्च । ले०काल सं० १५८० पौष सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष प्रशस्ति—सं० १५८० वर्षे पौषमासे शुक्लपक्षे पंचमी भृगो अद्येह श्री घनैहेन्द्रगे चन्द्रप्रभचैत्यालये श्री मूलसंघे भारतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनंदि देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री ३ देवेन्द्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० विद्यानंदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री श्री श्री .... ।

१३२५. प्रतिसं० २५ । पत्रसं० १०८ । आ० १०½×५½ इञ्च । ले०काल सं० १७१५ मंगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति—सं० १७१५ मार्गशिर सुदी ११ लिखितं ब्रह्म सुखदेव स्वयमात्मा निमित्त नैणपुरमध्ये । सूरसिंह सोलंकी विजयराज्ये शुभं श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भ. श्रीपद्मकीर्ति ब्रह्म सुखदेव पठनार्थं । लिखितं सुखदेव ।

१३२६. प्रतिसं० २६ । पत्र सं० ६६ । आ०१०×४½ इञ्च । ले०काल सं० १७६१ माघ बुदी ६ । पूर्ण ।वेष्टन सं० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—प्रशस्ति । सं० १७६१ वर्षे शाके १६२८ प्रवर्त्तमाने माघ मासे कृष्णपक्षे षष्ठमिति को शुक्रवासरे पंडितोत्तमपंडित श्री १०८ श्री अमरविमलजी तत् शिष्य गणे श्री ३५ श्री रत्नविमलजी तत् शिष्य मुनि मेघविमलेन लिखितं नयणवानगरमध्ये साहजी श्री जोधराजजी पुस्तकोपरि लिपि कृता दीवानश्री बुधराज्ये शुभं भवतु । श्री रस्तु ।

१३२७. प्रतिसं० २७ । पत्र सं० ११३ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—कठिन शब्दों के अर्थ दिये हुए हैं । प्रशस्ति वाला अन्तिम पत्र नहीं है । प्रति प्राचीन है ।

१३२८. प्रतिसं० २८ । पत्र सं० ६७ । आ० १३½×६½ इञ्च । ले० काल सं० १६३५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा ।

विशेष—चन्दालाल बैद ने नैणवा के मंदिर में लिपि करवा कर चढ़ाया था ।

१३२९. प्रतिसं० २९ । पत्रसं० ८२ । आ० १० × ४ इञ्च । ले०काल सं० १६०३ माघ बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है

अथ संवत्सरेस्मिन श्रीविक्रमादित्यराज्ये संवत् १६०३ वर्षे माघ वदि २ शुक्रवासरे निज सोभासर्द्धितस्वर्गे श्रीमण्डवग्रामपुरे ।। श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा : । तदाम्नाये मंडलाचार्य श्री धर्मकीर्तिदेवा दिगंतरालाचार-सैद्धांतिकचक्रवर्त्याचार्य श्रीनेमिचन्द्रदेवास्तत् शिष्यशिष्यालंकाचार्य श्री जिनदासब्रह्म । तदाम्नाये महलयाल कुल कमलभानुसाहु पद्म, तद्भार्या पद्महो तयो ज्येष्ठ पुत्र साहु लोला भार्या देवल । प्रथम पुत्र वाला तद्भार्या कपूरी । द्वितीय पुत्र डूंगर । तद्भार्या अणमा । साहु पद्म द्वितीय पुत्र साहु डाला तद्भार्या चाऊ प्रथम पुत्र धनपालु तद्भार्या रूडी द्वितीय पुत्र कौरू । तृतीय पुत्र खेता । चतुर्थ पुत्र मणिक्कस्

साहु पद्म, तृतीय पुत्र दूलहू तद्भार्या संरो। तेयो पुत्र ऊधा। एतेषां मध्ये साहु लोल पद्मनंदि पंचविंशतिकां कर्मक्षयनिमित्तं लिख्यावि।

१३३०. **प्रति सं०** ३०, पत्रसं० ६१ : आ० १२ × ५½ इञ्च। **ले०काल** सं० १५९३। पूर्ण। वेष्टन सं० २४-५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—सं० १५९३ वर्षे चैत्र सुदी १ सोमे श्रीमूलसंघे भ० श्री विजयकीर्ति तत् भ० श्री **कुमुदचन्द्र** (शुभचन्द्र) तद् ब्रह्म भोजा पाठनार्थं।

१३३१. प्रति संख्या ३१। पत्रसं० ६७। आ० १२ × ४ इञ्च। ले०काल सं० १७९५। पूर्ण। वेष्टन सं० २४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक।

१३३२. प्रति सं० ३२। पत्रसं० ५३। आ० ११ × ८ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ९८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, पंचायती दूनी।

विशेष—स्वोबक्स दंसा वालों ने प्रतिलिपि की थी। शिवजीराम के शिष्य पं० नेमीचंद के पठनार्थ दूणी में हीरालाल कोठ्यारी ने इसे भेंट स्वरूप प्रदान की थी। पं० हीरालाल नेमीचंद की पुस्तक है।

१३३३. प्रति सं० ३३। पत्रसं० ८६। आ० ११½ × ५½ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २६९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

विशेष—प्रति प्राचीन है। अन्तिम पत्र नहीं है।

१३३४. प्रति सं० ३४। पत्रसं० ४५-७९। आ० ११ × ५ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनंदन स्वामी, बूंदी,

१३३५. प्रतिसं० ३५। पत्रसं० ६०। आ० १२ × ५ इञ्च। ले०काल सं० १७८८ पौष सुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० १०६। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी।

विशेष- पं० छाकुराम ने प्रतिलिपि की थी।

१३३६. पद्मनंदिपंचविंशति टीका— × । पत्रसं० १३५। आ० १२½ × ७ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—आचार शास्त्र। र०काल ×। ले०काल सं० १९३८। पूर्ण। वेष्टन सं० १२१५। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर।

१३३७. पद्मनंदिपंचविंशति टीका— ×। पत्रसं० ९२। आ० ११½ × ५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—आचार शास्त्र। र०काल ×। ले०काल सं० १७५२ आसोज सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन सं० १०२२। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

१३३८. पद्मनन्दिपंचविंशतिका—पत्रसं० २४७। आ० ११ × ५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—आचार शास्त्र। र०काल ×। ले० काल सं० १६७१ आषाढ़ बुदी २। पूर्ण। वेष्टनसं० ११५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

लेखक प्रशस्ति—संवत् १६७१ वर्षे आषाढ बुदी २ बार सोमवासरे हरियाणादेसे पथ-वास्तव्ये अकब्बर सुत जहांगीर जलालदी सलेमसाहि राजि प्रवर्त्तमाने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्री विजयसेनदेवास्तत्पट्टे सिद्धान्तेक्षजलसमुद्रविवेककलाकमलिनी-विकाशनैक-दिवामणि भट्टारक नयसेनदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री अस्वसेनदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री अनंतकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री क्षेमकीर्तिदेवा तत्पट्टे

श्री हेमकीर्तिदेवातत्पट्टे भट्टारक श्रीकुमारसेनदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री हेमचंद्रदेवा तत्पट्टे श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे पंचमहाव्रतधारका पंचसमिति-त्रिगुप्ति-गुप्तान् देश-विदेस-विज्ञानमान् पंच-रस-त्यागी भट्टारक यशः कीर्ति तत्पट्टे निर्ग्रंथचूडामणि बावीस-परीसह-साहन-सीला कमलमलिनगात्रान् चारित्रपात्रान् गिरनैरि-जात्रा लब्धि-विजयानय-रोपणीरो भट्टारक श्रीगुणचंद्र तत्पट्टे कुंदेंदुहारहास-काश-संकाश जशोभर धनतर-धनसार-पूर-पूरित चतुर्दश ब्रह्मांड-भांडान् श्री जिनसासन-उद्धरण परम भट्टारक-मन्यत् भट्टारक सकलचंद्र तदाम्नाये श्रीओसवान्वये सिंघलगोत्रे बूल्हाणि सुवर्णपथ-वास्तव्ये साह पलगी तस्य भार्या साध्वी चीमाही तस्य पुत्र ६··· ··· एतेषांमध्ये सर्वोत्कृष्टनिर्मलं श्रीवर्द्धमानं द्रव्यगुणपर्यायं श्रद्धापर शास्त्रदान निरंतरायकारी चतुषष्टिकलासुन्दर सुन्दरी निहकर-क्रीडा-विहारान् राज्ञः सभा सुकल-कल-कामिनी मनः क्रम कांतियुत-कंठ-भूषण-हारिहारान् चौधरी भवानीदास सुतेनेदं पद्मनंदिपंचासिका टीका लिखायितं ॥

१३३९, पद्मनन्दिपंचविंशति टीका × । पत्रसं० २०७ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

१३४०. पद्मनंदिपच्चीसी भाषा-जगतराय । पत्र सं० १०४ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—आचार शास्त्र । र० काल सं० १७२२ फागुन सुदी १० । ले० काल सं० १८ ६१ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० २९४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरह पंथी दौसा ।

१३४१. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ११८ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८९ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

१३४२. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० १०१ । आ० १२½ × ७ इञ्च । ले०काल सं० १९६२ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं०—७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मंदिर अलवर ।

१३४३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३४ । आ० १०½ × ५ इञ्च । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० ८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

१३४४. पद्मनंदि पच्चीसी भाषा—मन्नालाल खिन्दूका । पत्रसं० ३८३ । आ० १४ × ७ इञ्च । भाषा—राजस्थानी (ढूंढारी) गद्य । विषय—धर्म (आचार शास्त्र) । र० काल सं० १९१५ मंगसिर बुदी ५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५७४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिरअजमेर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

१३४५. प्रति सं० २ । पत्रसं० २४९ । आ० १३½ × ८ इंच । ले०काल सं० १९६१ सावन सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

१३४६. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० २५ । आ० १४ × ८ इंच । ले०काल सं० १९५८ सावन बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

१३४७. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० २८७ । आ० १२ × ८ इंच । ले०काल सं० १९३३ चैत बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—भैरुलाल पहाड़िया चूरुवाले से मंदिरों के पंचों ने लिखवाया था ।

१३४८. प्रतिसं० ५ । पत्रसं० २८३ । आ० १३ × ७ इञ्च । ले०काल सं० १९३० आषाढ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—पं० मिश्र नन्दलाल ने चन्द्रापुरी में प्रतिलिपि की थी। चुन्नीलाल सांवका की बहु एवं मोतीलाल शाह की बेटी जानकी ने भेंट किया था।

१३४६. पद्मनंदि पच्चीसी भाषा × । पत्रसं० ४२ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय – धर्म । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल टौंक ।

१३५०. पद्मनंदि श्रावकाचार—पद्मनन्दि । पत्रसं० १४ । आ० १३×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २०६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

१३५१. प्रति सं० २ । पत्रसं० ५८ । आ० ११$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इंच । ले० काल सं० १७१३ भादवा बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२८६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन, मंदिर अजमेर ।

१३५२. प्रति सं० ३ । पत्रसं० ५७ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १८५४ चैत्र बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४६८ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

१३५३. प्रति सं० ४ । पत्रसं० ६१ । आ० १०×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टनसं० ११० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर भादवा (राज०) ।

१३५४. प्रति सं० ५ । पत्रसं० ५६ । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा पंचायती डीग ।

१३५५. पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय—अमृतचन्द्राचार्य । पत्रसं० ११ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । र०काल—× । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टनसं० १४७२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम 'जिन प्रवचन रहस्यकोष' भी है ।

१३५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २–१५ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है । ८ पत्र तक संस्कृत टिप्पणी भी हैं ।

१३५७. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० ४६ । आ० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ । ले०काल सं० १८१७ ज्येष्ठ सुदी १५ । वेष्टनसं० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रति नैणसी कृत संस्कृत टीका सहित है ।

१३५८. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० ८ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ । ले०काल सं० १७४७ भादवा सुदी १३ । वेष्टनसं० ६१/५६ । **प्राप्ति स्थान**–दि जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष द्रव्यपुर पत्तन में खेमा मनोहर अमर के लिए प्रतिलिपि हुई थी ।

१३५९. प्रति सं० ५ । पत्रसं० ४२ । आ० १३×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६ । **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन मंदिर तेरहपंथी दौसा ।

१३६०. प्रति सं० ६ । पत्रसं० २७ । ले० काल सं० १८८१ मङ्गसिर सुदी ३ पूर्ण । वेष्टनसं० २१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर, भरतपुर ।

१३६१. प्रति सं० ७ । पत्रसं० २६ । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल सं० १७५० । पूर्ण । वेष्टन सं० १५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—कामा में प्रतिलिपि हुई थी ।

१३६२. प्रति सं० ८ । पत्रसं० ११ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१३६३. पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय भाषा—महापंडित टोडरमल । पत्रसं० ८९ । आ० १२½×६½ इञ्च । भाषा—राजस्थानी (ढूंढारी) गद्य । विषय—धर्म । र० काल सं० १८२७ । ले० काल सं० १८९५ मङ्गसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५३४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—इस ग्रंथ की अधूरी टीका को पंडित दौलतरामजी कासलीवाल ने संवत् १८२७ में पूरा किया था ।

१३६४. प्रति सं० २ । पत्रसं० १२९ । आ० ११½×६ इञ्च । ले० काल सं० १८४८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

१३६५. प्रति सं० ३ । पत्रसं० १२७ । आ० १२½×६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

१३६६. प्रति सं० ४ । पत्रसं० ७४ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले० काल सं० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर तेरहपंथी दौसा ।

१३६७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २१ । आ० १२½ × ७½ इञ्च । ले० काल— × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मंदिर बयाना ।

१३६८. प्रतिसं० ६ । पत्रसं० १८९ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३२ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर (बयाना) ।

१३६९. प्रतिसं० ७ । पत्रसं० ९९ । आ० १२ × ३ इञ्च । ले०काल सं० १९११ माघ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी ।

विशेष—चाकसू में प्रतिलिपि हुई थी ।

१३७०. प्रति सं० ८ । पत्रसं० ८२ । आ० १३ × ६ इञ्च । ले० काल सं० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूंदी ।

१३७१. प्रति सं० ९ । पत्रसं० ८८ । आ० १२ × ६½ इञ्च । ले० काल स० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मंदिर नैणवा ।

विशेष—ब्राह्मण सीताराम नागपुर मध्ये लिपि कृतं ॥

१३७२. प्रति सं० १० । पत्र सं० ८१ । आ० १३ × ७½ इञ्च । ले० काल सं० १९२९ । पूर्ण । वेष्टन सं० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोठ्यों का नैणवा ।

विशेष—लोचनपुर में भोपतराम जी भागाराम जी ठग ने बलदेव भट्ट से प्रति कराकर कोठ्यों के मंदिर में भेंट की थी ।

१३७३. प्रति संख्या ११ । पत्रसं० १२५ । आ० ११½ × ६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

१३७४. प्रति सं० १२ । पत्रसं० ८७ । आ० १२½ × ५½ इञ्च । ले०काल सं० १८६२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०६/२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ कोटा ।

विशेष—ब्राह्मण भोपतराम ने सवाईमाधोपुर में प्रतिलिपि की थी । यह प्रति उ णियारा के मंदिर के वास्ते लिखी गयी थी ।

१३७५. प्रति सं० १३ । पत्रसं०–१२८ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७५/१७० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मंदिर अलवर ।

१३७६. प्रति सं० १४ । पत्र सं० १२४ । ले०काल सं० १९२० । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८–१७० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

१३७७. प्रति सं० १५ । पत्र सं० १०४ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ९५–१०४ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर पंचायती अलवर ।

१३७८. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ९६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

१३७९. प्रति सं० १७ । पत्रसं० ८० । ले० काल सं० १८७२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२२ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन पंचायती मन्दिर, भरतपुर ।

१३८०. प्रति सं० १८ । पत्रसं० ७४ । ले० काल सं० १८९५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

१३८१. प्रतिसं० १९ । पत्रसं० ८८ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले० काल– × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०६ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

१३८२. प्रति सं० २० । पत्र सं० ९३ । आ० १२ × ७ इञ्च । ले० काल सं० १८७६ सावण बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४९ । **प्राप्ति स्थान**· दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

विशेष- -दौलतराम जी ने टीका पूर्ण की थी । जोधराज ने प्रतिलिपि कराई थी ।

१३८३. प्रति सं० २१ । पत्र सं० १२८ । लेखन काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर हण्डावालों का डीग ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

१३८४. प्रति सं २२ । पत्र सं० ९२ । आ० १२ × ८ इञ्च । ले० काल सं० १८७८ क्वार सुदी २ पूर्ण । वेष्टन सं० २ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

१३८५. प्रति सं० २३ । पत्र सं० १०९ । आ० १२½ × ५½ इञ्च । ले० काल सं० १८६० माघ बुदी ऽऽ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

१३८६. प्रति सं० २४ । पत्र सं० १०० । आ० ११½ × ८ । ले० काल सं० १९४१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४–४८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बड़ा डीग पंथी दौसा ।

विशेष—रतनचंद दीवान की प्रेरणा से दौलतराम ने टीका पूर्ण की थी । शिवसुख ने दौसा में प्रतिलिपि की । पुस्तक छोटीलाल जी बिलाल ने दौसा के मन्दिर में चढ़ाई ।

१३८७. प्रति सं० २५। पत्र सं० १५२। आ० १०½ × ५ इञ्च। ले० काल सं० १९१८ वैशाख सुदी ४। पूर्ण। वेष्टन सं० ९२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—रघुनाथ ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी। लाला सुखानन्द की धर्म पत्नी ने अनंतव्रत चतुर्दशी उद्यापन में सं० १९२९ भादवा सुदी १४ को बड़ा मन्दिर में चढ़ाई।

१३८८. प्रति सं० २६.। पत्र सं० १०८। आ० १३ × ६½ इञ्च। ले० काल सं० ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक।

विशेष—राजमहल मध्ये सा. तेजपाल जी भाई नाथूराम जी तस्य पुत्र नेमलाल ज्ञाति खंडेलवाल गोत्र कटारया ने ब्राह्मण सुखलाल से प्रतिलिपि कराकर चन्द्रप्रभ चैत्यालय में विराजमान कराया।

१३८९. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय भाषा—×। पत्र सं० ८२। आ० १२×७ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—धर्म। र० काल—×। ले० काल सं० १९८१। पूर्ण। वेष्टन सं० ५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर स्वामी बूंदी।

विशेष चंदेरी में (ग्वालियर राज्य) प्रतिलिपि हुई। प्रति मूला साह के मन्दिर की है।

१३९०. परिकर्म विधि ×। पत्र सं० ५३। आ० १०×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत (पद्य)। विषय—धर्म। र० काल—×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १०। **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रत्येक पत्र पर १० पंक्ति एवं प्रति पंक्ति में ३४ अक्षर हैं।

१३९१. पाण्डवी गीता—×। पत्र सं० ११। आ० ९×५½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—धर्म। र० काल—×। ले० काल सं० १९९७ आषाढ़ सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन सं० १२८। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

१३९२. पुण्यफल—×। पत्र सं० १। आ० १०½ × ४½ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—धर्म। र० काल—×। ले० काल—×। पूर्ण। वेष्टन सं० २६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

१३९३. प्रतिज्ञापत्र। पत्र सं० १। भाषा—हिन्दी। विषय—आचार। र० काल—×। ले० काल सं० १९८८। पूर्ण। वेष्टन सं० ४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

१३९४. प्रतिमा बहत्तरी—ज्ञानतराय। पत्र सं० ६। आ० १०½ × ३ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। र० काल—×। ले० काल सं० १९०७। पूर्ण। वेष्टन सं० ४५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

१३९५. प्रव्रज्याभिधान लघुवृत्ति—×। पत्र सं० २ से १० तक। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—आचार शास्त्र। र० काल—×। ले० काल सं० १५८१ आसोज सुदी १३। अपूर्ण। वेष्टन सं० २११। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

१३९५. प्रश्नमाला भाषा—×। पत्र सं० २०। आ० १३×६½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। र० काल—×। ले० काल सं० १९०७ पौष सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन सं० ५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मंदिर बयाना

विशेष—ला० तेजराम से ग्रंथ की प्रतिलिपि करवायी थी।

१३९७. प्रश्नमाला—× । पत्र सं० ३८ । आ० ११½ × ६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—सुदृष्टितरंगिणी में से पाठ संग्रह किया गया है ।

१३९८. प्रश्नोत्तर मालिका—× । पत्र सं० ४२ । आ० ९ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । र०काल—× । ले०काल सं० १८९० । पूर्ण । वेष्टन सं० ५८ ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

प्रशस्ति—संवत् १८९० वर्षे शाके १७५५ प्रवर्त्तमाने उत्तरगोले उत्तरायनगते सूर्ये ग्रीष्म दिने महामंगल्य प्रदेशे मासोत्तममासे ज्येष्ठ मासे कृष्ण पक्षे तिथौ २ रविवासरे उदैपुर मध्ये (कुशलगढ़) आदिनाथ चैत्यालये मंडलाचार्य श्री रामकीर्ति जी लिखितं ग्रंथ प्रश्नोत्तर मालिका सम्पूर्ण ।

१३९९. प्रश्नोत्तररत्नमाला वृत्ति—आचार्य देवेन्द्र । पत्र सं० १४३ । आ०१० × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ११९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है । १४३ से आगे पत्र नहीं है । इत्याचार्य श्री देवेन्द्र विरचितायां प्रश्नोत्तर रत्नमाला वृत्तौ परधनामचारणायां नागदत्ता कथा ।

१४००. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४–१५१ । आ० ९½ × ४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

१४०१. प्रश्नोत्तर रत्नमाला—× । पत्र सं० १९ । आ० ९½ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल सं० १८७१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३७-१६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, कोटडियों का डूंगरपुर ।

१४०२. प्रश्नोत्तर श्रावकाचार—भ. सकलकीर्ति । पत्र सं० २०९ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल सं० १७०० फागुण सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३३६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—ले० काल के अतिरिक्त निम्न प्रकार और लिखा है—सं० १८०१ माह सुदी १४ को अजमेर में उक्त ग्रंथ की प्रतिलिपि हुई ।

१४०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११५ । आ० ९½ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १८४० आषाढ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२६५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१४०४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५१ । ले०काल सं० १६६५ माघ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२८५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१४०५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३२ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०५४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१४०६. । प्रति सं० ५ । पत्र सं० ९५ । ले०काल सं० १५८२ भादवा सुदी ११ भौम दिने । पूर्ण । वेष्टन सं० ९९० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—श्री मूलसंघे लिखितं नानू भोजराजा सुत ।

१४०७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७३ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१४०८. प्रति सं० ७ । पत्रसं० ७२ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल सं० १५५३ श्रावण बुदी । पूर्ण । वेष्टन सं० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

प्रशस्ति—राउल गङ्गदास विजयराज्य सं० १५५३ वर्षे श्रावण मासे शुक्लपक्षे सोमे गिरिपुरे श्री आदिनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भट्टारक श्री ज्ञानभूषण आचार्य श्री रत्नकीर्ति हुंबडज्ञातीय श्रेष्ठि ठाकार भाई रूपिणी सुत साहसा भार्या सहिजलदे एते धर्मश्रवणोत्तर पुस्तकं लिखापितं । मुनि श्री माधवंदि दत्तं ।

१४०९. प्रतिसं० २ । पत्र सं० १२४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर, अजमेर ।

१४१०. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० १६४ । आ० ९½×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१४११. प्रति सं० ४ । पत्रसं०-१६ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स०—१४१७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१४१२. प्रति सं० ५ । पत्रसं० १६ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं०—१२८३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१४१३. प्रतिसं० ६ । पत्रसं० ५४ । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल—सं० १८६५ फागुण बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं०—११८६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१४१४. प्रतिसं० ७ । पत्रस० १६० । आ० १२½×४¾ इञ्च । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल सं० १८१३ फागुन बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ७, १० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर सौगाणियों का करौली ।

विशेष—साहिबराम सौगाणी ने करौली में प्रतिलिपि की थी ।

१४१५. प्रतिसं० ८ । पत्रसं० १३२ । आ० १०½×४ इञ्च । ले० काल सं० १६९४ पौष सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०८ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

प्रशस्ति संवत् १६९४ वर्षे **पौष** सुदी १४ तिथौ बुधवासरे मृगसिरनक्षत्रे महाराजाधिराज श्री माधवसिंह जी राज्ये कोटा नगरे श्री महावीरचैत्यालये श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे **कुन्दकुन्दान्वये** भट्टारक श्री प्रभाचंददेवा तत्पट्टे भ० श्रीचंदकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री देवेन्द्रकीर्त्ति देवा तत्पट्टे भट्टारकेन्द्र भट्टारक श्री नरेन्द्रकीर्त्ति तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये सोगाणी गोत्रे साह श्री सोगा तद्भार्ये द्वे ··· ···ऐलषां मध्ये सम्यक्त्वालङ्कृतगात्र–शीलविभूति–सौजन्ये दार्ढ्यवीर्यादिगुणावलिभूषित साहजी नांदा तस्य भार्या चतुर्विध··· ···· ।

१४१६. प्रतिसं० ९ । पत्रसं० ९१ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले०काल सं० १७३२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २९ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—ब्र० वादिचन्द्र के पठनार्थ लिखा गया था ।

१४१७. प्रतिसं० १० । पत्रसं० ८८ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० २९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक) ।

विशेष—चतुर्थ परिच्छेद तक है ।

१४१८. प्रति सं० ११ । पत्रसं० १३४ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल संख्या १८५७ माघ बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १०४ । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर पंचायती दूगी (टोंक) ।

विशेष—श्री सन्तोषराम जी स्वोजीराम जी ने पंडित सीताराम से प्रतिलिपि कराई थी ।

१४१९. प्रतिसं० १२ । पत्र सं० १०१ । आ० ११½ × ८ इञ्च । ले० काल सं० १५९७ । पूर्ण । वे० सं० १४ ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स्वस्ति संवत् १५९७ वर्षे द्वितीय चैत्रमासे शुक्लपक्षे द्वितीयादिने रविवासरे अद्येह घिनोई दुर्गे श्री चन्द्रप्रभचैत्यालये श्री मूलसंघे श्रीसरस्वतीगच्छे श्रीबलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री देवेन्द्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० विद्यानन्दिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री मल्लिभूषण देवास्तत्पट्टे भ० श्री लक्ष्मीचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री वीरचन्द्रदेवास्तत्पट्टे श्री भट्टारक श्री ज्ञानभूषणदेवाभ्यो नमोस्तु । मुमुक्षुणा **सुमतिकीर्तिना** कर्मक्षयार्थं श्रावकाचारो ग्रंथोलिखितः ग्रंथ सं० २८८० ।

१४२०. प्रति सं १३ । पत्र सं० ११६ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल सं० १७५२ वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १७५२ वर्षे वैशाख बुदी ५ सोमवासरे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री रत्नचन्द तत्पट्टे भट्टारक श्री हर्षचन्द्र तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्र तत्पट्टे सकलतार्किकचक्रचूडामणी भट्टारक श्री अमरचन्द्र विजय राज्ये तदाम्नाये ब्रह्मचारी श्री नागराज तच्छिष्य रत्नजी विनयविनत पंडितशिरोमणीनां प्रश्नोत्तरसारा श्रावकाचारिय ग्रंथ स्वहस्तेन लिखितमस्ति श्री मद्यानपत्तने श्रीमज्जीर्णग्रामादे आदिनाथचैत्यालये तत्रस्थित्वा लिखितायं ग्रंथ ।

१४२१. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ९१ । आ० १२×६ इञ्च । ले०काल सं० १९१० । पूर्ण । वेष्टन सं० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली (कोटा) ।

विशेष—प्रशस्ति संवत् १९५० समये वैशाख बुदी चउथी ४ लिखायित पुस्तक जयराम पांडे श्रावक लिखतं खेमकरण सुत दुर्गादास मुकाम हाजिपुर नगरे भव्य देवहरा सुभस्य ।

१४२२. प्रति सं० १५ । पत्र सं० १७० । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल सं० १८११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दीर बोरसल. कोटा ।

विशेष—पंडित श्री भार्गवदास के शिष्य **नवनिधिराम** नामरचाल देश में महाराज सरदारसिंह जी के शासनकाल में नगरग्राम में चतुर्विंशति तीर्थंकर चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

१४२३. प्रति सं० १६ । पत्र स० १३० । ले०काल १-३२ । आसाढ बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

१४२४. प्रतिसं० १७ । पत्र सं० १२७ । ले०काल सं० × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

१४२५. प्रति सं० १८ । पत्र संख्या—११६ । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१७ । **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१४२६. प्रति सं. १६ । पत्र सं० १७८ । आ० ११×४½ इञ्च । ले०काल—× । पूर्ण । वे०सं० ३६ । **प्राप्ति स्थान** -- दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१४२७. प्रति सं. २० । पत्र सं० १४० । आ० ११×७ इञ्च । ले० काल सं० १८३६ माह बुदी ६ । पूर्ण । वे. सं० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१२२८.प्रति सं० २१ पत्र सं० ७६ । आ० १३½×५½ इञ्च । ले० काल सं० १६६६ भाद्रपद । पूर्ण । वे० सं० २४७ । **प्राप्ति स्थान** -- दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

१४२६. प्रति सं० २२ । पत्रसं० ८ । आ० ११×४½ इञ्च । ले०काल सं० १७०८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**- -दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

१४३०. प्रतिसं० २३ । पत्रसं० १४८ । आ० १२ × ४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २५६--५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सम्भवनाथ मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है । प्रति प्राचीन है ।

१४३१. प्रति सं २४ । पत्र सं०२१४ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

१४३२. प्रति सं० २५ । पत्र सं० ८३–१५७ । आ० १२ × ५½ इञ्च । लेखन काल सं० १६०३ पौष सुदी १० । अपूर्ण । वे० सं० ७४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—अलवरगढ़ महादुर्ग में सलेमशाह के राज्य में प्रतिलिपि हुई थी । ग्रंथ लिखवाने वाले की विस्तृत प्रशस्ति दी है ।

१४३३. प्रति सं. २६ । पत्र सं० १–६७ । आ० ११½×६ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१४३४. प्रति सं० २७ । पत्रसं० ६७ । आ० ११×७½ इञ्च । ले०काल सं० १८८२ मंगसिर सुदी १२ । वेष्टनसं०—१६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—किशनगढ़ निवासी महात्मा राधाकृष्ण ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

१४३५. प्रति सं० २८ । पत्र सं० ४२ । आ० १२×५½ । ले०काल सं० १८१६ फाल्गुण बुदी ८ । वेष्टन सं० १४४ । **प्राप्ति स्थान**– शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—सवाई जयपुर में व्यास गुमानीराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१४३६. प्रति सं० २९ । पत्र सं० ६० । आ० ११½ × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान (बूंदी) ।

१४३७. प्रति सं० ३० । पत्र सं० ६७ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१४३८. प्रति सं० ३१ । पत्र सं० ६५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६० । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१४३९. प्रति सं० ३२ । पत्र सं० ५६ । आ० ११×४½ इञ्च । ले० काल सं० १६९४ पूर्ण । वेष्टन सं० ११९-५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

प्रशस्ति - संवत् १६९४ वर्षे ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे १५ रवौ लिखितं ब्र० श्री ठाकरसी तत् शीष्य आचार्य श्री अमरेचन्द्र कीर्ति ... ... ।

१४४०. प्रश्नोत्तर श्रावकाचार भाषा वचनिका- × । पत्र सं० ८९ । आ० १४×६½ इञ्च । भाषा—संस्कृत हिन्दी (गद्य) विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० १४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

१४४१. प्रश्नोत्तर श्रावकाचार भाषा वचनिका—× । पत्र सं० ५४ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० १९१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

१४४२. प्रायश्चित ग्रंथ × । पत्र सं० ३२ । आ० ९×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत-हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १९०४ माघ बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३० । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

१४४३. प्रायश्चित ग्रंथ --× । पत्र सं० ३० । आ० ९×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत-संस्कृत । विषय-- आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १९ ।
प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष - झालरापाटन के संभवनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी ।

१४४४. प्रायश्चित शास्त्र—मुनि वीरसेन । पत्र सं० १८ ; आ० ११×५½ । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १९०४ द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ला १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३० । **प्राप्तिस्थान**--दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष—ग्रंथ समाप्ति के बाद लिखा हुआ अंश—

तर्कव्याकरणे जिनेन्द्रवचने प्रख्यातमान्यो गुरुः ।
श्रीमल्लक्षणसेनपंडितमतिः श्री गौरसेनोद्भवः ॥
सिद्धान्ते जनि पद्मगुरुः सुविदितः श्री वीरसेनो मुनिः ।
तैरेतद्रचितं विशोध्यमखिलं श्री वीरसेनाभिधैः ॥
सम्वत् १९०४ वर्षे ज्येष्ठ द्वितीय शुक्ल १५ सोमवारे ।

१४४५. प्रायश्चितशास्त्र—अकलंकदेव । पत्र सं० ६ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार । र० काल × । ले० काल सं० १४४८ फागुण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११४१ । **प्राप्तिस्थान**—भट्टारकीय दि० जैन भण्डार अजमेर ।

१४४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । आ० ९½×५½ इञ्च । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन सं० १९८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ बूंदी ।

१४४७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । आ० ४×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

१४४८. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० ८ । आ० ६$\frac{१}{२}$×४$\frac{१}{२}$ इञ्च । ले०काल सं० १८८५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—सं० १८८५ लिपि कृतं पं० रतिरामेण । श्री चन्द्रप्रभाचैत्यालये ।

१४४९. प्रायश्चित समुच्चय वृत्ति—नन्दिगुरु । पत्र सं० ५२ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-आचारशास्त्र । ले०काल × । ले०काल सं० १५६४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

१४५०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ । आ० १०$\frac{३}{४}$×५$\frac{१}{४}$ इञ्च । ले०काल × । **अपूर्ण ।** वेष्टन सं० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१४५१. बाईस अभक्ष्य वर्णन— × । पत्र सं० ६३ । आ० १०$\frac{१}{२}$×७$\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

१४५२. बाईस परीषह-सुखरदास । पत्र सं० ३-१४ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

१४५३. बालप्रबोध त्रिशतिका-मोतीलाल पन्नालाल । पत्र सं० ६५ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र० काल सं० १९७७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

१४५४. बुद्धिप्रकाश-टेकचंद । पत्र सं० ६४ । आ० १३$\frac{३}{४}$×६$\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—धर्म । र० काल सं० १८२६ ज्येष्ठ बुदी ८ । ले० काल सं० १९८० फाल्गुण सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १३४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

आदिभाग—

मन दुख हर कर शिवसुरां नरा सकल दुखदाय ।
हरा कर्म अष्टक अरि, ते सिध सदा सहाय ।।
त्रिभुवन तिलक त्रिलोक पति त्रिगुणात्मक फलदाय ।।
त्रिभुवन फिर तिरकाल सैं तीर तिहारे आप ।।२।।

अन्तिम भाग—

संमत अष्टादश सत जोय, और छत्रीस मिलावो सोय ।
मास जेठ बुदि आठेसार, ग्रंथ समापत को दिनधार ।।२२।।
या ग्रंथ के अवधार तें विधि पूरव बुधि होय ।
छंद ढाल जानै धनी समुझे बुधजन जोय ।।२३।।
तातैं मो निज हित चहौ, सो यह सीख सनाय ।
बुधि प्रकास सुध्याय के बाढ़ै धर्म सुभाय ।।२४।।

पढ़ो सुनो सीखो सकल, बुध प्रकास कहंस ।
ता फल शिव अघ नासिकै टेक लहो शिवसंत ।।२५।।

इति श्री बुधप्रकाश नाम ग्रंथ संपूर्ण । पंडित कृपाराम चौबे ने प्रतिलिपि की थी । विविध धर्म सम्बन्धी विषयों का सुन्दर वर्णन है ।

२४५५. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ११५ । आ० १२½×६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—प्रथम यह इन्दौर में लिखा गया फिर भाडल में इसे पूरा किया गया ।

१४५६. बुद्धिवि -बख्तराम । पत्र सं० १०१ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—धर्म । र० काल सं० २७ । ले० काल सं० १८६६ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १२१-१०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—इसमें जयपुर नगर का ऐतिहासिक वर्णन भी है ।

१४५७. ब्रह्मबावनी-निहालचन्द । पत्र सं० ४ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र० काल सं० १८०१ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—मकसूदाबाद (बंगाल) में ग्रंथ रचा गया था ।

१४५८. प्रश्नोत्तरोपासकाचार-बुलाकीदास । पत्रसं० ११६ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—आचार शास्त्र । र० काल सं० १७४७ वैशाख सुदी २ । ले० काल सं० १८०३ माघ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन शास्त्र भंडार अजमेर ।

१४५९. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १६२ । ले० काल सं० १८७९ भादों सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—प्रति दीवान जोधराज कासलीवाल ने लिखवाई थी ।

१४६०. प्रति सं० ३ । पत्रसं० १४२ । ले० काल सं० १८१३ आसोज बदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २९८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—निहालचन्द जती द्वारा लिखी गयी थी ।

१४६१. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० १२४ । आ० ११×८ इञ्च । ले० काल सं० १८८८ कार्तिक बदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

१४६२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १२१ । लेखन काल सं० १८३३ पौष बदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डावालों का डीग ।

१४६३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ११९ । ले० काल सं० १८२७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी अलवर ।

१४६४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ११८ । आ० १०×५½ इञ्च । ले० काल सं० १८५७ आषाढ़ सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ९३-६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, तेरहपंथी दौसा ।

विशेष – चिमनराम तेरापंथी ने इसकी प्रतिलिपि की तथा दौलतराम तेरापंथी ने इसे दौसा के मन्दिर में चढ़ाया था।

१४६५. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १२६ । ले०काल सं० १७६१ कार्तिक सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२–१५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर, अलवर ।

१४६६. प्रतिसं० ६ । पत्र सं० १६१ । ले० काल सं० १८८५ पौष बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३–१५६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

१४६७. प्रति सं० १० । पत्र सं० १४२ । आ० ६$\frac{1}{2}$×६$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल सं० १८०० चैत सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १० । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

१४६८. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १–५७ । आ०–११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

१४६९. प्रति सं० १२ । पत्र सं० १२१ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४६–६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—मालपुरा में शिवलाल ने लिपि की थी । सं० १९३९ में नंदलाल गोधा की बहू ने टोडा के मन्दिर में चढ़ाया था ।

१४७०. प्रति सं० १३ । पत्र सं० १२७ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ३$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १८५० । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर दबलाना (बून्दी)

१४७१. प्रति सं० १४ । पत्र सं० १०६ । आ० १२×६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१६-११६ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर ।

१४७२. प्रतिसं० १५ । पत्रसं० १५३ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १८२७ । पूर्ण । वेष्टनसं० २००–८१ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

१४७३. प्रतिसं० १६ । पत्रसं० ६६ । आ० ११ × ७ इञ्च । ले०काल सं० १८२३ श्रावण सुदी १ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४०–२७ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर भादवा (राज.)

१४७४. प्रति सं० १७ । पत्रसं० १३५ । आ० ८$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १७५५ वैशाख सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३३ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मंदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

१४७५. प्रति सं० १८ । पत्रसं० १३६ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १७८४ सावण बुदी १ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०२ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

१४७६. प्रतिसं० १९ । पत्रसं० ६७ । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वेष्टनसं० २४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—जीर्ण–पानी में भीगे हुऐ पत्र हैं ।

१४७७. प्रति सं० २० । पत्रसं० १४४ । आ० १२ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल—सं० १७८२ पौष बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

१४७८. प्रतिसं० २१ । पत्रसं० १२४ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले०काल सं० १९१० । पूर्ण । वेष्टनसं० ४६ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक) ।

विशेष—पं० गोविन्दराम ने प्रतिलिपि की थी।

१४७९. **प्रति सं० २२**। पत्र सं० १४१। आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल सं० १८४१ पौष बुदी १२। पूर्ण। वेष्टन सं० २९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटयों का नैणवा।

विशेष—कोट्यों के देहरा में ब्रजवासी के पठनार्थ पंडित अखैराम ने प्रतिलिपि की थी।

१४८०. **प्रति सं० २३**। पत्र सं० ८०। आ० ११$\frac{1}{2}$ × ९ इञ्च। ले०काल— सं० १९१०। पूर्ण। वेष्टन सं० १९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)।

१४८१. **भगवतीआराधना—शिवार्य**। पत्र सं० ११। आ० ११×५ इञ्च। **भाषा**—प्राकृत। विषय—आचार शास्त्र। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १२३। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

१४८२. **प्रति सं० २**। पत्र सं० १२३। आ० १२$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल सं० १७३२ चैत्र सुदी ९। वेष्टन सं० ५७। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—मालपुरा में राजा रामसिंह के शासन काल में प्रतिलिपि हुई थी।

१४८३. **प्रति सं० ३**। पत्र सं० ६५। र०काल × । ले०काल सं० १५११ वैशाख सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन सं० २४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर डीग।

प्रशस्ति—संवत् १५११ वर्षे वैशाख वदि ७ गुरौ पुष्यनक्षत्रे सकलराज–शिरोमुकुट–माणिक्य मरीचि पं० अरीकृत चरणकमलपादपीठस्य श्री राणा कुंभकर्ण सकल-साम्राज्य–धुरी विश्राणस्व समये श्री मंडलगढ शुभस्थाने आदिनाथ चैत्यालये.....।

१४८४. **भगवती आराधना टीका**। पत्र सं० २०८। आ० १२$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा–प्राकृत–संस्कृत। विषय—आचार। र०काल × । ले०काल सं० १९२२ मंगसिर सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन सं० ५३। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है।

१४८५. **भगवती आराधना टीका**। पत्र सं० २८१। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-प्राकृत संस्कृत। विषय—आचार। र०काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० १५४६। **प्राप्ति-स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है। सं० १९११ में यह प्रति सेठ जुहारमल जी सोनी के घर से पढ़ाई गई थी।

१४८६. **भगवती आराधना (विजयोदया टीका) अपराजित सूरि**। पत्र संख्या ११८ से ५९४। आ० ११ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—आचार। र०काल × । लेखन काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ४३८। **प्राप्ति स्थान**— भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

१४८७. **प्रति सं० २**। पत्र सं० ५१४। ले०काल सं० १७९४ भादों वदी ९। पूर्ण। वेष्टन सं० २८९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

१४८८. **प्रति सं० ३**। पत्र सं० ३३३। आ० १२$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल सं० १८९४ चैत्र बुदी ७। वेष्टन सं० ३०। **प्राप्ति स्थान**—शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—महात्मा शंभुराम ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

१४८९. प्रतिसं० ४। पत्रसं० २४८। आ० ११×६ इञ्च। ले०काल सं० १७८६ कार्तिक बुदी १। पूर्ण। वेष्टनसं० १७५। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर।

१४९०. भगवती आराधना टीका—नन्दिभणि। पत्रसं० ४३८। आ० १०½×७ इञ्च। भाषा—प्राकृत-संस्कृत। विषय—आचार शास्त्र। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १६४। **प्राप्तिस्थान**—भट्टारकीय दि० जैन शास्त्र मन्दिर, अजमेर।

१४९१. प्रति सं० २। पत्र सं० ३०८। आ० ११×७ इञ्च। ले०काल सं० १८८८। **पूर्ण**। वेष्टन सं० ११३-७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

विशेष—पं० शिवजीराम की दूणी के चैत्यालय की प्रति है।

१४९२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६५२। आ० ११ × ५½ इञ्च। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा।

१४९३. भगवती आराधना भाषा—पं. सदासुख कासलीवाल। पत्रसं० १५८-४४७। आ० १२½×७ इञ्च। भाषा-राजस्थानी (ढूंढारी) गद्य। विषय-आचार। र०काल सं० १९०८ भादवा सुदी २। ले०काल—सं० १९६१ कार्तिक बुदी १०। अपूर्ण। वेष्टनसं० ४५। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

१४९४. प्रतिसं० २। पत्रसं० ५२४। आ० १४×८½ इञ्च। ले०काल सं० १९६३ भादवा बुदी ऽऽ। पूर्ण। वेष्टनसं० ४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—परसादीलाल गजाधरलाल पद्मावती पोरवाल ने सिकन्द्रा (आगरा) में प्रतिलिपि करवाई थी।

१४९५. प्रतिसं० ३। पत्रसं० ४४८। आ० ११×८ इञ्च। ले० काल सं० १९१४ मङ्गसिर बुदी ७। पूर्ण। वेष्टनसं० २/७। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

१४९६. प्रति सं० ४। पत्र सं० २८३ से ६८१। आ० ११×७½ इञ्च। ले० काल सं० १९१०। आषाढ़ सुदी १४। अपूर्ण। वेष्टन सं० १६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली।

१४९७. प्रतिसं० ५। पत्र सं० ६४६। आ० १०½×४½ इञ्च। ले० काल सं० १९१० मङ्गसीर बुदी १०। पूर्ण। वेष्टन सं० ७६। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन [illegible] मंदिर बयाना।

१४९८. प्रतिसं० ६। पत्रसं० २०१-६७३। ले०काल १९११। पूर्ण। वेष्टनसं० १५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—जयपुर में लिखवाकर ग्रन्थ भरतपुर के मन्दिर में भेंट किया गया।

१४९९. प्रतिसं० ७। पत्रसं० ५००। आ० १३×८ इञ्च। ले०काल सं. १९२७। वेष्टनसं० ९२। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर, अलवर।

१५०० प्रतिसं० ८। पत्र सं० ६०० । आ० १४×७½ इञ्च। ले० काल १९१०। पूर्ण। वेष्टन सं० १३९। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पंचायती मंदिर अलवर।

१५०१. **प्रतिसं० ९** । पत्र सं० ५१९ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १९१० । पूर्ण । वेष्टन सं० १४ १० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती दूनी (टोंक)

१५०२. **प्रतिसं० १०** । पत्र सं० ४६० । आ० १३ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १९१२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोट्यों का नैणवा ।

१५०३. प्रति सं० ९६ । पत्र सं० ४६ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११० । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मंदिर श्रीमहावीर बूंदी ।

१५०४. **प्रति सं० १२** । पत्र सं० ४२० । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ७ इञ्च । ले० काल सं० १९९० मङ्गिसर बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—बयाना के पंच श्रावकों ने मिश्र गनेश महूआ वाले से प्रतिलिपि करायी थी ।

१५०५. **प्रति सं० १३** । पत्र सं० ३०१ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

१५०६. **प्रति सं० १४** । पत्र सं० ४६५ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं ४६-२८ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

१५०७. **प्रति सं० १५** । पत्र सं० ४२४ । आ० १३ × ८ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

१५०८. **प्रति सं० १६** । पत्र सं० २८२ । आ० ११ × ८ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर करौली ।

१५०९. **भद्रबाहु संहिता--भद्रबाहु** । पत्र ७० । आ० ८$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल—वीर निर्वाण सं० २४४९ । पूर्ण । वेष्टन ५६/३५ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर भादवा (राज.)

विशेष—फूलचन्द बड़जात्या ने प्रतिलिपि की थी ।

१५१०. **प्रति सं० २** । पत्र सं० २०-७२ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६०-८९ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राजस्थान)

१५११. **भावदीपक भाषा**-- × । पत्र सं० ५४ । आ० १३ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

१५१२. **भाव प्रदीपिका**— × । पत्रसं० ५०-२१५ । आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण एवं जीर्ण । वेष्टन सं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, तेरहपंथी डीग ।

१५१३. **भावशतक—नागराज** । पत्र सं० ११ । आ० ११ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६१ । **प्राप्ति स्थान**—ब० दि० जैन मंदिर अजमेर । लिपिकर्ता ब्रह्म लालू झांझरी ।

१५१४. भावसंग्रह—वामदेव। पत्र सं० ४२। आ० १४×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—धर्म। र० काल—×। ले०काल—×। पूर्ण। वेष्टन सं० ६१–३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

विशेष—भ० विजयकीर्ति की प्रति है।

१५१५. प्रतिसं० २। पत्रसं० २३। आ० १२×६½ इञ्च। ले०काल सं० १८६१ भादवा सुदी ३। पूर्ण। वेष्टनसं० ४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा।

विशेष—पत्रों को चूहों ने खा रखा है। नोनंदराम जी पुत्र हनुलाल जी ने दौसा के मन्दिर के वास्ते भोपत ब्राह्मण से सवाई माधोपुर में प्रतिलिपि करवाई थी।

१५१६. प्रतिसं० ३। पत्रसं० ४१। आ० ११ × ४¾ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ५३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

१५१७. प्रतिसं० ४। पत्रसं० ४६। आ० ११×४½ इंच। ले० काल सं० १६०३ पौष सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन सं० २६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नागदी बूंदी।

१५१८. प्रतिसं० ५। पत्रसं० ६०। आ० १३×५½ इञ्च। ले० काल सं० १६३३ श्रावण सुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० १। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी।

१५१९. भावसंग्रह—देवसेन। पत्रसं० ३८। आ० १०½ × ४½ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—धर्म। र० काल ×। ले०काल सं० १५४१ पौष सुदी ८। वेष्टनसं० १३०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन शास्त्र भण्डार मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—सु० गयासुद्दीन के राज्य में कोटा दुर्ग में श्री वर्द्धमान चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी।

१५२०. प्रतिसं० २। पत्रसं० ३५। आ० ११½×५। ले० काल सं० १६२२ आषाढ़ सुदी १४। पूर्ण। वेष्टनसं० १२४। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—खंडवाल नगर के आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी।

१५२१. प्रतिसं० ३। पत्रसं० ६१। आ० ११×५ इंच। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी (कामा)।

विशेष—प्रति प्राचीन है लिपिकाल के पत्र पर दूसरा पत्र चिपका दिया गया है।

१५२२. भावसंग्रह—श्रुतमुनि। पत्र सं० ३८। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय—धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ६५८। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर शास्त्र भण्डार अजमेर।

१५२३. भावसंग्रह टीका—×। पत्र सं० १६। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—धर्म। र० काल ×। ले० काल—×। पूर्ण। वेष्टन सं० २४०। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

१५२४. भावसंग्रह टीका—×। पत्र सं० १७। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—धर्म। र० काल–×। ले० काल सं० १८३२ श्रावण शुक्ला ८। पूर्ण। वे० सं०—२५९। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—सवाई जयपुर में पं० केशरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी।

१५२५. महादण्डक—विजयकीर्ति। पत्र सं० ६६। आ० ६$\frac{3}{4}$×४ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। र० काल—सं० १८२६। ले० काल सं० १८२६। पूर्ण। वेष्टन सं० १७०८। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—

सोरठा—संवत् जानि प्रवीन अठारासै गुणतीस लखि।
महादंडक सुभ दीन, ज्येष्ठ चोथि गुरु पुस्य शुकल ॥
गढ़ अजमेर सुथान श्रावक सुख लीला करें
जैन धर्म बहु मान देव शास्त्र गुरु भक्ति मन।

इति श्री महादंडक करणानुयोग भट्टारक श्री विजयकीर्ति विरचिते लघु दण्डक वर्णन इकतालीसमा अधिकार ४१। सं० १८२६ का।

१५२६. मिथ्यात्वखंडन—बख्तराम। पत्र सं० ६३। आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—धर्म। र० काल सं० १८२१ पोष सुदी ५। ले० काल सं० १८६२ भादवा सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन सं० १४०१। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, शास्त्र भंडार अजमेर।

१५२७. प्रतिसं० २। पत्र सं० ६६। आ० १२$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल×। पूर्ण। वेष्टन सं० १०६०। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

१५२८. प्रतिसं० ३। पत्रसं० ११८। आ० ११×५ इञ्च। ले० काल सं० १८५३ आषाढ सुदी ४। पूर्ण। वेष्टनसं० ३२। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—जयनगर में मन्नालाल लुहाडिया ने प्रतिलिपि की थी।

१५२९. प्रति सं० ४। पत्र सं० २५। आ० ११×५$\frac{3}{4}$ इञ्च। ले० काल सं० १८६३ आषाढ शुदी १०। पूर्ण। वेष्टन सं० ८४। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर कामा।

१५३०. मिथ्यामतखंडन। पत्र सं० ४। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। र० काल—×। ले०काल—×। पूर्ण। वेष्टन सं० ६८१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

१५३१. मिथ्यात्व निषेध। पत्र सं० १६। आ० १३$\frac{1}{2}$×८$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मंदिर अलवर।

१५३२. मिथ्यत्व निषेध—×। पत्रसं० ४४। आ० १२$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—धर्म। र० काल—×। ले० काल०—×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)।

विशेष—तनसुख अजमेरा ने स्वयं पठनार्थ प्रतिलिपि की थी। कुल लागत १।।।) ≡ ।

१५३३. मिथ्यात्व निषेध—×। पत्रसं० २७। आ० १०$\frac{3}{4}$×८$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—धर्म। र० काल ×। ले०काल सं० १८६८ फागुण सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन सं० ८३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती दूनी (टोंक)।

विशेष—पन्नालाल बैद अजमेरा ने लिखा।

१५३४. **मिथ्यात्व निषेध**— × । पत्र सं० ३१ । आ० १२½×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी(गद्य) । विषय—धर्म । र०काल— × । ले०काल सं० १८६८ आषाढ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर बयाना ।

विशेष—मोहनलाल ने यह गोपाचल (ग्वालियर) में प्रतिलिपि की थी । श्रीराम के पठनार्थ पुनः बलदेव ने ग्वालियर में पुस्तक लिखी थी ।

१५३५. **मिथ्यात्व निषेध**— × । पत्र सं० ३४ । आ० १२½×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय-धर्म । र०काल— × । ले०काल सं० १९६९ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—नौधे छुट्टीलाल चंदेरीवालों ने सूरई में प्रतिलिपि की थी ।

१५३६. **मिथ्यात्व निषेध**— × । पत्र सं० ३६ । भाषा-हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल १८६४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१५३७. **मिथ्यात्व निषेध** । पत्र सं० ३० । आ० १०¼×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय-चर्चा । र०काल— × । ले०काल सं० १८९९ आसोज सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

१५३८. **मिथ्यात्व निषेध** । पत्र सं० ३२ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल —× । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

१५३९. **मुक्तिस्वयंवर—वेणीचन्द** । पत्रसं०—३१८ । आ० १३½ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य-पद्य) । विषय—धर्म । र० काल सं० १६३४ कार्तिक बुदी ६ । ले० काल सं १६७६ माघ बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं०—१३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी सीकर ।

अन्तिम लस्कर में आरंभियो पूरण इन्दौर जान ।
कार्तिक वद नौमी दिना संवत उगनीससे चौंसीस मान ।
जा दिन से आरंभियौ पूरण के दिन मान ।
याही बरस मगसर वदी तेरस रवी प्रमान ।
स्वाति नक्षत्र जिस दिवस मिथुन लग्न मझार ॥
जय माता परसाद ते पूरण भयौ जु सार ॥ ३ ॥
इति श्री मुक्ति स्वयंवर जी ग्रंथ भाषा वचनिका संपूर्ण ।
वेणीचन्द मलूक चन्द का पुत्र फलटन का निवासी था ।

१५४०. **मुनिराज के छियालीस अन्तराय—भैय्या भगवतीदास** । पत्रसं० २ । आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय— आचार शास्त्र । र०काल सं० १७५० ज्येष्ठ सुदी ५ । ले० काल .. । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१५४१. **मूलाचार सूत्र—वट्टकेराचार्य** । पत्रसं० ३० । आ० ११½ × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१५४२. मूलाचार वृत्ति--वसुनंदि । पत्रसं० ६ से २४७ । आ० १२½×५¼ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय—आचार । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२६० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१५४३. प्रतिसं० २ । पत्र सं० २६० । आ० ११½×४½ इञ्च । ले० काल सं० १७३० । पूर्ण । वेष्टन सं० १५५-७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

प्रशस्ति—संवत् १७३० वर्षे पौष सुदी ५ बुधे" श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री सकलकीर्तिस्तदन्वये भट्टारक श्री पद्मनंदि तत्पट्टे श्री देवेन्द्रकीर्तिगुरूपदेशात् श्री उदयपुरे श्री संभवनाथचैत्यालये हुंबडज्ञातीय बृहत्सांख्य गढीआ भीमा भार्या बाई पुरी तयोः पुत्र गढीआ, रत्नश्रेष्ठ भार्या लक्ष्मी तयोः सुत लालजी राघवजी एतै स्वज्ञानावरण कर्मक्षयार्थं श्री मूलाचार ग्रंथः मूल्येन गृहीत्वा ब्रह्म श्री संघ जी तच्छिष्य ब्रह्म लाडध्यकायदतं ॥

१५४४. मूलाचार प्रदीप-- सकलकीर्त्ति । पत्रसं० १८२ । आ० ६×४½ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १८७५ वैशाख सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—राजगढ में आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी ।

१५४५. प्रति सं० २ । पत्रसं० १०५ । आ० १३×६ इञ्च । ले०काल सं० १६६१ चैत्र सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बून्दी ।

१५४६. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० १४० । आ० ११½×४½ इञ्च । ले०काल १८२८ चैत्र सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—श्वेताम्बर मोतीराम ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

१५४७. मूलाचार भाषा—ऋषभदास निगोत्या । पत्रसं० ३२३ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा—राजस्थानी (ढूंढारी) गद्य । विषय—आचार शास्त्र । र० काल सं० १८८८ कार्तिक सुदी ७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं०२२-१२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—वसुनन्दिकी संस्कृत टीका के आधार पर भाषा टीका की गई थी । इस ग्रंथ की भाषा सर्व प्रथम नन्दलाल ने प्रारम्भ की थी तथा ६ अधिकार ५ गाथा तक भाषा टीका पूर्ण करने के पश्चात् इनका स्वर्गवास हो गया था फिर इसे ऋषभदास ने पूर्ण किया ।

१५४८. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ४६४ । आ० १४×८ इञ्च । ले०काल सं० १६७४ कार्तिक बुदी ऽऽ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—वीर सं० २४४४ भादवा सुदी ८ सदाराम गंगाबक्स वासुदेवजी श्रावक फतेहपुर निवासी ने बड़ा मन्दिर में चढाया था । प्रति २ वेष्टनों में है ।

१५४९. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० ३८८ । आ० १३×७½ इञ्च । ले०काल सं० १८७२ । वेष्टनसं० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष इसमें मुनियों के चरित्र का वर्णन है । प. सदासुख के पुत्र [illegible] ने [illegible] नांदेखी से १५) रु. में इस प्रति को खरीदी थी ।

१५५०. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० ३६१ । आ० १२ × ७ इंच । ले० काल सं० १६०२ । पूर्ण । वेष्टनसं० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

१५५१. प्रतिसं० ५ । पत्रसं० ४४८ । आ० १५ × ६ इंच । ले० काल सं० १६५५ । पूर्ण । वेष्टनसं० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा ।

१५५२. प्रतिसं० ६ । पत्रसं० ४०८ । आ० ११½ × ६ इंच । ले०काल सं० १६०० । पूर्ण । वेष्टन सं० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल टोंक ।

विशेष—फारसी में प्रतिलिपि हुई थी ।

१५५३. प्रतिसं० ७ । पत्रसं० ४६२ । आ० ११ × ७ इंच । ले०काल सं० १६४१ । वेष्टन सं० ८३/२ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर, इन्द्रगढ (कोटा) ।

विशेष—मांगीलाल जिनदास ने गणेशलाल पाण्ड्या चाटसू वाले से प्रतिलिपि करवायी थी ।

१५५४. प्रति सं० ८ । पत्रसं० ३७२ । ले० काल १८६३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—संगही अमरचन्द दीवान की प्रेरणा से यह ग्रंथ पूरा किया गया था । श्री कुन्दनलाल द्वारा इसकी जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

१५५५. प्रतिसं० ९ । पत्र सं० ४७४ । आ० १२½ × ७½ इंच । ले० काल सं० १६३२ वैसाख सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं०२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—गनेश महुआ वालों ने प्रतिलिपि की थी ।

१५५६. प्रतिसं० १० । पत्रसं० १–१५० । आ० १०½ × ७½ इंच । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

१५५७. प्रतिसं० ११ । पत्र सं० ४०० । आ०–१३½ × ७½ इंच । ले० काल सं० १६५१ फागुन बुदी १ । वेष्टन सं० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, करौली ।

१५५८. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ४३० । आ० १२ × ८ इंच । ले० काल सं० १६०४ । अपूर्ण । वे०सं० १०/६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा ।

१५५९. प्रतिसं० १३ । पत्र सं० ३६२ । आ० १०½ × ६½ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४५–२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियान डूंगरपुर ।

प्रशस्ति—संवत् अठारहसै अठ्यासी मास कातिग में ।
स्वेत पक्ष सप्तमी सुतिथि शुक्रवार है ।
टीका देश भाषा मय प्रारम्भी सुनन्दलाल ॥
पूरन करी ऋषभदास निरधार है ।

इति श्री वट्टकेर स्वामी विरचित मूलाचार नाम प्राकृत ग्रंथ की वसुनन्दि सिद्धांत चक्रवर्ति विरचित आचार वृत्ति नाम संस्कृत टीका के अनुसार यह संक्षेपक भावार्थ मात्र देश भाषा मय वचनिका संपूर्ण ।

१५६०. मोक्षमार्ग प्रकाशक महा—पं० टोडरमल। पत्रसं० २८८। आ० ८½×७½ इंच। भाषा—राजस्थानी (ढूंढारी) गद्य। विषय—धर्म। र०काल सं० १८२७ के आस पास। ले०काल सं०—१९२४। अपूर्ण। वेष्टन सं० १६०७। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—इसमें मोक्ष मार्ग के स्वरूप का बहुत सुन्दर ढंग से वर्णन किया गया है टोडरमल जी की अन्तिम कृति है जिसे वे पूर्ण करने के पहले ही शहीद हो गये थे।

१५६१. प्रति सं० २। पत्रसं० २४७। आ० १०×७½ इंच। ले०काल—×। पूर्ण। वेष्टन सं० १७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूंदी।

१५६२. प्रति सं० ३। पत्रसं० २३७। आ० ११×५ इंच। ले०काल—×। पूर्ण। वेष्टन सं० ७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा।

१५६३. प्रति सं० ४। पत्रसं० १५० से ३२७। आ० १३½×७ इंच। ले०काल—×। अपूर्ण। वेष्टन सं० १६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक।

विशेष—श्री आदिनाथ महाराज के मन्दिर में श्री जवाहरलाल जी कटारया ने अनंतव्रत जी के उपलक्ष में चढ़ाया मिती भाद्रपद शुक्ला सं० १९३९।

१५६४. प्रति सं० ५। पत्रस० २४९। आ० ११½×६ इंच। ले०काल—×। अपूर्ण। वेष्टनसं० १२३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल, टोंक।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है।

१५६५ प्रति सं० ६। पत्रस० १४९। आ० १३×७ इंच। ले०काल—×। अपूर्ण। वेष्टनसं० ४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

१५६६. प्रति सं० ७। पत्रसं० २८६। आ० १२½×६½ इञ्च। ले० काल० ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० ९२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

१५६७. प्रति सं० ८। पत्रसं० ४४३। आ० ९×६½ इंच। ले० काल सं० १८८५ आषाढ़ बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० ६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपन्थी मालपुरा (टोंक)।

विशेष—पं० शिवप्रिय ने मालपुरा में प्रतिलिपि की थी।

१५६८. प्रति सं० ९। पत्र सं० २९७। आ० ११×८ इंच। ले०काल सं० १९२२ पौष सुदी १२। अपूर्ण। वेष्टन सं० १४३। **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर।

१५६९. प्रति सं० १०। पत्रसं० २४६। आ० १३½×७ इंच। ले०काल—×। अपूर्ण। वेष्टनसं० १० ७९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर अलवर।

१५७०. प्रति सं० ११। पत्रसं० २९७। ले०काल—×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ११/२८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर।

१५७१. प्रति सं० १२। पत्रसं० २१२। ले०काल—×। पूर्ण। जीर्ण शीर्ण। वेष्टन सं० १४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

१५७२. प्रति सं० १३। पत्रसं० २०६। ले०काल—×। पूर्ण। वेष्टन सं० १४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—माधोसिंह ने प्रतिलिपि करवाई थी।

१५७३. प्रतिसं० १४। पत्रसं० ३०५। ले०काल × । अपूर्ण (२ से १८४ तक पत्र नहीं हैं)। वेष्टनसं० १३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

१५७४. प्रतिसं० १५। पत्रसं० १०८। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

१५७५. प्रतिसं० १६। पत्रसं० २३६। आ० १३ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल सं० १६३१ चैत बुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० १। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना।

विशेष—हीरालालजी पोतेदार ने प्रतिलिपि करवायी थी। बयाना में प्रतिलिपि हुई थी।

१५७६. प्रतिसं० १७। पत्रसं० २४०। आ० १२$\frac{1}{2}$ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल सं० १६००। पूर्ण। वेष्टन सं० १२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मंदिर बयाना।

१५७७. प्रतिसं० १८। पत्रसं० २३०। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टनसं० १२ (क)। **प्राप्ति स्थान**—दिगम्बर जैन मन्दिर बंर (बयाना)।

१५७८. प्रतिसं० १६। पत्र सं० १६–६७। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ३२५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा।

१५७९. प्रतिसं० २०। पत्र सं ३१०। आ० ११ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल सं० १६२७। पूर्ण। वेष्टन सं० ३०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

१५८०. प्रति सं० २१। पत्रसं० २०२। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टनसं० १। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डावालों का डीग।

१५८१. प्रतिसं० २२। पत्रसं० २०२। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टनसं० १। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डावालों का डीग।

१५८२. प्रतिसं० २३। पत्रसं० १४४–२६४। ले० काल सं० १६१५ आषाढ सुदी १३। अपूर्ण। वेष्टनसं० ५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डावालों का डीग।

१५८३. प्रतिसं० २४। पत्रसं० १४३। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

१५८४. प्रति सं० २५। पत्रसं० २७८। आ० १२$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० २। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली।

१५८५. प्रति सं० २६। पत्रसं० १५७। आ० ११$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इंच। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टनसं० २४/२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली।

१५८६. प्रति सं० २७। पत्रसं० २४७। आ० १२ × ५ इंच। ले०काल सं० १८२६। पूर्ण। वेष्टनसं० ७१/६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर भादवा (राज०)

विशेष—साह जीवणराम ने भादवा में प्रतिलिपि करवाई। दो प्रतियों का मिश्रण है।

१५८७. प्रति सं० २८। पत्रसं० १८०। आ० १३$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इंच। ले०काल सं० १६१८ श्रावण सुदी ५। अपूर्ण। वेष्टनसं० ३४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष--वृत्तिविलास आरवाला ने स्वयं पढ़कर व्यास सिवलाल मगाई (बम्बई) नगर में कराई। प्रति पूरी नकल नहीं हुई है।

१५८८. प्रति सं० २६। पत्रसं० २१२। आ० १३½ × ८½ इञ्च। ले०काल सं० १६७७ आषाढ़ बुदी ८। पूर्ण। वेष्टनसं० १०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष--वीर सं० २४४६ भादवा सुदी ७ को जरावरमल मटरूमल ने बड़ा मन्दिर में चढाया।

१५८९. प्रति सं० ३०। पत्रसं० २१०। आ० १३×६½ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० १७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बून्दी।

विशेष -२१० से आगे पत्र नहीं है।

१५९०. प्रति सं० ३१। पत्र सं० २६१। आ० ११ × ६½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

१५९१. प्रति सं० ३२। पत्रसं०२१०। आ० १०½×५½ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा।

१५९२. प्रति सं० ३३। पत्रसं० ४०३। आ० १३×७ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० १५३/१३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

१५९३. मोक्षमार्ग बावनी—मोहनदास। पत्र सं० ७। आ० ९½×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय -धर्म। र०काल ×। ले० काल सं० १८३५ मङ्गसिर सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० २६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली, कोटा।

विशेष—ग्रंथ रामपुरा (कोटा) में लिखा गया था।

१५९४. मोक्ष स्वरूप — ×। पत्र सं० २५। आ० १०×३½ इञ्च। भाषा—हिन्दी (गद्य)। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १३६२। **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

१५९५. यत्याचार वृत्ति—वसुनंदि। पत्र सं० १३-३८०। आ० ९½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—आचार शास्त्र। र०काल ×। ले० काल सं० १५९५। अपूर्ण। वेष्टन सं० २३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

१५९६. रत्नकरण्ड श्रावकाचार--आचार्य समन्तभद्र। पत्रसं० १३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—श्रावक धर्म का वर्णन। र०काल ×। ले० काल सं० १५८३। पूर्ण। वेष्टन सं० १०४२। **प्राप्ति स्थान**- भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—संस्कृत में संक्षिप्त टीका सहित है।

१५९७. प्रति सं० २। पत्र सं० १३। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ११२३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

१५९८. प्रतिसं० ३। पत्र सं० ३०। र०काल ×। ले० काल सं० १६५३। पूर्ण। वेष्टन सं० ६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर डूण्डावालों का डीग।

१५९९. प्रतिसं० ४। पत्र सं० १८। आ० ८½×४½ इञ्च। ले० काल सं० १७५६ ज्येष्ठ सुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० १५३। **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

१६००. प्रति सं० ५। पत्र सं० १५। ले० काल सं० १९५४। वेष्टन सं० ४४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

१६०१. प्रति सं० ६। पत्र सं० ४। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं ६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी भरतपुर।

१६०२. प्रति सं० ७। पत्रसं० ८। आ० १२×५ इञ्च। ले०काल सं० १९२१। पूर्ण। वेष्टनसं० १५९। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर।

१६०३. प्रतिसं० ८। पत्रसं० ११। आ० १०½×५ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १८/१३। **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मन्दिर पंचायती टूनी (टोंक)

१६०४. प्रतिसं० ९। पत्र सं २७। आ० १०½ × ४ इञ्च। ले०काल सं० १९५४। वैशाख वुदि १४। पूर्ण। वेष्टन सं० ६३। **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मन्दिर, आदिनाथ बूंदी।

१६०५. प्रति सं० १०। पत्र सं० १५। आ० १२×५ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण वे० सं० ३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी

१६०६. प्रति सं० ११। पत्र स० १३। आ० १३ × ५ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वे० सं० ३४४/१६० **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

१६०७. प्रति सं० १२। पत्र सं० १८। आ० ९×४ इञ्च। ले० काल सं० १९९६। पूर्ण। वेष्टन सं० ४५०/१६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १९९६ वर्षे फागुण सुदी १५ श्री मूलसंघे भट्टारक श्री वादिभूषण शिष्य ब्र. वर्द्धमान पठनार्थं। ग्रंथ का नाम उपासकाध्ययन भी है।

१६०८. प्रति सं० १३। पत्र सं० १६। आ० १२×५½ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २२८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा।

१६०९ प्रतिसं० १४। पत्र सं० ३५। आ० ९½×५ इञ्च। ले० काल × । वेष्टन सं० ६५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—प्रति संस्कृत व्याख्या सहित है।

१६१०. रत्नकरण्डश्रावकाचार टीका-प्रभाचन्द्र। पत्र सं० २५। आ० ११×५ इञ्च। ले० काल सं० १४४६। पूर्ण। वेष्टन × । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

१६११. प्रतिसं० २। पत्रसं० ५६। आ० १० × ४½ इञ्च। ले०काल × । वेष्टन सं० ९९। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

१६१२. प्रतिसं० ३। पत्रसं० १८। आ० ११¾ × ५ इञ्च। भाषा— × । ले०काल सं० १५२३ वैसाख सुदी ३। वेष्टनसं० १००। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

१६१३. प्रतिसं० ४। पत्रसं० ५६। आ० १० × ४ इंच। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टनसं० २३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है। प्रति प्राचीन है।

१६१४. रत्नकरण्ड श्रावकाचार टीका: × । पत्रसं० १-३० । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० ७१६ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१६१५. रत्नकरण्ड श्रावकाचार टीका । पत्रसं० ५६ । आ० ६ × ५½ इञ्च इञ्च । भाषा—संस्कृत, हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल सं० १९५६ जेष्ठ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मंदिर कोटयों का नैणवा ।

विशेष—मथुरा चौरासी में लिखा गया था । प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

१६१६. रत्नकरण्ड श्रावकाचार भाषा-पं० सदासुख कासलीवाल । पत्र सं० २३१ । आ० १४×८ इंच । भाषा - राजस्थानी (ढूंढारी) गद्य । विषय—श्रावक धर्म वर्णन । र०काल सं० १९२० चैत्र बुदी १४ । ले०काल सं० १९४४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५६८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

विशेष—आ० समन्तभद्र के रत्नकरण्ड श्रावकाचार की भाषा टीका है ।

१६१७. प्रति सं० २ । पत्रसं० ३५ । आ० ११ × ७½ इञ्च । ले०काल × अपूर्ण । वेष्टन सं० ६२९ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—सदासुख कासलीवाल की लघु वचनिका है ।

१६१८. प्रति सं० ३ । पत्रसं० ४०१ । आ० १२½ × ७½ इञ्च । ले०काल सं० १९३५ जेठ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—अजेरा में प्रतिलिपि हुई थी ।

१६१९. प्रति सं० ४ । पत्रसं० १६९ । ले०काल सं० १९२१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६७ **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

१६२०, प्रति सं० ५ । पत्र सं० २३२ । आ० ११×५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

१६२१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५५७ । आ० १३×५ इञ्च । ले० काल सं० १९४३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

१६२२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ५७३ । ले० काल सं० १९२० । अपूर्ण । वेष्टन स० ९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

१६२३ प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३९४ । आ० १०½ × ८ इञ्च । ले०काल सं० १९४५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर, उदयपुर ।

१६२४. प्रति सं० ९ । पत्रसं० २६१ । आ० १०½ × ८ इंच । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

१६२५. प्रति सं० १० । पत्र सं० ३२९ । आ० १४½ × ७½ इंच । ले०काल सं० १९२४ भादवा बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर (शेखावाटी-सीकर) ।

विशेष—सदासुख की स्वयं की लिखी हुई प्रति से प्रतिलिपि की गई थी। यह ग्रंथ स्व० सेठ निहालचंद की स्मृति में उनके पुत्र ठाकुरदास ने फतेहपुर के बड़े मंदिर में चढाया संवत् १९८४ आषाढ़ सुदी १५।

१६२६. **प्रति सं० ११** । पत्र सं० ४१६ । आ० १३ × ८ इञ्च । ले०काल सं० १९५५ माघ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—प्रति सुन्दर है। द्वारिकाप्रसाद ने प्रतिलिपि की थी।

१६२७. **प्रति सं० १२**। पत्र संख्या ५७०। ले० काल सं० १९२१। पूर्ण। वेष्टन सं० २७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—प्रति दो वेष्टनों में है। सदासुख कासलीवाल डेडाका ने गोरूलाल पांड्या चौधरी चाटसू वाले से प्रतिलिपि कराई थी।

१६२८. **प्रतिसं० १३**। पत्र सं० ४३२। आ० १३×८ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ११/४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज.)

विशेष—स्वय ग्रंथकार के हाथ की लिखी हुई प्रति प्रतीत होती है।

१६२९. **प्रति सं० १४**। पत्र सं० ३९६। आ० १२ × ७$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल सं० १९३१ आषाढ़ वदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० ३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

१६३०. **प्रति सं० १५**। पत्र सं० २२७। आ० १२ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १३२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

१६३१. **प्रति सं० १६**। पत्र सं० ४५२ । आ० १२ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल- × पूर्ण । वेष्टन सं० ३३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

१६३२. **प्रति सं० १७**। पत्र सं० ३०८-४५०। आ० १२$\frac{1}{2}$ × ७ इञ्च । ले० काल। सं० १९३२। अपूर्ण। वेष्टन सं० १। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा।

विशेष—अलयगढ में प्रतिलिपि की गई थी।

१६३३. **प्रति सं० १८**।। पत्रसं० २१२। आ० १२$\frac{3}{4}$ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ९९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा।

विशेष—पत्र सं० २१२ से आगे के पत्र नहीं हैं।

१६३४. **प्रति सं० १९**। पत्रसं० ३४०। आ० १२ × ७ इञ्च। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १४५। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन छोटा मंदिर बयाना।

१६३५. **प्रति सं० २०**। पत्र सं० ३६२। आ० १३ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १००। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना।

विशेष—३६२ के आगे के पत्र नहीं हैं।

१६३६. **प्रतिसं० २१**। पत्र सं० ४८०। ले० काल सं० १९२१ चैत बुदी १४। पूर्ण। वेष्टन सं० ५७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

१६३७. **प्रति सं० २२**। पत्र सं० ३२९। आ० १५ × ९ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मंदिर अलवर।

१६३८. प्रतिसं० २३ । पत्र सं० २५८ । आ० १२½ × ७½ इञ्च । ले० काल सं० १९७५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७८ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

१६३९. प्रति सं० २४ । पत्र सं० २९९ । आ० १३ × ८ इञ्च । ले० काल सं० १९३१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

१६४०. प्रति सं० २५ । पत्र सं० ४०९ । आ० ११ × ८ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पंचायती मंदिर अलवर ।

१६४१. प्रति सं० २६ । पत्र सं० ३९० । आ० १३ × ८ इंच । ले० काल सं० १९२४ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक) ।

१६४२. प्रति सं० २७ । पत्र सं० ४१४ । आ० १२ × ८ इंच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—पत्र सं० ४१४ से आगे नहीं है ।

१६४३. प्रतिसं० २८ । पत्र सं० ३६९ से ५७० । आ० ११½ × ७½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २३३ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर [illegible] (टोंक) ।

१६४४. प्रति सं० २९ । पत्रसं० ३८७ । आ० १२ × ७ इंच । ले०काल—सं० १९६३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बघेरवालों का, आवां (उणियारा) ।

विशेष—चंदेरी में प्रतिलिपि हुई थी ।

१६४५. प्रति सं० ३० । पत्रसं० २०० । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा

१६४६. प्रतिसं० ३१ । पत्रसं० ५०९ । आ० ११ × ७½ इंच । ले०काल—सं० १९२४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, श्री महावीर स्वामी बूंदी ।

१६४७. प्रतिसं० ३२ । पत्रसं० ४९६ । आकार ११ × ७½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, श्री महावीर स्वामी बूंदी ।

१६४८. प्रति सं० ३३ । पत्रसं० ३५९ । आ० १४ × ८ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १५० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी ।

१६४९. प्रति सं० ३४ । पत्रसं० ४१३ । आ० १२½ × ६½ इञ्च । ले०काल सं० १९५५ । पूर्ण । वेष्टनसं०-२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

१६५०. प्रति सं० ३५ । पत्र सं० ३२२ । आ० ९४ × ७½ इञ्च । ले० काल सं० १९६१ चैत्र बदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—चंदेरी में चोबे दामोदर ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५१. रत्नकरण्ड श्रावकाचार भाषा वचनिका—पन्नालाल दूनीवाला । पत्रसं० ३४ । आ० १०¾ × ६¾ इञ्च । भाषा—राजस्थानी (ढूंढारी) गद्य । विषय—श्रावक धर्म का वर्णन । र० काल सं० १९३१ पौष बुदी ७ । ले० काल सं० १९५६ । पूर्ण । वे० सं० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक)

विशेष—पं० फतेहलाल ने इस टीका को शुद्ध किया और पं० रामनाथ शर्मा ने इसकी प्रतिलिपि की थी।

१६५२. रत्नकोश सूत्र व्याख्या — × । पत्र सं० ७। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—धर्म। र० काल × । ले० काल × । **पूर्ण**। वेष्टन सं० १७४। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

१६५३. रत्नत्रय वर्णन— × । पत्र सं० ३७। आ० १२½×५½ इञ्च। **भाषा**—संस्कृत। विषय—धर्म। र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ८४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक।

विशेष—पत्र २२ से आगे दश लक्षण धर्म वर्णन है पर वह अपूर्ण है।

१६५४. लाटीसंहिता—पांडे राजमल्ल। पत्र सं० ७७। आ० ११×५½ इञ्च। **भाषा**—संस्कृत। विषय—आचार शास्त्र। र० काल सं० १६४१। ले० काल सं० १८४८। पूर्ण। वेष्टन सं० १७८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

१६५५. प्रति सं० २। पत्र सं० ६४। आ० ११×५½ इञ्च। ले० काल सं० १७६०। पूर्ण। वेष्टन सं० ५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर कामा।

विशेष—पत्र भीगे हुए हैं।

१६५६. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७८। आ० १०½×५ इञ्च। ले० काल सं० १८८६ फागुण सुदी ४। पूर्ण। वे० सं० १२१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती दूणी।

विशेष—दूणी नगर में पार्श्वनाथ के मन्दिर में पंडित जी श्री १०८ श्री सीतारामजी के शिष्य शिवजी के पठनार्थ लिखी गयी थी।

१६५७. लोकामत निराकरण रास-सुमतिकीर्त्ति। पत्र सं० १३। आ० १४½×४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। र० काल सं० १६२७ चैत्र बुदी। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २८१। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

१६५८. वसुनन्दि श्रावकाचार—आ० वसुनन्दि। पत्र सं० १७। आ० १० × ५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—आचार शास्त्र। र० काल × । ले० काल सं० १८१० माघ बुदी १०। पूर्ण। वेष्टन सं० ३०। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—इसका दूसरा नाम उपासकाध्ययन भी है।

१६५९. प्रतिसं० २। पत्र सं० ११। आ० ११½×५ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १३२०। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

१६६०. प्रति सं० ३। पत्रसं० १६। आ० ११×६½ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ७०२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अजमेर।

१६६१. प्रति सं० ४। पत्र सं० ५५। आ० ८½×६ इञ्च ले० काल सं० १८६४ पौष बुदी ६। वेष्टन सं० ७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—महाराजा जगतसिंह के शासनकाल में साह श्री जीवणराम ने प्रागदास मोट्ठाकावाली से सवाई जयपुर में प्रतिलिपि करवाई थी।

१६६२. **प्रति सं० ५**। पत्र सं० २०। आ० ६½×४½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २२५। **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष–प्रति प्राचीन है।

१६६३. **प्रति सं० ६**। पत्र सं० ५३। आ० १२×८ इञ्च। ले० काल सं० १९८४। पूर्ण। वेष्टन सं० १७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है कीमत ८।) है।

१६६४. **वसुनन्दि श्रावकाचार भाषा—ऋषभदास**। पत्र सं० ३४७। आ० ६ × ५½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—आचार शास्त्र। र०काल सं० १९०७। ले०काल सं० १९२४। पूर्ण। वेष्टन सं० ५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवान चेतनदास पुरानी डींग।

विशेष—अन्तिम।

मगध देश भल्लरि प्रथम पत्तन पूर सु अनूप।
भालाधार सुहावनी मदनसिंह तसु भूप॥
पृथ्वीराज सुत तास कै सौभितु पद कूं पाय।
राजकरै पालै प्रजा सबही कूं सुखदाय॥
तिसि पत्तन में शांति जिन राजै सबकूं शांति।
आधि व्याधि हरै सदा कर्म क्षोभ को भांति॥
ताकी **थुति तिय** भवन की सोभा कही न जाय।
देखत ही अघ हरत है सुर सिव मग दरसाय॥
पार्श्वनाथ को भुवन इक ऋषभदेव की ओर।
नाना सोभा सहित पुनि राजत है इसि ठौर॥
भव्य जीव वंदै सदा पूजै भाव लगाय।
नर नारी गावें सदा श्री जिन गुण हरषाय॥
तिसी पुरी में ज्ञाति के लोग वसै जु पुनीत।
तामैं **हूंबड़** जाति के वगवर देस जनीत॥
श्री नेमिश्वर वंस सुत बाल सोम आख्यात।
सो चउ भ्रात नियुक्त है ताके सुत विख्यात॥
नाभिजदास बखानिये ताकै सुत दो जानि।
तामैं श्रेष्ठ बखानिये पंडित सुनौ बखानि॥
वासु पूज्य जिन जनम की पुरी राज सुत जानि।
....फुनि अरुण सुत लघु भ्राता जु कहानि॥
तामैं गुरू भ्राता सही मूढ़ एक तुम जान।
सब जैनी में बसत है दो सुत सुत अभिराम॥
ताकूं श्री वसुनंदि कृत नाम श्रावगाचार।
गाथा टीका बंध कू पढ़ि वै कू सुख कारे॥
भट्टारक आमेर कै देवेन्द्र कीर्ति है नाम।

जयपुर राजै गुणनिधि देत भए अभिराम ।।
ताकूं लखि मन भयौ विचार ।
होय वचनिका तौ भुष कार ।।
सब ही वांचें सुनौ विचारें ।
सुगम जानि नहीं आलस धारैं ।।
सो उपाय मन लहि करि लिखी ।
बालबोध टीका चित सुखी ।।
यामैं बुद्धी मंद बसाय ।
फुनि प्रमाद भुरखता लाय ।।
ऋषि पूरण नव एक पुनि माघ पुनि शुभ श्वेत ।
जथा प्रथा प्रथम कुजवार, सम मंगल होय निकेत ।।

१६६५. वसुनंदि श्रावकाचार वचनिका— × । पत्र सं० ४६६ । आ० १२½ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । र० काल सं० १९०७ । ले० काल सं० १९२६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७–२९ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर ।

ऋषि पूरण नव एक पुनि माघ पुनि शुभ श्वेत ।
जथा प्रथा प्रथम कुजवार सम मंगल होय निकेत ।।

१६६६. वसुनन्दि श्रावकाचार भाषा–दौलतराम । पत्र सं० ५५ । आ० ११½ × ५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । र० काल सं १८१८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—मूल कर्त्ता आ० वसुनन्दि है । प्रति टब्बा टीका सहित है ।

१६६७. वसुनन्दि श्रावकाचार भाषा–पन्नालाल । पत्र सं० १२७ । भाषा—हिन्दी । विषय—श्रावक धर्म । र० काल सं० १९३० कार्तिक सुदी ७ । ले० काल सं० १९३० । पूर्ण । वेष्टन सं० १५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१६६८. वसुनन्दि श्रावकाचार भाषा—पत्र सं० ३७८ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५८१ । **प्राप्ति-स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१६६९. वसुनन्दि श्रावकाचार भाषा × । पत्र सं० ३५१ । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बून्दी ।

१६७०. वर्द्धमानसमवशरण वर्णन-ब्र० गुलाल । पत्र सं० १२ । आ० ६ × ३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र० काल सं० १६२८ माघ बुदी १० । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर (भरतपुर) ।

विशेष—आदि अंत भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—

जिनराज आनन्द सुखनिधान मंगल सिद्ध नत ।
जिनवाणी सुमरण मति बढै ।
ज्यों गुणठाण क्षिपक त्रिण चढै ॥
गुरु निर्ग्रंथ चरण चित लाय ।
देव शास्त्र गुरु मंगल भाय ॥
इनही सुमरि करौ सुखकार ।
समोसरण जै जै विस्तार ॥

अन्तिम पाठ—

सोलहसै अठबीस में माघ दशै सुदी पेख ।
गुलाल अह्म भनि नीत इती जयौ नंद को सीख ॥
कुरु देश हथनापुरी राजा विक्रम साह ।
गुलाल अह्म जिन धर्म जय उपमा दीजे काहू ।

१६७१. विचारषट्त्रिंशकावचूर्णि—पत्र सं० १३ । भाषा—संस्कृत । विषय-धर्म । र०काल स०१५७८ । ले०काल सं० १८८४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१६७२. विचार सूखड़ी— पत्रसं० ४ । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । र०काल × । ले०काल सं० १६७२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१६७३. विद्वज्जन बोधक—संघी पन्नालाल दूनीवाला । पत्र सं० ६३७ । आ० १३½ × ८½ इञ्च । भाषा-राजस्थानी (ढूंढारी) गद्य । विषय-धर्म । र०काल सं० १९३९ माघ सुदी ५ । ले०काल सं० १९६६ फागुन सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष— लिखाई, सुधाई स्याही कागज वस्ता पट्टा डाकखर्च
४१।।।–।।। २०।।।=।। १।– ६।।= १।। २)

टोटल—४७=।

१६७४. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ५४८ । आ० १३½×८½ इञ्च । ले०काल सं० १९९२ श्रावण बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—ऋषभचन्द बिन्दायश्याने प्रतिलिपि की थी ।

१६७५. विवेक विलास-जिनदत्तसूरि । पत्रसं० २३ । आ० ९½ × ५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । विषय-धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—संस्कृत पद्यों के साथ हिन्दी अर्थ भी दिया है ।

१६७६. विंशस्थान × । पत्रसं० ३६ । भाषा –हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले०काल सं० १८७६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६३६ । **प्राप्ति स्थान** –– दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

१६७७. व्रतनाम— × । पत्रसं० १२ । आ० १० × ४$\frac{3}{5}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय–धर्म । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल टोंक ।

१६७८ व्रतनिर्णय— × । पत्रसं० ५२ । आ० ११ × ८ इञ्च । भाषा – संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १५४६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

१६७६. व्रतसमुच्चय— × । पत्रसं० ३१ । आ० ११ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १८३३ सावन बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

१६८०. व्रतसार— × । पत्रसं० ७ । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५४५ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१६८१. व्रतोद्योतन श्रावकाचार-अभ्रदेव । पत्रसं० ५५ । आ० ६ × ३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १८७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर, पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

१६८२. प्रतिसं० २ । पत्रसं० २६ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । र० काल × । ले० काल सं० १५६३ पूर्ण । वेष्टनसं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—अथ संवत्सरेस्मिन् संवत् १५६३ वर्षे पौष सुदी २ आदित्यवासरे श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे श्री कुंदकुन्दाचार्यान्वये ब. मानिक लिखापितं आत्म पठनार्थं परोपकारार्थ ।

संवत् १६५७ वर्षे ब्रह्म श्री देवजी पठनार्थं इदं पुस्तकं ।

१६८३. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० ३३ । आ० ११ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १८८२ श्रावण बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५४४ । **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

१६८४. व्रतों का ब्यौरा— × । पत्रसं० ५ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५८७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१६८५. व्रतो का ब्योरा-- × । पत्रसं० १६ । आ० ११ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय—धर्म । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १५८२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१६८६. व्रत ब्यौरा वर्णन । पत्रसं० ७ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ११५६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१६८७. शलाका पुरुष नाम निर्णय-भरतदास। पत्रसं० ६१ । आ० ६×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। र० काल सं० १७८८ वैशाख सुदी १५। ले० काल सं० १८८८ सावण सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० ३७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी।

विशेष—कविनाम—

गोसुत केरो नाम तास मे दास जु ठानो।
तासुत मोहि जान नाम या विधि मन आनो॥
मधुकर को अरी जोय, राग फुनि तामें ह्वीजे।
यह कर्त्ता को नाम अर्थ पंडित जन कीजे॥

झालरापाटन के शांतिनाथ चैत्यालय में ग्रंथ रचना हुई थी। कवि झालरापाटन का निवासी था। र० काल सम्बन्धी दोहा निम्न प्रकार है—

शुभ एक गिरा हीण शील उत्तर भेदन में।
मदवसु तापै धरया भेद जो होवे इनमें॥

१६८८. शास्त्रसार समुच्चय— ×। पत्रसं० ५। आ० १० × ५ इञ्च। भाषा—संस्कृत विषय—धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर डूनी (टोंक)

प्रारम्भ :—श्रीमन्नम्रामरस्तोत्रं प्राप्तानंत चतुष्टय।
नत्वा जिनाधिपं वक्ष्ये शास्त्रसार समुच्चय॥१॥
अथ त्रिविधोकालः॥१॥ द्विविधो वा॥२॥
षड्विधोवा ३॥ दशविधाः कल्पद्रुमाः।

अन्तिम :—

चतुराध्यायसंपन्ने शास्त्रसार समुच्चये।
पठते त्रयोपवासस्य फलं स्याद्मुनिभाषते॥
श्रीमाघनन्दियोगीन्द्रं सिद्धांत बोधिचन्द्रमा।
अभिकर्तुं विचितार्थं शास्त्रसारसमुच्चये॥२५
मुमुक्षु सुमतिकीर्त्ति पठनार्थं।

१६८९. शिव विधान टीका— ×। पत्रसं० ६। आ० ६ × ४ इञ्च। भाषा-हिन्दी, संस्कृत। विषय-धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १४५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

१६९०. शीलोपदेशमाला—सोमतिलक। पत्रसं० १३२। आ० ११ × ४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

विशेष—प्रति टीका सहित है। एवं प्राचीन है।

१६९१. श्रावकक्रिया ×। पत्रसं० २७। आ० ११ × ५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८८५ माह सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० १४७०। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—इति कल्पनाकरनग्रंथे श्रावक नित्य कर्म षट् तत्र षष्टमदान षष्टोध्यायः ।

१६९२. श्रावक क्रिया × । पत्रसं० १६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

१६९३. श्रावक क्रिया × । पत्रसं० १९ । आ० ९×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २९/७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ उन्दरगढ (कोटा)

१६९४. श्रावक गुण वर्णन × । पत्रसं० ३ । भाषा—प्राकृत । विषय-आचार शास्त्र । र० काल× । ले० काल सं० × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

१६९५. श्रावक धर्म प्ररूपणा— × । पत्रसं० ११ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

१६९६. श्रावकाचार..... । पत्र सं. १५ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय-आचार शास्त्र । र० काल सं० १५१४ । ले० काल × । वे० सं० ८१ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—मंडल दुर्ग में रचना की गई । ग्रन्थकर्त्ता की प्रशस्ति अधूरी है ।

१६९७. श्रावकाचार— × । पत्र सं० ५ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वे० सं० ३००/१५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर ।

१६९८. श्रावकाचार—उमास्वामी । पत्र सं० १९ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १९६६ भादवा सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

१६९९. श्रावकाचार –अमितिगति । पत्र सं० ७५ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० १४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१७००. प्रति सं० २ । पत्रसं० ७४ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १६७० फाल्गुन सुदी ८ । वेष्टन सं० १४३ । **प्राप्ति स्थान**–उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—जहांगीर नूरमोहम्मद के राज्य में—हिसार नगर में प्रतिलिपि करवाकर श्रीमती हेमरत्न ने त्रिभुवनकीर्ति को भेंट की थी ।

१७०१. श्रावकाचार × । पत्रसं० ३ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय-आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १८१७ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १८८-१२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

१७०२. श्रावकाचार रास—पदमा । पत्रसं० ११६ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय--आचार शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । **अपूर्ण** । वेष्टनसं० १३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष--प्रथम पत्र नहीं है ।

प्रारम्भ :—

समोसरणि माहे जब गया
तिण आनन्द भविषण मन भया ।
मुखिकन जिय जयकार,
भेट्या जिनवर त्रिभुवन तार ।।
नीन प्रदक्षणा भावैं दीध,
अष्टप्रकारि पूजा कीध ।।
जल गंध अक्षित पुष्प नैवेद ।
दीप धूप फल अरघ वसु भेद ।।

अन्तिम :—

श्रावकाचार तणु श्रावकाचार तणा,
रास कीउ मि सणी परि ।
भविजन मनरंजन भंजन कर्म कठोर,
निर्भर पञ्च परमेष्टी मन धरि ।
सभरि सदा गुरु निर्ग्रंथ मनोहर
अनुदिन जे धर्म पालसि
टालो सर्व जतीचार जिन सेवक ।
पदमो कहि ते पामसि भवपार ।।२५

१७०३. श्रावकाराधन—समयसुन्दर । पत्रसं० ३ । भाषा—संस्कृत । विषय--श्रावक धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

१७०४. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ४ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ६६१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१७०५. षट्कर्मोपदेशरत्नमाला—अमरकीर्ति । पत्रसं० ८१ । आ० १२½×६ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-आचार शास्त्र । र०काल सं० १२४७ । ले० काल सं० १६०० चैत्र बुदी १ । पूर्ण । वेष्टनसं० १६०२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१७०६. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ८-८३ । आ० १२×४ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ९६० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि०जैन मन्दिर अजमेर ।

१७०७. प्रति सं० ३ । पत्रसं० १०४ । आ० १० × ५ इञ्च । ले० काल सं० १६५२ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

१७०८. षट्कर्मोपदेशरत्नमाला—सकल भूषण । पत्र सं० १३६ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र० काल सं० १६२७ । ले० काल सं० १८५७ पौष बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१७०९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०४ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—१०४ से आगे पत्र नहीं है ।

१७१०. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० १६५ । ले० काल स० १८२० चैत बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—विराट नगर में प्रतिलिपि की गई ।

१७११. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० १२४ । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१७१२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ११४ । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अजमेर ।

१७१३. षट्कर्मोपदेशरत्नमाला भाषा—पाण्डे लालचन्द । पत्रसं० १४९ । आ० ११×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—आचार । र० काल सं० १८१८ माह सुदी ५ । ले० काल सं० १८८७ कार्तिक बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२२९ । **प्राप्तिस्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—अजमेर पट्टे श्री १०८ श्री रत्नभूषण जी तत् शिष्य पण्डित पन्नालाल तत् शिष्य पं० चतुर्भुज इदं पुस्तकं लिखापितं ।

ब्राह्मण श्रीमाली सालगराम वासी किशनगढ ने अजयगढ (अजमेर) में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

१७१४. प्रति सं० २ । पत्रसं० १७१ । आ० ९½ × ६½ इञ्च । ले० काल सं० १९४७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६१९ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

१७१५. प्रति सं० ३ । पत्रसं० १४२ । आ० ११×५½ इञ्च । ले० काल सं० १९११ मंगसिर बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—हरकिशन भगवानदास ने दिल्ली से मंगाया ।

१७१६ प्रति सं० ४ । पत्रसं०-१६४ । आ० १०½×५ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७१-२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अष्टा बीसपंथी दौसा ।

१७१७. प्रति सं०—५ । पत्रसं० १३५ । आ० १०½×७½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

१७१८. प्रति सं०—६ । पत्रसं० ८५ । आ० १३×९½ इञ्च । ले० काल सं० १९०८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अग्रवाल नैणवा ।

१७१९. प्रतिसं० ७ । पत्रसं० १८४ । लेखन काल सं० १८६३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी बसवा ।

१७२०. **प्रति सं० ८** । पत्र सं० १२४ । आ० १२×६½ इंच । ले०काल सं० १८८२ मंगसिर बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

१७२१. **प्रतिसं० ९** । पत्रसं० १५३ । आ० १२×६ इंच । ले०काल सं० १८१९ आषाढ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८१ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मंदिर पंचायती बयाना ।

विशेष—श्री मिट्ठूराम के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गयी थी ।

१७२२. **प्रतिसं० १०** । पत्र सं० १०९ । आ० १२½×७½ इंच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १५३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

१७२३. **प्रति सं० ११** । पत्रसं० १३७ । ले० काल सं० १८१९ वैसाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पंचायती भरतपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा प्रशस्ति विस्तृत है ।

१७२४. **प्रति सं० १२** । पत्र सं० १६१ । आ० ११½×७ इञ्च । ले० कालसं० १८९४ भादवा बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष राजमहल में वैद्यराज सन्तोषराम के पुत्र अमीचन्द, अभयचन्द्र सौगानी ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१७२५. **प्रति सं० १३** । पत्र सं० १६९ । आ० ९½ × ६½ इञ्च । ले० काल सं० १८५९ आषाढ़ बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष—पं० देवीचन्द ने ब्यास सहजराम से तक्षकपुर में प्रतिलिपि कराई ।

१७२६. **प्रतिसं० १४** । पत्र सं० १९१ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । ले० काल सं० १८२७ जेठ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती करौली ।

विशेष—हेमचंद विनायकथा ने करौली में प्रतिलिपि कराई थी ।

१७२७. **प्रतिसं० १५** । पत्र सं० १५६ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले० काल सं० १८११ सावन सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५८/३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सौगाणी करौली ।

१७२८. **प्रति सं० १६** । पत्रसं० १८३ । आ० १०½ × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७-४२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर सौगाणी करौली ।

१७२९. **प्रतिसं० १७** । पत्रसं० ८७ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक)

१७३०. **प्रति सं० १८** । पत्रसं० १२२ । आ० १२ × ७½ इञ्च । ले०काल—सं० १९२६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२७ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूंदी ।

१७३१. **प्रति सं० १९** । पत्रसं० ९१ । आ० १२½ × ६½ इञ्च । ले०काल सं० १९५४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४ २६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—संवत १९५४ भाद्रव शुक्ल पक्ष रविवासरे लिखितं झगड़ावत कस्तूरचंद जी चोखचंद्र ।

१७३२. **प्रतिसं० २०** । पत्र सं० १०५ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

१७३३. षडशीतिक शास्त्र—×। पत्र सं० १२। आ० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। विषय-धर्म। र० काल ×। ले० काल सं० १७१५ मंगसिर सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० ६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—सुमतिवर्धनगणि के शिष्य तिलक गणि ने भडरुदा नगर में प्रतिलिपि की थी।

१७३४. षडावश्यक— ×। पत्र संख्या ३०। आ० १० × ४ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-धर्म एवं आचार। र० काल— ×। लेखन काल— ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २४। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है

१७३५. षडावश्यक बालावबोध टीका— ×। पत्र सं० २८। आ० १० × ३ इञ्च। भाषा-प्राकृत हिन्दी। विषय-आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १६१७ भादवा सुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० ८८-८७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा।

विशेष—टब्बा टीका है। अहमदाबाद में प्रतिलिपि की गई थी।

पत्र १—नमो अरिहंताणं-अरिहंत नइ नमहारु नमस्कार। नमो सिद्धाणं-सिद्ध नइ नमस्कार। नमो आयरियाणं आचार्य नइ नमस्कार। नमो उवज्झायाणं-उपाध्याय नइ नमस्कार। नमो लोए सव्व साहूणं लोक कहितां मनुष्य लोक तेह माहि सर्व साधु नइ नमस्कार।

पत्र ३—सिद्धाणं बुद्धाणं-सिद्ध कहीइ आठ तउ क्षय करी सीधा छइ। बुद्धाणं कहीइ ज्ञात तत्व छइ। पार गयाणं संसार तइ पारि गया छइ। परंपार गयाणं चऊद गुणठाणा नी परि पराइं पुहता छइं। लो अग्ग भुवम्मि पीढां-लोकाग्र कहीइ सिधि तहां उवसयाणं कहीइ पुहता छइ। नमोसव्वसव्व सिद्धाणं सदैव सकलता सिद्धि नइं नमस्कार हुउं।

१७३६. षडावश्यक बालावबोध— ×। पत्र सं० १८। आ० १२×४ इञ्च। भाषा— प्राकृत-संस्कृत। विषय आचार शास्त्र। र० काल — ×। ले० काल सं० १५७६। पूर्ण। वेष्टन सं० ३२३। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—मूल प्राकृत के नीचे संस्कृत में टीका है।

प्रशस्ति—संवत् १५७६ वर्षे आश्वन शुदि १३ गुरौ।

१७३७. षडावश्यक बालावबोध-हेमहंस गणि। पत्र सं० ४५। आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—हिन्दी (गुजराती मिश्रित)। र० काल ×। ले० काल सं० १५२१। पूर्ण। वेष्टन सं० २४०। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी।

विशेष—रचना का आदि अंत भाग निम्न प्रकार है—

आदिभाग

पहिलउ सकल मगलीक तउं,
मूल श्री जिनशासनऊ सार।
इग्यारह अंग चऊद पूर्व नउद्धार,
तो देव श्वासननु श्री पंच परमेष्टि महामंत्र नउकार।

अंतिम पुष्पिका

इति श्री तपागच्छ नायक सकल सुविहित पुरंदर श्रीसोमसुन्दरसूरि श्रीजयचन्द्रसूरि पद-कमल सेवित पंडित हेमहंसगणिना बालावबोधनार्थमर्थतया कृतोऽयं षडावश्यक बालावबोध आचन्द्रार्कं नंद्यात् । ग्रंथ सं० ३३०० । सं० १५२१ वर्षे श्रावण वदि ११ रविवासरे मालवमंडले उज्जयिन्यां लिखित ।

१७३८. षडावश्यकविवरण—× । पत्र सं० २६ । आ० १० × ४½ इञ्च । **भाषा**–संस्कृत **विषय**–आचार । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३६१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१७३९. षोडश कारण दशलक्षण जयमाल–रइधू । पत्र सं० ३६ । आ० ८×७ इञ्च । **भाषा**–अपभ्रंश । **विषय**–धर्म । र०काल × । ले०काल सं० १८८९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती कामा ।

१७४०. षोडशकारण भावना–पं० सदासुख कासलीवाल । पत्रसं० ७२ । आ० १२½ × ८ इञ्च । **भाषा**—राजस्थानी (ढूंढाडी) (ग०) । र०काल × । ले०काल सं० १९६४ भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२७ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

१७४१. प्रति सं० २ । पत्रसं० ११० । आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन संख्या ४९३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१७४२. प्रति सं० ३ । पत्रसं० ६० । आ० १४½ × ८ इञ्च । ले०काल सं० १९५५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष – मांगीराम शर्मा ने दौसा में प्रतिलिपि की थी ।

१७४३. प्रति सं० ४ । पत्रसं० २ से २१४ । ले० काल सं० १९६४ पूर्ण । वेष्टन सं० २६८ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—रत्नकरंड श्रावकाचार से उद्धृत है ।

१७४४. संदेह समुच्चय–ज्ञानकलश । पत्रसं० १९ । आ० १२ × ५½ इञ्च । **भाषा**–संस्कृत । **विषय**–धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

१७४५. सप्तदशबोल—× । पत्र सं० ४ । आ० ८×३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । **विषय**–धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

१७४६. सप्ततिका सूत्र सटीक—× । पत्र सं० ५४ । आ० ×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । **विषय**–धर्म । र०काल × । ले० काल सं० १७८३ फागुण सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—गुजराती मिश्रित हिन्दी में गद्य में टीका है । बूंदी में प्रतिलिपि हुई थी ।

१७४७. सम्यक्त वर्णन × । पत्रसं० ११ । आ० १०½ × ४ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । **विषय**—धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना बूंदी ।

१७४८. संबोध पंचासिका-गौतम स्वामी । पत्रसं० १५ । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र०काल-सावन सुदी २ । ले०काल सं० १८९६ फागुन बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८९ । **प्राप्ति स्थान**-- दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

विशेष---प्रति संस्कृत टीका सहित है तथा अखैगढ़ में प्रतिलिपि हुई ।

१७४९. संबोध पंचासिका— × । पत्रसं० १४ । आ० १२ × ५½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । र०काल × । ले०काल सं० १८२८ द्वि. आषाढ़ बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३९६ । **प्राप्ति स्थान**---भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

१७५०. संबोध पंचासिका × । पत्रसं० १३ । आ० १२ × ७ इन्च । भाषा-प्राकृत, संस्कृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ९४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

१७५१. प्रति सं० २ । पत्रसं० २९ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९५ । **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

१७५२. संबोध पंचाशिका-ज्ञानतराय । पत्रसं० १२ । आ० ९ × ७ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७६ । **प्राप्ति स्थान**--- दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—इस रचना का दूसरा नाम संबोध अक्षर बावनी भी है ।

१७५३. संबोध सत्तरी-जयशेखर सूरि । पत्र सं० ६ । आ० १०½ × ५ इन्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

१७५४. संबोध सत्तरी— × । पत्रसं० ७ । आ० १०½ × ४½ इन्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

१७५५. संबोध सत्तरी प्रकरण- × । पत्रसं० २ । आ० ९ × ४ इन्च । भाषा— संस्कृत । विषय —धर्म । र०काल × । ले०काल सं० १६१५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४९ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

१७५६. संबोध सत्तरी बालावबोध- ×। पत्र सं० ८ । आ० १० × ४½ इन्च । भाषा हिन्दी (गद्य) । विषय -धर्म । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११० । **प्राप्ति स्थान** -दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

१७५७. सम्यक्त्व प्रकाश भाषा-डालूराम । पत्र सं० १२९ । भाषा— हिन्दी (पद्य) । विषय -- धर्म । र० काल १८७१ चैत सुदी १५ । ले० काल १९३४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

१७५८. सम्यक्त्व बत्तीसी-कंवरपाल । पत्र सं० ६ । भाषा— हिन्दी । विषय — धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५०६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

१७५९. सम्यक्त्व सप्तषष्टि भेद- × । पत्र सं० ८ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर दीवानजी काम्रा ।

१७६०. सागर धर्मामृत-पं० आशाधर । पत्र सं० ५६ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-श्रावक धर्म वर्णन । र०काल सं० १२९६ । ले० काल सं० १५९५ । आषाढ़ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१७ । **प्राप्ति स्थान**— भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—रितिवासानगरे सूर्यमल्ल विजयराज्ये ।

१७६१. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ३ से १३७ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२७८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१७६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६३ । आ० १९½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०११ । **प्राप्ति स्थान**–भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१७६३. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० ४६ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०८७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष – प्रति संस्कृत टीका संहित है ।

१७६४. प्रतिसं० ५ । पत्र सं० ४४ । ले०काल सं० × । अपूर्ण । वेष्टन सं १०८६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

१७६५. प्रतिसं० ६ । पत्रसं० ८२ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल सं० १६५४ आषाढ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१७६६. प्रतिसं० ७ । पत्र सं० ५८ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले० काल सं० १६३५ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७४५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—मोजमाबाद में भा० हेमा ने प्रतिलिपि की थी ।

१७६७. प्रतिसं० ८ । पत्रसं० ५३ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०५२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१७६८. प्रतिसं० ९ । पत्रसं० ४१ । ले०काल –× । पूर्ण । वेष्टनसं० १८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन बड़ा पंचायती मन्दिर डीग ।

१७६९. प्रतिसं० १० । पत्रसं० ९६–१५२ । आ० १३×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर घोरसली कोटा ।

विशेष—स्वोपज्ञ टीका संहित है । प्रारम्भ के ९५ पत्र नहीं ।

१७७०. प्रतिसं० ११ । पत्रसं० ४३ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल सं० १६५९ चैत्र सुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०/१३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पंचायती बून्दी (टोंक) ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है साह श्री भोटाकेनस्य भांडागारे लिखापितं ।

१७७१. प्रतिसं० १२ । पत्र सं० १३० । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल सं० १८२० चैत्र बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बून्दी ।

विशेष महाराज माधवसिंह के शासन में चम्पावती नगरी में प्रतिलिपि की गयी थी प्रति सटीक है।

१७७२. प्रतिसं० १३ । पत्रसं० ३० । आ० १२ × ५ इञ्च । ले०काल सं० १५५७ कार्तिक वदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बून्दी ।

१७७३. प्रतिसं० १४ । पत्रसं० ८६ । आ० ६½ × ४ इञ्च । ले०काल सं० १५८० वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत १५८० वर्षे वैशाख बुदी ५ लषकामरे श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ. श्री पद्मनंदिदेव तत्पट्टे भ. श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ. श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत् शिष्य भ० श्री धर्मचन्द्रास्तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये मूंड गोत्रे सा. देव तद्भार्या गौरी तत्पुत्र सा बाला तद्भार्या होली । तत्पुत्रा चत्वार प्रथम सा. सरवण स्योराज सा. डूंगर सा. डालू । सा. सरवण भार्या सरस्वती तत्पुत्र सा. हीला, लाल्ह । सा. हीला भार्या टपोत तत्पुत्र सा नायू । सा. स्योराज भार्या लाली । तत्पुत्रा. टला खीवा हीरा, सा. डूंगर भार्या लाडी एतेषां मध्ये साह डालू नामा इदंशास्त्रं श्रावकाध्ययनं लेखाप्य धर्मचन्द्रपात्राय दत्तं ।

१७७४. प्रतिसं० १६ । पत्र सं० ३८ । आ० १२ × ५½ । ले०काल सं० १८१६ वैशाख सुदी १५ । वेष्टन सं० १६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—महाराजा माधवसिंह के शासनकाल में जयपुर में पंडित चोखचन्द के शिष्य सुखराम ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

१७७५. प्रतिसं० १७ । पत्रसं० १-७३-१३३ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

१७७६. प्रति सं० १८ । पत्र सं० ६–४० । आ० ११½ × ५ इञ्च । ले०काल सं० १७२५ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १७२५ वर्षे माघ सुदी ८ शुक्रे श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे भ. श्री देवेन्द्रकीर्ति तदाम्नाये आचार्य श्री कल्याणकीर्ति तत् शिष्य ब्रह्म संघ जिष्णोरिदं पुस्तकं ।

१७७७. प्रति सं० १९ । पत्र सं० १३२ । ले०काल सं० १५५२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४/३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—संवत् १५५२ वर्षे कार्तिक बुदी ५ शनिवासरे शुभमस्तु चटेरा ज्ञातीय संघई नीउ भार्या नागश्री तस्य पुत्र संघई दीसा भार्या रत्नाश्री सुत धनराज भार्या तस्य पुत्र सोनापाल एतै- कर्मक्षयार्थं लिखापितं ।

१७७८. प्रति सं० २० । पत्र सं० १४५ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १६७१ ज्येष्ठ. बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

१७७९. सागार धर्मामृत भाषा— × । पत्र सं० २१२ । आ० ११ × ५½ इंच । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १९८० आषाढ़ बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष— चंदेरी में प्रतिलिपि हुई थी।

१७८०. **साधु आचार लक्षण**— × । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय-आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

१७८१. **साधु समाचारी**— × । पत्र सं० ५ । भाषा–संस्कृत । विषय–साधु चर्या । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

१७८२. **सारचतुर्विंशतिका**—**सकलकीर्ति** । पत्र सं० १५० । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन सं० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

१७८३. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १०४ । आ० ११½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक) ।

१७८४. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० १०० । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल सं० १८७१ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष– कोटा में प्रतिलिपि हुई थी।

१७८५. **सारचौबीसी**—**पार्श्वदास निगोत्या** । पत्र सं० ४०० । आ० १३½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल सं० १६१८ कार्तिक सुदी २ । ले० काल सं० १६६८ माघ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६ । **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष —जयगोविंद ताराचन्द की बहिन ने बड़ा मन्दिर में चढ़ाया था ।

१७८६. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ४३८ । आ० १२×७½ इञ्च । ले० काल सं० १६४५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

१७८७. **सार समुच्चय**—**कुलभद्र** । पत्र सं० १७ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—पत्र बहुत जीर्ण है ।

१७८८. **सारसमुच्य** । पत्र सं० १६ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

१७८९. **सार समुच्य** । पत्र सं० १६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५६–७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

१७९०. **सार संग्रह**— × । पत्र सं० २५७ । आ० १२½×५½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—संस्कृत तथा हिन्दी में टीका भी दी हुई है।

१७६१. **सुखविलास—जोधराज कासलीवाल।** पत्र सं० ६४। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल १८८४ मंगसिर सुदी १४। ले० काल सं० १९३६। पूर्ण। वेष्टन सं० ५४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

विशेष—पं० दौलतराम के पुत्र जोधराज ने कामा में सुखविलास की रचना की थी।

१७६२. **प्रति सं० २**। पत्रसं० ३११। ले०काल १८८४ पूर्ण। वेष्टन सं० ५४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—पोदकर ब्राह्मण से जोधराज ने कामा में लिपि कराई थी।

१७६३. **प्रति सं० ३**। पत्रस० २६४। ले०काल ×। १८८६। पूर्ण। वेष्टन सं० ५४५। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—जो यामें अलप बुद्धि के जोग तें कहीं अक्षर अर्थ मात्रा की भूल होय तौ विशेष ज्ञानी धर्म बुद्धि मोकूं अल्प बुद्धि जानि क्षमा करि धर्म जानि या कौं सोध के सुद्ध करि लीज्यो।।

प्रारम्भ—

णमो देव अरहन्त कौ नमौं सिद्ध महाराज।
श्रुत नमि गुर को नमत हौं सुख विलास के काज।।
येही चउ मंगल महा ये चउ उत्तम सार।
इन चव को चरणौं गहूं होहु सुमति दातार

अन्तिम—

जिन वाणी अनुस्वार सब कथन महा सुखकार।
भूले पंथ अनादि तें मारग पावै सार।।
मारग दोय श्रुत में कहे मोक्ष और ससार।
सुख विलास तो मोक्ष है दुख थानक संसार।।
जिन वाणी के ग्रन्थ सुनि उमग्यो हरष अपार।
ताते सुख उद्यम कियौ ग्रंथन के अनुसार।।
व्याकरणादिक पढ्यो नही, भाषा हूं नहीं ज्ञान।
जिनमत ग्रन्थन तें कियो, केवल भक्ति जु आनि।।
भूल चूक अक्षर अरथ, जो कुछ यामें होय।
पंडित सोध सुधारिये, धर्म बुद्धि धरि जोय।।
दौलत सुत कामा बसी, जोध कासलीवाल।
निज सुख कारण यह कियो, सुख विलास गुणमाल।।
सुख विलास सुखथान है, सुखकारण सुखदाय।
सुख अर्थ सोयों सदा, शिव सुख पावो जाय।।
कामा नगर सुहावनौं, प्रजा सुखी हरषंत।
नीत सहत तहा राज है, महाराज बलवन्त।।

जिन मन्दिर तहां चार हैं सोभा कहिय न जाय ।
श्री जिन दर्शन देख तैं आनन्द उर न समाय ।।
श्रावक जैनी बहु बसैं आपस में बहु प्रीति ।
जिन वाणी सरधा करैं पाखंडी नहिं रीत ।।
एक सहस्र अरु आठ सौ [illegible] ऊपरवार ।
सो संमत सुभ जानियो शुकल पक्ष भृगुवार ।।
मंगसिर तिथि पांचौं विषै उत्तराषाढ़ निहार ।
ता दिन यह पूरण कियौ शिव सुख को करतार ।।
सुख विलास इह नाम है सब जीवन सुखकार ।
या प्रसाद हम हूं लहैं निज आतम सुखकार ।।
सुखी होहु राजा प्रजा सेवो धर्म सदीव ।
जैनी जन के भाव ये सुख पावैं सब जीव ।।

अन्तिम मङ्गल—

देव नमो अरहंत सकल सुखदायक नामी ।
नमो सिद्ध भगवान भये शिव निज सुख ठामी ।।
साध नमौं निरग्रंथ सकल परिग्रह के त्यागी ।
सकल सुख्य निज थान मोक्ष ताके अनुरागी ।।
बन्दों सदा जिन धर्म को देय सर्व सुख सम्पदा ।
ये सार धार तिहूं लोक में करो क्षेम मङ्गल सदा ।।

मंगसिर सुदी १ सं १८८४ में जोधराज कासलीवाल कामा के ने लिखवाया था ।

१७९४. सुदृष्टितरंगिणी—टेकचन्द । पत्र सं० ६३४ । आ० १२½×७½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल सं० १७३८ । ले०काल सं० १९१० पूर्ण । वेष्टन सं० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दीवानजी कामा ।

१७९५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५९६ । ले० काल सं० १९१० । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३७ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

१७९६. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० २९९ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५३८ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

१७९७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३१० । आ० १५×८ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

१७९८. प्रतिसं० ५ । पत्र सं० २–२०० । आ० १२½×६½ इंच । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—२०० से आगे पत्र नहीं है ।

१७९९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १५० । आ० ११½×७½ इञ्च । ले०काल सं० १९२६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३/६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—सवाई माधोपुर में प्रतिलिपि की गयी थी।

१८००. प्रति सं० ७। पत्र सं० ७०७। आ० १०½×५½। ले०काल सं० १६०८ ज्येष्ठ सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० १६। **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक)

१८०१. प्रति सं० ८। पत्र सं० ६१ आ० [illegible]। ले०काल सं० १६३३। अपूर्ण। वेष्टन सं० ४८१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर।

१८०२. प्रति सं० ९। पत्रसं० ५४७। आ० ११ × ७ इञ्च। ले०काल सं० १६०७। पूर्ण। वेष्टन सं० ११३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर, उदयपुर।

१८०३. प्रति सं० १०। पत्रसं० ४३५। आ० १०½×८ इञ्च। ले०काल सं० १६१२ कार्तिक सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० २६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

१८०४. प्रतिसं० १२। पत्रसं० ३०५। आ० १४×११ इंच। ले०काल सं० १८६१ आसोज सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० ६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, तेरहपंथी दीसा।

विशेष—नाथूलाल तेरापंथी ने पन्नालाल तेरापंथी से प्रतिलिपि करवायी थी।

१८०५. प्रतिसं० १३। पत्रसं० ३५३। आ० १३×७½ इंच। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर, करौली।

१८०६. प्रतिसं० १४। पत्रसं० १ से ६३। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर हण्डावालों का डीग।

१८०७. प्रतिसं० १५। पत्रसं० ४६१। आ० १३ × ७ इञ्च। ले०काल सं० १६६३। पूर्ण। वेष्टन सं० १३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अघेरवालों का आवां, (उणियारा)।

१८०८. प्रतिसं० १६। पत्रसं० २५७–४०५। आ० १३½ × ७½ इंच। ले०काल सं० १६२८। अपूर्ण। वेष्टन सं० ११६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती टूनी (टोंक)।

१८०९. प्रतिसं० १७। पत्र सं० २६५। आ० १४ × ७ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ४२/२३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती टूनी (टोंक)।

१८१०. प्रतिसं० १८। पत्रसं० ४३०। आ० १२½×६ इंच। ले० काल सं० १६०८ पौष बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० २६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा।

विशेष—बल्देव गुजराती मोठ चतुर्वेदी नैन मध्ये लिखितं।

१८११. प्रतिसं० १९। पत्रसं० ३८। आ० १२×६ इंच। ले०काल सं० १६४५। अपूर्ण। वेष्टन सं० ३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

१८१२. प्रतिसं० २०। पत्र सं० ५४४। आ० १३×६ इंच। ले०काल सं० १६२५। पूर्ण। वेष्टन सं० १३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

विशेष—लोचनपुर (नैणवा) में लिखा गया था।

१८१३. प्रतिसं० २१। पत्र सं० १९। आ० १०×७ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ३२९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

१८१४. सूतक वर्णन—भ० सोमसेन । पत्र सं० १७ । आ० १०×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १९२५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पञ्चायती मंदिर अलवर ।

१८१५. सूतक वर्णन— × । पत्र सं० २ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१८१६. सूर्य प्रकाश—आ० नेमिचन्द्र । पत्र सं० १११ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

१८१७. सोलहकारण भावना × । पत्र सं० १ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१८१८. स्वरूप संबोधन पच्चीसी— × । पत्र सं० २ । भाषा—संस्कृत । विषय – धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५/२५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर, उदयपुर ।

१८१९. स्वाध्याय भक्ति— × । पत्र सं० २ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । भाषा – संस्कृत । विषय—धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १८४४ अगहन बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

—: ० :—

विषय – अध्यात्म चिंतन एवं योग शास्त्र

१८२०. अध्यात्मोपनिषद्-हेमचंद्र । पत्र सं० २० । आ० १० × ४ इंच । भाषा —संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २६२ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर, अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

१८२१. अध्यात्म कल्पद्रुम- मुनि सुन्दरसूरि । पत्र सं० ७ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ६२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१८२२. अध्यात्म तरंगिणी—आचार्य सोमदेव । पत्र सं० १० । आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन सं ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१८२३. अध्यात्म बारहखडी—दौलतराम कासलीवाल—पत्र सं० २०४ । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-अध्यात्म । र० काल सं० १७९८ फागुण सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

विशेष--पांच हजार पद्यो से अधिक की यह कृति अध्यात्म विषय पर एक सुन्दर रचना है । यह अभी तक अप्रकाशित है ।

१८२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८३ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन तेरापंथी मन्दिर बसवा ।

१८२५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३२ । आ० १२ × ६ इंच । ले० काल सं० १८६० । पूर्ण । वेष्टन सं० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—हंसलाल जी तेरहपंथी ने माधोपुर निवासी ब्राह्मण भोपत से प्रतिलिपि करवाकर दौसा के मन्दिर में विराजमान की थी ।

१८२६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १५६ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ७ इंच । ले०काल सं० १८३१ कार्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

१८२७. प्रतिसं० ५ । पत्र सं० २१६ । आ० १२ × ६ इंच । ले० काल सं० १८७६ फागुण सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७-२८ । **प्राप्ति स्थान**-—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—भवानीराम ने अलवर में प्रतिलिपि की थी ।

१८२८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२८ । ले० काल सं० १८०३ आसोज सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३३ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१८२९. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २८० । आ० १६×८ इंच । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अग्रवाल उदयपुर ।

१८३०. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३२ । आ० ११½ × ६½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर वैर (बयाना)

विशेष—४०० पद्य है ।

१८३१. अध्यात्म रामायण— × । पत्र सं० ३३६ । आ० १० × ६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १८५५ माघ सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ३५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका—

इति श्री अध्यात्मरामायणे ब्रह्मापुराणे उत्तरखंडे उमामहेश्वरसंवादे उत्तरखंडे नवम सर्गः । अध्यात्मोत्तरकांडे अह संख्यया परिक्षिप्ता । उत्तर कांड ।

१८३२. अनुप्रेक्षा संग्रह— × । पत्र सं० ७ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (प.) । विषय-चिंतन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७१० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—तीन तरह से बारह भावनाओं का वर्णन है ।

१८३३. अनुभव प्रकाश-दीपचन्द कासलीवाल । पत्र सं० २५ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-अध्यात्म । र० काल सं० १७८१ पौष बुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२-४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

१८३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल सं० १८१२ चैत सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी चेतनदास पुरानी डीग ।

१८३५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४० । आ० १२½ × ७½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर कामा ।

१८३६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१८३७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५६ । आ० ८½ × ५½ इञ्च । ले० काल— × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

१८३८. असज्झाय निज्जुत्ती × । पत्र सं० ४ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । र० काल × । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

१८३९. अष्ट पाहुड—कुंदकुंदाचार्य । पत्र सं० ८२ । आ० १२ × ४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १८१२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

१८४० प्रति सं० २ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १८१४ । **पूर्ण** । वेष्टन सं० ३९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१८४१. अष्टपाहुड भाषा-जयचन्द छावडा । पत्र सं० १७० । आ० १३½ × ८½ इञ्च । भाषा-राजस्थानी (ढूंढारी) गद्य । विषय-अध्यात्म । र० काल सं० १८६७ भादवा सुदी १३ । ले० काल

सं० १९७२ पौष सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२७ । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—टीकमचन्द सोनी ने पुत्र दुलीचंद के प्रसाद बड़ाधड़ा के मंदिर में चढ़ाया ।

१८४२. प्रतिसं० २ । पत्र सं० १५२ । आ० ११ × ७½ इञ्च । ले० काल सं० १८७७ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० १५६८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

१८४३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २७० । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले०काल सं० १९१९ आषाढ बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—मध्य पीपली चौंठ बजार दौलतराम ने अपने पुत्र के पठनार्थ प्रतिलिपि करवायी थी ।

१८४४. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० २०६ । आ० १३×६ इञ्च । ले०काल सं० १९४० फागुन वदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६/४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर सौगाणियों का करौली ।

१८४५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २६२ । आ० ११×६ इञ्च । ले०काल सं० १८७२ सावन सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती करौली ।

विशेष—अलवर नगर में जयकृष्ण ने प्रतिलिपि की थी ।

१८४६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १७० । आ० १२½ × ७½ इञ्च । ले०काल सं० १९२० । पूर्ण । वेष्टन सं० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर छोटा बयाना ।

विशेष—श्रावक माधोदास ने यह ग्रंथ मंदिर में भेंट किया था ।

१८४७. प्रतिसं० ७ । पत्र सं० २२६ । आ० १२½×७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पंचायती कामा ।

१८४८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २४५ । आ० ११×७ इञ्च । ले०काल सं० १९५७ सावन सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—दिगम्बर जैन सरस्वती भण्डार मथुरा के मार्फत प्रतिलिपि हुई थी ।

१८४९. प्रतिसं० ९ । पत्र सं० १९१ । आ० १३×७½ इञ्च । ले०काल सं० १९०६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती कामा।

१८५०. प्रति सं० १० । पत्र सं० २२२ । ले०काल १८७३ ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती भरतपुर ।

विशेष—जोधराज के पुत्र उमरावसिंह ने लिखवायी थी ।

१८५१. प्रतिसं० ११ । पत्र सं० २११ । ले० काल सं० १८७२ माह सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३९४ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर में प्रतिलिपि की गई थी ।

१८५२. प्रति सं० १२ । पत्र सं० १९० । ले० काल १८८७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर में चिम्मनराम बजाज ने लिखवायी थी ।

१८५३. प्रति सं० १३ । पत्र सं० २१२ । आ० १३½×८½ इञ्च । ले०काल सं० १९६२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सदर, जयपुर ।

विशेष—ऋषभचन्द बिन्दायकया ने लश्कर पाटोदी के मन्दिर जयपुर में महाराजा सवाई माधोसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि की थी।

१८५४. प्रति सं० १४। पत्र सं० २८६। आ०१२×६½ इञ्च। ले० काल सं० १८७२ सावन बुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० ६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर।

१८५५. प्रति सं० १५। पत्र सं० १९६। आ० १३×७½ इञ्च। ले०काल सं १९३८ सावण सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन सं० २०८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर।

१८५६. प्रतिसं० १६। पत्र संख्या १८५। आ० १२×८ इञ्च।। लेखन काल सं० १९४९। पूर्ण। वेष्टन सं० ११०-१९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ डूंडरगढ़, कोटा

१८५७. प्रति सं. १७। पत्र सं० २५४। आ० ११½×५½ इञ्च। ले०काल सं० १८८२। पूर्ण। वे०सं० २४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक)।

विशेष—आचार्य श्री माणक्य नन्दि के शिष्य ने लिखा था।

१८५८. प्रति सं. १८। पत्र सं०१६०। आ० १०×६½ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वे. सं० ११९। **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक।

१८५९. प्रति सं० १९। पत्र सं० २५१। आ० ११×७½ इञ्च। ले० काल सं० १९४५। पूर्ण। वे० सं० २३। **प्राप्ति स्थान**— दि०जैन मन्दिर पार्श्वनाथ डोडरायसिंह (टोंक)।

१८६०. प्रति सं० २०। पत्रसं० २२२। आ० ११×५½ इञ्च। ले०काल सं० १८८४ (शक सं० १७४६)। पूर्ण। वेष्टनसं० ७९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा।

विशेष—जोशी गोपाल ने लोवनपुर (नैणवा) में लिखा है।

१८६१. प्रतिसं० २१। पत्रसं० १७६। आ० १३ × ६ इञ्च। ले०काल सं० १९२९ कार्तिक सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० ३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर डूनी (टोंक)।

विशेष—सदासुख बैद ने अपने पठनार्थ लिखी।

१८६२. प्रति सं २२। पत्र सं० २०५। आ० १२½×६ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

१८६३. आत्म प्रबोध। पत्र सं० ३। आ० १० × ४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—अध्यात्म। र०काल ×। लेखन काल सं० १८२० कार्तिक सुदी १। अपूर्ण। वे०सं० ४। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—नैणसागर ने प्रतिलिपि की थी।

१८६४. आत्म प्रबोध—कुमार कवि। पत्र सं० १४। आ० १० × ४¾ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—अध्यात्म। र०काल ×। ले० काल सं० १५७२ आश्विन बुदी १०। वे० सं० ५३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—वीरदास ने दीवलाणे के पार्श्वनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी।

१८६५. प्रति सं० २। पत्रसं० ११। आ० १०½ × ४½ इञ्च। ले०काल सं० १५४७ फागुण सुदी ११। पूर्ण। वेष्टनसं०—८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—श्रीपथा नगरे खण्डेलवाल वंश गंगवाल गोत्रे संघई मेठापाल लिखापितं ।

१८६६. आत्म संबोध—रइधू । पत्र सं० २१ । भाषा—अपभ्रंश । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल सं० १६१० । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१८६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६-२६ । आ० ११ × ४ इञ्च । ले० काल सं० १५५३ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सं० १५५३ वर्षे चैत्र सुदी ६ पुष्य नक्षत्रे बुधे धृतिनाम्नियोगे गौणौलीय पत्तने राजाधिराजा श्री···· राज्य प्रवर्त्तमाने जोतिश्रीलाल तन्नृपुत्र जोति गोपाल लिखतं पुस्तकं लिखितमिति । शुभं भवतु ।

१८६८. आत्मानुशासन—गुणभद्राचार्य । पत्र सं० १-२० । आ० १२½ × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल—× । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अग्रवाल उदयपुर ।

१८६९. प्रति सं० २ । पत्रसं० ३५ । ले०काल १६१० चैत सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर डीग ।

विशेष—प्रति जीर्ण है तथा संस्कृत टीका सहित है ।

१८७०. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० ५० । आ० ११½×६ इंच । ले०काल × । वेष्टन सं० ६०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१८७१. प्रति सं० ४ । पत्रसं० ४६ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टन सं०** १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१८७२. प्रति सं० ५ । पत्रसं० ५२ । आ० १०×४ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१८७३. प्रतिसं० ६ । पत्रसं० ५८ । आ० ११½ × ४½ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति के प्रारम्भ में आचार्य श्री श्री हेमचन्द्र परम गुरुभ्यो नमः ऐसा लिखा है । संस्कृत में कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुए हैं ।

१८७४. प्रति सं० ७ । पत्रसं० ११ २६ । आ० १२×५ इंच । ले०काल सं० १७८३ मंगसिर सुदी ८ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—मन सुखराम ने कामा में प्रतिलिपि की थी ।

१८७५. प्रतिसं० ८ । पत्रसं० ४७ । आ० १०×५ इंच । ले०काल सं० १६८१ फागुण सुदी ६ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक) ।

१८७६. आत्मानुशासन टीका—टीकाकार पं० प्रभाचन्द्र । पत्रसं० ८२ । आ० १०×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले०काल सं० १५८० आषाढ़ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० २ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष –हिसार नगर में प्रतिलिपि की गई थी।

१८७७. प्रतिसं० २। पत्र सं० ८१। आ० १०½ × ४ इञ्च। ले०काल सं० १५४८ पौष बुदी ३। पूर्ण। वेष्टनसं० २२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा।

विशेष—गोपाचल दुर्ग में महाराजा मानसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी।

१८७८. प्रतिसं० ३। पत्रसं० ३३। आ० १०½×५ इञ्च। लेखन काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १०६। **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

१८७९. आत्मानुशासन भाषा''। पत्र सं० १–५८। आ० १२ × ५½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय—अध्यात्म। र०काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ७२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर।

१८८०. आत्मानुशासन भाषा -× । पत्रसं० १६१। आ० १२ × ५ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—अध्यात्म। र० काल × । ले०काल सं० १९४२ फागुन सुदी ६। पूर्ण। वेष्टनसं० ६७। **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन सौगाणी मंदिर करौली।

१८८१. आत्मानुशासन भाषा टीका---× । पत्रसं० ११०। आ० ११½ × ६½ इञ्च। भाषा—संस्कृत हिन्दी। विषय अध्यात्म। र०काल × । ले०काल सं० १८६० वैशाख सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन सं० ७०१। **प्राप्ति स्थान** -- [illegible] दि० जैन मन्दिर [illegible]।

विशेष—रामलाल पहाड्या ने हीरालाल के पठनार्थ पचेवर में प्रतिलिपि की थी।

१८८२. आत्मानुशासन भाषा –टोडरमल जी। पत्र सं० १४०। भाषा-हिन्दी। विषय–अध्यात्म। र०काल ४। ले० काल १९३१ पूर्ण। वेष्टन सं० ४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—अखंगढ़ में प्रतिलिपि हुई थी।

१८८३. प्रतिसं० २। पत्र सं० १४६। आ० ११ × ६ इञ्च। ले० काल सं० १८२४। पूर्ण। वेष्टनसं० २३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज.)। संग्रामपुर में प्रतिलिपि की गई थी।

१८८४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ९८। आ० १२½ × ६½ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० २८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा।

१८८५. प्रति सं० ४। पत्र सं० १४५। आ० १०½×५½ इञ्च। ले० काल सं० १८८७ सावन बुदी १४। पूर्ण। वेष्टन सं० ५। **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन तेरहपंथी मंदिर मालपुरा (टोंक)

विशेष—श्री चन्द्रप्रभ के मन्दिर में जीवणराम कासलीवाल ने मालपुरा में प्रतिलिपि की।

१८८६. प्रति सं० ५। पत्र सं० ८७। आ० ११½ × ५ इञ्च। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टनसं० १३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरह पंथी मन्दिर मालपुरा (टोंक)

१८८७. प्रति सं० ६। पत्र सं० १३८। आ० १३ × ७½ इञ्च। ले०काल सं० १८५२ चैत्र सुदी २। पूर्ण। वेष्टनसं० १२। **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन पंचायती मंदिर बयाना।

१८८८. प्रति सं० ७। पत्रसं० १३९। आ० १३ × ६ इञ्च। ले०काल सं० १८७५ भादवा सुदी ८। पूर्ण। वेष्टनसं० ७८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मंदिर, अलवर।

१८८९. प्रतिसं० ८ । पत्रसं० १६३ । आ० ११ × ७ इञ्च । ले०काल सं० १८७० ज्येष्ठ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

१८९०. प्रतिसं० ९ । पत्रसं० १६० । ले०काल सं० १८३० चैत्र सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३९० । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन पञ्चायती मंदिर भरतपुर ।

विशेष—पं० लालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

१८९१. प्रतिसं० १० । पत्रसं० १०६ । ले०काल सं० १८३० फागुन बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३९१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष—कुशलसिंह ने प्रतिलिपि करवाई थी तथा आमेर की गई थी ।

१८९२. प्रतिसं० ११ । पत्रसं० १४५ । ले०काल सं० १८५२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—रूदावल की गद्दी में प्रतिलिपि की गई थी ।

१८९३. प्रति सं० १२ । पत्रसं० १८७ । आ० ११ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल सं० १८२७ वैशाख सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

विशेष—बुधलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१८९४. प्रति सं० १३ । पत्रसं० ८९ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ९$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १८३४ सावण सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि की गई थी ।

१८९५. प्रति सं० १४ । पत्रसं० ८७ । आ० ९ × ६ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

१८९६. प्रति सं० १५ । पत्रसं० १८ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २३ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मंदिर इन्दरगढ़ (कोटा)

१८९७. प्रति सं० १६ । पत्रसं० ११९ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । ले०काल सं० १८६९ भाद्र सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२५/७१ । प्राप्ति स्थान—पार्श्वनाथ दि० जैन मंदिर इन्दरगढ़ (कोटा)

१८९८. प्रतिसं० १६क. । पत्रसं० १५८ । आ० १२ × ८$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १९४८ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९९ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर, इन्दरगढ़ (कोटा)

१८९९. प्रतिसं० १७ । पत्रसं० ४७। आ० १० × ९ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

१९००. प्रतिसं० १८ । पत्रसं० ११० । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

१९०१. प्रतिसं० १९ । पत्रसं० ८५ । आ० ९ × ६ इञ्च । ले०काल सं० १८३७ चैत्र सुदी १२ । अपूर्ण । वेष्टनसं० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली (कोटा) ।

१९०२. प्रति सं० २० । पत्र सं० २०३ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १८३६ आषाढ़ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनसं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती खण्डेलवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—अलवर में प्रतिलिपि हुई थी।

१६०३. प्रतिसं० २१। पत्र सं० १३५। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती खण्डेलवाल मन्दिर अलवर।

१६०४. प्रतिसं० २२। पत्र सं० १७३। आ० १२½ × ६ इञ्च। ले०काल सं० १६१० कार्तिक सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन सं० ३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—लाला रामदयाल फतेहपुर वासी ने ब्राह्मण हरसुख प्रोहित से मिर्जापुर नगर में प्रतिलिपि करवाई थी।

१६०५. प्रति सं० २३। पत्रसं० ११०। आ० ११×८ इञ्च। ले०काल सं० १८५७। पूर्ण। वेष्टन सं० ७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

१६०६. प्रतिसं० २४। पत्रसं० १३२। आ० १४×५ इञ्च। ले० काल सं० १८६० मंगसिर सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन सं० ८-२०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बड़ा बीसपंथी दौसा।

विशेष—उदैचन्द लुहाड़िया देवगिरी वासी (दौसा) ने प्रतिलिपि की थी।

१६०७. प्रतिसं० २५। पत्रसं० ७१। आ० १२½ × ५½ इञ्च। ले०काल सं० १८५५ वैशाख सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन सं० ४२-६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बड़ा बीसपंथी दौसा।

१६०८. प्रतिसं० २६। पत्र सं० १७५। आ० ११×५ इञ्च। लेखन काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा।

१६०९. प्रति सं० २७। पत्रसं० १२६। आ० १२½ × ५ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा।

विशेष—तेरापंथी चिमनलाल ने प्रतिलिपि की थी।

१६१०. प्रति सं० २८। पत्रसं० ६२। आ० ११ × ७½ इञ्च। ले० काल सं० १६६२ चैत्र सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० २५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

१६११. प्रति सं० २९। पत्र सं० १०६। आ० १२×५½ इञ्च। ले० काल सं० १८६८। पूर्ण। वेष्टन सं० ६१-१०६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—दसकत स्योबगस का व्यास फागी का।

१६१२. प्रति संख्या ३०। पत्रसं० १२२। आ० ६ × ६ इञ्च। ले०काल सं० १८३२ पौष बुदी ३। पूर्ण। वेष्टन सं० २८-६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—हरीसिंह टोंग्या ने रामपुरा (कोटा) में प्रतिलिपि करवाई थी।

१६१३. प्रति सं० ३१। पत्रसं० ११६। आ० १२×६ इञ्च। ले०काल सं० १८६७। पूर्ण। वेष्टन सं० १७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)।

१६१४. प्रति सं० ३२। पत्रसं० १७४। आ० १०½ × ५½ इञ्च। ले०काल सं० १८६६ सावन बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० २४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मंदिर नैणवा।

विशेष—लिखितं पं० श्री ब्राह्मन भगवानदास जो बांचै सुनै को श्री जिनेन्द्र।

१६१५. प्रति सं० ३३ । पत्र सं० ११८ । आ० १२½ × ६ इञ्च । ले०काल सं० १६१५ कार्तिक बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर तेरहपंथी नैणवा ।

विशेष—पुस्तक भंगालाल बैद ने की है ।

१६१६. प्रति सं० ३४ । पत्र सं० ११४ । आ० १२½ × ६ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर, बूंदी ।

विशेष—११४ से आगे पत्र नहीं है ।

१६१७. प्रतिसं० ३५ । पत्र सं० १८२–२६२ । आ० ६ × ५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

१६१८. प्रति सं० ३६ । पत्रसं० १२६ । आ० १०½ × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७८–४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

१६१६. प्रति सं० ३७ । पत्रसं० ११७ । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल सं० १८४८ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—सवाई प्रतापसिंह के राज्य में सवाई माधोपुर में प्रतिलिपि हुई ।

१६२०. प्रति सं० ३८ । पत्रसं० ७८ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

१६२१. प्रति सं० ३६ । पत्रसं० १३१ । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल सं० १८३५ श्रावण सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—सवाई माधोपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

१६२२. । प्रति सं० ४० । पत्र सं० १२८ । आ० १० × ६½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अग्रवाल उदयपुर ।

१६२३. प्रतिसं० ४१ । पत्र सं० १०४ । आ० १२½ × ४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण वेष्टन सं० २१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—१०४ से आगे पत्र नही हैं ।

१६२४ प्रतिसं० ४२ । पत्र सं० ६४ । आ० १०×३½×७½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—आरम्भ के पत्र किनारे पर कुछ कटे हुये हैं ।

१६२५. प्रति सं० ४३ । पत्र सं० २४८ । आ० ११ × ६ इञ्च । ले० काल सं० १६१४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—साहजी श्री दौलतराम जी कासलीवाल ने लिखवाया था ।

१६२६. प्रति सं० ४४ । पत्रसं० १–१३० । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६५ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१६२७. प्रतिसं० ४५ । पत्रसं० १७३ । आ० ११ × ८ । ले० काल × । वेष्टन सं० ८२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१६२८. प्रति सं० ४६ । पत्र सं० ११७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

१६२६. प्रति सं० ४७ । पत्र सं० १०३ । आ० १०½ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १८०४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१६३०. प्रति सं० ४८ । पत्र सं० ६३ । आ० १०½ × ७½ इञ्च । लेखन काल सं० १६०७ । आसोज बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३०६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१६३१. आत्मावलोकन—दीपचन्द कासलीवाल । पत्र सं० १०६ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १७२१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—पंचायती दि० जैन मन्दिर अलवर ।

१६३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८५ । ले० काल सं० १६२७ आषाढ शुक्ला १ । अपूर्ण । वे० सं० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, दीवानजी भरतपुर ।

१६३३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५६ । आ० १२ × ६½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१६३४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६१ । आ० १२½ × ७ इञ्च । ले० काल सं० १८८३ आसोज बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती कामा ।

विशेष—जोधराज उमरावसिंह कासलीवाल कामा ने प्रतिलिपि कराई थी । सेडमल बोहरा भरतपुर वाले ने अचनेरा में प्रतिलिपि की थी । श्लोक सं० २२५० ।

१६३५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०७ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १७६६ आसोज सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मंदिर, कामा ।

विशेष—श्री केशरीसिंह जी के लिये पुस्तक लिखी गई थी ।

१६३६. आलोचना × । पत्र सं० ७ । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—चिंतन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१६३७. आलोचना— × । पत्र सं०—१ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चिंतन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं०—१७४-१२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

१६३८. आलोचना जयमाल – ब० जिनदास । पत्र सं० ३ । आ० ६¾ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चिंतन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—किये हुए कार्यों का लेखा जोखा है ।

१६३६. आलोचनापाठ— × । पत्र सं० १३ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चिंतन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं०—१३७६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१९४०. इन्द्रिय विवरण—× । पत्रसं० ३ । आ० ११×४ इञ्च । **भाषा**-प्राकृत । विषय—चिंतन । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २१४/८५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर ।

१९४१. इष्टोपदेश—**पूज्यपाद** । पत्रसं० ६ । आ० ११×५ इञ्च । **भाषा**-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१९४२. कार्तिकेयानुप्रेक्षा—**स्वामी कार्तिकेय** । पत्रसं० २७ । आ० ९$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । **भाषा**-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१९४३. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ३२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१९४४. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० ३४ । ले०काल सं० १६१७ भादवा सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—मंडलाचार्य भुवनकीर्ति के शिष्य मुनि विशाल कीर्ति से साहू जाट एवं उसकी भार्या जाटम दे खंडेलवाल भौंसा ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१९४५. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० २८ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल सं० १६१० । पूर्ण । वेष्टन सं० १७८/१७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर ।

विशेष--प्रतिजीर्ण है ।

प्रशस्ति—सं० १६१० वर्षे वैशाख बुदी १४ सोमे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री विजयकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्र तद् शिष्य ब्र० कृष्णा ब्र० लीधा पठनार्थं हुंबड गोत्रे वा. राभा भा० रमादे सु० वा० पंचायणि भा० परिमलदे इदं पुस्तकं कर्म क्षमार्थं लिखापितं ।

कठिन शब्दों के अर्थ दिये हुए हैं ।

१९४६. प्रतिसं० ५ । पत्र सं० २३ । आ०१२$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले०काल सं० १६३८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अग्रवाल उदयपुर ।

विशेष- प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६३८ वर्षे मार्गशिर वदि २ भौमे जयतारणा-शुभस्थाने श्री जिनचैत्यालये श्री मूलसंघे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये श्री पद्मकीर्ति, सकलकीर्ति, भुवनकीर्ति, ज्ञानभूषण, विजयकीर्ति, शुभचन्द्र देवाः सुमतिकीर्तिदेवाः श्री गुणकीर्ति देवास्तद् गुरु भ्राता ब्रह्म श्री सामल पठनार्थं ।

१९४७. प्रतिसं० ६ । पत्र सं० ७६ । आ० ९×४ इञ्च । ले० काल सं० १५७२ भादवा सुदी ४ । अपूर्ण । वेष्टन सं २६२ । **प्राप्ति स्थान**- अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

१९४८. प्रतिसं० ७ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १९१३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डावालों का डीग ।

विशेष—संस्कृत टब्बा टीका सहित है ।

१६४६. **प्रति सं० ८** । पत्र सं० ७५ । आ० ८ × ६ इञ्च । ले०काल सं० १८६२ चैत बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर वैर (बयाना) ।

१६५०. **प्रति सं० ९** । पत्र सं० २१ । आ० १०½ × ५ इञ्च । ले०काल सं० १८११ चैत्र बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष — रत्नविमल के शिष्य पं० रामविमल ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५१. **प्रति सं० १०** । पत्र सं०- × । आ० १३ × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

१६५२. **प्रति सं० ११** । पत्र सं० २५ । आ० १० × ६ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

१६५३. **प्रति सं० १२** । पत्र सं० ६-५६ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ५११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष— प्रारंभ के ८ पत्र नही है ।

१६५४. **प्रति सं० १३** । पत्र सं० १३ । आ० ८½ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१६५५. **प्रति सं० १४** । पत्र सं० ६० । आ० १० × ५ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन सं० ६२ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर, लश्कर, जयपुर ।

विशेष—कहीं २ कठिन शब्दों के संस्कृत में अर्थ एवं टिप्पणी दिये गए हैं ।

१६५६. **प्रति सं० १५** । पत्र सं० २६ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । र० काल .. । ले० काल × । वेष्टन सं० ६३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—मुनि लक्ष्मीचन्द्र ने कर्मचन्द्र के पठनार्थ लिखा था ।

१६५७. **प्रति सं० १६** । पत्र सं० २४ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । ले० काल-सं० १५३५ मार्ग शीर्ष सुदी १५ । वेष्टन सं० ६४ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१६५८. **प्रति सं० १७** । पत्र सं० २० । आ० ८½ × ४ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३०-४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

१६५९. **प्रति सं० १८** । पत्र सं० ४१ । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर डीग ।

१६६०. **कार्तिकेयानुप्रेक्षा टीका-शुभचन्द्र** । पत्र सं० २८६ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चिंतन । र० काल सं० १६०० । ले० काल सं० १७८८ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०७६ । **प्राप्ति स्थान**--भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

१६६१. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ६०-१८४ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३०६ । **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

१६६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३२६ । ले० काल सं० १७८० कार्तिक सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पंचायती भरतपुर ।

विशेष—सूरसनगर में लिखा गया था ।

१६६३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २३६ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले० काल सं० १७६० । पूर्ण । वेष्टन सं० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

१६६४. प्रतिसं० ५ । पत्रसं० १–१४५ । ले० काल × । **अपूर्ण** । वेष्टन सं० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर, डीग ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१६६५. प्रतिसं० ६ । पत्र संख्या ५० । आ० १४½ × ६½ इञ्च । लेखन काल सं० १६२४ पौष सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

स्वस्ति श्री संवत १६२४ वर्षे पौष मासे शुक्ल पक्षे दशम्यां १० तिथौ श्री बुधवारे श्री ई लाषा शुभस्थाने श्री ऋषभ जिन चैत्यालये श्री मूलसंघे श्री सरस्वती गच्छे श्री बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदि देवास्तत्पट्टे भ० श्री देवेन्द्र कीर्ति देवास्तत्पट्टे श्री विद्यानंदि देवास्तत्पट्टे भ० श्री मल्लि भूषणदेवास्तत्पट्टे भ० श्री लक्ष्मीचन्द्र परमगुरु देवास्तत्पट्टे भ० श्री वीरचन्द्र देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री ज्ञान भूषण गुरवो जयतु तथात्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्र गुरवोऽनंदंतु । श्री आचार्य श्री सुमति कीर्तिना लिखापिता स्वहस्तेन शोधितेयं टीका । आचार्य रत्नभूषण जयतु । श्री कार्तिकेयानुप्रेक्षा सटीका समाप्ता ।

१६६६. कार्तिकेयानुप्रेक्षा भाषा—जयचन्द्र छाबड़ा । पत्र सं० १०८ । आ० १२ × ८ इञ्च । भाषा – राजस्थानी (ढूंढारी) गद्य । विषय – अध्यात्म । र० काल सं० १८६३ सावन बुदी ३ । ले० काल सं० १८६४ वैशाख बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५७० । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—ग्रंथ रचना के ठीक ६ माह बाद लिखी हुई प्रति है ।

१६६७. प्रतिसं० २ । पत्र सं० १०६ । आ० ८½ × ६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दि अग्रवालों का अलवर ।

१६६८. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० १०६ । आ० १०½ × ७ इञ्च । ले०काल १८७१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अग्रवालों का अलवर ।

१६६९. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० १३६ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले० काल सं० १८८७ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरह पंथी मालपुरा (टोंक) ।

विशेष - जीवनराम कासलीवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१६७०. प्रतिसं० ५ । पत्रसं० २३७ । आ० १०×७ इञ्च । ले० काल सं० १६५३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

१६७१. प्रति सं० ६ । पत्रसं०९३ । आ० १३×८ इञ्च । ले०काल सं० १६६१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अगवाल मंदिर नैणवा ।

१६७२. प्रति सं० ७। पत्रसं० ६७। आ० ११ × ६ इञ्च। ले० काल। पूर्ण। वेष्टनसं० १२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक।

१६७३. प्रति सं० ८। पत्र सं० १४७। आ० १२×८ इञ्च। ले० काल स० १६४६ ज्येष्ठ बुदी ५। पूर्ण। वेष्टनसं० १०४/५। **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)।

१६७४. प्रति सं० ६। पत्र सं० ६३। आ० ६½×६½ इञ्च। ले० काल सं० १८३७ चैत बुदी १२। अपूर्ण। वेष्टन सं० ८८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

१६७५. प्रति सं० १०। पत्रसं० १०८। आ० ११×८ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर खण्डेलवाल अलवर।

१६७६. प्रति सं० ११। पत्र सं० ८१। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० १६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर।

१६७७. प्रति सं० १२। पत्रसं० ५०१। ले० काल सं० १८६०। पूर्ण। वेष्टनसं० १६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—भरतपुर में हेतराम रामलाल ने बलवन्तसिंह जी के राज्य में प्रतिलिपि करवाई थी।

१६७८. प्रतिसं० १३। पत्रसं० ११५। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ५३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर।

१६७९. प्रति सं० १४। पत्रसं० १०८। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ५३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

१६८०. प्रति सं० १५। पत्र सं० २३२। आ० १० × ६½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ११४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर छोटा बयाना।

१६८१. प्रतिसं० १६। पत्र सं० ११२। आ० १२×७ इञ्च। ले०काल सं० १८६८। पूर्ण। वेष्टन सं० १०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती कामा।

विशेष—प्राकृत में मूल भी दिया हुआ है।

१६८२. प्रति सं० १७। पत्रसं० १६२। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर डूण्डावालों का डीग।

१६८३. प्रति सं० १८। पत्रसं० ४८। आ० १३ × ६½ इञ्च। ले०काल स० १८६२ भादों सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन संख्या ८४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

विशेष—चिम्मनलाल त्रिलोका ने नेमिनाथ चैत्यालय में इस प्रति को लिखवाई थी।

१६८४. . प्रतिसं० १६। पत्रसं० १०६। आ० १०½ × ७½ इञ्च। पूर्ण। वेष्टन सं० १६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा।

विशेष १०६ से आगे के पत्र नहीं है।

१६८५. प्रति सं० २०। पत्रसं० १५०। आ० १२ × ५¾ इञ्च। ले० काल स० १८६१ भादवा बुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० ६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—श्री चौदेरामू ने चन्द्रपुरी में प्रतिलिपि की थी।

१९८६. प्रति सं० २१ । पत्र सं० ११२ । आ० १५ × ६½ इञ्च । ले०काल सं० १९१२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५३-१३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

१९८७. गुणतीसीभावना – × । पत्र सं० ५ । आ० ९×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चिंतन । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २६०/१९९ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर सम्भवनाथ उदयपुर ।

अन्तिम—उगणत्रीसीभावना लगोजे सत्य विचार ।
जेमनमाहि समरसि ते तरसे संसार ।।

१९८८. गुण विलास—नथमल विलाला । पत्र सं० ९१ । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—अध्यात्म । रचना काल १८२२ आषाढ़ बुदी १० । ले०काल १८२२ द्वि० आषाढ़ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७१ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

१९८९. चारकषाय सज्झाय—पद्मसुन्दर । पत्र सं० ८ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चिंतन । र०काल × । ले० काल सं० १७९३ पौष बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—ऋषि रत्न ने उदयपुर में लिखा ।

१९९०. चिड़विलास—दीपचन्द कासलीवाल । पत्र सं० ४४ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । र०काल सं० १७७९ फागुण बुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०५० । **प्राप्तिस्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१९९१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४ । आ० १२×४½ इञ्च । ले०काल सं० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

विशेष—महात्मा जयदेव ने जोबनेर में प्रतिलिपि की थी ।

१९९२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४१ । आ० ८½×४ इञ्च । ले० काल सं० १८५४ ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७/७ । **प्राप्तिस्थान** – दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रत्येक पत्र में ७ पंक्ति एवं २२-२४ अक्षर हैं ।

१९९३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६७ । आ० ९×४½ इञ्च । ले०काल सं० १७७९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१९९४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५१ । आ० १३ × ७½ इञ्च । ले०काल सं० १९०६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

१९९५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५९ । आ० १०½×७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती बयाना ।

विशेष—मोहनलाल कासलीवाल भरतपुर वाले ने प्रतिलिपि की थी । माह सुदी १४ सं० १९३२ में पौतदार चुन्नीराम बैलाडा ने बयाना के र चढ़ाया था ।

१९९६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती भरतपुर ।

विशेष—जोधराज कासलीवाल ने लिखवाया था ।

१९९७. प्रति सं० ८। पत्रसं० ६५ । ले०काल सं० १६५४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती भरतपुर ।

विशेष—भुसावर वालों ने भरतपुर में चढ़ाया था ।

१९९८. प्रति सं० ९। पत्रसं० १४१ । आ० ६×४½ इञ्च । ले०काल सं० १८५५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

१९९९. प्रति सं. १०। पत्रसं० ६८ । आ० ८½×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

२०००. प्रतिसं० ११। पत्रसं० ६४ । आ० ६½×४½ इञ्च । ले०काल सं० १७५१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती खंडेलवाल अलवर ।

विशेष—इस प्रति में रचनाकाल सं० १७४९ तथा लेखनकाल सं० १७५१ दिया है जबकि अन्य प्रतियों में रचना काल सं० १७७९ दिया है ।

२००१. प्रतिसं० १२। पत्र सं० ६६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर खंडेलवाल अलवर ।

२००२. चेतावणी ग्रंथ—रामचरण। पत्र सं० ७ । आ० १३ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित एवं अध्यात्म । र०काल × । ले०काल सं० १८३३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०७ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—आदिभाग—

प्रथम नमो भगवंत कूं, फेर नमो सब साध ।
कहूं एक चेतावणी सुवाणी विमल अगाध ।।
बँधे स्वाद रस भोग सूं इन्द्रया तणा अरथ ।
उन जीवन के चेतावे करूं चितावणी ग्रंथ ।।
रामचरण उपदेश हित करूं ग्रंथ विस्तार ।
पढ्यो प्राण भव कूप में निकसै अर्थ विचार ।।

चौकी—दिवाना चेत रे भाई, तुज सिर गजब चलि आई ।
जरा की फौज अति भारी, करे तन लूट के ख्वारी ।।

अन्तिम—रामचरण जब राम कूं संत कहे समझाय ।
सुख सागर कूं छोड़ के मत छीलर दुख जाय ।।

सोरठा—भरीयादक कलि जाय सबद ब्रह्म नाहीं कले ।
रामचरण रहत मांहि चोरासी भट काटले ।।
चोरासी की मार भजन बिना छूटे नहीं ।
ताते हो हुशियार एह सीख सतगुरु कही ।।१२१।।
इति चेतावणी ग्रंथ ।

लिखितं सुनेल मध्ये पं० जिनदासेन परोपकारार्थं ।।

२००३. **छहढाला-टेकचन्द** । पत्र सं० ६ । आ० ८ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-चिन्तन । र०काल × । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मंदिर भादवा (राज.) ।

२००४. **छहढाला—दौलतराम पल्लीवाल** । पत्र सं० १२ । आ० ८ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चिन्तन । र०काल सं० १८६१ वैशाख सुदी ३ । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

२००५. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १५ । आ० ७½ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—अंत में बारहमासा भी दिया हुआ है जो अपूर्ण है ।

२००६. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० १७ । आ० ७½ × ५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर छोटा बयाना ।

२००७. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० १० । आ० ६ × ६ इञ्च । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

२००८. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० २८ । आ० १२ × ६½ इञ्च । ले० काल—सं० १९६५ मंगसिर सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर, फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—पं० जगन्नाथ चंदेरी वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

२००९. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० १० । आ० ८ × ६½ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

२०१०. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० १० । आ० ६½ × ५½ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८७/९२ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

२०११. **प्रति सं० ८** । पत्र सं० १३ । आ० ११ × ७ इञ्च । ले०काल—सं० १९४३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्रीमहावीर बूंदी ।

२०१२. **छहढाला—बुधजन** । पत्र सं० २ । आ० १२ × ६ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चिंतन । र०काल सं० १८५९ वैशाख सुदी ३ । ले०काल सं० १८६० आसोज सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६/१४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ जी टोडारायसिंह ।

विशेष—पं० सदैराम ने डिग्गी में प्रतिलिपि की थी । प्रति रचना के एक वर्ष बाद की ही है ।

२०१३. **ज्ञानचर्चा**— × । पत्र सं० ४७ । आ० १२½ × ६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल सं० १८५४ पौष सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५५४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२०१४. **ज्ञान दर्पण—दीपचंद कासलीवाल** । पत्र सं० २८ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-अध्यात्म । र०काल × । ले० काल सं० १८६५ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—रामपुरा के कोटा में प्रतिलिपि हुई थी ।

२०१५. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ३१ । आ० ६× ६½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मंदिर नैणवा ।

विशेष—३१ से आगे के पत्र नहीं हैं ।

२०१६. **ज्ञानसमुद्र—जोधराज गोदीका** । पत्र सं० ३४ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र० काल सं० १७२२ मँगसर बुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१/२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर मादवा (राज०) ।

२०१७. **प्रति सं० २** । पत्र सं० २६ । आ० १०½×५½ इञ्च । ले० काल सं० १८६५ आषाढ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

विशेष—हेमराज अग्रवाल के सुत मोतीराम ने प्रतिलिपि की थी । कृपाराम कामा वाले ने प्रतिलिपि कराई थी ।

२०१८. **ज्ञानार्णव—आचार्य शुभचन्द्र** । पत्र सं० १४२ । आ० १०½×४¾ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योग । र० काल × । ले० काल सं० १६५० ज्येष्ठ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

२०१९. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १४६ । आ० १०×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२०२०. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० १५१ । आ० ११½×४½ इञ्च । ले० काल सं० १५६५ मादवा बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२५८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है ।

२०२१. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० २०६ । आ० ६×५½ इञ्च । ले० काल सं० १८१२ पौष सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०७८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

२०२२. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० ७५ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले० काल सं० १७७३ कार्तिक बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—तक्षकपुर में पं० कर्पूरचन्द्र ने आत्म पठनार्थ लिखा था ।

२०२३. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० १२० । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल सं० १७६७ फागुण बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२०८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२०२४. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० ८२ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११५१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२०२५. **प्रति सं० ८** । पत्र सं० ६७ । आ० ८½×७ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८६८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

विशेष—ग्रंथ चिपका हुआ है । गुटका साइज में है ।

२०२६. **प्रति सं० ९** । पत्र सं० ७७—१४८ । आ० ११×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

२०२७. **प्रति सं० १०**। पत्रसं० २-१५। आ० १३ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—केवल योगप्रदीपाधिकार है प्रति प्राचीन है।

२०२८. **प्रतिसं० ११**। पत्रसं० १३। आ० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल। अपूर्ण। वेष्टन सं० ४१-ङ। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

२०२९. **प्रतिसं० १२**। पत्र सं० ७६। आ० ६$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

२०३०. **प्रति सं० १३**। पत्रसं० ३-४३। आ० १०$\frac{1}{2}$×८ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २१७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

२०३१. **प्रति सं० १४**। पत्रसं० ७९। आ० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

२०३२. **प्रतिसं० १५**। पत्र सं० १०७। आ० १०×५ इञ्च। ले०काल सं० १७२८ कार्तिक बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० ९०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—रामचन्द्र ने लक्ष्मीदास री जहांनाबाद जैसिंहपुरा में प्रतिलिपि कराई। कार्तिक वदी ३ ऽ सं० १८७८ में अट्टमल्ल के पुत्र ज्ञानीराम ने बड़ा मन्दिर फतेहपुर में चढाया।

२०३३. **प्रतिसं० १६**। पत्र सं० ११। आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर तेरहपंथी दौसा।

विशेष—केवल योगप्रदीपाधिकार है।

२०३४. **प्रतिसं० १७**। पत्रसं० ११७। आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल सं० १७५२ पूर्ण। वेष्टनसं० ९५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

२०३५. **प्रति सं० १८**। पत्र सं० १२७। आ० १२×६ इञ्च। ले०काल ×। वेष्टन सं० १७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

२०३६. **प्रति सं० १९**। पत्र सं० ११८। आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल सं० १७८६ भादवा सुदी २ पूर्ण। वेष्टन सं० ७१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

२०३७. **प्रतिसं० २०**। पत्र सं० ९७। ले० काल सं० १६९६ ज्येष्ठ बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० २५६। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

विशेष—सिरोंज में लिखा गया था।

२०३८. **प्रतिसं० २१**। पत्र सं० १३६। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २५९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

२०३९. **प्रतिसं० २२**। पत्र सं० १३३। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २८०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

२०४०. प्रतिसं० २३ । पत्र सं० ९३ । आ० १२×४ इंच । ले०काल सं० १५४८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति—संवत् १५४८ वर्षे वैशाख सुदी २ गुरुवासरे गोपाचलगढ़ दुर्गे महाराजाधिराज श्री मानसिंहदेव राज्यप्रवर्त्तमाने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्री गुणकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री यशकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री मलयकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे महासिद्धांत आगम विद्यानुवाद–उद्धाटन समर्थीतः तत्पंडिताचार्य श्री गुणभद्रदेवा तस्य आम्नाये अग्रोत्कान्वये गर्गगोत्रे सादिछ ज्ञानार्णव ग्रंथ लिखापितं कर्मक्षयनिमित्तं ।

२०४१. प्रति सं० २४ । पत्र सं० १९९ । आ० ५ × ४ इञ्च । ले० काल सं० १७१४ फागुण सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—चन्द्रपुरी में महाराजाधिराज श्री देवीसिंह के शासनकाल में श्री सांवला पार्श्वनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की गई थी । सिरोजपुर मध्ये पंडित मदारी लिखितं ।

२०४२. प्रतिसं० २५ । पत्रसं० १७१ । आ० ९½×६ इञ्च । ले०काल सं० १८३३ मङ्गसिर बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)

२०४३. प्रतिसं० २६ । पत्र सं० ५८ । आ० ९½×४½ इञ्च । ले०काल सं० १७५१ भादवा बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० १९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

२०४४. प्रति सं० २७ । पत्र सं० ९९ । आ० ११½×५ इञ्च । ले०काल सं० १९४७ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १००–७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह ।

विशेष—प्रशस्ति ।

संवत् १६४७ वर्षे आशो मासे शुक्ल पक्षे दशम्यां तिथौ सोमे । छेह श्री बटाद्रा शुभस्थाने श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय मूलसंघे भारती गच्छे श्री कुंदकुंदान्वये भ० श्री लक्ष्मीचंद्र देवास्तत्पट्टे भ० श्री वीरचंद्र देवास्तत्पट्टे भ० श्री ज्ञानभूषण देवास्ततपट्टे भ० प्रभाचंद्र देवास्ततपट्टे भ० श्री वादिचंद्र देवास्तेषां शिष्य ब्रह्म श्री कीर्त्तिसागरेण लिखितं ।

२०४५. प्रति सं० २८ । पत्र सं० १५४ । आ० ११½×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं १२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पंचायती टूनी (टोंक) ।

२०४६. प्रति सं० २९ । पत्र सं० ११५ । आ० १०½×६½ इञ्च । ले०काल सं० १९३४ अषाढ़ बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा ।

२०४७. प्रति सं० ३० । पत्र सं० १४७ । आ० ९×५½ इञ्च । ले० काल सं० १८१२ मंगसिर बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपंथी दि० जैन मंदिर नैणवा ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है ।

२०४८. प्रतिसं० ३१ । पत्र सं० ११९ । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी ।

विशेष—अन्तिम पत्र दूसरी प्रति का है ।

२०४९. प्रति सं० ३२ । पत्र सं० १३७ । आ० १०½×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी

२०५०. प्रतिसं० ३३ । पत्र सं० ६६ । आ० १३×७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—४२ वीं संधि तक पूर्ण ।

२०५१. प्रतिसं० ३४ । पत्रसं० ८३ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल × । **अपूर्ण** । वेष्टन सं० ११५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—८३ से आगे के पत्र नहीं हैं ।

२०५२. ज्ञानार्णव गद्य टीका—श्रुतसागर । पत्र सं० ११ । आ० ११×४½ इञ्च । **भाषा**-संस्कृत । विषय—योग । र०काल × । ले० काल सं० १६९१ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२०७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—जोबनेर में प्रतिलिपि हुई थी ।

२०५३. प्रति सं० २ । पत्रसं० ११ । आ० ११×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ४६/६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्दरगढ़ (कोटा)।

२०५४. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० ६ । आ० १३½×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

२०५५. ज्ञानार्णव गद्य टीका-ज्ञानचन्द । पत्र सं० × । आ० ११½×५½ इञ्च । **भाषा**-हिन्दी गद्य । विषय-योग । र०काल सं० १८६० माघ बुदी २ । ले०काल सं० १८६० । **पूर्ण** । वेष्टन सं० २३६-६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

२०५६. ज्ञानार्णव गद्य टीका—पत्र सं० ५ । आ० १० × ५ इञ्च । **भाषा**-संस्कृत । वि० योग । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति संस्कृत टिप्पण सहित है ।

२०५७. ज्ञानार्णव भाषा—टेकचंद । पत्रसं० २६६ । आ० ११×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-योग । र०काल × । ले० काल— × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्री महावीर बूंदी ।

विशेष -२६६ से आगे पत्र नहीं है ।

२०५८. ज्ञानार्णव भाषा— × । पत्रसं० २६६ । आ० १०½×८ इञ्च । **भाषा**-संस्कृत-हिन्दी । विषय-योग । र०काल × । ले०काल सं०१६३० भादवा सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनसं० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

२०५९ ज्ञानार्णव भाषा-लब्धिविमल गणि । पत्रसं० १६४ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । र०काल सं० १७२८ आसोज सुदी १० । ले० काल सं० १७६८ सावण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७६ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—दूसरा नाम लक्ष्मीचंद भी है ।

२०६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८१ । आ० १२×६ इञ्च । ले० काल सं० १८१६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर भादवा (राज०)

२०६१. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० १३६ । आ० १०×५½ इञ्च । ले० काल सं० १८२१ आषाढ़ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—पंचायती दि० जैन मंदिर करौली ।

विशेष—अंतिम-इति श्री ज्ञानार्णवे योगप्रदीपाधिकारे गुण दोष विचारे आ० शुभचंद्र प्रणीतानुसारेण श्रीमालान्वये वदलिया गोत्रे भैया ताराचंद स्वाम्यर्चनया पंडित लक्ष्मीचंद विहिता सुखबोधनार्थं शुक्लध्यान वर्णन एकचत्वारिंशत प्रकरणं ।

अग्रवाल वंशीय शोभाराम सिंगल ने करौली में बुधलाल से प्रतिलिपि कराई ।

२०६२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३३ । आ० ११½×६½ इञ्च । ले०काल १७९९ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९३ । **प्राप्ति स्थान**—पंचायती दि० जैन मन्दिर करौली ।

विशेष—किसनदास सोनी व शिष्य रतनचंद ने हीरापुरी में प्रतिलिपि की ।

२०६३. **प्रति सं० ५** । पत्रसं० १३५ । आ० १२½×६ इञ्च । ले०काल सं. १८५४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर, कामा ।

२०६४ **प्रतिसं० ६** । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १७६१ माघ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मंदिर बसवा ।

२०६५. **प्रति सं० ७** । पत्रसं० ११२ । आ० १३×५½ इंच । ले० काल सं० १७८० फागुण बुदी ११ । अपूर्ण । वेष्टन सं० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—१११ वां पत्र नहीं है ।

२०६६. **प्रति सं० ८** । पत्रसं० १५८ । ले० काल १७८२ अषाढ़ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष—खोहरी में लिखी गई ।

२०६७. **प्रति सं० ९** । पत्रसं० १११ । ले० काल सं० १७८४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन, पञ्चायती मंदिर भरतपुर ।

२०६८. **प्रति सं० १०** । पत्रसं० ४९ । ले० काल सं० १७८४ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६८० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पञ्चायती मंदिर भरतपुर ।

२०६९. **ज्ञानार्णव भाषा-जयचन्द छाबड़ा** । पत्रसं० २६० । आ० ११×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय—योग । र० काल सं० १८६९ माघ सुदी ५ । ले० काल सं० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६१५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

२०७०. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ३३४ । आ० ११×७½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

२०७१. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० ३०२ । आ० १४×७½ इञ्च । ले० काल—सं० १९७१ माघ बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—परशादीलाल ने सिकन्द्रा (आगरे) में प्रतिलिपि की ।

२०७२. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० २६९ । आ० १३×७½ इञ्च । ले०काल सं० १९०१ द्वि सावण बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१२ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सौगाणी करौली ।

विशेष--माधोसिंह ने भरतपुर में सेहूराम से प्रतिलिपि करवाई ।

२०७३. **प्रतिसं० ५** । पत्रसं० ३२६ । आ० १२½×६½ इञ्च । ले०काल सं० १९०७ कार्तिक सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—नगर करौली में श्रावक चिमनलाल बिलाला ने नानिगराम से प्रतिलिपि करवाई ।

२०७४. **प्रतिसं० ६** । पत्रसं० ३६५ । आ० १३×७½ इञ्च । ले०काल सं० १८६८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३३६ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२०७५. **प्रति सं० ७** । पत्रसं० ६० । आ० १२¾×८ इञ्च । ले०काल सं० १८६७ वैशाख बुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० ६७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर कामा ।

२०७६. **प्रति सं० ८** । पत्रसं० १३४ । आ० १२½×६½ इंच । ले० काल ✕ । अपूर्ण । वेष्टनसं० १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, छोटा बयाना ।

२०७७. **प्रतिसं० ९** । पत्र सं० २१२ । ले० काल ✕ । अपूर्ण । वेष्टन सं०—१४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर छोटा बयाना ।

२०७८. **प्रति सं० १०** । पत्रसं० २८८ । ले०काल १८७५ । ज्येष्ठ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६६ । **प्राप्ति स्थान** -दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

२०७९. **प्रतिसं० ११** । पत्रसं० २८५ । ले०काल सं० १८८३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी भरतपुर ।

२०८०. **प्रति सं० १२** । पत्र सं० ३५७ । आ० १२×६ इंच । ले०काल—सं० १८८० । पूर्ण । वेष्टन सं० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

२०८१. **प्रतिसं० १३** । पत्रसं० ३५६ । आ० १२½×७ इञ्च । ले०काल— ✕ । पूर्ण । वेष्टनसं० १६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

२०८२ **प्रतिसं० १४** । पत्र सं० २६० । आ० ११×७ इञ्च । ले० काल सं० १९०० आसोज सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनसं० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक) ।

विशेष —पं० शिवलाल ने मालपुरा में प्रतिलिपि की ।

२०८३. **प्रतिसं० १५** । पत्र सं० ३११ । आ० १२×७½ इञ्च । ले०काल सं० १९७० पौष सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

२०८४. **प्रतिसं० १६** । पत्र सं० ३९० । आ० १०½ × ५½ इञ्च । ले० काल ✕ । **पूर्ण** । वेष्टन सं० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—प्रति उत्तम है ।

२१८५. **प्रतिसं० १७** । पत्र सं० ४०० । आ० १०½ × ५½ इञ्च । ले० काल ✕ । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

२०८६. **प्रतिसं० १८** । पत्र सं० १३२ । आ० १२×६ इञ्च । ले० काल० ✕ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नेणवा ।

२०८७. **प्रतिसं० १६** । पत्र सं० २७१ । आ० १३×६½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूँदी ।

विशेष– केवल अन्तिम पत्र नहीं है ।

२०८८. **प्रतिसं० २०** । पत्र सं० ४४० । आ० ११×८ इञ्च । ले० काल सं० १८८३ सावण बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—कालूराम साह ने खुशाल के पुत्र सोनपाल मांवसा ने प्रतिलिपि करायी ।

२१८९. **तत्त्वत्रयप्रकाशिनी टीका**—× । पत्र सं० १२ । भाषा–संस्कृत । विषय–योग । र० काल × । ले० काल सं० १७५२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूं ।

विशेष—सं० १७५२ वर्षे माह शुक्ला त्रयोदसी तिथौ लिखितमाचार्य कनक कीर्ति शिष्य पंडित राय मल्लेन गुरोति । ज्ञानार्णव से लिया गया है ।

२०९०. **द्वादशानुप्रेक्षा-कुन्दकुन्दाचार्य** । पत्र सं० ६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय-अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

२०९१. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १२ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल सं० १८८८ वैशाख बुदी २ । वेष्टन सं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—माणकचन्द ने लिपि की ।

२०९२. **द्वादशानुप्रेक्षा-गौतम** । पत्र सं० ५ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । र० काल—× । ले०काल × । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

२०९३. **ध्यानसार**— × । पत्र सं० ६ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय - योग । र० काल—× । ले० काल सं० १९०३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौमान, बूंदी ।

२०९४. **निर्जरानुप्रेक्षा**— × । पत्र सं० १ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र० काल—× । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० २०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

२०९५. **दशलक्षणभाष्य**— × पत्र सं० २६ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—चिंतन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८८ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, चौमान बूंदी ।

२०९६. **परमार्थ शतक—भगवतीदास** । पत्रसं० ७ । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र० काल—× । ले०काल सं० १९०६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

२०९७. **परमात्मपुराण—दीपचन्द कासलीवाल** । पत्र सं० ३७ । आ० ९×६ इञ्च ।

भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—अध्यात्म । र० काल—सं० १७८२ अषाढ सुदी ६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पंचायती कामा ।

विशेष—दीवान अमरचंद छाबड़ा के लिये कासलीवाल ने आमेर में सं० १७८२ में पूर्ण किया । प्रतिलिपि जयपुर में हुई थी ।

२०९८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । आ० ९½×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९४-४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—आमेर में लिखा गया ।

२०९९. परमात्मप्रकाश—योगीन्द्रदेव । पत्र सं० १२ । आ० ११×४½ इञ्च । **भाषा**—अपभ्रंश । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६० । **प्राप्तिस्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

२१००. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८ । आ० ९ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० सं० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२१०१. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० १७४ । आ० ७½×५ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२१०२. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० १५ । आ० ११½ × ५½ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

२१०३. प्रतिसं० ५। पत्र सं० २३ । आ० ९½ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १८२८ ज्येष्ठ सुदी १ । वेष्टन सं० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

२१०४. प्रतिसं० ६ । पत्र सं. २३ । आ० ९½ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १८२८ ज्येष्ठ बुदी १३ । वे० सं० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—रामपुरा में प्रतिलिपि हुई ।

२१०५. प्रतिसं० ७ । पत्र सं० ४ । आ० १३½ × ६ इंच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

२१०६. प्रतिसं० ८। पत्र सं० २० । आ० ११ × ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनंदन स्वामी, बूंदी, ।

विशेष—३४३ दोहे हैं ।

२१०७. परमात्म प्रकाश टीका—पाण्डवराम ।पत्र सं० १४३ । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल सं० १७५० वैशाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

२१०८. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १७२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

२१०९. परमात्मप्रकाश टीका— × । पत्रसं० १५५ । आ० १०×४½ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १७९४ मंगसिर सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२१७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२११०. **परमात्मप्रकाश टीका—ब्रह्मदेव** । पत्र सं० १७५ । आ० १२ × ८ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश संस्कृत एवं हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १८६१ द्वि० चैत्र सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४-१७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—दौलतराम की हिन्दी टीका सहित है ।
देवगिरी निवासी उदैचन्द लुहाड़िया ने दौसा में प्रतिलिपि की थी ।

२१११. **परमात्मप्रकाश टीका**— × । पत्रसं० १८० । आ० ९½ × ३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० १२६२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अति प्राचीन है । अक्षर मिट गये हैं ।

२११२. **परमात्मप्रकाश टीका—ब्र. जीवराज** । पत्रसं० ३५ । आ० ११ × २ इञ्च । र० काल सं० १७६२ । ले० काल सं० १७९२ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—बखतराम गोधा ने चाटसू में प्रतिलिपि की थी । टीका का नाम बालावबोध टीका है ।

अन्तिम प्रशस्ति—

श्रावक कुल मोट सुजस, खण्डेलवाल बखाण ।
साहूड़ा साखा बडी, भीम जीव कुल भाण ॥१॥
राजे तसु सुत रेखजी, पुण्यवंत सुप्रमाण ।
ताकों कुल सिंगार, सुत जीवराज सुजाण ॥२॥
पुर नोलाही में प्रसिद्ध राज सभा को रूप ।
जीवराज जिन धर्म में, समझै आतमरूप ॥३॥
करि आदर बहु दिन कह्यो, श्री श्रमसी उपझाय ।
परमातम परकास को, वार्तिक देहु बनाय ॥४॥
परमातम परकास सो सास्त्र अथाह समुद्र ।
मेठा अर्थ गम्भीर भणि, दर्सै अग्यान दलिद्र ॥५॥
सुगुरु ग्यान अंबक सजे पाये कीये प्रतद्य ।
अर्थ रत्न धरि जतनसूं, देखो परखो गद्य ॥६॥
सतरैसै बासठि समै, पखवजु सुणसार ।
परमातम परकास को, वार्तिक कह्यो विचारि ॥७॥
कीरति सुंदर सुमकला, चिरंजीव जीवराज ।
श्री जिन सासन सानधे, सुधर्म सुभिखसुराज ॥८॥
इति श्री योगीन्दुदेव, विरचिते तीनसौपैंतालीस.
दोहा पंद प्रमाण, परमात्म प्रकास को बालाबोध ।
सम्पूर्ण संवत् १७९२ वर्षे माह बुदी ५ दसकत
बखतराम गोधा चाटसू मध्ये लिखितं ॥

२११३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५१ । आ० ९½ × ६½ इञ्च । ले० काल सं० १८२७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२११४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७४ । आ० ९ × ६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बूंदी (टोंक)

२११५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५–६९ । आ० १० × ४½ इञ्च । । ले० काल सं० १८२६ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक)

विशेष—सवाईजयपुर में आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई । जती गुणकीर्ति ने ग्रंथ मन्दिर में पधराया सं० १८२८ में पं० देवीचन्द ने चढ़ाया ।

२११६. परमात्मप्रकाश टीका— × । पत्र सं० १२३ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश-संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १५२८ वैशाख सुदी २ । अपूर्ण । वेष्टन सं० २७ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—१२२ वां पत्र नहीं है । टीका ४४०० श्लोक प्रमाण बताया गया है । गोपाचल में श्री कीर्तिसिंहदेव के शासन काल में प्रतिलिपि हुई ।

२११७. परमात्मप्रकाश भाषा—पांडे हेमराज । पत्र सं० १७४ । आ० ८½ × ६इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४६–१०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियोंका डूंगरपुर ।

२११८. परमात्मप्रकाश भाषा— × । पत्रसं० १०२ । आ० १३ × ६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६/४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर भादवा (राज०)

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है ।

२११९. परमात्म प्रकाश भाषा— × । पत्र सं० १–१४० । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२१२०. परमात्मप्रकाश भाषा— × । पत्रसं० ३४ । आ० ९ × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

रचयिता-वृन्दावनदास लिखा है ।

२१२१. परमात्म प्रकाश भाषा—बुधजन । पत्रसं० ५४ । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टन सं० २० । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूण्डालालों का डीग ।

२१२२. परमात्मप्रकाश वृत्ति— × । पत्रसं० ५९–१७८ । आ० ११½ × ३½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । **वेष्टन सं० १३० । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति प्राचीन है। श्लोक सं० ४०००० है।

२१२३. **परमात्मप्रकाश भाषा—दौलतराम कासलीवाल।** पत्र सं० २६५। आ० १०½×६ इंच। भाषा—हिन्दी। **विषय**—अध्यात्म। र०काल ×। ले०काल सं० १८९९ पौष बुदी ५। पूर्ण। वेष्टनसं० १२६४। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२१२४. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० १९२। आ० ११×५ इंच। ले०काल सं० १८८२ मङ्गसिर सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन सं० ७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर।

विशेष—ब्रह्मदेव की संस्कृत टीका का हिन्दी गद्य में अनुवाद है।

२१२५. **प्रतिसं० ३**। पत्र सं० १४५। आ० १२½×७½ इंच। ले०काल सं० १९०४ फागुण सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० ५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती बयाना।

विशेष—ग्रंथ श्लोक सं० ६८९० मूलग्रंथकर्ता—आचार्य योगीन्दु टीकाकार ब्रह्मदेव (संस्कृत) लालाजी माधोसिंहजी पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी।

२१२६. **प्रतिसं० ४**। पत्र सं० १४६। आ० १२×७½ इंच। ले० काल सं० १९३४। पूर्ण। वेष्टन सं० १३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर छोटा (बयाना)।

२१२७. **प्रतिसं० ५**। पत्र सं० २०२। आ० ११½×५½ इंच। ले० काल सं० १९२७ पौष सुदी १। पूर्ण। वेष्टनसं० २०/९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती अलवर।

२१२८. **प्रति सं० ६**। पत्र सं० १७६। ले० काल सं० १९५६ ज्येष्ठ बुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० ७८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर अलवर।

२१२९. **प्रति सं० ७**। पत्रसं०१९१। आ० १०½×५½ इंच। ले०काल सं० १८८८ मंगसिर सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन सं० ७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक)

विशेष—मालपुरा में श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्रतिलिपि की गई।

२१३०. **प्रति सं० ८**। पत्रसं० ११८। आ० १२×८½ इंच। ले०काल सं० १८८२ मंगसिर सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन सं० ११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा।

विशेष—चिम्मनलाल ने दौसा में प्रतिलिपि की।

२१३१. **प्रति सं० ९**। पत्र सं० २८७। आ० १२½ × ८ इंच। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १३२ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

२१३२. **प्रतिसं० १०**। पत्र सं० ९१–१२७। आ० ११×८ इंच। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २९७। **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

२१३३. **प्रतिसं० ११**। पत्र सं० १८४। आ० ११½×८ इंच। ले० काल सं० १८९४। पूर्ण। वेष्टन सं० १५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक

विशेष—प्रोहित रामगोपाल ने राजमहल में प्रतिलिपि की।

२१३४. **प्रति सं० १२**। पत्रसं० ५०७। ले०काल सं० १८८६। पूर्ण। वेष्टनसं० २९६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—अक्षर काफी मोटे हैं।

२१३५. प्रतिसं० १३ । पत्र सं० १९० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २९७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

२१३६. परमात्मस्वरूप— × । पत्र सं० २ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—२४ पद्य हैं ।

२१३७. पाहुड दोहा—योगचन्द्र मुनि । पत्र सं० ८ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

२१३८. प्रतिक्रमण— × । पत्र सं० ४ । आ० ९×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—चिन्तन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५९/२८० । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

२१३९. प्रतिक्रमण— × । पत्र सं० १६ । भाषा—प्राकृत । विषय—चिन्तन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५/४१५ **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

२१४०. प्रतिक्रमण— × । पत्र सं० २३ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत-प्राकृत । विषय—चिन्तन । र०काल × । ले० काल सं० १८९१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

२१४१. प्रतिक्रमण— × । पत्र सं० १३ । आ० १०×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २७ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

२१४२. (बृहद्) प्रतिक्रमण— × । पत्र सं० ४० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चिन्तन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११५२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२१४३. (बृहद्) प्रतिक्रमण— × । पत्र सं० १७ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—चिंतन । र०काल × । ले०काल सं० १५७१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

२१४४. (बृहद्) प्रतिक्रमण— × । पत्र सं० ९ से २० । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत-संस्कृत । विषय—चिंतन । र०काल × । ले० काल सं० १८८१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—हीरानन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

२१४५. (बृहद्) प्रतिक्रमण । पत्र सं० ५–२० । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—चिन्तन । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १७१–४१७ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

२१४६. प्रतिक्रमण पाठ— × । पत्र सं० ८ । आ० ८ × ६½ इञ्च । भाषा-प्राकृत-हिन्दी । विषय—चिंतन । र० काल × । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन सं० १५०-२७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

२१४७. प्रतिक्रमण—गौतमस्वामी । पत्रसं० १८० । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १५९९ चैत सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति प्रभाचन्द्रदेव कृत संस्कृत टीका सहित है ।

२१४८. प्रति सं० २ । पत्रसं० ९९ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति पृष्ठ १० पंक्ति एवं प्रति पंक्ति ३५ अक्षर हैं ।

२१४९. प्रति सं० ३ । पत्रसं० ६६ । आ० ११ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १७२६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१७/४१४ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—श्री प्रभाचन्द्र कृत संस्कृत टीका सहित है । प्रति जीर्ण है ।

अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति श्री गौतम स्वामी विरचित वृहत् प्रतिक्रमण टीका श्रीमत् प्रभाचन्द्रदेवेन कृतेयं ।

संवत् १७२६ कार्तिक वदि ३ शुभे श्री उदयपुरे श्री संभवनाथ चैत्यालये राजा श्रीराजसिंह विजय-राज्ये श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक सकलकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक भुवनकीर्ति·····श्री कल्याणकीर्ति शिष्य त्रिभुवनचन्द्र पठनार्थं लिपिकृतं ।

२१५०. प्रतिक्रमण— × । पत्रसं० ३१ । आ० १० × ६ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-चिंतन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—१७ वां पत्र नहीं है ।

२१५१. प्रतिक्रमण —× । पत्रसं० १७ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—चिंतन । र० काल × । ले० काल सं० × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बून्दी) ।

२१५२. प्रतिक्रमण टीका—प्रभाचन्द्र । पत्रसं० २७ । भाषा—संस्कृत । विषय—आत्म चिंतन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० । २७ । ४१६ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

२१५३. प्रतिक्रमण सूत्र—× । पत्र सं० ७ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय-चिंतन । र० काल × । ले० काल सं० १७०३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

२१५४. प्रतिक्रमण सूत्र—× । पत्रसं० २ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—चिंतन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४९५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२१५५. **प्रतिक्रमण सूत्र**—× । पत्र सं० ३ । आ० १०$\frac{3}{4}$ × ५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—चिंतन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—गुजराती टब्बा टीका सहित है ।

२१५६. **प्रतिक्रमण सूत्र**—× । पत्र सं० २० । आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आत्मचिंतन । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

२१५७. **प्रवचनसार—कुंदकुंदाचार्य** । पत्र सं० ६२ । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

२१५८. **प्रवचनसार टीका—पं० प्रभाचन्द** । पत्र सं० ५० । आ० १३ × ६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल सं० १६०५ मगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

प्रशस्ति—श्री संवत् १६०५ वर्षे मंगसिर सुदी ११ रवौ । अद्येह श्री बालमीकपुर शुभस्थाने श्री मुनिसुव्रत जिन चैत्यालये श्री मूल संघे श्री सरस्वतीगच्छे श्री बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदि देवास्तत्पट्टे श्री देवेन्द्रकीर्ति देवास्तत्पट्टे भ० श्री विद्यानंदि देवास्तत्पट्टे भ० श्री मल्लिभूषण देवास्तत्पट्टे भ० श्री लक्ष्मी चन्द्र देवास्तत्पट्टे भ० वीरचन्द देवास्तत्पट्टे भ० ज्ञानभूषण गच्छाधिराज तदन्वये आचार्य श्री सुमतिकीर्तिना कर्मक्षयार्थं स्वपरोपकाराय प्रवचनसार ग्रंथोयं लिखितं । परिपूर्ण ग्रंथ आ० श्री रत्नभूषणनां सिद्ध । (प्रति जीर्ण है) ।

विद्यानंदीश्वरं देवं मल्लि भूषणसद्गुरुं ।
लक्ष्मीचंदं च वीरेन्दु वंदे श्री ज्ञान भूषणं ।। १ ।।

२१५९. **प्रवचनसार टीका**—× । पत्र सं० ११७ । आ० ११ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल—× । ले०काल सं० १४६४ कार्तिक बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६२५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२१६०. **प्रवचनसार टीका**—× । पत्रसं० १२७ । आ० ८$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल सं० १७४४ मंगसिर सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक) ।

२१६१. **प्रवचनसार भाषा**—× । पत्रसं० १४६ । आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल सं० १८५७ वैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—तेरापंथी चिमनराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२१६२. **प्रवचनसार भाषा**—× । पत्रसं० १४६ । आ० १२ × ६ इंच । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल सं० १७१७ आसोज सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६०/४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर भादवा (राज०) ।

विशेष—श्री विमलेशजी ने डूंगरसी से प्रतिलिपि करवायी ।

२१६३. **प्रवचनसार भाषा**—× । पत्रसं० २०१ । आ० १२×५½ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी (गद्य) । विषय अध्यात्म । र०काल × । ले० काल सं० १७४३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

२१६४. **प्रवचनसार भाषा**—× । पत्रसं० १७२ आ० ६½ × ४¼ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

२१६५. **प्रवचनसार भाषा वचनिका—हेमराज** । पत्रसं० १७७ । आ० ११ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । र० काल सं० १७०६ माघ सुदी ५ । ले० काल सं० १८८५ । वेष्टन सं० ११७३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२१६६. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० २२० । आ० १२×५½ इंच । ले०काल सं० १८८६ आषाढ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२१६७. **प्रतिसं०३** । पत्र सं० २८३ । आ० १०½×७½ इञ्च । ले० काल सं० १६४१ अगहन बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६/६३ । **प्राप्ति स्थान**—पंचायती दि० जैन मन्दिर अलवर ।

२१६८. **प्रतिसं० ४** । पत्र सं० ३५४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७/६३ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मन्दिर अलवर ।

२१६९. **प्रतिसं० ५** । पत्र सं० १७० । आ०१२×५½ इञ्च । ले० काल सं० १८४० माघ सुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपंथी दि० जैन मन्दिर नैणवा ।

विशेष—बीच बीच में कुछ पत्र नहीं है । गंगाविष्णु ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी ।

२१७०. **प्रतिसं० ६** । पत्र सं० २८२ । आ०१२×६ इञ्च । ले०काल १७८५ पूर्ण । वेष्टन सं० ५४-३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—रामदास ने प्रतिलिपि की थी ।

२१७१. **प्रतिसं० ७** । पत्र सं० १६७ ।आ०१४×५½ इंच । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १३२ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल टोंक ।

२१७२. **प्रतिसं० ८** । पत्र सं० २३० । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२-५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पंथी दीसा ।

विशेष—पत्र १६० तक प्राचीन प्रति है तथा आगे के पत्र नवीन लिखवा कर ग्रंथ पूरा किया गया है ।

२१७३. **प्रतिसं० ९** । पत्र संख्या १४४ । आ० ११ × ७ इञ्च । लेखन काल सं० १८३८ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

२१७४. **प्रतिसं० १०** । पत्रसं० १८० । आ० १२½×६ इञ्च। । ले० काल सं० १७८८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११९/१७ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

२१७५. प्रतिसं० ११ । पत्रसं० ३०१ । आ० ११ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल सं० १८५६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—सं० १८५६ भादवा कृष्ण ६ रविवार उदयपुर मध्येसार जीवणदास खंडेलवाल के पठनार्थ लिख्यो ।

२१७६. प्रतिसं० १२ । पत्रसं० १६५ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर महावीर स्वामी बूंदी ।

२१७७. प्रति सं० १३ । पत्रसं० २०६ । ले०काल सं० १७२४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

२१७८. प्रतिसं० १४ । पत्र सं० १६८ । ले०काल सं० १७२४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—हेमराज ने ग्रंथ कामगल में पूर्ण किया । साह अमरचन्द बाकलीवाल ने ग्रंथ लिखाकर भरतपुर के मन्दिर में चढ़ाया था ।

२१७९. प्रतिसं० १५ । पत्र सं० १४८ । आ० १३×६ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २० । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

२१८०. प्रति सं० १६ । पत्रसं० २५१ । आ० १० × ८$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

२१८१. प्रति सं० १७ । पत्र सं० २५५ । आ० ११$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल सं० १८७२ फागुन सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—करौली में प्रतिलिपि हुई ।

२१८२. प्रतिसं० १८ । पत्र सं० २१३ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १७६५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

२१८३. प्रतिसं० १९ । पत्र सं० १४८ । आ० ११ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १७१६ चैत्र सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—कामावती नगर में प्रतिलिपि हुई ।

२१८४. प्रति सं० २० । पत्रसं० १७६ । ले०काल सं० १७४६ आसोज सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४४ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२१८५. प्रतिसं० २१ । पत्रसं० १६५ । ले० काल सं० १७५२ ज्येष्ठ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२१८६. प्रति सं० २२ । पत्रसं० २७१ । ले०काल—सं० १७८२ ज्येष्ठ बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४६ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

२१८७. प्रति सं० २३ । पत्रसं० २८६ । आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १७५४ आसोज सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२१८८. प्रतिसं० २४ । पत्र सं० २०६ । आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १७५४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२१८९. **प्रति सं० २५** । पत्र सं० ७० । आ० १२×६ इंच । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२१९०. **प्रतिसं० २६** । पत्रसं० २२६ । आ० ११×७½ इंच । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर कामा ।

२१९१. **प्रतिसं० २७** । पत्र सं० २१० । आ० १२½×७½ इंच । ले० काल सं० १९२९ फागुणबुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पंचायती कामा ।

विशेष—प्राकृत में मूल तथा संस्कृत में टीका दी हुई है । चूरामन जी पोद्दार गोत्र बनावरी बयाना वालों ने ग्रंथ की प्रतिलिपि करवायी । व्यास स्योबक्ष ने अर्थमंडन में प्रतिलिपि की ।

२१९२. **प्रवचनसार भाषा**—**हेमराज** । पत्रसं० ९१ । आ० ११ × ४½ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय अध्यात्म । र० काल सं० १७२४ आषाढ़ सुदी २ । ले० काल सं० १८८५ भादवा बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन सं० १९१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पंथी दौसा ।

विशेष—प्रतिलिपि दौलतराम निरमैचंद ने की थी । इसको बाद में काट दिया गया है ।

२१९३. **प्रति सं० २** । पत्र सं० २२९ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डावालों का डीग।

२१९४. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० ४१ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—ग्रंथ जीर्ण एवं पानी से भीगा हुआ है ।

२१९५. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० २११ । आ० ११½ × ७½ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६० । **प्राप्ति स्थान**—भ० पंचाय दि० जैन मंदिर बयाना ।

२१९६. **प्रवचनसार वृत्ति–अमृतचंद्र सूरि** । पत्रसं० २-६६ । आ० ११½ × ४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है ।

२१९७. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ७१ । ले०काल १८०३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा पंचायती डीग ।

२१९८. **प्रवचनसार वृत्ति** × । पत्रसं० १४३ । आ० १२ × ५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र०काल × । ले०काल सं० १५९० । अपूर्ण । वेष्टन सं० २४० । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है ।

२१९९. **प्रवचनसारोद्धार**—× । पत्र सं० १४८ । आ० १०×४ इंच । भाषा–संस्कृत हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले०काल सं० १६६९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—इति श्री प्रवचन सारोद्धार सूत्र ।

२२००. **प्रायश्चित पाठ—अकलंकदेव** । पत्र सं० ८–२७ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चिंतन । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २६१।१५७ **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

२२०१. **प्रायश्चित विधि**—पत्र सं० ५ । **भाषा**—संस्कृत । विषय-चिंतन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मंदिर भरतपुर ।

२२०२. **प्रायश्चित समुच्चय**—[illegible] । पत्र सं० १२ । आ० [illegible] । भाषा-संस्कृत । विषय—चिंतन । र०काल × । ले०काल सं० १६८० पूर्ण । वेष्टन सं० २७०/२५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६८० वर्षे पौष वदि रवौ श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे भट्टारक श्री वादिभूषण तत्पट्टे भट्टारक रामकीर्ति विजयराज्ये ब्रह्मरायमल्लाय आहार भय भैषज्य शास्त्र दान वितरणैक तत्परायां अनेक जीर्णोद्धरणधीरायां जिन बिम्ब प्रतिष्ठाद्यनेक धर्म कर्म करणैकचित्तायां । कोट नगरे हुंबडज्ञातीय बृहच्छाखौ संघपति श्री लक्ष्मणाख्यानां भार्या ललतादे द्वितयां भा० सं० शृंगार दे तयोर्भ्रातः सं० जिनदास भा० सं० मोहणा दे **सं० काह्नजी भ० सं० कर्पूरदे सं०** मानजी भा० संकोषदे द्वि भा० सं० मनरंगदे सं० भीमजी भार्या सं० भक्तादे एतैः स्वज्ञानावरणं कर्म क्षयार्थं प्रायश्चित ग्रंथ लिखाप्य दत्तः ।

२२०३. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १–१०८ । आ० ११½ × ४½ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन सं० ७५७ अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

२२०४. **बारह भावना**— × । पत्र सं० ४ । आ० ९½ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय – चिंतन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६३ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर दधलाना (बूंदी) ।

२२०५. **ब्रह्मज्योतिस्वरूप**—**श्री धराचार्य** । पत्र सं० ५ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० २६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

२२०६. **भवदीपक भाषा—जोधराज गोदीका**—पत्र सं० २१४ । आ० १०½ × ७½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—योग शास्त्र । र० काल × । ले०काल—सं० १९४४ फागुण सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१ । **प्राप्ति स्थान** -पार्श्वनाथ दि० जैन मंदिर इन्द्रगढ़ (कोटा) ।

२२०७. **भव वैराग्यशतक**— × । पत्र सं० ५ । आ० १० × ६ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय—चिंतन । र० काल × । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७६–१४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर ।

२२०८. **भगवद्गीता**—× । पत्र सं० ९८ । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल × । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३० । **प्राप्ति स्थान** —पंचायती दि० जैन मन्दिर हण्डावालों का डीग ।

२२०९. **भावदीपिका**— पत्रसं० १७७ । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र०काल × । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १६ । **प्राप्ति स्थान**–पंचायती दि० जैन मन्दिर हण्डायालों का डीग ।

२२१०. **मोक्षपाहुड—कुंदकुंदाचार्य** । पत्रसं० ३८ । आ० १०×६ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल सं० १८१२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४१–९५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियों का जूंगरपुर ।

२२११. **योगशास्त्र—हेमचन्द्र** । पत्रसं० ४१ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–योग । र० काल × । ले०काल—सं० १५८७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१४ । **प्राप्ति स्थान**— भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

संवत् १५८७ वर्ष आषाढ सुदी ११ रवौ । आगमगच्छे श्री उदय सूरिभ्यो नम प्रवर्त्तनी लक्ष्माइ श्री गणि शिष्याणी जयश्रीगणि लक्ष्यार्थितं पठनार्थं प्रशस्तिकोवादधी ।

२२१२. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ७-१४ । आ० १०×४½ इंच । ले०काल — × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११९ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—इसमें द्वादश प्रकाश वर्णन है । यहां द्वादश प्रकाश में पंचम प्रकाश है । अंतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति परमहित श्री कुमारपाल भूपाल विरचिते शुडयूषिते आचार्य श्री हेमचन्द विरचिते अध्यात्मोपनिषन्नामि संजात षट्बंधे श्री योगशास्त्रे द्वादश प्रकाश समाप्तः ।

२२१३. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० १८ । आ० १०½×४½ इंच । ले०काल सं० १५४५ वैसाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—संवत् १५४५ वर्षे वैशाख सुदी २ शुक्रे । श्रीमति मंडन दुर्ग नगरे । म्होपाध्याय श्री आसान मंडन । शिष्येण लिखापिता सा० शिवदास । संघविधि सहजलदे कृते ।

२२१४. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० १० । आ० १०½×४½ इंच । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७०७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२२१५. **योगसार—योगोन्द्रदेव** । पत्रसं० ७ । आ० १२×५½ इंच । भाषा–अपभ्रंश । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल—सं० १८३१ चैत सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—मिति चैत्र सुदी १ संवत १८३१ का लिखितं आचार्य श्री राजकीर्ति पंडित सवाई रोमण भेंसलाणा मध्ये ।

२२१६. **प्रति सं० २** । पत्रसं० १७ । आ० ११×४½ इंच । ले० काल० सं० १६९३ माह बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

विशेष—लिखायतं श्री १०८ आचार्य कृष्णदास वाचन हेतवे लिखितं सेवग आज्ञाकारी सुलतान ऋषि कर्णपुरी स्थाने ।

२२१७. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० ११ । ले० काल सं० १७५५ आसोज सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

विशेष—कामा में प्रतिलिपि हुई ।

२२१८. प्रतिसं० ४। पत्र सं० ३० । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२६/२२६ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

अंतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री योगसार भाषा टब्बा अर्थ सहित सम्पूर्ण ।

२२१९. प्रतिसं० ५ । पत्र सं० २४ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६२-७२ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर ।

२२२०. प्रति सं० ६ । पत्रसं० ६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४७८ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

२२२१. योगसार वचनिका— × । पत्र सं० १७ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—योग । र०काल × । ले०काल सं० १८३२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६२-११५ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर ।

विशेष—नीमांबा नगर में आदिनाथ चैत्यालय में ब्रह्म करणीफल जी ने प्रतिलिपि की ।

२२२२. योगेन्दु सार—बुधजन । पत्रसं० ७ । भाषा—हिन्दी । विषय—योग । र०काल १८६५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २२ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

२२२३. वज्रनाभि चक्रवर्ति की वैराग्यभावना— × । पत्रसं० ८ । आ० १० × ७½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—चिंतन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५८४ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—निम्न रचनाएँ और हैं—वैराग्य सज्झाय छाजू पंवार (हिन्दी) विनती देवब्रह्म ।

२२२४. वैराग्य वर्णमाला × । पत्रसं० १० । आ० ८ × ६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—वैराग्य चिंतन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४० । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—अन्त में **सज्जन चित्त वल्लभ** का हिन्दी अर्थ दिया हुआ है ।

२२२५. वैराग्यशतक । पत्रसं० ६ । भाषा—प्राकृत । विषय—वैराग्य । र०काल × । ले०काल सं० १६५७ पौष वदी १४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६४६ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

२२२६. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५११ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन पंचायती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष—टीका सहित है ।

२२२७. वैराग्य शतक-थानसिंह ठोल्या । पत्र सं० ३० । आ० १०½ × ६¾ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चिंतन । र०काल सं० १८४६ वैशाख सुदी ३ । ले० काल सं० १८४६ जेष्ठ वदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६७ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

२२२८. शान्तिनाथ की बारह भावना × । पत्र सं० १२ । आ० १३ × ७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—चिंतन । र०काल × । ले० काल सं० १६४४ चैत बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३ ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूंदी।

विशेष—दसकत छोगालाल सुहाड़या आकादो है।

२२२९. **शील प्राभृत—कुन्दकुन्दाचार्य**। पत्र सं० ४। आ० १०½×५ इंच। भाषा—प्राकृत। विषय—अध्यात्म। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं २५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर।

विशेष—प्रारंभ में लिंग पाहुड भी है।

२२३०. **प्रति सं० २**। पत्रसं० ४। आ० १२½×६ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ३११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

२२३१. **श्रावक प्रतिक्रमण**—× । पत्रसं० १३। आ० १०×७ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—चिन्तन। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १७७-१९३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोंडारायसिंह (टोंक)।

२२३२. **श्रावक प्रतिक्रमण**— × । पत्र सं ३-१५। आ० ९×४ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—चिंतन। र०काल × । ले०काल सं० १७४५ माघ बुदि ५। अपूर्ण। वेष्टन सं० २७१। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर, दबलाना बूंदी।

विशेष—मूल के नीचे हिन्दी में अर्थ दिया है।

२२३३. **श्रावक प्रतिक्रमण**—× । पत्र सं० ७। आ० १०×४ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—चिंतन। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वे० सं० ५९/८९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेष—प्रति जीर्ण है।

२२३४. **श्रावक प्रतिक्रमण**—× । पत्र सं० ६। आ० १३½×६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—चिंतन। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वे० सं० ४०६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

२२३५. **षट्पाहुड—आ० कुन्दकुन्द**। पत्र सं० ४८। आ० १०½×९½ इञ्च। भाषा—विषय—अध्यात्म। र०काल × । ले० काल सं० १८८६। पूर्ण। वेष्टन सं० ३६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर।

२२३६. **प्रति सं० २**। पत्र सं० २२।। ले० काल सं० १७९७ मार्ग सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० २४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

२२३७ **प्रतिसं० ३**। पत्र सं० १६। आ० १०½×९½ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

२२३८. **प्रतिसं० ४**। पत्रसं० २८। आ० ११½ × ४¾ इञ्च। ले०काल सं० १७२३। वेष्टन सं० १६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—सिरूजशहर मध्ये पण्डित बिहारीदास स्वपठनार्थं सं० १७२३ वर्षे भादु सुदी ३ दिने।

२२३९. **प्रतिसं० ५**। पत्रसं० २८। आ० १२½ × ३ इञ्च। ले०काल सं० १८१६ पौष सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन सं० ४५/४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर भादवा (राज०)।

२२४०. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० ५८ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल सं० १७५० । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ । **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२२४१. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० ६ । आ० १२½ × ६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

२२४२. **प्रति सं० ८** । पत्र सं० ७४ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५७ । **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२२४३. **प्रति सं० ९** । पत्र सं० २३ । ले० काल सं० १७२१ पौष सुदी १२ । **पूर्ण** । वेष्टन सं० १५८ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष —सांगानेर में प्रतिलिपि हुई । ग्रन्थाग्रन्थ ६०८ मूलमात्र ।

२२४४. **प्रति सं० १०** । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १७१२ मंगसिर बुदी । पूर्ण । वेष्टन सं० १५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष —देहली में शाहजहां के शासनकाल में सुन्दरदास ने महात्मा दयाल से प्रतिलिपि कराई ।

२२४५. **प्रति सं० ११** । पत्र सं० २३ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२२४६. **प्रति सं० १२** । पत्र सं० ३१ । आ० १०½ × ४½ इंच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२२४७. **प्रति सं० १३** । पत्र सं० ९७ । आ० ११⅝ × ४⅝ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

विशेष –प्रति प्राचीन है ।

२२४८. **प्रति सं० १४** । पत्र सं० ५४ । आ० ११ × ६ इञ्च । ले० काल सं० १८५१ चैत्र सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १००/३९ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इंद्रगढ (कोटा) ।

विशेष—लिखतं ब्राह्मण अमेदावास वास आत्रदा का । लिखाइतं बाबाजी ज्ञान विमलजी तत् शिष्य ध्यानविमलजी लिखतं इंद्रगढ मध्ये ।

२२४९. **प्रति सं० १५** । पत्र सं० ६२ । आ० १२ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १७६५ चैत सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९७ । **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

२२५०. **प्रति सं० १६** । पत्र सं० ६७ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १७१७ मंगसिर बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—पं० मनोहर ने लिखा ।

२२५१. **प्रति सं० १७** । पत्र सं० ६२ । आ० ९ × ६ इंच । ले० काल सं० १७९६ जेठ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

२२५२. **प्रति सं० १८** । पत्र सं० ३१ । आ० ८½ × ४ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

२२५३. **षटपाहुड टीका**—× । पत्र सं० ३-७३ । आ० ११×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

२२५४. **षट्पाहुड टीका**—। पत्र सं० ६४ । आ० १०×५$\frac{3}{5}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल सं० १७८९ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

लेखक प्रशस्ति—संवत १७८९ का वर्षे माह बुदी १३ दिने । लिखतं जती गंगाराम जी माखपुर ग्रामे महाराजाधिराज श्री सवाई जयसिंह जी राज्ये ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

२२५५. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ५० । आ० १०×५$\frac{3}{5}$ इञ्च । ले०काल सं० १८२४ कार्तिक बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

संवत १८२४ वर्षे कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे तिथि ३ वार सनीचर वासरे कोटा का रामपुरा मध्ये महाराजा हरकृष्ण लिपि कृतां पांडेजी बखतराम जी पठन हेतवे । गुमानसिंघ जी महारावं राज्ये ।

प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

२२५६. **षट्पाहुड भाषा—बेवोसिंह छाबडा** । पत्र सं० ५० । आ० १३ × ९ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—अध्यात्म । र०काल सं० १८०१ सावण सुदी १३ । ले० काल सं० १९४२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१५/२२७ । **प्राप्ति स्थान**—सम्भवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—उदयपुर में प्रतिलिपि हुई ।

२२५७. **प्रति सं० २** । पत्र सं० २७ । आ० ८×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १८७७ । पूर्ण । वे० सं० ११९/८९ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्द्रगढ़ (कोटा) ।

विशेष—राजूगंगवाल ने इन्द्रगढ़ में प्रतिलिपि की ।

२२५८. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० ३९ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल सं० १८५० । पूर्ण । वे० सं० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

२२५९. **षट् पाहुड भाषा (रचनिका)—जयचन्द छाबडा** । पत्र सं० १९३ । आ० ११×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । र०काल सं० १८६७ भादवा सुदी १३ । लेखन काल × । वेष्टन सं० ७८ । **प्राप्तिस्थान**—तेरहपंथी दि० जैन मंदिर नैणवा ।

२२६०. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १६६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×७$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल सं० १८९४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरह पंथी दौसा ।

विशेष—पन्नालाल साह बसवा वाले ने दौसा में प्रतिलिपि की । नानूलाल तेरापंथी की बहू ने चढ़ाया ।

२२६१. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० १८० । आ० १०$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मंदिर अलवर ।

षटपाहुड वृत्ति—श्रुतसागर । पत्रसं० १८३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी संस्कृत ।

विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल० × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०५३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२२६२. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० २०३ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १७८५ मंगसिर सुदी ३ पूर्ण । वेष्टन सं० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

२२६३. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० ३४ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

२२६४. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० ६१ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १७७० । पूर्ण । वेष्टन सं० १५१/४० । **प्राप्ति-स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मंदिर इन्द्रगढ़, कोटा ।

विशेष—लिखतं साह ईसर अजमेरा गैणोली मध्ये लिखी सं० १७७० माह सुदी ५ शनीवारे ।

२२६५. **प्रतिसं० ५** । पत्र सं० २३० । आ० १३×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर, कामा ।

२२६६. **प्रतिसं० ६** । पत्रसं० १६० । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

२२६७. **षोडशयोग टीका**—× । पत्र सं० २० । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योग । र० काल × । ले० काल सं० १७८० पूर्ण । वेष्टन सं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

लेखक प्रशस्ति—संवत् १७८० वर्षे श्रावण वदि ७ शनौ लिखतं श्री गौड़ज्ञातीय श्रीमद् नरेश्वर सुत जयरामेण ओवेर ग्राम मध्ये जोसी जी श्री मल्लारि जी गृहे ।

२२६८, **समयसार प्राभृत—कुंदकुंदाचार्य** । पत्र सं० १-५४ । आ० १०×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कामा ।

विशेष—प्रति आत्मख्याति टीका सहित है ।

२२६९. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ३५ । आ० १३$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इंच । ले०काल सं० १९३२ काती सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपंथी दि० जैन मन्दिर नैणवा ।

विशेष—इसका नाम समयसार नाटक भी दिया है । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२२७०. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० १०७ । आ० १२ × ४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६८/२२७ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—ग्रन्थाग्रन्थ श्लोक सं० ४५०० । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२२७१. **समयसार कलशा—अमृतचन्द्राचार्य** । पत्रसं० ६१ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ४६२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

२२७२. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० २५ । आ० १०½ × ५½ इंच । ले०काल सं० १६०१ वैशाख सुदी ६ । वेष्टन सं० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

२२७३. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० १२ । आ० १०×५½ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २५१-१०१ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है ।

२२७४. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० ३३ । आ० ११ × ५½ इंच । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अग्रवाल उदयपुर ।

विशेष—पत्र १९ तक हिन्दी में अर्थ भी है । ३३ से आगे के पत्र नहीं है ।

२२७५. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० ७९ । आ० ९¾ × ५½ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अग्रवाल उदयपुर ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है ।

२२७६. **प्रति सं० ६** । पत्रसं० ९४ । आ० ११½×४ इंच । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४३४ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

२२७७. **प्रतिसं० ७** । पत्रसं० १०१ । आ० १८×४ इंच । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३१२/२१८ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति बहुत प्राचीन है । पत्र मोटे हैं ।

२२७८. **प्रतिसं० ८** । पत्रसं० ३६ । आ० ११×५½ इंच । ले०काल सं० १७१८ । पूर्ण । वेष्टन सं० २९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरह पंथी दौसा ।

२२७९. **प्रतिसं० ८** । पत्रसं० ८९ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

२२८०. **प्रतिसं० ९** । पत्रसं० २७ । आ० १०½×५½ इंच । ले०काल सं० १६५० वैशाख बुदी ७ । वेष्टन सं० ३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

२२८१. **प्रतिसं० १०** । पत्रसं० ५७ । आ० १०×४ इंच । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दिगम्बर जैन मन्दिर पंचायती टूनी (टोंक) ।

२२८२. **प्रतिसं० ११** । पत्र सं० ६७ । आ० ११×४½ इंच । ले०काल--× । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा ।

विशेष—४४६ श्लोक तक है । प्राकृत मूल भी दिया हुआ है ।

२२८३. **प्रतिसं० १२** । पत्र सं ४१ । आ० १०×६½ इंच । ले०काल सं० १९४६ कार्तिकी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपंथी दि० जैन मन्दिर नैणवा ।

विशेष—नैनपुर में प्रतिलिपि की गयी ।

२२८४. **प्रति सं० १३** । पत्रसं० १५ । आ० १०×४ इंच । ले०काल सं० १६३४ भादवा बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

२२८५. **प्रति सं० १४**। पत्र सं० ३३। आ० १३ × ५½ इंच। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ७०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी।

विशेष—टीका का नाम तत्वार्थ दीपिका है।

२२८६. **समयसार कलशा टीका—नित्य विजय**। पत्र सं० १३२। आ० १२×५½ इंच। **भाषा**—संस्कृत। विषय—अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १३१। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष- अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

इति श्री समयसार समाप्त ॥ कुंदकुंदाचार्यै प्राकृत ग्रंथ रूप मंदिरं कृतं समयसार शास्त्रस्य मया अमृत चन्द्रेण संस्कृत रूप कलशः कृतस्तस्य मंदिरोपरि।

नित्य विजय नामाहं भाव सारस्य टिप्पणं।
आनन्द राम संज्ञस्य वाचनाव्यर्थलिखम्।

प्रारम्भिक—

सिद्धान्तत्वालिसानीद मर्थ सारस्य टिप्पणं।
आणंदराम संज्ञस्य वाचनाय च शुद्धये॥

प्रति टब्बा टीका सहित है।

२२८७. **समयसार टीका (अध्यात्म तरंगिणी)—भ० शुभचन्द्र**। पत्र सं० १३०। आ० १०×४½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—अध्यात्म। र० काल सं० १५७३ आसोज सुदी ५। ले० काल सं० १७६५। पूर्ण। वेष्टन सं० २८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—

प्रारंभ—आदिभाग—

शुद्ध सच्चिद्रूपं भव्यांबुजचन्द्रमृत मकलंकं।
ज्ञानाभूषं वन्दे सर्वं विभात्र स्वभाव संयुक्तं। १॥
सुधाचन्द्रमुनेर्वक्त्रात्पद्मात्युद्धृत्य रम्भाणि।
विवृणोमि भक्तितोहं चिद्रूपे रक्त चित्तश्च। २॥

अन्तभाग—

जयतु जित विपक्षः पालितालेषशिष्यो
विदित निज स्वतत्त्वश्चोदितानेक सत्वः॥
अमृतविधुयतीशः कुंदकुंदो गणेशः।
श्रुतसुजिन विवादः स्माद्विवादाविषादः॥ १॥
सम्यक् संसार वल्लीवलय-विदलनेमत्तमातंगमानी।
पापातापेभकुम्भोद् गमन करा कुण्ठ कण्ठीरवारिः॥
विद्वद्विद्याविनोदा कलित मति रहो मोहतामस्य सार्था॥१॥
चिद्रूपोद्भासिचेता विदित शुभयतिर्ज्ञान भूषस्तु भूयात॥ २॥
विजयकीर्ति यतिर्जगतां विमल[1] कीर्ति धरोधृति धारकः।
जयतु शासन भासत भारती मय भसिर्दलिता पर वादिकः॥ ३॥

---

१. गुरुविधुत धर्म धुरोद् वृत्तिधोरक : ऐसा भी पाठ है।

शिष्य स्तस्य विशिष्ट शास्त्र विशदः संसार भीताशयो ।
भव्यानां विवेक भारिधि तरङ् स्याद्वाद् विद्यानिधिः ॥
टीकां नाटक पद्यजां वरगुणाध्यात्मादि स्रोतस्विनी ।
श्रीमच्छ्रीशुभचन्द्र एष विधिवत् संचकरीतिस्म वै ॥ ४ ॥
त्रिभुवन वरकीर्ति जाति रूपात्तमूर्तेः
शमदम-मयपूर्तेरात्मह राग्रहन्नाटकस्य
विशद विभव वृत्तो वृत्तिमाविश्चकारः
गतमयशुभचन्द्रो ध्यान सिद्धयर्थमेव ॥ ५ ॥
विक्रमवर भूपालात् पंचत्रिंशते त्रिसप्तति व्यधिके (१५७३)
वर्षेऽप्यश्विन मासे शुक्ले पक्षेऽथ पंचमीदिवसे ॥६॥
रचितेयं वर टीका नाटक पद्यस्य पद्यगुप्तस्य ।
शुभचन्द्रेणासुजयमतांविद्यासबलं न पद्मपर्णांकात् ॥ ७ ॥
.....पातनिकाभिश्च भिन्न भिन्नाभिः ।
जीयादाचन्द्रार्कं स्वाध्यात्मतरंगिणी टीका ॥ ८ ॥

इति श्री कुमतद्रुम मूलोन्मूलनमहानिर्झरणी श्रीमदध्यात्मतरंगिणी टीका ।

सं० १७९५ वर्षे पौष वदी १ शनौ । लिखितं ।

२२८८. समयसार टीका (आत्मख्याति)—अमृतचन्द्राचार्य । पत्रसं० १६१ । आ० १०½ × ४½ इंच । भाषा—प्राकृत संस्कृत। विषय—अध्यात्म । र० काल ×। ले०काल सं० १४६३ मंगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १८ । **प्राप्तिस्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—ग्रन्थाग्रन्थ सं० ४५०० है ।

लेखक प्रशस्ति—

स्वस्ति श्री संवत् १४६३ वर्षे मार्गकृष्ण त्रयोदश्यां सोमवारारे अद्येह श्री कालपी नगरे समस्त राजावली समालंकृत विनिर्जितारिवली प्रचंड महाराजाधिराज सुरत्राण श्री महमूदसाहि विजयराज्य प्रवर्त्तमाने अस्मिन् राज्ये श्री काष्ठासंघेमाथुरान्वये पुष्कर गच्छे लोहाचार्यान्वये प्रतिष्ठाचार्य श्री अनन्तकीर्ति देवाः तस्य पट्ट गगनांगणे भट्टारक कल्पाः श्री क्षेमकीर्ति देवाः तत्पट्टे श्री हेमकीर्ति देवाः तत् शिष्य श्री धर्मचन्द्र देवः तस्य धर्मोपदेशामृतेन हृदिस्थित मनोवल्ली सिच्यमानेनां रोहितास नगरे वास्तव्य श्री कालपीनगर स्थित अग्रोतकान्वय मीतल (ल) गोत्रीय पूर्व पुरुष साधु खेत तास्मि तस्य वंश दीवासा ठा० प्रसिद्ध सर्वकार्य कुशल साधु नयण तस्य द्वौ भार्यौ कोकिला सांता नाम्नो एतेषां कुक्षे उत्पन्नः एकादश प्रतिमा धारकः सा. सहजपाल हृदयति प्रसिद्ध साधु श्री नरपति कुलमंडण साधु हेमराजी एतैः साधु सहजपाल पुत्र गुरुदास हरिराज सा. नरपति भार्या साधु नमिइण अन भो पुत्र जिणदास वील्हा वीरदास । सा. हेमराज पुत्र गणराज गुरुदास पुत्र साधु नरपति पुत्र साधु श्री बाल्हचन्द्र तस्य द्वौ भार्यौ साधुनी जीणपाल ही लहुवडि नाम्नी अनयो पुत्र साधु देवराज तस्य भार्या रल्ही नाम्नी एतयोः पुत्र पल्हचन्द एतैः जिनप्रणीत मार्ग रतैः चतुर्विध दानदायकैः संघनायकैः जिनपूजा पुरंदरैः एतेषा मध्ये साधु नइण पौत्रेण साधु नरपति पुत्रेण साधु श्री बाल्हचन्द्र देवेन साधुनी जीणपाल ही लहुवडिकांतेन साधु राज जातेन पौत्र साधु श्री पाल्हणचन्द्र समुद्भवेन श्री समयसार पुस्तकं

लिखाप्य संसार समुद्रो तारणार्थं दुरितदुष्ट विध्वंस नार्थं ज्ञानावरणाद्यघृक कर्मक्षयार्थं श्री धर्महेतोः सुगुरोः धर्मचन्द्र देवेभ्यः पुस्तकदानं दत्तं ।

२२८९. **प्रति सं० २** । पत्रसं० १७१ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल सं० १७३७ आषाढ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

२२९०. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० १२९ । आ० ११½×५ इञ्च । ले०काल सं० १५७५ । पूर्ण । वेष्टनसं० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रतिलिपि रोहितक ग्राम में हुई । श्री हेमराजजी के लिये प्रतिलिपि की गई ।

अन्तिम—वणिक् कुल मंडन हेमराज सोयं चिरंजीवतु पुत्र पौत्री ।

तद्यर्थं मेतल्लिखितं च पुस्तं दातव्य मे तद्धि दुखे प्रयत्नात् ।।

२२९१. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० १४३ । ले०काल सं० १६५८ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है –

श्री मूलसंघे भारती गच्छे बलात्कार ग० विद्यानंद्याम्नाये श्री भल्लिभूषणदेवा त० प० भ० श्री लक्ष्मीचन्द्र देवा तत्पट्टे श्री अभय चन्द्र देवा तत्पट्टे भ० श्री रत्नकीर्ति तद्गुरु भ्राता ब्रह्म श्री कल्याणसागर-स्वेदं पुस्तकं काकुस्थपुरे विक्रियेत गीतं मुतफरीये देवनीतं अर्गलपुरस्थ कल्याण सागरेण पंडित स्वामाय प्रदत्तं पठणाव ।

२२९२. **प्रतिसं० ५** । पत्रसं० १९६ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल × । वेष्टनसं० २४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२२९३. **प्रतिसं० ६** । पत्रसं० १४३ । आ० १०½×५½ इञ्च । ले० काल सं० १९२५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६/५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सौगाणी करौली ।

२२९४. **प्रतिसं० ७** । पत्र सं० १४३ । आ० १०½×६ इञ्च । ले० काल सं० १७८८ वैशाख वदी ११। पूर्ण । वेष्टन सं० १३/२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सौगाणी करौली ।

२२९५. **प्रति सं० ८** । पत्रसं० ११२ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ४० । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपंथी दि० जैन मंदिर बसवा ।

२२९६. **प्रति सं० ९** । पत्रसं० १६४ । आ० १०¾ × ५¾ इंच । ले० काल सं० १८३० । पूर्ण । वेष्टनसं० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

२२९७. **प्रति सं० १०** । पत्रसं० १९ । आ० ११ × ५ इंच । ले०काल सं० १७३९ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दनस्वामी, बूंदी ।

विशेष—इस टीका का नाम आत्मख्याति है । सवाणा में आ० ज्ञानकीर्ति ने प्रतिलिपि की ।

२३९८. **प्रति सं० ११** । पत्रसं० १३२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

विशेष—तात्पर्य वृत्ति सहित है ।

२२९९. **प्रतिसं० १२** । पत्रस० २०२ । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल सं० १४४० । पूर्ण । वेष्टन सं० ९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बसवा ।

विशेष—तात्पर्य वृत्ति सहित है।

प्रशस्ति—संवत् १४४० वर्षे चैत्र सुदी १० सोमवासरे अद्येह योगिनिपुर पेरोजसाहि राज्यप्रवर्तमाने श्री विमलसेन श्री धर्मसेन भावसेन सहस्रकीर्तिदेवाः तरुजजिनगरे श्री श्रेष्ठि कुलान्वये गर्गगोत्रे साह धन्ना गच्छे ..... तेना समयसार ब्रह्मदेव टीका कर्त्ता मूलकर्त्ता श्री कुन्कुन्दाचार्यदेव विरचितं लिखाप्य सहस्रकीर्ति आचार्य प्रदत्तं।

२३००. **प्रतिसं० १३**। पत्रसं० २३। आ० १४×५½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० २६-६३। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोंडारायसिंह (टोंक)

२३०१. **प्रतिसं० १४**। पत्रसं० ५०। आ० ११×५ इञ्च। ले०काल सं० १६०७ सावण बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० ३३५ **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

विशेष प्रशस्ति—संवत् १६०७ वर्षे सावण बुदि ६ खंक नाम नगरे पातिसाहि श्लेमिसाहि राज्ये प्रवर्तमाने श्री शांतिनाथ जिन चैत्यालये श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कार गणे सरस्वती गच्छे..... .....।

२३०२. **प्रतिसं० १५**। पत्रसं० ६३। आ० ११½ × ५ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० ६१। **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मन्दिर, आदिनाथ बूंदी।

२३०३. **प्रतिसं० १६**। पत्रसं० ६८। आ० १२×५½ इंच। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ५४। **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रतिपत्र १० पंक्ति एवं प्रति पंक्ति अक्षर ३७ हैं।

प्रति प्राचीन है।

२३०४. **प्रतिसं० १७**। पत्रसं० १६७। आ० ११ × ४¾ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० ५०१। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—अन्तिम पृष्ठ नहीं हैं पांडेराजमल्ल कृत टीका एवं पं० बनारसीदास कृत नाटक समयसार के पद्य भी हैं।

२३०५. **समयसार वृत्ति—प्रभाचन्द**। पत्रसं० ६५। आ० १२½ × ५½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—अध्यात्म। र०काल ×। ले०काल सं० १६०२ मंगसिर बुदी ५। पूर्ण। वेष्टनसं० ११८१। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२३०६. **समयसार टीका—भ० देवेन्द्रकीर्ति**। पत्रसं० १५। आ० ८½ × ४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-अध्यात्म। र०काल सं० १७८८ भाद्रवा सुदी १४। ले०काल सं० १८०४ वैशाख सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० ३१८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बून्दी।

विशेष—आ० कुन्दकुन्द के समयसार पर आमेर गादी के भ० देवेन्द्रकीर्ति की यह टीका है जो प्रथम बार उपलब्ध हुई है।

प्रशस्ति—

वास्वष्ट युक्त सप्तेन्द्र युते वर्षे मनोहरे,
शुक्ले भाद्रपदेमासे चतुर्दश्यां शुभे तिथौ।
ईसरदेति सद्ग्रामे टीकेयं पूर्णतामिता।
भट्टारक जगत्कीर्ति पट्टे **देवेन्द्रकीर्तिना** ॥२॥

दुः कर्म्महानये शिष्य मनोहर गिराकृता ।
टीका समयसारस्य सुगमा तत्त्वबोधिनी ।।३।।
बुद्धिमद्भिः बुधैः हास्यं कर्त्तव्यंनो विवेकभिः ।
शोधनीयं प्रयत्नेन यतो विस्तारतां वृजेत् ।।४।।
बुधैः संपाठ्यमानं च याच्यमानं श्रुतं सदा ।
शास्त्रमेतच्छुभं कारि चिरं संतिष्टतांभुवि ।।५।।
पूज्यदेवेन्द्रकीर्त्ति संशिष्येण स्वांत हारिणा ।
नाम्नेयं **लिखिता** स्वहस्तेन स्वबुद्धये ।।६।।

संवत्सरे वसुनाग मुनींद्र द्रमिते १७८८ भाद्रमासे शुक्ल पक्ष चतुर्दशी तिथौ इसरदा नगरे श्रीराजि श्री अजीतसिंहजी राज्य प्रवर्त्तमाने श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालये ..... । भट्टारकजी श्री १०८ देवेन्द्रकीर्त्तितेनेयं समयंसार टीका स्वशिष्य मनोहर कमनाद् पठनाय तत्त्वबोधिनी सुगमा निज बुद्धया पूर्व टीका भवलोक्य निहिता बुद्धि मद्भि शोधनीया प्रमादाद्वा अल्पबुद्धया यत्र हीनाधिकं भवेत् तद्बोधनीयं संभाभवीत् श्री जिन प्रत्यसत्तें ।

संवत् सरेन्दवसु शून्यवेदयुते १८०४ युते वर्षे वैशाख मासे शुक्लपक्षे त्रयोदश्यां चद्रवारे चन्द्रप्रभ चैत्यालये पंडितोत्तमपंडित श्री चोखचन्दजी तत् शिष्य रामचन्देण टीका लिखितेयं स्वपठनार्थं झिलडी नगरे वाचकानां पाठकानां मंगलावली संभोभवतु ।।

२३०७ समयसार प्रकरण—प्रतिबोध । पत्र सं० ६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । **भाषा**—प्राकृत । **विषय**—अध्याम । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७७/५८ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

२३०८. समसार भाषा टीका—राजमल्ल । पत्र सं० २६८ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी (गद्य) । **विषय**—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२० । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका है ।

२३०९. प्रतिसं० २ । पत्र सं० १७६ । आ० १२×७ इञ्च । ले० काल सं० १६०७ वैशाख सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

विशेष—अकबराबाद (आगरा) में प्रतिलिपि हुई ।

२३१०. प्रति सं० ३ । पत्रसं० २१० । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १७२५ भादवा सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी, कामा ।

२३११. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० २१४ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२३१२. प्रति सं०५ । पत्रसं० ६२ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी ।

२३१३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५७-२६४ । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ६ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

२३१४. **प्रति सं० ७।** पत्र सं० २३७। आ० १३ × ७½ इञ्च। ले० काल सं० १८६८ आषाढ बुदी १०। पूर्ण। वेष्टन सं० ६०। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा।

विशेष—कामा में प्रतिलिपि हुई।

२३१५. **प्रतिसं० ८।** पत्रसं० १४५। आ० ११½ × ४½ इञ्च। ले० काल सं० १७५०। **पूर्ण।** वेष्टन सं० १६१ **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर।

२३१६. **समयसार टीका**— × । पत्र सं० २५। भाषा—संस्कृत। विषय—अध्यात्म। र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर तेरहपंथी नैणवा।

२३१७. **समयसार भाषा—जयचन्द छाबडा।** पत्र संख्या ४१८। आ० ११ × ७½ इञ्च। **भाषा**–हिन्दी गद्य (ढूंढारी)। विषय–अध्यात्म। र० काल सं० १८६४ कार्तिक बुदी १०। ले० काल सं० १९११ फागुण बुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० २५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—महानन्द के पुत्र रामदयाल ने सं० १९१३ भादवा सुदी १४ को मंदिर में चढाया था।

२३१८. **प्रति सं० २।** पत्र सं० ३३६। आ० १½० × ७½ इञ्च। ले०काल सं० १९३७। पूर्ण। वेष्टन सं० १२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

२३१९. **प्रति सं० ३।** पत्रसं० ३६०। आ० ११ × ६ इञ्च। ले०काल सं० १८६६ पौष बुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० ७३–१७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा।

विशेष—बखतलाल तेरहपंथी ने कालूराम से प्रतिलिपि करवाई।

२३२०. **प्रति सं० ४।** पत्र सं० १६८। आ० १२½ × ६ इञ्च। ले० काल सं० १८७९ वैशाख बुदी १०। पूर्ण। वेष्टन सं० ८७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

विशेष—बख्तराम जगराम तथा सूसेराम की प्रेरणा से गुमानीराम ने करौली में प्रतिलिपि की।

२३२१. **प्रतिसं० ५।** पत्रसं०२९९। ले०काल सं० १८९५। पूर्ण। वेष्टन सं० ५२५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष – भरतपुर नगर में लिखा गया।

२३२२. **प्रतिसं० ६।** पत्र सं० २९४। ले० काल सं० १८७४। **पूर्ण।** वेष्टन सं० ५२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

२३२३. **प्रति सं० ७।** पत्र सं० २५७। आ० ११ × ७½ इञ्च। ले० काल सं० १८७९ माह सुदी ९। पूर्ण। वेष्टन सं० ८०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मंदिर अलवर।

विशेष-- जयपुर में प्रतिलिपि हुई।

२३२४. **प्रति सं० ८।** पत्र सं० ३१८। आ० १४ × ७½ इञ्च। ले० काल सं० १९४३ माघ सुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० ७७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर।

२३२५. **प्रति सं० ९।** पत्रसं० ३७२। आ० १३ × ५ इञ्च। ले०काल × । **पूर्ण।** वेष्टनसं० ८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

२३२६. **प्रतिसं० १०।** पत्रसं० ३८७। आ० १२½ × ७½ इञ्च। ले०काल सं० १९५४। **पूर्ण।** वेष्टन सं० ८१/१। **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर, इन्दरगढ (कोटा)

विशेष— भांगीलालजी जिनदासजी इन्दरगढवालों ने सवाई जयपुर में जैन पाठशाला, शिल्प कम्पनी बाजार (मणिहारों का रास्ता) में मारफत भोलीलालजी सेठी के सं० १९५४ में यह प्रति लिखाई। लिखाई में पारिश्रमिक के ३२॥।। ≡)॥ लगे थे।

२३२७. **प्रति सं० ११**। पत्रसं० २४४। आ० १०½ × ८ इञ्च। पूर्ण। वेष्टन सं० ६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

विशेष—पत्र सं० १-१५० एक तरह की तथा १५१-२४४ दूसरी प्रकार की लिपि है।

२३२८. **समयसार भाषा**—**रूपचन्द**। पत्र सं० २२२। आ० १२ × ५½ इञ्च। **भाषा**—हिन्दी (गद्य)। विषय—अध्यात्म। र०काल सं० १७०० । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ४७। **प्राप्ति स्थान**—तेरहपंथी दि० जैन मंदिर नैणवा।

विशेष—महाकवि बनारसीदास कृत समयसार नाटक की हिन्दी गद्य में टीका है।

२३२९. **प्रति सं० २**। पत्रसं० ३११। आ० १०½ × ४½ इञ्च। ले०काल सं० १७३५ सावण बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० ६७। **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मंदिर इन्दरगढ़ (कोटा)

विशेष—आगरा में भगवतीदास पोखाड ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की।

२३३०. **प्रति सं० ३**। पत्रसं० १७३। आ० १०½ × ३½ इञ्च। ले०काल सं० १७९५ वैसाख बुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० ३६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

२३३१. **समयसार नाटक**—**बनारसीदास**। पत्र सं० १११। आ० ८½ × १½ इञ्च। **भाषा**—हिन्दी (पद्य)। विषय—अध्यात्म। र०काल सं० १६९३ आसोज सुदी १३। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १०८३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२३३२. **प्रति सं० २**। पत्र सं० १४२। आ० ९½ × ५ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १४८९। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२३३३. **प्रति सं० ३**। पत्रसं० २९४। आ० ११½ × ५½ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ९३। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

२३३४. **प्रति सं० ४**। पत्रसं० ६९। आ० ९ × ६ इञ्च। ले० काल सं० १७३३। वेष्टन सं० १५००। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—(गुटका सं० २७९)

२३३५. **प्रति सं० ५**। पत्र सं० १०८। आ० ७ × ५½ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ७९१। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२३३६. **प्रति सं० ६**। पत्रसं० १०२। ले०काल सं० १८९८। पूर्ण। वेष्टन सं० २३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर।

२३३७. **प्रति सं० ७**। पत्रसं० १५६ से २३०। आ० १०½ × ५ इञ्च। ले०काल सं० १८१२। पूर्ण। वेष्टन सं० ३५-२०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर।

विशेष—ब्रह्म विलास तथा समयसार नाटक एक ही गुटके में हैं।

२३३८. **प्रति सं० ८**। पत्रसं० ७२। आ० ९½ × ६½ इञ्च। ले० काल सं० १८८०। पूर्ण। वेष्टन सं० १०२-५०। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर कोटड़ियों का डूंगरपुर।

२३३६. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० ४२ । आ० ८×६½ इञ्च । ले०काल सं० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३२-६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर ।

विशेष—४२ पत्र के बाद कुछ पत्रों में कबीर साहब तथा निरंजन की गोष्टि दी हुई है ।

२३४०. **प्रति सं० १०** । पत्र सं० १४० । आ० ७×४½ इञ्च । लेखन काल सं० १६०४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३८-६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटड़ियों का डूंगरपुर ।

२३४१. **प्रति सं० १०**। पत्र सं० १० । आ० ६½ × ५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २१०-८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटड़ियों का डूंगरपुर ।

विशेष—१० से आगे पत्र नहीं है ।

२३४२. **प्रतिसं० ११** । पत्र सं० ८६ । आ० १०×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अग्रवाल उदयपुर ।

२३४३. **प्रतिसं० १२** । पत्र सं० ६२ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल सं० १७२३ भादवा सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं ५१ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति पत्र ११ पंक्ति तथा प्रति पंक्ति ३३ अक्षर है ।
खोखरा नगर में प्रतिलिपि हुई ।

२३४४. **प्रति सं० १३** । पत्रसं० ७३ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल सं० १७६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

२३४५. **प्रतिसं० १४** । पत्रसं० १६६ । आ० ११×७ इञ्च । ले०काल सं० १७२८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है । (हिन्दी गद्य टीका)

२३४६. **प्रतिसं० १५** । पत्र सं० ८८ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन सं० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—बनारसी विलास के भी पाठ हैं ।

२३४७. **प्रतिसं० १६** । पत्र सं० १२५ । आ० ८×६½ इञ्च । ले० काल सं० १७५६ कार्तिक सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनसं० २६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।
(गुटकाकार नं० १२)

२३४८. **प्रति सं० १७** । पत्र सं० ४६ । आ० ११×५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

२३४९. **प्रतिसं० १८** । पत्र सं० १७४ । आ० ११½ × ७½ इञ्च । ले० काल सं० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—खंडेलवाल दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

२३५०. **प्रतिसं० १६** । पत्र सं० ३-६७ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १८२ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

२३५१. **प्रति सं० २०** । पत्र सं० ६६ । आ० १०½ × ६ इञ्च । ले० काल सं० १८६६ सावण सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—सरावगी लिखमीचंद ने लिखाया तथा भादवा सुदी १४ सं० १८६३ में बतोचापन पर फतेपुर के मंदिर में चढ़ाया।

२३५२. **प्रति सं० २१**। पत्र सं० १३०। आ० १४×८½ इञ्च। ले० काल ×। **पूर्ण**। वेष्टन सं० १३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—पं० हीरालाल जैन ने बाबूलाल आगरे वालों से प्रतिलिपि कराई।

२३५३. **प्रति सं० २२**। पत्र सं० ५०। आ० १३½×७ इञ्च। ले० काल सं० १९१४ माघ सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० २१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—प्रति सुन्दर है।

२३५४. **प्रति सं० २३**। पत्रसं० ७०। आ० १३ × ६ इञ्च। ले०काल—सं० १९१६ पौष वदी १३। पूर्ण। वेष्टनसं० २६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—व्यास सिवलाल ने जै गोविन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की।

२३५५. **प्रति सं० २४**। पत्रसं० १८०। आ० ९ × ६ इञ्च। ले० काल—सं० १७४८ काती बुदी १२। पूर्ण। वेष्टनसं०—१०७ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)।

विशेष—जोधनेर में प्रतिलिपि हुई।

२३५६. **प्रति सं० २५**। पत्रसं० २२१। आ० १२½ × ६ इञ्च। ले० काल—सं० १८५७ कार्तिक बुदी १। पूर्ण। वेष्टनसं०—३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा।

विशेष—चिमनलाल तेरहपंथी ने प्रतिलिपि की।

२३५७. **प्रति सं० २६**। पत्रसं० ३-१०। आ० १०½ × ५½ इञ्च। ले० काल— ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० १०५-९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पंथी दौसा।

२३५८. **प्रति सं० २७**। पत्रसं० १३७। आ० ९½ × ५½ इञ्च। ले० काल सं० १८५६ ज्येष्ठ बुदी ६। पूर्ण। वेष्टनसं० १३१। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

२३५९. **प्रति सं० २८**। पत्र सं० ३—३६६। आ० १२×५½ इञ्च। ले०काल— ×। **अपूर्ण**। वेष्टन सं०६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

विशेष—अमृतचन्द्र कृत कलशा तथा राजमल्ल कृत हिन्दी टीका सहित है। पत्र जीर्ण है।

२३६०. **प्रति सं० २९**। पत्रसं० ६०। आ० १० × ५ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० १८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा।

२३६१. **प्रति सं० ३०**। पत्रसं० ७९। ले० काल सं० १९९७ ज्येष्ठ सुदी ५। **पूर्ण**। वेष्टन सं० २६। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मंदिर दीवानजी, कामा।

२३६२. **प्रति सं० ३१**। पत्र सं० ९-१४५। आ० ९ × ५ इञ्च। ले० काल— ×। अपूर्ण। वे० सं० २५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

२३६३. **प्रतिसं० ३२**। पत्र सं० २०९। आ० ११½ × ६½ इञ्च। ले० काल सं० १८९४ आषाढ़ सुदी ११। पूर्ण। वे० सं० २५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—ऋषभदास कासलीवाल के पुत्र ने कामा में प्रतिलिपि कराई।

२३६४. **प्रति सं० ३३** । पत्रसं० १६५ । आ० १२½×५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

२३६५. **प्रतिसं० ३४** । पत्रसं० ७३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

२३६६. **प्रति सं० ३५** । पत्रसं० १०३ । ले०काल सं० १७२१ आसोज सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६८ क । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२३६७. **प्रति सं० ३६** । पत्र सं० ६३ । आ० १०×६½ इञ्च । ले०काल सं० १८६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर कामा ।

विशेष—जोधराज कासलीवाल ने प्रतिलिपि करायी थी ।

२३६८. **प्रतिसं० ३७** । पत्रसं० १०६ । आ० १० × ६½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

२३६९. **प्रतिसं० ३८** । पत्रसं० ३५७ । ले०काल सं० १७५२ सावण सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

विशेष—पहिले प्राकृत मूल, फिर संस्कृत तथा पीछे हिन्दी पद्यार्थ है ।

पत्र जीर्ण शीर्ण अवस्था में है ।

२३७०. **प्रति सं० ३९** । पत्र सं० ९० । आ० १२½×६½ इञ्च । ले०काल···· × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मंदिर बयाना ।

२३७१. **प्रति सं० ४०** । पत्र सं० १२३ । आ० ९×५½ इञ्च । ले० काल सं० १७४८ माघ बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती बयाना ।

विशेष—बेगमपुर में भवानीदास ने प्रतिलिपि की थी । १२३ पत्र के आगे २१ पद्यों में बनारसीदास कृत सूक्ति मुक्तावली भाषा है ।

२३७२. **प्रति सं० ४१** । पत्रसं० ७७ ।ले०काल सं० १८५५ पूर्ण । वेष्टनसं० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—बयाना में प्रतिलिपि हुई ।

२३७३. **प्रतिसं० ४२** । पत्रसं०···७० । लेखन काल सं० १९२९ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पंचायती बयाना ।

विशेष—श्री ठाकुरचन्द मिश्र ने माधोसिंह जी के पठनार्थ प्रतिलिपि करवायी तथा सं० १९३२ में मंदिर में चढ़ाया ।

२३७४. **प्रतिसं० ४३** । पत्र संख्या—४१ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती भरतपुर ।

विशेष—जीर्ण है ।

२३७५. **प्रतिसं० ४४** । पत्र सं० २–५९ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती भरतपुर ।

२३७६. **प्रतिसं० ४५** । पत्रसं० १६२ । ले०काल सं० १८६६ पूर्ण । वेष्टन सं० ५२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती भरतपुर ।

२३७७. **प्रतिसं० ४६** । पत्रसं० ६५ । ले०काल सं० १७०३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती भरतपुर ।

२३७८. **प्रतिसं० ४७** । पत्रसं० ६१ । ले०काल सं० १७३३ आसोज बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती भरतपुर ।

२३७९. **प्रतिसं० ४८** । पत्रसं० २३ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती भरतपुर ।

२३८०, **प्रति सं० ४९** । पत्रसं० १५४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

२३८१. **प्रति सं० ५०** । पत्र सं० २२३ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल सं० १७३४ पौष सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२५ । **प्राप्ति स्थान**—खंडेलवाल पंचायती दि० जैन मन्दिर अलवर ।

२३८२. **प्रतिसं० ५१** । पत्र सं० ६० । ले०काल सं० १७७६ । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२६ । **प्राप्तिस्थान**—खंडेलवाल दि० जैन मन्दिर अलवर ।

विशेष—प्रति का जीर्णोद्धार किया हुआ है ।

२३८३. **प्रतिसं० ५२** । पत्र सं० ११७ । ले०काल सं० १६०१ पूर्ण । वेष्टन सं० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—खंडेलवाल दि० जैन मंदिर अलवर ।

२३८४. **प्रति सं० ५३** । पत्र सं० ६३ । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—खंडेलवाल दि० जैन मन्दिर अलवर ।

२३८५. **प्रति सं० ५४** । पत्रसं० ६० । आ० ११½×५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३३/१६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर अलवर ।

२३८६. **प्रति सं० ५५** । पत्र सं० १४६ । आ० ७×५½ इञ्च । ले० काल सं० १६०३ पूर्ण । वेष्न सं० ३८१ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

२३८७. **प्रति सं० ५६** । पत्र सं० ३२–७१ । आ० ६½ × ६ इञ्च । ले०काल सं० १८२१ द्वितीय वैशाख बुदी ८ । अपूर्ण । वेष्टनसं० २०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—दौलतराम चौधरी ने मनसाराम चौधरी की पुस्तक से उतारी । प्रतिलिपि टोडा में हुई ।

२३८८. **प्रति सं० ५७** । पत्र सं० ११७ । आ० ६×६ इञ्च । ले०काल सं० १७३३ भादवा सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरह पंथी मालपुरा (टोंक) ।

विशेष—कर्णपुरा में लिखा गया ।

२३८९. **प्रति सं० ५८** । पत्रसं० ३–११८ । आ० ८ × ४ इञ्च । ले०काल सं० १८५० पौष सुदी ४ । अपूर्ण । वेष्टन सं० १०६–१३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—सहजराम व्यास ने लक्षकपुर में प्रतिलिपि की।

२३९०. **प्रति सं० ५९।** पत्रसं० ९८। आ० १०×५ इञ्च। **ले०काल** सं० १८६१। **पूर्ण**। वेष्टन सं० ६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

२३९१. **प्रतिसं० ६०।** पत्रसं० ९१। आ० ११ × ५½ इंच। **ले०काल** × । **अपूर्ण**। वेष्टन सं० ७०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, राजमहल टोंक।

विशेष—अंतिम पत्र नहीं है।

२३९२. **प्रतिसं० ६१।** पत्रसं० ८०। आ० १० × ४ इंच। **ले०काल** सं० १८२५। पूर्ण। वेष्टन स० ७९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, राजमहल (टोंक)।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

संवत् १८२५ वर्षे माह मासे कृष्ण पक्षे अष्टमी दिने बुधवारे वतु आरा ग्रामे श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री ५ रत्नचन्द्र जी तत्पट्टे भट्टारक श्री ५ देवचन्द जी भट्टारक श्री १०८ धर्मचन्द जी तत् शिष्य गोकलचन्द जी तत् लघु भ्राता ब्रह्म मेघजी।

ग्रंथ के अंतरी भाग पर लिखा है—

श्री रूपचन्द जी शिष्य सदासुख बाबाजी श्री विजयकीर्ति जी।

२३९३. **प्रतिसं० ६२।** पत्रसं० १३८। आ० ९ × ५½ इञ्च। ले० काल सं० १८४०। अपूर्ण। वेष्टन सं० ८८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोट्यों का नैणवा।

विशेष—प्रारंभ के ३० पत्र जिनोदय सूरि कृत हंसराज वच्छराज चौपई (रचना सं० १६८०) के हैं।

२३९४. **प्रतिसं० ६३।** पत्रसं० ८१। आ० १०½ × ६½ इञ्च। **ले०काल** सं० १९३३ कार्तिक बुदी ११। पूर्ण। वेष्टन सं० ३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा।

विशेष—नैणवा में प्रतिलिपि हुई।

२३९५. **प्रतिसं० ६४।** पत्रसं० ११९। आ० १०½ × ५ इंच। **ले०काल** सं० १८९६ चैत्र बुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० १०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा।

विशेष—नैणवां नगर में चुन्नीलाल जी ने लिखवाया।

२३९६. **प्रतिसं० ६५।** पत्र सं० ९५। आ० १०½ × ४½ इञ्च। ले० काल सं० १७३३ आसोज सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन सं० ३५। **प्राप्ति स्थान**—तेरहपंथी दि० जैन मन्दिर नैणवा।

विशेष—पूजा की प्रतिलिपि पंडित श्री शिरोमणिदास ने की थी।

२३९७. **प्रति सं० ६६।** पत्रसं० ३३७। आ० १२×७ इंच। ले० काल सं० १९४३। पूर्ण। वेष्टन सं० १३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

२३९८. **प्रतिसं० ६७।** पत्रसं० ८२। **ले०काल** सं० १८६२ चैत सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० १८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर स्वामी बूंदी।

२३९९. **प्रति सं० ६८।** पत्रसं० १३२। आ० १०×४ इञ्च। ले० काल सं० १८८७। **पूर्ण**। वेष्टनसं० २०९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर मागदी बूंदी।

२४००. प्रति सं० ६६। पत्र सं० १४०। आ० ११ × ७ इंच। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

विशेष—हिन्दी गद्य टीका सहित है टोंक नगर में लिपि की गई थी।

२४०१. प्रति सं० ७०। पत्र सं० ६-१००। आ० ६×४ इंच। ले० काल सं० १८४४ वैशाख बुदी ६। अपूर्ण। वेष्टन सं० ३२१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

२४०२. प्रति सं० ७१। पत्र सं० ३१। आ० ६½×५ इंच। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

२४०३. प्रति सं० ७२। पत्र सं० ६६। आ० ६½×६½ इंच। ले० काल १८८२। पूर्ण। वेष्टन सं० ५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ बूंदी।

२४०४. प्रति सं० ७३ पत्र सं० ६०। आ० १२×६½ इंच। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

२४०५. प्रति सं० ७४। पत्र सं० ८१। आ० ११×५½ इंच। ले० काल सं० १७०४ कार्तिक बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० २१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक)।

विशेष—संवत् १७०४ कार्तिक बुदी १३ शुक्रेवार लखि हरि जी शुभं भवतु।

२४०६. प्रति सं० ७५। पत्र सं० ४ से ६४। आ० ६½×२½ इंच। ले० काल सं० १८१४ कार्तिक। अपूर्ण। वेष्टन सं० ३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर चौधरियान (मालपुरा)।

विशेष—८६ से आगे भक्तामर स्तोत्र है।

२४०७. प्रति सं० ७६। पत्र सं० ६६। आ० ११½ × ५ इंच। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

२४०८. प्रति सं० ७७ पत्र सं० ६६। आ० ११½ × ५ इंच। भाषा—हिन्दी। ले० काल सं० १६२६। पूर्ण। वेष्टन सं० ५०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

२४०९. प्रति सं० ७८। पत्र सं० १०१-१२६। आ० १२ × ५½ इंच। ले० काल १६४६। वेष्टन सं० ७५६। अपूर्ण। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

२४१०. समाधितंत्र—पूज्यपाद। पत्र सं० ८। आ० ६½×५⅜ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—। योग र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४५५। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर।

२४११. प्रति सं० २ पत्र सं० १४। ले० काल × पूर्ण। वेष्टन सं० २६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

२४१२. समाधितंत्र भाषा—पर्वतधर्मार्थी। पत्र सं० १५७। आ० १३×६½ इंच। भाषा—हिन्दी, गुजराती। विषय—योग। र० काल ×। ले० काल सं० १७४५ फागुण बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० ६६०। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२४१३. प्रति सं० २। पत्र सं० १००। आ० १२½×७⅜ इंच। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ११६७। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२४१४. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० १५८ । आ० ११×६ इंच । ले० काल १८८२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२२-९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

२४१५. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० १५४ । आ० ११×५ इंच । ले०काल सं० १६९८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७९ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६९८ में वर्ष फागुण बुदी १२ दिने श्री परतापपुर शुभस्थाने श्री नेमिनाथ चैत्यालये कुंद-कुंदा चार्यान्वये भ० श्री सकलकीर्ति तदाम्नाये भ० रामकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री पद्मनन्दिगां शिष्य ब्रह्म नामराजेन इदं पुस्तकं लिखितं ।

२४१६. **प्रति सं० ५** । पत्रसं० १८७ । आ० ११½×५ इंच । ले०काल सं० १७३७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—सागवाडा के आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की गई थी ।

२४१७. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० १७९ । आ० ११ × ५ इंच । ले०काल सं० १७०६ मंगसिर बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१०/२२९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सम्भवनाथ मंदिर उदयपुर ।

विशेष—पं० मांगला पठनार्थ ।

२४१८. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० १७८ । आ० ११⅜×५½ इंच । ले०काल सं० १८५५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

२४१९. **प्रति सं० ८** । पत्र सं० २६९ । आ० १०½×५ इंच । ले०काल सं० १८०८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५३ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत १८०८ वर्षे शाके १६७३ प्रवर्त्तमाने मासोत्तमे मासे फागुणमासे शुक्लपक्षे पंचमीतिथौ ।

२४२०. **प्रति सं० ९** । पत्र सं० १२१ । आ० १०×५½ इंच । ले०काल सं० १८७५ काती सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—फतेहपुर के डेडराज के पुत्र जसीराम हीराकणी ने प्रतिलिपि कराई । मालवा में अष्टा नगर है वहां पोरवार पद्मावती वासीराम श्रावक ने घाटतले कुण्ड नामक गांव में प्रतिलिपि की थी ।

२४२१. **प्रति सं० १०** । पत्र सं० ११३ । आ० १४×६½ इंच । ले०काल १८२७ वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १/८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

जोधनेर में प्रतिलिपि की गई ।

२४२२. **प्रति सं० ११** । पत्र सं० १८३ । आ० १२ × ६ इंच । ले० काल सं० १८०५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—आरतिराम दौसा वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

२४२३. **प्रति सं० १२** । पत्रसं० ११६ । आ० १२ × ९ इंच । ले० काल सं० १८५२ सावन बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३-३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—हीरालाल चांदवाड ने चिमनराम दौसा निवासी से प्रतिलिपि करवाई थी ।

२४२४. **प्रति सं० १३** । पत्र सं० २०१ । आ० ६$\frac{5}{8}$ × ८$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल सं० १७४८ सावन सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—रामचन्द्र बज ने साहू जयराम विलाला की पोथी से गोलगढ़ मध्ये उतरवाई ।

२४२५. **प्रति सं० १४** । पत्र सं० १३७ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १९१२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

२४२६. **प्रति सं० १५** । पत्र सं० ११३ । आ० १३ × ६$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२४२७. **प्रति सं० १६** । पत्र सं० ३०१ । आ० १०$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल सं० १९१७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२४२८. **प्रति सं० १७** । पत्र सं० १३६ । ले० काल सं० १७४१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—बयाना में प्रतिलिपि हुई थी ।

२४२९. **प्रति सं० १८** । पत्र सं० २२० । आ० ११ × ४$\frac{1}{2}$ इंच । ले० काल सं० १७२९ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२४३०. **प्रति सं० १९** । पत्र सं० १२ । आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२४३१. **प्रति सं० २०** । पत्र सं० ३१६ । आ० ११ × ४ इञ्च । ले० काल सं० १७०५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

२४३२. **प्रति सं० २१** । पत्र सं० १३५ । आ० ११ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं १८७७ आसोज सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती कामा ।

विशेष—जोधराज कासलीवाल कामा वालों ने भेदमल बोहरा भरतपुर वाले से प्रतिलिपि कराई थी । श्लोक सं० ४५०१ ।

२४३३. **प्रति सं० २२** । पत्र संख्या २०९ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल सं० १७३० कार्तिक सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—काशीराम के पठनार्थ पुस्तक की प्रतिलिपि हुई थी । प्रति जीर्ण है ।

२४३४. **प्रति सं. २३** । पत्र सं० १८२ । ले० काल सं० १७७४ । पूर्ण । वे० सं० २७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—गुटका साइज है ।

२४३५. **प्रति सं. २४** । पत्र सं० २०० । ले० काल सं० १७७० । पूर्ण । वे. सं० ५६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

२४३६. **प्रति सं० २५** । पत्र सं० १५८ । आ० ९$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १८३५ । पूर्ण । वे० सं० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर।

२४३७. प्रति सं० २६ । पत्रसं० १८३ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल सं० १८८२ अषाढ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनसं० १८/१०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

२४३८. प्रतिसं० २७ । पत्रसं० २०८ । आ० ११ × ७ इञ्च । ले०काल सं० १८२३ सावण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—साहजी श्री मोहणरामजी ज्ञाति बघेरवाल बागडिया ने कोटा नगर में स्वयंभूराम वाकलीवाल से प्रतिलिपि कराई ।

२४३९. प्रति सं २८ । पत्र सं० १७२ । आ० १०½×६ इञ्च । ले० काल सं० १७८१ आषाढ बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० १/६५ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

विशेष—कोटा नगर में चन्द्रभाण ने बाई नान्हीं के पठनार्थ लिखा था ।

२४४०. प्रति सं० २९ । पत्र सं० १८३ । आ० ११½ × ५ इञ्च । लेखन काल सं० १७८१ आषाढ सुदी ७ । पूर्ण । वे०सं० ७६/६६ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

विशेष—अंतिम पत्र दूसरे ग्रंथ का है ।

धरणी वसु सागरे दुहायने नभतरे च ।
भासस्यासितपक्षे मनुलिथि सुरराजपुरोधरै ॥

लि० चन्द्रभाणेन बाई नान्ही सति शिरोमणि जैनधर्मधारिणी पठनार्थं कोटा नगरे चौहान वंश हाडा दुर्जनसाल राज्ये प्रतिलिपि कृतं । पुस्तक बड़ा मंदिर इन्दरगढ़ की है ।

२४४१. प्रति सं० ३० । पत्र सं० १७९ । आ० १३ × ६½ इञ्च । ले० काल सं० १९१८ । पूर्ण । वे० सं० ६० । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—राजाईसीपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

२४४२. प्रति सं० ३१ । पत्रसं० १८ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं०—३४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

२४४३. प्रति सं० ३२ । पत्रसं० ७१ । आ० १०×४½ इंच । ले०काल सं० १७६५ चैत सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७०–११४ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

२४४४. प्रति सं० ३३ । पत्रसं० ३१७ । आ० १०½×४ इञ्च । ले०काल सं० १७७६ पौष बुदी ६ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा ।

विशेष—नाथूराम ब्राह्मण जोशी बगडहटे के ने प्रतिलिपि की । लिखाई साह मोहनदास ठोलिया के पुत्र जीवराज के पठनार्थ । चिमनलाल रतनलाल ठोलिया ने सं० १९०८ में नैणवा में तेरहपंथियों के मंदिर में प्रति चढ़ाई ।

२४४५. प्रति सं. ३४ । पत्रसं० १११ । आ० १३×६½ इञ्च । ले०काल सं० १८८७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूंदी ।

२४४६. प्रतिसं० ३५ । पत्रसं० १५७ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल सं० १७३८ मंगसिर सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—सांवलदास ने बगरू में प्रतिलिपि की थी ।

२४४७. **प्रति सं० ३६** । पत्र सं० २६३ । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १६२४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

२४४८. **प्रति सं० ३७** । पत्र सं० २११ । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १८८३ वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर कामा ।

२४४९. **समाधितंत्र भाषा—नाथूलाल दोसी** । पत्रसं० १०१-१४२ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ८ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—योग । र० काल १६२३ चैत सुदी १२ । ले० काल सं० १६५३ प्र. ज्येष्ठ सुदी ५ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४६३ । **प्राप्ति स्थान**- भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२४५०. **समाधितंत्र भाषा-रायचंद** । पत्रसं० ५७ । आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय—योग शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १८६३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर पंचायती दूनी (टोंक) ।

विशेष—अन्तिम पद्य—

जैसी मूल थी गुरु कही तैसी कही न जाय ।
पै परियोजन पाय के लखी जुहु चंदराय ।।

२४५१. **समाधितंत्र भाषा**- - × । पत्र सं० ६१ । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी (गद्य) । विषय—योग शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२४५२. **समाधि तंत्र भाषा**— × । पत्र सं० २४ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—योग । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—२४ से आगे पत्र नहीं है ।

२४५३. **समाधितंत्र भाषा-माणकचंद** । पत्रसं० १८ । आ० १२$\frac{1}{2}$×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । गद्य । विषय—योग । र० काल × । ले० काल सं० १६५७ चैत सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—वृषभदास निगोत्या ने संशोधन किया था ।

२४५४. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ३८ । आ० ७$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

२४५५. **समाधिमरण भाषा—द्यानतराय** । पत्र सं० २ । आ० ६×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चिंतन । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ६४५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

२४५६. **समाधिमरण भाषा -सदासुख कासलीवाल** । पत्रसं० १५ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—चिंतन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१८ । **प्राप्ति स्थान**---भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२४५७. **समाधिमरण भाषा**— × । पत्र सं० २७ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चिन्तन । र०काल × । ले०काल सं० १९१९ पौष बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४४९ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२४५८. **समाधिमरण भाषा**— × । पत्र सं० १४ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा - हिन्दी । विषय—चिंतन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६१३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२४५९. **समाधिमरण भाषा**— × । पत्र सं० १७ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी ग० । विषय—चिंतन । र०काल × । ले० काल सं० १९०६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२-६८ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोड़ारायसिंह (टोंक) ।

२४६०. **समाधिमरण भाषा**— × । पत्र सं० १४ । भाषा—हिन्दी । विषय - -चिंतन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

२४६१. **समाधिमरण भाषा**—× । पत्र सं० १४ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चिंतन । र०काल × । ले० काल सं० १९१६ कार्तिक सुदि १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०६ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर फतेहपुर, शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—सरावगी हरिकिसन ने व्यास शिवलाल देवकृष्ण से बम्बई में प्रतिलिपि कराई थी ।

२४६२. **समाधिमरण भाषा**-- × । पत्र सं० १६ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । (गद्य) । विषय—आत्मचिंतन । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२४६३. **समाधिमरण स्वरूप**— × । पत्र सं० १३ । आ० १०$\frac{1}{2}$×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—योग । र०काल × । ले० काल सं० १८२० ज्येष्ठ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

२४६४. **समाधि स्वरूप**— × । पत्र सं० १६ । भाषा—संस्कृत । विषय—चिंतन । र०काल—× । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६३/२५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

२४६५. **समाधिमरण स्वरूप**— × पत्रसं० २३ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—योग । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

२४६६. **समाधिशतक—पूज्यपाद** । पत्रसं० ७ । आ० १२×५$\frac{3}{4}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२४६७. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ८ । आ० ९×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती टूनी (टोंक) ।

२४६८. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० ८ । आ० १०$\frac{3}{4}$×५ इंच । ले०काल × । वेष्टन सं० ५५ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

२४६९. **समाधिशतक टीका—प्रभाचन्द्र ।** पत्रसं० १० । आ० १२ × ५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२४७०. **प्रति सं० २ ।** पत्रसं० २६ । आ० १२×४ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६२६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२४७१. **प्रतिसं० ३ ।** पत्रसं० ३० । आ० ११×५ इंच । ले०काल सं० १७४७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२४७२. **प्रतिसं० ४ ।** पत्रसं० २-४३ । आ० १०×५ इंच । ले०काल सं० १५८० । अपूर्ण । वेष्टन सं० २४० । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष— प्रशस्ति निम्न प्रकार है —

संवत् १५८० वर्षे ज्येष्ठ मासे १४ दिने श्री मूलसंघे मुनि श्रीभुवनकीर्ति लिखापितं कर्मक्षयनिमित्तं ।

२४७३. **प्रति सं० ५ ।** पत्र सं० २१ । आ० ११½ × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२४७४. **प्रतिसं० ६ ।** पत्र सं० ८ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०/२३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर । गुटकाकार है ।

२४७५. **प्रतिसं० ७ ।** पत्र सं० १२ । आ० ११½ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १७६१ कार्तिक सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—बसवा में जगत्कीर्ति के शिष्य दोदराज ने प्रतिलिपि की थी ।

२४७६. **प्रति सं० ८ ।** पत्रसं० ११ । आ० १० × ४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६४ । **प्राप्ति स्थान** -दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२४७७. **समाधि शतक—पन्नालाल चौधरी ।** पत्रसं० ६० । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

२४७८. **सामायिक पाठ**—× । पत्रसं० ८ । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६८-१४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

२४७९. **प्रति सं० २ ।** पत्रसं० ११ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

२४८०. **प्रतिसं० ३ ।** पत्रसं० १४ । आ० १० × ६ इञ्च । ले० काल— सं० १६०६ सावण सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनसं० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—अन्त में दौलतराम जी कृत सामायिक पाठ के अन्तिम दोहे हैं जो सं० १८१४ की रचना है। संस्कृत में भी पाठ दिये हैं।

२४८१. **प्रति सं० ४** . पत्रसं० ६। आ० ७$\frac{1}{2}$ × ३$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १४८३। पूर्ण। वेष्टन सं० २५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

सवत् १४८३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ शनौ नागपुर नगरे जयाणंद गणि लिखतं चिरनंद तात् श्री संघे प्रसादात्।

२४८२. **प्रतिसं० ५**। पत्रसं० १५६। ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

२४८३ **प्रति सं० ६** । पत्रसं० २५ । आ० ८ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर [illegible] बूँदी

२४८४. **प्रतिसं० ७**। पत्रसं० १५। ले०काल सं० १७६२। पूर्ण । वेष्टन सं० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर डींग।

विशेष—डींग में प्रतिलिपि हुई थी।

२४८५. **प्रति सं० ८**। पत्रसं० १४। आ० ११×५ इञ्च। वेष्टन सं० ३७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

२४८६. **प्रतिसं० ९**। पत्रसं० ५८। आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मंदिर उदयपुर।

विशेष—प्रति हिन्दी गद्य टीका सहित है। सेठ बेलजी सुत बाघजी पठनार्थ लिखी गयी।

२४८७. **प्रतिसं० १०** । पत्र सं० ११। आ० ११×५ इञ्च। लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २८१-१११ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

विशेष—संस्कृत में भी पाठ है।

२४८८. **प्रति सं० ११**। पत्रसं० २१। आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च। ले०काल सं० १६१२ भादवा सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० ३७३-१४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

२४८९. **प्रति सं० १२**। पत्रसं० ७। आ० ६$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

२४९०. **सामायिकपाठ** – × । पत्र सं० ३३ । आ० १२×६$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—अध्यात्म। र०काल × । ले०काल सं० १९१३। पूर्ण। वेष्टन सं० ५१२। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है।

२४९१. **सामायिक पाठ**—× । पत्र सं० ७२ । भाषा—संस्कृत। विषय—अध्यात्म। र०काल × । ले०काल सं० १६४१। पूर्ण। वेष्टन सं० ६/४१८। **प्राप्तिस्थान**—संभवनाथ दि० जैन मंदिर उदयपुर।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स्वस्ति संवत् १६४१ वर्षे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे यनोट द्रुगे चन्द्रनाथ चैत्यालये भ० श्री ज्ञानभूषण प्रभाचन्द्राणां शिष्येण उपाध्याय श्री धर्मकीर्तिणा स्वहस्तेन लिखितं ब्रह्मअजित सागरस्य पुस्तकेदं । ब० श्री मेघराजस्तच्छिष्य ब० सबजीस्तच्छिष्यं ।

दर्शनविधि भी दी हुई है ।

२४९२. सामायिक पाठ—× । पत्रसं० १६ । आ० ६ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ भीगान बूंदी ।

२४९३. सामायिक पाठ (लघु)—× । पत्र सं० ४१ । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल सं० १७४६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२१ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—सहस्रनाम स्तोत्र भी है ।

२४९४. सामायिक पाठ—× । पत्रसं० १६ । आ० ६ × ६½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल— × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६/१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक) ।

२४९५. सामायिक पाठ · × । पत्र सं० २० । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । र०काल—× । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

२४९६. सामायिक पाठ—× । पत्र सं० २ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ओरसली कोटा ।

२४९७. सामायिक पाठ -× । पत्र सं० १३ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । र०काल—× । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २० । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर सुन्दरगढ (कोटा) ।

२४९८. सामायिक पाठ—× । पत्र सं० १७ । आ० ६½ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० २५६-१०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

२४९९. सामायिक पाठ—× । पत्रसं० २३ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल सं० १९९६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

२५००. साधु प्रतिक्रमण सूत्र—× । पत्रसं० ६ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—चिंतन । र०काल × । ले० काल सं० १७३० माघ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०८-६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

२५०१. सामायिक पाठ (बृहद्)—× । पत्रसं० १४ । आ० १०×७ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० १७६-१९४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

२५०२. सामायिक पाठ (लघु)—× । पत्रसं० १ । आ० १०×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

२५०३. सामायिक पाठ (लघु)—× । पत्र सं० ४ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०५-११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर ।

विशेष—संस्कृत में भी पाठ दिये हैं ।

२५०४. सामायिक पाठ—बहुमुनि । पत्र सं० ५१ । आ० ९×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

२५०५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । आ० ११×५ इञ्च । **ले०काल** सं० १९१७ वैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपंथी दि० जैन मन्दिर नैणवा ।

२५०६. सामायिक पाठ ×। पत्रसं० ४ । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७४३ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

२५०७. सामायिक पाठ भाषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्रसं० ७० । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय-अध्यात्म । र० काल सं० १८३२ वैशाख सुदी १४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३६४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२५०८. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ३८ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । ले०काल सं० १८८७ माघ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२५०९. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० ४५ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९८ । **प्राप्ति स्थान** भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२५१०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४ । आ० ७ × ६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ९१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

विशेष—जिनदास गोधा कृत सुगुरु शतक तथा देव शास्त्र गुरु पूजा और है ।

२५११. प्रतिसं० ५ । पत्रसं० ६२ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । **ले०काल** सं० १९१८ चैत सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

२५१२. प्रतिसं० ६ । पत्र सं० ४४ । आ० ९×७ इञ्च । ले०काल सं० १९२९ पौष सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

२५१३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४३ । आ० १२×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० १३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

२५१४. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं ४४१ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

२५१५. प्रति सं० ९ । पत्र सं० २४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर (भरतपुर) ।

२५१६. प्रति सं० १० । पत्र सं० ४४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५४ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

२५१७. प्रतिसं० ११ । पत्र सं० ४८ । आ० १३×६ इञ्च । ले० काल सं० १८८१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

२५१८. सामायिक पाठ भाषा – भ. त्रिलोकेन्दुकीर्त्ति । पत्रसं० ६८ । आ० ७×५½ इञ्च । **भाषा**– हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल सं० १८४१ सावण सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ८३४ । **प्राप्ति स्थान** -भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२५१९. सामायिक पाठ भाषा—धन्नालाल । पत्रसं० ३१ । आ० ९½×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल सं० १९४५ आसोज बुदी ६ । ले० काल सं० १९७१ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३६.२१ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मंदिर इन्द्रगढ (कोटा)

विशेष—गोविन्दकवि कृत चौबीस ठाणा चर्चा पत्र सं० २७-३१ तक है । इसका र०काल सं० १८८१ फागुण सुदी १२ है ।

२५२०. प्रति सं० २ । पत्रसं० २७ । आ० ९½ × ६ इञ्च । ले०काल सं० १९४६ वैशाख सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ४/४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्द्रगढ़ (कोटा) ।

विशेष—२५ से २७ तक चौबीस ठाणा चर्चा भी है जिसकी गोविन्दकवि ने सं० १८११ में रचना की थी ।

२५२१. सामायिक पाठ भाषा—श्यामरत्न । पत्रसं० २३ । भाषा-हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र०काल १७४९ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४६० । **प्राप्ति स्थान**— जैन दि० पञ्चायती मन्दिर, भरतपुर ।

२५२२. सामायिक पाठ— × । पत्रसं० ४ । आ० ९ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

२५२३. सामायिक पाठ— × । पत्रसं० ९ । आ० ६×५ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी पद्य । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

२५२४. सामायिक पाठ— × । पत्रसं० ७६ । आ० ९½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

२५२५. सामायिक पाठ संग्रह— × । पत्रसं० ६४ । आ० १३½×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १८२७ आषाढ़ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—सवाई जयपुर में महाराजा पृथ्वीसिंह के राज्य में चिमनराम दोषी की दादीने नैणसागर से प्रतिलिपि करवाकर चढ़ाया था ।

मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

बृहद् सामायिक, भक्ति पाठ, चौतीसअतिशयभक्ति, द्वितीय नंदीश्वर भक्ति, वृहद् स्वयंभूस्तोत्र, आराधना सार, लघुप्रतिक्रमण, वृहत् प्रतिक्रमण कायोत्सर्ग, पट्टावली एवं आराधना प्रतिबोध सार ।

२५२६. सामायिक प्रतिक्रमण— × । पत्रसं० ६८ । आ० १०½×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १९४४ पूर्ण । वेष्टन सं० ३४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२५२७. सामायिक टीका— × । पत्रसं० ४७-७७ । आ० १३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १७६/४१६ । **प्राप्ति स्थान**—सम्भवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

२५२८. प्रति सं० २ । पत्रसं० २-२६ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १८०/४२० । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

२५२९. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० २-१७ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १८१/४२१ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

२५३०. सामायिक पाठ टीका— × । पत्रसं० ६८ । आ० १२×५½ इंच । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १८२७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१-८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—खोजीराम लुहाड़िया ने आत्म पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२५३१. सामायिक टीका— × । पत्रसं० ७३ । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मंदिर बसवा ।

२५३२. सामायिक पाठ टीका— × । पत्रसं० ५१ । आ० ११½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १८१४ चैत सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरराली कोटा ।

विशेष—संवत् १८१४ चैत मासे शुक्लपक्षे पंचम्यां लिपिकृतं पंडित आलमचन्द तत् शिष्य जिनदास पठनार्थं ।

२५३३. सामायिक पाठ टीका— × । पत्रसं० ४५ । आ० १३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १७६० आषाढ़ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

२५३४. सामायिक पाठ टीका— × । पत्र सं० ४५ । आ० १२½ × ७ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत-हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले०काल सं० १८३० ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

२५३५. सामायिक टीका— × । पत्र सं० ७५ । आ० ९×७ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत-हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १८४१ चैत सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३/७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—रतनचन्द पाटनी ने दौसा में प्रतिलिपि की ।

२५३६. सामायिक पाठ टीका सहित— × । पत्रसं० १०० । आ० ९½ × ५ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले०काल सं० १७८७ ज्येष्ठ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

विशेष—जहानाबाद में प्रतिलिपि हुई ।

२५३७. साम्यभावना— × । पत्रसं० ३ । आ० १२×४ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६२/१६८ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

२५३८. संवराअनुप्रेक्षा—सूरत । पत्रसं० ३ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चिन्तन । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ८१५ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—द्वादश अनुप्रेक्षा का भाग है ।

२५३९. संसार स्वरूप— × । पत्र सं० ६ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चिन्तन । र० काल × । ले० काल सं० १६४५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नागदी बूंदी ।

विशेष—आचार्य यश कीर्तिना स्वहस्तेन लिखितं ।

२५४०. सरवंगसार संत विचार—नवलराम । पत्रसं० २७८ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-अध्यात्म । र०काल सं० १८३४ पौष बुदी १४ । ले० काल सं० १८३७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५०५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—(गुटका में है)

प्रारम्भ—

सतगुरु मुझि परि, महरि करि बगसो बुधि विचार ।
श्रवणसार एह ग्रंथ, जो ताको करूं उचार ।
ताको करूं उचार, साखि संतां की ल्याऊं ।
उकति जुकति परमाण, और अतिहास सुनाऊं ।
नवलराम सरणै सदा, तुम पद हिरदै धारि ।
सतगुरु मुझपर महर करी, बगसो बुधि विचार ।

२५४१. **सिद्धपंचासिका प्रकरण**— × । पत्रसं० १० । आ० ६$\frac{3}{5}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२५४२. **स्वरूपानन्द—दीपचन्द ।** पत्रसं० ११ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र०काल सं० १७५१ । ले०काल सं० १८३५ कार्तिक सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली (कोटा) ।

विशेष—कोटा के रामपुर में महावीर चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी ।

—: ० :—

विषय – न्याय एवं दर्शन शास्त्र

२५४३. **अष्टसहस्री**—**आ० विद्यानन्दि**। पत्र सं० २५१। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–जैन न्याय। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १५९३। **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—देवागम स्तोत्र की विस्तृत टीका है।

२५४४. **प्रति सं० २**। पत्र सं० २८५। आ० १२×४ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३८९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

२५४५. **प्रतिसं० ३**। पत्र सं० २८१। आ० १३ × ५ इञ्च। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १५६। ४८९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर।

विशेष—प्रति जीर्ण है। बीच में कितने ही पत्र नहीं है। भ० भादिभूषण के शिष्य ब्र० नेमिदास ने प्रतिलिपि की थी।

२५४६. **अष्टसहस्री (टिप्पण)**—×। पत्र सं०–५३। आ० ११ × ५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–दर्शन शास्त्र। र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १३५। **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

२५४७. **आप्त परीक्षा**—**विद्यानन्दि**। पत्र सं० १४३। आ० १२×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय दर्शन शास्त्र। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—मुनि श्री धर्मभूषण तत् शिष्य ब्रह्म मोहन पठनार्थं।

२५४८. **प्रति सं० २**। पत्र सं० ७३। आ० १२ × ५ इञ्च। ले०काल सं० १६३५ ज्येष्ठ सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन सं० ५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर।

विशेष—अकबर जलालुद्दीन के शासनकाल में अरगलपुर (आगरा) में प्रतिलिपि हुई थी।

२५४९. **प्रति सं० ३**। पत्र सं० ६३। आ० १२×५ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ११८३। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२५५०. **प्रतिसं० ४**। पत्र सं० ६। आ० ११×४½ इञ्च। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० २४४/२३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

२५५१. **आप्तमीमांसा**—**आचार्य समन्तभद्र**। पत्र सं० ८०। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय न्याय। र०काल × । ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—गोविन्ददास ने प्रतिलिपि की थी। इसका दूसरा नाम देवागम स्तोत्र भी है।

२५५२. **प्रति सं० २**। पत्र सं० २५। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १५७/५१०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर।

विशेष—प्रति प्राचीन है। "क. मेधराज सरावगी" लिखा है।

२५५३. **प्रति सं० ३**। पत्र सं० २६। आ० १२½×८ इञ्च। ले० काल सं० १६५६ ज्येष्ठ बुदी ४। पूर्ण। वेष्टन सं० १२७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)।

२५५४. **आप्तमीमांसा भाषा—जयचन्द छावड़ा**। पत्र सं० ११६। आ० १०¾ × ११ इञ्च। भाषा—राजस्थानी (ढूंढारी) पद्य। विषय—न्याय। र०काल सं० १८६६ चैत बुदी १४। ले०काल सं० १८८६ माह बुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० ११८५। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

नोट—इसका दूसरा नाम देवागम स्तोत्र भाषा भी है।

२५५५. **प्रति सं० २**। पत्र सं० १०४। आ० १०½×५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ७२। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

२५५६. **प्रति सं० ३**। पत्र सं० ७६। आ० १०½ × ७ इञ्च। ले० काल सं० १६६१। पूर्ण। वेष्टन सं० ५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

विशेष—चन्देरी में प्रतिलिपि हुई थी।

२५५७. **प्रति सं० ४**। पत्र सं० ८२। आ० ११×५ इञ्च। ले० काल सं० १८८० भादवा बुदी १। पूर्ण वेष्टन सं० ५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अग्रवाल पंचायती उदयपुर।

२५५८. **प्रति सं० ५**। पत्र सं० ६६। ले० काल सं० १८६४। पूर्ण। वेष्टन सं० ३१०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

२५५९. **प्रति सं० ६**। पत्र सं० ६१। ले० काल सं० १८६६। पूर्ण। वेष्टन सं० ३११। **प्राप्ति स्थान**—दि जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

२५६०. **प्रति सं० ७**। पत्र सं० १०१। आ० ११ × ५½ इञ्च। ले० काल सं० १६२५ कार्तिक सुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० ५३/११७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर।

२५६१. **प्रति सं० ८**। पत्र सं० ६७। आ० १२×८ इञ्च। ले० काल सं० १८६८। पूर्ण। वेष्टन सं० ८० २५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

विशेष—साह धनालाल खिरन्जीव मांगीलाल जिनदास शुभंधर इन्दरगढ वालों ने जयपुर में प्रतिलिपि कराई थी।

२५६२. **प्रति सं० ९**। पत्र सं० ५६। आ० १२×५½ इञ्च। ले० काल सं० १८६७। पूर्ण। वेष्टन सं० ६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)।

विशेष—फागी में प्रतिलिपि की गयी थी।

२५६३. **प्रति सं० १०**। पत्र सं० ६१। आ० १२×५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)।

२५६४. **प्रति सं० ११**। पत्र सं० ५६। आ० १३×७½ इञ्च। लेखन काल सं० १६४१ सावन बुदी ३। पूर्ण। वेष्टन सं० ६९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

विशेष—चुन्नीलाल ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी।

२५६५. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ६८ । आ० १२½×७½ इंच । ले०काल सं० १९८२ चैत बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—बसुवा में सोनपाल बिलाला ने प्रतिलिपि की थी ।

२५६६. आप्तस्वरूप विचार—× । पत्र सं० ६ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९७ । **प्राप्ति स्थान**—पंचायती दि० जैन मन्दिर अलवर ।

विशेष—अंत में स्त्री गुण दोष विचार भी दिया हुआ है ।

२५६७. आलाप पद्धति—देवसेन । पत्र सं० ७ । आ० १२½ × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले०काल सं० १८६१ सावण बुदी ऽ ऽ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११७८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—ब्राह्मण भोपतराम ने माधवपुर में ताराचन्द गोधा के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२५६८. प्रति सं० १ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८३० वैशाख बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ११७९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

२५६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११८२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२५७०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

२५७१. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० ११ । आ० ९× ७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नागदी, बूंदी ।

विशेष—ले० काल पर स्याही फेर दी गयी है ।

२५७२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ८ । आ० १०×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

२५७३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६ । आ० १०½×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

२५७४. प्रतिसं० ७ । पत्रसं० १० । आ० १३×५ इञ्च । ले० काल सं० १७७२ मंगसिर सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ११९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—संवत् १७७२ में सांगानेर (जयपुर) नगर में डूंगरसी ने नेमिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी । कठिन शब्दों के संकेत दिये है । अन्त में नवधा उपचार दिया है ।

२५७५. प्रतिसं० ८ । पत्रसं० ७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है तथा प्रति प्राचीन है ।

२५७६. प्रतिसं० ९ । पत्रसं० १० । आ० ११½×४½ इञ्च । ले० काल सं० १७६४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डींग ।

२५७७. **प्रति सं० १०** । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल सं० १७६८ भादवा बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२५७८. **प्रति सं० ११** । पत्रसं० ८ । आ० १० × ४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर, उदयपुर ।

२५७९. **प्रतिसं० १२** । पत्रसं० ६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर ।

२५८०. **प्रतिसं० १३** । पत्रसं० १६ । आ० ८½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३८ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२५८१. **प्रति सं० १४** । पत्रसं० ८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२५८२. **प्रति सं० १५** । पत्रसं० ६ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले०काल सं० १७८६ । वेष्टनसं० ६०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—कोटा नगर में भट्टारक देवेन्द्र कीर्ति के शिष्य मनोहर ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । प्रति सटीक है ।

२५८३. **प्रतिसं० १६** । पत्र सं० १३ । आ० ११½ × ५ इञ्च । ले०काल— सं० १७७८ मंगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५८८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—सांगानेर में भ. देवेन्द्रकीर्ति के शासन में पं० चोखचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

२५८४. **ईश्वर का सृष्टि कर्तृत्व खंडन**— × पत्र सं० २ । आ० १३ × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४४४, ५०१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

२५८५. **उपाधि प्रकरण**— × । पत्रसं० ३ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१८/६४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

२५८६. **खंडनखाद्य प्रकरण**— × । पत्रसं० ६५ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४०८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

२५८७. **चार्वाकमतीभङ्गो**— × ।पत्रसं० १८ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय – न्याय । र०काल × । ले० काल—सं० १८६३ ज्येष्ठ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष—पं जयचन्द छाबडा द्वारा प्रतिलिपि की गयी थी ।

२५८८. तर्कदीपिका—विश्वनाथाश्रम। पत्र सं० ६। आ० १०×४½ इंच। भाषा-संस्कृत (गद्य)। विषय—न्याय। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

२५८९. तर्क परिभाषा—केशवमिश्र। पत्र सं० ३५। आ० ११½×५½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—न्याय। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १४१६। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर।

२५९०. प्रति सं० २। पत्र सं० २६ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल—सं० १७२८। पूर्ण। वेष्टन सं० ४०६। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

२५९१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २२ । आ० १०×४ इंच। ले० काल × पूर्ण । वेष्टन सं० १०५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बदलाना (बूंदी)।

२५९२ प्रति सं० ४। पत्र सं० ५४। आ० ११½×५ इंच। ले० काल सं० १५९१ फागुण सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन सं० ४७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

२५९३. प्रति सं० ५। पत्र सं० ३-४४ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १६९४। अपूर्ण। वेष्टन सं० ११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६९४ वर्षे कृष्ण पक्षे वैशाख सुदी २ दिने मार्तण्डवासरे मालवविषये श्री सारंगपुर शुभ स्थाने श्री महावीर चैत्यालये सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री रत्नचन्द तदाम्नाये ब्र० श्री जेरा तत् शिष्य ब्र० श्री जसराज तत् शिष्य ब्रह्मचारी श्री रत्नपाल तर्कभाषा लिखिता।

२५९४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२ । आ० १० × ५ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बदलाना (बूंदी)

विशेष—प्रति टीका सहित है।

२५९५. तर्कभाषा — × । पत्र सं० ११। आ० १०×४⅞ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—न्याय। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ४०४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अजमेर

२५९६. तर्क परिभाषा प्रकाशिका—चेन्नभट्ट। पत्र सं० ६३ । आ० १० × ४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—न्याय । र० काल । ले० काल सं० १७७५ ज्येष्ठ सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० ४७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—सुस्थान नगर के चिंतामणि पार्श्वनाथ मंदिर में सुमति कुशल ने सिंह कुशल के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

२५९७. तर्कभाषावार्त्तिक— × । पत्र सं० ४। आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत। विषय—दर्शन। र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० २६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

२५९८. तर्कसंग्रह-अन्नंभट्ट। पत्र सं० २४। आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत। विषय—न्याय । र० काल × । ले० काल सं० १७९१ आषाढ़ बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

२५९९. **प्रति सं० १** । पत्रसं० ३ । ले०काल सं० १८२० वैशाख सूदी ६ । पूर्ण । वेष्टन संख्या ३१४ **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त मन्दिर ।

२६००. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १७ । आ० ११×६$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १७४-७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

२६०१. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० १६ । आ० १० × ५ इञ्च । ले० काल सं० १७५८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२६०२. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० १६ । आ० ९ × ४ इञ्च । ले० काल सं० १७९६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

२६०३. **प्रतिसं० ५** । पत्र संख्या १६ । आ० ९ × ४ इञ्च । लेखन काल सं० १८६६ माघ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बून्दी ।

२६०४. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० ९ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १८२१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—जयनगर में श्री क्षेमेन्द्रकीर्त्ति के शासन में प्रतिलिपि हुई थी ।

२६०५. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० ७ । आ० १२×५ इंच । ले० काल × । वेष्टन सं ४७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

२६०६. **प्रति संख्या ८** । पत्रसं० ७ । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

२६०७. **प्रतिसं० ९** । पत्रसं० १४ । आ० ९ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १८०१ अगहन बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनसं० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर डबलाना (बूंदी)

विशेष—लिखितं खातोली नगर मध्ये । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२६०८. **प्रति सं० १०** । पत्र सं० ८। आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रति टीका सहित है ।

२६०९. **प्रति सं० ११** । पत्र सं० १७ । ले० काल । पूर्ण × । वेष्टन सं० ७५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

२६१०. **प्रति सं० १२** । पत्रसं० ११ । आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३३२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति टीका सहित है ।

२६११. **प्रति सं० १३** । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल सं० १८६१ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

२६१२. **दर्शनसार—देवसेन** । पत्र सं० ६ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—दर्शन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५५९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२६१३. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ४ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

२६१४. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ४ । आ० १२½×६ इञ्च । ले०काल सं० १६२४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष - देवीलाल के शिष्य थिरची चन्द ने प्रतिलिपि झालरापाटन में की ।

२६१५. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० ५ । आ० १२½ × ७ इञ्च । ले०काल सं० १६२५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दीवानजी कामा ।

२६१६. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० ४ । आ० १२×४ इञ्च । ले० काल × । **पूर्ण** । वेष्टन सं० २५६/४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

२६१७. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० २ । ले० काल × । **अपूर्ण** । वेष्टन सं० २५७/८५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२६१८. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० ३ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

२६१९. **द्रव्य पदार्थ**— × । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—तर्क (दर्शन) । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—ग० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

२६२०. **द्विजवदनचपेटा**— × । पत्र सं० १० । आ० १३ × ४ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय–वादविवाद (न्याय दर्शन) । र० काल × । ले० काल सं० १७२५ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४३२/५०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

२६२१. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३३/५०६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२६२२. **नयचक्र—देवसेन** । । पत्र सं० १५ । आ० १३ × ७ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । र० काल × । ले० काल सं० १६४४ माघ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ११२ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बून्दी ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

२६२३. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ४८ । आ० १० × ६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल टोंक ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

२६२४. **नयचक्र भाषा वचनिका—हेमराज** । पत्र सं० ११ । आ० ८½ × ६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—दर्शन । र० काल सं० १७२६ फागुण सुदी १० । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६ । १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२६२५. **प्रति सं० २** । पत्र सं० २७ । आ० ८½ × ६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल पंचायती दि० जैन मन्दिर अलवर ।

२६२६. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० १३ । आ० १०×८ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर, अलवर ।

२६२७. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० १२ । आ० १२½ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री पंडित नरायणदासोपदेशात् साह हेमराज कृत नयचक्र की सामान्य वचनिका सम्पूर्ण ।

२६२८. **प्रति सं० ५** । पत्रसं० २२ । आ० १०½ × ६½ इञ्च । ले०काल सं० १६४६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर, इन्दरगढ (कोटा)

२६२९. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० ९ । आ० १२½ × ६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६/२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज.) ।

२६३०. **प्रति सं० ७** । पत्रसं० १७ । आ० ८½×७½ इञ्च । लेखन काल सं० १९३४ । अपूर्ण । वेष्टन सं० २०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—पत्र सं० ४ नहीं है । लाला श्रीलाल जैन ने रतीराम ब्राह्मण कामावाले से प्रतिलिपि कराई थी ।

२६३१. **प्रति सं० ८** । पत्र सं० १४ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

२६३२. **प्रति सं० ९** । पत्र सं० १५ । आ० ११ × ५½ इञ्च । पूर्ण । वेष्टन सं० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास, पुरानी डीग ।

२६३३. **प्रति सं० १०** । पत्रसं० १९ । आ० १०½ × ५ इञ्च । ले०काल सं० १९३७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२३३४. **नयचक्र भाषा–निहालचन्द ?** पत्र सं० ६५ । आ० १२ × ७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय—न्याय । र०काल सं० १८६७ मार्गशीर्ष वदी ६ । ले० काल सं० १८७२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

विशेष—सहर कानपुर के निकट कंपू फौज निवास ।
तहां बैठि टीका करी थिरता को अवकास ।।
संवत अष्टादस सतक ऊपर सठ सठि आन ।
मारग वदि षष्टी विषै वार सनीचर जान ।।
ता दिन पूरन भयौ बड़ौ हर्ष चित आन ।
रंकै मानू निधि लई त्यौ सुख मो उर आन ।।

टीका का नाम स्वमति प्रकाशिनी टीका है ।

२६३५. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ४७ । आ० १४×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर बयाना ।

२६३६. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० ४५ । आ० १२½×७½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३२ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

२६३७. **न्याय ग्रंथ**— × । पत्र सं० २–६५ । आ० १०½×५ इञ्च । **भाषा**–संस्कृत । विषय–दर्शन । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूंदी) ।

२६३८. **न्याय ग्रंथ**— × । पत्र सं० ६ । आ० १३ × ४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–जैन न्याय । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

२६३९. **न्याय ग्रंथ**– × । पत्रसं० ३–२३५ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–जैन न्याय । र०काल × । ले० काल – × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४२०/२८९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

२६४०. **न्यायचन्द्रिका—भट्ट केदार** । पत्रसं० १६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत विषय–न्याय । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४३७ । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२६४१. **न्यायदीपिका–धर्मभूषण** । पत्रसं० ३९ । आ० ११×५ इञ्च । **भाषा**–संस्कृत । विषय–जैन न्याय । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३०० । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२६४२. **प्रति सं० १** । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १८२५ आषाढ़ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर ।

२६४३. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ३५ । आ० ९¾ × ५ इञ्च । ले०काल सं० १८५३ आसोज सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष - स्योजीराम ने पं० जिनदास कोटे वाले के प्रसाद से लिखा ।

२६४४. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० ३४ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १७०५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२६४५. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० २१ । आ० १२½ × ६ इञ्च । ले०काल × । वेष्टनसं० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

२६४६. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० २८ । आ० १२ ×५½ इञ्च । ले०काल × । वेष्टनसं० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

२६४७. **न्याय दीपिका भाषा वचनिका—संघी पन्नालाल** । पत्र सं० ९१ । आ० १३½ × ५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत हिन्दी । विषय—न्याय । र०काल सं० १९३५ मंगसिर वदी ७ । ले० काल सं० १९५७ पूर्ण । वेष्टन सं० ४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

२६४८. **न्यायावतारवृत्ति**— × । पत्र सं० ५ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत विषय—न्याय । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३१ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

२६४९. **न्याय बोधिनी** × । पत्र सं० १-१७ । आ० ११$\frac{3}{4}$ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ७४४ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—**प्रारंभ**—निखिलागम संचारि श्री कृष्णाख्यं परंमदः ।
ध्यात्वा गोवर्द्धनं सुधीस्तनुते न्यायबोधिनीम् ॥

२६५०. **न्यायविनिश्चय**—**आचार्य अकलंकदेव** । पत्रसं० ५ । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१/२०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

२६५१. **न्यायसिद्धांत प्रभा—अनंतसूरि** । पत्र सं० २३ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं ७१४ । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२६५२. न्यायसिद्धांतदीपक [illegible] । पत्रसं० १२७ । आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७१५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—एक १८ पत्रों की अपूर्ण प्रति और है ।

२६५३. **पत्रपरीक्षा—विद्यानन्दि** । पत्रसं० ३३ । आ० १३ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-दर्शन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

२६५४. **परीक्षामुख-माणिक्यनंदि** । पत्रसं० ५ । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—दर्शन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३०२/१५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

२६५५. **परीक्षामुख (लघुवृत्ति)**— × । पत्रसं० २० । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—पत्र सं० ७ से 'आप्तरीक्षा' दी गई है ।

२६५६. **परीक्षामुख भाषा-जयचन्द छाबड़ा** । पत्रसं० १२७ । आ० १४ × ८$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—राजस्थानी (ढूंढारी) गद्य । विषय—दर्शन । र०काल सं० १८६० । ले०काल सं० १९५३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३ ९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर अलवर ।

२६५७. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० १८८ । ले०काल सं० १९२२ जेठ कृष्णा ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर दीवान जी भरतपुर ।

२६५८. **प्रमाणनयतत्वालोकालंकार-वादिदेव सूरि** । पत्र सं० ९८-१६८ । आ० ११$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-न्याय । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३२१ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२६५९. प्रमाणनयतत्वालोकालंकार वृत्ति--रत्नप्रभाचार्य । पत्र सं० ३-८७ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २८१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—दो प्रतियों का सम्मश्रण है । टीका का नाम रत्नाकरावतारिका है ।

२६६०. प्रति सं० २ । पत्रसं० ८६ । आ० १०½ × ४½ । ले०काल सं० १५५२ आसोज बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—विप्र श्रीवत्स ने वीसलपुर नगर में प्रतिलिपि की थी और मुनि सुजाणनगर के शिष्य पं० श्री कल्याण सागर को भेंट की थी ।

२६६१. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० ७९ । ले०काल सं० १५०१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१/४९३ । **प्राप्ति स्थान** -दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

विशेष- -प्रति प्राचीन एवं जीर्ण है । अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

प्रमाणनयातत्वालंकारे श्री रत्नप्रभविरचितायां रत्नावतारिकाख्य लघु टीकायं वादस्वरूप निरूपणीयानामष्टमः परिच्छेद समाप्ता । श्री रत्नावतारिकाख्यं लघुटीकेति । संवत् १५०१ माघ सुदि १० तिथौ श्री ५ भट्टारक श्री रत्नप्रभसूरि शिष्येण लिखितमिदं ।

२६६२. प्रमाणनय निर्णय-श्री यशःसागर गणि । पत्रसं० १९ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र० काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० २७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

२६६३. प्रमाण निर्णय—विद्यानंदि । पत्र सं० ५७ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष - प्रति प्राचीन है । मुनि धर्मभूषण के शिष्य ब्र० मोहन के पठनार्थ प्रति लिखायी गयी थी ।

२६६४. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ५६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है पं० हर्षकल्याण की पुस्तक है । कठिन शब्दों के अर्थ भी है ।

२६६५. प्रमाण परीक्षा—विद्यानंद । पत्र सं० ७५ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—आदिभाग—

जयति निर्जिताशेष सर्वथैकांतनीतयः ।
सत्यवाक्याधिपाशश्वत् विद्यानंदो जिनेश्वरः ॥
अथ प्रमाण परीक्षा तत्र प्रमाण लक्षण परीक्ष्यते ।

मुनि श्री धर्म भूषण के शिष्य ब्रह्म मोहन के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

२६६६. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ४७ । आ० १४½ × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३१/४९८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—भट्टारक वादिभूषण के शिष्य ब्र० नेमीदास के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

२६६७. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ९३ । आ० १३×७½ इञ्च । ले० काल सं० १९३७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२६६८. **प्रमाण परीक्षा भाषा—जयचन्द छाबड़ा** । पत्र सं० ९० । आ० १३×७ इंच । भाषा—हिन्दी ग० । विषय दर्शन । र० काल सं० १९१३ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

२६६९. **प्रमाण प्रमेय कलिका—नरेन्द्रसेन** । पत्र सं० १० । आ० ११½×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । र० काल × । ले० काल सं० १७१४ फाल्गुन सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी

विशेष—श्री गुणचंद्र मुनि ने प्रतिलिपि की थी ।

२६७०. **प्रमाण मंजरी टिप्पणी**—× पत्र सं० ४ । आ० १०× ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । र० काल × । ले० काल सं० १६१५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सं० १६१५ वर्षे भादवा सुदी १ रवौ श्री शुभचन्द्रदेवा तत् शिष्योपाध्याय श्री सकलभूषणाम पठनार्थं ।

२६७१. **प्रति सं० २** । पत्र सं० २४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

विशेष—प्रति अति प्राचीन है ।

२६७२. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० २७ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२६७३. **प्रमेयरत्नमाला—अनन्तवीर्य** । पत्र सं० ७० । आ० ११×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । र० काल × । ले० काल सं० १८६१ कार्तिक बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११८० । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—परीक्षा मुख की विस्तृत टीका है ।

२६७४. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ९३ । आ० ११ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १७०४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

विशेष—उदयपुर में संभवनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी । **धर्मभूषण** के शिष्य ब्र० मोहन ने प्रतिलिपि की थी । कहीं कहीं टीका भी दी हुई है ।

२६७५. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ५३ । आ० १३×५ इञ्च । ले० काल × पूर्ण । वेष्टन सं० १३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२६७६. **प्रति सं० ४**। पत्र सं० ७५। अपूर्ण। वेष्टन सं० २२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

२६७७. **प्रति सं० ५**। पत्र सं० ३३। आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल ×। वेष्टन सं० ६८७। अपूर्ण। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर।

२६७८. **पंचपादिका विवरण—प्रकाशात्मज भगवत**। पत्र सं० १८६। आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—न्याय। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० १११। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

विशेष—पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीमत् परमहंस परिव्राजकान्यानुभव पूज्यपाद शिष्यस्य प्रकाशात्मज भगवत् कृतौ पंचपादिका विवरणे द्वितीय सूत्रं समाप्तम्।

२६७९. **भाषा परिच्छेद – विश्वनाथ पंचानन भट्टाचार्य**। पत्र सं० ७। आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—न्याय। र०काल—×। ले०काल ×। पूर्ण वेष्टन सं० ४६९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

२६८०. **महाविद्या**— ×। पत्र सं० ५। आ० १३×४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—जैन न्याय। र०काल। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४४५/५००। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

अन्तिम पुष्पिका—

इति तर्क प्रवाणीनां महाविद्याभियोगिनां।
इति विद्यातर्की·····शास्त्रं समाप्तं॥

२६८१. **रत्नावली न्यायवृत्ति—जिनहर्ष सूरि**। पत्रसं० ४७। भाषा—संस्कृत। विषय—न्याय। र०काल ×। ले०काल। पूर्ण। वेष्टन सं० ५८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—जिनहर्ष सूरि वाचक दयारत्न के शिष्य थे।

२६८२. **विदग्ध मुखमंडन—धर्मदास**। पत्र सं० १८। आ० १२×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—न्याय। र०काल—×। ले० काल सं० १७६३ माघ सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन सं० २२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

विशेष—ब्रह्म केसोदास के शिष्य ब्रह्म कृष्णदास ने प्रतिलिपि की थी।

२६८३. **प्रति सं० २**। पत्रसं० १६। आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक)

२६८४. **प्रति सं० ३**। पत्र सं० ९। आ० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल सं० १७१४ चैत बुदी ३। पूर्ण। वेष्टन सं० २०१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

२६८५. **प्रतिसं० ४**। पत्र सं० २८। आ० १२×५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—प्रति संस्कृत टिप्पण सहित है।

२६८६. प्रति सं० ५। पत्र सं० १४। आ० ११½×५½ इञ्च। ले० काल सं० १८१८ श्रावण सुदी १२। वेष्टन सं० ४६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—प्रति संस्कृत टिप्पण सहित है।

२६८७. प्रति सं० ६। पत्र सं० ५। आ० १३½×५½ इञ्च। ले०काल ×। वेष्टन सं० ६८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा संस्कृत टीका सहित है।

२६८८. विदग्ध मुखमंडन—टीकाकार शिवचन्द। पत्र सं० ११७। आ० १० × ४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३१८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

२६८९. वेदान्त संग्रह— ×। पत्र सं० ५१। आ० १२½×३½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—दर्शन। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

२६९०. षट् दर्शन— ×। पत्र सं० ४। आ० १२×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी।

२६९१. षट् दर्शन वचन— ×। पत्र सं० ६। भाषा—संस्कृत। विषय—दर्शन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १०६/४९४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

२६९२. षट् दर्शन विचार। पत्र सं० ३। आ० १०×४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—दर्शन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २१९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

२६९३. षट् दर्शन समुच्चय— ×। पत्र सं० १०। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—दर्शन। र० काल ×। ले० काल ×। वेष्टन सं० १२०४। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर।

२६९४. षट् दर्शन समुच्चय—हरिचन्द्र सूरि। पत्र सं० २८। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—दर्शन। र० काल ×। ले० काल सं० १५५८। अपूर्ण। वेष्टन सं० ८२३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—पत्र सं० १६ पर सं० १५५८ वर्षे आसोज वदि ८—ऐसा लिखा है पत्र २६ पर हेमचन्द्र कृत 'वीर द्वात्रिंशतिका' भी दी हुई है।

२६९५. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० १०५/४९९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

२६९६. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६। आ० १०×५½ इंच। ले० काल सं० १८३१ आसोज सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन सं० २१२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

२६९८. **प्रति सं० ४**। पत्र सं० ३७। आ० १२×६ इञ्च। ले० काल सं० १९०१। पूर्ण। वेष्टन सं० २४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

विशेष—सवाईमाधोपुर में नानदराम ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी। प्रति सटीक है।

२६९९. **प्रति सं० ५**। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १६३५। पूर्ण। वेष्टन सं० १०४/५०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—संवत् १६३५ वर्षे तथा शाके १४९९ प्रवर्तमाने मार्गसिर सुदी अनौ ब्र० श्री नेमिदासमिदं पुस्तकं॥

२७००. **षट् दर्शन समुच्चय टीका—राजहंस**। पत्र सं० २२-२८। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। र० काल ×। ले० काल सं० १५१० आसोज बुदी ४। अपूर्ण। वेष्टन सं० १३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर डीग।

२७०१. **षट् दर्शन समुच्चय सूत्र टीका**— ×। पत्र सं० ४५। आ० ११½×५½ इंच। **भाषा**—संस्कृत हिन्दी। र० काल ×। ले० काल सं० १८१० वैशाख बुदी। पूर्ण। वेष्टन सं० ९७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, नागदी बूंदी।

२७०२. **षट् दर्शन समुच्चय सटीक**.....। पत्र सं० ७। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० १५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—प्रति अपूर्ण है। चौथा पत्र नहीं है एवं पत्र जीर्ण है।

२७०३. **षट् दर्शन के छिनव पाखंड**— ×। पत्र सं० १। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—दर्शन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४०-१५९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

२७०४. **सप्तपदार्थी—शिवादित्य**। पत्र सं० १५। आ० १२×३½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—दर्शन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २४९। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२७०५. **प्रति सं० २**। पत्र सं० ९। आ० ९×५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ९८०। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त, मन्दिर।

२७०६. **सप्तभंगी न्याय**— ×। पत्र सं० २। आ० १२×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४५१/२६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

२७०७. **सप्तभंगी वर्णन**— ×। पत्र सं० १२। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १८२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी का मा।

२७०८. **सर्वज्ञ महात्म्य**— ×। पत्र सं० २। भाषा—संस्कृत। विषय—दर्शन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५८, ६४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर।

विशेष—देवागम स्तोत्र की व्याख्या है।

२७०९. सर्वज्ञसिद्धि । पत्रसं० २० । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५४/२६४ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२७१०. सार संग्रह—वरदराज । पत्रसं० २-१०० । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत (गद्य) । विषय—न्याय । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२७११. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ७ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—इसका दूसरा नाम तार्किक रास भी है ।

२७१२. प्रति सं० ३ । पत्रसं० ६३ । आ० ११½ × ४½ इञ्च । ले०काल सं० १६५२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२/३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२७१३. सांख्य प्रवचन सूत्र— × । पत्र सं० १४० । आ० ९½ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । र० काल × । ले० काल सं० १७९५ फागुन बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

२७१४. सांख्य सप्तति × । पत्र सं० ४ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । र० काल × । ले० काल सं० १८२१ भादवा बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २९७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—जयपुर नगर में पं० चोखचन्दजी के शिष्य पं० सुखराम ने नैणसागर के लिए प्रतिलिपि की थी ।

२७१५. सिद्धांत मुक्तावली— × । पत्र सं० ६८ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । र० काल × । ले० काल सं० १८१० भादवा बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३३७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

२७१६. स्याद्वाद मंजरी—मल्लिषेण सूरी । पत्र सं० ३९ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२७१७. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ६७ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०५/६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—प्रति प्राचीन एवं टीका सहित है ।

विषय--पुराण साहित्य

२७१८. **अजित जिनपुराण—पंडिताचार्य अरुणमणि।** पत्र सं० २१६। आ० १२½ × ५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। र० काल सं० १७१६। ले० काल सं० १७६७ वैशाख सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० सं० ४२६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—प्रति जीर्ण शीर्ण है।

२७१९. **प्रतिसं० २।** पत्र सं० ३४। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ४५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—अजितनाथ द्वितीय तीर्थंकर है। इस पुराण में उनका जीवन चरित्र विस्तृत है।

२७२०. **आदि पुराण महात्म्य**— पत्र सं० २। आ० १० × ४½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—महात्म्य वर्णन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना बूंदी।

२७२१. **आदिपुराण—जिनसेनाचार्य।** पत्र सं० ४४०। आ० १०½ × ५½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। र० काल ×। ले० काल सं० १८७२ पोष बुदी। वेष्टन सं० १४०। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२७२२. **प्रतिसं० २।** पत्र सं. ३९२। आ० १२ × ६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-पुराण। र० काल ×। ले० काल सं० १९५६ पूर्ण। वे० सं० १४४३। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

२७२३. **प्रतिसं० ३।** पत्र सं० ४८१। आ० १०¾ × ४¾ इंच। ले० काल सं० १६८१ श्रावण सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन सं० १५४३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

२७२४. **प्रतिसं० ३।** पत्र सं० ४०५। आ० १२½ × ७ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २११। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

२७२५. **प्रतिसं० ४।** पत्र सं० ७९२। आ० ११ × ६ इंच। ले० काल सं० १८८५ वैशाख सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन सं० १५६७। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

२७२६. **प्रतिसं० ५।** पत्रसं० २८८। आ० ११½ × ६ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २८३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

२७२७. **प्रति सं० ६।** पत्रसं० ७। आ० १२ × ६ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ३९/९। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

२७२८. **प्रति सं० ७।** पत्र सं० ४४३। आ० १२ × ८ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ६। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर।

२७२९. **प्रतिसं० ८।** पत्र सं० ३५१। आ० १२ × ८ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३। **प्राप्तिस्थान**—पंचायती दि० जैन मंदिर करौली।

विशेष—ले० प्रशस्ति अपूर्ण है।

चांदनगांव महावीर में गूजर के राज्य में पाण्डे सुखलाल ने प्रतिलिपि की थी।

२७२६(क) **प्रति सं० ९** । पत्र सं० ४२४ । आ० ११½×६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

२७३०. **प्रति सं० १०** । पत्र सं० ४६४ । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल सं० १६६६ फागुण सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६/२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

२७३१. **प्रति सं० ११** । पत्र सं० ६०६ । ले० काल सं० १७३० कार्तिक सुदी १३ बुधवार । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष प्रति जीर्ण शीर्ण है ।

प्रशस्ति—श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकल कीर्ति तत्पट्टे भुवनकीर्ति त० प० ज्ञानभूषण तत्पट्टे भ० विजयकीर्ति तत्पट्टे भ० शुभचन्द्र तत्पट्टे भ० सुमति कीर्ति तत्पट्टे भ० गुणकीर्ति तत्पट्टे भ० वादिभूषण तत्पट्टे भ० राजकीर्ति तत्पट्टे भ० पद्मनंदि तत्पट्टे देवेन्द्र कीर्ति तत्पट्टे क्षेमेन्द्रकीर्ति तदाम्नाये आचार्य कल्याणकीर्ति तत् शिष्य ब्रह्म श्री ५ संघजीत तत् शिष्य ब्रह्मचारि नाथाभिधाने अहमदाबाद नगरे सारिंगपुरे शीतल चैत्यालये हुबडज्ञातीय लघुशाखायां अधियागोत्रे साह श्री संघजी तत्पुत्र साह श्री सूरजी भार्या बालहबाई तयो पुत्र साह परीक्षमुन्दर भार्या सिरताबाई तयोः पुत्री द्वौ प्रथम पुत्र सामदास द्वितीय पुत्र धर्मदास एतैः स्वज्ञानावरणीय कर्मक्षयार्थं श्री बृहदादिपुराण लिखाप्य दत्तं ब्रह्मचारयकासाहायात् ।

२७३२. **प्रति सं० १२** । पत्र सं० १८७ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बड़ा पंचायती मन्दिर डीग ।

२७३३. **प्रति सं० १३** । पत्रसं० ४४२ । आ० १२ ×५ इञ्च । ले० काल सं० १७४८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—मंडावरपुर निवासी साहजी श्री ज्ञानतरायजी श्रीमाल जातीय ने इसकी प्रतिलिपि करवायी थी ।

२७३४. **प्रति सं० १४** । पत्रसं० ३६६ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले०काल सं० १७२२ चैत सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३४ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

लेखक प्रशस्ति --

श्री भुवनभूषणेन स्वहस्तेन भट्टारक श्री जगतकीर्तिजितरूपदेशात् मांगोत्रेया गर्ग्ये संवत् १७२२ मधुमासे शुक्लपक्षे षष्टी भृगुवासरे ।

२७३५. **प्रति सं० १५** । पत्रसं० ३४१ । आ० १२½×५ इञ्च । ले०काल सं० १८६१ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४ । **प्राप्ति स्थान**-- दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी

विशेष-- जयपुर में पन्नालाल सिंहका ने प्रतिलिपि करवायी थी । प्रारम्भ के १८५ पत्र दूसरी प्रति के हैं ।

२७३६. **प्रति सं० १६** । पत्रसं० ६० । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल सं० १६७६ जेठ वदि ८ । अपूर्ण । वेष्टन सं० २३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

२७३७. **प्रति सं० १७** । पत्रसं० १६६ । आ० १२×६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

२७३८. **आदिपुराण—पुष्पदंत।** पत्र सं० २३४। आ० १२×५ इञ्च। भाषा—अपभ्रंश। विषय—पुराण। र० काल × । ले० काल सं० १६३१ भादवा सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन सं० १३१। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है। मालपुरा नगर में प्रतिलिपि हुई थी। इसमें प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ का जीवन वृत्त है।

२७३९. **प्रति सं० २**। पत्र सं० २८६। आ० १२ × ५ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० २०७। **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर, अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

२७४०. **आदिपुराण**। पत्र सं० १७२। आ० ११ × ५। भाषा—संस्कृत। र० काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० १०३। **प्राप्ति स्थान**—शास्त्र भण्डार दि० जैन, मंदिर लश्कर जयपुर।

विशेष—रत्नकीर्ति के शिष्य ब्र० रत्न ने प्रतिलिपि करवाई थी।

२७४१. **आदिपुराण—भ० सकलकीर्ति**। पत्र सं० १९७। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। र० काल × । ले० काल सं० १८८० चैत सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन सं० ४६४। **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

विशेष—श्री विद्यानंदि के प्रशिष्य रूडो ने प्रतिलिपि की थी।

२७४२. **प्रति सं० २**। पत्र सं० २१८। आ० १२×५ इञ्च। ले० काल सं० १७७६। पूर्ण। वेष्टन सं० ५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक)।

विशेष—लश्करपुर (टोडारायसिंह) में पं० विजयराम ने आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी।

२७४३. **प्रति सं० ३**। पत्र सं० १८८। आ० १२×५½ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ बूंदी।

२७४४. **प्रति सं० ४**। पत्र सं० १४९। आ० १२×६ इञ्च। ले० काल—सं० १९०५ पूर्ण। वेष्टन सं० ९। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

विशेष—बूंदी में प्रतिलिपि की गई थी।

२७४५. **प्रति सं० ५**। पत्र सं० २२७। आ० १०½×५ इञ्च। ले० काल सं० १७५२। पूर्ण। वेष्टन सं० १०। **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त।

विशेष—भ० देवेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य ब्र० कल्याणसागर ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

२७४६. **प्रति सं० ६**। पत्र सं० १९७। आ० ११½×६ इञ्च। ले० काल सं. १७७९। पूर्ण। वेष्टन सं० ३३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, अभिनन्दनस्वामी, बूंदी।

विशेष—मालपुरा में प्रतिलिपि हुई थी।

२७४७ **प्रति सं० ७**। पत्र सं० १७९। आ० १० × ६ इञ्च। ले० काल सं० १९१० वैशाख बुदी १४। पूर्ण। वेष्टन सं० ११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नागदी बूंदी।

विशेष—बूंदावती में नेमिनाथ चैत्यालय में पं० चिरंजनलाल ने प्रतिलिपि की थी।

२७४८. प्रति सं० ८ । पत्रसं० २१५ । आ० १०½×६½ इंच । ले० काल सं० १८२५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर चौधरियान मालपुरा (टोंक) ।

२७४९. प्रतिसं० ९ । पत्र सं० २१४ । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल सं० १६९७ वैशाख सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति - ओं ह्रीं स्वस्ति श्री संवत् १६९७ वर्षे वैशाखमासे शुक्लपक्षे सप्तमी बुधवासरे सरूज नगरे श्री पार्श्वनाथचैत्यालये श्रीमद्दिगंबर काष्टासंघे जैत्र गच्छे भारित्रगणे भट्टारक श्री रामसेनान्वये तदनुक्रमेण भ० सोमकीर्त्ति तदनुक्रमेण भ० रत्नभूषण तत्पट्टाभरण भट्टारक जयकीर्त्ति विजयराज्ये तत् शिष्य ब्र० शिवदास तत् शिष्य पं० दशरथ लिखतं पठनार्थं । परमात्मप्रसादात् श्री गुरुप्रसादात् श्री पद्मावती प्रसादात् ।

२७५०. प्रति सं० १० । पत्रसं० १५१ । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं० २२२ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

२७५१. प्रति सं० ११ । पत्रसं० २३८ । ले० काल सं० १६७९ मंगसिर बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

२७५२. प्रति सं० १२ । पत्रसं० १-३२ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

२७५३. आदिपुराण—ब्र० जिनदास । पत्रसं० १८० । आ० १० × ५½ इञ्च । **भाषा**—राजस्थानी पद्य । विषय—पुराण । र० काल × । ले० काल × । **पूर्ण । वेष्टनसं० ३८८-१४५ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

२७५४. प्रति सं० २ । पत्रसं० १६५ । आ० ११×६½ इंच । ले०काल सं० १८८२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष सरोला ग्राम में प्रतिलिपि की गई थी ।

२७५५. आदिपुराण भाषा—पं० दौलतराम कासलीवाल । पत्र सं० ६२५ । आ० ११½×८ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी (गद्य) । विषय—प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ के जीवन का वर्णन । र०काल सं० १८२४ । ले० काल सं० १९७१ । पूर्ण । वेष्टनसं० २२५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२७५६. प्रतिसं० २ । पत्र सं० २०१ । आ० १४× ७ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १५७३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२७५७. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० १५० । आ० १०½×७½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—आगे के पत्र नहीं हैं ।

२७५८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३१५ । आ० ११×६ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

२७५९. प्रतिसं० ५ । पत्र सं० ४३ । आ० १३×७ इंच । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मंदिर उदयपुर ।

२७६०. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० ५५८ । आ० १३×७ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

२७६१. **प्रति सं० ८** । पत्र संख्या ६०१ । आ० १२ × ६½ इञ्च । लेखन काल सं० १६१६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७८-११० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटड़ियों का डूंगरपुर ।

विशेष—रतलाम में प्रतिलिपि की गई थी ।

२७६२. **प्रति सं० ९** । पत्र सं० २०४ । आ० ११½×८ इञ्च । ले० काल सं० १६४० । अपूर्ण । वेष्टन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

विशेष—६६ अध्याय तक है । मल्लिनाथ तीर्थंकर तक वर्णन है ।

२७६३ **प्रति संख्या १०** । पत्र सं० २६६-४२७ । आ० १२×६ इंच । ले० काल सं० १६१७ आषाढ सुदी ८ । अपूर्ण । वेष्ट सं० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—रामचन्द छाबड़ा ने दौसा में प्रतिलिपि की की ।

२७६४. **प्रति सं० ११** । पत्र सं० ४७३ । लेखक काल × । पूर्ण । वेष्टन संख्या ४२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि. जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

२७६५. **प्रति सं० १२** । पत्र संख्या २ से ३१८ । लेखन काल × । अपूर्ण । वेष्टन संख्या ४२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि. जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

२७६६. **प्रति सं० १३** । पत्र संख्या ५१ से ४३१ । आ० १५×६½ इंच । लेखन काल—सं० १८६६ । अपूर्ण । वेष्टन संख्या ११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पचायती टूनी (टोंक)

विशेष जयकृष्ण व्यास ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२७६७ **प्रति सं० १४** । पत्र सं० ४६६ । आ० १६×१० इंच । ले. काल सं० १६६७ पौष सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि. जैन मंदिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

२७६८. **प्रति सं० १५** । पत्र संख्या ८८८ । आ० १२×५½ इंच । ले० काल सं० १८५३ कार्तिक बुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टन संख्या २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मंदिर, मैणवा

विशेष—पत्र संख्या ७०२ से ७७५ तक नहीं हैं । ब्राह्मण लालिगराम द्वारा प्रतिलिपि की गयी थी ।

२७६९ **प्रति संख्या १६** । पत्र संख्या ५८० । आ० १३×८ इंच । ले० काल संख्या १६२२ । पूर्ण । वेष्टन संख्या १५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्री महावीर बूंदी ।

विशेष—लोभनपुर मैणवा में प्रतिलिपि हुई थी ।

२७७०. **प्रति सं० १७** । पत्र संख्या ६३० । आ०—१३ × ६½ इंच । ले० काल सं० १८६७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—सेवाराम महाड़या केशी वाले ने अपने सुत के लिये लिखवाया था ।

२७७१. **प्रति सं० १८** । पत्र संख्या ६२२ । आ० १४×६½ इंच । ले० काल सं० १६०७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—पं० सदासुख जी **अजमेरा** ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२७७२. **प्रति संख्या १९** । पत्र सं० १०१-५०७ । आ० १०×७ इंच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १९० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)

२७७३. **प्रति सं० २०** पत्र स० ६०२ । आ० १२½×५ इंच । ले० काल सं० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक)

२७७४. **प्रति सं० २१** । पत्र सं० ८२६ । आ० १०×७ इंच । ले० काल सं० १६५६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटयों का, नैणवा

२७७५. **प्रति सं० २२** । पत्र सं० ४८ से १३८ । आ० १२×६½ इंच । ले० काल × । **अपूर्ण** । वेष्टन सं० ३३ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्दरगढ़ (कोटा)

२७७६. **प्रति सं० २३** । पत्र सं० ६६२ । आ० १२½ × ६ इंच । ले०काल × । **वेष्टन सं०** २५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्दरगढ़ (कोटा)

२७७७. **प्रति सं० २४** । पत्र स० ७१६ । आ० १२×७½ इंच । ले० काल स० १६१६ माघ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती अग्रवाल मन्दिर, अलवर ।

२७७८. **प्रति सं० २५** । पत्र सं० ५१० । आ० १५×७½ इंच । ले० काल सं० १६१० वैशाख सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती अग्रवाल मंदिर, अलवर ।

विशेष—ग्रन्थ तीन वेष्टनों में है ।

२७७९. **प्रति सं० २६** । पत्र स० ५८१ । आ० १०½×६ इंच । ले० काल सं० १८७५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३५ ।

विशेष—पांडे लालचन्द ने प्रतिलिपि की थी । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मंदिर, बयाना ।

२७८०. **प्रतिसं० २७** । पत्र सं० ४५२ । आ० १२×७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर कामा ।

२७८१. **प्रति सं० २८** । पत्र सं० ८४३ । आ० १२×७½ इंच । ले० काल सं० १८६६ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर, कामा

विशेष—बीच के पत्र नहीं है ।

२७८२. **प्रति सं० २९** । पत्र सं० २२९ । आ० १३×६½ इंच । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन भन्दिर दीवानजी, कामा ।

२७८३. **प्रतिसं० ३०** । पत्र सं० ६१३ । आ० १३×६ इञ्च । ले० काल० × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

२७८४. **प्रति सं० ३१** । पत्र सं० ४८५ । आ० १२ × ७ इञ्च । ले० काल सं० १६०६ वैशाख बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मंदिर करौली ।

विशेष—करौली नगर में नानिगराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२७८५. **प्रतिसं० ३२** । पत्र सं० ७२८ । आ० १२¾ × ६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४/४ **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२७८६. **प्रतिसं० ३३** । पत्र सं० ११२३ । आ० १२×६ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

२७८७. **प्रति सं० ३४** । पत्र सं० ८८६ । आ० १५ × ७ इञ्च । ले० काल × । **पूर्ण** । वेष्टन सं० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—दो वेष्टनों में है । इसे श्री भगवानदास ने जयपुर से मंगवाया था ।

२७८८. **प्रति सं० ३५** । पत्र सं० ३१६ । आ० १३×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १६०६ मंगसिर सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—पांडे जीवनराम के पठनार्थ रामगढ़ में ब्राह्मण गोपाल ने प्रतिलिपि की थी ।

२७८९. **प्रति सं० ३६** । पत्र सं० २२३ से ४२६ । आ० १३×७ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

२७९०. **प्रति सं० ३७** । पत्र सं० ५२६ । आ० ११×६ इञ्च । ले० काल सं० १८२८ सावन बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—करौली में लिखा गया था ।

२७९१. **उत्तरपुराण**··**गुणभद्राचार्य** । पत्र सं० ४५८ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । रचनाकाल । ले० काल सं० १७०५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—भगवान आदिनाथ के पश्चात् होने वाले २३ तीर्थंकरों एवं अन्य शलाका महापुरुषों का जीवन चरित्र निबद्ध है । संवत्सरे बाणरंध्रमुनींदुमिते ।

२७९२. **प्रति सं० २** । पत्र सं० २२० । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७२४ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२७९३. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ४०६ । आ० ११ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १७५० फागुन बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११७४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है

२७९४. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० ३१३ । आ० १३×४ इञ्च । ले० काल सं० १८४६ फागुण बुदी १४ । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

विशेष—आचार्य श्री विजयकीर्ति ने बाई गुमाना के लिए प्रतिलिपि करवायी थी ।

२७९५. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० ३२५ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १७८५ आषाढ़ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौधान बूंदी ।

विशेष—बूंदी में **ज्योतिर्विद** पुष्करण राजराजा दलेलसिंह के शासनकाल में आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

२७९६. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० ३६८ । आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बून्दी ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२७९७. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० ३०० । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १८२५ प्र. सावन सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—पं० महाचन्द्र ने जीर्ण पुस्तक से शोधकर प्रतिलिपि की थी। दो प्रतियों का मिश्रण है।

२७९८. **प्रति सं० ८**। पत्र सं० ३२४। आ० १३×७ इञ्च। ले०काल सं० १६५३। **पूर्ण**। वेष्टन सं० १४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी।

२७९९. **प्रति सं० ९**। पत्रसं० २६४। आ० १२½×५½ इञ्च। ले०काल सं० १८११ भादवा बुदी ३। पूर्ण। वेष्टनसं० ३८४/२८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

२८००. **प्रतिसं० १०**। पत्रसं० ३६०। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

विशेष—कहीं २ कठिन शब्दों के अर्थ हैं।

२८०१. **प्रति सं० ११**। पत्रसं० २३१। आ० १३×६½ इंच। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १२७-५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

२८०२. **प्रति सं० १२**। पत्रसं० ११४। आ० १३×५½ इंच। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

२८०३. **प्रतिसं० १३**। पत्र सं० १६२। आ० ११ × ५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

२८०४. **प्रति सं० १४**। पत्र सं० ३४७ से ५४८। आ० ११ × ५½ इञ्च। ले० काल सं० १६४४ कार्तिक सुदी ६। अपूर्ण। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है। इसके अतिरिक्त एक प्रति और है जिसके १–१२२ तक पत्र हैं।

२८०५. **प्रति सं० १५**। पत्र सं० ४५-३००। आ० १०½×५½ इञ्च। ले० काल सं० १८४०। पूर्ण। वे० सं० २०८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)।

२८०६. **प्रतिसं १६**। पत्रसं० ४०८। आ० ११ × ४ इंच। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३०६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

२८०७. **प्रतिसं० १७**। पत्रसं० ३८४। आ० १२×४ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३१० **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

२८०८. **प्रति सं० १८**। पत्र सं० २-४५२। आ० १२×६इंच। ले० काल सं० १८३३। अपूर्ण। वेष्टन सं० ३६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

प्रशस्ति—संवत् १८३३ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे पंचम्या तिथौ भौमवासरे मालवदेशे सुरानेर नगरे पंडित आलमचन्द तत् शिष्य पं जिनदास तयोन मध्ये पं० आलमचन्देन पुस्तकं उत्तरपुराण स्वयं·····।

२८०९. **प्रतिसं० १९**। पत्रसं० २८५। आ० १४×६ इञ्च। ले० काल सं० १७८३ फागुण सुदी ५। पूर्ण। वेष्टनसं० १२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—उदयपुर में महाराणा संग्रामसिंह के शासन काल में संभवनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी।

२८१०. प्रतिसं० २० । पत्र सं० २३१ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२८ । **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । दो प्रतियों का मिश्रण है । कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुए हैं ।

२८११. प्रति सं० २१ । पत्रसं० ४६४ । ले०काल सं० १६२६ । पूर्ण । वेष्टनसं० २७३ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

२८१२. प्रति सं० २२ । पत्रसं० ११५-२२० । ले०काल १६६६ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६७० । **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

२८१३. प्रति सं० २३ । पत्रसं० ४१६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २४६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मंदिर दीवानजी भरतपुर ।

२८१४. प्रति सं० २४ । पत्रसं० ४३४ । ले०काल सं० १७२६ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२१ । **प्राप्ति स्थान**– उपरोक्त मन्दिर ।

२८१५. प्रति सं० २५ । पत्रसं० ५०१ से ५३६ । ले०काल सं० १८२२ । अपूर्ण । वेष्टन सं० २६१ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२८१६. उत्तरपुराण—पुष्पदंत । पत्र सं० ३२५ । आ० १२½×४½ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । र०काल × । ले०काल सं० १५३८ कार्तिक सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११२, ६५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

लेखक प्रशस्ति—संवत १५३८ वर्षे कार्तिक सुदी १३ आदित्यवारे अश्वनिनक्षत्रे सुलतान गयासुद्दीन राज्य प्रवर्तमाने तोडारगढस्थाने श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्द-कुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दि देवा । तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्र देवा तत् शिष्य मुनि जयनन्दि द्वितीय शिष्य मुनि श्री रत्नकीर्त्ति । मुनि जैनिन्द तत् शिष्य ब्रह्म अचलू इदं उत्तरपुराण शास्त्र आत्म हस्तेन लिखितं ज्ञानावर्णी कर्मक्षयार्थ मुनि श्री मंडलाचार्य रत्नकीर्त्ति तत् शिष्य ब्रह्म नरसिंह जोग्य पठनार्थ ।

२८१७. उत्तरपुराण – सकलकीर्त्ति । पत्रसं० १६२ । १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय- पुराण । र०काल । ले०काल सं० १८८० पौष सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बेजनदास दीवान पुरानी डोग ।

२८१८. उत्तरपुराण भाषा—शालचन्द । पत्र सं० २७१ । आ० १५×७ इञ्च । भाषा— हिन्दी (पद्य) । विषय– पुराण । र०काल सं० १७६६ । ले०काल सं० १८४६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३२ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष - जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

२८१९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१७ । आ० १५ × ४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११७ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

विशेष भगवान आदिनाथ को छोड़कर शेष तेईस तीर्थंकरों का जीवन चरित्र है ।

२८२०. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० ४८८ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले० काल सं० १८२४ पौष बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक

विशेष—राजाराम के पुत्र हठीराम ने जयपुर में बसता से प्रतिलिपि कराई थी।

२८२१. **प्रति सं० ४**। पत्र सं० २७१। आ० १४×६$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल सं० १९५० कार्तिक सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन सं० ३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मंदिर नैणवा।

२८२२. **प्रति सं० ५**। पत्र सं० ६३१। आ० ९$\frac{1}{2}$×७ इञ्च। ले० काल सं० १९५६। पूर्ण। वेष्टन सं० १३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

२८२३. **प्रतिसं० ६**। पत्रसं० ४४१। आ० १०$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल सं० १९४५। पूर्ण। वेष्टन सं० ३४। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

२८२४. **प्रति सं० ७**। पत्र सं० २०२–२५१ तक। आ० १४×६$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल सं० १८६९। अपूर्ण। वेष्टन सं० ३००। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

विशेष—प्रारम्भ के २०१ पत्र नहीं है।

२८२५. **प्रतिसं० ८**। पत्र सं० २९८। आ० ११$\frac{1}{2}$ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० २। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)।

२८२६. **प्रति सं० ९**। पत्र सं० ४९१। आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल सं० १८८२। पूर्ण। वेष्टन सं० ८३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोट्यों का नैणवा।

२८२७. **प्रति सं० १०**। पत्र सं० ३३५। आ० १२×६$\frac{1}{2}$ इंच। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ९४–२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

२८२८. **प्रति सं० ११**। पत्र सं० २६५। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डावालों का डीग।

विशेष—जीर्णोद्धार किया गया है।

२८२९. **प्रति सं० १२**। पत्र सं० ४९९। आ० १२×६ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ८३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

२८३०. **प्रति स० १३**। पत्रसं० ४१२। आ० १३ × ६ इञ्च। ले०काल सं० १८४२ माघ बुदी ५। पूर्ण। वेष्टनसं० ९४। **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

विशेष—फौजीराम सिंगल ने स्व एवं पर के पठनार्थ प्रतिलिपि करवाई।

२८३१. **प्रति सं० १४**। पत्रसं० १०५। आ० १२×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ११५। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—शान्तिनाथ पुराण तक है।

२८३२. **प्रतिसं० १५**। पत्रसं० १८८। आ० १३×६$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल सं० १८७८ श्रावण बुदी ६। पूर्ण। वेष्टनसं० २०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—पांडे सांवतसिंह जी आपमनके डेहरा में दयाचन्द से प्रतिलिपि करवाई जो दिल्ली में रहते थे।

२८३३. **प्रतिसं० १६**। पत्र सं० ३५६। आ० १३×७। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर।

२८३४. **प्रतिसं० १७** । पत्र सं० ३५४ । आ० १४×६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पंचायती मंदिर अलवर ।

२८३५. **प्रति सं० १८** । पत्रसं० २६७ । ले० काल सं० १८५३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, भरतपुर ।

विषय—कुशलसिंह कासलीवाल ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

२८३६. **प्रति सं० १९** । वेष्टनसं० ४०५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४७ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

२८३७. **उत्तरपुराण भाषा**—पन्नालाल । पत्र सं० ४८६ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय पुराण ।र०काल स० १९२० । ले० काल सं० × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्री महावीर बूंदी ।

२८३८. **करणामृत पुराण—भ० विजयकीर्ति** । पत्रसं० ८६ । आ० ९½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) विषय· पुराण । र० काल । ले०काल सं० १८२६ पौष सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०१० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

२८३९. **प्रति सं० २** । पत्रसं० २४९ । आ० ५×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** २०९ । **प्राप्ति स्थान** भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष - दूसरा नाम महादंडक करणानुयोग भी दिया है ।

२८४०. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० ३९ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ११३५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२८४१. **प्रतिसं० ४** । पत्र सं० १३१ । आ० १३×८ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१८–३१९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर ।

२८४२. **गरुडपुराण** । पत्रसं० ६५ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय--पुराण र०काल × । ले०काल सं० १८२५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौमान बूंदी ।

विशेष—दशम अध्याय तक है ।

२८४३. **गरुडपुराण** × । पत्र सं० ३२ ।आ० ११½×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३१९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

२८४४. **चौबीस तीर्थंकर भवान्तर** × । पत्रसं० २ । आ०१२½×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) विषय–पुराण । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण × । वेष्टन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक)

२८४५. **चन्द्रप्रभपुराण—भ० शुभचन्द्र** । पत्रसं० ७२ । आ० १०½×४½× इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय–पुराण । र० × । ले०काल सं० १८२६ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२ **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर, अजमेर

विशेष—आठवें तीर्थंकर चन्द्रप्रभ का जीवन चरित्र है ।

२८४६. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ६० । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ । **ले०काल** सं० १८३२ चैत्र सुदी १३ । **वेष्टन सं०** १७३ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मं० लश्कर, जयपुर ।

विशेष—सवाई जयपुर नगर में भाभूराम साहने प्रतिलिपि की थी ।

२८४७. **चन्द्रप्रभपुराण—जिनेन्द्रभूषण** । पत्र सं० २४ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-पुराण । र०काल संवत १८४१ । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर बयाना ।

विशेष—इटावा में ग्रंथ रचना की गयी थी । ग्रंथ का आदि अंत भाग निम्न प्रकार है—

प्रारंभ—चिदानंद भगवान सब शिव सुख के दातार ।
श्री चन्द्रप्रभु नाम है तिन पुराण सुख सार ॥१॥
जिनके नाम प्रताप से कहे सकल जंजाल ।
ते चन्द्रप्रभ नाथ है करौ ·····पुर पार ॥२॥

अंतिम पाठ···
मूल संघ है मैं सरस्वति गच्छ ज्यूं ।
बलात्कार गण कह्यो महाराज परलछ ज्यूं ।
आमनाय कहै बीच कुन्दकुन्द ज्यूं ।
कुन्दकुन्द मुनराज ज्ञानवर आपज्यूं ॥२७॥
भट्टारक गुणकार जगतभूषण भये ।
विश्वभूषण सुभ आप आन पूरन ठये ।
तिनके पद उद्धार देवेन्द्रभूषण कहे ।
सुरेन्द्रभूषण मुनराज भट्टारक पद लहे ।
जिनेन्द्र भूषण लघु शिष्य बुद्धिवरहीन ज्यूं ।
कह्यो पुराण सुजान पूरण पद जान ज्यूं ।
संवत ठारसौ इकतालीस सामले ।
भावन मास पवित्र पाप भक्ति की गले ॥
सुदि चौं द्वेज पुनीत चन्द्र रविवार है ।
पूरन पुण्य पुराण महा सुखदाइ है ।
शहर इटावौ भली तहां बैठक भई ।
श्रावक गुन संयुक्त बुद्धि पूरन लई ॥

इसके आगे ८ पद्य और हैं जिनमें कोई विशेष परिचय नहीं है ।

इति श्री हर्षसागरस्यात्मज भट्टारक श्री जिनेन्द्रभूषण विरचिते चन्द्रप्रभुपुराणे चन्द्रप्रभु स्वामी निर्वाण गमनो नाम षष्टम सर्गः । श्लोक सं. प्रमाण १०६१ ।

मध्य भाग—
सब रितु के फल ले आया तिन भेंट करी सुखदायी ।
राजा सुनि मनि हरषावै तब आनन्द भोर बजावै ॥२४॥

सब नगर नारि नर आये बंदन चाले सुख पाये।
चन्द्री सब परिजन लेई जिनवर चरनन चित देई ॥२५॥

२८४८. प्रतिसं० २। पत्रसं० १२½ × ७½ इञ्च । ले०काल सं० १८३३। पूर्ण। वेष्टन सं० १३६। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

२८४९. चन्द्रप्रभचरित्र भाषा—हीरालाल । पत्र सं० १८२ । आ० ११ × ५ इञ्च। **भाषा**-हिन्दी (पद्य)। **विषय**—पुराण। र०काल सं० १९०८। ले०काल सं० १९३८। पूर्ण। वेष्टन सं० ८७। **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर।

२८५०. जयपुराण—ब्र० कामराज। पत्र सं० २९। आ० ११½ × ५ इञ्च। **भाषा**-संस्कृत। **विषय**-पुराण। र०काल × । ले० काल सं० १७१३। पूर्ण। वेष्टन सं० ६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर।

प्रशस्ति-निम्न प्रकार है—

सं० १७१३ पौष सुदी २ रवौ श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्री सकलकीर्ति तदाम्नाये भ० श्री रामकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री पद्मनंदि तत्पट्टे भ० श्री देवेन्द्रकीर्ति गुरुपदेशात् गुर्जरदेशे श्री अमदाबादनगरे हुंबड ज्ञातीय गंगाड गोत्रे सा० धर्मदास भार्या धर्मदे तयो सुत सा कल्पा भार्या जसा सुत विमलादास प्रेमसी सहस्रवीर प्रतापसिंह एतैः ज्ञानावरणी क्षयार्थं आचार्य नरेन्द्रकीर्ति तत् शिष्य इल ब्र० चारी लाडवाकात्..... ब्र० कामराजाय जयपुराण लिखाप्य दत्तं।

२८५१. प्रति सं० २। पत्र सं० ८९ । ले० काल सं० १८१८ मंगसिर सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० २१२। **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—पं० बख्तराम ने प्रतिलिपि की थी।

२८५२. त्रिषष्टि स्मृति— × । पत्र सं० ३१ । आ० ११×५ इञ्च । **भाषा** - संस्कृत । विषय—पुराण। र०काल × । ले०काल सं० १६०९। पूर्ण। वेष्टन सं० ७७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६०९ वर्षे श्री मंगसिर सुदी ३ गुरुदिने श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भ० श्री सकलकीर्तिदेवा तदन्वये ब्र० श्री जिनदास तत्पट्टे ब्र० शांतिदास ब्र० श्री हंसराज ब्र० श्री राजपालस्तल्लिखाय कर्मक्षयार्थं निमित्तं।

२८५३. त्रिषष्टिशलाका पुरुषचरित्र—हेमचन्द्राचार्य। पत्रसं० ६६। आ० १४×४ इञ्च। **भाषा**—संस्कृत। विषय—पुराण। र०काल × । ले०काल—सं० १४६४ चैत्र मास। पूर्ण। वेष्टन सं० १२३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा।

२८५४. त्रेसठशलाका पुरुष वर्णन— × । पत्रसं० ७ । आ० १०×४ इञ्च। **भाषा**-हिन्दी। विषय—पुराण। र०काल × । ले०काल—× । पूर्ण। वेष्टन सं० २२९। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—इसमें त्रेसठशलाका पुरुषों का अर्थात् २४ तीर्थंकर ९ नारायण, ९ प्रतिनारायण, ९ बलभद्र एवं १२ चक्रवर्तियों का जीवन चरित्र वर्णित है।

२८५५. **नेमिपुराण भाषा—भागचंद**। पत्रसं० १८२। आ० १२×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य। विषय-पुराण। रचना काल सं० १९०७। ले०काल—सं० १९१४। पूर्ण। वेष्टन सं० ९९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर, बूंदी।

२८५६. **प्रतिसं० २**। पत्र सं० १६०। आ० १३½×७ इञ्च। ले० काल सं० १९६१। पूर्ण। वेष्टन सं० ८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

विशेष—चंदेशी में लिखा गया था। नेमीश्वर के मंदिर में छोटेलाल पन्नालाल जी गढ़वाल वालों ने चढ़ाया था।

२८५७. **प्रति सं० ३**। पत्र सं० १७०। आ० १½×७½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

२८५८. **नेमिनाथ पुराण—ब्र० नेमिदत्त**। पत्रसं० २६८। आ० १०¾×४½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। र०काल ×। ले०काल सं० १६४५ चैत बुदी ७। पूर्ण। वेष्टनसं० ६३५। **प्राप्ति स्थान**—ब० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—इसका दूसरा नाम नेमिनाथ चरित्र है।

२८५९. **प्रति सं० २**। पत्रसं० ९२। आ० ११ × ५ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २९७। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

२८६०. **प्रति सं० ३**। पत्रसं० २२४। आ० १०½ × ४½ इंच। ले०काल सं० १८३०। पूर्ण। वेष्टनसं० ३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)।

विशेष—प्रति जीर्ण है। प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १८३० ना वर्षे द्वितिय चैत्र मासे शुक्ल पक्षे श्री वाग्वर देशे पुलिंदपुर मध्ये श्री शांतिनाथ चैत्यालये। भट्टारक श्री ५ रत्नचन्द्र जी तत्पट्टे भट्टारक श्री ५ देवेन्द्र जी तत्पट्टे भट्टारक जी श्री १०८ श्री धर्मचन्द्र जी तत्सिष्य ब्रह्ममेधजी स्वयं हस्तेन लिपि कृतं।

२८६१. **प्रतिसं० ४**। पत्र सं० २-२२०। आ० ९½×४½ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी।

२८६२. **प्रतिसं० ५**। पत्रसं० १६४। आ० १०½×७ इञ्च। ले० काल सं० १९२४ पौष बुदी ८। पूर्ण। वेष्टन सं० २०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी।

विशेष—शिवलाल जी का चेला विरदीचंद ने प्रतिलिपि की थी। यह प्रति जो जोबनेर में लिखी गई सं० १६६९ वाली प्रति से लिखी गई थी।

२८६३. **प्रति सं० ५ क**। पत्र सं० १२४। आ० १०½ × ५½ इञ्च। ले० काल० सं० १७९६ आषाढ़ बुदी ९। पूर्ण। वेष्टन सं० १३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

विशेष—रत्नविमल के प्रशिष्य एवं मुक्तविमल के शिष्य धर्मविमल ने प्रतिलिपि की थी।

२८६४. **प्रतिसं० ६**। पत्रसं० १३५। आ० १२½×६¾ इञ्च। ले०काल सं० १९७३। पूर्ण। वेष्टन सं० १८१-७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर।

२८६५. प्रतिसं० ७। पत्र सं० २४२ । **आ०** १० × ४½ इञ्च । ले०काल × । **अपूर्ण।** वेष्टन सं० १६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर बैर ।

२८६६. प्रतिसं० ८। पत्र सं० १४३ । आ० ११×४½ इञ्च । ले० काल × । **पूर्ण।** वेष्टन सं० २१४ । **प्राप्ति-स्थान**--दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२८६७. प्रतिसं० ९। पत्रसं० २४३ । ले०कालसं० १६४६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १ । **प्राप्ति स्थान**—दिगम्बर जैन पंचायती मन्दिर डीग ।

२८६८. प्रतिसं० १०। पत्र सं० १५५ । आ० १२½ × ६ इंच । ले०काल सं० १८१७ द्वि. चैत सुदी १५ । वेष्टन सं० १७-१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

विशेष—लालचंद के पुत्र खुशालचन्द ने करौली में प्रतिलिपि की थी ।

२८६९. प्रतिसं० ११। पत्र सं १३८ । ले०काल सं० १६१४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

२८७०. प्रति सं० १२। पत्रसं० ८६ । आ० १३×६½ इंच । ले०काल सं० १८६६ । पूर्ण । वेष्टनसं० २७२-१०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

२८७१. पद्मचरित टिप्पण—श्रीचन्द मुनि । पत्रसं० २८ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । र० काल × । ले०काल सं० १५११ चैत्र सुदी ११ । वेष्टन सं० १०२ । दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

लेखक प्रशस्ति—संवत् १५११ वर्षे चैत्र सुदी २ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत् पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्र देवा भट्टारक श्री पद्मनन्दि शिष्य मुनि मदनकीर्त्ति तत् शिष्य ब्रह्म नरसिंघ निमित्तं खण्डेलवालान्वये नायक गोत्रे साह उधर तस्य भार्या उदयश्री तयो पुत्र मालहा सोढ़ा डालू इदं शास्त्रं कर्म्मक्षय निमित्तं ।

२८७२. पद्मनाभ पुराण—भ० शुभचन्द्र । पत्रसं० ११० । आ० १२ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय पुराण । र० काल × । ले०काल × । **वेष्टनसं० १८७ । प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रारम्भ के ६५ पत्र नवीन लिखे हुए हैं ।

२८७३. प्रति सं० २। पत्रसं० ७१ । आ० ११½ × ५ इञ्च । ले०काल सं० १६५४ आसोज सुदी ९ । वेष्टनसं० १८८ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—भट्टारक अमरकीर्त्ति के शिष्य ब्र० जिनदास, पं० शान्तिदास आदि ने प्रतिलिपि की थी ।

२८७४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०७ । आ० १०½ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १८२६ आसोज सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० १९७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी) ।

२८७५. पद्मपुराण—रविषेणाचार्य । पत्रसं० ७१२ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । र० काल × । ले० काल सं० १९७७ सावण बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ४०९ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—संवत् १६७७ वर्षे शाके १५४२ प्रवर्त्तमाने श्रावण बुदी ६ शुक्रवारे उत्तरानक्षत्रे प्रतिगतनामजोगे महाराजाधिराज रावश्री भावसिंह प्रतापे लिखतं जोसी अलाबक्स बुंदिवाल अम्बावती मध्ये ।

२८७६. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ४६० । आ० ११½×५½ इञ्च । ले०काल सं० १८७६ पौष बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०५६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२८७७. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० ५१२ । आ० १२×५½ इंच । ले०काल सं० १८८३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती टूनी (टोंक) ।

विशेष—पंडित शिवजीराम ने लिखा था ।

२८७८. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० ५६० । आ० ११½×५½ इञ्च । ले०काल सं० १८०३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८७/८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ ।

विशेष—रामपुर में प्रतिलिपि की गई थी ।

२८७९. **प्रतिसं० ५** । पत्रसं० २८६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

विशेष—अशुद्ध प्रति है ।

२८८०. **प्रति सं० ६** । पत्रसं० ३४६ । आ० १०×५½ इञ्च । ले० काल सं० १८१० कार्तिक सुदी १० । अपूर्ण । वेष्टन सं० १५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

२८८१. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० ५७३ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

२८८२. **प्रतिसं० ८** । पत्रसं० ७–४८३ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल सं० १५९२ । अपूर्ण । वेष्टनसं० १७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५९२ वर्षे कार्तिक सुदी ९ बुधे अद्येह गोरिलि ग्रामे पं० नसा सुत देपा भ्रातृ भीकम लिखितं ।

२८८३. **पद्मपुराण—ब्र० जिनदास** । पत्रसं० ४४३ । आ० १२½×६½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १११९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर, अजमेर ।

२८८४. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ५३५ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल सं० १८७१ ज्वार सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती टूनी (टोंक)

२८८५. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० २८८ । आ० १२×६ इंच । ले०काल सं० × । अपूर्ण **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्दरगढ़ (कोटा)

विशेष—संस्कृत में संकेतार्थ दिये हैं । सं०१७३६ में भट्टारक श्री महरचन्द्र जी को यह ग्रन्थ भेंट किया गया था ।

२८८६. **पद्मपुराण—भ०धर्मकीर्ति।** पत्र सं० ३२६। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—**पुराण**। र० काल-×। ले०काल सं० १७१५। पूर्ण। वेष्टन सं०२७०। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

प्रशस्ति—संवत् १७१५ वर्षे भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे पंचम्यां तिथौ गुरुवासरे श्री सिरोज नगरे श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालये श्री .... ।

२८८७. **पद्मपुराण—भ० सोमसेन।** सं० २८२। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। **विशेष**- पुराण। र० काल। ले० काल×। पूर्ण। वेष्टन सं० १५३२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर

२८८८. **प्रति सं० २।** पत्रसं० २७६। ले० काल×। पूर्ण। वेष्टन सं० २२८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर, भरतपुर।

विशेष:—जयपुर में प्रतिलिपि की गई थी।

२८८९. **प्रति सं० ३।** पत्र सं० ३०६। आ० १०×६ इञ्च। ले० काल सं० १८६८ माघ सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० १७०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, राजमहल।

विशेष—राजमहल नगर में पं० जयचंद जी ने लिखवाया तथा बिहारीलाल शर्मा ने प्रतिलिपि की थी।

२८९०. **पद्मपुराण भाषा**—दौलतराम कासलीवाल पत्र सं० १९६। आ० १३×८ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—पुराण। र० काल सं० १८२३ माघ सुदी ६। ले०काल×। अपूर्ण। वेष्टन सं० १४४२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२८९१. **प्रति सं० २।** पत्र सं० ६४५। आ० १२×५⅝ इञ्च। ले०काल सं० १८९० ज्येष्ठ बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं०१७६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

२८९२. **प्रति सं० ३।** पत्रसं० ६४३। ले०काल सं० १९३१। पूर्ण। वेष्टनसं०। २६३। **प्राप्ति स्थान** भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२८९३. **प्रति सं० ४।** पत्रसं० १-२७५। आ० ११×७इञ्च। ले०काल×। अपूर्ण। वेष्टनसं० ५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)।

विशेष—२७५ से आगे पत्र में नहीं है।

२८९४. **प्रतिसं० ५।** पत्रसं० ७३७। आ० १३×८ इञ्च। ले०काल सं० १९५५ कार्तिक सुदी ११। पूर्ण। वेष्टनसं० १। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर आवां (उणियारा)

विशेष—पं० रामदयाल ने चंदेरी में प्रतिलिपि की थी।

२८९५. **प्रतिसं० ६।** पत्रसं० ३९०। आ० ९½×९½ इञ्च। ले० कालसं० १८४६। चैत सुदी ११ पूर्ण। वेष्टनसं० १२५। ×। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा।

२८९६. **प्रतिसं० ७।** आ० १४×७½ इञ्च। ले० काल सं० १८७८। **पूर्ण**। वेष्टन सं० ८७-७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा।

विशेष—चिमनराम तेरहपंथी ने प्रतिलिपि की थी।

२८९७. **प्रति सं० ९** । पत्रसं० २२४–५२१ । आ० १३×७ इञ्च । ले० काल सं० × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ८१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर भादवा (राज०)

२८९८. **प्रति सं० १०** । पत्र सं० ६०७ । आ० ११×७½ इन्च । ले० सं० १९१५ । पूर्ण । वे० काल सं० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—दो वेष्टनों में है ।

२८९९. **प्रति सं० ११** । पत्र सं० ६३८ । आ० १२×६½ इञ्च । **ले०काल सं०** १९२९ ज्येष्ठ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—दो वेष्टनों में है ।

२९००. **प्रतिसं० १२** । पत्रसं० ९२८ । आ० ११ ×८ इञ्च । ले०काल × ।पूर्ण । वेष्टन सं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

२९०१. **प्रतिसं० १३** । पत्रसं० २४० । आ० ११ ×८ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण ।वेष्टनसं० ८९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

२९०२. **प्रति सं० १४** । पत्र सं० ५३७ । आ० १२½×६½ इञ्च । ले०काल × । **पूर्ण** । वेष्टन सं० १७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मंदिर उदयपुर ।

२९०३. **प्रति सं० १५** । पत्र सं० ७४७ । आ० १०×७½ इञ्च । ले० काल सं० १८५३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०१/८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कांटडियों का डूंगरपुर ।

२९०४. **प्रति सं० १६** । पत्रसं० ५२८ । आ० १०½×७ इञ्च । ले०काल सं० १८५१ । पूर्ण । वेष्टनसं० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२९०५. **प्रतिसं० १७** । पत्रसं० ४५६ । आ० १०½×०½ इंच । ले० काल सं० १८५४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—सं० १८५४ पौष सुदी १३ महाराजाधिराज श्री सवाई प्रतापसिंहजीराज्ये सवाईजयनगरमध्ये लिखापितं साहु श्री मानजीदासजी बाकलीवाल तत् पुत्र कंवर मनसाराम जी चिमनरामजी सेवारामजी नोनधराम जी मनोरथरामजी परमार्थ शुभं भुयात् ।

लिखित सवाईराम गोधा सवाईजयनगरमध्ये अंबावती बाजार मध्ये पाटोदी देहुरे आदि चैत्यालये यतीजी श्री कृष्णसागरजी के जायगा लिखी ।

२९०६. **प्रतिसं० १८** । पत्र संख्या ४७ । आ० १०×९ इंच । ले०काल सं०१८२३ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७४ ।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

२९०७. **प्रति सं० १९** । पत्र सं० ५९९ । आ० १२ × ९ इञ्च । ले० काल सं० १९४३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३।९ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती दूनी (टोंक)

विशेष—ऋषि हेमराज नागौरी गच्छवाले ने प्रतिलिपि की थी ।

२९०८. **प्रतिसं० २०** । पत्रसं० १५२ । आ० ११×८ इञ्च । ले० काल सं० × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४१।२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पंचायती दूनी (टोंक)

२६०६. **प्रति सं० २१** पत्र सं० ४४६ । आ० १४×६½ इंच । ले० काल सं० १६५६ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर, नैणवा

२६१०. **प्रतिसं० २२** । पत्रसं० ६०८ । आ० १३×७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण वेष्टन सं० १३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्री महावीर बूंदी ।

२६११. **प्रतिसं० २३** । पत्रसं० ५०५ ।आ० १३×८ इंच । ले० काल सं० १६५६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

२६१२. **प्रतिसं० २४ (क)** । पत्र संख्या ३२४ से ५१६ । आ० १३ × ७ इंच । ले० काल सं० १८६२ । अपूर्ण । वेष्टन सं० २४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष –शेष पत्र अभिनन्दन जी के मंदिर में है । सवाईमाधोपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

२६१३. **प्रति सं० २४** । पत्र सं० २–३२३ । आ० १३×७ इञ्च । अपूर्ण । ले० काल × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष––पत्र १ तथा ३२४ से अन्तिम पत्र तक पार्श्वनाथ दि० जैन मंदिर में हैं ।

२६१४. **प्रति सं० २५** । पत्रसं० ८२८ । आ० ११½ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १८८७ आषाढ बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मंदिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक) ।

२६१५. **प्रति सं० २६** । पत्रसं० ६१३ । आ० १२½×६½ इञ्च । ले०काल० सं०× चैत्र बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १०१—१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—शांतिनाथ चैत्यालय में लिखा गया था ।

२६१६. **प्रतिसं० २७** । पत्र सं० ६०६ । आ० १३ × ७ इञ्च । ले० काल सं० १८३३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६५/७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर, इन्दरगढ़ (कोटा))

२६१७. **प्रति सं० २८** । पत्रसं० ७२ । आ० १२ × ७ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्दरगढ़ (कोटा)

२६१८. **प्रति सं० २६** । पत्रसं० ६५३ । आ० ११½×६ इञ्च । ले०काल सं० १८६६ वैशाख सुदी १० । वेष्टन सं० १०१ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—गुलाबचंद पाटोदी से सवाई माधोपुर में प्रतिलिपि कराई थी ।

२६१६. **प्रतिसं० ३०** । पत्र सं० ५०८ । आ० १५ × ७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ११० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

२६२०. **प्रति सं० ३१** । पत्र सं० ४५० । आ० १५ × ८ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खण्डेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

२६२१. **प्रति सं० ३२** । पत्रसं० ५८२ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर ।

२६२२. **प्रति सं० ३३** । पत्र सं० ६७१ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२९२३. **प्रति सं० ३४** । पत्र सं० ५५१ । लेखन काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १/६० **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पञ्चायती मंदिर अलवर ।

२९२४. **प्रति सं० ३५** । पत्र सं० ५५१ । आ० ११ × ८ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मंदिर अलवर ।

२९२५. **प्रतिसं० ३६** । पत्र सं० ५१४ । आ० १३½×८ इञ्च । ले० काल सं० १९५६ फागुन बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मंदिर अलवर ।

विशेष -- अलवर में लिखा गया था ।

२९२६. **प्रतिसं० ३६ (क)** । पत्र सं० ८४९ । आ० १०×७ इञ्च । ले० काल सं० १८७२ कार्तिक सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं ३५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२९२७. **प्रति सं० ३७** । पत्रसं० ५३६ । ले०काल सं० १८६३ माघ शुक्ला ५ । **पूर्ण** । वेष्टन सं० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी, भरतपुर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

२९२८. **प्रतिसं० ३८** । पत्रसं० २०१ । ले०काल × । **अपूर्ण** । **वेष्टन सं० १५७** । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—आगे के पत्र नहीं हैं तथा जीर्ण है ।

२९२९. **प्रतिसं० ३९** । पत्र सं० ३०१ से ४८१ । ले० काल × । **अपूर्ण** । **वेष्टन सं० १६३** । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२९३०. **प्रतिसं० ४०** । पत्र सं० ५९५ । ले० काल सं० १८६३ । **पूर्ण** । **वेष्टन सं० १८०** । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२९३१. **प्रति सं० ४१** । पत्र सं० २४३ । ले० काल ×। **अपूर्ण** । **वेष्टन सं० १८२** । **प्राप्ति स्थान** उपरोक्त मंदिर ।

२९३२. **प्रतिसं० ४२** । पत्र सं० ४४१ । ले० काल × । **पूर्ण** । **वेष्टन सं० १८३** । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर ।

२९३३. **प्रतिसं० ४३** । पत्र सं० २११-२४४ । आ० १४½×६ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

२९३४. **प्रति सं० ४४** । पत्र सं० ४७६ । आ० १३ × ८ इञ्च । ले० काल सं० १९२९ माघ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर, बयाना ।

२९३५. **प्रति सं० ४५** । पत्र सं० ५८१ । आ० १४×६ इञ्च । ले० काल सं० १८८२ । **पूर्ण** । वेष्टन सं० ७४ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पंचायती मंदिर बयाना ।

विशेष—जती खुशाल ने बयाना में ग्रंथ की प्रतिलिपि की थी ।

२९३६. **प्रति सं० ४५ (क)** । पत्र सं० ५१६ । आ० १४×६ इञ्च । ले० काल सं० १८४९ मंगसिर बुदी १० । पूर्ण । वेस्टन सं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर ।

विशेष—बैर में प्रतिलिपि हुई थी ।

२६३७. **प्रति सं० ४६** । पत्रसं० ७६७ । आ० १३ × ७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

२६३८. **प्रति सं० ४७** । पत्रसं० ४३८ । आ० १५ × ८ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं०—३५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२६३९. **प्रति सं० ४८** । पत्रसं० ७२७ । ले० काल सं० १८२६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डाबालों का डीग ।

२६४०. **प्रति सं० ४६** । पत्रसं० ३०१ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

२६४१. **प्रति सं० ५०** । पत्रसं० ३६४ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ७२ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डाबालों का डीग ।

२६४२. **प्रति सं० ५१** । पत्र सं० ४–१०५ । आ० १४×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

२६४३. **प्रति सं० ५२** । पत्रसं० ३२२ से ७०६ । आ० १३ × ५$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

२६४४. **प्रति सं० ५३** । पत्रसं० ३२१ । आ० १३×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

२६४५. **प्रति सं० ५४** । पत्र सं० ७४४ । आ० १२ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल—**सं० १६५८** ज्येष्ठ सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—अजमेर वालों के चौबारे जयपुर में लिखा गया था ।

२६४६. **प्रतिसं० ५५** । पत्र सं० ५२८ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल सं० १६५५ आषाढ़ सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं०२१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सोगाणी मन्दिर करौली ।

विशेष—छीतरमल सोगाणी ने प्रतिलिपि की थी ।

२६४७. **प्रतिसं० ५६** । पत्र सं० ६३६ । ले०काल सं० १८३५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

२६४८. **प्रति सं० ५७** । पत्रसं० ५२३ । आ० १४$\frac{1}{2}$×७ इञ्च । ले०काल सं० १८८२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है ।

२६४६. **पद्मपुराण—खुशालचन्द काला** । पत्रसं० २६१ । आ० १२ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी (पद्य) । विषय—पुराण । र० काल सं० १७८३ पौष सुदी १० । ले०काल सं० १८४६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७४२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२६५०. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ३४० । आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १८४१ । सं० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोट्यों का नैणवा ।

विशेष—अर्खैराम ब्राह्मण ने नैणवा में प्रतिलिपि की थी।

२६५१. प्रतिसं० ३। पत्र सं० २७२। आ० १३ × × ६$\frac{3}{4}$ इञ्च। ले० काल सं० १६०४। अपूर्ण। वेष्टन सं० २८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा।

२६५२. प्रतिसं० ४। पत्र सं० २१६। आ० १२×७$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल सं० १८५१ श्रावण बुदी ८। पूर्ण। वेष्टन सं० २०१। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—श्रीमन् श्री विजयगच्छे श्रीपूजि श्री १०८ श्री विद्यासागर सूरि जी तत् शिस्य ऋषिजी श्री चतुर्भुज जी त० सि० ऋषिजी श्री सावल जी तत्पट्टे ऋषिजी श्री ५ रूपचंद जी त० शिष्य रिखव, बखतराम लखतं नानता ग्राम मध्ये राज्य श्री ५ जालिमसिंह राज्ये। कंवर जी श्री नातालाल माधोसिंह जी श्रीरस्तु।

२६५३. प्रतिसं० ५। पत्र सं० २५५। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डावालों का डीग।

विशेष—प्रति जीर्ण है।

२६५४. प्रति सं० ६। पत्रसं० २३८। आ० १२×६ इंच। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ८८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर डीबान चेतनदास पुरानी डीग।

विशेष—२२६ से २३८ तक के पत्र लम्बे हैं।

२६५५. प्रति सं० ७। पत्र सं० ४२१। आ० ११ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल सं० १६७६ सावन सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन सं० १८/७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मंदिर अलवर।

२६५६. प्रति सं० ८। पत्र सं० १८५। आ० ११$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल सं० १८७७। पूर्ण। वेष्टन सं० ८३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर तेरहपंथी दौसा।

विशेष—तेरापंथी चिमनलाल ने प्रतिलिपि की थी।

२६५७. प्रति सं० ९। पत्र सं० ३२४। आ० १२$\frac{1}{2}$ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल सं० १७८८ आषाढ़ सुदी १। पूर्ण। वे० सं० १०८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर तेरहपंथी दौसा।

विशेष—दौसा में प्रतिलिपि हुई थी।

२६५८. प्रति सं० १०। पत्र सं० २६४। आ० १३ × ६ इञ्च। ले० काल सं० १७९२ सावण सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० ८०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना।

विशेष—हिरदैराम ने ग्रंथ की प्रतिलिपि करवायी थी।

२६५९. प्रति सं० ११। पत्र सं० २९२। आ० १२$\frac{1}{2}$ × ६ इञ्च। ले०काल सं० १८२४ वैशाख बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० ४९४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—माधोसिंह के शासन काल में नाथूराम पोल्याका ने प्रतिलिपि की थी।

२६६०. प्रति सं० १२। पत्र सं० ३४८। ले०काल सं० १८००। पूर्ण। वेष्टन सं० १७९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

२६६१. पाण्डवपुराण—श्री भूषण (शिष्य विद्याभूषण सूरि)। पत्र संख्या ३०८। आ० १० × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। र० काल सं० १५०७। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्न सं० २५। **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२९६२. **प्रति सं० २** । पत्र सं० २५२ । आ० १२×६ इंच । ले० काल सं० १८५४ चैत्र बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्द्रगढ़ (कोटा) ।

२९६३. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० २९८ । ले० काल सं० १६९८ मंगसिर सुदी । वेष्टन सं० २२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—ब्रह्म शामलाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

२९६४. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० ११५ । आ० १२×५ इन्च । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—बीच २ के पत्र नहीं है । प्रत्येक पत्र में ११ पंक्तियां एवं प्रत्येक पंक्ति में ४५ अक्षर है ।

उक्त ग्रंथ के अतिरिक्त भट्टारक सकलकीर्ति द्वारा विरचित वृषभनाथ चरित्र एवं गुणभद्राचार्य कृत उत्तर पुराण के त्रुटित पत्र भी हैं ।

२९६५. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० २२६ । आ० १२×४½ इन्च । ले० काल सं० १७३२ मंगसिर बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—मनोहर ने नैणवा ग्राम में प्रतिलिपि की थी ।

२९६६. **पाण्डवपुराण—भ० शुभचन्द्र** । पत्र सं० ४१५ । आ० ११ × ४½ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । र० काल सं० १६०८ । ले० काल सं० १७०४ चैत्र सुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष - खण्डेलवालगोत्रीय श्री खेतसी द्वारा गोवर्धनदास विजय राज्य में प्रतिलिपि की गयी थी ।

२९६७. **प्रति सं० २** । पत्र सं० २०४ । आ० ११½×६½ इन्च । ले० काल सं० १८६६ भादवा सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष - माधवपुर नगर के कर्वटाक्षपुर में श्री महाराज जगतसिंह के शासन में भ० श्री क्षेमेन्द्रकीर्ति के शिष्य श्री सुरेन्द्रकीर्ति तत्पट्टे सुखेन्द्रकीर्ति तदाम्नाये साह मलूकचन्द लुहाड़िया के वंश में किशनदास के पुत्र विजयराम शंभुराम मेघराज । शम्भुराम के पुत्र दो—नोनदराम पन्नालाल । नोनदराम ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

यह प्रति बूंदी के छोगालाल जी के मन्दिर की है ।

२९६८. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० २२० । आ० १२×६ इन्च । ले० काल सं० १६७७ माघ शुक्ला २ । पूर्ण । वेष्टन सं० २११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बून्दी ।

प्रशस्ति संवत् १६७७ वर्षे माघ मासे शुक्लपक्षे द्वितीया तिथौ अम्बावती वास्तव्ये श्री महाराजा भावसिंघ राज्य प्रवर्तमाने श्री मूलसंघे ..... भ० श्री देवेन्द्रकीर्तिदेवा तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये भौंसा गोत्रे सा० ऊदा भार्या लुदलदे..... । प्रशस्ति पूर्ण नहीं है ।

२९६९. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० २४८ । आ० १५×५इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६ । **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी ।

२९७०. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० २०१ । आ० १०½×४½ इन्च । ले० काल सं० १९३६ । अपूर्ण । । वेष्टन सं० ९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—वृन्दावती नगर में पं० रोवाराम ने लिखा। १–९५ तक के पत्र दूसरी प्रति के हैं। ९६ से १८४ तक पत्र नहीं हैं।

२९७१. प्रतिसं० ६। पत्रसं० १३६। आ०१०½×६ इञ्च। ले०काल सं० १८३४ आषाढ़ सुदी ७। पूर्ण। वेष्टनसं० ९८-२७। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोंडारायसिंह (टोंक)

विशेष—चम्पावती नगरी में श्री वृंदावन के शिष्य सीताराम ने इसको लिखा था।

२९७२. प्रतिसं० ७। पत्रसं० १५९। आ० १२×५ इंच। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ३१। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

२९७३. प्रतिसं० ८। पत्रसं० २४७। ले० काल सं० १६९७। पूर्ण। वेष्टनसं० २८/२०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रति जीर्ण है।

प्रशस्ति—संवत् १६९७ वर्षे श्री शालिवाहन शाके १५६२ प्रवर्त्तमाने मार्गशिर सीताद् ५ रविवासरे श्रीमालवदेशे श्रीउदयपुरनगरे श्रीशांतिनाथचैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे आचार्य श्री कुन्दकुन्दान्वये भट्टारकश्रीपद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भ० सकलकीर्त्तिदेवा त० भ० श्रीभुवनकीर्त्तिदेवा तत्पट्ट आचार्य श्री ज्ञानकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भ० गुणकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ. श्रीसकलचन्द्रदेवा त. भ. श्री रत्नचन्द्रदेवा त. भ. श्री हर्षचन्द्रदेवा तस्य आम्नाये श्रीकपूरात् शिष्य श्रीसूरजी बघेरवाल ज्ञातीय षटोडगोत्रे सेनगणि साह श्रीराघो तद्भार्या गोजाई पुत्र सहु ठोला गोत्रे साह श्री धाउ तद्भार्या गंगाई तयो पुत्र साह श्री पल्हा भार्या गोरा·····साह श्री आया हरसोरा गोत्रे साह श्री गांगु तद्भार्या चंगाई तयो पुत्र साह श्री····· एतेषां मध्ये·····इदं शास्त्रं श्री सूरजीनी लिखाप्य दत्तं।

पुनः संवत् १७१२ की प्रशस्ति दी है। संभवतः दुबारा यही ग्रंथ फिर किसी के द्वारा मंडलाचार्य सुमतिकीर्त्ति को भेंट किया गया था।

२९७४. प्रतिसं० ९। पत्र सं० ३५०। आ० १०⅜×४½ इञ्च। ले० काल × । वेष्टन सं० १९१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

२९७५. पांडवपुराण—यशःकीर्त्ति। पत्रसं० २०–११०, २०५–२४९। आ० १२×५इञ्च। भाषा—अपभ्रंश। विषय—पुराण। र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० २६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दीसा।

विशेष- प्रति प्राचीन एवं जीर्ण है।

२९७६. पाण्डवपुराण—ब्र० जिनदास। पत्र सं० ५३१। आ० १३×६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-पुराण। र०काल × । ले० काल सं० १५२८ मंगसिर सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० १६०९। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

विशेष—प्रशस्ति महत्वपूर्ण है।

२९७७. पाण्डवपुराण—देवप्रभसूरि। पत्र सं० ४९ से २६१। आ० ९½×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ११२१। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२६७८. **पाण्डव पुराण** – × । पत्रसं० १७६ । आ० ११×४½ इंच । **भाषा**—संस्कृत । विषय—पुराण । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३४१ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मंदिर अजमेर ।

२६७६. **पाण्डव पुराण**— × । पत्रसं० १०१ । आ० ११×८ इंच । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–पुराण । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६३१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२६८०. **पाण्डवपुराण—बुलाकीदास** । पत्रस० १६२ । आ० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पुराण । र० काल सं० १७५४ आषाढ़ सुदी २ । ले०काल सं० १६४४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५७७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२६८१. **प्रतिसं० २** । पत्रस० २०४ । आ० १०½×४½ इंच । ले०काल सं० १८७६ । **पूर्ण** । वेष्टन सं० २१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२६८२. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० २१६ । आ० १३×७ इंच । ले०काल सं० १६२५ । **पूर्ण** । वेष्टन सं० ८३–१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती दूनी (टोंक)

विशेष—सदासुख वैद्य ने दूनी में प्रतिलिपि की थी ।

२६८३. **प्रतिसं० ४** । पत्र सं० २४५ । आ० १०×५½ इंच । ले० काल सं० १६१७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

२६८४. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० १८२ । आ० ११×७½ इंच । ले० काल सं० १६४६ चैत बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—हीरालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

२६८५. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० २२६ । आ० १२×५½ इंच । ले० काल सं० १८४१ । पूर्ण । वेष्टन सं ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा

२६८६. **प्रतिसं० ७** । पत्रसं० २६८ । आ० ११×५½ इंच । ले०काल सं० १८४१ । आषाढ बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोठ्यो का नैणवा ।

विशेष – अखैराम ने नैणवा में प्रतिलिपि की थी ।

२६८७. **प्रतिसं० ८** । पत्र सं० ३७७ । आ० १५×७½ इंच । ले० काल सं० १८६६ भादवा सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मंदिर अलवर

२६८८. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० २३८ । ले० काल सं० १७८३ आसोज बदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

२६८६. **प्रति सं० १०** । पत्र सं० १४७ । आ० १२½ × ७½ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

२९९०. **प्रति सं० ११** । पत्र सं० १८६ । आ० १४ × ७$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल १९६३ वैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी (कामा)

२९९१. **प्रतिसं० १२** । पत्र सं० २–९५ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८१/१ । **प्राप्ति स्थान** -- दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास, पुरानीडीग

२९९२. **प्रतिसं० १३** । पत्र सं० १६१ । आ० । ११ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—अन्तिम दो पत्र आधे फटे हुये है ।

२९९३. **प्रतिसं० १४** । पत्र सं० २६० । आ० १२ × ६$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन सोगाणी मन्दिर करौली ।

२९९४. **प्रतिसं० १५** । पत्र सं० २३२ । आ० १३ × ६ इञ्च । ले० काल सं० १८६६ आसोज बुदी ६। पूर्ण । वेष्टन सं० १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—पन्नालाल भाट ने प्रतिलिपि की थी ।

२९९५. **प्रतिसं० १६** । पत्र सं० १९५ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल० सं० १८११ शाके १६७६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

२९९६. **प्रतिसं० १७** । पत्र सं० २४२ । आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इंच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भाडवा (राज०)

विशेष —अन्तिम दो पत्र नहीं है ।

२९९७. **प्रति सं० १८** । पत्र सं० २४३ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल सं० १९२३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

२९९८. **प्रतिसं० १९** । पत्र सं० २३५ । आ० १३$\frac{1}{2}$ × ७ इंच । ले० काल सं० १९५३ आषाढ बुदी । १४ । पूर्ण वेष्टन सं० ४२ । **प्राप्ति स्थान** -- दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

२९९९. **प्रति सं० २०** । पत्र सं० ३२८ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ६ इंच । ले० काल सं० १९११ वैशाख सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर ।

विशेष-- रामदयाल श्रावक फतेहपुर वासी ने मिर्जापुर नगर में प्रोहित भूरामल ब्राह्मण से प्रतिलिति कराई थी ।

३००१. **प्रतिसं० २१** । पत्र सं० १९० । आ० १४ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १८६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२४ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

३००२. **प्रतिसं० २२** । पत्र सं० ११८ । आ० १२ × ७ इञ्च । ले०काल सं० १९६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

३००३. **प्रतिसं० ३३** । पत्र सं० १७६ । ले०काल सं० १९५६ आसोज । पूर्ण । वेष्टन सं० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

३००४. पाण्डव पुराण वचनिका—पन्नालाल चौधरी। पत्रसं० २४६। आ० १३×८½ इञ्च। भाषा—हिन्दी (गद्य)। विषय—पुराण। र०काल सं० १६३३। ले०काल सं० १६६५ वैशाख बुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० १२११। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

३००५. पार्श्व पुराण—चन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० १२८। आ० १०×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। र०काल सं० १६५४। ले०काल सं० १६८१ फागुण बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० ४५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक)।

विशेष—आचार्य चन्द्रकीर्त्ति श्रीभूषण के शिष्य थे। पुराण में कुल १५ सर्ग हैं। पत्र १ से ५६ तक दूसरी लिपि है।

३००६. पार्श्वपुराण—पद्मकीर्त्ति। पत्र सं० १०८। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—अपभ्रंश। विषय—पुराण। र०काल सं० ६६६। ले० काल सं० १५७४ काती बुदी ३। पूर्ण। वेष्टन सं० १७७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—चित्रकूटे राणाश्रीसंग्राम राज्ये..... भ० प्रभाचन्द्रदेवा खण्डेलवालान्वये भौंसा गोत्रे साह महक भार्या महाश्री पुत्र साह मेघा भार्या मेघश्री द्वितीय भा. सा. जीणा भार्या जीणश्री तृतीय भा. सा सूरज भार्या पूर्णे चतुर्थ भार्या एतेषां मध्ये साह मेघा पुत्र हीरा ईसर महेसर करमसी इदं पार्श्वनाथचरित्रं मुनिश्री नरेन्द्रकीर्त्ति योग्य घटापितं ॥

३००७. पार्श्वपुराण—रइधू। पत्रसं० ८१। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा—अपभ्रंश। विषय—चरित्र। र०काल ×। ले० काल सं० १७४३ माघ बुदी ३। पूर्ण। वेष्टन सं० २८७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

विशेष—१७४३ वर्षे माघ कृष्ण ३ चन्द्रवारे लिखितं महानन्द पुष्कर मल्लतमज पालंब निवासी।

३००८. पार्श्वपुराण—वादिचन्द्र। पत्र सं० १३२। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। र०काल ×। ले० काल सं० १८१० माघ सुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० २६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

विशेष—नरेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य पं० चूलचन्द ने इस ग्रंथ की प्रतिलिपि की थी।

३००९. प्रति सं० २। पत्रसं० ७३। आ० १०×५ इंच। ले०काल सं० १८५०। पूर्ण। वेष्टन सं० २३४-९३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

विशेष—लौतनपुर में ब्र. नेमिचन्द्र ने ग्रंथ का जीर्णोद्धार किया था।

३०१०. पुराणसार (उत्तरपुराण)—भ० सकलकीर्त्ति। पत्र सं० १६२। आ० १०×४¾ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। र०काल ×। ले० काल सं० १८६० भादवा बुदी १५। पूर्ण। वेष्टन सं० १५५८। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

३०११. प्रतिसं० २। पत्र सं० ३४। आ० १२×५ इञ्च। ले० काल सं० १८२६ आसोज सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन सं० १४५६। **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—मंडलाचार्य भट्टारक विजयकीर्त्ति की आम्नाय में साकंभरिनगर (सांभर) में महाराजा पृथ्वीसिंह के राज्य में श्री हरिनारायणजी ने शास्त्र लिखवाकर पंडित माणिक्यचन्द को भेंट किया था।

३०१२. **प्रति सं० २** । पत्र सं० २३६ । आ० १०×५ इञ्च । ले० काल सं० १७७० पौष बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

३०१३. **पुराणसार—सागरसेन** । पत्र सं० ६२ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । र० काल × । ले० काल सं० १६५७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०७३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत १६५७ वर्षे भादवा बुदी ६ वार शुक्रवार अजमेर गढ मध्ये श्रीमद्अकबरसाहिमहासुरत्राण राज्ये लिखितं च जोसी सूरदास साह घाणा तत्पुत्र साह सिरमल ।

३०१४. **भागवत महापुराण**— × । पत्र सं० १३३ । आ० १२×७ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । र० काल × । ले० काल सं० १८१२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—३१ वें अध्याय तक पूर्ण है ।

३०१५. **भागवत महापुराण**— × । पत्र सं० २०५ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । र० काल । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—दशमस्कंध पूर्वार्द्ध तक है ।

३०१६. **भागवत महापुराण**— × । पत्र सं० २-१४६ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—पुराण । र० काल सं० १७०० श्रावण बुदी १० । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६० । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर, आदिनाथ बूंदी ।

३०१७. **भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (एकादश स्कंध)—श्रीधर** । पत्र सं० १२६ । आ० १३ × ५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । र० काल × । ले० काल सं० १८०६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

३०१८. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ३५ । आ० १५×६ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ११७ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

३०१९. **भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (तृतीय स्कंध)—श्रीधर** । पत्र सं० १३२ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

३०२०. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ७७ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, नागदी बूंदी ।

३०२१. **भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (द्वादश स्कंध)—श्रीधर** । पत्र सं० ४४ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नागदी, बूंदी ।

३०२२. भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (चतुर्थ स्कंध)—श्रीधर। पत्र सं० ६७। आ० १५×७ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

३०२३. भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (द्वितीय स्कंध)—श्रीधर। पत्र सं० ३२। आ० १५×७ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ११२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

३०२४. प्रति सं० २। पत्र सं० ४३। आ० १५×६ इंच। ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ११६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

३०२५. भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (सप्तम स्कंध)—श्रीधर। पत्र सं० ६४। आ० १५ × ७ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११०। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर नागदी बूंदी।

३०२६. भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (षष्टम स्कंध)—श्रीधर। पत्रसं० ६२। आ० १५ × ६½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। र०काल × । ले० काल सं० १७७६। पूर्ण। वेष्टनसं० १०६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

३०२७. प्रति सं० २। पत्रसं० ६२। आ० १५×७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

३०२८. भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (अष्टम स्कंध)—श्रीधर। पत्रसं० ५८। आ० १५×६½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—पुराण। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १०८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

३०२९. भागवत महा पुराण भावार्थ दीपिका (नवम स्कंध)—श्रीधर। पत्र सं० ५१। आ० १५×६½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। र० काल × । ले०काल सं० १८६१। पूर्ण। वेष्टन सं० १०७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

३०३०. भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (पंचम स्कंध)—श्रीधर। पत्र सं० ८३। आ० १५×६½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। र०काल × । ले० काल सं० १७४६। पूर्ण। वेष्टन सं० १०५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी।

३०३१. प्रति सं० २। पत्र सं० १६–२३। आ० १५×६½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १०६। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

३०३२. भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (प्रथम स्कंध)—श्रीधर। पत्रसं० ६०। आ० १३×६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। र०काल × । ले०काल सं० १८६६। पूर्ण। वेष्टनसं० १०४। **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

३०३३. भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (दशम स्कंध)—श्रीधर। पत्रसं० ४३७। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-पुराण। र० काल सं० × । ले०काल स० १७४५ माह बुदी ऽऽ। पूर्ण। वेष्टनसं० १०१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

विशेष—इदं पुस्तकं लिखितं ब्राह्मण जोशी **प्रह्लाद** तत्पुत्र चिरंजीव मथुरादास चिरंजीव भाई गंगाराम तेन इदं पुस्तकं लिखितं । जंबूद्वीप पटणास्थले । श्री केशव चरण सन्निध्यौ ।

३०३४. मल्लिनाथ पुराण— × । पत्रसं० २९ । आ० १२½ × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । **ले०काल** × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ९७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

३०३५. मल्लिनाथ पुराण भाषा—**सेवाराम पाटनी** । पत्र सं० १०८ । आ० १०½ × ५½ इंच । **भाषा**—हिन्दी । विषय—पुराण । र०काल सं० १८५० । ले०काल सं० १८९४ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—लेखराज मिश्र ने कोसी में प्रतिलिपि की थी । सेवाराम का भी परिचय दिया है । वे दौसा के रहने वाले थे तथा फिर डीग में रहने लगे थे ।

३०३६. महादण्डक— × । पत्र सं० ४ । आ० १०½ × ४ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय × । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—इति श्री जैसलमेर दुर्गस्थ श्री पार्श्वनाथ स्तुतिश्चकेश्व चक्रेण चेत सासाचक्र सहजकीर्ति नाम महादंडकेन सं० १६८३ प्रमाणे विजयदशमी दिवसे । लिख्यतानि महादण्डक विदुषाक्षपरामेण सागा नगरमध्ये मिती ज्येष्ठ प्रतियद्दिवसे सं० १७८२ का ।

३०३७. महादंडक—भ० विजयकीर्ति । पत्रसं० १७५ । आ० ९½ × ४ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी । विषय—पुराण । र०काल सं० १८३९ । ले०काल सं० १८४० पूर्ण । वेष्टन सं० १४३८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—किशनगढ़ में प्रतिलिपि हुई थी ।

३०३८. प्रतिसं० २ । पत्र सं० १८२ । आ० ९½ × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८१९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—ग्रंथ में ४१ अधिकार हैं तथा अजयगढ़ में प्रतिलिपि हुई थी ।

३०३९. महापुराण—जिनसेनाचार्य—गुणभद्राचार्य । पत्र सं० १-१४५ । आ० १३ × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३२१/२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३०४०. प्रति सं० २ । पत्रसं० ६-४१७ । आ० ११½ × ६ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी डीग ।

विशेष—बीच २ में कई पत्र नहीं हैं । प्रति प्राचीन एवं जीर्ण है ।

२०४१. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० ३६६ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले०काल १८८० । पूर्ण । वेष्टन सं० १२/८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी । (टोंक)

३०४२. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० ६४० । ले० काल सं० १६६३ । पूर्ण । वे० सं ३८ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

विशेष—रणथंभौर के चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी।

३०४३. **प्रति सं० ५**। पत्र सं० ३९२। ले० काल सं० १७६५। पूर्ण। वेष्टन सं० २७७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

३०४४. **प्रति सं० ६**। पत्र सं० १ से ४८४। ले० काल सं० ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २८२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

३०४५. **प्रति सं० ७**। पत्रसं० ४३५। आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल सं० ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० २३२। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—३७१से ४३४ तक तथा ४३५ से आगे के पत्र में नहीं है।

३०४६. **महापुराण-पुष्पदंत**। पत्र सं० ३५७। आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय | पुराण। र०काल। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ४३७। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष-पं० भीव लिखितं।

३०४७. **प्रतिसं० २**। पत्र सं० ६४६। आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५६। **प्राप्तिस्थान**—उपरोक्त मंदिर।

३०४८. **प्रति सं० ३**। पत्रसं०३१५।आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। ले०काल × ।अपूर्ण। वेष्टनसं० २६ × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा।

विशेष—बहुत से पत्र नहीं है।

३०४९. **प्रतिसं० ४**। पत्र सं० ११। आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० २०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं जीर्ण। पत्र पानी में भीगे हुये हैं।

३०५०. **प्रति सं० ५**। पत्र सं० २५७। आ० ११$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल सं० ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ८३। **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—प्रतिप्राचीन है। प्रशस्ति काफी बड़ी है।

३०५१. **प्रतिसं० ६** पत्र सं० १३८। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० २६/४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

३०५२. **महापुराण चौपई—गंगादास (पर्वतसुत)**। पत्रसं० ११। आ० १०$\frac{1}{2}$ ×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—हिन्दी (गद्य)। विषय—पुराण। र०काल। ले० काल सं० १८२५ कार्तिक बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० २१३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी।

३०५३. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० १०। ले०काल सं० × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १०६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

३०५४. **महाभारत**—× । पत्र सं० ६१। आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय पुराण। र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

विशेष—कर्णपर्व द्रौपदि संवाद तक है।

३०५५. मुनिव्रत पुराण—अ० कृष्णदास। पत्र सं० १८६। आ० १०×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। र०काल × । ले० काल सं० १६८१। पूर्ण। वेष्टन सं० २६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—अन्तिम पत्र जीर्ण हो गया है।

३०५६. रामपुराण—सकलकीर्ति। पत्र सं० ३४५। आ०१२ × ६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। र०काल × । ले० काल सं० १७७१। पूर्ण। वेष्टन सं० ७६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—भट्टारक भुवनकीर्ति उपदेशात् दुंढाहर देशे दीर्घपुरे लिपीकृतं।

३०५७. रामपुराण—भ० सोमसेन। पत्र सं० १८८। आ० १२×६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-पुराण। र०काल × । ले० काल। पूर्ण। वेष्टन सं० १०५५। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

३०५८. प्रति सं० २। पत्र सं० २३०। आ० १३½×६½ इञ्च। ले०काल सं० १८६६ माघ सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० १४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी।

३०५९. प्रति सं० ३। पत्र सं० २७६। आ० ११×५ इञ्च। ले० काल सं० १७२३। पूर्ण। वेष्टन सं० १८२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

प्रशस्ति—सं० १७२३ वर्षे शाके १५८८ चैत्र सुदी ५ शुक्रवासरे अंबावती महादुर्गे महाराजाधिराज श्री जयसिंह राज्य प्रवर्तमाने विमलनाथ चैत्यालये भट्टारक श्री नरेन्द्रकीर्ति के समय मोहनदास भौंसा के वंशजों ने प्रतिलिपि कराई थी।

३०६०. प्रति सं० ४। पत्रसं० १६४। आ० ११ × ५½ इञ्च। ले०काल १८५७। पूर्ण। वेष्टन सं० ६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

विशेष—बूंदावती में पार्श्वनाथ चैत्यालय में सेवाराम ने प्रतिलिपि की थी।

३०६१. प्रतिसं० ५। पत्रसं० २५०। ले०काल सं० १८४८। अपूर्ण। वेष्टन सं० ११। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दबसाना बूंदी।

३०६२. प्रतिसं० ६। पत्र सं० ३८-२५४। आ० १२×५ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ५३। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

३०६३. प्रति सं० ७। पत्रस० २३६ से ३६२। आ० १२×५½ इञ्च। ले०काल सं० १८४३। अपूर्ण। वेष्टन सं० २१२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़।

३०६४. प्रतिसं० ८। पत्र सं० २६० से ३४४। आ० ११×५½। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन स० २१७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ।

३०६५. प्रतिसं० ९। पत्र सं० २३७। आ० १३×५ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३२८। **प्राप्तिस्थान** – दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

३०६६. वर्द्धमान पुराण - × । पत्र सं० १६६ । आ० ११½×७½ इञ्च । **भाषा**--हिन्दी । विषय-पुराण । र०काल—× । ले०काल सं० १६४१ ज्येष्ठ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

३०६७. वर्द्धमान पुराण भाषा— × । पत्र सं० १४७ । आ० ११×७½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल — × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

३०६८. वर्द्धमान पुराण—कवि अशग । पत्रसं० १०५ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय--पुराण । र०काल सं० १००६ । ले० काल सं० १५४० फागुण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४६ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५४० वर्षे ।। फाल्गुण शुक्ल नवम्यां श्री मूलसंघे नंद्यम्नाये बलात्कारगणे भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्शिष्य मुनि रत्नकीर्ति स्तद्म्नाये खण्डेलवालान्वये पाटणी गोत्रे ....।

३०६९. वर्द्धमान पुराण— × । पत्रसं० २१४ । आ० १३½×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । र०काल × । ले० काल सं० १९३९ फागुन वदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल पंचायती दि० जैन मन्दिर अलवर ।

३०७०. वर्द्धमानपुराण—नवलशाह । पत्र सं० १५७ । आ० १२½×७½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पुराण । र०काल सं० १८२५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर अयाना ।

विशेष—पुराण में १६ अधिकार हैं ।

प्रारंभिक पाठ—

ऋषभादिमहावीर प्रणमामि जगद्गुरु ।
श्री वर्द्धमानपुराणोऽयं कथयामि अहं ब्रवीत् ।
ओंकार उच्चारकरि ध्यावत मुनिगण सोइ ।
तामैं गरभित पंचगुरु तिनपद वंदौ दोइ ।
गुण अनन्त सागर विमल विश्वनाथ भगवान ।
धर्मचक्र भव वीर जिन वंदौ सिर धरि ध्यान ।।२।।

अंतिम पाठ--

उज्जयंति विक्रम नृपति संवत्सर गिनि तेह ।
सत अठार पचीस अधिक समय विकारी एह ।।३२।।
द्वादश में सूरज गिनै द्वादश अंशहि ऊन ।
द्वादशमी मासहि भनो शुक्लपक्ष तिथि पून ।।३३।।
द्वादशनक्षत्र बखानिये बुधवार वृद्धि जोग ।
द्वादश लगन प्रभात में श्री दिन लेख मनोग ।।३४।।

रितवसंत प्रफुल्ल अति फागु समय शुभ हीय ।
वर्द्धमान भगवान गुन ग्रंथ समापति कीय ।

कवि की लघुता—

द्रव्य नवल क्षेत्रहि नवल काल नवल है और ।
भाव नवल भव नवल अति बुद्धि नवल इहि ठौर ।।
काय नवल अरु मन नवल वचन नवल विसराम ।
नव प्रकार जल नवल इह नवल साहि करि नाम ।।

अंतिम पाठ – दोहा—

पंच परम गुरु जुग चरण भविजन बुध गुन धाम ।
कृपावंत दीजै भगति, दास नवल परनाम ।।४२।।

३०७१. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० १३६ । आ० १२ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १६१५ सावन बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

३०७२. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ७२ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १६१७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी ।

विशेष—भगवानदास ने बंबई में प्रतिलिपि कराई थी । सं० १६२६ में श्री रामानंद जी की बहू ने फोषुर के मंदिर इसे चढ़ाया था ।

३०७३. **वर्द्धमान पुराण—सकलकीर्ति** । पत्र सं० ६८ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । **विषय**—पुराण । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

३०७४. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० १२१ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी) ।

३०७५. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० १३८ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३०७६. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० १३८ । आ० १२ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १७६५ । पूर्ण । वेष्टनसं० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—करौली नगर में किसनलाल श्रीमाल ने लिखा ।

३०७७. **प्रति सं० ५** । पत्रसं० १२६ । आ० ११ × ८ इंच । ले०काल सं० १६०२ पूर्ण । वेष्टन सं० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

३०७८. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० १०३ । आ० ११ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १५८८ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार—

संवत् १५८८ वर्षे ज्येष्ठ सुदी १२ गुरू पं० नला सुत पं० पेथा भ्रात अकिम..... लिखितं ।

दूसरी प्रशस्ति—

स्वयंराचार्य श्री ६ चन्द्रकीर्ति देवाः तत् शिष्य ब्रह्म श्री नाकरस्येदं पुस्तकं पठनार्थं ।

३०७६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २०६ । आ० १२×६½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पुराण । र० काल सं० १८२५ । ले० काल सं० १६०८ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—

कामा के मन्दिर में लोहान चुन्नीलाल ने भेंट किया ।

३०८०. प्रति सं० ५ । पत्रसं० १८८ । आ० ६½×७½ इञ्च । ले० काल सं० १६५६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली (कोटा) ।

३०८१. प्रति सं० ६ । पत्रसं० १३० । ले० काल सं० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

३०८२. वर्द्धमान पुराण भाषा—नथलराम । पत्रसं० २४३ । आ० ११×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । र० काल सं० १६६१ अगहन सुदी । ले० काल सं० १६०३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है वैश्य कुल की ८४ गोत्रों का वर्णन किया गया है ।

दोहरा—

सोरहसै इक्यासवै अगहण सुभ तिथि बार ।
नृप जुझार बुंदेल कुल जिनके राजमभार ।
यह संक्षेप बखाणकरि कही पतिष्ठा धर्म,
परजाग जुत आडी विभव तिण उत्पति बहुधर्म ।।

दोहरा—

क्षत्रसालवंती प्रबल नाती श्रीहरि देस ।
सभासिंह सुत हिंदपति करहि राज इहदेस ।।
ईति भीति व्यापै नहीं परजा अति आणंद ।
भाषा पढहि पढावहि षट् पुर श्रावक वृंद ।

पद्धडी छंद—

ताहि समय करि मन में हुलास,
कीजे कथा श्री जिण गुणहि दास ।
वक्ताप्रभाव बडौ उर आन ।
तब प्रभु वर्द्धमान गुणखान ।
करौ अस्तवण भाषा जोर ।
नथलसाह तज मदमण मोर ।
सकलकीर्ति उपदेश प्रवाण ।
पितापुत्र मिलि रच्यौ पुराण ।

अन्तिम दोहा—

पंच परम गुरु चरण नमि, भव जल बुद्ध जुत धाम ।
कृपावंत दीजे भगत दास नवल परणाम ।।

ग्रंथ कामापुर के पंचायती मन्दिर में चढाया गया ।

३०८३. **विमलनाथपुराण**—ब्र० कृष्णदास । पत्र सं० २६६ । आ० १२×७½ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय—पुराण । र०काल सं० १६७४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

३०८४. **प्रतिसं०** २ । पत्र सं० १२१ । आ० १०½×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८/११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सोगाणी करौली ।

३०८५. **विमलनाथ पुराण भाषा—पांडे लालचन्द** । पत्र सं० १०० । आ० १४ × ८½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । र०काल सं० १८३७ । ले० काल सं० १९३४ वैशाख बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल पंचायती दि० जैन मन्दिर अलवर ।

३०८६. **प्रतिसं०** २ । पत्र सं० ११८ । आ० ९½×६ इञ्च । ले० काल सं० १८९० । पूर्ण । वेष्टन सं० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

३०८७. **प्रतिसं०** ३ । पत्र सं० १२७ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल सं० १९३३ आषाढ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

३०८८. **प्रतिसं०** ४ । पत्रसं० ११८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—ब्रह्म कृष्णदास विरचित संस्कृत पुराण के आधार पर पांडे लालचन्द ने करौली में ग्रंथ रचना की थी ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

अडिल्ल—

गढ गोपाचल परम पुनीत प्रमानिये,
तहां विश्वभूषण भट्टारक जानिए ।
तिनके शिष्य प्रसिद्ध ब्रह्म सागर सही,
अग्रवार वर वंश विषै उत्पत्ति लही ।

काव्य छन्द—

जात्रा करि गिरनार सिखर की अति सुख दायक ।
फुनि आये हिंडौन जहां सब श्रावक लायक ।
जिन मत को परभाव देखि निज मन थिर कीनों ।
महावीर जिन चरण कमल को शरणों लीनो ।।

दोहा—

ब्रह्म उदधि के शिष्य फुनि पांडेलाल प्रधान ।
छंद कोस पिंगल तनो जामें नांही आन ।

प्रभु चरित्र किम मिस विषय कीनां जिन गुणगान ।
विमलनाथ जिनराज को पूरण भयो पुराण ।।
पूर्व पुरान विलोकि कै पांडेलाल बखान ।
भाषा बन्ध प्रबंध में रच्यो करौरी थान ।।

चौपाई—

संवत् अष्टादश सत जान ताउपर तैंतीस प्रमान ।
अस्विन सुदी दशमी सोमवार ग्रंथ समापति कीनौ सार ।।

३०८९. विष्णु पुराण— × । पत्रसं० ७–४० । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ९८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर बयाना ।

विशेष—पत्र सं० ७-९ तक अठारहपुराण तथा ९–४० तक विष्णुपुराण जिसमें आदिनाथ का वर्णन भी दिया हुआ है ।

३०९०. श्रेणिक पुराण—विजयकीर्ति । पत्र सं० ८१ । भाषा-हिन्दी । विषय-पुराण । र० काल सं० १८२७ फागुन बुदी ५ । ले० काल स० १९०३ आसोज सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

३०९१. प्रतिसं० २ । पत्र सं० १४५ । आ० ११½ × ५½ इञ्च भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । र०काल सं० १८२७ फागुन बुदी ७ । ले० काल सं० १८८७ । वेष्टन सं० ६९४ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—भट्टारक परिचय दिया गया है । भट्टारक धर्मचन्द्र ठोल्या बैराठ के थे तथा मलयकेड के सिंहासन एवं कारंजा पट्ट के थे ।

३०९२. शान्ति पुराण—असग । पत्र सं० ८४ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल सं० १८४१ आषाढ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—उणियारा नगर में ब्रह्म नेतसीदास ने अपने शिष्य के पठनार्थ लिखा था ।

३०९३. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १२४ । आ० ११½ × ६ इञ्च । ले०काल सं० १५९४ फागुण सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१७ । **प्राप्ति स्थान**–भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३०९४. शान्ति पुराण—पं. आशाधर कवि । पत्र सं० १०७ । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा—– संस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले० काल १५९१ आषाढ़ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं०२०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति अच्छी है ।

३०९५. शांतिनाथ पुराण—ठाकुर । पत्र सं० ७४ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी हिन्दी । विषय-पुराण । र०काल सं० १६५२ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६०५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

३०९६. शान्तिनाथ पुराण—[illegible]। पत्रसं० २०३। आ० १० × ६ इञ्च। भाषा—विषय—पुराण। र०काल × । ले०काल सं० १८९३ आषाढ़ सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन सं० १६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल टोंक।

३०९७. प्रति सं० २। पत्रसं० २२४। ले०काल सं० १७८३ वैशाख सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० २३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती भरतपुर।

विशेष—इसे पं० नरसिंह ने लिखा था।

३०९८. प्रतिसं० ३। पत्र सं० २२७। आ० १८½ × ५ इञ्च। ले०काल सं० १७९८ मंगसिर सुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० २८/१४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सीगाणी मन्दिर करौली।

विशेष—पं० नरसिंह ने प्रतिलिपि की थी।

३०९९. शान्तिनाथ पुराण—सेवाराम पाटनी। पत्र सं० १५७। आ० १३½ × ८½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—पुराण। र०काल सं० १८३४ सावन बुदी ८। ले० काल सं० १९६५ चैत्र बुदी ४। पूर्ण। वेष्टन सं० १३-२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर।

३१००. प्रतिसं० २। पत्र सं० १५९। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ५२३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

३१०१. प्रतिसं० ३। पत्र सं०२२१। आ० १३ × ८ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्री महावीर बूंदी।

३१०२. प्रति सं० ४। पत्रसं० १९४। आ० १३ × ८ इञ्च। ले०काल सं० १८९३ माघ सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० १०१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना।

विशेष—सेवाराम ने पं० टोडरमलजी के ग्रंथ का अनुकरण किया तथा उनकी मृत्यु के पश्चात् जयपुर छोड़ के चले जाना लिखा है। कवि मालव देश के थे तथा मल्लिनाथ चैत्यालय में ग्रंथ रचना की थी। ग्रंथ रचना देवगढ़ में हुई थी। कवि ने हुंबड वंशीय ब्रह्मरावत की प्रेरणा से इस ग्रंथ की रचना करना लिखा है।

आलमचन्द बैनाडा सिकन्दरा के रहने वाले थे। देवयोग से वे बयाना में आये और यहां ही बस गये। उनके दो पुत्र थे खेमचन्द और विजयराम। खेमचन्द के नथमल और चेतराम हुए। नथमल ने यह ग्रंथ लिखाकर इस मन्दिर में चढ़ाया।

३१०३. शान्तिनाथ पुराण भाषा—× । पत्रसं० २४९। आ० १३ × ९½ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—पुराण। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

३१०४. सुमतिनाथ पुराण—दीक्षित देवदत्त। पत्रसं० ३-४२। आ० १२ × ६ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—पुराण। र०काल × । ले०काल सं० १८४७ चैत सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन सं० १२७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी।

विशेष अन्तिम—भगवान सुमति पदारविंदनि ध्याइमान सानंद के।
कवि देव सुमति पुराण यह, विरच्यो ललित पद छंद के।
जो पढ़ई आपु पढ़ाई औरनि सुनहि वाच सुनावही।
कल्याण मनवंछित सुमति परसाद सो जन पावही।

इति श्री भगवत् गुणभद्राचार्यानुक्रमेण श्री भट्टारक विश्वभूषण पट्टाभरण श्री ब्रह्म हर्षसागरात्मज श्री भट्टारक जिनेन्द्रभूषणोपदेशात् दीक्षित देवदत्त कवि रचितेन श्री उत्तरपुराणान्तर्गत सुमति पुराणे श्री निर्वाण कल्याण वर्णनो नाम पंचमो अधिकार। भगवन्दास ने अटेर में प्रतिलिपि की थी।

प्रारम्भ में त्रिभंगी सार का अंश है।

३१०५. हरिवंश पुराण—जिनसेनाचार्य। पत्रसं० ४२६। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय -पुराण। र० काल × । ले० काल × । **पूर्ण**। वेष्टन सं० १३०८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

३१०६. प्रति सं० २। पत्र सं० ४०६। आ० १२ × ५ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं०१४। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर।

विशेष—लेखक प्रशस्ति वाला पत्र नहीं है।

३१०७. प्रतिसं० ३। पत्रसं० १४०। आ० १०½×५½ इञ्च। ले० काल× । अपूर्ण। वे० सं० १२७६। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

३१०८. प्रति सं० ४। पत्रसं० २६४। आ० १२×५½ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ५०५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

३१०९. प्रतिसं० ५। पत्रसं० ३१४। आ० १२×५ इंच। ले०काल १७५६ आसोज सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन सं० ६८/११ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़।

विशेष—रावराजा बुधसिंह के बूंदी नगर में प्रतिलिपि हुई थी।

३११०. प्रतिसं० ६। पत्र सं० ३१६। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० २२०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष:—तीन चार प्रतियों का संग्रह है।

३१११. प्रतिसं० ७। पत्रसं० ३६२। आ० १२×५ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ३०। **प्राप्ति स्थान**-- दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

३११२. प्रतिसं० ८। पत्रसं० १६। आ० १२×५ इञ्च। ले० काल सं० १७११। अपूर्ण। वेष्टनसं० १५१/७६। संभवनाथमन्दिर उदयपुर।

प्रशस्ति– सं० १७११ वर्षे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे श्री सागपत्तने श्री आदिनाथ चैत्यालये लिखितं। श्री सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्री वादिभूषण, तत्पट्टे भ० श्री रामकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री पद्मनंदि त० भ. श्री देवेन्द्रकीर्तिस्तदाम्नाये आचार्य श्री महीचन्द्रस्तत्शिष्य ब्र०...वीरा पठनार्थं।

३११३. प्रतिसं० ९। पत्र सं० ९५ । आ० १२½×५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० २१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—बीच के अनेक पत्र नहीं हैं। तथा ९५ से आगे पत्र भी नहीं है।

३११४. प्रतिसं० १०। पत्रसं० ३०२। आ० १३×४½ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर।

विशेष—प्रति जीर्ण है।

३११५. हरिवंशपुराण भाषा—छत्रसेन। पत्रसं० १७०। आ० १२×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—पुराण। र० काल × । ले० काल सं० १८१२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

विशेष—३१३३ पद्य हैं। नागरट्ट में प्रतिलिपि हुई थी।

३११६. हरिवंश पुराण- भट्टारक विद्याभूषण के शिष्य श्रीभूषण सूरि। पत्रसं० ३१५। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। र० काल × । ले० काल सं० १७०१ भादवा बुदी १ पूर्ण। वेष्टन सं० २५-१४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

विशेष—राजनगर में लिखा गया था।

३११७. हरिवंशपुराण—यशःकीर्ति। पत्रसं० १८६। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—अपभ्रंश। विषय—पुराण। ले० काल × । ले० काल सं० १६६१। पूर्ण। वेष्टन सं० २४८/२१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

प्रशस्ति—संवत् १६६१ चैत्र सुदी २ रविवासरे पातिसाह श्री अकब्बर जलालदीनराज्यप्रवर्तमाने श्री आगरा नगरे श्रीमत् काष्टासंघे माथुरगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्यान्वये भट्टारक श्री श्रीमलयकीर्तिसूरीश्वरान् तत्पट्टे सुजसोराशिसुश्रीकृतहृग्बलयानां प्रतिपक्षसिरिस्फोटान् प्रबोधव्याजविकासिनां सुमालिनां कुवादेन्दीवरसंकोचनैकशीतरुचीनां सद्व्रत्यपेचनजलसुचां चारुचारित्रचरितां.....भ० गुणभद्र देवा। तत्पट्टे वादीभकुंभस्थल विदारणैक.....भ० श्री भालकीर्तिदेवा तत्पट्टे.....भ० कुमारसेनदेवा तदाम्नाये अग्रोतकान्वये गोयलगोत्रे इदानीं आगरा वास्तव्यं सुदेसप्रदेसविख्यातमाल्यान् दानप्रतिष्ठेयांसावतारान् दीपकराइबलू तस्य भार्या भील तोयतरंगिनि विनअवागेश्वरी साध्वी अर्जुनदे तयोःपुत्र पंच। प्रथम पुत्र देवीदास तस्यभार्या नागरदे तत्पुत्र कुंवर तस्य भार्या देवल तयोः पुत्र द्वय प्रथम पुत्र चन्द्रसेनि द्वितीय पुत्र कपूर। राइबलू द्वितीय पुत्र रामदास तस्यभार्या देवदत्ता। राइबलू तृतीय पुत्रलक्ष्मीदास तस्य भार्या अनामिका। राइबलू चतुर्थ पुत्र खेमकरण तस्य भार्या देवल। राइबलू पंचम पुत्र दानदानेश्वरान् जैनसभाशृंगार हारान् जिनपूजापुरंदरान्..... साहु आसकरण तस्य भार्या..... साध्वी मोतिगदे तयोः पुत्र..... साहु श्री स्वामीदास जहरी तस्य भार्या..... साध्वी खेमदे तयो पुत्र पंच। प्रथम पुत्र भवानी, द्वितीय पुत्र मुरारी तस्य भार्या नारंगदे। तयोः तृतीय पुत्र लाहुरी भार्या नथलदास तस्य भार्या लोहगमदे तयो पुत्र त्रय गोकलदास तस्य भार्या कस्तूरी पुत्र मुरारि। स्वामिदास तृतीयपुत्र पंचमीव्रत उद्धरणधीरान्.....साहु श्रीमल तस्यभार्या सुन्दरदे तस्य पुत्र मायीदास स्वामीदास चतुर्थ पुत्र साहु मथुरादास स्वामीदास पंचम पुत्र जिन शासन उद्धरणधीरान्..... .....साह..... .....। इससे आगे प्रशस्ति पत्र नहीं है।

३११८. हरिवंश पुराण—शालिवाहन। पत्र सं० १६७। आ० १२ × ५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—पुराण। र० काल सं० १६६५। ले० काल—सं० १७८६ फागुण सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० २८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर बयाना।

३११९. प्रति सं० २। पत्रसं० ५२। ले० काल १७६४। पूर्ण। वेष्टन सं० १७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

३११०. प्रति सं० ३ । पत्रसं० १३० । आ० १२½ × ६½ इञ्च । ले०काल सं० १८०३ मंगसिर बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—शाहजहांनाबाद में प्रतिलिपि हुई थी ।

अग्रवाल ज्ञातीय वंशल गोत्रे फतेपुर वास्तव्ये वागड देशे साह लालचंद तत्पुत्र साह सदानंद तत्पुत्र साह राजाराम तत्पुत्र हरिनारायण पांडे स्वामी श्री देवेन्द्रकीर्ति जी फतेपुर मध्ये वास्तव्य तेन दिल्ली मध्ये पातसाह मोहम्मद साहि राज्ये संपूर्ण कारापितं ।

३१२१. हरिवंश पुराण—दौलतराम कासलीवाल । पत्रसं० ३८६ । आ० १५×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पुराण । र०काल सं० १८२९ । ले० काल सं० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५/११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनमन्दिर पंचायती टूंडी (टोंक) ।

विशेष—जयकृष्ण व्यास फागी वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

३१२२. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ४९२ । आ० १३×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । र०काल सं० १८२९ चैत सुदी १५ । ले० काल सं० १८७२ आसोज सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

३१२३. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० ४६८ । आ० १२½×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पुराण । र०काल सं० १८२९ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

३१२४. प्रति सं० ४ । पत्रसं० २०२ से ६१३ । आ० ११×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय—पुराण । र०काल सं० १८२९ । ले० काल सं० १८९२ । अपूर्ण । वेष्टनसं० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष—चौधरी डोंगीराम पुत्र गोविन्दराम तथा सालगराम पुत्र मन्नालाल छाबडा ने राजमहल में टोडानिवासी ब्राह्मण सुखलाल से प्रतिलिपि कराकर चन्द्रप्रभु स्वामी के मंदिर में विराजमान किया ।

३१२५. प्रतिसं० ५ । पत्र सं० ५३८ । आ० १३×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय—पुराण । र०काल सं० १८२९ । लेखन काल सं० १९६१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

३१२६. प्रति सं० ६ । पत्रसं० ४४४ । आ० १३×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—पुराण । र०काल सं० १८२९ । ले० काल सं० १८६३ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—ग्रंथ का मूल्य १५) रु० ऐसा लिखा है ।

३१२७. प्रति सं० ७ । पत्रसं० ४५४ । आ० १२½ × ७इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—पुराण । र०काल सं० १८२९ चैत सुदी १५ । ले०काल सं० १९६१ माघ बुदी १ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

३१२८. प्रति सं० ८ । पत्रसं० ३८९ । आ० १५½×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—पुराण । र०काल सं० १८२९ । ले० काल १८६४ वैशाख बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक) ।

३१२९. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ६१७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—पुराण । र० काल सं० १८२९ । ले० काल सं० १८८१ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८/८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० पार्श्वनाथ जैन मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

३१३०. प्रति सं० १० । पत्र सं० २१३ । आ० १२½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-पुराण । र० काल सं० १८२९ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

३१३१. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ४२७ । आ० १२ × ८ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । र० काल स० १८२९ । ले० काल सं० १८५३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खं० पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—कुंभावती नगर में प्रतिलिपि की गई थी ।

३१३२. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ३२६ । आ० १६ × ७ इञ्च । भाषा-हिन्दी ग० । विषय-पुराण । ले० काल सं० १८८४ पौष वदी १३ । र० काल सं० १८२९ चैत सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—प्रति दो वेष्टनों में है ।

३१३३. प्रति सं० १३ । पत्रसं० ४०६ । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पुराण । र० काल सं० १८२९ । ले० काल सं० १८४२ मंगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—नवनिधिराय कासलीवाल प्रतिलिपि करवाई थी ।

३१३४. प्रति सं० १४ । पत्रसं० ३५७ । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पुराण । र० काल सं० १८२९ चैत सुदी १५ । ले० काल सं० १८७५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

३१३५. प्रति सं० १५ । पत्रसं० ४७५ । ले०काल १८४४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष—कुंभावती में प्रतिलिपि हुई थी । स० १८९१ में मन्दिर में चढ़ाया गया ।

३१३६. प्रतिसं० १६ । पत्र सं० ४९३ । आ० १२½×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—पुराण । र० काल सं० १८२९ चैत सुदी १५ । ले० काल—सं० १८५५ कार्तिकसुदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० ९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर बयाना

३१३७. प्रति सं० १७ । पत्र सं० ४६८ । आ० १३×७ इंच । भाषा—ले०काल × । अपूर्ण एवं जीर्ण । वेष्टनसं० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बैर भरतपुर ।

३१३८ प्रति सं० १८ । पत्र सं० २२४ । आ० १३½×८½ इंच । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—पुराण । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर डीयान जी कामा ।

३१३९. **प्रतिसं० १९** । पत्र सं० ४८० । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय पुराण । र०काल सं० १८२९ । ले० काल सं० १८३४ । **पूर्ण** । वेष्टन सं० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर, हण्डावालों का डीग ।

३१४०. **प्रति सं० २०** । **पत्रसं०** २ से २४९ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर हण्डावालों का डीग ।

३१४१. **प्रतिसं० २१** । पत्रसं० ६०२ । आ० १२½ ×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय—पुराण । र०काल सं० १८२९ चैत सुदी १५ । ले० काल सं० १८९५ वैशाख सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

विशेष—नगर करौली में लाहुरराम ने गुमानीराम द्वारा लिखाया था । बीच के कुछ पत्र जीर्ण हैं ।

३१४२. **प्रतिसं० २२** । पत्र सं० १—२०५ । **भाषा**-हिन्दी (गद्य) । विषय—पुराण । र० काल सं० १८२९ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

३१४३. **प्रति सं० २३** । पत्र सं० ४४० । आ० १२½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी ग० । विषय—पुराण । र०काल सं० १८२९ चैत सुदी १५ । ले० काल सं० १८९४ माघ बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर बेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—जीवणराम जी ने ब्राह्मण बिजाराम आखाराम से प्रतिलिपि कराई थी ।

३१४४. **प्रतिसं० २४** । पत्रसं० ५०६ । आ० १२ × ७½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल सं० १८२९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८१९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—चिमनलाल तेरहपंथी ने प्रतिलिपि की थी ।

३१४५. **प्रतिसं० २५** । पत्रसं० ३२७ । आ० १३×१० इञ्च । भाषा-हिन्दी ग० । विषय—पुराण । र०काल सं० १८२९ । ले० काल सं० १८६० । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—दौसा में प्रतिलिपि हुई थी ।

३१४६. **प्रति सं० २६** । पत्रसं० ३०० । आ० ११ × ७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-पुराण । र०काल सं० १८२९ चैत्र सुदी १५ । ले०काल सं० × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

३१४७. **प्रति सं० २७** । पत्रसं० ४४१ । आ० १२½ × ६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय—पुराण । र०काल सं० १८२९ । ले०काल सं० १८५९ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६-१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, कोटडियों का डूंगरपुर ।

३१४८. **हरिवंश पुराण—ब्र० जिनदास** । पत्रसं० २४५ । आ० ११ × ६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल सं० १८४····(?) फागुण सुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७४ । **प्राप्ति स्थान**—शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—डूंडी नगर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३१४९. **प्रति सं० २** । पत्रसं० २७७ । आ० ११½×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२८ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मंदिर पञ्चायती दूनी (टोंक) ।

विशेष—प्रति उत्तम है ।

३१५०. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० २०८ । आ० ८½×६ इञ्च । ले० काल × । **अपूर्ण** । वेष्टनसं० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३१५१. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० १८६ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र० काल × । ले०काल सं० १८४३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

३१५२. **प्रतिसं० ५** । पत्रसं० ३६५ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र०काल × । ले०काल सं० १५६३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३४३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३१५३ **प्रतिसं० ६** । पत्रसं० ३४३ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । र० काल × । ले०काल सं० १५८६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३१५४. **प्रतिसं० ७** । पत्रसं० २०७ । आ० १३×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र० काल × । ले०काल सं० १८२५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्री महावीर बूंदी ।

३१५५. **प्रतिसं० ८** । पत्रसं० ३०६ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र० काल × । ले०काल सं० १६५७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—संवत् १६५७ वर्षे भाद्रव सुदि १३ बुधवासरे श्री मूलसंघे श्रीयथावयासौ शुभस्थाने राजाधिराज श्रीमद् अकबरसाहिराज्ये चंद्रप्रभ चैत्यालये खंडेलवाल ज्ञातीय समस्त पंचाइतु बयानै को पुस्तक हरिवंश शास्त्रं पंडित बूरा प्रदत्तं । पुस्तक लिखित आहानु पराशर गोत्रे पांडे प्रहलादु तत्पुत्र मिश्रपौनि लेखक पाठक ददातु । इद पुस्तक दूरसकृतवां पंडित सभाचन्द तदात्मज रघुनाथ संवत् १७६७ वर्षे अश्वनि मासे कृष्णा पक्षे तिथौ ६ बुधवारे ।

३१५६. **प्रतिसं० ९** । पत्रसं० २८५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

३१५७. **प्रतिसं० १०** । पत्रसं० २२१ । आ० १२ ×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनमन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—अन्तिम २ पत्र फट गये है । प्रतिजीर्ण है । सावड़ा गोत्र वाले श्रावक सुलतान ने प्रतिलिपि की थी ।

३१५८. प्रतिसं० ११ । पत्रसं० १२२ । आ० १० × ५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २०३४ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

३१५९. प्रतिसं० १२ । पत्रसं० १२३–२२५ । आ० १०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र०काल × । ले० काल सं० १७९६ । पूर्ण । वे० सं० ३३७ । **प्राप्तिस्थान**–दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

इति श्री हरिवंश संपूर्ण । लिखितं मुनि धर्मविमल धर्मोपदेशाय स्वयं वाचनार्थ रीसवाली नगर मध्ये श्री महावीर चैत्ये ठाकुर श्री मानसिंहजी सत्याधात्स ता० श्री सुखरामजी पोल छाबड़ा चिरंजीयात् । संवत् १७९६ वर्षे मिती चैत्र बुदी ७ रविवासरे ।

३१६०. प्रतिसं० १३ । पत्रसं० ३७० । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१७–६२ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

३१६१. प्रतिसं० १४ । पत्रसं० २०६ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल सं० १८५४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०२-७ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष--लक्षकपुर में पं० शिवजीराम टोडा के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

३१६२. प्रतिसं० १५ । पत्रसं० २२२ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६/१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ ।

३१६३. प्रतिसं० १६ । पत्रसं० २२५ । आ० १२×६ इंच । भाषा--संस्कृत । विषय-पुराण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९७/१० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैनपार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

३१६४. प्रतिसं० १७ । पत्रसं० २५४ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल सं० १६८९ वैशाख बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३९ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—नैनवा वासी संगही श्री हरिराज खंडेलवाल ने गढ़नलपुर में प्रतिलिपि करवाई थी।

३१६५. प्रतिसं० १८ । पत्र सं० २७१ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र०काल × । ले० काल सं० १७७६ फागुन सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—बादशाह फर्रूकसाह के राज्य में परशुराम ने प्रतिलिपि की थी ।

३१६६. प्रतिसं० १९ । पत्र सं० १से१२७ । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र०काल × । लेखन काल × । अपूर्ण । वे०सं० १० **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर डीग ।

३१६७. प्रति सं० २०। पत्र सं० ३१०। आ० १० ×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। र० काल × । ले० काल सं० १८१६। पूर्ण। वे० सं० १६८। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

३१६८. प्रतिसं० २१। पत्रसं० ३२३। आ० ११×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय—पुराण।र० काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १३७। ग्रंथाग्रंथ ६६६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

३१६९. प्रति सं० २२। पत्रसं० ३१७। आ० १०½×४ ½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पुराण। र० काल × । ले०काल सं० १८१८ । पूर्ण। वेष्टन सं० १०८–५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर।

३१७०. प्रतिसं० २३। पत्र सं० २१७ । आ० ११½ × ५इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-- पुराण। र० काल × । ले० काल १६६२। पूर्ण। वे० सं० १५९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मंदिर उदयपुर।

३१७१. प्रति सं० २४। पत्र सं० २६३-२९२। आ० ११×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय–पुराण। र० काल × । ले० काल सं० १६८५। पूर्ण। वेष्टन सं० ३९५/७८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर।

विशेष- सं० १६८५ वर्षे फागुण सुदी ११ शुक्रवासरे मालवदेशे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे कुंद-कुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति तत्पट्टे भ० रत्नकीर्त्ति तत्पट्टे भ० यशःकीर्ति तत्पट्टे भ० गुणचन्द्र तत् भ०जिनचन्द्र तत् भ० सकलचन्द्र तत्पट्टे भ० रत्नचन्द्र तदाम्नाये ब्र० श्री जेसा तत् शिष्य आचार्य जयकीर्ति तत् शिष्य आ० मुनीचन्द्र कर्मक्षयार्थं लिख्यतं। वागडदेशे सागवाडा ग्रामे हुंबडज्ञातीय बजीपंणा गोत्रे सा० गोसल भार्या दमती। तत् पुत्र सा० चंपा भा० कलां तत् पुत्र सा० गणेश भार्या गंगदे पुत्र आ० मुनीचन्द्र लिखीतं। सं १६८५ वर्षे फागुण वुदी ९ सोमे सुजालपुरे पार्श्वनाथ चैत्यालये ब्र० जेसा शिष्य जयकीर्ति शिष्य आ० मुनि चन्द्र केन ब्रह्म भोगीदासाय गुरू भ्रात्रे हरिवंश पुराण स्वहस्तेन लिखित्वा स्वज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थं दत्तं। रणायर नगरे लिखितं। श्री आचार्य भुवनकीर्ति तत् शिष्य ब्र० श्री नारायणदासस्य इदं पुस्तकं।

३१७२. प्रति सं० २५। पत्र सं० ३६९। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—पुराण। र० काल × । ले० काल सं० १५५८। अपूर्ण। वेष्टन सं० २४७/९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—९० से २७९ तक के पत्र नहीं है।

प्रशस्ति—संवत् १५५८ वर्षे पौष सुदी २ रवौ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भ० श्री सकलकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्ति तत्पट्टे ज्ञानभूषण तत्पट्टे श्री विजयकीर्ति गुरूपदेशात् वागवरदेशे नुगामास्थाने राउल श्री उदयसिंहजी राज्ये श्री आदिनाथचैत्यालये हुंबड ज्ञातीय विरजगोत्रे दोसी भाया भार्या सारू सुत सम्यक्त्वादिद्वादशव्रतप्रतिपालक दोसी भाइया भा० देसति सुत आगमवेत्ता दोसी नेमिदास भार्या टबकू भ्रातृ दो संतोषी भा० सरीयादे भा० दो० देवा भार्या देवलदे तेयां पुत्रा श्रीपाल रामाऊडा एतै हरिवंश पुराणं लिखाप्य दत्तं। ब्रह्म रामा पठनार्थं।

३१७३. **प्रति सं० २६** । पत्र सं० ४०२ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र० काल × । ले० काल सं० १६०१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५४/१० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६०१ वर्षे कार्तिक मासे शुक्लपक्षे ११ शुक्रे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री भुवनकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री ज्ञानभूषणदेवा तत्पट्टे भ० विजयकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्रदेवा तत् शिष्य ब्र० श्रीरंगा ज्ञानावर्णकर्मक्षयार्थं लक्षित्वा बागडदेशे गुवाजीग्रामे श्री शांतिनाथ चैत्यालये शुभं भवति आचार्य श्री पद्मकीर्तिये दत्तं हरिवंशाख्य महापुराणं ज्ञानावर्ण क्षयार्थ ॥

३१७४. **प्रति सं० २७** । पत्र सं० २३० । आ० १०½ × ५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र० काल × । ले० काल सं० १६५३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६५३ वर्षे माघ सुदी ७ बुधे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्तिदेवा तत्पट्टे भुवनकीर्तिदेवा तत्पट्टे ज्ञानभूषणदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री विजयकीर्तिस्त भ० शुभचन्द्रदेवास्तत् भ० सुमतिकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० गुणकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री वादिभूषण तादाम्नाये श्री ईलप्रकारे श्री सम्भवनाथ चैत्यालये श्रीसंघेन इदं हरिवंशपुराणं लिखापि स्वज्ञानावरणीकर्मक्षयार्थं ब्रह्म लाडकाय दत्तं ।

३१७५. **हरिवंश पुराण—खुशालचन्द** । पत्र सं० २२३ । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । र० काल सं० १७८० । ले० काल सं० १८५२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पंचायती दूनी (टोंक) ।

विशेष—फागी में स्योदक्स से प्रतिलिपि की थी ।

३१७६. **प्रति सं० २** । पत्रसं० २१६ । आ० १२ × ६ इञ्च । विषय-पुराण । र० काल सं० १७८० वैशाख सुदी ३ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३५० । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३१७७. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० २३६ । आ० ११ × ६½ इञ्च । भाषा हिन्दी (पद्य) । विषय-पुराण । र० काल सं० १७८० । ले० काल सं० १८२६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १६१८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३१७८. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० ३१४ । आ० १०½ × ५¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । र० काल सं० १७८० । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

३१७९. **प्रति सं० ५** । पत्रसं० २६६ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—पुराण । र० काल सं० १७८० वैशाख सुदी ३ । लेखन काल सं० १८३५ पौष सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६ । **प्राप्ति स्थान**--तेरहपंथी दि० जैन मन्दिर नैणवा ।

विशेष—महाराजा विशनसिंह के शासन में सदासुख गोदीका सांगानेर वाले ने प्रतिलिपि की थी।

३१८०. प्रति सं० ६। पत्र सं० २२२। आ० १३½×६½ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—पुराण। र० काल सं० १७८०। ले० काल सं० १८३१ चैत सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० ११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

३१८१. प्रति सं० ७। पत्र सं० २३१। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। र० काल सं० १७८०। ले० काल सं १८६० श्रावण सुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० ९१। **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

३१८२. प्रति सं० ८। पत्र। सं० २४१। आ० १२×६ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। **विषय**—पुराण। र० काल ×। ले० काल सं० १८४०। पूर्ण। **वेष्टन सं० ५६। प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा।

३१८३. प्रति सं० ९। पत्र सं० २७६। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—पुराण। र० काल सं० १७८० वैशाख सुदी ३। ले० काल सं० १८३६ माह सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० १०३–२०८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—संवत् १९१५ में साह हीरालाल जी तत्पुत्र जैकुमार जी अमैचन्द जी ने पुण्य के निमित्त एवं कर्मक्षयार्थ टोडा के मन्दिर सांवलाजी (रैण)के में चढ़ाया था।

३१८४. प्रति सं० १०। पत्र सं० २१७। आ० ११×६ इञ्च। ले० काल सं० १८४५ कार्तिक सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० ११९/७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

विशेष—ब्रजभूमि मथुरा के पास में पटैल साहिब के लश्कर में पार्श्वनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी।

३१८५. प्रति सं० ११। पत्र सं० २०१। आ० १३×६ इंच। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—पुराण। र० काल सं० १७८०। ले० काल सं० १८८४। पूर्ण। वेष्टन सं० १४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरखली कोटा।

३१८६. प्रति सं० १२। पत्र सं० २२३। आ० १३×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० १४३। **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—२२३ से आगे पत्र नहीं है।

३१८७. प्रति सं० १३। पत्र सं० २४२। आ० ११½×६½ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—पुराण। र० काल सं० १७८०। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

३१८८. प्रति सं० १४। पत्र सं० २३१। भाषा—हिन्दी। विषय—पुराण। र० काल सं० १७८० वैशाख सुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० ११९। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

विशेष—संवत् १७९३ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे द्वितीया शनौ लिखितोयं ग्रंथ। साधर्मी पंडित सुखलाल चेला श्री सुरेन्द्रकीर्ति का जानो।

विशेष—कुन्दनलाल तेरापंथी ने प्रतिलिपि की थी।

दोहा—

देश ढूंढाड सुहावनो, महावीर संस्थान।
जहां बैठ लेखन कीयो धर्म ध्यान चित आन।
तीन सिखिर मंडीप अति सौभै।
गीरद चहु कोर मन मोहे॥
बन उपवन सोभत अधिकार।
मानौं स्वर्गपुरी अवतार॥
दर्शन करन जात्री आवै।
धर्म ध्यान अति प्रीति बढावै॥
श्री जिनराज चरन सो नेह।
करतं सकल सुख पावै तेह॥
चन्दनपुर अकबर पुर जानि।
मन्दिर ढिग जैसिंह पुर आनि॥
[illegible]
पंडित दो नर हैं तिस थान॥
सुखानन्द सोभाचन्द जान।
ता उपदेश लिखी परान॥
मार्ग सुद दोज सो जान॥६॥
ता दिन लिख पूरन करी सो हरवंश सोसार।
पढैं सुनैं जो भाव सौ जो भवि उतरै पार॥

३१८९. प्रति सं० १५। पत्रसं० २३८। आ० १२¾×६ इञ्च। ले०काल सं० १८७८ भादवा बुदी ११। पूर्ण। वेष्टन सं० १४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मन्दिर करौली।

३१९०. प्रतिसं० १६। पत्रसं० ३३७। आ० १२¾×६½ इञ्च। भाष-हिन्दी पद्य। **विषय**—पुराण। र०काल सं० १७८० बैशाख सुदी ३। अपूर्ण। वे० सं० ४९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सोगानी मन्दिर करौली।

३१९१. प्रतिसं० १७। पत्र सं० २६७। भाषा—हिन्दी। **विषय**—पुराण। र० काल सं० १७८०। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टनसं० ८७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा।

३१९२. प्रतिसं० १८। पत्रसं० १८५। आ० १२×८½ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। **विषय**—पुराण। र० काल सं० १७८० बैशाख सुदी ३। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ५–९४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा।

३१९३. प्रतिसं० १९। पत्रसं० १४५। आ० १२×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। **विषय**—पुराण। र० काल सं० १७८०। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ६३। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा।

३१९४. **प्रतिसं० २०** । पत्रसं० ३१५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी विषय—पुराण । र० काल सं० १७८० । ले०काल सं० १८२८ । पूर्ण । वेष्टनसं० १७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

३१९५. **प्रतिसं० २० (क)** । पत्रसं० २४० । आ० १०½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । र०काल सं० १७८० । ले०कालसं० १८९४ कार्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४-९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर ।

विशेष—भाण्डारपाटन मध्ये श्रीशांतिनाथ चैत्यालये श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये ।

३१९६. **प्रतिसं० २१** । पत्रसं० १९० । आ० १२×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय—पुराण । र० काल सं० १७८० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२/२५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मंदिर मादवा ।

३१९७. **प्रतिसं० २२** । पत्रसं० २२७ । आ० १०½×५½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पुराण । र० काल सं १७८० । ले०काल सं० १८२८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७/२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, मादवा (राज०) ।

३१९८. **प्रतिसं० २३** । पत्रसं० २६५ । भाषा—हिन्दी । विषय—पुराण । र० काल १७८० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बड़ा पंचायती मन्दिर, डीग ।

विशेष—४-५ पंक्तियों का सम्मिश्रण है ।

३१९९. **प्रतिसं० २४** । पत्रसं० २८९ । आ० १२½ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य विषय—पुराण । र० काल सं० १७८० । ले० काल सं० १८१२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी चेतनदास पुरानी डीग ।

३२००. **प्रतिसं० २५** । पत्रसं० २३० । आ० १२½×५इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—पुराण । र० काल सं० १७८० बैशाख सुदी ३ । ले०काल सं० १७९२ कार्तिक सुदी....रविवार । पूर्ण । वेष्टन सं० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—ग्रंथ श्लोक सं० ७५०० । बयाना में पं० लालचन्दजी ने प्रतिलिपि की थी। श्री खुशाल ने ग्रंथ की प्रतिलिपि करवायी थी ।

३२०१. **प्रतिसं० २६**। पत्रसं० १८१ । भाषा—हिन्दी विषय—पुराण । र० काल १७८० बैशाख सुदी २ ।ले०काल सं० १८९९ कार्तिक सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—सुखलाल बुधसिंह ने भरतपुर में प्रतिलिपि करवाई थी ।

३२०२. **प्रतिसं० २७** । पत्रसं० ३०३ । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पुराण । र०काल सं०१७८० । ले० काल सं० १८१७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—सागरमल्ल ने भरतपुर में लिखवाया था ।

३२०३. **प्रति सं० २८** । पत्रसं० २९४ । भाषा-हिन्दी । विषय-पुराण । र० काल सं०१७८० । बैशाख सुदी ३ । ले०काल सं० १७९२ । पूर्ण । वेष्टनसं० १९८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर-भरतपुर ।

३२०४. **प्रति सं० २९** । पत्र सं० २९२ । ले०काल सं० १८१४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

विषय – काव्य एवं चरित

३२०५. अकलंक चरित्र— × । पत्र सं० ४१ । आ० ८½ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । **विषय**—चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १९८२ वैशाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

३२०६. अमरुक शतक— × । पत्र सं० १-९ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १८२० । वेष्टन सं० ७२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—देवकुमार कृत संस्कृत टीका सहित है ।

३२०७. अंजना चरित्र—**भुवनकीर्ति** । पत्र सं० २५ । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल १७०३ । ले० काल सं० १९६० । पूर्ण । वेष्टन सं० ७१९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

३२०८. अंजना सुन्दरी चउपई– **पुण्यसागर** । पत्र सं० ३२ । आ० ९½ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय–काव्य । र० काल सं० १६८९ सावण सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३८५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

अन्तिम भाग—

ते गछ दीपै दीपतउ साचउ उर मझार ।
वीर जिणेसर रो जिहां तीरथ अछइ उदार ।।

तासुपाटि अनुक्रम आलस सागर सूर ।
विनयराज कर्मसागरु वाचक दोइ सतूर ।।

तासु सीस पुण्यसागरु वाचक भणै एम ।
अंजनासुन्दर चउपई परणवचते प्रेम ।।

संवत सोल निवासीयै श्रावण मास रसाल ।
सुदि तिथि पंचम निर्मली ऋद्धि वृद्धि मंगल माल ।।
।। सर्वगाथा २४९ ।।

३२०९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १७२१ कार्तिक सुदी । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—मेडतापुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३२१०. अंबड चरित्र— × । पत्र सं० ३–५० । आ० ९¾ × ४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ९७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

श्रीखंड चतुर्थ आदेश समाप्त ।।

३२११. आदिनाथ चरित्र— × । पत्र सं० ३५ । आ० ८½ × ४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८९०। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—रचना गुटका के आकार में है ।

३२१२. आदिनाथ के दस भव— × । पत्रसं० १० । **भाषा**–हिन्दी । विषय–जीवन चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती भरतपुर ।

विशेष—पत्र ४ के बाद पद संग्रह हैं ।

३२१३. उत्तम चरित्र..... । पत्रसं० १३ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × पूर्ण । वेष्टन सं० १९७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—श्वेताम्बरनाथ के अनुसार 'धन्ना शालिभद्र' चरित्र दिया हुआ है ।

३२१४. ऋतु संहार—कालिदास ।पत्र ।सं० २१ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १८८२ आषाढ़ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक) ।

३२१५. करकण्डु चरित्र—मुनि कनकामर । पत्र सं० ३–७७ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—चरित्र काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

३२१६. करकण्डुचरित्र—भ०शुभचन्द्र । पत्रसं० ५८ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।विषय— चरित्र । र० काल सं० १६११ । ले०काल सं० १६७०। पूर्ण । वेष्टन सं० ४१ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

३२१७. प्रति सं० २ । पत्रसं० ९५–१६९ । आ० ११ × ४ इञ्च । ले० काल सं० १५७३ । अपूर्ण । वेष्टन सं० १६३, ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—संवत् १५७३ वर्षे श्री आदिजिनचैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक देवेन्द्रकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० विद्यानन्दिदेवा तत्पट्टे भ० लक्ष्मीचन्द्रदेवा स्तेषां पुस्तकं ।। श्री मल्लिभूषण पुस्तकमिदं ।

३२१८. काव्य संग्रह— × । पत्र सं० १५ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १९५८ सावन बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८६-७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर ।

विशेष—मेघाभ्युदय, वृन्दावन, चन्द्रदूत एवं केलिकाव्य आदि टीका सहित है ।

३२१९. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ६ । आ० ७×५ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । **विषय** काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा ।

विशेष—नवरत्न सम्बन्धी पद्य है ।

३२२०. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० २ । **ले०काल** × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोट्यों का नैणवा ।

३२२१. **किरातार्जुनीय—भारवि** । पत्र सं० १०८ । आ० ८$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३२२२. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १०२ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२८१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३२२३. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० ४४ । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२३८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

३२२४. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० १३४ । आ० ६ × ६ इञ्च । । ले०काल सं० १७६८ वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११३६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—अजमेर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३२२५. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० ४४ । आ० १०×४ इंच । ले० काल × । वेष्टन सं० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

३२२६. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० ११२ । आ० ११ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन सं० २६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—सामान्य टीका दी हुई है ।

३२२७. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० १४४ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ६ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन सं० २६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—मेघकुमार साधु की टीका सहित है ।

३२२८. **प्रतिसं० ८** । पत्र सं० १० । ले० काल × । पूर्ण । (प्रथम सर्ग है ।) वेष्टन सं० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर हाण्डावालों का डींग ।

३२२९. **प्रति सं० ९** । पत्रसं० ४३ । आ० ११×५$\frac{3}{4}$ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—धर्ममूर्ति शालिगराम के पठनार्थ द्विज हरिनारायण ने प्रतिलिपि की थी ।

३२३०. **प्रतिसं० १०** । पत्रसं० ५० । आ० ६×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—प्रारम्भ में लिखा है—संवत् १८६६ मिति पौष बुदी ११ को लिखी गई शिवराम के पठनार्थ।

३२३१. **प्रति सं० ११** । पत्र सं० १५५ । आ० १२½×४½ इञ्च । ले० काल सं० १७८५ आषाढ सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—प्रति व्याख्या सहित है।

३२३२. **प्रतिसं० १२** । । पत्रसं० ११४ । आ० ८½×४ इञ्च । ले० काल १७५० ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नागदी बूंदी ।

विशेष—लिपि विकृत है—१८ सर्ग तक है ।

३२३३. **प्रतिसं० १३** । पत्रसं० ७६ । आ० ६×५ इञ्च । **ले०काल सं० १६०७** चैत सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—११ सर्ग तक है । कहीं २ संस्कृत में शब्दार्थ दिये हुये हैं ।

३२३४. **प्रतिसं० १४** । पत्र सं० १२१ । आ० ११×४½ इंच । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३२३५. **प्रतिसं० १५** । पत्रसं० ४६ । आ० १०×६ इंच ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—११ सर्ग तक है ।

३२३६. **प्रतिसं० १६**। पत्र सं० ३२ । आ० ११½×४½ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३२३७. **प्रति सं० १७** । पत्रसं० ×। ले० काल सं० १७१२ भादवा सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनसं० २४२-६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—पं० भट्टनाथ कृत संस्कृत टीका सहित है

प्रशस्ति—संवत् १७१२ वर्षे भाद्रपद मासे शुक्ल पक्षे तृतीयां ·····लिपि सूक्ष्म है ।

३२३८. **कुमारपाल प्रबन्ध—हेमचन्द्राचार्य**। पत्रसं० ८-२४ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

३२३९. **कुमार संभव—कालिदास** । पत्र सं० ६६ । आ० १०½×४ । इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र०काल × । लेखन काल सं० १७८६ । वेष्टन सं० २८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर; जयपुर ।

विशेष—टोंक नगर में पं० रामचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

३२४०. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ३२ । आ० १०½ × ४ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन सं० २८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

३२४१. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० ४३ । आ० ८½ × ३ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन सं० २८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

३२४२. **प्रति सं० ४**। पत्र सं० ७४ । आ० ११×४½ इञ्च । ले०काल सं० १८४० पौष सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टौंक) ।

३२४३. **प्रति सं० ५**। पत्र सं० २४ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल सं० १८२२ । पूर्ण । वेष्टन २२४ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मंदिर राजमहल (टौंक) ।

विशेष—श्री चंपापुरी नगरे दाह्य चैत्यालये पं० वृन्दावनेन लिपि कृतं ।

३२४४. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० ५३ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नागदी बूंदी ।

विशेष—सात सर्ग तक है ।

३२४५. **प्रति सं० ७**। पत्र सं० ६० । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल सं० १७१६ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—शुक्रवासरे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भट्टारक जयकीर्ति के शिष्य पंडित गुणदास ने लिखा था ।

३२४६. **प्रति सं० ८**। पत्र सं० ३८ । आ० ११×४ इञ्च । ले० काल सं० १६९६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३५ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति—संवत् १६९६ वर्षे आषाढ़ बुदी द्वितीया शुक्रे श्री खरतरगच्छे भट्टारक श्री जिनचंद्र सूरिभिः तत् शिष्य सोमकीर्ति गणि तत् शिष्य कनकवर्द्धन मुनि तत् शिष्य कमल तिलक पठनार्थ लेखि ।

३२४७. **कुमारसंभव सटीक—मल्लिनाथ सूरि**। पत्र सं० ११४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—सातसर्ग तक है ।

३२४८. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ७६ । आ० ११×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

३२४९. **क्षत्रचूडामणि – आदीभसिंह** । पत्र सं० ४६ । आ० १३ × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३२५०. **खंडप्रशस्ति काव्य**— × । पत्र सं० ४ । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६०/२६९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

३२५१. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६१/२७० । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

३२५२. **गजसुकुमाल चरित्र—जिनसूरि** । पत्र सं० २० । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र०काल सं० १६९९ वैशाख सुदी ११ पूर्ण । वेष्टन सं० ७११ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३२५३. गजसिंहकुमार चरित्र—विनयचन्द्रसूरि। पत्रसं० २-३३। आ० ६×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र०काल ×। ले०काल सं० १७५४। अपूर्ण। वेष्टनसं० १०२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है।

अन्तिम पुष्पिका एवं प्रशस्ति निम्न प्रकार है :—

इति श्री चित्रकीयगच्छे श्री विनयचन्द्र सूरि विरचिते गजसिंह कुमार चरित्रे वेत्रवती देशना पूर्वभाव-स्मृता वर्णन दीक्षा मोक्ष प्राप्तिवर्णनो नाम पचम विश्राम सम्पूर्ण।

सं० १७५४ वर्षे आश्विन सुदी ६ भौमे श्री बृहत्खरतरगच्छे पीपल्ल शाखे श्री खेमशाखायां वाचक धर्मवाचना धर्म श्री १०८ ज्ञानराजजी तत् शिष्य सीहराजजी तत् विनय पंडित श्री अमरचन्द जी शिष्य रामचन्द्रेनालेखिभद्र भूयात्। श्रीमेदपाटदेशे विजय प्रधान महाराजाधिराज महाराणा श्री जैसिंहजी कुंवरश्री अमरसिंह जी विजय राज्ये बहुदिन श्री पोटलग्रामु चतुर्मास।

३२५४. गुणवर्मा चरित्र—माणिक्यसुन्दर सूरि। पत्रसं० ७४। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र०काल ×। ले०काल सं० १८७४। पूर्ण। वेष्टनसं० ६०१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

विशेष—मिरजापुर में प्रति लिखी गई थी।

३२५५. गौतम स्वामी चरित्र—धर्मचन्द्र। पत्रसं० ५२। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र०काल सं० १७२६ ज्येष्ठ सुदी २। ले०काल सं० १८१७ वैशाख सुदी १३। पूर्ण। वेष्टनसं० १०५०। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—अजयगढ़ में जिनचैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी।

३२५६. प्रतिसं० २। पत्रसं० ५२। आ० ११½×४½ इंच। ले०काल × पूर्ण। वेष्टनसं० १५६४। **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

३२५७. प्रतिसं० ३। पत्र सं० ४४। आ० ११ × ५½ इञ्च। ले०काल सं० १८४० माह बुदी १। वेष्टनसं० १५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—सवाई प्रतापसिंह के शासन काल में श्री अक्षतराम के पुत्र सेवाराम स्वयं ने प्रतिलिपि की थी।

३२५८. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३४। आ० १२½×४½ इञ्च। ले० काल सं० १७२६ ज्येष्ठ सुदी २। वेष्टन सं० १५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—प्रति रचनाकाल के समय ही प्रतिलिपि की हुई थी। प्रतिलिपिकार पं० दामोदर थे।

३२५९. प्रति सं० ५। पत्र सं० ५०। आ० १२×३½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ९८। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

३२५९. प्रति सं० ६। पत्रसं० ५०। आ० १०×५ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ९८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—भगवन्ता तनसुखराय फतेहपुर वालों ने पुरोहित मोतीराम से प्रतिलिपि कराई थी।

३२६०. **प्रतिसं० ६**। पत्रसं० ५६ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल सं० १८४२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—सवाई जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३२६१. **घटकर्पर काव्य—घटकर्पर** । पत्रसं० ४ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र०काल × । ले० काल × । वेष्टनसं० ३०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३२६२. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० ४ । आ० १०½×५ इंच । र०काल× । ले०काल × । वेष्टनसं० ३१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

३२६३. **प्रतिसं० ३**। पत्र सं० २ । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन सं० ३११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

३२६४. **प्रतिसं० ४**। पत्रसं० ५ । आ० १२ × ४½ इञ्च । ले०काल सं० १६०४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

३२६५. **चन्दनाचरित्र—भ० शुभचन्द्र** । पत्रसं० ३० । आ० १०×४½ इञ्च । **भाषा**-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल×। ले०काल×। पूर्ण । वेष्टनसं० १२३७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

३२६६. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० ३३ । आ० ११×५½ इंच । ले० काल सं० १८३२ आषाढ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनसं० १७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन-मन्दिर, लश्कर जयपुर ।

विशेष—जयपुर के लश्कर के मन्दिर में सुखराम साह ने प्रतिलिपि की थी ।

३२६७. **चन्द्रदूत काव्य-विनयप्रभ** । पत्र सं० १ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र०काल × । ले० काल सं० १८२५ आषाढ । वेष्टन सं० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

३२६८. **चन्द्रप्रभचरित्र—यशःकीर्ति** । पत्र सं० १२१ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा ।

३२६९. **चन्द्रप्रभु चरित्र-वीरनंदि** । पत्रसं० ६७ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र०काल सं० १०८२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—जीर्ण शीर्ण प्रति है ।

३२७०. **प्रति सं० २**। पत्र सं० १२२ । आ० ११½×५ इंच । ले०काल सं० १६७६ भादवा सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३२७१. **प्रति सं० ३**। पत्र सं० १२ । आ० ८×६½ इञ्च । ले०काल × । वेष्टनसं० ६४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन लश्कर मन्दिर जयपुर ।

केवल प्रथम व द्वितीय सर्ग जिसमें न्याय प्रकरण है-दिये हैं । प्रथम सर्ग अपूर्ण है ।

३२७२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३८ । आ० १०$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । ले० काल सं० १८२६ बैशाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—दीर्घ नगर जवाहरगंज में चेतराम खण्डेलवाल सेठी ने प्रतिलिपि कराई थी ।

३२७३. प्रति सं० ५ । पत्रसं० १२३ । आ० १२×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३२७४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२० । ले० कालसं० × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर हृण्डावालों का डीग ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है तथा अलग २ अध्याय है ।

३२७५. प्रति सं० ७ । पत्रसं० ११६ । ले० काल सं० १७२६ सादवा सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६–४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

३२७६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३–२०४ । आ० ११×४ इंच । ले० काल सं० १६०८ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३८७/२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

संवत् १६०८ वर्षे आषाढ मासे शुक्ल पक्षे ११ तिथौ रविवासरे सुरत्राण श्री महमूद राज्य प्रवर्तमाने श्री गंधार मन्दिरे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये—

इसके आगे का पत्र नहीं है ।

३२७७. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ३–९५ । आ० ११×४ इञ्च । ले० काल सं १७२२ आसोज सुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टन सं० २६७/२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—बीच २ में पत्र चिपके हुए है तथा कुछ पत्र भी नहीं है । प्रति जीर्ण है ।

प्रशस्ति—सं० १७२६ में कल्याणकीर्ति के शिष्य ब्रह्मचारी संघ जिष्णु ने सागपत्तन में श्री पुरुजिन चैत्यालय में स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३२७८. प्रति सं० १० । पत्र सं० ८४ । आ० ९$\frac{1}{2}$×७ इञ्च । ले० काल सं० १८९९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—प्रशस्ति—गिनी बैशाख बुदी ९ मंगलवार दिने संवत्१८९९ का शाके १७६४ का साल का । लिखी नगरणा रायसिंह का टोडा में श्री नेमिनाथ चैत्यालये लिखी आचार्य श्रीकीर्तिजी

३२७९. प्रति सं० ११ । पत्रसं० ८६ । आ० १२×८$\frac{1}{2}$ इंच । ले० काल सं० १९४९ आषाढ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७९ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इंदरगढ ।

३२८०. चन्द्रप्रभ चरित्र—सकलकीर्ति । पत्रसं० ६२–५३ । आ० १२$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

३२८१. चन्द्रप्रभ चरित्र—श्रीचन्द । पत्रसं० १२९ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १७९३ कार्तिक बुदी ९ । पूर्ण वेष्टन सं० २२१–२९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपर ।

३२८२. चन्द्रप्रभ चरित्र—हीरालाल । पत्र सं० २३२ । आ० १२½×७७ इञ्च । भाषा—हिन्दी प० । विषय-चरित्र । र० काल सं० १६१३ । ले०काल सं १६६३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—प्यारेलाल ने देवीदयाल पण्डित से वडवत नगर में प्रतिलिपि कराई ।

३२८३. चन्द्रप्रभ काव्य भाषा टीका । पत्र सं० १३७ । भाषा—हिन्दी । विषय—काव्य । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

३२८४. चन्द्रप्रभ काव्य टीका । पत्र सं० ५० । भाषा—हिन्दी विषय—काव्य । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वे०सं० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

३२८५. चारुदत्त चरित्र—दीक्षित देवदत्त । पत्रसं० । १४२ । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १८४७ । पूर्ण । वे. सं० २७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—रामप्रसाद कायस्थ ने प्रतिलिपि की थी ।

३२८६. जम्बूस्वामी चरित (जम्बूसामि चरिउ)—महाकवि वीर । पत्र सं० ६६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—काव्य । र०काल सं० १०७६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३२८७. जम्बूस्वामीचरित्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र सं० ६२ । आ० १०¾×४¾ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल सं० १६६६ चैत्र बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२६२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३२८८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५३ । आ० १०¾ × ४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३३३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३२८९. प्रति सं० ३ । पत्रसं० ११२ । आ० १०¾×४½ इञ्च । ले०काल सं० १८०६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३४५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—उग्रवास मध्ये श्री नथमल बटावियां । खण्डेलवाल लुहाडिया गोत्रे ।

३२९०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८६ । ले० काल सं० १६८५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर डीग ।

३२९१. प्रतिसं० ५ । पत्र सं० ७९ । आ० ११½×४ इञ्च । ले० काल सं० १७०० माघ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२४/५२ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । बीच में कुछ पत्र नहीं हैं । संवत् १७०० में उदयपुर में संभवनाथ मंदिर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३२९२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६६ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल सं० १६६७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६६७ वर्षे भादवा सुदी १ दिने श्री वाग्वरदेशे लिखितं पं० कृष्णदासेन ।

३२९३. **प्रति सं० ७** । पत्रसं० ९१ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण वेष्टन सं० २५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

३२९४. **जम्बूस्वामी चरित्र—ब्रह्म जिनदास** । पत्र सं० ९३ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय चरित । र०काल × । ले०काल सं० १७०६ कार्तिक सुदी ५ । वेष्टन सं० ३ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—विस्तृत प्रशस्ति दी हुई है ।

३२९५. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ८४ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४६० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३२९६. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० १२१ । आ० ९½ × ४ इञ्च । ले०काल सं० १८२८ मंगसिर सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४०१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३२९७. **प्रतिसं० ४** । पत्र सं० १०९ । आ० ११½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० २०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

३२९८. **प्रति सं० ५** । पत्रसं० ७५ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

३२९९. **प्रतिसं० ६** । पत्र सं० ६८ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । ले० काल सं० १६७० । पूर्ण । वेष्टन सं० २६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

३३००. **प्रतिसं० ७** । पत्र सं० ९२ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १६५१ आसोज सुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

प्रशस्ति—संवत् १६५१ वर्षे आश्विन सुदी ९ शुक्रवासरे **मगधाक्ष** देशे राजाधिराज श्री मानसिंह राज्य प्रवर्तमाने श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये ।

३३०१. **प्रति सं० ८** । पत्र सं० १५४ । आ० ८½ × ५ इञ्च । ले०काल सं० १८७४ आषाढ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नागदी बूंदी ।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति के गुरु भ्राता कृष्णचन्द्र ने दौलतिराव महाराज के कटक में लिखा गया ।

३३०२. **प्रति सं० ९** । पत्र सं० ९६ । आ० १०×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, चौगान बूंदी ।

३३०३. **प्रतिसं० १०** । पत्रसं० ११६ । आ० १०×५ इञ्च । ले० काल सं० १६३२ । पूर्ण । वेष्टनसं० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—चम्पावती में प्रतिलिपि की गयी थी । प्रशस्ति अपूर्ण है ।

३३०४. **प्रति सं० ११** । पत्रसं० ८८ । आ० १०½ × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २०४–८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

३३०५. जम्बूस्वामीचरित्र-पाण्डे जिनदास। पत्र सं० ३-४६ । आ० १०½×५½ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी (प०) । विषय—चरित्र । र०काल सं० १६४२ भादवा बुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

विशेष—प्रति अशुद्ध है ।

३३०६. प्रति सं० २ । पत्रसं० ६७ । आ० ८ × ४ इञ्च । ले०काल सं० १८८६ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

विशेष—प्रतिजीर्ण है । कामा में प्रतिलिपि हुई थी ।

३३०७. प्रति सं० ३ । पत्रसं० १३० । आ० ४½ × ४½ इञ्च । ले०काल सं० १८२२ मार्गशीर्ष सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—प्रति गुटकाकार है । ग्यानीराम ने सवाई जैपुर में प्रतिलिपि की थी । पत्र १२७ से चौवीसी वीनती विनोदीलाल लालचंद कृत और है ।

३३०८. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० १२५ । आ० ६ × ५½ इञ्च । ले०काल सं० १९२५ फागुन सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८/५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती दूनी (टोंक) ।

अन्तिम—

संवत सोलासै सौ भए, वियालीस ता उपरि गए ।
भादों बुदि पाचौ गुरुवार ता दिन कथा कीयो उचार ।।
अकबर पातसाह कउ राज, कीन्ही कथा धर्म के काजु ।
कोर धर्म निधि पासा साह, टोडर सुत आगरे सनाह ।।
ताकै नाव कथा ईह धरी, मथुरा पासै नित ही करी ।।
रिखवदास अर मोहनदास, रूपमंगदु अरु लक्ष्मीदास ।
धर्म बुद्धि तुम्हारे हियो नित्य, राजकरहुँ परिवार संजुत ।।
पढ़ै सुनै जे मन दे कोय, मन बछित फल पावै सोय ।।१।।

मिती फागुन सुदी १ शुक्रवार सं० १९२५ को सदा सुख वैद ने पूर्ण नगर में प्रतिलिपि की थी ।

३३०९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २६ । आ० ११½×८ इञ्च । ले०काल सं० १८५४ । अपूर्ण । वे० सं० ४९/२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती दूनी (टोंक) ।

३३१०. प्रतिसं ६ । पत्रसं० २५२ । आ० १३ × ६½ इंच । ले०काल सं० १९२० । पूर्ण । वेष्टन सं० ६९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—सं० १८४१ की प्रति से प्रतिलिपि की गई थी ।

३३११. प्रतिसं० ७ । पत्रसं० २८ । आ० ११¾×६½ इंच । ले०काल सं० १९६५ मंगसिर सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—प्रति सुन्दर है ।

३३१२. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३६ । आ० ११×५½ इंच । ले० काल सं० १७४५ वैशाख सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—ताजगंज आगरा में प्रतिलिपि हुई ।

३३१३. **प्रतिसं० ९**। पत्रसं० २०। आ० १०½×७ इञ्च। ले० काल सं० १९५५ कार्तिक सुदी १४। पूर्ण। वेष्टनसं० ६/७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर

३३१४. **प्रतिसं० १०**। पत्र सं० २१। ले०काल सं० १९२९। ज्येष्ठ बुदी १२। पूर्ण। वेष्टन सं० ७/४५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर।

३३२५. **प्रति सं० ११**। पत्रसं० ६२। आ० ११×५¾ इंच। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० १८१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

३३१६. **प्रतिसं० १२**। पत्रसं० २३। आ० १२½×६½ इञ्च। ले०काल सं० १९०७। पूर्ण। वेष्टनसं० २७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

३३१७. **प्रति सं० १३**। पत्रसं० २४। ले० काल सं० १९३०। पूर्ण। वेष्टनसं० २८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा।

३३१८. **प्रति सं० १४**। पत्रसं० १८। आ० १२½×६ इंच। ले० काल सं० १८०० माघ बुदी ८। पूर्ण। वेष्टन सं० ४६/४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

३३१९. **जम्बूस्वामी चरित्र—नाथूराम लमेचू**। पत्रसं० २८। आ० ११ × ७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी प०। विषय—चरित्र। र०काल ×। ले० काल सं० १९८६ आषाढ़ सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन सं० १६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—हरदत्तराय ने सं० १९९१ कार्तिक सुदी १५ अष्टाह्निका पर चढ़ाया था।

३३२०. **जम्बू स्वामी चरित्र**—×। पत्र सं० ८। भाषा-हिन्दी। विषय-चरित्र। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ७३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

३३२१. **जम्बू स्वामी चरित्र**—×। पत्र सं० २०। आ० २०½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य प्रभाव। विषय—चरित्र। र०काल ×। ले० काल सं० १८२६। पूर्ण। वेष्टन सं० २७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

विशेष—संवत् १८२६ जेष्ठ बुदी ५ बार सोमे लखीवे साजपुर मध्ये लीखतं आराजा सोना।

३३२२. **जम्बू स्वामी चरित्र**—×। पत्र सं० ९। आ० ९×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी (ग०)। विषय-चरित्र। र०काल ×। ले० काल सं० १७४८ माह सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन सं० ९९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

३३२३. **जम्बू स्वामी चरित्र**—×। पत्र सं० ७। आ० ११ × ६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-चरित्र। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० ९५/८२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)।

३३२४. **जम्बू स्वामी चरित्र**—×। पत्र सं० १३४। आ० १० × ४ इञ्च। भाषा-प्राकृत-संस्कृत। विषय-चरित्र। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ९५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—बीच २ में पत्र नहीं है।

३३२५. **जयकुमार चरित्र—ब्र. कामराज**। पत्र सं० ६१ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—६१ से आगे के पत्र नहीं है ।

३३२६. **प्रति सं० २**। पत्र सं० १३२ । आ० ९$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल सं० १८१८ पौष सुदी १२ । अपूर्ण । वेष्टन सं० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—पत्र सं० ८२ से ९५ व ११२ से १३१ तक नहीं हैं ।

भरतपुर नगर में पाण्डे बखतराम से साह श्री चूडामणि ने प्रतिलिपि कराई थी ।

३३२७. **जसहरचरिउ—पुष्पदंत**। पत्र सं० ६१ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४ इंच । भाषा—अपभ्रंश । विषय—काव्य र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

३३२८. **प्रति सं० २**। पत्र सं० ६३ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी) ।

३३२९. **जसहर चरिउ**— × । पत्र सं० २९ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १५७८ आसोज सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९७० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—प्रति संस्कृत टिप्पण सहित है ।

३३३०. **जिनदत्त चरित्र—गुणभद्राचार्य**। पत्र सं० ५३ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० १९४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

३३३१. **प्रति सं० २**। पत्र सं० ४५ । आ० ११ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन सं० १९५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

३३३२. **प्रति सं० ३**। पत्र सं० ५४ । आ० ९ × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३३३३. **प्रति सं० ४**। पत्र सं० ३६ । आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इंच । ले० काल सं० १८६२ । पूर्ण । वे० सं० २३४ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—कोटा के रामपुरा में श्री उम्मेदसिंह के राज्यकाल में प्रतिलिपि हुई थी ।

३३३४. **प्रति संख्या ५**। पत्र सं० २८ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—यह पुस्तक सदासुख जी ने जती रामचन्द को दी थी ।

३३३५. **प्रति सं० ६**। पत्र सं० ६१ । आ० ९$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

३३३६. **प्रति सं० ७**। पत्र सं० ४३। आ० १०½×४½ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

३३३७. **प्रतिसं० ८**। पत्रसं० ५०। आ० ११½×५ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—भगवतीदास ने प्रतिलिपि की तथा नेमिदास ने संशोधित की थी।

३३३८. **प्रतिसं० ९**। पत्रसं० ३९। आ० १२½×५½ इञ्च। ले० काल सं० १६१६ मंगसिर बुदी ३। पूर्ण। वेष्टन सं० ११६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रशस्ति पूर्ण है। गिरिपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

३३३९. **जिनदत्त चरित्र—पं० लाखू**। पत्र सं० १६४। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा—अपभ्रंश। विषय—चरित्र। र० काल सं० १२७५। ले० काल × । अपूर्ण। जीर्ण शीर्ण। वेष्टन सं० ६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बड़ा बीसपंथी दौसा।

३३४०. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० १००–१५९। आ० १०½×५ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ६९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बीसपंथी दौसा।

३३४१. **जिनदत्त चरित्र—रत्नभूषण सूरि**। पत्रसं० २८। भाषा—हिन्दी। विषय—चरित्र। र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ८८/७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सम्भवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—हांसोट नगर में ग्रंथ रचना हुई थी।

३३४२. **प्रति सं० २**। पत्रसं० २३। ले० काल सं० १८००। **पूर्ण**। वेष्टन सं० ९६/७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

३३४३. **प्रतिसं० ३**। पत्र सं० ३९। ले० काल × । **पूर्ण**। वेष्टन सं० ९७/७१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर।

३३४४. **जिनदत्त चरित्र—** × । पत्र सं० ६२। आ० १२½×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय—चरित्र। र० काल × । ले० काल सं० १९८६ ज्येष्ठ बुदी ११। पूर्ण। वेष्टन सं० १६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

३३४५. **जिनदत्त चरित्र-विश्वभूषण**। पत्रसं० ७१। आ० ११½×४½ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ७७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना।

प्रारम्भ—

श्रीजिन वन्दौ भावसों तोरि मदन को बाण।
मोह महातम पटल कों प्रगट भयो मनु भानु ॥१॥

मध्यम भाग—

बनितासों बातें कहैं आयो हमारो देस।
सुमर राम चम्पापुरी बन में कियो प्रवेस॥

चौपई

दम्पति बन में पहुंचे जाइ सूर्य अस्त रजनी भई आइ ।
कहो प्रिया वनवारि मिटाइ, समनु करो विस्मै सुखपाई ॥३६॥

अन्तिम पाठ—

संवत सत्रहसै अरुतीस, नाम प्रमोदा ब्रह्मावीस,
अगहन वदि पांचै रविवार, अश्लेष ऐन्द्र जोग सुवार ।
यह चरित्र पूर्ण जब भयौ, अति प्रमोद कविता चित ठयो,
यह जिनदत्त चरित्र रसाल, तामैं भासौ कथा विशाल ।
भव्यकंजन पढियो चितुलाइ
पढत सुनत सम्यकत्व दिठाई ।
धर्म विरुद्ध छन्द करि छीन,
ताहि बनायौ पस्यौ परवीन ।
भव्य हेत मैं रच्यौ चरित्र, सुनौ भव्य चित दै वृष मित्र ।
याकै सुनत कुमति सब जाइ, सम्यक्दिष्टि सुध होइ भाइ ॥६४॥
याके सुनत पुण्य की वृद्धि, याके सुनत होई शुद्ध रिद्धि ।
यातै सुनौ भव्य चितलाइ, याके सुनत पाप मिट जाइ ।
याहि सुनत सुख सम्पति होई, यातै सुनत रोग नहीं कोइ ।
याके सुनत दुःख मिटि जाई, याकै सुनत सुख होई भाइ ॥६६॥
नर नारि मन देकै सुनौ, ताकौ जसु तिलोक में गनौ ।
यह चरित्र सुनियो मन लाइ, विश्वभूषण मुनि कहत बनाइ ॥

छप्पै

गंगा सागर मेर खोट आसापति मंगा ।
ब्रह्मा विष्णु महेस तोय निधि गौरी अंगा ।
जोलौं जिनवर धर्म तारा भुव मंडल सोभा ।
जो लौं सिद्धसमूह मुक्ति रामा सूं लोभा ।
तो लौं तिष्ठौ ग्रंथ यह श्री जिनदत्त चरित्र ।
विश्वभूषण भाषा करी सुनियो भविजन मित्त ॥६८॥

॥ इति संधिया दै ॥

३३४६. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ७८ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल सं० १८२३ चैत बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

विशेष—सोमचन्द भोजीराम अग्रवाल जैन ने करौली में प्रतिलिपि करवाई थी ।

३३४७. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ५२ । आ० १२½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर ।

३३४८. **प्रति सं० ४** । पत्र सं. १०४ । आ० ६½×४½ इञ्च । ले० काल सं० १८७४ अगहन बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ६५/८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सोगाणी करौली ।

विशेष —ब्रजलाल ने गुमानीराम से करोली में प्रतिलिपि करवाई थी।

३३४९. **प्रतिसं० ५**। पत्रसं० ७१। ले०काल सं० १८०० चैत सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन सं० ३६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

३३५०. **प्रति सं० ६**। पत्र सं० ८७। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

३३५१. **प्रतिसं० ७**। पत्रसं० ५१। आकार १३ × ५½ इञ्च। लेखनकाल सं० १९५९ फागुन सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० ६३/८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर, अलवर।

३३५२. **जिनदत्त चरित्र भाषा—कमलनयन**। पत्र सं० ६६। आ० १०½ × ८ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र०काल सं० १९७०। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २८३। **प्राप्ति स्थान**—ऐ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

विशेष— ० ७ ९ १

गगन ऋषीश्वर रंध्रफुनि चन्दतथा परमांन।
सब मिल कीजे एकद्धे संवतसर पहिचान॥

३३५३. **जीवन्धर चरित्र**— ×। पत्र सं० १५०। आ०.११×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र०काल ×। ले० काल सं० १९०४। पूर्ण। वेष्टन सं० १२५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बून्दी।

३३५४. **जीवन्धर चरित्र—शुभचन्द्र**। पत्र सं० ११६। आ० ११×४½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र०काल सं० १६०७। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४४। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

३३५५. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० ८३। आ० ११½ × ५ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ९९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

३३५६. **प्रतिसं० ३**। पत्रसं० ७६। आ० १२ × ६½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २०९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

३३५७. **प्रति सं० ४**। पत्रसं० ९१। आ० ११×५ इञ्च। ले०काल सं० १९१५। पूर्ण। वेष्टन सं० ६९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती दूनी (टोंक)

प्रशस्ति—संवत् १९१५ वर्षे फाल्गुन बुदी ८ बुधे श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्द-कुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री विजयकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र देवास्तस्य शिष्य आचार्य श्री विमल-कीर्तिस्तस्य शिष्य ब्रह्म गोपाल पठनार्थं जीवंधर चरित्र अनेक सीमंत राज सुसेवित चरणारविंद चतुरंगसेन्य सकल लक्ष्मी लक्षित राउल आसकरण राजे श्रीमज्जिन प्रासादराजि विराजिते सकलद्विसकुल श्रावकजन संभृत शुद्ध सम्यक्त्वादि द्वादशव्रत प्रतिपालक षट् जीवनकाय दयोरलंकृत चातुर्य्य गुणालंकृतविग्रह सदासद् गुर्वाज्ञा प्रतिपालन पुरेगो विराजिते गिरासु गिरपुरे जिन पूजनाया गच्छद् गच्छदिभः बहुभि स्त्रीपुरषै नित्योत्सवे विराजिते निर्दलित कलि लीला विलास श्री आदिनाथ चैत्यालये हुंबडान्वये स्वबंशमंडण मणिसमान संघवी धमसी तस्य भा० धम्मा तयोःसुत प्रथम जिनयज्ञप्रतीनायजनपतिसर्ग चतुर्विधदानंचतुरसाधार्मिक जनदान महोत्सव यशत संतति विहित-पुण्य-परम्परा पवित्रितःनिजकुलाकाश सूर्यसम संघवी जीवा तस्य भार्या जीवादे तयोपुत्र

जगमाल तस्य भार्तृ सं० जयमाल भार्या जयतादे तस्य भगनी पूर्व पुण्यार्पित पूर्ण ललित लक्षण तल्लक्षना सभर्तृ गणोभूया पक्ष तिलकोपमा सीलेन सीता संमामाथाधिका जयवंती द्वितीया भगनी मांका निमित्य जीवंधर चरित्र शास्त्रं लिखाप्यदत्तं कर्मक्षयार्थं ।

३३५८. जीवन्धर चरित्र—रइधू । पत्र सं० १८५ । आ० ११½×४½ इंच । **भाषा**—अपभ्रंश । **विषय**—चरित्र । र० काल सं० [illegible] । ले० काल सं० [illegible] भादवा बुदी ७ पूर्ण । **वेष्टन सं०** ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—अकबर के शासनकाल में रोहितगढ़ दुर्ग में बालचन्द सिंगल ने मंडलाचार्य सहसकीर्ति के लिए पांडे केसर से प्रतिलिपि करवायी थी । प्रशस्ति काफी बडी है ।

३३५९. जीवन्धर चरित्र—दौलतराम कासलीवाल । पत्रसं० ६० । आ० १०½×६½ इंच । भाषा हिन्दी (पद्य) । विषय—चरित्र । र० काल सं० १८०५ आषाढ सुदी २ । ले० काल सं० १८०५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—स्वयं ग्रंथकार के हाथ की लिखि हुई मूलप्रति है । इस ग्रंथ की रचना उदयपुर धानमंडी अग्रवाल जैन मन्दिर में सं १८०५ में हुई थी । यह ग्रंथ अब तक प्राप्त रचनाओं के अतिरिक्त है तथा एक सुन्दर प्रबन्ध काव्य है ।

३३६०. जीवन्धर चरित्र प्रबन्ध—भट्टारक यश:कीर्ति । पत्र सं० ३१ । **भाषा**—हिन्दी । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १८९३ भादवा बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०७/६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—दक्षिणदेश में गुरमग्राम में चन्द्रप्रभु चैत्यालय में हुंमडजातीय लघुशाखाइ में बाई ज्येष्ठी ताराचन्द बेटी श्री गुजरदेये मुमेई (मुंबई) ग्रामे ज्ञानावरणकर्म क्षयार्थं शास्त्रदाना करनाव ।

३३६१. जीवन्धर चरित्र—नथमल बिलाला । पत्रसं० १०५ । आ० १४½×८½ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । र० काल सं० १८३५ कार्तिक सुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विषय—गोरखराम की धर्मपत्नी जड़िया की माता ने वीर सं० २४४२ में बड़े मंदिर फतेहपुर में चढ़ाया था ।

३३६२. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ४४ । आ० ९×६ इंच । ले० काल × पूर्ण । वेष्टन सं० ८७ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगन बूंदी ।

३३६३. प्रति सं० ३ । पत्रसं० ९३ । आ० १२×६ इंच । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टन सं० १५० । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

३३६४. प्रति सं० ४ । पत्रसं० १९१ । आ० ११½×५½ इंच । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टन सं० १७ । प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पंचायती करौली ।

विशेष—करौली में बुधलाल ने लिखवाया था ।

३३६५. प्रतिसं० ५ । पत्र सं० ११४ । आ० १२×६½ इंच । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टन सं०६५–११४ । प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—तेरापंथी चिमनलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३३६६. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० ८७ । आ० ११ × ८½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १३५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष —दौसा में प्रतिलिपि हुई थी ।

३३६७. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० १०५ । ले० काल सं० १६३२ । **पूर्ण** । वेष्टन सं० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

३३६८. **प्रति सं० ८** । पत्र सं० २१३ । आ० १३½ × ६ इञ्च । ले०काल सं० १८६८ भादवा सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०/६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सौगानी करौली ।

३३६९. **प्रति सं० ९** । पत्र सं० १३७ । आ० १३ × ६ इंच । ले०काल सं० १८३९ भादवा बुदी ३ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६० । **प्राप्तिस्थान** दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

विशेष-- पत्र २ से ४९ तक नहीं है । नथमल बिलाला ने अपने हाथों से हीरापुर में लिखा ।

३३७०. **प्रति सं० १०** । पत्रसं० १८४ । आ० ११½ × ५ ½ इञ्च । ले०काल सं० १८३९ भादवा बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

विशेष – संवत् अष्टादस सतक गुनतालीस विचार ।
भादों बदी तृतीया दिवस सहसरस्म वर वार ॥
चरित्र सुलिख पूरन कियो हीरापुरी मझार ।
नथमल ने निजकर थकी, धर्म हेतु निरधार ॥

३३७१. **प्रति सं० ११** । पत्रसं० १३० । ले० काल सं० १८९१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डावालों का डीग ।

विशेष —गोपालदासजी दीघ (डीग) वालों ने आगरे में प्रतिलिपि कराई थी ।

३३७२. **प्रति सं० १२** । पत्रसं० ११-१४६ । आ० १२½ × ७½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ७१ । **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

३३७३. **प्रति सं० १३** । पत्र सं० १२७ । आ० १३ × ५½ इञ्च । ले० काल सं० १८६७ भादवा सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

विशेष –आलमचन्द के पुत्र खिमानंद तथा विजयराम खंडेलवाल बनावरी गोत्रीय ने बयाना में प्रतिलिपि की । हीरापुर (हिण्डौन) के जती बसन्त ने बयाना में प्रतिलिपि की की थी ।

३३७४. **प्रति सं० १४** । पत्रसं० १५२ । आ० १२ × ६ ½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष प्रशस्ति वाला अंतिम पत्र नहीं हैं ।

३३७५. **प्रतिसं०१५** । पत्रसं० १३५ । आ० १२½ × ७½ इञ्च । ले० काल १९५६ चैत्र बुदी ५ पूर्ण । वेष्टनसं० ४८० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन, मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष – बद्रीनारायण ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

३३७६. **प्रतिसं० १६** । पत्रसं० ८५ । ले० काल सं० १८९६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७८१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।

३३७७. **प्रति सं० १७।** पत्रसं० १४६। आ० ८½×६½ इञ्च। ले० काल ×। **पूर्ण।** वेष्टन सं० ७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मंदिर अलवर।

३३७८. **प्रति सं० १८।** पत्रसं० २११। आ० १३×८ इञ्च। ले० काल १६६२ भादवा बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० ६४, २०४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर।

३३७९. **प्रति सं० १९।** पत्रसं० ११७। ले० कालसं० १६६८ मंगसिर बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० ६५/२०४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर।

३३८०. **प्रति सं० २०।** पत्र सं० ६७–१०७। आ० १२×८ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ८४।। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटयों का नैणवा।

३३८१. **प्रति सं० २१।** पत्रसं० १२०। आ० १३½×६½ इञ्च। ले० काल सं० १६०५। पूर्ण। वेष्टन सं० ५७। **प्राप्ति स्थान**—तेरहपंथी दि० जैन मन्दिर नैणवा।

३३८२. **णायकुमारचरित्त—पुष्पदन्त।** पत्रसं० ८२। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा—अपभ्रंश। विषय—चरित्र। र० काल ×। ले० काल सं० १६२५। अपूर्ण। वेष्टन सं० २५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा।

३३८३. **प्रति सं० २।** पत्र सं० ६६। आ० १०×६ इञ्च। ले० काल सं० १५६४ फाल्गुण बुदी १४। पूर्ण। वेष्टन सं० ३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष— जिनचन्द्राम्नाये इक्ष्वाकुवंशे गोलाराऽन्वये साधु वीरसेन पंचमी व्रतो द्यापनं लिखायितम्।

३३८४. **प्रति सं० ३।** पत्रसं० ३–४८। आ० १०½ × ४½ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० १५। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—आदि अन्त भाग नहीं है।

३३८५. **जेमिचरिउ—महाकवि दामोदर।** पत्रसं० ६२। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—अपभ्रंश। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर तेरहपंथी दौसा।

विशेष—६२ से आगे पत्र नहीं है।

३३८६. **त्रिषष्ठिशलाका पुरुषचरित्र—हेमचन्द्राचार्य।** पत्रसं० १६-११७। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ६६। **प्राप्ति स्थान**—तेरहपंथी दि० जैन मन्दिर बसवा।

३३८७. **दोपालिका चरित्र— ×।** पत्र सं० ४। आ० ६×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय—चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५२४। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—मुनिशुभकीर्ति लिखितं।

३३८८. **दुर्गमबोध सटीक— ×।** पत्रसं० ४०। आ० १४×६½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—काव्य। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० १३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी।

३३८९. **वुर्घट काव्य** × । पत्रसं० ६ । आ० ११½ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० ३१४ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर, लश्कर, जयपुर ।

३३९०. **धन्यकुमार चरित्र—गुणभद्राचार्य** । पत्र सं० ४० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३३९१. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ६३ । आ० ११×४ इंच । ले०काल सं० १५९५ ज्येष्ठ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—देवनाम नगर में पार्श्वनाथ चैत्यालय में श्री सूर्य सेन के राज्य में व श्री रावत वैरसल के राज्य में बाकुलीवाल गोत्र वाले सा० फौरात तथा उनके वंशजों ने प्रतिलिपि करायी थी ।

३३९२. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० ५२ । आ० ११ × ४ इञ्च । ले०काल सं० १५९५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७९/३२ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५९५ वर्षे ज्येष्ठसुदी ११ बृहस्पतिवासरे श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदि देवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्रदेवास्तदाम्नाये हुंबडज्ञातान्वये कांधा बालगोत्रे सा० चेखाद्वार्या चोरूकिरि सा० नाथू द्वि० नल्ह तृतीय गागा । नाथू भार्या नथएश्री द्वि नेमा तृ० भुंभू । नाल्हा भार्या नारगदे । गंगाभार्या गौरादें एतेषां मध्ये सा० नाथू इदं शास्त्र लिखाप्य मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रार्य दत्तं···· यह पुस्तक इन्दरगढ़ मंदिर की है ।

३३९३. **प्रतिसं० ४** । पत्र सं० ४४ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १६७६ भादवा सुदी २ वेष्टन सं० १२६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—जहांगीर के राज्य में चम्पावती नगर में प्रतिलिपि हुई । प्रशस्ति विस्तृत है ।

३३९४. **प्रतिसं० ५** । पत्रसं० ५० । आ० ९×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०कालसं० १५८२ ज्येष्ठ सुदी १० । वेष्टनसं० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दिगम्बर जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—हंसनपुर नगर के नेमिजिन चैत्यालय में श्रुतवीर ने प्रतिलिपि की ।

३३९५. **प्रतिसं० ६** । पत्र सं० ४१ । आ० ११×५ इंच । ले०काल सं० १६०५ माह बुदी ६ । वेष्टन सं० १६० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है । तक्षक गढ़ में सोलंकी राजा रामचंद के राज्य में आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई ।

३३९६. **धन्यकुमार चरित्र—सकलकीर्ति** । पत्र सं ५६ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल सं० १६७३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३३९७. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ५३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४०३/४७ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

३३९८. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० २५ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४०४/४८ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

३३९९. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० ४३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४०५/५० । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

३४००. **प्रति सं० ५** । पत्रसं० २-३५ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ४०६/४९ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

३४०१. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० ७० । आ० ११ × ५$\frac{1}{2}$ इंच । ले० काल × । वेष्टन सं० १५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

३४०२. **प्रतिसं० ७** । पत्रसं० ५३ । आ० १०×६$\frac{1}{2}$ इंच । ले० काल सं० १८६७ । पूर्ण । वे० सं० ३८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—बूंदी में पं० नन्दलाल ने प्रतिलिपि की ।

३४०३. **प्रतिसं० ८** । पत्र सं० ४१ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इंच । ले० काल सं० १६६७ पूर्ण । वेष्टन सं० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—चंपावती में ऋषि श्री जेता जी ने प्रतिलिपि करवायी ।

३४०४. **प्रतिसं० ९** । पत्रसं० २० । आ० १३×५$\frac{1}{2}$ इंच । ले० काल सं० १९३६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ बूंदी ।

विशेष—बृन्दावती में नेमिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की गई ।

३४०५. **प्रतिसं० १०** । पत्र सं० ४२ । आ० १२×६ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

३४०६. **प्रति सं० ११** । पत्र सं० ६-४० । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इंच । ले०काल सं० १७४८ माघ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्द्रगढ ।

३४०७. **प्रतिसं० १२** । पत्रसं० ३७ । आ०१२×५ इंच । ले०काल सं० १७९८ फागुण सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६९ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मंदिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक)

विशेष—पं० केशरीसिंह ने सवाई जयपुर में लिखा ।

अन्तिम प्रशस्ति—पातिसाह श्री महमद साह जी महाराजाधिराज श्री सवाई जयसिंह जी का राज में लिखी सांगा साहू के देहुरो जी मध्ये पं० बालचंद जी के शास्त्रसू उतासो छै जी ।

३४०८. **प्रतिसं० १३** । पत्रसं० ४७ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५ इंच । ले०काल सं० १८५८ जेठ बदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८५ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैनमन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष —पं० शम्भूनाथ ने कोटा में लिखाया ।

३४०९. **प्रतिसं० १४** । पत्रसं० ६० । ले० काल सं० १७५२ वैसाख बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० २७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—कनवाडा नगर में प्रतिलिपि हुई ।

३४१०. **प्रतिसं० १५** । पत्र सं० ३० । आ० ११×५ इंच । ले० काल सं० १८१२ श्रावण सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७-३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—देवपुरी में प्रतिलिपि हुई ।

३४११. प्रतिसं० १६ । पत्र सं० ४२ । आ० ११½ × ४½ इञ्च । ले०काल सं० १६३५ पूर्ण । वेष्टन सं० १२४-५७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

प्रशस्ति - संवत् १६३५ वर्षे आसोज बुदी ४ शनौ श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे **भट्टारक** श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री जसकीर्ति तत् शिष्य मंडलाचार्य श्री गुणचंद्र तत् शिष्य आचार्य श्री रत्नचंद्र तत् शिष्य भट्ट हरिदासाय पठनार्थं ।

३४१२. प्रति सं० १६ । पत्र सं० २५ । आ० १२½ × ६ इञ्च । ले०काल सं० १८७१ । पूर्ण । वे० सं० ४३-२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—लिखी भरतपुर माह मिती जेठ वदी १ वार बीसपतवार संवत् १८७१ ।

३४१३. प्रति सं० १८ । पत्र सं० ४५ । आ० ११ × ४½ इञ्च । ले०काल सं० १७२८ पूर्ण । वेष्टन सं० ४८-३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

प्रशस्ति— सं० १७२८ वर्षे श्रावण वदी ४ । शनौ रासगढ मध्ये लिखीतं ।

भ० विजय कीर्ति की यह पुस्तक है ऐसा लिखा है ।

३४१४. धन्यकुमार चरित्र—ब्र० नेमिदत्त । पत्र सं० २४ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल सं० १७०२ चैत्र सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

३४१५. प्रति सं० २ । पत्रसं० २३ । आ० १० × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

३४१६. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० २० । आ० १२ × ५ इञ्च । ले०काल सं० १५९६ वैशाख सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१८ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

३४१७. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० २४ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले० काल सं० १७२९ आसोज बुदी १४ । वेष्टन सं० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष - बालकिशन के पुत्र जोसी नाथू ने कोटा में महावीर चैत्यालय में पं० बिहारी के लिए प्रतिलिपि की ।

३४१८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २९ । आ० ९½ × ५ इञ्च । ले०काल सं० १७८३ माघ बुदी ५ । वेष्टन सं० १५९ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—फलायनगर के पार्श्वनाथ चैत्यालय में ब्र० टेकचन्द्र के शिष्य पाण्डे दया ने प्रतिलिपि की ।

३४१९. प्रतिसं० ६ । पत्र सं० ४३ । आ० ८ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १७२४ मंगसिर बुदी ५ । वेष्टन सं० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—हीडोली नगर के पार्श्वनाथ चैत्यालय में श्री आचार्य कनककीर्ति के शिष्य पं० रायमल्ल ने स्वपठनार्थं प्रतिलिपि की ।

३४२०. प्रति सं० ७ । पत्रसं० ४१ । आ० ९½ × ४½ इंच । ले० काल सं० १७७१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ बूंदी ।

विशेष—अंबावती में ग्रंथ लिखा गया था । भ० नरेन्द्रकीर्ति की आम्नाय में हमीरदे ने ग्रंथ लिखवाया ।

३४२१. **प्रति सं० ८** । पत्र सं० २७ । आ० १०× ४½ इञ्च । ले० काल सं० १७०३ पौष बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक) जोर्ण ।

विशेष—ब्रह्म मतिसागर ने स्वयं अपने हाथों से लिखा ।

३४२२. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० १८ । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल सं० १६६८ **पूर्ण** । वेष्टन सं० १५८-७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

प्रशस्ति—संवत् १६६८ वर्षे कार्तिक सुदि २ रवौ प्रतापपुरे श्री नेमिनाथ चैत्यालये भट्टारक श्री वादिभूषण तत्शीष्य आचार्य श्री जयकीर्त्ति तत्शीष्य ब्र० सहराज पठनार्थं उतेश्वर गोत्रे सा० छांछा भार्या भावका तद्पुत्र सा० संतोष तस्य भार्या जयती दि० पुत्र श्री वंत तस्य भार्या करमहती एतैं स्व ज्ञानावर्णी कर्म्म क्षयार्थं ।

३४२३. **धन्यकुमार चरित्र—भ० मल्लिभूषण** । पत्र सं० २० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३४२४. **धन्यकुमार चरित्र**— × । पत्र सं० ५ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १७८/५३ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मंदिर इन्द्रगढ़ (कोटा) ।

३४२५. **धन्यकुमार चरित्र—खुशालचन्द काला** । पत्र सं० ४० । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १९५७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४५१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३४२६. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ४२ । आ० ११½×८½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३४२७. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ६१ । आ० १०½×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २० । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपंथी दि० जैन मंदिर नैणवा ।

विशेष— अंतिम पद्य निम्न प्रकार हैं –

चंद कुशाल कहै हित लाय,
जे ज्ञानी समझै निज पाय ।
मुधातम सो लागत भ्रात,
अशुभ कर्म सब ही मिट जात ।

प्रारंभ के तथा बीच २ के कई पत्र नहीं है ।

३४२८. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० ५२ । आ० ९½×५ इञ्च । ले० काल सं० १९७६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २० । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर नैणवा ।

३४२९. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० ३५ । आ० १२½ × ६½ इञ्च । ले० काल सं० १८९९ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मंदिर कोटयों का (नैणवा)

३४३०. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० ४७ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १९०३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर, पंचायती दूणी (टोंक) ।

३४३१. **प्रति सं० ७** । पत्रसं० ३१ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक)

३४३२. **प्रति सं० ८** पत्र स० १६ । आ० १०½×५ इंच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल टोंक ।

३४३३. **प्रति सं० ९** । पत्र सं० ६६ । आ० १०½×५½ इंच । ले० काल सं० १८९२ फागुन सुदी ७ पूर्ण । वेष्टन सं० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल टोंक ।

विशेष:—अमीचन्द के लघु भ्राता आवचन्दजी ने राजमहल के चन्द्रप्रभ चैत्यालय में ब्राह्मण सुख-लाल वास टोडा से प्रतिलिपि करवाई ।

३४३४. **प्रति सं० १०** । पत्र सं० २९ । आ० १४×७½ इंच । ले० काल सं० १९०७ भादवा सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्री महावीर बूंदी ।

३४३५. **प्रति सं० ११** । पत्र सं० ९३ । आ० १०×७ इंच । ले०काल स० १९५५ । वेष्टन सं० २२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नागदी बूंदी ।

३४३६. **प्रति सं० १२** । पत्र सं० ९९ । आ० ९½×४½ इंच । ले० काल स० १८७४ सावन सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—नेमीचन्द्र ने गुमानीराम से करौली में प्रतिलिपि कराई ।

३४३७. **प्रति सं०१३** । पत्र सं० ४१ । आ० ९½×६ इंच । ले० काल सं० १७०० वैशाख सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

विशेष—अंबावती नगरी में प्रतिलिपि हुई ।

३४३८. **प्रति सं० १४** । पत्र स० ८५ । आ० ९×४½ इंच । ले० काल सं० १८१९ माघ शीर्ष सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

३४३९. **प्रतिसं० १५** । पत्र सं० ५५ । आ० १३ × ६½ इञ्च । ले० काल सं० १८८७ अषाढ सुदी ८ । । पूर्ण । वेष्टन स० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

३४४०. **प्रतिसं० १६** । पत्र सं० ३४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर डीग ।

विशेष— करौली में प्रतिलिपि हुई । मन्दिर कामा दरवाजे का ग्रन्थ है ।

३४४१. **प्रति सं०१७** । पत्र सं० २४ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर डीग ।

३४४२. **प्रति सं० १८** । पत्र सं० ४० । आ० ११×८ इंच । ले० काल सं० १९२१ फागुन सुदी ३ । पूर्ण । वे० स० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

३४४३. **प्रतिसं० १९** । पत्र सं० ३५ । आ० १२½×६½इञ्च । ले० काल० × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

३४४४. **प्रति सं० २०** । पत्र सं० ५४ । आ० १० ×६ इञ्च । ले० काल सं० १९१२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मंदिर उदयपुर ।

३४४५. प्रतिसं० २१। पत्र सं० ३४। आ० १४×२½ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर।

३४४६. प्रतिसं० २२। पत्र सं० ६३। आ० १०×६ इञ्च। ले० काल सं० १६०७ वैशाख सुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० ४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मंदिर अलवर।

३४४७. प्रतिसं० २३। पत्र सं० ६६। आ० ६½×४½ इञ्च। ले० काल सं० १८४१। पूर्ण। वेष्टन सं० ८५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर अलवर।

३४४८. प्रतिसं० २४। पत्र संख्या २४। आ० [illegible] इञ्च। लेखन काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ५४, १०५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर अलवर।

३४४९. प्रतिसं० २५। पत्रसं० ३८। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ५५/१०४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर।

३४५०. प्रति संख्या २६। पत्र सं० ३६। ले० काल × पूर्ण। वेष्ट सं० ३६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

३४५१. प्रति सं० २७। पत्र सं० ५२। लेखक काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २६। **प्राप्ति स्थान**—दि. जैन तेरहपंथी मंदिर बसवा।

३४५२. धन्यकुमार चरित्र वचनिका—×। पत्र सं० ३४। आ० १०×६½ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—चरित्र। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १५५६। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

३४५३. धन्यकुमार चरित्र भाषा—जोधराज। पत्र सं० ३७। आ० ६×६ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय चरित्र। र० काल सं० १८१०। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ११५ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर भादवा (राज०)

३४५४. धन्यकुमार चरित्र भाषा × । पत्र संख्या २६। आ० ११×६ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—चरित्र। र० काल × । ले० काल सं० १८६४ माह सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन सं० १८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

३४५५. धन्यकुमार चरित्र भाषा—× । पत्र संख्या १०८ आ० ७×७ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय—चरित्र। र० काल × । पूर्ण। ले० काल सं० १८६८। वेष्टन सं० ३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर कामा।

३४५६. धर्मदत्त चरित्र—दयासागर सूरि। पत्र सं० ६-६७। आ० ६×५½ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय-चरित्र। र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ३५५। **प्राप्ति स्थान**—दि. जैन मंदिर बोरसली कोटा।

३४५७. धर्मदत्त चरित्र—माणिक्यसुन्दर सूरि। पत्र सं० १०। आ० ११×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र० काल × । ले० काल सं० १६६६ आसोज सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन सं० १४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल टोंक।

विशेष—माणिक्यसुन्दर सूरि आचार्य मेरुतुंग सूरि के शिष्य थे। लिखितं गुणसागर सूरि शिष्य ऋषि नाथू पठनार्थ जसराणापुर मध्ये।

३४५८. धर्मशर्माभ्युदय—महाकवि हरिचन्द । पत्र संख्या ६६ । आ० ११×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १५१४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८६/१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि. जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रतिप्राचीन है । पत्र कैंची से काट दिये गये है (ठीक) करने को ।

प्रशस्ति—संवत् १५१४ वर्षे आषाढ सुदी ६ गुरौ दिने धोधाविले धूले श्री चन्द्रप्रभ चत्यालये श्री मूलसंघे बलात्कार गणे सरस्वती गच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारकीय श्री पद्मनंदिदेवा तत् शिष्य श्री मदन कीर्तिदेवा तत् शिष्य श्री नयणानंदिदेवा तन्निमित्त इंद पुस्तक हुंबडजातीय श्रावकै. लिखाप्यदत्तं । समस्त अभीष्ट भवंतु । भ० श्री ज्ञानभूषण तत् शिष्य मुनि श्री विशालकीर्ति पठनार्थं । पं० पाहुना समर्पितं । भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत् शिष्य ब० श्रीपाल पठनार्थं प्रदत्त ।

३४५९. **प्रति सं० २** । पत्र संख्या ११२ । आ० १०×४ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन संख्या ३९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

३४६०. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ६४ । आ० १०½ ×४½ इंच । ले० काल × । अपूर्ण । जीर्ण । वेष्टन सं० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—४६ पत्र तक संस्कृत टीका (संक्षिप्त) दी हुई ।

३४६१. धर्मशर्माभ्युदय टीका—यशःकीर्ति । पत्रसं० १९२ । आ० १३½ × ५ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ११७० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन भट्टारकीय मन्दिर अजमेर ।

विशेष – धर्मनाथ तीर्थंकर का जीवन चरित्र वर्णन है ।

३४६२. प्रति सं० २ । पत्रसं० ७४ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ११७१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३४६३. प्रति सं० ३ । पत्रसं० १११ । ले०काल सं०१९३७ । सावण सुदी ७ अपूर्ण । वेष्टनसं० ११७२ । **प्राप्तिस्थान** भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—अजमेर के पार्श्वजिनालय में प्रतिलिपि हुई । २१ सर्ग तक की टीका है ।

३४६४. प्रति सं० ४ । पत्रसं० १८८ । आ० १२½ × ६½ इंच । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २२२ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३४६५. प्रति सं० ५ । पत्रसं० १०३ । आ० १०×४½ इंच । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन आदिनाथ मन्दिर बूंदी ।

विशेष – टीका का नाम संदेहध्वांत दीपिका है । १०३ से आगे पत्र नहीं है ।

३४६६. नलोदय काव्य—कालिदास । पत्र सं० ३३ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले०काल × अपूर्ण । वेष्टन सं० २३–२२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिचन्द टोडारायसिंह (टोंक) ।

३४६७. नलोदय टीका—× । पत्र सं० १-२३ । आ० ११½ × ५½ भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—टीका महत्वपूर्ण है।

३४६८ नलोदय टीका—रामऋषि पत्र सं० ७। भाषा—संस्कृत विषय—काव्य र० काल सं० १६६४। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ७८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर हुण्डा-वालों का डोग।

विशेष—अंतिम चक्रे राम ऋषि विद्वान् बुद्ध कालात्मक जा सुधी।

नलोदयीमियां टीका शुद्धा यमक बोधिनी।

रचना सं०। ४६६ वेदांगरस चन्द्राब्दो वर्षे माघे तु माधवे। शुक्ल पक्षेतु सप्तम्यां गुरौ पुष्ये तथोद्गते।

३४६९. नलोदय काव्य टीका-रविदेव। पत्र सं० ३७। आ० १०×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—काव्य। र० काल। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

विशेष—रामऋषि कृत टीका की टीका है।

३४७०. प्रति सं० २। पत्र सं० ३६। ले० काल सं० १७५१। पूर्ण। वे० सं १९१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

विशेष—प्रबंधवती में नेमिनाथ चैत्यालय में भ० जगत्कीर्ति की आज्ञानुसार दोदराज ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

३४७१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३१। आ० ११½×६ इञ्च। वेष्टन सं० २९४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—श्रीत वृद्ध व्यासात्मज मिश्र रामर्षदाधोच विरचितायां रविदेव विरचित महाकाव्य नलोदय टीकायां यमकवो[illegible]न्यां नलराज ब्रह्म नाम चतुर्थः आश्वासः समाप्तः।

३४७२. नागकुमार चरित्र—मल्लिषेणसूरि। पत्र सं० २३। आ० ११×४ इञ्च। **भाषा**—संस्कृत। विषय - चरित्र। र०काल ×। ले०काल सं० १६३४। पूर्ण। वेष्टन सं० ३८८/१२७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—संवत् १६३४ वर्षे फागुन बुदी ११ भोमे श्री शांतिनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघान्नाये नंदीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री रामसेनान्वये भ० श्री भुवनकीर्ति आचार्य श्री जयसेन तत् शिष्य मु० कल्याणकीर्ति ब्रह्म श्री वस्ता लिखितं।

संवत् १६८४ वर्षे मार्ग शीर्ष बुदी ५ खौ श्रीशीलचन्द्र तत् शिष्याणी बाई पोहोनां तथा ब्रह्म श्री मेघराज तत् शिष्य ब्र० सवजी पठनार्थ इदं नागकुमार चरित्र प्रदत्तं।

३४७३. प्रति सं० २। पत्र सं० ३३। आ० १० × ४½ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० २५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—सुमतिकीर्ति के गुरु भ्राता श्री सकलभूषण के शिष्य श्री नरेन्द्रकीर्ति के पठनार्थ लिखा गया था।

३४७४. प्रति सं० ३। पत्र सं० २४ आ० ११½×५½ इञ्च। र०काल × । ले०काल सं० १६५४। पूर्ण। वेष्टन सं० १५८। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

३४७५. प्रतिसं० ४। पत्रसं० २३। आ० ११½×४½ इञ्च। ले० काल सं० १९९०। पूर्ण। वेष्टन सं० १९६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर।

३४७६. **नागकुमार चरित्र—विबुधरत्नाकर।** पत्र सं० ३६। आ० ११½ × ६ इञ्च। **भाषा**—संस्कृत। विषय · चरित्र। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १३६/१६। **प्राप्ति स्थान** · दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर, इन्दरगढ़ (कोटा)।

३४७७. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ५६ । आ० ६½ × ५ इञ्च । **ले०काल** सं० १८८३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—गांठडा में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी।

३४७८. **प्रति सं० ३** पत्र सं० ५२। आ० ११×४½ इंच। ले० काल सं० १६६१ फागुण सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन सं० ३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर, नैणवा।

विशेष—पं० रत्नाकर ललितकीर्ति के शिष्य थे।

३४७९. **प्रतिसं० ४**। पत्रसं० ४७। आ० १३½ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १८७५ चैत सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० ५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नागदी बूंदी।

विशेष—ब्राह्मण चिरंजी ने उणियारा में प्रतिलिपि की थी। पं० निहालचन्द ने इसे जैन मन्दिर में रावराजा भीमसिंहजी के शासन में चढाया था।

३४८०. **नागकुमार चरित्र—नथमल बिलाला।** पत्र सं० ८७। आ० १२ × ५½ इञ्च। **भाषा**—हिन्दी पद्य। विषय—चरित्र। र०काल सं० १८३७ माह सुदी ५। ले० काल सं० १८७८ सावन सुदी ८। पूर्ण। वेस्टन सं० १५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

विशेष—नेमिचन्द्र श्रीमाल ने करौली में गुमानीराम से प्रतिलिपि करवाई थी।

३४८१. **प्रति सं० २**। पत्र संख्या १०६। आ० ११ × ५ इञ्च। ले० काल सं० १६६१ फाल्गुन सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन सं० १६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

३४८२. **प्रति सं० ३**। पत्र सं० ४८। आ० ११½ × ५। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ५६/६६। **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है।

३४८३. **प्रति सं० ४**। पत्रसं० १०७। आ० ११ × ५½। ले० काल सं० १८७६ सावण सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० ६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा।

विशेष—मोतीलाल की बहूने प्रतिलिपि कराई।

३४८४. **प्रतिसं० ५**। पत्रसं० ७५। आ० ११½ × ८ इञ्च ले०काल सं० १८७७ द्वि ज्येष्ठ सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन सं० ६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा।

विशेष—जसलाल तेरहपंथी ने पन्नालाल साह बसवा वाले से देवगिरि (दौसा) में प्रतिलिपि करवाई।

३४८५. **प्रतिसं० ६**। पत्र सं० ८०। आ० ११½ × ५½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ६२/८१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बड़ा बीस पंथी दौसा।

३४८६. **प्रतिसं० ७**। पत्र सं० ४६-६६। आ० १०½ × ५ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ाबीस पंथी दौसा।

विशेष—चिम्मनराम तेरहपंथी ने दौसा में प्रतिलिपि की थी।

३४८७. **प्रति सं० ८** । पत्र सं० ६४ । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल सं० १८३६ प्र० जेठ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं०६४ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—१५३७ छंद हैं ।

[illegible]
ग्रंथ सुलिख पूरन कियो हीरापुरी मंझार ।
नथमलनैं निजकर थकी ग्रंथ लिख्यो घर प्रीत ।
भूलचूक जो यामें लखौ तो सुध कीजो मीत ।।
प्रति ग्रंथकार के हाथ की लिखी हुई है ।

३४८८. **प्रति सं० ९** । पत्र सं० ६१ । आ० १२×६ इञ्च । ले० काल सं० १८७७ आषाढ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर बयाना ।

विशेष—करौली में गुमानीराम से ग्रंथ लिखाकर बयाना के मन्दिर में विराजमान किया ।

३४८९. **प्रति सं० १०** । पत्रसं० ७७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

३४९० **प्रतिसं० ११** । पत्र सं० ५३ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३६९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

३४९१. **नेमि चरित्र—हेमचन्द्र** । पत्र सं० २९ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय– चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—२९ से आगे पत्र नहीं है । प्रति प्राचीन है । त्रिषष्टि शलाका चरित्र में से है ।

३४९२. **नेमिचन्द्रिका भाषा**— × । पत्र सं० २० । ९½×६½ । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । र० काल सं० १८८० ज्येष्ठ सुदी ११ । ले० काल सं० १८८६ माघ बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर सौगाणी करौली ।

३४९३. **नेमिजिन चरित्र—ब्र. नेमिदत्त** । पत्र सं० ६२ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय —चरित्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं ४२७ । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३४९४. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० १७५ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२२६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३४९५. **नेमिदूत काव्य—महाकवि विक्रम** । पत्र संख्या १३ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय काव्य । र० काल × । लेखन काल सं० १६८९ कार्तिक बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन सं० २५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बून्दी ।

विशेष—इति श्री कवि विक्रम भट्ट विरचितं मेघदूतां तत्पाद समस्यासंयुक्त श्रीमन्नेमिचरितामिधानां काव्य समाप्तं । सं० १६८९ वर्षे कार्तिकाशित नवम्यां ९ आचार्य श्रीमद्रत्नकीर्त्ति तच्छिष्येण लि० विजयहर्षेण ।

पुस्तक पं० रतनलाल नेमिचन्द की है ।

३४९६. **प्रति सं० २** । पत्रसं० २४ । आ० १२½×७ इञ्च । **ले०काल** सं० १९८६ आसोज सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष - प्रति हिन्दी अनुवाद सहित है ।

३४९७. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० १५ । आ० ११×५½ । **ले०काल** सं० १६८५ कार्तिक बुदी १ । वेष्टन सं० १५३ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मं० लश्कर, जयपुर ।

३४९८. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० १४ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । **ले०काल** × । वेष्टन सं० १५४ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

३४९९. **नेमिनाथ चरित्र**— × । पत्रसं० १०६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल । अपूर्ण । वेष्टन सं० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—प्रति हिन्दी गद्य टीका सहित है

३५००. **नेमिनाथ चरित्र**—× । पत्र सं० ६९ । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

३५०१. **नेमिनाथ चरित्र**— × । पत्र सं० १०३ । भाषा-संस्कृत । विषय चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५८७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैनपंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है तथा नेमिनाथ के अतिरिक्त कृष्ण, वसुदेव व जरासिन्ध का भी वर्णन है ।

३५०२. **नेमिनिर्वाण**—**वाग्भट्ट** । पत्रसं० ९३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले०काल सं० १८३० वैशाख बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १०७, ५७ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर झालरापाटन (कोटा)

विशेष रामपुरा में गुमानीरामजी के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई ।

३५०३. **प्रति सं०२** । पत्रसं०६९ । आ० १२½×५ इञ्च । ले० काल सं० १७२६ कार्तिक बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

३५०४. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० ६-६१ । आ० १० × ६ इञ्च । ले० काल सं० १७९८ । अपूर्ण । वेष्टन सं० २३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—संवत् १७९८ वर्षे कार्तिक बुदी ८ भूम पुत्रे श्री उदयपुर नगरे महाराणा श्री जगतसिंहजी राजवी लिखतद खेतसी स्वपनार्थ ।

३५०५. **प्रतिसं० ४** । पत्र सं० ८६ । आ० ९×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७/४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सौगाणी करौली ।

३५०६. **प्रतिसं० ५**। पत्रसं० १०८ । आ० ९½×४ इंच । ले० काल सं० १७१५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष - सं० १७१५ मेरपाट उदयपुर स्थाने श्री आदिनाथ चैत्यालये साहराज राणा राजसिंह विजयराज्ये श्री काष्ठासंघे नन्दीतटगच्छे विजयगणे भट्टारक रामसेन सोमकीर्ति; यशःकीर्ति उदयसेन त्रिभुवन कीर्ति रत्नभूषण, जयकीर्ति, कमलकीर्ति, भुवनकीर्ति, नरेन्द्रकीर्ति ।

प० गंगादास ने लिखा ।

३५०७. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० ७० । आ० १२ × ४ इञ्च । ले० काल सं० १६७६ । **पूर्ण** । वेष्टन सं० ४०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—संवत् १६७६ ब्रह्म श्री बालचन्द्रेन लिखितं ।

३५०८. **प्रतिसं० ७** । पत्र सं० ५३ । आ० १०$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल सं० १८४२ ज्येष्ठ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

३५०९. **नैषध चरित्र टीका**— × । पत्र सं० २ ६ । आ० १३ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, लश्कर, जयपुर ।

३५१०. **नैषधीय प्रकाश**—**नरसिंह पांडे** । पत्र सं० ८ । आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति जीर्ण एवं अपूर्ण है ।

३५११. **पद्मचरित्र**— × । पत्र सं० ४ । आ० १३ × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४२/७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

३५१२. **पद्मचरित्र**—**विनयसमुद्रवाचक गणि** । पत्र सं० ६५ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३५१३. **पद्मनंदिमहाकाव्य टीका**—**प्रह्लाद** । पत्र सं० १३६ । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । लेखन काल सं १७६८ चैत्र सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बसवा ।

विशेष—बसुवा ग्राम में प्रतिलिपि हुई ।

इति श्री पद्मनंद्याचार्य विरचिते महाकाव्यटीका सूत्र संपूर्ण । तस्य धनपालस्य शिष्यस्तेन शिष्येण नाम्नाप्रह्लादेन श्री पद्मनंदिनः सूरे आचार्य कृते काव्यरत्न टिप्पणकं प्रकटं ज्ञानवं ।

३५१४. **परमहंस संबोध चरित्र**—**नवरंग** । पत्र सं० १० । आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३५१५. **परमहंस संबोध चरित्र**— × । पत्र सं० २६ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

३५१६. **पवनंजय चरित्र**—**भुवनकीर्त्ति** । पत्र सं० २४ । आ० ११ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

३५१७. पाण्डवचरित्र—ब्र० जिनदास। पत्र सं० १-३६। आ० १० × ४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वे० सं० २५३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

विशेष—ग्रंथ का अपर नाम नेमिपुराण भी है।

३५१८. पाण्डव चरित्र—देवप्रभसूरि। पत्र सं० ३६६। आ० १२ × ४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र०काल × । ले० काल सं० १४५४। पूर्ण। वे० सं० १। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १४५४ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ७ सप्तमी शुक्रवारे श्री पाण्डव चरितं वयरसणेन लिखितं मद्राहडीय गच्छे श्री सूरिप्रभसूरीणां योग्यं।

३५१९. पारिजात हरण—पंडिताचार्य नारायण। पत्र सं० १२। आ० ६½ × ४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—काव्य। र०काल × । ले०काल सं० १८६५। पूर्ण। वेष्टन सं० ५०। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

विशेष—अंतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीमत् विकुलतिलकश्रीमन्नारायण पंडिताचार्य विरचिते पारिजात हरणे महाकाव्ये तृतीय स्वासः। श्री कृष्णार्पणमस्तु।

इन्द्रगढ़ में देवकरण ने प्रतिलिपि की थी।

३५२०. पार्श्वचरित्र—तेजपाल। पत्रसं० १०१। आ० १०×५ इञ्च। भाषा—अपभ्रंश। विषय—चरित्र। र०काल सं० १५१५ कार्तिक बुदी ५। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३५४। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैनमन्दिर अजमेर।

विशेष—अंतिम पत्र नहीं है।

आदिभाग—

गणवयतवसायरउ वारिज सायरू, गिरुवमवासय सुहणिलउ।
पणविवि तियंकर कइयण सुहयरु रिसहु रिसीसर कुल तिलउ॥
देविदेहिण ओवरी सिवयरी कल्याण मालापरी।
भाण जेण जिउ थिरं अणहिओ कम्मट्ठ दुट्ठा।
सवोसीयं पास जिणिंदु संव वरदो वोच्छं चरित्त तहो॥१॥

तीसरी संधि की समाप्ति निम्न प्रकार है —

इय सिरि पासचरित्त रइयं कइ तेजपाल साणदं अग्गुमणियं सुहद्द' धूवलि सिवरास पुत्तेण जउणहिं माणमहणे पासकुमारे विवाहुत्तगेहे णिवकीला वण्णणए तइओ संधी परिसम्मतो।

३५२१. पार्श्वपुराण—भ० चन्द्रकीर्ति। पत्रसं० १२५। आ० ८ × ६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र०काल × । ले०काल सं० १८२६ वैशाख बुदी ३। पूर्ण। वेष्टन सं० १४५३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

३५२२. पार्श्वनाथचरित्र—भ० सकलकीर्ति। पत्र सं० ११६। आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २३३। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

३५२३. प्रति सं० २। पत्र सं० २३। आ० १२$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल ×। **पूर्ण।** वेष्टन सं० १०२४। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

३५२४. प्रति सं० ३। पत्र सं० १६२। आ० ६ × ५ इञ्च। ले० काल सं० १८४७ ज्येष्ठ बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० १५४४। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

३५२५. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६८। आ० १२ × ६ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

विशेष—२३ सर्ग हैं।

३५२६. प्रति सं० ५। पत्र सं० १५१। आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल सं० १६०६ मंगसिर सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन सं० ५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

विशेष—टोडरमल बाकलीवाल के वंशजों ने ग्रंथ लिखवाया था कीमत ४॥) रु०

३५२७. प्रति सं० ६। पत्र सं० ११२। आ० १३ × ५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

३५२८. प्रति सं० ७। पत्र सं० ७। आ० १० × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल—×। पूर्ण। वेष्टन सं० ८५/६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)।

३५२९. प्रति सं० ८। पत्र सं० ३० से ७०। आ० १० × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० १४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर।

३५३०. प्रति सं० ९। पत्र सं० १६। आ० १०$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल ×। **अपूर्ण** वेष्टन सं० ६४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—प्रति तृतीय सर्ग तक पूर्ण है।

३५३१. पार्श्वनाथ चरित्र—×। पत्र सं० २७। आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—संस्कृत (गद्य)। विषय—चरित्र। र० काल सं० १६२० ज्येष्ठ सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० १८३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

३५३२. पार्श्वनाथ चरित्र—×। पत्र सं० ११२। आ० ११$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८२७। पूर्ण। वेष्टन सं० ११९। **प्राप्ति स्थान**—खंडेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

३५३३. पार्श्वपुराण—**भूधरदास**। पत्र संख्या १०५। आ० ९ × ४ इञ्च। **भाषा**—हिन्दी पद्य। विषय—पुराण। र० काल सं० १७८९ आषाढ सुदी ५। ले० काल सं० १८६२ चैत्र सुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० १४७१। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—सांगूणमध्ये लिपिकृतं पं० विरधीचन्द पठनार्थं।

३५३४. प्रति सं० २। पत्र सं० ८६। आ० १० × ५ इञ्च। ले० काल सं० १८८४। पूर्ण। वेष्टन सं० ३५२। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

३५३५. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० १२६ । आ० ६×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५३३ । **प्राप्ति स्थान** - भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

३५३६. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० ५७ । ले० काल सं० १८८१ वैशाख सुदी १ । **पूर्ण** । वेष्टन सं० १५४२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३५३७. **प्रति सं० ५** । पत्रसं० ८३ । आ० १२½×५½ इंच । ले० काल सं० १८४६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१३ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

३५३८. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० १२६ । आ० ६ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १८४७ पौष सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६०, १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—सीतनपुर ग्राम में आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी ।

३५३९. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० ६३ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल सं० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६१–७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटड़ियों का डूंगरपुर ।

३५४०. **प्रति सं० ८** । पत्र सं० १०० । आ० १२½ × ५½ इञ्च । ले० काल सं० १६३२ चैत सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

३५४१. **प्रति सं० ९** । पत्रसं० ७७ । आ० १२½×५½ इंच । ले० काल सं० १८५५ वैशाख सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—रामबक्स ब्राह्मण ने रूपराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३५४२. **प्रति सं० १०** । पत्र संख्या ९४ । आ० ११×५½ इंच । ले०काल सं० १८३९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३/२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, भादवा (राज०)।

३५४३. **प्रति सं० ११** । पत्र सं० ६५ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल सं० १८२५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

विशेष—चालसोट में प्रतिलिपि हुई थी ।

३५४४. **प्रति सं० १२** । पत्रसं० ९१ । ले० काल सं० १८१६ । पूर्ण । जयपुर में प्रतिलिपि हुई । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर भादवा (राज०) ।

३५४५. **प्रति सं० १३** । पत्रसं० १०६ । ले०काल सं० १८४६ माघ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९० । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपंथी दि० जैन मन्दिर बसवा ।

३५४६. **प्रति सं० १४** । पत्रसं० ७४ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ९४ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपंथी दि० जैन मन्दिर बसवा ।

३५४७. **प्रति सं० १५** । पत्र सं० ११५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपंथी दि० जैन मंदिर बसवा ।

३५४८. **प्रति सं० १६** । पत्र सं० ७५ । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल सं० १७९४ फागुन सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १९/२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पंथी दौसा ।

विशेष—यती प्रयागदास ने जयपुर में प्रतिलिपि की ।

३५४९. **प्रति सं० १७** । पत्रसं० ९६ । आ० १२½×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३३–१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

३५५०. **प्रति सं० १८** । पत्र सं० ६५ । आ० १२½ × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—चिमनलाल तेरहपंथी ने प्रतिलिपि की ।

३५५१. **प्रति सं० १९** । पत्रसं० ६७ । आ० ११½ ×५ ½ इञ्च । ले०काल सं० १९३२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—नन्दलाल सोनी ने प्रतिलिपि की थी

३५५२. **प्रति सं० २०** । पत्रसं० ७६ । आ० १३×½ ७ इञ्च । ले०काल सं० १९०० सावण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३५५ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—लक्ष्मीलाल अजमेरा ने अलवर में प्रतिलिपि की थी ।

३५५३. **प्रतिसं० २१** । पत्रसं० ८६ । ले०काल सं० १८३७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

३५५४. **प्रति सं० २२** । पत्रसं० ८५ । आ० ९½×५. ½ इञ्च । ले० काल सं० १७९२ । पूर्ण ।वेष्टनसं० २५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३५५५ **प्रतिसं० २३** । पत्र सं० २०६ । आ० ८½×४ ½ इञ्च । ले०काल सं १८६६ आसोज सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सोगानी करौली ।

३५५६. **प्रतिसं० २४** । पत्रसं० । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल सं० १८१४ मंगसिर वुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनपंचायती मन्दिर करौली ।

विशेष— हेडराज के पुत्र मगनीराम ने पांडे लालचन्द से करौली में लिखवाया ।

३५५७. **प्रति सं० २५** । पत्र सं० ९४ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । ले० काल० सं० १८४३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी चेतनदास पुरनी डीग ।

३५५८. **प्रतिसं० २६** । पत्रसं० ७३ । आ० १२½×६ इञ्च । ले०काल सं० १८७० ।पूर्ण । वेष्टन सं० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष— जीवारामजी कासलीवाल ने सूरतरामजी व उनके पुत्र लिक्ष्मनसिंह कुम्हेर वालों के पठनार्थ वैर में प्रतिलिपि करवाई थी ।

३५५९. **प्रतिसं० २७** । पत्रसं० ८७ । ले०कालसं० १८५५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनपंचायती मन्दिर हुन्डावलों का डीग ।

विशेष—प्रागदास मोहावाले ने इन्दौर में कासीरामजी के राज्य में प्रतिलिपि की थी ।

३५६०. **प्रतिसं० २८**। पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १८७४ आषाढ़ वदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर हुण्डावालों का डीग ।

३५६१. **प्रति सं० २९** । पत्र सं० १०२ । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिरदबलाना बूंदी ।

३५६२. **प्रतिसं०** ३० । पत्रसं० ७६ । आ० १२½×५½ इंच । ले०काल सं० १८८४ आसोज बुदी १ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८६-७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ ।

३५६३. **प्रति सं०** ३१ । पत्रसं० ६३ । आ० १०½ × ६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

३५६४. **प्रति सं०** ३२ । पत्रसं० ११७ । आ० १० × ५ इंच । ले०काल सं० १८८४ पूर्ण । वेष्टनसं० २२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३५६५. **प्रतिसं०**३३ । पत्र सं० ८६ । आ० ६½ × ६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

३५६६. **प्रतिसं०** ३४ । सं० ११४ । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर अलवर ।

३५६७. **प्रति सं०** ३५ । पत्रसं० ६४ । आ० १२½ × ७ इञ्च । ले० काल सं० १६५७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४,८० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

३५६८. **प्रतिसं०** ३६ । पत्र स० ६६ । ले० काल सं० १६५८ । पूर्ण । वे० सं० ५/१४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

३५६९. **प्रतिसं०** ३७ । पत्र सं० ६५ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल सं १८६७ आषाढ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

३५७०. **प्रतिसं०** ३८ । पत्रसं० ५६ । ले०काल सं १८४५ पौष बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचयती मन्दिर अलवर ।

३५७१. **प्रतिसं०** ३९ । पत्र सं० १२६ । ले० काल सं० १८१४ भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—पांडेलालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

३५७२. **प्रतिसं०** ४० । पत्रसं० ६६ । ले०काल सं० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर जयपुर ।

३५७३. **प्रति सं०** ४१ । पत्र सं० ६१ । ले०काल सं० १८०६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मंदिर भरपुर ।

३५७४. **प्रति सं०** ४२ । पत्रसं० ६६ । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल सं० १८८४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—सं० १८८८ मंगसिर सुदी ५ के दिन नथमल खंडेलवाल ने इस ग्रंथ को चन्द्रप्रभ के मंदिर में भेंट दिया था ।

३५७५. **प्रति सं०** ४३ । पत्रसं० १०८ । आ० ६×६ इञ्च । ले०काल सं० १८२५ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर बैर ।

३५७६. **प्रति सं०** ४४ । पत्र सं० ६६ । आ० १०½×६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

३५७७. **प्रति सं० ४५** । पत्र सं ८१ । आ० ११½×५ इञ्च । ले० काल सं० १८३४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दीवानजी कामा ।

३५७८. **प्रति सं० ४६** । पत्र सं० ८२ । आ० १२½×६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती दीवानजी कामा ।

३५७९. **प्रति सं० ४७** । पत्र सं० २०४ । आ० १०×७ इञ्च । ले० काल सं० १९५३ मंगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—अंठालाल शर्मा ने प्रतिलिपि की ।

३५८०. **प्रति सं० ४८** । पत्र सं० ५३ । आ० १२½×६½ इञ्च । ले० काल सं० १८६६ पौष सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मंदिर नैणवा ।

विशेष—लिखाइतं साहाजी श्री भैरूरामजी मंगवाल तत्पुत्र चिरंजीव कंवरजी श्री जैलालजी पठनार्थं । यह ग्रंथ १८७३ में तेरापंथी के मन्दिर में चढ़ाया था ।

३५८१. **प्रति सं० ४९** । पत्र सं० ७२ । आ० ११×७ इञ्च । ले० काल सं० १९५६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

३५८२. **प्रति सं० ५०** । पत्र सं० ५६ । आ० १०⅜×५⅝ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

३५८३. **प्रति सं० ५१** । पत्र सं० ७७ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल सं० १८४० मंगसिर सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोट्यों का नैणवा ।

विशेष—नैणवा में ब्राह्मण सीताराम ने प्रतिलिपि की थी ।

३५८४. **प्रति सं० ५२** । पत्र सं० ८९ । आ० १० × ६ इञ्च । ले० काल सं० १९१४ श्रावण सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा ।

विशेष—साह पन्नालाल अजमेरा ने प्रतिलिपि की थी ।

३५८५. **प्रति सं० ५३** । पत्र सं० ८९ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६/१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती दूनी (टोंक)

३५८६. **प्रति सं० ५४** । पत्र सं० १५४ । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल सं० १८८८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७/१८ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

विशेष—सर्वसुख गोधा मालपुरा वाले ने दीवान अमरचन्दजी के मन्दिर में प्रतिलिपि की थी ।

३५८७. **प्रति सं० ५५** । पत्र सं० ४४ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर खंडेलवालों का, आमेर (जयपुर)

विशेष—जन्म कल्याणक तक है ।

३५८८. **प्रति सं० ५६** । पत्र सं० ८५ । आ० ९½×६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष—पद्य सं० ३३३ हैं ।

संवत् १८७९ चैत्रमासस्य शुक्लपक्ष ४ राजमहल मध्य कटारया मोजीराम चन्द्रप्रभ चैत्यालये स्थापितं ।

३५८९. **प्रति सं० ५७** । पत्रसं० ७० । ले०काल सं० १९५७ सावण बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष—लिखितं पं० लक्ष्मीचन्द कटरा अहीरों का फिरोजाबाद जिला आगरा ।

३५९०. **प्रति सं० ५८** । पत्रसं० १३३ । आ० १०½ × ५ इञ्च । ले०काल सं० १८४६ सावण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष—लक्षकपुर में व्यास सहजराम ने प्रतिलिपि की थी ।

३५९१. **प्रतिसं० ५९** । पत्रसं० ९३ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

३५९२. **प्रतिसं० ६०** । पत्र सं० १२५ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११०/६९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

३५९३. **प्रति सं० ६१** । पत्र सं० ६१ । आ० ११¾ × ७¾ इंच । ले० काल सं० १९०४ फागुन बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५०–८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—टोडारायसिंह के श्री सांवला जी के मन्दिर में जवाहरलाल के बेटा बिसनलाल ने व्रतोद्यापन के उपलक्ष में भादवा सुदी १४ सं० १९४८ को चढाया था ।

३५९४. **प्रतिसं० ६२** । पत्र सं० ११६ । आ० १०½ × ४¾ इञ्च । ले०काल । अपूर्ण । वेष्टन सं०१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक) ।

३५९५. **प्रति सं० ६३** । पत्रसं० ६८ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल सं० १८२८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५ । **प्राप्तिस्थान** – दि० जैन मंदिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक) ।

विशेष—धनराज गोधा रूपचन्द सुत के पठनार्थ लिखा गया था ।

३५९६. **प्रति स० ६४** । पत्र सं० ३–१२० । आ० ९×६ इञ्च । ले० काल सं० १८८५ । जीर्ण शीर्ण । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिरते रहपंथी मालपुरा (टोंक)

३५९७. **प्रतिसं० ६५** । पत्र सं० ५२ । आ० १२ × ८ इञ्च । ले०काल सं० १९५६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक) ।

३५९८. **प्रतिसं० ६६** । पत्रसं० १३५ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल सं० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर, पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

३५९९. **प्रति सं० ६७** । पत्र सं० ५७ । आ० ११×७ इञ्च । ले० काल सं० १८९९ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—बूंदी में प्रतिलिपि हुई थी ।

३६००. **प्रतिसं० ६८** । पत्र सं० ८३ । आ० १३×५½ इञ्च । ले०काल सं० १८५३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—खंडार में लिक्षमणदास मोजीराम बाकलीवाल का बेटा ने लिख चढायो ।

३६०१. **प्रतिसं० ६९** । पत्रसं० १०१ । आ० १३×५ इञ्च । ले०काल सं० १८३१ आषाढ बुदी १ । अपूर्ण । वेष्टनसं० १ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—दासणोती के जीवराज पांड्या ने लिखा था ।

३६०२. **प्रति सं० ७०** । पत्रसं० ७८ । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल सं० १८५१ आषाढ बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष —रणथंभौर में नाथूराम ने स्व पठनार्थ लिखा था ।

३६०३. **प्रति सं० ७१** । पत्र सं० ६७ । आ० १२$\frac{3}{5}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० सं० १६७४ । पूर्ण । वे० सं० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—इन्दौर में पं० बुद्धसेन झटावा वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

३६०४. **प्रति सं० ७२** । पत्रसं० १४८ । आ० ६×५ इञ्च । **ले०काल** सं० १८३३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

३६०५. **प्रति सं० ७३** । पत्रसं० ७६ । ले०काल सं० १८६३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

३६०६. **पार्श्वपुराण**— × । पत्रसं० २५७ । भाषा—हिन्दी (गद्य) । **विषय** –पुराण । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर । बसवा ।

३६०७. **प्रद्युम्नचरित**—**महासेनाचार्य** । पत्रसं० ६६ । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय –चरित । र० काल × । ले०काल सं० १५३२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—भट्टारक ज्ञान भूषण के पठनार्थ लिखी गयी थी ।

३६०८. **प्रति सं० २** । पत्रसं० १२६ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १५८६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—छीतर ने ब्र० रतन को भेंट दिया था ।

प्रशस्ति—संवत् १५८६ वर्षे चैत्र सुदी १२ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्द-कुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री जिनचन्द्र तत्पट्टे भ० प्रभाचन्द तदाम्नाये खंडेलवालान्वये बाकलीवाले गोत्रे सं० केल्हा तद्भार्या करमा .... ।

३६०९ **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० ६४ । आ० १२$\frac{1}{2}$×५$\frac{3}{4}$ इंच । ले० काल सं० १८४१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

३६१०. **प्रद्युम्नचरित्र | सोमकीर्ति** । पत्र सं० १७२ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय – चरित्र । र० काल सं० १५३१ पौष सुदी १३ बुधवार । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं १५३५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

३६११. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १५६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं ४५६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३६१२. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० १७३ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इंच । ले०काल सं० १८१० पौष बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०२/३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष —वप्राख्य पत्तनस्य रामपुर मध्ये श्री नेमिजिन चैत्यालये आसांवर मनस्य व्याघ्रान्वये षटोड गोत्रे सा० श्री ताराचंदजी श्री लघु भ्रातृ सा० जगरूपजी कियो कारापित जिन मन्दिर तस्मिन् मदिरे चतुर्मासिकं कृतं..... ... ।

३६१३. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० २३७ । आ० १२×५ इंच । ले० काल सं० १८१० कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

३६१४ **प्रति सं० ५** । पत्र सं० १९५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर डीग ।

३६१५. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० १६२ । आ० ११ × ४½ इञ्च । र० काल सं० १५३१ । ले० काल सं० १६७५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १९८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

३६१६. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० २०३ । ले० काल सं० १६६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर हुण्डावालों का डीग ।

विशेष—अलवर में लिखा गया था ।

३६१७. **प्रति सं० ८** । पत्र सं० २२० । आ० ११×५ इंच । ले० काल सं० १६१४ माह सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२४ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—बट्यालो में प्रतिलिपि कराई । मुनि श्री हेमकीर्त्ति ने संशोधन किया । प्रशस्ति भी है ।

३६१८. **प्रति सं० ९** । पत्रसं० १५५ । आ० ९½×५ इञ्च । ले०काल सं० १८२० मंगसिर बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—दबलाना में प्रतिलिपि हुई ।

३६१९. **प्रद्युम्नचरित्र—शुभचन्द** । पत्र सं० ९७ । आ० १०½ × ५ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—केवल अन्तिम पत्र नहीं है ।

३६२०. **प्रद्युम्न लीला वर्णन—शिवचन्द गणि** । पत्र सं० २६१ । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६०२ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।

३६२१. **प्रद्युम्नचरित्र**— × । पत्रसं० ४२ । आ० १०½×४½ इञ्च । **भाषा**–संस्कृत । विषय – चरित्र । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३६२२. **प्रद्युम्न चरित्र**— × । पत्र सं० ७६-२१५ । आ० १४×७ इञ्च । **भाषा** – हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । र० काल × । ले०काल सं० १९५७ । अपूर्ण । वेष्टन सं० २०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—प्रारम्भ के ७५ पत्र नहीं है ।

३६२३. **प्रद्युम्न चरित्र**— × । पत्र सं० १८७ । आ० १३ × ६ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी गद्य । **विषय**—चरित्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७९ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मंदिर श्री महावीर बूंदी ।

३६२४. प्रद्युम्न चरित्र— × । पत्र सं० ३३५ । भाषा—हिन्दी । विषय—जीवन चरित्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

३६२५. प्रद्युम्न चरित्र टीका — × । पत्रसं० ७५ । आ० १४ × ७ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

३६२६. प्रद्युम्न चरित्र रत्नचंद्र गणि । पत्रसं० १०५ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल सं० १८३४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३७-३२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

३६२७. प्रद्युम्न चरित्र वृत्ति-देवसूरि । पत्र सं० २ से १०४ । भाषा-संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

३६२८. प्रद्युम्न चरित—खोज । पत्रसं० २१ । आ० [illegible] इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । र०काल सं० १४११ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा जनवरी ६० में प्रकाशित । इसके संपादक स्व० पं० चैनसुखदास जी न्यायतीर्थ एवं डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल एम. ए. पी. एच, डी हैं ।

३६२९. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ४० । आ० १२ × ६½ इञ्च । ले०काल सं० १८८१ वैशाख बुदी १० । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—पंचायती दि० जैन मन्दिर कामा ।

विशेष—खोज एवं अन्य प्रतियों के आधार पर सही र०काल सं० १४११ भादवा सुदी ५ माना गया है जबकि इस प्रति में र०काल सं० १३११ भादवा सुदी ५ दिया है । बीच के कुछ पत्र नहीं हैं तथा प्रति जीर्ण है ।

३६३०. प्रद्युम्नचरित्र—मन्नालाल । पत्रसं० २५६ । आ० १३ × ७¾ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—चरित्र । र०काल सं० १९१६ ज्येष्ठ बुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७९ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

३६३१. प्रद्युम्न चरित्र भाषा—ज्वालाप्रसाद बख्तावरसिंह । पत्रसं० २११ । आ० ११½ × ८ इंच । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—चरित्र । र०काल सं० १९१४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

विशेष—ग्रंथ की भाषा प्रथम तो ज्वाला प्रसाद ने की लेकिन सं० १९११ में उनका देहान्त होने से चन्दनलाल के पुत्र बख्तावरसिंह ने १९१४ में इसे पूर्ण किया ।

मूलग्रंथ सोमकीर्ति का है ।

३६३२. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ३०३ । आ० १२ × ८ इञ्च । ले०काल सं० १९६१ । पूर्ण । वेष्टनसं० २७ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर, नैणवा ।

३६३३. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० २१६ । आ० १२ × ८ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४७/१२७ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

३६३४. **प्रति सं० ४** ।पत्रसं० २६३ । ले०काल सं० १९६१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४८/५० **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

३६३५. **प्रतिसं० ५** । पत्रसं० १९७ । आ० १५×८½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अलवर ।

३६३६. **प्रति सं० ६** । पत्रसं० १७९ । आ० १३ × ८ इञ्च । ले०काल सं० १९६४ आसोज बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—संवत १९१५ में पन्नालाल जी ने प्रारम्भ किया एवं १९१६ में बख्तावरसिंह ने पूर्ण किया ऐसा भी लिखा है ।

३६३७. **प्रतिसं० ७** । पत्र सं० २८७ । ले०काल सं० १९४९ सावण बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

३६३८. **प्रद्युम्नचरित्र भाषा—खुशालचन्द** । पत्र सं० ३० । आ० १२½×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

३६३९. **प्रद्युम्नचरित्र भाषा**— × । पत्र सं० ३६४ । आ० १३ × ८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल सं० १९४१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा राज० ।

विशेष—इन्दौर में प्रतिलिपि हुई ।

३६४०. **प्रद्युम्न प्रबंध—भ० देवेन्द्रकीर्ति** । पत्रसं० २३ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—काव्य । र०काल सं० १७२२ चैत सुदी ३ । ले०काल सं० १८९५ काती बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३९८ ६९ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष देवेन्द्रकीर्ति निम्न आम्नाय के भट्टारक थे—

श्री मूलसंघे भट्टारक सकलकीर्ति तत् शिष्य भुवन कीर्ति तत्पट्टे ज्ञानभूषण तत्पट्टे विजयकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक शुभचन्द्र तत्पट्टे भ० सुमति कीर्ति तत्पट्टे गुणकीर्ति तत्पट्टे वादिभूषण तत्पट्टे रामकीर्ति तत्प. पद्मनंदि सूरि स. प. देवेन्द्रकीर्ति..... ।

आदि अंत भाग निम्न प्रकार है—

आदि भाग—

दोहा ।

सकल भव्य सुखकर चदा नेमि जिनेश्वर राय ।
यदुकुल कमल दिवस पति प्रणमुं तेहना पाय ।
जगदंबा जग सरस्वती जिनवाणी तुझ काय ।
अविरल वाणी आप जो भूं भूंठी मुझमाय ।

अंतिम भाग—

तसपटकमल कमल बहु श्रीय देवेन्द्रकीर्ति गच्छइसरे ।
प्रद्युम्न प्रबंध रच्यो लिमि भवियण भणे जो निशदीसरे ।।४३।।
संवत सतर बावीस सुदि पंच तीज बुधवार रे ।
माहेश्वरमाहि रचना रची रहि चन्द्रनाथ ग्रह द्वार रे ।।४४।।

सुरथ वासी संघपति क्षेगमजी सुरजी दातार रे ।
तेह आग्रह थी प्रद्युम्न नो ए प्रबंध रच्यो मनोहार रे ।।४५।।

दूहा—
मनोहार प्रबंध ए गुंथ्यो करी विवेक ।
प्रद्युम्न गुणि सुत्रे करी स्तवन कुसुम अनेक ।।
भवियण गुरण कंठे धरो एह अपूर्व हार ।
घिरे मंगल लक्ष्मी घणी पुण्य तणो नहीं पार ।।
भणे भणावे सांभलो लिखे लिखावे एह ।
देवेन्द्र कीर्ति गच्छपति कहे स्वर्ग मुक्ति लहें तेह ।।

इति श्री प्रद्युम्न प्रबंध संपूर्ण श्री दक्षरण देशे अणगर ग्रामे पं० खुशयालेन प्रतिलिपि कारित ।
ग्रंथ का अपर नाम प्रद्युम्न प्रबंध भी मिलता है ।

३६४१. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ३६ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल स० १८१२ फागुण बुदी । पूर्ण । वेष्टन सं० १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष— भट्टारक श्री शुभचन्द्र ने रामपुरा में प्रतिलिपि की थी ।

३६४२. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० ५७ । आ० ९½×४½ इञ्च । ले० काल सं० १८०२ पूर्ण । वेष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चोगान बूंदी ।

विशेष— ब्रह्म श्री फतेचन्द ने लिखवाया था ।

३६४३. **प्रबोध चंद्रिका**— × । पत्र सं० ८–३२ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १८९४ कार्तिक बुदी २ । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

३६४४. **प्रबोध चंद्रोदय—कृष्ण मिश्र** । पत्र सं० ३६ । आ० १० × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

३६४५. **प्रभंजन चरित्र**— × । पत्र सं० २ से ४२ । आ० ९½×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

३६४६. **प्रभंजन चरित्र**—× । पत्रसं० २१ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १६२३ आसौज सुदी १ । वेष्टनसं० १५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—आ० श्री लक्ष्मीचन्द्र के शिष्य पं० नेमिदास ने स्वयं के पठनार्थ लिखवाया ।

३६४७. **प्रश्न षष्टि शतक काव्य टीका-टीकाकार पुण्य सागर** । पत्रसं० ७४ । आ० ११ × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । टीका सं० १६४० । ले०काल स० १७१४ सावन सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनसं० २३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३६४८. **प्रीतिकर चरित्र—सिंहनन्दि।** पत्रसं० १६ । आ० ११$\frac{3}{4}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले०काल सं० १६१० । पूर्ण । वेष्टन सं० २८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३६४९. **प्रीतिकर चरित्र—अ० नेमिदत्त।** पत्रसं० ३० । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल सं० १५०४ पूर्ण । **वेष्टन सं० २६५ । प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३६५०. **प्रति सं० २ ।** पत्र सं० १ से २५ तक । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३६० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३६५१. **प्रति सं० ३ ।** पत्रसं० २३ । आ० ६ × ६ इञ्च । ले०काल सं० १६०७ फागुण सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० २५३ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

३६५२. **प्रीतिकर चरित्र—जोधराज गोदीका ।** पत्र सं० २३ । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । र०काल सं० १७२१ फागुण सुदी ५ । ले० काल सं० १८८७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४६६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३६५३. **प्रति सं० २ ।** पत्रसं० १० । आ० ११×६ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, तेरहपंथी मालपुरा (टोंक) ।

३६५४. **प्रति सं० ३ ।** पत्र सं० ३० । आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १८८५ । पूर्ण वेष्टन सं० ५० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक) ।

३६५५. **प्रति सं० ४ ।** पत्र सं० ६५ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—पंचायती दि० जैन मन्दिर अलवर ।

३६५६. **प्रति सं० ५ ।** पत्र सं० ४५ । ले०काल सं १७६१ । **पूर्ण । वेष्टन सं० ३२० । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—जोधराज मनीराम के पुत्र चांदवाल ने भोजपुर में लिखा ।

३६५७. **प्रति सं० ६ ।** पत्र सं० ३३ । ले०काल सं० १६०२ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

३६५८. **प्रति सं० ७ ।** पत्र सं० ६६ । आ० ६$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले०काल सं० १७८४ फागुण बुदी ५ । पूर्ण । वे०सं० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

३६५९. **बसंतवर्णन—कालिदास ।** पत्रसं० । १७ । आ० ६ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १८६६ सावण सुदी १० । पूर्ण । वे. सं० १४३० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३६६०. **बारा आरा महाचौपईबंध—अ० रूपजी ।** पत्रसं० १८ । भाषा—हिन्दी । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०८, १४३ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—चौबीस तीर्थंकरों के शरीर का प्रमाण, वर्ण आदि का पद्यों में संक्षिप्त वर्णन है ।

आदि अंत भाग निम्न प्रकार है :—

प्रारंभ—ओंनमः सिद्धेभ्य । बारा आरा चौपई लिख्यते ।

प्रथम वृषभ जिन निस्तवु जे जुग आदि सार ।
भव एकादश ऊजला भव्य उतारण पार ।।१।।
इह प्रथम जिनंद दुख दावानल कंद
भव्यकज विकाशनचन्द सुधकाधिव धारणचन्द ।। २ ।।
सरस्वती निवलीनमु जेह ज्ञान अपार ।
मनवांछु जेहथीफली कविजन लाभ सार ।। ३ ।।
श्री मूलसंघ सहामणो सरस्वतीगच्छे सार ।
बलात्कर शुभगण भव्यो श्री कुंदकुंद सारि ।। ४ ।।

इस से आगे भ० पद्मनंदि, सकलकीर्ति भुवनकीर्ति, ज्ञानभूषण, विजयकीर्ति शुभचन्द्र, सुमतिकीर्ति गुणकीर्ति की परम्परा और उसके बाद

वादीभूषण नेह अनुक्रमि रामकीरतिज सार ।
पद्मनंदि निवलीस्तवु चेल रहित सुखकार ।
तेहना शिष्यज उजलो करि सार आर विचार ।
ब्रह्मरूपजी नामिभण्यो सुणज्यो सज्जनसार ।।
समंतभद्र देमेज कवि गुणभद्र गुणधार
तेहनागुण मनमांहि धरि कवि बोलु सुखकार ।

अन्तिम—

चन्द्रसूरज ग्रह तारा जाए
रामयशनाक निर्वाण
त्यार लगिये चोपे रहो
आसांबर कंठिकरी कहो ।।९३ ।।
अंतर उक्त बीस दूहा सही
सात्री सत्रण सिचोए कही
ब्रह्मरूपजी कहे प्रमाण
सुणतां भणतां पंचकल्याण ।।

इति महाचौपई बंधे ब्रह्मरूपजी विरचिते अष्टकाल स्वरूप कथानाम तृतीय उल्लासः । इति बारा आरा महाचौपई बंधे समाप्तः ।

स्वयं पठनाय स्वयं कृतं स्वयं लिखितं । महिसाणा नगर आदि जिन चैत्यालये कृता । इसमें कुल तीन उल्लास है—

१. कालत्रय स्वरूप
२. चतुर्थ काल वर्णन स्वरूप
३. अष्टकाल स्वरूप वर्णन ।

३६६१. भद्रबाहु चरित्र—रत्ननंदि । पत्रसं० २४ । आ० ९×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । लि०काल सं० १८४३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२३३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३६६२. **प्रति सं० २** । पत्र सं० २१ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल सं० १६२७। पूर्ण । वेष्टन सं० ११४० । **प्राप्तिस्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—कहीं २ कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हैं ।

३६६३. **प्रति सं० ३** । पत्रस० २६ । आ० १०×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

३६६४. **प्रतिसं० ४** । पत्र सं० २०१ । आ० ९×५½ इञ्च । ले०काल सं० १८०८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वमी बूंदी ।

३२६५. **प्रतिसं० ५** । पत्र सं० २४ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले०काल स० १८३२ फागुण सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७१ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

३६६६. **प्रतिसं० ६** । पत्रसं० २५ । आ० १०½×५. इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिरनदूनी (टोंक)

३६६७. **प्रतिसं० ७** । पत्रसं० २८ । आ० ११×५ इञ्च । ले० कालसं० १८२५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

३६६८. **प्रतिसं० ८** । पत्रसं० २७ । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल सं० १८१९ फागुण बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

३६६९ **प्रतिसं० ९** । पत्रसं० ३१ । आ० ९×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

३६७०. **प्रति सं० १०**। पत्र सं० ३३ । आ० १०½×४½ इञ्च । पूर्ण ले०काल × । वेष्टन सं० १५६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

३६७१. **प्रतिसं० ११** । पत्रसं० २०१९ । आ० १२×५½ इंच । ले०काल सं० १७६० माघ सुदीअ १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७५२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

३६७२. **भद्रबाहु चरित्र भाषा—किशनसिंह पाटनी** । पत्र सं० ४३ । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) विषय—चरित्र । र०काल सं० १७८३ माघ बुदी ८ । ले०काल सं० १८८२ माह सुदी १२ । पूर्ण वेष्टनसं० १४८२ । **प्राप्तिस्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—किशनसिंह पाटनी चौथ का बरवाड़ा के रहने वाले थे ।

३६७३. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १६ । आ० १३×७ इञ्च । ले० काल सं० १९०५ पौष सुदी ५ । पूर्ण वेष्टन सं० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

३६७४. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ४७ । आ० ९½×६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३–४२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर ।

३६७५. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० २८ । आ० १२½×७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

३६७६. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० ३९ । ले० काल सं० १९७५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी; बूंदी ।

३६७७. **प्रतिसं० ६ ।** पत्र सं० १६ । आ० १०$\frac{3}{4}$×५ $\frac{3}{4}$इञ्च । ले० काल स० १६७६ भादवा बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चोगान बूंदी ।

३६७८. **प्रति सं० ७ ।** पत्रसं० ३५ । आ० १०×६ इञ्च । **ले०काल** सं० १६५० । पूर्ण । वेष्टन सं० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

३६७९. **प्रतिसं० ८ ।** पत्र सं० ३२ । आ० ६ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १६०० । पूर्ण । वेष्टन सं० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा ।

विशेष—लोचनपुर शुभ ग्राम में सिंधराज जिनधाम ।
बुद्धि प्रमाण लिख्यो मुझे जपिये श्री जिननाम ।। १ ।।
साइ करो मुझि ऊपरै, दोषहरो भगवान ।
सरण नमण आदिकसहु धराऊं श्री जिनवाणि ।
पद्मप्रभरण बनाय के भावै बिनती एह ।
देव धर्म श्रुत साधु को चरण नमूं धरि नेह ।।
सभव है पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३६८०. **प्रतिसं० ९ ।** पत्र सं० २८ । आ० १०×७ इञ्च । ले०काल सं० १६०२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का नैणवा ।

विशेष—महाराजाधिराज श्री रामसिंहजी का राज में बूंदी के परगणे नैणवा मध्ये ।

३६८१. **प्रति सं० १० ।** पत्र सं० २६ । आ० ११×७ इञ्च । ले०काल सं० १६६२ । **पूर्ण ।** वेष्टन १० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर बघेरवालों का (उणियारा)

३६८२. **प्रति सं० ११ ।** पत्र सं० ४३ । आ० १०×७ इञ्च । **ले०काल** १८८२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक)

३६८३. **प्रति सं० १२ ।** पत्र सं० ३१ । आ० १२×८ इञ्च । ले०काल × ।पूर्ण । वेष्टन सं० ६१/५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्द्रगढ़ (टोंक)

विशेष---भेसीराज ज्ञाति साबड़ा चम्पावती वाले ने माधोराजपुरा में प्रतिलिपि कराई थी ।

३६८४. **प्रतिसं० १३ ।** पत्रसं० ४१ । आ० १०×४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । र०काल स० १७८३ माघ बुदी ८ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७६ । । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

३६८५. **प्रतिसं० १४ ।** पत्रसं० २० । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ७ $\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५४ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर वैर ।

विशेष—५६५ पद्य है ।

३६८६. **प्रतिसं० १५ ।** पत्र सं० ५७ । आ० ६$\frac{1}{2}$×५ $\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १८१३ आसोज सुदी १० । । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है–शुभ संवत् १८१३ वर्षे आसोज मासे शुक्लपक्षे दशम्यां रविवासरे खण्डेलवालान्वये गिरधरवाल गोत्रे श्रावकपुनीत श्री उदैरामजी तस्य प्रभावनांगकारक श्री चूरामलजी तस्य पुत्र

द्वय ज्येष्ठ पुत्र लीलापती लघुसुत बनारसीदास पौत्रज राघेकृष्ण एतेषां साहजी श्री चुरामणिजी तेनेदं शास्त्र लिखापितं ।

दोहा—चूरामनि ने ग्रन्थ यह निजहित हेत विचार ।
लिखवायो भविजन पढो ज्यो पावै सुखसार ।।

३६८७. **प्रति सं० १६** । पत्र सं० ८८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर डूंगरपुर ।

विशेष—उपगूहन कथा ऋषि मण्डल स्तोत्र, जैन शतक (सं० १७६१) बीस तीर्थंकरों की जयमाल आदि भी है ।

३६८८. **प्रतिसं० १७** । पत्रसं० ४१ । आ० १० × ५ इञ्च । ले०काल सं० १८५७ अषाढ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६२-६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष - चिमनलाल तेरहपंथी दौसा ने प्रतिलिपि की थी ।

३६८९. **प्रतिसं० १८** । पत्र सं० ४४ । ले० काल १८२७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी बसवा ।

विशेष—कामागढ़ में भोलीलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३६९०. **प्रतिसं० १९** । पत्र सं० ४१ । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल सं० १८५२ वैशाख सुदी १ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६७-६ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—चूहों ने खा रखा है ।

३६९१. **भद्रबाहु चरित्र भाषा—चंपाराम** । पत्र सं० ४३ । आ० १०½ × ५ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी (गद्य)। विषय—चरित्र । र०काल सं० १८६४ सावन सुदी १५ । ले०काल सं० १९२६ मंगसिर बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—ब्राह्मण पुष्करणा फतेराम जाल कांकला में प्रतिलिपि की थी ।

संवत् १९२८ भादवा सुदी १४ को अनन्तव्रतोद्यापन के उपलक्ष में हरिकिसन जी के मन्दिर में चढाया था ।

३६९२. **प्रति सं० २** । पत्र सं० २३ । आ० ११½ × ६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

३६९३. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० ७१ । आ० १०½ × ६½ इञ्च । ले० काल सं० १९४४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५४ ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर, इन्दरगढ (कोटा)

३६९४. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० ५९ । आ० ९½ × ६ इञ्च । ले० काल सं० १९२३ आषाढ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४२/५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा)

३६९५. **प्रति सं० ५** । पत्रसं० ३४ । आ० १३×६ इञ्च । ले०काल सं० १८६९ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली (कोटा) ।

३६९६. **भद्रबाहु चरित्र भाषा**— × । पत्र सं० ८५ । आ० ९ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल सं० १८१७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

३६९७. **भद्रबाहु चरित्र सटीक**— × । पत्रसं० ४१ । आ० १२ × ७½ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय— चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १९७७ माघ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनमन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—रत्ननन्दि कृत संस्कृत की टीका है ।

३६९८. **भविष्यदत्त चरित्र—श्रीधर** । पत्रसं० ६५ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १६८५ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३६९९. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ८१ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १९९ । **प्राप्ति स्थान** – भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७००. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० ८१ । ले० काल सं० १६१३ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०१। **प्राप्ति स्थान**--भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—तक्षकमहादुर्ग में मंडलाचार्य ललितकीर्तिदेव की आम्नाय में सा. हीरा भौसा ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

३७०१. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० ६३ । ले० काल १६४३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४९/६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर ।

प्रशस्ति—

संवत् १६४३ वर्षे श्रावण बुदी ५ तिथौ रविवासरे श्री चन्द्रावतीपुर्यां श्री आदिनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० भुवनकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० ज्ञानभूषणदेवा तत्पट्टे श्री विजयकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्रदेवा स्तत्पट्टे भ० श्री सुमतिकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री गुणकीर्ति तत् शिष्य ब्रह्म मेघराज पठनार्थं । सिरोजवास्तव्ये परवार ज्ञाती चौधरी मांडू तद्भार्या अडा तयो पुत्र धर्मधुरंधरावत दानशील पूजादिगुण संयुक्ता चौधरी वाघराज तद्भार्या भानमती ताभ्यां ज्ञानावर्णी कर्मक्षयार्थं श्री भविष्यदत्त पंचमी चरित्रं लेखित्वादत्तं ॥

३७०२. **प्रति सं० ५** । पत्रसं० ५५ । आ० १०½ × ५½ इंच । ले० काल सं० १७३१ मंगसिर बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—पं० लक्ष्मीदास ने स्व पठनार्थ लिखा था ।

३७०३. **प्रतिसं० ६** । पत्रसं० २६-४८ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल × । **अपूर्ण** । वेष्टन सं० ७०९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

३७०४. **प्रतिसं० ७** । पत्र सं० ८८ । आ० १०½ × ४ इञ्च । ले० काल सं० १५५९ श्रावण बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती बूनी (टोंक)

प्रशस्ति—संवत् १५५९ वर्षे श्रावण मासे कृष्णपक्षे प्रति पत्तियौ बुध दिने गंधारे मन्दिरे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री सकलकीर्ति तत्पट्टे भ० भुवनकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री ज्ञानभूषण तच्छिष्य मुनि श्री गुणभूषण पठनार्थं बाई शांतिका मदनश्री ज्ञानावरणीय कर्मक्षयार्थं लिखापितं भविष्यदत्त चरित्रं ॥

३७०५. **प्रतिसं० ८** । पत्रसं० ८६ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल सं० १६५६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति—सं० १६५६ काती सुदी ५ गुरुवारे अउछ्छ देशे भेदकी पुर नगरे राजाधिराज भानस्यंध राज्ये प्रतिलिपि हुई थी ।

३७०६. **प्रतिसं० ९** । पत्र सं० ५० । आ० १२½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

३७०७. **प्रतिसं० १०** । पत्र सं० २–६६ । आ० १२×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३२२ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३७०८. **प्रति सं० ११** । पत्रसं० १–७५ । ले० काल सं० १६१० । पूर्ण । वेष्टन सं० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर डीग ।

३७०९. **प्रति सं० १२** । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १४८२ वैशाख सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बसवा ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

संवत् १४८२ वैशाख सुदी १० श्री योगिनीपुरे साहिआदा मुरादखान राज्य प्रवर्त्तमाने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्कर गणे आचार्य श्री भावसेन देवास्तत् पट्टे श्री गुणकीर्ति देवास्तत् शिस्य श्री यशःकीर्ति देवा उपदेशेन लिखापितं ।

३७१०. **प्रतिसं० १३** । पत्र सं० ६२ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल सं० १६२१ वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

३७११. **प्रतिसं० १४** । पत्र सं० १–८८ । आ० ११½×४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—८८ पत्र से आगे के पत्र नहीं है । प्रति प्राचीन है ।

३७१२. **भविष्य दत्त चरित्र**— × । पत्रसं० १६ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

३७१३. **भविष्यदत्त चौपई**—**अ० रायमल्ल** । पत्रसं० ४२ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । र०काल सं० १६३३ काती सुदी १४ । ले० काल सं० १७६४ वैशाख सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२४५ । **प्राप्ति स्थान** -भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७१४. **प्रति सं० २** । पत्र सं ५० । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल सं० १६५५ काती सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७१५. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ७० । आ० ८½×६ इञ्च । ले०काल सं० १८४५ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल, टोंक ।

विशेष—महात्मा ज्ञानीराम सवाई जयपुर वाले ने प्रतिलिपि की । लिखायितं पं० श्री देवीचन्द जी राजारामस्यंध के वेडा मध्ये ।

३७१६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४४। आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल स० १८३०। पूर्ण। वेष्टन सं० २५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक)।

लेखक प्रशस्ति—मिति भादवा बुदि ११ वर दीतवार सवत् १८३० साके १६६५ प्रवर्तमान भट्टारक श्री १०८ श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति जी प्रवृतमान मूलसंघे बलात्कार गणे सुरसती गच्छे आम्नाये श्री कुंद-कुन्दाचार्य लिखिनार्थं साहा नाथूराम सोनी जाति सोनी। लिखतु रूडमल गोधा। श्री आदिनाथ के देहुरा।

३७१७. प्रति सं० ५। पत्रसं० ५३। आ० १० × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ५०६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—ईश्वरदास साह ने प्रतिलिपि की।

३७१८. भुवन भानु केवली चरित्र ×। पत्रसं० ३७। आ० १० × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। र० काल × ले० काल स० १७४७। पूर्ण। वेष्टन सं० ६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

इति श्री भवनभानु केवलि महाचारित्रे वैराग्यमय रामाप्तं।

संवत् १७४७ वर्षे शाके १६१२ मिति फागुण बुदि १ पंडितोत्तम श्री ५ श्री लक्ष्मी विमलगणि शिष्य पंडित शिरोमणि पंडित श्री ५ श्री रंगविमलगणि शिष्य अमर विमल गणि शिष्य गणि श्री रत्नविमल ग. पठनार्थं भगवतगढ़ नगरे पातिसाह श्री औरंगसाह विजैराज नवाब अस्तवागी नामे राजश्री सादुलसिंहजी राजे लिखतं।

३७१९. भोजप्रबंध—पं० वल्लाल। पत्रसं० ४०। आ० १३ × ६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-काव्य। र० काल सं० १७५५। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४८३। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

३७२०. प्रति सं० २। पत्र सं० ७५। आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। ले० काल सं० १८६६। वे० सं० २६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

३७२१. भोज चरित्र—भवानीदास व्यास। पत्रसं० ३५। आ० १० ×४$\frac{3}{4}$ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—काव्य। र० काल ×। ले० काल सं० १८२५। वेष्टन सं० ६७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—गढ़ जोधाण सतोल थाम आई विलाडे।

पीर पाठकल्याण सुजस गुण गीत गवाडे॥
भोज चरित तिण नु कह्यो कविपण सुख पावे।
व्यास भवानीदास कवित्त कर बात सुणावे॥
सुणी प्रबंध चारण प्रते भोजराज बीन कह्यो।
कल्याणदास भूपाल को धर्म ध्वजाधारी कह्यो।

इति श्री भोज चरित्रं सम्पूर्णं। सवत् १८२५ वर्षे मित कातिग बुदि ४ दिने बानीढारे लिखितं। पंचायक विजेयराण श्रीमन्नागपुरे श्री पार्श्वनाथ प्रसादात्।

३७२२. **भोजप्रबंध**— × । पत्रसं० २० । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८५ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी) ।

३७२३. **भोजराजकाव्य**— × । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

३७२४. **मणिपति चरित्र—हरिचन्द सूरि** । पत्र सं० १८ । भाषा—प्राकृत । विषय–चरित । र०काल सं० ११७२ । ले० काल × पूर्ण । वेष्टन सं० ४९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

३७२५. **मयणरेहाचरित्र**— × । पत्रसं० ७ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) विषय—कथा । र०काल × । ले० काल सं० १९१९ काती बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

३७२६. **मलयसुन्दरीचरित्र—जयतिलक सूरि** । पत्र सं० ६७ । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १४९० गाव सुदी १ सोमदिने । पूर्ण । वेष्टनसं० ६ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन पंचायती मन्दिर बसवा ।

३७२७. **मलयसुंदरी चरित्र भाषा—अखयराम लुहाडिया** । पत्रसं० १२४ । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–चरित्र । र०काल × । ले० काल सं० १७७४ कार्तिक बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६० । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

विशेष—प्रारंभ –

ऋिषभ आदि चोबीस जिन जिन सेयां आनन्द ।
नमस्कार त्रिकाल सहित करत होय सुखकंद ॥

३७२८. **मल्लिनाथ चरित्र—भ० सकलकीर्ति** । पत्र सं० २७ । आ० ११½×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले०काल सं० १८३२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७२९. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ३८ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २७८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७३०. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ४१ । आ० ११×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३७३१. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० ४१ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल सं० १६२३ आसोज बुदी १४ पूर्ण । वेष्टनसं० २५५/२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

विशेष—दीमक लगी हुई है ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६२३ वर्षे आश्वनि १४ शुक्रे श्री मूलसंघे भट्टारक श्री सकलकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री भुवनकीर्ति तत्पट्टे भ० ज्ञानभूषण तत्पट्टे भ० विजयकीर्ति तत्पट्टे भ० भुवनचन्द्र तत्पट्टे भ० श्री सुमतिकीर्ति स्तदाम्नाये

गिरिपुर वास्तव्य हुंबड़जातीय का० साइया भार्या सहिजलदे तयोः सुत सम्यक्त्वपालीय प्रक्षालित पापकर्दम अङ्गीकृत द्वादशव्रतनियम । दानदत्ति संतर्पित विविधपात्र विहित श्री शत्रुं जयेलाजीयेत तुंगी प्रमुख तीर्थ यात्र समस्त गुणागणादेयः को जावड़ तद्भार्या शीलेवशीव संपन्ना दानपूजापरायणालावण्य जलधेर्वेता वचनामृतवापिका श्राविका गोरां नाम्नी द्वितीय भार्या मुहूणदे तयो पुत्र को सामलदास एतैः ज्ञानावरणी कर्म क्षयार्थं व्र० कर्ण-सागराय श्री मल्लिनाथ चरित्र संलिखाप्यप्रदत्तं ।

३७३२. **प्रतिसं० ५** । पत्रसं० ७६ । ले०काल १९२२ आषाढ़ सुदी २ । **पूर्ण** । **वेष्टन सं०** २२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर में पन्नालाल बड़जात्या ने लिखवाई थी ।

३७३३. **मल्लिनाथ चरित्र- सकलभूषण** । पत्र सं० ४१ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १८०८ फाल्गुन बुदी ५ । पूर्ण । **वेष्टन सं०** १३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी (बूंदी) ।

३७३४. **मल्लिनाथ चरित्र भाषा—सेवाराम पाटनी** । पत्रसं० ५६ । आ० ११×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।विषय—चरित्र । र०काल सं० १८५० भादवा बुदी ५ । **ले०काल सं०** १८८४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १० । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष- कामा में सदासुख रिषभदास ने प्रतिलिपि की थी ।

प्रारम्भ—

(नमः) श्री मल्लिनाथाय, कर्ममल्लविनाशने ।
अनन्त महिमाताय, जगत्स्वामिनिनिशं ।।

पद्य—

मल्लिनाथ जिनको सदा वंदों मनवचकाय ।
मङ्गलकारी जगत में, भव्य जीवन सुखदाय ।।
मङ्गलमय मङ्गलकरण, मल्लिनाथ जिनराज ।
आरंभ्यो मैं ग्रंथ यह, सिद्धि करो महाराजि ।।२।।

हिन्दी गद्य का नमूना—

समस्त कार्य करि जगत गुरु नें ले करि इन्द्र बड़ी विभूति सूं पूर्ववत पुर नें ले आवता हुआ । तहां राज आंगण कै विषै बड़ा सिंहासन पाइ हर्ष करि सर्वाङ्ग भूषित इन्द्र बैठतो हुई ।

अन्तिम प्रशस्ति—

रामसुख परभातीमल्ल, जोधराज सगहि बुधिमल्ल ।
दीपचन्द गोधो गुणवान इनि चारयां मिलि कही अखानि ।।१।।
मल्लिनाथ चरित्र की भाषा, करो महा इह अति विख्यात ।
पढ़ै सुनै साधरमी लोग, उपजै पुण्य पाप क्षय होय ।।२।।
तब हमनें यह कियो विचार, वचनरूप भाषा अतिसार ।
कीजे रचना सुगम अपार, सब जन पढ़ै सुनैं सुखकार ।।३।।
मायाचन्द को नंदन जानि, गोतपाटणी सुखकी खानि ।
सेवाराम नाम है सही, भाषा कवि को जानौ इहि ।।४।।

अल्प बुद्धि मेरी अति घणी, कवि जन सुं विनती इम भणी ।
भूल चूक जो लेहु सुधार, इहि अरज मेरी अवधार ॥५॥
प्रथम वास चोसा का जानि, डीगमाहि सुखवास बखानि ।
महाराज रणजीत प्रचंड, जाटवंश में अतिबलवंड ॥६॥
प्रजा सबै सुखसों अति बसै, पर दल ईति भीतिनही लसै ।
न्यायवंत राजा अति भलौ, जैवंतो महि मंडल खरो ।
संवत् अष्टादशशत जानि, और पचास अधिक ही मान ॥
भादौंमास प्रथम पक्षि मांहि, पांचैं सोमवार के मांहि ।
तब इहु ग्रंथ संपूर्ण कियो, कविजन मन वांछित फल लियो ॥

३७३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ से ६४ । ले० काल सं० १८५० । **अपूर्ण** । वेष्टन सं० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन पंचायती मन्दिर कुण्डावालों का डीग ।

३७३६ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५६ । आ० १०½×६ इंच । ले०काल सं० १८५० भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

विशेष—सं० १८५० भादवा बुदी ५ सोमवार डीग सहर में लिख्यो सेवाराम पाटनी मयाचन्दजी का ज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थं ।

प्रति रचनाकाल के समय की ही है । तिथि तथा संवत् एक ही है ।

३७३७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८४ । आ० १०×५½ इंच । ले०काल सं० १८८३ काती सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मन्दिर कामा ।

विशेष—कामा में सदासुख कासलीवाल ने प्रतिलिपि की । महाराजा सवाई बलवंतसिंह जी के शासनकाल में फौजदार नाथूराम के समय में लिखा गया था ।

३७३८. महावीर सत्तावीस भव चरित्र—× । पत्र सं० ३ । आ० ६×३½ इंच । **भाषा**—प्राकृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक) ।

विशेष—जिनवल्लभ कवि कृत संस्कृत टीका सहित है ।

३७३९. महीपालचरित्र—वीरदेव गणि । पत्र सं० ६१ । आ० ११ × ४ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १७३६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

३७४०. महीपाल चरित्र—चारित्रभूषण । पत्र सं० ५० । आ० १०×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल सं० १७३१ श्रावण सुदी २ । ले० काल सं० १८४२ माघ सुदी । पूर्ण । वेष्टन सं० १०५६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—अजमेर में प्रतिलिपि हुई ।

३७४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । आ० १२×५ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७४२. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ४८ । आ० ९½×५½ इञ्च । ले०काल सं० १८९५ भादवा बुदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० ४/८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—पं० मोतीलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३७४३. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० २९ । आ० १२½ × ६½ इञ्च । ले०काल सं० १७८३ सावण बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा ।

विशेष— उणियारामध्ये रामपुरा के गिरधारी ब्राह्मण ने जती जीवणराम के कहने से लिखाया था ।

३७४४. **प्रतिसं० ५** । पत्र सं० ४२ । आ० १०½×६ इञ्च । ले०काल सं० १९३३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल टोंक ।

३७४५. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० ३६ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल सं० १८२६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४० । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

३७४६. **प्रतिसं० ७** । पत्र सं० ४० । आ० १०×५½ इञ्च । ले० काल सं० १८५५ कार्तिक बुदी १३ । पूर्ण । वेष्ठन सं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—कोटा नगर के रामपुरा शुभ स्थान के पं० जिनदास के शिष्य हीरानन्द के पठनार्थ पं० लालचन्द ने लिखा था ।

३७४७. **महीपाल चरित्र भाषा—नथमल बोसी** । पत्र सं० ६६ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । र०काल सं० १९१८ आसोज बुदी ४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—दुलीचन्द दोसी के सुपौत्र तथा शिवचन्द के सुपुत्र नथमल ने ग्रंथ की भाषा की थी ।

३७४८. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ४३ । आ० १३ × ८ इञ्च । ले०काल सं० १८९८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—प्रतापगढ़ नगर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३७४९. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० ६१ । आ० ११×७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अग्रवालों का नैणवा ।

३७५०. **प्रति सं० ४**। पत्र सं० ६८ । आ० ११×७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

३७५१. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० १३३ । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल सं० १९३४ श्रावण बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३२-१२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

३७५२. **प्रति सं० ६** । पत्रसं० ४८ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल सं० १९५६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ११५-५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

३७५३. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० ७२ । आ० ९×७½ इञ्च । ले० काल ×।पूर्ण । वेष्टन सं० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

३७५४. **प्रति सं० ८** । पत्रसं० ९१ । आ० ११×७ इञ्च । ले० काल सं० १९४८ आसोज बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

३७५५. **प्रतिसं० ६** । पत्र सं० ५७ । आ० १३×७½ इञ्च । ले०काल सं० १६७६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी (बूंदी) ।

३७५६. **महीभट्ट काव्य—महीभट्ट** । पत्रसं० ७२ । आ० ६½×४½ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले०काल × । **पूर्ण** । वेष्टनसं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्द्रगढ (बूंदी)

३७५७. **मुनिरंग चौपाई—लालचन्द** । पत्रसं० ३३ । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर, भरतपुर ।

३७५८. **मेघदूत—कालिदास** । पत्रसं० २६ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७५९. **प्रति सं० २** पत्र सं० १७ । आ० ६×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १६०३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७६०. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० १५ । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन सं० १३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

३७६१. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० १० । आ० ११½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण वेष्टन सं० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्द स्वामी, बूंदी ।

३७६२. **प्रति सं० ५** । पत्रसं०१४ । आ० १२× ४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

३७६३. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० १७ । आ० १० × ४ इंच । ले० काल × । पूर्ण ।वे० सं० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

३७६४. **प्रति संख्या ७** । पत्रसं० ८ । आ० ६× ४ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २२१ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

३७६५. **प्रतिसं० ८** । पत्र सं० १७ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल सं० १८१६ फागुण बुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

३७६६. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० ३५ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०८ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—संजीवनी टीका सहित है ।

३७६७. **प्रतिसं० १०** । पत्र सं० २८ । आ० ८½×४ इञ्च । ले० काल सं० १६८७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—संवत् १६८७ वर्षे वैशाख मासे शुक्लपक्षे एकादश्यां तिथौ भौम-वासरे बूंदीपुरे चतुर्विंशति जातिना शारंग धरेण लिखितं इदं पुस्तकं ।

३७६८. प्रतिसं० ११ । पत्रसं० १७ । आ० १२ × ४ इञ्च । ले०काल स० १८१६ । **पूर्ण** । वेष्टनसं० १३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

३७६९. प्रतिसं० १२ पत्रसं० ४७ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ५२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

३७७०. प्रति सं० १३ । पत्रसं० २३ । आ० १०$\frac{१}{२}$×४$\frac{१}{२}$ इञ्च । ले० काल × । **पूर्ण** । वेष्टन सं० १८४-७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियो का, डूंगरपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं टीका सहित है ।

३७७१. मेघदूत टीका (संजीवनी)—मल्लिनाथ सूरि । पत्र सं० २-३३ । आ० ६$\frac{१}{२}$ × २$\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले० काल सं १७४७ । अपूर्ण वेष्टन सं० १४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष- ग्रन्थाग्रन्थ सं० १७०० प्रशस्ति निम्न प्रकार । है—संवत् १७४० वर्षे मंगसिर सुदी ६ । दिने लिखितं शिष्य लालचन्द केन उदैपुरे ।

३७७२. मृगावती चरित्र—समयसुन्दर । पत्र सं० २-४६ । आ० १० × ४$\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय - चरित्र र० काल सं० १६६८ । ले० काल सं० १६८७ फागुण सुदी २ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर बयाना ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

३७७३. मृगावती चरित्र × । पत्रसं० ३२ । आ० १०×४$\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ११५-६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

३७७४. यशस्तिलक चम्पू—आ० सोमदेव । पत्रसं० ४०४ । आ० ११$\frac{१}{२}$ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—काव्य । र० काल सं० ८८१ (शक) वि० सं० १०१६ । ले० काल सं० १८५४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७७५. प्रतिसं० २ । पत्रसं० २४४ । ले० काल × । **पूर्ण** । वेष्टन सं० २७ । **प्राप्ति स्थान**-भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७७६. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० २६४ । आ० १२$\frac{१}{२}$ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १८७६ पौष सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—महात्मा फकीरदास ने खंधारि में प्रतिलिपि की थी ।

३७७७. प्रति सं० ४ । पत्रसं० २७० । आ० १२ × ५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

३७७८. प्रतिसं० ५ । पत्रसं० ३६२ । आ० १२ × ५$\frac{१}{२}$ इञ्च । ले० काल सं० १७१६ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—सरवाड नगर में राजाधिराज श्री सूर्यमल्ल के शासन काल में आदिनाथ चैत्यालय में श्री कनककीर्ति के शिष्य पं० रायमल्ल ने प्रतिलिपि की थी । संस्कृत में कठिन शब्दों का अर्थ भी है ।

३७७९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २०१-२८२ । आ० ११×५½ इञ्च । ले० काल सं० १४६० वैशाख बुदी १२ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—नेमिचन्द्र मुनिना उद्धृत हस्ते लिखापितं पुस्तकमिदं ।

३७८०. यशस्तिलक टिप्पण—× । पत्रसं० ३५३ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत । (गद्य) विषय—काव्य र० काल × । ले० काल सं १६१२ । आषाढ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२१ । **प्राप्ति स्थान** भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७८१. यशस्तिलक चम्पू टीका—श्रुतसागर । पत्रसं० ३० । आ० ११ × ७½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १६०२ ज्येष्ठ सुदी ३ । पूर्ण वेष्टन सं० १०१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर

विशेष—सवाई मानसिंह के शासन काल में जयपुर के **नेमिनाथ चैत्यालय** में (लश्कर) विजयचन्द की भार्या ने अष्टाह्निका कलोद्यापन में पं० भांभूराम से प्रतिलिपि करवाकर मन्दिर में भेंट किया ।

३७८२. यशोधर चरित्र—पुष्पदंत । पत्र सं० ७२ । आ० ११ ×५ ½ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२५५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—सं० १६२६ में चांदमल सोगानी ने चढाया था ।

३७८३. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ८६ । आ० ११ ×४इञ्च । ले० काल सं० १५६४ । पूर्ण । वेष्टन सं०४८८ । **प्राप्ति स्थान**-- दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—संवत् १५६४ फागुण सुदी १२ । श्री मूल संघे सरस्वती गच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये श्री धर्मचन्द्र की आम्माय में खण्डेलवाल हरसिंह की भार्या यशस्वती ने आचार्य श्री नेमिचन्द्र को ज्ञानावरणी क्षयार्थ दिया ।

३७८४. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० १०७ । आ० १२ ×४ ½ इञ्च । ले०काल सं० १५५६ पूर्ण । वेष्टनसं० ३८६।३२ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन सम्भवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—संवत् १५५६ वर्षे ज्येष्ठ बुदी ८ भौमे श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे श्री कुंद कुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्ति देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्ति देवास्तत्पट्टे भ० श्री ज्ञानभूषण देवा तद्भ्रातृ आ० श्री रत्नकीर्तिदेवा तत् शिष्य ब्रह्मरत्न सागर उपदेशेन श्रीमती गंधार मन्दिरे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये हूंबड ज्ञातीय श्री धना भार्या परोपकारिणी द्वादशानुप्रेक्षा चिंतन विधायिनी शुद्धशील प्रति पालिनी माजी नाम्नी स्वश्रेय श्रे०से श्री यशोधर महाराज चरित्रं लिखाप्य दत्तं ज्ञानावरणी कर्म क्षयार्थं शुभ भवतु । कल्याणंभूयात् ।

३७८५. यशोधर चरित्र टिप्पणी—प्रभाचन्द्र । पत्रसं० १२ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १५७४ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४८७ । **प्राप्ति स्थान**—जैन दि० मन्दिर सम्भवनाथ उदयपुर ।

प्रशस्ति—संवत् १५७४ ज्येष्ठ सुदी ३ बुधे श्री हंसपत्तने श्री वृषभ चैत्यालये श्री मूलसंघे श्री भारती गच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनंदि त. प. देवेन्द्रकीर्ति त. भ. विद्यानंदि तत्पट्टे भ. मल्लिभूषण त. प. भ. लक्ष्मीचन्द्र देवानां शिष्य श्री ज्ञानचन्द्र पठनार्थं श्री सिंहपुरा जाने श्रेष्ठि माला श्रेष्ठि माधव सुता वार हरखाइ तस्या पुत्र जन्म निमित्त लिखापितं ।

३७८६. **यशोधर चरित्र पीठिका**— × । पत्रसं० १८ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले०काल सं० १६८६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६५ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६८६ श्रावण वदी ११ दिने श्री मूलसंघे भट्टारक श्री पद्मनंदी तद् गुरुभ्राता ईश ब्रह्मचारी लाडयका तद् शिष्य ब्रह्म श्री नागराज ब्रह्म लालजिष्णुना स्वहस्तेन पठनार्थं ।

३७८७. **यशोधर चरित्र पीठबंध—प्रभंजनगुरु** । पत्रसं० २०२ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल सं० १६४४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६४४ फागुण सुदी ११ सोमे श्री सूरपुरे श्री आदिनाथ चैत्यालये ब्र० कृष्णा पं० रामई आस्यां लिखापितं ।

अन्तिम पुष्पिका—इति प्रभंजन गुरुपदचरिते (रचिते) यशोधरचरित पीठिका बंधे पंचम सर्गः ।

३७८८. **यशोधरचरित्र—आदिराज** । पत्रसं० २-२२ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले०काल सं० १६६२ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३२७ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

विशेष—संवत् १६६२ वर्षे माह सुदी १३ । शनौ श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री वादिभूषण तत् शिष्य पं० वेला पठनार्थं शास्त्रमिदं साहुराम लिखितमिदं । लेखक पाठकयो शुभं भवतु ।

३७८९. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० २० । आ० ६×४½ इंच । ले०काल सं० १५८१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८५ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५८१ वर्षे श्रावण वुदी ७ दिने श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदि तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्र देवा तदाम्नाये गोलाराडान्वये पं० श्री घनश्याम तत्पुत्र पंडित सुखानन्द निजाध्ययनार्थमिदं ग्रंथ लिखापितं ।

३७९०. **यशोधर चरित्र—वासवसेन** । पत्रसं० ५१ आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

३७९१. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ७८ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १८०३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष - जयपुर नगर में महाराज सवाई ईश्वरसिंह के राज्य में प्रतिलिपि हुई ।

३७९२. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० १७ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन सं० ७६३ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

३७९३. **यशोधरचरित्र—पद्मनाभकायस्थ**। पत्रसं० ६०। आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल × । ले०काल सं० १८६५ पौष सुदी ५ । पूर्ण। वेष्टन सं० १५५१। **प्राप्ति स्थान** – भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

३७९४. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० ७९। ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

३७९५. **प्रति सं० ३**। पत्रसं० ४१–७०। आ० ११$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र०काल × । ले०काल सं० १८४१ फागुण सुदी ६। वेष्टनस० १४६। अपूर्ण। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर।

३७९६. **यशोधर चरित्र—पद्मराज**। पत्र सं० १–४०। आ० १२×४$\frac{1}{2}$। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र०काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० ७४२। अपूर्ण। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर।

३७९७. **यशोधर चरित्र—आचार्य पूर्णदेव**। पत्रसं० १८। आ० ९$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र०काल × । ले० काल सं० १६७५ आसोज बुदी १३। पूर्ण। वेष्टनसं० ६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पंथी दौसा।

विशेष—पांडे रेखा पठनार्थ जोशी झमरा ने प्रतिलिपि की।

३७९८. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० २८। आ० ९$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)।

विशेष—लेखतं पद्म विमल स्वकीय वाचनार्थं

३७९९. **प्रतिसं० ३**। पत्रसं० १३। आ० १०×५ इंच। वेष्टनसं० १४७। पूर्ण। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—कहीं २ कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये गये हैं।

३८००. **यशोधरचरित्र—सोमकीर्ति**। पत्र सं० २८। आ० ११×४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र० काल × । ले० कालसं० १६५८। पूर्ण। वेष्टन सं० ४८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० संभवनाथ जैन मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६५८ वर्षे चैत्र सुदी ३ भौमे जवाछा नगरे राजधिराज श्री चन्द्रभाणराज्ये श्री आदिनाथ चैत्यालये काष्ठासंघे नन्दीतटगच्छे श्री रामसेनान्वये भ० सोमकीर्ति भ० यशः कीर्ति त० भ० उदयसेन त०भ० त्रिभुवनकीर्ति त०प०भ० रत्नभूषण आचार्य श्री जनसेन श्री जयसेन शिष्य कल्याणकीर्ति तत् शिष्य ब० कचराकिन लिख्यते।

३८०१. **यशोधर चरित्र—सकलकीर्ति**। पत्रसं० २२। आ० ९$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ११४२। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

३८०२. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० २९। आ० १२×५ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १५६। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

३८०३. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० ६१ । आ० १०½×४½ इंच । ले० काल सं० १८४६ । पूर्ण । वेष्टनसं० २८ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—उदयपुर नगरे श्री तपागच्छे ।

३८०४. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० २८ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल सं० १६४४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९८ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

३८०५. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० ५५ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल सं० १६४१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १९१ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष– प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६४१ वर्षे पौष सुदी ७ भौमे ईलदुर्ग मध्ये लिखतं चेला श्री धर्मदास लिखतं गढराय संघ जीवनाथ वास्तव्य हुँबड ज्ञातीय कोठारी विजातत् भार्या रंगा सुत जे संग जीवराज इदं पुस्तकं ज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थं मुनि जयभूषण दत्तं लिखापितं ।

३८०६. **प्रतिसं० ६** । पत्रसं० ३६ । आ० १०½ × ३½ इञ्च । र०काल × । ले०काल सं० १६७९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६२-१३९ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

प्रशस्ति—सम्वत् १६७९ वर्षे कार्तिक सुदी ३ लिखित पुस्तकं रामपुरा ग्रामे श्री आदिनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये श्री ५ सकलचन्द तत्पट्टे गच्छ भार धुरंधर भ० श्री पूरनचन्द तत् शिष्य ब्रह्म बूचरा बागड देशे····वास्तव्य हूँवड ज्ञातीय सा० भोजा भार्या सिरधा भातु भीया अचींडा ब्रह्म बूचरा कर्मक्षयार्थ इदं यशोधर पुस्तक लिखापितं । शुभं भवतु ।

३८०७. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० ३४ । आ० १०½×६ इंच । ले०काल पूर्ण । वेष्टन × । सं० ५१–४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

३८०८. **प्रति सं० ८** । पत्र सं० ८२ । आ० १३ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दैर ।

३८०९. **प्रति सं० ९** । पत्रसं० १२ । आ० १२×५½ इंच । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०३/१८ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इंदरगढ़ (कोटा) ।

३८१०. **प्रतिसं० १०** । पत्रसं० २४ । आ० ९½×४½ इञ्च । ले०काल सं० १९५० । पूर्ण । वेष्टनसं० १०१/१९ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

३८११. **प्रतिसं० ११** । पत्रसं० ६९ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १८८० । वेष्टनसं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती टूनी (टोंक) ।

विशेष—टोडानगरे श्री श्याम मन्दिर पं० शिवजीरामाय चौ० शिवबक्सेन दत्तं ।

३७१२. **प्रतिसं० १२** । पत्र सं० ८० । आ० १११×४ इञ्च । ले० काल सं० १८२१ चैत बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

३८१३. **प्रतिसं० १३** । पत्रसं० ३५ । आ० १२½ × ६½ इञ्च । ले० काल सं० १८५६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपंथी दि० जैन मन्दिर नैणवा ।

विशेष:—सं० १९३० में भादवा सुदी १४ को घालीलाल ऋषभलाल बैद ने तेरहपंथियों के मन्दिर में चढ़ाया ।

३८१४. **प्रतिसं० १४** । पत्रसं० ४४ । आ० १० × ५½ इञ्च । ले० काल सं० १९११ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ बूंदी ।

विशेष—बूंदी में प्रतिलिपि की गई थी ।

३८१५. **प्रतिसं० १५** । पत्र सं० ४० । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १७५५ द्वि० ज्येष्ठ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—नूतनपुर में मुनि श्री लाभकीर्ति ने अपने शिष्य के पठनार्थ लिखा ।

३८१६. **प्रतिसं० १६** । पत्रसं० ५४ । आ० ९½ × ४ ½ इञ्च । ले० काल सं० १८७७ प्र० ज्येष्ठ बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनसं० २०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

संवत् १८४७ का वर्षे ज्येष्ट कृष्णपक्षे अष्टम्यां शुक्रवासरे श्री नेमिनाथ चैत्यालये वृन्दावती मध्ये लिखितं पं. डूंगरसीदासजी तस्य शिष्यत्रय सदासुख, देवीलाल, सिवलाल तेषां मध्ये सदासुखेन लिपि स्वहस्तेन ।

३८१७. **यशोधर चरित्र** × । पत्र सं० २२ । आ० ११×४½ इञ्च भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३८१८. **यशोधर चरित्र**— × । पत्रसं० २ से २० आ० ११½ × ५ इञ्च भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल सं. १९१५ फागुन बुदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० १५६१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

३८१९. **यशोधर चरित्र**— × । पत्रसं० ४१ । आ० ११½ × ५⅜ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०७१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

३८२०. **यशोधर चरित्र**— × । पत्रसं० २० । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

३८२१. **यशोधर चरित्र** × । पत्रसं० १५ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ९४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

विशेष—डबलाणा में प्रतिलिपि हुई । ३२७ श्लोक है ।

प्रारम्भ—प्रणम्य वृषभं देवं लोकलोक प्रकाशकं ।
अंतस्तत्वोपदेष्टारं जगत पूज्य निरंजनं ।।
अर्हंतस्त्वि जगतपूज्यान्नष्ट घाति चतु प्रणमयि ।
सदा सांतान विश्व विघ्न प्रशांतप ।। २ ।।

अन्तिम—यस्याद्यापिच सिष्योय पूर्णे देवोमही तले ।
जगत मन्दिर मुहूर्त कीर्तिस्तंभी विराजते ।। ३२६
सो व्याघ्री सुव्रत सश्वतः भव्यानांभक्ति कारिणा ।
पस्य तीर्थे समुत्पन्नवशोधर महीभुज ।। ६२३ ।।

३८२२ **यशोधर चरित्र**— × । पत्रसं० १३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले०काल सं० १८२६ आसोज बुदी ४ । **पूर्ण** । वेष्टन सं० ८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

३८२३. **यशोधर चरित्र** × । पत्रसं० ११० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले०काल सं० १८५५ चैत बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर नागदी बूंदी ।

३८२४. **यशोधर चरित्र—विक्रमसुत देवेन्द्र** । पत्र सं० १२५ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । **विषय**—कथा । र० काल सं० १६८३ । ले० काल सं. १७२१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३८-१६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

३८२५. **प्रति सं० २** । पत्रसं० १७१ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले०काल सं० १८३१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५०-३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—प्रतापगढ़ में लिखा गया ।

३८२६. **यशोधर** । पत्रसं० २२ । आ० ११½×५ इञ्च । ले०काल सं० १६७० । पूर्ण । वेष्टन सं० १४५-६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, कोटडियों का डूंगरपुर ।

दोहा—संवत् सोरह से अधिक सत्तर सावन मास ।
सुकलसोम दिन सप्तमी कही कथा मृदुभास ।।
अडिल्ल—अगरवाल वर वंस गोसना थान को ।
गोइल गोत प्रसिद्ध चिन्हना ध्वान को ।।
माताचन्दा नाय पिता भैरों भन्यों ।
परिहांन (द) कही मनमोहन अगन गुन ना गन्यों ।। ६३ ।।

विशेष—ग्रन्थ में दो चित्र हैं जो संस्कृत ग्रन्थ के आधार पर है ।

३८२७. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ३६ । आ० ११ × ६ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी । विषय—चरित्र । र० काल सं० १६७० सावन सुदी ७ । ले० काल सं० १८५२ अषाढ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२। २५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

३८२८. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० २५ । आ० १२×८ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६।२० **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

३८२९. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० ४२ । ले०काल सं० १९४३ आसोज सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७। १७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर अलवर ।

३८३०. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० २९११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

३८३१. **प्रति सं० ६** । पत्रसं० ४६ । ले०काल स० १९२६ आसोज सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६९/१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनपंचायती मंदिर अलवर ।

३८३२. **प्रतिसं० ७** । पत्र सं० ४२ । आ० १० × ५ इञ्च । ले० काल सं० १७९५ अषाढ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बयाना ।

विशेष—चूड़ामणि के वंश में होने वाले सा. मुकुटमणि ने शास्त्र लिखवाया।

३८३३. प्रति सं० ८। पत्र सं० २२। ले०काल सं० १८९७ चैत सुदी ५। पूर्ण। **वेष्टन सं०** ५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बवाना।

३८३४. प्रतिसं० ९। पत्र सं० ४५। आ० ११×५½ इंच। ले० काल सं० १८१०। अपूर्ण। वेष्टन सं० ९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर वैर।

३८३५. प्रति सं० १०। पत्रसं० ४६। ले०काल सं० १८२० पौष सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० ४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बसवा।

३८३६. यशोधर चरित्र भाषा—खुशालचन्द काला। पत्र सं० ६१। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—चरित्र। र०काल सं० १७८१ कार्तिक सुदी ६। । ले० काल × । पूर्ण। वे० सं० १४८१। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

३८३७. प्रतिसं० २। पत्रसं० ५१। आ० १२×८ इञ्च। ले० काल १९६०। पूर्ण। वेष्टन सं० ३०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर नैणवा।

विशेष—सवाई जयपुर में प्रतिलिपि कराई थी।

३८३८. प्रतिसं० ३। पत्रसं० ७३। आ० ९× ४½ इञ्च। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ४४। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा।

विशेष—७३ से आगे के पत्र नहीं हैं।

३८३९. प्रतिसं० ४। पत्र सं० ८३। आ० ९×४½ इंच। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का नैणवा।

३८४०. प्रतिसं० ५। पत्रसं० ४६। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का नैणवा।

३८४१. प्रतिसं० ६। पत्र सं० ८४। आ० १०×४½ इंच। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक।

३८४२. प्रति सं० ७। पत्रसं० सं० ३९। आ० १३× ५ इञ्च। ले० काल सं० १८३०। पूर्ण। वेष्टनसं० ११ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूंदी।

३८४३. पत्रसं० ५८। आ० ११×५½ इञ्च। ले० काल सं० १९७६। पूर्ण। वेष्टनसं० ४३। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

३८४४. प्रतिसं० ९। पत्र सं० ४९। आ० १०½ ×८। इञ्च। ले० काल स० १९२५ फागुन सुदी ५। वेष्टन सं० ६४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक)।

३८४५. प्रति सं० १०। पत्रसं० ७३। आ० १०½ × ५½ इञ्च। ले०काल सं० १९४५। वेष्टन सं० २४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ कोटा।

३८४६. प्रति सं० ११। पत्रसं० ४५। ले०काल सं० १८०० वैशाख वुदी १०। पूर्ण। वेष्टन सं० ५७७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

३८४७. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ५५ । आ० १०½×५½ इंच । ले० काल सं०१८१६ । वेष्टन सं० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर ।

३८४८. प्रति सं० १३ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १८१२ सावन सुदी १५ । **पूर्ण** । वेष्टन सं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—स्वामी सुन्दर सागर के व्रतोद्यापन पर पाण्डे सुखाराम के शिष्य पाण्डे माकचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

३८४९. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ६६ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । ले० काल सं० १८१७ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

३८५०. यशोधर चरित्र भाषा—साह लोहट । पत्र सं० २-७६ । आ० ८½ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-चरित्र । र० काल सं० १७२१ । ले०काल सं० १७५६ आसोज सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष–मुनि शिवविमल ने इन्द्रगढ में प्रतिलिपि की थी । कवि ने बूंदी में ग्रन्थ रचना की थी । इसमें १३६६ पद्य है ।

३८५१. यशोधर चरित्र भाषा— × । पत्रसं० ३६ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १६ (क) । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा ।

३८५२. यशोधर चरित्र भाषा— × । पत्र सं० १०-४५ । आ० ६ × ६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी प० । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८८-६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

३८५३. यशोधर चौपई— × । पत्रसं० ६२ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—गुटका आकार है ।

३८५४. रघुवंश—कालिदास । पत्रसं० १०८ । आ० १०½ × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४७६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३८५५. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १०६ । आ० ११½×४½ इंच । ले०काल सं० १७२७ माघ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३८५६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २२ से १०४ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३८५७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६७ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल सं० १८३···· । पूर्ण । वेष्टन सं० ८६-४६ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

प्रशस्ति– संवत् १८३····वर्षे मास वैशाख वदी ३ गुरुवासरे देवगढ़ नगरे मल्लिनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री अमरचन्द्र तत्पट्टे भ०

श्री हर्षचन्द्र तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र तत्पट्टे भ० अमरचन्द्र तत्पट्टे भट्टारक श्री रतनचन्द तत्पट्टे भट्टारक श्री १०८ देवचंद्र जी तत् शिष्य ब्र. फतेचन्द जी रघुवंश काव्य लिखापितं ।

३८५८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६० । आ० १०½×५½ इञ्च । ले० काल सं० १७९९ अगहन सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४७ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—लुण्हरा नगर में प्रतिलिपि हुई ।

३८५९. प्रति सं० ६ । पत्रसं० १६ । आ० ९×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६ । **प्राप्ति स्थान**--- दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

३८६०. प्रतिसं० ७ । पत्र सं० २–२७२ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ९७/२२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—प्रति प्राचीन है लगभग सं० १६०० की प्रतीत होती है ।

३८६१. प्रति सं० ८ । पत्रसं० ११३ । आ० १०½×५½ इंच । ले०काल सं० १८५१ । आषाढ़ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—इन्द्रगढ़ मध्ये महाराजा श्री सम्मतिसिंह जी विजयराज्ये लिपिकृतं ।

३८६२. प्रति सं० ९ । पत्रसं० ६१ । ले०काल सं० १६६३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी) ।

३८६३. प्रति सं० १० । पत्र सं० ३८ । आ० १०½×५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३४० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

३८६४. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ३० । आ० ११½×४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २३५ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

३८६५. प्रति सं० १२ । पत्रसं० १४ आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२१ (१) । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—द्वितीय सर्ग तक है ।

३८६६. प्रति सं० १३ । पत्रसं० ८ । आ० १०½×७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९९ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष---द्वितीय सर्ग तक है ।

३८६७. प्रति सं० १४ । पत्रसं० १२५ । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन सं० ६२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३८६८. प्रति सं० १५ । पत्र सं० १४२ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २२५ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

३८६९. प्रति सं० १६ । पत्रसं० ४-१३ । लेखन काल सं० १७१५अपूर्ण । वेष्टन सं० २२७ । **प्राप्ति स्थान**-- दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष—प्रारंभ के ३ पत्र नहीं हैं ।

३८७०. प्रति सं० १७। पत्र सं० ७२। आ० ८$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती दूनी (टोंक)।

३८७१. प्रति सं० १८। पत्र सं० १६०। ले० काल सं० १७६० फागुण सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन सं० ५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा।

विशेष—रणछोड़पुरी में प्रतिलिपि हुई थी।

३८७२. प्रति सं० १९। पत्र सं० २१। लेखन काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर हण्डा वालों का डीग।

३८७३. प्रतिसं० २०। पत्र सं० २२। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ७७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डावालों का डीग।

विशेष—मल्लिनाथ कृत संस्कृत टीका सहित केवल ८ वां अध्याय है।

३८७४. प्रति सं० २१। पत्र सं० २६। आ० १० × ६ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १८५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

विशेष—४ सर्ग तक है।

३८७५. रघुवंश टीका—मल्लिनाथ सूरि। पत्र सं० ६१ से ६०। आ० १० × ४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—काव्य। र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १३-२२३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

विशेष—टीका का नाम संजीवनी टीका है।

३८७६. प्रतिसं० २। पत्र सं० १४। आ० १० × ४ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ८८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी।

३८७७. प्रति सं० ३। पत्रसं० १६२। आ० ११ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल सं० १८४६ माघ सुदी ११। पूर्ण। वेष्टनसं० ६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी।

विशेष—साधु सगादराज दादूपंथी ने वृन्दावती में प्रतिलिपि की थी।

३८७८. प्रति सं० ४। पत्रसं० १६५। आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च। ले० काल सं० १८७६ श्रावण बुदी २। वेष्टन सं० २६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

३८७९. प्रति सं० ६। पत्रसं० ६०। आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ८७-९२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

विशेष—द्वितीय सर्ग तक है।

३८८०. प्रति सं० ७। पत्र सं० २८१। आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल सं० १७१५ कार्तिक बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० १८५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

प्रशस्ति—संवत् १७१५ वर्षे शाके १६८० प्रवर्त्तमाने मिगसिरे श्री सूर्ये कार्तिग मासे शुक्लपक्षे पंचम्यां तिथौ बुधवासरे बंगपुर स्थाने वासपूज्य चैत्यालये श्रीमत् काष्ठासंघे नंदीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री रामसेनान्वये भट्टारक श्री त्रिभुवनकीर्त्ति भ० रत्नभूषण त० भ० जयकीर्त्ति त०भ० कमलकीर्त्ति तत् पट्टोभरसा भट्टारक श्री ५ भुवनकीर्त्ति तदाम्नाये पंचनामधर मंडलाचार्य आचार्य श्री केशवसेन तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री

विश्वकीर्त्ति तस्य लघु भ्राता आचार्य रामचंद्र ब्र० जिनदास ब्र० श्री बलभद्र बाई लक्ष्मीमति पंडित मायाराम पंडित भूपत समन्वितान् श्री बलभद्र स्वयं पठनार्थ लिखितं ।

३८८१. प्रतिसं० ८ । पत्र सं० ५० । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन [illegible] मन्दिर दूणा थालों का बीं. ।

३८८२. रघुवंश टीका—समय सुन्दर । पत्र सं० ३६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र०काल सं० १६९२ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

३८८३. रघुवंश टीका— × । पत्रसं० २-६४ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १४७-६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

३८८४. रघुवंश काव्य वृत्ति—सुमति विजय । पत्रसं० २१८ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

अन्तिम प्रशस्ति—इति श्री रघुवंशे महाकवि कालिदासकृतौ पंडित सुमतिविजय कृतायां सुगमान्वयप्रबोधिकायामेकोनविंशति सर्गः समाप्तः ।

श्रीमत्संदिविजयाख्यानां पाठकानाम भूधर ।
शिष्यःपुण्यकुमारेति नामा सपुण्यवारिधिः ।।१।।
तस्याभवत् विनेयाश्च राजसारास्तु वाचकाः ।
सज्जनोक्तक्रियायुक्ताः वैराग्यरसरंजिता ।।२।।
शिष्यमुख्यासु तेषां तु हेमधर्मा सदाह्वयः ।
शिष्टदिष्टा गुणाभिष्टा बभूव साधुमंडले ।।३।।
संप्रतं तद्विनयश्च जीया सुधी धनाचेहः ।
पाठकवादिवृंदेन्द्राः श्रीमद् विजयमेरवः ।।४।।
सुमतिविजयेनेव विहिता सुगमान्वया ।
वृत्तिर्बालबोधार्थं तेषां शिष्येण धीमता ।।५।।
विक्रमाख्ये पुरे रम्ये श्रीष्टदेवप्रसादतः ।
रघुकाव्यस्य टीकायं कृता पूर्णा मया शुभा ।।६।।
निर्विग्रहं रसशशिसंवत्सरे फाल्गुन सिते—
कादश्यां तिथौ संपूर्णं कीरस्तु मंगल सदा कर्तुर्दीमान ।।७।।

ग्रंथाग्रंथ १३००० प्रमाण

प्रारम्भ—प्रणम्य जगदाधीशं गुरुं सदाचारनिरमलं ।
वामांगप्रभव ज्ञात्वा वृत्ति मन्वादि दर्श्येयं ।।
सुमतिविजयाख्येन क्रियते सुगमान्वया ।
टीका श्रीरघुकाव्यस्य ममेयं शिशुहेतवे ।।२।।

३८८५. **प्रति सं० २**। पत्रसं० १४६। आ० १२ × ५½ इंच। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० २३५। **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ़ कोटा।

३८८६. **रघुवंश काव्य वृत्ति—गुणविनय**। पत्रसं० ४१। आ० ९⅝×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—काव्य। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १३३४। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—तृतीय अधिकार तक है।

३८८७. **रघुवंशसूत्र**— × । पत्र सं० ६२। आ० १० × ४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय—काव्य। र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ४५६। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

३८८८. **रत्नपाल प्रबन्ध—अ० श्रीपति**। पत्रसं० ६२। आ० ९½×४½ इंच। भाषा—हिन्दी प० । विषय-चरित। र० काल सं० १७३२। ले० काल सं० १८३०। पूर्ण। वेष्टन सं० २३७-१३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

३८८९. **प्रतिसं० २**। पत्र सं० ५६। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १६-११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

३८९०. **रत्नायन काव्य—कवि नागदत्त**। पत्रसं० १८। आ० ९×५½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—काव्य। र० काल × । ले० काल० × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३८७-१४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर।

३८९१. **राक्षस काव्य** × । पत्रसं० ५। आ० ११ × ५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय—काव्य। र० काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ३०६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

३८९१.(क) **प्रति सं० २**। पत्रसं० ५। आ० १०½ × ६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—काव्य। र० काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ३१२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

३८९२. **प्रतिसं० ३**। पत्रसं० ४। आ० १०½ × ६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय-काव्य। र० काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ३१३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

३८९३. **राघव पांडवीय—धनंजय**। पत्रसं० २६९। आ० १२ × ६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय—काव्य। र० काल × । ले० काल सं० १८१३। पूर्ण। वेष्टन सं० १२३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी।

ग्रंथ का नाम द्विसंधान काव्य भी है।

विशेष—चंपावती नगर में प्रतिलिपि हुई थी। चाटसु मध्ये कोटिमाहिल देहरे आदिनाथचैत्यालये द्विसंधान काव्य की पुस्तक पंडितराज-शिरोमणि पं० दीपचंद जी के शिष्य पंडित दयाचंद के व्याख्यान के लाई लिखायो मान महात्मा कहूँ।

प्रति संस्कृत टीका सहित है।

३८९४. **राघव पाण्डवीय टीका—नेमीचन्द**। पत्रसं० ४०९। आ० ११×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय—काव्य। र० काल × । ले० काल सं० १६५६। पूर्ण। वेष्टन सं० १२३०। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर।

विशेष—शेरपुर नगर में राजाधिराज श्री जगन्नाथ के शासन में खंडेलवाल जातीय गहाड्या गोत्रवाले डाडूकी भार्या लाडमदे ने यह ग्रंथ लिखवाया था।

पाण्डुलिपि में द्विसंधान काव्य नाम भी दिया हुआ है।

३८९५. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ५८ । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल सं० १८२३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि की गई थी।

३८९६. **राघवपाण्डवीय टीका-चरित्रवर्द्धन**। पत्रसं० १४-१४५ । आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—काव्य। र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२९। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

३८९७. **राघव पांडवीय—कविराज पंडित**। पत्रसं० ५०। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९७१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—इति श्री हलधरणीप्रसूत कादंबकुलतिलक चक्रवर्त्ति वीर श्री कामदेव प्रोत्साहित कविराज पंडित विरचिते राघवपाण्डवीये महाकाव्ये कामदेव्यांके श्रीरामयुधिष्ठिर राज्यप्राप्ति नाम त्रयोदशः सर्ग। ग्रंथ सं० १०७०।

३८९८. **राघव पांडवीय टीका**—× । पत्रसं० १-४५ । आ० ११ × ४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—काव्य। र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ४८१/१८। **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

३८९९. **वरांग चरित्र-तेजपाल**। पत्रसं० ५६। आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश। विषय—चरित्र। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ११६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

३९००. **वरांगचरित्र—भट्टारक वर्द्धमानदेव** । पत्रसं० ७८ । आ० ८½×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र० काल × । ले० काल सं० १८१२ पौष सुदी २। पूर्ण । वेष्टन सं० १२०१। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

३९०१. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ५५ । आ० ११½ × ५ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० २४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

३९०२. **प्रतिसं० ३**। पत्र सं० ५५। आ० ११ × ५ इञ्च। ले० काल सं० १९८०। पूर्ण। वेष्टन सं० १५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १९८० वर्षे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री गुणकीर्ति तत्पट्टे भ० वादिभूषण तत्पट्टे भ० रामकीर्ति तत् गुरुभ्राता पुण्यधाम श्री गुणभूषण वरांग चरित्रमिद पठनार्थं।

३९०३. **प्रति सं०** ४ । पत्रसं० ८१ । आ० १२×४½ इंच । ले०काल सं० १६६० ज्येष्ठ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

विशेष—राजमहल नगर में महाराजा मानसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी ।

३९०४. **प्रतिसं० ५** । पत्र सं. ५६ । आ० १२½×५ इञ्च । ले० काल सं० १८६६ सावन बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ६१/५२ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर सौगाणी करौली

विशेष—करौली में लिखा गया था ।

३९०५. **प्रतिसं० ६** । पत्रसं० ७६ । आ० १०⅜×४½ इञ्च । ले० काल सं० १८२३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—सोमचन्द और भोजीराम सिंघल अग्रवाल जैन ने करौली में प्रतिलिपि करवायी थी ।

३९०६. **प्रतिसं० ७** । पत्र सं० ५७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—दयाराम के पठनार्थ लिखी गई थी ।

३९०७. **प्रतिसं० ८** । पत्र सं० ६८ । ले० काल सं० १८१४ आषाढ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—पं० लालचन्द जी बिलाला ने प्रतिलिपि की थी ।

३९०८. **प्रतिसं० ९** । पत्रसं० ७५ । आ० ९×५ इञ्च । ले० काल सं० १८३८ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—गोठड्यामे चन्द्रप्रभ चैत्यालये लिखितं व्यास रूपविमल शिष्य माग्यविमल ।

३९०९. **प्रतिसं० १०** । पत्र सं० ६२ । आ० ११⅜×४⅜ इञ्च । ले० काल सं० १५४६ आश्विन बुदी ११ । वेष्टन सं० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष-सं० १५४६ वर्षे आश्विन बुदि ११ भूमवासरे लिखितं माथुरान्वय कायस्थ श्री गोइंद तत् पुत्र श्री गूजर श्री हिरं जयपुर नगरे । जलवानी सुलितान अहमद साहि तत्पुत्र सुलितान महमदसाहि राज्य प्रवर्त्तमाने ।

३९१०. **प्रतिसं० ११** । पत्र सं० ४२ । आ० १३ × ५ इञ्च । ले० काल १६०० वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—सांगानेर में राव सांगा के राज्य में लिखा गया था ।

३९११. **प्रतिसं० १२** । पत्र सं० ७० । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल सं० १८४५ आषाढ़ बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—जयपुर प्रतिलिपि हुई थी ।

३९१२. **प्रति सं० १३** । पत्रसं० ३२ । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति वाला पत्र नहीं है ।

३९१३. **वरांग चरित्र—कमलनयन** । पत्र सं० १२१ । आ० ९×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १९२८ कार्तिक बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९९१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—ग्रंथ प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

जाति बुढ़ेलेवंस पटु, मैनपुरी सुखवास ।
नागएवार कहावते, कासिपो तसु तासु ।।
नंदराम इक साहु तह, पुरवासिन सिर मौर ।
है हरचंद सुदास तह, वैद्य कियाधर और ।
तिनही के सुत दोय हैं, भाषू तिनके नाम ।
क्षितपति दूजो कंजहग, धरै भाव उर साम ।
लघु सुत कीनी जह कथा भाषा करि चित ल्याय ।
मङ्गल करो भवीन कौ, हूजे सब सुखदाय ।
एन समै घरतें चलिकै वरवास कियो तु पराग मझारी ।
हीगामल सुत लालजी तासो तहा धर्म सनेह बाढा अधिकारी ।
तह तिनको उपदेशहि पायकै कीनी कथा रुचि सौं सुविचारी ।
होहु सदा सब कौ सुखदायक राम वरांग की कीरति भारी ।

दोहा—

संवत नवडते सही सतक उपरि फुनि भाषि ।
युगम सप्त दोउघरी अंकधाम गति साखि ।
इह विधि सब गन लीजिये करि विचार मन बीच ।
जेठ सुदी पूनौ दिवस पूरन करि तिहि खींच ।।

इति लिपिकृतं पं० सांखूणिस्य अमीचन्द शिष्य जूगराज बाराबंकी नवाबगंजमध्ये संवत् १९३८ का कार्तिक कृष्णा ७ ।

३९१४. वरांग चरित्र—पांडे लालचन्द । पत्रसं० ६९ । आ० १२½×६½ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । र०काल सं० १८२७ माह सुदी ५ । ले०काल सं० १८८३ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सौगाणी करौली ।

विशेष—ब्रजलाल ठोल्या ने गुमानीराम से करौली में प्रतिलिपि करवाई थी ।

३९१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८५ । आ० ११¾×५¾ इंच । ले० काल सं० १८३५ आषाढ़ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

३९१६. प्रति सं० ३ । पत्रसं० १०४ । आ० ११×५½ इंच । ले० काल सं० १८३३ वैशाख सुदी ७ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—१०३ वां पत्र नहीं है । मोतीराम ने अपने पुत्र प्राणसुख के पठनार्थ बुधलाल से नगर रूदावल में लिखवाया था ।

३९१७. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० ९३ । आ० ११½×६ इञ्च । ले०काल सं० १८८३ भादवा बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—अलवर में प्रतिलिपि की गई थी ।

३९१८. प्रतिसं० ५ । पत्रसं० १०१ । आ० ८½×६ इञ्च । ले० काल सं० १८७५ वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर बयाना ।

विशेष-पांडे लालचन्द पांडे विश्वभूषण के शिष्य थे तथा गिरनार की यात्रा से लौटते समय हिंडौन तथा श्री महावीरजी क्षेत्र पर यात्रार्थ आये एवं नथमल बिलाला की प्रेरणा से ग्रंथ रचना की। इसका पूर्ण विवरण प्रशस्ति में दिया हुआ है।

३९१९. **वड्ढमाण (वर्द्धमान) काव्य—जयमित्रहल।** पत्रसं० १–५५। आ० १०×४$\frac{3}{4}$ इंच। **भाषा**-अपभ्रंश। **विषय**–काव्य। र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा।

विशेष—पंचम परिच्छेद तक पूर्ण है।

३९२०. **प्रतिसं० २।** पत्र सं० ४६। आ० ११× ५ इंच । ले० काल सं० १५४६ पौष बुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० २८०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा।

विशेष—गोपाचल दुर्ग में महाराज मानसिंह के राज्य में जैसवाल ज्ञातीय साधु नाइक ने प्रतिलिपि करवाई थी।

३९२१. **वर्द्धमान चरित्र—श्रीधर।** पत्रसं० ७८। आ० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-अपभ्रंश। विषय-चरित्र। र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १९/१३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

विशेष –१० वां परिच्छेद का कुछ अंश नहीं है।

३९२२. **वर्द्धमान चरित्र—असग।** पत्र सं० १११। आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय— चरित्र। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वे० सं० ८९। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

३९२३. **वर्द्धमान चरित्र—मुनि पद्मनन्दि।** पत्र सं० ३५। आ० ९$\frac{1}{2}$×५ इंच। भाषा — संस्कृत। विषय—चरित्र। र०काल × । ले०काल × पूर्ण। वेष्टन सं० २८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी।

विशेष—इति श्री वर्द्धमानकथावतरे जिनरात्रिव्रतमहात्म्यप्रदर्शके मुनि पद्मनन्दिविरचिते मुनः सुव्रतनामांकिते श्री वर्द्धमान निर्वाण गमन नाम द्वितीय परिच्छेदः समाप्तः।

३९२४. **वर्द्धमान चरित्र—विद्याभूषण।** पत्रसं० २३६। आ० १०×५$\frac{3}{4}$ इंच। भाषा— संस्कृत। विषय—चरित्र। र० काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ६०/३८। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर।

३९२५. **वर्द्धमान चरित्र—सकलकीर्त्ति।** पत्र सं० १४५-२१०। आ० १२×४$\frac{1}{2}$ इंच। **भाषा**—संस्कृत। विषय-चरित्र। र०काल × । ले० काल सं० १६५९ जेठ सुदी २। अपूर्ण। वेष्टन सं० ३२२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

विशेष—मालपुरानगरे माधवसिंह राज्ये चन्द्रप्रभ चैत्यालये..... ..... लिखितं। प्रति जीर्ण हो चुकी है।

३९२६. **प्रतिसं० २।** पत्रसं० १०३। आ० १२$\frac{1}{2}$×६ इंच। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

३६२७. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ५-११ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३०४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

३६२८. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० १३२ । आ० १०$\frac{१}{२}$×४$\frac{३}{४}$ इञ्च । ले० काल सं० १८५८ चैत्र सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६४/२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्द्रगढ (कोटा) ।

विशेष—इन्द्रगढ मध्ये महाराजा शिवदानसिंह के राज्य में ज्ञान विमल ने प्रतिलिपि की थी ।

३६२९. **बलि महानरेन्द्र चरित्र**—× । पत्र सं० ६६ । **भाषा**–संस्कृत । विषय–जीवन चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

३६३०. **विक्रम चरित्र—रामचन्द्र सूरि** । पत्र सं० ५६ । आ० १०×४$\frac{१}{२}$ इञ्च । **भाषा**–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल सं० १४८० । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

३६३१. **विक्रम चरित्र चौपई—भाऊ कवि** । पत्र सं० २५ । आ० १०×४$\frac{१}{२}$ इञ्च । **भाषा**–हिन्दी । विषय–चरित्र । र० काल × ले० काल सं १५८८ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—दूहा—नमो नमो तुम्ह चन्डिका तुम गुन पार न हुंति ।
एकचित्त लिउ सुमरता सुख सम्पति पामंति ।
तइहेज महिषासुर बधिउ देत्यज मोडयमान ।
जाणु शंभु निशंभुना तइं हरिया तसु प्राण ।

अन्तिमभाग—

संवत् पनर अठासिइ तिथि बलि तेरह हुंति ।
मंगसिर मास जाण्यों रविवार जते हुंति ।
चडी तणइ पसाउ संचढुउ प्रबन्ध प्रमाण ।
उवझाय भावं भणइ वातज आवा ठाण ।
इति विक्रमचरित्र चौपई ।

३६३२. **विजयचन्द चरिय**—× । पत्र सं० ८ । आ० १० × ४$\frac{३}{४}$ इञ्च । **भाषा**–प्राकृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

३६३३. **वृषभनाथ चरित्र—सकलकीर्ति** । पत्र सं० १४६ । आ० १२$\frac{१}{२}$ × ६ इंच । **भाषा**–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १८३६ फागुण सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२७३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३६३४. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १८६ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल सं १७६३ आसोज सुदी १४ । अपूर्ण । वेष्टन सं० २४६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—सासवाली नगर मध्ये राज्ञः श्री मानसिंघाख्यमत्रिणो धर्ममूर्तयः सा श्री सुखरामजी श्री बखतरामजी श्री दोलतरामजी तेषां सहायेन लिखितं । मुनिधर्मविमल ने प्रतिलिपि की थी ।

३९३५. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० ३०६ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १६७५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७१८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—संवत् १६७५ मंगसिर सुदी ३ के दिना आदिपुराण सा. नानौ मौंसो बेगौ को धटापितं बाई भनीरानी मौजाबाद मध्ये ।

३९३६. प्रति सं० ४ । पत्रसं० ४८/८० । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर ।

३९३७. प्रतिसं० ५ । पत्र सं० ६–४७ एवं १०३ से १३७ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल ×। अपूर्ण । वेष्टन सं० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर ।

३९३८. प्रतिसं० ६ । पत्र सं० १८६ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १७९६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०६।१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—सं० १७९६ कार्तिक सुदी ११ को उदयपुर में श्री राणा जगतसिंह के शासन काल में श्वेतांबर पृथ्वीराज जोधपुर वाले ने प्रतिलिपि की थी । ग्रन्थाग्रन्था । ४६२८ । रोडीदास गांधी ने ग्रन्थ भेंट दिया था ।

३९३९. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १०६ । आ० १०×६$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल सं० ११०-५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का, डूंगरपुर ।

३९४०. प्रतिसं० ८ । पत्र सं० १७१ । आ० १०$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १७४१ आषाढ बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

३९४१. प्रति सं० ९ । पत्रसं० १४८ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । ले०काल सं० १५७५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का नैणवा ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—संवत् १५७५ वर्षे आश्विन मासे कृष्णपक्षे पंचम्यां तिथौ श्री गिरिपुरे पौथी लिखी । श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० विजयकीर्ति तत् शिष्य आ. हेमचन्द पठनार्थं आदिपुराणं श्री संघेन लिखाप्य दत्तं ।

३९४२. प्रति सं० १० । पत्रसं० १३४ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का नैणवा ।

विशेष—१३४ से आगे के पत्र नहीं हैं ।

३९४३. प्रतिसं० ११ । पत्रसं० २५७ । आ० १०× ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १८२२ आसोज सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३९४४. विद्वद्भूषणकाव्य— × । पत्रसं० १५ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३९४५. शतश्लोक टीका—मल्लभट्ट । पत्रसं० ११ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

३६४६. **शांतिनाथ चरित्र**— × । पत्रसं० १२८ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत गद्य । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—श्वेताम्बर आम्नायका ग्रंथ है । १२८ से आगे पत्र नहीं है ।

३६४७. **शांतिनाथचरित्र—अजितप्रभसूरि** । पत्र सं० १२६ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल सं० १३०७ । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३३४८. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० १८६ । आ० ११X४½ इञ्च । ले० काल सं० १८५१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३६४६. **शांतिनाथ चरित्र—आणंद उदय** । पत्रसं० २७ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) ।विषय–चरित्र । र० काल सं १६६८ । ले०काल सं० १७६६ श्रावण बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

३६५०. **शांतिनाथ चरित्र—भावचन्द्र सूरि** । पत्रसं० १३८ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा–संस्कृत (गद्य) । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल १५३५ भादवा बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—भावचन्द्र सूरि जयचन्द्र सूरि के शिष्य तथा पार्श्वचन्द्र सूरि के प्रशिष्य थे ।

३६५१. **प्रति सं० २** । पत्रसं० १२८-१७२ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३६५२. **शांतिनाथ चरित्र—सकलकीर्ति** । पत्र सं० १८३ । आ० १२ × ५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले०काल सं० १८६८ भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२५१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—अजमेर नगर में नेमीचन्द जी कासलीवाल ने प्रतिलिपि करायी थी ।

३६५३. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० १६७ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १८७० आषाढ सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ७१३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—महारोठ नगरे महाराजाधिराज महाराजा मानसिंह जी राज्ये प्रवर्तमाने भिडत्यासाखे महाराज श्री महेसदास जी श्री दुर्जनलाल जी प्रवर्तमाने खंडेलवाल जातीय ला० सिभुदास जी ने प्रतिलिपि कराई ।

३६५४. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० १६७ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले०काल × पूर्ण । वेष्टन सं० १५७८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

३६५५. **प्रतिसं० ४** । पत्र सं० १८६ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३६५६. **प्रतिसं० ५** । पत्र सं० १२४ । आ० १२ × ६½ इञ्च । ले०काल १८०६ कार्तिक बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०५१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

३६५७. प्रति सं० ६ । पत्रसं० ३२५ । आ० १०$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १७२६ पौष बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० २५५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—जोधराज गोदीका के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

३६५८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १८३ । आ० १०$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल १६६० । पूर्ण । वेष्टन सं० १००/४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

प्रशस्ति—संवत् १६६० वर्षे आषाढ सुदि १२ शुक्रे सागवाड़ा शुभस्थाने श्री आदिनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये मंडलाचार्य श्री गुणचंद्र तत्पट्ट मंडलाचार्य श्री जिनचंद्र तत्पट्टे भ० श्री सकलचन्द तदाम्नाये स्थविराचार्य श्री मल्लिभूषण आचार्य श्री हेमकीर्ति तत् शिष्य बाई कनकाए बारसै चोतीस श्री शांतिनाथ पुराण ब्र० श्री भोजा ने लिखापि दत्तं ।

३६५९. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ६-१६६ । आ० ११ × ४$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । ले० कालसं० १६१० । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३७२।१५ **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६१० वर्षे शाके १४७५ प्रवर्तमाने मेदपाट मध्ये जवाछस्थाने आदीश्वर चैत्यालये लेखक सहजी लिखतं । श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदि तत्पट्टे भ० श्री सकलकीर्ति तत्पट्टे भुवनकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री ज्ञानभूषण तत्पट्टे श्री विजयकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र तदाम्नाये ब्रह्म श्री जिणादास तत् पाट ब्र० श्री शांतिदास तत्पाट ब्र० श्री हंसा तस्य शिष्या बाई धनवती बाई श्री लतमती चरणकमल मधुनतावस्या चेली बाई धनवती कर्मक्षयार्थं पठनार्थ इदं पुस्तकं लिखापितं ।

३६६०. प्रति सं० ९ । पत्रसं० १४४ । आ० ११ × ४ इञ्च । ले०काल सं० १५६४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१६ । **प्राप्ति स्थान**-सम्भवनाथ दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—संवत् १५६४ वर्षे भादवा सुदी ११ शुक्रे श्री मूलसंघे श्री गिरिपुरे श्री आदिनाथ चैत्यालये हुंबड जातीय खरजा गोत्रे बुहरा गोपा भार्या भाणकदे तस्य पुत्री रमा तस्य जमाई भांची वाछा भार्या नाथी श्री शांतिनाथ चरित्र लिखाप्य दत्तं । कर्म क्षयार्थं शुभं भवतु । कुंदकुंदाचार्यान्वय भट्टारक श्री सकलकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री भुवनकीर्ति तत्पट्टे भ० ज्ञानभूषण तत् शिष्य आचार्य श्री नेमिचन्द्र त. सु श्री गुणकीर्ति । भट्टारक श्री पद्मनंदिभि ब्र० अमरायं प्रदत्तं पुस्तकमिदं ।

किनारों पर दीमक लग गई है किन्तु ग्रन्थ का लिखा हुआ भाग सुरक्षित है ।

३६६१. प्रतिसं० १० । पत्रसं० ४० से १२८ । आ० १३ × ५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १७३ । **प्राप्ति स्थान**—सम्भवनाथ दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

विशेष प्रति प्राचीन है ।

३६६२. प्रतिसं० ११ । पत्रसं० १९९ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १५१ । प्राप्ति **स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—ग्रन्थ में १६ अधिकार हैं । ग्रन्थाग्रन्थ सं० ४२७५ है ।

३६६३. प्रति सं० १२ । पत्रसं० ९०-१४० । आ० १०×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं०१३० । प्राप्ति **स्थान**— दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी ।

३६६४. **शांतिनाथ चरित्र—मुनिदेव सूरि**। पत्रसं० ११८। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र० काल ×। ले० काल सं० १५१३। पूर्ण। वेष्टन सं० ११८। **प्राप्ति-स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

३६६५. **शांतिनाथ चरित्र भाषा—सेवाराम**। पत्र सं० २३०। आ० ११×६½ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—चरित्र। र० काल सं० १८३४ श्रावण बुदी ८। ले० काल सं० १८८७। पूर्ण। वेष्टन सं० ६-८। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

विशेष—

देश ढूढाहड आदि दे संबोधे बहुदेस,
रची रची ग्रन्थ कठिन टोडरमल्ल महेश।
ता उपदेश लवांस लही सेवाराम सवान,
रच्यो ग्रन्थ रुचिमांन कें हर्ष हर्ष अधिकान॥ २३॥
संवत् अष्टादस शतक फुनि चौतीस महान।
सावन कृष्ण अष्टमी पूरन कियो पुरान।
अति अपार सुखसो बसे नगर देश्याढ सार,
श्रावक बसे महाधनी दान पूज्य मतिधार॥ २४॥

३६६६. **शालिभद्र चरित्र—पं० धर्मकुमार**। पत्रसं० १५। आ० १०½×४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र० काल × ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २०२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर।

३६६७. **शालिभद्र चौपई—जिनराज सूरि**। पत्रसं० २८। भाषा—हिन्दी। विषय—चरित्र। र० काल सं १६७८ आसोज बुदी ६। ले० काल सं० १७६६ चैत बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० ६४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

३६६८. **प्रति सं० २**। पत्र सं० २५। ले० काल सं० १७६६। पूर्ण। वेष्टन सं० ५००। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर।

३६६९. **प्रतिसं० ३**। पत्रसं० २१। ले० काल सं० १७६६। पूर्ण। वेष्टन सं० ५६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

३६७०. **प्रतिसं० ४**। पत्र सं० १६। आ० ११×४½ इञ्च। ले० काल सं० १८७८। पूर्ण। वेष्टनसं० १६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कामा।

३६७१. **शिशुपालवध—माघ कवि**। पत्र सं० १६। आ० १२×४½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—काव्य। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १५६७। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

विशेष—४ सर्ग तक है।

३६७२. **प्रतिसं० २**। पत्र सं० ७०। आ० १० × ५ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १४४०। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है। प्रति प्राचीन है।

३९७३. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० ३६-१८२ । आ० ११$\frac{3}{4}$×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

३९७४. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० ३०७ । आ० ११×६ इञ्च । ले०काल सं० १८८० । वेष्टनसं० २९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैनमन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—लश्कर के मन्दिर में पं० केशरीसिंह के शिष्य····· ने देवालाल के पढ़ने के लिए प्रति-लिपि की थी ।

३९७५. **प्रतिसं० ५** । पत्र सं० १०६ । आ० १२$\frac{1}{2}$×५ इंच । ले०काल सं० १८३९ । वेष्टन सं० २९७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष-जयपुर नगर में श्री ऋषभदेव चैत्यालय में प० जिनदास ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३९७६. **प्रतिसं० ६** । पत्र सं ५ । आ० १०$\frac{1}{2}$× ५ इञ्च । ले०काल × । प्रथम सर्ग पूर्ण । वेष्टन सं० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

३९७७. **प्रतिसं० ७** । पत्रसं० १७ । आ० १०× ७ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २४/१६ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर टूनी (टोंक) ।

३९७८. **प्रतिसं० ८** । पत्रसं० ९ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × पूर्ण । वेष्टन सं० १८८-७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

३९७९. **शिशुपालवध टीका—मल्लिनाथ सूरि** । पत्रसं० २२ । आ० १३× ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

३९८०. **श्रीपाल चरित्र—रत्नशेखर** । पत्र सं० ३८ । आ० ९$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय-कथा । र०काल सं० १४२८ । ले०काल सं० १६९९ चैत्र सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१४ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मंदिर, अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—सं० १६९९ वर्षे चैत्रसित त्रयोदस्यां तिथौ गुरु दिने । गणिगण गंधर्वसिंधु रायमणे गणेन्द्र गणि श्री रूपचन्द शिष्य मुक्ति चंदणा लिलेखि । पुस्तक चिरजीयात । लिखितं धनेरीया मध्ये ।

३९८१. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ९४ । ले० काल सं० १८८४ आसोज सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

विशेष—हिन्दी (गुजराती मिश्रित) अर्थ सहित है ।

३९८२. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ९१ । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

३९८३. **श्रीपाल चरित्र—पं० नरसेन** । पत्र सं० ३७ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-चरित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३९८४. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ४६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३६८५. **श्रीपाल चरित्र—जयमिश्रहल।** पत्र सं० ६० । आ० ११ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १६२३ आषाढ़ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—भैरवदास ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी ।

३६८६. **श्रीपाल चरित्र—रइधू।** पत्र सं० १२५ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १६०६ आसोज बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—शुक्रवासरे कुरुजांगल देसे श्री सुरणपथ शुभस्थाने सुलितान श्री सलेमसिंह राज्य प्रवर्तमाने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्कर गणे उभयभाषाप्रवीण तपोनिधि भट्टारक श्री उद्धरसेनदेवा तत्पट्टे भ० श्री धर्मसेनदेवा तत्पट्टे श्री गुणकीर्त्ति देवा तत्पट्टे भ० श्री यशोकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे श्री मलयकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री गुणभद्रसूरीदेवा तत्पट्टे भानुकीर्त्तिदेवा ।

३६८७. **श्रीपाल चरित्र—सकलकीर्त्ति** । पत्र सं० ३५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल सं० १५ वीं शताब्दी । ले० काल सं० १६६४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०५-८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

प्रशस्ति—संवत १६६४ वर्षे महासुदि १० सोमे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्त्तिस्तदन्वये भट्टारक श्री रामकीर्त्तिस्तत्पट्टे भट्टारक श्री पद्मनंदि स्तदाम्नाये ब्रह्म श्री लाडथका तत्सिष्य मुनि श्री धर्मभूषण तत्सिष्य ब्रह्म मोहनाम श्रीईडर वास्तव्य हूंबड ज्ञातीय गंग्य गोत्रे लघु सांख्यया तबोली आखिराज भार्या उत्तमदे तयो सुतः लाधा तथा लटूजी एतै स्वज्ञाना-वरणीय कर्म क्षयार्थ श्रीपालाख्ये चरित्रं लिखाप्य दत्तं ।

३६८८. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ४६ । आ० ११×४ इञ्च । ले० काल सं० १८३१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

३६८९. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ४५ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल सं० १७६८ । वेष्टन सं० २०० । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति अच्छी है ।

३६९०. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० ३६ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल सं० १६४८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

विशेष—ग्रंथाग्रंथ सं० ८८४ । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सं० १६४८ वर्षे श्रावण सुदी ८ शनिवासरे बडोद शुभस्थाने श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कार गणे श्री नेमिजिनचैत्यालये भ० अभयनंदिदेवाय तत्सिष्य आचार्य श्री रत्नकीर्ति पठनार्थं । श्रीपालचरित्र लिखितं जोसी जानार्दन ।

३६९१. **प्रतिसं० ५** । पत्रसं० ३२ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १८७८ श्रावण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती टूनी (टोंक) ।

विशेष—टोडा नगर के श्री सांवला जी के मन्दिर में पं० शिवजीराम के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी । प्रति जीर्ण है ।

३६६२. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० ५३ । आ० १० × ५½ इञ्च । ले०काल सं० १६३६ । **पूर्ण** । वेष्टन सं० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटियों का नैणवा ।

३६६३. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० ३८ । आ० १२ × ४ इञ्च । ले० काल सं० १७७३ माघ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—पं० मयाराम ने परानपुर के पार्श्वनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

३६६४. **श्रीपाल चरित्र**—ब्र० नेमिदत्त । पत्र सं० ६६ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-चरित । र०काल सं० १५८५ आषाढ सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४३६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३६६५. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ६० । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले०काल सं० १६०५ मंगसिर सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२८६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

३६६६. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ६६ । आ० १२ × ५ इंच । ले० काल सं० १८३२ सावन बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३१६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

३६६७. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० ५५ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले०काल सं० १८१६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर ।

३६६८. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० ८३ । ले० काल सं० १८१८ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर में आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की गई थी ।

३६६६. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० ६६ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १८८५ । **अपूर्ण** । वेष्टन सं० २ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

४०००. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० २५ । आ० ६½ × ५½ इञ्च । ले०काल × । **अपूर्ण** । वेष्टन सं० १०८–१७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

४००१. **प्रति सं० ८** । पत्र सं० १३५ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल सं० १८७६ जेठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०/२१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

४००२. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० ६६ । लेखन काल × । पूर्ण । वे०सं० १४७ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी ।

४००३. **प्रति सं० १०** । पत्र सं० ४७ । आ० १२½×६ इञ्च । ले० काल सं० १६०५ । पूर्ण । वे० सं० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—पं० सदासुखजी एवं उनके पुत्र चिमनलाल जी को बूंदी में लिखवाकर भेंट किया था ।

४००४. **प्रति सं० ११** । पत्र सं० ५५ । आ० ६×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—सिद्धचक्र पूजा महात्म्य भी इसका नाम है ।

४००५. **श्रीपाल चरित्र—गुणसागर** । पत्र सं० १८ । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

४००६. **श्रीपाल चरित्र**— × । पत्र सं० ११ । आ० १० × ५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल सं० १९१० सावण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

४००७. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १ से २१ । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७०९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

४००८. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० २१ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

४००९. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० ५३ । आ० १०×६½ इंच । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३०/१६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन पंचायती मन्दिर टूनी (टोंक) ।

४०१०. **प्रतिसं० ५** । पत्रसं० १०८ । आ० १२×७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर खंडेलवालों का आकां (जरिणियारा) ।

विशेष—बीच के बहुत से पत्र नहीं हैं । १०८ से आगे भी पत्र नहीं हैं ।

नोट—पुण्यास्रवकथाकोश के फुटकर पत्र हैं और वह भी अपूर्ण है ।

४०११. **श्रीपाल चरित्र—परिमल्ल** । पत्रसं० १३७ । आ० १०×६½ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । र०काल सं० १६५१ आषाढ बुदी ५ । ले०काल सं० १८१० आसोज सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४८४ । **प्राप्ति स्थान**—ब०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—कवि आगरा के रहने वाले थे तथा उन्होंने वहीं रचना की थी ।

४०१२. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ६१ । आ० १३×८ इंच । ले० काल सं० १९११ श्रावण बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १८ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—प्रति अच्छी है ।

४०१३. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० ५६ । आ० १३×५½ इंच । ले०काल सं० १८९९ आषाढ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—मोहम्मदशाह के राज्य में दिल्ली की प्रति से जो मनसाराम ने लिखी, प्रतिलिपि की गई ।

४०१४. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० ८५ । आ० ११½×६½ इंच । ले०काल सं० १९१७ भादवा बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

४०१५. **प्रतिसं० ५** । पत्रसं० १८० । आ० १०×७ इंच । ले०काल सं० १६९९ फागुण सुदी १२ । पूर्ण । जीर्ण शीर्ण । वेष्टन सं० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

४०१६. **प्रतिसं० ६** । पत्र सं० १२० । आ० ८½ × ५½ इंच । ले० काल सं० १९२९ । पूर्ण । वे० सं० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—दौसा में प्रतिलिपि हुई थी ।

४०१७. **प्रति सं० ७**। पत्र सं० १२५ । आ० १०×६½ इंच । ले० काल सं० १८८५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२२/३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बडा बीसपंथी दौसा ।

४०१८. **प्रति सं० ८** । पत्र सं० ९६ । ले०काल सं० १७७४ फागुण सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडाबीस पंथी दौसा ।

विशेष—आदीराम टोंग्या ने प्रतिलिपि की थी ।

४०१९. **प्रति सं० ९** । पत्र सं० १६७ । आ० १०×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल सं० १८२० कार्तिक बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—हेडराज के बडे पुत्र भगतीराम ने करौली नगर में बुधलाल से लिखवाया था । प्रति जीर्ण है ।

४०२०. **प्रति सं० १०** । पत्र सं० ११७ । आ० १३ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १८८६ मंगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—गुमानीराम ने करौली में प्रतिलिपि की थी ।

४०२१. **प्रति सं० ११** । पत्र सं० १९० । आ० ८ × ६$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

४०२२. **प्रति सं० १२** । पत्र सं० १६१ । आ० ८$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१/४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सोगाणी मन्दिर करौली ।

४०२३. **प्रति सं० १३** । पत्र सं० १५० । आ० १०×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल सं० १८८३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सोगाणी मंदिर करौली ।

विशेष—बयाने में प्रतिलिपि हुई तथा खुशालचन्द ने सोगाणी के मन्दिर में चढाया ।

४०२४. **प्रति सं० १४** । पत्र सं० ९५ । लेखन काल सं० १९५७ श्रावण शुक्ला ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डावालों का डीग ।

४०२५. **प्रति सं० १५** । पत्र सं० १२९ । आ० ११×७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर कामा ।

४०२६. **प्रति सं० १६** । पत्र सं० १३० । आ० १२×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मंदिर बयाना ।

विशेष—पन्नालाल बोहरा ने प्रतिलिपि की थी ।

४०२७. **प्रति सं० १७** । पत्र सं० ११७ । आ० ११×६ । ले० काल सं० १९१८ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—बयाना में लिपि कराकर चन्द्रप्रभ मन्दिर में चढाया ।

४०२८. **प्रति सं० १८** । पत्र सं० १५८ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १७९६ सावण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर ।

४०२९. **प्रति सं० १९** । पत्र सं० ९८ । आ० १२×६$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल सं० १८०४ प्रथम चैत सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—अग्रवाल जातीय नरसिंह ने प्रतिलिपि की थी । कुल पद्य सं० २२९० है ।

४०३०. **प्रति सं० २०** । पत्र सं० १०३ । ले० काल सं० १८८० माघ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर बयाना ।

विशेष—आगरा में पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी।

४०३१. **प्रतिसं० २१**। पत्र सं० १२३। आ० ११×५ इञ्च। ले० काल सं० १८८६ फागुण बुदी १०। पूर्ण। वेष्टन सं० ५०२ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—महुवा में साह फतेचन्द मुन्शी के लड़के जिजनदास ने नारायनदास से लिखवाया था।

४०३२. **प्रतिसं० २२**। पत्र सं० २०५। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५८०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

४०३३. **प्रतिसं० २३**। पत्र सं० १००। ले० काल १८४४। पूर्ण। वेष्टन सं० ५८१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—भीमराज प्रोहित ने भरतपुर में प्रतिलिपि की थी।

४०३४. **प्रति सं० २४**। पत्रसं० १४५। ले० काल सं० १८२६। पूर्ण। वेष्टन सं० ५८२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—भरतपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

४०३५. **प्रति सं० २५**। पत्र सं० ६७। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५८५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

४०३६. **प्रतिसं० २६**। पत्र सं० १०१। आ० १२½ × ७ इञ्च। ले० काल सं० १९०३ जेठ सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन सं० १०। **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर पंचायती अलवर।

४०३७. **प्रति सं० २७**। पत्रसं० १४२। आ० ९½×६½ इञ्च। ले०काल सं० १८७२। पूर्ण। वेष्टन सं० ५६ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पञ्चायती मंदिर अलवर।

४०३८. **प्रति सं० २८**। पत्र सं० १२१। ले० काल सं० १८९१। पूर्ण। वेष्टन सं० ३९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर, दीवानजी भरतपुर।

विशेष—बलवन्तसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी।

४०३९. **प्रति सं० २९**। पत्र संख्या ११०। आ० १२×७ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पंचायती मंदिर अलवर।

४०४०. **प्रतिसं० ३०**। पत्र सं० १३१। आ० ९½ × ६½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर, चौधरियों का मालपुरा (टोंक)।

४०४१. **प्रतिसं० ३१**। पत्रसं० १४३। आ० ९½ × ५½ इञ्च। ले० काल सं० १८७७ फागुण बुदी १४। पूर्ण। वेष्टन सं० २०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

विशेष—पं० रामलाल ने पं० चौथी भुवानीवक्स से शाहपुरा में करवाई थी।

४०४२. **प्रतिसं० ३२**। पत्रसं० ११६। आ० १२×६ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर, राजमहल टोंक।

विशेष—२२०० चौपई हैं।

४०४३. **प्रति सं० ३३**। पत्र सं० १६४। आ० १२×६½ इञ्च। ले० काल सं० १८७६। पूर्ण। वेष्टन सं० ८५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती बूनी (टोंक)।

विशेष—रावराजा श्री चांदसिंह जी के शासनकाल दूणी में हीरालाल ओझा ने प्रतिलिपि की।

४०४४. **प्रतिसं० ३४** । पत्र सं० ५७ से १११ । आ० ११½×६ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४८/२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती दूनी (टोंक) ।

४०४५. **प्रतिसं० ३५** । पत्रसं०१२४ । आ० ६½×६½ इञ्च । ले०काल सं० १८६० काती सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटयों का नैणवा ।

विशेष—साह नंदराम ने आंबा में ग्रंथ लिखा । सं० १६६५ में साह रोडलाल गोपालसाह गोठडा वाले ने नैणवा में कोटयों के मंदिर में चढ़ाया ।

४०४६. **प्रतिसं० ३६** । पत्रसं० १०४ । आ० १२½ × ६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

४०४७. **प्रति सं० ३७** । पत्र स० १२६ । आ० १२×६ इञ्च । ले० काल सं० १६७२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्री महावीर बूंदी ।

विशेष—वृन्दावती में लिखा गया था ।

४०४८. **प्रतिसं० ३८** । पत्रसं० ६७ । आ० १० × ६½ इञ्च । ले०काल सं० १६०६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपंथी दि० जैन मन्दिर, नैणवा ।

४०४९. **प्रति सं० ३९** । पत्र सं० ६४ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले०काल सं० १६०२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७०/४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर भादवा (राज०) ।

विशेष—प्रति शुद्ध एवं उत्तम है । फागी में प्रतिलिपि हुई थी ।

४०५०. **श्रीपाल चरित्र**—**चन्द्रसागर** । पत्र सं० ५० । आ० १०½ × ६ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । र०काल सं० १८२३ । ले० काल सं० १६४४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—आदिभाग—

सकल शिरोमणि जिन नमूं तीर्थंकर चौबीस ।
पंच कल्याणक जेह लह्या पाम्या शिवपद ईश ।।१।।
वृषभसेन आ देकरि गौतम अन्तिम स्वामि ।
चउदसे वावन उपरि सदगुरु परिणाम ।।२।।
जिन मुख ली जे उपनी, सारदा देवी सार ।
तिह चरण प्रणमी करी, आये बुद्धि विशाल ।।३।।
सुरेन्दकीर्ति गुरु गछपती कीर्ति तेह अवदात ।
तेह पाट अतिराजता सकलकीर्ति गुण ख्यात ।।
तस पद कमल भ्रमर सम चन्द्रसागर चितधार ।
श्रीपाल नरेन्द्र तणो कहुँ चरित्र रसाल ।।

अन्तिम भाग—

काष्टा संघ सोहामणु, उदयाचल जिमभाण ।
गछ तट नदी तट रामसेन आम्नाय बखाण ।।

तद अनुक्रमे हुवा गच्छपति विद्या भूषण सूरि राय ।
तेह पाटे अति दीपता श्री श्री भूषण यतिराय ।।२१।।

ओटक—तेह पाटे अति सोभता चन्द्रकीर्ति कीर्ति अपार ।
वादी मद गंजन जनु केशरीसिंह सम मनुहार ।।२२।।
तेह पाटे अति शोभता राजत कीर्ति विद्या भंडार ।
लक्ष्मीसेन अति दीपता जेह पाटे अनुसार ।।२३।।

चाल—तेह पाटे अति दीपता इन्द्रभूषण अवतार ।
सुरेन्द्र कीर्ति गुरु गच्छपति तेह पाटे अवतार ।
कीर्ति देश विदेश में जाण आगम अपार ।
तेह पाटे सूरिवर सही सकलकीर्ति गुणधार ।।२४।।

ओटक—गुणधार ते सकल कीर्ति ते सूरिवर विद्यागुण भंडार ।
लक्षण द्वाविंशलक्षस्या कला बोहोत्तर तनु धार ।।२५।।
व्याकर्ण तर्क पुराण सागर वादी मद ते निवार ।
गुण अनंत तेह राजता ते कोई न पावै पार ।।२६।।

चाल—व्या तेह पद कमल सोहामणु मधुकर सम ते जाणि ।
ब्रह्मचन्द्र सागर कहे बोल ख्याल मन आणि ।
व्याकर्ण तर्क पुराण न ते नहीं जाणु भेद ।
मुझ मति अल्प ज्यु कहत हुँ कवि गुण अगम अभेद ।।२७।।

ओटक—श्रीपाल गुण ते अति घणा मुझ मति अल्प अपार ।
कविता जन हीसि न कीजे तुम्हें गुण तणी भंडार ।।२८।।
बाल कर मति जीय ए में ए रचना रची अपार ।
जे भणे ते वलि सांभले ते लहे सौख्य भंडार ।।२९।।

चाल—सोजन्या नगर सोहामणु दीसे ते मनोहार ।
सासन देवी ने देहरे परतापुरे अपार ।
सकलकीर्ति तिहां राजता छाजता गुण भंडार ।।
ब्रह्म चन्द्रसागर रचना रची तिहा वेसी मनाहार ।।३०।।

ओटक—मनोहार नगर सोहामणु दीसे ते भां कडमाल ।
श्रावक तिहां वलि शोभता मेवाडा नामें विख्यात ।।३१।।
पूजा करे ते नित्य प्राते बखाण सूणें मनोहार ।
नागकुमार जिम दीपता श्रावक श्राविका तेह मारि ।।३२।।

चाल—ग्रंथ संख्या तम्हे जाणज्यो पंचदश सत प्रमाण ।
तेह ऊपर वलि शोभता साठ बत्तीस ते जाणि ।।
ढाल बत्तीस ते सोभती मोहनी भवियण लोक ।
सांभलता सुख ऊपजे, नासे विघन ते शोक ।।३३।।

त्रोटक—शोक नासे जाय चिंता पामे रिद्धि भंडार ।
पुत्र कलत्र सुभ सपजे जसकीर्त्ति होइ अपार ॥३४॥
मन प्रतीते जुं सांचले जे पूजे ते मनोहार ।
मन वांछित फल पामीइ स्थमं मुगति लहे अवतार ॥३५॥

चाल—संवत शत अष्टादश त्रय विंशति अवधार ।
तेहु दिवसा पूरण थयो ए ग्रंथ शुभ सार ॥
श्रीपाल गुण अगम अपार केवलि सिद्ध चक्र भवतार ।
तुम गुण स्वामी आपज्यो अवर इच्छा नहिं सार ॥
मुझ सेवक अवधार ज्यो दीज्यो अविचल थान ।
ब्रह्म चन्द्रसागर कहे सिद्धचक्र महाधाम ॥२॥
माघ मास सोहामणों धवल परव मनोहार ।
बीज दिनि रवि सोभती हुउ तेणि रविवार ॥३॥

इति श्री श्रीपाल चरित्रे भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति तत् शिष्य श्री ब्रह्मचन्द्रसागर विरचिते श्रीपाल चरितं ।

मालव देश तलपुर में मुनिसुव्रतनाथ चैत्यालय में पंडित नेमिचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

४०५१. श्रीपाल चरित्र—× । पत्र सं० १२ । **भाषा**—हिन्दी (पद्य) । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

४०५२. श्रीपाल चरित्र— × । पत्र संख्या ११५ । आ० ८×८½ इंच । भाषा हिन्दी पद्य । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १० । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—प्रति गुटका आकार है । ११५ से आगे के पत्रों में पत्र संख्या नहीं है । इन पत्रों पर पंच मंगल, हैं जिनसहस्रनाम तथा एकीभाव स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

४०५३. श्रीपाल चरित्र— × । पत्र सं० १५ से ३० । आ० ११½× ५½ इंच । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७९ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

४०५४. श्रीपाल चरित्र—× । पत्रसं० २७ । आ० १३×७ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १९३६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७१ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

४०५५. श्रीपाल चरित्र—× । पत्र सं० २६ । आ० १२×८ इंच । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १९६१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर नैणवा ।

४०५६. श्रीपाल चरित्र—× । पत्र सं० ४७ । आ० ९×६½ इंच । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १८४१ सावण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बैर ।

विशेष—संग्रही अमरदास ने प्रतिलिपि की थी। कथाकोष में से कथा उद्धृत है।

४०५७. श्रीपाल चरित्र—× । पत्रसं० ४१ । आ० ८$\frac{1}{2}$×६$\frac{3}{4}$ इंच । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । र०काल × । ले० काल सं० १९९२ भादवा बुदी ३ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—रिखबचन्द विद्यार्थया ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

४०५८. श्रीपाल चरित्र— × । पत्र सं० ३५ । आ० १० × ७ इंच । **भाषा**-हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नागदी बूंदी ।

४०५९. श्रीपाल चरित्र × । पत्र सं० ५८ । भाषा–हिन्दी । विषय–जीवन चरित्र । र०काल × । ले०काल सं० १९२६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७९ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

४०६०. श्रीपाल चरित्र— × । पत्र सं० ३९ । आ० ८ × ५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र०काल × । ले० काल सं० १९२३ वैशाख बुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० २३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सम्भवनाथ मंदिर उदयपुर ।

विशेष—कुल पद्य सं० ११११ हैं।

संवत् अठारे सतसठे सावण मास उतंग ।
कीसन पक्ष की सप्तमी रवीवार सुभचंग ॥ ११०८ ॥
तादिन पूरण लिखो चरित्र सकल श्रीपाल ।
पढो पढाओ बुधजन मन धूहरख विशाल ॥११०९॥
नगर उदयपुर रूवड़ो सकल सुखां की धाम ।
तहां जिन मन्दिर सोभही नानाविध अभिराम ॥१११०॥
ताहा पारिस जिनराज को मन्दर अत सोहंत ।
तहां लिखो ए ग्रन्थ ही बरतो जग जयवंत ॥ १११९ ।
इति श्रीपाल कथा संपूर्ण ।

नगर भींडर मध्ये श्री रिखबदेवजी के मन्दिर, श्रीमत् काष्ठासंघ नंदितटगच्छे विद्यागणे आचार्य श्री रामसेन तत्पट्टे श्री विजयसेण तत्पट्टे श्री भ० श्री हेमचन्द्रजी तत्पट्टे भ० श्री क्षेमकीर्ति तत् सिष्य पं. मन्नालाल लिख्यतं । सं० १९२३ वैशाख बुदी ५ ।

प्रारम्भ में गौतम स्वामी का लक्ष्मीस्तोत्र दिया है। आगे श्रीपाल चरित्र भी है। प्रारम्भ का पत्र नहीं है ।

४०६१. श्रीपाल चरित्र—**लाल** । पत्र सं० १४२ । भाषा—हिन्दी । विषय-चरित्र । र०काल सं० १८३० । ले०काल सं० १८८९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

४०६२. श्रीपाल प्रबंध चतुष्पदी— पत्रसं० ४। भाषा–हिन्दी । विषय × । र०काल × । ले०काल सं० १८८९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

४०६३. **श्रेणिकचरित्र**—भ० शुभचन्द्र। पत्रसं० १३७। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—चरित्र। र०काल × । **ले०काल** सं० १६७७ भादवा सुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० ६१। **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—जोशी श्रीधर ने अम्बावती में प्रतिलिपि की थी।

४०६४. **प्रति सं० २**। पत्रसं० १०१। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० १३२। **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मंदिर अजमेर।

४०६५. **प्रति सं० ३**। पत्रसं० १००। आ० १०×४½ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १२२३। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

४०६६. **प्रति सं० ४**। पत्रसं० ६५। आ० १२½×५½ इञ्च। ले०कालसं० १८३६। पूर्ण। वेष्टनसं० ३२३। **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त मन्दिर।

४०६७. **प्रति सं० ५**। पत्र सं० ७४। आ० ११½ × ४¾ इञ्च। ले०काल सं० १८१६। भादवा सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन सं० १३८६। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—गुलाबचन्द खाबड़ा ने महारोठ नगर में प्रतिलिपि की थी।

४०६८. **प्रति सं० ६**। पत्रसं० ७६। आ० १०½×५ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

४०६९. **प्रतिसं० ७**। पत्रसं० १४८। आ० ११×४ इञ्च। ले०काल सं० १८४५। पूर्ण। वेष्टनसं० १२२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

विशेष—कोटा नगर के खुस्यालाडपुरा स्थित शान्तिनाथ चैत्यालय में आ० विजयकीर्ति तत्शिष्य सदासुख चेला रूपचन्द पंडित ने प्रतिलिपि की थी।

४०७०. **प्रतिसं० ८**। पत्र सं० ६०। आ० १३×५ इञ्च। ले०काल सं० १८०२ फागुण बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० ८७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

विशेष—सवाई जयपुर में नैणसागर ने प्रतिलिपि की थी।

४०७१. **प्रतिसं० ९**। पत्रसं० १०५। आ० ११½ × ५½ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती टूनी (टोंक)।

विशेष—प्रति जीर्ण है।

४०७२. **प्रति सं० १०**। पत्रसं० ६७। आ० ११×८ इञ्च। ले०काल सं० १९२३। पूर्ण। वेष्टन सं० ४७। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर।

विशेष—दौसा के तेरहपंथियों के मंदिर का ग्रंथ है।

४०७३. **प्रतिसं० ११**। पत्रसं० १४७। आ० १०¾ × ७¾ इञ्च। ले० काल सं० १७५२ वैशाख बुदी ४। पूर्ण। वेष्टन सं० १३७/१५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

४०७४. **प्रतिसं० १२**। पत्र सं० १३४। आ० ७¾×४½ इञ्च। ले० काल सं० १७२७ कार्तिक सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन सं० २१३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

प्रशस्ति—संवत् १७२७ वर्षे महामांगल्य कार्त्तिक मासे शुकुलपक्षे तिथौ एकादशी आदित्यवासरे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्य तदाम्नाये भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति तत्शिष्य पंडित मनोरथेन स्वहस्तेन लुंबड ज्ञातीय स्वपठनार्थं कर्मक्षयार्थं ।

४०७५. **प्रति सं० १३** । पत्र सं० ६८ । आ० ११ × ४½ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४०७६. **प्रति सं० १४** । पत्र सं० ६८-८६ । आ० ११×४ इंच । ले० काल सं० १६६४ मंगसिर बुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४०० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति—संवत् १६६४ वर्षे मंगसिर वदि १३ रवौ श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री सरोजनगरे सुपार्श्वनाथचैत्यालये भट्टारक श्री नरेन्द्रकीर्त्ति तत् शिष्य पं० मूलचन्द तत् शिष्य पं० मालमचन्द ।

४०७७. **प्रति सं० १५** । पत्र सं० ६४ । आ० ११×४ इंच । ले० काल सं० × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४०७८. **प्रति सं० १६** । पत्र सं० १२८ । ले० काल सं० १८२४ चैत्र सुदी २ । पूर्ण । **वेष्टन सं०** २३२ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

विशेष—आशाराम ने भरतपुर में प्रतिलिपि की थी ।

४०७९. **प्रति सं० १७** । पत्र सं० १८२ । ले० काल × । अपूर्ण । **वेष्टन सं० १०** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बड़ा पंचायती मन्दिर डीग ।

४०८०. **प्रति सं० १८** । पत्र सं० ७७ । आ० १०½ × ५½ इंच । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टन सं०** १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४०८१. **प्रति सं० १९** । पत्र सं० ४४ । आ० ११×५ इंच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ११९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

४०८२. **प्रति सं० २०** । पत्र सं० २२-१४२ । आ० १०¾×४½ इंच । ले० काल सं० १६६२ । अपूर्ण । वेष्टन सं० २३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४०८३. **प्रति सं० २१** । पत्र सं० १२१ । आ० ६×५ इंच । ले० काल सं० १६६५ वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—ब्रह्म श्री लाभ्यका पठनार्थं ।

४०८४. **प्रति सं० २२** । पत्र सं० ६१ । आ० १२ × ४½ इंच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । बीच के कुछ पत्र नहीं हैं । इसका दूसरा नाम पद्मनाभ पुराण भी है ।

४०८५. **श्रेणिक चरित्र भाषा**—**म० विजयकीर्त्ति** । पत्र सं० ६२ । आ० १२½×८ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । र० काल सं० १८२७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

प्रशस्ति—

गढ अजमेर सकल सिरदार । पट नागौर महा अधिकार ॥
पूजहंद मुनि त्रिभुवन सार । भट्टारक पट्ट नो भव भाय ॥
सारद गच्छ तणु सिंगार । बलात्कार गण जानुसार ॥
कुन्दकुन्द **मुन्यय** सही । पट अनेक मुनि सो अप सही ॥
रत्नकीर्त्ति पट विद्यानंद । तसु पट महेंद्रकीर्त्ति सवमुद ॥
अनन्तकीर्त्ति पट धारि भया । तसु पट भूवन भूषण चिर जीया ॥
विजयकीर्ति भट्टारक जानि । इह भाषा कीनि परमाण ॥
संवत् अठारासय सतवीस । फागुण सुदी साते सु जगीस ॥
बुधवार इह पूरण भई । स्वांति नषत्र वृद्धज पामु थई ॥
गोत पाटनी है मनिराय । विजयकीर्त्ति भट्टारक थाय ॥
तसु पट धारी श्री मुनि जानि । बडजात्या तसु गोत्र पिछानि ॥
त्रिलोकेन्द्र कीर्त्ति रिषराज । निति प्रति साधय आतम काज ॥
विजयमुनि सिष्य दुतिय सुजाण । श्री वैराड देश तसु आण ॥७६॥
धर्म्मचंद भट्टारक नाम, ओस्या गोत्र वण्यो अभिराम ।
मलयखंड सिंहासन सही । कारंजय पट सोभा लही ॥८०॥

४०८६. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १२८ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७४ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—प्रति नवीन है ।

४०८७. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० ७१ । आ० ५½ × ७ इञ्च । ले० काल सं० १८६१ पूर्ण । वेष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

४०८८. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० ८६ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १८६४ फागुण बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२७६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४०८६. प्रतिसं० ५ । पत्र सं० ८८ । आ० १० × ४ इञ्च । ले०काल सं० १८२६ सावण बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—अजबगढ में प्रतिलिपि हुई थी ।

४०६०. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७७ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १८८४ चैत्र बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ११ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—पद्य सं० २००० है ।

४०६१. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६३ से ११७ । आ० १२½ × ६ इञ्च । ले०काल सं० १८७६ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४७-२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती टूंनी (टोंक) ।

विशेष—टूनी में रावजी श्री चांदसिंह जी के राज्य में माणिकचन्द जी संघी के प्रताप से ओझा हरीनारायण ने प्रतिलिपि की थी ।

४०९२. **प्रति सं० ८** । पत्र सं० १०१ । आ० ११ × ५$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक) ।

४०९३. **प्रति सं० ९** । पत्रसं० १५२ । आ० ११ × ५ इञ्च । विषय-चरित्र । ले०काल सं० १८९१ फागुण बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष—संघोक (संतोष) रामजी सीमाणी तत् अमीचन्द अभैचन्दजी राजमहल मध्ये चैत्यालय चन्द्रप्रभ के में ब्राह्मण सुखलाल वासी टोडाराय[illegible] से प्रतिलिपि कराकर चढाया था ।

४०९४. **प्रतिसं० १०** । पत्रसं० १३० । आ० ९ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १८७९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

विशेष—तक्षकपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

४०९५. **प्रतिसं० ११** । पत्र सं० ६१ । आ० १५ × ७ इञ्च । ले० काल सं० १९०१ भादवा बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६३ । **प्राप्ति स्थान**- -दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

४०९६. **प्रति सं० १२** । पत्र सं० ७८ । आ० १२ × ८ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

४०९७. **प्रतिसं० १३** । पत्र सं० १५३ । आ० १०$\frac{3}{4}$ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १८९४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर अलवर ।

४०९८. **प्रति सं० १४** । पत्रसं० १२६ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ७ इंच । ले० काल सं० १९२७ आसोज बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० अग्रवाल पंचायती जैन मन्दिर अलवर ।

४०९९. **प्रतिसं० १५** । पत्रसं० ९६ । आ० ९$\frac{1}{2}$ × ६ इञ्च । ले०काल सं० १९३० चैत बदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त भन्दिर।

४१००. **प्रतिसं० १६** । पत्रसं० ८५ । आ० १२ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०कालसं० १९१८ आषाढ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—बयाना में धनराज बोहरा ने प्रतिलिपि की थी ।

४१०१. **प्रतिसं० १७** । पत्र सं० १२७ । ले० काल सं० १९१३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डावालों का डीग ।

४१०२. **प्रति सं० १८** । पत्र सं० १०८ । आ० १३$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १९३१ भादवा सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—शमशाबाद (आगरा) में ईश्वर्,प्रसाद ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी ।

४१०३. **श्रेणिक चरित्र भाषा—दौलतराम कासलीवाल** । पत्रसं० २५ । भाषा—हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल × । ले०काल सं० १८८८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

४१०४. **श्रेणिक चरित्र—दौलतऔसेरी** । पत्रसं० १७२ । आ० ११ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । र० काल सं० १८३४ मंगसिर सुदी ७ । ले० काल सं० १९६१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्करी बूंदी ।

विशेष—८।) कलदार में सं० १९६२ में लिखा गया था।

४१०५. श्रेणिक प्रबन्ध—कल्याणकीर्त्ति । पत्र सं० ५७ । आ० १० × ६ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । र०काल सं० १७७५ आसोज सुदी ३ । ले०काल सं १८२८ चैत वदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

आदिभाग—

ॐ नमः सिद्धेभ्यः—श्री वृषभाय नमः ।

दोहा—सुखकर सन्मति शुभ मती चौबीस भी जिनराय ।
अमर खचरनि करि ··· सेवित पाय ॥१॥
ते जीन चरण कमलनसी हृदय कमल धरी नेह ।
जिन मुख कमल थी उपति नमु वाग्वादिनी गुण गेह ॥२॥
गुण रत्नाकर गौतम मुनि वयण रयण अनेक ।
ते भव्यि केता ग्रही रचु प्रबंध हार विवेक ॥३॥
श्री मूलसंघ उदयाचलि, प्रभाचंद्र रविराय ।
श्री सकलकीर्त्ति गुरु गछपति, जसणी रामकीरति मुभकाय ॥४॥
तस पद कमल दीवाकरु नमू, श्री पद्मनंदी सुखकार ।
वादि वारण केशरि अकलंक एह अवतार ॥५॥
नीज गुरु देव कीरति मुनि प्रणमू चित धर नेह ॥
मंडलीक महा श्रेणीक नो प्रबन्ध रचु गुण गेह ॥६॥
नमी देवकीरति गुरु पाय ॥ जिन० भावि० ॥ ९ ॥
कल्याण कीरति सूरी वरे रच्यो रे ॥ लाल लो० ॥
ए श्रेणिक गुण मणिहार ॥ जिन० भावि० ॥
वागड विमल देश शोभते रे ॥ लाल लो ॥
तिहाँ कोट नगर सुखकार ॥ जिन० भावि० ॥ १० ॥
धनपति विमल वसे घणा रे ॥ लाल लो ॥
धनवंत चतुर दयाल ॥ जिन० ॥ भावि० ॥
तिहाँ आदि जिन भवन सोहामणु रे ॥ लाल लो ॥
तशिका तोरण विशाल ॥ जिन० भावि० ॥ ११ ॥
उत्सव होयि गावि भामनी रे ॥ लाल लो ॥
वाजे ढोल मृदंग कंशाल ॥ जिन० ॥ भावि० ॥
आदर ब्रह्मसिंघ जी तणोरे ॥ लाल लो ॥
तहां प्रबंध रच्यो गुणमाल ॥ जिन० ॥ भावि० ॥ १२ ॥
संवत सतरैं पंचोतरि रे ॥ लाल लो० ॥
आसो सुदि श्रीज रवि ॥ जिन० भावि० ॥
ए सांभलि गावि लिखि भावसु रे ॥ लाल लो ॥
ते तहि मंगलाचार ॥ जिनदेवरे भावि जिन पद्मनाभ जाणज्यो ॥१३॥

इति श्री श्रेणिक महामंडलीक प्रबन्ध संपूर्ण ।

अन्तिम—

मनोहर मूलसंघ दीपतो रे ।। लाल लो ।।
सरस्वती गच्छ शृंगार ।। जिन० भावि० ।।४।।

पटोधर कुंदकुंद सोमतोरे ।। लाल लो ।।
जिणि जलचर कीधा कुंदहार ।।जिन० भावी० ।।५।।

अनुक्रमि सकल कीरतिह वरि ।। लाल लो० ।।
श्री ज्ञान भूषण सुभकाय ।। जिन० भावि० ।। ६ ।।

विजय कीरति विजय सुरी रे ।। लाल लो० ।।
तस पट शुभचंद्र देव ।। जिन० ।। भवि० ।।

शुभ मिती सुमतिकीरति रे ।। लाल लो० ।।
श्री गुणकीरति कल मेव ।। जिन० भावि०।।
श्री वादि भूषण वादी जीयतो ।। लाल लो ।।

रामकीरति गछ राय ।। जिन० ।। भवि० ।।
तस पट कमल दिवाकरु रे ।। लाल लो ।।
जेनो जस बहु नरपति गाय ।। जिन० भावि० ।।७।।

सकल विद्या तणो वारिध रे ।। लाल लो ।।
गछपति पद्मनंदि राय ।। जिन० ।। भावि० ।।८।।

एसहू गछपति पदनमी रे ।। लाल लो ।।

प्रशस्ति—संवत् १८२८ का मासोत्तम मासे चैत्रमासे कृष्णपक्षे तिथि बोदसी वार बृहस्पतवार सूर्यपुरिमध्ये चंद्रप्रभ चैत्यालये श्रेणिक पुराण संपूर्ण । श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री नरेन्द्रकीर्ति जी तत्पट्टे भट्टारक श्री विसालकीर्ति जी तत्पट्टे भट्टारक श्री राजेन्द्र कीर्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री रत्नेन्द्रकीर्ति स्वहस्तेन लिपि कृते कर्म्मक्षयार्थं पठनार्थं ।

४१०६. **प्रति सं० ७** । पत्रसं० १७१ । आ० १०×७ इञ्च । ले०काल सं० १९५९ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

४१०७. **श्रेणिकचरित्र—लिखमीदास** । पत्र सं० ८५ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । र० काल सं० १७४९ । ले०काल सं० १८४१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

४१०८. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ९८ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

४१०९. प्रति सं० ३ । पत्रसं० १०५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २४ । **प्राप्ति स्थान–** दि० जैन बड़ा पंचायती मन्दिर डीग ।

४११०. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० १०३ । आ० ९×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १८६४ आसोज सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक) ।

४१११. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ९७ । आ० १०$\frac{3}{4}$ × ५ इञ्च । ले० काल० × । **पूर्ण ।** वेष्टन सं० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

४११२. प्रतिसं० ६ । पत्र सं० ५९ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

४११३. प्रतिसं० ७ । पत्र सं० १२१ । आ० ९$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १८७६ आषाढ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

४११४. प्रतिसं० ८ । पत्र सं० ६५ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १८२२ प्र. सावण बुदी १ । पूर्ण । वे० सं ३१ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन पंचायती मंदिर बयाना ।

विशेष—अन्तिम भाग ।—

सोरठा—

देस ढूंढाहर मांहि राजस्थान आंबावती ।
भूप प्रभाव दिपाहि राजसिंघ राजै तिहां ।।९१।।

दोहा—

ता समीप सांगावती धन जन करि भरपूर ।
देवस्थल महिमा घणाँ भला ग्रहस्त सतूर ।।९२।।
पंडित दशरथ सुभग सुत सदानन्द तसु नाम ।
ता उपदेश भाषा रची भविजन को विसराम ।।९३।।
संवत सतरासै ऊपरै तेतीस ज्येष्ठ सुदी पक्ष ।
तिथि पंचम पूरण लही मङ्गलवार सुभक्ष ।।९४।।
केर लिखि गुणचास में लखमीदास निज बोध ।
भूल्यो चूक्यो सबद कोइ बुधजन लीज्यो सोधि ।।९५।।
इति श्रेणिक चरित्र संपूर्ण ।

बलिराम के पुत्र सालिगराम बोहरा ने बयाना में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में यह ग्रंथ ऋषि बसंत से हीरापुरी (हिंडौन) में लिखवाकर चढाया । सालिगराम के तेला के उद्यापनार्थ चढाया गया ।

४११५. प्रति सं० ९ । पत्रसं० ८८ । आ० १२$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १८८७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४० । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

४११६. प्रतिसं० १० । पत्र सं० १४८ । आ० ५$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १८०० माह बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९९ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मंदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—प्रति गुटकाकार है । रचना पंडित दशरथ के पुत्र सदानन्द की प्रेरणा से की गई थी ।

४११७. **प्रति सं० ११** । पत्र सं० १४४ । आ० १२×४ इञ्च । ले०काल सं० १८६० । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६-८ । **प्राप्ति स्थान** -दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

४११८. **प्रतिसं० १२** । पत्रसं० १४२ । आ० ६×५ इञ्च । ले० काल सं० १८२६ पौष सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनसं० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर भादवा (राज०) ।

विशेष—कोठीग्राम में सुखानन्द ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

४११९. **सगरचरित्र—दीक्षित देवदस** । पत्रसं० १८ । आ० १२ × ८ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०६१ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४१२०. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०६२ । **प्राप्ति स्थान** भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४१२१. **सीताचरित्र—रामचन्द्र (कवि बालक)** । पत्र सं० १०५ । आ० १२×५½ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—चरित्र । र०काल सं० १७१३ मङ्गसिर सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

४१२२. **प्रति सं० २** । पत्रसं० १२४ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल सं० १७४६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—सांगानेर में प्रतिलिपि की गई थी ।

४१२३. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ११५ । आ० १२×८ इंच । ले० काल सं० १९२३ ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

४१२४. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० १३६ । आ० १२×६ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बैर ।

४१२५. **प्रतिसं० ५** । पत्रसं० १४७ । आ० १०½×५½ इंच । ले०काल सं० १८४१ । अपूर्ण । वेष्टन सं० १५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—४६ वां पत्र नहीं है ।

४१२६. **प्रतिसं० ६** । पत्र सं० २३८ । आ० ५×५ इंच । ले० काल सं० १७६० मंगसिर बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

४१२७. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० २३८ । आ० ६×६ इंच । ले० काल सं० १७६० मंगसिर बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर भादवा (राज०)

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

४१२८. **प्रतिसं० ८** । पत्रस० ११५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७१ ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा ।

विशेष—सदासुख तेरापंथी ने प्रतिलिपि कराई थी ।

४१२९. **प्रति सं०** ९ । पत्र सं० १९१ । आ० १२×६ इञ्च । ले०काल सं० १७५६ माघ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६-२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—दीपचन्द छीतरमल सोनी ने आत्म पठनार्थ प्रतिलिपि कराई।

४१३०. **प्रति सं० १०**। पत्र सं० २९९। आ० ८ × ५ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—प्रति जीर्ण है। गुटका साइज में है।

४१३१. **प्रति सं० ११**। पत्रसं० ११-१२८। आ० ११½ × ५½ इन्च। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० २७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा।

विशेष दोहा—

कियो ग्रंथ रविषेणनैं रघुपुराण जियजान।
वहु अरथ इसमैं कह्यो रामचन्द्र गुण आन ॥३०॥

कहै चन्द कर जोर सीस नय अंत जैं।
सकल परभाव सदा चिरनन्दि जैं।
यह सीता की कथा सुनैं जो कान दे।
गहै आप निज भाव सकल परधान धे ॥३१॥

४१३२. **प्रति सं० १२**। पत्र सं० ९७। आ० ११×५½ इन्च। ले० काल सं० १७७७। वैशाख सुदी २। पूर्ण। वे० सं० ५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बयाना।

विशेष—बयाना में प्रतिलिपि की गई थी।

४१३३. **प्रति सं० १३**। पत्रसं० १६०। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बयाना।

४१३४. **प्रतिसं० १४**। पत्र सं० १०९। आ० १२½ × ५½ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वे० सं० ९३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना।

विशेष—श्लोक सं० २५००।

४१३५. **प्रति सं० १५**। पत्रसं० १६४। ले०काल सं० १७८४। पूर्ण। वेष्टन सं० ५७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायत भरतपुर।

विशेष—गुटका साइज है तथा भांफरी में प्रतिलिपि हुई थी।

४१३६. **प्रति सं० १६**। पत्रसं० १२८। ले० काल सं० १८१९। पूर्ण। वेष्टन सं० ५७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

४१३७. **प्रति सं० १७**। पत्र सं० १२९। ले० काल सं० १८१४। पूर्ण। वेष्टन सं० ५७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

४१३८. **प्रति सं० १८**। पत्र सं० ९७। ले० काल सं० १८४६। पूर्ण। वेष्टन सं० ५७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

४१३९. **प्रति सं० १९**। पत्र सं० १९३। आ० ९½ × ७ इंच। ले०काल सं० १८७७ आसोज बुदी १०। पूर्ण। वेष्टन सं० ४८। **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन पंचायती मंदिर अलवर।

४१४०. **प्रति सं० २०।** पत्र सं० १०१-१३२। आ० ९ × ६½ इंच। ले० काल सं० १९२६। अपूर्ण। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक।

विशेष—राजमहल में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी।

४१४१. **सुकुमालचरिउ—मुनि पूर्णभद्र (गुणभद्र के शिष्य)।** पत्रसं० ३७। आ० ९×५ इञ्च। भाषा—अपभ्रंश। विषय—चरित्र। र०काल × । ले०काल सं० १६२२ भादवा बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० ७६। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैनमन्दिर अजमेर।

४१४२. **प्रतिसं० २।** पत्रसं० ४७½। आ० ९×५ इंच। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ९५६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४१४३. **प्रतिसं० ३।** पत्र सं० ३९। आ० ४½×४ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १२९। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

विशेष—इसमें ६ संधियां हैं। लेखक प्रशस्ति वाला अन्तिम पत्र नहीं है।

४१४४. **सुकुमालचरिउ—धोधर।** पत्र सं० १-२१। आ० ११×५ इंच। भाषा-अपभ्रंश। विषय—काव्य। र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर तेरहपंथी दौसा। जीर्ण जीर्ण।

विशेष—प्रति प्राचीन है। पत्र पानी में भीगने से नष्ट गये हैं।

४१४५. **सुकुमालचरित्र—भ० सकलकीर्त्ति।** पत्र सं० ४४। आ० १२×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र०काल × । ले० काल सं० १५३७ पौष सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन सं० ९८९। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५३७ वर्षे पौष सुदी १० मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भ० शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० जिनचन्द्रदेवा तत् शिष्य मुनि श्री जैनन्दि तदाम्नाये खंडेलवालान्वये श्रेष्ठि गोत्रे सं० वील्हा भार्या वेडी तत्पुत्राः सं० वादू पार्श्व वादू भार्या इलहू तत्पुत्र सा० गोल्हा वालिराज, भोजा, चोथा, चापा, एतेषां मध्ये वालिराजेन इदं सुकुमाल स्वामी ग्रंथ लिखाप्यतं। पं० आसुयोगु पठनार्थं निमित्त समर्पित।

४१४६. **प्रति सं० २।** पत्र सं० ४९। आ० १०½ × ४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र०काल × । ले० काल सं० १८२० चैत्र बुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० ६६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

४१४७. **प्रति सं० ३।** पत्र सं० ९६। ले० काल सं० १७३१। **पूर्ण।** वेष्टन सं० ८३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४१४८. **प्रति सं० ४।** पत्र सं० ४७। आ०१२×५½ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी।

४१४९. **प्रतिसं० ५।** पत्रसं० २०। आ० १०×४½ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टनसं० २१४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

४१५०. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० २३-४३ । आ० १० × ४½ इन्च । ले० काल सं० १७८७ सावण बुदी ८ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ११३ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मंदिर डबलाणा (बूंदी)

विशेष—लाखेरी ग्राम मध्ये..... .. ..)

४१५१. **प्रतिसं० ७** । पत्र सं० १०० । आ० ६ × ४ इन्च । ले० काल सं० १५७८ वैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती दूनी (टोंक)

विशेष–हरिनारायण ने प्रतिलिपि की थी। धर्ममूर्ति जैन धर्म प्रतिपालक साहजी सोलाल जी अजमेरा वासी टोडा का ने दूनी के आदिनाथ के मन्दिर में चढाया था।

४१५२. **प्रतिसं० ८** । पत्रसं० ६४ । आ० ६½×४½ इंच । ले० काल सं० १८७६ भादवा बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर दूनी (टोंक)

विशेष—हरीनारायन से सोहनलाल अजमेरा ने प्रतिलिपि करवाई थी

पंडित श्री शिवजीराम तत् शिष्य सदासुखाय इंद पुस्तक लिख्यापितं। अजमेरा गोत्र साहजी श्री श्री मनसारामजी तत्पुत्र साहु शिवलालेन।

४१५३. **प्रतिसं० ९** । पत्र सं० ४८ । आ० ११ × ४ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

विशेष—विमलेन्द्रकीर्तिदेव ने लिखाया था।

४१५४. **प्रति सं० १०** । पत्रसं० ९९ । आ० ११ × ५ इन्च । ले० काल सं० १६०६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १९–१२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है।

संवत् १६०६ वर्षे माघ शुक्लपक्षे पंचम्यां तिथौ गुरुवासरे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदा.....क्षयार्थं लिखाप्य दत्तं। ब्रह्म ' दत्तं आचार्य श्री हेमकीर्ति तत् शिष्य ब्रह्म मेघराज प्रेमी शुभ भवत। लि. धर्मदास लिखापितं महात्मा लिखमीचन्द नाथूजी सुत खरतर गच्छे।

४१५५. **प्रति सं० ११** । पत्रसं० ६०। ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २२४–४४ । **प्राप्ति स्थान**---भट्टारकीय दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रति प्राचीन किन्तु जीर्ण है।

४१५६. **प्रति सं० १२** । पत्रसं० ५४ । ले० काल सं० १५८७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९०/४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सम्भवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—ग्रन्थाग्रन्थ सं० ११०० है।

प्रशस्ति—संवत् १५८७ वर्षे भादवा सुदी १० भृगौ अद्येह देलुलिग्राम वास्तव्ये खेदपाट ज्ञातीय शवदोसन लिखिता।

बाद में लिखा हुआ है—

श्री मूलसघे भ० श्री शुभचन्द्र तत् शिष्य मुनि वीरचन्द्र पठनार्थं। स० १६४१ वर्षे माहसुदी १ शनौ भट्टारक श्री गुणकीर्ति उपदेशात्.....।

४१५७. **प्रति सं० १३** । पत्रसं० ५६ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४१५८. **प्रति सं० १४** । पत्रसं० ४४ । आ० १२×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २२५ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—नवम सर्ग तक पूर्ण है । **अन्तिम** पुष्पिका निम्न प्रकार है—

भट्टारक श्री सकलकीर्ति विरचिते आचार्य श्री विमलकीर्ति तत् शिष्य ब्रह्म गोपाल पठनार्थं । शुभं भवतु ।

४१५९. **प्रति सं० १५** । पत्र सं० ३६ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४१६०. **सुकुमाल चरित्र—नाथूराम दोसी** । पत्रसं० ६१ । आ० १३½ × ४ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–चरित्र । र०काल सं० १६१८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मंदिर उदयपुर ।

४१६१. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ७१ । आ० १०½ × ८½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

४१६२. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० ७२ । आ० १३ × ८ इञ्च । ले०काल सं० १६५६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

४१६३. **सुकुमाल चरित्र भाषा—गोकल गोलापूर्व** । पत्र सं० ५२ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । र०काल सं० १८७१ कार्तिक बुदी १ । ले०काल सं० १६३८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका—

इहि प्रकार इहि शास्त्र की भाषा का संक्षेप रूप मंद बुद्धि के अनुसार गोलापूर्व गोकल ने की ।

४१६४. **प्रतिसं० २** । पत्र संख्या ६३ । आ० ११ × ७½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

४१६५. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० ४५ । आ० १३ × ७ इञ्च । ले० काल सं० १६५७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा ।

४१६६. **सुकुमाल चरित्र वचनिका**—× । पत्र संख्या ७२ । आ० १३×८ इंच । **भाषा**–हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन संख्या १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्री महावीर बूंदी ।

४१६७. **सुकुमाल चरित्र वचनिका**— × । पत्र सं० ७७ । आ० १० ×७ इञ्च । **भाषा**–हिन्दी (गद्य) । विषय–चरित्र । र०काल × । ले० काल सं १६५५ आसोज बुदी ७ पूर्ण । वेष्टनसं० १२७२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—चन्द्रापुरी में प्रतिलिपि हुई थी ।

४१६८. **सुकुमाल चरित्र भाषा**—× । पत्रसं० ६२ । भाषा-हिन्दी । विषय-जीवन चरित्र । र०काल × । ले०काल सं० १९५३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

४१६९. **सुकुमाल चरित्र भाषा**-× । पत्रसं० ६० । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डालालों का, डीग ।

४१७०. **सुकुमाल चरित्र**-× । पत्रसं० ५३ । आ० १२×५ $\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३२७ । **प्राप्तिस्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

४१७१. **सुकुमाल चरित्र**-× ।पत्रसं० ११ । आ० १०$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत ।विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—११ से आगे के पत्र नहीं है ।

४१७२. **सुकुमाल चरित्र**—× । पत्रसं० ६२ । आ० ११×५ । भाषा-संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० २०१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४१७३. **सुकुमाल चरित्र**—× । पत्र सं० ४६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले०काल × अपूर्ण । वेष्टन सं० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

४१७४. **सुकुमाल चरित्र**—म० यशःकीर्ति । पत्र सं० ५८ । आ० ११×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र०काल × । ले० काल सं० १८८५ मंगसिर सुदी ५ रविवार । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२६ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

मुनिस्वर नागचन्द्र वरसर में मार्गसिर शुक्ल मास ।
पंचमी रविवार सुयोगे पूर्ण ग्रन्थ करयोभास ।
विद्यमान नहीं मुललेश कविस्व कला नहि भान ।
स्वपर जीवतणे हित कारणे करयो प्रबंध बखान ।
गच्छनायक भये तपस्वी ज्ञानतना भण्डार ।
यशकीर्ति ए कथा प्रबंध वर्णम कहह्यो हितकार ।।

× × ×

मेदपाट वर देशपति ये नगर सलूंबर सार ।
उत्तम वर्ण बसै तिहां श्रावक पाले श्रावकाचार ।
वृहत् ज्ञात नागद्रा हुंमड गुरुमुखी श्रावक जेह ।
धर्म दिगम्बर पाले उत्तम दान पूजा करे तेह ।
आदिनाथ जिन मन्दिर सोहै तहां रहे सुखें नीवास ।
सकल संघ नो आदर जानि चरित्र कह्यो उल्लास ।

सावला ग्राम में प्रतिलिपि हुई थी ।

४१७५. **सुखनिधान—जगन्नाथ** । पत्र सं० ४४ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १७६७ । पूर्ण । वेष्टन सं०६६२ । **प्राप्ति स्थान** – भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४१७६. **सुदंसण चरिउ–नयनन्दि** । पत्र सं० १–६६–१०६ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा–अपभ्रंश । विषय–चरित्र । र० काल सं ११०० । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २६० । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

४१७७. **सुदर्शन चरित्र—भ० सकलकीर्त्ति** । पत्रसं० २–४६ । आ० ११ × ४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १६७२ चैत सुदी ३ । अपूर्ण । वेष्टन सं० २६८/४१ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—

संवत् १६७२ वर्षे चैत सुदी ३ भौमे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक गुणकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० वादिभूषणदेवा तत्पट्टे भ० श्री रत्नकीर्तिदेवा आचार्य श्री जयकीर्ति तत् शिष्य ब्रह्म श्री सदराजाय गिरिपुर वास्तव्य पटुयागच्छा भार्या सुजाणदे तयो पुत्र पं० काहानजी भार्या कमुबदे ताभ्यां सुदर्शनचरित्र स्वज्ञानावर्णी कर्मक्षयार्थ दत्तं ।

४१७८. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ३३–४४ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २५८ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४१७९. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० ६३ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

४१८०. **सुदर्शन चरित्र—मुमुक्षु विद्यानन्दि** । पत्र सं० ७३ । आ० ६×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १८३५ चैत्र शुक्ला ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

४१८१. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ७७ । आ० १०×४¾ इंच । ले० काल सं० १८७३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष बूंदावती नगर में श्री नेमिनाथ चैत्यालय में श्री डूंगरसी के शिष्य सुखलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

४१८२. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० १–२५ । आ० ११¾×५ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन सं० ७५० । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

४१८३. **सुदर्शनचरित्र—दीक्षित देवदत्त (जैनेन्द्रपुराण)** । पत्र सं० १०५ । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्ट सं० २३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

इति श्रीमन्मुमुक्षु दिव्य मुनि श्री केशवनंद्यनुक्रमेण श्री भट्टारक कविभूषण पट्टाभरण श्री ब्रह्म हर्ष सागरात्मज श्री भ० जिनेन्द्रभूषण उपदेशात् श्रीदीक्षित देवदत्त कृते श्रीमज्जिनेन्द्र पुराणान्तर्गत श्रीपंचनमस्कारफलव्याख्याने श्री सुदर्शन मुनि मोक्ष प्राप्ति वर्णनो नाम एकादशोधिकारः ।

४१८४. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ८७ । ले० काल सं० १८४८ वैसाख शुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

४१८५. सुदर्शन चरित्र—ब्र० नेमिदत्त । पत्र सं० ७६ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४१८६. प्रति सं० २ । पत्रसं० ६३ । आ० ११½×५ इञ्च । ले०काल सं० १६०५ भादवा सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्दरगढ़ (कोटा)

विशेष—इदं पुस्तकं ज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थं पुस्तकं श्री जिनमन्दिर जहोदितं रामचन्द्र सुत भवानी-राम अजमेरा वास्तव्य बूंदी का गोठडा अनार सुखपूर्वकं इन्द्रगढ वास्तव्यं ।

४१८७. प्रति सं० ३ । पत्रसं० ८८ । आ० १०×४½ । ले०काल सं० १६१६ भादवा सुदी १२ । वेष्टन सं० २०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मं० लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति अच्छी है ।

४१८८. सुदर्शनचरित्र भाषा—यश: कीर्ति । पत्रसं० २८ । आ० १०½×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । र० काल सं० १६६३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २८५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष— प्रारंभ—

प्रथम सुमरि जिनराय महीतल सुरासुर नाग खग ।
भव भव पातिक जाय, सिद्ध सुमति साहस बढै ।।१।।

दोहा ।

इन्द्र चन्द्र औ चक्रवै हरि हलहर फनिनाह ।
तेउ पार न लहि सकै जिनगुण अगम अथाह ।।२।।

चौपई—

सुमरौं सारद जिनवर बानि, करौं प्रणाम जोरिकरि पानि ।
मूरख सुमरै पंडित होय, पाप पंक कहि घातै सोय ।।३।।
जो कवि कवित कहै पुरान, ते मानेहि सो देव की आनि ।
प्रथम सुमरि सारद मन धरै, तौ कछु कवित बुद्धि कौ धरै ।।४।।
हंसवही कर बीना जासु, सिद्ध बुद्धि लघु जान्यौ तासु ।
मुक्तामनि मई मांग संवारि, ऊगयो सूरज किरन पसारि ।।५।।
श्रवनहि कुंडल रतननि खचे, नौनिधि सकति आपनी रचे ।
छुटेछरा कंठ कठ सिरी, विना सकति आपनी धरी ।।६।।
उजलहार अनूपम हिये, विधना कहै तिसोई किये ।
पग नूपर उजल तन चीर, कनक कांति मय दिपै शरीर ।।७।।

सोरठा— विद्या और भंडार जो मांगे सो पावही ।
कित आयौ संसार जायहि वर तेरो नहीं ।।८।।

दोहा— मन वच क्रम गुरु चरण नमि परहित उदति जे सार ।
करहु सुमति जैनंदकौ होइ कवित्त विस्तार ।।९।।

चौपई—

गुरू गौतम गणधरदे आदि, द्वादशांग अमृत आस्वाद ।
सुमति गुप्त पालन तप धीर, ते बंदौ जो ज्ञान गम्भीर ॥१०॥
गणधर पदपावन गुणकंद, भट्टारक जसकीर्ति मुनिन्द ।
तापर प्रगट पहुमि जग जासु, लीला किधौ भौन को वास ॥११॥
नाम सुखेमकीर्ति मुनिराइ, जाके नामु दुरित हरि जाय ।
ताहि पढत श्रुत सागर पाए, त्रिभुवनकीर्ति कीर्ति विस्तार ॥१२॥
ताहि समीप सुमति कछु लही, उत्तम बुद्धि भेरे मन भई ।
नैनानन्द आदि जो कही, तैसी विधि बांची चौपई ॥१३॥

अंतिम पाठ—

सोरठा— छंद भेद पद भेद हौं तो कछु जानैं नहीं ।
साकौ कियो न खेद, कवि मति निज परिति बस ॥१९९॥

दोहा अगम आगरो पवरूपुर उठ कोहु प्रसाद ।
तरे तरङ्गि नदी बहे नीर अमी सम स्वाद ॥१९९॥

चौपई

भाषा भाउ भली जहि रीत, जानै बहुत गुणी सौ प्रीत ।
नागर नगर लोग सब सुखी, परपीडा कारन सब दुखी ॥२००॥
धन कन पूरन सुंग आवास, सबहि निःसेक धर्म के दास ।
छत्राधीस हुमाउ वंश, अकबर नन्दन बैर विध्वंस ॥१॥
तखत बखत पूरो परचंड, सूर नर नृप मानहि सब दंड ।
नाग काम गुन आयु वियोग, रचि पचि आयु विधाता योग ॥२॥
जहांगिर उपमा दीजे काहि, श्री सुलतान पृ दीसै साहि ।
कोस देस मन्त्री मति गूढ, छत्र चमर सिंघासन रूढ ॥३॥
करैं असीस प्रजा सब ताहि, वरनी कहा इति मति आहि ।
संवत सोलहसै उपरंत, केसठि जानहु बरस महंत ॥२०४॥

सोरठा— माघ उजारी पाख, गुरवासुर दिन पञ्चमी ।
बंध चौपई भाषा, कही सरय सादरती ॥२०५॥

दोहा— कथा सुदर्शन सेठ की पढै सुनै जो कोय ।
पहिलै पावै देव पद पाछै सिवपुर होय ॥२०६॥
इति सुदर्शन चरित्र भाषा संपूर्णम्

४१८९. सुभाहु चरित्र—पुण्यसागर । पत्र सं० ५ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । र० काल सं० १६७४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—अन्तिम—

संवत सोल चडोतर वरसइ जेसलमेर नयर सुभ दिवसइ ।
श्रीजिन हंस सूरि गुरु सीसइ पुन्यसागर उवझाय जगासइ॥
श्री जिन माणिक सूरि आदेसइ सुबाहु चरित्र भणीउ सय लसई ।
पास पसाइए हरिषि चुणतां रिधि सिधि थाउ नितु भणतां ॥
॥ इति सुबाहु चरित्र सपूर्णम् ॥

४१९०. **सुभौम चरित्र—रत्नचन्द्र** । पत्रसं० ५६ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल सं० १६८३ भादवा सुदी ५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

४१९१. **प्रति सं० २** । पत्र सं० २६ । आ० १२½×६ इञ्च । ले० काल सं० १८३८ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

४१९२. **सुलोचना चरित्र**—**ब्रह्मजिनदास** । पत्रसं० ८५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल सं० १७६५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

४१९३. **सुषेण चरित्र** × । पत्र सं० ४४ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल १९०९ आषाढ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नागदी बूंदी ।

विशेष—कोटा में लिखा गया था

४१९४. **संभवजिन चरिउ--तेजपाल** । पत्रसं० ३२से ५१ । भाषा अपभ्रंश । विषय--चरित्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बडा पंचायती मन्दिर डीग ।

४१९५. **हनुमच्चरित्र--ब्र० अजित** । पत्रसं० ९४ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल सं० १९०४ पौष सुदी ११ । पूर्ण ।वेष्टनसं० ८ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—डोडामढ़ में रामचन्द्र के शासन काल में प्रतिलिपि हुई थी ।

४१९६. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ७४ । आ० १३×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४१९७. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० १०६ । ले० काल × । पूर्ण ।वेष्टनसं० २३३ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

४१९८. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० ८३ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले० काल १९१७ पौष बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२९ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन, मंदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—फागुई वास्तव्ये कंवर श्री चन्द्रसेनि राज्य प्रवर्त्तमाने शांतिनाथ चैत्यालये खण्डेलवालान्वये अजमेरा गोत्रे संघी सूरज के वंशजों ने प्रतिलिपि की थी ।

४१९९. **प्रतिसं० ५** । पत्रसं० ९५ । आ० १०½×४¾ । ले० कालसं० १६१० आषाढ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४९ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—अलवर गढ़ में लिपि की गई थी ।

४२००. **प्रतिसं० ६** । पत्र सं० ७५ । आ० १३×६½ इञ्च । ले० काल सं० १८१७ वैशाख सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० २२/२९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सोगानी मन्दिर करौली ।

विशेष—कल्याणपुरी (करौली) में चन्दप्रभ के मन्दिर में लालचन्द के पुत्र खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

४२०१. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० ९४ । आ० १२½×५ इञ्च । ले०काल सं० १६३७ । पूर्ण । वेष्टनसं० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

४२०२. **प्रतिसं० ८** । पत्र सं० ४–३९ । ले०काल × अपूर्ण । वेष्टन सं० ५४/३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४२०३. **हनुमच्चरित्र**—**ब्र० जिनदास** । पत्रसं० ४१ । आ० १२½×५ ½इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल सं०१५९२ । पूर्ण । वेष्टनसं० २६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४२०४. **हनुमान चरित्र**—**ब्र. ज्ञानसागर** । पत्रसं० ३५ । आ० १०×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय - चरित्र । र०काल सं० १६३० आसोज सुदी ५ । ले० काल सं० १६४६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १८५/४० । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है रचना का अंतिम भाग निम्न प्रकार है—

श्री ज्ञानसागर ब्रह्म उचरि हनूमंत गुणह अपार ।
कर जोडी करि वीनती स्वामी देज्यो गुण सार ॥
सम्वत् सोलत्रीसि वर्षे अश्वनीमास मंझार ।
शुक्ल पक्ष पंचमी दिन नगर पालुवा सार ।
शीतलनाथ भुवनु रच्युं रास भलु मनोहार ।
श्री संघ गिरुउ गुणनिलु स्वामी सैल करयु जयकार ।
हुंवड न्याति गुनिलु साह अकाकुल भाण ।
अमरादेउ घर ऊपनउ श्री ज्ञानसागर ब्रह्म सुजाण ।

इससे आगे के अक्षर मिट गये हैं ।

४२०५. **हनुमच्चरित्र**—**यशःकीर्ति** । पत्रसं० १११ । भषा-हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । र०काल सं० १८१७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

४२०६. **हनुमान चरित्र**— × पत्रसं० ११० । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक) ।

४२०७. **हरिश्चन्द्र चौपई--कनक सुन्दर।** पत्र सं० १६। भाषा- हिन्दी। विषय-चरित्र। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ६४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—हरिश्चन्द्र राजा ऋषि राणी तारा लोचनी चरित्रे तृतीय खंड पूर्ण।

४२०८. **होली चरित—पं० जिनदास।** सं० २१। आ० ११½ × ५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित। र०काल सं० १६०८। ले० काल सं० १८१४ ज्येष्ठ सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन सं० ५१४। **प्राप्ति स्थान**--भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—अजबगढ़ मध्ये लिखितं आ० राजकीर्ति पठनार्थं चि० सवाईराम।

४२०९. **प्रति सं० २।** पत्रसं० ४। आ० ६×६ इञ्च। ले० काल सं० १८४८ चैत्र सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० ६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती टूनी (टोंक)।

विशेष—अजमेर में लिखा गया थी।

४२१०. **होलिका चरित्र**— × । पत्र सं० ३। आ० ६ × ६½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वे० सं० १८६। **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

विषय -- कथा साहित्य

४२११. **अगलधसक कथा**-अलंकिशर सूरि । पत्र सं० ५ । आ० १४ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल सं० १४६८ माघ सुदी ११ रविवार । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

४२१२. **अठारहनाते का चौढालिया-साह लोहट**—पत्र सं० २ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल १८ वीं शताब्दि । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५८६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४३१३. **अठारह नाते की कथा—देवालाल** । पत्र सं० ४ । आ० ११½ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (प०) । विषय कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४२१४. **अठारह नाते की कथा--श्रीवंत** । पत्र सं० ५ । आ० ११ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०६/१०५ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-अंतिम पुष्पिका—इति श्रीमद्धर्मश्रियवर्णित तच्छिष्य ब्र० श्रीवंत विरचिता अष्टादश परस्पर सम्बन्ध कथा समाप्त ।

४२१५. **अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा—शुशालचन्द** । पत्र सं० ७ । आ० ११ × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८-६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—भाद्रपद सुदी १४ को अनन्त चतुर्दशी के व्रत रखने के महात्म्य की कथा ।

४२१६. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ६ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

४२१७. **अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा**— × । पत्र सं० ५ । आ० ६ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल सं० १८२१ पौष बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५३६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

४२१८. **अनंतव्रतकथा—भ० पद्मनन्दि** । पत्र सं० ६ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी ।

४२१९. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

४२२०. **अनन्तव्रतकथा**— × । पत्र सं० ४ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल सं० १८८१ सावण बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५२८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

४२२१. **अनन्तव्रतकथा—ज्ञानसागर** । पत्र सं० ४ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर बयाना ।

विशेष—ऋषि खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

४२२२. **अनन्तव्रतकथा** ब्र० **श्रुतसागर** । पत्र सं० ४ । आ० ११½×५ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । **विषय**—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण वेष्टन सं० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

४२२३. **अनिरुद्धहरण (उषाहरण)—रत्नभूषण सूरि** । पत्र सं० ३२ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल सं० १६६६ । पूर्ण । वेष्टन × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

विशेष—आदि अंत भाग निम्न प्रकार हैं—

प्रारंभ—दूहा

परम प्रतापी परमतु परमेश्वर स्वरूप ।
परमठाय को लहीजे अकल अक्ष अरूप ।
सारदादेवी सुन्दरी सारदा तेहनु नाम ।
श्रीजिनवर मुख थी उपनी अनोपम उमे उत्तमा ठाम ।।
अण ..... नत्र कोडि जो मुनिवर प्रान महंत ।
तेह तणा चरण कमल नमु जेहना गुण छै अनंत ।
देव सरस्वती गुरु नमी कहुं एक कथा विनोद ।
भवियण जन सहु सांभलो निज मन धरी प्रमोद ।
उषा हरण जै जन कहि जे मिथ्याती लोक ।
अणिरुधि हरिकारि आणयो तहती वचन ए फोक ।।
शुद्ध पुराण जोइ करी कथा एक एक सार ।
भवियण जन सहु सांभलो अनिरुधि हरण विचार ।।
बात कथा सहु परहरो परहरो काज निकाम ।।
एहं कथा रस सांभलो चित्त धरो एक ठाम ।।५६।।

मध्यभाग—

ऊषा बोलि मंजरी वाणि, सांभल सखी तु सुखनी खाण ।
लखी लखी तु देखाडि लोक, ताहरी म सागति सघली फोक ।।५७।।
अरे जिन त्रेवीस तणा जे वंश अनि बीजा रूप लख्या परसंस ।
भूमि गोचरी केरा रूप नगमि तेहनि एक सरूप ।।५८।।
द्वारावती नगरी को ईस जेहनि बहुजन नामि सीस ।
राजा समुद्रविजय विख्यात, नेमीश्वर केरो ते तात ।।५९।।
एहं आदि हरिवंशी जेह कपटि लिख्या पांडवना देह ।
तेह माही को तेहनि नविगमि, लखी तुकामुभति नमी ।।६०।।

जरासिंध केरो सुत युवा, अनि जो जजोउ ते ते नवा ।
रूप लखी देख्या ज्या तास केहि सहथी नवि पोहचि आस ।
वसुदेव केरा सुन्दरपुत्र, जिणे घर राख्या धरता सत्र ।
सुन्दर नारायण तिराम रूप देखाग्या ते अभिराम ।।६१।।

अन्तिम—

श्री गिरनारि पाडियो सिद्ध तणु पद सार ।
सुख अनंता भोगवे अकल अनंत अपार ।।१।।
उषा थि मन चिंतव्युं ए संसार असार ।
घडी एक करि मोकली लीधो संयम भार ।।२।।
लिंग छेदु नारी तणु, स्वर्गिहिरा सुरदेव ।
देव देवी क्रीडा था करि पूजीं श्री जिनदेव ।।३।।
अणिरुध हरणज सांभलो एक चित्तसहु आज ।
जिनपुराण जोई रच्युं जिथी सरि बहुकाज ।।४।।
श्री ज्ञानभूषण ज्ञानी नमुंजे ज्ञान तणो भंडार ।
तेह तणा मुख उपदेश थी रच्यो अणिरुवहरण विचार ।।५।।
सुमतिकीरति मुनिवर नमुंजे बहुजननि हितकार ।
सात तत्व नित चिंतवि जिन शासन शृंगार ।।६।।
दक्षिण देश नो गच्छपति श्री धर्मचन्द्र यतिराय ।
तेहणा चरण कमलन की कथा कही जदुराय ।।७।।
देय सरस्वती गुरुनमी कहुं अणिरुध हरण विचार ।
रत्नभूसण सूरिवर कहि श्री जिन शासन सार ।।८।।
करि जोडी कहुं एटलुं तव गुणओ मुझ देव ।
विसू कांमि मांगु नहीं भवे भवे तुम्हारा पद सेव ।।९।।
रचना इ बहुरस कहु या सांभलो सहुजनसार ।
श्री रत्नभूषण सूरीसर कहि वरतो तम्ह जयकार ।।१०।।

इति श्री अनिरुध हरण श्री रत्नभूषण सूरि विरचित समाप्त ।

प्रशस्ति—

संवत् १६९९ वर्षे भादवा सुदी २ भोमे सेमला ग्रामे श्री आदीश्वर चैत्यालये श्री मूलसंघे सारस्वती गच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्त्यन्वये भट्टारक श्री वादिभूषण तत्पट्टे भट्टारक श्री रामकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक पद्मनंदि देवा सद्गुरू भ्राता मुनि श्री मुनिचन्द्र तत् शिष्य मुनि श्री ज्ञानचन्द्र तत् शिष्य वर्णि लाधाजीना लिखित । शुभं भवतु ।

४२२४. अनिरुद्धहरण कथा—ब्र० जयसागर । पत्रसं० ४६ । आ० ९½×४ इंच । भाषा—हिंदी । विषय—कथा । र० काल सं० १७३२ । ले० काल सं० १७९६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४९/६५ ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

विशेष—अंतिम भाग निम्न प्रकार है ।

अनिरुध स्वामी सुगतिगामी कीनूं तेह बखाण जी ।
भवियण जन जे भावें भणसे पामे सुख खाण जे ।।१।।
अल्प श्रुत हूँ कांइ न जाणू देज्यो मुझ ने ज्ञानजी ।
पूर्ण सूरि उपदेशे कीधो अनिरुध हरण सरधानजी ।।२।।
कविजन दोष मां मुझने दीज्यो कहूँ हूँ मूंकि मान जी ।
हीनाधिक जे एहमां होये सोधज्यो सावधानजी ।।३।।
मूलसंघ मां सरस्वती गच्छे विद्यानंद मुनेंदजी ।
तस पट्टे गोर मल्लिभूषण दीठे होय आनदजी ।।४।।
लक्ष्मीचन्द्र मुनि श्रुत मोहन वीर चन्द्र तस पाटेजी ।
ज्ञानभूषण गोर गौतम सरिखो सोहे वंश ललाट जी ।
प्रभाचन्द तस पाटे प्रगट्यो हुँबड चागी विडिल विख्यात जी ।
वादिचन्द्र तस अनुक्रम सोहे वादिचन्द्रमां ख्यात जी ।।
तेह पाटे महीचन्द्र भट्टारक दीठे नर मन मोहे जी ।
गोर महिचन्द्र शिष्य एम बोले जयसागर ब्रह्मचारजी ।
अनिरुध नामजे नित्य जपे तेह घर जयजयकार जी ।
हांसोटे सिहपुरा शुभ ज्ञाते लिख्यू पत्र विशाल जी ।
जीवंधर कीर्तातणी वचने रचियो चू ढूये ढाले जी ।।२।।

दूहा —अनिरुध हरणजे मैं करयु दुःख हरण ऐ सार ।
सांभलां सुख अपजे कहे जयसागर ब्रह्मचारजी ।।

इति श्री भट्टारक महीचन्द्र शिष्य ब्रह्म श्री जयसागर विरचिते अनिरुद्धहरणाख्यानो अनिरुद्ध मुक्ति गमन वर्णनो नाम चतुर्थोऽधिकार संपूर्णमस्तु ।

संवत् १७२६ मा वर्षे श्रावणमासोत्तम मासे शुभकारि शुक्लपक्षे द्वितीया भृगुवासरे श्री परतापपुर नगरे हुंवड ज्ञातीय लघु शाखायां साह श्री मेघजी तस्यात्मज साह दयालजी स्वहस्तेन लिखितमिदं पुस्तकं ज्ञानावर्णी क्षयार्थं ।

४२२५. प्रतिसं० २ । पत्रसं० २७ । ले० काल सं० १७२० चैत बुदी १ पूर्ण । वेष्टनसं० २५०/६६ । **प्राप्ति स्थान** – संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४२२६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३६ । आ० ११×४ इंच । ले०काल × । **पूर्ण** । वेष्टन सं० ३३१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४२२७. अपराजित ग्रंथ (गौरी महेश्वर वार्ता) । पत्र सं० २ । भाषा – संस्कृत । विषय– संवाद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४३८/३९२ । **प्राप्ति स्थान—**संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४२२८. अभयकुमार कथा— × । पत्र सं० ६ । आ० १०×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय–कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८० । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

अन्तिम—अभयकुमार तजी कथा पढि है सुणि जो जीय ।
सुर्गादिक सुख भोगि के शिवसुख लहै सदीव ।
इति अभयकुमार काव्य ।

४२२९. **अभयकुमार प्रबंध—पदमराज** । पत्र सं० २७ । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल सं० १६५० । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर बसवा ।

विशेष—
संवत् सोलहसइ पंचासि जैसलमेरू नयर उललासि ।
खरतर गछनायक जिन हंस तस्य सीस गुणवंत संस ।
श्री पुण्यसागर पाठक सीस पदमराज पभणइ सुजगीस ।
जुगप्रधानजिनचंद मुणिंद विजयभान निरूपम आनन्द ।
भणइ गुणइ जे चरित महंत रिद्धिसिद्ध सुखते पामन्ति ।

४२३०. **अयंती सुकुमाल स्वाध्याय—पं० जिनहर्ष** । पत्र सं० ३ । आ० ११×४½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल सं० १७४१ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

४२३१. **अशोक रोहिणी कथा**—× । पत्र सं० ३७ । आ० १०½ × ५ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × पूर्ण । वेष्टन सं० २६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

४२३२. **अष्टावक्र कथा टीका-विश्वेश्वर** । पत्रसं० ४८ । आ० १०×४½ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष – संवत् १७२ " माह माने कृष्ण पक्षे तिथि २ लिखितं सारंगदास ।

४२३३. **अष्टांग सम्यक्त्व कथा--ब्र० जिनदास** । पत्र सं० ५५ । आ० ९ × ५ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६९/९४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

४२३४. **अष्टाह्निकाव्रत कथा**— × । पत्र सं० ६ । आ० १०½ × ४½ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल सं० १७८१ फागुण बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प० रूपचन्द नेयटा नगरे चन्द्रप्रभ चैत्यालये ।

४२३५. **अष्टाह्निका व्रत कथा**— × । पत्रसं० ११ । आ० १० × ५ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय —कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २५७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४२३६. **अष्टाह्निका व्रत कथा**— × । पत्रसं० ११ । आ० १०×५ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय--कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३६ । **प्राप्ति स्थान** - भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४२३७. अष्टाह्निकाव्रत कथा— × । पत्र सं० १८ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४२३८. अष्टाह्निकाव्रत कथा— × । पत्रसं० १४ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४२३९. अष्टाह्निकाव्रत कथा— × । पत्रसं० ६ । आ० १०½×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का नेणवा ।

४२४०. अष्टाह्निकाव्रत कथा—म० शुभचन्द्र । पत्रसं० ८ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा —संस्कृत । विषय— कथा । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० २२२ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४२४१. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ५ । आ० ११½×५½ इंच । ले० काल सं० १८३० । पूर्ण । वेष्टन सं० २३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—जयपुर नगर में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में पं० चोखचंदजी के शिष्य पं० रामचन्द्र जी ने कथा की प्रतिलिपि की थी ।

४२४२. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० ४ । आ० ११½×३½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३५ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर, लश्कर जयपुर ।

४२४३. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० १७ । आ० १०½ × ५ इंच । ले० काल सं० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी थी ।

विशेष—लश्कर में नेमिनाथ चैत्यालय में झाझूराम ने प्रतिलिपि की ।

४२४४. अष्टाह्निकाव्रत कथा—ब्र. ज्ञानसागर । पत्र सं० ५० । आ० १०×८½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४२४५. प्रति सं० २ । पत्रस० १० । आ० ६½×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१६-११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

४२४६. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० ४ । आ० १२×६ इञ्च । ले०काल सं० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर खबलाना (बूंदी) ।

४२४७. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० ३ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

४२४८. अक्षयनवमी कथा— × । पत्रसं० ७ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल सं० १८१३ आसोज सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—स्कंध पुराण में से है। सेवाराम ने प्रतिलिपि की थी।

४२४९. **आदित्यवार कथा**— पत्रसं० १०। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ४४५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—राजुल पच्चीसी भी है।

४२५०. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० १० से २१। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

४२५१. **आदित्यवार कथा**—पं० गंगादास। पत्रसं० ४१। आ० ९×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल सं० १७५० (शक सं० १६१५) ले०काल सं० १८११ (शक सं० १६७६) पूर्ण। वेष्टन सं० १५२५। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

विशेष—प्रति सचित्र है। करीब ७५ चित्र हैं। चित्र अच्छे हैं। ग्रंथ का दूसरा नाम रविव्रत कथा भी है।

४२५२. **प्रति सं० २**। पत्र सं० ९। आ० १०½×५ इंच। ले०काल सं० १८२२। पूर्ण। वेष्टन सं० १७। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

४२५३. **प्रतिसं० ३**। पत्रसं० ९। आ० १०½×५ इंच। ले०काल सं० १८३९। पूर्ण। वेष्टनसं० १८। **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

४२५४. **प्रतिसं० ४**। पत्र सं० १८। आ० १० × ७ इंच। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १-२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर।

विशेष—प्रति सचित्र है तथा निम्न चित्र विशेषत: उल्लेखनीय हैं—

पत्र १ पर—पार्श्वनाथ, सरस्वती, धर्मचन्द्र तथा गंगाराम का चित्र, बनारस के राजा एवं उसकी प्रजा।
१ २ ३ ४

पत्र २ पर मतिसागर भट्टारक तथा उसके ६ पुत्र इनके अतिरिक्त ४९ चित्र और हैं। सभी चित्र कथा
५

पर आधारित हैं उन पर मुगल कला का प्रभुत्व है। मुगल बादशाहों की वेशभूषा बतलायी गयी है। स्त्रियां लहंगा, ओढनी एवं कांचली पहने हुये हैं कपड़े पारदर्शक हैं अंग प्रत्यंग दिखता है,

आदि भाग—

प्रणमु पास जिनेसर पाय, सेवत सुख संपति पाय।
बंदु वीर दायक सारदा, यह गुरु चरन नयन युग सदा।
कथा कहुं रविवार जक्षणी, पूर्व ग्रंथ पुराणे भणी।
एक चित्त सुने जे सांभले तेहने दुख दालिद्रह टलै।

अन्त भाग—

देश बराड विषय सिणगार, कारंजा मध्ये गुणधार॥
चंद्रनाथ मन्दिर सुखकंद, भव्य कुमुद भामन वर चंद्र॥११०॥
मूलसंघ मतिवंत महंत, धर्मवंत सुरवर अति संत।
तस पद कमल दल भक्ति रस कूप, धर्मभूषण रद रोवे भूप॥१११॥

विशाल कीर्ति विमल गुण जाण, जिन शासन पंकज प्रगट्यो भान ।
तत पद कमल दल मित्र, धर्मचन्द्र धृत धर्म पवित्र ॥११२॥
तेहनो पंडित गग दास, कथा करी भविष्य उल्हास ।
शाके सोलासत पन्नरसार, सुदि आषाढ बीज रविवार ॥११३॥
अल्प बुद्धि थी रचना करी, क्षमा करो सज्जन चित धरो ।
भणे सुणे भावे नरनारि, तेह घर होये मंगलाचार ॥१४॥
इति धर्मचन्द्रानुचर पंडित गंग दास विरचिते श्री रविवार कथा संपूर्ण ।

४२५५. आदित्यव्रत कथा—भाऊकवि । पत्र सं० १० । आ० १०×४½ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण वेष्टन सं० ६१४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—इस का नाम रविव्रत कथा भी है ।

४२५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । आ० ९½ × ४½ इञ्च । ले०काल सं० १७८० माह बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—रामगढ़ में ताराचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

४२५७. प्रति सं० ३ । पत्रसं० ६ । आ० १०½×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

४२५८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । आ० ९×४ इञ्च । ले० काल सं० १९०८ वैशाख सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—पं० सदासुख ने नेमिनाथ चैत्यालय में लिखा था ।

४२५९. प्रतिसं० ५ । पत्रसं० १५ । आ० ९×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १९६ । **प्राप्तिस्थान**–दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

४२६०. प्रतिसं० ६ । पत्रसं० १३ । आ० १२½ × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४२६१. प्रतिसं० ७ । पत्र सं० १८ । ले०काल सं० १८५० आषाढ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४३ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—नेमिश्वर की बीनती तथा लघु सूत्र पाठ भी है । भरतपुर में लिखा गया था ।

४२६२. आदित्यवार कथा—ब्र. नेमिदत्त । पत्रसं० १७ । आ० १०×५ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी, (गुजराती का प्रभाव) । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल पूर्ण । वेष्टनसं० ५२१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

आदिभाग—

श्री शांति जिनवर २ नमंते सार ।
तीर्थंकर जे सोलमुं. वांछित फल बहुदान दातार ।

सारदा स्वामिणि वली तवुं बुद्धिसार म सरोइ माता ।
श्री सकलकीर्ति गुरु प्रणामीने श्री भुवनकीर्ति अवतार ।
दान तणु फल वरणवुं ब्रह्म जिणदास कहिसार
ब्रह्म जिणदास कहिसार ।।

अन्तिभाग---

श्री मूलसंघ महिमा विरमलोए, सरस्वती गच्छ सिणगारतो ।
भल्लिभूषण अति भलाए श्री लक्ष्मीचन्द गुरिराय तो ।
तेह गुरु चरणकमल नमीए, ब्रह्म नेमिदत्त भणि चंगतो ।
ए व्रतथे भवियणकरिए, तेल हिसी अभंगतो ।। ३० ।।
मनवछित संपदा लहिए, ते नर नारी सुजाणतो ।
इम जाणी पास जिणतणो, ए रविव्रत करो भवि माणतो ।
ए व्रतभावना भावे तेहां, जयो जयो पार्श्व जिणदत्तो ।
शांति करो हम शारदाए सहगुरु करो आणंदतु ।

वस्तु—

पास जिणवर पास जिणवर बालब्रह्मचारी ।
केवलणाणी गुणनिलो, भवसमुद्र तारण समरथउ ।
तसु तणो अदित व्रत भलो जे करि भवीयण सार ।
ते भव संकट भंजिकरि सुख पामिइ जगितार ।।
इति श्री पार्श्वनाथआदितवारनी कथा समाप्त ।

४२६३. आदितवार कथा—सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० १३ । **भाषा**—हिन्दी । **विषय**-कथा । र० काल सं० १७४४ । ले० काल सं० पूर्ण । वेष्टन सं० ४४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

विशेष—राजुल पच्चसी भी है ।

४२६४. आराधना कथा कोश—× । पत्र सं० ६८ । आ० ९$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । **विषय**—कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४७८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४२६५. आराधना कथा कोश—× । पत्र सं० ८५ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-कथा र० काल × । ले० काल × पूर्ण । वेष्टन सं० ७२० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष— आराधना संबंधी कथाओं का संग्रह है ।

४२६६. आराधना कथा कोश—पत्र सं० १०४ । आ० १० × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

४२६७. आराधना कथा कोष— × । पत्र सं० १६८ । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

४२६८. **आराधना कथाकोश—बख्तावरसिंह रतनलाल**। पत्रसं० २९२। आ० १०½×७ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र० काल सं० १८९६। ले० काल सं० १९३२ वैशाख सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन सं० १४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मंदिर अलवर।

४२६९. **प्रतिसं० २**। पत्र सं० २८२। ले० काल सं० १९०३। **पूर्ण**। वेष्टन सं० ४४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

४२७०. **आराधना कथाकोश—ब्र० नेमिदत्त**। पत्रसं० २५७। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५३०। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

४२७१. **प्रतिसं० २**। पत्र सं० ९२। आ० ११½×४½ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० १३९५। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४२७२. **प्रतिसं० ३**। पत्र सं० २६०। ले० काल सं० १८११ चैत बुदी ५। पूर्ण वेष्टन सं० २९३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—भरतपुर में लिपि की गई थी।

४२७३. **आराधना कथाकोश-श्रुतसागर**। पत्रसं० ५५। आ० १२½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल ×। **पूर्ण**। वेष्टन सं० १४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

विशेष—पात्र केशरी एवं अकलंकदेव की कथायें है।

४२७४. **आराधना कथाकोष—हरिषेण**। पत्रसं० ३३८। आ० १२×५¾ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। र० काल सं० ९८९ ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

४२७५. **आराधनासारकथा प्रबंध—प्रभाचन्द**। पत्र सं० २००। आ० १०×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १६०८। पूर्ण। वेष्टन सं० २६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

४२७६. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० १-६२। आ० ११×५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ७२०। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

४२७७. **आराधना चतुष्पदी—धर्मसागर**। पत्र सं० २०। ९×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १६६५ आसोज सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन सं० ४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

४२७८. **एकादशी महात्म्य**—×। पत्र सं० १०। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १९२१। पूर्ण। वेष्टन सं १५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

विशेष—स्कंद पुराण में से है।

४२७९. **एकादशी महात्म्य**— × । पत्र संख्या १०१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय महात्म्य । र०काल × । लेखन काल सं० १८५२ वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी (बूंदी) ।

४२८०. **एकादशी व्रत कथा**— × । । पत्र सं ७ । आ० ६$\frac{3}{4}$×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—इसका नाम 'सुव्रतऋषिकथा' भी है ।

४२८१. **ऋषिदत्ता चौपई—मेघराज** । पत्रसं० २२ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र०काल सं० १६५७ पौष सुदी ५ । ले०काल सं० १७६६ आसोज सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना बूंदी ।

४२८२. **ऋषिमण्डलमहात्म्य कथा**— × । पत्र सं० १० । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४२८३. **कठियार कानडरी चौपई—मानसागर** । । पत्र सं० ५ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र०काल सं० १७४७ । ले० काल सं० १८४० । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

४२८४. **कृपण कथा—ओरथन्द्रसूरि** । पत्रसं० २ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०७/१०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर ।

विशेष—अन्तिम—

दाझ्यो तब दुखि उपयो नरक सातमि मरीनिगयो ।
जंपि वीरचन्द्र सूरी स्वामि एम जाणि मन राखो गम ॥३२॥

४२८५. **कथाकोश**— × । पत्र सं० ४१-६८ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं०३३८/१६७ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

४२८६. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १७२०। पूर्ण । वेष्टन सं० १६०/५६४ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४२८७. **कथाकोश—चन्द्रकीर्ति** । पत्र संख्या १५-६६ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—अन्तिम भाग निम्न प्रकार है—

श्रीकाष्ठसंघे विबुधप्रपूज्ये
श्रीरामसेनान्वय उत्तमेस्मिन् ।
विद्याविभूषायिध सूरिरासीत्
समस्ततत्वार्थकृतावतार ॥७१॥

तत्पादपंकेरुहचंचरीकः
श्रीभूषणसूरि वरो विभाति ।
सच्चिष्ट हेतु व्रत सत्कथांच ।
श्रीचन्द्रकीर्तिस्त्विमकांचकार ॥७२॥

इति श्री चन्द्रकीर्त्याभिधानचिते श्री कथाकोशे [illegible] नामसप्तमः सर्ग ॥७॥

४२८८. **कथाकोश—ब्र० नेमिदत्त** । पत्र सं० २२० । आ० १२½ × ६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय – कथा । र० काल × । ले० काल सं० १७५३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

४२८९. **प्रतिसं० २** । पत्र संख्या १७३ । आ० ११ × ४ इञ्च । लेखन काल सं० १७९३ श्रावण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—मालपुरा में लिखा गया था ।

४२९०. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० २५७ । आ० ११×५½ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४२९१. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० १४४-२१९ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

४२९२. **कथाकोश—भारामल्ल** । पत्र सं० १२९ । आ० १३×५½ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय–कथा । र० काल × । ले०काल सं० १९५३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मंदिर अलवर ।

४२९३. **कथाकोश—मुमुक्षु रामचन्द्र** । पत्र सं० ४४ । आ० १०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २५ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मंदिर नागदी, बूंदी ।

४२९४. **कथाकोश—श्रुतसागर** । पत्र सं० ९६ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८२० पौष सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६०१ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४२९५. **कथाकोश—हरिषेण** । पत्र सं० ३५० । आ० ९×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४२९६. **कथाकोश**— × । पत्र सं० ७८ । आ० १०½ × ७ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—१, २ एवं २८ वां पत्र नहीं है ।

४२९७. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ७९ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले० काल सं० १९११ । अपूर्ण । वेष्टन सं० १८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनमन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—४७ से ५१ तक पत्र नहीं है ।

निम्न कथाओं एवं पाठों का संग्रह है।

कथा का नाम	कर्त्ता का नाम	
१. आदिनाथजी का सेहरा—	ललितकीर्त्ति—	र० काल × । हिन्दी पत्र १से८ ।

विशेष—बाहुबलि रास भी नाम है।

२. द्रव्यसंग्रह भाषा टीका सहित—		× ।— × । प्राकृत हिन्दी । पत्र ८ से २६ तक।
३. चौबीस ठाणा—		× ।— × । हिन्दी । पत्र २६ से २९ तक ।
४. रत्नत्रय कथा—	हरिकृष्ण पांडे	र० काल सं० १७६६ हिन्दी । पत्र २९ से ३१ तक ।
५. अनन्तव्रत कथा—	,,	र० काल × । हिन्दी । पत्र सं० ३१ से ३४ तक।
६. दशलक्षण व्रत कथा	,,	र० काल सं० १७६५ । हिन्दी पत्र सं० ३४से३६
७. आकाश पंचमी कथा	,,	र० काल १७६२ । हिन्दी । पत्रस० ३६ से ३९
८. ज्येष्ठ जिनवर कथा	,,	र० काल सं० १७९८ । हिन्दी पत्र सं० ३९–४१
९ जिन गुण संपत्ति कथा	ललितकीर्त्ति	र० काल × । हिन्दी । पत्र ४१ से ४६ तक
१०. सुगंधदशमी कथा—	हेमराज	र० काल × । हिन्दी । पत्र ४६ से ५३ तक। अपूर्ण
११. रविव्रत कथा—	अकलंक	र० काल सं० १६७६ । हिन्दी । पत्र ५३–५४
१२. निर्दोषसप्तमी कथा—	हरिकृष्ण	र० काल सं० १७७१ । हिन्दी । पत्र ५४ । अपूर्ण
१३. कर्मविपाक कथा—	,,	र० काल × । हिन्दी । पत्र ५४ से ५८
१४. पद—	विनोदीलाल	पत्र ५८–५९
१५. समोसरन रचना—	ब्रह्मगुलाल	पत्र ५९ से ६३ । र० काल १६६८
१६. षट् दर्शन	×	पत्र ६३ पर
१७. रविव्रत कथा --	भाऊ कवि	पत्र ६३ से ७१ तक
१८. पुरंदरविधान कथा—	हरिकृष्ण	र० काल १७६८ फाल्गुन सुदी १० । पत्र ७१–७२
१९. निःशल्य अष्टमी कथा—	,,	र० काल × । पत्र ७२–७३
२०. सङ्कटचौथ कथा ---	देवेन्द्रभूषण	र० काल × । पत्र ७३ से ७५
२१. पंचमीव्रत कथा —	सुरेन्द्रभूषण	र० काल सं० १७५७ पौष सुदी १० । पत्र ७५–७९

४२९८. कथाकोश— × । पत्र सं० २७६ आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण वेष्टन सं० १३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मंदिर दौसा।

४२९९. कथासंग्रह— × । पत्रसं० ५३ । आ० ९×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३४९। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—निम्न कथाओं का संग्रह है—

पुष्पाञ्जली, सोलहकरण, मेघमाला, रोहिणीव्रत, लब्धिविधान, मुकुटसप्तमी, सुगंधदशमी, दशलक्षण कथा, आदित्यव्रत एवं श्रावणद्वादशी कथा।

४३००. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ८ । आ० १०×४½ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—पं० सुमतिसुन्दरगणिभिरलेखि श्री रिणीनगरे ।

धन्यकुमार, शालिभद्र तथा कनककुमार की कथाएं हैं ।

४३०१. **कथा संग्रह**— × । पत्रसं० १२४ से २०५ । आ० ११½ × ४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४३०२. **कथा संग्रह**—× । पत्रसं० ८६ । आ० १०×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (राज०)

४३०३. **कथा संग्रह**—× । पत्रसं०.....। भाषा—संस्कृत । विषय-कथा । वेष्टन सं० ४६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

१. अष्टाह्निका कथा—भ० सुरेन्द्रकीर्ति । संस्कृत

२. पुष्पाजलिव्रत कथा— श्रुतसागर । ,,

३. रत्नत्रय विधानकथा— ,, । ,,

४३०४. **कथा संग्रह**—× । । पत्रसं० २८ । आ० १०×६½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल सं० १६४१ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—भारामल की चार कथाओं का संग्रह है ।

४३०५. **कथा संग्रह**—× । पत्रसं० ३७-५६ । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १५९/१०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

४३०६. **कथा संग्रह**—× । । पत्रसं० ५६ । आ० १२ × ४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १५८/१०७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

विशेष—निम्न कथाओं का संग्रह है ।

१—अष्टाह्निका कथा—	संस्कृत		अपूर्ण
२—अनन्तव्रत कथा	भ० पद्मनंदि	,,	,,
३—लब्धि विधान	पं० अभ्रदेव	,,	पूर्ण
४—रुक्मिणी कथा	छत्रसेनाचार्य	,,	,,
५—शास्त्र दान कथा	अभ्रदेव	,,	,,
६—जीवदया	भावसेन	,,	,,
७—त्रिकाल चौबीसी कथा	पं० अभ्रदेव	,,	,,

४३०७. **कथा संग्रह**—× । पत्र सं० २१ । भाषा-प्राकृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५९१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

४३०८. **कथा संग्रह—विजयकीर्ति** । पत्रसं० ५८ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र०काल सं० १८२७ सावण बुदी ५ । ले०काल सं० १८२८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४५ । **प्राप्ति स्थान**–भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष कनककुमार, धन्यकुमार, तथा सालिभद्र कुमार की कथाएं चोपई बंध छंद में है ।

४३०९. **कलिचौदस कथा—भ० सुरेन्द्रकीर्ति** । पत्रसं० ५ । आ० ११× ५इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०२ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४३१०. **कार्तिक पंचमी कथा** । पत्रसं० ५ । आ० १०½×४½ इञ्च ।भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६४।२०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—प्रति प्राचीन है । १७ वीं शताब्दी की प्रतीत होती है ।

४३११. **कार्तिक सेठ को चोढाल्यो** × । पत्रसं० ४ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी विषय—कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना बूंदी ।

४३१२. **कार्तिक महात्म्य**— × । पत्र सं० ८ । आ० ६½ ×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा (जैनेतर) । र०काल × । ले०काल सं० १८७२ कार्तिक सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८-१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—पद्मपुराण से ब्रह्म नारद संवाद का वर्णन है ।

४३१३. **कालक कथा**— × । भाषा—प्राकृत । विषय–कथा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४४०-३१/२८२-८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष— दो प्रतियों के पत्र हैं । फुटकर है ।

४३१४. **कालाकाचार्या कथा—श्री माणिक्यसूरि** । पत्रसं० ४ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४९९ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४३१५. **कालकाचार्य कथा—समयसुन्दर** । पत्रसं० ११ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय–कथा । र०काल × । ले०काल सं० १७१५ वैशाख बुदी १ । वेष्टनसं० १२६ । पूर्ण । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—देलवाडा में प्रतिलिपि हुई थी ।

४३१६. **कालकाचार्य प्रबंध—जिनसुखसूरि** । पत्र सं० १९ । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल १८६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

४३१७. **कुंदकुंदाचार्य कथा**—× । पत्रसं० २ । आ० १०½×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बून्दी ।

विशेष—अन्त में लिखा है—इति कुंदकुंदस्वामी कथा। या कथा दक्षणमूं एक पंडित ब्रावणी माफरो पथी उक अनुसार उतारी है।

४३१८. कौमुदी कथा—×। पत्रसं० ४६–१०४। आ० ११½ × ५¼ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—कथा। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० २६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बडा बीसपंथी दौसा।

४३१९. कौमुदी कथा—× । पत्रसं० ६०। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र०काल ×। ले०काल स १७३६। अपूर्ण। वेष्टनस० ६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मंदिर डीग।

४३२०. कौमुदी कथा—× । पत्र सं० १३६। आ० १०×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र०काल ×। ले०काल सं० १८२६ माह सुदी ५। पूर्ण। वेष्टनसं० २६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान (बूंदी)।

विशेष—राजाधिराज श्री पातिसाह अकबर के राज्य में चम्पानगरी के मुनिसुव्रतनाथ के चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी। सं० १६९२ की प्रति से लिखी गयी थी।

४३२१. गजसिंह चौपई—राजसुन्दर। पत्रसं० १६। आ० १०½ × ४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय कथा। र०काल सं० १५५६। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ४। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रत्येक पत्र पर १७ पंक्तियां एवं प्रति पंक्ति में ३५ अक्षर हैं।

मध्य भाग—

—नगर जोइनइ आवियो कुमर जे आवां हेठि।
नारी ते देखइ नहीं, जोवइ दस दिसि देठि। १५६ ॥
मनिचिंतइ कारण कियउ केणि हरीरा बाल।
पगजोतइ सहू तेहना धारि बुद्धि सुविसाल। १५७।
नरमहि घूरतना पढ़ो बैठया नारी माहि।
पंखी माही बाइस सही जोवउ पगहू जाहि। १५८ ॥
वउ आंखें अंजनाकरि चाल्यउ ननर मझारि।
पग जोवतउ नारी तणी पहुतउ वेस दुवारि १५९

४३२२. गुणसुन्दरी चउपई—कुशललाभ। पत्र सं० ११। आ० १०½ × ४½ इञ्च। भाषा-राजस्थानी। विषय कथा। र०काल सं० १६४८। ले०काल सं० १७४९। पूर्ण। वेष्टनसं० २७०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा।

४३२३. गौतम पृच्छा—× । पत्र सं० ६७। आ० ९×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—कथा। र०काल ×। ले० काल सं० १८१०। पूर्ण। वेष्टन सं० ३८। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा।

४३२४. चतुर्दशी कथा—डालूराम। पत्र सं० २१। आ० ९×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र०काल सं० १७५५। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ९७३। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

४३२५. चंदराजानी ढाल—मोहन । पत्र सं० १ । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०६/६६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

४३२६. चन्द्रप्रभ स्वामिनो विवाह—भ० नरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० २४ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—राजस्थानी । विषय—कथा । र० काल सं० १६०२ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

आदि भाग—

सकल जिनेश्वर भारती प्रणमीने
गणधर लहीय पसाउ ।
सोए श्री चन्द्रप्रभ वर नमित नरामर
गायस्यु तेह वीवाहलोए ।।१।।

मध्य भाग—

जइने बोलावे मात लक्षमणा देवी मात ।
उठोरे जिनेश्वर कहिए एक वात ।।१।।
सामीरे देखीजें रे पुत्र साहिजे सदा पवित्र ।
रजसु भदासे वछ निरमल गात्र ।

अन्तिम भाग—

विक्रमराय पछी संवत् सोल वय सत्तसर जांण
वैशाख वदी भली सप्तमी दिन सोमवार सुप्रमाण
गुजरदेश सोहामणो **महीसान** नगर मुसार ।
विवाह लउ रचउ मनरली आदिश्वर भवन मझार ।।
श्री मूलसंघ गछपति शुभचन्द भट्टारक सार ।
तत्पदकमल दिवाकरु, श्रीय सुमतिकीरति भवतार ।।
गुरु भ्राता तस जांणइ श्रीय सकलभूषण सुरी देव ।
नरेन्द्रकीरती सुरीवर कहे, कर जोडि ते पद सेव ।
जे नरनारी भावें सुरें, भणेंद सुणें यह गीत ।
ते पद पामें सासवता, श्री चन्द्रप्रभुनीरीति ।।

इति श्री चन्द्रप्रभ स्वामिनो विवाह संपूर्ण । ग्रंथ श्री गोतम लखीतं । पठनार्थं ब्रह्म श्री रूपचन्दजी ।

४३२७. चन्दनमलयागिरी चौपई—भद्रसेन । पत्र सं० २० । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र० काल १७वीं शताब्दी । ले० काल सं० १७६० जेठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १/१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

प्रशस्ति—संवत् १७६० वर्षे मासोत्तममासे जेठ मासे शुक्ल पक्षे त्रयोदशम्यां तिथौ भौमवासरे इदं पुस्तकं लिखापितं कारंजा नगर मध्ये श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालये लेखक पाठकयो शुभं भवतु ।

प्रति सचित्र है तथा उसमें निम्न चित्र हैं—

१.	राधाकृष्ण	—	पत्र १ पर
२.	राजा चन्दन रानी मलयागिरी	—	१
३.	महल राजद्वार	—	१
४.	राज्य देव्या संवाद	—	२
५.	राजा चन्दन कुल देवता से बात पूछै छै	—	३
६.	रानी मलियागिरी राजा चन्दन	"	३
७.	रानी मलियागिरी और राजा चन्दन सायर के तीर	—	४
८.	" "	—	५
९.	" पार्श्वनाथ के मन्दिर पर	—	५
१०.	सायर नीर गौउ चरावे छै	—	५
११.	चोवदार सौदागर	—	६
१२.	रानी वनखंड में लकड़ी बीनव	—	६
१३.	रानी मलयागिरी एवं चोबदार	—	७
१४.	"	—	८
१५.	मलियागिरी को लेकर जाते हुए	—	९
१६.	रानी मलयागिरी एवं सौदागर	—	१०
१७.	वीर, सायर नदी नीर अमरालु	—	११
१८.	राजा चन्दन स्त्री	—	१२
१९.	राजा चन्दन पर हाथी कलश ढोलवे	—	१३
२०.	राजा चन्दन महल मा जाय छै	—	१४
२१.	राजा चन्दन आनन्द नृत्य करवा छै	—	१६
२२.	राजा चन्दन भलो छै	—	१६
२३.	नीर सायर मीला छै रानी मलियागिरी	—	१६
२४.	राजा चन्दन रानी मलियागिरी सौदागर भेंट कीधी	—	१७
२५.	राजा चन्दन के समक्ष सायर नीर पुकार करै छै	—	१८
२६.	चन्दन मलियागिरी	—	१९

४३२८. **चंदनषष्ठीव्रत कथा—खुशालचन्द।** पत्र सं० ६। आ० १२×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८२८। पूर्ण। वेष्टनसं० १४५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

४३२९. **चंपावती सोलकल्याणदे—मुनि राजचन्द्र।** पत्र सं० ९। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। **विषय**—कथा। र० काल सं० १६८४। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टनसं० ५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर।

४३३०. **चारमित्रों की कथा—** × । पत्र सं० ६९। आ० ११×५ इञ्च। **भाषा**—संस्कृत। विषय—कथा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ९२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

४३३१. **चारुदत्त कथा**— × । पत्रसं० ५ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा – संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । । पूर्ण । वेष्टन सं० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४३३२. **चारुदत्त सेठ (णमोकार) रास**—ब्र० जिनदास । पत्रसं० ३५ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल सं० १७५४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०३ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर, उदयपुर ।

४३३३. **चारुदत्त प्रबन्ध**—**कल्याणकीर्ति** । पत्रसं० । १३ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र० काल सं० १६८२ । ले० काल सं० १७६५ । पूर्ण । वे. सं० २७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

४३३४. **चित्रसेन पद्मावती कथा**—**गुणसाधु** । पत्र सं० ४४ । भाषा – संस्कृत । विषय—कथा । र० काल संवत १७२२ । ले० काल सं० १८६८ आसोज सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

४३३५. **चित्रसेन पद्मावती कथा**—**पाठक राजवल्लभ** । पत्र सं० ३३ । आ० ९½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल सं० १५२४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

४३३६. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ५२ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—कुल ५०७ पद्य हैं । पं० हीरानन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

४३३७. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० ९ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल सं० १६५१ फागुण बुदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० २३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति अच्छी है ।

४३३८. **चित्रसेन पद्मावती कथा**— × । पत्र सं० २१ । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल सं० १४२८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

४३३९. **चेलणासतीरो चोढालियो**—**ऋषि रामचन्द** । पत्र सं० ४ । आ० ९×४ इञ्च । भाषा—राजस्थानी । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)

४३४०. **चोबोली लीलावती कथा**—**जिनचन्द** । पत्र सं० १५ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र० काल सं० १७२४ । ले० काल सं० १८४९ । पूर्ण । वे० सं० ३३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४३४१. **चौबीसी कथा**— ×½ । पत्रसं० ७ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

४३४२. **चौबीसी व्रत कथा**— × । पत्र सं० ८७ । आ० १४×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

४३४३. **जम्बूकुमार सज्झाय**— × ।पत्रसं० १ । आ० १०½×४ इञ्च । भाषा – हिन्दी । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, बोरसली कोटा ।

४३४४. **जम्बूस्वामी अध्ययन—पद्मशिलक गणि** । पत्र सं० ६३ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—कथा । र० काल ×। ले० काल सं० १७८६ कार्तिक बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—पद्मसुन्दरगणि कृत हिन्दी टब्बार्थ टीका सहित है ।

४३४५. **जम्बूस्वामी कथा**— × । पत्र सं० ५ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल । अपूर्ण । वेष्टन सं० २९७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)

४३४६. **जम्बूस्वामी कथा**— × । पत्रसं० ३१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४३४७. **जम्बूस्वामी कथा–पं० दौलतराम कासलीवाल** । पत्र सं० २ से २७ । आ० ११½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–कथा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष— पुण्यास्रव कथाकोश में से है । प्रथम पत्र नहीं है ।

४३४८. **जिनदत्त कथा**— × । पत्र सं० २५ । आ० ११ × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल सं० १५०० जेठ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती दूनी (टोंक)

प्रशस्ति--संवत् १५०० वर्षे जेठ बुदि ७ रवौ गंधार मन्दिरे श्रीसंघे भट्टारक श्री पद्मनन्दि तच्छिष्य श्री देवेन्द्रकीर्ति तच्छिष्य विद्यानन्दि तद्दीक्षित ब्र० हरदेवेन कर्मक्षयार्थं लिखापितं ।

"श्रेष्ठि अर्जुन सुत भूठा लिखापितं भ० श्री ज्ञानभूषणास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभचंद्राणां पुस्तकं । ये शब्द पीछे लिखे गये मालूम होते हैं ।

प्रारम्भ—

महामोहतमश्छन्न भुवनांभोजभानवः ।
संतु सिद्ध्यंगना सङ्ग सुखिनः संपदे जिनाः ॥१॥
यदा पत्ता जगद्वस्तु व्यवस्थेयं नमामि तां ।
जिनेन्द्रवदनांभोज राजहंसी सरस्वती ॥२॥
मिथ्याग्रहाहिनादष्टं सद्धर्मामृतपानतः ।
आश्वासयंति विश्वं ये तान् स्तुवे यतिनायकान् ॥३॥

अन्तिम—

कृत्वा सारतरं तपो बहुविधं शांताश्चिरं चाधिका ।
कल्पं नास्तमवापुरेत्यनरतां दत्तो जिनाद्यिर्गुतः ।
यत्रासौ सुखसागरांतरगणां विज्ञाय सर्वेपिते ।
न्योन्यं तत्र जिनादि वंदनपराः प्रीताः स्थिति तन्वते ॥६८॥

६ सर्ग हैं ।

४३४६. **जिनदत्त चरित—गुणभद्राचार्य** । पत्र सं० ४७ । आ० १२×७½ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय—चरित । र० काल × । ले० काल सं० १६३० । पूर्ण । वेष्टन सं० २२८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—इसका नाम जिनदत्त कथा दिया हुआ है ।

४३५०. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ३८ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल सं० १६८० । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४३५१. **जिनदत्त कथा भाषा**— × पत्रसं० ५८ । आ० १२×७ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल सं० १६६२ । पूर्ण । वेष्टनसं० २२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर, बोरसली कोटा ।

४३५२. **जिनरात्रिव्रत महात्म्य--मुनि पद्मनन्दि** । पत्र सं० ३६ । आ० ११ × ५ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल सं० १५६४ पौष बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष द्वितीय सर्ग की पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री वर्द्धमानस्वामि कथ वतारे जिनरात्रिव्रतमहात्म्य दर्शके मुनिश्रीपद्मनंदिविरचिते मनः सुखाय नामांकिते श्री वर्द्धमानविधाणगमनं नाम द्वितीय सर्गः ॥२॥

४३५३. **जिनरात्रि विधान** -- × । पत्र सं० १५ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४३५४. **ज्ञातृधर्म कथा टीका**— × । पत्रसं० ६६ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत संस्कृत । विषय कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८७४ मंगसिर बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०६/७४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

विशेष—वणपुर मध्ये नयशेखर ने प्रतिलिपि की थी ।

४३५५. **ढोला मारणी चौपई**— × । पत्र सं० १४ । आ० १२ × ५½ इंच । भाषा–राजस्थानी (पद्य) । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दीसा ।

४३५६. **णमोकार मंत्र महात्म्य कथा**— × । पत्र सं० ६८६ । आ० १२ × ७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—सचित्र प्रति है। चित्र सुन्दर है।

४३५७. **ताजिकसार**— × । पत्रसं० ८। आ० १०×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। **विषय**—कथा। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १५८८। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४३५८. **त्रिकाल चौबीसी कथा—पं० अभ्रदेव**। पत्रसं० ५। आ० १०½ × ४¾ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० २४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

४३५९. **त्रिलोकदर्पण कथा—खड्गसेन**। पत्रसं० १८४। आ० ११½ × ५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-लोक विज्ञान कथा। र० काल सं० १७१३ चैत्र सुदी ५। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १४४। **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

४३६०. **प्रतिसं० २**। पत्र सं० १५९। आ० १२½ × ४½ इञ्च। ले० काल सं० १७७७ आसोज सुदी १४। पूर्ण। वेष्टनसं० ४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना।

विशेष—केशोदास ने प्रतिलिपि की थी।

४३६१. **प्रति सं० ३**। पत्र सं० १७९। आ० १०½ × ५½ इञ्च। ले० काल सं० १८४६ आसोज सुदी ६ गुरुवार। पूर्ण। वेष्टन सं० १११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल टोंक।

विशेष—जिसको ऐलीदास जी लिखा था सहसरामेण लक्षकपुर मध्ये।

इस प्रति में रचना काल सं० १७१८ सावण सुदी १० भी दिया हुआ है···

४३६२. **प्रतिसं० ४**। पत्रसं० १८०। आ० १०×५½ इञ्च। ले० काल सं १८९३ सावण बुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० ७८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक।

विशेष—ब्राह्मण सुखलाल ने राजमहल में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी।

४३६३. **प्रति सं० ५**। पत्रसं० ८२। आ० १२ × ६½ इञ्च। ले०काल सं० १७६३ मंगसिर सुदी १४। पूर्ण वेष्टनसं० ५। **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक।

४३६४. **प्रति सं० ६**। पत्रसं० १५७। आ० १२×५½ इञ्च। ले० काल सं० १८३२ कार्तिक सुदी ६। पूर्ण। वेष्टनसं० १११-८८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह टोंक।

विशेष—सूरतराम चौकडाइत भौंसा चाकसू वाले ने प्रतिलिपि की थी।

४३६५. **प्रतिसं० ७**। पत्र सं० १९८। आ० १० ×४½ इञ्च। ले० काल सं० १८३०। पूर्ण। वेष्टन सं० ६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

४३६६. **प्रतिसं० ८**। पत्रसं० ११३–१३६। ले० काल सं० १७५७। अपूर्ण। वेष्टन सं० ९६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मंदिर बसवा।

४३६७. **प्रतिसं० ९**। पत्रसं० १४२। आ० ११ × ६½ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० २२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मंदिर उदयपुर।

४३६८. **प्रतिसं० १०**। पत्र सं० ११४। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २७। **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

४३६९. **प्रतिसं० ११** । पत्रसं० १९५ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल सं० १८०० । पूर्ण । वेष्टन सं०६६-४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

४३७०. **प्रति सं० १२** । पत्रसं० १८४ । आ० ८½× ५ इञ्च । ले०काल सं० १८२२ आषाढ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—आनन्दराम गोधा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

४३७१. **प्रति सं० १३** । पत्र सं० १२४ । ले० काल सं० १८२४ सावन बुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ३७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

४३७२. **प्रति संख्या १४** । पत्रसं० ७६ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

४३७३. **त्रिलोक सप्तमी व्रत कथा—अ० जिनदास** । पत्र सं० ७ । आ० ११ × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३९३/१२४ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

४३७४. **दमयंती कथा—त्रिविक्रम भट्ट** । पत्र सं० १२१ । आ० ९×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत (गद्य) । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल सं० १७५७ श्रावण सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—इन्द्रगढ़ में मुनि रत्नविमल ने प्रतिलिपि की थी ।

४३७५. **दर्शनकथा**—भट्टारकीय । पत्र सं० ३७ । आ० १३½×६½ इञ्च । **भाषा**—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३९८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४३७६. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ३७ । आ० १०½×५½ इञ्च । ले०कालसं० १९३६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

४३७७. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० २ से २५ । आ० १३½ × ७ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—१,१० एवं ११ वां पत्र नहीं है ।

४३७८. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० २८ । आ० १२½×७½ इंच । ले०काल सं० १९४२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६७-७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, कोटडियों का डूंगरपुर ।

४३७९. **प्रतिसं० ५** । पत्रसं० २७ । आ० १२½×८ इञ्च । ले०काल सं० १९४३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ९ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

४३८०. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० २२ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

४३८१. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० २८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

४३८२. **प्रतिसं० ८** । पत्रसं० ३४ । आ० १०½×७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर कामा ।

४३८३. **प्रति सं० ९** । पत्र सं० ५५ । आ० १२½×५½ इञ्च । ले० काल सं० १९०७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

४३८४. **प्रति सं० १०** । पत्रसं० ३८ । आ० १० × ६¾ इञ्च । ले०काल सं० १९२८ आसोज वदी ८ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—सौगाणी दि० जैन मंदिर करौली ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है ।

४३८५. **प्रतिसं० ११** । पत्र सं० ५८ । आ० ९ × ५½ इञ्च । ले० काल सं० १९५९ सावन सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

विशेष – चिरंजीलाल व गूजरमल बैद ने करौली में प्रतिलिपि की थी ।

४३८६. **प्रतिसं० १२** । पत्रसं० ४१ । आ० १०½×५½ इञ्च । ले०काल सं० १९२७ चैत्र सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ७२ १९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—पत्र सं २३ और ३९ की दो प्रतियां और हैं ।

४३८७. **प्रतिसं० १३** । पत्रसं० २८ । आ० ११×७¾ इञ्च । ले०काल सं० १९६१ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

४३८८. **प्रति सं० १४** । पत्र सं० ४९ । आ० ८½×६¾ इञ्च । ले० काल × । **पूर्ण** । वेष्टन सं० ११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

४३८९. **प्रति सं० १५** । पत्रसं० २४ । आ० १३ × ७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

४३९०. **प्रति सं० १६** । पत्रसं० ३२ । आ० १०×७ इञ्च । ले०काल सं० १९६१ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, नागदी बूंदी ।

४३९१. **प्रति सं० १७** । पत्रसं० २३ । आ० १२¾ × ८ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५३७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४३९२. **दशलक्षण कथा**—× । पत्रसं० ३ । आ० १० × ४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४३९३. **दशलक्षण कथा**—× । पत्रसं० ४ । आ० १०¾×४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४३९४. **दशलक्षण कथा—हरिचन्द** । पत्र सं० १० । आ० ११×४¾ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-कथा । र०काल सं० १५२४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष आगे तीन कथाएं और दी हुई है

प्रारम्भ—ओं नमो वीतरागाय ।

वंदिवि जिण सामिया सिव सुह गामिय
पयडमि दह लखणामि कहा ।

सासय सुहु कारण भवणिहितारण
भवियहुणि सुणहु भत्ति महा ॥

अंतिम—

सिरि मूलसंघ वलत धारगणि । सरसइ गच्छवि संसार मणि ॥
यहचंद पोम नंदिमुवरं, सुहचन्दु भडार उप पडुधरं ॥
जिणचन्द सूरि णिजियअयणं, तहु पट्ट सिंहकीर्ति विसुगंण
मुनि खेमचन्द सूरि मयमोहहणं, श्री विजयकीर्त्ति तवखीण तेणं ॥
अज्जिय सुमदणसिरे पयरणमियं
पंडित हरियंदु विजयसहियं ॥
जिण आइणाह ,चोइहरयं ।
विरहय दहलक्खण कह सुवयं ॥
उवएसय कहियं गुणमंगलयं ।
पंदहसइ चउवीस मलयं ।
भादव सुदी पंचमि अइ विमलं ।
गुरुवारु विसारयणु खतु अमलं ॥
गोवागिरि दुग्ग ट्ठाणइयं ।
तोमरहं वंस किल्हण समयं ।
वर लवुकंचु वंसहितलं ।
जिणदास सुधम्म पुणं हण्णलयं ॥
भव्वावि सुसीला गुण सहियं ।
णंदणा हरिपाल बुद्धि णिहियं ॥
णंदहु जे पढहि पढावहियं ।
थावहि बखाणहि दखसहियं ॥
ते पावहि सुरणर सुक्खवरं ।
पाछे पुणु मोखलच्छिय वरं ।

धत्ता—

सासय सुहरत्तु भवणिहिवत्तु
परम पुरिसु आराहिमणा ।
दह धम्मह भाउ पुण सय हाउ
हरियंद णमंसिय जिणचरणा ॥
इति दस लाक्षणिक कथा समाप्त ।

इसके अतिरिक्त मौनव्रत कथा (संस्कृत) रत्नकीर्ति की, विद्याधर दशमीव्रत कथा (संस्कृत) तथा नारिकेर कथा (अपभ्रंश) हरिचन्द की और है।

४३९५. दशलक्षण कथा-अ० जिनदास। पत्र सं० १६। आ० ५×४ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र०काल × । ले० काल सं० १६४७। पूर्ण। वेष्टन सं० ५४७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

४३९६. **दशलक्षण कथा** । पत्रसं० ६ । भाषा-हिन्दी । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल सं० १९६८ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—व्रत कथा कोष में से ली गई हैं । पुष्पांजलि कथा और है ।

४३९७. **दान कथा—भारामल्ल** । पत्र सं० ८ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाष-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल ×।पूर्ण । वेष्टन सं० ३९९/९८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

४३९८. **प्रति सं० २** । पत्रसं० १० । ले० काल × पूर्ण । वेष्टन सं० ४००/९९ । **प्राप्ति स्थान** -दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

४३९९. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ३० । आ० ११×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १९४३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बघेरवालों का आवां (उणियारा)

विशेष—सीलोर ग्राम में प्रतिलिपि की गई थी ।

४४००. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० ५८ । आ० ७ ×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोठ्यों का नैणवा ।

४४०१. **प्रतिसं० ५** । पत्र सं० २९ । आ० १०$\frac{1}{2}$×६ $\frac{1}{2}$इञ्च । ले० काल सं० १९३६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४ । **प्राप्ति स्थान** --दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा ।

४४०२. **प्रति सं० ६** । पत्रसं० २-३४ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५५ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा ।

४४०३. **प्रतिसं० ७** । पत्र सं० ३२ । आ० ९ $\frac{1}{2}$× ६ इञ्च । ले० काल सं० १९३७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

४४०४. **प्रतिसं० ८** । पत्र सं० ३२ । ले०काल सं० १९३७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

४४०५. **प्रतिसं० ९** । पत्र सं० ३७ । आ० ६×६ इञ्च । ले० काल १८६१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लागदी बूंदी ।

४४०६. **प्रतिसं० १०** । पत्र सं० २४ । आ० ११×७ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

४४०७. **प्रतिसं० ११** । पत्र सं० ३० । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ७ $\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १९३७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

४४०८. **प्रति सं० १२** । पत्र सं० २९ । आ० ९×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण वेष्टन सं० १५१ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मंदिर श्री महावीर बूंदी ।

४४०९. **प्रति सं० १३** । पत्र सं० २९ । आ० १०$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल १९३७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्री महावीर बूंदी ।

४४१०. **प्रति सं० १४** । पत्र सं० ३० । आ० ८$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

४४११. **प्रतिसं० १५**। पत्रसं० २६। आ० ११$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च। **ले०काल** १६३० माह बुदी १३। पूर्ण। वेष्टनसं० ७१/१८४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर।

विशेष—१८ पत्रों की एक प्रति और है।

४४१२. **प्रतिसं० १६**। पत्रसं० २६। आ० १०$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल सं० १६५६। पूर्ण। वेष्टनसं० ३३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

४४१३. **प्रतिसं० १७**। पत्र सं० २८। ले० काल सं० १६२६। पूर्ण। वेष्टन सं० ६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा।

४४१४. **प्रति सं० १८**। पत्र सं० २४। ले० काल सं० १६२६ पूर्ण। वेष्टन सं० १२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मंदिर बसवा।

४४१५. **प्रति सं० १६**। पत्रसं० २६। आ० १२$\frac{1}{2}$×८ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ५३५। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

४४१६. **दान कथा**—× । पत्र सं० ६४। आ० ६×६ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय-कथा। र०काल × । ले० काल सं० १६२४। पूर्ण। वेष्टन सं० १७८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर भादवा (राज०)

विशेष—निशि भोजन कथा भी दी हुई।

४४१७. **दानशील कथा—भारामल्ल**। पत्र सं० ७०। भाषा हिन्दी। विषय-कथा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ६। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मंदिर दीवानजी भरतपुर।

विशेष—कठूमर में लिखा गया था।

४४१८. **दानशील संवाद—समयसुन्दर**। पत्र सं० ७। आ० ६ × ४ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २६१/१७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—कोट ग्राम में प्रतिलिपि हुई थी।

४४१९. **दानडी की कथा**—× । पत्र सं० ५। आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—कथा। र०काल × । ले० काल × अपूर्ण। वेष्टन सं० ३३८-१३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों डूंगरपुर।

४४२०. **द्वादशव्रत कथा—पं० अभ्रदेव**। पत्र सं० ६। आ० ११$\frac{1}{2}$ × ४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० २३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

४४२१. **द्वादशव्रत कथा (अक्षयनिधि विधान कथा)**— × । पत्रसं० ३८। आ० १० × ४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २५६। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४४२२. **द्वादशव्रत कथा**— × । पत्रसं० ६। आ० ६×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-कथा। र०काल × । ले०काल सं० १८४५। पूर्ण। वेष्टनसं० २०४। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—अजयगढ में प्रतिलिपि हुई थी।

४४२३. **द्विढप्रहार—लावन्यसमय**। पत्रसं० १। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २०८/५६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—आदि अंत भाग निम्न प्रकार है—

आदि भाग—

पाय प्रणमीअ सरसति वरसति वचन विलास।
मुनिवर केवल धरगार सुमहिम निवास।
तुरे गायसु केवल धरे ते मुनिवर द्विढप्रहार ऋषिराज।
सीहतणी परि संयम पाली जिणइ सांरया सविकाज।
कवण दीपपुर मातपिता कुण किमए अगडु नाम।
कहितां कविअण सुणयो भवियण भाव धरी अभिराम॥

अन्तिम—

सिरि वीर जिणेसर सासनि सोहइ सार।
मंगलकर केवलनाणी द्विढ प्रहार तुरे द्विढ प्रहार।
केवल केरु सुणिइसार चरित्र जेणइ धार
त्याह उतारि काया करी पवित्र।
विणुअ पुरन्दर समय रतन गुरु सुन्दर तसु पाय पामी।
सीस लेख लावण्यसमय इम जंपइ जयसिव गामी।
इति द्विढ प्रहार।

४४२४. **दीपमालिका कल्प**……। पत्र सं० ६। आ० १०×४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। र० काल × । ले० काल सं० १७७३ ज्येष्ठ सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० २६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

४४२५. **दीपावली कल्पनी कथा**— × । पत्रसं० २५। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी (गद्य)। विषय—कथा। र० काल × । ले० काल सं० १६३६। पूर्ण। वेष्टन सं० १६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

४४२६. **देवकीनोढाल**— × । पत्रसं० ५८। आ० १२×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—कथा। र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ३५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)।

४४२७. **देवीमहात्म्य**— × । पत्रसं० ६। आ० ८×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल? × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

विशेष—जैनेतर साहित्य है। मार्कंडेय पुराण में से ली गयी है।

४४२८. **धन्नाथउपई—मतिशेखर**। पत्रसं० १४। आ० १०½×४ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—कथा। र० काल सं० १५७४। ले० कालसं० १६४०। पूर्ण। वेष्टनसं० ११२/६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दीसा।

प्रारम्भ—

पहिलउ पणमीय पय कमल वीर जिणंदह देव ।
भविय सुणौ धन्ना तणौ चरिय भणउ संखेवि
जिणवर चिहु परिभासीउ सासणि निम्मल धम्म ।
तिह धुरि पंससिउ जिह तूटइ सवि कम्म ॥२॥

पत्र ८ पर—

बहुय वचन मनि हरषियो सिसिभरि धनसार ।
नीसरियो आगलि करी, सहुयइ परिवार ॥६५॥
गामि २ पुरि २ करइ जिउ काम वरांक ।
तऊन पूरउ हुव मरउ, धिग धिग कर्म विपाक ।

अन्तिम पाठ—

श्री उवएस गच्छ सिणगारो, पहिलउ रयणप्पह गणधारो ।
गुण गोयम अवतारे ॥
जख एव सूरिंद प्रसीधउ, तासु पट्टि जिणि जगि जसु लीधौ ।
संयम सिरि उरिहारो ॥२७॥
अनुक्रमदेव मुत्ति सूरीत्र, सिद्ध सूरि नमहि तसु सीस ।
मुनिजन सेवित पाय ।
तासु पट्टि संयम जयवंतउ, गच्छनायक महि महिमा वंतउ ।
कक्कसूरि गुरुराय ॥२८॥
सयहुव्वि व्यापी पतिण गणहारी, गुणवंतशील सुन्दर वाणारि ।
वरीय जेणि अणंगो ।
तासु सीस **मतिशेखर** हरषिहि, पनरहसय चउदोत्तर वरसिहि ।
कीयो कवित्त अति चंगो ॥२९॥
एह चरित धन्ना नउ भाविहि, भणइं गुणइं जे कहइ कहावइ ।
जे संपत्ति देइ दान ।
ते नर मन वंछिय फल पावइं । धरि बइठा सवि संपद आवइ ।
विलसइ नवई विधान ॥३०॥

इति धन्ना चउपई समाप्ता ।

संवत् १६४०.....बुदी ६ शनिवारे । खेतइ रिषनो भाइई लिख दीइ ॥

४४२९. धर्मपरीक्षा कथा—देवचन्द्र । पत्रसं० २८ । आ० १२×५ इंच । भाषा-संस्कृत । **विषय**-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १६५५ फागुन सुदी २ । वेष्टन सं० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—जगन्नाथ ने आचार्य लक्ष्मीचन्द के लिए प्रतिलिपि की थी

४४३०. धर्म बुद्धि कथा— × । पत्रसं० ८-१३० । आ० ७×५ इंच । भाषा—हिन्दी । **विषय**—कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८५२ वैशाख बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी ।

४४३१. **धर्मबुद्धि मंत्री कथा—बखतराम।** पत्र सं० १७। आ० ८½×८½ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—कथा। र० काल सं० १८६० आसोज बुदी ८। ले० काल सं० १८७४ सावण सुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० ६६५। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—धर्मयुक्त बुद्धि को मंत्री के रूप में सलाहकार माना गया है।

४४३२. **नरकनुढाल—गुणसागर।** पत्रसं० २। आ० १०×४ इञ्च। **भाषा**—हिन्दी। विषय—कथा। र० काल × । ले० काल० × । पूर्ण। वेष्टन सं० २८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

४४३३. **नलदमयंती चउपई**— × । पत्रसं० ५६। आ० ६×४½ इञ्च। **भाषा**—हिन्दी (पद्य)। विषय—कथा। र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ११७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी।

४४३४. **नलदमयंती संबोध—समयसमुन्दर।** पत्रसं० ३०। आ० ६½×४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र० काल सं० १६७३। ले० काल सं० १७१८ मंगसिर सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन सं० १२६५। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर।

विशेष—अजयगढ में प्रतिलिपि हुई थी।

रचना का अन्तिम भाग निम्न प्रकार है—

संवत सोलतिहुत्तरइ मास वसंत अणंद।
नगर मनोहर मंडतो जिहां वासपूज्य जिणंद।
वासुपूज्य तीर्थंकर प्रसाद गछ खरतर गह गहइ।
गछराय जयप्रधान जिनसिंघसूरि सद्गुरु जस लहइ।
उवझाय इम कहइ समयसुन्दर कीयो अग्रह नेतसी।
चउपई नलदमयंती किरी चतुरमाणस चित्त वसी।

इति श्री नल दमयंती सम्बन्ध भाषबद्ध कृत सप्तकोटी स्वर्ग वृष्टि।

४४३५. **नलोपाख्यान**— × । पत्रसं० ४७। आ० १२×७½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—कथा। र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ५२५। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—राजा नल की कथा है।

४४३६. **नागकुमारचरित्र—मल्लिषेण।** पत्रसं० २२। आ० १०¾×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल × । ले० काल सं० १६७५ आसोज सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० ७०। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४४३७. **प्रति सं० २।** पत्रसं० २६। आ० ६¾×४ इञ्च। ले० काल सं० १८३० चैत्र सुदी ५। अपूर्ण। वेष्टन सं० ६८२। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—इसका अपर नाम नागकुमार कथा भी है।

४४३८. **प्रति सं० ३।** पत्रसं० ३८। आ० ६×४½ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३४८। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४४३९. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० २७ । आ० १२× ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २८७/१४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४४४०. **प्रतिसं० ५** । पत्र सं० २–१५ । आ० ११ × ४ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २५३/१४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

४४४१. **प्रति सं० ६** । पत्रसं० ३–२७ । ले०काल सं० १६१९ । अपूर्ण । वेष्टन सं० २५४/१३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—संवत् १६१९ वर्षे गुरु कोटनगरे श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालये भट्टारक श्री शुभचन्द्र शिष्य मुनि वीरचन्द्रेण ज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थं स्वहस्तेन लिखितं शुभमस्तु । ब्रह्म धर्मदास ।

४४४२. **प्रतिसं० ७** । पत्र सं० २-२० । आ० १०×४ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २३६–१२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

४४४३. **प्रतिसं०** । पत्र सं० २० । ले० काल १६०७ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४७/१२९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है । "ब्रह्म नेमिदास पुस्तकमिदं ।"

४४४४. **प्रति सं० ९** । पत्र सं० २८ । आ० ०१०×४½ इञ्च । ले० काल सं० १७१४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १७१४ वर्षे भादौ मासे कृष्णपक्षे ५ बुधे श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये तत्पट्टे भट्टारक श्री पद्मकीर्ति तत्पट्टे श्री सकलकीर्ति साधु श्री द्वारकादास ब्रह्म श्री परमस्वरूप अनातरामेण लिखितं । ललितपुर ग्रामेणु मध्ये श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय शुभं भवतु ।

४४४५. **नागश्रीकथा—भ० नेमिदत्त** । पत्रसं० २० । आ० १०$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय कथा । र० काल × ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३९ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

४४४६. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ४१ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १६०८ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२/१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का, डूंगरपुर ।

प्रशस्ति—संवत् १६०८ वर्षे पौष सुदी १४ तिथौ भृगु दिने श्री धनोवेन्दुये श्री आदिनाथ चैत्यालये मूलसंघे भारतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भ० देवेन्द्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री विद्यानंदिदेवा तत्पट्टे भ० श्री भारतिभूषणदेवा तत्पट्टे पं० श्री लक्ष्मीचंददेवा तत्पट्टे भ० श्री वीरचंददेवा श्री जिनचन्देन लिखापितं ।

४४४७. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० १६ । आ० १०× ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर चौगान बूंदी ।

४४४८. **प्रतिसं० ४** । पत्र सं० १८ । आ० १०×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल सं० १६४२ माह सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति सुन्दर है।

४४४६. **निर्झरपंचमी विधान**- × पत्र सं० २। आ० ११×५½ इञ्च। **भाषा**–अपभ्रंश। विषय–कथा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा।

४४५०. **निर्दोषसप्तमी कथा—ब्रह्म रायमल्ल**। पत्रसं० २। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–कथा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वे० सं० ५१–१८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

अन्तिम—

जिनपुरा।ण मह इम सुण्णो,
जिहि विधि ब्रह्मरायमल भण्यो ॥५६॥

४४५१. **निशिभोजनकथा—किशनसिंह**। पत्रसं० २-१५। आ० १४ × ६½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय–कथा। र० काल सं० १७७३ सावन सुदी ६। ले० काल सं० १६१८। अपूर्ण। वेष्टन सं० १२८। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बयाना।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—

माथुर वसंतराय बोहरा को परधान।
संगही कल्याणराय पाटनी बखानिये।
रामपुर वास जाको सुत सुखदेव सुधी।
ताको सुत कृष्णसिंह कविनाम जानवे।
तिहि निशभोजन त्यजन व्रत कथा सुनी
ता कीनी चौपई सुआगम प्रमानिये।
भूलिचूकि अक्षर जु धरे ताको
बुध जान सोधि पढ़ो विनती हमारी मानिये।

छप्पय

प्रथम नागश्रिय चरित्र देवभाषा मय सोहै
सिंघनंदि शिष्य नेमिदत्त करता बुध जोहै।
ता अनुसार जु रची वचनिका दसरथ पंडित।
व्रत निशभोजन त्यजन कथन जामैं गुण मंडित।
चौपई बंध तिह ग्रन्थ को कियो किशनसिंह नाम कवि
जो पढ़य सुनय सरधान कर अनुक्रम शिव लह भवि ॥५॥

दोहा

संवत सत्रैसै अधिक सत्तर तीन सुजान।
श्रावन सित जटवार भृग हर पूर्णता ठान ॥६॥
कथा माहि चौपई ज्यारसे एक बखानी
इकतीसापन छप्पन दोय सब बोधक जानी।

सब इक ठौर किये चारसे सत्रह गनिये
मुज मति लघु कछु छंद व्याकरण न भनिये ।
बढ घट जवरन पद मात्र जो होय लखविभो दीनती
कर सुद्ध पढ़ेजे तज कर जौर करै कवि विनती ।।
रचना दूसरा नाम 'नागश्रीकथा भी है

४४५२. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ३६ । आ० १०×५½ इंच । ले०काल सं० १८१२ फागुन सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०६ (अ) । **प्राप्ति स्थान**—य दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

४४५३. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ४२ । आ० ६×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनपंचायती मन्दिर करौली ।

४४५४. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० ३२ । आ० ६×६ इञ्च । ले० काल सं० १६४० । पूर्ण । वेष्टन सं० ७२ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

४४५५. **प्रति सं० ५** । पत्रसं० २२ । आ० १२×५½ इंच । ले०काल सं० १६७६ भादवा बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

४४५६. **प्रति सं० ६** । पत्रसं० २६ । ले०काल सं० १६०५ -वैशाख बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

४४५७. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० १७ । ले० काल सं०१८१६ । वेष्टन सं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

४४५८. **प्रति सं० ८** । पत्र सं० ३१ । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल सं० १८४७ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८६ ।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का नैणवा ।

४४५९. **प्रति सं० ९** । पत्रसं० २३ । ले०काल सं० १८४४ पूर्ण । वेष्टनसं० ५७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

४४६०. **निशि भोजनकथा—भारामल्ल** । पत्र सं० १३ । आ० १०½×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र०काल × । ले० काल सं० १६५६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४४६१. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १२ । आ० १३×८ इञ्च । ले० काल सं० १६५२ । वेष्टन सं० ४६/२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती दूनी (टोंक) ।

४४६२. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० १७ । आ० १०×३½ इञ्च । ले० काल सं० १६०२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपंथी दि० जैन मन्दिर नैणवा ।

४४६३. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० १३ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपंथी दि० जैन मन्दिर नैणवा ।

४४६४. **प्रतिसं० ५** । पत्रसं० १२ । आ०१२×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । पद्य । विषय–कथा । र०काल × । ले०काल सं० १६५७ । पूर्ण । वेष्टनसं० १६८ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

४४६५. **प्रतिसं० ६ ।** पत्रसं० २–१४ । आ० १२×७ इञ्च । ले०काल सं १६३७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मंदिर श्री महावीर बूंदी ।

४४६६. **प्रति सं० ७ ।** पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १६६१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

४४६७. **प्रतिसं० ८ ।** पत्र सं० २६ । आ० ७$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इंच । ले०काल सं० १६१८ अगहन बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ११६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

४४६८. **प्रतिसं० ६ ।** पत्रसं० १३ । आ० १० × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं १६३५ सावन बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष --दो प्रतियों का मिश्रण है ।

४४६६. **प्रतिसं० १० ।** पत्रसं० २१ । आ० ७ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १६६१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—चंदेरी में प्रतिलिपि हुई थी ।

४४७०. **प्रतिसं० ११ ।** पत्र सं० १४ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०७ । प्राप्ति स्थान --दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी ।

४४७१. **प्रति सं० १२ ।** पत्रसं० ७ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४०१/६७ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४४७२. **प्रति सं० १३ ।** पत्र सं० ८ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४०२/१०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४४७३. **निशिभोजन कथा**— × । पत्र सं० १६ । आ० ६$\frac{1}{2}$×३$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा - हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल सं० १६५७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटयों का नैणवा ।

४४७४. **नंदीश्वर कथा--शुभचन्द्र ।** पत्रसं० पत्र सं०११ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा— संस्कृत । विषय---कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६० । **प्राप्ति स्थान**— अग्रवाल पंचायती दि० जैन मन्दिर अलवर ।

विशेष —इसे अष्टाह्निका कथा भी कहते हैं ।

४४७५. **नंदीश्वर व्रत कथा ।** पत्र सं० ८६ । आ० १२$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१२ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४४७६. **नंदीश्वर व्रत कथा** — × । पत्रसं० २–६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा– संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८२७ ज्येष्ठ बुदी २ । अपूर्ण । वेष्टन सं० २६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

४४७७. **नन्दीश्वर कथा**— × । पत्रसं० ८ । आ० १० × ४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०६/८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

४४७८. **पंचतंत्र**— × । पत्रसं० २-६३ । आ० १०½ × ४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६५८ । **प्राप्ति स्थान**–भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४४७९. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० १०३ । आ० १०⅝ × ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११३३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४४८०. **पंचमीकथा टिप्पण—प्रभाचन्द्र** । पत्र सं० २-२० । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश, संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर टोडारायसिंह (टोंक) ।

४४८१. **पंचपरमी कथा—ब्रह्म विनय** । पत्रसं० ६ । आ० १०½ × ५½ इंच । भाषा–हिन्दी प० । विषय–कथा । र० काल सं० १७०७ सावण सुदी २ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—रघुनाथ ब्राह्मण गूजर गोत्र ने लिपि की थी ।

अन्तिम—

सतरासै सतोतरै कहीं सावण बीज उजाली सही ।
मन माहै धरियो आनंद, सकल गोठ सुखकरी जिणंद ।
मूलसंघ गछ मंडलसार, महावली जीत्यो जिहपार ॥
जसकीरत सभै गछपती, सोभै दिगंबर नवै नरपति ।
साध सिघाडो रहै अनूप, सेवा करे बडेरा भूप ।
महाव्रती अणुव्रती धार, सेवै चरण फिरत है लार ॥
तास शिष्य विणमें ब्रह्मचार, करी कथा सब जन हितकार ।
थोड़ी बुद्धि रणीकी चालि, जाणें गोत वाकलीवाल ।
आनन्दपुर छै आनंद थानि, भला महाजन धरम निधान ॥
देव शास्त्र गुरु मानै आंण, गुणग्राहक रु सकलसुजाण ।
पांच परमी कथा परवान, हितकर कहीं भविक हित जानि ।
मन वच तन सुद्धर सिर धान पढै सुनै पावै निरवाण ॥

४४८२. **पंचास्थान—विष्णुदत्त** । पत्र सं० १८६ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८५८ । पूर्ण । वे० सं० १६/१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती दूनी (टोंक) ।

विशेष—सहजराम व्यास ने तक्षकपुर में प्रतिलिपि की थी । द्रोणीपुर (दूनी) में पार्श्वनाथ के मन्दिर में नेमीचंद के पठनार्थ लिखा गया था ।

४४८३. **पंचालीनी व्याह—गुणसागर सूरि**। पत्र सं० १। आ० ६$\frac{1}{2}$×४ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

विशेष—२५ पद्यों में वर्णन है।

अन्तिम—सत्तरणमी ढालमइ पंचालीनो व्याह।
कहि श्री गुणसागर सूरि जीं गजपुर माहि उछाह।

४४८४. **परदारी परशील सज्झाय—कुमुदचन्द**। पत्र सं० १। आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १७६७। पूर्ण। वेष्टन सं० २४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

४४८५. **परदेसी राजानी सज्झाय**— ×। पत्र सं० १। आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

४४८६. **पर्वरत्नावलि—उपाध्याय जयसागर**। पत्र सं० २०। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—व्रत कथा। र० काल सं० १७४८। ले० काल सं० १८५१ पौष सुदी ४। पूर्ण। वेष्टन सं० १२५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

विशेष—कोटा के रामपुरा में वासुपूज्य जिनालय में पं० जिनदास के शिष्य हीरानंद ने प्रतिलिपि की।

४४८७. **पल्य विधान कथा**— ×। पत्र सं० ७। आ० १०$\frac{3}{4}$ × ४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक)।

४४८८. **पल्यविधान कथा—खुशालचन्द काला**। पत्र सं० १५६। आ० १०×७ इंच। भाषा—हिन्दी (पद्य)। र० काल सं० १७८७ फागुण बुदी १०। ले० काल सं० १९३८ सावण सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन सं० ९३। **प्राप्ति स्थान**—पंचायती दि० जैन मन्दिर अलवर।

विशेष—अक्षयगढ़ में प्रतिलिपि की गयी।

४४८९. **पल्यविधान व्रतोद्यापन कथा—श्रुतसागर**। पत्र सं० ५८। आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८२६ काती सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० ६८९। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४४९०. **पल्यव्रत फल**—× । पत्र सं० ११। आ० ११ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ९६३। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४४९१. **पुण्यास्रव कथाकोश—मुमुक्षु रामचन्द्र**। पत्र सं० १४८। आ० १०$\frac{1}{2}$ × इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा र० काल ×। ले० काल सं० १८४० वैशाख सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन सं० १०७२। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४४९२. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० १३५ । आ० ९$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०८५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४४९३. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० ११४ । आ० १३$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १९०६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—बूंदी में प्रतिलिपि हुई थी ।

४४९४. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० १५६ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १८३६ ज्येष्ठ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष-जयपुर नगर के लश्कर के मन्दिर में साह सेवाराम ने पं० केशव के लिए प्रतिलिपि की थी ।

४४९५. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० २४८ । आ० १०$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० कालसं० १८९४ चैत सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

४४९६. **प्रति सं० ६** । पत्रसं० १०३ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४१९ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

४४९७. **प्रतिसं० ७** । पत्रसं० २३८ । आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२-३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

४४९८. **प्रतिसं० ८** । पत्रसं० १८७ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२९ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

४४९९. **प्रति सं० ९** । पत्रसं० १४८ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ५२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा

४५००. **प्रतिसं० १०** । पत्र सं०···· । आ० १३×५$\frac{3}{4}$ इंच । ले०काल सं० १५९० वैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स्वस्ति श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० सकलकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री ज्ञानभूषण तत्पट्टे भ० श्री विजयकीर्ति तत्पट्टे श्री शुभचन्द्र प्रवर्तमाने संवत् १५९० वर्षे वैशाख सुदी ४ शुक्रे ईडर वास्तव्ये हूंबड ज्ञातीय साह लाला भार्या श्राविका दाडिमदे तयोः पुत्री बाई पातलि तथा ईडर वास्तव्ये हुंबड ज्ञातीय दो देवा लघु भ्राता दो हांसा तस्य भार्या श्राविका हांसलदे एतान्यां पुण्यास्रवश्राविकभिधान ग्रन्थं ज्ञानावरणादिकर्मक्षयार्थं ब्र० तेजपालार्थं लिखापितं शुभं ।

४५०१. **पुण्यास्रवकथाकोश भाषा—दौलतराम कासलीवाल**— × । पत्र सं० १४७ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा हिन्दी गद्य । विषय—कथा । र०काल सं० १७७७ भादवा बुदी ५ । ले०काल सं १९५५ मंगसिर बुदी १२ पूर्ण । वेष्टन सं० १५४५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—कवि की यह प्रथम कृति है जिसे उन्होंने अपने आगरा प्रवास में समाप्त किया था ।

४५०२. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० २०० से ३०८ । आ० १०$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ९९५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४५०३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २०० । आ० ११×७ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १६१६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४५०४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २४४ । आ० १०×६½ इञ्च । ले०काल सं० १९५१ आषाढ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—पुस्तक हेमराज प्रती की है । कवडा ने प्रतिलिपि करी थी ।

४५०५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २१० । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर (बूंदी)

४५०६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२५-३९४ । आ० ९×६ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

४५०७. प्रति सं० ७ । पत्रसं० २४३ । आ० १०½×८½ इञ्च । ले० काल सं० १९३४ आसोज सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—भैरूलाल पहाडिया चूरु वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

४५०८. प्रति सं० ८ । पत्रसं० ३३७ । आ० १०½×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती दूनी मन्दिर (टोंक)

विशेष—अन्तिम पृष्ठ आधा फटा हुआ है ।

४५०९. प्रति सं० ९ । पत्रसं० २१९ । आ० १०½×६½ इञ्च । ले० काल सं० १९०५ भादवा सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

४५१०. प्रति सं० १० । पत्र सं० २२३ । आ० १३×९ इञ्च । ले० काल सं० १८२३ वैशाख बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

४५११. प्रति सं० ११ । पत्रसं० ३५६ । आ० १०× ६ इञ्च । ले०काल सं० १८२३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान**-- दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

४५१२. प्रति सं० १२ । पत्र सं० २३७ । आ० ११×९½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७९ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर कोटडियों का नैणवा

विशेष--गुटका रूप में है लेकिन अवस्था जीर्ण है ।

४५१३. प्रति सं० १३ । पत्रसं० २४६ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल सं० १८३२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०१ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मंदिर भादवा (राज०)

४५१४. प्रति सं० १४ । पत्रसं० १२५ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४ । **प्राप्तिस्थान**- दि० जैन बडा पंचायती मन्दिर डीग ।

४५१५. प्रति सं० १५ । पत्र सं० २६१ । ले० काल सं० १८७० ज्येष्ठ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती बडा मंदिर डीग ।

४५१६. प्रति सं० १६ । पत्र संख्या १५१ । ले०काल सं० १८८२ आसोज सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मंदिर बसवा ।

४५१७. **प्रतिसं० १७** । पत्र सं० ३५२ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—बयाना में प्रतिलिपि हुई थी ।

४५१८. **प्रतिसं० १८** । पत्रसं० ३२६ । आ० १० × ७ इञ्च । ले० काल सं० १८९६ आषाढ़बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६-१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—धारणा निवासी गोपाललाल गोधा ने प्रतिलिपि की थी ।

४५१९. **प्रतिसं० १९** । पत्रसं० ३२५ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल सं० १७८८ मंगसिर बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—खोहरी में लिखा गया था ।

४५२०. **प्रति सं० २०** । पत्र सं० १८७ । आ० १२½×७½ इञ्च । ले० काल × ।अपूर्ण । वेष्टन सं० ३५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४५२१. **प्रतिसं० २१** । पत्रसं० १–३६ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बयाना ।

४५२२. **प्रतिसं० २२** । पत्र सं० २८४-३८४ । ले०काल सं० १८७० चैत सुदी ६ । अपूर्ण । वेष्टनसं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बयाना ।

विशेष—जीवारामजी मिश्रा वैर वालों ने प्रतिलिपि कराई थी ।

४५२३. **प्रतिसं० २३** । पत्र सं० २८० । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति अपूर्ण है किन्तु महत्वपूर्ण है ।

४५२४. **प्रति सं० २४** । पत्रसं० १८३ । आ० १२½×७½ इञ्च । ले०काल सं० १९२९ पौष बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मंदिर बयाना ।

४५२५. **प्रति सं० २५** । पत्र सं० २३६ । ले० काल सं० १९६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

४५२६. **प्रतिसं० २६** । पत्र सं० २९५ । ले०काल सं० १८१३ । पूर्ण । वेष्टनसं० २०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—बेनीराम चांदवाड ने ग्रन्थ लिखवाया था ।

४५२७. **प्रति सं० २७** । पत्र सं० १५६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

४५२८. **प्रति सं० २८** । पत्रसं० १३४ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

४५२९. **प्रतिसं० २९** । पत्र सं० १०९ से २२३ । ले० काल ×। अपूर्ण । वेष्टन सं० ३२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

४५३०. **प्रतिसं० ३०** । पत्र सं० १२६ । ले० काल १८८६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

४५३१. **प्रतिसं० ३१** । पत्रसं० २०१ । आ० १३×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १८७१ आषाढ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर, अलवर ।

४५३२. **प्रति सं० ३२** । पत्र सं० २८० । ले०काल सं० १८६६ आषाढ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७/४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मंदिर अलवर ।

४५३३. **प्रति सं० ३३** । पत्र सं० २९० । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८/८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर अलवर ।

४५३४. **प्रतिसं० ३४** । पत्रसं० २९० । आ० १२×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १८५८ चैत्र शुक्ला ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

४५३५. **प्रतिसं० ३५** । पत्र सं० ५०६ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले० काल सं० १८५२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१२-८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

४५३६. **प्रति सं० ३६** । पत्र सं० ३८५ । आ० १३$\frac{3}{4}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १८८४ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—फतेहपुर वासी हरकंठराय भवानीराय अग्रवाल गर्ग ने मिश्र राधाकृष्ण से सासनी नगर में प्रतिलिपि करवाई थी ।

४५३७. **प्रति सं० ३७** । पत्र सं० १-१८६ । आ० ६×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

४५३८. **प्रतिसं० ३८** । पत्र सं० ३३६ । आ० ११×७$\frac{1}{2}$ । ले० काल सं० १९५३ सावण बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६--७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्द्रगढ (कोटा) ।

४५३९. **प्रति सं० ३९** । पत्रसं० २३४ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । ले०काल सं० १८४९ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८५/४५ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—शेरगढ नगर में आचारजजी श्री सुखकीर्तिजी बाई रूपा चि० तत् शिष्य पंडित मानक चन्द लिखी ।

४५४०. **पुण्यास्रवकथा कोश**— × । पत्रसं० २२७ । आ० १२$\frac{1}{2}$×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । **भाषा**–हिन्दी गद्य । विषय–कथा । र० काल × । ले०काल सं० १८१९ वैशाख सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनसं० १७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

४५४१. **पुण्यास्रवकथा कोश**— × । पत्र सं० ८४५ । आ० ७$\frac{3}{4}$×३$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १८७० भादों सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१/५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

विशेष—लकडी का पुट्ठा चित्र सहित बडा सुन्दर है ।

४५४२. **पुण्णासव कहा—पं० रइधू** । पत्र सं० १-८१ । भाषा-अपभ्रंश । विषय–कथा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा ।

विशेष—सीम लगने से अक्षरों पर स्याही फिर गई है ।

४५४३. **पुरंदर कथा—भाववेव सूरि** । पत्र सं० ७ । आ० ११½×४ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र० काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०३-६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

४५४४. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० १३ । ले०काल सं० १६०५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

४५४५. **पुष्पांजलि कथा सटीक**— × । पत्र सं० ४ । आ० १०½×८½ इंच । **भाषा**—प्राकृत-संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२६० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित जीर्ण है ।

४५४६. **पुष्पांजलि विधान कथा**— × । पत्रसं० ११ । आ० ११×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४५४७. **पुष्पांजलि व्रत कथा**—**खुशालचन्द** । पत्रसं० १३ । आ० ८½×७ इंच । भाषा—राजस्थानी (ढूंढारी) पद्य । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर छोटा दीवानजी बयाना ।

विशेष—ज्ञानसूर्य कृत रत्नत्रय पूजा भी दी हुई है ।

४५४८. **पुष्पांजली व्रत कथा—गंगादास** । पत्र सं० ८ । आ० १०½×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । **ले०काल सं० १८९८** फागुण सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ७५/१०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

४५४९. **पुष्पांजलि व्रत कथा—मेधावी** । पत्रसं० ३१ । आ० १०½×४½ इंच । **भाषा**—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल सं० १५४१ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४५५०. **पूजा कथा (मैंडक की) भ० जिनदास** । पत्रसं० ६ । आ० ११×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०५-१०६ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४५५१. **प्रत्येक बुद्ध चतुष्टय कथा**— × । पत्र सं० १५ । आ० १०×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । **ले०काल सं० १७०३** भादवा । पूर्ण । वेष्टन सं० १९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४५५२. **प्रद्युम्न कथा प्रबन्ध—भ० देवेन्द्रकीर्ति** । पत्र सं० ५५ । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल सं० १७६२ चैत सुदी ३ । **ले०काल सं० १८१२** । पूर्ण । वेष्टन सं० २५८/१०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर ।

गुटका साइज है । मल्लारगढ़ में आनंद ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी ।

४५५३. प्रियमेलक चौपई— × । पत्रसं० ८० । आ० ५×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र० काल × । **ले०काल** × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३७४ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—गुटका है । दान कथा में प्रियमेलक का नाम आया है एक दान कथा और भी दी हुई है ।

४५५४. प्रियमेलक चौपई—समयसुन्दर । पत्र सं० ६ । आ० १०$\frac{१}{२}$×४$\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा-राजस्थानी (पद्य) । विषय-कथा । र० कालसं० १६७२ । **ले०काल सं० १६८०** । पूर्ण । वेष्टन सं० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर तेरहपंथी दीसा ।

मंगलाचरण—

प्रणमूं सद्गुरु पाय, स्मरु सरसती सामिनी ।
दान धरम दी माय, कहिसि कथा कौतक भणी ।
धरमा मांहि प्रधाना, देतां रूडा दीसियइं ।
दीधउ वरसी दान, अरिहंत दीक्षा अवसरइं ।।

सोरठिया दोहा—

उत्तम पात्र तउ एह, साधन इंदी जउ सूझ तउ ।
लहियइ लाछि अछेह, अटलिक दान जउ आपियइ ।।
अति मीठा आहार, सरवरा देज्यो साधना इं ।
सुख लहिस्यउ श्रीकार, फल बीजा सरिषा फलइं ।।४।।
प्रथिवी मांहि प्रसिद्ध, सुणिपइ दान कथा सदा ।
प्रियमेलक अप्रसिद्ध, सरस घणुं सम्बन्ध छइं ।।
सुणउ मिलइं जउ सेवए सुणुता जेउ धस्यइं ।
उमाण सहि अगलिअ के मुझ वचनि को रस नहीं ।।

× × × × ×

राग वमराडी ढालछठी जलालीयानी—

तिण अवसरि तर सीथ दूरि, रूपवंती करइ अरदास ।
जीवन मोराजी कुंली री काया तावड आकर उरि ।
पापिणी लागी मुनइं प्यास ।।१।।
पाणीरि पायउ हुं तरसी थई खिण एक मंइ नख माय जीण ।
कंठ सूकइ काया तपइरि जीभइं बोल्यउ न जाय ।।

× × × × ×

दूहा-

कथा थाट मूंकी किहर कांतरहितकुमार ।
नगर कुमर ते निरखतां निरखी त्रिए द्वे नारि ।।
के इक दिन रहता थका विस्तरी सगलइ बाद ।
कुमरी किधा त्रिण तपस्या करइ परमारथ न प्रीछना ।।
बोल एक बोलइ नहीं दिव्य रूप वृष देह ।
अन्न पान को आणि थइं नउते लापइ तेह ।।

राजामती आवी रली साचउ एह नउ सत्त ।
जिम सिम बोली जेह जइं चिट पट लागी चित्त ॥

× × × × ×

अन्तिम प्रशस्ति—

संवत सोल बहुत्तरि मेडता नगर मझार ।
प्रियमेलक तीरथ चउपइरी कीधी दान अधिकार ॥
कवर उमावक कीलकीरि जेरालभेरा जाण ।
चतुर जोडावी जिण ए चउपई मूल आग्रह मुलताण ॥
इण चौउपई एह विशेष छइरि सगवट सगली ठाम ।
बीजी चउपई बहु देख जोरि नहि सगटलु ना ॥
श्री खरतर गछ रोहता श्री जिणचन्द्र सूरीस ।
शिष्य सकलचन्द्र सुभ दिसारि समयसुन्दर तसु सीस ॥
जयवंता गुरू राजिया श्री जिनसिंह सूरि राय ।
समयसुन्दर तसु संनिधि करी इम भणइं उवझाय ॥
भणतां गुणतां भावसुं सामलतां सु विनोद ।
समयसुन्दर कहइ संपजर पुण्य अधिक परमोद ॥

सर्वगाथा—२०३० । इति श्री दानाधिकार प्रियमेलक तीर्थ प्रबंध सिंहलसुत चउपई समाप्तं ॥ संवत् १६८० वर्षे मार्गसिर सुदी १४ दिन लिखतं वरधमान लिखतं । (दाई भमरा का पाना) ।

४५५५. पुण्यसार चौपई—पुण्यकीर्त्ति । पत्रसं० ७ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल सं० १६६० मंगसिर सुदी १० । ले० काल सं० १७०० । पूर्ण । वेष्टन सं० २८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—यह सांगानेर में रचा गया एवं जाठरण ग्राम में लिखा गया था ।

४५५६. बुधाष्टमी कथा— × । पत्रसं० ३ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल सं० १८४० भादवा बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—जैनेतर साहित्य है ।

४५५७. बैतालपंचविंशतिका— शिववास । पत्र सं० ३६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४३५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४५५८. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ४२ । आ० १०×४इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—२५ कहानियों का संग्रह है ।

४५५९. बैतालपच्चीसी— × । पत्रसं० २० । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६८६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

४५६०. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ७ । आ० ११×४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४५६१. **बंकचोर कथा—(धनदत्त सेठ की कथा) नथमल** । पत्रसं० ३३ । भाषा—हिन्दी । विषय कथा । र०काल सं० १७२५ आषाढ सुदी ३ । ले०काल सं० १९१९ । **पूर्ण** । वेष्टनसं० ९१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

४५६२. **भक्तामरस्तोत्र कथा**— × । पत्र सं० १२ । **भाषा**-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२/५०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संगहनाम मंदिर उदयपुर ।

४५६३. **भक्तामरस्तोत्र कथा—विनोदीलाल** । पत्र सं० २२७ । आ० ९½ × ६½ इंच । भाषा—हिन्दी (ग. प.) । विषय—कथा । र० काल सं० १७४७ सावण सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर नैणवा ।

४५६४. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० २०६ । आ० १२ × ५½ इंच । ले०काल सं० १८६० ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—बसवा में प्रतिलिपि हुई ।

४५६५. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० १९३ । आ० १०½ × ६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्री महावीर बूंदी ।

४५६६. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० २०४ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

४५६७. **प्रतिसं० ५** । पत्र सं० १०८ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक) ।

४५६८. **प्रतिसं० ६** । पत्र सं० फुटकर पत्र । आ० १०½×६ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२ । **प्राप्ति स्थान** — अग्रवाल पंचायती दि० जैन मन्दिर अलवर ।

४५६९. **प्रतिसं० ७** । पत्र सं० १८७ । आ० १२ × ७ इञ्च । लेखन काल सं० १९१४ सावन बुदी १२ । पूर्ण । वे०सं० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल पंचायती दि० जैन मन्दिर अलवर ।

४५७०. **प्रतिसं० ८** । पत्र सं० ३१८ । ले० काल सं० १८६९ चैत सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १४४ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—लालजीमल के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी ।

४५७१. **प्रतिसं० ९** । पत्रसं० १५२ । आ० १३×६ इञ्च । ले०काल सं० १८३९ चैत बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष –श्लोक सं० २७६० । प्रधान आनन्दराव ने प्रतिलिपि की थी ।

४५७२. **प्रतिसं० १०** । पत्रसं० ४१ । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—पंचायती दि० जैन मंदिर कामा ।

४५७३. **प्रतिसं० ११** । पत्र सं० १३८ । आ० ११×५½ इंच । ले०काल सं० १९०५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी सीकर ।

विशेष—सं० खेमचन्द ने प्रतिलिपि की थी। सं० १६२६ में अनन्त चतुर्दशी के व्रतोद्यापन में साहजी सदाराम जी के पौत्र तथा चि० अमीचंद के पुत्र जोखीराम ने ग्रंथ मन्दिर फतेहपुर में विराजमान किया।

४५७४. **प्रतिसं० १२**। पत्रसं० १७८। आ० १०×६ इञ्च। **ले०काल** सं० १८५४ कार्तिक सुदी ११। पूर्ण। वेष्टनसं० २५/२८। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सौगाणी मंदिर करौली।

विशेष—२ प्रतियों का मिश्रण है।

४५७५. **प्रतिसं० १३**। पत्र सं० १८२। आ० ६$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इंच। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २८-२१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

४५७६. **प्रति सं० १४**। पत्रसं० सं० २१३। आ० १२× ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल सं० १८०२। पूर्ण। वेष्टनसं० २४ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

४५७७. **प्रति सं० १५**। पत्रसं० १६६। आ० १३$\frac{1}{2}$×८$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

४५७८. **भक्तामर स्तोत्र कथा—नथमल**। पत्र सं० ६१। आ० ६×५$\frac{3}{4}$ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय कथा। र० काल सं० १८२६ जेठ सुदी १०। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

विशेष—करौली में लिखी गई थी।

४५७९. **प्रति सं० २**। पत्रसं० ५२। आ० ११ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल सं० १८२६। पूर्ण। वेष्टन सं० १२१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर।

विशेष—कल्याणपुर में बाबा रतनलाल भौंसा ने प्रतिलिपि की थी।

४५८०. **प्रति सं० ३**। पत्रसं० १६८। ले०काल सं० १६२१। पूर्ण। वेष्टन सं० १२२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर।

४५८१. **प्रति सं० ४**। पत्र सं० ४७। आ० १०$\frac{1}{2}$×६ इञ्च। ले०काल सं० १८३० फागुन सुदी ७। पूर्ण। वेष्टनसं० १२३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

विशेष—बंगालीमल छाबड़ा ने करौली में प्रतिलिपि करवाई थी।

४५८२. **भद्रबाहुकथा—हरिकिशन**। पत्र सं० २६। आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-कथा। र०काल × । ले० काल सं० १६७५ सावण सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन सं० १४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्री महावीर बूंदी।

४५८३. **भरटक कथा**— × । पत्रसं० १३। आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत गद्य। विषय-कथा। र०काल × । ले०काल × पूर्ण। वेष्टन सं० ६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—२७ कथाएं हैं।

४५८४. **भविसयत्तकहा—धनपाल**। पत्र सं० २-८८। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—अपभ्रंश। विषय—कथा। र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वे० सं० ६५७। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४५८५. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० १३८ । आ० १० × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी ।

४५८६. **भविष्यदत्त कथा—ब्र० रायमल्ल** । पत्रसं० ८० । आ० ९$\frac{1}{2}$ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल सं० १६३३ कार्तिक सुदी १४ । ले०काल सं० १८२६ माघ बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० २५ । **प्राप्ति स्थान**—पंचायती दि० जैन मन्दिर अलवर ।

४५८७. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ४६ । आ० १०×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १८९४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटयों का मैणवा ।

४५८८. **भविष्यदत्त कथा**— × । पत्र सं० ३१ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मंदिर अलवर ।

विशेष—३१ से आगे पत्र नहीं है ।

४५८९. **मधुमालती कथा**— × । पत्र सं० २८-१५८ । आ० ९ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी प० । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८३५ वैशाख बुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह ।

४५९०. **मनुष्य भवदुर्लभ कथा**— × । पत्रसं० २ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४५९१. **मलयसुन्दरी कथा—जयतिलकसूरि** । पत्र सं० २-५९ । आ० १२ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल सं० १५२० । वेष्टन सं० ७६५ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—ग्रंथ सं० ८३२ । संवत् १५२० वर्षे माघ वदि मंगले लिखितं वा. कमलचन्द्र प्रसादात् त. पाचाकेल मूड़ा ग्रामे श्री रस्तु । शुभमस्तु ।

४५९२. **मलयसुन्दरी कथा**— × । पत्रसं० ४० । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल सं० × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—४० से आगे पत्र नहीं है । प्रति प्राचीन है ।

४५९३. **महायक्षविद्याधर कथा—ब्र० जिनदास** । पत्र सं. १० । आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८ । **प्राप्ति स्थान**—खंडेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४५९४. **महावीरनिर्वाण कथा**— × । पत्रसं० ५ । आ० ७ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

४५९५. **माधवानल कामकंदला चौपई—कुशललाभ** । पत्र सं० २-१२ । आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-राजस्थानी । विषय-कथा । र०काल सं० १६१६ फागुण सुदी १४ । ले० काल सं० १७१४ । अपूर्ण । वेष्टन सं० २५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना ।

विशेष --नाई ग्राम मध्ये लिखतं ।

४५९६. **प्रतिसं०** २ । पत्र सं० ३१ । आ० ९×५½ इञ्च । ले० काल सं० १८०३ चैत्र बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

४५९७. **माधवानल चउपई**—× । पत्र सं० ८ । आ० ९½×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७०६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन भन्डिार अजमेर ।

विशेष—पं० जगजीवन कुशल ने प्रतिलिपि की थी ।

४५९८. **मुक्तावली व्रत कथा—सुरेन्द्रकीर्त्ति** । पत्र सं० ५ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । पूर्ण । वेष्टन सं० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

विशेष --सुरेन्द्रकीर्त्ति सकलकीर्त्ति के शिष्य थे ।

४५९९. **मेघकुमार का चोढाल्या—गणेस** । पत्र सं० २ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

४६००. **मौन एकादशी व्रत कथा—ब्रह्म ज्ञानसागर** । पत्र सं० १३६-१६६/३१ पत्र । आ० ११×५ इंच । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय–कथा । र०काल × । ले० काल सं० १८६६ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दीसा ।

विशेष—दौलतरामजी तेरापंथी की बहू ने लिखा था ।

४६०१. **मृगचर्मकथा**—× । पत्र सं० ४ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६३/२२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोंडारायसिंह (टोंक)

विशेष—गिरधरलाल मिश्र ने देवडा में प्रतिलिपि की थी ।

४६०२. **मृगापुत्र सज्झाय**—× । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४६०३. **यशोधरकथा—विजयकीर्ति** । पत्र संख्या १७ । आ० ९½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले०काल सं० १५३९ आषाढ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४६०४. **रतनाहमीररी बात**— × । पत्र सं० २४–५१ । आ० × ४ इञ्च । भाषा–राजस्थानी गद्य । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५० । **प्राप्ति स्थान**-भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—बडे ग्रन्थ का एक भाग है ।

४६०५. **रत्नपाल चउपई—भावतिलक** । पत्र सं० १२ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—कथा । र० काल सं० १६४१ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २५३ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष—प्रति जीर्ण है।

४६०६. रत्नत्रयव्रतकथा—देवेन्द्रकीर्ति। पत्रसं० ६। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—कथा। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १५६६। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

४६०७. रत्नत्रयकथा—मुनि प्रभाचन्द्र। पत्रसं० ८। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ९६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर।

४६०८. रत्नत्रयकथा—× । पत्र सं० ४। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। र०काल × । ले० काल सं० १८८० मंगसिर बुदी ७। पूर्ण। वेष्टनसं० १०७। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४६०९. रत्नत्रयकथा—× । पत्र सं० ५। आ० ११×८ इंच। भाषा-संस्कृत। । विषय-कथा। र०काल × । ले० काल सं० १९३९ आसोज सुदी ११। पूर्ण। वेष्टनसं० १२१४। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

४६१०. रत्नत्रयकथा—× । पत्रसं० ३। आ० ९ × ५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १५२७। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४६११. रत्नत्रयकथा टब्बा टीका सहित। पत्रसं० २। आ० ११½×५½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय कथा। र०काल × । ले० काल सं० १८७१ ज्येष्ठ सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० ६०-२००। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर टोडारायसिंह (टोंक)

४६१२. रत्नत्रयकथा—× । पत्रसं० ६। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर मालपुरा (टोंक)

४६१३. रत्नत्रयविधानकथा—ब्र० श्रुतसागर। पत्र सं० ६। आ० ११½×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर।

४६१४. रत्नत्रयविधानकथा-पद्मनंदि। पत्रसं० ७। आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र०काल × ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३२७।१३४ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

४६१५. रत्नशेखर रत्नावतीकथा। पत्र सं० १९। आ० ११ × ४½ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—कथा। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २१२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्द स्वामी बूंदी।

४६१६. रयणागरकथा—× । पत्र सं० २४। आ० १० × ४ इञ्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय-कथा। र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १०५।९५ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

४६१७. **रविवारकथा**—रइधू। पत्रसं० ४। भाषा-अपभ्रंश। विषय—कथा। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

४६१८. **रविवार प्रबन्ध**—**ब्र० जिनदास**। पत्रसं० ५। आ० ११×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय—कथा। र०काल × । ले०काल सं० १७३४ । पूर्ण। वेष्टन सं० ६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

प्रशस्ति—निम्न प्रकार है—

संवत १७३४ वर्षे आसोज सुदी १० शुक्रे श्री राजनगरे श्री मूलसंघे श्री आदिनाथ चैत्यालये भट्टारक श्री क्षेमकीर्तिस्तदाम्नाये मुनि श्री धर्म भूषण तत् शिष्य ब्रह्म बाघजी लिखितं ब्रह्मरायमाण पठनार्थं।

४६१९. **रविव्रतकथा**—**सुरेन्द्रकीर्ति**। पत्रसं० १५। आ० ६×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-कथा। र०काल सं० १७४४। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० २५०। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

आदिभाग—

प्रथम सुमरि जिनवर चौबीस चौदहसे त्रेपन मुनि ईस।
सुमरो सारद भक्ति अनंत, गुरु देवेन्द्रकीर्ति महन्त॥
मेरो मन इक उपजो भाव, रविव्रत कथा करन को चाव।
मैं लुक हीन जु अक्षर करौं, तुम गन पर कवि नीकर्क धरौं॥

अन्तिम भाग—

सुरेन्द्रकीर्ति अब कही रवि गुन रूप अनूप सब।
पंडित सुतु कवि भूधवर लीजै, चूक मुधारि अब
गढ गोपाचल गाम नौ, सुभथान बखानौ।
संवत विक्रम भूप गई, भलौ सत्रहु सै जानौ॥
तौ ऊपर चवालीस जेठ सुदी दसमी जानो
वार जो मंगलवार हस्त नक्षत्र जु परियो तब।
हरि विबुध कथा सुरेन्दर रचना सुव्रत पुनजु अनन्त॥

४६२०. **रविव्रतकथा-विद्यासागर**। पत्रसं० ४। आ० ६×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय—कथा। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३८-१६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

प्रारम्भ—

पंचम गुरु पद नमी, मन धरी जिनवाणी।
रविव्रत महिमा कहु असार शुभ आणंद आणी॥
पूरब दिसि सोहे सुदेश, काश्मीर मनोहार।
वाणारसी तेह मध्य सार नगर उदार॥१॥
न्यायवंत नरपति तिहा सप्तांगे सोहे।
पुरपाल नाम सोहामणो गुणी जनमन मोहे॥

तेह नयरे धन करणे करी धनवंत उदार ।
मतिसागर नामे सु श्रेष्ठी शुभमति भंडार ।।२।।

अन्तिम—

विधि जे व्रत पालि करि मन भावज आणइ ।
समकित फले सुरग गति गया कहे जिन इम वाणी ।।
मन वच काया शुद्धे करी व्रत विध जे पालई ।
ते नरनारी सुख लहे मणि भाणक पावई ।।३५।।
श्री मूलसंघे मंडण हुवो मछ नायक सार ।
अभयचंद्र सूरि वर जयो बहु भव्याधार ।।
तेह पद प्रणमीने कहे अति सुललित वाणी ।
विद्यासागर वेद मुणी मनि आणंद आणी ।।३६।।
इति रक्षिव्रत कथा संपूर्ण

४६२१. **रक्षाबंधनकथा**—ब्र० ज्ञानसागर। पत्रसं० ३ । आ० १०½×५½ । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय- कथा । र०काल × । ले०काल सं० १८७६ पौष सुदी ८ । वेष्टन सं० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि०जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—पं० देवकरण ने मौजमाबाद में प्रतिलिपि की थी ।

४६२२. **रक्षाबंधनकथा**—**विनोदीलाल** । पत्र सं० २६ । **भाषा**—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल सं० १९१७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

४६२३. **रक्षाबंधनकथा**—× । पत्र सं० ७ । आ० १३½×८ इञ्च । **भाषा**-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

४६२४. **रक्षाबंधनकथा**—× । पत्र सं० ३ । आ० ९½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल सं० १८७७ आषाढ़ बुदी १० पूर्ण । वेष्टन सं० ११६२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

४६२५. **रक्षाबंधनकथा**—× । पत्रसं० ५ । आ० ११½ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय— कथा । र०काल × । ले०काल सं० १८८७ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ११५७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६२६. **रक्षाविधान कथा**—**सकलकीर्ति** । पत्र सं० ४ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय--कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अजमेर ।

४६२७. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ४ । आ० १२×५ इंच । ले०काल सं० १८१७ माघ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१३ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वमी बूंदी ।

४६२८. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० ६ । आ० ८×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

४६२९. **रात्रिविधानकथा**—× । पत्रसं० २ । भाषा—संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १०३।५० **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का, डूंगरपुर ।

४६३०. **रक्षाख्यान--रत्ननंदि** । पत्रसं० ५ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल सं० १७०४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १९५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४६३१. **राजा विक्रम की कथा**— × । पत्र सं० ३९ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी प० । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १००-९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—आगे के पत्र नहीं हैं ।

४६३२. **राजा हरिचंद की कथा**— × । पत्रसं० २३ । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

४६३३. **रात्रिभोजन कथा—ब्रह्म नेमिदत्त** । पत्र सं० १९ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल सं० १६७७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६७७ वर्षे कातिक सुदी ११ गुरौ श्री मूलसघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्री शुभचन्द्र तत्पट्टे भ० सुमतिकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री गुणकीर्तिदेवा तत्पट्टे वादिभूषण तत्पट्टे भ० श्री रामकीर्तिदेवास्तदाम्नाये ब्रह्म श्री मेघराज तत् शिष्य शिवजी पठनार्थं ।

४६३४. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ९ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल सं० १७६३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३५१ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

४६३५. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० १२ । आ० १०×४ इञ्च । ले०काल सं० १८२६ फागुण बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४३ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष—भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति ने पं० जिनदास को प्रति दी थी ।

४६३६. **रात्रिभोजन कथा—भ० सिंहनंदि** । पत्रसं० २१ । आ० १२½ × ६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल— × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

विशेष—पत्र १६ से भक्तामर एवं स्वयंभू स्तोत्र हैं ।

४६३७. **रात्रिभोजन चौपई—सुमतिहंस** । पत्र सं० ११ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र०काल सं० १७२३ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

अन्तिम—

रात्रि भोजन दोष दिखाया, दीनानाथ बताया जी ।।१।।
अचल नाम तिहाँ रहनाया, दिन दिन तेज सवाया जी ।।२।।
धन २ जे नर ए व्रत पालइ, भोजन त्यागी टालइ जी ।
नव २ नूर सदा तिया भालइ विलसइ लील विसालइ जी ।
सतरइ सइ तेवीस वरसइ हे जइ हीयडउ हरसइजी ।
मंगसिर वदि छटि वर बुध दिवसइ चउपई कीधी सुवसइ जी ।।३।।
श्री खरतर गछ गगन दिणंदा श्री जिण हरष सुरिंदा ।
आचारिज जिन लबधि मुणींदा, उदया पूनिम चंदाजी ।
श्री जिनसुख सुरेंद सुगीसइ, सुमति हंस सुजगीसइ जी ।
पद उवझाय वरइ निसि दीसै भासै विमला वोसइजी ।
विमलनाथ जिनेस प्रसादइ जाय तारणि सुभसादइ जी ।
रिद्धि वृद्धि सदा आणदइ संघ सकल चिर नंदइ जी ।
अमररोन जयसेन नरिंदा थापा परमानंदा जी ।
जयसेना राणी सुखकंदा जस साखी रवि चंदा जी ।
साधु-शिरोमणि गुण गाया सगला रद्द मनि माया जी ।
जीभ जनम सफली की काया मल्हि सुगुण मल्हाया जी ।।४।।

आदिभाग—

सुबुधि लबधि नव निधि समृद्धि सुखसंपद श्रीकर ।
पासनाह पयपणवतां वमु जस हुवइ विसतार ।।
श्री गुरु सांनिधि लही रमणी भोजन पाय ।
कहिस्युं शास्त्र विचार सुं भगवंत मुख उपाय ।।

४६३८. रात्रिभोजनत्याग कथा—अ तसागर । पत्रसं० २२ । आ०१०×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल सं० १७५८ ज्येष्ठ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४६२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६३९. रामयशरसायन–केशराज । पद्यसं० ६४ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा-हिन्दी प० । विषय-कथा । र०काल सं० १६८० आसोज सुदी १३ । ले० काल सं० १७३० । पूर्ण । वेष्टनसं० ८५–६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पंथी दौसा ।

विशेष—प्रारम्भ का पत्र फटा हुआ है अतः ११ वें पद्य से प्रारम्भ किया जाता है ।

जंबूद्वीपइं क्षेत्र भरत भलउ, लकानगरी थानिक निरमलउ ।
निरमलउ थानिक पुरी लंका द्वीप तउ राक्षस जुउ ।
अजित जिनवर तणइ बारइ भूप धन वाहन हुइ ।
महारक्ष सुत पाटि थापी अजित स्वामी हाथिए ।।
वरण पामी मोक्ष पहुँतउ घणा मुनिवर साथिए ।।११।।

राक्षस राजा राजकरी वणउ अवसर जाणी ।
तप संयम तणउ अवसर जाणी ।
पुण्य प्राणी देव राक्षस सुत भणी ।
राज आणी ग्रही संयम लही मोक्ष सोहामणी ।।
असंख्याता हुआ भूपति समइ दशरथ जिन तणा ।
कीर्त्ति धवल नरेंद्रनी रूउ राम आडंबर घणइ ।।१८।।

अन्तिम—

संवत् सोलै असीइरे, आछउ आसो मास तिथि तेरसि ।
अंतरपुर मांहि आणी अति उल्हास, सीता आवै रे धरि राग ।।ढाल।।
विद्रुय गच्छि गच्छ नायक गिरुउ गोतम नउ अवतार ।
जिनयशत विजय ऋषि राजा कीधउ धर्म उद्धार ।।
धर्म मुनि धर्म नउ धोरी धर्म तणो भंडार ।
खिमा दया गुण केरउ सागर सागर क्षेम उदार ।।९१।।
श्री गुरु गच्छ मुनीश्वर मोटी वेह नउ वंश ।
चउरासी गच्छ में जाणी तउ प्रगट पणइं परसंस ।।९२।।
तस पटोधर गुणाकरि गाजै गुण सागर जयवंत ।
कइसूतन कलप तरु कलि में सूरि शिरोमणि संत ।।९३।।
ए गुरुदेव तणौ सुपसाइं ग्रंथ चढिउ सुप्रमाण ।
ग्रंथ गुणे गिरि मेरु सरीखउ नवरस मांहि बखाण ।।९४।।
एम वासवि ढाल सुभति वचन रचन सुविसाल ।
रामयशो रे रसायण नामा ग्रंथ रचिउ सुरसाल ।।
कवि जन तउ कर जोडि करे रे पंडित सुं अरदास ।
पांचां आगे तउ बंचि वउ जण हू अहणा अभ्यास ।
अक्षर भंगे ढाल जु भंगे रागज भंगइ जोइ ।
वाचतां रे चमन ने भंगे रस नहीं उपजइ कोइ ।।९७।।
अक्षर जांणी ढालज जांणी कावज जांणी एह ।
पांचा आगे वाचतां थो ऊगजि सिइ अति नेह ।।९८।।
जब लग सायर नउ जल मांहे जब लग सूरिज चंद ।
केशराज कहैं तब लगि ग्रंथ करउ आनंद ।।९९।।

कानडा—

रामलक्ष्मण अने रावण सती सीता नी चरी ।
कही भाषा चरित्र साखी अंजन रंजन करी खरी ।।
संघ रंग विनोद वक्ता अने श्रोता सुख भणी ।
केशराज मुनिंद जंपै सदा हर्ष वधामणी ।।२००।।

४६४०. रोमसोला प्रबंध--समयसुन्दर। पत्र सं० १-७६। आ० १०×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य)। विषय-कथा। र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

४६४१. **रूपसेन चौपई**— × । पत्र सं० २२ । आ० १० × १$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—२२ से आगे पत्र नहीं लिखे हुये हैं।

४६४२. **रूपसेन राजा कथा—जिनसूरि**। पत्रसं० ४३ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

४६४३. **रोटतीज कथा**— × । पत्र सं० १ । आ० ११ × ५$\frac{1}{4}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वे० सं० १२५६। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४६४४. **रोटतीज कथा**— × । पत्रसं० २ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ६६८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

४६४५. **रोटतीजकथा**— × । पत्र सं० ३। आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

४६४६. **रोटतीज कथा**— × । पत्र सं० ३। आ० ६$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ५६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सौभागणी मन्दिर करौली।

४६४७. **रोटतीज व्रत कथा—चुन्नीराय बैद**। पत्र सं० १२। आ० ७$\frac{1}{2}$×३$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र०काल सं० १६०६ भादवा सुदी ३ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

विशेष—
संवत सत गुनईससै ता ऊपर नव जान।
भादों सुद त्रितिया दिना बुद्धवार उर आन ॥६३॥
एक रात दिन एक मैं नगर करौली मांहि।
चुन्नी बैदराय ही करी कथा सुखदाय ॥६४॥

४६४८. **रोटतीजकथा—गुणनन्दि**। पत्रसं० २। आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

४६४९. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ६। आ० ७ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १६५३। पूर्ण। वेष्टन सं० ६१। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

४६५०. **रोहिणी कथा**— × पत्रसं० १६ । आ० ९½×४¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय-कथा। र० काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १३७०। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४६५१. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० १५ । ले०काल सं० १८७३ पौष बुदी १३। पूर्ण। **वेष्टनसं०** १२७१। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४६५२. **रोहिणीव्रत कथा**—**भानुकीर्ति** । पत्र सं० ४ । आ० १०¾×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

४६५३. **रोहिणी व्रत कथा**— × । पत्रसं० ११। आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय-कथा। र० काल × । ले०काल सं० १८८४ वैशाख सुदी १० । पूर्ण। वेष्टन सं० ११६४। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४६५४. **रोहिणी व्रत प्रबंध**—**ब्र० वस्तुपाल** । पत्रसं० १४। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र०काल सं० १६५४। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ९५/१३१। **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मंदिर उदयपुर।

विशेष—प्रति प्राचीन है एवं पत्र चिपके हुए हैं। आदि अंत भाग निम्न प्रकार हैं।

प्रारंभ वस्तु छंद —

वासु पूज्य जिन नमूं ते सार।
तीर्थंकर जे बारमो मन वंछित बहु दान दातार सार ए।
अरुण बरण सोहामणो सेव्यां दिपि सुख तार ऐ।
बाल ब्रह्मचारी रूवडो सत्तरि काय उन्नत सहुजल।
वसु पूज्य राम नांदनु निपुण विजयादेवी मात कुक्षि निरमल।
जस पसाइ जाणीमि कठिन कलाद्वैगुविचार।
विघन सब दूरि टलि मंगल वति सार ॥१॥

रागमल्हार—

तह पद पंकज प्रणमीनि रास करूं रसाल।
रोहिणी व्रत तणो मिलो सुणाज्यो बाल गोपाल ॥१॥
सारदा स्वामिनि वली सुब सहु गुरू लागूं पाय।
विघन सवि दूरि टलि जिम निर्मल मति थायि ॥२॥
सजन विजन सहु सांभलो करूं वीनती कर जोडि।
सजन सभांति निर्मला दुर्जन पाडि खोडि ॥३॥

अंतिम-वूहा

पुत्री आर्यिका जेह तारे स्त्री लिंग करीय विणास।
सरगि गया सोहामणा पाम्पा देव पद वास ॥१॥
पुत्र आठे संयम लीयोरे वासु पूज्य हसू सार।
स्वर्ग मोक्ष दो पामीया तप सासते लार ॥१॥

रोहिणी कथा व्रत सांभलीरे श्रेणिक राजा जाणि ।
नमोस्तु करी निज थानकि गयो भोगवि सुख निरवाण ॥३॥
नर नारी जे व्रत करि भावना भावि चंग ।
अशोक रोहिणि वधि ते लहि उपज्यु पुण्य प्रसंग ॥४॥
साबली नयर सोहामणा राय देश मझारि ।
रास करीति रूबडो कथा तणि अनुसारि ॥५॥

वस्तु—

मूलसंघ मंडण २ सरसती गच्छ सणगार ।
बलात्कार गणे आगला शुभचन्द्र सार यतीश्वर ।
तस्य पट्टोधर जाणीवि सुमतिकीरति सार सुखकर ।
तस्य पद पंकज मधुकर गुणकीरति सुविसाल ।
तस्य चरणे नमी सदा बोलि बह्म वस्तुपाल ।

दोहा—

विक्रमराय पछि सुणो संवच्छर सोलसार ।
चोवनो ते जाणीइ आषाढ मास सुखकार ॥१॥
श्वेत पक्ष सोहामणो रे तृतीयानि सोमनार ।
श्री नेमिजिन भुवन भलु रास पुरूह चोतार ॥२॥
पढि गुणि जे सांभलि मनि आणी बहु भाव ।
ब्रह्मवस्तुपाल सूधु कहि तेहनि भव जल नाव ॥३॥

इति रोहिणी व्रत प्रबंध समाप्त ।

४६५५. लब्धिविधान कथा—पं० अभ्रदेव । पत्रसं० ११ । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल सं० १६७७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०७/१२१ । **प्राप्ति स्थान**—सम्भवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है --

संवत् १६७७ वर्षे आसोज सुदी १३ शुक्रे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री रामकीर्तिदेवास्तदाम्नाये ब्र० श्री मेघराज तत् शिष्य ब्र० सवजी पठनार्थं । श्री हल्ला प्राकारे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये कोठारी जनी भार्या जमणदि तयो सुत कोठारी भीमजी इयं लब्धि विधान कथा लिखितं ब्र० श्री मेघराज तत् शिष्याय दत्तं ।

४६५६. लब्धिविधानव्रत कथा—किशनसिंह । पत्रसं० १७ । आ० १० × ५½ इञ्च । **भाषा**-हिन्दी प० । विषय-कथा । र०काल सं० १७८२ फागुण सुदी ८ । ले०काल सं० १९१० मंगसिर वदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—फतेहपुर में लिखा गया था ।

४६५७. प्रति सं० २ । पत्रसं० २६ । आ० ९×४½ इञ्च । पूर्ण । वेष्टनसं० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायत मंदिर करौली ।

४६५८. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० २२ । आ० ६½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

४६५९. **लक्ष्मी सुकृत कथा**— × । पत्रसं० ७ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—कनक विजयगणि ने प्रतिलिपि की थी ।

४६६०. **वर्द्धमान स्वामी कथा : मुनि श्री पद्मनन्दि** । पत्र सं० २१ । आ० ११½ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल सं० १५३७ फाल्गुन सुदी ५ । वेष्टन सं० १९० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४६६१. **व्रतकथाकोश—श्रुतसागर** । पत्र सं० ८७ । आ० १२½ × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी काम० ।

विशेष—२४ व्रत कथाओं का संग्रह है । अंतिम पल्यव्रतविधान कथा **अपूर्ण** है ।

४६६२. **प्रति सं० २** । पत्रसं० १४४ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

४६६३. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० ७२ । आ० १२ × ५½ । ले०काल × । वेष्टन सं० १७० । **अपूर्ण** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मं० लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रथम ७ पत्र नवीन लिखे हुए हैं तथा ७२ से आगे पत्र नहीं है ।

४६६४. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० १२८ । ले०काल १७६८ चैत वदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर डीग ।

४६६५. **व्रतकथाकोश—देवेन्द्रकीर्ति** । पत्र सं० ७९ । आ० १२½ × ५½ इञ्च । **भाषा**-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०७४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६६६.—**प्रति सं० २** । पत्र सं० १३३ । आ० १०½ × ६ इञ्च । ले० काल सं० १८८६ मंगसिर बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६६७. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० २-६२ । आ० १२½ × ४½ इञ्च । **ले०काल** सं० १८७३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२९-५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

४६६८, **व्रतकथाकोश—ब्र० नेमिदत्त** । पत्र सं० १६८ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८५३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६६९. **व्रतकथाकोश—मल्लिभूषण** । पत्र सं० १६९ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १६०९ चैत बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

४६७०. **व्रतकथाकोश—मु० रामचन्द्र** । पत्र सं० ११० । आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय कथा कोश । र० काल × । ले० काल सं० १७८३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, चौगान बूंदी ।

४६७१. **व्रतकथाकोश—सकलकीर्ति** । पत्र सं० ४६ । आ० १२×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १७९६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०१ । **प्राप्ति स्थान** | दि० जैन खंडेलवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—लिखे प्रथीराज पं० खेतसी साह दत्तं । सं० १७९६ आषाढ़ बुदि ३ बुधे उदैपुर राणा जगतसिंह राज्ये ।

४६७२. **व्रतकथाकोश—पं० अभ्रदेव** । पत्र सं० १०४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १६३७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६४-१३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—दीमक ने खा रखा है । प्रशस्ति-संवत् १६३७ वर्षे मंगसिर सुदी ७ रवौ । देव महावजी लिखतं मोठ वेदी पाटणी । उ० श्री जयनन्दी पठनार्थं ।

४६७३. **व्रतकथाकोश**— × । पत्र सं० ८० । आ० ११$\frac{3}{4}$×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८२६ भादवा बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११३८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—कथाओं का संग्रह है ।

४६७४. **व्रतकथाकोश**— × । पत्र सं० २१२ । आ० ९$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८३२ आषाढ़ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—माल्हूराम जी गूजर गौड़ ने अजैनगर में प्रतिलिपि की थी ।

४६७५. **व्रतकथाकोष**— × । पत्र सं० १०६ । आ० १८ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३० । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—विभिन्न कथाओं का संग्रह है ।

४६७६. **व्रतकथाकोष**— × । पत्र सं० ५५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०-२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—निम्न व्रत कथाओं का संग्रह है—

१.	अष्टाह्निका व्रत कथा	सोमकीर्ति ।
२.	अनंत व्रत कथा	ललितकीर्ति ।
३.	रत्नत्रय कथा	"
४.	जिनरात्रि कथा	"

५.	आकाश पंचमी कथा	,,
६.	दशलक्षणी कथा	,,
७.	पुष्पांजलि व्रत कथा	,,
८.	द्वादश व्रत कथा	,,
९.	कर्म निर्जरा व्रत कथा	,,
१०.	षट्रस कथा	,,
११.	एकावली कथा	,,
१२.	द्विकावली व्रत कथा	विमलकीर्ति ।
१३.	मुक्तावलि कथा	सकलकीर्ति ।
१४.	लब्धि विधान कथा	पं० अभ्र ।
१५.	जेष्ठ जिनवर कथा	श्रुतसागर ।
१६.	होली पर्व कथा	,,
१७.	चन्दन षष्ठि कथा	,,
१८.	रक्षक विधान कथा	ललितकीर्ति ।

४६७७. व्रतकथाकोश— × । पत्र सं० १२५ । आ० ११ × ६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८५१ पौष बुदि १ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्दरगढ़ (छोटा) ।

४६७८. व्रतकथाकोश— × । पत्र सं० ६ । आ० १३½ × ७½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनंदन स्वामी बूंदी ।

विशेष—६ठां पत्र आधा लिखा हुआ है आगे के पत्र नहीं लिखे गये मालूम होते हैं ।

४६७९. व्रतकथाकोश— × । पत्र सं० २-८२ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

निम्न कथाओं का संग्रह है—

१.	नंदीश्वर कथा—	रत्नपाल	अपूर्ण
२.	षोडशकारण कथा	ललितकीर्ति	पूर्ण
३.	रत्नत्रय कथा	,,	,,
४.	रोहिणीव्रत कथा	,,	,,
५.	रक्षा विधान कथा	,,	,,
६.	धनकलश कथा	,,	,,
७.	जेष्ठ जिनवर कथा	,,	,,
८.	अक्षय दशमी कथा	,,	,,
९.	षट्रस कथा	शिवमुनि	,,
१०.	मुकुट सप्तमी कथा	सकलकीर्ति	,,

	११. श्रुत स्कंध कथा	×	"
	१२. पुरन्दर विधान कथा	×	"
	१३. आकाश पंचमी कथ	×	"
	१४. कांजिकाव्रत कथा	ललितकीर्ति	"
	१५. दशलाक्षणिक कथा	ललितकीर्ति	पूर्ण
	१६. दशपरमस्थान कथा	"	"
	१७. द्वादशीव्रत कथा	×	"
	१८. जिनरात्रि कथा	×	"
	१९. कर्मनिर्जरा कथा	×	"
	२०, चतुर्विंशति कथा	अभ्रकीर्ति	"
	२१. निर्दोष सप्तमी कथा	×	"

४६८०. **व्रतकथाकोश**—× । पत्रसं० १९२ । आ० ९×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर चौगान बूंदी ।

४६८१. **व्रतकथाकोश**—× । पत्र सं० ९८ । आ० ११ $\frac{1}{2}$ × ५ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल सं० १७३० माघ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पार्श्वनाथ चौगान मंदिर बूंदी ।

४६८२. **व्रतकथाकोश**—× । पत्र सं० फुटकर । भाषा-संस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल × × । अपूर्ण । वेष्टन ३७५।१३६ **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

४६८३. **व्रतकथाकोश**—**सुशालचन्द** । पत्रसं० २९ । आ० ९ $\frac{1}{2}$ × ४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल सं० १७८७ फागुण बुदी १३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १९६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—निम्न कथाओं का संग्रह है—

आकाश पंचमी, सुगंधदशमी, श्रावणद्वादशीव्रत, मुक्तावलीव्रत, नंदूकी सप्तमी, रत्नत्रय कथा, तथा चतुर्दशी कथा ।

४६८४. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १६१ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १९१४ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १४०-७२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

४६८५. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० १२२ । आ० ११ × ५ $\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल १८५५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक)

विशेष—टोडा में भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्ति की आम्नाय के दयाराम ने महावीर चैत्याल में प्रतिलिपि की थी ।

४६८६. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० ९८ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०९ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक)

विशेष—२३ कथाओं का संग्रह है ।

४६८७. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० १३२ । आ० १०× ६ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

४६८८. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० ७४ । आ० १२×७½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

४६८९. **प्रतिसं० ७** । पत्र सं० १३५ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७२/४८ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन तेरहपंथी मंदिर दौसा ।

विशेष—आगे के पत्र नहीं है ।

४६९०. **प्रति सं० ८** । पत्रसं० १४२ । आ० ११×४½ इञ्च । ले०काल १९०८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७२।३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेष—जयपुर में लालूलाल पाण्ड्या ने प्रतिलिपि की थी ।

४६९१. **प्रति सं० ९** । पत्र सं० ११९ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

४६९२. **प्रतिसं० १०** । पत्र संख्या ११० । आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र०काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—मूलकर्त्ता श्रुतसागर है ।

४६९३. **प्रति सं० ११** । पत्र सं० ९७ । आ० १२½×६ इंच । ले०काल सं० १६०० पौष सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० २९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—जहांनाबाद जैसिंघपुरा मध्ये लिखावतं साहजी ···

४६९४. **प्रति सं० १२** । पत्र सं० २९६ । आ० ९⅝×६½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

विशेष—इस कथा संग्रह में एक कथा पत्र ६४ से ७९ तक पल्यव्रत कथा धनराज कृत है इसका आदि अन्त निम्न प्रकार है—

आदिभाग—

प्रथम नमो गणपति नमो सरस्वती दासा ।
प्रणमौं सदगुर पाय प्रगट दीयौ ग्यांन विख्याता ।।
पंच परम गुरु सार प्रणवि कथा अनोपम ।
भाषी श्रुत अनुसार विविध आगम मैं अनूपम ।।
श्रुतसागर ब्रह्म जुं कहीं पल्य विधान कथानिका ।
भाषा प्रसिद्ध सो कहूं सुणौ भव्य अनुक्रमनिका ।।

दोहा—

द्वीप मांही प्रसिद्ध अति, जंबूदीपवर नाम ।
भरत क्षेत्र तामैं सरस, सोहे सुख की धाम ।।

अन्तिम भाग—

विक्रम नृप परमाणि, सतरासै चौरासी जीर्ण ।
मास आषाढ शुक्ला पक्षसार ।
दशमी दिन अरु श्री गुरुवार ॥२५८॥
आचारिज चिहुं दिसि परसिधि ।
चंदकीर्ति महीयल जससिद्धि ।
ता सिष हर्षकीर्ति भीवसी,
सोहे बुद्धि बृहस्पति सी ॥२६६॥
श्रुतसागर भाषित व्रत एह,
पल्य नाम महियल सुखदेह ।
साकी भाषा करी धनराज,
पंडित भीवराज हितकाज ॥२६०॥
रहो चिरंजय सकलसंघ गछपति जती समाज ।
वक्ता श्रोता विविधजन एम कहै धनराज ॥

इति श्री श्रुतसागरकृत व्रतकथाकोश भाषायां आचार्य श्री चन्दकीर्ति तत् शिष्य **भीवसी** कृत पल्य व्रतकथा संपूर्ण ।

४६६५. प्रतिसं० १३ । पत्र सं० ११५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—महात्मा राघेलाल कृष्णगढ़ वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

४६६६. प्रतिसं० १४ । पत्रसं० ४४ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ७ इञ्च । ले०काल सं० १९८२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष-मुख्यतः निम्न कथाओं का संग्रह है । मुकुटसप्तमी, अक्षयनिधि, निर्दोष सप्तमी, सुगन्ध दशमी, श्रावण द्वादशी, रत्नत्रय, अनंतचतुर्दशी, आदि व्रतों की कथाएँ है ।

४६६७. प्रतिसं० १५ । पत्रसं० १२३ । आ० ६ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १८७१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२८-१२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—जोधराज ने प्रतापगढ़ में लिखा था ।

४६६८. व्रतकथा कोश × । पत्र सं० ८-१८ । आ० १०×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २८५-१२० । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

४६६९. व्रतकथारासो— × । पत्र सं० १४ । आ० १३×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी **गद्य** । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८६८ जेष्ठ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० २१२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—आनन्दपुर नगर में लिखा गया था ।

४७००. **व्रतकथा संग्रह**— × । पत्र सं० ११ । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डावालों का डीग ।

४७०१. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ६–७३ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

४७०२. **व्रतकथा संग्रह**— × । पत्र सं० १४ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८८५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—मुख्य कथाएं निम्न हैं—

१. **शीलव्रत कथा—मलूक** । र० काल सं० १८०६ ।

कह **मलुको** सुणो संसार हूँ मूर्ख मत्त दीण अपार ।
आसोजा सुद आठें कही, थाकचल लाग सोसही ।।
जोडी गांव सात्तडा ठाम, सम्मत अठाराछैं क माह ।
कुडी दुख सो दूर करो, बाकी सुख **सुनो** रही घरो ।।

२. **सुगंध दशमीव्रत कथा—मकरंद** । र० काल १७५८ ।

सत्रैसे अठानवे श्रावण तेरस स्वेत ।
गुरुवासरपुरी करी सुणायो भविजन हेत ।
कथा कही लघु मतीनी पढ़ पद्मावती परवार ।।
पाठय गायं **मकरंद** ने पंडित लेहो संभाल ।।

३. **रोहिणीव्रत कथा—हेमराज** । र० काल १७४२ ।

रोहणी कथा संपूर्ण भई, ज्यो पूरब परगासी गई ।
हेमराज ई कही विचार, गुरु सकल शास्त्र अब धार ।।
ज्यो वृत फला ·····में लही, सोविधि ग्रंथ चौपई लही ।
नगर वीरपुर लोग प्रवीन, दया दान तिनको मन लीन ।।

४. **नंदीश्वर कथा—हेमराज** ।

यह व्रत नन्दीश्वर की कथा ।
हेमराज परगासी यथा ।।
सहर इटावो उत्तम थान ।
श्रावक करैं धर्म सुभ ध्यान ।।
सुने सदा जे जैन पुरान ।
पुरो लोक को राखैं मान ।।
तिहिठा सुनो धर्म सम्बन्ध ।
कीनी कथा चौपई बंध ।।

५. **पंचमी कथा—सुरेन्द्रभूषण** । र० काल सं० १७५७ ।

अब व्रत करे भाव सो कोई ।
ताको स्वर्ग मुक्ति पद होइ ।

सत्रहसे सत्तावन मानि ।
संवत पौष दसें वदि जानि ।।
हस्तिकांतपुर में पट्ट सची ।
श्री सुरेन्द्रभूषण तह रची ।।
यह व्रत विधि प्रतिपालै जोइ ।
सो नर नारि अमरपति होइ ।।

विशेष—**सीगोली** ग्राम में प्रतिलिपि हुई थी ।

४७०३. **व्रत कथा संग्रह**— × । पत्र सं० ६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—निम्नलिखित कथाएं हैं ।

१. दशलक्षव्रत कथा—हरिकृष्ण पांडे । र० काल सं० १७६५ । पत्र सं० २ तक ।

अन्तिम—

ऐसी कथाकोश में कही, तैसी ग्रंथ चौपई लही ।
सत्रह पर पैंसठ मानि, संवत भादव पंचमि जानि ।।
तापरि यम सरौं लोग विख्यात ।
दयाधर्म पालैं सुभगात ।।
सब श्रावग पूजाविधि करैं ।
पात्रदान दै सुकृत लुनैं ।।३५।।
मन मैं धर्म बुधि जब भई ।
हरिकृष्ण पांडे कथा अर ठई ।।
यो इह सुनैं भाव धरि कोय ।
सोतो निहचैं अमरापति होइ ।।३६।।
इति दशलक्षण व्रत की कथा सपूर्ण ।

२. अनंतव्रत कथा— × । × । पत्र सं० ३ से ४

३. रतनत्रय कथा—हरिकृष्ण पांडे । र० काल सं० १७६६ सावन सुदी ७ । पत्र सं० ४ से ७

४. आकाशपंचमी कथा— ,, । पत्र ७ से ६

५. पंचमीरास कथा— × । × । पत्र सं० ३

६. आकाशपचमी कथा— × । र० काल १७६२ चैत सुदी २ । पत्र ३

४७०४. **वसुदेव प्रबंध**—**जयकीर्त्ति** । पत्र सं० १४ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल सं० १७३५ ज्येष्ठ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

आदि भाग—

ओं नमः सिद्धेभ्यः । राग सोरठा ।

दूहा—

इन्द्रवरण सहू थोप नागेन्द्र जाति देव ।
पंच परमेष्टी जे असाकरीतिहुंनी सेव ॥१॥
वसुदेव प्रबंध रचु भले पुन्द तणो फल जेह ।
देवणास्त्र गुरु मन धरी प्रसिद्ध समृद्धि एह ॥२॥
हरिवंश कुल सोहामणु अंधक वृष्टि राय ।
सौरीपुर सोहिये थकी वासव सम शुभभाव ॥३॥

अन्तिम भाग—

श्रीमूलसंघे उजागजी, सरस्वती गच्छ सुजाणजी ।
गुणकीरति गुणग्रामजी बंदू वादिभूषण पुण्यधामजी ॥१३॥

दूहा—

ब्रह्म हरखा गुण अनुसरी कहु आख्यान ।
भणज्यो गुणज्यो भावसी लसिस्यो सुख संतान ॥१॥
कोट नगर कोडामणी वासे श्रावक पुण्यवंत ।
चैत्यालु आदि देवनु धर्म समुद्र समसंत ॥
तिहां जिनवर सेवाकरी वसुदेव तप फल एह ।
जयकीरति एम रच्यु धरज्यो धरमी नेह ॥

इति श्रीवसुदेव आख्याने तृतीय सर्ग संपूर्ण । संवत् १७३५ वर्षे ज्येष्ठ बुदी १० ब्र० श्री कामराज तत् शिष्य ब्र० श्री बाघजी लिखितं ।

४७०५. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १४ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल सं० १६७५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४७०६. **विक्रमलीलावती चौपई—जिनचन्द्र** । पत्र सं० १७ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—कथा । र० काल सं० १७२४ आषाढ सुदी ७ । ले० काल सं० १७६८ माघ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—लिखितं चेला खुशाल बीजल लिपी कृता दरीबा मध्ये ।

४७०७. **विदरभी चौपई—पारसदत्त** । पत्र सं० १४ । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल सं० १७८५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

४७०८. **विल्हण चौपई—कवि सारंग** । पत्र सं० ४२ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल सं० १६३६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दीसा ।

प्रारम्भ—

प्रणमुं सामिणि सारदा, सकल कला सुपसिद्ध ।
ब्रह्मा केरी पेटडी, प्रांगे अविचल बुद्धि ॥१॥
सुसर अलापइ नारदरस हस्ति बजावइ वीणा ।
दिनि दिन अति आणंद भर, सयल सुरासर लीण ॥२॥
आदि कुमारी आज लगि, ब्रह्म रुद्र हरिभात ।
अलख अनंत अगोचरी सुयश जगत विख्यात ॥३॥
कासमीर मुख मंडणी, सेवक पूरइ आस ।
सिद्धि बुद्धि मंगल करइ, सरस बचन उल्हास ॥४॥
श्री सद्गुरु सुपसाउ करि, समरी अनुपम नाय ।
जास पसाइ पामीइ, मन वंछित सविकास ॥५॥
नारी नामि ससिकला तेह तणु भरतार ।
कवि विल्हण गुण वर्णनु सील तणइ अधिकार ॥६॥
सील सवि सुख संपजइ सीलैं संपति होइ ।
इह भवि परभवि सुख लहइ, सील तणां फल जोइ ॥७॥
सील प्रभावि आपदा टली पाप कलंक ।
कवि विल्हण सुख विलासिया सुणज्यो सूकी संक ॥८॥

अन्तिम—

ए कवि विल्हणनी चुपई भणइ एक मनांवइ ।
तास घरे नव निधि विस्तरइ निसुणंता सुख संपति करइ ॥

विरही तणा विरह दुख टलइ,
मनमती रस रमणी मिलइ ॥

समझई श्रोता चतुर सुजाण ।
मूरिख म लहइ भाग अजाण ॥

दोहा—

सुजाणासिउ मोठ की, लाडु विछुं परेह ।
अहूरा पूरा करइ पूरा आमो रेइ ॥४॥

श्लोक—

अज्ञसुखमाराध्य सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः ।
ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं नरं जयति ॥५॥

वरं पर्वतदुर्गेषु भ्रांत वनचरैः सह ।
या मूर्खजनसंसर्गः सुरेन्द्रभवनेष्वपि ॥६॥

पंडितोऽपि वरं शत्रुः मा मूर्खो हितकारकः ।
वानरेण हतो राजा विप्र चौरेण रक्षितः ॥७॥

चौपई—

हंस कोइ मय करसिउ तथा ।
मति अनुसारि बंधि कथा ।।
उछु अधिकु अक्षर जेह ।
पंडित सूधउ कर सो तेह ।।८।।

दूहा—

श्रीभट्टारह गच्छवर विद्यमान जयवंत ।
ज्ञानसागर सूरी अछइ गुहिर महागुणवंत ।।
तास गछि अति विमुल मति पद्मसुन्दर गुरुसीस ।
कविसारंग इणि परि कहइ आणी मनह जगीस ।।
ए गुण च्यालइ वछरि ऊपरि सइल सोल ।
सुदि आसाढी अंतिपदा कीउं कवित्त कल्लोल ।
पुष्य नक्षित्र वार गुरु..... अमृत सिद्ध ।।
श्री जवालेंपुरि प्रगट कोतिग कारण विद्ध ।।
सज्जण जणु संभलई खंति मनि आणं ।
रिद्ध वृद्धि पामई सही कुशल खेम कल्याण ।।

बीच बीच में स्थान चित्रों के लिए छोड़ा गया है ।

४७०९. विष्णुकुमार कथा—× । पत्र सं० ५ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल सं० १८२४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४७१०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । आ० ११×१ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक)

४७११. शालिभद्र चौपई— × । पत्रसं० २२ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १०९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

४७१२. शालिभद्र चौपई—जिनराज सूरि । पत्र सं० २९ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र०काल सं० १६७८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ कोटा ।

४७१३. शालिभद्र चौपई—मनसार । पत्र सं० २७ । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र० काल सं० १६०८ आषाढ बुदी ६ । ले० काल सं० १७६६ । पूर्ण । वेष्टनसं० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—श्री सागवाडा में आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी ।

अन्तिम—

सोलहसम अठोतिर वरसइ आसू वदि छठि दिवसइजी ।

श्रीजिनसिंह सूरि सीष मनसारइ भविवण उपगारइजी ।
श्री जिनराज वचन अनुसारइ चरितइ कह्या सुविचारइजी ॥

४७१४. **शालिभद्र चौपई - विजयकीर्त्ति ।** पत्र सं० ४६ । आ० १०½×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल सं० १८२७ । ले० काल १९७२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—दान कथा का वर्णन है ।

४७१५. **शालिभद्र धन्ना चोपई –सुरति सागर ।** पत्र सं० २० । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय –कथा । र० काल × । ले०काल सं० १८२६ चैत्र सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—बुरहानपुर में प्रतिलिपि की थी ।

४७१६. **शालिभद्र धन्ना चौपई - मनसार ।** पत्रसं० २० । आ० १०½×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र०काल १६०८ आसोज बुदी ६ । ले० काल १७४५ शाके १६१० । पूर्ण । वेष्टन सं० ७०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४७१७. **शीलकथा—मारामल ।** पत्र सं० ३१ । आ० ८×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय–कथा । र०काल × । ले० काल सं० १९४४ भादवा सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२१२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

४७१८. **प्रतिसं० २ ।** पत्रसं० ३४ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४४। **प्राप्ति स्थान**–भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष–सेठ मूलचन्दजी सोनी ने संवत १९५८ आषाढ सुदी २ को बड़ा घड़ा की नशियां में चढाया था ।

४७१९. **प्रति सं० ३ ।** पत्रसं० ५० । आ० ८½×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२७५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४७२०. **प्रति सं० ४ ।** पत्रसं० ४४ । ले० काल सं० १९५३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

४७२१. **प्रतिसं० ५ ।** पत्रसं० २२ । आ० १३×८½ इञ्च । ले०काल सं० १९६३ चैत्र बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७०/१८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष–पत्र सं० ३६ और ३३ की दो प्रतियां और हैं ।

४७२२. **प्रतिसं० ६ ।** पत्रसं० ४० । ले० काल सं० १९०९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

४७२३. **प्रतिसं० ७ ।** पत्र सं० ५२ । आ० ११×६ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर ।

४७२४. **प्रति सं० ८ ।** पत्रसं० ३१ । आ० १२½×६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मंदिर बयाना ।

४७२५. **प्रति सं० ९** । पत्र सं० ५३ । ले० काल सं० १८९३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

४७२६. **प्रति सं० १०** । पत्र सं० ३२ । आ० १०½ × ६½ इञ्च । × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४७२७. **प्रति सं० ११** । पत्रसं० ३७ । आ० ९½ × ६½ इञ्च । र० काल × । ले०काल सं० १८९० कार्तिक सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज.)

विशेष—सरवणराम सेठी ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

४७२८. **प्रति सं० १२** । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७/४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बगवा ।

४७२९. **प्रतिसं० १३** । पत्रसं० २-३६ । आ० १०½ × ६ इञ्च । ले०काल सं० १९२८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरह पंथी मन्दिर नैणवा ।

४७३०. **प्रतिसं० १४** । पत्रसं० ४८ । आ० १२½ × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विषय—तनसुख अजमेरा स्वाध्याय करने के लिये प्रति अपने घर लाया ऐसा निम्न प्रकार से लिखा है—

"तनसुख अजमेरो लायो वांचवा ने गरु सं० १९५४ ।

४७३१. **प्रतिसं० १५** । पत्र सं० २५ । आ० १३ × ८ इञ्च । र० काल × । ले०काल सं० १९५३ । पूर्ण । वेष्टन ४५-२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक) ।

४७३२. **प्रतिसं० १६** । पत्रसं० ३२ । आ० ९ × ६ इञ्च । र०काल × । ले०काल सं० १९१० पूर्ण । वेष्टनसं० ७२ १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—केकड़ी में गणेशलाल ने प्रतिलिपि की थी । पद्य सं० ५४७

४७३३. **प्रतिसं० १७** । पत्र सं० २५ । आ० १२ × ८ इञ्च । ले० काल सं० १९५५ । पूर्ण । वेष्टसं० १९/७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—५६९ पद्य संख्या है ।

४७३४. **प्रतिसं० १८** । पत्र सं० ३२ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

४७३५. **प्रतिसं० १९** । पत्र सं० २२ । आ० १२½ × ८ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४७३६. **शीलकथा**—× । पत्र सं० १० । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण वेष्टन सं० १२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज.)

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

४७३७. **शीलकथा**— × । पत्र सं० १४ । आ० ७½ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

४७३८. **शीलकथा—भैरोंलाल** । पत्र सं० ३६ । आ० १२½ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

शील कथा यह पूरण भई ।
भैरोंलाल प्रगट करि गहि ।।
पढै सुनौ अब जो मन लाई ।
जन्म जन्म के पातिग जाई ।।४५।।
सील महात्तम जानि भवि पालहु सुख को वास
हृदै हरख बहु धारिकै लिखी जो उत्तम नाम ।।४६।।

इति श्री शीलकथा संपूर्ण लिखते उत्तमचन्द व्यास मलारणा का ।

४७३९. **शीलतरंगिणी—(मलयसुन्दरी कथा) अखयराम लुहाडिया** । पत्रसं० ८८ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (प.) । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८६ सावन सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रारम्भ के ५३ पत्र नवीन हैं । आगरा में प्रतिलिपि हुई थी ।

४७४०. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ७७ । आ० १०½ × ५ इञ्च । ले० काल० × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५०८ । । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है ।

४७४१. **शीलपुरंदर चौपई—×** । पत्रसं० १० । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (प.) । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल सं० १७२० । पूर्ण । वेष्टन सं० १०८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर बवलाला (बूंदी० ।

विशेष—मुनि अमरविमलगणि ने बीकानेर में प्रतिलिपि की थी ।

४७४२. **शीलसुन्दरीप्रबंध—जयकीर्ति** । पत्रसं० १६ । आ० ११½ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल सं० १६६० । पूर्ण । वेष्टनसं० २४२ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

४७४३. **शीलोपदेश रत्नमाला—जसकीर्त्ति** । पत्र सं० ११ । आ० ११ × ४ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मंदिर अलवर ।

विशेष—गुजराती भाषा में टिप्पण है । जसकीर्ति जयसिंह सूरि के शिष्य थे ।

४७४४. **शीलोपदेश माला—मेरुसुन्दर** । पत्र सं० १६६ । आ० ६¾ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल सं० १८२६ भादवा बुदि ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

४७४५. **श्रीपाल सौभागी. आख्यान—वादिचन्द्र** । पत्रसं० २२ । आ० ११ × ४ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र०काल सं० १६५१ । ले० काल सं० १७६० कार्तिक बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४६, ७६ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—उदयपुर में प्रतिलिपि हुई थी । प्रति अत्यन्त जीर्ण है ।

४७४६. **प्रति सं०२** । पत्रसं० २० । आ० १०½ × ५ इंच । ले०काल सं० १७५३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

४७४७. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० २-३६ । आ० ११ × ४ इंच । ले० काल सं० १८१६ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४७४८. **श्रुतावतार कथा**—× । पत्रसं० ५ । आ० ११ × ४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४८ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

४७४८ क. **प्रतिसं० २** । आ० १६ × ५½ इंच । ले० काल सं० १८६३ ज्येष्ठ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—महाराज सवाई रामसिंह के राज्य में जयपुर में लश्कर के नेमि जिनालय में पं० झाऊराम ने प्रतिलिपि की थी ।

४७४६. **श्रेणिक महामांगलिक प्रबन्ध—कल्याणकीर्ति** । पत्र सं० ३६ । आ० ११ × ४½ इंच । भाषा हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल सं० १७०५ । ले० काल सं० १७३१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

४७५०. **षडावश्यक कथा**—× । पत्र सं० ६ । आ० १० × ४½ इंच । भाषा हिन्दी । विषय कथा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है । ५ कथा तक पूर्ण हैं । प्रति प्राचीन है ।

४७५१. **सगर प्रबन्ध—आ० नरेन्द्रकीर्ति** । पत्र सं० १० । आ० ११ × ५ इंच । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

४७५२. **सदयवत्स सावलिंगा चौपई**— × । पत्र सं० १२ आ० ८½ × ६½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय कथा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—पत्र ६ तक है आगे चौबीस बोल है वह भी अपूर्ण है ।

४७५३. **सप्तव्यसन कथा—सोमकीर्ति** । पत्रसं० १०२ । आ० ११ × ५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र०काल सं० १५२६ माघ सुदी १ । ले०काल सं० १८३६ अगहन सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५ २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

विशेष—लाखेरी नगर मध्ये लिखितं बाबा श्री ज्ञानविमल जी तत् शिष्य रामचन्द्र ।

४७५४. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ११२ । आ० ९½×६ इञ्च । ले० काल सं १८८३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७८ । **प्राप्ति स्थान**——दि० जैन पंचायती मन्दिर बयानां ।

ग्रन्थाग्रन्थ २०६७ श्लोक प्रमाण है ।

४७५५. प्रति सं०३ । पत्रसं० २/११६ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल सं० १७३८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—संवत् १७३८ वर्षे प्रथम चैत्र बुदी १ रवि दिने ब्रह्म श्री धनसागरेण लिखितं स्वयमेव पठनार्थं ।

४७५६. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० ६६ । आ० ११×५½ इञ्च । ले० काल सं० १६६० ज्येष्ठ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है——

संवत् १६६० वर्षे ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे पूर्णिमा तिथौ भौमे भेलसा महास्थाने श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्री सकलकीर्तिदेवा भ० श्री भुवनकीर्तिदेवा भ० श्री ज्ञानभूषणदेवा भ० श्री विजयकीर्तिदेवा भ० श्री शुभचन्द्रदेवा भ० श्री सुमतिकीर्ति भ० श्री गुणकीर्तिदेवा भ० श्री वादिभूषणदेवा भ० श्री रामकीर्तिदेवा भ० पद्मनदि तत् शिष्य ब्रह्म रूडजी स्वयं लिखितं । शुभं भवतु ।

४७५७. प्रतिसं० ५ । पत्र सं० ७६ । आ० ११×४½ इञ्च । ले०काल सं० १६०५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४४-६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६०५ समये आश्विन बुदी ३ बुधवासरे श्री तीर्थराज प्रयाग ग्रामे सलेम साहिराज्ये ।

४७५८. प्रतिसं० ६ × १ । पत्र सं० ६३ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल सं० १६१६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४४ ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

प्रशस्ति—संवत् १६१६ वर्षे आषाढ बुदी ८ भौमे पूर्व भाद्रपद नक्षत्रे श्रीमत् काष्ठासंघे नंदीतटगच्छे विद्यागणे श्रीरामसेनान्वये श्री वादीभकुम्भस्थविदारणैकपंचानन भट्टारक श्री सोमकीर्तिदेवा तत्पट्टे त्रयोदशप्रकारचरित्रप्रतिपालक भट्टारक श्री विजयसेनदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री विद्वज्जनकमलप्रतिबोधन मार्त्तण्डावतार भट्टारक श्री कमलकीर्तिदेवा तत्पट्टे को धारणवीरसरस्वती शृंगारहार षट्भाषानिवास भट्टारक श्री रत्नकीर्तिदेवा तत्पट्टे चरित्रचूडामणि भट्टारक श्री महेन्द्रसेनदेवा तत्पट्टांवर धन्यप हिम करोयम् सरस्वती कंठाभरणा भूषित सर्वविकलाप्रवीण सदेसपरदेशलब्धप्रभाप्रतिष्टोदय भट्टारक श्री विशालकीर्ति आचार्य श्री सिंधकीर्तिदेवा तत् शिष्य ब्रह्म श्री भोजराज भट्टारक श्री महेन्द्रसेन शिष्यनी आर्यका जीवाकेण तया इद सती आगमनम्य पुस्तकं लिखापितं ज्ञानावर्णी कर्मक्षयार्थं ब्रह्म भोजराज पठनार्थं ।

४७५९. प्रति सं० ७ । पत्रसं० १४२ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल सं० १६५८ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४३-६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—उदयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

४७६०. **प्रतिसं० ८**। पत्र सं० ७६। आ० १०½ × ५ इञ्च। ले० काल सं० १८५२। पूर्ण। वेष्टन सं० ७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर।

विशेष—शेरगढ़ में दयाचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

४७६१. **प्रति सं० ९**। पत्र सं० ९७। आ० १० × ४ इञ्च। ले० काल सं० १७५१ माह सुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० ४२९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

४७६२. **प्रति सं० १०**। पत्रसं० ९७। आ० ११½ × ४½ इञ्च। ले०काल सं० १७८५ पौष सुदी १०। पूर्ण। वेष्टनसं० ७७९। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

विशेष—वृन्दावन ने प्रतिलिपि करवाई थी।

४७६३. **प्रतिसं० ११**। पत्र सं० ११३। आ० ९½ × ६ इंच। ले० काल सं० १९२५ फागुण बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० १८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नागदी बूंदी।

४७६४. **प्रतिसं० १२**। पत्र सं० ९८। आ० १२ × ५½ इञ्च। ले०काल सं० १८२४। पूर्ण। वेष्टन सं० २१२। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मदिर नागदी, बूंदी।

विशेष—पं० गुलाबचदजी ने कोटा में प्रतिलिपि की थी।

४७६५. **प्रतिसं० १३**। पत्र सं० २५। आ० १३ × ५½ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १०६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

विशेष—निम्न प्रशस्ति दी हुई है

मिति आसोज शुक्ला प्रतिपदा सोमवासरान्वितं लिखितं नग्र कोटा मध्ये लिखापितं पंडित्तोत्तम पंडितजी श्री १०८ श्री शिवलालजी तत्शिष्य श्री रत्नलालजी तस्य लघुभ्राता पंडितजी श्री वीरदीलालजी तत् शिष्य श्री नेमिलाल दवलाणा हालानं।

४७६६. **प्रतिसं० १४**। पत्र सं० १०८। आ० ९X४ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० २२८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

विशेष—पत्र बड़े जीर्ण शीर्ण है तथा १०८ से आगे नहीं है।

४७६७. **प्रतिसं० १५**। पत्र सं० ३२। आ० ९ × ५½ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १३०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

४७६८. **प्रतिसं० १६**। पत्रसं० २५। ले०काल × पूर्ण। वेष्टनसं० ७०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

४७६९. **सप्तव्यसन कथा—भारामल्ल**। पत्रसं० ७५। आ० १२ × ६½ इञ्च। ले०काल सं० १८२५। पूर्ण। वेष्टनसं० ४०५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर।

४७७०. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० १०१। आ० ११½ × ६ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनस० ८९–११९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

४७७१. **प्रतिसं० ३**। पत्र सं० १६५। आ० ११ × ५½ इञ्च। ले०काल सं० १८९१। पूर्ण। वेष्टन सं० १५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

विशेष—राजमहल नगर में सुखलाल शर्मा ने तेजपाल के लिये लिखा था।

४७७२. **प्रति सं० ४**। पत्रसं० १०७। आ० ११ × ५ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

४७७३. **प्रति सं० ५**। पत्र सं० १२६। आ० ११×७ इञ्च। ले० काल सं० १६६१। पूर्ण। वे० सं० २२३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

विशेष—चंदेरी में प्रतिलिपि हुई थी।

४७७४. **प्रति सं० ६**। पत्रसं० ११४। आ० १३½×८½ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३७४। **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर फोहुरु शेखावाटी (बीकर)

४७७५. **प्रति सं० ७**। पत्र सं० १२४। आ० १० × ७ इञ्च। ले०काल सं० १६६१। पूर्ण। वेष्टनसं० २०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्री महावीर बूंदी।

४७७६. **प्रति सं० ८**। पत्र सं० १००। आ० १२½×६½ इञ्च। ले०काल सं० १६५८। पूर्ण। वेष्टन सं० ५७। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

४७७७. **प्रतिसं० ९**। पत्र सं० ११३। आ० १३½×६½ इञ्च। ले०काल सं० १६६७। पूर्ण। वेष्टन सं० १३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

४७७८. **प्रतिसं० १०**। पत्र सं० ८१। आ० ११½×५½ इञ्च। ले०कालसं० १८७१ आसोज बुदी १०। पूर्ण। वेष्टन सं० ३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा।

विशेष—पुरुजी गुमानीराम ने तक्षकपुर में प्रतिलिपि की थी।

४७७९. **सप्तव्यसन कथा**—×। पत्रसं० ७५। **भाषा**-हिन्दी। **विषय**-कथा। र० काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० ५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर मालपुरा (टोंक)

४७८०. **सम्यक्त्व कौमुदी—धर्मकीर्ति**। पत्रसं० ३३। आ० १०×५ इंच। **भाषा**-संस्कृत। **विषय**-कथा। र०काल सं० १६७८ भादवा बुदी १०। ले०काल सं० १८६५। पूर्ण। वेष्टन सं० २०-१२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

अन्तिम—

श्री मूलसंघेवरगच्छे बलात्कारगणे वने।
कुंदकुंदस्य संताने मुनिवंदितकीर्तिवाक्
तत्पदांबुरुहार्तंडे धर्मकीर्तिमुनिर्महान्
तेनाम रचितो ग्रन्थ शिष्यं स्वस्य बुद्धिना ॥४॥
अष्टर्षि रसचंद्रार्के वर्षे भाद्रपदे सिते
दशम्यां गुरुवारेयं ग्रन्थः सिद्धोहि नन्दतात् ॥५॥
यदत्र सुभाषितं किंचिद ज्ञानाद्वा प्रमादतः।
तत् शोध्य कृपयासद्भिः सतेषां सहजो गुणः।
विश्वेश्वरैः पूजितपादपद्मो गणेश्वरैः मनौ ...।
तदिव्य नरेश्वरैः संतत गण्यमानो जिनेश्वर ॥७॥

इति श्री सम्यक्त्वकौमुदीग्रंथे उदितोदय महाराज सुबुद्धि मंत्रीश्वरेण अर्हद्दास सुवर्ण चूर चौर स्वर्गगमनवर्णन नाम: दशमःसंधि ॥

४७८१. **सम्यकत्व कौमुदी**—ब्रह्मखेसा। पत्रसं० १८३ । आ० १२×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल सं० १८०६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

४७८२. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० १४३ । आ० ११×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय कथा । र०काल × । ले० काल सं० १८८५ वैशाख बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

४७८३. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० १२५ । आ० ११ × ४ इञ्च । ले०काल सं० १६७३ श्रावण सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है ।

४७८४. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० १६२ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले० **काल सं०** १६२६ आसोज सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक) ।

लेखक प्रशस्ति— श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक धर्मचन्द्रजी तत् शि. ब्रह्म गोकलजी तत् लघु भ्राता ब्रह्म मेघजी लीखितं । श्री दक्षिणदेशमध्ये अमरापुर नगरे । श्री शांतिनाथ चैत्यालये ।

४७८५. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० १२० । आ० १२ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १७४६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

विशेष—श्री जिनाय नमः संवत् १७४६ वर्षे मिति आश्विन कृष्णा पंचम्यां भौमे । लिखितं सांवलराम जोसी वराहथ मध्ये । लिखापित पांडे वृंदावन जी ।

४७८६. **प्रतिसं० ६** । पत्र सं० ६० । आ० १२½ × ६ इञ्च । ले०काल सं० १८५१ चैत्र सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बूंदी (टोंक) ।

विशेष—सीताराम ने स्वपठनार्थ चाटसू नगर में प्रतिलिपि की थी ।

४७८७. **प्रतिसं० ७** । पत्र सं० १४४ । आ० ११×४½ इञ्च । ले०काल सं० १६३४ आसोज बुदी ८ । वेष्टन सं० ८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—धर्मचन्द्र की शिष्यणी आ० मणिक ने लिखवाकर श्रीहेमचन्द्र को भेंट की थी ।

४७८८. **प्रतिसं० ८** । पत्र संख्या ५६ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले०काल सं० १६६६ पौष बुदी १४ । वेष्टन सं० ८८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—पं० केशव के पठनार्थ रामपुरा में प्रतिलिपि हुई थी ।

४७८९. **सम्यक्त्वकौमुदी—ओधराज गोदीका** । पत्र सं० ६२ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल सं० १७२४ फागुण बुदी १३ । ले० काल सं० १८६८ कार्तिक बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४७६०. **प्रतिसं० २** । पत्र संख्या ४८ । ले० काल सं० १८८५ कार्तिक बुदी ऽऽ । पूर्ण । वेष्टन संख्या १५८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—किशनगढ़ में लुहाडियों के मन्दिर में पं० देवकरण ने प्रतिलिपि की थी ।

४७६१. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० १५६ । आ० ११ × ७½ इञ्च । ले० काल सं १६१० । पूर्ण । वेष्टन सं० १६२० । **प्राप्ति स्थान** –भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१७६२. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० ६३ । आ० १०×६ इञ्च । ले० काल सं० १८२७ । पूर्ण । वे० सं० ७५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

४७६३. **प्रतिसं० ५** । पत्र सं० ६४ । आ० ११ × ७ इञ्च । ले० काल सं० १६२३ पूर्ण । वेष्टन सं० ३३·१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती टूनी (टोंक) ।

विशेष—सदासुख ने टूनी में प्रतिलिपि की थी । सं० १६३१ में पांच उपवास के उपलक्ष में अभयचंद की बहू ने चढ़ाया था ।

४७६४. **प्रतिसं० ६** । पत्रसं० ६३ । आ० १०½ × ६½ इञ्च । ले० काल सं० १६३३ भादवा बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा ।

४७६५. **प्रतिसं० ७** । पत्र सं० ५४ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले० काल सं० १६५६ माह सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा ।

४७६६. **प्रति सं० ८** । पत्र सं० ७७ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १७५७ कार्तिक बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ३१–१४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—दयाराम भांवसा ने 'घासीराम जी' की पुस्तक से फागुई के तेरह पंथियों के मन्दिर में प्रतिलिपि की थी ।

४७६७. **प्रति सं० ९** । पत्र सं० ७७ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल सं० १८३५ वैसाख सुदी ११ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४७६८. **प्रतिसं० १०** । पत्रसं० ६३ । आ० ११ × ४½ इंच । ले०काल सं० १८६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६ ८२ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

विशेष—टोडा का गोठडा मध्ये लिखितं ।

४७६९ **प्रतिसं० ११** । पत्र सं० ७२ । ले० काल सं० १८८० । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ कोटा ।

४८००. **प्रति सं० १२** । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १८८४ चैत्र सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

४८०१. **प्रतिसं० १३** । पत्रसं० ४१ । आ० १२×५½ इंच । ले०काल सं० १८६६ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ११५ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

विशेष— पोत्तमदासजी अग्रवाल के पुत्र तारासंद ने प्रतिलिपि कराई थी ।

४८०२. **प्रति सं० १४** । पत्र सं० ५१ । आ० १३$\frac{१}{२}$ × ८ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

४८०३. **प्रतिसं० १५** । पत्रसं० ८५ । आ० ६ × ४$\frac{१}{२}$ इञ्च । ले० काल सं० १८४१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

४८०४. **प्रति सं० १६** । पत्र सं० ६२ । आ० १२ × ७ इंच । ले० काल सं० १६५१ सावण बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१/१४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

४८०५. **प्रतिसं० १७** । पत्र सं० ४४ । ले० काल सं० १८६२ पौष बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२(क)/१४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर अलवर ।

४८०६. **प्रति सं० १८** । पत्रसं० ७७ । ले०काल सं० १८७७ पौष सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२ (ख) १७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

४८०७. **प्रति सं० १६** । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १८८४ । पूर्ण । वे० स० ५६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

४८०८. **प्रति सं० २०** । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १८३० । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

४८०९. **प्रति सं० २१** । पत्र सं० ६२ । ले०काल सं० १७६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—मनसाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

४८१०. **प्रति सं० २२** । पत्र सं० १११ । आ० ८ × ५$\frac{१}{२}$ इञ्च । ले० काल सं० १८४१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर बयाना ।

४८११. **प्रतिसं० २३** । पत्रसं० ६३ । आ० १०$\frac{१}{२}$ × ६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर बयाना ।

४८१२. **प्रतिसं० २४** । पत्र सं० ३८ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २५ । **प्राप्ति स्थान**—पंचायती दि० जैन मन्दिर बयाना ।

४८१३. **प्रतिसं० २५** । पत्रसं० ५७ । आ० १३×५$\frac{३}{४}$ इंच । पूर्ण । वेष्टन सं० १७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

४८१४. **प्रतिसं० २६** । पत्र सं० १०१ । आ० ६$\frac{३}{४}$ × ४$\frac{१}{२}$ इञ्च । ले०काल सं० १६१० कार्तिक वदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६०/७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मंदिर करौली ।

विशेष—करौली में लिखा गया था ।

४८१५. **प्रति सं० २७** । पत्रसं० ५६ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले० काल सं० १८६० फागुन सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८–३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

विशेष—सेवाराम श्रीमाल ने गुमानीराम से करौली में प्रतिलिपि करवाई थी ।

४८१६. **प्रति सं० २८** । पत्रसं० ४५ । ले० काल सं० १८५६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

विशेष—नोनंदराम लुहाडिया ने प्रतिलिपि की थी।

४८१७. **प्रति सं० २६**। पत्रसं० ५०। आ० १२ × ५½ इंच। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० २६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

४८१८. **प्रति सं० ३०**। पत्रसं० ५४। आ० १२×७ इंच। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

विशेष—डीग नगर में प्रतिलिपि की गई थी।

४८१९. **प्रति सं० ३१**। पत्रसं० ७०। आ० १२×६ इंच। ले० काल सं० १९११। पूर्ण। वेष्टन सं० ४५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

४८२०. **प्रति सं० ३२**। पत्र सं० ६५। आ० ९×६½ इंच। ले० काल सं० १८५९ पौष सुदी ६। पूर्ण। वेष्टनसं० ३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा।

विशेष—सेवाराम ने दौसा में प्रतिलिपि की थी।

४८२१. **प्रतिसं० ३३**। पत्रसं० ७१। आ० १३×४½ इंच। ले० काल सं० १८६१ द्वि० चैत्र सुदी ८। पूर्ण। वेष्टनसं० १५-२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पंथी दौसा।

विशेष—देवगरी (दौसा) निवासी उदैचन्द लुहाडिया ने प्रतिलिपि की थी।

४८२२. **प्रतिसं० ३४**। पत्रसं० ६९। आ० १२ × ६ इंच। ले०काल सं० १८६१ भादवा सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० २७-७। **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा।

विशेष—श्रमन महाराजाधिराज महाराजा श्री सवाई पृथ्वीसिंह जी का में दीवान श्रारतिसिंह खिंदूको सुसाहिब खुस्यालीराम बोहरो। लिखी सरूपचंद खिंदूका को बेटो पिरागदास जी खिन्दूको।

४८२३. **प्रतिसं० ३५**। पत्र सं० ५८। आ० १३×६½ इंच। ले०काल सं० १८४८। पूर्ण। वेष्टन सं० २८८। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

विशेष—भीलोडा ग्राम में प्रतिलिपि हुई थी।

४८२४. **प्रति सं० ३६**। पत्र सं० ६७। आ० १२×५½ इंच। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ७९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

४८२५. **प्रतिसं० ३७**। पत्र सं० ८३। आ० १०×६ इंच। ले० काल सं० १८८२। पूर्ण। वेष्टन सं० ७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल टोंक।

विशेष—राजमहल में प्रतिलिपि हुई थी।

४८२६. **सम्यक्त्व कौमुदी भाषा—मुनि दयाचंद**। पत्र सं० ६१। आ० ११ × ५½ इंच। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—कथा। र०काल सं० १८००। ले० काल सं० १८०२ आषाढ बुदी ४। पूर्ण। वेष्टन सं० ६७-६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बड़ा बीसपंथी दौसा।

४८२७. **सम्यक्त्व कौमुदी– विनोदीलाल**। पत्र सं० ११२। आ० १२×८ इंच। भाषा–हिन्दी (पद्य)। विषय–कथा। र०काल सं० १७४९। ले० काल सं० १९२८। पूर्ण। वेष्टन सं० ११५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर।

४८२८. **सम्यक्त्व कौमुदी—जगतराय**। पत्र सं० १०२। आ० १०½×४½ इञ्च। **भाषा**-हिन्दी। विषय—कथा। र० काल × । ले० काल सं० १७२२ वैशाख सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० १७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा।

विशेष—प्रशस्ति में लिखा है—

काशीदास ने जगतराम के हित ग्रंथ रचना की थी।

४८२९. **प्रति सं० २**। पत्र सं० ११९। आ० १२×६ इञ्च। ले० काल सं० १८०३। पूर्ण। वेष्टन सं० १५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चेतनदास दीवान पुरानी डींग।

४८३०. **सम्यक्त्व कौमुदी कथा**× । पत्र सं० ६३। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०५७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

४८३१. **सम्यक्त्व कौमुदी कथा**— × । पत्र सं० ८८। आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत। विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ६६५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

४८३२. **सम्यक्त्व कौमुदी कथा** — × । पत्र सं० १२२। आ० १०½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल × । ले० काल सं० १८५३ माह सुदी १३। । पूर्ण। वे० सं० ६९२। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४८३३. **सम्यक्त्व कौमुदी कथा**— × । पत्र सं० ९४। आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५६३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

४८३४. **सम्यक्त्व कौमुदी कथा**— × । पत्र सं० ८६। आ० १० × ६½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल × । ले० काल सं० १८१२ पौष सुदी ७ । पूर्ण। वे० सं० ४०२। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४८३५. **सम्यक्त्व कौमुदी कथा** — × । पत्र सं० १३५। आ० १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय कथा। र० काल × । ले० काल सं० १६५६। चैत्र सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० २३-१२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर।

विशेष—आचार्य सकलचंद्र के भाई पं० जैसा की पुस्तक है।

४८३६. **सम्यक्त्व कौमुदी कथा**—× । पत्र सं० ६२। आ० १०×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल × । ले० काल सं० १६८६। पूर्ण। वेष्टन सं० ११३-५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

प्रशस्ति—सवत् १६९८ वर्षे चैत्र सुदि १३ दिने लिपी कृतं पूज्य श्री १०५ विशालसोमसूरि शिष्य सिंहसोम लिपि कृतं।

४८३७. **प्रति सं० २**। पत्र सं० १२६। आ० १३×७ इंच। ले० काल सं० १८८५। पूर्ण। वेष्टन सं० ११४-५५। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त।

४८३८. **सम्यक्त्व कौमुदी कथा**— × । पत्रसं० ५३ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४८३९. **सम्यक्त्व कौमुदी कथा** । पत्रसं० १३४ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल सं० १८३७ आसोज वदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

विशेष—वैष्णव जानकीदास ने डालचंद के पठनार्थ करौली में प्रतिलिपि की थी ।

४८४०. **सम्यक्त्व कौमुदी कथा**— × । पत्र सं० १०० । आ० ६½ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३ । **प्राप्ति स्थान**—पंचायती दि० जैन मंदिर अलवर ।

४८४१. **सम्यक्त्व कौमुदी कथा**—× । पत्रसं० १-३४, ६९ भाषा-संस्कृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

४८४२. **सम्यक्त्व कौमुदी कथा**— × । पत्रसं० १९ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १७८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४८४३. **सम्यक्त्वकौमुदी कथा**— × । पत्र सं० १०७ । आ० १० × ४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल सं० १७५५ । पूर्ण । वेष्टनसं० २६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति—संवत् १७५५ वर्षे पौष मासे शुक्ल पक्षे त्रयोदश्यां तिथौ भौमवासरे श्री हीरापुरे लिखितं सकलगणि नगेन्द्रगणि श्री ५ रत्नसागर तच्छिष्य गणिमणोत्तम सगणि श्री चतुरसागर तच्छिष्य गणि गणालंकार गणि श्री रामसागर तच्छिष्य पंडित सुमतिसागरेण ।

४४८४. **सम्यक्त्वकौमुदी**— × । पत्रसं० ११३ । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल सं० १७४९ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना बूंदी ।

विशेष—संवत् १७४९ वर्षे मिती कार्तिक शुक्ला तृतीयायां ३ भौमवासरे लिखितमिदं चौधे रूपसी खीवसी ज्ञाति सिनावढ वणाहटा मध्ये लिखापितं च पाहडया मयाचंद मांधो सुत ।

४८४५. **सम्यक्त्वकौमुदी कथा**— × । पत्रसं० ४० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष—लिखितं कृषि कपूरचन्द नीमच मध्ये । प्रति प्राचीन है ।

४८४६. **सम्यक्त्व कौमुदी कथा**— × । पत्र सं० २-८२ । आ० १० × ४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल सं० १८५६ फागुण सुदी ३ । अपूर्ण । वेष्टन सं० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

विशेष—प्रति हिन्दी गद्य टीका सहित है। महोपाध्याय मेघविजयजी तत् शिष्य पं० कुशलविजय जी तत् शिष्य ऋद्धिविजय जी, शिष्य पं० भुवन विजयजी तत् शिष्य विनीत विजय गणि लिखितं।

४८४७. **सम्यक्त्व कौमुदी कथा**—× । पत्रसं० १४३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३९-२११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह टोंक ।

४८४८. **सम्यक्त्व कौमुदी कथा**— × । पत्रसं० १६ । आ० ९½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल सं० १७२१ फागुन वदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—साह जोधराज मोदीका ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

४८४९. **सम्यक्त्व कौमुदी कथा**— × । पत्रसं० ५५-१११ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १४५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

४८५०. **सम्यक्त्व कौमुदी कथा**— × । पत्र सं० ५५ । आ० ११½ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृति । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४८५१. **सम्यक्त्व कौमुदी कथा**—× । पत्रसं० ५४ । आ० ९½ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

४८५२. **सम्यक्त्व लीलाविलास कथा—विनोदीलाल** । पत्र सं० २२९ । आ० ९½ × ७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल । ले० काल सं० १९५३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

४८५३. **सम्यग्दर्शन कथा**— × । पत्र सं० १२६ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४८५४. **सिद्धचक्र कथा—शुभचन्द्र** । पत्रसं० ५ । आ० ११½ × ६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल । × ले०काल सं० १९०९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मंदिर बयाना ।

४८५५. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ५ । आ० १२ × ४½ इञ्च । ले०काल सं० १८४२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर चौमान बूंदी ।

४८५६. **सिद्धचक्र कथा—श्रुतसागर** । पत्रसं० २३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल सं० १५७६ चैत्र सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष— आर्या ज्ञानश्री ने प्रतिलिपि करायी थी।

४८५७. सिद्धचक्र कथा – भ० सुरेन्द्रकीर्ति। पत्र सं० ५ । आ० १५ × ६ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र०काल × । ले० काल सं १८७९। पूर्ण। वेष्टन सं० ८७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

विशेष-प्रशस्ति में निम्न प्रकार भट्टारक परंपरा दी है देवेन्द्रकीर्ति महेन्द्रकीर्ति क्षेमेन्द्रकीर्ति और सुरेन्द्रकीर्ति।

४८५८. सिद्धचक्रव्रत कथा—नेमिचन्द्र पत्रसं० १९९। **भाषा**-संस्कृत। विषय—कथा। र०काल × । ले० काल × पूर्ण। वेष्टन सं० ७७-३०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति सिद्धक्षेत्र श्री नेमिचन्द्र विरचिते श्री सिद्धचक्रसार कथा संबंधे श्री हरिषेण चक्रधर वैराग्य दीक्षा वर्णनो नाम सप्तम सर्ग ॥७॥

४८५९. सिद्धचक्रव्रत कथा—नथमल। पत्र सं० २९। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-कथा। र०काल × । ले० काल सं० १८८९। पूर्ण। वेष्टन सं० २००१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी

विशेष—जादूराम छाबड़ा चाकसूवाला ने बोली में प्रतिलिपि करवाई थी।

ग्रन्थ का नाम श्रीपाल चरित्र है तथा अष्टाह्निका कथा भी है।

४८६०. प्रतिसं० २। पत्र सं० १३। आ० १२½×८½ इञ्च। ले०काल × पूर्ण। वेष्टन सं ३५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

४८६१. प्रति सं० ३। पत्रसं० ७। आ० १२×७¾ इञ्च। **ले०काल सं० १९४२** कार्तिक सुदी ५। अपूर्ण। वेष्टन सं० ३४। **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

४८६२. सिंहासन बत्तीसी-ज्ञानचन्द्र। पत्र सं० २६। आ० १०½×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—कथा। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १८१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी।

४८६३. सिंहासन बत्तीसी—विनय समुद्र। पत्र सं० २६। आ० १०×४ इञ्च। **भाषा**—हिन्दी (गद्य)। विषय -कथा। र०काल सं० १६११। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ७४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—इसमें ४१ पद्य है। रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

आदि भाग—

श्री सारदाई नमः। श्री गुरुभ्यो नमः।
संयल मंगल करण आदीस।
मुनयण दाइणि सारदा सुगुरु नाम नियं।
चितधारिय नीर राइ विक्रम तणउ।
सत्तसील साहस विचारीय॥

सिंहासन बत्तीसी जिनउ सिद्धसेन गणधारि ।
भाख्यु ते लबलेस लहि दायइ विनइ विचार ।।१।।

दूहा--

सिंहासन सौहण सभा तिणि पूतली बत्तीस ।
भोजराइ आगलि करइ विक्रमराइ सतीस ।।२।।
ते सिंहासन केहनउ किणि आण्यु किम भोजि ।
लाघउ केम कथा कही ते संभलज्यो बोज ।।३।।

अन्तिम—

पास संतानी गुणे वारिट्ठ केसी गुरु सरिखा जगि जिट्ठ ।।
रयणप्पह सूरीसर जिसा अनुक्रमि कव्वु सूरिसुण निसा ।।३७।।
तासु पाटि देवगुपति गुरुचंद,तेहनइ पाटहि सिद्ध सुरिंदं ।।
तेहनई पद पंजक जिम भाण, जे गुरु गरु आगुणे निहाण ।।३८।।
संपइ विजयवंत कव्वु सूरि, तस पसाइ मइ आणंद सूरि ।
अंतेवासी तेहनउ सदा, हर्ष समुद्र जिसो निधि मुदा ।।३९।।
तसु पयकमल कमल मधु भृंग, विनय समुद्र वाचकमन रंग ।।
संवत् सोलह बरसइ प्यार, सिंधाराण बत्तीसी सार ।।४०।।
लेइ बोधउ एह प्रबंध, भद्रमती मंइ चौउपइ बंधि ।
भणतो गुणता हुइ कल्याण,अविचल वीकनीयर अहिठाण ।।४१।।

इति सिंघासणबत्तीसी कथा चरित्र संपूर्ण

४८६४. सिंहासन बत्तीसी—हरिफूला । पत्रसं० १२३ । आ० १२×५३ इंच । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र०काल सं० १६३६ । ले०काल सं० १८०६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल तेरहपंथी मन्दिर दौसा ।

प्रारम्भ—मंगला चरण ।

आरादी श्री रिषभप्रभु जुगलाधर्म निवारि ।
कथा कहों विक्रमतणी, जास साकउ विस्तार ।।
साकौ बरण्यौ दान थी दान बडौ संसारी ।
बलि विशेष जिण सासणौ बोल्या पंचप्रकार ।।
अभय सुपात्र दांन जिहूं प्राणी मोख संजोग ।
अनुकंपा धरि तर्कु चित एतिहूं दाने भोग ।।

पत्र ७९ पर कथा ९

हितसारारे नयरी, भोज निरेसरु ।
सिंधाराण रे आवे सुभ मुहूर्त्त वरु ।।
तव राधारे दशभी बोलैऊ मही ।
विक्रम समरे होवै तो बैसे सही ।।

चंद--

वैसे सही इम सुयरी पूछै भोज तलखिण पूतली ।
किम हुयो विक्रमराय दाता भणै ते हरखे चली ॥
नयरी अवतीराय विक्रम सभा बैठो सन्यदा ।
घन खंड योगी एक आयो कहैं बनमाली तदा ।

अन्तिम—प्रशस्ति निम्न प्रकार है:—

श्री खरतर रे गणहर गुरु गोयम समो,
निति उठी रे श्री जिनचंद सूरि पय नमौ ।
तसु गछै रे संप्रति गुण पाठक तिलौ ।
वड वादीने श्री विजयराज वसुधा निलौ ॥
वसुधा निलौ तसु सीस बोले संघनै आग्रह करी ।
दे सैस बाल खडेह नयरी सदा जे आणंद भरी ।
संवत् सोलह सौ छत्तीस में बीत आसू वदि कथा ।
तिहि कहिय सिंघासस बत्तीसी कही हीर सुणी यथा ।
पण चरितै रे दूहा गाहा चौपई ।
सहू अंकेशे बावीस सै बावीसथई ॥
खांमू बली हूं संघ से मुखि मान छोडिय आपणो ।
जे सासत्र भाखै हूवै मिलतो तेह निरतो थापणो
ए चरित सांभलि जेम मानव दान आपौ निज करै
वे पुण्य पसाथै सुखी थापै रिधि पामै बहु परै ।

इति श्री कलियुग प्रधान दानाधिकार श्री विक्रमराय श्री भोजनरिंद सिंघासण बत्तीसी चौपई संपूर्ण । लि० श्री जिनजी को खानाजाद नान्हेराम मोधो वासी सूरतगढ़ को, पढैत्या दनै श्री जिनाय नमः बच्या । भूल्यौ चूक्यो सुधारि लीजयोजी मिती द्वितीय भादवा सुदी १० दीतवार सं० १८०६ का । लिखाई महा श्री श्री रूपसागर जी विराजे वैराटमध्ये । शुभं भवतु ।

४८६५. **सिंहासन बत्तीसी**—× । पत्र सं० २१ । आ० ११½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १५८५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मंदिर अजमेर ।

४८६६. **सिंहासन बत्तीसी**— × । पत्र सं० १६ । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

४८६७. **सिंहासन बत्तीसी**—× । पत्रसं० १२३ । आ० ५ ×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल सं० १६५४ चैत बुदी १० । **पूर्ण** । वेष्टन सं० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी (बूंदी)

विशेष –चंपापुरी में लिखा गया था ।

४८६८. **सिंहासन बत्तीसी**— × । पत्र सं० १० । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी, मालपुरा (टोंक)

४८६९. **सुकुमार कथा**—× । पत्रसं० ८ । आ० १०$\frac{3}{4}$×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४८७०. **सुकुमालस्वामी छंद**—ब्र० धर्मदास । पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल सं० १७२४ सावण बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२५/४५ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—ब्र० शिवराज ने कोट महानगर में प्रतिलिपि की थी । ब्र. धर्मदास सुमतिकीर्ति के शिष्य थे ।

४८७१. **सुखसंपत्ति विधान कथा**— × । पत्र सं० २ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४८७२. **सुखसंपत्ति विधान कथा**—। पत्रसं० २ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४८७३. **सुगन्धदशमी कथा**—**राजचन्द्र** । पत्रसं० ६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, नागदी बूंदी ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

४८७४. **सुगन्धदशमी कथा**—**खुशालचन्द्र** । पत्र सं० १२ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल सं० १९१५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३४/६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा)

४८७५. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ११ । आ० १०$\frac{3}{4}$×५$\frac{3}{4}$ । ले० काल सं० १९१२ आजोज बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—लिखितं सेवाराम बघेरवाल इन्दरगढ मध्ये ।

४८७६. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० १३ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १९४४ भादवा सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—सुन्दरलाल वैद ने लिखी थी ।

४८७७. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० ७ । आ० १२$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १९२७ भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष–डीगवाले मोतीलाल जी बालमुकन्दजी जी के पुत्र के पठनार्थ भरतपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

४८७८. **प्रति सं० ५** । पत्रसं० १३ । आ० ९$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

४८७९. **प्रतिसं० ६।** पत्र सं० १५। आ० ६×६ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

४८८०. **सुगंधदशमी कथा**—×। पत्र सं० ४। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ५०६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—सूतक विचार भी है।

४८८१. **सुभाषित कथा**—× । पत्रसं० १०१। आ० ११×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—कथा। र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टनसं० ३०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—इससे आगे पत्र नहीं है। रत्नचूल कथा तक है।

४८८२. **सुरसुन्दरी कथा**—×। पत्रसं० १७। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टनसं० ७४/४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

४८८३. **सेठ सुदर्शन स्वाध्याय—विजयलाल।** पत्र सं० ३। आ० ११½ × ४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र० काल सं० १६०२। ले० काल सं० १७१७ आषाढ़ बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० १७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—सूर्यपुर नगर में लिखा गया था।

४८८४. **सोमवती कथा**— । पत्र सं० ६। आ० ११×५ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय-कथा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

विशेष—'महाभारते भीष्म युधिष्ठिर सवादे' में से है।

४८८५. **सौभाग्य पंचमी कथा**— × । पत्र सं० १०। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। र० काल सं० १६५५। ले० काल सं० १८६०। पूर्ण। वेष्टन सं० ६८२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—हिन्दी टिप्पण सहित है।

४८८६. **संघकुल**— × । पत्रसं० ३, ७-१०। आ० १०×४ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—कथा। र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ३५८। **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

४८८७. **संवादसुन्दर** × । पत्रसं० ११। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ५३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौमान बूंदी।

विशेष—शारदापद्मपति संवाद, गंगादारिद्र्यपद्म संवाद, लोकलक्ष्मी संवाद, सिंह हस्ति संवाद, गोधूमचणक संवाद पञ्चेन्द्रिय संवाद, मृगमदचन्दन संवाद एवं दानादिचतुष्क संवाद का वर्णन है।

प्रारम्भ—

प्रणम्य श्रीमहावीरं वंदमानपुरंदरम्।
कुर्वे स्वात्मोपकाराय ग्रंथ संवादसुन्दरम् ॥१॥

४८८८. **स्थानक कथा**— × । पत्रसं० ६६ । आ० ११ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३३० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री एकादश स्थाने करुणदेवकथानक संपूर्ण । ११ कथायें हैं ।

४८८९. **हनुमंत कथा—ब्रह्म रायमल्ल** । पत्रसं० ३९ । आ० १०½ × ६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी प. । विषय कथा । र०काल सं० १६१६ । ले०काल सं० १६०५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—ज्ञानचंद तेरापंथी दौसा वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

४८९०. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० २७ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मंदिर अलवर ।

४८९१. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० ५९ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले०काल सं० १९५० । पूर्ण । वेष्टन सं० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

विशेष—जैन पाठशाला जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

४८९२. **प्रतिसं० ४** । पत्र सं० ७० । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

४८९३. **हरिश्चन्द्र राजा की सज्झाय** — × । पत्रसं० १ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

४८९४. **हरिषेण चक्रवर्त्ती कथा**—**विद्यानन्दि** । पत्रसं० ५ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । जीर्ण । वेष्टन सं० १८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

४८९५. **होली कथा** । पत्रसं० ३ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । भाषा —संस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । वेष्टनसं० १७९ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४८९६. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ४ । आ० ११×५ इंच । ले० काल × । वेष्टन सं० १८० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर ।

४८९७. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० ५ । आ० ९×४½ इञ्च । ले०काल सं० १६७५ । वेष्टनसं० १८१ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर, लश्कर जयपुर ।

विशेष—मोजाबाद में रामदास जोशी ने प्रतिलिपि की थी ।

४८९८. **होली कथा**— × । पत्रसं० ३ । आ० ११ × ५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × ले० काल सं० १८७८ पौष बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनसं० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४८९९. **होली कथा**। पत्र सं० ३ आ० ११½×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र०काल × । ले० काल सं० १८९० । पूर्ण । वेष्टन सं० १७७-७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

४९००. **होली कथा—मुनि शुभचन्द्र**। पत्र सं० १४। आ० ९½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र०काल सं० १७५५ । ले०काल सं० १८९४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष—इति श्री धर्म परीक्षा ग्रंथउतै कृत आचारिज शुभचन्द्र कृत होली कथा संपूर्ण ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्री मूलसंघ भट्टारक संत, पट्ट आमेरि महा गुणवंत ।
नरेन्द्रकीर्ति पाट सोहंत, सुरेन्द्रकीर्ति भट्टारकवंत ॥११६॥
ताके पाटि धर्म को थंभ, सोहै जगतकीर्ति कुलथंभ ।
क्षमावंत शीतल परिनाम, पंडित कला सोहै गुण धाम ॥११७॥
ता शिष्य आचारिज भेष, लीया सही सील की रेख ।
मुनि शुभचन्द नाम प्रसिद्ध कवि कला में अधिकी बुद्धि ॥११८॥
ताके शिष्य पंडित गुणधाम, नगराज है ताको नाम ।
सेवो जीवराज अन जोगीं, दिव चोखो जसो शुभ नियोगी ॥११९॥
देस हाडौती सुखमै देस, तामें पुर कुजड कही·····।
ताकी शोभा अधिक अपार, मसिधां सोहै बहुत प्रकार ॥१२०॥
हाडावंशी महा प्रचण्ड, श्री रामसिंघ धर्म को मांड ।
ताके राज खुशाली लोग, धर्म कर्म को लीहा संजोग ॥१२१॥
तिहां पौरा छतीसूं क्रीडा करैं, आपणो मार्ग चित्त में धरैं ।
श्रावक लोग वसैं तिहथान, देव धर्म गुरू राखै मान ॥१२२ ।
श्री चन्द्रप्रभ चैतालो जहां, ताकी सोभा को लग कहां ।
तहां रहे हम बहोत खुश्याल, श्रावक की देख्या शुभ चाल ।
तातैं उदिय कियो शुभकर्म, होली कथा बनाई परम ॥
भाषा बंध चौपई करी, संगति भली तैं चित में धरी ॥१२४॥
मुनि शुभचन्द करी या कथा, धर्म परीक्षा में छी जथा ।
होली कथा सुनै जो कोई, मुक्ति तणा, सुख पावै सोय ॥
संवत सतरासौ परि जोर, वर्ष पचायन अधिका और ॥१२६॥
साक गणि सोलाछैबीस, चैत सुदि सातैं कहीस ।
ता दिन कथा संपूरण भई, एक सो तीस चौपई भई ॥
सोयदिन में जोडी पांत, दोन्यू दिसा कुशलात ॥१२७॥

संवत १८९४ में साह मोजीराम कटारया ने राजमहल में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्रतिलिपि कराई थी ।

४९०१. **होली कथा--छीतर ठोलिया**। पत्र सं० १० । आ० ७½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी प० । विषय—कथा । र०काल सं० १६६० फाल्गुण सुदी १५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

४९०२. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ८ । आ० ११½×४½ इञ्च । ले०काल सं० १८८० फागुण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

४९०३. **होलीपर्वकथा**— × । पत्रसं० ३ । आ० ९¾×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६०८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४९०४. **होली पर्व कथा**— × । पत्रसं० २ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६६२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४९०५. **होलीरज पर्वकथा**— × । पत्रसं० २ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २८३/११५ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

४९०६. **होलीपर्वकथा**— × । पत्रसं० ३ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र० काल× । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४९०७. **होलीरेणुकापर्व—पंडित जिनदास** । पत्रसं० ४० । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र०काल सं० १५७१ ज्येष्ठ सुदी १० । ले०कालसं० १६२८ मंगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—खंडेलवाल ज्ञातीय साह गोत्रोत्पन्न श्री पदारथ ने प्रतिलिपि करवायी । फागुई वास्तव्ये ।

४९०८. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ३९ । आ० १०½×४½ ले०काल सं० १६१५ फागुण सुदी १ । वेष्टन सं० १७८ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—नरवरगढ़ में महाराजा श्री कल्याण के राज्य में प्रतिलिपि हुई थी ।

४९०९. **हंसराज वच्छराज चौपई—जिनोदयसूरि** । पत्र सं० २८ । आ० १०½× ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल सं० १८७५ आसोज सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—मिझल ग्राम में प्रतिलिपि हुई थी ।

४९१०. **हंसराज वच्छराज चौपई**— × । पत्रसं० २-१८ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) ।विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७०३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विषय -- व्याकरण शास्त्र

४६११. **अनिटकारिका**— × । पत्र सं० १६ । आ० १०½ × ४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १७५४ पौष बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४६४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६१२. **अनिटकारिका**— × । पत्र सं० ३ । आ० १०× ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४६१३. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ४ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४६१४. **अनिटकारिका**— × । पत्र सं० ४ । आ० ११ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १८५२ आषाढ शुक्ला ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—श्रीचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

४६१५. **अनिटसेटकारिका**— × पत्र सं० ३ । आ० १० × ४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । **पूर्ण** । **वेष्टन सं०** २३१, ५८५ । **प्राप्ति स्थान**— संभवनाथ दि० जैन मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य ब्र० मोहन ने प्रतिलिपि की थी ।

प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

४६१६. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ३ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३२/५८४ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४६१७. **अनेकार्थ संग्रह—हेमराज** । पत्र सं० ६५ । भाषा-संस्कृत । विषय व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । **अपूर्ण** । वेष्टन सं० २५ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्री मूलसंघे भट्टारक श्री सकलकीर्ति त० भ० श्री भुवनकीर्ति त० भ० श्री ज्ञानभूषण देवास्तज्जिष्य मुनि अनंतकीर्ति । पुस्तकमिदं श्री गिरिपुरे लिखापितं ।

४६१८. **अव्ययार्थ** × । पत्र सं० ४ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १८६८ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

४६१९. **अव्ययार्थ**— × । पत्र सं० ५ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । **पूर्ण** । वेष्टन सं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक) ।

४६२०. **आख्यात प्रक्रिया—अनुभूति स्वरूपाचार्य** । पत्रसं० १० । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

४६२१. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ६३ । आ० ६½×५ इञ्च । ले० काल सं० १८७६ फागुन सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—सवाईमाधोपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

४६२२. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० ३० । आ० ११×४ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

४६२३. **उपसर्ग वृत्ति**.....। पत्रसं० ४ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । वेष्टनसं० २५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

४६२४. **कातन्त्ररूपमाला—शिववर्मा** । पत्र सं० ६५ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—६५ से आगे पत्र नहीं हैं ।

४६२५. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० २८ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४६२६. **कातन्त्रविभ्रमसूत्र—शिववर्मा** । पत्रसं० ८ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले०काल सं० १६८१ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—अवचूरि सहित है ।

४६२७. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ५ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२५/५७२ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति—

इति श्री कालन्त्रसूत्र विभ्रमसूत्र समाप्तं । पं० अमीपाल लिखितं । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

४६२८. **कातन्त्ररूपमाला टीका—वौर्य्यसिंह** । पत्र सं० ७३ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६१–१४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

४६२९. **कातन्त्ररूपमाला वृत्ति—भावसेन** । पत्रसं० ६६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५०। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६३०. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ११७ । आ० १४×५ इंच । ले०काल सं० १५५५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०६/५७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति शुद्ध एवं सुन्दर है।

प्रशस्ति—संवत् १५५५ वर्षे आषाढ़ बुदी १४ भौमे श्री कोटस्थाने श्री चन्द्रप्रभ जिनचैत्यालये श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भ० श्रीसकल कीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री ज्ञानभूषणदेवा तत्शिष्य ब्रह्म नरसिंह जोग्य पठनार्थं गांधी परवत ज्ञानावर्णी कर्मक्षयार्थं रूपमालाख्य प्रक्रिया लिखितं। शुभं भवतु।

४६३१. **प्रति सं० ३**। पत्रसं० १३८। आ० १२×५ इंच। ले० काल सं० १६३७। पूर्ण। वेष्टन सं० ४२७/५७१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर।

विशेष—आगे पत्र फटा हुआ है।

प्रशस्ति—निम्न प्रकार है-

स्वस्ति संवत् १६३७ वर्षे मार्गसिर वदि चतुर्थी दिने शुक्रवासरे श्रीमत् काष्ठासंघे नन्दितट गच्छे विद्यागणे भ० रामसेनान्वये भ० सोमकीर्ति भ० महेन्द्रसेन भ० विशालकीर्ति तत्पट्टे धरणीधर भ० श्री विश्व भूषण ब्र० श्री हीरा ब्र० श्री ज्ञानसागर ब्र० शिवाबाई कमल श्री बा० जयवंती समस्तयुक्तं श्रीमत् मरहठदेशे जगदाल्हादनपुरे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये श्री भ० प्रतापकीर्ति गुर्वाज्ञापालण प्रवीण बघेरवाल ज्ञातीय नाटल गोत्र जिनाज्ञा पालक सा माउत भार्या मदाइ तयोः पुत्र सर्व कला संपूर्ण .....

४६३२. **कारकखंडन—भीष्म**। पत्र सं० ५। आ० ११×४½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका-

इति श्री भीष्म विरचिते बलबंधक कारकखंडन समाप्त। प्रति प्राचीन है।

४६३३. **कारकविचार**— × । पत्रसं० ६। आ० ६×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—व्याकरण। र० काल × । ले० काल सं० १८८८। पूर्ण। वेष्टन सं० १३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल टोंक।

विशेष—मालपुरा में प्रतिलिपि हुई थी।

४६३४. **कारिका**— × । पत्रसं० ६। भाषा संस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल × । ले० काल सं० १८८५। पूर्ण। वेष्टन सं० ७५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

४६३५. **काशिकावृत्ति—वामनाचार्य**। पत्र सं० ३५। आ० ६½×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—व्याकरण। र० काल × । ले० काल सं० १५६७। पूर्ण। वेष्टन सं० २०२/६८७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

प्रशस्ति—संवत् १५ आषाढादि ६७ वर्षे शाके १४३२ प्रवर्तमाने आश्वन बुदि मासे कृष्णपक्षे तीया तिथौ भृगुवासरे पुस्तकमिदं लिखितं।

४६३६. **कृदंतप्रक्रिया—अनुभूति स्वरूपाचार्य**। पत्र सं० १६। आ० ११×७ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल × । ले० काल सं० १६०४। पूर्ण। वेष्टन सं० २७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

४६३७. **क्रियाकलाप—विजयानन्द ।** पत्रसं० ५ । आ० १०×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर, इन्दरगढ़ (कोटा))

४६३८. **चतुष्क वृत्ति टिप्पण—पं० गोल्हण ।** पत्रसं० २-६२ । आ० १३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०८/२६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति श्री पंडित गोल्हण विरचितायां चतुष्क वृत्ति टिप्पणिकायां चतुर्थपादसमाप्तः

४६३९. **चुरादिगण**— × । पत्रसं० ७ । आ० १०½×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले०काल × । **वेष्टनसं०** ६७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४६४०. **जैनेन्द्रव्याकरण—देवनंदि ।** पत्र सं० १३२ । आ० १२×७½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । **वेष्टनसं० १५७६ । प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—ग्रंथ का नाम पंचाध्यायी भी है । देवनन्दि का दूसरा नाम पूज्यपाद भी है ।

४६४१. **प्रति सं० २** । पत्र सं० २०१ । आ० ११ × ४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

४६४२. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० ८६ । आ० १३×८ इञ्च । । ले०काल सं० १६३५ माघ बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

४६४३. **तत्वदीपिका**— × । पत्रसं० १८ । आ० ११½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—सिद्धान्त चन्द्रिका की तत्वदीपिका व्याख्या है ।

४६४४. **तद्धितप्रक्रिया—अनुभूतिस्वरूपाचार्य ।** पत्रसं० ६५ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)

४६४५. **तद्धितप्रक्रिया—महीभट्टी ।** पत्र सं० ६६ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

४६४६. **तद्धितप्रक्रिया**— × । पत्र सं० १६-४२ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । **वेष्टनसं० २६६ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

४६४७. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ७६ । आ० ६½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

४६४८. **तर्कपरिभाषा प्रक्रिया—श्री चित्रभट्ट** । पत्रसं० ४६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८६/४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

४६४९. **धातु तरंगिणी—हर्षकीर्ति** । पत्रसं० ५६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल सं० १६६३ । ले० काल सं० १७४६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—स्वोपज्ञ टीका है । रिणीमध्ये स्थलीदेशे । महाराज श्री अनूपसाह राज्ये लिखितं ।।

पत्र चिपके हुए हैं ।

४६५०. **धातुतरंगिणी—** × । पत्रसं० ५२ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १६९२ मंगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३१६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६५१. **धातुनाममाला—** × । पत्र सं० १२ । आ० ११½×४½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६५-१०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

४६५२. **धातुपद पर्याय —**× । पत्र सं० ६ । आ० ६½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११०० । **प्राप्ति स्थान**—भ. दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६५३. **धातुपाठ—पाणिनी** । पत्र सं० १७ । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १६२४ वैशाख बुदी ३३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—पं० शिवदास सुत श्री नाथेन लिखित ।

४६५४. **धातुपाठ—शाकटायन** । पत्रसं० १३ । आ० ११×५इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १७२६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—शाकटायन व्याकरण में से है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १७२६ वर्षे वैशाख बुदी १३ शुक्ले श्री चाउंड नगरे श्री आदिनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कार गणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री वादिभूषणदेवास्तत्पट्टे भ० श्री रामकीर्ति देवास्तत्पट्टे भ. श्री पद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भ. श्री देवेन्द्रकीर्तिदेवास्तदाम्नाये आचार्य श्री कल्याणकीर्ति तच्छिष्याचार्य श्री त्रिभुवनचन्द्रेण शाकटायन व्याकरण धातुपाठ ज्ञानावरणकर्म क्षयार्थं । शुभमवतु ।

४६५५. **धातुपाठ—हर्षकीर्ति** । पत्रसं० १५ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल सं० १६१३ । ले० काल सं १७८२ भादवा सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—अंतिम—

खंडेलवाल सद्वंशे हेमसिंहाभिधः सुधीः
तस्याभ्यर्थनतः पाठेय निर्मितो नंदताच्चिरम् ।

४६५६. धातुपाठ— × । पत्र सं० १८ । आ० ११×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल सं० १५८० आसोज सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४२५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—भट्टारक लक्ष्मीचन्द के शिष्य पं० शिवराम के पठनार्थ लिखा गया था ।

४६५७. धातुपाठ— × । पत्र सं० १० । आ० १०½ × ५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विषय—केवल चुरादिगण है ।

४६५८. धातु शब्दावली— × । पत्र सं० ३० । आ० ७½ × ५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१५-८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

४६५९. धातु समास— × । पत्र सं० २८ । आ० ११×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय व्याकरण । र०काल × । ले०काल सं० १८९१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६६०. निदाननिरुक्त — × । पत्र सं० ३ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४६६१. पंचसंधि— × । पत्र सं० १४ । आ० ८½ × ४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४६६२. पंचसंधि— × । पत्र सं० ४ । आ० ८ × ५ इंच । भाषा संस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल सं० १८१६ आषाढ़ बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—संग्रह ग्रंथ है । भाग्य विमल ने प्रतिलिपि की थी ।

४६६३. पंचसंधि — × । पत्र सं० ७ । आ० ६½ × ५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

४६६४. पंचसंधि— × । पत्र सं० १४ । आ० १० × ५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल सं० १९०१ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—प्रति जीर्णावस्था में है।

४६६५. **पंचसंधि**— × । पत्र सं० १३ । आ० ११$\frac{3}{4}$ × ६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

४६६६. **पाणिनी व्याकरण—पाणिनी** । पत्रसं० ७४७ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल × अपूर्ण । वेष्टन सं० २६५/५१५ । **प्राप्ति स्थान**—सम्भवनाथ दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

विशेष—बीच में कई पत्र नहीं हैं । प्रति प्राचीन है । इसका नाम प्रक्रिया कौमुदी व्याख्यान समनप्रसाद : नामक टीका भी दिया है । संस्कृत में प्रसाद नामी टीका है । ग्रंथाग्रंथ १५६२५ ।

४६६७. **पातंजलि महाभाष्य—पातंजलि** । पत्रसं० २६३ । आ० ६$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

४६६८. **प्रक्रिया कौमुदी—रामचन्द्राचार्य** । पत्र सं० १२ । आ० ११ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । लेखन काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७१२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अलवर ।

४६६९. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० १०५ । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १७१३ मंगसिर सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—साहिजिहांबादे लिखितं भवानीदास पुत्र रणछोड़ाय ।

४६७०. **प्रक्रिया कौमुदी**— × । पत्र सं० ५३ से ११७ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

४६७१. **प्रक्रिया कौमुदी**— × । पत्र सं० १–७६ । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—पाणिनि के अनुसार व्याकरण है तथा प्रति प्राचीन है ।

४६७२. **प्रक्रिया कौमुदी**— × । पत्रसं० १७६ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६७३. **प्रक्रिया संग्रह**—× । पत्रसं० १६६ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १६२४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३१४ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

४६७४. **प्रक्रिया व्याख्या—चन्द्रकीर्त्ति सूरि** । पत्र सं० २५–१५६ । आ० १५ × ७ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ४४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक) ।

४६७५. **प्रबोध चन्द्रिका**—**कैवल्य चन्द्रिका**। पत्रसं० १५। आ० १२ × ७ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २५३-१०२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

४६७६. **प्रबोध चन्द्रिका**— ×। पत्र सं० २०। आ० ११½ × ५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र०काल ×। ले०काल सं० १८८०। पूर्ण। वेष्टनसं० १६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़।

विशेष—संवत् १८८० शाके १७४५ बाहुल स्याम पक्षे तिथो ६ षष्ठ्यां शनिवासरे लिखतं मुनि सुख विमल स्वात्मा पठनार्थं लिपि कृतं मोठडा ग्राम मध्ये श्रीमद् लाछन जिनालय।

४६७७. **प्रसाद संग्रह**— ×। पत्र सं० १८–१०, ५–३३। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—व्याकरण। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ३३/३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

४६७८. **प्राचीन व्याकरण**—**पाणिनि**। पत्र सं० ५६। आ० ६½×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल ×। ले० काल सं० १८२७ आषाढ सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन सं० ६६६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४६७९. **प्राकृत व्याकरण**—**चंड कवि**। पत्रसं० २६। आ० १० ×४½ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—व्याकरण। र० काल ×। ले०काल सं० १८७६। पूर्ण। वेष्टनसं० १६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

४६८०. **प्रतिसं० २**। पत्र सं० १४। आ० १०½ ×४½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

४६८१. **लघुसिद्धांत कौमुदी**—**भट्टोजी दीक्षित**। पत्र सं० ८२। आ० ६×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—व्याकरण। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ५१५। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४६८२. **प्रति सं० २**। पत्रसं० ५६४। आ० १२×५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ११६६। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४६८३. **प्रति सं० ३**। पत्रसं० १८। आ० १०×५ इञ्च। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० १२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी।

४६८४. **प्रतिसं० ४**। पत्र सं० ५८। आ० १२ × ५½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा।

४६८५. **महीभट्टी प्रक्रिया**—**अनुभूति स्वरूपाचार्य**। पत्रसं० ५६। आ० ११½×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—व्याकरण। र०काल ×। ले० काल० सं० १६००। पूर्ण। वेष्टनसं० ८२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

४६८६. **महीभट्टी व्याकरण**—**महीभट्टी**। पत्रसं० ८१। आ० ६½×६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-व्याकरण। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ११७-२८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर टोडारायसिंह।

४९८७. **प्रति सं० २**। पत्र सं० २०। आ० १०×६ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर कामा।

४९८८. **प्रति सं० ३**। पत्रसं० ११ से ५२। आ० ११ × ५ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० १०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक।

४९८९. **राजादिगण वृत्ति**— ×। पत्रसं० २२। आ० १२½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २०६। **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर, उदयपुर।

४९९०. **रूपमाला—भावसेन त्रिविद्यदेव**। पत्रसं० ४६। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० १५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

४९९१. **रूपमाला**— ×। पत्रसं० ५०। आ० १०×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २१७। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४९९२. **रूपावली**— ×। पत्रसं० १०८। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० ९३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल, टोंक।

४९९३. **लघुउपसर्गवृत्ति**— ×। पत्रसं० ६। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

४९९४. **लघुजातकटीका—भट्टोत्पल**। पत्रसं० ६०। आ० ९½×४ इञ्च। भाषा- संस्कृत। विषय-व्याकरण। र०काल ×। ले० काल सं० १४६५ आषाढ मासे ७ शनौ। पूर्ण। वेष्टनसं० २०३/६८६। **प्राप्ति स्थान**—सम्भवनाथ दि० जैन मंदिर उदयपुर।

४९९५. **लघुनाममाला—हर्षकीर्ति**। पत्र सं० ४२। भाषा संस्कृत। विषय-व्याकरण। र०काल ×। ले० काल सं० १८३५। पूर्ण। वेष्टन सं० ५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मंदिर बसवा।

विशेष—बसवा में प्रतिलिपि हुई थी।

इति श्री मन्नोगपुरीयतपागच्छीय भट्टारक श्री हर्षकीर्ति सूरि विरचितायां सारोद्धारिण्यां लघु नाममाला समाप्ता। संवत् १८३५ वर्षे शाके १७०० मिती भादवा शुक्ल पक्षे बार दीतवार एके नै संपूर्ण किधो। जीवराज पांडे।

४९९६. **लघुक्षेत्र समास**— ×। पत्रसं० ३२। आ० ११×४½ इंच। भाषा-प्राकृत-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र०काल ×। ले० काल सं० १६८२ आसोज सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन सं० १७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

४९९७. **लघुशेखर (शब्देन्दु)**— ×। पत्रसं० १२४। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र०काल ×। ले०काल ×। वेष्टनसं० ६९६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

४९९८. **लघुसिद्धांत कौमुदी - वरदराज** । पत्र सं० ६३ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । **पूर्ण** । वेष्टन सं० १०३२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४९९९. **प्रति सं० २** । पत्रसं० १९८ । आ० १०×४½ इञ्च । **ले०काल सं० १८३६** । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

५०००. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ३२ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २४-१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५००१. **वाक्य मंजरी**— × । पत्रसं० ३० । आ० ९×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले० काल सं० १८२५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५००२. **विसर्ग संधि**— × । पत्रसं० १२ । आ० ९½ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

५००३. **शाकटायन व्याकरण—शाकटायन** । पत्रसं० ७७१ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल सं० १६८१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—निम्न प्रकार है—संवत् १६८१ वर्षे जेठ सुदी ७ गुरु समाप्तोयं ग्रन्थ ।

५००४. **शब्दरूपावली**— × । पत्रसं० १३ । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

५००५. **शब्द भेदप्रकाश—महेश्वर** । पत्र सं० २-२० । आ० १३½ ×९ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल सं० १५५७ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५५७ वर्षे आषाढ बुदी १४ दिने लिखितं श्री मूलसंघे भट्टारक श्री ज्ञानभूषण गुरूपदेशात् हुंबड ज्ञातीय श्रेष्ठि जइता भार्या पांचू पुत्री श्री धर्मणि ।

५००६. **षट्कारक—विनयचरनंदि आचार्य** । पत्रसं० १७ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले० काल शक सं० १५४१ । अपूर्ण । वेष्टन सं० १७१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—अन्तिम पुष्पिका—इति श्री महान बोद्धागगण्य षट्कारक समाप्ता विनयचरनंदि मह चार्य विरचितोयं सम्बन्धो । शाके १५४१ कर्णाटक देशे गीरसोप्पानगरे आचार्य श्री गुणचंद्र तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीमत् भट्टारक श्री सकलचन्द्र शिष्य ब्रह्म श्री वीरदासेन लिखि बोद्धकारक ॥

५००७. **षट्कारक विचरण**— × । पत्रसं० ३ । आ० ११½ × ४½ इञ्च । भाषा- संस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११६५ । **प्राप्ति स्थान**—ब० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५००८. **षट्कारिका**—× । पत्र सं० ५ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५००९. **षट्कारिका**—× । पत्र सं० ५ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर

५०१०. **षट्पाद**—× । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६८ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष - कृदन्त प्रकरण है ।

५०११. **सप्तसमासलक्षण**— × । पत्रसं० २ । आ० ११ × ५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४२३/५७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

५०१२. **संस्कृत मंजरी—वरदराज** । पत्रसं० ११ । आ० ११×६ इंच । **भाषा**-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल सं० १८६६ भादवा बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर आदिनाथ (बूंदी)

५०१३. **संस्कृत मंजरी** × । पत्रसं० १० । आ० ८$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०३३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५०१४. **संस्कृत मंजरी**—× । पत्र सं० ४ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा- संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५०१५. **संस्कृत मंजरी**—× । पत्रसं० ४ । आ० १०× ४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल सं० १९५३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

५०१६. **संस्कृत मंजरी**—× । पत्र सं० १३ । आ० ६ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल सं० १८११ । पूर्ण । वे० सं० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

५०१७. **प्रतिसं०** २ । पत्रसं० १२ । आ० ८×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त ।

५०१८. **संस्कृत मंजरी**—× । पत्रसं० ७ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाष—संस्कृत । विषय-व्याकरण र०काल × । ले०काल सं० १९३५ । पूर्ण वेष्टनसं० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

५०१९. **संस्कृत मंजरी**—× । पत्रसं० ६ । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल सं० १८६६ काती सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं२४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)

५०२०. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ४ । ले० काल सं० १८४७ । पूर्ण । वेष्टनसं० २४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)

विशेष—लाइब्रेरी में प्रतिलिपि हुई थी ।

५०२१. **समासचक्र**—× । पत्रसं० ८ । आ० ६$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२२५ । प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५०२२. **समासप्रक्रिया**× × । पत्र सं० २६ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३१७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५०२३. **समास लक्षण**—× । पत्रसं० १ । आ० १० × ४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल । वेष्टन सं० ३५१-५६० । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन संभवनाथ मन्दिर अजमेर ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

५०२४. **सारसिद्धान्त कौमुदी**—× । पत्रसं० २३ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८६-७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५०२५. **सारसंग्रह**— × । पत्र सं० ४ । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२४-५७३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

५०२६. **सारस्वत टीका**— × । पत्र संख्या ७६ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । लेखन काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

५०२७. **सारस्वत चन्द्रिका—अनुभूतिस्वरूपाचार्य** । पत्र सं ४४ । आ० ११ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

५०२८. **सारस्वत टीका—पुंजराज** । पत्रसं० १६३ । आ० १० × ४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४३/५६६ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

विशेष—पुंजराज का विस्तृत परिचय दिया है ।

नमदवनसमर्थस्तत्त्वविज्ञानपार्थः ।
सुजनविहिते तापः श्रीनिधिर्वीतादोषः ।
अवनिपतिशरण्यात् प्रोढधीमे च मंत्री ।
मफरलमलिकाख्या श्रीगयासाद्बायत् ।

पतिव्रता जीवनधर्मपत्नी बल्यामकुलामकुटुंबमान्या ।
श्रीपुंजराजाख्यमसूत पुत्रं मुंजं चेतेस्तेश्वरितः पवित्र ॥१४॥

२४ पद्य तक परिचय है । अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है—

योयं रुचिर चरित्रो गुरुरविचित्रेरणि प्रसभं ।
दिग्दंतावल दंतावली वलक्षं शस्तनुते ॥२३॥
साथ टीकां व्यरचयदिमां चारु सारस्वतस्य ।
व्युत्पित्सूनां सभुपकृताय पुंजराजा नरेन्द्रः ॥२४॥
गंभीरार्थरुचित विवृत्तेस्वीयसूत्रैं पवित्रमेनः ।
मन्यस्यत हृद मुदास्तु प्रसन्नाः ॥२४॥

श्री श्री पुंजराजकृतेयं सारस्वत टीका संपूर्ण । ब्र० गोपालेन ब्र० कृष्णाय प्रदत्तं । ग्रंथा ग्रंथ ४५०० । प्रति प्राचीन है ।

५०२९. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ७२ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन सं० ४०० । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति बहुत प्राचीन है ।

५०३०. सारस्वत दीपिका वृत्ति—चंद्रकीर्त्ति । पत्र सं० २६० । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । पूर्ण । र०काल × । ले० काल सं० १८३१ आसोज बुदी ६ । वेष्टनसं० ९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—महात्मा मानजी ने सवाई जयपुर के महाराज सवाई पृथ्वीसिंह के राज्य में लिखा था ।

५०३१. प्रति सं० २ । पत्रसं० ४१ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—४१ से आगे पत्र नहीं हैं ।

५०३२. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० २२१ । आ० ९$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी) ।

५०३३. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० २०२ । आ० ९×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६१/१०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री नागपुरीय तपागच्छाधिराज भ० श्री चन्द्रकीर्तिसूरि विरचितायां सारस्वत व्याकरण दीपिका सम्पूर्ण ।

५०३४. प्रतिसं० ५ । पत्र संख्या १८२ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इंच । ले० काल सं० १८५१ पौष बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० १९४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

५०३५. सारस्वत धातुपाठ—अनुभूतिस्वरूपाचार्य । पत्रसं० ७ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

५०३६. सारस्वत प्रकरण— × । पत्रसं० १७–७५ । आ० ११× ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३२३-१२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५०३७. **सारस्वत प्रक्रिया**—**अनुभूतिस्वरूपाचार्य**। पत्र सं० १०१। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—व्याकरण। र०काल × । ले०काल × । **पूर्ण**। वेष्टन सं० १५२४। **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मंदिर अजमेर।

विशेष—इस मन्दिर में इसकी ११ प्रतियां और हैं।

५०३८. **प्रति सं० २**। पत्र सं० ७४। आ० १२ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १९४३। वेष्टन सं० ६०५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर।

५०३९. **प्रति सं० ३**। पत्र सं० ३२। आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले० काल सं० १८८७। वेष्टन सं० ३९९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

५०४०. **प्रतिसं० ४**। पत्र सं० ८० से १३९ । ले०काल सं० १७२८ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८२/५६८। **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है····

संवत् १७२८ वर्षे पौष मासे कृष्ण पक्षे पंचम्यां तिथौ बुधवासरे देवगढ़े राज्य श्री हीरसिंघराज्ये भट्ट श्री कल्याण जी संनिधाने लिखितमिद पुस्तकं रामकृष्णेन वागडगच्छेन वास्तव्येन भट्ट मेवाडा ज्ञातीय···· ····· लिखितं।

५०४१. **प्रति सं० ५**। पत्र सं० २४। आ० ११×७ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

५०४२. **प्रतिसं० ६**। पत्र सं० ९९। आ० ११½×७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २३०। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

५०४३. **प्रतिसं० ७**। पत्रसं० ३३–६९। आ० १२×५½ इञ्च। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टनसं० २८७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

५०४४. **प्रतिसं० ८**। पत्र सं० ५१। आ० १०×४½ इंच। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० २५५। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

विशेष—६१ से आगे पत्र नहीं हैं। प्रति प्राचीन है।

५०४५. **प्रतिसं० ९**। पत्र सं १२। आ० ९½×४½ इञ्च। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

५०४६. **प्रतिसं० १०**। पत्रसं० ८०। आ० ११× ५ इञ्च। ले० काल सं० १८७०। पूर्ण। वेष्टन सं० ५९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

५०४७. **प्रतिसं० ११**। पत्रसं० पत्र सं० १३ । आ० १३½ × ५½ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१७। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

५०४८. **प्रति सं० १२**। पत्र सं० १०। आ० १०½×७ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २४६। **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त मन्दिर।

५०४९. **प्रतिसं० १३**। पत्रसं० ५७। आ० १०×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ७। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा।

५०५०. प्रतिसं० १४। पत्रसं० १२८ । आ० १२×५ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१७। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

५०५१. प्रति सं० १५। पत्र सं० ४५। आ० ९½×४½ इञ्च। ले० काल सं० १८९५। पूर्ण। वेष्टन सं० १९८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

५०५२. प्रतिसं० १६। पत्र सं० ६४ । आ० ११½ × ३½ इंच । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० २१९। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

५०५३. प्रतिसं० १७। पत्रसं० २५ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३०७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

५०५४. प्रतिसं० १८। पत्रसं० ३० । आ० ११½ × ६½ इञ्च । ले० काल सं० १९०९ आसोज बुदी ४। पूर्ण। वेष्टन सं० ३६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—कामा में बलवन्तसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी।

५०५५. प्रतिसं० १९। पत्र सं० ६५। आ० १०× ५½ इञ्च। ले० काल सं० १८९२ फागुण बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० ७१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर कामा।

५०५६. प्रति सं० २०। पत्रसं० ९२ । ले० काल सं० १८९४ । अपूर्ण। वेष्टनसं० ५१६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

५०५७. प्रति सं० २१। पत्र सं० ४५। आ० ९½×४½ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १९७। **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ़।

५०५८. प्रतिसं० २२। पत्र सं० १०६ । आ० १०½×५½ इञ्च । ले०काल सं० १८४०। पूर्ण। वेष्टन सं० २०७। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

५०५९. प्रति सं० २३। पत्रसं० १८। आ० ११×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १२९। **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त मन्दिर।

५०६०. प्रतिसं० २४। पत्रसं० २-६५ । ले०काल सं० १८५। अपूर्ण। वेष्टनसं० १३०। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

५०६१. प्रतिसं० २५। पत्र सं० १५-५८। आ० १०½ × ४½ इञ्च। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० २४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)

५०६२. प्रति सं० २६। पत्र सं० ९३। आ० १० × ४ इंच ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)।

५०६३. प्रतिसं० २७। पत्र सं० १३६। ले०काल सं० १७७३ पूर्ण। वेष्टन सं० ४६। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १७७३ वर्षे चैत्र मासे शुभे शुक्लपक्षे तिथौ तृतीयायां ३ भृगुवासरे लिखितं रूडामहात्मा गढ आंबावती मध्ये लिखाइतं आत्मार्थे पठनार्थं पाना १३६ श्लोक पाना १ में १५ जी के लेखै श्लोक अक्षर बत्तीस का २००० दो हजार हुआ। लिखाई रुपया ३।।।) बांचे जीनै श्रीराम श्रीराम श्रीराम छै जी।

५०६४. **प्रति सं० २८**। पत्रसं० ४६। आ० ६½ × ४½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५४। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर।

विशेष—प्रथम वृत्ति तक है।

५०६५. **प्रति सं० २९**। पत्र सं० ९। आ० ८½ × ४½ इञ्च। ले० काल सं० १८६०। पूर्ण। वेष्टन सं० ७। **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)।

विशेष—विसर्ग सन्धि तक है। द्रव्यपुर (मालपुरा) में प्रतिलिपि हुई थी।

५०६६. **प्रतिसं० ३०**। पत्र सं० १०५। आ० ९½ × ४½ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक)।

५०६७. **प्रतिसं० ३१**। पत्र सं० ४४। आ० १० × ६ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

५०६८. **प्रतिसं० ३२**। पत्र सं० ७५। आ० ११½ × ५ इञ्च। लेखन काल सं० १६३८ पौष वुदी ऽऽ। पूर्ण। वे० सं० ६५–३९। **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

प्रशस्ति—संवत् १६३८ वर्षे पौष वुदी १५ शुक्रे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे सागवाडा पुरोतमस्थाने श्री आदिनाथ चैत्यालये श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे भ० श्री सकलकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री भुवनकीर्ति देवा तत्पट्टे भ० श्री ज्ञानभूषणदेवास्तत्पट्टे भ० श्री विजयकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचंद्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री सुमतिकीर्त्ति देवास्त भ० श्री गुणकीर्ति गुरूपदेशात् स्वात्म पठनार्थं सारस्वत प्रक्रिया लिखित स्वज्ञानावर्णी क्षयार्थं स्वपठनार्थं। श्री शुभमस्तु।

५०६९. **प्रतिसं० ३३**। पत्र सं० ९०। आ० ११ × ४ इञ्च। ले० काल सं० १६९४। पूर्ण। वे० सं० ३७२-१४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

५०७०. **प्रतिसं० ३४**। पत्रसं० ३६–६७। आ० १२×६ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २५९-१०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

५०७१. **प्रतिसं० ३५**। पत्र सं० ६६। आ० ११×५ इंच। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ९१–४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर।

५०७२. **प्रतिसं० ३६**। पत्र सं० ५४। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ४६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—छोटी २ पांच प्रतियां और हैं।

५०७३. **प्रतिसं० ३७**। पत्रसं० १४७। आ० ९½×४ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक।

५०७४. **प्रति सं० ३८**। पत्र सं० ८७। आ० ११× ५½ इञ्च। ले०काल सं० १९३५। पूर्ण। वेष्टन सं० १४५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर (राजमहल) टोंक।

विशेष—विद्वान् दिलसुखराय नृपसदन (राजमहल) मध्ये लिखितं।

५०७५. **प्रति सं० ३९**। पत्र सं० ५१। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ४३। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डायालों का डीग।

विशेष—प्रथम वृत्ति तक हैं।

५०७६. प्रति सं० ४० । पत्रसं० ७१-१५३ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन सं० ७१५ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

५०७७. सारस्वत प्रक्रिया— × । पत्रसं० ५ । आ० ८$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४६-१४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

५०७८. सारस्वत प्रक्रिया— × । पत्रसं० १३ । आ० ८$\frac{1}{2}$ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल टोंक ।

विशेष - पंचसंधि तक है ।

५०७९. सारस्वत प्रक्रिया— × । पत्रसं० १० । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

५०८०. सारस्वत प्रक्रिया वृत्ति—महीभट्टाचार्य । पत्रसं० ६७ । भाषा—संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूण्डावालों का डीग ।

५०८१. सारस्वत वृत्ति— × । पत्रसं० ९३ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल सं० १५९५ फागुण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—जोधपुर महादुर्ग राय श्री मालदेव विजयराज्ये ।

५०८२. सारस्वत व्याकरण— × । पत्र सं० २० । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८०-४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—शब्द एवं धातुयों के रूप हैं ।

५०८३. सारस्वत व्याकरण दीपिका—भट्टारक चन्द्रकीर्ति सूरि । पत्र सं० १२८ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले०काल सं० १७१० भादवा बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४६ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५०८४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५३ । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५०८५. सारस्वत व्याकरण पंच संधि—अनुभूति स्वरूपाचार्य । पत्रसं० ६ । आ० १०× ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा —संस्कृत । विषय - व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५०८६. सारस्वत वृत्ति—नरेन्द्रपुरी । पत्र संख्या ७० । आ० ११×४$\frac{3}{4}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० ३९८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५०८७. सारस्वत सूत्र— × । पत्रसं० ७ । आ० १२×५ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । **ले०काल सं०** १७२० । पूर्ण । वेष्टन सं० १६१/२६५ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

अन्तिम पुष्पिका इस प्रकार है—इति श्री भारतीकृत सारस्वत सूत्र पाठ संपूर्णम् ।

प्रशस्ति—संवत् १७२० वर्षे पौष सुदी ४ बुधे श्री कोटनगरे आदीश्वरचैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भ० श्री देवेन्द्रकीर्तिदेवा तदाम्नाये आचार्य श्री कल्याणकीर्ति तत्शिष्य ब्र० तेजपालेन स्वहस्तेन सूत्र पाठो लिखितः ।

५०८८. सारस्वत सूत्र—अनुभूतिस्वरूपाचार्य । पत्रसं० ५ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५०८९. प्रति सं० २ । पत्रसं० ३ । ले० काल सं० १८८३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५०९०. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० १६ । आ० १२½×६½ इञ्च । ले०काल सं० ४६-१८५ । वेष्टन सं० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

५०९१. सारस्वत सूत्र— × । पत्रसं० ११ । आ० ६¾×४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११०१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५०९२. प्रति सं० २ । पत्रसं० ६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५०९३. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० २९ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

५०९४. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० ३८ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—३८ से आगे पत्र नहीं है ।

५०९५. सारस्वत सूत्र पाठ— × । पत्र सं० ४ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १६६१ । वेष्टन सं० ६१९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—संवत् १६६१ वर्षे भाद्रपद सुदि १० दिने लिखितं आकोला मध्ये चेला कल्याण लिखितं ।

५०९६. सिद्धांत कौमुदी— × । पत्र सं० १३५ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५०९७. प्रति सं० २ । पत्रसं० १८२ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४१८/१५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५०९८. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० १४ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल सं० १५५० । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

प्रशस्ति—सं० १५५० वर्षे आश्वनि मासे शुक्लपक्षे त्रयोदश्यां तिथौ रविवासरे **घरी** ४६२ भाद्रपदे नक्षत्रे **घरी** ४० व्याघात योगे **घरी** १७ दिनद्वरावलयं लिखितं श्री सिरोही नगरे राउ श्री जगमाल विजय राज्ये पूर्णिमापक्षे कछोलीवालगच्छे **यशःप्रधान** श्रीगुणसिंहसूरिस्तत्पट्टे भ० श्री गुणसागरसूरिस्तत्पट्टे श्री विजयमलसूरीणां शिष्य मुनि लक्ष्मीतिलक लिखितं ।

५०९९. सिद्धांत कौमुदी (कृतन्द आदि)— × । पत्रसं० १–६ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

५१००. सिद्धांतचन्द्रिका—रामचन्द्राश्रम । पत्रसं० ५६ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६४ । **प्राप्ति स्थान**—ट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५१०१. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ८६ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १८२८ द्वितीय आषाढ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५१०२. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० ६८ । आ० १०×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १८८४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५१०३. प्रति सं० ४ । पत्रसं० १२८ । आ० १०×५ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२६३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५१०४. प्रतिसं० ५ । पत्रसं० ५६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १८४७ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १००६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५१०५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६४ । आ० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १७८४ मंगसिर सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३१८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५१०६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६० । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२/३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५१०७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ६६ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १८८५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१ २५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—मुनि रत्नचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

५१०८. प्रतिसं० ९ । पत्र सं० ४५ । आ० ९$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १८८१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

५१०९. प्रतिसं० १० । पत्र सं० ९१ । आ० १०×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २२८ । **प्राप्ति स्थान** पार्श्वनाथ दि० जैन मंदिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—सिद्धान्तचन्द्रिका की तत्वदीपिका नामा व्याख्या है ।

५११०. प्रति सं० ११ । पत्रसं० १०२ । आ० ९$\frac{1}{2}$×४इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—१०२ से आगे के पत्र नहीं है।

५१११. प्रतिसं० १२। पत्र सं० ९१। आ० १०×४½ इञ्च। ले० काल सं० १७६६ मंगसिर सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० २९८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

५११२. प्रतिसं० १३। पत्रसं० ३९। आ० ११×५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। **वेष्टनसं० १५५। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

५११३. प्रति सं० १४। पत्रसं० २-६०। आ० ११×४½ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। **वेष्टनसं० ८६। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

५११४. प्रतिसं० १५। पत्रसं० ७२। आ० १३×५ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २०७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

५११५. प्रति सं० १६। पत्रसं० १६१। आ० ११×४½ इंच। ले० काल सं० १७२१ वैशाख सुदी । पूर्ण। वेष्टनसं० २५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

५११६. प्रति सं० १७। पत्रसं० ५०। आ० ११ × ५ इञ्च। ले०काल ×। वेष्टन सं० २६१ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

५११७. सिद्धांतचन्द्रिका—×। पत्र सं० २५। आ०८½×३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५३१। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

५११८ प्रति सं० २। पत्रसं० ५५। आ० १०½×५ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० १५५२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५११९. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७२। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १५५। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५१२०. प्रति सं० ४। पत्रसं० ४३। आ० १२×५½ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० १५९५। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५१२१. सिद्धान्तचन्द्रिका ×। पत्र सं० २२। आ० १०½ × ४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—व्याकरण। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। **वेष्टनसं० २१३। प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

५१२२. सिद्धान्त चंद्रिका— ×। पत्र सं० २७। आ० ११ × ५½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—व्याकरण। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २५०-१०१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर।

५१२३. सिद्धान्त चन्दिका—×। पत्रसं० ८। आ० १२½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र०काल×। ले० काल। पूर्ण। **वेष्टनसं० ३९। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली।

५१२४. सिद्धान्त चन्द्रिका ×। पत्र सं० ४६। आ० ११½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २१८। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

५१२५. सिद्धान्त चन्द्रिका टीका—सदानंद । पत्रसं० १५२ । आ० ९½ × ४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल- × । ले० काल सं० १८७२ माह सुदी १ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३२८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५१२६. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ९ । आ० १०½ × ५½ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १८९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना बूंदी ।

५१२७. सिद्धान्त चन्द्रिका टीका—× । पत्र सं० ११३ । आ० १२ × ६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल सं० १८७५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

५१२८. सिद्धान्तचन्द्रिका टीका-हर्षकीर्ति । पत्रसं० १०७ । आ० १० × ४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

५१२९. सिद्धहेम शब्दानुशासन—हेमचन्द्राचार्य । पत्रसं० १९ । आ० १०½ × ४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल सं० १६१५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति पत्र १५ पंक्ति तथा प्रतिपंक्ति ६० अक्षर । अक्षर सूक्ष्म एवं सुन्दर है ।

प्रशस्ति—निम्न प्रकार है—

संवत् १६१५ वर्षे भाद्रपद सुदी १ शनौ श्रीमूलसंघे भ० श्री शुभचन्द्रदेवा तत् शिष्योपाध्याय श्री सकल भूषणाय पठनार्थं । इल प्राकार वास्तव्य हुंबड ज्ञातीय गंगाउआ गोत्रे डोभाडा कर्मसी भार्या पूनसिरु सा० मेघराज भार्या पांची ताभ्यां दत्तं मिदं शास्त्र ।

५१३०. सिद्धहेमशब्दानुशासन स्वोपज्ञ वृति—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ७१ । आ० ९ × ४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

५१३१. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १४ । आ० १२ × ४ इंच । ले०काल × । अपूर्ण । **वेष्टनसं०** ३११/५९६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

५१३२. सुबोधिका—× । पत्रसं० ४ से १५४ । आ० १० × ५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय व्याकरण । र०काल × । ले०काल सं० १९४८ ज्येष्ठ सुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टन सं० १३३८ । **प्राप्तिस्थान**-भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५१३३. सूत्रसार—लक्ष्मणसिंह । पत्रसं० २५ । आ० ११ × ५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४२१ । **प्राप्तिस्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५१३४. संस्कृत मंजरी — × । पत्रसं० ६ । आ० १०½ × ५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल सं० १८२० ज्येष्ठ बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—केशरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

विषय--कोश

५१३५. अनेकार्थध्वनि मंजरि—क्षपणक पत्रसं० १०। आ० ६½×४। भाषा-संस्कृत। विषय—कोश। र०काल × । ले०काल सं० १८५६ फागुन सुदी १४। वेष्टन सं० १५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी।

५१३६. अनेकार्थध्वनि मंजरी—× । पत्र सं० २७। आ० ६×६½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—कोश। र० काल × । ले०काल सं० १६०४। पूर्ण। वेष्टन सं० १८५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

५१३७. अनेकार्थध्वनि मंजरी—× । पत्र सं० ८। आ० ६×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

५१३८. अनेकार्थध्वनि मंजरी—× । पत्र सं० १५। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कोष। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २१६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर।

५१३९. अनेकार्थ नाममाला भ० हर्षकीर्ति।। पत्रसं० ५६। आ० ६× ४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—कोश। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० २२५। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

विशेष—दाहिने ओर के पत्र फटे हुये हैं।

५१४०. अनेकार्थ नाममाला— × । पत्र सं० १३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कोष। र०काल × । ले०काल सं० १६४१। पूर्ण। वेष्टन सं० २४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६४१ वर्षे बैशाख सुदी ५ गुरौ श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे भ० सुमतिकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री गुणकीर्ति गुरुपदेशात् भट्टारक श्री ५ पद्मनंदि तत् शिष्य ब्रह्म कल्याण पठनार्थं।

५१४१. अनेकार्थ मंजरी—जिनदास × पत्र सं० १०। आ० ८×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-कोश। र०काल × । ले० काल सं० १८७६ सावन बुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० १३०१। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

५१४२. प्रतिसं० २। पत्रसं० १०। आ० १३×४ इंच। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १०६। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—प्रारम्भ

तुव प्रभु जोति जगत में कारन करन अभेद।
विघ्न हरन सब सुख करन नमो नमो तिहिदेव।

एकै वस्त अनेक है जगमगाति जग धाम ।
जिम कंचन तैं किंकनी कंकन कुंडल दाम ॥२॥
उचरि सकै न संस्कृत श्रौ समझ न समरथ ।
तिन हित गोंद सुमति भाख अनेक अरथ ॥

अन्तिम— इति श्री अनेकार्थ मंजरी नाम भा० नंद कृत ।

५१४३. अनेकार्थ मंजरी—× । पत्रसं० २१ । आ० ८½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

५१४४. अनेकार्थ मंजरी—× । पत्रसं० १५ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल सं० १७८४ माह सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७३ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

५१४५. अनेकार्थ शब्द मंजरी । पत्र सं० ४ । आ० ११×४ इञ्च । **भाषा**-संस्कृत । **विषय**-कोश । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २९०।६२१ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

५१४६. अभिधान चिंतामणि नाममाला—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ५१ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

५१४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८० । आ० ९½×४½ इञ्च । ले० काल सं० १६५१ । वेष्टन सं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—इसे हेमीनाम माला भी कहते है । प्रति स्वोपज्ञ टीका सहित हैं प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६५१ वर्षे माघ सुदी ६ चन्द्रवासरे लिखितं मुनि श्री कृष्णदास । मुनि श्री वर्द्धमान लिखितं श्री अणिहिल्लपुरपत्तनमध्ये लिखितं । भद्र भवतु सामन्तपागच्छे उपाध्याय श्री ७ शांतिचन्द्र लिखापितं ।

५१४८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५७ । आ० १२×४½ इञ्च । ले० काल × । **पूर्ण** । वेष्टन सं० ६३-३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—कठिन शब्दों के अर्थ दिये हुये हैं ।

५१४९. प्रति सं० ४ । पत्रसं० १३७ । आ० १०½×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—दूसरा पत्र नहीं है । जोशी गणेशदास के पुत्र तुलसीदास ने नागपुर में प्रतिलिपि की थी । प्रति सटीक है ।

५१५०. प्रतिसं० ५ । पत्रसं० ११-१६२ । आ०९½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २१०।६४ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—सारोद्धार नाम की टीका वाचनाचार्य वादी श्री वल्लभ गणि की है जिसको सं० १६६७ में लिखा गया था ।

५१५१. प्रतिसं० ६ । पत्रसं० ११ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६४ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

५१५२. **अभिधासनार संग्रह**—× । पत्र सं० ६४ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । र०काल × । ले०काल सं० १६४० माघ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

५१५३. **अमरकोश—अमरसिंह** । पत्र सं० ११ । आ० ११½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३३० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—इस मन्दिर में अमरकोश की ६ प्रतियां और है ।

५१५४. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १६५ । आ० १०×४ इंच । ले०काल सं० १७२१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६२६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति सटीक है ।

५१५५. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० १८७ । ले०काल । अपूर्ण । वेष्टन सं० १६३० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति सटीक है ।

५१५६. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० १७४ । आ० ६×६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२६-६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—ज्योतिषसार ग्रन्थ और है जिसका वे० सं० २३०-६२ है पत्र सं० भी इसी में है ।

५१५७. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० ७७ । आ० १०×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५१५८. **प्रति सं० ६** । पत्रसं० २-६० । आ० ८×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १५१-६८ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५१५९. **प्रतिसं० ७** । पत्र सं० १० । आ० ११× ४ इञ्च । ले० काल सं० १८४३ माघ बुदी ५ । अपूर्ण । वेष्टन सं० २०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

५१६०. **प्रतिसं० ८** । पत्र सं० २-१४ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

५१६१. **प्रति सं० ९** । पत्र सं० ९८ । आ० ११×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

५१६२. **प्रति सं० १०** । पत्र सं० ४२ । आ० ९×५½ इञ्च । ले० काल × । दूसरे कांड तक पूर्ण । वेष्टन सं० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

५१६३. **प्रतिसं० ११** । पत्र सं० ३३ । आ० ८ × ४½ इञ्च । ले०काल सं० १८२३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

५१६४. **प्रति सं० १२** । पत्र सं० १५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६८ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

५१६५. **प्रति सं० १३** । पत्र सं० ५१ । आ० ११×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर अलवर ।

विशेष—सागारधर्मामृत पत्र ३६ अपूर्ण तथा दर्शन पाठ पत्र २४ इसके साथ और है ।

५१६६. **प्रति सं० १४** । पत्र सं० ३-६६ । आ० ६½×४½ इञ्च । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर ।

५१६७. **प्रतिसं० १५** । पत्रसं० ६२ । आ० १०½ ×५½ इञ्च । ले०काल सं० १८५० चैत बुदी १४ । पूर्ण वे० सं० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ ।

५१६८. **प्रतिसं० १६** । पत्रसं० २६ । आ० १०½× ५ इञ्च । ले०काल सं० १८६६ ज्येष्ठ बुदी २ । पूर्ण ।वेष्टनसं० १६२ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ ।

विशेष—केवल प्रथम काण्ड ही है ।

५१६९. **प्रति सं० १७** । पत्र सं० ४३–८३ । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

५१७०. **प्रतिसं० १८** । पत्र सं० १०३ । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १७५ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—इस मन्दिर में २ प्रतियां और हैं ।

५१७१. **प्रति सं० १९** । पत्रसं० २७ । आ० ६×५½ इञ्च । ले०काल सं० १८७६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०१ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर कोटयों का नैणवा ।

५१७२. **प्रतिसं० २०** । पत्र सं० ११–३४ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

५१७३. **प्रतिसं० २१** । पत्रसं० ८६ । आ० १० × ६½ इञ्च । ले०काल सं० १६६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—पं० सेवाराम ने श्रावक मुमानीराम रांवका से सवाई माधोपुर में प्रतिलिपि करवाई थी ।

५१७४. **प्रति सं० २२** । पत्र सं० ३२ । आ० ११×६ इञ्च । ले० काल सं० १६३७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नागदी बूंदी ।

५१७५. **प्रति सं० २३** । पत्र स० ३०–८५ । आ० ६×६ इञ्च । ले० काल सं० १८६६ । अपूर्ण । वेष्टन सं० २६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—बूंदी में प्रतिलिपि हुई थी ।

५१७६. **प्रतिसं० २४** । पत्रसं० १६५ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ कोगान बूंदी ।

५१७७. **प्रतिसं० २५** । पत्र सं० २३ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले० काल सं० १८७३ । वेष्टन सं० २२१ । प्रथम काण्ड तक । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि की गई थी । इस मन्दिर में ८ प्रतियां और हैं ।

५१७८. **प्रति सं० २६।** पत्र सं० १३०। आ० १०½×५ इञ्च। ले० काल सं० १८४४ चैत्र बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० २५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—जयपुर में लश्कर के मन्दिर में पंडित केशरीसिंह ने अपने शिष्य लालचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

५१७९. **प्रति सं० २७।** पत्र सं० १६६। आ० १२×५ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

प्रति टीका सहित है।

५१८०. **प्रति सं० २८।** पत्र सं० ६०। आ० १२×५ इंच। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ८०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी।

विशेष—द्वितीय खण्ड से है। टीका सहित है।

५१८१. **प्रति सं० २९।** पत्र सं० सं० १६। आ० १२½×५½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

५१८२. **उद्धारकोश**—**दक्षिणामूर्ति मुनि।** पत्र सं० १८। आ० ११×८ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—कोष। र० काल ×। ले० काल सं० १८३७। पूर्ण। वेष्टन सं० ५४९। **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मंदिर अजमेर।

विशेष—इति दक्षिणामूर्ति मुनिना विरचिते उद्धारकोशे सकलागमसूरि दशदेवी सप्तकुमार नवग्रह शिष्यदेविध्यान निर्णयो नामसप्तमकल्पः।

५१८३. **एकाक्षरी नाममाला**— ×। पत्र सं० २। आ० ९½×४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—कोश। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११९०। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—दूसरा पत्र फटा हुआ है।

५१८४. **प्रति सं० २।** पत्र सं० २। आ० १०½×४½ इञ्च। ले० काल सं० १९७१। पूर्ण। वेष्टन सं० २०८। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५१८५ **प्रति सं० ३।** पत्र सं० २। आ० १०½×५ इंच। ले० काल सं० १९८१। वेष्टन सं० ३०५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर।

विशेष—सांगानेर में प्रतिलिपि की गयी थी।

५१८६. **प्रति सं० ४।** पत्र सं० २। आ० १२×५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ७०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

५१८७. **एकाक्षर नाममालिका**—**विश्वशंभु।** पत्र सं० ४। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—कोश। र० काल ×। ले० काल ×। वेष्टन सं० ३०१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

५१८८. **प्रति सं० २।** पत्र सं० ९। आ० १०½×५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३०२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

५१८९. प्रति सं० ३ । पत्रसं० ७ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल १८५५ ज्येष्ठ बुदी ८ । वेष्टन सं० ३०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५१९०. एकाक्षरनामा— × । पत्रसं० ६ । आ० १३½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११५/११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

५१९१. त्रिकाण्ड कोश—पुरुषोत्तमदेव । पत्रसं० ४६ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय--कोश । र०काल × । ले०काल × । वेष्टनसं० ३०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५१९२. धनंजयनाममाला--कवि धनंजय । पत्र सं० १३ । आ० ९×४ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय—कोश । र०काल × । ले० काल सं० १८०९। पूर्ण । वेष्टन सं० १४५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५१९३. प्रति सं० २ । पत्रसं० १६ । आ० ११×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६२८ । **प्राप्ति स्थान**--भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५१९४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । आ० १०×५½ इञ्च । ले०काल सं० १८५१ पौष बुदी १ । पूर्ण । वेष्टनसं० १९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ ।

५१९५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३-१९ । आ० ७×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६४-१४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५१९६. प्रति सं० ५ । पत्रसं० २४ । आ० १३×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २६८-१०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५१९७. प्रति सं० ६ । पत्रसं० १३ । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल सं० १८४४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८४-४४ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

प्रशस्ति—सं० १८४४ का मासोत्तम मासे शुक्लपक्षे तिथौ ७ भोमवासरे लिपीकृतं तुलाराम । शुभं भवतु पठनार्थं पंडित सेवकराम शुभं भवतु ।

५१९८. प्रति सं० ७ । पत्रसं० १८ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १६४६ । पूर्ण । वेष्टनसं० २३७-९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

प्रशस्ति—संवत् १६४६ वर्षे चैत्र सुदि २ गुरु श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० रत्नकीर्ति देवा त० मंडलाचार्य भ० श्री जशकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री गुणचन्द्र राजे तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री जिनचन्द्र गुरुनदेशात् सागवाडा नगरे हुंबड ज्ञातीय भागलीया ...व० सिंघ जी ।

५१९९. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २० । आ० ११×४ इञ्च । ले० काल सं० १५८७ आसोज बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० २४८ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

५२००. प्रति सं० ९ । पत्रसं० १५ । आ० ९½× ६ इञ्च । ले०काल सं० १८१४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३९ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

५२०१. प्रति सं० १० । पत्र सं० १ से ४६ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २३ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन पंचायती मन्दिर डीग ।

५२०२. **प्रतिसं० ११** । पत्रसं० ११ । आ० १२$\frac{१}{२}$ × ५$\frac{१}{२}$ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७ । **प्राप्ति स्थान**— छोटा दि० जैन मंदिर बयाना ।

५२०३. **प्रतिसं० १२** । **पत्रसं०** १३ । **आ०** १०$\frac{१}{२}$ × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८ । **प्राप्तिस्थान**–दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

५२०४. **प्रति सं० १३** । पत्र सं० २४-३३ । आ० १२$\frac{१}{२}$ × ६ इञ्च । ले० काल × । **अपूर्ण** । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर कामा ।

५२०५. **प्रति सं० १४** । पत्र संख्या १३ । आ० १२ × ५$\frac{१}{२}$ । ले०काल × । वेष्टन सं० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

५२०६. **प्रतिसं० १५** । पत्र सं० १० । आ० ९$\frac{१}{२}$ × ५$\frac{१}{२}$ इञ्च । ले० काल सं० १७९९ । वेष्टन सं० २१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५२०७. **प्रतिसं० १६** । पत्रसं० १५ । आ० १० × ५ इञ्च । ले०काल सं० १६१६ आसोज सुदी ७ । वेष्टन सं० २१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—पं० डूंगर द्वारा प्रतिलिपि की गई थी । सम्वत् १६१६ वर्षे आश्विन सुदी सप्तम्यां लिखितं पं० डूंगरेण ।

५२०८. **प्रति सं० १७** । पत्र सं० १७ । आ० ९ × ४$\frac{१}{२}$ इञ्च । ले०काल सं० १८१४ । पूर्ण । वेष्टनसं० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

५२०९. **प्रतिसं० १८** । पत्र सं० १६ । आ० ९$\frac{१}{२}$ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १८७५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

५२१०. **प्रतिसं० १९** । पत्र सं० १८ । आ० १० × ४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—मालपुरा में लिखा गया था ।

५२११. **प्रतिसं० २०** । पत्रसं० १५ । आ० १०$\frac{१}{२}$ × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूंदी ।

५२१२. **प्रति सं० २१** । पत्र सं० १७ । आ० ९$\frac{१}{२}$ × ४ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

५२१३. **प्रतिसं० २२** । पत्रसं० ४६-१०१ । आ० १०$\frac{१}{२}$ × ४ इञ्च । ले०काल सं० १७५० श्रावण बुदी ११ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी ।

५२१४. **प्रतिसं० २३** । पत्र सं० १२ । आ० ९ × ४ इञ्च । ले०काल सं० १७३७ । पूर्ण । वेष्टनसं० ९४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौयान, बूंदी ।

विशेष—सं० १७३७ वर्षे मासोत्तममासो पोषमासे कृष्णपक्षे सप्तमी तिथौ पुनाली ग्रामे मुनि सुगण हर्ष पठन कृते । विश्वा हर्षेण लेखिता ।

५२१५. **प्रतिसं० २४** । पत्र सं० ९ । आ० ११ × ४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

५२१६. प्रतिसं० २५ । पत्र सं० १३ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ५०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

५२१७. प्रतिसं० २६ । पत्र सं० ५७ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

५२१८. नाममाला—नन्ददास । पत्र सं० ३० । भाषा—हिन्दी । विषय—कोश । र०काल × । लेखन काल सं० १८४८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

५२१९. नाममाला—हरिदास । पत्र सं० ३ । आ० [illegible] । भाषा—हिन्दी विषय—कोश । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ कोटा ।

५२२०. नाममाला—बनारसीदास । पत्रसं० ६ । आ० १२×५½ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कोश । र०काल सं० १६७० आसोज सुदी १० । ले० काल सं० १८६१ प्र० चैत बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

५२२१. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १२ । आ० १०×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा ।

विशेष—नाममाला तक पूर्ण है तथा अनेकार्थ माला अपूर्ण है ।

५२२२. नामरत्नाकर— × । पत्रसं० ६१ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कोश । र०काल सं० १७८६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६७८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५२२३. नाममलिंगानुशासन—आ० हेमचन्द्र । पत्र सं० ८६ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८४४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५२२४. प्रति सं २ । पत्रसं० १२० । आ० १०½× ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३९२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५२२५. नाममलिंगानुशासन वृत्ति— × । पत्र सं० १३ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

५२२६. नाममलिंगानुशासन—अमरसिंह । पत्र सं० १४४ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोष । र०काल × । ले०काल सं० १८०५ आसोज सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—कालाडेहरा में साह दौलतराम ने श्री अनन्तकीर्ति के शिष्य उदयराम को भेंट में दी थी ।

५२२७. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ११४ । आ० ६× ४ इञ्च । ले०काल सं० १८२७ वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४५२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—तृतीय खंड तक है।

५२२८. **पाणिनीयलिंगानुशासन वृत्ति**— × । पत्रसं० १६ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । र०काल × । ले० काल सं० १६६ .....। पूर्ण । वेष्टन सं० २७१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५२२९. **मान मंजरी—नन्दवास** । पत्रसं० २० । आ० ६×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–कोष । र०काल × । ले० काल सं० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

५२३०. **लिंगानुशासन (शब्द संकीर्ण स्वरूप)—धनंजय** । पत्र सं० २३ । भाषा–संस्कृत । विषय–कोष । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८०/५६८ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—इति श्री धनंजयस्य कृतौ निघंटसमये शब्दसंकीर्णस्वरूपे निरुपणो द्वितीय परिच्छेद समाप्तः । मु० श्री कल्याण कीर्तिमिदं पुस्तक ।

प्रति प्राचीन है ।

५२३१. **लिंगानुसारोद्धार**— × । पत्र सं० १० । भाषा–संस्कृत । विषय—कोश । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८१/५६४ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । लिपि सूक्ष्म है । पं० सूरचन्द ने प्रतिलिपि की थी । सं० तेजपाल की पुस्तक है ।

५२३२. **वचन कोश - बुलाकीदास** । पत्र सं० २५२ । आ० १५½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कोश । र० काल सं० १७३७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूंदी ।

५२३३. **प्रति सं० २** । पत्र सं० २८२ । आ० ६×५½ इञ्च । ले०काल सं १८५६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७३-१११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५२३४. **वैदिक प्रयोग**— × । पत्र सं० ६ । आ० ६ × ४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । र० काल × । ले० काल सं० १५५७ आषाढ बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ११७ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

विशेष—पं० जैसा लिखितं ।

५२३५. **शब्दकोश—धर्मदास** । पत्रसं० ६ । आ० ६½ × ६½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय–कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—प्रारम्भ—

सिद्धौषधानि भवदुःखमहागदानां,
पुण्यात्मनां परमकर्णरसायनानि ।
प्रक्षालनैक सलिलानि मनोमलानां,
सिद्धोदने प्रवचनानि चिरं जयन्ति ॥१॥

५२३६. शब्दानुशासनवृत्ति— × । पत्रसं० ५७ । आ० ११½ × ३½ इञ्च । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन सं० २११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

५२३७. शारदीयनाममाला—**हर्षकीर्ति** । पत्र सं २५ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं १३५४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५२३८. सिद्धांतरत्न शब्दानुशासन—× । पत्रसं० ३७ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । **भाषा**-संस्कृत । विषय—कोश । र० काल × । ले० काल सं० १८८४ वैशाख बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५२३९. हेमीनाममाला—**हेमचन्द्राचार्य** । पत्र सं० २-४१ । आ० १०½ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विषय--ज्योतिष, शकुन एवं निमित्त शास्त्र

५२४०. **अरहंत केवली पाशा**— × । पत्रसं० ६ । आ० ६ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १६७६ माघ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

५२४१. **अरहंत केवली पाशा**— × । पत्र सं० ४१ । आ० ८ × ६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १६१७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्री महावीर बूंदी ।

५२४२. **अरिष्टाध्याय**— × । पत्रसं० ७ । आ० ११½ × ५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० १३४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५२४३. **अष्टोत्तरीदशाकरण**— × । पत्रसं० ४ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११२८ । **प्राप्ति स्थान**— भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५२४४. **अहर्गण विधि**— × । पत्र सं० २ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

५२४५. **अंगस्पर्शन**— × । पत्रसं० १ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८१६ । वेष्टन सं० ३३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५२४६. **अंगविद्या**— × । पत्रसं० १ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ३२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

५२४७. **अंतरदशावर्णन**— × । पत्रसं० १०-१५ । आ० १० × ५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

५२४८. **आशाधर ज्योतिर्ग्रंथ—आशाधर** । पत्र सं० २ । आ० १२ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६४/५५२ । **प्राप्ति स्थान**— संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—अन्तिम भाग निम्न प्रकार है ।

आसीद्दृष्टि संनिहितादिवासी, श्रीमुद्गलो ब्रह्मविदांवरीष्टः ।
तस्यान्वयो वेद विदांवरीष्ट श्रीभानुनामारविवत् प्रसिद्धः ॥१६॥
तस्योत्पन्नप्रथमतनयो विष्णुरणामा मनीषी ।
वेदे शास्त्रे प्रतिहतमतिस्तस्य पुत्रो बभूवः ।

श्रीवत्साख्यो धनपतिरसौ कल्पवृक्षोपमान ।
तस्यैकोभूत प्रवरतनयो रोहिताख्यासुविद्वान् ॥१७॥
तस्याऽभूनुर्गणकाब्जभानुराशाधरो विष्णुपदांबुरक्तः ।
सदोत्तमांगं कुरुते सचेदं चकार दैवज्ञ हिताय शास्त्र ॥

हृदयाशाधरोज्योतिर्ग्रंथ समाप्तः ।

५२४९. कष्ट विचार— × । पत्र सं० २ । आ० ११½ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—जिस वार को बीमार पड़े उसका विचार दिया हुआ है ।

५२५०. कालज्ञान— × । पत्र सं० १६ । आ० १०×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल टोंक ।

विशेष—प्रति सटीक है ।

५२५१. कुतूहलरत्नावली—कल्याण । पत्र सं० ६ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१३/६५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

५२५२. केशवी पद्धति—श्री केशव दैवज्ञ । पत्र सं० ५२ । आ० ६½ × ५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०३ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

५२५३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । आ० ९½ × ५ इञ्च । ले०काल सं० १८७८ चैत बुदि ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

केवल प्रथम सर्ग है ।

५२५४. कोणसूची— × । पत्र सं० २ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १९९/५५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

५२५५. गणपति मुहूर्त्त—राव्रल गणपति । पत्र सं० १०७ । आ० ११×५⅜ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले०काल सं० १८५१ आषाढ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

५२५६. गणिततामचाला—तुरिदास । पत्र सं० ७ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—सूर्यग्रह अधिकार तक है ।

५२५७. गर्ग मनोरमा—गर्गऋषि । पत्र सं० ८ । आ० ९ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५२५८. **गर्भचक्रवृत**— × । पत्रसं० १४ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३२ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

५२५९. **गुणघटित विचार**— × । पत्र सं० ६ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

५२६०. **गौतम पृच्छा** – × । पत्र सं० १० । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । रचना काल × । ले० काल सं० १७८० । पूर्ण । वेष्टन सं० ५०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

५२६१. **ग्रहपंचवर्णन**— × । पत्रसं० २ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

५२६२. **ग्रहभाव प्रकाश**— × । पत्र सं० ५ । आ० १३½ × ५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १९८/५५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

५२६३. **ग्रहराशिफल**-- × । पत्र सं० २ । भाषा संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल सं० १७६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १९५.५५३ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

५२६४. **ग्रहलाघव**—**गणेशदैवज्ञ** । पत्र सं० २१ । आ० १० × ५¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५२६५. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८३० । **पूर्ण** । वेष्टन सं० २७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—पुस्तक दूसरसी की है । एक प्रति अपूर्ण और है ।

५२६६. **ग्रहलाघव**– **देवदत्त (केशव आत्मज)** । पत्र सं० १३ । आ० ९¾ × ४¾ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १९८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ ।

५२६७. **ग्रहलाघव**— × । पत्रसं० १६ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

५२६८. **प्रति सं० २**—× । पत्र सं० ३ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले० काल × । वेष्टनसं० ६८४ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५२६९. **ग्रहणविचार**-- × । पत्र सं० २ । आ० ११½ × ५½ इंच । **भाषा**—हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । **वेष्टनसं०** ६८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५२७०. **चमत्कार चिंतामणी—नारायण।** पत्र सं० ११। आ० ११$\frac{3}{8}$ × ५$\frac{1}{8}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १०६६। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५२७१. **प्रति सं० २**। पत्रसं० ६। आ० ६×४ इञ्च। ले० काल सं० १८३४ मंगसिर सुदी ३। पूर्ण। वेष्टनसं० १११७। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—अजयगढ़ में पं० गोपालदास ने प्रतिलिपि की थी।

५२७२. **चमत्कार चिन्तामणि**— ×। पत्रसं० ११। आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। वेष्टन सं० ३२३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

५२७३. **प्रति सं० २**। पत्रसं० ६। आ० ६×५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० २३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

५२७४. **चमत्कारफल**— ×। पत्रसं० ६। आ० १०×५ इञ्च। **भाषा**—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—विभिन्न राशियों का फल दिया हुआ है।

५२७५. **चन्द्रावलोक**— ×। पत्र सं० १२। आ० ६×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १८८६ कार्तिक बुदी २। पूर्ण। वेष्टनसं० १४०२। **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मंदिर अजमेर।

५२७६. **प्रति सं० २**। पत्रसं० १-११। आ० ११$\frac{1}{2}$×६ इञ्च। ले० काल ×। **वेष्टनसं०** ७००। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर।

५२७७. **चन्द्रावलोक टीका—विश्वेसर अपरनाम गंगाभट्ट**। पत्र सं० १३०। भाषा—संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १८९५। पूर्ण। वेष्टन सं० ७६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—बलवन्तसिंह के राज्य में प्रतिलिपि हुई थी।

५२७८. **चन्द्रोदय विचार**— ×। पत्रसं० १-२७। आ० ६$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मंदिर बयाना।

५२७९. **चौघडिया निकालने की विधि**— ×। पत्रसं० ४। आ० १०×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक।

५२८०. **छींक दोष निवारक विधि**— ×। पत्र सं० १।। भाषा—हिन्दी। विषय—ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ६७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

५२८१. जन्मकुण्डली— × । पत्र सं० ७। आ० १०×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल–× । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६४-१४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर ।

५२८२. जन्मकुण्डली ग्रह विचार— × । पत्र सं. १ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—खंडेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

५२८३. जन्म जातक चिन्ह— × । पत्र सं० ६ । आ० ७½×६इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १६४६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, चौगान बूंदी ।

विशेष—सागवाडा का ग्राम सुदारा में प्रतिलिपि हुई थी ।

५२८४. जन्मपत्री पद्धति— × । पत्रसं० ४८ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—दयाचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

५२८५. जन्मपत्री पद्धति— × । पत्रसं० १० । आ० १०×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय –ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५२८६. जातक—नीलकंठ । पत्र सं० ३६ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

५२८७. जातकपद्धति—केशव दैवज्ञ । पत्र सं० १६ । आ० ११½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल सं० १७८८ चैत सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७४ । **प्राप्ति स्थान**—अ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५२८८. प्रति सं० २ । पत्रसं० १४ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

५२८९. जातक संग्रह— × । पत्रसं० ६ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले०काल सं० १६४८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५२९०. जातकाभरण—**डूंगरराज दैवज्ञ** । पत्र सं० ८३ । आ० ८½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल सं० १८६८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—डूंगरसीदास ने नेमिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी । ग्रंथ का नाम जातक-माला भी है ।

५२९१. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ८९ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १७८९ मंगसिर बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

५२९२. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० १३ । आ० १२×६ इञ्च । ले०काल सं० १८७८ भादवा बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनसं० ११७ ५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५२९३. जालकालंकार— × । पत्र सं० १७ । आ० ९$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १९०३ चैत सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४०३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५२९४. प्रतिसं० २ । पत्र सं० २० । आ० ८$\frac{3}{4}$×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल सं० १९१६ सावन बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० १०६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५२९५. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० १४ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

५२९६. जोग विचार— × । पत्रसं० १९ । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३९७-१४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५२९७. ज्ञानलाधणी— × । पत्र सं० २-८ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४५२/२६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

५२९८. ज्ञानस्वरोदय—चरनवास । पत्र सं० १९ । आ० ९×४ इंच । **भाषा**—संस्कृत । विषय—शकुन शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ स्वामी, मालपुरा (टोंक)

५२९९. ज्योतिविद्याफल— × । पत्रसं० ३ । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १९६/५५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

५३००. ज्योतिषग्रंथ—भास्कराचार्य । पत्र सं० १२ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

५३०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३३×२० । आ० ९$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल० × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०१-४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—ज्योतिषोत्पत्ति एवं प्रश्नोत्पत्ति अध्याय हैं ।

५३०२. ज्योतिषग्रंथ— × । पत्र सं० ४ । आ० १०×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मंदिर दौसा ।

५३०३. ज्योतिषग्रंथ— × । पत्र सं० १६ । आ० ११ × ५ इंच । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

५३०४. प्रतिसं० २ । पत्रसं० २-१० । आ० १०× ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

५३०५. ज्योतिषग्रन्थ भाषा—कायस्थ नाथूराम । पत्रसं० ४० । आ० १२ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । **विशेष**—ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

५३०६. ज्योतिष रत्नमाला—वेणीराम । पत्रसं० ७६ । आ० ८ × ५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । **विशेष**—ज्योतिष । र०काल × । ले०काल सं० १८०६ । पूर्ण । वेष्टनसं० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

५३०७. ज्योतिष रत्नमाला—श्रीपतिभट्ट । पत्रसं० ८-२३ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । **विशेष**—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है ।

५३०८. प्रति सं० २ । पत्रसं० ११० । आ० ६½ × ४½ इंच । ले०काल सं० १८४७ । पूर्ण । वेष्टनसं० १५५ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

५३०९. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० ३२ । आ० १२ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १७८९ माघ बुदी १३ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

५३१०. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० ७४ । आ० १०½ × ५½ इंच । ले० काल सं० १८४८ ज्येष्ठ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३१ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)

विशेष---प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

५३११. ज्योतिष रत्नमाला टीका—पं० वैजा मूलकर्त्ता पं० श्रीपतिभट्ट । पत्रसं० ११६ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय ज्योतिष । र०काल × **ले०काल** स० १५१६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

अन्तिम पुष्पिका · ज्योतिषरत्नमालाविप्रवरश्रीपतिमध्येय तस्यासटीका प्रकटार्थ युक्ता दिनमिमिवाङ्काणवीजागोधान्वये धान्य इति प्रसिद्धो गोत्रयभूत्राखिलशास्त्रवेत्ता सोमेश्वर चं गुरु हस्तु वैजा बालावबोध सचकार टीकां । इति श्री श्रीपति भट्ट विरचितायां ज्योतिष पंडित वैजाकृत टीकायां प्रतिष्ट प्रकरणानि शर्त प्रकरण समाप्त ।

प्रशस्ति—संवत् १५१६ प्रवर्तमाने षष्टाढ्योर्न मध्ये सोभन नाम संवत्सरे ।। संवत् १६५१ वर्षे चैत सुदी प्रति पदा १ शनिवारे चंपावती कोटातु मध्ये लिखितं अकबर राज्ये लिखितं पारासर गोत्रे पं० खेमचंद आत्मज पुत्र पठनार्थं मोहन लिखितं ।

५३१२. ज्योतिष शास्त्र—हरिभद्रसूरि । पत्र सं० ५६ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं० १०६४ । प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३१३. ज्योतिष शास्त्र—चिंतामणि पंडिताचार्य । पत्र सं० २६ । आ० ११ × ७ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५३१४. ज्योतिष शास्त्र—× । पत्र सं० १० । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५३१५. ज्योतिष शास्त्र × । पत्र सं० १३ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १११६ । **प्राप्ति स्थान**–भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३१६. ज्योतिष शास्त्र— × । पत्रसं० ६ । आ० ६×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा--संस्कृत । विषय--ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । आ०६$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४३६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३१८. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० ११ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०६१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३१९. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० १६ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । **ले०काल सं० १८३१** श्रावण सुदी ८ । **वेष्टन सं० ३३०** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

५३२०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५ । आ० ११ × ४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६१ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

५३२१. प्रतिसं० ६ । पत्र सं० ८ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १८८५ कार्ती सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—२ प्रतियों का सम्मिश्रण है । नागढ़ नगर में प्रतिलिपि हुई थी ।

५३२२. ज्योतिषसार—नारचन्द्र । पत्र सं० ७ । आ० १$\frac{1}{2}$ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी ।

५३२३. प्रतिसं० २ । पत्र सं० १४ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११३१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३२४. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० ७ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल सं० १८१८ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५३२५. ज्योतिष सारणी— × । पत्रसं० २६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल सं० १८८५ भादवा सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२३५ । **प्राप्ति स्थान**--भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३२६. ज्योतिषसार संग्रह—मुंजादित्य । पत्रसं० १६ । आ० ८ × ३$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल सं० १८५० आषाढ़ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४७३ । **प्राप्ति स्थान**--भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३२७. **ताजिकसार—हरिभद्रगणि** । पत्र सं० ४० । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल सं० १८५४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५३२८. **प्रतिसं० २** । पत्र संख्या ३२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७९ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है ।

५३२९. **ताजिक ग्रंथ—नीलकंठ** । पत्र सं० २९ । आ० ८½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

५३३०. **ताजिकालंकृति –विद्याधर** । पत्रसं० १२ । आ० ८ × ६ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १७६३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—विद्याधर शोपान के पुत्र थे ।

५३३१. **तिथिदीपकयन्त्र**— × । पत्रसं० ६५ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-गणित (ज्योतिष) । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २३ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

५३३२. **तिथिसारिणी**— × । पत्र सं० ११ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५३३३. **दिनचर्या गुह्यगम कुतूहल—भास्कर** । पत्रसं० ७ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५४८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५३३४. **दिन प्रमाण** -- × । पत्र सं० १ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ३१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५३३५. **घुघडिया मुहूर्त्त**— × । पत्रसं० ८ । आ० ६× ४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल । ले०काल सं० १८६३ श्रावण बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० २०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—इति श्री शिवा लिखितं घुघडयो मुहूर्त्त ।

५३३६. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८२० श्रावण । बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

५३३७. **दोषावली**— × । पत्रसं० २ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले०काल सं० १८७३ जेठ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७/२८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—साहीसेडा में लिखी गई थी।

५३३८. द्वादशराशि संक्रातिफल— × । पत्र सं० ७ । आ० ११ × ४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५३३९. द्विग्रह योगफल— × । पत्र संख्या १ । आ० ११½ × ५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५३४०. नरपति जयचर्या—नरपति । पत्र सं० ५३ । आ० १०×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल सं० १५२३ चैत सुदी १४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५९-१३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५३४१. नक्षत्रफल— × । पत्र सं० २ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ३१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५३४२. नारचन्द ज्योतिष—नारचन्द । पत्र सं० १४ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १६४७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०६७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १३४७ वर्षे आसु विदि ८ दि० प्रति लीधी । पातिसाह श्री अकबर विजइराजे । मेडता मध्ये महाराजि श्री बलिभद्र जी विजइराज्ये ।

५३४३. प्रतिसं०२ । पत्र सं० ३ । आ० १०× ४½ इंच । ले०काल सं० १६९९ कार्तिक बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३२९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३४४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २३ । आ० ९×३½ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६७५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३४५. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० ३१ । ले०काल× । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

विशेष—देवगढ़ में प्रतिलिपि हुई थी ।

५३४६. प्रति सं० ५। पत्रसं० २२ । आ० १०½×५ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—एक अपूर्ण प्रति और है ।

५३४७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २-७२ । आ० १०½ × ४ इंच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—प्रति सटीक है ।

५३४८. प्रतिसं० ७ । पत्र सं० २२ । आ० ९½ × ४½ इंच । ले० काल सं० १७४६ फाल्गुन ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १९९ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर छन्दरगढ (कोटा) ।

५२४९. **प्रति सं० ८**। पत्र सं० ३३। आ० ११ × ८½ इञ्च। ले० काल सं० १७१६ आसोज सुदी १३-८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

५३५०. **निमित्तशास्त्र**— × । पत्र सं० १–१२। आ० १०½ + ४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ७३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

५३५१. **नीलकंठ ज्योतिष—नीलकंठ**। पत्रसं० ५। आ० ८½ × ४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय—ज्योतिष। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

५३५२. **नैमित्तिक शास्त्र— भद्रबाहु**। पत्रसं० ५७। आ० ११ ½ × ४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय—ज्योतिष। र०काल × । ले०काल सं० १९८०। पूर्ण। वेष्टन सं० ३७। **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन पचायती मन्दिर कामा।

५३५३. **पंचदशाक्षर—नारद**। पत्रसं० ५। आ० ९, × ४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ७५०। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

५३५४. **पंचांग**— × । पत्र सं० ५६। आ० ११ × ७ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर कामा।

विशेष—सं० १९४६ से ४९ तक के है ४ प्रतियां है।

५३५५. **सं० १८६०**। पत्र सं० १२। आ० १०½ × ५½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १६८। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मंदिर बोरसली कोटा।

५३५६. **पंचाङ्ग**— × । पत्र सं० ९। आ० ९ × ६½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय – ज्योतिष। र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन ५४। **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन तेरहपंथी मंदिर दौसा।

५३५७. **पंचाग**— × । पत्रसं० १२। आ० ७½ × ५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय–ज्योतिष। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—सं० १९१६ का पंचांग है।

५३५८. **पंचाशत् प्रश्न—महाचन्द्र**। पत्रसं० ६। आ० ७½ × ३½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल × । ले०काल सं० १८२४ आसोज बुदी १४। पूर्ण। वेष्टनसं० ४२९। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५३५९. **पंथराह शुभशुभ** × । पत्र सं० २। आ० १३ × ४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र०काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० ३२२ ।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

५३६०. **पत्यविचार**— × । पत्र सं० ३। आ० ८½ × ५ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय–ज्योतिष। र० काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २१०। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५३६१. **पत्य विचार**—× । पत्रसं० २ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । **वेष्टनसं०** ३१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—चित्र भी है।

५३६२. **प्रति सं० २** । पत्र सं० २ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१९ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५३६३. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० १ । आ० ९ × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ३२१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

५३६४, **पाराशरी टीका**—× । पत्र सं० ७ । आ० ९×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४०५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३६५.**पाशा केवली**— **गर्गमुनि** । पत्र सं० २३ । आ० १०¾×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले० काल सं० १८४३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—नेमिनाथ जिनालय लश्कर, जयपुर के मन्दिर में झाबूराम ने प्रतिलिपि की थी ।

५३६६.—**प्रति सं० २** । पत्र सं० १० । आ० १०¾×५ इञ्च । ले० काल सं० १९०१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५३६७. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० ११। १०¾आ०×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५३६८. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० ६ । आ० ४×४½ इञ्च । ले०काल सं० १८२३ । **पूर्ण** । वेष्टनसं० १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

५३६९. **प्रति सं० ५** । पत्रसं० १० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २९-५५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

५३७०. **प्रति सं० ६** । पत्रसं० ८ । आ० ९×४ । ले०काल × । पूर्ण ।वेष्टन सं० २८५ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

५३७१. **प्रतिसं० ७** । पत्रसं० १४ । आ० १२×४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०९ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

५३७२. **प्रति सं० ८** । पत्रसं० १९ । आ० ११ × ४½ इञ्च । ले०काल सं० १८१७ आसोज सुदी ५। पूर्ण । वेष्टन सं० १०/४८ ।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इंदरगढ़ (कोटा)

५३७३. **पाशाकेवली**—× । पत्र सं० ४ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले० काल सं० १८२४ आसोज बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १११ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष--पंडित परमसुख ने चौमू नगर में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

५३७४. **प्रतिसं०** २ । पत्रसं० १६ । ले०काल सं० १६४० पौष बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १११२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५३७५. **प्रतिसं०** ३ । पत्र सं० १० । आ० ६½×४ इञ्च । ले०काल सं० १८२८ आषाढ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८४। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५३७६. **प्रतिसं०** ४ । पत्र सं० ६ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल सं० १६३७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष —पं० जौहरीलाल मालपुरा वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

५३७७. **प्रतिसं०** ५ । पत्र सं० ८ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल सं० १८३३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६७ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

५३७८. **प्रतिसं०** ६ । पत्र सं० ८ । आ० ६ ×५ इञ्च । ले०काल सं० १६११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

५३७९. **प्रतिसं०** ७ । पत्रसं० १० । आ० १३×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६६-१०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५३८०. **प्रति सं०** ८ । पत्रसं० २२ । आ० ११×४½ इञ्च । ले० काल सं० १६६७ । पूर्ण । जीर्ण । वेष्टन सं० १५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

५३८१. **पाशाकेवली भाषा**— × । पत्र सं० ४ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३८२. **पाशाकेवली भाषा**— × । पत्रसं० ६ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४२२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३८३. **पाशाकेवली भाषा** । पत्रसं० ६ । भाषा-हिन्दी । विषय-निमित्त शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १६२६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४३० । **प्राप्ति स्थान**—पंचायती दि० जैन मन्दिर भरतपुर ।

५३८४. **प्रतिसं०** २ । पत्रसं० १५ । ले०काल सं० १८१३ । पूर्ण । वेष्टनसं०४३१ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—टोडा में लिपि हुई थी ।

५३८५. **प्रतिसं०** ३ । पत्र सं० २४ । ले०काल सं० १८२६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

५३८६. **पाशाकेवली**— × । पत्र संख्या ११ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन संख्या ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मंदिर बयाना ।

५३८७. पाशाकेवली— × । पत्र सं० ११ । आ० ५$\frac{1}{2}$ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

५३८८. पाशाकेवली— × । पत्रसं० ८ । आ० १०$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-शकुन शास्त्र । र०काल— × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

५३८९. पाशाकेवली— × । पत्र सं० १२ । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५३९०. पुरुषोत्पत्ति लक्षण—× । पत्रसं० १ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५३९१. प्रश्नचूड़ामणि— × । पत्र सं० २१ । आ० ८$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल सं० १८८३ चैत्र बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३०४ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३९२. प्रश्नसार— × । पत्र सं० १० । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५९२ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३९३. प्रश्नावली—श्री देवीनंद । पत्र सं० ३ । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र (ज्योतिष) । र०काल × । ले०काल सं० १९२२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३९४. प्रश्नावली— × । पत्रसं० १३ । आ० १०$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० १३५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५३९५ प्रश्नोत्तरी— × । पत्र सं० ४ । आ० ९ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-शकुन शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पंचायती टूनी (टोंक) ।

विशेष—पहिले प्रश्न किया गया है और बाद में उसका उत्तर भी लिख दिया गया है । इस प्रकार १६० प्रश्नों के उत्तर हैं ।

पत्रों के ऊपर की ओर पक्षियों के-मोर, बतक, उल्लू, खरगोश, तोता, कोयल आदि रूप में हैं । विभिन्न मण्डलों के चित्र हैं ।

५३९६. प्रश्न शास्त्र × । पत्रसं० १५ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल सं० १६५० पौष सुदी ६ । वेष्टन सं० ३२६ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

५३९७. **बत्तीस लक्षण छप्पय—गंगादास** । पत्रसं० २ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय शकुन शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७९-१७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

५३९८. **बसन्तराज टीका-महोपाध्याय श्री भानुचन्द्र गणि** । पत्रसं० २०० । आ० १०½ ×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय शकुन शास्त्र । र०काल × । ले० काल सं० १८५९ श्रावण बुदी ७ । वेष्टन सं० २५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—**प्रशस्ति**—श्री शत्रुंजयकरमोचनादि सुकृतकारि महोपाध्याय भानुचन्द्रगणि । विरचितायां बसन्तराज टीकायां ग्रंथ प्रशस्तक कथन नाम विंशतितमो वर्गः ।

५३९९. **बालबोध ज्योतिष**— × । पत्रसं० १४ । आ० ८½ ×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३९६-१४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर डूंगरपुर ।

५४००. **बालबोध—मुंजादित्य** । पत्रसं० १४ । आ० ९½ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०९७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५४०१. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ११ । आ० ७½ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १८२० । पूर्ण । वेष्टन सं० १७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

५४०२. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० १७ । आ० ९×६ इञ्च । **ले०काल** सं० १७९८ आसोज सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—लिखितं छात्र विमलं शिष्य बाली ग्राम मध्ये ।

५४०३. **ब्रह्मतुल्यकरण—भास्कराचार्य** । पत्र सं० १२ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल सं० १७४४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति—संवत् १७४४ वर्षे चैत्र सुदी २ शनौ लिखितं मुनि नंदलाल गौडदेशे सूईनगर मध्ये आत्मार्थी लिखितं ।

५४०४. **भड्डली**—× । पत्रसं० ५६ । आ० ६×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—भड्डली बात विचार है ।

५४०५. **भड्डली** — × । पत्र सं० १ । आ० ९×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—३५ पद्य हैं ।

५४०६. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० १२ । आ० १०½×६ इंच । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५४०७. भडली— × । पत्रसं० २२ ४२ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल सं० १८३० भादवा बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बंरसली कोटा ।

५४०८. भडली पुराण—× । पत्रसं० १३ । आ० ११½ × ६½ इञ्च । भाषा हिन्दी प० । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल सं० १८५८ वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

५४०९. भडली वर्णन । पत्रसं० १६ । भाषा-हिन्दी । विषय × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

५४१०. भडलीवाक्यपृच्छा— × । पत्रसं० ४ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-ज्योतिष निमित्त । र० काल × । ले०काल सं० १६४४ पौष सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३८७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—लिखतं जोसी सूरदासु अर्जुन सुत ।

५४११. भडली विचार— × । पत्र सं० ९ । आ० ११ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४७-२५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

५४१२. भडली विचार— × । पत्रसं० ४० आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल सं० १८५७ । पूर्ण । वे० सं० २०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

५४१३. भडली विचार—× । पत्रसं० ५ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी प० । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५४१४ भद्रबाहु संहिता—भद्रबाहु । पत्र सं० ९९ । आ० ९½ ×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२०० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५४१५. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ६५ । आ० ८×६½ इञ्च । ले काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५४१६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ९९ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५४१७. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० ६२ । आ० १३ × ५½ इञ्च । ले०काल सं० १८६९ श्रावण बदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—रूपलाल जी ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि करवाई थी ।

५४१८. भावफल— × । पत्र सं० १५ आ० ११×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल सं० १८६९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३९-१५१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

५४१९. **भाषिसमय प्रकरण**—पत्र सं० ८। भाषा प्राकृत संस्कृत। विषय- ×। रचना काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४९०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

५४२०. **भुवनदीपक—पद्मप्रभसूरि**। पत्र सं० १४। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र०काल ×। ले०काल सं० १५६६ भादवा बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० १२४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार।

५४२१. **प्रतिसं० २**। पत्र सं० १२। आ० १०×४½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

५४२२. **भुवन दीपक**— ×। पत्र सं० १०। आ० १०½×४½ इञ्च। **भाषा**—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

५४२३. **भुवनदीपक टीका**— ×। पत्र सं० १६। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

५४२४. **भुवनदीपक वृत्ति—सिंहतिलक सूरि**। पत्र सं० २५। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—रस युग गुणेन्दु वर्ष १३२६ शास्त्रे भुवनदीपके वृत्ति। युवराज वाटकादिह विशोध्य बीजापुरे लिखिता ॥१॥

५४२५. **भुवनविचार**— ×। पत्र सं० २। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर खंडेलवाल उदयपुर।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है।

५४२६. **मकरंद (मध्यलग्न ज्योतिष)**— ×। पत्र सं० ६। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ८६/५६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

५४२७. **मुहूर्तचिंतामणि—त्रिमल्ल**। पत्र सं० ३६। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—ज्योतिष। र०काल ×। ले०काल सं० १८७५। पूर्ण। वेष्टन सं० १४४७। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५४२८. **मुहूर्तचिंतामणि—वैद्यनाथ**। पत्र सं० ९७। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। र० काल सं० १६५७। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

५४२९. **प्रति सं० २**। पत्र सं० १८। आ० १३×६½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १६६। प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर।

५४३०. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ८५ । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल सं० १८५१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

५४३१. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० ५१ । आ० ९½×४½ इञ्च । ले० काल सं० १८७९ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ ।

विशेष—संवत् १८७९ शाके १७४४ भासानाम मासोत्तम श्रावणमासे शुभे शुक्लपक्षे १ भृगुवासरे चिरंजीव सदासुख लिपिकृतं करवाराख्य शुभेग्रामे ।

५४३२. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० ७४ । आ० ७½×४½ इञ्च । ले० काल सं० १८७८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३५/१२९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५४३३. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० ६६ । आ० ७½×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३३६/१३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५४३४. **मुहूर्तचिंतामणि**—× । पत्र सं० १०३ । आ० १०×४½ । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८५५ ज्येष्ठ बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन सं० १११५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

विशेष—माणकचन्द ने किशनगढ में प्रतिलिपि की थी ।

५४३५. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ३६ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

५४३६. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ४० । आ० ११½×५ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन सं० ३२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

५४३७. **मुहूर्त्तपरीक्षा**—× । पत्र सं० २ । आ० ११½×५ । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १८१६ मगसिर । पूर्ण । वेष्टन सं० ११२६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन भंदिर अजमेर ।

५४३८. **मुहूर्त्ततत्व**— × । पत्र सं० २ । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १६७, ५४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

५४३९. **मुहूर्त्तमुक्तावली—परमहंस परिव्राजकाचार्य** । पत्र सं० ७ । आ० ९×४½ इञ्च । भाषा - संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४४८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५४४०. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८७७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४५० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५४४१. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८७७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है तथा लखनऊ में लिखी गई थी ।

५४४२. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० १३ । आ० ८½×४ इञ्च । ले० काल सं० १८४९ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

५४४३. **प्रतिसं० ५** पत्रसं० ८ । आ० १०× ६ इञ्च । ले०काल । पूर्ण वेष्टन सं० १७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

५४४४. **मुहूर्त्त मुक्तावलि**—× । पत्रसं० ६ । आ० १०×४½ इञ्च । **भाषा**-संस्कृत । **विषय**-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल ×। पूर्ण । वेष्टन सं० ३३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५४४५. **मुहूर्त्त मुक्तावलि**—× । पत्रसं० १२ । आ० ९½× ४½ इञ्च । भाषा – संस्कृत । विषय- ज्योतिष । र०काल × । ले०काल सं० १८५४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

५४४६. **मुहूर्त्त मुक्तावलि**—× । पत्र सं० १२ । आ० १२×४ इञ्च । **भाषा** संस्कृत । विषय- ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५४४७. **मुहूर्त्त मुक्तावलि**—× । पत्रसं० ३-७ । आ० ८×५ इञ्च । **भाषा**-संस्कृत । विषय- ज्योतिष । र०काल × । ले०काल सं० १८२० प्रथम आषाढ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० २७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

५४४८. **मुहूर्त्त विधि**- × । पत्रसं० १७ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१९ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

५४४९. **मुहूर्त्त शास्त्र**—× । पत्रसं० १७ । आ० १०½× ५ इञ्च । र०काल × । ले०काल सं० १८८५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १९७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—विशालपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

५४५०. **मेघमाला—शंकर** । पत्रसं० २१ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय- ज्योतिष । र०काल × । ले० काल सं० १८९१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

इति श्री शंकर कृ मेघ मालायां प्रथमोध्यायः ।

इति श्री ईश्वरपार्वती संवादे सनिश्चरमता संपूर्ण । मिति आषाढ शुक्ल पक्षे मंगलवारे सं० १८९१ आदिनाथ चैत्यालये । द० पंडित जैचन्द को परसे सुखजी साजी को सु उतारी छै ।

५४५१. **मेघमाला**—× । पत्र सं० ६ । **भाषा**-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२२-१५८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५४५२. **मेघमाला (भद्दलीविचार)**—× । पत्रसं० ६ । आ० ९×४ इञ्च । **भाषा**-संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल सं० १८८२ । अपूर्ण । **वेष्टन सं०** १३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

५४५३. **मेघमाला प्रकरण**—× । पत्र सं० १४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २८२-५६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

विशेष—भक्तीविचार जैसा है।

५४५४. योगमाला— × । पत्र सं० ६ । आ० १० × ४ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)

५४५५. योगातिसार—भागीरथ कायस्थ कानूगो । पत्र सं० ३५ । आ० १०×५ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल सं० १८५० आसोज सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० १११४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—लेखक चित्तौड़वासी हेतु था मालवा देश के गोलाईं नगर में प्रतिलिपि की थी।

५४५६. योगिनीदशा —× । पत्र सं० ६ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन सं० ११२६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५४५७. योगिनीदशा— × । पत्र सं० ८ । आ० ६$\frac{5}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

५४५८. रत्न चूड़ामणि— × । पत्र सं० ७ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ४ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २००-४६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

५४५९. रत्नदीपक —× । पत्र सं० ११ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल सं० १८७६ कार्तिक सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं २०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)

५४६०. रत्नदीप— × । पत्र सं० ८ । आ० ८$\frac{1}{2}$ × ६ इन्च । **भाषा**-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

५०६१. रत्नदीपक—× । पत्र सं० ७ । आ० १३ × ५ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले०काल सं० १८५६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६१० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

५४६२. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ६ । आ० ११ × ५ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

५४६३. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० ७ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ७$\frac{1}{2}$ इन्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

५४६४. रत्नमाला—महादेव । पत्र सं० ५६ । आ० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल सं० १४८६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

प्रशस्ति—स्वस्ति संवत् १४८६ वर्षे कार्तिक बुदी ११ एकादश्यां तिथौ भौमवासरे अयेह खाजूँरिक पुरे वास्तव्य भट्ट मेदपाटेज्ञातीय ज्योतिषी कडूप्रात्मज रंगकेन आस वादादि समस्त आवृणां पठनाय नव शिशूनां पठनाय परोपकाराय रत्नमाल फलग्रन्थस्य भाष्यं लिलेख ।

५४६५. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १३० । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

५४६६. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० १६-६० । आ० ११×५ इंच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर डूंदरगढ़ (कोटा)

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

संधि के अन्त में निम्न प्रकार उल्लेख है—

शश्वत् वाक्यप्रमाणप्रवणमतेः वेदवेदांगवेत्तुः सूनुः श्री लूणिगस्याद्भुतः चरणरतिः श्री महादेवनामा तत् प्रोक्ते रत्नमाला रुचिरविवरणे सज्जनानां भोजयानो दुर्जनेन्द्रा प्रकरणमगमत् योग संज्ञा चतुर्थ ।

५४६७. **रमल**—× । पत्र सं० ३ । आ० १० ×५½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय—ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८७८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १००० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५४६८. **रमल प्रश्न**—× । पत्र सं० २ । आ० ६×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५४६९. **रमल ज्ञान**—× । पत्र सं० १६ । आ० ६×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५४७०. **रमल प्रश्नतंत्र—दैवज्ञ चिंतामणि** । पत्र सं० २३ । आ० ८×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

५४७१. **रमलशकुनावली**—× । पत्र सं० ५ । आ० १० × ५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३६ । **प्राप्तिस्थान**-दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

५४७२. **रमल शकुनावली**— × । पत्र सं० ७ । आ० ८½×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८५३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८०-४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

अन्तिम—इति श्री मुसलमानी शकुनावली संपूर्ण । संवत् १८५३ का मिती चैत बुदी १२ सुखकीरत वाचनार्थं नगर मेलखेडा मध्ये ।

५४७३. रमल शास्त्र—× । पत्र सं० ३५ । आ० ६½×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल सं० १८६६ वैशाख बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१४ । **प्राप्तिस्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—लिखितं तिथाडी विद्याधरेन ठाकुर श्रीभँवरबक्सजी ठाकुर श्री रामबक्सजी राज्ये कलुखेडीमध्ये ।

५४७४. रमलशास्त्र—× । पत्र सं० २५ । आ० ९ ×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२४ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५४७५. रमलशास्त्र × । पत्रसं० ४५ । आ० ११ × ७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५०४ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष---प्रश्नोत्तर के रूप में दिया हुआ है ।

५४७६. राजावली—× । पत्रसं० ११ । आ० १३×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले०काल सं० १७२१ माघ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

इति संवत्सर फलं समाप्त ।

५४७७. राजावली—× । पत्रसं० १६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले०काल सं० १८२८ श्रावण बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३२ । **प्राप्तिस्थान**-दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)

विशेष—इति षष्ठि (६०) संवत्सरनामानि ।

५४७८. संवत्सर राजावलि—× । पत्रसं० ५ । आ० ९×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५४३ । × **प्राप्तिस्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

५४७९. राहुफल—× । पत्रसं० ६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६३६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५४८०. राशिफल — × । पत्र सं० ५ । आ० ९ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

५४८१. राशिफल— × । पत्रसं० २ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले०काल सं० १८१९ सावन सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

५४८२. लघुजातक—**भट्टोत्पल** । पत्र सं० ६-४५ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले०काल सं० १८०६ भादवा सुदी ३ । अपूर्ण । वेष्टन सं० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

५४८३. **लघुजातक** — । पत्र सं० ६ । आ० ११½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल सं० १७१७ द्वि ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५८६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५४८४. **लग्नचन्द्रिका—काशीनाथ** । पत्र सं० ३३ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

५४८५. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ३२ । आ० ६½ × ४ इंच । ले०काल सं० १८५२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

५४८६. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ५८ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । ले०काल सं० १८७८ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—कोटडा में प्रतिलिपि हुई थी ।

५४८७. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० ७४ । आ० १० × ४ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

५४८८. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० २४ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

५४८९. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० १२ । आ० ७½×६½ इंच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १६२ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी) ।

५४९०. **वर्षतंत्र—नीलकंठ** । पत्र सं० ६८ । आ० ११½ ×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०६२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५४९१. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ३६ । आ० १२×४ इञ्च । ले० काल सं० १८५४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५४९२. **वर्षफल—वामन** । पत्र सं० ३-६ । आ० १०½ × ४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० ७१३ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५४९३. **वर्षफल**— × । पत्र सं० ६ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०७-१८० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

५४९४. **वर्षभाक्षफल**— × । पत्र सं० ६ । आ० ६½×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५४६५. विवाह पडल— × । पत्र सं० २४ । आ० १०×४½ इंच । भाषा संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल सं० १७६३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५२ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति ।

इति श्री विवाह पडल ग्रंथ सम्पूर्ण । लिखितेयं सकल पंडित शिरोमणि पं० श्री जसवंत सागर गणि शिष्य मुनि विनयसागरेण । संवत् १७६३ वर्षे श्री महावीर प्रसादात् शुभंभवतु ।

५४६६. वृन्द संहिता—परम विद्यराज । पत्र सं० १४३ । आ० ११ × ४½ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय— ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२० । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मंदिर इन्दरगढ़ ।

५४६७. वृहज्जातक × । पत्र सं० १–१० । आ० ११½×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५४६८. वृहज्जातक— × । पत्रसं० ४२ । आ० ११ × ५½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

५४६९. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ६० । आ० १०×५ इन्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३०३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

५५००. वृहज्जातक (टीका)—वराहमिहर । पत्र सं० ८८ । आ० १२×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय – ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

५५०१. शकुन वर्णन— × । पत्र सं० १६ । आ० ६×४ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष (शकुन शास्त्र) । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

५५०२. शकुनविचार— × । पत्रसं० ५ । आ० ६½ × ४ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७५ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५५०३. शकुन विचार— × । पत्र सं० १ । आ० ११ × ५ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ८१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

५५०४. शकुन विचार— × । पत्रसं० ३ । भाषा—संस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

५५०५. शकुन विचार – × । पत्रसं० २–१० । भाषा-संस्कृत । विषय–शकुन । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ७०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

५५०६. शकुन विचार— × । पत्र सं० १ । भाषा–संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६२/५५६ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—आचार्य श्री कल्याणकीर्ति के शिष्य मुनि भुवनचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

५५०७. शकुन विचार— × । पत्र सं० ३ । आ० ६ × ४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिस । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७०८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५५०८. शकुन विचार— × । पत्रसं० १२ । आ० १२½ × ५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५०/२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर टूनी (टोंक) ।

५५०९. शकुनावली—कौशल स्वामी । पत्रसं० ३ । आ० ११½ × ४½ इंच । भाषा—प्राकृत । संस्कृत । विषय—निमित्त शास्त्र । र० काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० १३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

५५१०. प्रति सं० २ । पत्रसं० ३ । आ० ११ × ५ इंच । ले० काल × । वेष्टन सं० १३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५५११. शकुनावली— × । पत्रसं० ६ । आ० ६½ × ४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २७०-१०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५५१२. प्रति सं० २ । पत्रसं० ८ । आ० १० × ७½ इंच । **ले०काल** सं० १८८७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५४/१३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५५१३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । आ० ६½ × ५ इंच । ले०काल सं० १८७५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५५१४. शकुनावली— × । पत्रसं० १४। आ० ११ × ५½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल सं० १६६२ चैत सुदी ११ । वेष्टन सं० ६३६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५५१५. प्रति सं० २ । पत्रसं० १६ । आ० १०½ × ५½ इंच । ले० काल × । वेष्टन सं० ६४० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर ।

५५१६. प्रति सं० ३ । पत्रसं० ६ । आ० १०½ × ५ इंच । ले०काल × । वेष्टन सं० ६७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, लश्कर जयपुर ।

५५१७. प्रति सं० ४ । पत्रसं० २ । आ० १०½ × ५½ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ सोडारायसिंह (टोंक) ।

५५१८. । पत्रसं० ४ । आ० ७ × ५ इंच । ले० काल सं० १८२० सावण बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—गोटडा में प्रतिलिपि हुई थी ।

५५१९. **शीघ्रबोध** -- **काशीनाथ** । पत्र सं० ८–२९ । आ० ९½ × ५¼ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०३१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५५२०. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १० । आ० १० × ४¼ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५५२१. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ३६ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५५२२. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० ४३ । आ० ९½ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९३२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—गुटका साइज में है ।

५५२३. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० ५८ । आ० ९ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १८८६ वैशाख बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९८८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—किशनगढ में प्रतिलिपि हुई थी ।

५५२४. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० १५ । आ० ६ × ४¾ इञ्च । ले०काल १९०३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १११८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५५२५. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० ३५ । आ० ११½ × ५ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन सं० ३२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५५२६. **प्रति सं० ८** । पत्र सं० ८-९१ । आ० ७ × ५½ इंच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बेतनदास दीवान पुरानी डीग ।

५५२७. **प्रति सं० ९** । पत्र सं० ५९ । आ० १३½ × ७½ इञ्च । ले०काल सं० १८९० भादवा बुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—ला० नथमल के पठनार्थ बयाना में प्रतिलिपि की गई थी ।

५५२८. **प्रति सं० १०** । पत्र सं० ३९ । आ० ९ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १८४५ चैत्र शुक्ला ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक) ।

५५२९. **प्रति सं० ११** । पत्र सं० ६९ । आ० ८½ × ४ इंच । ले०काल सं० १८५५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

५५३०. **प्रति सं० १२** । पत्र सं० १३ । आ० ८ × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

५५३१. **प्रति सं० १३** । पत्र सं० ११ । आ० ९ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

५५३२. **प्रति सं० १४** । पत्र सं० ३०१ आ० ९½ × ५½ इञ्च । ले० काल सं० १८२० वैशाख सुदी २ । । पूर्ण । वेष्टन सं० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

५५३३. **प्रति सं० १५**। पत्रसं० १५। आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—हिन्दी में टब्बा टीका है।

५५३४. **प्रति सं० १६**। पत्र सं० २०। आ० १०×४ इञ्च। ले०काल सं० १७४७। पूर्ण। वेष्टन सं० ३४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

५५३५. **प्रतिसं० १७**। पत्रसं० १६। आ० १०×४ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३५६। **प्राप्ति स्थान**-- दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

५५३६. **प्रतिसं० १८**। पत्र सं० ३३। आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३०६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)।

५५३७. **प्रतिसं० १९**। पत्र संख्या २१। आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इंच। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २०६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ।

५५३८. **प्रतिसं० २०**। पत्र सं० २१-३२। आ० ८$\frac{1}{2}$×४ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २१६-८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

५५३९. **षट्पंचाशिका—भट्टोत्पल**। पत्रसं० ४। आ० ८×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय- ज्योतिष। र० काल सं० १८५२। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १३०५। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

५५४०. **प्रतिसं० २**। पत्र सं० ४। आ० १२×४ इञ्च। ले०काल सं० १८२९ आषाढ बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० ११६१। **प्राप्ति स्थान**-- भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष प्रश्न भी दिये हैं।

५५४१. **प्रतिसं० ३**। पत्र सं० २२। आ० ९$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १०७०। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

विशेष—प्रति संस्कृत वृत्ति सहित है।

५५४२. **प्रति सं० ४**। पत्र सं० २-८। आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल ×। वेष्टन सं० ७०४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

५५४३ **प्रतिसं० ५**। पत्र सं० २। आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल सं० १८२५ मंगसिर सुदी ७। वेष्टन सं० ३२०। **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

५५४४. **प्रतिसं० ६**। पत्र सं० २। आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—शेरगढ में पं० हीराचल ने लिखा था।

५५४५. **प्रतिसं० ७**। पत्र सं० ८। आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इंच। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २०४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ।

विशेष—लिखितं मुनि धर्म विमलेन सीमवाली नगर मध्ये मिती कार्तिक बुदी २ संवत् १७९८ वर्षे गुरुवासरे सपूर्ण।

५५४६. षड्वर्ग फल— × । पत्र सं० १३ । आ० ११$\frac{3}{4}$×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले०काल सं० १६०३ फागुण बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११२७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५५४७. षष्ठि योग प्रकरण — × । पत्रसं० ८ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० ३३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

५५४८. षष्ठिसंवतत्सरी—दुर्गदेव । पत्रसं० १३ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत, हिन्दी । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल सं० १६६५ मंगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

१६६५ वर्षे मंगसिर सुदी १५ शनिवारे,
मांडणा ग्रामे लिखवतां श्रीलक्ष्मीविमल गणी ।

५५४९. षष्ठि संवत्सरफल— × । पत्रसं० २ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । वेष्टनसं० ३२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५५५०. सप्तसारघटी— × । पत्रसं० १५० । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष (गणित) । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

५५५१. समरसार —रामचन्द्र सोमराजा— । पत्रसं० ५ । आ० १२ × ६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

५५५२. साठसंवत्सरी — × । पत्र सं० ७ । भाषा–संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष —संवत्सर के फलों का वर्णन है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १७१२ वर्षे वैशाख बुदी १४ दिनोसागपत्तने श्री आदिनाथ चैत्यालये ब्रह्म भीमाख्येन लिखितमिदं ।

५५५३. साठ संवत्सरी— × । पत्र सं० २७ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । **पूर्ण** । वेष्टन सं० २२३-६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष —संवत्सरी वर्णन दिया हुआ है । प्रति प्राचीन है । भ० विजयकीर्ति जी की प्रति है ।

५५५४. साठि संवत्सरी— × । पत्रसं० ६ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८१–१४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५५५५. **साठ संवत्सरी**— × । पत्रसं० ११ । भाषा-हिन्दी । विषय—ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६८/५३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

५५५६. **साठि संवत्सरी**—× । पत्रसं० १० । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४८७-× । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५५५७. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ४ । आ० १२×७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५५५८. **साठिसंवत्सरग्रहफल**—**पण्डित शिरोमणि** । पत्र सं० २१ । आ० १२½×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ६११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५५५९. **सामुद्रिक शास्त्र**— × । पत्रसं० १० । आ० १०½×६½ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय—लक्षण शास्त्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २९६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—शरीर के आंगो पांगों को देखकर उनका फल निकालना ।

५५६०. **सामुद्रिक शास्त्र**—× । पत्र सं० १२ । आ० ९½ × ४½ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय—लक्षण शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १९०२ भादवा बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ६७६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५५६१. **सामुद्रिक शास्त्र**— × । पत्रसं० ८ । आ० ९½ × ४½ इंच । भाषा—हिन्दी विषय-लक्षण शास्त्र । र०काल × । ले० काल सं० १७९५ चैत्र । पूर्ण । वेष्टन सं० १०३६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५५६२. **सामुद्रिक शास्त्र**— × । पत्रसं० ५९ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-लक्षण शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । वेष्टनसं० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

५५६३. **सामुद्रिक शास्त्र** – × । पत्रसं० २४ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-लक्षण शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ११९४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५५६४. **सारसंग्रह**— × । पत्रसं० २० । आ० ९½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८८८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १००२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५५६५. **सिद्धांत शिरोमणि**—**भास्कराचार्य** । पत्रसं० ७ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल । पूर्ण । वेष्टनसं० ५४७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५५६६. सूर्य ग्रहण— × । पत्र सं० १ । आ० ६ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५०१—× । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५५६७. संकटदशा— × । पत्र सं० १० । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल सं १८२६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८-२८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

५५६८. संवत्सर महात्म्य टीका— × । पत्र सं० ९ । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—सम्भवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—संवत्सर का पूर्ण विवरण है ।

५५६९. संवत्सरी— × । पत्र सं० १७ । आ० ९ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल सं० १८२४ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—संवत् १७०१ से १८०० तक के सौ वर्षों का फल दिया है । गोटडा ग्राम में रत्नविमल के के शिष्य भाग्यविमल ने प्रतिलिपि की थी ।

५५७०. स्त्री जन्म कुंडली— × । पत्र सं० १ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय— ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं २३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५५७१. स्वर विचार— × । पत्र सं० २ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-निमित्त शास्त्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

५५७२. स्वप्न विचार— × । पत्र सं० १ । आ० १३ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—स्वप्न के फलों का वर्णन है ।

५५७३. स्वप्नसती टीका—गोवर्द्धनाचार्य । पत्र सं० २६५ । आ० ९½ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले०काल सं० १६८० पौष सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० २९४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५५७४. स्वप्नाध्याय— × । पत्र सं० ५ । आ० ९ × ४ इञ्च । भाषा— संस्कृत । विषय— निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले०काल सं० १८६८ पौष बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन छोटा मंदिर बयाना ।

विशेष—बयाना में प्रतिलिपि हुई थी ।

५५७५. स्वप्नाध्यायी— × । पत्र सं० २-४ । आ० ११ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २१९/६४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

५५७६. स्वप्नाध्यायो—× । पत्रसं० ११ । आ० ८$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—१४६ श्लोक हैं ।

५५७७. स्वप्नावली— ..... । पत्र सं० २१ । आ० १० × ५$\frac{5}{8}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५५७८. स्वप्नावली — × । पत्रसं० ३ । आ० १० × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५५७९. स्वरोदय— । पत्रसं० ८ । आ० ९$\frac{1}{2}$ × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०२३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—नासिका के स्वरों संबंधी ज्ञान का विषय है ।

५५८०. स्वरोदय— × । पत्र सं० ५ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले०काल सं० १७८५ वैशाख सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०५८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५५८१. स्वरोदय टीका— × । पत्र सं० २७ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । । ले०काल सं० १८०८ वैशाख बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनसं० २४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

५५८२. स्वरोदय —× । पत्र सं० १८ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

५५८३ स्वरोदय — × । पत्र सं० १८ । आ० ८$\frac{3}{4}$ × ३$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा — संस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले० काल सं० १७१५ अगहन बुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—१२ से १७ पत्र नहीं हैं । पवन विजय नामक ग्रंथ से लिया गया है ।

५५८४. स्वरोदय— × । पत्रसं० ३२ । आ० ९ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २३०-९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५५८५. स्वरोदय— × । पत्रसं० २७ । आ० ७$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र० काल × । ले०काल सं १९०५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३२४-१२२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

इति पवनविजयशास्त्रे ईश्वर पार्वती संवादे तस्य भेद स्वरोदय संपूर्ण ॥

५५८६. स्वरोदय—मुनि कपूरचन्द। पत्रसं० २७। आ० ८×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-निमित्त शास्त्र। र०काल × । ले०काल सं० १६२३ चैत सुदी। पूर्ण। वेष्टन सं० ७३८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष— कृष्ण असाढी दशम दिन शुक्रवार सुखकार।
संवत वरण निपुणता नंदचंद धार।

५५८७. स्वरोदय—चरणदास। पत्र सं० १५। आ० ६½×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी (प)। विषय-निमित्तज्ञान। र०काल × । ले० काल सं० १६२५। पूर्ण। वेष्टन सं० ३३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

विशेष—रणजीत के शिष्य चरणदास डूसर जाति के थे। ये पहिले दिल्ली में रहे थे। गोरीलाल ब्राह्मण दबलाना वाले ने प्रतिलिपि की थी।

५५८८. स्वोरदय—प्रहलाद। पत्र सं० १४। आ० ६×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-निमित्त शास्त्र। र०काल × । ले० काल सं० १८५६। पूर्ण। वेष्टन सं० ३३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

विशेष—जती दूदा ने आमदा में प्रतिलिपि की थी।

आदि अंत भाग निम्न प्रकार है—

आदिभाग—

गज बदन मुकभाल सुन्दर त्रिय नयण।
एक मुख दंत कर पर सकल माला।
मोदक संघ मूसो वाहाण।
सुधये ससि सुस्वर सुल पाणी।
सुर सर जटा साखा सुकी कंठ।
अरधंग गोर गजबालरो देवो कुणड सुभवाणी।

अन्तिम—पाठक देत बखानी भाषा मन पवना जिहि दिढ करि राखौ।
परम तत्व प्रहलाद प्रकासै जनम जनम के तिमिर विनासै।
पढे सुने सो मुकत कहावै गुरु के चरण कमल सिरनावै॥
ऐसा मंत्र तंत्र जग नाही जैसा ज्ञान सरोदा मांही।

दोहा—

मिसर पाठक के कहे पाई जीवन मूल।
मणमूल जीव तह सदा अनुकूल।

इति श्री पवनजय सरोदा ग्रंथ।

५५८९. होराप्रकाश— × पत्र सं० ८। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र०काल × । ले० काल सं० १६१४। पूर्ण। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

५५९०. होरामकरंद— × । पत्र सं० ५८। आ० ८½×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १००५। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५५९१. होरामकरंद-गुणाकर। पत्र सं० ४८। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र०काल×। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टनसं० ११७। **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर।

विषय--आयुर्वेद

५५९२. अजीर्ण मंजरी—**न्यामतखां**। पत्र सं० १२। आ० १२ × ६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद। र०काल सं० १७०४। ले०काल सं० १८२२। पूर्ण। वेष्टन सं० ५३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अजमेर।

विशेष—कृति का अंतिम पाठ निम्न प्रकार है—

संवत् सतरैसौ चतुर परिवा अगहन मास।
संपूर्ण **ममरेज** कहि कह्यो अजीर्ण नाम ॥९८॥
सब देसन में मुकुटमणि **बागड़देस** विख्यात।
सहर **फतेपुर** अतिसए परसिद्धि अति विख्यात ॥९९॥
बयामखान को राज जहां दाता सूर सुजान।
न्यामतखां न्यामते निपुण धर्मी दाता जान ॥१००॥
तिनि यह कीयो ग्रंथ अति उकति जुक्ति परधान।
अजीर्ण तास यह नाम धरि पढ़े जो पंडित आनि ॥१०१॥
वैद्यकशास्त्र कौं देखि करी नित यह कीयौ बखान।
पर उपकार के कारणै सो यह ग्रंथ सुखदान ॥१०२॥
पर उपगार को सुगम कीयो मोरू महीधरराज।
तालगि पुस्तग थिर रहै सदा'''जि महाराज ॥१०३॥

इति श्री अजीर्णनाम ग्रंथ संपूर्ण। सं० १८२३ वैशाख बुदी ६। लिखतं नगराज महाजन पठनार्थ।

५५९३. अमृतमंजरी—**काशीराज**। पत्र सं० ४। आ० ११½ × ५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४३२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—हरिदुर्ग (किशनगढ़) मध्ये श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालये।

५५९४. प्रतिसं० २। पत्र सं० ४। आ० ९ × ४ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २०८-८४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

५५९५. अमृतसागर—**महाराजा सवाई प्रतापसिंह**। पत्र सं० ३३१। आ० ८½ × ५½ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय--आयुर्वेद। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १०-८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

५५९६. प्रतिसं० २। पत्र सं० १४। आ० १० × ६ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २१९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

विशेष—स्त्रियों के प्रदर रोग के लक्षण तथा चिकित्सा दी है।

५५९७. प्रतिसं० ३। पत्र सं० १६४। आ० ८½ × ६ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर।

विशेष—अमृतसागर ग्रंथ में से निम्न प्रकरण हैं। अजीर्ण रोग प्रमेह रोग चौरासी प्रकार की वाय, रक्त पित्त रोग। ज्वर लक्षण, शल्य चिकित्सा, अतीसार रोग, मुद्ररोग, वाजीकरण, आदि।

५५९८. प्रति सं० ४ । पत्रसं० २६८ । आ० १३×६ इंच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटयों का नैणवा।

विशेष—पत्र सं० २६८ से आगे के पत्र नहीं है।

५५९९. प्रति सं० ५। पत्रसं० २८७ । आ० १२ × ७ इञ्च । ले० काल सं० १९०५ चैत बुदी ३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पंचायती मंदिर अलवर।

विशेष—ग्रंथ में २५ तरंग (अध्याय) है जिनमें आयुर्वेद के विभिन्न विषयों पर प्रकाश डाला गया है।

५६००. अवधूत— × । पत्र सं० १३ । आ० १० ×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आयुर्वेद। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८०। **प्राप्ति स्थान**–भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५६०१. आंख के तेरह दोष वर्णन— × । पत्र सं० ६ । आ० ६ × ९½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–आयुर्वेद। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २०५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

विशेष—गुटकाकार है। तीसरे पत्र से आयुर्वेद के अन्य नुस्खे भी हैं। दिनका विचार चौघडिया भी है।

५६०२. आत्मप्रकाश—आत्माराम। पत्र सं० १५०। आ० १३½ × ६¾ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय–आयुर्वेद। र०काल ×। ले० काल सं० १९१२ बैशाख सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन सं० २२८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)।

५६०३. आयुर्वेद ग्रंथ— × । पत्र सं० ३५। आ० ११½ × ५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत। विषय–आयुर्वेद। र०काल × । लेखन काल × । अपूर्ण। वे० सं० २१६। **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

५६०४. आयुर्वेद ग्रंथ—×। पत्र सं० ६८। आ० ९ × ५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय–आयुर्वेद। र०काल × । ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २७७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

विशेष—आयुर्वेद के नुस्खे हैं।

५६०५. आयुर्वेद ग्रन्थ—पत्रसं० १८। भाषा संस्कृत। विषय–वैद्यक । रचना काल × । ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ७६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

५६०६. आयुर्वेद ग्रंथ— × । पत्र सं० २३। आ० १०×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–आयुर्वेद। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १७०–१७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ तोडारायसिंह (टोंक)।

५६०७. आयुर्वेद ग्रंथ— × । पत्र सं० १६ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत। विषय–आयुर्वेद। र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ४५/८। **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

विशेष—वेष्टन सं० ८ में समयसारनाटक एवं पूजादि के फुटकर पत्र हैं।

५६०८. आयुर्वेद ग्रंथ— × । पत्रसं० ८७ । आ० ९½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७३० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६०९. आयुर्वेद के नुस्खे × । पत्र सं० १६ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० ८१४ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—पत्र फुटकर हैं ।

५६१०. आयुर्वेद के नुस्खे— × । पत्र सं० ८ । आ० ७×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

५६११. आयुर्वेद निदान— × । पत्रसं० २२ । आ० ११×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ५४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५६१२. आयुर्वेदमहोदधि—सुखदेव । पत्रसं० ४०३ । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १८८८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५६१३. आयुर्वेदिक शास्त्र— × । पत्र सं० ८४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी ग० । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं०८९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

५६१४. औषधि विधि— × । पत्र सं० ४-२४ । आ० ९× ४½ इञ्च । भाषा-हिंदी । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल सं० १७९३ भादवा सुदी २ । अपूर्ण । वेष्टन सं० २५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दंबलाना (बूंदी) ।

५६१५. ऋतुचर्या—वाग्भट्ट । पत्रसं० ८ । आ० ११×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

५६१६. कर्मविपाक—वीरसिंहदेव । पत्र सं० १२ । आ० ९×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १८५३ ज्येष्ठ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९७५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—इति श्री सोमरत्नगणसंसूरि प्रभूत श्री वीरसिंहदेवविरचिते वीरसिंहावलोक ज्योति शास्त्र कर्म विपाक आयुर्वेदोक्त प्रयोगोभिश्रकाध्यायः ।

५६१७. कालज्ञान— × । पत्र सं० २५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल सं० १९१० । पूर्ण । वेष्टन सं० २९२ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६१८. कालज्ञान— × । पत्रसं० २८ । आ० ८½×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल सं० १८०२ सावन बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—व्यास गोविंदराम चाटसू ने कोटा में लिखा था ।

५६१९. कालज्ञान—× । पत्रसं० ८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लाणदी बूंदी ।

५६२०. कालज्ञान— × । पत्रसं० ११ । आ० ११¼×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्दरगढ़ ।

५६२१. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ३३ । आ० १०½×५½ इञ्च । ले०काल सं० १८७८ मंगसिर बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ ।

विशेष—चिरंजीव सदासुख ने प्रतिलिपि की थी ।

५६२२. कालज्ञान— × । पत्रसं० १९ । आ० १०×४¼ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल सं० १८८० । पूर्ण । वेष्टन सं० १२-८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

लिपिकृतं कानकुब्ज ब्राह्मण शालिग्रामेण नगर मारवाड मध्ये संवत् १८८० मिती श्रावण बुदी २ शुक्रवारे ।

५६२३. प्रति सं० २ । पत्र सं० २-१३ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल × । **अपूर्ण** । वेष्टन सं० ३०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

५६२४. कालज्ञान भाषा—लक्ष्मीवल्लभ । पत्र सं० १३ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १८८१ वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५८३ । **प्राप्ति स्थान** भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६२५. कालज्ञान भाषा— × । पत्रसं० १३ । आ० ९×४ इंच । **भाषा**—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

५६२६. कालज्ञान सटीक— × । पत्र सं० ३३ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा संस्कृत-हिन्दी विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—७ वें समुद्देश तक है ।

५६२७. कृमि रोग का इयोरा— × । पत्रसं० १ । आ० १०×६ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

५६२८. कुरलीचिकित्सा · × । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५५३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५६२९. गुणरत्नमाला—मिश्रभाव । पत्र सं० ४-८५ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन सं० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ ।

५६३०. चन्द्रोदय कर्ण्य टीका—कविराज शार्ङ्गधर । पत्र सं० ६ । आ० १० ×७ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

५६३१. चिकित्सासार—धीरजराम । पत्र सं० १२९ । आ० १२ × ५½ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । **ले० काल** सं० १८९० फागुण बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन भट्टारकीय मन्दिर अजमेर ।

विशेष—अजयगढ़ नगर में प्रतिलिपि हुई थी ।

अजमेर में पट्टस्थ भट्टारक भुवनकीर्ति के शिष्य पं० चतुर्भुजदास ने इसकी प्रतिलिपि की थी ।

५६३२. जोटा की विधि— × । पत्र सं० १ । आ० १०½×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

५६३३. ज्वर त्रिंशती · शार्ङ्गधर । पत्र सं० ३३ । आ० ९×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २९१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन भट्टारकीय मन्दिर अजमेर ।

विशेष—कृष्णगढ़ में देवकरण ने प्रतिलिपि की थी ।

५६३४. ज्वर पराजय— × । पत्र सं० १९ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५६३५. दोषावली— × । पत्र सं० २-४ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३६-२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५६३६. द्रव्यगुण शतक — × । पत्र सं० ३३ । आ० ६⅝×४½ इंच । **भाषा**—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६३७. नाडी परीक्षा— × । पत्र सं० ४ । आ० ११×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १९१६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४४ । **प्राप्ति स्थान** भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६३८. **प्रति सं० २**। पत्रसं० ८। आ० ९½×४ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—पहिले संस्कृत में बाद में हिन्दी पद्य में अर्थ दिया हुआ है।

५६३९. **प्रति सं० ३**। पत्रसं० ३। आ० ८×५ इञ्च। ले०काल सं० १८६४। पूर्ण। वेष्टन सं० ८४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

५६४०. **निघंटु**—× । पत्रसं० १६८। आ० ९½ × ४½ इञ्च। **भाषा**—संस्कृत। **विषय**—आयुर्वेद। र० काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १०३४। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५६४१. **प्रतिसं० २**। पत्र सं० ३ से १२७। आ० १० × ४½ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ५९। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५६४२. **प्रतिसं० ३**। पत्रसं० ९५। आ० १२½×५ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १३१४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६४३. **प्रतिसं० ४**। पत्र सं० ८०। आ० ९×४ इञ्च। ले०काल १७५५ प्रथम ज्येष्ठ सुदी ९। वेष्टन सं० ३३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

५६४४. **प्रति सं० ५**। पत्रसं० ७०। आ० ९½×६ इञ्च । ले०काल सं० १८८८ माघ बुदी १०। पूर्ण। वेष्टन सं० ७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)।

५६४५. **निघंटु**— × । पत्रसं० ४६। आ० ९½×५½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २१९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़।

५६४६. **प्रतिसं० २**। पत्र सं० ४६ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल सं० १७५३ कार्तिक सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० २२१। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

५६४७. **निघटु टीका**—× । पत्र सं० ५-१३। आ० ११½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—आयुर्वेद । र०काल × । लेखन काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० २५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

५६४८. **निदान**— × । पत्र सं १६। आ० ११×७ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय आयुर्वेद। र०काल×। ले० काल× । पूर्ण। वेष्टन सं० २१६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)।

विशेष—पं० दिलसुख ने नृपहर्म्य (राजमहल) में प्रतिलिपि की थी।

५६४९. **निदान भाषा—श्रीपतभट्ट**। पत्र सं० ८२। आ० ८½×४ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—आयुर्वेद। र०काल सं० १७३० भादवा सुदी १३। ले०काल सं० १८१० आसोज बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० ४४६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—ग्रंथकार परिचय—

गुजराती औदीच्यकुलरावल श्रीगोपाल ॥
श्रीपुरुषोत्तम तास सुत आयुर्वेद विसाल ॥

तासो सुत श्रीपतिभिषक हिमतेषा परसाद ।
रच्यौ ग्रंथ जग के लिये प्रभु को आसीरवाद ।।

५६५०. पथ्य निर्णय··· × । पत्रसं० १ । आ० १०½×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

५६५१. पथ्य निर्णय— × । पत्रसं० ८४ । आ० १२×५½ । भाषा-संस्कृत । विषय–आयुर्वेद ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)

५६५२. पथ्यापथ्यनिर्णय— × । पत्र सं० १६ । आ० १०½×४½ इञ्च । **भाषा**–संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५६५३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । आ० १०×५ इञ्च । ले० काल सं० १८७१ चैत्र सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

५६५४. प्रति सं० ३ । पत्रसं० ६ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

५६५५. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० २१ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२६ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्दरगढ (कोटा) ।

५६५६. पथ्यापथ्य विचार— × । पत्र सं० ५२ । आ० ६×४½ इञ्च । **भाषा**–संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल सं० १८८४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष - कृष्णगढ मध्ये लिखापितं ।

५६५७. पथ्यापथ्य विबोधक - वैद्य जयदेव । पत्र सं० २०२ । आ० ८½×६½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल सं० १६०४ वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६५८. पंचामृत नाम रस— × । पत्रसं० १० । आ० १२×५½ इंच । **भाषा**—संस्कृत । **विषय**—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४३४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—१० पत्र से आगे नहीं हैं ।

५६५९. प्रकृति विच्छेद प्रकरण—जयतिलक । पत्रसं० ३ । आ० ६½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२४३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६६०. पाक शास्त्र —× । पत्रसं० १२ । आ० १०½×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६५–८० । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—विविध प्रकार के पाकों के बनाने की विधि दी है ।

५६६१. बाल चिकित्सा—× । पत्रसं० २० । आ० १०×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०५/५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूगरपुर ।

५६६२. बालतंत्र—× । पत्रसं० २६ । आ० ११ ×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल सं० १७५६ । **वेष्टन सं०** ४३१ । **प्राप्ति स्थान** –भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६६३. बालतंत्र भाषा—पं० कल्याणदास । पत्र सं० ८६ । आ० १२×५½ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १८८६ अषाढ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२० । **प्राप्ति स्थान** - भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६६४. बंधफल— × । पत्र सं० १ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

५६६५. बंध्या स्त्री कल्प—× । पत्रसं० १ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२३ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—सतान होने आदि की विधि है।

५६६६. भावप्रकाश—भावमिश्र । पत्रसं० १४३ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर नागदी बूंदी ।

विशेष—प्रथम खंड है ।

५६६७. प्रति सं० २ । पत्रसं० २३० । आ० १४ ×६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—मध्यम खंड है ।

५६६८. भावप्रकाश—× । पत्र सं० ६ । आ० १३½ × ६½ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २२६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)

५६६९. भावप्रकाश— × । पत्र सं० २-६५ । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

५६७०. माधवनिदान—माधव । पत्रसं० २१० । आ० ११½×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—। र०काल × । ले०काल सं० १९१९ आसोज सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५६७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७८ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले०काल सं० १७१० । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४८ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है ।

५६७२. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० १२६ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल सं० १८५५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६७३. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० १२८ । आ० १२½×६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६७४. **प्रतिसं० ५** । पत्र सं० ४६ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल सं० १८२२ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३५६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

५६७५. **प्रतिसं० ६** । पत्रसं० १११ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल सं० १८७४ ज्येष्ठ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

५६७६. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० ५६ । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पंचायती टूनी (टोंक)

५६७७. **प्रति सं० ८** । पत्र स० ८६ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल सं० १९२२ ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—ऋषि माणकचंद ने शिवपुरी में प्रतिलिपि की थी ।

५६७८. **प्रतिसं० ९** । पत्रसं० २६ । आ० ८½×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

५६७९. **माधव निदान टीका—वैद्य वाचस्पति** । पत्रसं० १३६ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १८१२ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—दयाचन्द ने चंपावती के आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

५६८०. **मूत्र परीक्षा**—× । पत्र सं० २ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६८१. **मूत्र परीक्षा** – × । पत्र सं० ४ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १८८० पौष सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५६८२. **मूत्र परीक्षा**—× । पत्र सं० ५ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—वैद्यक । र० काल × । ले० काल सं० १७८४ । पूर्ण । वे० सं० ३१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी ।)

५६८३. **योगचिंतामणि—हर्षकीर्ति**× । पत्रसं० १९० । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र० काल । ले० काल सं० १८८८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५९४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६८४. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ५० । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर कामा ।

विशेष--प्रति टीका सहित है।

५६८५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५१ । आ० ८½×५½ इञ्च । ले०काल सं० १८७३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—वृन्दावती ग्राम में नेमिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी ।

५६८६. योगचिंतामणि-× । पत्र सं० ६६ । आ० १२½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६३-८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटड़ियों का, डूंगरपुर ।

५६८७. योगचिंतामणि टीका--अभरकीर्ति । पत्र सं० २५६ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । **विषय**—आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १८२७ मंगसिर सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३०६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६८८. योगतरंगिणी—त्रिमल्ल भट्ट । पत्र सं० ११४ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय--आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल सं० १७७४ आषाढ सुदी १ पूर्ण । वेष्टन सं० १७६ । **प्राप्ति स्थान**--भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६८९. योगमुक्तावली—× । पत्र सं० ६ । आ० १०½ ×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । **विशेष**—आयुर्वेद । ले०काल × । पूर्ण **वेष्टन सं०** ८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६९०. योगशत--× । पत्र सं० १३ । आ० ६¾× ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल ×। ले०काल सं० १७२६ कार्तिक बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२४४ । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—पचनाइ में पं० दीपचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

५६९१. योगशत—× । पत्र सं० ६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा - संस्कृत । विषय—योगशास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७० । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६९२. योगशत—× । । पत्र सं० १४ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा -संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ११०८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५६९३. योगशत—× । पत्र सं० २-२२ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल सं० १६०९ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ९७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक)

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा जीर्ण है । आधे पत्र में हिन्दी टीका दी हुई है ।

टीका—श्लोक १९—

बातां जु० । व्याख्या० बास ३ सिलोय किरमालो । काढो करि एरंड को तेल टं ४ माहि घालि पीवणावा समस्त शरीर को वातरक्त भाजइ । वासादि क्वाथ रसांजनं-व्याख्या-रसवति चौलाई जड । मधु । चावल के धोवण माहिंघालि पीवणीया प्रदरू भाजइ ।

५६९४. योगशत टीका—× । पत्र सं० ३० । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल सं० १७७६ कार्तिक सुदी १० । वेष्टन सं० १३७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैनमन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—प्रारम्भ—

श्री वर्द्धमानं प्रणिपत्य मूर्ध्ना समंतभद्राय जनाय हेतोः
श्री पूर्णसेन मुखबोधनार्थं प्रारभ्यते योगशतस्य टीका ।।

अन्तिम— तपागच्छे पुन्यास जी श्री तिलक सौभाग्य जी केन लिखापित भैंसरोडदुर्ग मध्ये ।

५६९५. योगशत टीका—×।पत्रसं० ३१ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल सं १८५४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ़ ।

विशेष—१८५४ वैशाखे सिते पक्षे तिथौ द्वादश्यां दानविमलेन लिपि कृतं नगर इन्दरगढ़ मध्ये विजये राज्ये महाराजा जी श्री सुनमानसिंह जी—

५६९६. योगशतक—धन्वन्तरि । पत्रसं० १९ । आ० × ९ ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०७५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—नेमीचंद ने लिखवाया था ।

५६९७. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १८ । ले०काल १९४३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०७६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६९८. योगशतक—×। पत्रसं० १५ । आ० ९½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × ।ले० काल सं० १८७३ फागुण सुदी ४ । पूर्ण ।वेष्टन सं० ४४२ । **प्राप्ति स्थान**-भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—चेला मोहनदास के पठनार्थ कृष्णगढ़ (किशनगढ़) में प्रतिलिपि हुई थी ।

५६९९. योगसार संग्रह (योगशत)—× । पत्र सं० ३१ । आ० ५×३½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल सं० १८२० । पूर्ण वेष्टन सं० ५२८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५७००. रत्नकोश—उपाध्याय देवेश्वर । पत्र सं० २६७ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल सं० १९२१ अषाढ़ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२७७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५७०१. रसचिंतामणि— × । पत्रसं० १९ । आ० ९½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४४५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७०२. रसतरंगिणी—भानुदत्त । पत्र सं० २४ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल सं० १९०४ वैशाख बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२९३ । **प्राप्ति स्थान** –भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१ । आ० ११ × ६ इञ्च । ले० काल सं० १८५२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—व्यास श्री सालिगरामजी ने ब्राह्मण हरिनारायण गूजर गौड़ से प्रतिलिपि करवायी थी ।

५७०४. रसतरंगिणी—वेणीदत्त । पत्र सं० १२४ । आ० १०$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १८५५ भादो बदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

५७०५. रसपद्धति— × । पत्रसं० ३६ । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १८२६ वैशाख बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—ब्रह्म जैन सागर ने आत्म पठनार्थ लिखा ।

५७०६. रस मंजरी—भानुदत्त । पत्र सं० २५ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ओरसली कोटा ।

५७०७. रसमंजरी—शालिनाथ । पत्रसं० ४४ । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १८२६ ज्येष्ठ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५७०८. रसरत्नाकर—नित्यनाथसिद्ध । पत्रसं० ७१ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १८७१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७०९. प्रति सं० २ । पत्रसं० २-१६ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३६६/२०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

५७१०. रसरत्नाकर—रत्नाकर । पत्रसं० ४८ । आ० १२ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्दरगढ (कोटा) ।

५७११. रसरत्नाकर— × । पत्रसं० ६८ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

५७१२. रामविनोद—नयनसुख । पत्रसं० १०० । आ० ५×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १८०८ फागुण सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—पं० दीपचन्द ने आणी नगर मध्ये लिखितं ।

५७१३. रामविनोद—रामचन्द्र । पत्रसं० १६३ । आ० ८½ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) ।विषय-वैद्यक । र०काल × । ले०काल सं० १८२७ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२२२ । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५७१४. प्रति सं० २ । पत्रसं० ८३ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३५६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५७१५ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले०काल सं० १८८८ द्वितीय वैशाख बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक) ।

५७१६. प्रति सं० ४ । पत्रसं० ११४ । आ० ११½ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १७३० । पूर्ण । वेष्टन सं० २८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—संवत् १७३० वर्षे आसोज सुदी १० रविवार लिखि रोहिणी पोथी लिखी साहुदा बेटा फकीर बेटा लालचन्द जी बालदिराम जाती बोरखंडवा वासी मोजी मीयां का मुहो । राज माधोसिंह (दिल्ली) हाडा बूंदी राव श्री भावसिंह जी **दिल्ली राज** पातिसाही औरंगसाहि राज प्रवर्तते ।

५७१७. रामविनोद— × । पत्र सं० ५६ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११३/११ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

५७१८. संग्रहपथ्यनिर्णय—× । पत्रसं० १६ । आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल सं० १८३० कार्तिक बुदी १ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४३५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—मोतीराम ब्राह्मण ने गोपीनाथ जी के देवरा में लिखा था ।

५७१९. संग्रहपथ्य निर्णय— × । पत्रसं० १२ । आ० ११ × ८ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल सं० १९४५ वैशाख वदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४९६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७२०. वैद्यक ग्रंथ— × । पत्र सं० ८७ । आ० १३ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५७२१. वैद्यक ग्रंथ—× । पत्रसं० ४२ । आ० ९½ × ६½ इञ्च । भाषा - संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२६-९१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५७२२. वैद्यक ग्रंथ—× । पत्र सं० २ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६१ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखे दिये हुये हैं ।

५७२३. **वैद्यकग्रंथ**— × । पत्र सं० ४ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय – आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५-६२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—क्रम सं० १६/६२३ से २४/६३० तक पूर्ण अपूर्ण वैद्यक ग्रंथों की प्रतियां है ।

५७२४. **वैद्यक नुस्खे**—× । पत्र सं० ४ । आ० ८½ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—वैद्यक । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२४६ । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७२५. **वैद्यक नुस्खे**—× । पत्र सं० ४ । भाषा संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५७२६. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ८० । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५७२७. **वैद्यक शास्त्र**— × । पत्र सं० २८३ । आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १८८२ चैत बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७११ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७२८. **वैद्यक शास्त्र** – × । पत्रसं० १६ । आ० ११½ × ५¾ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल सं० × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर डूंदरगढ़ (कोटा)

५७२९. **वैद्यक समुच्चय**—× । पत्रसं० ५१ । आ० ९ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—वैद्यक । र० काल × । ले० काल १६९० फागुण सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—दिल्लिकामंडले पालवग्राममध्ये लिखितं ।

५७३०. **वैद्यकसार**— × । पत्रसं० ८२ । आ० ८½ × ६½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-आर्वेयुद । र० काल × । ले० काल सं० १६५३ कार्तिक सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७-२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५७३१. **वैद्यकसार—हर्षकीर्ति** । पत्रसं० १५ से १६१ । आ० १२ × ५¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १८२५ चैत्र वुदी ३ । अपूर्ण । वेष्टन सं० १७७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७३२. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ३५ । आ० १० × ४½ इंच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २५२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७३३. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० १७५ । आ० ११¾ × ५½ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन सं० ३४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति मिटा रखी है ।

५७३४. **वैद्य जीवन—लोलिम्बराज** । पत्रसं० ५१ । आ० ९ × ६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । ले० काल सं० १६१२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७३५. **प्रति सं० २** । पत्र सं० २७ । आ० ६½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२४० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७३६. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२४१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७३७. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० १५ । आ० ११×५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२४-८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५७३८. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० १२ । आ० ११×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १५६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७३९. **प्रति सं० ६** । पत्रसं० १६ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६५४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५७४०. **प्रतिसं० ७** । पत्र सं० ५३ । आ० १०½×४¾ इञ्च । ले० काल सं० १७५३ कार्तिक बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२२ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ ।

५७४१. **प्रतिसं० ८** । पत्र सं० १७ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले० काल सं० १८८७ मंगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

५७४२. **प्रति सं० ९** । पत्र सं० [illegible] । आ० [illegible] इञ्च । ले० काल सं० माघ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

५७४३. **प्रति सं० १०** । पत्र सं० १३ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १८०१ पौष सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—खातोली नगर में प्रतिलिपि हुई थी ।

५७४४. **प्रतिसं० ११** । पत्र सं० १२ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल सं० १९७९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

५७४५. **प्रति सं० १२** । पत्र सं० ३६ । आ० १०×५½ इञ्च । ले० काल सं० १८८३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष– हिन्दी अर्थ सहित है ।

५७४६. **प्रतिसं० १३** । पत्रसं० १२ । आ० ११×४½ इञ्च । ले० काल सं० १८०९ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३२ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

५७४७. **प्रतिसं० १४** । पत्रसं० २३ । आ० ११ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १८२३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—साहपुरा के शांतिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी ।

५७४८. **प्रति सं० १५** । पत्रसं० २ से १९ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल सं० १७१७ । अपूर्ण । वेष्टनसं० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक) ।

५७४९. **वैद्यजीवन टीका—हरिनाथ।** पत्र सं० ४४। आ० ११×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय–आयुर्वेद। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १२३९। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५७५०. **प्रति सं० २।** पत्र सं० ३७। आ० १२×५½ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ६५५। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५७५१. **प्रति सं० ३।** पत्र सं० ४१। आ० ११ × ५½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—आयुर्वेद। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ४००। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५७५२. **प्रति सं० ४।** पत्र सं० १८। ले०काल सं० १८३१। पूर्ण। वेष्टन सं० ४१०। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५७५३. **प्रति सं० ५।** पत्र सं० ३१। आ० १०½×५ इञ्च। ले०काल × । वेष्टन सं० ३३९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

५७५४. **प्रति सं० ६।** पत्र सं० ३१। आ० १०½×५ इञ्च। ले० काल × । वेष्टन सं० ३४०। **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर।

५७५५. **वैद्यजीवन टीका—रुद्रभट्ट।** पत्र सं० ४५। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—आयुर्वेद। र० काल × । ले० काल० सं० १८८५ ज्येष्ठ बुदी ३। पूर्ण। वेष्टन सं० ११६३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५७५६. **प्रति सं० २।** पत्र सं० ४९। ले०काल सं० १८८५ प्रथम आषाढ बुदी ऽ ऽ। पूर्ण। वेष्टन सं० ११६७। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष प० देवकरण ने किशनगढ में नेमिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी।

५७५७. **वैद्यक प्रश्न संग्रह**— × । पत्र सं० १०। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत विषय—आयुर्वेद। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १०६३। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

५७५८. **वैद्य मनोत्सव—केशवदास।** पत्र सं० ३४–४७। आ० ८½×६½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय - आयुर्वेद। र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ३६६–१४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

५७५९. **प्रति सं० २।** पत्र सं० ३। आ० १३×५ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ३३–१३९। **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

५७६०. **वैद्य मनोत्सव—नयनसुख।** पत्र सं० १५। आ० ९½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय—आयुर्वेद। र० काल सं० १६४९ आषाढ सुदी २। ले० काल सं० १९०० भादवा सुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० १०७७। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५७६१ **प्रति सं० २।** पत्र सं० ११। आ० १०½×५½ इञ्च। ले०काल सं० १८६१। पूर्ण। वेष्टन सं० १०२९। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५७६२. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ४८ । आ० ६×६ इञ्च । ले० काल सं० १८१२ आषाढ बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५०६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७६३. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० १३० । आ० ६×४½ इञ्च । ले०काल सं १८३५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८६५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—गुटका साइज में है ।

५७६४. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० २६ । आ० १०½×४ इञ्च । ले० काल सं० १८६७ माह बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५७६५. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० २७ । आ० ६×४½ इञ्च । ले० काल सं० १८८५ मंगसिर बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६६ । **प्राप्ति स्थान** भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—भ० क्षेमकीर्ति ने किशनगढ में प्रतिलिपि की थी ।

५७६६. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० १७ । आ० १०½×५½ इञ्च । ले०काल सं० १८५१ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

विशेष—लिखी कुरवाली रामपुरा मध्ये पंडित भूगरसीदास ।

५७६७. **प्रति सं० ८** । पत्र सं० १६ । आ० ११½×६ इंच ।ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी) ।

५७६८. **वैद्यरत्न भाषा—गोस्वामी जनार्दन भट्ट** । पत्र सं० ३० । आ० ५½×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

विशेष—लिखितं साधु जैकृष्णमहंतजी थी प्रभीदासजी भांडारेज का शिष्य किशनदास ने लिखी हाड़ोती शेरगढ़ मध्ये ।

५७६९. **वैद्यरत्न भाषा**— × । पत्र सं० ४७ । आ० १०×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५७७०. **वैद्यवल्लभ**— × । पत्र सं० २६५ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

५७७१. **प्रति सं० २** । पत्र सं० २५ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा)

५७७२. **वैद्य वल्लभ—हस्तिरुचि** । पत्र सं० ५६ । आ० ८×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल सं० १७२६ । ले० काल सं० १६११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति मुरादिसाहि गुटिका स्तंभनोपरि—

श्रीमत्तपागणांभोजभास्वनैक नभोमणि ।
प्राज्ञोदयरुचिनामा बभूव विदुषाग्रणी ।।
तस्यानेक महाशिष्या हितादि रुचयो वरा ।
जगन्मान्याख्याध्याय पदस्यधारकादभुवन ।
आर्या तेषां शिशुना हस्तिरुचिना सहैव वल्लोयंः ।
रस ६ नयन २ मुनिन्दु १ वर्षे सं० १७२६ कारीय विहितोयं ।।

इति श्रीमत्तपागच्छे महोपाध्याय हितरुचि तत् शिष्य हस्तिरुचि कवि विरचिते वैद्यवल्लभे शेषयोग निरूपणो नामा अष्टमोऽध्यायः ।

५७७३. वैद्यवल्लभ— × । पत्र सं० ३३ । आ० ८½ × २½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । **विषय**–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

५७७४. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ३३ । आ० ८½ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १६५० । पूर्ण । वेष्टन सं० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

५७७५. वैद्यवल्लभ टीका— × । पत्र सं० ३६ । आ० १३ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—वैद्यक । र० काल × । ले० काल सं० १९०६ वैशाख सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३५७ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

५७७६. प्रतिसं० २ । पत्र सं० १४ । आ० ६¾ × ४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४३ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५७७७. वैद्यविनोद— × । पत्र सं० ६६ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १८८६ ज्येष्ठ शु. १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—लिखितं पं० देवकरण हरिदुर्ग (किशनगढ़) मध्ये ।

५७७८. वंगसेन सूत्र—वंगसेन । पत्र सं० ४७५ । आ० १२ × ६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १७६५ आषाढ़ बुदी ३ । **पूर्ण** । वेष्टन सं० ७० । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ़ ।

विशेष—आदिभाग एवं अंतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

प्रारंभ—

नत्वा शिवं प्रथमतः प्रणिपत्य चंडी
वागदेवताः तदनुता पदं गुरुश्च
संग्रह्यते किमपि यत्सुजनास्तदत्र
चेतो विधास्तु मुचित्तुं मदनुग्रहेण ।।१।

पुष्पिका—

इति श्री वंगसेन ग्रंथिते चिकित्सा महार्णवे सकल वैद्यक शिरोमणि वंगसेन ग्रंथ सम्पूर्ण ।

५७७६. **शार्ङ्गधर—** × । पत्रसं० १० । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४२ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—हरिदुर्ग (किशनगढ़) के लुहाड़ियों के मन्दिर में पं० देवकरण ने लिखा था ।

५७८०. **शार्ङ्गधर दीपिका—आढमल्ल** । पत्रसं० ६४ । आ० १२½ × ८ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल सं० १६२१ चैत्र सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२३१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष-- अजमेर नगर में प्रतिलिपि हुई थी ।

५७८१. **शार्ङ्गधर पद्धति—शार्ङ्गधर** । पत्रसं० १५१ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २२६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५७८२. **शार्ङ्गधर संहिता—शार्ङ्गधर** । पत्र सं० ३१ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २२० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७८३. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० १३ । आ० ६ × ४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३०२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७८४. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० १२५ । आ० ११ × ४ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन सं० ३३६ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

५७८५. **प्रतिसं० ४** । पत्र सं० १७० । आ० ११ × ४ इञ्च । ले० काल सं० १८२७ आषाढ़ बुदी १३ । वेष्टन सं० ३३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५७८६. **प्रति सं० ५** । पत्रसं० ५७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर डूण्डावालों का डीग ।

५७८७. **प्रतिसं० ६** । पत्र सं० ४२ से ६६ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १८३ । **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ कोटा ।

५७८८. **श्वासभैरवरस**— × । पत्रसं० २-१५ । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपंथी दि० जैन मन्दिर बगवा ।

५७८९. **सन्निपातकलिका**-- × । पत्रसं० १७ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल सं० १८६३ मंगसिर सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७९०. **सन्निपातकलिका**— × । पत्रसं० २३ । आ० ८ × ३½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४४० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—१६ व २० वां पत्र नहीं है।

५७६१. सन्निपातकलिका— × । पत्रसं० ७ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्द्रगढ़ (कोटा)।

५७६२. संतान होने का विचार— × । पत्र सं० ७ । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २१६-८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर ।

५७६३. स्त्री द्रावण विधि— × । पत्र सं० ७ । आ० ७×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ८१७ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५७६४. स्वरोदय—मोहनदास कायस्थ । पत्रसं० १२ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । र०काल सं० १६८७ मंगसिर सुदी ७ । ले०काल × । वेष्टन सं० ६१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—इसमें स्वर के साथ नाड़ी की परीक्षा का वर्णन है—कवि परिचय दोहा—

कथित मोहनदास कवि काइथ कुल अहिठान ।
श्री गर्ग के कुल द्विज कनोजे के अस्थान ।
तैमखार के निकट ही कुरस्थ गांव विख्यात ।
तहां हमारो वासु निवु श्री जादौ मम तात ।
संवत् सोरह सै रच्यौ अपरि असी सात,
विक्रमते बीते बस मारग सुदि तिथि सात ।।

इति श्री पवन विजय स्वरोदये ग्रंथ मोहनदास कायथ ग्रहिठानं विरचिते भाषा ग्रंथ निवृत्ति प्रवृत्ति मार्ग खंड ब्रह्मांड ज्ञान तथा शुभाशुभ नाम दक्षिण स्वर तन भय विचार काल साधन संपूर्ण ।

५७६५. हिक्कमत प्रकाश—महादेव । पत्रसं० ५६१ । भाषा संस्कृत । विषय-वैद्यक । र०काल × । ले०काल सं० १८३१ । पूर्ण वेष्टनसं० ७६६ । **प्राप्ति स्थान**—पंचायती दि० जैन मंदिर

विषय–अलंकार एवं छन्द शास्त्र

५७९६. **अलंकार चंद्रिका—अप्पयदीक्षित।** पत्र सं० ७९। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–अलंकार। र० काल × । ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ९३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी।

५७९७. **कवि कल्पद्रुम—कवीन्द्राचार्य।** पत्र सं० ६। आ० १०½ × ४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–अलंकार। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

५७९८. **कुवलयानन्द—अप्पयदीक्षित।** पत्र सं० ७७। आ० १०½ × ५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–रस-सिद्धान्त। र० काल × । ले० [illegible] १८५४ वैशाख सुदी ६ । वेष्टन सं० २०६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—लश्कर के इसी मन्दिर में पं० केशरीसिंह ने ग्रंथ की प्रतिलिपि करवाई थी।

५७९९. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १०। आ० ९×४½। ले० काल × । वेष्टन सं० २११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—कारिका मात्र है।

५८००. **प्रति सं० ३**। पत्र सं० ५३। आ० १०½ × ५½ इञ्च। **भाषा**–संस्कृत। ले० काल × । **पूर्ण**। वेष्टन सं० १३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी।

विशेष—ग्रंथ का नाम अलंकार चन्द्रिका भी है।

५८०१. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० ९। आ० ११ ×५। ले० काल × । वेष्टन स० २०८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

५८०२. **प्रति सं० ५**। पत्र सं० १४। आ० ९½ × ५½। ले० काल ×। वेष्टन सं० २०९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर।

५८०३. **प्रति सं० ६**। पत्र सं० १२ । आ० ९½ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १८२२ आषाढ सुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० १५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

५८०४. **छंदकोश टीका—चंद्रकीर्त्ति।** पत्र सं० १७। आ० १० × ४ इञ्च । भाषा–प्राकृत-संस्कृत। विषय–छंद शास्त्र। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३१५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

५८०५. **छंदरत्नावलि—हरिरामदास निरंजनी।** पत्र सं०-१७। आ० १२ × ५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–छंद शास्त्र। र० काल सं० १७९५। ले० काल सं० १९०६ सावण सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन सं० १४२३। **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मंदिर अजमेर।

विशेष—ग्रंथ तथा ग्रंथकार का वर्णन निम्न प्रकार है।

ग्रंथ छंदरत्नावली सारथ याको नाम ।
भूषन भरतीतें भरयो कहै दास हरिराम ।।१०।।
५ ६ ७ १
संवतसर नव मुनि शशि नभ नवमी गुरुमान ।
डीडवान इह की पतहि ग्रंथ जन्म थल जानि ।।

५८०६. प्रतिसं० २ । पत्र सं० २४ । आ० ८ × ५½ इञ्च । ले० काल सं० १६३५ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५८०७. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० २-२५ । आ० ६ × ६ इंच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर बयाना ।

विशेष—५-१०५ पद्य तक है ।

५८०८. छंदवृत्तरत्नाकर टीका-पं० सल्हण । पत्र सं० ३६ । **भाषा**-संस्कृत । विषय-छंद शास्त्र । र०काल × । ले०काल सं० १५६५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६/६०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

५८०९. अंतिम—इति पंडित श्री सुल्हण विरचितायां छंदोवृत्तौ षट् प्रत्याध्यायः षष्ठः समाप्तः ।।

संवत् १५६५ वर्षे भाद्रपद मासे कृष्णपक्षे १ प्रतिपदा गुरौ श्री मूलसंघे ।

५८१०. छंदानुशासन स्वोपज्ञ वृत्ति—हेमचन्द्राचार्य । पत्रसं० ६० । आ० १४ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—छंद शास्त्र । र०काल × । ले० काल सं० १५६० । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३३२/५६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष अंतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इत्याचार्य श्री हेमचन्द्र विरचितायां स्वोपज्ञ छंदानुशासनवृत्तौ प्रस्तारादि व्याकर्णं नाम षष्ठोध्याय समाप्त ।

प्रशस्ति—संवत् १५६० वर्षे कार्तिकमासे महमागाकेन पुस्तक लिखितं । महात्मा श्री गुणनंदि पठनार्थं ।

५८११. छांदसीय सूत्र—भट्टकेदार । पत्रसं० ६ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-छंद शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

५८१२. नंदीय छंद—नंदिताढ्य । पत्रसं० ८ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-छंद शास्त्र । र०काल × । ले०काल सं० १५३८ आसोज बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—६४ गाथाएं हैं ।

५८१३. पिंगलशास्त्र—नागराज । पत्रसं० ११ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-छंद शास्त्र । र०काल × ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

५८१४. पिंगल सारोद्धार— × । पत्रसं० २० । आ० ८½ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-छंद शास्त्र । र०काल × **ले०काल सं० १६६१** । पूर्ण । वेष्टन सं० १७३-१३२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—जयदेव ने प्रतिलिपि की थी ।

५८१५. पिंगलरूपदीप भाषा— × । पत्रसं० ६ । **आ०** ६½ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-छंद शास्त्र । र०काल सं० १७७३ भादवा सुदी २ । ले०काल सं० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

विशेष—**सोरठा**—द्विज पोखर तेन्ह तिस में गोन कटारिया ।

सुनि प्राकृत सौ बैन तैसी ही भाषा रची ।।५४।।

दोहा—

बाचन करनी चाल सब जैसी मोमैं बुद्ध ।
भूलि-भेद जाकौ कह्यो करो कवीश्वर सुद्धि ।।५५।।
संवत् सत्तरैं सै बरष उर तिहत्तरैं पाय ।
भादौं सुदि द्वितीय गुरु भयो ग्रंथ सुखदाय ।।५६।।

इति श्री रूपदीप भाषा ग्रंथ संपूर्ण । संवत् १८८६ का चैत्र सुदी ७ मंगलवार लिखितं राजाराम ।

५८१६. प्राकृत छंद — × । पत्रसं० ६ । आ० ११ × ५ इञ्च । **भाषा**—प्राकृत । विषय—छंद । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ११३४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५८१७. प्राकृत छन्दकोश— × । पत्र सं० ७ । आ० १२ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—छन्द । र०काल × । ले० काल × । वेष्टनसं० ४५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचकार, जयपुर

५८१८. प्राकृत लक्षण—चंड कवि । पत्रसं० २० । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा - संस्कृत । विषय—छन्द शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२५७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५८१९. बडा पिंगल — × । पत्र सं० ३७ । आ० ६½ × ४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—छन्द । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७२-१६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

५८२०. भाषा भूषण—जसवंतसिंह । पत्र सं० १५ । आ० ६ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—अलंकार शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

लक्षिन तिय अरु पुरुषके हाव भाव रस धाम ।
अलंकार संजोग तैं भाषा भूषण नाम ।।
भाषा भूषण ग्रंथ को जे देखे चित लाइ ।
विविध अरथ सहित रस सभुझै सब बनाइ ।।३७।

इति श्री महाराजाधिराज धनदंधराधीश जसवंतसिंघ विरचिते भाषा भूषण संपूर्ण ।

५८२१. रसमंजरी—भानु । पत्रसं० २१ । आ० १० × ३½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—रस अलंकार । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २९६/२२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

५८२२. रूपदीपक पिंगल— × । पत्रसं० १० । आ० ९½ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—छन्द शास्त्र । र० काल सं० १७७३ भादवा सुदी २ । ले० काल सं० १९०२ सावण बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०१५ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मंदिर अजमेर । इसका दूसरा नाम पिंगल रूप दीप भाषा भी है ।

५८२३. वाग्भट्टालंकार वाग्भट्ट । पत्र सं० २१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अलंकार । र० काल × । ले० काल सं० १९०४ वैशाख सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२८७ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—इसकी एक प्रति और है । वेष्टन सं० ४८१ है ।

५८२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ११२४ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५८२५. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० १४ । आ० १० × ५½ इंच । ले० काल सं० १७९७ चैत सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चोगान बूंदी ।

विशेष - पंडित कुशालचन्द ने तक्षकपुर में लिखवाया था ।

५८२६. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० २८ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३१ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

५८२७. प्रतिसं० ५ । पत्रसं० २१ । आ० ६×४½ इञ्च । ले० काल सं० १८२६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—लिखापित पंडित जिनदासेन स्वपठनार्थं ।

५८२८. प्रतिसं० ६ । पत्रसं० १९ । आ० १२×४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२६/५५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

५८२९. प्रतिसं० ७ । पत्रसं० १० । ले० काल सं० १५९२ आषाढ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२५/५५८ । **प्राप्ति स्थान**--उपरोक्त मन्दिर ।

५८३०. प्रतिसं० ८ । पत्र सं० ७ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८५/७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५८३१. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १७ । आ० ११¾ × ५¾ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति संस्कृत व्याख्या सहित है ।

५८३२. प्रति सं० १० । पत्रसं० ११ । आ० ११¾ × ५¾ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

५८३३. **प्रति सं० ११** । पत्रसं० १८ । आ० ११$\frac{3}{4}$×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल सं० १८१६ आषाढ बुदी ६ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५८३४. **प्रतिसं० १२** । पत्रसं० ८६ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

५८३५. **प्रति सं० १३** । पत्रसं० २३ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५८३६. **प्रतिसं० १४** । पत्र सं० २३ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—ग्रंथ संस्कृत टीका सहित है ।

५८३७. **वाग्भट्टालंकार टीका—जिनवर्द्धन सूरि** । पत्रसं० ४ । आ० ११$\frac{1}{2}$× ५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय अलंकार । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ११५८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५८३८. **वाग्भट्टालंकार टीका—वर्द्धमान सूरि** । पत्रसं० ३० । आ० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ । भाषा-संस्कृत । विषय-अलंकार । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५८३९. **वाग्भट्टालंकार टीका—वादिराज (पेमराज सुत)** । पत्र सं० ५६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय अलंकार । र०काल सं० १७२६ । ले०काल सं. १८४२ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं. ४५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—टीका का नाम कविचंद्रका भी दिया है ।

५८४०. **वाग्भट्टालंकार टीका**—× । पत्र सं. ३ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-अलंकार । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२६८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि. जैन मन्दिर अजमेर ।

५८४१. **वाग्भट्टालंकार टीका**—× । पत्र सं. २७ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—अलंकार । र०काल × । ले० काल सं. १७५१ । पूर्ण । वेष्टन सं. ३२२ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—निम्न प्रकार है ।

सं. १७५१ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे तिथौ दशम्यां चन्द्रवासरे श्री फतेहपुरमध्ये लि. । ले. पाठकयो शुभं । प्रति सुन्दर है ।

५८४२. **वाग्भट्टालंकार वृत्ति**—× । पत्र सं० ५७ । आ. १०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—अलंकार शास्त्र । र०काल× । ले.काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं. ५१८ । **प्राप्ति स्थान**—भ. दि. जैन मन्दिर अजमेर ।

५८४३. **वाग्भट्टालंकार वृत्ति—ज्ञानप्रमोद वाचकगणि** । पत्र सं. ५७ । आ. १२×४$\frac{3}{4}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अलंकार । र.काल सं. १६८१ । ले.काल × । पूर्ण । १४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि. जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

५८४४. वृतचन्द्रिका—कृष्णकवि । पत्र सं. २-४४ । आ० ६×६ इंच । भाषा हिन्दी (पद्य) । विषय-छंद शास्त्र । र.काल × । ले. काल सं. १८१६ । **अपूर्ण** । वेष्टन सं. ३५३ । **प्राप्ति स्थान**—भ. दि. जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति श्री कृष्णकवि कलानिधि कृत वृतचन्द्रिकायां मात्रावर्ण वृत्त निरूपणं नाम द्वितीय प्रकरण ।

मात्रा छंद एवं वर्ण छंद अलग २ दिये है ।

मात्रा छंद २१६ एवं वर्ण छंद ३८० है ।

५८४५. वृत्त रत्नाकार -- × । पत्र सं. ४ । आ. ६½×४½ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय—छंद शास्त्र । र०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं. १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि. जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

५८४६. वृत्त रत्नाकार-- भट्ट केदार । पत्र सं० ८ । आ० ६½ × ४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंद शास्त्र । र०काल × । ले०काल सं० १८१६ माह सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १२४२ । **प्राप्ति स्थान**—भ. दि. जैन मन्दिर अजमेर ।

५८४७. प्रति सं० २ । पत्रसं० सं० ८ । आ० १० × ४½ इंच । ले० काल × । **पूर्ण** । **वेष्टन सं०** ११६१ । **प्राप्ति स्थान**—भ. दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५८४८. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० ११ । आ० १०½ × ५ । ले०काल सं० १७७६ सावण बुदी ऽऽ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११६० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५८४९. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० ६ । आ० १०×५ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५८५०. प्रति सं० ५ । पत्रसं० ४ । आ० १०½ × ४½ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६४-१०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५८५१. प्रतिसं० ६ । पत्र सं० १८ । आ० १०½ × ४½ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६६-८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५८५२. प्रतिसं० ७ । पत्र सं० २४ । आ० ११½ × ५ इंच । ले० काल × । वेष्टन सं० ४५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५८५३. प्रतिसं० ८ । पत्रसं० १० । आ० ११¾ × ५½ इंच । ले० काल सं० १८३८ ज्येष्ठ बुदी ४ । वेष्टन सं० ४५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—सवाई जयपुर के आदिनाथ चैत्यालय में विद्वान् कृष्णदास के शिष्य जिनदास के पठनार्थ लिखा गया था ।

५८५४. प्रतिसं० ९ । पत्रसं० ३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

५८५५. प्रतिसं० १० । पत्रसं० १२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७२/६०९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

विशेष—छह प्रतियाँ और हैं जिनके वेष्टन सं० ७२/६१० से ७८/६१६ हैं ।

५८५६. प्रतिसं० ११ । पत्र सं० ५७ । आ० ११×५ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

५८५७. प्रति सं० १२ । पत्र सं० १४ । आ० १०×५ इञ्च । ले० काल सं० १८२६ मंगसिर सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

५८५८. प्रतिसं०१३ । पत्र सं० १४ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल सं० १६४० माघ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६/१९ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—हुम्बड जातीय बाई जी श्री बाई ने भट्टारक वादिचन्द्र के शिष्य ब्रह्म श्री कीर्तिसागर को प्रदान किया था ।

५८५९. प्रतिसं० १४ । पत्रसं० १९ । आ० १० × ५ इञ्च । ले०काल सं० १७२० । पूर्ण । वेष्टनसं० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

५८६०. प्रतिसं० १५ । पत्रसं० ३७ । आ० ११ × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

५८६१. प्रतिसं० १६ । पत्र सं० ४ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

५८६२. वृत्तरत्नाकर—कात्तिहास । पत्र सं० ८ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय छन्द शास्त्र । र० काल × । ले०काल सं० १८१९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—भानपुर में ऋषभदास ने प्रतिलिपि की थी ।

५८६३. वृत्तरत्नाकर टीका—पं० सोमचन्द्र । पत्र सं० १४ । भाषा—संस्कृत । विषय—छंद शास्त्र । र०काल सं० १३२५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—रचनाकाल निम्न प्रकार है ।

श्री विक्रमनृपकाल वंदकर कृपीटयोनि कृपीटयोनि शशि संख्ये (सं १३२५) समज निरजोत्सवेदिने वृत्तिरियं मुग्ध बोधा करी ।

५८६४. वृत्तरत्नाकर टीका—जनार्दन विबुध । पत्रसं० २८ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—छंद शास्त्र । । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—प्रशस्ति इति श्री जनार्दन विबुध विरचितायां भाषार्थ दीपिकायां वृत्तरत्नाकर टीकायां प्रस्तारादिनिरूपणो नामा षष्टो अध्याय ।

५८६५. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ३३ । आ० ९½×६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

५८६६. वृत्तरत्नाकर वृत्ति—समयसुंदर । पत्र सं० ४२ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-छंद शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । । पूर्ण । वे० सं० २०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

अन्तिम पुष्पिका—इति वृत्तरत्नाकरे केदार भैव विरचिते छंदसि.समयसुन्दरोपाध्याय विरचिते सुगम वृत्तौ षष्ठोऽध्याय ॥७५०॥

५८६७. **प्रतिसं० २**। पत्र सं० ३० । आ० १० × ४ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

५८६८. **वृत्तरत्नाकर वृत्ति—हरिभास्कर**। पत्रसं० ३७। आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-छंद शास्त्र । र० काल × । ले०काल सं० १८४७ पौष सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० २६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५८६९. **शब्दालंकार दीपक—पौंडरीक रामेश्वर**। पत्र सं० १८ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा – संस्कृत । **विषय**—अलंकार । र० काल × । ले० काल सं० १८२७ चैत्र सुदी १५ । वेष्टन सं० २१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५८७०. **श्रुतबोध—कालिदास** । पत्र सं० ६ । आ० ११×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंद शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १८६८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४१८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५८७१. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ५ । आ० ६×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२६५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५८७२. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० २ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५८७३. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० ४ । ले०काल० × । पूर्ण । वेष्टन सं० २५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

५८७४. **प्रतिसं० ५** । पत्र सं० ६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १८४४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७०-१४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५८७५. **प्रतिसं० ६** । पत्र सं० ७ । आ० ६ × ५ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६७-१०६ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५८७६. **प्रतिसं० ७** । पत्रसं० ६ । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-छंद । र० काल × । ले०काल सं० १८३५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४८-६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—सागपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

५८७७. **प्रतिसं० ८** । पत्रसं० ४ । आ० १०$\frac{1}{2}$× ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५८७८. **प्रतिसं० ९** । पत्रसं० ६ । आ० १० × ४ इञ्च । ले० काल सं० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

विशेष—इन्दरगढ में प्रतिलिपि हुई थी ।

५८७९. **प्रतिसं० १०** । पत्रसं० ४ । आ० १०× ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—भ० देवेन्द्रकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

५८८०. **प्रतिसं० ११** । पत्र सं० ३ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

५८८१. **प्रतिसं० १२** । पत्र सं० ५ । आ० १०½ × ५ इञ्च । ले०काल सं० १८८२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८६ । **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है -

संवत् १८८२ आषाढ मासे शुक्ल पक्षे तृतीयायां गुरुवासरे सवाई जयपुर मध्ये हरचन्द लिपिकृतं वाचकानां ।।

५८८२. **प्रतिसं० १३** । पत्र सं० ५ । आ० १०½ × ५ इञ्च । ले०काल सं० १८७७ । वेष्टन सं० २०७ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५८८३. **प्रतिसं० १४** । पत्रसं० ६ । आ० ९½ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १८७७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११० । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

५८८४. **प्रति सं १५**। पत्रसं० १५ । आ० ९×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५९ । **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक)

५८८५. **प्रतिसं० १६** । पत्रसं० ४ । आ० ८½ × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

५८८६. **प्रति सं० १७** । पत्र सं० ४ । आ० ९ × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर कोटयों का नैणवा ।

५८८७. **प्रतिसं० १८** । पत्र सं० ४ । आ० १०×६½ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१/१६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मंदिर पंचायती दूनी (टोंक)

५८८८. **प्रतिसं० १९** । पत्रसं० ३ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २८४ । **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

५८८९. **श्रुतबोध टीका—मनोहर शर्मा** । पत्रसं० १४ । आ० ७½ × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—छन्द शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५८९०. **श्रुतबोध टीका—वरशर्म्म** । पत्रसं० १२ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-छन्द शास्त्र । र०काल × । ले० काल सं० १९३३ वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९-१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

५८९१. **श्रुतबोध टीका—हर्षकीर्ति** । पत्र सं० २० । आ० ११½ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय – छन्द शास्त्र । र०काल × । ले० काल सं० १९०१ भादवा सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक)

५८६२. **शृंगारदीपिका—कोमट भूपाल ।** पत्र सं० ६ । आ० १०×४½ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय—रस अलंकार । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूंदी)

५८६३. **संस्कृत मंजरी**— × । पत्र सं० ६ । आ० १०×४ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय—छन्द । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४५-६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

विषय--नाटक एवं संगीत

५८६४. इन्द्रिय नाटक— × । पत्रसं० १६ । आ० ६२×७½ इंच । **भाषा**—हिन्दी पद्य । **विषय**—नाटक । र० काल सं० १६५५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

विशेष—नाटक की रचना ग्रंथकार ने अपने शिष्य तिलोका पाटनी, राजवल्लभ नेमीचन्द फूलचन्द पटवारी खेमराज के पुत्र आदि की प्रेरणा से आषाढ मास की अष्टाह्निका महोत्सव के उपलक्ष में सं० १६५५ में केकड़ी में की थी । रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है ।

आदि भाग—

परम पुरुष प्रमेस जिन सारद श्री वर पाय ।
यथा शक्ति तुम ध्यानतैं नाटक कहू बनाय ।।

× × × × ×

इक दिन मनमंदिर विषै सुविधि धारि उपयोग ।
प्रकट होय देखहि विविध इन्द्रीन को अनुयोग ।।

अन्तिम भाग—

जिय परणत त्रिय भेद बताई ।
शुभ अर अशुभ बुद्ध यूं गाई ।
नाटक अशुभ शुभई दोय जानूं ।
शुद्ध कथन अनुभव हियमानूं ।।
सो नाटक पूरण रस थाना,
पंडित जन उपयोग लगाना ।
सतपत नाटक की विध जानूं ।
विद्या शिष्य के प्रेम लखानूं ।
अष्टाह्निक उत्सव जिन राजा ।
साढ मास का हुआ समाजा ।
शुक्ल तिथि ग्यारस मुज पासा ।
आये शिष्य नाटक करि आसा ।।
गोत पाटणी नाम तिलोका,
राजमल्ल नेमीचन्द कोका ।
फूलचन्दजी हैं पटवारी,
कहे सब नाटक क्यों कहो सुखकारी ।।
खेमराज सुत बैन उचारी,
इन्द्री नाटक है उपकारी ।
धर्म हेतु यह काज विचारयो,
नाना अर्थ लेय मन धार्यो ।।

लाज त्याग उद्यत इस काजा,
लह्या भेद वेद न अरामाजा ।
पारस क्षमा करो बुधि कोरी,
हेर अर्थ कू न्याय घटोरो ।।
नीर बूंद मधि सीप समाई,
केम मुक्त नहीं हो प्रभुताई ।
कर उपकार सुधारहु वीरा,
रति एह नहि तुम धीरा ।।७।।
कवि नाम अरु गांम बताया,
अर्द्ध दोय चौपई पर गाया ।
मंगल नृपति प्रजा सब साजा,
ए पूरण भयो सनाजा ।।८।।
नांदो चिरजीवो साधर्मी,
अन्त समाधी मिलो सतकर्मी ।
धर्मवासना सब सुखदायी,
रहो अखंड थु होय बड़ाई ।।
उगणीसो पचपन विषै नाटक भयो प्रमाण ।
गांव केकडी धन्य जहां रहे सदा मतिमान ।।

५८९५. ज्ञानसूर्योदय नाटक-- वादिचन्द्रसूरि । पत्रस० ३७ । आ० ८½ × ५½ । भाषा—संस्कृत । विषय—नाटक । र०काल सं० १६४८ माघ सुदी ८ । ले०काल सं० १८०० । पूर्ण । वेष्टन सं० १२९४ । **प्राप्ति स्थान**--भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

५८९६. प्रति सं० २ । पत्रसं० ४३ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२५६ । **प्राप्ति स्थान**--भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५८९७. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० ३१ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल सं० १८२८ आषाढ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—केशरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

५८९८. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ३६ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल सं० १७६२ कार्तिक सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनसं० २४१ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

५८९९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३३ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १७३० आसोज बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर डूंगी (टोंक)

विशेष—ब्यावर नगर में शांतिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की गयी थी ।

५९००. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६९ । आ० ९½ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १८७४ माघ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३४ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

विशेष—गुमानीराम के सुपुत्र जीवनराम ने लिखकर करौली के मन्दिर में चढाया था ।

५६०१. **ज्ञानसूर्योदय नाटक भाषा—भागचन्द**। पत्रसं० ६०। आ० १०½×६½ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—नाटक। र० काल सं० १६०७ भादवा सुदी ७। ले० काल सं० १६२६ ज्येष्ठ सुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० ६२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

५६०२ **प्रति सं० २**। पत्रसं० ६१। आ० १०×५½ इञ्च। ले० काल सं० १६१६। पूर्ण। वेष्टन सं० ३५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

५६०३. **प्रतिसं० ३**। पत्रसं० ५१। ले०काल सं० १६२२। पूर्ण। वेष्टनसं० २२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बड़ा पंचायती मन्दिर डीग।

५६०४. **प्रतिसं० ४**। पत्र सं० १०४। आ० १२×५½ इंच। ले०काल सं० १९१५ भादवा सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन सं० १०। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

५६०५. **प्रति सं० ५**। पत्रसं० ५५। आ० १०½×६½ इञ्च। ले० काल १६२६। पूर्ण। वेष्टन सं० ३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर बयाना।

५६०६. **प्रति सं० ६**। पत्रसं० ८३। आ० ११×५½ इञ्च। ले०काल सं० १६३७ जेष्ठ सुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० ६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—पालमग्राम में श्रावक अमीचन्द ने प्रतिलिपि की थी। लाला रिखबदास के पुत्र रामचन्द्र ने लिखवाया था।

५६०७. **प्रतिसं० ७**। पत्रसं० ८४। आ० १०×६ इंच। ले०काल सं० १६४१ वैशाख सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन सं० १४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर स्वामी बूंदी।

५६०८. **प्रतिसं० ८**। पत्रसं० ५४। आ० १२½×८ इञ्च। ले० काल सं० १६३६ वैशाख बुदी ५। वेष्टन सं० २६, १०८। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर।

५६०९. **प्रतिसं० ९**। पत्रसं० ७२। आ० १३½×८ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर।

५६१०. **प्रतिसं० १०**। पत्र सं० ५६। आ० १०½×७ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १०४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर।

५६११. **प्रति सं० ११**। पत्रसं० ६३ ले०काल सं० १६१४। पूर्ण। वेष्टन सं० १६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर हण्डावालों का डीग।

५६१२. **ज्ञानसूर्योदय नाटक पारसदास निगोत्या**। पत्र सं० ७६। आ० ११½×८½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–नाटक। र०काल सं० १६१७ वैशाख बुदी ६। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ५३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

५६१३. **प्रतिसं० २**। पत्र सं० ५०। आ० ११½× ८½ इञ्च। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ५३६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

५६१४. **प्रति सं० ३**। पत्र सं० १०५। आ० ९×६ इञ्च। ले० काल सं० १६१५। पूर्ण। वेष्टन सं० ५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा।

५६१५. **प्रतिसं० ४**। पत्र सं० ४०। आ० १२½ × ७ इञ्च। ले०काल सं १६३४। पूर्ण। वेष्टन सं० ३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)।

५६१६. प्रति सं० ५ । पत्रसं० ४७ । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल सं० १६३६ (ना० २-४-१८८२) । पूर्ण । वेष्टन सं० ११४-८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—राजा सरदारसिंह के राज्य में प्रतिलिपि हुई थी ।

५६१६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३५ । आ० ११×८ इञ्च । ले० काल सं० १६३६ फागुण बुदी ७ । वेष्टन सं० २२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

५६१८. ज्ञान सूर्योदय नाटक— × । पत्रसं० ६७ । भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २८; १७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

५६१६. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ५७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०/१६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

५६२०. प्रबोध चंद्रोदय नाटक—कृष्णमिश्र । पत्रसं० ७० । आ० १३½ ×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । **विशेष**—नाटक । र० काल × । ले० काल सं० १७६५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—दीक्षित रामदास कृत संस्कृत टीका सहित है । बीच में मूल तथा ऊपर नीचे टीका है ।

सं० १७६५ वर्षे लिपिकृतं वधनापुर मध्ये अविराम पठनार्थं प्रहोत (प्रोहित) उईराम ।

५६२१. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ६८ । आ० ११×५½ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—इति श्री मदभट्ट विनायकात्मज दीक्षित रामदास विरचिते प्रकाशाख्ये प्रबोध चन्द्रोदय नाटक व्याख्याने जीवन्मुक्ति निरुपणं नाम षष्टांक ।

५६२२. मदनपराजय – जिनदेवसूरि । पत्रसं० ५२ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । **विशेष**—नाटक । र० काल × । ले० काल सं १६२८ आसोज सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २५० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६२३. प्रति सं० २ । पत्रसं० ७४ । आ० ११×५ इंच । ले० काल सं० १८४१ वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

५६२४. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० ४६ । आ० ११×४½ इञ्च । ले० काल सं० १६०७ फाल्गुन बुदी ५ सोमवार । पूर्ण । वेष्टन सं० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५६२५. प्रतिसं० ४ ···· । पत्र सं० ३५ । आ० ११ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १८०० ज्येष्ठ सुदी १२ । वेष्टन सं० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—लवाण नगर के चन्द्रप्रभ चैत्यालय में पं० भ० महेन्द्र कीर्ति ने प्रतिलिपि कराकर स्वयं ने संशोधन किया था ।

५६२६. प्रतिसं० ५ । पत्र सं० ३७ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल सं० १६२६ मंगसिर बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६२६ वर्षे मार्गशिर सुदि ४ तिथौ श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० पद्मनन्दि तत्पट्टे भट्टारक सकलकीर्ति तत्पट्टे भुवनकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक ज्ञानभूषणदेवा तत्पट्टे भट्टारक विजयकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक सुमतिकीर्तिदेवा तद्गुरु भ्राता आचार्य श्री सकलभूषण गुरूपदेशात् शिष्य ब्र० हरखा पठनार्थं भीलोडा वास्तव्य हुंबडज्ञातीय दो. मूला भार्या बा. पूतिलि तयो सुत धर्मभारधुरंधर जिनपूजापुरंदर आहारभयभैषज्यशास्त्रदानवितरणैकतत्पर जिनशासनशृंगार हार दो. संकर भार्या सरूपदे एतेषां मध्ये दो. संकररत्नेन स्वज्ञाना वरणी कर्म क्षयार्थं श्री मदन पराजय नाम शास्त्रं लिखाप्य दत्तं ।।

ब्रा. शिवदास तत् शिष्य पंडित वीरभाग पठनार्थं ।

५६२७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३२ । आ० १०½ × ४½ इंच । **ले०काल** सं० १६६० वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

प्रशस्ति—संवत् १६६० वर्षे मिती वैशाख मासे शुक्ल पक्षे नवम्यां तिथौ रविवासरे श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये मंडलाचार्य श्री नेमिचन्द्र जी तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री यशःकीर्ति तच्छिष्य ब्रह्म गोपालदास स्तेनलिपिकृतमिदं मदनपराजयाह्वयं स्वात्मपठनार्थं कृसनगढ मध्ये ।

५६२८. प्रतिसं० ७ । पत्रसं० ५१ । आ० १०½ × ५ इंच । **ले०काल** सं० १८४२ चैत बुदि ३ ।पूर्ण । वेष्टन सं० ३२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

५६२९. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३१ । आ० १०½ × ५ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३७ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

५६३०. प्रतिसं० ९ । पत्र सं० ८९ । आ० ९ × ४½ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

५६३१. प्रतिसं० १० । पत्र सं० ५१ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५-३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५६३२. मिथात्व खंडन नाटक · बखतराम साह । पत्र सं० १८३ । भाषा हिन्दी । विषय - नाटक । र०काल सं० १८२१ पोष सुदी ५ । ले०काल सं० १९१२ आसोज सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४९ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

५६३३. प्रतिसं० २ । पत्र सं० १०९ । आ० १०½ × ४½ इंच । ले०काल सं० १८५७ आषाढ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६-६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—तक्षिकपुर में पं० शिवजीराम ने सहजराम व्यास से लिखवाया था ।

५६३४. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० १८ । आ० ९ × ६ इंच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक) ।

५६३५. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० १६ से ११९ । आ० ६½ × ६ इंच । ले० काल सं० १८४५ । अपूर्ण । वेष्टन सं० १९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल टोंक ।

५६३६. प्रतिसं० ५ । पत्र सं० १०१ । आ० १० × ५ इंच । ले० काल सं० १८८८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पंचायती दूनी (टोंक) ।

विशेष—दूनी के जैन मन्दिर में सं० १९३६ में हजारीलाल ने चढाया था ।

५६३७. **प्रतिसं० ६** । पत्रसं० ६१ । आ० १० × ५½ इञ्च । ले०काल सं० १७७६ श्रावण शुक्ला सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती टूनी (टोंक) ।

विशेष - महात्मा गुमानीराम देवग्राम वासी ने लक्षकपुर में प्रतिलिपि की थी ।

५६३८. **प्रतिसं० ७**। पत्र सं० ३६ । आ० १३ × ४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

५६३९. **प्रतिसं० ८** । पत्र सं० ५८ । आ० ११½ × ४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

५६४०. **प्रतिसं० ९** । पत्रसं० ४५ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५६४१. **प्रतिसं० १०** । पत्रसं० १२७ । आ० ९½ × ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४६ ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५६४२. **प्रतिसं० ११** । पत्रसं० ६३ । आ० १२½ × ६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६-३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५६४३. **प्रतिसं० १२** । पत्रसं० ११५ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १८६१ आषाढ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६०-५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पंथी दीसा ।

विशेष—शुद्ध एवं उत्तम प्रति है ।

५६४४. **१३** । पत्र सं० २८ । आ० १२ × ८ इञ्च । ले०काल सं० १६५७ जेठ सुदी १५ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

५६४५. **मिथ्यात्व खंडन नाटक**—× । पत्रसं० २५ । आ० १२ × ८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—नाटक । र०काल × । ले० काल सं० १६५५ । पूर्ण । जीर्ण । वेष्टन सं० २०-७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

५६४६. **हनुमन्नाटक—मिश्र मोहनदास** । पत्र सं० २७ । आ० १३ × ६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-नाटक । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष - प्रति सटीक है ।

५६४७. **तालस्वरज्ञान**— × । पत्र सं० ६ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-संगीत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

अंतिम प्रशस्ति—इति श्री भावभट्टसंगीतरामानुष्ठयचन्द्रवाप्ति विरचिते अतमुपैष्यधिति शत-पद्यस्य प्रथम श्रुति प्रभावः । द्विशति पद तालः ।

५६४८. **रागमाला**— × । पत्रसं० ५ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-राग रागनियों के नाम । र०काल— × । ले० काल × । वेष्टन सं० २१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

५६४६. रागरागिनी (सचित्र)— × । पत्र सं० ३० । आ० १० × ७½ इञ्च । विषय-संगीत । पूर्ण । वेष्टन सं० ३-२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—३० राग रागनियों के चित्र हैं । चित्र सुन्दर हैं ।

५६५०. रागमाला— × । पत्र सं० ५ । भाषा-हिन्दी । विषय-संगीत । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

५६५१. सभाविनोद (रागमाला)—गंगाराम । पत्र सं० २४ । आ० ८½ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-संगीत । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२८४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—आदिभाग—

गावत नाचत आपही दौरु में सब अंग ।
नमो नाथ पैदा कहे सीस गंग अरधंग ।।१।।
दृष्टि न आवै अगम अति मनस्य की गम नाहि ।
विपट निकट संगही रहै बोलै घटघट मांहि ।।

अंतिम—छट् राग प्रभाव कवित्त—

भैरव तै थानी विन विरद किरत जात ।
माल कोश गाये गुनी अंगन जरातु हैं ।
हिंडोर की आलापतैं हिंडोर आप झोटा लेत
दीपक गाये गुनी दीपक जरातु हैं ।
श्री मैं इह गुन प्रकट अखानत है गु को ।
रूप हसो होत फिरि हुलसात है
गंगाराम कहै मेघराग को प्रभाव
इह मेघ बरसातु है ।

इति श्री सभाविनोद रागमाला ग्रंथ संपूर्ण ।

५६५२. संगीतशास्त्र— × । पत्र सं० ६१-६५ । आ० १२ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-संगीत । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४६४/६१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

५६५३. संगीतस्वरभेद— × । पत्र सं० ४ । आ० १२ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-संगीत । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४६५/६१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

—:०:—

विषय -- लोक विज्ञान

५६५४. **चन्द्रप्रज्ञप्ति** -- × । पत्र सं० २६ । आ० १३½ × ५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र०काल × । **ले०काल** सं० १५०३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७७/५३६ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति पतले कागज पर है । एक पत्र पर २७ पंक्तियां हैं ।

अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—इति चन्द्रपण्णत्ती सूत्रं । ग्रंथाग्रं २००॥

अंतिम—श्री मंधारापुर्यां प्राग्वाट् ज्ञाति मुकुटमजनिष्ट ।

जोगाकः संघपतिः समूलसद्धर्मकर्ममतिः ॥१॥
तस्यानुरक्त चित्तादयिताडारहीनगुणकलिता ।
तेनमोनाया सुश्रिनयो लषाभिध, स्मजाति समृद्धः ॥
भ्रातृ नगराज गुणि आमुक्ट गौरीप्रभृति बहुकुटुंबयुतः ।
राणीजाति रया भूज्यानिः पुण्यानुबधि जातेः ॥३॥
प्रथित तया बाणा गगनं गण भासन भास्करानुमतां ।
श्री जयचन्द्र गुरुणामुपदेशे नावगत तत्त्व ॥४॥
निजलक्ष्मी सुक्षेत्रे निक्षेप्तुं मातृवद्धितोत्साह ।
लक्षानुमितं ग्रंथं विक्रोश लेखयाञ्चक्रः ॥५॥
लेखयितुस्य श्रीभचन्द्रप्रज्ञप्तमांगसूत्रमिदं ।
लोचन ख निधि मिताब्धे १५०३ विदुषां सततोपयोगिस्यात् ॥६॥
क्रीडतस्तो राजहंसावदृदिकदल पुष्करे ।
यावत्तावदिदं विद्वद्वाच्यं नंदतु पुस्तकं ॥७॥

५६५५. जम्बूदीप पण्णत्ति— × । पत्र सं० १३१ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

५६५६. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १६६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

५६५७. जम्बूद्वीप संघयणि—हरिभद्र सूरि । पत्रसं० ६ । आ० १०×५ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—गणित । र०काल × । ले०काल सं० १६०७ आसोज सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८-१२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष--संस्कृत टब्बा टीका सहित है ।

५६५८. तिलोय पण्णत्ति—आचार्य यतिवृषभ । पत्रसं० २१६ । आ० १२½×७½ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय—लोक विज्ञान । र०काल × । ले० काल सं० १८१४ माघ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी काम्बा ।

विशेष—पं० मेधावी कृत संस्कृत में विस्तृत प्रशस्ति है। कामा में प्रतिलिपि हुई थी।

५६५९. प्रतिसं० २। पत्र सं० ३४६। आ० ११×५ इञ्च। ले०काल सं० १७९९ वैशाख बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० १३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवान जी कामा।

विशेष—अग्रवाल जातीय नरसिंह ने प्रतिलिपि की थी। पत्र सं० ३४०-३४६ तक मेधावीकृत संवत् १५१९ की विस्तृत प्रशस्ति दी हुई है।

५६६०. प्रति सं० ३। पत्र सं० २७। आ० ११×६½ इञ्च। ले० काल सं० १७५०। पूर्ण। वेष्टन सं० ५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा।

५६६१. त्रिलोक दीपक—वामदेव। पत्र सं० ८६। भाषा-संस्कृत। विषय-लोक विज्ञान। र०काल ×। ले० काल सं० १७९५ सावन सुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० २८५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—प्रति सचित्र है।

५६६२. प्रतिसं० २। पत्र सं० ८२। आ० १२×७½ इञ्च। ले० काल सं० १७३४ कार्तिक सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन सं० २१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा।

विशेष—भ० रत्नकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी। प्रति सचित्र है।

५६६३. प्रतिसं० ३। पत्र सं० २३-७२। आ० १२ × ६ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ८१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

विशेष—संदृष्टियां हैं।

५६६४ प्रतिसं० ४। पत्र सं० १–३२। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ८२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

५६६५. प्रतिसं० ५। पत्रसं० १०१। आ० १३×६ इंच। ले०काल सं० १५७२। पूर्ण। वेष्टन सं० १३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर।

विशेष- पत्र ४० पर एक चित्र भी है अभ्यन्तर परिषद् इन्द्र के निवास का चित्र है। वरुणकुमार सोमा, यम, आदि के भी चित्र हैं।

५६६६. त्रिलोक प्रज्ञप्ति टीका— ×। पत्रसं० २५। आ० ११×५ इंच। भाषा—प्राकृत संस्कृत। विषय-लोक विज्ञान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १४६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—प्रति अच्छी है।

५६६७. त्रिलोक वर्णन—जिनसेनाचार्य। पत्र सं० १६-५६। भाषा—संस्कृत। विषय—लोक विज्ञान। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ६१३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

विशेष—हरिवंश पुराण में से है।

५६६८. त्रिलोक वर्णन— ×। पत्रसं० १०। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—लोक वर्णन। र०काल ×। ले०काल सं० १५३० आषाढ सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० १६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

५६६६. **त्रिलोकसार—नेमिचन्द्राचार्य।** पत्रसं० ६६ । आ० ११×४½ इञ्च। भाषा—प्राकृत । **विषय**—सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल सं० १६६१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति इस प्रकार है—सं० १६६१ वर्षे मूलसंघे भट्टारक श्री वादिभूषण गुरुपदेशात् तत् शिष्य ब्र० श्री वर्द्धमान पठनार्थं ।

५६७०. **प्रति सं० २** । पत्रसं० १७ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६४/१८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर ।

५६७१. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० ७६ । आ० ११×४ इञ्च । ले० काल सं० १६६७ पौष सुदी १० । वेष्टन सं० २५१/६३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

विशेष—श्री गिरिपुर (डूंगरपुर नगर) में श्री आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी ।

५६७२. **प्रतिसं० ४** । पत्र सं० २६ । आ० १० ×४½ इञ्च । । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६७३. **प्रतिसं० ५** । पत्र सं० ३–१५ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—१४ यंत्रों के चित्र दिये हुए हैं ।

५६७४. **प्रतिसं० ६** । पत्र सं० १८ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल सं० १६८२ वैशाख सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष ब्रह्मचारी केशवराज ने ग्राम सालोडा में प्रतिलिपि की थी । प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

५६७५. **प्रतिसं० ७** । पत्र सं० २२ । आ० ११ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १५१८ काती सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष प्रशस्ति—संवत् १५१८ वर्षे कार्तिक सुदी ३ मंगलवारे देवसाह नयरे रावत भोजा भोकल राज्ये श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा तस्य शिष्य महात्मा शुभचन्द्रदेव लिखापितं श्री श्री नेमिनाथ चैत्यालये मध्ये । वणिक पुत्र माहराजेन वारते ।

५६७६. **प्रतिसं० ८** पत्र सं० १–२० । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन सं० ७४८ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५६७७. **प्रतिसं० ६** । पत्रसं० २७ । आ० १४×७ इञ्च । ले० काल सं० १६३२ मंगसिर बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी नैणवा ।

विशेष—चन्दालाल बैद ने स्वयं अपने हाथ से पढने को लिखा था ।

५६७८. **प्रतिसं० १०** । पत्र सं० ६० । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल सं० १८४६ । **पूर्ण** । वेष्टनसं० १८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । साह रोडु सभद्रा का बेटा मनस्या ने ज्ञान विमल की प्रति से उतारा था ।

५६७९. **प्रतिसं० ११** । पत्र सं० १०५ । आ० ६½×४½ इञ्च । ले०काल सं० १७८६ आसोज बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४/१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ़ (कोटा)

५६८०. **प्रतिसं० १२** । पत्रसं० ८४ । आ० १३×६½ इञ्च । ले० काल सं० १७८६ पौष सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४८/२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्द्रगढ़ (कोटा) ।

५६८१. **प्रतिसं० १३** । पत्र सं० २८ । आ० १३×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—६३ शलाका के चित्र हैं ।

५६८२. **प्रतिसं० १४** । पत्रसं० २८ । आ० १०½×४½ इंच । ले० काल सं० १५३० चैत बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० २०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

विशेष · खण्डेलवाँल ज्ञातीय पाटनी गोत्रोत्पन्न सं० तोल्हा भार्या तोल्ही तथा उनके पुत्र खेती पौत्र जिनदास टीला, तथा छोटा ने कर्मक्षय निमित्त प्रतिलिपि करवाई थी ।

५६८३. **प्रतिसं० १५** । पत्र सं० ५१ । आ० ५½×३½ इञ्च । ले० काल सं० १५२७ चैत्र बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० १८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

५६८४. **प्रतिसं० १६** । पत्रसं० २६ । आ० १०½×४½ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

५६८५. **प्रतिसं० १७** । पत्र सं० ७२ । आ० १२½×५ इंच । ले० काल सं० १६०६ । अपूर्ण । वेष्टन सं० १५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति टीका सहित है किन्तु सब पत्र अस्त व्यस्त हो रहे हैं ।

५६८६. **प्रतिसं० १८** । पत्र सं० ८३ । आ० ११½×४½ इञ्च । ले० काल सं० १५४४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

५६८७. **त्रैलोक्यसार संदृष्टि**— × । पत्रसं० फुटकर । भाषा-प्राकृत । विषय-लोक विज्ञान । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २८४-८५/२०५-२०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

५६८८. **त्रिलोकसार**— × । पत्र सं० १७४ । आ० ११½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल सं० १६५६ पौष बुदी ४ । **पूर्ण** । वेष्टन सं० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष— प्रशस्ति—

संवत् १६५६ पौष वदि चतुर्थी दिवसे बृहस्पतिवारे श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्री जिनचंद्र देवा तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्री चन्द्रकीर्तिस्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये सा बडा गोत्रे अंबावती मध्ये राजा श्री मानसिंघ प्रवर्त्तमाने साह धणराज तद्भार्ये प्रथम धणासिरि द्वितीया सुहागणि प्रथम भार्या·····।

५६८९. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ६-८९ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले० काल सं० × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

५६९०. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० २-३१ । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल सं० १७५१ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

५९९१. प्रति सं० ४ । पत्रसं० १२३ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × पूर्ण । वेष्टन सं० २५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

५९९२. प्रति सं० ५ । पत्रसं० ६ । आ० १०×५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

५९९३. त्रिलोकसार सटीक— × । पत्र सं० १० । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—प्राकृत-संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । **वेष्टन सं० १६ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

५९९४. त्रिलोकसार भाषा— × । पत्र सं० ३१ । आ० ९×६ इञ्च । भाषा हिन्दी गद्य । विषय—भू विज्ञान । र०काल × । ले०काल सं० १८१६ ज्येष्ठ सुदी ९ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती टूनी (टोंक)

विशेष—मालवा देश के सिरोज नगर में लिखा गया था ।

५९९५. प्रति सं० २ । पत्रसं० ३४–४३ । आ० १२×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)

५९९६. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० ९ । आ० ११×४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । **वेष्टन सं०** २४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

५९९७. प्रति सं० ४ । पत्रसं० २१ । आ० १०×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—त्रिलोकसार में से कुछ चर्चाएं हैं ।

५९९८. त्रिलोक सार— × । पत्र सं० ११५ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२२, १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—११५ से आगे के पत्र नहीं है ।

५९९९. त्रैलोक्यसार टीका—नेमिचन्द्रगणि । पत्रसं० २२ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय लोक विज्ञान । र०काल × । ले०काल सं० १५३१ आषाढ सुदी १३ । वेष्टन सं० १८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६०००. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३८ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन सं० १८६ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६००१. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० ८६ । आ० ११½×४ इञ्च । ले० काल सं० १५८३ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—चंपावती नगरी में सोलंकी राजा रामचन्द्र के राज्य में प्रतिलिपि हुई थी ।

६००२. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० ७१ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले०काल सं० १५८० फागुन सुदी ३ । वेष्टन सं० १८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—जोशी श्री हरसराम ने प्रतिलिपि की थी ।

६००३. **प्रति सं० ५**। पत्रसं० ६५। आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। **ले०काल** सं० १८८३ आसोज बुदी ६। वेष्टन सं० १८४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

६००४. **त्रिलोकसार टीका—माधवचन्द्रत्रिविध**। पत्रसं० १४६। आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय लोकविज्ञान। र०काल × । **ले०काल** सं० १५८८ सावण सुदी १४। पूर्ण। **वेष्टन सं०** ६२— ....। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

प्रशस्ति—संवत् १५८८ वर्षे श्रावण सुदि चतुर्दशी दिने गुरुवारे श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदिस्तत्पट्टे भ० श्री सकलकीर्ति देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्ति देवास्तत्पट्टो भ० श्री ज्ञानभूषण देवा.....।

सं० १८२१ फागुण सुदी १० को पं० सुखेण द्वारा लिखा हुआ एक विषय सूची का पत्र और है।

६००५. **प्रतिसं० २**। पत्र सं० २२८। आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। **ले०काल** सं० १५५१ फागुण सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० २०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—खंडेलवाल ज्ञातीय बाकलीवाल गोत्रोत्पन्न साह लाखा भार्या लखमी के वंश में उत्पन्न नेता व नाथू ने ग्रंथ की लिपि करवायी थी।

६००६. **प्रति सं० ३**। पत्रसं० ६६। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० २५। **प्राप्ति स्थान**—पंचायती दि० जैन मन्दिर डीग।

६००७. **प्रतिसं० ४**। पत्र सं० ६०। आ० १२$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{3}{4}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-लोकविज्ञान। र०काल × । ले० काल सं० १७६५ फागुण वदि ५। पूर्ण। वेष्टन सं० १५४। **प्राप्ति स्थान**—पंचायती दि० जैन मन्दिर करोली।

विशेष —२ प्रतियां और हैं। नरसिंह अग्रवाल ने प्रतिलिपि की।

६००८. **प्रतिसं० ५**। पत्र सं० ८६–११७। आ० १२$\frac{1}{2}$ × ७ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ७३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

६००९. **प्रति सं० ६**। पत्रसं० १४५। आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। **ले०काल** सं० १७२१। पूर्ण। वेष्टन सं० १७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

६०१०. **प्रति सं० ७**। पत्र सं० १६५। आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ७८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है। ६० से आगे दूसरी प्रति के पत्र हैं। यह पुस्तक आचार्य त्रिभुवनचन्द के पढने की थी। प्रति प्राचीन है।

६०११. **त्रैलोक्यसार टीका—सहस्रकीर्ति**। पत्र सं० ५७। **भाषा**-संस्कृत। विषय-लोक विज्ञान। र०काल × । ले० काल १७९३। पूर्ण। वेष्टन सं० २२। **प्राप्ति स्थान**—पंचायती दि० जैन मंदिर डीग।

६०१२. **त्रिलोकसार चर्चा— × ।** पत्रसं० ६३। आ० १३×८ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-चर्चा। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १५२१। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६०१३. **त्रैलोक्य दीपक—वामदेव**। पत्र सं ८१। आ० २०×१२ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-लोक-विज्ञान। र० काल × । ले० काल सं० १७२१ फाल्गुन सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं १७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—प्रति बडे आकार की है। कोटा दुर्ग में महाराज जगतसिंह के राज्य में महावीर चैत्यालय में जगसी एवं सांवल सोमाणी से लिखवाकर भ० नरेन्द्र कीर्ति के शिष्य बालचन्द को भेंट की थी। प्रति सचित्र है।

६०१४. **त्रैलोक्य स्थिति वर्णन**—× । पत्रसं० १२ । आ० १२ × ५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय—लोक विज्ञान। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

६०१५. **त्रिलोकसार—सुमतिकीर्ति**। पत्र सं० १५। आ० १२×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-लोक विज्ञान। र० काल सं० १[illegible] भाद्र सुदी १२। ले० काल सं० १८५६। पूर्ण। वेष्टन सं० १६१२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६०१६. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० १३। आ० १०×५ इञ्च। ले० काल सं० १७६३ आषाढ सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन सं० ४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)।

६०१७. **प्रतिसं० ३**। पत्र सं० ११। आ० १० × ४¾ इञ्च। ले० काल सं० १७६२ फाल्गुन सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन सं० १६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

६०१८. **प्रतिसं० ४**। पत्र सं० २-४५। आ० ६½ × ४½ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टनसं० १३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

६०१९. **प्रतिसं० ५**। पत्रसं० ११। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ४१०-१५३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर।

६०२०. **त्रिलोकसार—सुमतिसागर**। पत्रसं० १२६। भाषा संस्कृत। र० काल × । ले० काल सं० १७२४ वैशाख सुदी ७। पूर्ण। वेष्टनसं० ८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा।

६०२१. **त्रिलोकसार वचनिका**— × । पत्रसं० ३७६। आ० १२½ × ६¼ इंच। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—लोकविज्ञान। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १८२/६२। **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्द्रगढ़ कोटा।

६०२२. **त्रिलोकसार यंत्र**— × । पत्र सं० १। आ० २८ × १३ इञ्च। विषय—लोक विज्ञान। र० काल × । लेखन काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २७३-१०६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

विशेष—कपड़े पर तीन लोक का चित्र है।

६०२३. **त्रिलोकसार**—×। पत्र सं ५१। आ० १२×६½ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय-लोक विज्ञान। र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १७२-७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

६०२४. **त्रिलोकदर्पण**—**खडगसेन**। पत्र सं० १४६। आ० १२ × ५½ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय-लोक विज्ञान। र० काल सं० १७१३। ले० काल सं० १८६९। पूर्ण। वेष्टन सं० ११५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती टूनी (टोंक)।

६०२५. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० २७०। आ० १०×५ इञ्च। ले०काल सं० १८१८ पौष सुदी २। पूर्ण। वेष्टनसं० १४०७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार।

६०२६. **प्रतिसं० ३**। पत्रसं० १२१ । आ० १२×५$\frac{3}{4}$ इञ्च। ले० काल सं० १८४८ पौष सुदी १। पूर्ण। वेष्टनसं० ३१७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

६०२७. **प्रतिसं० ४**। पत्रसं० ६०। आ० १०×६$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

विशेष—६० से आगे पत्र नहीं हैं।

६०२८. **प्रतिसं० ५**। पत्र सं० ११२ । आ० १०×५ इञ्च। ले० काल सं० १७६८ वैशाख बुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० १४४। **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मन्दिर करौली। इसका दूसरा नाम त्रिलोक चौपाई, त्रिलोकसार दीपक भी है।

विशेष—सं० १७६८ वर्षे वैशाख मासे कृष्ण पक्षे सप्तम्यां गुरुवासरे श्री मूलसंघे बलात्कार गणे सरस्वती गच्छे कुंदकुन्दाचार्यान्वये ब्रजमंडलदेशे कछवाहा गोत्रे राजा जैसिंघ राज्ये कामवनमध्ये। भट्टारक श्री विश्वभूषणदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री देवेन्द्रभूषणदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सुरेन्द्रभूषणदेवास्तत्शिष्य पंडित राजा रामेण सकलकर्मक्षयार्थं श्रीमत्त्रैलोक्यसारभाषा ग्रंथोयं लिखितं।

अथ ढिलावटीपुर सुभस्थाने तत्र निवास कासु सोगानी जाति साहजी मोहनदास तस्य भार्या हीरा तत्पुत्र द्वौ जेठ्ठे जगरूप तस्य भार्या अनंदी तत्पुत्र भोगीराम द्वितीय जगरूपस्थ भ्राता बलूए तेषा मध्ये साह जगरूपेण लिखापितं स्वज्ञानावर्णी क्षयार्थं। श्रीमत्त्रिलोकदीपक नाम ग्रंथ नित्यं प्रणमति। सर्व ग्रंथ संख्या ५००६।

६०२९. **प्रतिसं० ६**। । पत्र संख्या ३२० । आ० ६×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-लोकविज्ञान। ले० काल सं० १७३२। पूर्ण। वेष्टन संख्या ८८२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६०३०. **प्रतिसं० ७**। पत्र सं० १५०। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। ले०काल सं० १८४१। पूर्ण। वेष्टन सं० ५। **प्राप्ति स्थान**—तेरहपंथी दि० जैन मंदिर नैणवा।

६०३१. **त्रिलोकसार भाषा** - ×। पत्र सं० २५२। आ० १३×६$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-लोक विज्ञान। र० काल सं० १८४१। ले०काल सं० १९४७। पूर्ण। वेष्टन सं० १६१४। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

६०३२. **त्रिलोकसार भाषा**— ×। पत्र सं० ३५०। आ० १०×७ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय-त्रिलोक वर्णन। र० काल ×। ले०काल सं० १८७४ मंगसिर बुदी १२। पूर्ण। वेष्टन सं० ८०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ दूनी (टोंक)।

विशेष—लिखतं महात्मा जयदेव वासी जोवनेर लिख्यो सवाई जयपुर मध्ये।

कटि कुयरी करवे डाडी, नीचे मुख अर नयण।
इण संकट पुस्तक लिख्यौ, नीकै राखियो सयण॥

६०३३. **त्रिलोकसार भाषा—महापंडित टोडरमल** । पत्र सं० २५२ । भाषा-राजस्थानी ढूंढारी गद्य । विषय-तीन लोक का वर्णन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर में विजयपाल चांदवाड़ ने लिखवाया था ।

६०३४. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० [illegible] । आ० १[illegible] × ६½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर नैणवा ।

६०३५. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० २८७ । आ० १२ × ७ इञ्च । ले० काल सं० १८९१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३९ । **प्राप्ति स्थान**——दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

६०३६. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० २३५ । आ० ११×७½ इञ्च । ले० काल सं० १८८३ आसोज बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२/६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

६०३७. **प्रतिसं० ५** । पत्र सं० २८५ । आ० १०½ × ७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दीसा ।

६०३८. **प्रतिसं० ६** । पत्रसं० ३०८ । आ० १४×८ इञ्च । ले० काल सं० १९७२ आषाढ़ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—गुलजारीलाल रुस्तमगढ़ जि० एटा थाना निखौली कला में प्रतिलिपि हुई थी ।

६०३९. **प्रतिसं० ७** । पत्रसं० ४१८ । आ० ११½ × ७½ इञ्च । ले०काल सं० १९२३ आसोज बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—सवाई जयपुर में लिखा गया था । प्रति सुन्दर है ।

६०४०. **प्रति सं० ८** । पत्रसं० २५१ । आ० १२½ × ६½ इञ्च । ले०काल सं० १९०३ ज्येष्ठ बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

६०४१. **प्रतिसं० ९** । पत्रसं० २५० । आ० १२ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान । र० काल × । ले०काल सं० १८१६ आसोज सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर भादवा ।

६०४२. **प्रतिसं० १०** । पत्र सं० २६४ । आ० १२ × ६½ इञ्च । ले० काल सं० १८८३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २९-१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

प्रशस्ति—श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये वामड पट्टे भ० श्री मेमिचंद्र जी तत्पट्टे भ० श्री रत्नचन्द जी तत् शिष्या पं० रामचन्द्र सदारा नगरे पार्श्वजिनचैत्यालये साह जी श्री बल्हाजी व्यवस्था तत् भार्या सोनाबाई इदं पुस्तक दत्तं ।

६०४३. **प्रति सं० ११** । पत्रसं० २५६ । आ० १४×७ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—आगे के पत्र नहीं हैं ।

६०४४. **प्रतिसं० १२** । पत्रसं० ३०८ । आ० १५ × ७ इञ्च । ले० काल सं० १९०२ भादवा बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—मालपुरा में लिखा गया था।

६०४५ **फुटकर सवैय्या**— × । पत्र सं० २२ । भाषा हिन्दी पद्य । विषय-जैन लोक वर्णन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२४-१६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

६०४६. **भूकंप एवं भूचाल वर्णन** × । पत्रसं० १ । आ० १०½ × ४ इञ्च । **भाषा**-हिन्दी गद्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

६०४७. **संघायणि—हेमसूरि** । पत्र सं० ४८ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत हिन्दी । विषय—लोक विज्ञान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३४ र । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

६०४८. **क्षेत्रन्यास** — × । पत्र सं० ३ । आ०१० × ६ इञ्च । भाषा— हिन्दी । विषय— लोक विज्ञान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

६०४९. **क्षेत्र समास**— × । पत्र सं० २३ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-लोक विज्ञान । र०काल × । ले०काल सं० १४३६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८८ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष — प्रशस्ति—संवत् १४३६ वर्षे वैशाख सुदी ३ ।

—:०:—

विषय -- मंत्र शास्त्र

६०५०. **आत्म रक्षा मंत्र** × । पत्र सं० १ । आ० ११½ ×४¾ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-मंत्र शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६०५१. **ओंकार वचनिका**— × । पत्र संख्या ५ । आ० १२½ ×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—मंत्र शास्त्र । र० काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६/१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज) ।

६०५२. **गोरोचन कल्प**— × । पत्र सं० १ । आ० १०×५½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय-मंत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८३-१४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

६०५३. **घंटाकर्ण कल्प**— × । पत्र सं० १० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय – मंत्र शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२१–१५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

६०५४. **घंटाकर्ण कल्प**—× । पत्र सं० ९ । आ० १२×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी, संस्कृत । विषय-मंत्र शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २५५–१०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—१३ यंत्र दिये हुए हैं । यंत्र एवं मंत्र विधि हिन्दी में भी दी हुई है ।

६०५५. **घटाकर्ण कल्प** × । पत्रसं० ११ । आ० १०½ ×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय - मंत्र शास्त्र । र० काल × । ले०काल सं० १८५० चैत सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष— सवाई जयनगरे लिखितं ।

६०५६. **घंटाकरण मंत्र**— × । पत्र सं ६२ । आ० ६½ × ३½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-मंत्र शास्त्र ।र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा ।

६०५७. **घंटाकरण मंत्र विधि विधान**— × । पत्र सं० ६ । आ० १२ × ६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—मंत्र शास्त्र । र०काल × । ले० काल सं० १८१४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७७-१०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

६०५८. **जैन गायत्री**— × । पत्रसं० १ । आ० १०½ ×४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-मंत्र शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० ४२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६०५९ **ज्ञान मंजरी**— × । पत्रसं० २८ । आ० १०×४ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय—मंत्र शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०१/२२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर ।

विशेष—त्रिपुर सुन्दरी को भी नमस्कार किया गया है ।

६०६०. **त्रिपुर सुन्दरी यंत्र**— × । पत्रसं० ३ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–मन्त्र शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—यंत्र का चित्र दिया हुआ है ।

६०६१. **त्रैलोक्य मोहन कवच** —। पत्रसं० ३ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–मन्त्र शास्त्र । र० काल × । ले०काल × । वेष्टनसं० २८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

६०६२. **त्रैलोक्य मोहनी मंत्र**— × । पत्रसं० ३ । आ० ८ × ४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–मन्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६५ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

६०६३. **नवकार मंत्र गाथा**— × । पत्र सं० १ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–मंत्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

विशेष—३ मन्त्र और हैं । अन्तिम मन्त्र नवकार कथा का है ।

६०६४. **पूर्ण बंधन मन्त्र**— × । पत्रसं० ७ । आ० १०×६ इञ्च । **भाषा**–हिन्दी । विषय—मन्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५४६– × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

६०६५. **बावन वीरा का नाम**— × । पत्र सं० २ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्र शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६०६६. **बालत्रिपुर सुन्दरी पद्धति**— × । पत्रसं० ६ । आ० ११ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्र शास्त्र । र० काल × । ले०काल सं० १८७१ फाल्गुण सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मंदिर उदयपुर ।

६०६७. **बीजकोष**— × । पत्र सं० ४० । आ० ८½ × ७ इञ्च । **भाषा**–संस्कृत । विषय—मन्त्र शास्त्र । र०काल × । ले०काल सं० १९९३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

६०६८. **भैरव कल्प**— × । पत्रसं० ५८ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-मन्त्र शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

६०६९. **भैरव पद्मावती कल्प**—आ० शुभचन्द्र । पत्रसं० २३ । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—मन्त्र शास्त्र । र०काल × । ले०काल सं० १८९१ जेठ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८० । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

६०७०. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० २३ । आ० १४ × ७½ इञ्च । ले०काल सं० १९२१ माह सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०२ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

६०७१. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० २४ । आ० ११ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १६८५ । **पूर्ण** । वेष्टन सं० ३६५-१४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

प्रशस्ति—संवत् १६८५ वर्षे माह मासे कृष्ण पक्षे २ दिने श्री मूल संघे मोडी आमे पार्श्वनाथ चैत्यालये भ० सकलचन्द्र तत्पट्टे भ० सुबचन्द तदाम्नाये ब्र० श्री जेसा तत् शिष्य आ० जयकीर्ति लिखितं ।

६०७२. **मातृका निघंटु**—**महीधर** । पत्रसं० ४ । आ० ११ × ५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्र शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६०७३. **मोहिनी मंत्र**— × । पत्रसं० २३ । आ० ५ × ४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्र शास्त्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टन सं० १८३** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

६०७४. **मंत्र प्रकरण सूचक टिप्पण**—**भावसेन त्रैविद्यदेव** । पत्र सं० ६ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५०१- × । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

अन्तिम—इति श्री परवादिगजकेसरि वेदवादिविध्वंसक भावसेन त्रैविद्यदेवेन जिनसंहितयां मन्त्र प्रकरण सूचकं टिप्पणकं परिसमाप्तं । श्री नेत्रनन्दि मुनिना लिखापितं ।

६०७५. **मंत्र यंत्र** — × । पत्र सं० २ । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—मंत्र शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६०७६. **मंत्र शास्त्र**— × । पत्रसं० ९ । आ० ९ × ६ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-मन्त्र शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—चामुंडादेवी का मन्त्र है ।

६०७७. **मंत्र शास्त्र**— × । पत्रसं० ६ । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-मन्त्र शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

६०७८. **मंत्र शास्त्र**— × । पत्र सं० २ । आ० ११ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्र शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर संभवनाथ उदयपुर ।

६०७९. **मंत्र संग्रह** — × । पत्रसं० १५ । आ० १२ × ५½ इंच । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । विषय—मंत्र शास्त्र । र० काल × । ले०काल सं० १९०५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४९१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

प्रशस्ति—संवत् रसाद जयनगरे मूलसंघे सारदा गच्छे सूरि श्री देवेन्द्रकीर्ति जी तस्य शिष्य रामकीर्ति जी पं० लक्ष्मीराम, मन्नालाल, रामचन्द, लक्ष्मीचन्द, अमोलकचन्द, श्रीपाल पठनार्थ ।

६०८०. **मायाकल्प**— × । पत्रसं० २ । भाषा-संस्कृत । विषय–मंत्र शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

६०८१. **यक्षिणीकल्प—मल्लिषेण** । पत्र सं० ६ । भाषा—संस्कृत । विषय—मंत्र शास्त्र । र०काल × । ले०काल सं० १७६८ वैशाख सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

६०८२. **यंत्रावली—अनूपाराम** । पत्रसं० ७० । आ० ६×४ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय–मंत्र शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

प्रारम्भ—

दक्षिणामूर्त्तिगुरुं प्रणम्य तदीरित श्रीतांडवस्थां ।
यंत्रावली मंकमयी प्रवस्तांश्च व्याकुर्महे सज्जनरंजनाय ।।
शिवतांडव टीकेयमनूपाराम संज्ञिता ।
यंत्रकल्पमहद्भमयी दत्तोहोभीष्ट संतति ।।२।।

६०८३. **विजय यंत्र**— ×। पत्रसं० १ । आ० ४×४½ इञ्च । **विषय**—यंत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—कपडे पर अङ्क ही अङ्क लिखे हैं । कोरों पर मंत्र दिए हैं ।

६०८४. **विजयमंत्र**—× । पत्रसं० ८ । आ० ६×५½ इञ्च । **भाषा** संस्कृत । ले० काल सं० १६४१ । पूर्ण । **वेष्टनसं०** २३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

६०८५. **विद्यानुशासन—मल्लिषेण** । पत्र सं० १०२–१२६ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—मंत्र शास्त्र । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४३७/२१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६०८६. **विविध मंत्र संग्रह**— × । पत्र सं० १२० । भाषा—संस्कृत । विषय—मंत्र शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१५–१५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—विविध प्रकार के मंत्र तंत्र सचित्र हैं तथा उनकी विधि भी दी हुई है ।

६०८७. **शान्ति पूजा मंत्र**— × । पत्रसं० ६ । आ० १०½× ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—मंत्र शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । वेष्टनसं० ४७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

६०८८. **षट् प्रकार यंत्र**—× । पत्र सं० ३ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—मंत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०६० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६०८९. **संवर्जनादि साधन—सिद्ध नागार्जुन**। पत्रसं० ८९। आ० ९×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—मंत्र शास्त्र। र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री सिद्ध नागार्जुन विरचिते कक्षपुटे संवार्जनादि साधनं पचदश पटलं।

६०९०. **सरस्वती मंत्र**— × । पत्र सं० १। आ० १०½×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-मंत्र। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ४४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

६०९१. **संध्या मंत्र—गौतम स्वामी**। पत्रसं० १। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—मंत्र शास्त्र। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—मंत्र संग्रह है।

६०९२. **यंत्र मंत्र संग्रह**—निम्न यंत्र मंत्रों का संग्रह है—

१ **बृहद् सिद्ध चक्र यंत्र**— × । पत्र सं० १। आ० २२½×२२½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय--यंत्र आदि। र०काल × । ले०काल सं० १६१९ फागुण सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन सं० १। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी नैणवा।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६१९ वर्षे फाल्गुन सुदी ३ गुरुवासरे आश्वनि नक्षत्रे श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये मडलाचार्य श्री ३ धर्मकीर्तिस्त् शिष्य ब्रह्म श्री लाहड नित्य प्रणमति वातेनबृहत् सिद्धचक्र यंत्र लिखितं।

६०९३. २ **चिंतामणि यंत्र बड़ा**— × । पत्र सं० १। आ० १८×१८ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—यंत्र। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा।

विशेष—कपडे पर है।

६०९४. ३ **धर्मचक्र यंत्र**— × । पत्र सं० १। आ० २५×२५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। र०काल × । ले० काल सं० १६७४। पूर्ण। वेष्टनसं० ३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी नैणवा।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६७४ वर्षे वैशाख सुदी १५ दिने श्री ॥१॥
नागपुर मध्ये लिखापितं। शुभं भवतु ॥ कपडे पर यंत्र है।

६०९५. ४ **ऋषि मंडल यंत्र**— × । पत्रसं० १। आ० २१×२३ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—यंत्र। र०काल × । ले०काल सं० १५८५। पूर्ण। वेष्टन सं० ४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नैणवा।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्री श्री श्री शुभचन्द्र सूरिभ्योनमः। अथ संवत्सरेस्मिन श्री नृप विक्रमादित्य गताब्दः संवत् १५८५

वर्षे कार्त्तिक वदि ३ शुभदिने श्री रिषि मंडल यंत्र ब्रह्म अज्जू योग्यं पं० अर्हदासेन शिष्य पं० राजमल्लेन लिखितं। शुभं भवतु। कपडे पर यंत्र है।

६०९६. ५ अढाई द्वीप मंडल— ×। आ० ४२×४२ इञ्च। पूर्ण। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा।

विशेष—यह कपडे पर है।

६ नंदीश्वरद्वीप मंडल— × । यह पत्र २४×२४ इञ्च का है। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा।

विशेष—इसमें अंजनगिरि आदि का आकार पुराने मडल से सं० १९०६ में बनाया गया है।

——: ० :——

विषय—शृंगार एवं काम शास्त्र

६०९७. **अनंगरंग—कल्याणमल्ल** । पत्र सं० ३० । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काम शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १६०७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६०९८. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ३३ । आ० १०×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—मूल के नीचे गुजराती भाषा में अर्थ दिया हुआ है ।

६०९९. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ४३ । ले० काल सं० १७६७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

६१००. **कोकमंजरी—आनंद** । पत्र सं० २८ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—काम शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६१०१. **कोकशास्त्र—कोकदेव** । पत्र सं० ८ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—काम शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—रणथंभौर में राजा भैरवसेन ने कोकदेव को बुलाया और कोकशास्त्र की रचना करवायी थी ।

६१०२. **कोकसार**— × । पत्र सं० ३६ । आ० १०×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—काम शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—सामुद्रिक शास्त्र भी दिया हुआ है ।

६१०३. **कोकसार** । पत्र सं० ९ । आ० १०×९$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा हिन्दी ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २३६/९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

६१०४. **प्रेम रत्नाकर**— × । पत्र सं० १३-४७ तक । आ० ६×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—शृंगार । र० काल × । ले० काल सं० १८४८ जेष्ठ सुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० १०८ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—इसकी पांच तरङ्ग है । प्रथम तरङ्ग नहीं है ।

६१०५. **बिहारी सतसई—बिहारीलाल** । पत्र सं० १४८ । आ० ९$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—शृंगार । र० काल सं० १७८२ कार्तिक बुदी ४ । ले० काल सं० १८८२ पौष बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

विशेष—बिहारी सतसई की इस प्रति में ७३५ दोहे हैं ।

६१०६. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० २-४० । आ० ६×४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

६१०७. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० ७० । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

६१०८. **बिहारी सतसई टीका**— × । पत्र सं० २७ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-शृंगार वर्णन । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—पहिले मूल दोहे फिर उसका हिन्दी गद्य में अर्थ तथा फिर एक एक पद्य में अर्थ को और स्पष्ट किया गया है ।

६१०९. **मानिनी विलास**—**प० जगन्नाथ** । पत्र सं० ३ से २२ । भाषा—संस्कृत । विषय—काम शास्त्र । र०काल × । ले० काल सं० १८७६ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

६११०. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० २४ । आ० ११ × ४ इञ्च । ले० काल सं० १८-३ माह सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—सरोजपुर में चिंतामणिपार्श्वनाथ चैत्यालय में पं० बूलचंद ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

६१११. **भ्रमरगीत**—**मुकुंददास** । पत्र सं० ३२ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—विरह (वियोग शृंगार) । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—७५ पद्य हैं । २५ वे पत्र से उषा चरित्र है जिसके केवल १४ पद्य हैं ।

६११२. **मधुकर कलानिधि**—**सरसुति** । पत्र सं० ४० । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-शृंगार । र०काल सं० १८२२ चैत सुदी १ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—अंतिम प्रशस्ति तथा रचनाकाल संबंधी पद्य निम्न प्रकार हैं ।

इति श्री सारस्वत सरि मधुकर कलानिधि संपूर्णम् ।

संवत् अठारह सै बायीस पहल दिन चैत सुदी
शुक्रवार ग्रंथ उल्हास्यो सही ।
श्री महाराना माधवेश मन के विनोद हेत
सुरसति कीनो यह दूध ज्यों जमें नही ।।

६११३. **माधवानल प्रबन्ध**—**गणपति** । पत्र सं० ५२ । आ० ११ ×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी प० । विषय—कथा (शृंगार रस) । र०काल सं० १५६४ श्रावण बुदी ७ । ले० काल सं० १६५३ जेठ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लागदी बूंदी ।

६११४. **रसमंजरी**— × । पत्र सं० ७ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (प०) । विषय-शृंगार रस । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६११५. **रसमंजरी—भानुदत्त मिश्र** । पत्रसं० ४१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—शृंगार । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—गोपाल भट्टकृत रसिक रंजिनी टीका सहित है ।

६११६. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ७४ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—भट्टाचार्य वेणीदत्त कृत रसिकरंजिनी व्याख्यासहित है ।

६११७. **रसराज—मतिराम** । पत्रसं० १७ । आ० ६ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—शृंगार । र०काल × । ले० काल सं० १८६६ फाल्गुण सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक) ।

६११८. **रसिकप्रिया—महाराजकुमार इन्द्रजीत** । पत्र सं० १३८ । आ० ६ × ६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय-शृंगार रस । र०काल × । ले० काल सं० १७५६ । पूर्ण । वे० सं० ५०१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६११९. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ६-६४ । ले० काल सं० १७५७ मंगसिर सुदी १२ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

६१२०. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० ७१ । आ० ६ ×५ इञ्च । ले०काल सं० १८४५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

६१२१. **शृंगार कवित्त**— × । पत्र सं० ५ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय-शृंगार । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६१२२. **शृंगार शतक—भर्तृहरि** । पत्र सं० ६ । आ० ६× ४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय-शृंगार रस । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं ३/१६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—१०२ पद्य हैं ।

६१२३. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० १२ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन सं० ४६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६१२४. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० २० । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन सं० ४६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रति टिप्पण सहित है ।

६१२५. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० ४० । आ० १०½ × ५ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन सं० ४६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—श्लोक सं० ५५० है ।

६१२६. **सुन्दर शृंगार—महाकवि राज**। पत्र सं० ३२। आ० ८$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—शृंगार। र०काल × । ले०काल सं० १८८३। पूर्ण। वेष्टन सं० १६१–७१। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

यह सुंदर सिंगार की पोथि रचि विचारि।
चूक्यौ होइ कछु लघु लीज्यो सुकवि सुधारि॥

इति श्रीमत् महाकविराज विरचित सुंदर सिंगार संपूर्ण।

संवत् १८८३ वर्षे शाके १७४८ प्रवर्त्तमाने पौष मासे शुक्ल पक्षे तिथौ २ शनिवासरे सायंकाले लिखीतं।

६१२७. **प्रतिसं० २**। पत्र सं० ७। आ० १०×५$\frac{1}{2}$ इंच। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३६३–१४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर।

६१२८. **प्रतिसं० ३**। पत्रसं० २४। आ० ६$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ३७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

६१२९. **प्रतिसं० ४**। पत्र सं० ११–६२। आ० ७×६ इञ्च। लेखन काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

६१३०. **प्रतिसं० ५**। पत्र सं० २५। आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल सं० १७२८। वेष्टन सं० ६१३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—अंत में सुन्दरदास कृत बारहमासा भी है। ग्रन्थ की प्रतिलिपि भालपुरा में हुई थी।

६१३१. **सुन्दरशृंगार—सुन्दरदास**। पत्र सं० ४७। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी प.। विषय—शृंगार। र०काल × । ले० काल सं० १८५९। पूर्ण। वे० सं० ५७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—नेमिनाथ चैत्यालय में पं० विजयराम ने पूरा किया था।

६१३२. **प्रति सं० ६**। पत्रसं० ४२। आ० ८×५ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ८। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

—: o :—

विषय -- रास, फागु वेलि

६१३३. **अजितनाथ रास**—ब्र० जिनदास। पत्र सं० ४०। आ० १२×४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—रास। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारंभ—वस्तु छंद—

अजित जिनेसर, अजित जिनेसर।
पाय प्रणमि सुतीर्थंकर अति निरमला
मन वांछित फलदान सुभकर।
गणधर स्वामी नमस्करू
सरस्वति स्वामिणि ध्याऊं निरमर।
श्री सकलकीरति पाय प्रणमि
त्रिभुवन कीरति भवतार।
रास करिसहुं निरमलो
कहा जिणदास तणिसार

रास यशोधर—

भवियण भावेइ सुगुण चंग मनिधारे आनन्दु।
अजित जिणेसर चारित्रसार कहु गुणचन्द ॥

अन्तिम—

श्री सकलकीरति गुरु प्रणमीने
मुनि भवनकीर्ति भवतार।
रास कीधो मैं निरमल
अजित जिणेसर सार ॥
पढई गुणइ जे सांभलइ मनि धरि अविचल भाव।
तेहनइ रिद्धि घर मणा पामइ शिवपुर ठामी ॥
जिण सासण अति निरमलु भवि भवि देउ मुझसार ॥
कहा जिणिदास इम वीनवेइ श्री जिणवर मुगति दातार।

इति श्री अजित जिणनाथ रास समाप्त।

६१३४. **अमरदत्त मित्रानंद रासो**—**जयकीर्त्ति**। पत्र सं० २७। आ० १२ × ६ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-रासा साहित्य। र० काल सं० १६८६। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहांथी दीसा।

विशेष—प्रति नवीन है।

६१३५. **आदिपुराण रास**—ब्र० जिनदास। पत्रसं० १८०। आ० १०×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पुराण। र०काल १५ वीं शताब्दी। ले०काल सं० १८३१ भादवा बुदी १२। पूर्ण। वेष्टनसं० ११८-५३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर टोडारायसिंह (टोंक)।

विशेष—भट्टारक नागौर के श्री जयकीर्ति तत् शिष्य आचार्य श्री देवेन्द्रकीर्ति के समय आदिनाथ चैत्यालय अजमेर में प्रतिलिपि हुई थी।

६१३६. **प्रतिसं० २**। पत्र सं० ८। आ० १२×६½ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ४२८-१६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

६१३७. **आदिनाथ फागु**—भ० ज्ञानभूषण। पत्रसं० ३-१५। आ० ११ × ४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय- फागु साहित्य। र०काल ×। ले०काल × अपूर्ण। वेष्टन सं० ४८२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—आचार्य नरेन्द्रकीर्ति के शिष्य ब्र० शिवदास ने लिपि की थी।

६१३८. **प्रति सं० २**। पत्र सं० २९। आ० १३½×६ इञ्च। ले० काल सं० १८९८। पूर्ण। वेष्टन सं० ६९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १८९८ फागुण बुधी १४ रविवासरे श्री सलूंबर नगरे मूलसंघे सरस्वती गच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री १०८ श्री श्री चन्द्रकीर्ति विजयराज्ये तत् शिष्य पंडित श्री गुलाबचन्द जी लिखितं।

६१३९. **प्रति सं० ३**। पत्र सं० २८। आ० १२×५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३७१ ४५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर।

विशेष—कुल ५०१ पत्र हैं।

६१४०. **आषाढभूतरास**—**ज्ञानसागर**। पत्रसं० १२। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र०काल × ले०काल×। पूर्ण। वेष्टनसं० ६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

६१४१. **इलायचीकुमार रास**—**ज्ञानसागर**। पत्र सं० १०। आ० ६ × ४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय- कथा। र०काल सं० १७१६ आसोज सुदी २। ले० काल सं० १७२८ जेठ मास। पूर्ण। वेष्टन सं० ६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

संवत् १७१६ सावरसे शेषपुर मन हरषे।
आसोज सुदी द्वितीया दिन सारे हस्तनक्षत्र बुधवारषे॥
ध्यान सागर कहे.....।

६१४२. **प्रति सं० २**। पत्र सं० १४। आ० ११×४ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

६१४३. **अंजणा रास**— × । पत्रसं० १४। आ० १० × ४ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-चरित्र। र०काल ×। ले०काल सं० १९०७ माघ बुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० ३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)।

६१४४. **अंजना सुन्दरी सतीनो रास**— × । पत्र सं० ५–१७ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १७१३ फागुन वदि ७ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

६१४५. **अंबिकारास**— × । पत्रसं० ३ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

६१४६. **कर्म विपाकरास—ब्र० जिनदास** । आ० १०½ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-रास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६९–४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

६१४७. **करकुंडनोरास—ब्रह्म जि० दास** । पत्रसं० २१ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल सं० १९२१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक) ।

विशेष—सवत् १९२१ वर्षे भट्टारक श्री १०८ धर्मचंद्र जी तत्सीस ब्र. गोकलजी लिखीतं तत् लघु भ्राता ब्र. मेघजी पठनार्थ ।

६१४८. **गौतमरास**— × । पत्रसं० ३ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८८५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अजमेर भण्डार ।

६१४९. **चतुर्गति रास—वीरचन्द** । पत्रसं० ५ । आ० ९ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—चारगतियों का वर्णन । र० काल × । ले० काल सं० १८१४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६१५०. **चारुदत्त श्रेष्ठीनो रास – भ. यशःकीर्ति** । पत्रसं० ३–४२ । आ० ९½ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल सं० १८७५ ज्येष्ठ सुदी १५ । ले० काल सं० १९७६ । अपूर्ण । वेष्टन सं० २२३:५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—श्री मूलसंघे बलात्कारगणे भारतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये सूरीश्वर सकलकीर्ति भुवनकीर्ति तत्पट्टे ज्ञानभूषण तत्पट्टे विजयकीर्ति तत्पट्टे शुभचन्द्र तत्पट्टे सुमतिकीर्ति तत्पट्ट गुणकीर्ति तत्पट्टे वादिभूषण तत्पट्टे रामकीर्ति तत्पट्टे पद्मनंदि तत्पट्टे देवेन्द्रकीर्ति तत्पट्टे क्षेमेन्द्रकीर्ति तत्पट्टे नरेन्द्रकीर्ति तत्प. विजयकीर्ति नेमिचन्द्र जी भ० चन्द्रकीर्ति पट्टे कीर्तिराम इन्हीं के गच्छपति यशःकीर्ति ने खडग देश में धूलेव गांव में आदि जिनेश्वर के धाम पर रचना की थी ।

बबेला में भ० यश: कीर्ति के शिष्य खुशाल ने प्रतिलिपि की थी ।

६१५१. **चिद्रूपचिन्तन फागु**— × । पत्रसं० ३८ । आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-चिन्तन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६२५२. **चंपकमाला सती रास** – × । पत्रसं० ९ । आ० ९½ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी) ।

६१५३. जम्बूस्वामीरास—ब्रह्म जिनदास। पत्र सं० ७३। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—राजस्थानी पद्य। विषय-कथा। र०काल × । ले०काल सं० १६२१ पौष बुदी १२। पूर्ण। वेष्टन सं० ६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)।

विशेष—सयत् १६२१ वर्षे पोस बदी ११ शुक्रवासरे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री १०८ रत्नचन्दजी तत्पट्टे भट्टारक जी श्री १०८ देवचन्द्रजी तत्पट्टे भट्टारक श्री १०८ धर्मचन्द्र जी तत् शिष्य ब्रह्म गोकल स्वहस्ते लखीतां। स्व ज्ञानावर्णी कर्म क्षयार्थ।

५१५४. जम्बूस्वामी रास—नयविमल। पत्र सं० २४। आ० ११×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-कथा। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

६१५५. जिनदत्तरास—रत्नभूषण। पत्र सं० ३०। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-कथा। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—आदिभाग निम्न प्रकार है—

सकल सुरासुर पद नमि नमूं ते जिनवर राय
गणधरजी गोतम नमूं, बहु मुनि सेवित पाय ॥१॥
सुखकर मारिग वाहनी, भगवती भवनी तार।
तेह तणा चरण कमल नमुं, जे वेणा पुस्तक धार ॥२॥
श्री ज्ञानभूषण ज्ञानी नमूं, नमूं सुमति कीर्ति सुरिंद।
दर्शण देशनो गच्छपति नमुं, श्री गुरु धर्मचन्द ॥३॥
एह तणा चरण कमल नमि, कहूं जिनदत्तचरित्र विचार।
भवियण जनसहू सांभलो, जिम होय हरिष अपार ॥४॥

अन्तिम भाग—

मूलसंघ सरसतीगछि सोहामणो रे,
कांई कुंदकुंदयति राय।
तिणि अनुकारी ते बलात्कारगणी,
जाणीएरे ज्ञान भूषण नमि पाय ॥१॥
श्री सूरिवर रे सुमति कीरति पदनमीरे
नमी श्री गोर धमचन्द्र।
श्री जिनदत्त रास करिवा मनि उपन्नो रो,
कांइ एक दिवासी आनंद ॥

दूहा—

देवि सरस्वती गुरु नमीमि कीधी रास सार।
इणो होइ ते साधज्यो पूरो करज्यो सुविचार।
श्री हांसोट नगरे सुहामणूं श्री आदि जिनंद भवतार।
तिणि नयरे रचना रची श्री जिन सासनि शृंगार।

आनो मास सोहामणो सुदि पंचमी बुधवार ।
ए रचना पूरी करी सांभलो भविजन सार ।।३।।
श्री रत्नभूषण सूरिवर कही जे बांचे जिनदत्त रास ।
जिनदत्तनी परि सुख लही पोहोंचि तेहनी आस ।।४।।
भणि भणवि ए सही लिखि लिखावि रास ।
तेह घरि नवनिधि संपजि पूजतां जिन पाय ।।५।।
भवियण जन जे सांभलि रास मनोहर सार ।
श्री रत्नभूषण सूरीवर कही तेह घरि मंगलाचार ।।६।।

६१५६. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ४० । आ० ११×४½ इञ्च । ले० काल सं० १६६५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६६-१२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल कांटड़ियों का मंदिर डूंगरपुर ।

विशेष—संवत् १६६५ वर्षे फाल्गुण मासे कृष्णपक्षे १२ बुधवारेण लिखितमिदं जिनदत्त रास ।

६१५७. **जीवंधर रास**—**ब्रह्म जिनदास** । पत्रसं० ७५ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३१८/६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—एक त्रुटित प्रति और है ।

६१५८. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ८० । ले० काल सं० १८६५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५०/५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

विशेष—मेवाडदेश के गेगला ग्राम में आदिनाथ चैत्यालय में सं० १८६५ में प्रतिलिपि हुई थी ।

६१५९. **जोगीरासा**—**जिनदास** । पत्रसं० ३ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर डूंदरगढ़ (कोटा) ।

६१६०. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० २ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

६१६१. **दानफलरास**—**ब्र० जिनदास** । पत्रसं० ६ । आ० ११×७ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—लुब्धदत्त एवं विनयवती कथा भाग है ।
अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति श्री दान फलचरित्रे ब्रह्म जिनदास विरचिते लुब्धदत्त विनयवती कथा रास । १८२२ वर्षे श्रावण बुदी ११ तिथौ पंडित रूपचन्दजी कस्य वाचनार्थाय ।

६१६२. **द्रौपदीशील गुणरास**—**आ० नरेन्द्रकीर्ति** । पत्र सं० १३ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल सं० १६२० । पूर्ण । वेष्टन सं० १८५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

६१६३. **धन्यकुमार रास—ब्र० जिनदास**। पत्रसं० २६। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—रास। र० काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० २०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

६१६४. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० ३३। ले०काल सं० १६४५। पूर्ण। वेष्टन सं० ३३/५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

६१६५. **धर्मपरीक्षारास—ब्र० जिनदास**। पत्रसं० ३-२८। आ० १०×४ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र०काल × । ले० काल सं० १६३५। अपूर्ण। वेष्टन सं० १४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

संवत् १६५१ वर्षे ज्येष्ठ सुदी १० स्वस्ति श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री सकलकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री भुवनकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री ज्ञानभूषणदेवा तत्पट्टे श्री विजयकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे श्री सुमतिकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री गुणकीर्त्तिदेवास्तदाम्नाये ब्र० जिनदास तत्पट्टे ब्र० श्री शांतिदास तत्पट्टे ब्र० श्री हेमराज तत्पट्टे ब्र० श्री रायमल्ल तदीक्षित ज्ञान विज्ञान दिगम्बरगुरु आई श्री रूढीये धर्मपरीक्षा रास ज्ञानावर्णीय कर्मक्षयार्थं पंडित देवीदास पठनार्थं।

६१६६. **धर्मपरीक्षारास—सुमतिकीर्ति**। पत्र सं० १८३। आ० ११×७ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—धर्म। र० काल सं० १६२५। ले० काल सं० १८३५। अपूर्ण। वेष्टन सं० ४०४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

६१६७. **प्रति सं० २**। पत्र सं० ३६। आ० १०×६ इञ्च। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० २६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

६१६८. **प्रति सं० ३**। पत्र सं० १७८। आ० १०×५ इञ्च। ले०काल सं० १७३२ चैत्र बुदी ४। पूर्ण। वेष्टन सं० १७०/१११ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर।

विशेष—अहमदाबाद में प्रतिलिपि हुई थी।

६१६९. **धर्मरासो**— × । पत्र सं० १०। आ० १०½×५½ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—धर्म। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी।

६१७०. **ध्यानामृत रास—ब्र० करमसी**। पत्र सं० ३२। आ० १०×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र० काल × । ले० काल सं० १६१६। पूर्ण। वे० सं० २६१-११५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर।

६१७१. **नवकाररास—ब्र० जिणदास**। पत्रसं० २। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ११६२। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—णमोकार मंत्र सम्बन्धी कथा है।

६१७२. **नागकुमार रास—ब्र० जिनदास।** पत्रसं० ६। आ० ११×४ इंच। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—रास साहित्य। र०काल १५ वीं शताब्दि। ले०काल सं० १८२६। पूर्ण। वेष्टन सं० ६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

६१७३. **प्रतिसं० २।** पत्र सं० ३१। ले०काल सं० १७१५। पूर्ण। वेष्टन सं० ५२/१३०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सरस्वती भण्डार मन्दिर अजमेर।

६१७४. **नेमिनाथरास—पुण्यरतनमुनि।** पत्रसं० ३। आ० १०×४½ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र०काल सं० १५८६। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ७३६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है।

आदि भाग—

सारद पय प्रणमी करी, नेमितणा गुण हीइ धरेवि।
रास भणु रलीयामणउ, गुण गुरुवउ गाइसुं संखेवि ॥१॥
हूं बलिहारी जादव एक, रस उरथई छउवालि।
अपराध न मइ को कीयउ, काइ छोडइ नवयोवनबाल ॥२॥
सोरीपुर सोहामणउ, राजा समुद्रविजय नउ ठाम।
शिवादेवी राणी तसु तणी, अनोप रूपइ रंभ समाण ॥३॥

अन्तिम पाठ—

संजम पाल्यउ सातसइ वरस सहसनउ पूरउ पूरउ आउ।
आसाढ सुदी आठमी मुकती पहूंता जिणवरराय ॥६६॥
संवत पनरछियासिइं रास रचिउ आणी मन भाइ।
राजगछ मंडण सिरउ गुरु श्री नदिवर्द्धन सूरि सुपसाई ॥६७॥
प्रह उठीनइ प्रणमीयइ श्री यादवमंडन गिरिनारि।
मनवंछित फल ते ते लहइ हरिषिइं जो गावइ नरनारि ॥६८॥
समुद्रविजय तन गुण निलउ सेय करइ जसु सुर नर वृन्द।
पुण्य रतन मुनिवर भणइ श्री संघ सुप्रसन नेमि जिणंद ॥६९।
श्री नेमिनाथ रास समाप्ता।

६१७५. **प्रतिसं० २।** पत्र सं० २। आ० ६×४ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४६८। **प्राप्ति स्थान** भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६१७६. **नेमिनाथ विवाह लो—खेतसी।** पत्रसं० १२। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—विवाह वर्णन। र०काल [सं० १६९१ सावण। ले० काल सं० १७९३ कार्तिक बुदी १४। पूर्ण। वेष्टन सं० १८९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

६१७७. **नेमिनाथ फागु—विद्यानंदि।** पत्रसं० ४०। आ० १०×४½ इञ्च। **भाषा**—हिन्दी पद्य। विषय—फागु। र० काल सं० १८१७ माघ सुदी ५। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५/२३। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

विशेष—प्रति बहुत सुन्दर है तथा ७६६ पद्य हैं।

६१७८. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ५४ । आ० ९½ × ४½ इञ्च । ले०काल सं० १८३१ माघ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६१७९. **नेमीश्वररास—ब्र० जिनदास** । पत्र सं० १९५ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-रास साहित्य । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १५३/८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

६१८०. **परमहंस रास—ब्र० जिनदास** । पत्रसं० ३८ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—रूपक काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १८२६ ज्येष्ठ सुदी १० । **पूर्ण** । **वेष्टन सं०** १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मंदिर उदयपुर ।

६१८१. **पल्यविधान रास—भ० शुभचन्द्र** । पत्र सं० ५ । आ० १०½ × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । **पूर्ण** । वेष्टन सं० १९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

प्रारम्भ—

श्री जिनवर कर मानस करी, पल्य विधान रे
भाई कहिस्यू कर्म विपाक हर ।
ए पुण्य तणु निधान रे भाई, व्योहूत्परि उपवास,
पल्य तणा चेलां च्यार छह छठार ॥
पाप पंक दूर करि करतां मक सोह ठार ॥१॥
भाद्रवा मास वदि ६ बडी सूर्य प्रभ उपवासो ।
भाई उपवास पल्य तणुफल तस्य सर्व सुरासुर दासार ॥२॥

अन्तिम—

एणि परमारथ साधो, माया मोह में बाधो ॥
शुभचन्द्र भट्टारक बोलि, शुद्धो धर्म ध्यान धरी बाधो ॥
पल्य ५ वस्तु ।
छटोमद्वत २
मुगति दातार भणतां सिव सुख संपजि ।
उपजि अग आणंद कंद हो अनंत पल्य उपवास फल
सकल विपुल निर्मल आनंद कंदह ।
भट्टारक शुभचन्द्रमणि जे भणि सिवली रास ।
अमरखेचर संकट निवार लक्ष्मी होइ तस दास ॥१॥
इति पल्य विधानरास समाप्त ।

संवत् १६९० श्री मूलसंघे फागण वदि ५ दिने उदयपुरे पं० कानजि लिखितोयं रासः ब्र० लाल जी पठनार्थं ।

६१८२. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ६ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

६१८३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । आ० १० × ४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२२/१२२ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६१८४. प्रति सं० ४ । पत्र संख्या ६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२३/१२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—पहिले पत्र के ऊपर की ओर 'नागद्रा रास' नागदा जाति का रास ज्ञानभूषण का हिन्दी में दिया है । यह ऐतिहासिक रचना है पर अपूर्ण है । केवल अन्तिम २२ वां पद है ।

अन्तिम—

श्री ज्ञान भूषण मुनिवरि प्रसुगियां कीधु रास मैं सारए
हवुश जिणवरि कहीय वसुणि श्रीग्रंथ
माहि रास रचु अति रूवडू हवि भणि जो नर नारे ।
भणिसी भणावेजे सांभले ते लहिसीह फल विचार ।

इति नागद्रारास सम्पूर्ण ।

६१८५. पाणीगालन रास—ज्ञानभूषण । पत्र सं० ४ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय-विधान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६१८६. पोषहरास – ज्ञानभूषण । पत्र सं० २–८ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६१८७. प्रद्युम्नरासो – ब्रह्मरायमल्ल । पत्र सं० २० । आ० ११×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल सं० १६२८ । ले०काल × । । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४- × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बड़ा बीस पंथी दौसा ।

विशेष—गढ़ हरसौर में ग्रन्थ रचना हुई थी ।

६१८८. बुद्धिरास— × । पत्र सं० १ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय-विविध । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—इसमें ५६ पद्य हैं । अंतिम पद्य निम्न प्रकार है—

सालिभद्र गुरु संकल्प हुए ए सवि सीख विधान ।
पावि ते सिय संपदाए तिस घरि नवय विधान ।।५६।।

इति बुद्धिरास संपूर्ण ।

६१८९. बाहुबलिबेलि –वीरचन्द सूरि । पत्र सं० १० । आ० ११× ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल सं० १७४४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

६१९०. बंकचूलरास –ब्र० जिनदास । पत्र सं० ९ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा – हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—उपा० श्री गुणभूषण तत् शिष्य देवसी पठनार्थ ।

६१९१. **भद्रबाहुरास**—ब्र०जिनदास । पत्रसं० १० । आ० ११½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल × ।ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

६१९२. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ११ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६१९३. **भविष्यदत्तरास**—**ब्रह्म जिनदास** । पत्रसं० ८५ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल सं० १७३६ आसोज बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मंदिर उदयपुर ।

६१९४. **भविष्यदत्तरास**- **विद्याभूषणसूरि** । पत्रसं० २१ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल सं० १६७३ असाढ सुदी १३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पंथी दौसा

६१९५. **मुनि गुणरास बेलि**—**ब्र० गांगजी** । पत्र सं० १० । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । र० काल × । ले० काल सं० १६१४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६१९६. **मृगापुत्रबेलि**— × । पत्रसं० २ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी) ।

६१९७. **यशोधर रास**—**ब्र०जिनदास** । पत्र सं० २८ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-रास (कथा) । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

६१९८. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० २४ । आ० ११ × ६ इञ्च । ले० काल सं० १८१७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०२-८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

६१९९. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ४४ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल सं० १८२२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६-३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

प्रशस्ति—सं० १८२२ वर्षे पौष मासे शुक्ल पक्षे सोमवासरे कुशलगढ़ मध्ये श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये बागड पट्टे भ० श्री १०८ रत्नचन्द जी तत्पट्टे भ० श्री १०८ देवचन्द्र जी तत्पट्टे भ० श्री १०८ धर्मचन्द्र जी तत् शिष्य पंडित सुखराम लिखितं । श्री कल्याणमस्तु ।।

६२००. **प्रतिसं० ४** । पत्र सं० ३५ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १७२६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५२-६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

६२०१. **रत्नपाल रास**—**सूरचन्द** । पत्रसं० ३० । आ० ६ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-रास । र० काल सं० १७३६ ।ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २६५-११५ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

६२०२. **रामचन्द्ररास**—**ब्रह्म जिनदास**। पत्र सं० ३८०। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-राजस्थानी। विषय-राम काव्य। र० काल सं० १५०८। ले० काल सं० १८२५। पूर्ण। वेष्टन सं० ६। **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

विशेष—

संवत् १५ अठारोतरा मागसिर मास विसाल
शुक्ल पक्ष चउरिय दिने, हस्त नक्षत्र रास कियो तिसा गुणमाल।

वस्तु बंध—रास कियो २ अतिसार मनोहार।

अनेक कथा गुणी आगलो, रात तणो रास निरमल,
एक चित्त करि सांभलो भाय धरी मन माहा उजल,
श्री सकलकीर्ति पाय प्रणमीने ब्रह्म जिनदास भणसे सार
पढ़े गुणे जो सांभले तहिने द्रव्य अपार।

इति श्री **रामचन्द्र** महामुनीश्वर रास संपूर्ण समाप्त।

भवुआ गांव में प्रतिलिपि की थी।

विशेष—इसका दूसरा नाम रामराम/रामसीताराम भी है।

६२०३. **रामरास**—**ब्र०जिनदास**। पत्रसं० ४०५। आ० १२×६ इञ्च। भाषा-राजस्थानी विषय-रामकाव्य। र० काल सं १५०८। ले०काल सं० १७४०। वेष्टनसं० ६-६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

प्रशस्ति—संवत् १७४८ शाके १६१३ वर्षे आषाढ पद मासे शुक्ल पक्षे त्रयोदशी तिथौ रविवासरे प्रजापति संवत्सरे लिखितं रामराम स्वामीनो श्री देउलग्रामे शुभस्थाने श्री मूलसंघे सेनगणे पुष्करगणेनाम्ना श्रीवृषभसेनान्वय पट्टावली श्री जिनसेन भट्टारक तत्पट्टे भट्टारक श्री समन्तभद्र साह श्री अर्जुन सुत रत्नकेश लिखितं भाइ श्री जयवंत सा. माताप्रशाद कुटंबे जन्म वस जाती बघेरवालात् गोत्र साहूल।

विशेष—इसका दूसरा नाम रामसीतारास। रामचन्द्र रास भी है।

६२०४. **रामरास**—**माधवदास**। पत्रसं० ३६। आ० १०½ × ४ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य विषय-कथा। र० काल ×। ले०काल सं० १७६८ वैशाख सुदी ७। पूर्ण। वेष्टनसं० ६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

६२०५. **रुक्मिणिहरणरास**—**रत्नभूषणसूरि**। पत्र सं० ३-६। आ० ११ × ५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र०काल ×। ले०काल सं० १७२१। अपूर्ण। वेष्टन सं० २४१/७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—ग्रन्थ का अन्तिम भाग एवं प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

श्रावण वदि रे सुन्दर जाणी कि वली एकादशी रास
सूरथ मांहि रे एह रचना रची जिहां आदि जिन जगदीश
जे नर ए निरे भणिसि भणावसि तेहनि घर मंगलाचार
श्री रत्न भूषण सूरीवर इम कहिसी आदि जिणंद जयकार।

इति श्री रुक्मिणी हरण समाप्ता।

प्रशस्ति—संवत् १७२१ वर्षे वैशाख सुदी १३ सोमे श्री सागवाडा सुभस्थाने श्री आदिनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे देवेन्द्रकीर्ति तदाम्नाये श्री मुनि धर्मभूषण तत् शिष्य ब्र. बाघजी लिखितं ।

६२०६. **रोहिणीरास**—**अ०जिनदास** । पत्रसं० २४ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—राजस्थानी । विषय-रास । र० काल × । ले०काल सं० १६८२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८५-१११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

प्रशस्ति—संवत् १६८२ वर्षे कार्तिक मासे शुक्ल पक्षे चतुर्थी सोमवासरदिने लिखितोयं रास । श्री मूलसंघे भट्टारक श्री ज्ञानभूषण तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्र तत्पट्टे भ० वादिचन्द्र तत्पट्टे श्री महीचन्द्रणो शिष्य पासीसाह पठनार्थ ।

६२०७. **वर्द्धमान रास**—**वर्द्धमानकवि** । पत्र सं० २३ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र० काल सं० १६६५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६२०८. **विज्जु सेठ विजया सती रास - रामचन्द** । पत्रसं० २-५ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय -कथा । र०काल सं० १६४२ । ले० काल सं० १७४५ । अपूर्ण । वेष्टन सं० १०२-६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पंथी दौसा ।

६२०९. **व्रतविधानरासो**—**हिंगरराम** । पत्रसं० २५ । आ० ६½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र०काल सं० १७६७ । ले० काल सं० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरह पंथी दौसा ।

विशेष—ब्राह्मण भोपतराम ने माधोपुर में प्रतिलिपि की थी ।

६२१०. **प्रति सं० २** । पत्रसं० २४ । आ० १०×६ इञ्च । ले० काल सं० १८६४ मगसिर बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

६२११. **शिखरगिरिरास**— × । पत्रसं० १३ । आ० १०½×५¾ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय— माहात्म्य । र०काल × । ले० काल सं० १९०१ श्रावण सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६२१२. **शीलप्रकासरास**—**पद्मविजय** । पत्र सं० ४६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—सिद्धान्त । र० काल सं० १७१७ । ले० काल सं० १७१६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी) ।

६२१३. **शीलसुदंशनरास**— × । पत्र सं० १५ । आ० १०½×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा ।

६२१४. **श्रावकाचाररास**—**जिणदास** । पत्र सं० १३६ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—आचार शास्त्र । र०काल सं० १६१५ भादवा सुदी १३ । ले०काल सं० १७८३ माह सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४-२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पंथी दौसा ।

विशेष—श्रीमत काष्ठा संघे भट्टारकश्री भीमसेन तारी साह अदेसीघ भार्या अभ्रु अदेभी लहोडा (लुहाडिया) गोत्रे सुत थानसिंह कर्मक्षयार्थं सांमगिरपुर मध्ये श्री मल्लिनाथ चैत्यालये पं० न्यास केशर सागर लिखी—आमोर का रपा ३॥) साडा त्रण ढैंढ्या छैंज्या ।

६२१५. **श्रीपालरास**—ब्र०जिनदास । पत्रसं० ३७ । आ० १०$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{4}$ इञ्च । भाषा-राजस्थानी । विषय-काव्य । र०काल × । ले०काल सं० १६१३ मंगसिर बुदी १२ । वेष्टन सं० ३०२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—संवत १६१३ वर्षे मंगसिर बुदि १२ सनौ लक्ष्यतं बाई अमरा पठनार्थं ।

६२१६. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ३३ । आ० ११$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{4}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

६२१७. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० ३६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १८८२ फागुन सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७-३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

प्रशस्ति—संवत् १८२२ वर्षे फागुन सुदी ५ दिन गुरुवासरे नगर भीलोडा मध्ये शांतिनाथ चैत्यालये भ० श्री रत्नचंद तत्पट्टे भ० श्री देवचन्द्र तत्पट्टे भ० श्री १०८ श्री धर्मचन्द तत् शिष्य पं० सुखराम लिखितं ।

६२१८. **श्रीपालरास**—**ब्रह्म रायमल्ल** । पत्र सं० १२-४७ । आ० ६ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-रास । र० काल सं० १६३० । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

६२१९. **प्रति सं० २** । पत्रसं० २१ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १७५८ सावण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

६२२०. **श्रीपालरास**—**जिनहर्ष** । पत्र सं० ३१ । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—चरित्र । र०काल सं० १७४२ चैत्र वुदी १३ । ले० काल सं० १८१२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—झुंझनूं में लिखा गया था ।

६२२१. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ४६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६२२२. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ५६ । ले०काल सं० १८६२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

६२२३. **श्रुतकेवलिरास**--**ब्र०जिनदास** । पत्र सं० ३६ । आ० ६$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल सं० १७६१ फाल्गुन सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली, कोटा ।

६२२४. **श्रेणिक प्रबन्ध** रास—**ब्रह्मसंवजी** । पत्र सं० ६३ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र०काल सं० १७७५ । ले०काल सं० १८५३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३६-१६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

६२२५. **श्रेणिकरास**—**ब्रह्म जिनदास**। पत्रसं० ६२। आ० ६×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र०काल सं० [illegible]। ले०काल सं० १७७० पूर्ण। वेष्टन सं० २६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

प्रशस्ति—संवत् १७७० प्रवर्तमाने आषाढ़ सुदी २ गुरुवासरे भ० श्री सकलकीर्ति परम्परान्वये श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे भ० श्री विजयकीर्ति विजयराज्ये श्री अमदाबाद नगरे श्री राजपुरे श्री हुंबड वास्तव्य हुंबडज्ञाती उत्तरेश्वर गोत्रे साह श्री ५ धनराज कसनदास कोटडिया लिखितं।

६२२६. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० ५५। आ० १०×४½ इञ्च। ले०काल सं० १७६० भादवा सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन सं० २७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

६२२७. **प्रतिसं० ३**। पत्रसं० ४०। आ० १०½×५ इञ्च। ले०काल सं० १७६८ आसोज सुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० १६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—पत्र ३८ से पोषधरास दिया हुआ है। ले० काल सं० १७६६ काती सुदी १५ है।

६२२८. **श्रेणिकरास**—**सोमविमल सूरि**। पत्र सं० २६। आ० १०×४ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—कथा। र०काल सं० १६०३। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ६६-६ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पंथी दौसा।

विशेष—२६ से आगे के पत्र नहीं हैं। प्रशस्ति दी हुई है।

प्रारम्भ—

सकल ऋद्धि मंगल करण, जिण चउवीस नमेवि।
ब्रह्मा पुत्री सरसती माय पय पणमेवि ॥१॥
गोयम गणहर नइ नमुं अक्षय निधन विणासण हार।
सोहम स्वामि नमुं सदा, जसु शाखा विस्तार॥
सार सदा फल गुरु तणा, दुइं अविचल पट्ट।
अनुक्रमि पंचावन्न मइ, जसु नामिइं गट्टगट्ट ॥३॥
हेम विमल तसु दीपतु, श्री हेम विमल सूरिंद।
तेह तणो चलणे नमी, हीयइ धरी आणंद ॥४॥
चंद परिचंडती कला, लभइ जेइ नइ नामि।
सोभाग हरिष सूरिंद वर, हरषिउ तासु प्रणामि ॥५॥
मूरख अक्षर जं कहइ, ते सवि सुगुरु पसाय।
वर्ण मात्र जिणि सीखविउ, तेहना प्रणमुं पाय॥

वस्तु—

सफल जिणवर २ चलण वंदेवि।
देवि श्री सरसति तणा पाय कमल बहुभत्ति जुत्तउ
प्रणमी गोयम स्वामि वर सुगुरुदाय, पय कमलि रत्तउ
श्रेणिक राजा गुणनिलु निर्मल बुद्धि विशाल।
रचि सुरासहुं तेह तणु सुणिज्यो अति हरसाल॥

अन्तिम—

तप गछ नायक गणधरु एहा, सोम सुन्दर सूरि राय ।
तस पटि गछपति वेद मुं एमा, सुमति सुन्दर सूरि पाय ॥
तसु शाखा मोहा करू एमा रत्नशेखर सूरिंद ।
तस पट गयण दीपावता एमा लिखिमी सागर सूरिचंद ॥
सुमति साधु सुरीपद एमा, अजमाल गुरु पाट ।
सोभागी सोहामणी एहा ए महा, जसु नामिइं गह गटसुं
हेम परिइ जगवल्लहु एम्मए मा श्रे. हेमविमल सूरि ।
सोभाग हरस पाट धर मा. नामि संपद भूरि सु ॥
सोम विमल सूरि तास पाटि मा, पामी सु गुरु ए साय ।
श्री वीर जिनवर मधी एमा गायु श्रेणिक राज ॥
भुवन आकाश हिम किरण मा संवत् १६०३ वरिस अहि नाणि सु ।
भादव मास सोहामणइ एमा, पंडेवि चडिउ प्रमाणि ।
कुमरपाल राय थापीउं एमा कुमर गिरेपुर सारसु ।
सांति जिणंद सुपसाउ लए मा, रचु रास उदार सु ॥७८॥
चुपई दूहा वस्तु गात मा, सुवि मिलीए तुं मान सुं ।
वसइ असी आगलां एमा, जाणु सहुइ जाण ।
अधिक उछउ मइ भणउ एमा जे हुइ रास मझारि ॥
ते कवि जन सोधी करी, आगम नइं अनुसारि ॥७९॥
जे नर नारी गाईं सउं सुणसिइं आणी रंग ।
ते सुख संपद पामइ स ए मा, रंग चली परिचंग ।
जा लग इ मेरु मही धरु ए, मा जा लगि इ ससि तार ।
.... चउ जपु ए मा मंगल जय २ कार ॥८०॥

६२२९. **षट्कर्मरास—ज्ञानभूषण ।** पत्र सं० १० । आ० ८½ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

६२३०. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ४ । आ० १२ × ५ इंच । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

६२३१. **सनत्कुमार रास—ऊदो ।** पत्र सं० ३ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल सं० १६७७ सावण सुदी १३ । ले० काल सं० १७६२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१९/९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

विशेष—रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है ।

प्रारम्भ—

मुख कर सती सर नमुं सद्गुरु लेव करूं निसदीस ।
तास पसायें अणसरु सिद्ध सकल मननी जगीस ।

सनतकुमार सहामणउ उत्तम गुण मणिनंउठाण ।
चक्रीसर चउथउ सही चतुर पणुं सोहै सपराण ।

× × × ×

अन्तिम—

सोलहसइ सत्तरोत्तरइ सावण सुद तेरस अवधार ।
उत्तराध भणे संषेपथी विरत थकी कीधउ उद्धार ॥८२॥
पासचन्द गुरु पाय नमी हरष धरीए रचीयउ रास ।
ऋषि ते ऊदो इम कहै भणइ तिहां घरि मंगल लछि निवास ॥८३॥
इति श्री सनतकुमार रास समाप्तेति ।
संवत् सतरें सै बासठें भेदपद्र मुझ ठाम ।
वीरमजी सुप्रसाद थी लिखतं जटमल राम ।

६२३२. सीताशीलपताकागुण बेलि—आचार्य जयकीर्ति । पद्यसं० ३१ । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल सं० १६०४ । ले० काल सं० १६७४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३/१४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर । यह मूल पांडुलिपि है ।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारंभ—राग आसावरी—

सकल जिनेश्वर पद युगल,
आनि हृदय कमलि धरु तेह ।
सिद्ध समूह गुण अरोपम मनि
प्रणमवि परवी एह ॥१॥
सूरीवर पाठक मुनी सहु
आनि भगवती भुवनाधार
सरस सिद्धांत समूहनि
जिन मुखा प्रगटी प्रतार ॥२॥
अति लो अनादि गणधर होय
अनि अमृत मिष्टा विस्तार ।
आणंद उल्लहि सहुय बन्दवि
बेल्ल ज्ञान की कहि कवीसार

× × × ×

अन्तिम—

सीता समरण जिनवर करी आनि सहु लोक प्रति कहि वाच
पर पुरुष ज्यो मि इच्छयो होय तो अगन्य प्रकट करे सांच ।
इम कही जब झपलावीयुं तब अगन्य गई जल थामि ।
जय जय शब्द देव उच्चरि पूजि प्रणमी सीता तणा पाय ।
सुद्ध थई गुरु की दीक्षा लेइ तप जप करी धर्म ध्यान ।
समाधि सन्यासि प्राणनि तजी स्वर्ग सोलमि थयो इन्द्र जाणि ।

सागर बावीस तणु आयसु लही सुख समुद्र झीलंत ।
आगलि मुगत्य वधु वर थई सुभ अनंत गुण क्रीडंत ॥३१॥

दूहा—

सकलकीरति आदि सहु गुणकीर्ति गुणमाल ।
वादिभूषण पट्ट प्रगटियो रामकीर्ति विशाल ॥१॥
ब्रह्म हरखा परसादथी जयकीर्ति कही सार ।
कोट नगरि कोडामणि आदिनाथ भवतार ॥२॥
संवत् सोल चउ उत्तरि सीता तणी गुण वेल्ल ।
ज्येष्ठ सुदि तेरस बुधि रची भणी करें गेल्ल ॥३॥
भाव भगति भणि सुणि सीता सती गुण जेह ।
जयकीरति सूरी कही सुख सूं ज्यो पलहि तेह ॥४॥
सुद्ध थी सीता शील पताका ।
गुण वेल्ल आचार्य जयकीर्ति विरचिता ।

संवत् १६७४ वर्षे आषाढ़ सुदी ७ गुरौ श्री कोट नगरे स्वज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थं आ० **श्री जयकीर्तिना स्वहस्ताभ्यां** लिखितेयं ।

६२३३. सीताहरणरास—जयसागर । पत्रसं० १२६ । आ० ६×५ इंच । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–कथा । र०काल सं० १७३२ वैशाख सुदी २ । **ले०काल** सं० १७४५ वैशाख सुदी १ । **पूर्ण** । वेष्टन सं० २३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—इस के कुल ८ अधिकार हैं । अन्त में रामचन्द्र का मोक्ष गमन का वर्णन है ।

ग्रंथ का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—

सकल जिनेश्वर पद नमुं सारद समरू माय ।
गणधर गुरु गौतम नमुं जे त्रिभुवन वंदित पाय ॥१॥
महीचन्द गुरु पद नमी रामचन्द्र घर नारि ।
सीता हरण जहु कहू सांभल ज्यो नरनारि ॥२॥

अन्त में ग्रन्थ प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

रामचन्द्र मुनि केवल थइ नो सिद्ध थयो भवतार जी ।
ते गुण कहते पार न पावे समरतां सौख्य अपार जी ॥१॥
मूलसंघ सरसति वरगच्छे बलात्कारगण सारजी ।
विद्यानंदि गुरु गोयम सरसो प्रणमूं वारोवार जी ॥२॥
गंधार नगरे प्रत्यक्ष अतिशय कलियुगे छै मनोहारजी ।
तेह तणो पाट मलिभूषण विद्याना वहिपार जी ॥३॥
लक्ष्मीचन्द्र ने अनुक्रमे जाणो लक्ष्मण पंडित कायजी ।
वीरचन्द भट्टारक वाणी सांभलतां सुखधाम जी ॥४॥
ज्ञानभूषण तस पाटे सोहै ज्ञान तणो भंडार जी ।
लाड वंसे उद्योतज कीधो भव्य तणो आधार जी ॥५॥

प्रभाचन्द्र गुरु तेहने पट्टे वाणी अमी रसाल जी ।
वादिचन्द्र वादी बहु जीत्या घर सरसति गुणपाल जी ।।६।।
महीचन्द मुनिजन मनमोहन वाणी जेहे विस्तार जी ।
परवादीना मान मुकाव्या गर्व न करे लगार जी ।।७।।
मेरुचन्द तस पाटे सोहे मोहे भवियण मन्न जी ।
व्याख्यान वाणी अमीय समाणी सांभला एके मन्नजी ।।८।।
गोर महीचन्द्र शिष्य जयसागर रच्यु सीता हरण मनोहार जी ।
नर नारी जे भणे सुणासे तस घरे जय जय कार जी ।।९।
हुंबड वंस रामा संतोषी रमादे तेहनी नार जी ।
तेह तणो पुत्र मल्ल लुलक्षण गंहिर के मनोहार जी ।।१०।।
तेह तणो आदर सीता हरण ए कीधू मन उल्लास जी ।
सांभलतां गातां सुख होसी सीता सील विसाल जी ।।११।।
संवत् सतर बत्रीसा बरसे वैशाख सुदि बीज सार जी ।
बुधवारे परिपूर्णज रच्यु **सूरत** नयर मझार जी ।।१२।।
आदि जिणेसुर तणे प्रसादे पद्मावती पसाय जी ।
सांभलला गातां ए सहुने मन मां आनन्द थाय जी ।।१३।।
महापुराण तणे अनुसारे कीधू के मनोहार जी ।
कविजन दोस म देसो कोई सोध ज्यो तमे सुखकार जी ।।१४।।
मुझ आलसूने उजमचढ्यु सारदा ये मति दीध जी ।
तेह प्रसादे ग्रंथ ए कीधो श्याम दासेज सतीध जी ।।१५।।
सीता सील तणो ए महिमा गाय सहू नरनार जी ।
भाव धरी जे गाते अनुदिन तस घर मंगलचार जी ।।१६।।

दूहा—

भाव धरी जे भणे सुणे सीता सील विसाल ।
जयसागर इम उच्चरे पोहचे तस मन आस ।

इति भट्टारक महीचन्द्र शिष्य ब्र० जयसागर विरचिते सीताहरणाख्याने श्री रामचन्द्र मुक्ति गमन वर्णन नाम षष्ठोधिकार समाप्ता । शुभं । ग्रंथाग्रंथ २५५० लिखतं संवत् १७४५ वैशाख सुदी १ गुरौ ।

६२३४. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ८६ । आ० ११½×५ इञ्च । ले० काल सं० १८२२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६६-८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

६२३५. सुकौशलरास—वेणीदास । पत्र सं० १७ । आ० १०½×४½ इंच । **भाषा**—हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १७२४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ११८-५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

अन्तिम—

श्री विश्वसेन गुरू पाय नमी,
वीनवी ब्रह्म वेणीदास ।

परम सौख्य जिहां पायीइ,
तेथु भुगति निवास ॥

इति सकोशल रास समाप्ता ,

प्रशस्ति—संवत् १७१४ वर्षे श्री माघ वदी ५ शुक्रे श्रीअहमदाबाद नगरे श्री शीतलनाथ चैत्यालये श्री काष्टासंघे मंदीतर आच्छे विद्यागणे भ० रामसेनान्वये भ० श्री विद्याभूषणदेवास्तत्पट्टे भ० श्री भूषण देवास्तत्पट्टे भ० श्री चंद्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री ५ राजकीर्त्तिस्तच्छिष्य ब्र० श्री देवसागरेन लिखापितं कर्मक्षयार्थं ।

६२३६. **सुदर्शनरास—ब्र० जिनदास** । पत्रसं० ४-१७ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—रास कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—ब्र० नेमिदास की पुस्तक है पंडित तेजपाल के पठनार्थ लिखी गयी थी ।

६२३७. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० १६ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १७२६ माह सुदी २। पूर्ण । वेष्टन सं० ३०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

६२३८. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० २-२० । आ० १०½ × ६ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६२ ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—आचार्य रामकीर्ति जी ने ईलचपुर में प्रतिलिपि की थी ।

६२३९. **सोलहकारण रास—ब्र० जिनदास** । पत्र सं० ८ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-रास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६२४०. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ६ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६१-१३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

६२४१. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० १० । आ० ११×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५७ १३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

६२४२. **स्थूलभद्रनुरास—उदयरतन** । पत्रसं० ६ । आ० ९×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-रास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५९० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६२४३. **हनुमंतरास—ब्र० जिनदास** । पत्रसं० ४१ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-रास । र० काल × । ले० काल सं० १७०५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८१-४४ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

प्रशस्ति—संवत् १७०५ वर्षे भाद्रपद वदि द्वितीया बुधे कारंजा नगरमध्ये लखीतं । श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० देवेन्द्रकीर्त्ति तत्पट्टे भ० धर्मचन्द्र तत्पट्टे भ. श्री धर्मभूषण त. प. भ. देवेन्द्रकीर्त्ति त प. भ० कुमुदचन्द्र त. प. भ. श्री धर्मचन्द्र तदाम्नाये व्याघ्रेलवाल ज्ञाति पहर सोरा गोत्रे शा. श्री रामा तस्य पुत्र शा. श्री मेघा तस्य भार्या हीराई तयो पुत्र शा. नेमा तस्य भार्या जीवाई

तयोः पुत्र शा. श्री शीतलमेघा द्वितीय पुत्र शा. भोजराज तस्य भार्या रोनाई तयोःपुत्र शा. श्री मेघा ऐतेषां मध्ये श्री भोजा साक्षेण भट्टारक श्री पद्मनन्दि तच्छिष्यस्य ब्र. श्री वीरनि पठनार्थं ज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थं हनुमान रास लिखापितं शुभं भूयात् ।

६२४४. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ६७ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

६२४५. **हनुमंत कथा रास—ब्र. रायमल्ल** । पत्र सं० ४१ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—रास । र०काल सं० १६१६ वैशाख बुदी ६ । ले० काल सं० १६६१ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

विशेष—उगाही करके मिती काती सुदी १ सं० १६६१ को जयपुर में लिखा गया ।

६२४६. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ४२ । आ० १२×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०१ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर पंचायती दूनी (टोंक) ।

६२४७. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ६-३३ । आ० १३ × ७ इञ्च । ले० काल सं० १८६८ । पूर्ण । वे० सं० १३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष—फागी में प्रतिलिपि की गयी थी ।

६२४८. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० ३४ । आ० १२ × ६ इंच । ले० काल सं० १८६८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

विशेष– ग्योकस ने फागी में प्रतिलिपि की थी ।

६२४६. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० १०५ । आ० × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक) ।

६२५०. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० ८१ । आ० × । ले० काल × । अपूर्ण । जीर्ण । वेष्टन सं० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक) ।

६२५१. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० ८३ । ले० काल १६२५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

६२५२. **प्रति सं० ८** । पत्र सं० ३७ । ले०काल सं० १८८६ आसोज बदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर में लिखा गया था ।

६२५३. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० ५४ । ले०काल सं० १६५४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

६२५४. **प्रति सं० १०** । पत्र सं० ४४ । आ० ६×५ इञ्च । ले०काल सं० १७५२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

६२५५. **प्रति सं० ११** । पत्र सं० ८४ । आ० ८ × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—गुटका के आकार में है। पत्र ७६ तक हनुमान चौपई रास है तथा आगे फुटकर पद्य हैं।

६२५६. **प्रति सं० १२**। पत्र सं० ४५। आ० ११$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल सं० १६१८ भादवा सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन सं० १६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मंदिर बयाना।

६२५७. **प्रति सं० १३**। पत्र सं० ६७। आ० ८$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल सं० १८१२ चैत बुदी १४। पूर्ण। वेष्टन सं० ६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना।

विशेष—वैर ग्राम मध्ये लिखितं। अंतिम पाठ नहीं है। पद्य सं० ८७० है पत्र सं० ६८–७० तक पंच परमेष्टी गुण स्तवन है।

६२५८. **प्रति सं० १४**। पत्र सं० ५६। आ० १०$\frac{3}{4}$ × ५ इञ्च। ले० काल सं० १८२६। पूर्ण। वेष्टन सं० १७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली।

विशेष—हीरापुरी में लालचन्द ने लिखा था।

६२५९. **प्रति सं० १५**। पत्र सं० ४०। आ० १०$\frac{3}{4}$ × ७$\frac{3}{4}$ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—२५–२६ वां पत्र नहीं है।

६२६०. **प्रति सं० १६**। पत्र सं० ४७। आ० ६ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

६२६१. **प्रति सं० १७**। पत्र सं० ४३। आ० ११×५ इञ्च। ले० काल सं० १८६२ वैशाख बुदी १४। पूर्ण। वेष्टन सं० ६६/३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवां (राज०)।

६२६२. **प्रति सं० १८**। पत्र सं० ५६। आ० १०×६$\frac{3}{4}$ इञ्च। ले० काल सं० १६२८ आसोज वदी ८। पूर्ण। वेष्टन सं० ४५। **प्राप्ति स्थान**—सौगाणी दि० जैन मंदिर करौली।

विशेष—बंगालीमल ने देवाराम से करौली नगर में प्रतिलिपि करवाई थी।

६२६३. **प्रति सं० १९**। पत्र सं० ७०। आ० १२×४ इञ्च। ले० काल सं० १८३७। पूर्ण। वेष्टन सं० ४४६-३९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—गांव स्वामी मध्ये लिखितं। पं० जसरूपदास जी।

६२६४. **प्रति सं० २०**। पत्र सं० ७६। आ० ७$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल सं १८१५। पूर्ण। वेष्टन सं० २०। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खंडेलवाल मंदिर उदयपुर।

—:०:—

विषय -- इतिहास

६२६५. **उत्सव पत्रिका**— × । पत्रसं० २ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पत्र लेखन इतिहास । र० काल × । ले०काल सं० १९३० । पूर्ण । वेष्टन सं० २१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—सागरवपुर की पत्रिका है ।

६२६६. **कुन्दकुन्द के पांच नामों का इतिहास**— × । पत्र सं० ६ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । र० काल × । ले० काल १९६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९०/६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेष—इन्दौर में प्रतिलिपि हुई थी ।

६२६७. **कुलकरों**— × । पत्रस० २४ । आ० १०×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कुलकरों का इतिहास । र० काल × । ले० काल सं० १८०५ कार्तिक सुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२०-५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—उदयपुर में लिखा गया था ।

६२६८. **गुरावली**— × । पत्रसं० २९ । आ० १३×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६२६९. **गुर्वावलीसज्झाय**— × । पत्र सं० १० । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

६२७०. **ज्ञातरास—भारामल्ल** । पत्रसं० २४ । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बड़ा पंचायती मन्दिर डीग ।

विशेष—संघाधिपति देवदत्त के पुत्र भारामल्ल थे ।

६२७१. **चौरासी गोत्र विवरण**— × । पत्र सं० ८ । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र० काल × । ले०काल १८९९ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

६२७२. **प्रतिसं० २** । पत्र संख्या ६ । आ० ११×९ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—चौरासी गोत्र के अतिरिक्त वंश, गोत्र व देवियों के नाम भी हैं ।

६२७३. **चौरासी जयमाल (माला महोत्सव)—विनोदीलाल** । पत्र सं० २ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६२७४. **चौरासीजाति जयमाल**— ×। पत्रसं० ७। आ० ७½×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—इतिहास। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १८६ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

६२७५. **चौरासी जाति की विहाडी**— × । पत्रसं० ३। आ० १०½×५ इंच। **भाषा**—हिन्दी। विषय—इतिहास। र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ६७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—चौरासी जातियों की देशियों का वर्णन है।

६२७६. **जयपुर जिन मंदिर यात्रा—पं० गिरधारी**। पत्र सं० १३। आ० ६½×६ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—यात्रा वर्णन (इतिहास)। र०काल × । ले० काल सं० १६०८। पूर्ण। वेष्टन सं० ५३६। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६२७७. **तीर्थमाला स्तवन**— × । पत्रसं० ३। आ० १०½ इञ्च। **भाषा**—हिन्दी पद्य। विषय—इतिहास। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर उदयपुर

विशेष—सं० १५२६ वर्षे माघ बुदी ६ दिने शुक्रवारे लिखित।

६२७८. **निर्वाण काण्ड भाषा**— × । पत्रसं० ६। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—इतिहास। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ११-१६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

६२७९. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० २। आ० ११½×६ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

६२८०. **निर्वाण कांड भाषा—भैया भगवतीदास**। पत्रसं० ५। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—इतिहास। र०काल सं० १७४१। **ले०काल** × । पूर्ण। वेष्टन सं० ५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा।

विशेष—प्राकृत निर्वाण काण्ड की भाषा है।

६२८१. **पद्मनंदिगच्छ की पट्टावली—देवब्रह्म**। पत्र सं० ७। आ० ११×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय—इतिहास। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३४२/४१३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर।

विशेष—रचना निम्न प्रकार है—

विकसी भव्य पंकज दशं हथि गुरु इन्द्र समान ए जाणीएजु।
नदीनाथ सुताएति पुत्र विकट कुशिल हथि विस आणीएजु।
अज्ञान कि अंध निकंदन कुं एह ज्ञान कि भानु वरवाणी एजु।
देवजी ब्रह्म वाणी वदि गछ नायक पद्मनंदि जग मानियेजु ॥१॥
व्याकरण छंद अलंकिति काव्य सुतर्क पुराण सिद्धांत परा।
नवतेज महाव्रत पंचसमिति कि आइपरे चरणा अमरा।
ओर ध्यान कि ज्ञान गुमान नहि तजि लाभ लीय तरुणा चीवरा।
रामकीर्ति पट्टोधर पद्मनंदि कहि देवजी ब्रह्म सेवो सुनरा ॥२॥

वादि गजेन्द्र तिहां जु भंडि जिहां पद्मनंदि मृगरंजन गजे ।
कौरव किचक त्यांहांजु लडि ज्यहां भीम महा भड हाथ न वजे ।
रामकीर्ति के पट्टपयोज प्रबोदनकुं रविराज सुरजे ।
देवजी ब्रह्मचंदि गच्छनायक सारदागच्छ सदा ए छाजे ॥३॥
वादि कुमत फणि दरबागापति वादिकरी सभसिंह भयो है ।
वादि जलद समिरण ए गुरु वादिय वृंद को भेद लयो है ।
राय श्री संघ मिलि पद्मनंदि कुं रामकीर्ति को पट्ट दयो है ।
ब्रह्म कणे देवाजी गुरुजी याकुं इन्द्र नारद प्रणाम कियो है ॥४॥
राजगुरु पद्मनंदि समोवर मेघ कछु नहि पावतहि ।
ताको निरंतर चाहत चातक तोकुं पाट जिन धावतहि ।
मेघ निरन्तर वरषत निरतु भारथि दानकि गाजतुहि ।
श्री दान समिमुख सामतु गोर कल्याण मुनि गुण गावतहि ॥५॥
श्रीमूलसंघ सणगार पद्मनंदि भट्टारक सकलकीर्ति गुरुसार ।
भुवनकीर्ति भवतारक ज्ञानभूषण गुरुवंग विजयकीर्ति सुमचन्द्र ।
सुमतिकीर्ति गुणकीर्ति वंदो भवियण मनरंगह तसपट्टे गुरु जाणिय ।
श्रीवादीभूषण यतिराय पुंजराज इमि उच्चहं गुरु सेविनरपति पाय ॥६॥
पंचमहाव्रतसार पंचसमिति प्रतिपालि ।
गुप्तित्रय सुखकार मोह मोहा दूरि टारिन ।
पंचाचार विचार भेद विज्ञान सुजाणे ।
आगम न्याय विचारसार सिद्धांत बखाणे ।
गुणकीर्ति पट्टे निपुण श्री वादिभूषण वंदो सदा ।
पुंजराज पंडित इम उच्चरे गुरुचरण सेवो मुदा ।
सबल निसाण घनाघन गर्जित माननी लाद जु मङ्गल गायो ।
विद्या के तेज रदे धरि हेत कुं उरवादिपाय बंदन आयो ।
मेघराज के नाद जसि गुजरात तात जुगमानी को मान गमायो ।
वदे धर्मभूषण पद्मनंदि गुरु पाटण माहि जुसामो करायो ।
एकरतांवर पिर रहे करणी कथनी एक उर धरे ।
एक लोभ के कारण चारण से एक मंत्र धारि ।
म्येहमत फिरिहि एक स्वादिक नाम विकलडरि ।
यहे धर्मभूषण पद्मनंदि निकलंक कु भूप प्रणाम करिहि ॥६॥

इसके आगे निम्न पाठ और हैं—

नेमिपच्चीसी	कल्याणकीर्ति	हिन्दी
चौबीस तीर्थंकर स्तुती	,,	,,

६२८२. पट्टावली—× । पत्र सं० ५ । आ० १०×४ इंच । **भाषा**—हिन्दी गद्य । विषय—इतिहास । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—श्वेताम्बर पट्टावली है। संवत् १४६१ जिनवर्द्धन सूरि तक पट्टावली दी हुई है।

६२८३. **प्रतिसं० २**। पत्र सं० २४। आ० ९½×५ इञ्च। ले० काल सं० १८३० सावन बुदी १२। पूर्ण। वेष्टन सं० १३६ र **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ दोडाकासिंह (टोंक)

विशेष—श्वेताम्बर पट्टावली है।

६२८४. **प्रतिष्ठा पट्टावली**— ×। पत्रसं० १८। आ० ११ × ५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० १९१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक)

६२८५. **भट्टारक पट्टावली**— ×। पत्र सं० ४। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—इतिहास। र०काल ×। ले० काल ×। वेष्टन सं० ६७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर।

विशेष—सं० १०४ भद्रबाहु से लेकर सं० १८८३ भ० देवेन्द्रकीर्ति के पट्ट तक का वर्णन है।

६२८६. **भट्टारक पट्टावली**— ×। पत्र सं० ३०। आ० ९॥ × ४ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—इतिहास। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४३४। **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

विशेष—संवत् १६९७ से सं० १७५७ तक के भट्टारकों वर्णन है।

६२८७. **भट्टारक पट्टावली**— ×। पत्रसं० २-८। आ० १० × ४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३८०-१४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

६२८८. **भट्टारक पट्टावली**—। पत्रसं० १५। आ० १० × ७ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय-इतिहास। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २८०-१११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

६२८९. **मुनिपट्टावली**— ×। पत्र सं० ५५। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १५४८। **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मंदिर अजमेर।

विशेष—संवत् ४ से संवत १८४० तक की पट्टावलि है।

६२९०. **प्रबंधचिन्तामणि—राजशेखर सूरि**। पत्रसं० ६०। आ० १४×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत गद्य। विषय-इतिहास। र०काल ×। ले० काल सं० १४०५ ज्येष्ठ सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० १२४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—दिल्ली (देहली) में मुहम्मद शाह के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी।

६२९१. **प्रबंध चिन्तामणि**—**आ० मेरुतुंग**। पत्रसं० ४९। आ० १४×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-इतिहास। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १२२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

६२९२. **महापुरुष चरित्र**—**आ० मेरुतुंग**। पत्रसं० ५२। आ० १४×४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-काव्य (इतिहास)। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १२१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

६२९३. **यात्रा वर्णन**— × । पत्र सं० ११ । आ० ११ × ७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-वर्णन । र० काल सं० १९०६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६-४८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—गिरनार, महावीर, चौरासी, सौरीपुर आदि क्षेत्रों की यात्रा का वर्णन एवं उनकी पूजा बनाकर अर्घ आदि चढाये गये हैं।

६२९४. **यात्रावली**— × । पत्र सं० ४ । आ० १०$\frac{१}{२}$ × ४$\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—इतिहास । र० काल × । ले०काल सं० १९३२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १९८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

विशेष—१९३२ भादवा सुदी ९ की यात्रा का वर्णन है।

६२९५. **विक्रमसेन चउपई—विक्रमसेन** । पत्र सं० ५७ । आ० १०$\frac{१}{२}$ × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय-इतिहास । र० काल सं० १७२४ कार्तिक । ले० काल सं० १७५९ मंगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२९६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६२९६. **विरदावली**— × । पत्र सं० ५ । आ० ८$\frac{१}{२}$ × ४$\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—इसमें दिगम्बर भट्टारकों की पट्टावली दी हुई है।

६२९७. **विरदावली**— × । पत्र सं० ७ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—इतिहास । र० काल × । ले० काल सं० १८३७ मार्गशीर्ष सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—सूरतिविदर (सूरत) में लिखा गया था।

६२९८. **बृहद् तपागच्छ गुरावली**— × । पत्र सं० १४ । आ० १०$\frac{१}{२}$ × ४$\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-इतिहास । र० काल × । ले०काल सं० १४९२ चैत्र सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—१४६६ तक के तपागच्छ गुरुओं का नाम दिया हुआ है। मुनि सुन्दर सूरि तक है।

६२९९. **बृहत्तपागच्छ गुर्वावली—मुनि सुन्दर सूरि** । पत्र संख्या ३ से ५५ । भाषा-संस्कृत । विषय-इतिहास । र०काल × ले०काल सं० १४९० फागुन सुदी १० । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४९१ । **प्राप्ति स्थान**—पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

६३००. **शतपदी**— × । पत्र सं० २१-२४ । आ० १२ × ४$\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । र०काल × । ले०काल × । विषय-इतिहास । वेष्टन सं० ७०५ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर

विशेष—श्वेताम्बर आचार्यों के जन्म-स्थान, जन्म-संवत तथा पट्ट संवत् आदि दिये हैं। सं. ११३६ से १४५४ तक का विवरण है।

६३०१. **श्वेतांबर पट्टावली**— × । पत्र सं० ५ । आ० १० × ४½ इञ्च । **भाषा**-हिन्दी (गद्य) । विषय-इतिहास । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—महावीर स्वामी से लेकर विजयरत्न सूरि तक ६४ साधुओं का पट्ट वर्णन है ।

६३०२. **श्रुतस्कंध**—ब्र० हेमचन्द्र । पत्र सं० १० । आ० १०×४ । इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-इतिहास । र० काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६३०३. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ५ । आ० १०½ × ४¾ । भाषा-प्राकृत । विषय-इतिहास । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६३०४. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० ५ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २५७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—पं० सूरजन ने प्रतिलिपि की थी ।

६३०५. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० ५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर उदयपुर ।

६३०६. **श्रुतस्कंध सूत्र**—× । पत्रसं० २९ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-इतिहास । र०काल × । ले० काल सं० १६६८ चैत्र सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बैर ।

विशेष-चंपावती नगर में ऋषि मनोहरदास ने प्रतिलिपि की थी ।

६३०७. **श्रुतावतार**— × । पत्र सं० ५ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-इतिहास । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर टूनी (टोंक) ।

६३०८. **श्रुतावतार** — × । पत्रसं० ४ । आ० १२ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-इतिहास । र०काल × । ले०काल सं० १७०६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८४/११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १७०६ वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्लपक्षे सप्तमी दिवसे अहिमदाबाद नगरे आचार्य श्री कल्याण कीर्ति तत् शिष्य ब्र० श्री तेजपाल लिखितं ।

६३०९. **श्रुतावतार**—× । पत्र सं० ४ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-इतिहास । र० काल ×। ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१७/५०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

६३१०. **भट्टारक सकलकीर्तिरास**—ब्र० सामान । पत्र सं० ११ । आ० ११ ×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१४/४१० । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—अन्तिम भाग—

चउवीस जिणेसर प्रसादि
श्री भुवनकीर्ति नवनवलि नादि ।
जयवंता सकल संघ कल्याण करए ।

इति श्री भट्टारक सकलकीर्तिनुरास समाप्तः । श्राविकाबाई पूतलि पठनार्थं ।

६३११. **सम्मेदशिखर वर्णन**—× । पत्रसं० ४ । आ० १२$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र०काल × । ले०काल सं० १९६२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रारंभ में लघु सामायिक पाठ भी दिया है ।

६३१२. **सम्मेदशिखरयात्रा वर्णन—पं० गिरधारीलाल** । पत्रसं० ७ । आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । र०काल सं० १८९९ भादवा बुदी १२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६९४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

६३१३. **सम्मेद शिखर विलास—रामचन्द्र** । पत्रसं० ७ । आ० ८ × ५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र०काल × । ले० काल सं० १९०४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३/८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

विशेष—प्रेमराज श्रावक ने प्रतिलिपि की थी ।

६३१४. **संघ पट्टक टीका–ग्र० जिनवल्लभ सूरि** । पत्र सं० २० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–इतिहास । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६३१५. **प्रति सं० २** । पत्रसं० २१ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—उक्त मन्दिर ।

६३१६. **संघपट्टप्रकरण** । पत्र सं० ७ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–इतिहास । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अजमेर भण्डार ।

६३१७. **संवत्सरी**–× । पत्रसं० ४ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र०काल × । ले० काल सं० १८१७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३११ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—सं० १७०१ से लेकर सं० १७४४ तक का वर्णन है । लिखितं आर्या नगीना समत १८१७ वर्षे ।

विषय--विलास एवं संग्रह कृतियां

६३१८. **आगम विलास—द्यानतराय**। पत्र सं० ३९२। आ० १०×६ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—संग्रह। र०काल सं० १७८४। ले० काल सं० १८३९। पूर्ण। वेष्टन सं० ५९-३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

विशेष—कृष्णगढ में श्वेताम्बर श्री कन्हीराम भाऊ ने प्रतिलिपि की थी। इसका दूसरा नाम द्यानत विलास भी है।

६३१९. **कवित्त**— ×। पत्र सं० ६। आ० ६½×४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

६३२०. **कवित्त—बनारसीदास**। पत्र सं० १। आ० १०×४ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—फुटकर। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २१२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलना (बूंदी)

विशेष—दो कवित्त नीचे दिये जाते हैं —

कंचन भंडार पाय नैक न मगन हूजे।
पाव नव योवना न हूजे ए बनारसी।
काल अधिकार जाणैं जगत बनारा सोई।
कामनी कनक मुद्रा दुहूं कूं बनारसी।
दोउ है विनासी सदैव तू है अविनासी।
जीव याही जगतबीच पइडो बनारसी।
याको तू संग त्याग कूंप सूं निकस भागी।
प्राणि मेरे कहे लागी कहत बनारसी।

× × × × ×

किते गिली बैठी है डाकिणी दिल्ली।
इत मानकरी पति पंडम सु।
पृथ्वीराज के संगी महाहित हिल्ली।
हेम हुमाऊ अकबर बब्बर।
साहिजिहा सुभी कीनी है भल्ली।
साहि जिहा सुखी मन रंग।

लउ विरची साहि औरंग मिल्ली ।
कोटि पदातु कहै तलणी वै किते.....

६३२१. प्रतिसं० २ । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—समयसार नाटक के कवित्त हैं ।

६३२२. कवित्त—सुन्दरदास । पत्रसं० ३ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले०काल सं० १८७४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, चौगान बूंदी ।

विशेष—पं० रतनचन्द के पठनार्थ लिखा गया था ।

६३२३. कवित्त एवं स्तोत्र संग्रह— × । पत्रसं० ६० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी काव्य । विषय—संग्रह । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—भजगोविन्द स्तोत्र, नवरत्नकवित्त, गिरधर कुंडलियां हैं ।

६३२४. गुणकरंड गुणावली—ऋषिदीप । पत्रसं० ३१ । आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । र०कालसं० १७५७ । ले० काल सं० १८१७ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६७४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—मिती आषाढ बुदी ११ सं० १८१७ का श्रीमंत श्री सकलसूरि शिरोमणि श्री मंडलाचार्य श्री १०८ श्री विद्यानंद जी तत् शिष्य पं० श्री अबैरामजी लिपिकृतं । शिष्य सूरि श्री रामकीर्ति पठनार्थं ।

६३२५. चमत्कार षट् पंचाशिका—महात्मा विद्याविनोद । पत्र सं० ४ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा -संस्कृत । विषय —विविध । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७८-१८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

६३२६. ग्रंथसूची शास्त्र भंडार दबलाना—४ । पत्रसं० ६ । आ० २७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय --सूची । र० काल × । ले०काल १८६६ ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—बही की तरह सूची बनी हुई है ।

६३२७. चम्पा शतक—चम्पाबाई । पत्रसं० २३ । आ० १०×८$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय— संग्रह । र०काल × । ले०काल सं० १९७५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६३२८. चेतनविलास--परमानन्द जौहरी । पत्रसं० १७० । आ० १२×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य-पद्य । विषय—विविध । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—ग्रंथकार के विभिन्न रचनाओं का संग्रह है । अधिकांश पद एवं चर्चायें हैं ।

६३२९. प्रति सं० २ । पत्रसं० १७३ । आ० १२×८ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६३३०. **चौरासी बोल**— × । पत्र सं० १० । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७६-७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

६३३१. **जैन विलास—भूधरदास** । पत्र सं० १०५ । आ० ८ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—विविध । र० काल × । ले० काल सं० १८६६ माघ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—भूधरदास के विविध पाठों का संग्रह है । मिट्ठूराम ने ग्रंथ की प्रतिलिपि करायी थी ।

६३३२. **ढालसागर—गुणसागर सूरि** । पत्र सं० १२८ । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—विविध । र० काल × । ले० काल सं० १६६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बसवा ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६६६ वर्षे कार्त्तिक मासे शुक्ल मासे चतुर्दश्यां तिथौ देवली मध्ये लिखितं ।

६३३३. **ढालसंग्रह—जयमल** । पत्र सं० ३६ । भाषा-हिन्दी । विषय-फुटकर । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २०७/६६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

निम्न पाठों का संग्रह है—

१. परदेशीनी ढाल जयमल हिन्दी र० काल सं० १८७७ अपूर्ण ।

अन्तिम—

संवत अठारैं सै सतोत्तरै रे बुद तेरस मास अषाढ ।
सिंघ प्रदेशीरायनी एक हीय सूत्र थी काढो रे ॥४६॥
पुज धनाजीप्रसाद थी रे तत् सिष भूयरदास ।
तास सिस जेमल कहै रे छोडे सलार नापसोरे ।
इति परदेशीनी सिद समाप्ता ।

२. मृगीलोढानी चरित्र जयमल हिन्दी ले० काल सं० १८१५ अपूर्ण

इतिमरगालोढानो चरित्र समाप्ता ।

३. सुबाहु चरित्र जयमल हिन्दी अपूर्ण

६३३४. **दृष्टान्त शतक**— × । पत्र सं० २३ । आ० १०½ × ४¾ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—विविध । र० काल × । ले० काल सं० १८४२ फागुण बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—पोथी पंडित जिनदासजी की छै ।

६३३५. **दौलत विलास--दौलतराम** । पत्र सं० २७ । आ० १२ × ७ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—संग्रह । र० काल × । ले० काल सं० १६६४ आषाढ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

६३३६. **दौलत विलास—दौलतराम पल्लीवाल** । पत्र सं० ४३ । आ० १२½ × ७½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—संग्रह । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४१/११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष – दौलतराम की रचनाओं का संग्रह है।

६३३७. **धर्मविलास—ज्ञानतराय**। पत्र संख्या १७२ । आ० १४×७ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय–संग्रह । र० काल सं० १७८१ । ले० काल सं० १९३७ आसोज बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर टोडारायसिंह (टोंक)।

विशेष—रामगोपाल ब्राह्मण ने केकड़ी में लिखी थी।

६३३८. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ४८ । आ० ११×४ इञ्च । ले० काल सं० १७८६ पौष बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

६३३९. **प्रति सं० ३**। पत्रसं० १४० । आ० १३×५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक)।

६३४०. **प्रतिसं० ४** । पत्र सं० २८७ । आ० १२×४½ इञ्च । ले०काल सं० १८५८ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

६३४१. **प्रतिसं० ५** । पत्र सं० २५५ । आ० ११×४½ इञ्च । ले० काल सं० १८८३ मंगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६९१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

विशेष—जयपुर नगर के कालाडेहरा के मन्दिर में विजेराम पारीक सांभर निवासी ने प्रतिलिपि की थी।

६३४२. **प्रति सं० ६**। पत्र सं० २९१ । आ० ४×६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा।

६३४३. **प्रतिसं० ७** । पत्र सं० २८७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १० । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर।

विशेष—भरतपुर में लिखा गया था।

६३४४. **प्रति सं० ८**। पत्र सं० १७० । आ० १२×६½ इंच । ले० काल सं० १८२८ आषाढ बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७ **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर।

विशेष—१४९ फुटकर पद्य तथा अन्य रचनाओं का संग्रह है।

६३४५. **प्रति सं० ९** । पत्रसं० २७३ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

६३४६. **प्रति सं० १०** । पत्र सं० २५० । ले० काल सं० १८७८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर हण्डावालों का डीग।

६३४७. **प्रति सं० ११**। पत्रसं० २७८ । आ० १२½×७½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन पंचायती मंदिर कामा।

६३४८. **प्रति सं० १२** । पत्र सं० २३१ । आ० १०½×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

६३४९. **प्रति सं० १३** । पत्रसं० २६३ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल सं० १७९५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना।

विशेष—अथाना में केशोदास कासलीवाल के पुत्र हिरदैराम ने चन्द्रप्रभ चैत्यालय में ग्रंथ लिखवाया था।

६३५०. **प्रति सं० १४**। पत्र सं० २६०। ले० काल सं० १८०४ ज्येष्ठ सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० ३३७। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—प्रति जीर्ण है।

६३५१. **प्रति सं० १५**। पत्र सं० १६५। ले० काल सं० १८६७। पूर्ण। वेष्टन सं० ३३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—नानकराम ने भरतपुर में लिखी थी।

६३५२. **प्रति नं० १६**। पत्र सं० २६६। ले० काल सं० १८७७। पूर्ण। वेष्टन सं० ४०६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

६३५३. **प्रति सं० १७**। पत्र सं० २०६। ले० काल सं० १८७७ सावन सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० ४१०। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—परमानन्द मिश्र ने धर्ममूर्त्ति दीवान जोधराज के पठनार्थ प्रतिलिपि की सावन बुदी ७ को।

६३५४. **प्रति सं० १८**। पत्र सं० ७८। आ० १२$\frac{1}{2}$ × ७ इंच। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

६३५५. **प्रति सं० १९**। पत्र सं० २०१। आ० ११$\frac{1}{2}$×७ इंच। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १०१ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर।

६३५६. **प्रति सं० २०**। पत्र सं० १८१। आ० १२$\frac{1}{2}$ × ७$\frac{1}{2}$ इंच। ले० काल सं० १६१२ माह सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० ५६/८१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर।

६३५७. **प्रति सं० २१**। पत्र सं० १७०। आ० १२$\frac{1}{2}$×८ इंच। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर।

६३५८. **प्रति सं० २२**। पत्र सं० २५। आ० ६×६ इञ्च। ले० काल० सं० १६५५। पूर्ण। वेष्टन सं० ७८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागधी बूंदी।

६३५९. **प्रति सं० २३**। पत्र सं० २०३। आ० ११$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इंच। ले० काल सं० १६३३ आषाढ सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन सं० ८२-२३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पंथी दौसा।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि की गई थी।

६३६०. **प्रति सं० २४**। पत्र सं० १५१। आ० १२$\frac{1}{2}$×६ इंच। ले० काल सं० १८६६ ज्येष्ठ सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन सं० १०१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर तेरहपंथी दौसा।

विशेष—नाथूलाल तेरापंथी ने चिमनलाल तेरापंथी से प्रतिलिपि करवाई थी।

६३६१. **प्रति सं० २५**। पत्र सं० ३८। आ० १०$\frac{1}{2}$×८ इंच। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० १२८-५४। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

६३६२. **नित्यपाठ संग्रह**— × । पत्र सं० २५ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय—पाठ संग्रह । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

भक्तामर स्तोत्र, तत्वार्थ सूत्र, सहस्रनाम–स्तोत्र, एवं विषापहारस्तोत्र भाषा ।

६३६३. **पद एवं ढाल**—× । पत्र सं० ७–२६ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय—पद । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—निम्न रचनाओं का मुख्यतः संग्रह है—

नेमि ब्याहलो—हीरो हिन्दी । र०काल सं० १८४० ।

विशेष—बूंदी में नेमिनाथ चैत्यालय में ग्रंथ रचना की थी ।

सज्झाय – जैमल ,,

विशेष—कवि जैमल ने जालोर में ग्रंथ रचना की थी ।

कवि जैमल जी कह जालोर में हैं,

सूतर भावै सो परमाण हैं ।

पद—अजयराज हिन्दी

पद पदमराज गणि ,

६३६४ **पद संग्रह—खुशालचन्द** । पत्रसं० ६ । आ० ६½×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पद ।र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा ।

६३६५. **पद संग्रह—चैनसुख** । पत्रसं० ६ । आ० ११ × ८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय–पद । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—इसका नाम आत्म विलास भी दिया है ।

६३६६. **पद संग्रह—देवाब्रह्म** । पत्रसं० ८६ । आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–पद संग्रह । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—देवाब्रह्म कृत पद, विनती एवं अन्य पाठों का संग्रह है ।

६३६७. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ३६ । आ० १०×६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

६३६८. **पद संग्रह – देवाब्रह्म** । पत्रसं० ५० । आ० ७×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–पद संग्रह । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

६३६९. **पद संग्रह (गुटका)—पारसदास निगोत्या** । पत्र सं० ६६ । आ० ८½×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पद । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

विशेष—गुटका सजिल्द है।

६३७०. **पद संग्रह—होराचन्द**। पत्रसं० ३७। आ० १३×५इञ्च। भाषा - हिन्दी। विषय—भजनों का संग्रह। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ५७/४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेष—८० पदों का संग्रह है।

६३७१. **पद संग्रह**—× । पत्र सं० १२२। आ० ५½×५ इंच। भाषा- हिन्दी पद्य। विषय-पद। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली (कोटा)।

विशेष—विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है।

६३७२. **पद संग्रह**। पत्र सं० २ से ६८। आ० १०½ × ५ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है। विभिन्न कवियों के पदों का वर्णन है।

६३७३. **पद संग्रह**। पत्र सं०५-३४। आ० ६ × ७ इंच। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

६३७४. **पद संग्रह**। पत्र सं० २८ । आ० ६ × ४ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ७८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोट्यों का नैणवा।

विशेष—किशनचन्द आदि के पद हैं।

६३७५. **पद संग्रह**। किशनचन्द, हर्षकीर्ति, जगतराम, देवीदास, महेन्द्रकीर्ति, भूधरदास आदि के पदों का संग्रह है। पूर्ण। वेष्टन सं० ७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोट्यों का नैणवा।

६३७६. **पद संग्रह**। पत्रसं० ३४। आ० ६ × ५½ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नागदी, बूंदी।

६३७७. **पद संग्रह**। पत्रसं० ५७। आ० ५ × ४ इञ्च। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी नैणवा।

विशेष—ग्रंथ जीर्ण अवस्था में है तथा लिपि खराब है।

६३७८. **पद संग्रह**। पत्र सं० ६२। आ० ३½ × ३ इञ्च। ले० काल सं० १८६८ चैत्र बुदी १०। पूर्ण। वेष्टनसं० ७८। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी।

६३७९. **पद संग्रह**। पत्र सं० ६६। आ० १२ × ८½ इंच। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १६२१। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है।

६३८०. **पद संग्रह**। पत्र सं० ६ । आ० ६½ × ४ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ४७। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६३८१. **पद संग्रह**। पत्रसं० ६८। आ० १०½ × ४½ इंच। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

६३८२. **पद संग्रह**। पत्रसं० ९३। भाषा-हिन्दी पद्य। आ० १०×४ इंच। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ८९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—ब्रह्म कपूर, रामयसुन्दर, देवा ब्रह्म के पदों का संग्रह है।

६३८३. **पद संग्रह**। पत्रसं० ६०। भाषा-हिन्दी पद्य। ले० काल×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—दौलतराम देवीदास आदि के पदों का संग्रह है।

६३८४. **पद संग्रह**। पत्र सं० १६२। भाषा-हिन्दी पद्य। आ० ११×६½ इन्च। ले० काल×। वेष्टन सं० २०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर।

विशेष—मुख्यत: निम्न कवियों के पदों का संग्रह है—

नवलराम, जगराम, ज्ञानतराय आदि।

६३८५. **पद संग्रह**। पत्र सं० १६। भाषा-हिन्दी पद्य। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ७१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा।

विशेष—निम्न कवियों के पद एवं रचनाएं मुख्यत: संग्रह में है—

यशोदेवसूरि	पुरिसा दाणी पास जी भेटण अधिक उल्हास
	हे प्रभु ताहरं मनमुख जोइवं अमत नयण विकास ।।
गुणभद्रसूरि	नमस्कार महामंत्र पत्र
राजकवि	उपदेश बत्तीसी
समयसुन्दर	पद
	वीतराग तेरा पाया सरणं।
गुणसागर	कृष्ण बलिभद्र सिज्झाय।
	मेघकुमार सिज्झाय।
अजित देवसूरि	पंचेन्द्रिय सिज्झाय।
	पंचबोल चौबीस तीर्थंकर स्तवन।
महमद	जीवमृत सिज्झाय।
महमद	पद पद निम्न प्रकार है—
	भूलो मन भ्रमरा कांई भ्रमै भमै दिवसनै राति।
	मायानो बांध्यो प्राणीयो भ्रमै परिमल जाति।
	कुंभ काचो काया करिसी तेहना करो रे जतन।
	विणसतां बार लागै नहीं निमल राखो मन ।।२।।
	अ स्यां डूंगर जेवडी मरिवो पगला हेठि।
	धन संचीनै कांई मरो करिधी दैवनी बहि।
	कोना छोरु कोना बाछरु कोना माय नै बाप।
	प्राणी जावो छै एकलो साथै पुण्य व पाप ।।३।।
	मूरिख कहै धन माहरो धोखै धान न खाय।
	वस्त्र बिना जाइ पैठिस्यो लखपति लाकड मांहि।

लखपति छत्रपति सब गये गये लाखां न लाख ।
गरब करी गोखै बैसते भये जल बलि राख ।।६।।
भव सायर भव दुख भरयो तरिबो छै तेह ।
बिच में बीहक सबल छै नर में धमो मेह ।
उतर नथी आण चालिबो उतरि वोछै पार ।
आगै हारम बगसियो सैबल लीज्यो लार ।।
मैहमद कहै वस्त्र वीहरी ये जो वयूं चालै आथि ।
लाहा अपणा ठगाहि ल्यै लेखा साधि हाथ ।

६३८६. **पद संग्रह**—× । पत्रसं० २२ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-हिन्दीले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ५३-× । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पंथी दौसा ।

६३८७. **पद संग्रह**—× । पत्रसं० १८ । आ० १२×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२७-६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—नवल, भूधर, दीपचन्द, उदयराम, जादवराम, जगराम, धनकीर्ति, दास वसंत, लालचन्द जोधा, थानत बुधजन, जिनदास, घनश्याम, भागचन्द, रतनलाल आदि कवियों के पद हैं ।

६३८८. पद संग्रह—× । पत्रसं० ८६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२०-१५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

६३८९. **पद संग्रह**—× । पत्र सं० १ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—नयन विमल, विमल विजय, शुभचन्द्र, ऋषभस्तवन, ज्ञान विमल । गोडी पार्श्वनाथ स्तवन रचना संवत् १६८२ है ।

६३९०. **पद संग्रह**—× । पत्र सं० ८ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १६४ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—बनारसीदास जोधराज आदि कवियों के नीति परक पद्यों का संग्रह है ।

६३९१. **पाठ संग्रह**— × । पत्र सं० ७० । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-संग्रह । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मंदिर अलवर ।

विशेष—विभिन्न पाठों का संग्रह है ।

६३९२. **पाठ संग्रह**—×। पत्र सं० २० । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत–संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—भाव पूजा, चैत्य भक्ति, सामायिक आदि है ।

६३९३. **पाठ संग्रह**—×। पत्र सं० १२७ से १७६ । भाषा–संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

६३९४. **पाठ संग्रह**—×। पत्रसं० १२ । भाषा–हिन्दी । ले० काल ×। पूर्ण । वेष्टन सं० ४४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—त्रिभुवन गुरु स्वामी की बीनती, भक्तामर स्तोत्र भाषा, कल्याण मन्दिर स्तोत्र भाषा, पंच मंगल आदि पाठ हैं।

६३६५. **पाठ संग्रह**—× । पत्र सं० ५८–११३ । आ० १२½×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६३६६. **पाठ संग्रह**—×। पत्र सं० २३९ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

आदिपुराण	जिनसेनाचार्य	संस्कृत	पत्र १८४	अपूर्ण ।
उत्तरपुराण	गुणभद्राचार्य	,,	८	,,
षट् पाहुड	कुन्दकुन्दाचार्य	प्राकृत	२७	,,
कर्मकाण्ड	नेमिचन्द्राचार्य	,,	४	,,
कलिकुण्डपूजा	,,	संस्कृत	५	,,
चौबीस महाराज पूजा	,,	हिन्दी	११	,,

६३६७. **पाठ संग्रह**—× । पत्रसं० १५ । आ० १२½×६½ इञ्च । भाषा–संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—तत्वार्थ सूत्र, भक्तामर स्तोत्र एवं गोम्मट स्वामी पूजा हिन्दी) आदि हैं।

६३६८. **पाठ संग्रह**—× । पत्रसं० २१ । आ०७½१०½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृ-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६/६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. भक्तामर स्तोत्र २–कल्याण मन्दिर स्तोत्र ३–दानशील तप भावना कुलक (प्राकृत)

हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है।

६३६९. **पाठ संग्रह**—×। पत्रसं० ११० । आ० ८×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५/८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१– नरक वर्णन	पत्र ५
२– समवशरण वर्णन	१२
३– स्वर्ग वर्णन	१४
४– गुणस्थानवर्णन	१२
५– चौसठ ऋद्धि वर्णन	१७
६– मोक्ष सुख वर्णन	१६
७– द्वादश श्रुत वर्णन	१७
८– अकृत्रिम चैत्यालय वर्णन	६

६४००. **पाठ संग्रह**—× । पत्रसं० १९० । आ० ६×५ इंच । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नागदी बूंदी ।

विशेष—विभिन्न पाठों का संग्रह है ।

६४०१. **पारस विलास—पारसदास निगोत्या।** पत्रसं० २७७ । आ० ११½×८ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पारसदास की रचनाओं का संग्रह। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ५०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

६४०२. **पार्श्वनाथ कवित्त—भूधरदास**। पत्रसं० ३। आ० १०½×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्फुट । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १००६ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

६४०३. **बनारसी विलास—सं० कर्त्ता जगजीवन।** पत्रसं० ६४ । आ० १०×६इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रह। संग्रह काल सं० १७०१। ले०काल सं० १९५६। पूर्ण। वेष्टनसं० १५७१। **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मंदिर अजमेर।

विशेष—बनारसीदास की रचनाओं का संग्रह है।

६४०४ **प्रति सं० २**। पत्र सं० १३३। आ० ६½×७ इञ्च। ले०काल सं० १८२९ वैशाख सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० ६३३। **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मंदिर अजमेर।

६४०५. **प्रति सं० ३**। पत्रसं० ११६। आ० १२×५ इञ्च। ले० काल सं० १७४३। पूर्ण। वेष्टन सं० ११७/७०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्द्रगढ़ (कोटा)।

६४०६. **प्रति सं० ४**। पत्र सं० २-१०६। आ० ११×४½ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर दबलाना (कोटा)।

६४०७. **प्रति सं० ५**। पत्रसं० १६२ । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

६४०८. **प्रतिसं० ६**। पत्रसं० १३५। आ० ११ × ७½ इञ्च। ले०काल सं० १७४३ श्रावण सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० ४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० मन्दिर चेतनदास दीवान पुरानी डीग।

६४०९. **प्रति सं० ७**। पत्र सं० १३१। आ० १२ ×५½ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवान जी कामा।

६४१०. **प्रति संख्या ८**। पत्रसं० ७८। आ० १४×८½ इञ्च । ले०काल सं० १८८९ अषाढ सुदी १२। पूर्ण । वेष्टन सं० १०१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा।

विशेष—कामवन (कामा) में प्रतिलिपि हुई थी।

६४११. **प्रति सं० ९**। पत्र सं० ९५। ले०काल सं० १८९३। पूर्ण। वेष्टनसं० ४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर।

६४१२. **प्रति सं० १०**। पत्र सं० १४७। आ० १०×४½ इञ्च। ले०काल सं० १८६० फागुन बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० २५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—कोटा नगर मध्ये श्रीसपूज्य जिनालये पंडित जिणदास उपदेशात् लिखापितं खंडेलवालान्वये कासलीवाल गोत्रे धर्मज्ञ साह जैतरामेण स्वपठनार्थं।

६४१३. **प्रतिसं० ११**। पत्र सं० ४६। आ० १०×५ इंच । ले० काल सं० १७८७ आषाढ बुदी ३। पूर्ण। वेष्टन सं० १३९। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)।

६४१४. **प्रति सं० १२।** पत्रसं० १४८। आ० ६×७½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मंदिर बयाना।

विशेष—१२४ पत्र के आगे भूधरदास के पदों का संग्रह है।

६४१५. **प्रति सं० १३।** पत्रसं० ५४। आ० १३½ × ६½ इञ्च। ले० काल सं० १६०६ फागुण बुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० ४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा।

विशेष—साह पन्नालाल अजमेरा ने प्रतिलिपि की थी।

६४१६. **प्रति सं० १४।** पत्रसं० १६४। आ० १० × ७ इञ्च। ले० काल सं० १८०५। पूर्ण। वेष्टन सं० ६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बघेरवालों का आंवा (उणियारा)।

विशेष—नरसिंहदास ने लिखा था। **समयसार नाटक** भी है।

६४१७. **प्रति सं० १५।** पत्र सं० ६१। आ० १०×४ इञ्च। ले० काल सं० १८८५। पूर्ण। वेष्टन सं० २१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

६४१८. **प्रति सं० १६।** पत्रसं० १०२। आ० १०½× ५ इञ्च। ले०काल सं० १८८७ कार्तिक बुदी ६। पूर्ण।

विशेष—श्योलाल जी ने पन्नालाल साह से प्रतिलिपि कराई थी।

६४१६. **प्रतिसं० १७।** पत्र सं० ६६। आ० १३ × ६ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)।

६४२०. **प्रतिसं० १८।** पत्र सं० ६५। आ० १२ × ४ इञ्च। ले० काल सं० १८५४। पूर्ण। वेष्टन सं० ५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी।

६४२१. **प्रति सं० १६।** पत्रसं० ७६–८०। आ० ६×५½ इञ्च। ले०काल सं० १७३८। पूर्ण। वेष्टन सं० १०६-५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर।

६४२२. **बुद्धि विलास—अक्षतराम साह।** पत्र सं० ८६। आ० १०×५ इञ्च। **भाषा**—हिन्दी पद्य। विषय—विविध। र०काल सं० १८२७। **ले०काल** ×। वेष्टन सं० ८२७। अपूर्ण। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

६४२३. **बुधजन विलास—बुधजन।** पत्रसं० १००। आ० १२½×७½ इञ्च। **भाषा**-हिन्दी पद्य। विषय-सुभाषित। र०काल सं० १८६१ काती सुदी २। ले०काल सं० १६५५ जेष्ठ सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० ४६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, लश्कर जयपुर।

विशेष—सवाई जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

६४२४. **प्रतिसं० २।** पत्रसं० ७१। र०काल सं० १८७६ कार्तिक सुदी ५। ले० काल सं० १६२४। पूर्ण। वेष्टन सं० १४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

६४२५. **प्रति सं ३।** पत्रसं० ८४। ले०काल सं० १६२४। पूर्ण। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

६४२६. **प्रतिसं० ४।** पत्रसं० ७४। आ० १२½×६ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

६४२७. **ब्रह्म विलास—भैया भगवतीदास।** पत्र सं० १३३। आ० १४×७ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—संग्रह। र०काल × । **ले०काल** सं० १९१७ आसोज बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० ३१। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

विशेष—सोपाचल (ग्वालियर) में प्रतिलिपि हुई थी।

६४२८. **प्रति सं० २।** पत्र सं० १६९। ले० काल सं० १८७९ प्र० आसोज सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० १४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

६४२९. **प्रति सं० ३।** पत्र सं० १४८। ले० काल सं० १८१४ कार्तिक सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन सं० १५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

६४३०. **प्रति सं० ४।** पत्र सं० १०१। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १५९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

६४३१. **प्रतिसं० ५।** पत्रसं० ९४। र०काल १७५५। **ले०काल** सं० १८९५। पूर्ण। वेष्टन सं० १७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—तुलसीराम कासलीवाल वैरका ने भरतपुर में महाराजा बलवंतसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि की थी। भरतपुर वासी दीवान गजसिंह अपने पुत्र माधोसिंह गौड़ वैद्य के पठनार्थ लिपि कराई।

६४३२. **प्रति सं० ६।** पत्र सं० १०२। आ० १३ × ७½ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ११५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

६४३३. **प्रतिसं० ७।** पत्र सं० १४४। आ० १२½×७½ इञ्च। **ले०काल** सं० १९२९ पोष बुदी ११। पूर्ण। वेष्टन सं० ५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर बयाना।

विशेष—ठाकुरचन्द ने माधोसिंह के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

६४३४. **प्रति सं० ८।** पत्रसं० ९५। ले० काल × । अपूर्ण। **वेष्टन** सं० ५९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर बयाना।

६४३५. **प्रतिसं० ९।** पत्र सं० २३४। आ० ९½ × ६ इञ्च। ले० काल सं० १८८२ आषाढ़ सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन सं० ९१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा।

विशेष—कामा निवासी ऋषभदास के पुत्र सदासुखजी कासलीवाल ने सवत् १८८२ में प्रतिलिपि की थी।

६४३६. **प्रतिसं० १०।** पत्र सं० १००। आ० १३×६ इञ्च। ले० काल सं० १८८२ फागुण सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० १६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़।

विशेष—नैणवा में ब्राह्मण गिरधारीलाल ने प्रतिलिपि की थी।

६४३७. **प्रति सं० ११।** पत्र सं० १०७। आ० १४½×८ इञ्च। ले० काल सं० १८६९ पौष सुदी ४। पूर्ण। वेष्टन सं० १३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—देवकीनन्दन पोद्दार ने प्रतिलिपि की थी।

६४३८. **प्रति सं० १२।** पत्र सं० २२०। आ० १२×५ इञ्च। ले० काल सं० १९१७ भादवा सुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० ६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

६४३९. **प्रतिसं० १३।** पत्र सं० १५८। आ० १२×७ इञ्च। ले० काल सं० १९४१ भादवा बुदी १४। पूर्ण। वेष्टन सं० ९७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर।

६४४०. **प्रति सं० १४** । पत्रसं० २०० । आ० ११×४ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—२०० से आगे पत्र नहीं हैं ।

६४४१. **प्रति सं० १५** । पत्रसं० १२२ । आ० १०$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १८९९ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष— लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

उदयपुर सैर बसै सुभथान , दीषै उत्तम सुरग समान ।
ब्रह्म विलास ग्रंथो भण्ष, लीखीयो ता माही जिन खास ।
लिखापित साहा त्रेणीचन्द, ज्ञान चौतोडा नाम प्रसिद्ध ।
वाचनार्थ भव्य जीवनताई, मेलो जिन मन्दिर भाई ।
संवत् अष्टादश शत जान, ता ऊपर नौन्याणा बखान ।
अगहन सुदी दशमी सार पुरो लिखो रजनी पतिवार ॥

६४४२. **प्रतिसं० १६** । पत्रसं० २३३ । आ० ७$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले० काल सं० १८१७ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०२/७९ ।

विशेष—नन्दराम बिलाला ने प्रतिलिपि की थी ।

६४४३. **प्रतिसं० १७** । पत्र सं० १३७ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १८५८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—नाथूलाल तेरहपंथी ने चिम्मनलाल तेरहपंथी से प्रतिलिपि करवाई थी ।

६४४४. **प्रति सं० १८** । पत्रसं० २२८ । आ० ९$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १८३४ कार्तिक सुदी ५। पूर्ण । वेष्टनसं० २१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६४४५. **प्रतिसं० १९** । पत्र सं० १८५ । आ० १०×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल १९०४ आसोज सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६४६४. **प्रतिसं०२०** । पत्र सं० १२५ । आ० १२$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । ले० काल सं० १९१३ भादवा सुदी २ । वेष्टन सं० १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

विशेष—चैत्यपुर में लिखा गया था ।

६४४७. **प्रतिसं० २१** । पत्र सं० ५७-११४ । आ० ११×४ इंच । ले० काल सं० १८५२ आषाढ सुदी ७ । अपूर्ण । वेष्टन सं० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी नैणवा ।

६४४८. **प्रतिसं० २२** । पत्र सं० २११ । आ० ९×७ इञ्च । ले०काल सं० १८५४ ज्येष्ठ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८७-६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—रतनचन्द पाटनी ने दौसा में प्रतिलिपि की थी ।

६४४९. **प्रतिसं० २३** । पत्रसं० ५५ । आ० ११×६ इञ्च । ले० काल सं० १७८७ वैशाख सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स०१६९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

६४५०. **प्रतिसं० २४** । पत्र सं० २४४ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इंच । ले०काल सं० १८५४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—डीग में प्रतिलिपि की गई थी।

६४५१. **प्रति सं० २५**। पत्र सं० २१६-२४६। आ० १२×५½ इञ्च। ले० काल सं० १७६६ आसोज सुदी ६। अपूर्ण। वेष्टन सं० ७३। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

६४५२. **प्रतिसं० २६**। पत्रसं० १३२। आ० १२½×६½ इञ्च। ले०काल सं० १८६१। पूर्ण। वेष्टन सं० १२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा।

६४५३. **प्रति सं० २७**। पत्रसं० २०६। आ० ११×६ इञ्च। ले०काल सं० १७६२ द्वितीय ज्येष्ठ सुदी। पूर्ण। वेष्टन सं० ५१६। **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मंदिर अजमेर।

विशेष—प्रति सुन्दर है।

६४५४. **प्रतिसं० २८**। पत्र सं० १४६। आ० ११×५ इञ्च। ले० काल सं० १८४०। पूर्ण। वेष्टन सं० ६४३। **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६४५५. **प्रतिसं० २९**। पत्र सं० ११७। आ० १०½×५½ इञ्च। ले०काल सं० १८४५। पूर्ण। वेष्टन सं० १५६-७१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

६४५६. **प्रतिसं० ३०**। पत्रसं० १५५। आ० १०½×५ इञ्च। ले०काल सं० १८१२। पूर्ण। वेष्टन सं० ३४-२०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

६४५७. **प्रतिसं० ३१**। पत्रसं० १०१। आ० १०½×७ इञ्च। ले०काल सं० १८७३ भादवा बुदी ८। पूर्ण। वेष्टन सं० ४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर।

६४५८. **प्रतिसं० ३२**। पत्र सं० २३५। आ० ७½×५½ इञ्च। ले० काल सं० १९४१ माघ बुदी १४। पूर्ण। वेष्टन सं० ८१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मंदिर अलवर।

६४५९. **प्रति सं० ३३**। पत्रसं० ९६। आ० १२½×७ इञ्च। ले० काल सं० १९७७ सावन सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० ८२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मंदिर अलवर।

विशेष—जिल्द सहित गुटकाकार है।

६४६०. **प्रतिसं० ३४**। पत्र सं० २०८। आ० १२×५ इञ्च। ले०काल सं० १९२३। पूर्ण। वेष्टन सं० २। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

६४६१. **प्रतिसं० ३५**। पत्र सं० २६५। आ० ९×५ इञ्च। ले० काल सं० १८१७। पूर्ण। वेष्टन सं० २८१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

६४६२. **प्रतिसं० ३६**। पत्रसं० १९९। आ० १२×५½ इंच। ले० काल सं० १७६६ भादवा सुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० ४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बैर।

विशेष—चौधे जगतराम ने प्रतिलिपि कराई थी।

६४६३. **भवानीबाई केरा दूहा**—×। पत्र सं० २-७। आ० १०×५ इञ्च। **भाषा**-राजस्थानी **विषय**—स्फुट। २० काल ×। ले० काल सं० १८८२ चैत्र सुदी १२। **अपूर्ण**। वेष्टन सं० २४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)।

६४६४. **भूधर विलास—भूधरदास।** पत्र सं० ४६। आ० ११×६ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—संग्रह। र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

६४६५. **प्रति सं० २।** पत्र सं० ६२। आ० १३×७½ इञ्च। ले० काल सं० १८८६। पूर्ण। वेष्टन सं० ७। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

६४६६. **प्रतिसं० ३।** पत्र सं० ६३। ले०काल सं० १९५१। पूर्ण। वेष्टन सं० १६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

६४६७. **प्रतिसं० ४।** पत्रसं० ८६। आ० ११ × ५½ इञ्च। ले०काल सं० १९०५ मंगसिर सुदी ६। पूर्ण। वेष्टनसं० ७८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—मिश्र रामदयाल ने फरुक नगर में प्रतिलिपि की थी।

६४६८. **मनोरथमाला गीत—धर्मभूषण।** पत्रसं० ५। भाषा—हिन्दी। विषय—गीत संग्रह। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ७०/४७७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

६४६९. **मरकत विलास—मोतीलाल।** पत्र सं० १४८। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। र०काल × । ले० काल १९८५ आसोज बुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० ३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर।

विशेष—प्रति सुन्दर है।

६४७०. **माणकपद संग्रह—माणकचन्द।** पत्र सं० २-५३। आ० ११ × ६½ इंच। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—पद। र०काल × । ले० काल सं० १९५८ फागुण सुदी २। अपूर्ण। वेष्टनसं० २२२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है।

६४७१. **मानबावनी—** × । पत्र सं० २६। आ० १२×४½ इंच। भाषा—पुरानी हिन्दी पद्य। विषय—स्फुट। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर तेरहपंथी दौसा।

६४७२. **मानविनय प्रबंध**—× । पत्र स. ७। आ० १०×४½ इंच भाषा-पुरानी हिन्दी। विषय—स्फुट। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं. ४६३। **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—कोनों पर फटा हुआ है।

६४७३. **यात्रा समुच्चय**—× । पत्र सं० ४। आ. ६×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय—विविध। र०काल × । ले.काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ५४६। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

६४७४. **रत्नसंग्रह—नन्नूमल।** पत्र स. ६६। आ. १३½×८ इंच। भाषा—हिन्दी गद्य। र.काल सं. १९४६ मंगसिर सुदी ५। ले०काल सं० १९६७ चैत बुदी ४। पूर्ण वेष्टनसं०। १२। **प्राप्ति स्थान**—दि. जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—

प्रारम्भ—दोहा—

प्रथम वीर सन्मति चरण, दूतीया सारदा माय ।
नमूं रतन संग्रह करन, ज्यों भवदन नसि जाय ।।
ग्रंथ समूह विचारते, तिनही के अनुसारि ।
रतन भूप इम कारने, पठत सुनत भव पार ।।२।।

अन्तिम—

शुभ सुथान मुहवतपुरा, जिला अलीगढ़ जान ।
जैनी श्रावक जनन की, जन्म भूमि मुझ मान ।।८।।
मैंडु वासी श्रावक, जैसवाल कुल भांन ।
वंश इक्ष्वाक सु ऊपजे मोलानाथ प्रवान ।।९।।

चौपई—

सुत गोपालदास है तास, पुत्र युगल तिनके हम तास ।
अनुज गणेशीलाल वरवानि, दूजा भगवंता गुरु मानि ।।
उर्फ लकव नन्तूमल कह्यो, जन्म सुफल जिन वच पढ़ि भयो ।
भूल चूक धीमान सम्हार, अल्पमती लखि दया विचार ।।

सोरठा—

रतन पुंज चुनि लीन, पढ़ो पढ़ावो सज्जन जन ।
कर्म बंध हो छीन, लिखो लिखावो प्रीतिधर ।।
अब संपूर्ण कीन, संवत् सर विक्रम तनो ।
युगल सहस में हीन, अर्ध शतक चव में भनो ।।

गीतछंद · ·

मंगसिर जु शुक्ला पंचमी बुधवार पूर्वाषाढ के ।
दिन कियो पूरण रतन संग्रह शुभ सुवखानि के ।।
अनुमान अरु परिमान सारे हैं श्री जिनवानि के ।
अपनी तरफ से कुछ नहीं मैं लिखा भविजन जानि के ।।
।। इति श्री रतन संग्रह समाप्त ।।

लिखतं लाला परशादीलाल जैनी साकिन नगले सिकंदरा जिला आगरा पोस्ट हिम्मतपुर मिती चैत कृष्णा ४ शनिवार सं० १९६७ विक्रम । रामचन्द्र बलदेवदास फतेहपुर वालों ने जैन मन्दिर में चढ़ाया हस्ते पं० हीरालाल आसोज सुदी ५ सं० १९६७ ।

६४७५. लक्ष्मी विलास—**पं० लक्ष्मीचंद** । पत्र सं० १२० । आ० १२½ × ७ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—संग्रह । र० काल × । ले० काल सं० १९९८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—वैष्णव मत के विरोधी का खण्डन किया गया है

६४७६. विचारामृत संग्रह—× । पत्र सं. ९३ । आ० १०½ × ४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-संग्रह । र०काल × । ले. काल सं. १८६१ । पूर्ण । वेष्टन सं. २२० । **प्राप्ति स्थान**— दि. जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६४७७. **विचारसार षडशीति**—× । पत्र सं. ३ । आ. १०½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—स्फुट । र०काल × । ले०काल सं० १६०० । पूर्ण : वेष्टन सं. ७०० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि. जैन मन्दिर अजमेर ।

६४७८. **विनती संग्रह—देवसहा** । पत्र सं० ७३ । आ० १०×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तुति । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २८७ । **प्राप्ति स्थान**— दि. जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

६४७९. **विनती संग्रह**—× । पत्रसं० ३–१० । आ० १० ×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—८ पाठों का संग्रह है—

१—चउबीस तीर्थंकर विनती-जयकीर्ति । हिन्दी । पत्र ३ ५ आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारंभ —

सकल जिनेश्वर प्रणमीया सरसती स्वामीण समरिमाय ।
वर्तमान चउबीसी जेह नव विधान बोलेहु तेह ।

अन्तिम—

काष्ठासंघ नंदी तट गच्छ यती त्रिभुवनकीर्ति सूरिश्वर स्वच्छ ।
रत्नभूषण रवितल गच्छपति सेन शुभकर मोहमती ।
जयकीर्ति सूरि पद धार हर्ष धरि करयु एही विचार ।
भणि सुणिजे भवीयणसार, ते निश्चलरसी संसार ।।२।।

इति नव विधान चउबीसी तीर्थंकर बीनती संपूर्ण ।

२ परमानन्द स्तवन	संस्कृत	२५ श्लोक
३ बाहुबलीछंद	वादिचन्द्र	हिन्दी

प्रारम्भ—

कोसल देश अयोध्या सोहि, राजा वृषभतणु मनमोहि ।
घरि हो दीसि अनोपम राणी, रूप कलाघाली इन्द्राणी ।
जसोभति जाया भरतकुमार, बाहुबली सुनंदा मल्हार ।
नीलंजसा नाटिक विभंग, बन्धु वैरागह चित्तिनिरंज्य ।

अन्तिम—

सिद्ध सिद्ध युगती भरतार, बाहुबली करुसहु जयकार ।
तुझ पाये लागि ब्रह्मचन्द्र, वाणी बोलि वादिचन्द्र ।।६०।।

इति बाहुबली छंद संपूर्ण ।

४ गुणत्तीसी भावना

अन्तिम—

भोगभलाजे नरलाहि हरषि जु देइदान ।
समकित विणा शिवपद नहीं जिहां अनंत सुखठाम ।।

ए गुणत्रीसी भावना भणकि सुधु विचार ।
जे मन माही समरिसी ते तरसी ससार ॥३१॥

इति उगणत्रीसी भावना संपूर्ण

६४८०. विनती संग्रह—देवाब्रह्म —× । पत्र सं० १६ । आ० ८½×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय— स्तवन । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—तीर्थंकरों की विनतियां हैं ।

६४८१. विनती एवं पद संग्रह—देवाब्रह्म । पत्र सं० ११३ । आ० १०×४½ इञ्च । **भाषा**-हिन्दी पद्य । विषय-स्तवन । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—९९ पद एवं भजनों का संग्रह है ।

६४८२. विनती पद संग्रह—× । पत्र सं० ४ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पद स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—ब्र० कपूर, जिनदास जगराम आदि के पद हैं ।

६४८३. विनती संग्रह—× । पत्रसं० ६ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२२-५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर ।

विशेष— भूधर कृत विनतियों का संग्रह है ।

६४८४. विवेक विलास—जिनदत्त सूरि । पत्र सं० १५-७० । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय विविध । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

६४८५. वृंद विलास--कविवृन्द । पत्र सं० १५ । आ० १०× ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय कविवृंद की रचनाओं का संग्रह । र०काल × । ले०काल सं० १८४२ चैत्र सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४३२ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६४८६. शास्त्रसूची—× । पत्र सं० १० । भाषा—हिन्दी । विषय—सूची । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१२-१५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

६४८७. शिखर विलास--लालचन्द । पत्रसं० ५७ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा--हिन्दी पद्य । विषय—महात्म्य वर्णन । र०काल सं० १८४२ । ले०काल सं० १३४७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०/१०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

६४८८. श्लोक संग्रह— × । पत्र सं० ६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—फुटकर । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

६४८६. **श्लोक संग्रह**—×। पत्रसं० २४। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४४०-१६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

विशेष—विभिन्न ग्रंथों में से श्लोक एवं गाथाएं प्रश्नों के उत्तर देने के लिए संग्रह की गई हैं।

६४९०. **श्रावकाचार सूचनिका**— × । पत्रसं० ५। आ० ११×४ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—सूची। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

विशेष—श्रावकाचारों की निम्न सूची दी है।

१. रत्नकरण्ड श्रावकाचार	समन्तभद्र	श्लोक सं०	१२५
२. श्रावकाचार	वसुनन्दि	,,	५२६
३. चरित्रसार	चामुण्डराय	,,	७९५
४. पुरुषार्थसिद्धयुपाय	अमृतचन्द	,,	९६२
५. श्रावकाचार	अमितिगति	,,	१०५०
६. सागारधर्मामृत	आशाधर	,,	१२९२
७. प्रश्नोत्तरोपासकाचार	सकलकीर्ति	,,	१४९५

६४९१. **यम विलास**— × । पत्रसं० १०। भाषा—हिन्दी। विषय—संग्रह। र० काल ×। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

६४९२. **शील विलास**— × । पत्र सं० २०। आ० १२½×५½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—सुभाषित। र० काल × । ले० काल सं० १८३० चैत्र सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० १२१६। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६४९३. **षट्त्रिंशति**— × । पत्रसं० १०। आ० १०×४½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—विविध। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ६३८। **प्राप्ति स्थान**—ब० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६४९४. **षट्त्रिंशतिका सूत्र**— × । पत्र सं० १-७। आ० ११×४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—फुटकर। र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १८२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर।

६४९५. **प्रति सं० २**। पत्र सं० ५। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १८३/४२३। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—ब० तेजपाल ने प्रतिलिपि की थी।

६४९६. **षट्पाठ**— × । पत्र सं० ४६। आ० १२×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय—संग्रह। र० काल ×। ले० काल सं० १९३६। पूर्ण। वेष्टन सं० १३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल पंचायती मंदिर अलवर।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

दर्शन पच्चीसी, बुधजन छत्तीसी, वचन बत्तीसी तथा अन्य कवियों के पदों का संग्रह है।

६४९७. **सज्झाय एवं बारहमासा**— × । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय —स्फुट । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४० । **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन मंदिर बोरखली कोटा ।

६४९८. **सवैया--सुन्दरदास** । पत्रसं० ६ । आ० १०½×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—२७ सवैया तथा ३२ पद्य हसाल छंद के हैं ।

६४९९. **सारसंग्रह--सुरेन्द्रभूषण** । पत्र सं० ७ । आ० ६×४½ इञ्च । **भाषा**–संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

६५००. **सुखविलास--जोधराज कासलीवाल** । पत्रसं० २४२ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा--हिन्दी पद्य । विषय--सूक्ति संग्रह । र०काल सं० १८५४ मंगसिर सुदी ५ । ले० काल × । **पूर्ण** । वेष्टनसं० २३, २१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

६५०१. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ७७ । आ० १३×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ३२/६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनमन्दिर भादवा (राज०)

विशेष—कवि की विभिन्न रचनाओं का संग्रह है ।

६५०२. **संग्रह**— × । पत्रसं० ६४ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—संग्रह । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पंचायती टूनी (टोंक) ।

विशेष—जैन एवं जैनेतर विभिन्न ग्रंथों में से मुख्य स्थलों का संग्रह है ।

६५०३. **संग्रह ग्रन्थ**— × । पत्रसं० ७ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—संग्रह । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष---विविध विषयों के श्लोकों का संग्रह है ।

६५०४. **संग्रह ग्रन्थ**— × । पत्रसं० ६५ । आ० १०×६½ इञ्च । ले०काल सं० १९२० । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६४ । **प्राप्ति स्थान** --दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

१. मदनपराजय		हिन्दी । अपूर्ण ।	
२. ज्ञानसरोदय	चरणदास रणजीत	हिन्दी । पूर्ण । र०काल सं० १८९९ ।	

अन्तिम—

सुखदेव गुरु की दया सु साथ तथा सुजान ।
चरणदास रणजीत ने कह्यो सरोदे ज्ञान ।।
डहरे में मेरो जनम, नाम रणजीत बखानो ।
मुरली को सुत जान जाति दुसर पहचानो ।।

बाल अवस्था मांहि बहुर दली में आयो।
रमति मिले सुखदेव नाम चरणदास कहायो ।।

इति ज्ञान सरोदो संपूर्ण सं० १८६६ को साल में बणायो।

भूलोय में प्रतिलिपि हुई।

३. बारह भावना ४. अकृत्रिम वंदना ५. वज्र पंजर स्तोत्र ६. श्रुतबोध टीका
७. जिनपंजर स्तोत्र ८. प्रस्ताविक श्लोक ६. दशलक्षण मंडल पूजा १०. फुटकर श्लोक
११. चतुर्गति नाटक—डालूराम।

आदि भाग—

अरिहंत नमूं सिरनाय पुनि सिद्ध सकल सुखदाई।
आचारज के गुन गाऊं पद उपाध्याय सिर नाऊं।

सिरनाय सकल उपाधि नासन सर्व साधूं नमूं सदा।
जिनराय भाषित धर्म प्रणमू विघन व्यापै न हूँ कदा।

य परम मंगल रूप त्रयपद लोक में उत्तम यही।
जब नटत नाटक जगत जीव केयक पर तक्षक सही।

अन्तिम—

ई विधि जीव नटवा नाच्यो,
लख चौरासी रंग राच्यो।

इक इक भेष न मांही,
नाचि काल अनंत गुमाहि ।।

बीत्यो अनंतकाल नाचते उरधमध्य पाताल में।
ज्यों कर्म नाच नचावत जिय नट त्यों नचत बेहाल में ।।

अब छांडि कर्म कुसंग वजिय नचि ज्ञान नृति बेहाल में।
थिर रूप डालूराम गहि ज्यो होय सिव के सुख अत्र।

१२. बाईस परीषह हिन्दी।

वि० **लाल** ने पार्श्वनाथ मन्दिर में प्रतिलिपि की थी।

६५०५. संग्रह ग्रन्थ— ×। पत्र सं० २। आ० ११×५ इंच। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १३१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

विशेष—चौदह कला, पच्चीस क्रिया आदि का वर्णन है।

६५०६. स्फुट पत्र संग्रह— × । पत्र सं० १५। आ० ८½×६½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—सुभाषित। र० काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३३८–३३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर।

६५०७. **स्फुट पाठ संग्रह**— ×। पत्र सं० ५६। आ० ६×४ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—संग्रह। र० काल × । ले० काल सं० १८२०। अपूर्ण। वेष्टन सं० ४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा।

विशेष—विविध पाठों एवं कथाओं का संग्रह है।

६५०८. **स्फुट संग्रह**— × । पत्र सं० ८२। भाषा—हिन्दी। विषय—संग्रह। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन ४४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

विशेष—निम्न पाठ हैं।

बाईस परीषह वर्णन, कवित्त छहढाला, उपदेश बत्तीसी तथा कृपण पचीसी हैं।

—:o:—

विषय--नीति एवं सुभाषित

६५०९. अक्षर बावनी—केशवदास (लावण्यरत्न के शिष्य) । पत्रसं० १५ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सुभाषित । र०काल सं० १७२६ सावण सुदी ५ गुरुवार । ले०काल सं० १८६६ वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—पत्रसं० १३ से राजुल नेमी बारहमासा केशवदास कृत (सं० १७२४) दिया हुआ है। शीतकाल सवैया भी दिया हुआ है ।

अक्षर बावनी का आदि अंत भाग निम्न प्रकार है—

आदि भाग—

ओंकार सदा सुख देवन ही जिन सेवत वंछित इच्छित पावै ।
बावन अक्षर मांहि शिरोमणि योग योगीसर इस ही ध्यावै ।
ध्यान में ज्ञान में वेद पुराण में कीरति जाकी सबै मन भावै ।
केशवदास को दीजिये दौलत भावसूं साहिब के गुण गावै ॥६॥

× × × × × ×

यादव कोडि बसै दुरदंत के राजतिराज त्रिखंडमुरारी ।
होतव्य कोउन मेटि सकै जब देवपुरि खिन मांहि उजारी ।
जोर सुरासुर जोर करै छट्ठी राति के लेखन लागतकारी ।
आल जंजाल कहा करो केशव कर्म की रेख टरै नहिं टारी ॥५०॥

अन्तिम—

बावन अक्षर जोय करै भैया भावु पढ्यावहि मैं भल आवै ।
सतरसौत छत्तीस को श्रावण सुदि पांचै भृगुवार कहावै ।
सुख सौभाग्यनी कौतिन की हुवै बावन अक्षर जो गुण गावै ।
लावण्यरत्न गुरु भूपसावरु केशवदास सदा सुख पावै ॥

इति श्री केशवदास कृत अक्षर बावनी संपूर्ण ।

६५१०. अक्षरबावनी— × । पत्रसं० १४ । आ० १३×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—८ पत्र से आगे अध्यात्म बारहखडी है ।

६५११. अड़ू बत्तीसी—छन्द । पत्र सं० ३ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । र०काल सं० १७२८ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ़ (कोटा)

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—

ओमंकार अपार है जाको धरिये ध्यान ।
सबै वस्तुकी सिद्धि ह्वै अरु घट उपजे ज्ञान ।
कथा कामिनि कनक सों मति बांधै तू हेत ।
ए दोऊ है अति बुरे अन्ति नरक में देत ।।

× × × × ×

अन्तिम—

छिनक मांझ करता पुरुष करन और सौ और ।
जनम सिरानौ जात है छांडि चन्द जग डोर ।।३५।।
संवत सत्रह सै अधिक बीते बीसर आठ ।
कातो बुदि दोइज को कियो चन्द इह पाठ ।।३६।।

पार्श्वनाथ स्तुति भी दी हुई है ।

६५१२ इन्द्रनंदिनीतिसार—इन्द्रनंदि । पत्र सं० ६ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–नीति । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३९०/८७ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६५१३. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३९१/८८ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६५१४. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० ७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३९२/८९ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६५१५. उपदेश बावनी—किशनदास । पत्र सं० ११ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सुभाषित । र०काल सं० १७६७ आसोज सुदी १० । ले० काल सं० १८८० । पूर्ण । वेष्टन सं० २१४/८६ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—

श्रीय संघराज लोकागछ सरिताज गुरु,
तिनकी कृपा ज कविताइ पाइ पावनी ।
संवत सत्तर सतराहे विजय दशमी को,
ग्रंथ की समापत भइ है मम भावनी ।।

साध बीस ग्यांनमा की जाइ श्री रतनबाई,
तज्यो देह तापें एह रची पर बावनी ।
मत कीन मति लीनी तत्वों ही पें रूची दीनी,
वाचक किशन कीनी उपदेश बावनी ।।

६५१६. उपदेश बीसी—रामचन्द ऋषि । पत्र सं० ३ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । र०काल सं० १८०८ वैशाख सुदी ६ । ले० काल सं० १८३९ चैत्र बुदि । पूर्ण । वेष्टन सं० १६४ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

अंतिम—

संमत अठारैनीसंगे आठ,
बैसाख सुद कहे छै छठ ।
युज जैमलजी रा प्रतापसु,
सीवरी माहे कहे छै रीष राघवचन्द ।
छोडो रे छोडो संसार नो फंद, तू चेत रे ॥

(सीवरा पेठ तुरकपुर माहे लीखी छै । दसकत सरावक वेना कोठारी रा छै ।

६५१७. ज्ञानचालीसा— × । पत्र सं० २२ । आ० ६ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले०काल सं० १९१५ बैशाख बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११२५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६५१८. ज्ञान समुद्र—जोधराज । पत्रसं० ३७ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सुभाषित । र०काल सं० १७२२ चैत्र सुदी ५ । ले० काल सं० १७५२ चैत्र बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष— हिण्डोली ग्राम में प्रतिलिपि हुई थी ।

६५१९. चतुर्विधदान कवित्त—ब्रह्म ज्ञानसागर । पद्य सं० ३ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १–१५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—दान, पञ्चेन्द्रिय एवं भोजन सम्बन्धी कवित्त हैं ।

६५२०. चाणक्य नीति—चाणक्य । पत्र सं० २० । आ० ७½ × ५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-नीति शास्त्र । र०काल × । ले०काल सं० १८९६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर टोडारायसिंह (टोंक)

६५२१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

६५२२. प्रति सं० ३ । पत्रसं० १६ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोट्यों का नैणवा ।

६५२३. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० ७ । आ० ५ × ४ इञ्च । । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८३ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

६५२४. प्रतिसं० ५ । पत्र सं० ११ । आ० १०½ × ५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा ।

विशेष– ११ से आगे पत्र नहीं हैं ।

६५२५. प्रतिसं० ६ । पत्र सं० १२ । आ० ११ × ४½ इञ्च । ले०काल सं० १५९२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५२/९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—

संवत् १५९२ वर्षे आश्वन बुदी १ शुभे लिखितं चाणाथके जोशी देवदास । शुभमस्तु । नीचे लिखा है—

आचार्य श्री जयकीर्ति तत् शिष्य ब्रह्म संवराज इदं पुस्तकं ।

६५२६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १० । आ० १२×५ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—वृहद् एवं लघु चाणक्य राजनीति शास्त्र है ।

६५२७. प्रतिसं० ८ । पत्र सं० ७८ । आ० ४½×४½ इञ्च । ले०काल सं० १७५४ आषाढ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

६५२८. प्रतिसं० ९ । पत्रसं० १५ । आ० १०½ ×५ इञ्च । ले० काल सं० १८७३ पौष सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनसं० २६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६५२९. प्रति सं० १० । पत्रसं० ३-२३ । आ० १०×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३२६-१२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

६५३०. जैनशतक—भूधरदास । पत्रसं० ६-४० । आ० ६ × ४½ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी । विषय—सुभाषित । र०काल सं० १७८१ । ले० काल सं० १९२८ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ९६८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६५३१. प्रतिसं० २ । पत्र सं० २ । आ० ११ × ६ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४२२-२३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६५३२. प्रति सं० ३ । पत्रसं० सं० १४ । आ० १० × ५½ इञ्च । ले०काल सं० १८४७ आषाढ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनसं० २६८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—लिखापितं सेरगढ़ मध्ये लिखि हरीस्यंघ टोंग्या श्री पार्श्वनाथ चैत्यालै लिखापितं । पंडित जिनदास जी पठनार्थं ।

६५३३. प्रति सं० ४ । पत्रसं० १७ । आ० १० ×५ इञ्च । ले० काल सं० × । पूर्ण । वेष्टनसं० २११ । **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त मन्दिर ।

६५३४. प्रतिसं० ५ । पत्र सं० १८ । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल सं० १९४० । पूर्ण । वेष्टन सं०३-२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

विशेष—श्री हजारीलाल साह ने अष्टमी, चतुर्दशी के उपवास के उपलक्ष में दूनी के मन्दिर में चढाई थी ।

६५३५. प्रतिसं० ६ । पत्रसं० १८ । आ० १३×७ इञ्च । ले० काल सं० १९४४ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

विशेष—पुस्तक किसनलाल पांडया की है ।

६५३६. प्रतिसं० ७ । पत्र सं० २० । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल सं० १९३९ द्वितीय सावण बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा ।

विशेष—अग्रवालों के मन्दिर की पुस्तक से उतारा गया है ।

६५३७. प्रतिसं० ८ । पत्र सं० १८ । आ० ९×५½ इञ्च । ले०काल सं० १९३५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

६५३८. **प्रतिसं० ९** । पत्र सं० ३–१६ । आ० १०×६ इञ्च । ले० काल सं० १९१० । अपूर्ण । वेष्टन सं० २६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर बूंदी ।

विशेष—नगर भिलाय में प्रतिलिपि हुई थी ।

६५३९. **प्रतिसं० १०** । पत्रसं० ३१ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

विशेष—इसके अतिरिक्त ज्ञानराय कृत चरचाशतक भी है ।

६५४०. **प्रतिसं० ११** । पत्र सं० १६ । आ० ११ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५२ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

६५४१. **प्रतिसं० १२** । पत्रसं० १२ । आ० १३ × ६ इञ्च । ले०काल सं० १८१८ । पूर्ण । जीर्ण । वेष्टन सं० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर टोडारायसिंह (टोंक)

६५४२. **प्रति सं० १३** । पत्रसं० १८ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

६५४३. **प्रति सं० १४** । पत्रसं० १७ । आ० ११ × ६ इञ्च । ले०काल सं० १७८७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६५–१२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

६५४४. **प्रति सं० १५** । पत्रसं० १७ । आ० ८×४ इञ्च । ले०काल सं० १८४३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६५-७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटड़ियों का डूंगरपुर ।

६५४५. **प्रतिसं० १६** । पत्रसं० १२ । आ० १२ × ८ इञ्च । ले०काल सं० १९४९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्दरगढ़ (कोटा)

६५४६. **प्रति सं० १७** । पत्रसं० ८१ । ले०काल सं० १७८९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

विशेष—गुटका में है ।

६५४७. **प्रति सं० १८** । पत्र सं० ८ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन सं० ६८२ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६५४८. **प्रतिसं० १९** । पत्रसं० १२ । आ० ९×७ इञ्च । ले०काल सं० १९९६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६५४९. **प्रतिसं० २०** । पत्र सं० १८ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल सं० १८५९ । वेष्टन सं० ७२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६५५०. **प्रति सं० २१** । पत्रसं० १५ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल सं० १८८५ सावण सुदी १३ । वेष्टन सं० ६०९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—दीवान संग्रही अमरचन्द खिन्दुका दसकत हवचन्द अग्रवाल का ।

६५५१. **जैन शतक दोहा** – × । पत्र सं० २ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा हिन्दी पद्य । विषय–सुभाषित । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर चौगान बूंदी ।

६५५२. देशना शतक— × । पत्र सं० १८ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले० काल सं० १७६१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्रीमच्चन्द्रगच्छे उपाध्यायजी श्री लिखमीचन्दजी तत् शिष्य वा. श्री सं (सो) भाचन्दजी तत् शिष्य लालचन्दजी लिखतं । सं० १७६१ वर्षे वैशाख सुदी २ सोम श्री उदयपुरे मद्रं भूयात् ।

६५५३. दोहा शतक— × । पत्र सं० ४ । भाषा हिन्दी (पद्य) । विषय सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७० । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

विद्या भलपयण समुद्र जल अंभपणो ओकास ।
उत्तर पथ ने देवगत थार नहीं पृथवीराज । २६॥
कीयु कीजे साजनां भीउन भाजे ज्यांह ।
अजाकंठ पयोहरा दूध न पाणी त्यांइ ।।५।।
किहां कोवल किहां अंब बन किहां वदुर किहां मेह ।
विसारिया न फिरे सिखां तणा सनेह ।।६१॥
कण काती तृण भादवे मोती आमो जरित ।
वहु वछेरां डीकरा निवडीयां निरत ।।७१।।

६५५४. दृष्टान्त शतक – कुसुमदेव । पत्र सं० ६ । आ० १० × ४¾ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

६५५५. धर्मामृत सूक्ति संग्रह—× । पत्र सं० ७८ । आ० १०×४¾ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

६५५६. नवरत्न वाक्य—× । पत्र सं० १ । आ० ६¾×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूंदी)

विशेष— विक्रमादित्य के नवरत्नों के वाक्य हैं

६५५७. नसीहत बोल—× । पत्र सं० ५ । आ० १२½ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२५६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर

६५५८. नीति मंजरी— × । पत्र सं० ६ । आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी प० । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

६५५९. नीति वाक्यामृत—**आ० सोमदेव** । पत्र सं० ३० । आ० १२×४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-नीति शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

६५६०. **नीति श्लोक** — × । पत्रसं० १-११,१७ । आ० ९$\frac{3}{4}$ × ४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—नीति । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६५६१. **नीतिसार—आ० इन्द्रनन्दि** । पत्रसं० ८ । आ० १२×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-नीति । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३९ । । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

लेखक प्रशस्ति—संवत्सरे वसु वाण यमि सुधाकर मिते १७५८ वृंदावतीनगरे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे नंद्यालाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्री नरेन्द्रकीर्तिस्तच्छिष्य आचार्यवर्य ५ श्रीमज्जयभूसण शिष्य पंडित जी ५ तुलसीदास शिष्य बुध तिलोकचंद्रेणेदं शास्त्र स्व-पठनार्थं स्वयुजेन लिखितं ।

६५६२. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० १२ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इंच । **ले०काल** सं० १८५० चैत्र मास सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६५६३. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० १४ । आ० ९ × ५$\frac{1}{2}$ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६५६४. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० ६ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इंच । **ले०काल** सं १९७१ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६५६५. **नव बत्तीसी—नंदकवि** । पत्रसं० ४ । आ० १०×४$\frac{3}{4}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-नीति । र० काल × । ले०काल सं० १७८१ सावन सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा ।

विशेष—नीति के श्लोक हैं ।

६५६६. **परमानंद पच्चीसी**— × । पत्र सं० २ । आ० १०×९$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत विषय—सुभाषित । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२-४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

६५६७. **पंचतन्त्र—विष्णुशर्मा** । पत्र सं० ९१ । आ०१० × ४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—नीति शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६५६८. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० १८ । आ० १० ×४ इंच । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २८९/५८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

६५६९. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० २३ । आ० १२ × ६ इंच । ले० काल सं० १८५६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—सुहृद्भेद तक है ।

६५७०. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० १०२ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इंच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—१०२ से आगे पत्र नहीं हैं।

६५७१. **प्रतिसं० ५**। पत्र सं० १२३। आ० १०×५ इञ्च। ले०काल सं० १८४४ आषाढ सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० ८०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)।

विशेष—दौलतराम अघेरवाल शास्त्र घटायो पंचाख्यान को महर का हामलक हाडौती सहर कोटा को लाडपुरो राज राणावतजी को देहुरो श्री शांतिनाथजी को आचार्य श्री विजयकीर्ति ने घटायो पंडिता नानाछता।

६५७२. **प्रतिसं० ६**। पत्रसं० २३। आ० १२×६ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

६५७३. **प्रतिसं० ७**। पत्रसं० ११२। आ० १० × ४ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ८२। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर।

६५७४. **पंचाख्यान (हितोपदेश)**— ×। पत्र सं० ८३। आ० १०×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—नीति शास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८८६। पूर्ण। वेष्टन सं० ८२/३०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ इंदरगढ़ (कोटा)

विशेष—ऋषि बालकिशन जती ने करवर में प्रतिलिपि की थी। मित्र भेद प्रथम तन्त्र तक है।

६५७५. **प्रज्ञाप्रकाश षट्त्रिंशका**—**रूपसिंह**। पत्रसं० ४। आ० ६$\frac{1}{2}$×३$\frac{3}{4}$ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३२४। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६५७६. **प्रश्नोत्तर रत्नमाला—अमोघहर्ष**। पत्र सं० ३। आ० १२×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल सं० १६१६। पूर्ण। वेष्टन सं० २८५/८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

प्रशस्ति—संवत् १६१६ वर्षे पौष सुदी २ दिने स्वस्ति श्री अहमदाबाद शुभ स्थाने मोजमपुर श्री आदिजिन चैत्यालये लिखितं। ब्र० सवराजस्वेदं।

६५७७. **प्रश्नोत्तर रत्नमाला – अमोघहर्ष**। पत्र सं० ४। आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—सुभाषित। र० काल ×। ले० काल सं० १६१७ फाल्गुण बुदी ११। पूर्ण। वेष्टन सं० ७८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—बागडदेश के सागवाडा नगर मे श्री आदिनाथ जिन चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी।

६५७८. **प्रतिसं० २**। पत्र सं० २। आ० ११×४$\frac{3}{4}$ इञ्च। ले० काल ×। वेष्टन सं० ७८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

६५७९. **प्रश्नोत्तर रत्नमाला—बुलाकीदास**। पत्रसं० २। आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ११०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

६५८०. **प्रश्नोत्तर रत्नमाला—विमलसेन**। पत्र सं० २। आ० ६$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—सुभाषित।। र० काल ×। ले० काल ×। वेष्टन सं० ६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

६५८१. प्रश्नोत्तर रत्नमाला— × । पत्र सं० ५७ । आ० ६$\frac{3}{4}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—प्रति जीर्ण शीर्ण है ।

६५८२. प्रस्ताविक श्लोक— × । पत्र सं० २२ । आ० ११×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १८८० मंगसिर सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६५८३. प्रस्ताविक श्लोक— × । पत्र सं० २४ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

६५८४. प्रस्ताविक श्लोक— × । पत्र सं० ६ । आ० ६ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

६५८५. प्रस्तावित श्लोक — × । पत्र सं० २ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १८६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

६५८६. बावनी—जिनहर्ष । पत्र सं० ४ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । र० काल सं० १७३८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६५८७. बावनी—दयासागर । पत्रसं० ३ । आ० ६$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०८६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—सूक्ति मुक्तावली का पद्यानुवाद है ।

१ ७ ६

संवत् चंद समुद कथा निधि फागुण के यदि तीज भलीया ।
श्री दयासागर बावन अक्षर पूरण कीध कवित्त तेवीया ।।५८।।

६५८८. बावनी—ब्र० माणक । पत्र सं० २-६ । आ० ६ × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६२/२८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—अन्तिम भाग

ब्रह्मचारि माणक इम बोलइ ।
संघ सहित गुरु चिरजीवहु ।।

इससे आगे ज्ञानभूषण की वेलि दी हुई है ।

अन्तिम भाग—निम्न प्रकार है।

सेवकरि सहु संघ सदा जस महिमा मेरु समान।
श्री ज्ञानभूषण गुरु सइहाथ इथ थाकतु कीजई ज्ञान।
अमीयपाल साह कर जो नइ बोलइ एएा परिआस।
स्वामीइ वेलि वलीवलीए तलउ एगु उत्तम गणेदि उवास॥
इति वेलि समाप्ता।

६५८६. **बुधजन सतसई—बुधजन।** पत्र सं० ३१। आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभाषित। र०काल सं० १८८१ ज्येष्ठ बुदी ६। ले० काल सं० १९०६। पूर्ण। वेष्टन सं० १११०। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६५९०. **प्रतिसं० २।** पत्र सं० ३०। आ० १०$\frac{1}{2}$×६$\frac{3}{4}$ इञ्च। ले० काल सं० १९३९ चैत सुदी ६। पूर्ण। वेष्टनसं० २१६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—मुकाम चन्द्रपुर में लिखा गया है।

६५९१. **प्रतिसं० ३।** पत्रसं० २३। आ० ११$\frac{1}{2}$ × ८ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर।

६५९२. **प्रतिसं० ४।** पत्र सं० २-५। ले० काल सं० १९५८। पूर्ण। वेष्टन सं० ९९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर।

६५९३. **प्रतिसं० ५।** पत्र सं० २४।। ले०काल सं० १९४५। पूर्ण। वेष्टन सं० १००। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर अलवर।

६५९४. **प्रति सं० ६।** पत्रसं० ३०। आ० ११×७ इञ्च। ले० काल सं० १९६१। पूर्ण। वेष्टन सं० ४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

६५९५. **प्रतिसं० ७।** पत्र स० २६। आ० १०$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १८३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली।

६५९६. **प्रतिसं० ८।** पत्र सं० २८। आ० ११ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ११२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर।

६५९७. **प्रति सं० ९।** पत्रसं० १०७। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ३३। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मंदिर दीवानजी भरतपुर।

विशेष—गुटके रूप में है।

६५९८. **बुधिप्रकाश रास—पाल।** पत्रसं० ३। आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १९१। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

उद्धरण—

भूखो मति चालै सीयालै।
जीमर मति चालै उन्हालै॥

बांमण होय अण खावो ।
क्षत्री होय रिण में भागो जाय ॥२०॥
कायथ होय र लेखो भूलै ।
एतीनू क्रियाहीन तोलै ॥२१॥
आनुविसार लखो विचार ।
आलन आवै इण संसार ॥
भणै पाल पुरुषोत्तम युता ।
राजकरो परिवार संजुता ॥२२॥
इति बुधप्रकाश रास संपूर्ण ।

६५९९. **भर्तृहरि शतक—भर्तृहरि** । पत्र सं० ३३ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल । ले० काल सं० १८१६ पौष सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६००. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० १९ । ५ आ० १०×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १२८० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—१३ वां १४ वां पृष्ठ नहीं है ।

६६०१. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० ३८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२८२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

६६०२. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० २७ । आ० ९×४ इञ्च । ले०काल सं० १७५९ । पूर्ण । वेष्टनसं० १३२८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६०३. **प्रतिसं० ५** । पत्र सं० २-४५ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

६६०४. **प्रतिसं० ६** । । पत्र संख्या ३५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन संख्या ७५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डावालों का डीग ।

विशेष--संस्कृत टीका सहित है ।

६६०५. **प्रतिसं० ७** । पत्र सं० १० । आ० १२×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष -- शतक त्रय है ।

६६०६. **प्रतिसं० ८** । पत्र सं० ३५ । आ० ९½ × ५½ इञ्च । ले० काल सं० १८०४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

विशेष—मूल के नीचे गुजराती में अर्थ भी है ।

६६०७. **प्रतिसं० ९** । पत्र सं० २१ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १८६६ वैशाख बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—गोठडा ग्राम में रूप विमल के शिष्य भाग्य विमल ने प्रतिलिपि की थी ।

६६०८. **प्रति सं० १०** । पत्रसं० २४ । आ० ११×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

६६०९. **प्रति सं० ११** । पत्र सं० ३२ । आ० १२×७½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर टूनी (टोंक)

६६१०. **भर्तृहरि शतक भाषा**—× । पत्र सं० २६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-नीति । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १०० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी

विशेष—नीति शतक ही है ।

६६११. **भर्तृहरि शतक टीका**— × । सं०पत्र २६ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-नीति । र०काल × । ले०काल स० १८५६ । पूर्ण । वेष्टनसं० २३१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)

विशेष—भर्तृहरि काव्यस्यटीका श्री पाठकेन विदधेध्यनसार नाम्ना ।

६६१२. **भर्तहरि शतक टीका**—× । पत्रसं० ४६ । भाषा-संस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७५८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

६६१३. **भर्तृहरि शतक भाषा—सवाई प्रतापसिंह** । पत्रसं० २३ । आ० १३× ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । र० काल × । ले० काल स० १८९२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५१ । **प्राप्ति स्थान** भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६१४. **मनराज शतक—मनराज** । पत्र सं० ७ । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा —हिन्दी । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६८/२५७ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभव नाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—अन्तिम भाग—

समय सुजावन समय धन समय न बारंबार ।
सलिल वहेति सुरतिकरि इह क्षुदखाति गयारि ।
समयादेतुमसंकि लवि सुं प्रीति जु कसी ।
एहनी गुणी थिरु नहिं चपल गजकन्नह जसीं ।
पंडित कुं मुख देखि अधिक हुसि लाज करंती ।
अधम तणा घरे महि दासजिम नीर भरंती ।
इम जाणि समुद्र कुसुय इह जग जुट्टिणि नवि भली ।
श्रीभानु कही नसि सगलो हो कहु कोई सवर चली ।।

कुल ३-४ पद्य हैं ।

६६१५. **मरण करंडिका**—× । पत्रसं० १३० । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत (पद्य) । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १६२७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—सं० १६२७ भादवा सुदी ३ गुरौ दिने सागवाड़ा ग्रामे पुस्तिका लेखक श्री राजचन्द्रेण ।

६६१६. **राजनीति समुच्चय—चाणक्य** । पत्रसं० ६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—नीति । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर भण्डार ।

६६१७. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २८० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

६६१८. **राजनीति सवैया--देवीदास** । पत्रसं० १८८ । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—राजनीति । र०काल × । **ले०काल** सं० १८३२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

आदि अन्त भाग निम्न प्रकार हैं—

प्रारम्भ—

नीतिही तें धर्म, धर्मतें सकल सीधि
नीतिहीतें आदर सभानि बीचि पाइयो ।
नीति तें अनीति छूटै नीतिहीतें सुख लूटै
नीतिहीतें कांख फेरी बकता कहाइयो ।
नीति हीतें राज राजै नीति हीतें पाया ही
नीति हीतें नौखंड माहि जस गाइयो ।
छोटन को बड़ो करै बड़े महा बड़े धरै
तातें सबही को राजनीति ही सुहाइयो ।

× × ×

अंतिम—

जब जब गाढ परी दासनि कों
देवीदास जब तब ही आप हरि जूनै कीनी है ।
जैसे कष्ट नरहरि देव तु दयानिधान
ऐसो कौन अवतार दयारस भीनो है ।
मातानि पेटतें स्वरूप धरै और ठौर
सोतो है उचित ऐसो ओर को प्रवीन है ।
प्रहलाद हेतु जानि ता घर कै बाघै
आपु थावर के पेट मैं ते अवतार लीनो है ।।१२२।।

इति देवीदास कृत राजनीति सवैया संपूर्ण ।

६६१९. **राजनीति शतक**— × । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २८९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६६२०. **लघुचाणक्य नीति (राजनीति शास्त्र)—चाणक्य** । पत्र सं० ११ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—राजनीति । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर चौगान बूंदी ।

विशेष—वृहद् राजनीति शास्त्र भी है।

६६२१. लुकमान हकीम की नसीहत—× । । पत्रसं० ७। आ० १२½×५½ इञ्च। **भाषा**—हिन्दी। विषय—सुभाषित। र०काल × । ले०काल सं० १९०७ श्रावण सुदी ८ । पूर्ण। वेष्टन सं० ३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर छोटा बयाना।

विशेष—प्रथम पांच पत्र तक लुकमान हकीम की नसीहते हैं तथा इससे आगे के पत्रों में १०० प्रकार के मूर्खों के भेद दिये हुए हैं।

६६२२. अजजबली—पं० बल्लह। पत्र सं० १८। आ० १४½×४½ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—सुभाषित। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १३९१। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६६२३. विवेक शतक—**थानसिंह ठोल्या**। पत्र सं० ९। आ० १०½×६½ इञ्च। **भाषा**—हिन्दी पद्य। विषय—सुभाषित। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

६६२४. वृन्द शतक—**कवि वृन्द**। पत्र सं० ४। आ० १०½×६½ इंच। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—सुभाषित। र० काल × । ले०काल। अपूर्ण। वेष्टन सं० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर टोडारायसिंह (टोंक)

६६२५. सज्जन चित्त वल्लभ—**मल्लिषेण**। पत्रसं० ३। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—सुभाषित। र० काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ३०६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६६२६. प्रतिसं० २। पत्रसं० ३। आ० १२×५ इञ्च। ले०काल सं० १८०६ कार्तिक बुदी ८। पूर्ण। वेष्टन सं० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवाजी कामा।

६६२७. सज्जन चित्तन वल्लभ—× । पत्रसं० ३। आ० ९½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—सुभाषित। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ६०७ । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६६२८. सज्जन चित्त वल्लभ भाषा— ऋषभदास। पत्रसं० १२। आ० १२×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-सुभाषित। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ९८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

६६२९. सज्जनचित्त वल्लभ भाषा—हरगूलाल। पत्रसं० २२। आ० १० ½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय—सुभाषित। र०काल सं० १९०७ । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ५२-८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर।

विशेष—लेखक करौली के रहने वाले थे तथा वहां से सहारनपुर जाकर रहने लगे थे। ग्रंथ प्रशस्ति दी हुई है।

६६३०. प्रतिसं० २। पत्रसं० १६। आ० ११½×७ इञ्च। ले० काल सं० १९३८। पूर्ण। वेष्टन सं० १७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर।

६६३१. **सप्तव्यसन चन्द्रावल -- ज्ञानभूषण** । पत्रसं० १ । आ० १२×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय —सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१०-६५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६६३२. **सद् भाषितावली (सुभाषितावली)—सकलकीर्त्ति** । पत्र सं० २६ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले० काल सं० १७०२ फाल्गुन बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—महाराजसिंह के शासनकाल में साह पाबू ने अम्बावती गढ़ में लिपि की थी ।

६६३३. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० २३ । आ० १०½×६ इञ्च । ले० काल सं० १७ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—चम्पावली महादुर्ग में प्रतिलिपि हुई लेखक प्रशस्ति बहुत विस्तार से है ।

६६३४.**प्रति सं० ३** । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १९१० । पूर्ण । वेष्टन सं० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर डूण्डावालों का डीग ।

६६३५. **सद्भाषितावली**— × । पत्र सं० १६ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६६३६. **सद्भाषितावली**—× । पत्रसं० १-२५ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६६३७. **सद्भाषितावली**—× । पत्र सं० ४२ । आ० ६×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

६६३८. **सद्भाषितावली**—× । पत्र सं० २६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

६६३९. **सदभाषितावली**—× । पत्रसं० २५ । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र०काल× । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बड़ा पंचायती मन्दिर डीग ।

६६४०. **सद्भाषितावली भाषा—पन्नालाल चौधरी**—× । पत्र सं० ११६ । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय— सुभाषित । र० काल सं० १९३१ ज्येष्ठ सुदी १ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

६६४१. **प्रति सं० २** । पत्रसं० १०२ । आ० १३½×७ इञ्च । ले०काल सं० १९४६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ९५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

६६४२. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० ६१ । आ० १३ × ७½ इञ्च । ले० काल सं० १९५२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

६६४३. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० ६६ । आ० १२×७½ इञ्च । ले० काल सं० १६४५ । पूर्ण । वेष्टनसं० २७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्री महावीर बूंदी ।

विशेष—इन्दौर में लिखा गया था ।

६६४४. **सभातरंग**—× । पत्रसं० २७ । आ० १०×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६६४५. **सारसमुच्चय**— × । पत्रसं० १० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले०काल सं० १८८० । पूर्ण । वेष्टनसं० १४ **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६४६. **सारसमुच्चय**— × । पत्रसं० २२ । आ० १०½×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले०काल सं० १६५२ कार्तिक शुक्ला १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६४७. **सारसमुच्चय**—× । पत्र सं० १६ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६६४८. **सिन्दूर प्रकरण—बनारसीदास** । पत्रसं० २४ । आ० १२½ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

६६४९. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ६२ । आ० ६×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सीगानी करौली ।

विशेष—१८ पत्र से समयसार नाटक बंधद्वार तक है आगे पत्र नहीं है ।

६६५०. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० ५-२१ । आ० १० × ६ इंच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

६६५१. **प्रतिसं० ४** । पत्र सं० १३ । आ० १०×६½ इञ्च । ले० काल सं० १६०८ चैत सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—गणेशीलाल बैनाडा ने पुस्तक चढ़ाई थी ।

६६५२. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० १४ । आ० १०×६ इञ्च । ले० काल सं० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

६६५३. **प्रतिसं० ६** । पत्र सं० १८ । आ० ११×४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक) ।

६६५४. **प्रतिसं० ७** । पत्र सं० २-२२ । आ० ७ × ४½ इञ्च । ले०काल सं० १८०८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोठ्यों का नैणवा ।

६६५५. **प्रतिसं० ८** । पत्र सं० १५ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८३४/८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

६६५६. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० २१ । आ० ११×४ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

विशेष—प्रति नवीन है ।

६६५७. **प्रति सं० १०** । पत्र सं० २-१३ । आ० ६×४ इञ्च । ले०काल सं० १६६६ भादवा सुदी १५ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर डबलाना (बूंदी) ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है ।

संवत् १६६६ वर्षे भादवा सुदी १५ सोमवासरे श्री आगरा मध्ये पातिसाह श्री साहिजहां राज्ये लिखितं साहु रामचन्द्र पठनार्थं लिखितं वीरवालां ।

६६५८. **प्रति सं० ११** । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १७१७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डावालों का डीग ।

६६५९. **सिन्दूरप्रकरण भाषा**— × । पत्र सं० ४१ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा ।

६६६०. **सुगुरु शतक—जोधराज** । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित। र०काल सं० १८५२ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक)

६६६१. **सुबुद्धिप्रकाश—थानसिंह** । पत्र सं० ७६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सुभाषित । र०काल सं० १८४७ फागुन बुदी ६ । ले० काल सं० १९०० ज्येष्ठ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

६६६२ **प्रति सं० २** । पत्र सं० ११६ । आ० १३×६ इञ्च । ले० काल सं० १९०० कार्तिक सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

६६६३. **सुभाषित**— × । पत्र सं० १७ । आ० ९×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६६६४. **प्रति सं० २** । पत्र सं० २५ । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

६६६५. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० १६ । आ० ८×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६६६. **सुभाषित दोहा**— × । पत्र सं० २-४२ । आ० ९×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६६६७. **सुभाषित प्रश्नोत्तर रत्नमाला—ब्र० ज्ञानसागर** । पत्र सं० १४१ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९६१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—सुभाषित प्रश्नोत्तरमाणिक्यमालानामग्रंथे ब्र० श्री ज्ञानसागर संग्रहीते चतुर्थोऽधिकारः ।

६६६८. **सुभाषित रत्नसंदोह—अमितिगति** । पत्र सं० ११४ । आ० ७½ × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले०काल सं० १५६५ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२०३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६६९. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ७५ । आ० ११¾ × ४¾ इञ्च । ले० काल सं० १५७४ मंगसिर सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

६६७०. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ७१ । आ० १०½ × ४¾ इञ्च । ले०काल सं० १५९० । पूर्ण । वेष्टन सं० ७०९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६७१. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० ९५ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल सं० १८४७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६०० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

६६७२. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० ४९ । ले० काल सं० १८२७ ज्येष्ठ बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—खाजूराम ने भरतपुर में प्रतिलिपि करवाई थी ।

६६७३. **सुभाषितावली—सकलकीर्ति** । पत्र सं० ४२ । आ० ९ × ५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २९३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—ग्रंथ का नाम सुभाषित रत्नावली एवं सद्भाषितावली भी है ।

६६७४. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० २३ । आ० ६ × ४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४२६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६७५. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० ५१ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल सं० १६६७ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४६५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—मंडलाचार्य यशःकीर्ति के शिष्य ब्र० गोपाल ने प्रतिलिपि की थी ।

६६७६. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० २६ । आ० १०¾ × ४½ इञ्च । ले०काल० × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६७७. **प्रतिसं० ५** । पत्र सं० २२ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १८३२ चैत सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स०१०४१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—सिकंदरा में हरवंशदास लुहाड़िया ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

६६७८. **प्रतिसं० ६** । पत्र सं० १८ । आ० ९ × ५ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११०२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

६६७९. **प्रतिसं० ७** । पत्र सं० ३३ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

६६८०. **प्रतिसं० ८** । पत्रसं० २१ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल सं० १५८४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

प्रशस्ति—संवत् १५८४ वर्षे आसोज सुदी १५ बुधवार लक्षत श्री मूलसंघे महामुनि भट्टारक श्री सकलकीर्ति देवातत्पट्टे भ० श्री ५ भुवनकीर्ति भ्रातृ आचार्य श्री ज्ञानकीर्ति शिष्य आचार्य श्री रत्नकीर्ति तस्य शिष्य आ० श्री यशकीर्ति तत् शिष्य ब्रह्म विद्याधर पठनार्थं उपासकेन लिखाप्य दत्तं ।

६६८१. **प्रतिसं० ९** । पत्रसं० १४ । आ० ९×५½ इञ्च । ले०काल सं० १८५६ जेठ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

६६८२. **प्रतिसं० १०** । पत्रसं० ६ । आ० ९×४½ इञ्च । ले० काल सं० १७४८ माघ शुक्ला ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—प० मनोहर ने आत्म पठनार्थं लिखा था ।

६६८३. **प्रति सं० ११** । पत्रसं० ४० । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

६६८४. **प्रतिसं० १२** । पत्र सं० २-३७ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६६८५. **प्रति सं० १३** । पत्रसं० ४१ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल सं० १७१८ आसोज बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टनसं० २०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—मोजमाबाद में ऋषभनाथ चैत्यालय में पंडित भगवान ने स्वयं के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

६६८६. **प्रतिसं० १४** । पत्र सं० २२ । आ० ९×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८३-७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

६६८७. **प्रतिसं० १५** । पत्र सं० १० । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति जीर्ण किन्तु प्राचीन है । प्रति की लिखाई सुन्दर है ।

६६८८. **प्रतिसं० १६** । पत्रसं० २५ । आ० ९½×६ इञ्च । ले०काल सं० १८७६ मंगसिर बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनसं० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक)

६६८९. **प्रतिसं० १७** । पत्र सं० २४ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले०काल सं० १८२२ माघ बुदी ऽऽ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दीवान जी कामा ।

विशेष—प्रतिलिपि दिल्ली में हुई थी ।

६६९०. **प्रतिसं० १८** । पत्रसं० ७६ । ले०काल सं० १७२२ चैत बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मंदिर बसवा ।

विशेष—दौसा में प्रतिलिपि हुई थी ।

६६९१. **प्रतिसं० १९** । पत्रसं० १७ । आ० १०×५ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १९१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलना (बूंदी)

६६९२. **प्रति सं० २०** । पत्र सं० ३३ । आ० ९$\frac{3}{5}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १८३१ वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

विशेष- भट्टारक धर्मचन्द्र के शिष्य ब्रह्म मेघजी ने प्रतापगढ़ नगर में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

६६९३. **सुभाषितरत्नावलि**— × । पत्र सं० १७ । आ० ९×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १७५८ आषाढ़ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९८७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—पं० सुन्दर विजय ने प्रतिलिपि की थी ।

६६९४. **सुभाषितावली—कनककीर्त्ति** । पत्र सं० ३३ । आ० ११$\frac{1}{5}$×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा ।

६६९५. **सुभाषितावली**—× । पत्र सं० १४ । आ० १०× ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । । पूर्ण । वेष्टन सं० ४० । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६९६. **सुभाषितावली**—× । पत्र सं० ८ । आ० ९×४ इञ्च । भाषा - संस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६०-२८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६६९७. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६१-२८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६६९८. **सुभाषितावली—दुलीचन्द** । पत्र सं० १७ । आ० १३× ८$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सुभाषित । र०काल सं० १९२१ ज्येष्ठ सुदी १ । ले०काल सं० १९४६ भादवा बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

६६९९. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ७५ । र०काल सं० १९२१ । ले०काल सं० १९५२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

६७००. **सुभाषितावली भाषा**—खुशालचंद । पत्र सं० २-८५ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—सुभाषित । र०काल सं० १७९४ सावण सुदी १४ । ले०काल सं० १८०२ चैत सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

वीतराग देवजू कह्यो सुभाषित ग्रंथ ।
च्यारि ग्यान धारक गणी रच्यौ सुभाषजी ।
इन्द्र धरणीन्द्र चक्रवर्ति आदिक सेवतु है
तीनलोक के मोह को सुदीपक कहायजी ॥
साधु पुरुषू के वैन अमृत सम मिष्ट अति
धर्म बीज पावन सुभाषि फलदायजी

सर्वजिन हितकार जामै सुख है अपार
ऐसो ज्ञान तीरथ अमोल चितलायजी।

दोहा--

सतरासै चौरासुदै श्रावण मास मझार।
सुदि चवदसि पूरण भयो इह श्रुत अति सुखकार
सबलसिंह पंड्या तणौ नंदन राजाराम।
तीन उपदेसै मैं रच्यो श्रुति खुशाल अभिराम॥

इति सुभाषितावलि ग्रंथ भाषा खुशालचन्द कृत समाप्तम्।

६७०१. **प्रति सं० २**। पत्र संख्या ३३। आ० ८×४½ इञ्च। ले०काल सं० १८१२ आसोज बुदी ११। पूर्ण। वेष्टन सं० ५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौभाणी मन्दिर करौली।

६७०२. **प्रतिसं० ३**। पत्रसं० ६३। आ० १०×५½ इञ्च। ले०काल सं० १८६६ पौष बुदी २। पूर्ण। वेष्टनसं० १२१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

विशेष—छबीलचन्द मीतल ने करौली नगर में पार्श्वनाथ के मन्दिर में प्रतिलिपि कराई थी।

६७०३. **सुभाषितार्णव—शुभचंद्र**। पत्रसं० ११३। आ० ९×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—सुभाषित। र०काल × । ले० काल सं० १८६६ सावन सुदी १३। । पूर्ण। वेष्टन सं० ६२-५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगानी मन्दिर करौली।

६७०४. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० २५७। ले० काल सं० १९३०। पूर्ण। । वेष्टनसं० ५३९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

६७०५. **प्रति सं० ३**। पत्रसं० ४१। आ० १०½×४½ इञ्च। ले० काल १७४४। पूर्ण। वेष्टन सं० १६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

६७०६. **सुभाषितार्णव**—× । पत्रसं० ४५। आ० ११½×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। र०काल × । ले०काल सं० १७८४ माघ सुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० ११२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर टूनी (टोंक)

६७०७. **सुभाषितार्णव**—× । पत्रसं० ४९। आ० १२ × ४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—सुभाषित। र०काल × । ले०काल सं० १६०७ भादवा सुदी ९। पूर्ण। वेष्टन सं० ७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—चम्पावती महादुर्ग में प्रतिलिपि हुई। लेखक प्रशस्ति बहुत विस्तार पूर्वक है।

६७०८. **सूक्ति मुक्तावली—आचार्य मेरुतुंग**। पत्रसं० ३। आ० १४×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय काव्य। र० काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १२५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—महापुरुष चरित्र का मूलमात्र है।

६७०९. **सूक्तिमुक्तावली-आ० सोमप्रभ**। पत्रसं० ८। आ० ९½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १४१। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—दो पंतियां और है ।

६७१०. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ८ । आ० १०$\frac{1}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन सं० ११८७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६७११. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० ७ । आ० १०× ४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३४० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६७१२. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० २८ । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल सं० १७८८ । पूर्ण । वेष्टनसं० २८९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

६७१३. **प्रतिसं० ५** । पत्रसं० ८ । आ० ९$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

टब्बाटीका सहित है तथा प्रति जीर्ण है ।

६७१४. **प्रतिसं० ६** । पत्र सं० १६ । आ० १०×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६७१५. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० ११ । आ० ९×४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४२८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६७१६. **प्रति सं० ८** । पत्र सं० ९ । आ० ११$\frac{3}{4}$×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५५६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६७१७. **प्रति सं० ९** । पत्र सं० १० । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १८११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२७४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

६७१८. **प्रतिसं० १०** । पत्रसं० १५ । आ० ११×४ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २३७/२३२ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

६७१९. **प्रतिसं० ११** । पत्र सं० ७ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल सं० १७७८ । अपूर्ण । वेष्टन सं० २५९ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६७२०. **प्रतिसं० १२** । पत्रसं० १५ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इंच । ले० काल सं० १६४० । पूर्ण । वेष्टनसं० १००; । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है —

संवत् १६४० वर्षे श्रावण बुदी ९ दिने लिखितं शिष्य ब्र० टीला ब्र० नाथू के पांडे गोइन्द शुभं भवतु कल्याणमस्तु ।

६७२१. **प्रतिसं० १३** । पत्रसं० १३ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले०काल सं० १७२९ । पूर्ण । वेष्टन सं० २११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—संवत् १७२९ में सावण सुदी १० को श्री प्रतापपुर के आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की गई थी ।

६७२२. **प्रतिसं० १४** । पत्र सं० १८ । आ० १० × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६७२३. **प्रतिसं० १५**। पत्र सं० ११। आ० १०½ × ५½ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

६७२४. **प्रति सं० १६**। पत्रसं० २०। आ० १०½ × ५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—सुभाषित। र०काल × । ले० काल सं०१७२८ चैत्र सुदी ५ । पूर्ण। वेष्टन सं० ६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—मोहम्मद शाह के राज्य में गोरपुर में चिन्तामणि पार्श्वनाथ के चैत्यालय में हारिक्षेम ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

६७२५. **प्रतिसं० १७**। पत्रसं० १४। आ० १२ × ५ इञ्च। ले०काल सं० १८१४ असग श्रावण सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० ६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—११-१२ वां पत्र नहीं हैं।

६७२६. **प्रतिसं० १८**। पत्र सं० १५। आ० १०½ × ५½ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वे० सं० ६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—१५ से आगे नहीं लिखा गया है।

६७२७. **प्रतिसं० १९**। पत्रसं० १२। आ० १२×६ इंच। **ले०काल** सं० १९४६। पूर्ण। वेष्टन सं० ६१०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

६७२८. **प्रतिसं० २०**। पत्रसं० २-१५। आ० ८½ × ३½ इंच। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ७१६। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मंदिर लश्कर, जयपुर।

६७२९. **प्रतिसं० २१**। पत्र सं० १०। आ० ९ × ६ इञ्च। ले० काल सं० १८८७। पूर्ण। वेष्टन सं० २२५-१२२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

६७३०. **प्रतिसं० १२**। पत्रसं० १२। आ० १० × ४½ इञ्च। **ले०काल** सं० १७२१ श्रावण शुक्ला १। पूर्ण। वेष्टन सं० ३७८-१४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

६७३१. **प्रतिसं० १३**। पत्रसं० १२। आ० १०½ × ४½ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १२६-५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

६७३२. **प्रतिसं०१४**। पत्र सं० १४। आ० १०½ × ४½ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—भट्टारक शुभचन्द्र शिष्य मुनि श्री सोमकीर्ति पठनार्थं स्वहस्तेन लिखितं।

६७३३. **प्रतिसं० १५**। पत्र सं० १४। आ० १० × ५ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २९१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

६७३४. **प्रतिसं० १६**। पत्रसं० १०। आ० १०½ × ५ इञ्च। ले०काल सं० १६०३। पूर्ण। वेष्टन सं० १३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

लेखक प्रशस्ति—संवत् १६०३ वर्षे शाके १४६८ प्रवर्त्तमाने महामांगल्य भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे दशम्यां तिथौ रविवासरे तक्षक महादुर्गे राजाधिराज सोलंकीराज श्री रामचन्द्र विजयराज्ये श्री ऋषभ जिन चैत्यालये श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे..... मंडलाचार्य धर्म्म तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये

बंद गोत्रे..... .....साह षोषा तस्य पौत्र सा. होला तद्भार्या खीवणी इदं शास्त्रं लिखाप्य मुनि श्री कमल-कीर्तिये दत्तं ।

६७३५. **प्रतिसं० १७** । पत्रसं० ५ । आ० १३ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६७३६. **प्रतिसं० १८** । पत्र सं० ३५ । आ० ६$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १७६५ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—मेडता में प्रतिलिपि हुई थी ।

६७३७. **प्रतिसं० १९** । पत्र सं० २६ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३१ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

६७३८. **प्रतिसं० २०** । पत्र सं० १३ । आ० १०×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

६७३९. **प्रतिसं० २१** । पत्र सं० १६ । आ० ८$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—दो प्रतियां और हैं ।

६७४०. **प्रति सं० २२** । पत्र सं० ११ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १६६८ काती सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

६७४१. **प्रतिसं० २३** । पत्रसं० १७ । आ० १३×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १६५५ काती सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनसं० २३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

६७४२. **प्रतिसं० २४** । पत्र सं० २२ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति हर्षकीर्ति कृत संस्कृत टीका सहित है ।

६७४३. **प्रतिसं० २५** । पत्रसं० १६ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १६६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२२/२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ़ कोटा ।

विशेष—प्रति हर्षकीर्ति कृत संस्कृत टीका सहित है ।

संवत् १६६६ वर्षे फागुण सुदी अमावस्यासोमे पाटणे नगरे लिखितेयं टीका ऋषि लक्ष्मीदासेन ऋषि जीवाय वाचनार्थं । इन्दरगढ़ का बड़ा जैन मन्दिर ।

६७४४. **प्रतिसं० २६** । पत्रस०३६ । आ० १०×५ इञ्च । **भाषा**–संस्कृत । **विषय**–सुभाषित । र०काल × । ले०काल सं० १८२७ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२१/२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

विशेष—करवाड़ ग्राम में प्रतिलिपि हुई थी ।

६७४५. **प्रतिसं० २६**। पत्र सं० १०। आ० १२×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय–सुभाषित। र० काल × । ले०काल सं० १७८१। पूर्ण। वेष्टन सं० ४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्द्रगढ़ (कोटा)

६७४६. **प्रति सं० २७**। पत्र स० १०। आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ११५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

६७४७. **प्रतिसं० २८**। पत्रसं० ६। आ० १०×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–सुभाषित। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—ध्यान विमल पठनार्थं।

६७४८. **प्रतिसं० २९**। पत्रसं० १०। आ० १० ×४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–सुभाषित। र०काल × । ले० काल सं० १५९२ माघ बुदी ३। पूर्ण। वेष्टन सं० ५८/८९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर भादवा (राज०)

विशेष—प्रति जीर्ण है। वीर भट्टारक के लिए प्रतिलिपि की गई थी।

६७४९. **प्रतिसं० ३०**। पत्रसं० ९। आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–सुभाषित। र०काल ×। ले० काल सं० १६६९ कार्तिक बुदी १४। पूर्ण। वेष्टन सं० २२२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

विशेष - अहमदाबाद में लिखा गया था।

६७५०. **प्रतिसं० ३१**। पत्र सं० ३-१५। आ० १०$\frac{1}{2}$×७ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–सुभाषित। र०काल × । ले० काल सं०१९०४। पूर्ण। वेष्टन सं० २५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

विशेष -- मूल के नीचे संस्कृत में टीका भी है। वृन्दावती में नेमिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी।

६७५१. **प्रतिसं० ३२**। पत्रसं० ३०। आ० ६×५ इञ्च। ले० काल सं० १९५५। पूर्ण। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

६७५२. **प्रति सं० ३३**। पत्रसं० २५। आ० १० ×७$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ८३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, चौगान बूंदी।

६७५३. **प्रति सं० ३४**। पत्र सं० ७६। आ० १०×५ इञ्च। ले०काल सं० १७१७ कार्तिक बुदी १४। पूर्ण। वेष्टन स० १०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी।

विशेष—मौजमाबाद में लिखा गया था।

६७५४. **प्रतिसं० ३५**। पत्र सं० १७। आ० ९×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–सुभाषित। र०काल × । ले० काल सं० १८७६ भादवा बुदी १०। पूर्ण। वेष्टन सं० २११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

६७५५. **प्रतिसं० ३६**। पत्रसं० १३। आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–सुभाषित। र०काल–× । ले० काल सं० १९५५ आषाढ बुदी १२। पूर्ण। वेष्टन सं० २३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक)

विशेष—कोटा स्थित वासुपूज्य चैत्यालय में संभवराम ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

६७५६. **प्रतिसं० ३७**। पत्र संख्या २१। ले०काल सं० १७६५ पौष बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० २०२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भरतपुर।

विशेष—सुन्दरलाल ने सूरत में लिपि की थी।

६७५७. **प्रतिसं० ३८**। पत्रसं० २७। ले०काल सं० १८९२ चैत्र सुदी ४। पूर्ण। वेष्टन सं० २०६। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—भरतपुर में लिखी गई थी।

६७५८. **प्रतिसं० ३९**। पत्रसं० १९। ले०काल सं० १८२५ आषाढ सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन सं० २८७। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—सूत्रों पर दूढा कृत हिन्दी गद्य टीका है। केसरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी।

६७५९. **प्रति सं० ४०**। पत्र सं० ११। ले०काल सं १६५२। पूर्ण। वेष्टन सं० २७९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

६७६०. **प्रति सं० ४१**। पत्रसं० ३२। ले०काल सं० १८७२। पूर्ण। वेष्टन सं० ७१८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

विशेष—प्रति हर्षकीर्ति कृत संस्कृत टीका सहित है।

६७६१. **प्रति सं० ४२**। पत्र सं० ६९। आ० ९ × ४½ इञ्च। ले०काल सं० १६५२। पूर्ण। वेष्टन सं० ५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

६७६२. **प्रतिसं० ४३**। पत्रसं० १३। आ० ११½×५ इञ्च। ले० काल सं० १८४७ माह सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन सं० ९३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर।

६७६३. **सूक्तिमुक्तावली टीका—हर्षकीर्त्ति**। पत्र सं० ३५। आ० १०×४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल सं० १७६० प्रथम सावण सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० ४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ कोटा।

विशेष—अमर विमल के प्रशिष्य एवं रत्नविमल के शिष्य रामविमल ने प्रतिलिपि की थी।

६७६४. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० ४५। आ० १०½×४½ इञ्च। ले०काल सं० १७५० माघ बुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० १४८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

विशेष—शाकंभरी वास्तव्ये श्राविका गोगलदे ने रत्नकीर्ति के लिए लिखवाया था।

६७६५. **प्रति सं० ३**। पत्र सं० २६। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ६४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

६७६६. **प्रति सं० ४**। पत्रसं० ४२। आ० १२×५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मंदिर बयाना।

विशेष—नागपुरीयगच्छ के श्री चन्द्रकीर्ति के शिष्य श्री हर्षकीर्ति ने संस्कृत टीका की है।

६७६७. **सूक्ति मुक्तावली भाषा**—**सुन्दरलाल**। पत्रसं० ४६। आ० १२×४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी (गद्य)। विषय—सुभाषित। र० काल सं० १७६६ ज्येष्ठ बुदी २। ले० काल सं० १६३५। पूर्ण। वेष्टन सं० ८१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर।

विशेष—रचना संवत् के निम्न संकेत दिये हैं—

६ ६ ७ १

'रस युग सरस शशि'

६७६८. **सुक्तिमुक्तावली भाषा**—**सुन्दर**। पत्रसं० ४५। आ० १३×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—सुभाषित। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

६७६९. **सूक्तिमुक्तावली टीका**— ×। पत्र सं० २-२४। भाषा—संस्कृत। विषय—सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ७५३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

६७७०. **प्रतिसं० २**। पत्र सं० २६। आ० ६½×४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल सं० १८३६ ज्येष्ठ बुदी ३। पूर्ण। वेष्टन सं० ६८५। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६७७१. **सूक्तिमुक्तावली भाषा**— ×। पत्रसं० ६६। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। (गद्य)। विषय-सुभाषित। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १५२/१६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्दरगढ़ (कोटा)

६७७२. **सूक्ति मुक्तावली वचनिका**—×। पत्र सं० ४३। आ० १०½×६½ इञ्च। भाषा—संस्कृत हिन्दी। विषय—सुभाषित। र० काल ×। ले० काल सं० १६४५। पूर्ण। वेष्टन सं० १८८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

६७७३. **सूक्तिसंग्रह**— ×। पत्रसं० १०। भाषा—संस्कृत। विषय—सुभाषित। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

६७७४. **सूक्ति संग्रह**— ×। पत्रसं० २७। आ० १०×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३२७-१२२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

६७७५. **संबोध पंचासिका**— ×। पत्र सं० १३। आ० ११½×५¼ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—सुभाषित। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २०६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली, कोटा।

६७७६. **संबोध संताणनु दूहा**—**धीरचन्द**। पत्रसं० ६। आ० ६×४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल सं० १८३७ कार्तिक बुदी ११। पूर्ण। वेष्टन सं० ७०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

६७७७. **हरियाली छप्पय—गंग।** पत्र सं० ५। आ० ६½×४¾ इंच। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—सुभाषित। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १०६-५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

६७७८. **हितोपदेश—बाजिद।** पत्र सं० १-२१। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—नीति शास्त्र। र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० २५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

६७७९. **हितोपदेश—विष्णुशर्मा।** पत्र सं० ३-६०। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—नीति एवं सुभाषित। र० काल × । ले० काल सं० १८५२। अपूर्ण। वेष्टन सं० ३६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है।

६७८०. **प्रति सं० २।** पत्र सं० ५५। आ० ६½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल × । ले० काल । अपूर्ण। वेष्टन सं० २००। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

६७८१. **हितोपदेश चौपई—×** । पत्र सं० ६। आ० ६× ४ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय—सुभाषित। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

विषय--स्तोत्र साहित्य

६७८२. **अकलंकाष्टक-अकलंकदेव** । पत्र सं० ५-८ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४५५/४३७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—एक प्रति वेष्टन सं० ४५६/४३८ में और है ।

६७८३. **प्रति सं० २** । पत्र सं० २ । आ० १३½×६ इञ्च । **भाषा**-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । **पूर्ण** । वेष्टन सं० ४१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिरलश्कर, जयपुर ।

६७८४. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ३ । आ० ९×५ इञ्च । **भाषा**-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल× । ले० काल× । पूर्ण । वेष्टन सं० १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिरबोरसली कोटा ।

६७८५. **अकलंकाष्टक भाषा—जयचन्द छाबड़ा** । पत्र सं० ११ । आ० ११½×८ इञ्च । भाषा हिन्दी पद्य । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १९२९ फाल्गुण सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६-३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

६७८६. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ९ । ले०काल सं० १९३० । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७-३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

६७८७. **अकलंकाष्टक भाषा—सदासुखजी कासलीवाल** । पत्र सं० १४ । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल सं० १९१५ सावन सुदी २ । ले० काल सं० १९६२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

६७८८. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

६७८९. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ९ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्यारेलाल व्यास ने कठूमर में प्रतिलिपि की थी ।

६७९०. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० १६ । आ० ८×६½ इञ्च । ले०काल सं० १९३८ श्रावण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६७९१. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० ११ । आ० १२½×७½ इञ्च । ले०काल सं० १९२९ श्रावण सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर बयाना ।

विशेष—सं० १९३२ में हिण्डौन में प्रतिलिपि करवाकर यहां मन्दिर में चढ़ाया था ।

६७९२. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० १६ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर दीवानजी कामा ।

६७९३. **प्रति सं० ७।** पत्र सं० ८। आ० १३ × ७½ इञ्च। ले० काल सं० १९४१ कार्तिक बुदी ९। पूर्ण। वेष्टन सं० ४३। **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

६७९४. **अकलंकदेव स्तोत्र भाषा—चंपालाल बागडिया।** पत्रसं० ५४। आ० १०½ × ७ इञ्च। **भाषा**–हिन्दी पद्य। विषय–स्तोत्र। र० काल सं० १९१३। ले० काल सं० १९२४। पूर्ण। **वेष्टन सं०** ४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी।

विशेष—परमतखंडिनी नामा टीका है। श्री चंपालाल जी बागडिया झालरा पाटन के रहने वाले थे।

प्रारम्भ—

श्री परमात्म प्रणम्य करि प्रणउ श्री जिनदेव वानि।
ग्रंथ रहित सद्गुरु नमी रत्नत्रय अमलान।
श्री अकलंक देव मुनीसपद मैं नमिहो सिरिनाय।
ज्ञानोद्योतन अर्थसुभ कहू कथा सुखदाय॥

अन्तिम—

श्रावण कृष्णा सुतीज रवि नयन ब्रह्म ग्रहचन्द्र।
पूरण टीका स्तोत्र की कृत अकलंक द्विजेन्द्र॥
सिद्ध सूरि पाठक बहुरि सर्व साधु जिनवानि।
अरु जिनधर्म नमौं सदा मंगलकारि अमलान।

मारोठ ग्राम में पार्श्वनाथ चैत्यालय में विरधीचंद्र ने प्रतिलिपि की थी।

६७९५. **अजितशांति स्तवन—नन्दिषेण।** पत्र सं ४। आ० ९×४½ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १७९० आसोज बुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं १५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

६७९६. **अजित शांति स्तवन**—×। पत्रसं० ३। आ० १०½ × ४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ३३१। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—द्वितीय एवं सोलहवें तीर्थंकर अजितनाथ और शांतिनाथ की स्तुति है।

६७९७. **अजित शांति स्तवन**— ×। पत्रसं० ३। आ० १०×४½ इंच। भाषा—प्राकृत। विषय—स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४८७। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६७९८. **अट्ठोतरी स्तोत्र विधि**— ×। पत्र सं० ४। भाषा-हिन्दी। विषय—स्तोत्र। र० काल ×। लेखन काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ६२५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

६७९९. **अध्यात्मोपयोगिनी स्तुति—महिमाप्रभ सूरि।** पत्र सं० ४। आ० ११×४ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर।

६८००. **अपराजित मंत्र साधर्मिका**—× । पत्रसं० १ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर।

६८०१. **अपामार्जन स्तोत्र**—× । पत्र सं० १२ । आ० ८$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल सं० १७७६ । पूर्ण । वे० सं० २३३-६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

६८०२. **अंसिजज्झाय कुल**—× । पत्रसं० २ । भाषा—प्राकृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

६८०३. **आणंद श्रावक संधि—श्रीसार** । पत्र सं० १४ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी गुजराती । विषय-स्तवन । र०काल सं० १६८७ । ले०काल सं० १८३० श्रावण सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

प्रारम्भ

वर्द्धमान जिनवर चरण नमंता नव निधि होई ।
संधि करू आणंदनी, संभिलज्यो बहु कोई ॥१॥

अन्तिम—

संवत् रिसि सिधिरस ससि तिणपुरी मई कीधो चौमास ।
ए संबंध कीयौ रलिया मणौ, सुण भाथाई उल्हास ॥२॥
रतन हरष गुरु वाचक साहरां हेमनन्द सुखकार ।
हेमकीरति गुरु बांधवनै कहइ प्रभसाह मुनि श्रीसार ॥१२॥

इति श्री आणंद श्रावक संधि संपूर्ण ।

६८०४. **आदिजिन स्तवन—कल्याण सागर** । पत्रसं० ५ । **भाषा**-हिन्दी । विषय-स्तवन । । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

६८०५. **आदित्य हृदय स्तोत्र**—× । पत्र सं० ८ । आ० १०$\frac{1}{2}$×६$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × ।ले० काल सं० १९२८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

६८०६. **आदिनाथ मंगल—नयनसुख** × । पत्र सं० ६ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २५८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)

विशेष—अन्तिम भाग निम्न प्रकार है—

आदि जिनं तीरथ सुनो तिसके अनुसवारि चिरित्त ध्यायो ।
भाग भज्यो नव जोग मिल्यो जगरामजी ग्रंथकु नीकैं सुनायो ।
यो उपदेश लगो हमें कुसुधभाव धरे जीव में ठहरायौ
कहै नैण सुख सुनो भवि होय श्री आदिनाथ जी को मंगल गायो ॥८६॥

६८०७. **आदिनाथ स्तवन—मेहउ** । पत्र सं० २ । आ० ८½ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र० काल सं० १४९९ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दयलाना (बूंदी) ।

विशेष—मुनि श्री माणिक्य उदय वाचनार्थं । राउपुर मंडन श्री आदिनाथ स्तवन ।

६८०८. **आदिनाथ स्तुति**—× । पत्र सं० २ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—भगवान आदिनाथ की स्तुति है ।

६८०९. **आदिनाथ स्तोत्र** । पत्र सं० १३ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १६०२ भादवा बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—इति श्री शत्रुंजयाधीश श्री नाभिराय कुलावतंस श्री युगादिदेवस्तवोदश भवः स्तवन संपूर्ण मिति मई भवत् ॥ श्री श्रमण संघस्यान्निवरं नंदतु । सं० १६०२ वर्षे भादवा बुदि ११ सोम दिने मन्नाइडीयगच्छे पूज्य भट्टारक श्री पद्मसागर सूरि तत्पट्टे श्री नयकीर्त्ति तत्पट्टे श्री महीसुन्दर सूरि तत्पट्टालंकार विजयमान श्री ४ सुमयसागर का श्री जयसागर लिखत श्राविका मल्ही पठनार्थं ।

६८१० **आनन्द लहरी—शंकराचार्य** । पत्र सं० ३ । आ० ८½ × ६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

६८११. **आराधना**—× । पत्र सं० ५ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—टब्बा टीका सहित है ।

६८१२. **आहार पच्चखाण** । पत्र सं० ६ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा - प्राकृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६८१३. **उपसर्गहर स्तोत्र**—× । पत्र सं० १ । आ० १०½ × ५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर खरकर, जयपुर ।

६८१४. **उपसर्गहर स्तोत्र**—× । पत्र सं० १ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

६८१५. **एकाक्षरी छंद**—× । पत्र सं० ३ । आ० ९ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

६८१६. **एकादशी स्तुति—गुणहर्ष**। पत्रसं० १। आ० १० × ४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २२७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर डबलाना (बूंदी)

६८१७. **एकीभाव स्तोत्र—वादिराज**। पत्रसं० ६। आ० १०×४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ६०६। **प्राप्ति स्थान**- म०दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६८१८. **प्रतिसं० २**। पत्र सं० ७। आ० ६½×५½ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १४२७। **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष- प्रति संस्कृत टीका सहित है।

६८१९. **प्रतिसं० ३**। पत्रसं० ४। आ० १० × ४½ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ४६६। **प्राप्ति स्थान** - म० दि० जैन मंदिर अजमेर।

६८२०. **प्रति सं० ४**। पत्रसं० ४। आ० १०½×४ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ८५ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

६८२१. **प्रति सं० ५**। । पत्र सं० २३। आ० १०½×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी गद्य। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ८६। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

६८२२. **प्रतिसं० ६**। पत्रसं० ८। आ० ११×५½ इञ्च। ले०काल सं० १९४२ । पूर्ण। वेष्टन सं० २६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

६८२३. **प्रति सं० ७**। पत्रसं० ८ । आ० १०½ × ४ इंच। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० २६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

६८२४. **प्रति सं० ८**। पत्रसं० ४। आ० १०½×४¾ इञ्च। भाषा-संस्कृत। ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है।

६८२५. **प्रति सं० ९**। पत्रसं० ४ । आ० १० × ४¾ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १७५-५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)।

विशेष निर्वाण काण्ड गाथा भी दी हुई है।

६८२६. **प्रतिसं० १०**। पत्रसं० ४। आ० १२×५ इंच। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २०९-८४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर।

६८२७. **प्रतिसं० ११**। पत्रसं० १० । आ० ११×५ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १७५ १४०। **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर, नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

६८२८. **प्रतिसं० १२**। पत्रसं० ७। आ० ११×५½ इञ्च। ले० काल सं० १७४४। पूर्ण। वेष्टन सं० ६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

६८२९. **प्रति सं० १३** । पत्र सं० २ । आ० १३$\frac{3}{4}$ × ६ इञ्च । **ले०काल** × । वेष्टन सं० ४२१ । **प्राप्ति स्थान**—जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६८३०. **एकीभाव स्तोत्र टीका** × । पत्र सं० ७ । आ० ९$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र०काल × । ले०काल सं० १९३२ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

६८३१. **एकीभाव स्तोत्र टीका** × । पत्र सं० १९ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । **वेष्टन सं०** ३९१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६८३२. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ८ । आ० ११ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन सं० ३९४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—श्लोक १७ तक की राजस्थानी भाषा टीका सहित है ।

६८३३. **एकीभाव स्तोत्र भाषा**—× । पत्र सं० ११ । आ० १३ × ५ इंच । भाषा-हिन्दी प० । विषय–स्तोत्र । र०काल × । ले० काल सं० १७६४ मंगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० २९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ, बूंदी ।

विशेष—कर्मप्रकृतिविधान एवं सहस्रनाम भाषा भी है ।

६८३४. **एकीभाव स्तोत्र भाषा**—× । पत्र सं० ३१ । **भाषा**—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४११-१५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—संबोध पंचासिका भाषा भी है ।

६८३५ **एकीभाव स्तोत्र भाषा**—भूधरदास । पत्र सं० ४ । आ० १० × ५ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

६८३६. **एकीभाव स्तोत्र वृत्ति—नागचन्द्र सूरि** । पत्र सं० ८ । आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । **वेष्टन सं०** ३८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६८३७. **ऋद्धि नवकार यंत्र स्तोत्र**—× । पत्र सं० १ । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । रचना-काल × । लेखनकाल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७११ । **प्राप्ति स्थान**—पंचायती दि० जैन मन्दिर, भरतपुर ।

६८३८. **ऋषभदेव स्तवन—रत्नसिंह मुनि** । पत्र सं० १ । आ० १० × ४ इंच । **भाषा**—हिन्दी । विषय—स्तुति । र०काल सं० १६६६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—विक्रमपुर में ग्रन्थ रचना हुई थी ।

६८३९. **ऋषिमण्डल स्तोत्र—गौतम स्वामी** । पत्र सं० १६ । आ० ९$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र०काल × । ले०काल सं० १८९३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है। उणियारे में प्रतिलिपि हुई थी।

६८४०. **प्रति सं० २**। पत्रसं० ७। आ० १३×७½ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी।

६८४१. **प्रतिसं० ३**। पत्र सं० ४। आ० ८¾×४½ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र०काल × । ले० काल स० १८८० भादवा बुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० १०८६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर, अजमेर।

६८४२. **प्रतिसं० ४**। पत्रसं० २। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १८८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर।

६८४३. **प्रतिसं० ५**। पत्रसं० ५। आ० ८½×३½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र०काल × । ले० काल सं० १७६४ माघ बुदी ५। पूर्ण। वेष्टनसं० १०३७। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर।

विशेष—लिखितं सिकन्दरपुर मध्ये।

६८४४. **प्रतिसं० ६**। पत्रसं०६। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० २४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर, उदयपुर।

६८४५. **प्रतिसं० ७**। पत्रसं० ७। भाषा-संस्कृत। विषय स्तोत्र। र०काल × । ले०काल सं० १७२५ माह सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन सं० ४१६-१५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, कोटडियों का डूंगरपुर।

विशेष—देवगढ़ मध्ये श्री मल्लिनाथ चैत्यालये श्री मूल संघे नंद्याम्नाये भ० शुभचन्दजी तदाम्नाये भ० जसराजजी ब्रह्म भावजी लिखितं।

८४६. **प्रतिसं० ८**। पत्र सं० ४। आ० १०½×४½ इञ्च। **भाषा**—संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल × । लेखन काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ८। **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर, उदयपुर।

६८४७. **प्रतिसं० ९**। पत्र सं० ६। आ० १०½×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १७४/४९। **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मंदिर, इन्द्रगढ़ (कोटा)।

६८४८. **अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ स्तवन—भाव विजय वाचक**। पत्रसं० ५। आ० १०×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी-(पद्य)। विषय-स्तोत्र। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, दबलाना (बूंदी)।

विशेष—इसमें ४४ छन्द हैं तथा मुनि दयाविमल के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी।

६८४९. **अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ स्तवन—लावण्य समय**। पत्र सं० ३। आ० १०½×४½ इंच। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-स्तवन। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २९०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, दबलाना (बूंदी)।

६८५०. **करुणाष्टक—पद्मनन्दि**। पत्र सं० १ । आ० १०½ × ४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ४२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६८५१. **कर्मस्तवस्तोत्र—** × । पत्रसं० ६ । आ० १० × ४½ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

६८५२. **कल्याण कल्पद्रुम—वृन्दावन** । पत्र सं० २३ । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल १९६४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—संकट हरण बीनती भी है ।

६८५३. **कल्याणमन्दिर स्तवनावचूरि—गुणरत्नसूरि**। पत्र सं० १२ । आ० ९½ × ६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल १९३२ काती बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

६८५४. **कल्याण मन्दिर स्तोत्र—कुमुदचन्द्र** । पत्रसं० ६ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० [illegible] । ले०काल २८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६०४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है ।

६८५५. **प्रति सं० २** । पत्रसं० १६ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १७०० । पूर्ण । वेष्टन सं० ७०५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका रहित है । पंडित कल्याण सागर ने अजीर्णगढ़ (अजमेर) नगर में प्रतिलिपि की थी ।

६८५६. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० ३ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६८५७. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० १४ । आ० १० × ४½ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २५३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६८५८. **प्रति सं० ५** । पत्रसं० ४। आ० १० × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

६८५९. **प्रति सं० ६** । पत्रसं० ९ । आ० ९ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १८२३ प्रथम चैत्र सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है । प्रति पत्र में ६ पंक्तियां एवं प्रति पंक्ति में ३१ अक्षर हैं ।

संवत् १८२७ में प्रति मंदिर में चढाई गई थी ।

६८६०. **प्रतिसं० ७** । पत्रसं० ११ । आ० ११×५ इंच । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—मूल के नीचे हिन्दी टीका है ।

६८६१. **प्रतिसं० ८** । पत्रसं० ५ । आ० ११×४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६७ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मन्दिर लागदी बूंदी ।

विशेष—प्रति प्राचीन है एवं संस्कृत टीका सहित है ।

६८६२. **प्रतिसं० ९** । पत्रसं० ४ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

६८६३. **प्रति सं० १०** । पत्र सं० ४ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

६८६४. **प्रति सं० ११** । पत्रसं० २५ । आ० ८×६ इञ्च । **ले०काल** सं० १८६६ चैत्र बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक)

विशेष—पं० गुमानीराम ने बसंतपुर में श्री सुमेरसिंहजी के राज्य में मिश्र रामनाथ के पास पठनार्थ लिखा था ।

६८६५. **प्रतिसं० १२** । पत्र सं० २ । आ० ८×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६८६६. **प्रति सं० १३** । पत्र सं० ६ । आ० १०×३½ इञ्च । ले० काल सं० १८१४ वैशाख सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीस पंथी दौसा ।

विशेष—दयाराम ने देवपुरी में प्रतिलिपि की थी ।

६८६७. **प्रतिसं० १४** । पत्र सं० ३ । आ० १०×४ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १०१–९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बडा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—आगे के पत्र नहीं हैं ।

६८६८. **प्रतिसं० १५** । पत्र सं० ५ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११४–९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है पुण्यसागर गणिकृत ।
स्तोत्र को सिद्धसेन दिवाकर द्वारा रचित लिखा हुआ है ।

६८६९. **प्रतिसं० १६** । पत्रसं० ५ । आ० १०×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा कमलप्रभ सूरि कृत संस्कृत टीका सहित है ।

६८७०. **प्रतिसं० १७** । पत्रसं० ४ । आ० ११×४ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मंदिर उदयपुर ।

६८७१. **प्रतिसं० १८** । पत्र सं० ५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५०७ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष - प्रति सटीक है।

६८७२. **प्रति सं० १९**। पत्र सं० २। ले० काल ×। **पूर्ण**। वेष्टन सं० ७१३। **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

६८७३. **प्रति सं० २०**। पत्र सं० ६। आ० ९½×४½ इञ्च। ले० काल ×। वेष्टन सं० ६७७। **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

६८७४. **प्रति सं० २१**। पत्र सं० ७। आ० ११½×५ इञ्च। ले० काल सं० १७५७। पूर्ण। वेष्टन सं० ३७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—प्रति व्याख्या सहित है।

६८७५. **प्रति सं० २२**। पत्र सं० ४। आ० १०×४ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३७९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—२६ से आगे के श्लोक नहीं हैं।

६८७६. **प्रति सं० २३**। पत्र सं० ३। आ० १३½×६ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४०४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर।

६८७७. **प्रति सं० २४**। पत्र सं० ५। आ० १०½×४½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

६८७८. **प्रति सं० २५**। पत्र सं० २। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

६८७९. **प्रति सं० २६**। पत्र सं० १०। आ० १०×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत, हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है।

६८८०. **कल्याण मन्दिर स्तोत्र टीका – हर्षकीर्ति**। पत्र सं० २१। आ० ८½×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १७१७ आसोज सुदी ४। वेष्टन सं० ३८४। **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर।

६८८१. **प्रति सं० २**। पत्र सं० १९। आ० १०½×४½ इञ्च। ले० काल सं० १८२७ कार्तिक सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन सं० ३८८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—ब्रुध केशरीसिंह ने स्वयं लिखी थी।

६८८२. **कल्याण मन्दिर स्तोत्र टीका--चरित्रवर्द्धन**। पत्र संख्या ८। आ० १०½×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

६८८३. **कल्याण मन्दिर स्तोत्र टीका** -- ×। पत्र सं० ७। आ० १०×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १६०। **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६८८४. **कल्याणमन्दिर स्तोत्र टीका**— × । पत्रसं० २-१० । आ० ९½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल सं० १७५५ माह सुदी १२ । अपूर्ण । वेष्टनसं० १८५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—हिण्डोली नगरे लिखितं ।

६८८५. **कल्याणमन्दिर स्तोत्र टीका**- - × । पत्र सं० २० । आ० ८½ × ४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल सं० १७८१ सावण बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२९ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी) ।

६८८६. **कल्याणमन्दिर स्तोत्र टीका**—× । पत्रसं० २९१ । आ० ९ × ५ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—पत्र १६ से आगे द्रव्य संग्रह की टीका भी हिन्दी में है ।

६८८७. **कल्याणमन्दिर स्तोत्र टीका**— × । पत्र सं० ३ । आ०, १० × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत, हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल सं० × । ले०काल सं० × । पूर्ण । वेष्टनसं० १८७-७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है ।

६८८८. **कल्याणमंदिर भाषा—बनारसीदास** । पत्रसं० ९ । आ० ९½×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—अंत में बनारसीदास कृत तेरह काठिया भी दिया है ।

६८८९. **कल्याणमंदिर स्तोत्र भाषा**—× । पत्र सं० ९ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत, हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८२५ कार्तिक बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली, कोटा ।

विशेष—नन्दग्राम में लिखा गया था ।

६८९०. **कल्याणमन्दिर स्तोत्र भाषा—अखयराज श्रीमाल** । पत्रसं० २१ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—स्तोत्र । र०काल सं० × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६८९१. **प्रति सं० २** । पत्रसं० २२ । आ० १२×४½ इञ्च । ले० काल सं० १७२२ चैत्र बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पंथी, दौसा ।

६८९२. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० ३३ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

६८९३. **कल्याणमन्दिर स्तोत्र वचनिका—पं० मोहनलाल** । पत्रसं० ४० । आ० ८½×४¾ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र०काल सं० १९२२ कार्तिक बुदी १३ । ले० काल सं० १९६५ सावन बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३१३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६८९४. **कल्याणमन्दिर स्तोत्र वृत्ति—देवतिलक**। पत्र सं० १२। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचनाकाल ×। लेखनकाल १७९०। पूर्ण। वेष्टन सं० ७२५। **प्राप्ति स्थान**—पंचायती दि० जैन मंदिर, भरतपुर।

विशेष—टोंक में लिपि हुई थी।

६८९५. **कल्याण मन्दिर स्तोत्र वृत्ति—गुरुदत्त**। पत्र सं० २०। आ० १२ × ४$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १६४० मंगसिर सुदी १५। वेष्टन सं० ३८७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

६८९६. **कल्याण मन्दिर स्तोत्र वृत्ति—नागचन्द्र सूरि**। पत्र सं० १९। आ० ११$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{3}{4}$ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र०काल ×। ले०काल सं० १६०४ वैशाख बुदी ३। वेष्टन सं० ३८९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

६८९७. **कल्याण मन्दिर स्तोत्र वृत्ति**— ×। पत्र सं० २२। आ० ११ × ४$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २९८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

विशेष—२२ से आगे के पत्र नहीं हैं।

६८९८. **क्षेत्रपालाष्टक**— ×। पत्र सं० ६। आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १३३१। **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर।

६८९९. **कृष्णबलिभद्र सज्झाय—रतनसिंह**। पत्र सं० १। आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तुति। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २२१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

६९००. **गर्भषडारचक्र—देवनंदि**। पत्र सं० ९। आ० ८$\frac{1}{2}$ × ४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८३७। **पूर्ण**। वेष्टन सं० ९७९। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर।

६९०१. **प्रति सं० २**। पत्र सं० ३। आ० ११ × ४$\frac{3}{4}$ इंच। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ९६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

६९०२. **प्रति सं० ३**। पत्र सं० १४। आ० १०$\frac{1}{2}$ × ६ इंच। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

६९०३. **प्रति सं० ४**। पत्र सं० ४। आ० ११$\frac{3}{4}$ × ४ इंच। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४७-४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

६९०४. **गीत गोविंद—जयदेव**। पत्र सं० ४-३७। आ० १२ × ५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १७१७। अपूर्ण। वेष्टन सं० ११०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

६६०५. गुणमाला—ऋषि जयमल्ल । पत्र सं० ६ । आ० ११½ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्द्रगढ़ (कोटा) ।

विशेष --निम्न पाठ और हैं ।

महावीर जिनवृद्धि स्तवन	समयसुन्दर
चित संभू की सज्झाय	×
स्तुति	भूधरदास
नवकार सज्झाय	×
चौबीस तीर्थंकर स्तवन	×
बंभणवाडि स्तवन	×
शांति स्तवन	गुणसागर

६६०६. गुरावली स्तोत्र--× । पत्र सं० १० । आ० ६½ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६६०७. गुरु स्तोत्र--विजयदेव सूरि । पत्र सं० २ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३६-४०८ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर ।

विशेष—इति श्री विजयदेव सुरि स्वाध्याय संपूर्ण ।

६६०८. गोपाल सहस्र नाम--- × । पत्रसं० ३१ । आ० ४½ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-श्रीकृष्ण स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मंदिर बयाना ।

६६०९. गोम्मट स्वामी स्तोत्र— × । पत्र सं० ६ । आ० १० × ७ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१८-८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

६६१०. गौडीपार्श्वनाथ छंद—कुशललाभ । पत्रसं० १ । आ० १२ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६४/४७२ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६६११. गौतमऋषि सज्झाय— × । पत्रसं० १ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-गोत । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—लिखितं रिषि हरजी । भाई चांपा पठनार्थं ।

६६१२. गंगा लहरी स्तोत्र—भट्ट जगन्नाथ । पत्र सं० ६ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल सं० १८२५ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—गिरिपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

६६१३. **चक्रेश्वरीदेवी स्तोत्र**—। पत्रसं० ६। आ० ११½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल × । ले० काल सं० १८७६। पूर्ण। वेष्टनसं० १३८८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६६१४. **चतुर्दश भक्तिपाठ**। पत्रसं० ३०। आ० १०×६½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल × । ले० काल सं० १६०४ मंगसिर सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन सं० २३/१५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

६६१५. **चतुर्विध स्तवन**— × । पत्रसं० ५। आ० १०½ × ४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १२२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर अलवर।

६६१६. **चतुर्विंशति जयमाला—माधनन्दि व्रती**। पत्रसं० १। आ० १३½×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ४१४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

६६१७. **चतुर्विंशति जिन नमस्कार**— × । पत्र सं० ३। भाषा-संस्कृत। विषय—स्तवन। र०काल × । ले०काल सं० × । पूर्ण। वेष्टन सं. ६६७। **प्राप्ति स्थान**—दि. जैन मन्दिर भरतपुर।

६६१८. **चतुर्विंशति जिन स्तवन**— × । पत्र सं० १। आ० १०½×५ इंच। भाषा—प्राकृत। विषय—स्तवन। र०काल × । ले०काल सं० १४९५। पूर्ण। वेष्टन सं० १८७-११७। **प्राप्ति स्थान**— दि. जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

६६१९. **चतुर्विंशति जिनस्तुति**— × । पत्रसं० ४। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तवन। र०काल × । ले०काल सं० १८६२। पूर्ण। वेष्टन सं० ६६०। **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

६६२०. **चतुर्विंशति जिन स्तोत्र टीका—जिनप्रभसूरि**—। पत्रसं० ६। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र० काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० २३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

विशेष—बीच में श्लोक हैं तथा ऊपर नीचे संस्कृत में टीका है। मुनि वीरविजय ने प्रतिलिपि की थी।

६६२१. **प्रतिसं० २**। पत्र सं० १। आ० १२×४ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३५६/४६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

६६२२. **चतुर्विंशति जिन दोहा**— × । पत्र सं० २। आ० १०×४ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तवन। र०काल × । ले०काल सं० १९२६ माह सुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० १३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

६६२३ **चतुर्विंशति स्तवन**— × । पत्रसं० २-१३। भाषा—संस्कृत। विषय - स्तवन। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ७६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

६६२४. **चतुर्विंशतिस्तवन**—पं० जयतिलक। पत्र सं० १। आ० १२×४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३६६/४७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

६६२५. **चतुर्विंशति स्तुति—शोभनमुनि**। पत्रसं० ६। आ० १०×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र० काल × । ले०काल सं० १४८३ आसोज बुदी ४। पूर्ण। वेष्टन सं० १३५। **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

विशेष—इति वर्द्धमान स्तुतिः।

मध्य देशस्थं **संकाशद्रंग** निवासी देवर्षिसुतः सर्वदेवस्तस्यात्मजेन शोभन मुनिना विहिता इमाश्चतुर्विंशति जिनस्तुतयः तद्भ्रातृ पंडित धनपाल विहिता विवरण-नुसरेण त्रयमत्र चूर्णिर्महायमकखंडनरूपाणां तासांस्तुतीनां लेशतोऽभिधित्सुः। संवत् १४८३ वर्षे आश्वनि सि. ब. ४।

६६२६. **चतुर्विंशति स्तोत्र**—पं० जगन्नाथ। पत्र सं० १५। आ० ६३×६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी।

विशेष—प्रति सटीक है। पं० जगन्नाथ भ० नरेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे।

६६२७. **चन्द्रप्रभु स्तवन**—**आनन्दघन**। पत्र सं० २। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तवन। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ७७०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

६६२८. **चित्रबंध स्तोत्र**— × । पत्रसं० ५। आ० १०×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ११२०। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—स्तोत्र की रचना को चित्र में शोभित किया गया है।

६६२९. **चित्रबन्ध स्तोत्र**— × । पत्रसं० २। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—स्तोत्र। र० काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ३७८। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर।

६६३०. **चित्रबन्ध स्तोत्र**— × । पत्रसं० २। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र० काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ४२०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—महाराजा माधवसिंह के राज्य में आदिनाथ चैत्यालय में जयनगर में पं० केशरीसिंह के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी। प्रशस्ति अच्छी है।

६६३१. **चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र**— × । पत्र सं० १। आ० १३½×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र० काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ४१८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

६६३२. **चेतन नमस्कार**—× । पत्र सं० २। आ० ६½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २१५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

६६३३. **चैत्यवंदना**—× । पत्रसं० ४ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय—स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति संस्कृत टब्बा टीका सहित है ।

६६३४. **चैत्यालय वीनती**---**दिगम्बर शिष्य** । पत्रसं० ३ । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

अन्तिम पद्य—

दिगम्बर शिष्य इम भणेइ ए वीनतीमइ करीए ।
जो प्रभु मो मनिवास सफल कीरती गुरु इम भणे ए ।

विशेष—हिन्दी में एक नेमीश्वर वीनती और दी हुई है ।

६६३५. **चौरासी लाख जोनना विनती**—**सुमतिकीर्ति** । पत्रसं० ६ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा —हिन्दी पद्य । विषय —स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

श्री मूलसंघ महंतसंत गुरु लक्ष्मीचन्द ।
वीरचन्द विबुधवंत ज्ञानभूषण मुनींद ॥
जिनवर वीनती जो भणे मन धरी आनंद ।
भुगती मुगती कर ते लहे परमानंद ॥
सुमतिकीर्ति भावे करिए ध्याजों जिनवर देव ।
ससार माहीं नहीं अवरत्रो पाम्यो सिवपद हेत ॥

इति चौरासी लक्ष जोनना वीनती संपूर्ण ।

६६३६. **चौबीस तीर्थंकर वीनती**—**देवाब्रह्म** । पत्र सं० १६ । आ० १२×५½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

६६३७. **चौबीस तीर्थंकर स्तुति**— × । पत्र सं० २ । आ० १०¾×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ३५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६६३८. **चौबीस तीर्थंकर स्तुति (सयुस्वयंभू)**— × । पत्रसं० ३ । आ० ८×६½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११४५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

६६३९. **चौवीस महाराज की विनती**—**चन्द्रकवि** । पत्र सं० ६-२३ । आ० ६½×६ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल सं० १८६० आसोज सुदी १५ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

६६४०. **चौबीस महाराज की वीनती--हरिचन्द्र संघी**। पत्र सं० २५। भाषा—हिन्दी। विषय—विनती। र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० २८१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष--कठिन शब्दों का अर्थ दिया हुआ है। प्रति प्राचीन है इसके अतिरिक्त निम्न और हैं—

१- जिनेन्द्रपुराण—दीक्षित देवदत्त। भाषा-संस्कृत। र० काल × । ले० काल १८४७। पूर्ण।

विशेष—ब्रह्मचारी करुणा सागर ने कायस्थ रामप्रसाद श्रीवास्तव अटेर वालों से प्रतिलिपि करवाई थी।

२- पूजा फल— × ।

३- सुदर्शन चरित्र—श्री भट्टारक जिनेन्द्रभूषण।

विशेष—श्री भरतपुर बटेश्वर तें लश्करी देहरे में श्री पं० केसरीसिंह के लिए श्रुतज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थ बनाई थी।

६६४१. **चौसठ योगिनी स्तोत्र**—×। पत्रसं० २। आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र० काल × । ले० काल सं० १८७९ कार्तिक सुदी ११। वेष्टन सं० ४३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—लिपिकार पं० झांझूराम।

६६४२. **चौसठ योगिनी स्तोत्र**— × । पत्रसं० २। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

विशेष—ऋषि मंडल स्तोत्र भी है।

६६४३. **चन्द्रप्रभ छंद—अ० नेमचन्द**। पत्रसं० ४६। आ० ६$\frac{1}{2}$×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल सं० १८५०। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ७१/४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

६६४४. **छंद देसंतरी पारसनाथ—लक्ष्मी वल्लभ गणि**। पत्रसं० ६। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ७१४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

६६४५. **जयतिहुयण प्रकरण—अभयदेव**। पत्र सं० ३। आ० १०×४ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—स्तवन। र० काल। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ४५३/२६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

अन्तिम—

एयम वारियजलदेव ईम स्हवण भहुसवज्ज अणलिय।
गुणगहण तुम्ह अंगीकरिय गुणिगण सिद्धउ॥
एमह पसीअमु पासनाह थंभणपुर ठियइअ।
मुणिवर श्री अभयदेव विनवइ साएंदिय॥

इति श्री जयतिहुयण प्रकरणं संपूर्ण।

६६४६. **जिनदर्शन स्तुति**— × । पत्र सं० ३ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा ।

६६४७. **जिनपाल ऋषिकाचौढलिया—जिनपाल** । पत्र सं० ३ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तुति । र० काल × । ले०काल सं० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी) ।

६६४८. **जिनपिंजर स्तोत्र—कमलप्रभ** । पत्र सं० ३ । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

६६४९. **जिनपिंजर स्तोत्र** । पत्र सं० १ । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

६६५०. **जिनपिंजर स्तोत्र**— × । पत्र सं० ५ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

६६५१. **जिनपिंजर स्तोत्र**— × । पत्र सं० ४ । आ० ६½ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३३/४८ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मंदिर इन्द्रगढ़ (कोटा)

विशेष परमानंद स्तोत्र भी है ।

६६५२. **जिनरक्षा स्तोत्र** । पत्र सं० ५ । आ० ६×२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मंदिर बयाना ।

६६५३. **जिनवर दर्शन स्तवन—पद्मनन्दि** । पत्र सं० ४ । आ० ८½ × ४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० ३६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

६६५४. **जिनशतक** । × । पत्र सं० १७ । आ० ८½ × ३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ भीगान, बूंदी ।

६६५५. **जिनशतक**— × । पत्र सं० २९ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

६६५६. **जिनसमवशरणमंगल—नथमल** । पत्र सं० २४ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल सं० १८२१ वैशाख सुदी १४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर बयाना ।

विशेष—नथमल ने यह रचना फकीरचंद की सहायता से पूर्ण की थी जैसा कि निम्न पद्य से पता लगता है—

चन्द फकीर सहायतैं मूल ग्रंथ अनुसार ।
समोसरन रचना कथन भाषा कीनी सार ॥ २०१ ॥

पद्यों की सं० २०२ है।

६६५७. **जिनदर्शन स्तवन भाषा**— × । पत्र सं० २ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—मूलकर्ता पद्मनंदि है ।

६६५८. **जिनसहस्रनाम—आशाधर** । पत्रसं० ४ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६५९. **प्रति सं० २** । पत्र सं० २५ । आ० १३ × ६ इञ्च । ले० काल सं० १८६५ कार्तिक शुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८२ । **प्राप्ति स्थान** - भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

६६६०. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० ६ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६६६१. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० ८ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १६०६ (शक) । पूर्ण । वेष्टन सं० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

६६६२. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० ७ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्द्रगढ (कोटा)

६६६३. **प्रति सं० ६** । पत्रसं० १५ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । टीकाकार रत्नकीर्ति शिष्य यशकीर्ति । उपासकों के लिए लिखी थी । प्रति प्राचीन है ।

६६६४. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० १० । आ० १२ × ४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर ।

६६६५. **प्रति सं० ८** । पत्र सं० ६ । आ० १० × ४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

६६६६. **जिनसहस्रनाम—जिनसेनाचार्य** । पत्र सं० ७ आ० ६½ × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६९६७. **प्रति सं० २**। पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इञ्च। ले० काल× । पूर्ण। वेष्टन सं० १२३४। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६९६८ **प्रति सं० ३**। पत्र सं० १३। आ० ९×४ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ४७१। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

६९६९. **प्रति सं० ४**। पत्र सं० १६। आ० ११×४$\frac{3}{4}$ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १८२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६९७०. **प्रति सं० ५**। पत्र सं० ११। आ० ८×४ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १३०५। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

६९७१. **प्रति सं० ६**। पत्र सं० ३६ । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १९३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—भक्तामर आदि स्तोत्र भी है।

६९७२. **प्रति सं० ७**। पत्र सं० ३८। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—दो प्रतियां और हैं।

६९७३. **प्रति सं० ८**। पत्र सं० १०। आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १३०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर।

६९७४. **प्रति सं० ९**। पत्र सं० ११। आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल सं० १९०५। पूर्ण। वेष्टन सं० ४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

६९७५. **प्रति सं० १०**। पत्र सं० १२। आ० ९$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल सं० १९३७। पूर्ण। वेष्टन सं० २४१। **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

६९७६. **प्रति सं० ११**। पत्र सं० ११। आ० ८×६$\frac{1}{2}$ इंच। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १२६। **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मंदिर भादवा (राज०)

६९७७. **प्रति सं० १२**। पत्र सं० ९। आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ८७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूंदी)

६९७८. **प्रति सं० १३**। पत्र सं० २५। आ० ९$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा।

६९७९. **प्रति सं० १४**। पत्र सं० २१–३५। आ० १२$\frac{1}{2}$×५$\frac{3}{4}$ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ७१४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

६९८०. **जिन सहस्रनाम टीका—अमरकीर्ति** ×। पत्र सं० ६५। आ० १२$\frac{1}{2}$× ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र० काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १२८८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

विशेष—मूल्य ७ रु० दस आना लिखा है।

६९८१. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ७५ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इंच । ले०काल सं० १९६२ मंगसिर बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

६९८२. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० ७७ । आ० ९×५ इञ्च । ले०काल × । **पूर्ण** । वेष्टन सं० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६९८३. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० १५३ । आ० ८$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । **पूर्ण** । वेष्टन सं० ९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

६९८४. **प्रतिसं० ५** । पत्र सं० २-८ । आ० १२×५$\frac{3}{4}$ इंच । **ले०काल** सं० १७४२ मंगसिर बुदी १४ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६९८५. **जिनसहस्र नाम टीका—श्रुतसागर** । पत्रसं० १४७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल सं० १६०१ आसोज सुदी ६ । **पूर्ण** । **वेष्टनसं०** ३९३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६९८६. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० १०१ । आ० १३ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । **ले०काल** सं० १५६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५६६ वर्षे पौष बुदी १३ भौमे परम निरग्रंथाचार्य श्री त्रिभुवनकीर्त्युपदेशात् श्री सहस्र नाम लिखापितं । मंगलमस्तु ।

६९८७. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ११० । आ० १२$\frac{1}{2}$ ×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

६९८८. **प्रति संख्या ४** । पत्रसं० १०९ । आ० ११×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

६९८९. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० १७३ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले० काल । पूर्ण । वेष्टनसं० ३९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६९९०. **प्रतिसं० ६** । पत्रसं० १३७ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३३-६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

६९९१. **जिनसहस्त्र नाम वचनिका**— × । पत्र सं० २८ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

६९९२. **जिनस्मरण स्तोत्र**—× । पत्रसं० ९ । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

६९९३. **जैनगायत्री**—× । पत्रसं० ५ । आ० ८×३$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल सं० १९२७ कार्तिक बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०१९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६९९४. **ज्वाला मालिनी स्तोत्र** × । पत्रसं० २० । आ० ८ × ३½ इन्च । **भाषा**-संस्कृत । **विषय**–स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४३६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैनमंदिर अजमेर ।

६९९५. **ज्वाला मालिनी स्तोत्र**—× । पत्र सं० ५ । आ० ११ × ८ इन्च । **भाषा**–संस्कृत । **विषय**–स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दीसा ।

६९९६. **तकाराक्षर स्तोत्र**—× । पत्रसं० २ । आ० १०½ × ५ इन्च । **भाषा**—संस्कृत । **विषय**–स्तोत्र । र०काल × । ले०काल सं० १८२२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २५४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रत्येक पद तकार से प्रारंभ होता है ।

६९९७. **तारण तरण स्तुति (पंच परमेष्टी जयमाल)**—×। पत्र सं० २ । आ० ६ × ५ इन्च । **भाषा**—हिन्दी पद्य । **विषय**–स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३० × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

६९९८. **तीर्थ महात्म्य (सम्मेद शिखर विलास)**—**मनसुखराय**। पत्र सं० ११० । आ० १०½ × ६½ इञ्च । **भाषा**— हिन्दी । **विषय**–महात्म्य स्तोत्र । **र०काल** सं० १७४५ आसोज सुदी १० । ले०काल सं० १९१० आसोज वुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७८ × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपंथी दीसा ।

विशेष— ज्ञानचंद तेरापंथी ने प्रतिलिपि की थी ।

६९९९. **त्रिकाल संध्या व्याख्यान**—×। पत्र सं ०९ । आ० ११ × ४ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७०००. **थंभण पार्श्वनाथ स्तवन**—× । पत्र सं० ३ । **भाषा**—प्राकृत । विषय-स्तवन । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७००१. **दर्शन पच्चीसी**—**गुमानीराम** । पत्र सं० ११ । आ० ७ × ६ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय–स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मंदिर अलवर ।

विशेष—आरतिराम ने संशोधन किया था ।

७००२. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ९ । आ० १२ × ६½ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

७००३. **दर्शन स्तोत्र**—**भ० सुरेन्द्र कीर्ति** । पत्र सं० १ । आ० १०½ × ५½ इन्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ६९८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७००४. **द्वात्रिंशिका (युक्त्यष्टक)**— × । पत्रसं० ३ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

७००५. **नन्दीश्वर तीर्थ नमस्कार**— × । पत्रसं० ३ । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

७००६. **नवकार सवैया--विनोदीलाल** । पत्रसं० १२ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४६-६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूँगरपुर ।

७००७. **नवग्रह स्तवन**— × । पत्रसं० १३ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत, संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । **वेष्टनसं०** ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—३ से ६ तक पत्र नहीं है । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

७००८. **नवग्रह स्तोत्र—भद्रबाहु** । पत्र सं० १ । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

७००९. **नवग्रह स्तोत्र**— × । पत्रसं० १ । आ० १० × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० ४२२ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

७०१०. **नवग्रह पार्श्वनाथ स्तोत्र**— × । पत्र सं० १ । आ० ६$\frac{3}{4}$ × ४ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० ४४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७०११. **निर्वाण काण्ड भाषा—भैया भगवती दास** । पत्रसं० २ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र०काल सं० १७४१ । आसोज सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० ६०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

७०१२. **प्रति सं० २** । पत्र सं० २ । आ० ६ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन सं० ६६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७०१३. **नेमिजिनस्तवन—ऋषिवर्द्धन** । पत्रसं० १ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७०१४. **नेमिनाथ छंद—हेमचंद्र** । पत्रसं० १६ । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल सं० १८८१ । पूर्ण । वेष्टनसं० २५३/६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—बोरी मध्ये संभवनाथ चैत्यालये लिखितं ।

७०१५. **नेमिनाथ नव मंगल**—**विनोदीलाल**। पत्रसं० ८। भाषा—हिन्दी। विषय स्तवन। र०काल सं० १७४४। ले०काल सं० १९४०। पूर्ण। वेष्टन सं० ४९९। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

७०१६. **पद्मावती गीता**—**समयसुन्दर**। पत्रसं० २। आ० ×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-स्तोत्र। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—३४ पद्य हैं।

७०१७. **पद्मावती पंचांग स्तोत्र**—× । पत्रसं० २६। आ० ८½ × ४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल × । ले०काल सं० १७८२। पूर्ण। वेष्टनसं० १९९। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७०१८. **पद्मावती स्तोत्र**— × । पत्रसं० ५६। आ० ३ × ३ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र०काल × । ले०काल सं० १८८०। पूर्ण। वेष्टन सं० ८९२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७०१९. **पद्मावती स्तोत्र**—× । पत्र सं० ४। आ० ११½ × ४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ६३२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७०२०. **पद्मावती स्तोत्र**—× । पत्रसं० २४। आ० ९×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ६१३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७०२१. **पद्मावती स्तोत्र**— × । पत्र सं० ४। आ० ११ × ५½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १००। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अजमेर।

७०२२. **पद्मावती स्तोत्र**—× । पत्र सं० २। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ६४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

७०२३. **पद्मावती स्तोत्र**— × । पत्रसं० १०। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ३५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

७०२४. **प्रति सं० २**। पत्र सं० १०। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

७०२५. **पद्मावती स्तोत्र**—× । पत्र सं० ७२। आ० १०½ × ७ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १४६/७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)

विशेष--यंत्र साधन विधि भी दी हुई है।

७०२६. **परमज्योति (कल्याण मन्दिर स्तोत्र) भाषा—बनारसीदास** । पत्र सं० ४। आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६०४ । प्राप्ति **स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७०२७. **परमानन्द स्तोत्र**—× । पत्रसं० ३ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

७०२८. **पात्र केशरी स्तोत्र—पात्र केशरी** । पत्र सं० ५ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७०२९. **पात्र केशरी स्तोत्र टीका** —× । पत्र सं० १४ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय— स्तोत्र । र० काल × । ले०काल सं० १६८७ आसोज बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५५।४३४ प्राप्ति **स्थान** · दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७०३०. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० १४ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३५६/४३५ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७०३१. **पार्श्वजिन स्तुति—×** । पत्र सं० १ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मंदिर उदयपुर ।

७०३२. **पार्श्वजिन स्तोत्र—जिनप्रभ सूरि** । पत्रसं० ४ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४४१ । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—इति जिनप्रभ कृत पारसी भाषा नमस्कार काव्यार्थ ।

७०३३. **पार्श्वजिन स्तोत्र**—× । पत्र सं० ३ । आ० ११×५½ इंच · भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७०३४. **पार्श्वदेव स्तवन—जिनलाभ सूरि** । पत्र सं० १७ । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७०३५. **पार्श्वनाथ छंद—हर्षकीर्ति**—× । पत्र सं० ४ । आ. ६½×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले.काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

विशेष—२८ छंद हैं ।

तेरीवंदन जाऊं सोभा पाउ वीनतडी सुणंदा है ।
क्या कहुं तोसूं सगत्मा बहोती तोसु मेरा मन उलैभंदा है ।
सिद्धि दीवासी तिहु रहवासी सेवक बल संदा है ।
पंजाब निसाणी पासजप्राणी गुण हर्षकीर्ति गवंदा है ।।

७०३६. **पार्श्वनाथ छंद—लक्षरुचि (हर्षरुचि के शिष्य)** । पत्र सं. २ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर डबलाना (बूंदी)

७०३७. **पार्श्वनाथजी की निशानी—जिनहर्ष** । पत्र सं० ४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तुति । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४१/४०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है ।

तहां सिद्धादावासीय निरदाद्या सेवक जस विलवंदा है ।
घुघर निसाणी सा पास बखाणी गुण जिणहर्ष सुणंदा है ॥

७०३८. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १५ । आ० ७½×४ इञ्च । ले० काल सं० १७६७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

७०३९. **पार्श्वस्तवन**— × । पत्र सं० १ । आ० १०×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११८८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

७०४०. **पार्श्वनाथ स्तवन**— × । पत्र सं० १ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०४-६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

७०४१. **पार्श्वनाथ स्तवन**— × । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६०/४६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर ।

७०४२. **पार्श्वनाथ स्तवन**— । पत्र सं० ३ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६०५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—कहीं २ कठिन शब्दों के अर्थ दिये हैं ।

७०४३. **पार्श्वनाथ (देसंतरी) स्तुति · पास कवि** । पत्र सं० २ । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तवन । र०काल × । ले०काल सं० १७६८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी बसवा ।

विशेष—रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है ।

आदि भाग—

सुवचन सांपो सारदा मया करो मुक्त माय ।
तोसु प्रमन सुवचन तणी कुमणान श्री भावं काय ॥
कालिदास लरिषा किया रक थकी कविराज ।
महिर करे माता मुने निज सुत जाणि निवाज ॥

अन्तिम भाग—

जपै सको जगदीस ईस भय भवण अखंडित ।
अद्भुत रूप अनूप मुकुट फणि मणि सिर मंडित ।
धरै आण सहु ध्याहु उदधि मंत्रि पजितार्द ।
प्रकट साल पाताल सरग कीरति सुहाई ।
थिरिलविलल भवा पापु तन पुरण प्रभु वैकुंठपुरी ।
प्रणमेव पास कविराज इम तवीसो छंद देसंतरी ।।

इति श्री पार्श्वनाथ देसंतरी छंद संपूर्ण ।

७०४४. पार्श्वनाथ स्तोत्र— × । पत्र सं० ४ । आ० १२$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल सं० १८६३ माघ सुदी १५ । पूर्ण । **वेष्टन सं० १११ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

७०४५. पार्श्वनाथ स्तोत्र— × । पत्र सं० १ । आ० १३$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० ४१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

७०४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन सं० ४३२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

७०४७. पार्श्वनाथ स्तोत्र (लघु)— × । पत्र सं० ६ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल सं० १६६२ वैशाख सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

७०४८. पार्श्वनाथ स्तोत्र—पद्मनंदि । पत्र सं० ८ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टन सं० ६२ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—पत्र ३ से सिद्धप्रिय तथा स्वयंभू स्तोत्र भी है ।

७०४९. पार्श्वनाथ स्तोत्र—पद्मप्रभदेव । पत्र सं०१ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७०५०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल सं० १८२२ । वेष्टन सं० ६६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—पत्र पर चारों ओर संस्कृत टीका दी हुई है । कोई जगह खाली नहीं है ।

७०५१. पोषह गीत—पुण्यलाभ । पत्र सं० १ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी) ।

७०५२. **पंच कल्याणक स्तोत्र**—× । पत्र सं० ६ । आ० ८$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । **विषय**-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । **पूर्ण** । वेष्टन सं० १३२२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

७०५३. **पंच परमेष्ठी गुण**—× । वेष्टनसं० ७ । आ० ११ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

७०५४. **पंच परमेष्ठी गुण वर्णन**—× । पत्र सं० २० । आ० ८$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{3}{4}$ इंच । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । विषय—स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १७८-४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—इसके अतिरिक्त कर्म प्रकृतियां तथा बारह भावनाओं आदि का वर्णन भी है ।

७०५५. **पंचमंगल**—**रूपचन्द** । पत्र सं० ८ । आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय-स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७०५६. **प्रतिसं०** २ । पत्रसं० ५ । आ० १०×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । र०काल × । ले०काल × । **पूर्ण** । वेष्टनसं० ८४/६२ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

७०५७. **प्रति सं** ३ । पत्रसं० ६ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १८१७ मंगसिर बुदी १ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३१६ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

७०५८. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० ५-१३ । आ० ११ $\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

७०५९. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० १२ । आ० ६ × ४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

७०६०. **प्रतिसं० ६** । पत्रसं० ५ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ बूंदी ।

७०६१. **प्रति सं० ७** । पत्रसं० ८ । आ० ६ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन छोटा मंदिर बयाना ।

७०६२. **प्रतिसं० ८** । पत्र सं० ११ । पूर्ण । ले०काल × । वेष्टन सं० ४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—एक प्रति और है ।

७०६३ **प्रतिसं० ९** । पत्र सं० ७ । आ० ९$\frac{1}{2}$ × ७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४४/६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्द्रगढ । (कोटा)

७०६४. **पंचवटी सटीक** । पत्र सं० ३ । आ० १२ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—चौबीस तीर्थंकर एवं सरस्वती स्तुति सटीक है।

७०६५. पंचस्तोत्र—× । पत्रसं० २१ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७०६६. पंचस्तोत्र—× । पत्रसं० ७३ । आ० १०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

विशेष—प्रति टीका सहित है ।

७०६७. पंचस्तोत्र व्याख्या × । पत्रसं० ११ । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६/४४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७०६८. पंचमीस्तोत्र—उदय । पत्र सं० १ । आ० १०× ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है—

नेमि जिणवर नमित सुरवर सिध वधूवर नायको ।
आणंद आणी भजन प्राणी सुख संतति दायको ।
वर विबुध भूषण विगत दूषण थी शंकर सौभाग्य कवीश्वरो ।
तस सीस जंपइ उदय इणि परि सयलि संघि मंगल करो ।

इति पंचमी स्तोत्र ।

७०६९. पंचक्खाण—×। पत्रसं० १ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

७०७०. प्रबोधबावनी—जिनरंग सूरि । पत्रसं० ८ । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल सं० १७८१ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७०७१. बगलामुखी स्तोत्र—× । पत्र सं० ३ । आ० ९ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२४८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७०७२. बारा आरा का स्तवन—ऋषभो (रिखब) । पत्र सं० ५ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तुति । र० काल सं० १७५१ भादवा सुदी २ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—अन्तिम कलश निम्न प्रकार है—

भलत बन कीधो नाम लीधो गोतम प्रश्नोत्तर सही ।
संवत् सतरे इंदचंद सु भादवा सुदी दोयज मही ।

तपगच्छ तिलक समान सद्गुरु विजयसेन सूरि तणू ।
नागरसुत ऋषभो इम बोलै पाप आलोवै आपणूं ॥७५॥

इति श्री चारु आरा की स्तवन संपूर्ण ।

७०७३. **भक्तामर स्तोत्र—मानतुंगाचार्य ।** पत्र सं० ६ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७०७४. **प्रति सं० २ ।** पत्र सं० ८ । आ० ४ × ४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४४४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है । प्रति प्राचीन है ।

७०७५. **प्रतिसं० ३ ।** पत्र सं० १५ । आ० १० × ४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७६५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

७०७६. **प्रतिसं० ४ ।** पत्रसं० ६ । आ० १०½ × ५ इञ्च । ले०काल सं० १८७० माह सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—एकलिङ्ग पार्श्वनाथ स्तोत्र भी है ।

७०७७. **प्रतिसं० ५ ।** पत्रसं० ६ । आ० ११½ × ५ इञ्च । ले०काल सं० १७५७ । पूर्ण । वेष्टनसं० २५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति टिप्पण सहित है । पं० तिलोकचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

७०७८. **प्रतिसं० ६ ।** पत्र सं० २७ । आ० ६ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १८१२ पोष सुदी सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति टीका है प० लालचन्द ने अपने लिये लिखी थी ।

७०७९. **प्रति सं० ७ ।** पत्रसं० ८ । आ० ८ × ६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—५प्रतियां और हैं ।

७०८० **प्रतिसं० ८ ।** पत्र सं० ८ । आ० ६½ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—दो प्रतियां और हैं ।

७०८१. **प्रतिसं० ९ ।** पत्र सं० ९ । आ० ६½ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७२।४७ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)

७०८२. **प्रतिसं० १० ।** पत्रसं० ६ । आ० ११ × ५ इंच । ले० काल सं० १९६५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक)

७०८३. **प्रतिसं० ११ ।** पत्रसं० ८ । आ० १०½ × ४ इञ्च । ले०काल सं० १७२० मंगसिर बुदी १ । पूर्ण । वेष्टनसं० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—आचार्य रामचन्द तत् शिष्य श्री राघवदास के पठनार्थ गोपाचल में प्रतिलिपि हुई थी ।

७०८४. **प्रतिसं० १२ ।** पत्रसं० २३ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रति कथा तथा टब्बा टीका सहित है।

७०८५. **प्रति सं० १३** । पत्रसं० ७। आ० १०½ × ५ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ४/२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर डूंगरपुर (राज०)

७०८६. **प्रति सं० १४**। पत्रसं० १६। आ० ६ × ६ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ६१। **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर।

विशेष—प्रारम्भ में आदित्यवार कथा हिन्दी में और है।

७०८७. **प्रति सं० १५**। पत्र सं० ६। आ० ७ × ६ इञ्च। ले० काल सं० १६५१। पूर्ण। वेष्टन सं० १७१-७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

७०८८. **प्रति सं० १६**। पत्रसं० ७। आ० ६½ × ४½ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ६४-३६ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियां का डूंगरपुर।

विशेष—हिन्दी व गुजराती टब्बा टीका सहित है।

७०८९. **प्रति सं० १७**। पत्र सं० २१। आ० १०½ × ७ इञ्च। ले० काल सं० १६५१। अपूर्ण। वेष्टन सं० ४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह और भी है—तत्वार्थ सूत्र, कल्याण मन्दिर, एकीभाव। बीच के ११ से १६ पत्र नहीं हैं।

७०९०. **प्रति सं० १८**। पत्रसं० २–२४ । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बनवा।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है।

७०९१. **प्रति सं० १९**। पत्रसं० ५। आ० ६ × ४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ४७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

७०९२. **प्रति सं २०**। पत्रसं० २–१६। आ० ११×६ इञ्च। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ४३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

७०९३. **प्रति सं० २१**। पत्र सं० १६। आ० १० × ४ इंच। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—कहीं कहीं हिन्दी में शब्दों के अर्थ दिये है।

७०९४. **प्रति सं० २२** । पत्रसं० ५। आ० ११ × ४ इंच। ले० काल सं० १७५८। पूर्ण। वेष्टन सं० २१७। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर।

विशेष—घंटा कर्ण यंत्र भी है।

७०९५. **प्रति सं० २३**। पत्रसं० १२। आ० ८ × ४ इञ्च। ले० काल सं० १९८०। पूर्ण। वेष्टन ५४ ८८। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मंदिर भादवा (राज०)

विशेष—भादवा में भंवरलाल चौधरी ने लिपि की थी।

७०९६. **प्रति सं० २४**। पत्र सं० ११। आ० ११ × ७ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३८; ९७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर भादवा (राज०)

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है।

७०९७. **प्रतिसं० २५।** पत्रसं० ८। आ० ८×५ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १८८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—एक प्रति और है।

७०९८. **प्रतिसं० २६।** पत्र सं० ६। आ० ७½×५½ इञ्च। ले० काल × । **पूर्ण**। वेष्टन सं० १६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—उमास्वामि कृत तत्त्वार्थसूत्र भी है जिसके २२ पृष्ठ हैं। आच्युराम सरावगी ने मदनगोपाल सरावगी से प्रतिलिपि कराई थी।

७०९९. **प्रतिसं० २७।** पत्र सं० ५। आ० ८×५ इञ्च। ले०काल × । **पूर्ण**। वेष्टन सं० ४८-१३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—कहीं २ कठिन शब्दों के अर्थ दिये हैं।

७१००. **प्रति सं० २८।** पत्रसं० ८। आ० ८½×४½ इञ्च। ले०काल सं० १९५८ चैत्र बुदी ११। पूर्ण। वेष्टनसं० १५२। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन खंडेलवाल पंचायती मंदिर अलवर।

विशेष—इस प्रति में ५२ पद्य हैं। प्रति स्वर्णाक्षरी है।

अन्तिम चार पद्य निम्न प्रकार हैं—

नाथः परः परमदेव वचोभिदेयो।
लोकत्रयेपि सकलार्थ वदस्ति सर्व्व।
उच्चैरतीव भवतः परिघोषयेतो।
नैदुंगंभीर मुरदुंदभयः सभायां ॥४९॥
वृष्टिर्दिवः सुमनसां परितः प्रपातः।
प्रीतिप्रदा सुमनसां च मधुव्रतानां,
प्रीती राजीवं सा सुमनसां सुकुमार सारा,
सामोदसां पदमराजि नते सदस्था ॥५०॥
सुप्ता मनुष्य भहुसामपि कोटि संख्या,
भाजां प्रभाप्रसर मन्वहु माहुसंति।
तस्यंस्तमः पटलभेदमशक्तहीनं,
जैनी तनु द्युतिरशेष तमो पहूंती ॥५१।
देवत्वदीय शकलामलकेवलाव,
बोधाति गाद्य निहृयद्धुवरत्नराशि।
घोषः स एव यति सज्जन तानुमेने,
गंभीर भार भरितं तव दिव्य घोषः ॥५२॥

७१०१. **प्रतिसं० २९।** पत्र सं० ७। ले० काल सं० १९७६। पूर्ण। वेष्टन सं० ७३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—संस्कृत टीका सहित मिर्जापुर में प्रतिलिपि हुई। भंडार में ५ प्रतियां और हैं।

७१०२. **प्रति सं० ३०** । पत्र सं० ९ । आ० १०$\frac{3}{5}$×४$\frac{3}{5}$ इञ्च । ले० काल सं० १८७२ फागुण सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

७१०३. **प्रति सं० ३१** । पत्र सं० २५ । आ० ११×७ इञ्च । ले० काल सं० १९६४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—४८ मंत्र यंत्र दिये हुए हैं । प्रति ऋद्धि मंत्र संग्रह है ।

७१०४. **प्रति सं० ३२** । पत्र सं० १० । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल सं० १९०८ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

७१०५. **प्रति सं० ३३** । पत्र सं० ६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १९०४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२४ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर ।

विशेष—बूंदी में नेमिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी । संस्कृत में संकेतार्थ दिए हैं ।

७१०६. **प्रति सं० ३४** । पत्रसं० ५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २२५ । **प्राप्ति स्थान**-उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं जीर्ण है । ३ प्रतियां और हैं ।

७१०७. **प्रतिसं० ३५** । पत्र सं० ८ । आ० ८$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{5}$ इञ्च । ले० काल सं० १८३४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

विशेष—स्वर्णाक्षरों में लिखी हुई है । श्लोकों के चारों ओर भिन्न २ प्रकार की रंगीन बार्डर है ।

७१०८. **भक्तामर स्तोत्र भाषा ऋद्धि मंत्र सहित**—× । पत्रसं० ७ । आ० ९$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-स्तोत्र एवं मंत्र शास्त्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११६८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७१०९. **भक्तामर स्तोत्र ऋद्धि मंत्र सहित**— × । पत्र सं० २९ । आ० १३×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १९२८ । अपूर्ण । वेष्टन सं० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

७११०. **प्रति सं० २** । पत्र सं० २५ । आ० १०×६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७१११. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० १–२५ । आ० ९×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १३४–६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

७११२. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० २३ । आ० १०×६ इंच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १३५–६२ **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७११३. **प्रति सं० ५** । पत्रसं० ४८ । आ० ९×६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८६–१४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

७११४. **प्रतिसं० ६** । पत्र सं० २४ । आ० १०$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ९३/४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा)

७११५. **प्रति सं० ७।** पत्र सं०४५ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

७११६. **प्रतिसं० ८।** पत्रसं० १-२६ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

७११७. **प्रतिसं० ९।** पत्रसं० ५२ । आ० ६×६ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

७११८. **प्रतिसं० १०।** पत्रसं० ८६ । आ० ६½×४ इञ्च । ले०काल सं० १८४६ भादवा बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा ।

७११९. **प्रतिसं० ११।** पत्र सं० १६ । आ० ९½×४ इञ्च । ले०काल सं० १७९२ फालुन सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नायदी बूंदी ।

७१२०. **प्रतिसं० १२।** पत्र सं० २७ । आ० १०½×७½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

विशेष—चोबे जगन्नाथ चंदेरीवाले ने चन्द्रपुरी में प्रतिलिपि की थी ।

७१२१. **भक्तामर स्तोत्र ऋद्धि मंत्र सहित**— × । पत्र सं० २४-६६ । आ० ४×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

७१२२. **भक्तामर स्तोत्र ऋद्धि मंत्र सहित**— × । पत्र सं० २१ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

७१२३. **भक्तामर स्तोत्र ऋद्धि मंत्र सहित**— × । पत्र संख्या ५ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–मंत्र स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ६६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७१२४. **भक्तामर स्तोत्र टीका**—**अमरप्रभ सूरि** । पत्र सं० १० । भाषा—संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र०काल × । ले० काल सं० १८१२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

७१२५. **प्रतिसं० २।** पत्र सं० २८ । ले० काल सं० १८८८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—पत्र सं० १६ से जीवाजीव विचार है ।

७१२६. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० ८ । आ० ९½×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर ।

विशेष—टीका का नाम सुखबोधिनी है । केवल ४४ सूत्र हैं । प्रति श्वेताम्बर आम्नाय की है ।

७१२७. **भक्तासार स्तोत्र टीका**— × । पत्रसं० २६ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २४७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—टीका का नाम **सुख बोधिनी टीका** है।

७१२८. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० ६। आ० ११$\frac{१}{२}$×५$\frac{१}{२}$ इञ्च। **ले०काल** × । अपूर्ण। **वेष्टन सं०** १५३। **प्राप्ति स्थान**- भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

७१२९. **प्रतिसं० ३**। पत्र सं० १६५। आ० ६$\frac{३}{४}$×४$\frac{१}{२}$ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १३२५। **प्राप्ति स्थान**--भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७१३०. **प्रति सं० ४**। पत्र सं० ६७। आ० ८×४$\frac{१}{२}$ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७१३१. **प्रति सं० ५**। पत्र सं० १२ । आ० १०×४ इञ्च। **ले०काल सं०** १६६७। पूर्ण। वेष्टन सं० १३६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६६७ वर्षे ग० श्री गद्दे श्री जिणदास शिष्य ग० हर्षविमल लिखितं नरायणा नगरे स्वयं पठनार्थं।

७१३२. **प्रति सं० ६**। पत्र सं० १२। आ० ९$\frac{१}{२}$×६$\frac{१}{२}$ इञ्च। **ले०काल सं०** १९३२ काती बुदी ९। पूर्ण। वेष्टन सं० १५४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७१३३. **प्रतिसं० ७**। पत्रसं० ५। आ० १०$\frac{१}{२}$×४$\frac{१}{२}$ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ७१२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर।

७१३४. **प्रतिसं० ८**। पत्र सं० १९। आ० ११×७ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १५९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

७१३५. **प्रतिसं० ९**। पत्रसं० ४१। आ० १०$\frac{१}{२}$×४$\frac{१}{२}$ इंच। ले० काल×। पूर्ण। वेष्टन सं० २०। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

विशेष—हिन्दी टीका भी दी हुई है।

७१३६. **प्रतिसं० १०**। पत्रसं० १५। आ० १०×४$\frac{१}{२}$ इञ्च। **ले०काल** × । अपूर्ण। वेष्टन सं० २६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)

७१३७. **प्रतिसं० ११**। पत्र सं० २१। आ० ११×५$\frac{३}{४}$ इञ्च। ले० काल स०१८५० अगहन बुदी १। पूर्ण। वेष्टन स० १८१/४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर झन्दरगढ (कोटा)

विशेष—लावेरी ग्राम में प्रतिलिपि हुई थी।

७१३८. **प्रतिसं० १२**। पत्र सं० १४। आ० १०×६$\frac{३}{४}$ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

७१३९. **प्रति सं० १३**। पत्रसं० २६। आ० १२×६ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १३/३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर।

विशेष—ग्रंथों के चित्र भी दे रखे हैं।

७१४०. **प्रतिसं० १४**। पत्रसं० ८०। आ० ९$\frac{१}{२}$×५ इञ्च। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ११९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

विशेष—गुटकाकार में है।

७१४१. **प्रतिसं० १५**। पत्र सं० ३८। आ० ६×४½ इञ्च। ले० काल सं० १६५० ज्येष्ठ बुदी १४। पूर्ण। वेष्टन सं० ७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है।

७१४२. **प्रतिसं० १६**। पत्रसं० ४०। आ० १३×७¾ इंच। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा।

७१४३. **प्रतिसं० १७**। पत्रसं० २४। आ० ११×७ इञ्च। ले०काल सं० १६६६। पूर्ण। वेष्टन सं० ८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—प्रति सुन्दर है।

७१४४. **प्रतिसं० १८**। पत्रसं० २४। आ० १०×४ इंच। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २६३-११५। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर।

७१४५. **प्रतिसं० १६**। पत्र सं० २७। आ० ६½×६½ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

७१४६. **प्रतिसं० २०**। पत्रसं० २४। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ४५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

७१४७. **भक्तामर स्तोत्र बालावबोध टीका**— × । पत्र सं० २-३५। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल × । ले० काल सं० १८४४ आषाढ बुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० १४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी।

७१४८. **भक्तामर स्तोत्र बालावबोध टीका**— × । पत्र सं० ११। आ० १२×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय स्तोत्र। र० काल × । ले० काल सं० १८३६। पूर्ण। वेष्टन सं० ३५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दुग्गलाना (बूंदी)

७१४९. **भक्तामर स्तोत्र भाषा—अखैराज श्रीमाल**। पत्रसं० २४। आ० १०×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २०५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

७१५०. **प्रति सं० २**। पत्रसं० १३। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डायालों का डीग।

७१५१. **भक्तामर स्तोत्र भाषा—नथमल बिलाला**। पत्रसं० ५२। आ० १०×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र। र० काल सं० १८२६ज्येष्ठ सुदी १०। ले०काल सं० १८८४ कार्तिक सुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० १५८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

७१५२. **प्रति सं० २**। पत्रसं० ५०। आ० ११×५½ इञ्च। ले० काल सं० १८५५। पूर्ण। वेष्टन सं० १३६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक)

विशेष—प्रति ऋद्धि मंत्र सहित है। तक्षकपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

७१५३. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० २-४४ । आ० ११ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ९४ ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपंथी दौसा

७१५४. **भक्तामर स्तोत्र भाषा—जयचंद छाबड़ा** । पत्र सं० ३९ । आ० ८$\frac{1}{2}$ × ८$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र० काल सं० १८७० कार्तिक बुदी १२ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६९७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—लालसोट वासी पं० बिहारीलाल ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी ।

७१५५. **प्रति सं० २** । पत्र सं० २६ । ले० काल स० १९०६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

७१५६. **प्रति स० ३** । पत्रसं० २० । आ० १३ × ८$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १९५५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

७१५७. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० २३ । आ० १३ × ८ इञ्च । ले०काल० सं० १९०८ ॥ **पूर्ण** । वेष्टन सं०१७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—दीवान बालमुकन्दजी के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी । एक दूसरी प्रति २० पत्र की और है ।

७१५८. **प्रतिसं० ५** । पत्र सं० २० । आ० ११ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १९९४ मंगसिर बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७१५९. **प्रतिसं० ६** । पत्र सं० ३८ । आ० ११ × ४$\frac{3}{4}$ इंच । ले०काल सं० १९५४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

७१६०. **भक्तामर स्तोत्र भाषा**—× । पत्र सं० ४ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

आदि भाग—चौपई

अमर मुकुटमणि उद्योत । दुरित हरण जिन चरणहु ज्योत ।
नमहु त्रिविधयुग आदि अपार । भव जल निधि पर तह आधार ॥

अन्तिम—

भक्तामर की भाषा भली । जानिपयो विधि सत्तामिली ।
मन समाध **जपि करहि** विचार । ते नर होत **जयश्री** सारु ॥

इति श्री भक्तामर भाषा संपूर्ण ।

७१६१. **भक्तामर स्तोत्र भाषा**—× । पत्रसं० ५० । **भाषा**-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है ।

७१६२. **भक्तामर स्तोत्र भाषा टीका—विनोदीलाल** । पत्र सं० १७३ । आ० ९$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल सं० १७४७ सावण बुदी २ । ले० काल १८४३ सावण बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० २९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष---प्रति कथा सहित है।

७१६३. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० २३०। ले०काल सं० १८६५ फागुन सुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० ५। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर।

विशेष-- कुम्हेर नगर में लिखा गया था।

७१६४. **प्रतिसं० ३**। पत्र सं० १७३। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ६। **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर।

७१६५. **प्रतिसं० ४**। पत्र सं० १३०। ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर।

विशेष - १६२६ में मन्दिर में चढाया था।

७१६६. **प्रतिसं० ५**। पत्र सं० २३६। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ६५। **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा।

७१६७. **प्रतिसं० ६**। पत्रसं० १३८। आ० १२×८ इञ्च । ले०काल सं० १६६६। पूर्ण। वेष्टनसं० १७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर।

७१६८. **प्रतिसं० ७**। पत्र सं० १८३। आ० १३×७ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १४२। **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

७१६९. **प्रतिसं० ८**। पत्रसं० १८३। आ० १२×७ इञ्च। ले०काल सं० १८७६। पूर्ण। वेष्टन सं० ६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना।

७१७०. **प्रतिसं० ९**। पत्रसं० १७४। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टनसं० १३। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डायालों का डीग।

विशेष—८५ से आगे पत्र नहीं हैं।

७१७१. **प्रति सं० ११**। पत्रसं० २२६। आ० १२½×७ इञ्च। ले०काल सं० १८६५। पूर्ण। वेष्टन सं० ५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा।

७१७२. **भक्तामर स्तोत्र टीका—लब्धिवर्द्धन**। पत्रसं० २१। आ० १०×४½ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

७१७३. **भक्तामर स्तोत्र भाषा टीका—हेमराज**। पत्र सं० ७६। आ० ६ × ६ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र०काल × । ले०काल सं० १७७०। पूर्ण। वेष्टन सं० १५०४। **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

भक्तामर टीका सदा पठै सुनैजो कोई।
हेमराज सिव सुख लहै तन मन संछित होय।

विशेष— गुटका आकार में है।

७१७४. **प्रतिसं० २**। पत्र सं० १४। आ० ७½×४ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टनसं० ६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

विशेष—हिन्दी पद्य सहित है।

७१७५. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० ४। आ० ६$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च। ले०काल × । **पूर्ण** । वेष्टनसं० १२३-५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

विशेष - हिन्दी पद्य टीका है।

७१७६. **प्रतिसं० ४**। पत्र सं० ५ । आ० १० ×४ इञ्च। । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २५७। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—हिन्दी पद्य हैं।

७१७७. **प्रतिसं० ५**। पत्र सं० २८। ले०काल सं० १८६६ ज्येष्ठ शुक्ला ४। पूर्ण। वेष्टनसं० १५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—जोधाराज कासलीवाल ने लिखवाई थी। हिन्दी पद्य हैं।

७१७८. **प्रतिसं० ६**। पत्र सं० ११२। आ० ४$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{3}{4}$ इञ्च। ले०काल सं० १८३० माघ बुदी ४। पूर्ण। वेष्टन सं० १२०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

विशेष—बाटिकापुर में लिपि की गई थी। प्रति हिन्दी गद्य टीका सहित है। गुटकाकार है।

७१७९. **प्रतिसं० ७**। पत्र सं० ८६। आ० ६×४$\frac{3}{4}$ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २४५। **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा।

विशेष—हिन्दी गद्य एवं पद्य दोनों में अर्थ है।

७१८०. **प्रतिसं० ८**। पत्रसं० २६। आ० १०×४$\frac{3}{4}$ इञ्च। ले०काल सं० १७२७। पूर्ण। वेष्टन सं० २५३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा।

विशेष—हेमराज पांड्या की पुस्तक है।

७१८१. **भक्तामर स्तोत्र भाषा टीका** -- × । पत्र सं० २०। आ० ११$\frac{3}{4}$ × ५ इञ्च। भाषा---संस्कृत, हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र०काल × । ले० काल सं० १८४४ मंगसिर सुदी ६। पूर्ण। वेष्टनसं० १६७। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

विशेष—पं० चिमनलाल ने दुलीचंद के पठनार्थ किशनगढ में प्रतिलिपि की थी।

७१८२. **भक्तामर स्तोत्र टीका—गुणाकर सूरि**। पत्र सं० ८५। भाषा-संस्कृत। विषय--स्तोत्र। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ६०५। **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

७१८३. **प्रति सं० २**। पत्र सं० ५४। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३१। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन बड़ा पंचायती मन्दिर डीग।

७१८४. **भक्तामर स्तोत्र वृत्ति—कनक कुशल**। पत्रसं० १५। आ० १०×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल × । ले० काल सं० १६८२ आसोज सुदी १। पूर्ण। वेष्टनसं० २६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर चौगान बूंदी।

विशेष—वैराठ नगर में विजयदशमी पर रचना हुई थी। नारायना नगर में नयनरुचि ने प्रतिलिपि की थी।

७१८५. **भक्तामर स्तोत्र वृत्ति---रत्नचन्द्र**। पत्र सं० २४। आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १२६१। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

७१८६. प्रतिसं० २। पत्रसं० ४६। आ० ११×५ इंच। ले०काल सं० १७५७ अगहन सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० ३७४-१४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

७१८७. प्रति सं० ३। पत्रसं० ४६। आ० १३× ८½ इञ्च। ले० काल सं० १८३४ पौष बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० ५७। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

विशेष—सिद्धनदी के तट ग्रीवापुर नगर में श्री चन्द्रप्रभ के मन्दिर में करमसी नामक श्रावक की प्रेरणा से ग्रंथ रचना की गयी। प्रतिलिपि कामा में हुई थी।

७१८८. प्रतिसं० ४। पत्रसं० १४-४३। ले०काल सं०१८२५। अपूर्ण। वेष्टनसं० ६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर कामा।

विशेष—प्रति जीर्ण है।

७१८९. भक्तामर स्तोत्र वृत्ति—ब्र० रायमल्ल। पत्र सं० ५७। आ० ८ × ३½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल सं० १६६७ आषाढ सुदी ५। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १३९३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७१९०. प्रतिसं० २। पत्रसं० ४७। आ० १० × ४½ इञ्च। ले०काल सं० १७४९ भादवा सुदी ६। पूर्ण। वेष्टनसं० १४१५। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७१९१. प्रतिसं० ३। पत्रसं० ६४। आ० १०×४½ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ३४८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७१९२. प्रतिसं० ४। पत्रसं० ४२। आ० १०×४ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ९६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

विशेष—भट्टारक धर्मचन्द्र के शिष्य ब्र० मेघ ने प्रतिलिपि की थी।

७१९३. प्रतिसं० ५। पत्र सं० ३७। आ० ९½ × ४½ इञ्च। ले० काल सं० १७८३ माह सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० ५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा।

७१९४. प्रतिसं० ६। पत्र संख्या ४८। आ० १०½ × ४ इञ्च। ले० काल सं० १७५१ सावन सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन संख्या ३८६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—बगरू ग्राम में सवलसिंहजी के राज्य मे पं० हीरा ने आदिनाथ चैत्यालय में लिपि की थी।

७१९५. प्रतिसं० ७। पत्र सं० ४३। आ० १०½ × ४½ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ४९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

विशेष बूंदाद्रिमध्ये पं० तुलसीदासजी के शिष्य ऋषि प्रहलाद ने प्रतिलिपि की थी।

७१९६. प्रतिसं० ८। पत्र सं० ४२। आ० ९ × ४½ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३४५। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

७१९७. प्रतिसं० ९। पत्र सं० ३९। आ० ९ × ६ इञ्च। ले० काल सं० १८९९ चैत्र बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० १५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—छत्र विमल के पठनार्थ प्रतिलिपि कराई थी।

७१९८. प्रति सं० १०। पत्रसं० ३४। आ० ७½ × ४½ इञ्च। ले० काल सं० १७८२ वैशाख बुदी १२। पूर्ण। वेष्टन सं० ७९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

७१९९. **प्रतिसं० ११**। पत्र सं० ३६। आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल सं० १८३५ कार्तिक सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० ८३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

७२००. **प्रतिसं० १२**। पत्र सं० ४१। आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४ इञ्च। ले० काल सं० १८१७ माघ बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० ८४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—नाथूराम ब्राह्मण ने लिखा था।

७२०१. **प्रतिसं० १३**। पत्रसं० २-३७। ले० काल सं० १७३६। अपूर्ण। वेष्टन सं० ११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर डीग।

विशेष—कामा में प्रतिलिपि हुई थी।

७२०२. **प्रतिसं०१४**। पत्र सं० ३३। आ० ११×५ इञ्च। ले० काल सं० १६७२। पूर्ण। वेष्टन सं० २४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

७२०३. **प्रतिसं० १५**। पत्र सं० २४। आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल सं० १७१३। पूर्ण। वेष्टन सं० ७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा।

७२०४. **प्रतिसं० १६**। पत्र सं० ४१। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

७२०५. **भक्तामर स्तोत्र वृत्ति**— ×। पत्र सं० ४४। आ० ८$\frac{1}{2}$×८ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १२९७। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७२०६. **प्रतिसं० २**। पत्र सं० ७०। आ० १०×५ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० १२५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी।

विशेष—कथा भी है।

७२०७. **प्रतिसं० ३**। पत्रसं० २४। आ० ११×५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

विशेष—पुस्तक पं० देवीलाल वि० विरदू की है।

७२०८. **प्रति सं० ४**। पत्रसं० २५। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४१८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—टीका सहित है।

७२०९. **भक्तामर स्तोत्र वृत्ति**—×। पत्र सं० १६। भाषा—संस्कृत। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

७२१०. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० ८। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ४३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा ३९ वीं काव्य तक टीका है। आगे पत्र नहीं हैं।

७२११. **भक्तामर स्तोत्रावचूरि**— ×। पत्र सं० २-२६। आ० ९×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र०काल ×। ले० काल सं० १६७१। अपूर्ण। वेष्टन सं० ३११/४२४-४२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका—

इति श्री मानतुंगाचार्यकृत भक्तामर स्तोत्राव चूरि टिप्पणकं संपूर्ण कृतं ।

प्रशस्ति—डूहलपुर वास्तव्य चौधरी वसावन तत्पुत्र चौधरी सूरदास तत् पुत्र चौधरी सौहल गुरु वेन अग्रवालपुर वास्तव्य लिखित कायस्थ माथुर दयालदास तत्पुत्र सुदर्शनेन । संवत् १६७१ ।

७२१२. भक्तामर स्तोत्रावचूरि— × । पत्र सं० १११ । आ० १०×४½ इञ्च । **भाषा**-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६२-१०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—श्वेताम्बर आम्नाय का ग्रंथ है । ४४ काव्य हैं ।

७२१३. भगवती स्तोत्र— × । पत्रसं०३ । आ० ६½×५½ इंच । **भाषा**—हिन्दी । विषय—स्तवन । र०काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टनसं० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७२१४. भज गोविन्द स्तोत्र— × । पत्रसं० १ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० ४६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७२१५. भयहर स्तोत्र (गुरुगोत्ता)— । पत्रसं० ५ । आ० ५×२½ इञ्च । भाषा— संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

७२१६. भवानी सहस्रनाम स्तोत्र— × । पत्रसं० १३ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा— संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**-ग० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—अन्तिम दो पत्र में रामरक्षा स्तोत्र है ।

७२१७. भवानी सहस्रनाम स्तोत्र—×। पत्रसं० २-२८ । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल सं० १७६७ पौष सुदी ७ । अपूर्ण । वेष्टन सं० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

विशेष—भादसोडा में प्रतिलिपि हुई थी ।

७२१८. भारती लघु स्तवन—**भारती** । पत्रसं० ७ । आ० १०½×४½ इञ्च । **भाषा**— संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

७२१९. (यति) भावनाष्टक— × । पत्र सं० १ । आ० १३½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय -स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७२२०. भावना बत्तीसी—**आचार्य अमितगति** । पत्रसं० २ । आ० १३½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० ४०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७२२१. **भाव शतक—नागराज**। पत्रसं० १७। आ० १०½×६ इञ्च। **भाषा**–संस्कृत। विषय–स्तवन। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २२७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—९८ पद्य हैं।

७२२२. **प्रतिसं० २**। पत्र सं० ५। आ० १०×४ इञ्च। **ले०काल** × । वेष्टन सं० २२८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—१०१ पद्य हैं। ग्रंथ प्रशस्ति अच्छी है।

७२२३. **भूपालचतुर्विंशतिका—भूपाल कवि**। पत्रसं०४। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र०काल ×। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ६६७। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७२२४. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। आ० ६×३ इञ्च। **ले०काल** × । पूर्ण। वेष्टन सं० ८८८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७२२५. **प्रतिसं० ३**। पत्र सं० ४। आ० ११×४ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ९२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

७२२६. **प्रतिसं० ४**। पत्रसं०४। आ० १०½×४ इञ्च। ले० काल सं० १६०७। पूर्ण। वेष्टन सं० ४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर।

संवत् १६०७ वर्षे श्रावण वदि ८ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे भट्टारक सकलकीर्तिदेवा तदाम्नाये ब्र० जिनदास ब्रह्म वाघजी पठनार्थं।

७२२७. **प्रति सं० ५**। पत्रसं० १५। आ० ११½×५ इञ्च। ले०काल सं० १७५७। वेष्टन सं० ३५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—तुलसीदास के साथ रहने वाले तिलोकचन्द ने स्वयं लिखी थी। कहीं २ संस्कृत टीका भी है।

७२२८. **प्रतिसं० ६**। पत्रसं० ६। आ० १०½×५ इञ्च। ले०काल × । वेष्टन सं० ३६२। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—टब्बा टीका सहित है।

७२२९. **प्रतिसं० ७**। पत्र सं० ४। आ० १०½×५ इञ्च। ले० काल × । वेष्टन सं० ३६२। **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर।

७२३०. **प्रति सं० ८**। पत्र सं० ३। आ० १३½×६ इञ्च। ले० काल × । वेष्टन सं० ४०१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर।

७२३१. **भूपाल चतुर्विंशतिका टीका—भट्टारक चन्द्रकीर्ति**। पत्रसं० १०। आ० ९½×६½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र० काल × । ले० काल सं० १९३२ कार्तिक बुदि २। पूर्ण। वेष्टन सं० १०९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७२३२. **भूपाल चौबीसी भाषा—अखयराज**। पत्र सं० १६। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

७२३३. **प्रति सं० २** । पत्रसं० १२ । आ० ११×६ इञ्च । ले०काल सं० १७३३ काती बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है इसकी प्रति सांगानेर में हुई थी ।

७२३४. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० १२ । आ० ११×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन सं० ६७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७२३५. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० २७ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं०९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

७२३६. **प्रतिसं० ५** । पत्रसं० २-१७ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १७२३ चैत्र बुदी १ । अपूर्ण । वेष्टनसं० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—ईश्वरदास ठोलिया ने संग्रामपुर में जोशी आनन्दराम से प्रतिलिपि कराई थी ।

७२३७. **भूपाल चौबीसी भाषा** × । पत्र सं० २ । आ० ९$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०३५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

७२३८. **भैरवाष्टक**—× । पत्र सं० १४ । आ० १२×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत, हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७/९७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

७२३९. **मंगल स्तोत्र**— × । पत्र सं० २ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा ।

७२४०. **मणिभद्रजी रो छन्द—राजरत्न पाठक** । पत्रसं० २ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७५/१४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

सगरवाडापुर मंडणो अतुलबली अशरण शरणा
राजरत्न पाठक जयो देव जय जय करणा

७२४१. **मल्लिनाथ स्तवन—धर्मसिंह** । पत्रसं० ३ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । र०काल सं० १६०७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२६-४०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—अन्तिम भाग निम्नप्रकार है ।

श्री रतन संघ गणीन्द्र तसपट केशवजी कुलचंद ए ।
तस पटि दिनकर तिलक मुनिवर श्री शिवजी मुणिंद ए ।।
धर्मसिंह मुनि तस शिष्य प्रेमी थुण्या मल्लि जिणंद ए ।।५१।।
सवत नय निधि रस शशिकर श्री दीवाली श्रीकार ए ।
शृंगार मरुधर नयरसुन्दर बीकानेर मंझार ए ।
श्रीसंघ बीनती सरस जाणी कीधो स्तवन उदार ए ।

श्रीमल्लि जिनवर सेवक जननि सदाशिव सुखकार ए ।

इति श्री मल्लिनाथ स्तवन संपूर्ण । भार्या जवणादे पठनार्थं ।

७२४२. **महामहर्षिस्तवन** – × । पत्र सं० २ । आ० १०×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० ३५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७२४३. **महर्षि स्तवन**— × । पत्र सं० १ । आ० १०×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति संस्कृत व्याख्या सहित है ।

७२४४. **महर्षि स्तवन**— × । पत्र सं० ८ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

७२४५. **महाकाली सहस्रनाम स्तोत्र**— × । पत्र सं० २६ । आ० ६×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल सं० १७८४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८८४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—गुटका साइज में है ।

७२४६. **महाविद्याचक्रेश्वरी स्तोत्र**— × । पत्र सं० १२ । आ० ६×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल.× । पूर्ण । वेष्टन सं० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ इंदरगढ़ (कोटा)

७२४७. **महाविद्या स्तोत्र मंत्र**—×। पत्र सं० ३ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मंत्र शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)

७२४८. **महावीर स्तवन**—**जिनवल्लभ सूरि** । पत्र सं० ४ । भाषा—प्राकृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

विशेष—पं० चोखा ने पं० हर्ष के पठनार्थ लिखी थी ।

७२४९. **महावीर स्तवन**—**विनयकीर्त्ति** । पत्र सं० ३ । आ० १०×४ इंच । भाषा हिन्दी । विषय स्तवन । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३५-४०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

अन्तिम भाग—

इति श्री स्याद्वाद सूचक श्री महावीर जिनस्तवन संपूर्ण ।

७२५०. **महावीरनी स्तवन**—**सकलचन्द्र** । पत्रसं० २ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय—स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७२५१. महावीर स्तोत्र वृत्ति—जिनप्रभसूरि। पत्रसं० ४। आ० १०½×४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

७२५२. महावीर स्वामीनो स्तवन— × । पत्र सं० १। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र०काल × । ले० काल सं० १८४० चैत्र सुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० २। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

विशेष···औरङ्गाबाद में लिखा गया था।

७२५३. महिम्न स्तोत्र—पुष्पदंताचार्य। पत्रसं० ६। आ० ६½×४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ४५२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७२५४. प्रतिसं० २। पत्रसं० ६। आ० ११ × ५½ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ३३८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

विशेष—प्रति जीर्ण है।

७२५५. प्रति सं० ३। पत्रसं० ७। आ० ६×५ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर देवलाना (बूंदी)

७२५६. प्रति सं० ४। पत्रसं० २–६। आ० ६½×४½ इञ्च। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० २७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर देवलाना (बूंदी)

७२५७. प्रति सं० ५। पत्रसं० १०। आ० ११×६½ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

७२५८. मानभद्र स्तवन—माणक। पत्र सं० ५। आ० १०×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

७२५९. मार्त्तण्ड हृदय स्तोत्र—× । पत्रसं० २। आ० १०½ × ६ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय–वैदिक साहित्य। र०काल × । ले०काल सं० १८८६ फागुण सुदी ६। पूर्ण। वेष्टनसं० १३१०। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७२६०. मुनि मालिका— × । पत्रसं० २। आ० ६½ × ४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २६३। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

७२६१. मूलगुणसज्झाय—विजयदेव। पत्र सं० १। आ० १०½×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तुति। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ४५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

७२६२. **मांगीतुंगी सज्झाय—अभयचन्द्र सूरि ।** पत्र सं० ३ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

७२६३. **यमक बंध स्तोत्र—** × । पत्र सं० २ । आ० १२ × ८ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२०२ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—टीका सहित है ।

७२६४. **यमक स्तोत्र—** × । पत्र सं० ६ । आ० १० × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० ९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

विशेष—पार्श्वनाथ स्तवन यमक अलंकार में है ।

७२६५. **यमक स्तोत्राष्टक—विद्यानंदि ।** पत्र सं० ६ । आ० ११ × ८ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । अर्हत् परमेश्वरीय यमक स्तोत्राष्टक है ।

७२६६. **रामचन्द्र स्तोत्र**—× । पत्र सं० १ । आ० १२ × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६५-४०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

७२६७. **रामसहस्र नाम**—× । पत्र सं० १७ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल सं० १८०९ वैशाख बुदी ऽ ऽ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर बोरखली कोटा ।

लिखितं चिरंजीव उपाध्याय मयारामेण श्रीपुरामध्ये वास्तव्य ।

७२६८. **रोहिणी स्तवन**—× । पत्र सं० २ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७२६९. **लक्ष्मी स्तोत्र—पद्मप्रभदेव ।** पत्र सं० १ । आ० १३½ × ६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७२७०. **लक्ष्मी स्तोत्र—पद्मप्रभदेव ।** पत्र सं० ७१ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७२७१. **लक्ष्मी स्तोत्र**—× । पत्र सं० २ । आ० ७½ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२५० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७२७२. लक्ष्मी स्तोत्र—× । पत्र सं० १ । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टनसं० ७४८ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७२७३. लक्ष्मी स्तोत्र गायत्री—× । पत्रसं० २ । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल सं० १७६७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मंदिर बसवा ।

विशेष—पद्मीमाल गच्छ के पुण्यलब्ध ने लिखि की थी ।

७२७४. लक्ष्मी स्तोत्र टीका—× । पत्रसं० ४ । भाषा—संस्कृत । र०काल × । **ले०काल** सं० १८६० भादवा सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर में लिखा गया था ।

७२७५. लक्ष्मी स्तोत्र टीका—× । पत्रसं० ७ । आ० ११ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कटा ।

विशेष—सरोंज नगर में पं० मूलचन्द ने लिखा सं० १८४····· ।

७२७६. लक्ष्मी स्तोत्र टीका— × । पत्र सं० ४ । आ० ८ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टनसं० २०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

७२७७. लघुशांति स्तोत्र— × । पत्रसं० १ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १५० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७२७८. लघु सहस्रनाम—× । पत्रसं० ४२ । आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७२७९. लघुस्तवन टीका—भाव शर्मा । पत्र सं० ३-३६ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र० काल सं० १५६० । ले०काल सं० १७७० । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—अंबावती में नेमिनाथ चैत्यालय में भ० जगतकीर्ति के शिष्य दोदराज ने अपनी ज्ञान वृद्धि के लिए टीका की प्रतिलिपि अपने हाथ से की थी । इसही के साथ संवत् १७७०, चैत्र बुदि ५ की, ४० तथा ४१ वें गृह पर विस्तृत प्रशस्ति है, जिसमें लिखा है कि जगतकीर्ति के शिष्य पं० दोदराज के लिए प्रतिलिपि की गई थी ।

७२८०. लघु स्तवन टीका— × । पत्र सं० ४ । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

७२८१. लघु स्तोत्र विधि—× । पत्र सं० ७ । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७२८२. **लघुस्वयंभू स्तोत्र**—देवनंदि । पत्र सं० ५ । आ० १०$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६०३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७२८३. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ७ । आ० ७×१ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—दशलक्षण धर्म व सोलहकारण के भी कवित्त हैं ।

७२८४. **लघुस्वयंभू स्तोत्र टीका**— × । पत्र सं० ३३ । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल सं० १७८४ कार्तिक बुदि ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

७२८५. **वज्रपंजर स्तोत्र यंत्र सहित**— × । पत्र सं० १ । वेष्टन सं० ७७-४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

७२८६. **वंदना जखडी**— × । पत्रसं० ६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-स्तवन । र०काल × । ले० काल सं० १६४२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्री महावीर बूंदी ।

७२८७. **वर्द्धमान विलास स्तोत्र—जगद्भूषण** । पत्रसं० ४ से ५८ । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २२ (क) । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बडा पंचायती मन्दिर डीग ।

विशेष—४०२ पद्य हैं । भट्टारक श्री ज्ञानभूषण पट्टस्थितेन श्री भट्टारक जगत्भूषणेन विरचितं वर्द्धमान विलास स्तोत्रं ।

४०१ वां श्लोक निम्न प्रकार है ।

एतां श्रीवर्द्धमानस्तुति मतिविलसद् वर्द्धमानानुरागात्,
व्यक्ति नीतां भनस्यां वसति तनुधिया श्री जगद्भूषणेन ।
यो धीते तस्य कायाद् विगलति दुरितं श्वासकाशप्रणाशो,
विद्या हृद्या नवद्या भवति विकसिता कीर्तिदुग्धामलक्ष्मी ॥४०१॥

७२८८. **वर्द्धमान स्तुति**—× । पत्र सं० १ । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७२८९. **वसुधारा स्तोत्र**—× । पत्रसं० ८ । आ० ७$\frac{1}{2}$ × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४६३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७२९०. **वसुधारा स्तोत्र**— × । पत्र सं० ५ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

७२९१. वसुधारा स्तोत्र—× । पत्र सं० ४ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७२९२. विचारषड्त्रिंशिकास्तवन टीका—राजसागर । पत्रसं० ६ । आ० १०×४½ इञ्च । **भाषा**—प्राकृत हिन्दी । **विषय**—स्तोत्र । र० काल × । **ले०काल** सं० १६८१ । पूर्ण । वेष्टन सं० २९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

७२९३. विद्या विलास प्रबन्ध—आज्ञासुन्दर । पत्र सं० १७ । आ० १०×४ इञ्च । **भाषा**-हिन्दी (पद्य) । । **विषय**—स्तोत्र । र०काल सं० १५१६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५० । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

७२९४. विनती आदीश्वर—त्रिलोककीर्त्ति । पत्र सं० २ । आ० ४½×३½ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी । **विषय**—स्तवन । र०काल × । ले० काल × । **पूर्ण** । वेष्टन सं० ३०१ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष— आदिजिनवर सेविये रे लाल ।
धूलेवगढ जिनराज हितकारी रे ।
त्रिभुवनवांछित पूरीरे लाल ।
सारै आतमकाज हितकारी रे ।
आदिजिनवर .....

७२९५. विनती संग्रह—देवाब्रह्म । पत्रसं० ११ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

७२९६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५८-७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—विनतियों का संग्रह है ।

७२९७. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० ३१ । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०४ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

७२९८. विषापहार स्तोत्र - महाकवि धनंजय । पत्र सं० ७ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२६१ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७२९९. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ७ । आ० १०½×५ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९५० । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष-- स्तोत्र टीका सहित है ।

७३००. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ । आ० १०½×४¾ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन सं० ३५५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७३०१. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० ३ । आ० १३½×६ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन सं० ४१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७३०२. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० ४ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

७३०३. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० ६ । आ० १०½×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौमान बूंदी ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है । जिनदास ने स्वयं के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

७३०४. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० ३ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७३०५. **विषापहार स्तोत्र भाषा**—× । पत्र सं० ८ । आ० १०½×५½ इञ्च । **भाषा**–हिन्दी गद्य । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । **वेष्टन सं०** ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बीसपंथी दौसा ।

७३०६. **विषापहार स्तोत्र टीका**—**नागचन्द्र** । पत्र सं० १३ । आ० ६½×६½ इञ्च । **भाषा**-संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र०काल × । ले० काल सं० १६३२ काती सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५५ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७३०७. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १२ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन सं० ३८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७३०८. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० १७ । आ० ११½×४½ इञ्च । **ले०काल** × । **वेष्टन सं०** ३९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—आचार्य विशालकीर्त्ति ने लिखवाई थी ।

७३०९. **विषापहार स्तोत्र टीका**—**प्रभाचन्द्र** । पत्र सं० १६ । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल सं० १७२१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१७–१५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

७३१०. **विषापहार स्तोत्र टीका** - × । पत्र सं० १५ । आ० ११ × ६½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । पद्य । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल सं० १७०१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०८२ । **प्राप्ति स्थान**- - भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—विजयपुर नगर में श्री धर्मनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी ।

७३११. **विषापहार स्तोत्र टीका**— × । पत्र सं० १० । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय – स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—९ वां तथा १० से आगे पत्र नहीं हैं ।

७३१२. **विषापहार स्तोत्र भाषा**—**अलयराज** । पत्र सं० ३० । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–स्तोत्र । र०काल × । ले०काल सं० १९५२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी (बूंदी)

७२१३. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १-२० । आ० १२×४½ इञ्च । ले०काल सं० १७२३ चैत्र सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२ × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पंथी, दौसा ।

विशेष—साह ईश्वरदास ठोलिया ने आत्म पठनार्थ आनन्दराम से प्रतिलिपि करवाई थी ।

७३१४. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० १५ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल सं० १७२० मंगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी (कामा)

७३१५. **विषापहार भाषा—अचलकीर्त्ति** । पत्र सं० ३२ । भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

७३१६. **वीतराग स्तवन**—× । पत्र सं० १ । आ० १२ × ४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३९८-४७६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७३१७. **वीरजिनस्तोत्र—अभयसूरि** । पत्र सं० — । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७३१८. **वीरस्तुति**—× । पत्र सं० ४ । आ० ८ × ४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल सं० १८४५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—द्वितीयांगस्य वीरस्तुति सूत्रकृतांग को षष्ठमो अध्यायः । हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

७३१९. **बृहत्शांति स्तोत्र**—× । पत्र सं० १ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७३२०. **वृषभदेव स्तवन—नारायण** । पत्र संख्या ३ । आ० ७½ × ४ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—स्तवन । र०काल × । ले०काल सं० १७५३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

७३२१. **वृषभ स्तोत्र—पं० पद्मनन्दि** × । पत्र सं० ११ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—श्री पद्मनन्दि कृत दर्शन भी है । प्रति संस्कृत छाया सहित है ।

७३२२. **बृहद् शांतिपाठ** × । पत्र सं० २ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

७३२३. **शत्रुंजय गिरि स्तवन—केशराज** । पत्र सं० १ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष —

श्री विजयगच्छपति पद्मसागर पाठ श्री गुणसागर ।
केशराज भावइ सवि सुहावइ सहगिरवर सुखकरु ॥३॥

इति श्री शत्रुंजय स्तवन ।

७३२४. शत्रुंजय तीर्थस्तुति—ऋषभदास । पत्रसं० १ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय - स्तुति । र० काल सं० × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—निम्न पाठ और है —

अइमाता ऋषि सज्झाय	आणंदचंद	हिन्दी स्तवन (र० कालसं० १६६७)

चंद्रपुरी में पार्श्वनाथ चैत्यालय में रचना हुई थी

७३२५. शत्रुंजय भास—विलास सुन्दर । पत्र सं० १ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल सं० × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७३२६. शत्रुंजय मंडल—सुहकर । पत्रसं० १ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-प्राकृत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)

७३२७. शत्रुंजय स्तवन—× । पत्रसं० ४ । भाषा-संस्कृत । विषय—स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७२७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७३२८. शांतिकर स्तवन— × । पत्रसं० २ । आ० १०×४ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७३२९. शांतिजिन स्तवन—गुणसागर × । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य । विषय—स्तोत्र । र० काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

७३३०. शांतिजिन स्तवन । पत्र सं० ३-८ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—मूल के नीचे हिन्दी में अर्थ भी दिया है ।

७३३१. शांतिनाथ स्तवन—उदय सागरसूरि । पत्रसं० १ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—सीमधर स्तवन धुजमलदास कृत और है ।

७३३२. शांतिनाथ स्तवन—पद्मनंदि । पत्रसं० १ । आ० १२ × ४ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × ।ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६१-४६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७३३३. शांतिनाथ स्तवन—मालदेव सूरि । पत्र सं० ३७ से ४७ । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तवन । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—आरम्भ में दूसरे पाठ हैं ।

७३३४. शांतिनाथ स्तुति—× । पत्रसं० ७ । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७३३५. शांतिनाथ स्तोत्र—× । पत्र सं० १२ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । श्लोकों के ऊपर तथा नीचे टीका दी हुई है ।

७३३६. शांतिनाथ स्तोत्र—× । पत्रसं० ४ । आ० १०$\frac{1}{2}$×६$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोट्यों का नैणवा ।

७३३७. शाश्वतजिन स्तवन—× । पत्र सं० २ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

७३३८. शिव मन्दिर स्तोत्र टीका—× । पत्रसं० २ से २५ । आ० ८ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

७३३९. शीतलनाथ स्तवन-रायचंद । पत्र सं० १ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७२१ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७३४०. श्रीपालराज सिज्झाय - खेमा । पत्रसं० २ । आ० ११०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)

७३४१. श्वेताम्बर मत स्तोत्र संग्रह—× । पत्रसं० ६ । आ० ११×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—सप्तर्षि जिनस्तोत्र, भक्तामर स्तोत्र, लघुशांति स्तोत्र, अजितशान्ति स्तोत्र एवं मंत्र आदि हैं ।

७३४२. **शोभन स्तुति**— × । पत्र सं० ६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली, कोटा ।

विशेष—चौबीस तीर्थंकर स्तुति है ।

७३४३. **श्लोकावली**—× । पत्रसं० ६ । आ० ६ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल सं० १८२० ज्येष्ठ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८७-४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—श्री भंडलाचार्य श्री रामकीरत जी पठनार्थ ग्राम उदंगढमध्ये ब्राह्मण भट्ट····

७३४४. **षट आरणमय स्तवन—जिनकीर्त्ति** । पत्रसं० ३ । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तवन । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ६६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—केवल तीसरा पत्र ही है ।

७३४५. **षट्पदी—शंकराचार्य** । पत्र सं० १ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७३४६. **षष्ठिशतक—भंडारी नेमिचन्द्र** । पत्रसं० ६ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल सं० १६०८ ज्येष्ठ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३१६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७३४७. **सकल प्रतिबोध—दौलतराम** । पत्र सं० १ । आ० १० × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । **पूर्ण** । वेष्टन सं ३७७-१४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

७३४८. **सज्झाय—समयसुन्दर**—× । पत्रसं० ५ । आ० १०½×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७३४९. **सप्तस्तवन** × । पत्रसं० १५ । आ० ६×३½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४८६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—निम्न स्तवन है—

उवसग्गहर, तीजईपोल, कल्याणमंदिर स्तवन, अजितशांतिस्तवन, षोडशविद्या स्तवन, बृहद्शांति स्तवन, गौतमाष्टक ।

७३५०. **समन्तभद्र स्तुति—समन्तभद्र** । पत्र सं० २६ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय स्तोत्र । र०काल × । ले० काल सं० १६१६ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—ब्र० रायमल्ल ने ग्रंथ की प्रतिलिपि की थी ।

७३५१. समन्तभद्र स्तुति— ×। पत्रसं० ९३। आ० ८×५ इञ्च। भाषा—प्राकृत-संस्कृत। विषय-प्रतिक्रमण एवं स्तोत्र। र०काल ×। **ले०काल सं० १६६७। पूर्ण। वेष्टन सं० ३। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर।

विशेष—संवत् १६६७ वर्षे वैशाख सुदी ५ रवौ श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री गुणकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० वादिभूषण गुरूपदेशात् ब्रह्मगोपालेन श्री देवनन्दिना इदं षडावश्यक प्रदत्तं शुभं भवतु।

इस ग्रंथ का दूसरा नाम षडावश्यक भी है प्रारम्भ में प्रतिक्रमण भी है।

७३५२. समन्तभद्र स्तुति—× । पत्रसं० ६१। आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर।

विशेष—२ पत्र बंध त्रिभंगी के हैं तथा प्रतिक्रमण पाठ भी है।

७३५३. समन्तभद्र स्तुति—× । पत्र सं० ३३। आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल × । ले०काल सं० १६६४ पौष बुदी ६। वेष्टन सं० ३५९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। पं० उदयसिंह ने नागपुर में प्रतिलिपि की थी।

७३५४. समवशरण पाठ—रेखराज। पत्रसं० ९०। आ० १०$\frac{1}{2}$×७ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तवन। र०काल × । **ले०काल सं० १८५६** कार्तिक सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन सं० ४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

७३५५. समवशरण मंगल—मायाराम। पत्र सं० २६। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र०काल सं० १८२१। ले० काल सं० १८५४ सावन बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० ३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

विशेष—भरतपुर में प्रतिलिपि की गई थी।

७३५६. समवसरण स्तोत्र—विष्णुसेन। पत्र सं० ८। आ० ८×६ इञ्च। **भाषा**-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल × । ले०काल सं० १८१३ मंगसिर बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं०८०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

७३५७. प्रतिसं० २। पत्र सं० ४। आ० १३$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$इञ्च। **ले०काल** सं० १८२७ माघ सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन सं० ४७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

७३५८. समवशरण स्तोत्र— × । पत्रसं० ९। आ०९$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा - संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र० काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १०९४। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७३५९. समवशरण स्तोत्र— × । पत्र सं० ६। भाषा-प्राकृत। विषय-स्तोत्र। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ६९६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

७३६०. **समवसरण स्तोत्र** । पत्रसं० ६ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

७३६१. **समवसरण स्तोत्र**— × । पत्र सं० ६ । आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल सं० १८२५ आषाढ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—टब्बा टीका रहित है ।

७३६२. **समवसरण स्तोत्र**—× । पत्र सं० ६ । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८५/४३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७३६३. **समवसरण स्तोत्र**— × । पत्र सं० ११ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

७३६४. **सम्मेदशिखर स्तवन**— × । पत्रसं० ६ । आ० ६ × ६ इञ्च । भाषा- हिन्दी । विषय-स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७३६५. **सरस्वती स्तवन**—× । पत्रसं० २ । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—स्तवन के पूर्व थूलिभद्र मुनि स्वाध्याय उदयरत्न कृत दी हुई है । यह हिन्दी की रचना है । र०काल सं० १७५६ एवं ले०काल सं० १७६१ है । प्रति राधणपुर ग्राम में हुई थी ।

७३६६. **सरस्वती स्तोत्र—अश्वलायन** । पत्र सं० २ । आ० ८ × ४ इंच । भाषा संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६२/४७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर ।

७३६७. **सरस्वती स्तुति—पं० आशाधर** । पत्रसं० १–६ । आ० १२ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १६६/४६५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७३६८. **सरस्वती स्तोत्र**— × । पत्र सं० १ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । **भाषा**-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७३६९. **सरस्वती स्तोत्र**— × । पत्र सं० २ । आ० ११½ × ५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५ । **प्राप्ति स्थान**-- दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौमान, बूंदी ।

७३७०. **सर्वजिन स्तुति** । पत्र सं० ६ । **भाषा**—संस्कृत । **विषय**—स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

७३७१. **सलुणारी सज्झाय**—**बुधचंद** । पत्रसं० २ । आ० ८$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल सं० १८५१ आषाढ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—लिखतंग बाई जमना ।

७३७२. **सहस्रनाम स्तोत्र**—× । पत्रसं० २-६ । आ० ८ × ३$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०कालसं० १७६२ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १६५/४६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७३७३. **साधारण जिन स्तवन**—**भानुचन्द्र गणि** । पत्र सं० ६ । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल सं० १७७० चैत सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३२६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

७३७४. **साधारण जिन स्तवन**—× । पत्रसं० १ । आ० ६ × २$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७३७५. **साधारण जिन स्तवन वृत्ति**—**कनककुशल** । पत्र सं० ३ । आ० ६ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तवन । र० काल × । ले०काल सं० १७४५ माघ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० २७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

७३७६. **साधु वन्दना**—**आचार्य कुंवरजी** । पत्रसं० ६ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी । विषय स्तुति । र०काल × । ले०काल सं० १७४१ अषाढ बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर बैर ।

विशेष—आल्हणपुर में प्रतिलिपि की गई थी ।

७३७७. **साधु वन्दना**—**बनारसीदास** । पत्र सं० ३ । **भाषा**-हिन्दी । विषय-स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भरतपुर ।

७३७८. **सिद्धगिरि स्तवन**—**क्षेमविजय** । पत्रसं० २ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तवन । र०काल × । ले०काल सं० १८७६ प्रथम चैत सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४-२०४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

७३७९. **सिद्धचक्र स्तुति**—× । पत्रसं० १ । आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

७३८०. **सिद्धभक्ति**—× । पत्र सं० ३ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी) ।

७३८१. **सिद्धिदण्डिका स्तवन**—× । पत्रसं० १ । आ० ६ × ४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २-१५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—१३ गाथाएं हैं ।

७३८२. **सिद्धिप्रिय स्तोत्र—देवनन्दि** । पत्र सं० ३ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७३८३. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० १४ । ले०काल सं० १८३२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

७३८४. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० १२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४६ । **प्राप्ति स्थान**-उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष— कल्याण मन्दिर एवं भूपाल स्तोत्र भी हैं ।

७३८५. **प्रतिसं० ४** । पत्र सं० १२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४८ । **प्राप्ति स्थान**-उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रति सटीक है ।

७३८६. **प्रति सं० ५** । पत्रसं० २ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २५१ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७३८७. **प्रतिसं० ६** । पत्र सं० १० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २६६ । **प्राप्ति स्थान**-उपरोक्त मंदिर ।

विशेष—प्रति टीका सहित है ।

७३८८. **प्रतिसं० ७** । पत्रसं० १३ । आ० १०×५½ इञ्च । ले०काल सं० १६०३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

७३८९. **प्रतिसं० ८** । पत्र सं० ४ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल सं० १८८० सावण सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है ।

७३९०. **प्रति सं० ९** । पत्रसं० ४ । आ० १० × ४ इञ्च । ले० काल सं० १७५६ आषाढ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर (कामा)

७३९१. **प्रति सं० १०** । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वेष्टन सं० ५१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—टीका रहित है ।

७३९२. **प्रति सं० ११** । पत्रसं० ६ । आ० ९½ × ४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २७३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष— प्रति संस्कृत व्याख्या सहित है।

७३९३. **प्रति सं० १२**। पत्र सं० ३। आ० ११½×५ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

७३९४. **प्रति सं० १३**। पत्रसं० २। आ० १३½×६ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ४१३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर।

७३९५. **प्रतिसं० १४**। पत्र सं० ८। आ० १०½×५½ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३२०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—प्रति संस्कृत टीका रहित है।

७३९६. **प्रतिसं० १५**। पत्रसं० १३। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डावालों का डीग।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है।

७३९७. **प्रति सं० १६**। पत्र सं० ७। आ० १०×५ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

विशेष—इन्दौर नगर में लिखा गया। प्रति संस्कृत टीका सहित है।

७३९८. **सिद्धिप्रिय स्तोत्र टीका**—**आशाधर**। पत्रसं० १०। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र०काल × । ले० काल सं० १७०२ ज्येष्ठ सुदी १२। वेष्टन सं० १९२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

७३९९. **सिद्धिप्रिय स्तोत्र टीका**— × । पत्र सं० ११। आ० ९½×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १२२७। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७४००. **सिद्धिप्रिय स्तोत्र टीका**— × । पत्रसं० ६। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र०काल × । ले०काल सं० १७६० फागुन सुदी १। वेष्टन सं० ३९३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—प्रति टोंक मध्ये लिखी गई थी।

७४०१. **सिद्धिप्रिय स्तोत्र भाषा**—**खेमराज**। पत्रसं० १३। आ० १२×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-स्तोत्र। र० काल × । ले०काल सं० १७२३ पौष सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन सं० ११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा।

विशेष—साहु ईश्वरदास ठोलिया ने आत्म पठनार्थ आनन्दराम से प्रतिलिपि करवाई थी।

७४०२. **सोमंधर स्तुति**— × । पत्र सं० १२। आ० ९×६½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २७/५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

७४०३. **सीमंधर स्वामी स्तवन**—पं० जयवंत। पत्र सं० ३। आ० १०×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तुति। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३४०/४०७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—रचना का अन्तिम भाग निम्न प्रकार है—

साधु शिरोमणि जागीइ श्री विनयमंडन उवझायरे।
तास सीस गुणि आगलो बहुला पंडित राय रे॥
आसो सुदी ५ नेमिदिनि शुक्रवार एकांति रे।
कागल जयवंत पंडितिइ लिखी उमा भिमराणसिइ रे॥

इति श्री सीमंधर स्वामी लेख समाप्तः। श्री गुणसोभाग्य सूरि लिखितं।

इसी के साथ पंडित जयवंत का लोचन परदेश पतंग गीत भी है। प्रति प्राचीन है।

७४०४. **सीमंधर स्वामी स्तवन**— × । पत्र सं० ४। आ० ११×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ४३०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

७४०५. **सुन्दर स्तोत्र**— × । पत्र सं० १०। आ० १०×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल × । ले०काल सं० १६५२। पूर्ण। वेष्टन सं० ८७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६५२ वर्षे श्रावण सुदी ११ रविवारे विक्रमपुर मध्ये लिपिकृतं। प्रति संस्कृत टीका सहित है।

७४०६. **सुप्रभातिक स्तोत्र**— × । पत्र सं० २। आ० १३½×६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ४१६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

७४०७. **सुप्रभातिक स्तोत्र**— × । पत्र सं० १। आ० १३½×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ४१७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर।

७४०८. **सुभद्रा सज्झाय**— × । पत्र सं० १। आ० १०×४ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तवन। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

७४०९. **सोहं स्तोत्र**— × । पत्र सं० १। आ० १०⅗×६⅝ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १०६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौमान, बूंदी।

७४१०. **स्तवन—गुणसूरि**। पत्र सं० १। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय—स्तुति। र० काल सं० १६५२। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २२२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—अयवंतीपुर के आनन्दनगर में ग्रंथ रचना हुई।

७४११. स्तवन— × । पत्र सं० २ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । **पूर्ण** । वेष्टन सं० १२/१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

७४१२. स्तवन —आणंद । पत्र सं० ३-१० । भाषा-हिन्दी । विषय--स्तवन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

विशेष—इसके अतिरिक्त नंदिषेण गौत्तम स्वामी आदि के द्वारा रचित स्तवन भी है ।

७४१३. स्तवन पाठ— × । पत्रसं० ८ । आ० ९×६½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २८/१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर सूनी (टोंक)

७४१४. स्तवन संग्रह— × । पत्र सं० ८ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७०-१४१ । **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

७४१५. स्तोत्र पार्श्व (यंत्रण)— × । पत्रसं० २ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

७४१६. स्तुति पंचाशिका—पाण्डे सिंहराज । पत्र सं० २-८ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय— स्तोत्र । र० काल × । ले०काल सं० १७७८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१५ । **प्राप्ति स्थान**-म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७४१७. स्तुति संग्रह – × । पत्रसं० १ । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६८६ । **प्राप्ति स्थान**- -दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७४१८. स्तुति संग्रह— × । पत्र सं० २-६६ । भाषा-संस्कृत । विषय-संग्रह । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७४१९. स्तोत्र— × । पत्रसं० ६ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—वैदिक साहित्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०४७ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७४२०. स्तोत्र— × । पत्रसं० १९ । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डावालों का डीग ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

७४२१. स्तोत्र चतुष्टय टीका—आशाधर । पत्र सं० ३३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५०९ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष— कृतिरियं वादीन्द्र विशालकीर्ति भट्टारक प्रिय सूत यति विद्यानंदस्य ।

७४२२. **प्रति सं० २**। पत्रसं० ३१। आ० १२×५ इंच। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ४१८/४३९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इत्याशाधर कृत स्तोत्र टीका समाप्ता।

कृतिरियं वादीन्द्र विशालकीर्ति भट्टारक प्रियशिष्य यति विद्यानंदस्य यद्बभौ निर्वेदस्योदयः। बोधेन स्फुरता यस्यानुग्रहतो इत्यादि स्तोत्र चतुष्टय टीका समाप्ता।

७४२३. **स्तोत्र त्रयी**— × । पत्रसं० १०। आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र० काल × । ले०काल × । वेष्टनसं० ३७१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—सिद्धप्रिय, एकीभाव एवं कल्याण मन्दिर स्तोत्र है।

७४२४ **स्तोत्र पाठ**— × । पत्र सं० ८। आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—प्राकृत-संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३१३-११७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

विशेष—उपसर्गहरस्तोत्र, भयहर स्तोत्र, अजितनाथ स्तवन, लघु शांति आदि पाठों का संग्रह है।

७४२५. **स्तोत्रय टीका**— × । पत्रसं० २५। आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २०९। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—निम्न स्तोत्र टीका सहित है।

१. भक्तामर स्तोत्र २. कल्याण मंदिर स्तोत्र तथा ३. एकीभाव स्तोत्र।

७४२६. **स्तोत्र संग्रह**— × । पत्रसं० ८८। आ० १०$\frac{3}{4}$×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र० काल × । ले०काल सं० १९०५ आसोज बुदी ५। पूर्ण। वेष्टनसं० ७२५। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

भक्तामर, कल्याणमंदिर, भूपालचौबीसी, देवागम स्तोत्र, देवपूजा, सहस्रनाम, तथा पंच मङ्गल (हिन्दी)।

७४२७. **स्तोत्र संग्रह**— × । पत्रसं० ९। आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ९४९। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—भक्तामर एवं सिद्धिप्रिय स्तोत्र संग्रह हैं। सामान्य टिप्पण भी दिया हुआ है।

७४२८. **स्तोत्र संग्रह**—× । पत्रसं० १०। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र० काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १०१। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—निम्न स्तोत्रों का संग्रह है।

एकीभाव	वादिराज	संस्कृत
विषापहार	धनंजय	,,
भूपालस्तोत्र	भूपाल	,,

७४२९. **स्तोत्र संग्रह**— × । पत्र सं० ४ । आ० १०×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११९९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—पार्श्वनाथ एवं महावीर स्तोत्र हैं ।

७४३०. **स्तोत्र संग्रह**— × । पत्र सं० ४७ । आ० १०½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४२० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—भक्तामर, कल्याण मंदिर, तत्वार्थ सूत्र एवं ऋषिमंडल स्तोत्र हैं ।

७४३१. **स्तोत्र संग्रह**— × । पत्र सं० ४ । आ० ९½×४ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-संग्रह । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष – निम्न पाठों का संग्रह है ।

(१) नवरत्न कवित्त (२) चतुर्विंशति स्तुति (३) तीर्थंकरों के माता पिता के नाम (४) भज गोविंद स्तोत्र (५) शारदा स्तोत्र ।

७४३२. **स्तोत्र संग्रह**— × । पत्र सं० ४१ । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राज-महल (टोंक)

विशेष – निम्न स्तोत्रों का संग्रह है—

सहस्रनाम स्तोत्र	जिनसेनाचार्य	संस्कृत
कल्याणमंदिर ,,	कुमुदचन्द्र	,,
भक्तामर ,,	मानतुङ्गाचार्य	,,
एकीभाव ,,	वादिराज	,,

७४३३. **स्तोत्र संग्रह**— × । पत्र सं० ७ । आ० १०½ × ५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—एकीभाव भूधरदास कृत तथा परमज्योति बनारसीदास कृत हैं ।

७४३४. **स्तोत्र संग्रह**—× । पत्र सं० ५ । आ० १०¾ × ४¾ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ४४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—चक्रेश्वरी एवं क्षेत्रपाल पद्मावती स्तोत्र हैं ।

७४३५. **स्तोत्र संग्रह**—× । पत्र सं० १५ (१६-३०) । आ० ९½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ६६९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७३३६. **स्तोत्रसंग्रह**—× पत्र सं० ३ । आ० १०¾ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३९ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—महालक्ष्मी, चक्रेश्वरी एवं ज्वालामालिनी स्तोत्र ।

७४३७. **स्तोत्रसंग्रह** – × । पत्र सं० ७ । आ० १०½ × ४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—ज्वाला मालिनी, जिनपंजर एवं पंचांगुली स्तोत्र हैं ।

७४३८. **स्तोत्र संग्रह**—× । पत्रसं० १६ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । **भाषा**–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१. भूपाल चौबीसी	भूपाल कवि	पत्रसं० ६
२. विषापहार स्तोत्र	धनंजय	" ६-११
३. भावना बत्तीसी	अमितगति	"११-१६

७४३९. **स्तोत्र संग्रह**—× । पत्रसं० ३ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । **भाषा**–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन सं० २६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—लघु सामायिक, परमानन्द स्तोत्र एवं गायत्री विधान है ।

७४४०. **स्तोत्रसंग्रह**— × । पत्रसं० ८–४० । आ० ५½ × ५ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३१७–११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—जैन संस्कार वर्णन भी है ।

७४४१. **स्तोत्र संग्रह**—× । पत्रसं० १७ । आ० ५½ × ५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९७ से ९९ तक–४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—तीन प्रतियां है । ऋषि मण्डल स्तोत्र, पद्मावती स्तोत्र, किरातवराही स्तोत्र, त्रैलोक्य मोहन कवच आदि स्तोत्र हैं ।

७४४२. **स्तोत्रसंग्रह**—× । पत्रसं० ८७ । आ० ९½ × ५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत-हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १७९२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

संवत् १७९२ मिती ज्येष्ठ सुदि चतुर्दशी लि० पंडित खेतसी उदयपुरमध्ये ।

७४४३. **स्तोत्र संग्रह**— × । पत्र सं० २१ । आ० ५ × ५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—परमानन्द, कल्याण मंदिर, एकीभाव एवं विषापहार स्तोत्र है ।

७४४४. **स्तोत्र संग्रह**— × । पत्र सं० २३ । आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । **पूर्ण** । वेष्टनसं० ५२ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर कोठ्यों का नैणवा ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

सरस्वती स्तोत्र		संस्कृत
सरस्वती स्तुति	ज्ञानभूषण	"
क्षेत्रपाल स्तोत्र		"
दशलक्षण स्तोत्र		"
महावीर समस्या स्तवन		"
वर्द्धमान स्तोत्र		"
पार्श्वनाथ स्तोत्र मंत्र सहित		"
पार्श्वनाथ स्तोत्र		"
चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र		"
चन्द्रप्रभ स्तोत्र मंत्र सहित		"
बीजाक्षर ऋषि मंडल स्तोत्र		"
ऋषि मंडल स्तोत्र	गौतमस्वामी	"

७४४५. **स्तोत्र संग्रह**—× । पत्र सं० ७ । आ० ११ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचनाकाल × । ले० काल × । **पूर्ण** । वेष्टनसं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोठ्यों का नैणवा ।

विशेष—निम्न स्तोत्रों का संग्रह है :—

पार्श्वनाथ स्तोत्र	—	संस्कृत
स्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"
क्षेत्रपाल स्तोत्र	—	"
पार्श्वनाथ स्तोत्र	राजसेन	"
चन्द्रप्रभ स्तोत्र	—	"
लघु भक्तामर स्तोत्र	—	"

नमो जोति मुर्ति त्रिकालं त्रिसिधं ।
नमो नरविकारं नरागंध गंधं ।।
नमो तो नराकार नर भाग वाणी ।
नमो तो नराधार आधार जाणी ।।

७४४६. **स्तोत्र संग्रह**— × । पत्र सं० १६ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—कल्याण मंदिर, विषापहार एवं लक्ष्मी स्तोत्र अपूर्ण है ।

७४४७. **स्तोत्र संग्रह**— × । पत्र सं० १८ । आ० ६×४ इञ्च । **भाषा**—प्राकृत-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—मुख्यत: निम्न स्तोत्रों का संग्रह है ।

भयहर स्तोत्र, अजितशांति स्तोत्र एवं भक्तामर स्तोत्र आदि ।

७४४८. **स्तोत्र संग्रह**— × । पत्र सं० ६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—निम्न स्तोत्रों का संग्रह है ।

स्वयंभू स्तोत्र	समन्तभद्र	संस्कृत
महावीर स्तोत्र	विद्यानंदि	,,
नेमि स्तोत्र	—	,,

७४४९. **स्तोत्र संग्रह**— × । पत्र सं० ६ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलान (बूंदी)

विशेष—निम्न स्तोत्रों का संग्रह है—

स्वयंभू स्तोत्र, भूपालचतुर्विंशति स्तोत्र, सिद्धिप्रिय स्तोत्र एवं विषापहार स्तोत्र का संग्रह है ।

७४५०. **स्तोत्र संग्रह**— × । पत्र सं० २१ से ३६ । भाषा—प्राकृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । लेखन काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष—गुजराती में अर्थ दिया हुआ है ।

७४५१. **स्तोत्र संग्रह**— × । पत्र सं० १६ । भाषा—हिन्दी-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १६४६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

विशेष—

नवकार मंत्र, जिनदर्शन, परमजोति, निर्वाण काण्ड भाषा, भक्तामर स्तोत्र एवं लक्ष्मी स्तोत्र हैं ।

७४५२. **स्तोत्र संग्रह**— × । पत्र सं० १४ । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—एकीभाव, विषापहार, कल्याण मन्दिर एवं भूपाल चौबीसी स्तोत्र हैं ।

७४५३. **स्वयंभू स्तोत्र**—**समन्तभद्र** । पत्र सं० २५ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी जयपुर ।

७४५४. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ४६ । आ० ६$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले० काल सं० १८१६ मंगसिर बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रारम्भ में सामायिक पाठ भी हैं।

७४५५. स्वयंभू स्तोत्र (स्वयंभू पञ्जिका)—**समन्तभद्राचार्य**। पत्र सं० ११। आ० १२½ × ५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल × । ले० काल सं० १७६२। वेष्टन सं० ६३०। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—इसमें टीका भी दी हुई है। टीका का नाम स्वयंभू पंजिका है।

वर्षेन भागवीतेन्दु कृते दीपोत्सवे दिने।
स्वयंभूपंजिका लेखि लक्ष्मणारन्येन धीमता॥

७४५६. स्वयंभू स्तोत्र टीका—प्रभाचन्द। पत्र सं० ६१। आ० ६×४ इञ्च। **भाषा**—संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल × । ले० काल सं० १८२०। पूर्ण। वेष्टन सं० ८५। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर, अजमेर।

विशेष—ग्रंथ का नाम क्रियाकलाप टीका भी है।

७४५७. प्रति सं० २। पत्र सं० १५२। आ० ११×४½ इंच। **ले० काल** सं० १७७७। पूर्ण। वेष्टन सं० २६८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

७४५८. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४६। आ० १२½×५½ इञ्च। ले० काल सं० १७०२। पूर्ण। वेष्टन सं० २४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—अलवर में प्रतिलिपि की गई थी।

७४५९. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६६। आ० ११×४½ इञ्च। ले० काल सं० १६६५ भादवा बुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० १४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—रोहतक नगर में आ० गुणचन्द ने प्रतिलिपि करवायी थी।

७४६०. स्वयंभू स्तोत्र भाषा - ज्ञानतराय। पत्र सं० ४६। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १६२३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर।

७४६१. हीपाली—रिष। पत्र सं० १। आ० १०×४½ इञ्च। **भाषा**-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष- साध्वी श्री भागा सज्झाय भी।

—:o:—

विषय -- पूजा एवं विधान साहित्य

७४६२. अकृत्रिम चैत्यालय जयमाल—भैया भगवतीदास । पत्र सं० ३ । आ० ६½×४½ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—पूजा । र०काल सं० १७४५ भादवा सुदी ४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०१२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—अकृत्रिम जिन चैत्यालयों की पूजा है ।

७४६३. अकृत्रिम चैत्यालय पूजा—चैनसुख । पत्र सं० ३६ । आ० १३ × ६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय पूजा । र० काल सं० १६३० । ले० काल सं० १६६४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

७४६४. अकृत्रिम चैत्यालय पूजा—मल्लिसागर । पत्र सं० २० । आ० १०½×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन सं० २८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

७४६५. अकृत्रिम चैत्यालय पूजा— × । पत्र सं० १७७ । आ० १२½×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र० काल सं० १८६० । ले० काल सं० १६११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

७४६६. अकृत्रिम जिन चैत्यालय पूजा—लालजीत । पत्र सं० २२६ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र० काल सं० १८७० कार्तिक सुदी १२ । ले० काल सं० १८८६ वैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मंदिर अलवर ।

७४६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२६ । आ० १०२×६½ इञ्च । ले० काल सं० १८७७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—लक्ष्मणदास बाकलीवाल खुमेरवाले ने महात्मा पन्नालाल जयपुर वाले से आगरा में प्रतिलिपि करवाई थी ।

७४६८. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० १५६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर हण्डावालों का डीग ।

विशेष—आगरा में प्रतिलिपि की गई थी ।

७४६९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १५५ । आ० १३ × ७½ इञ्च । ले० काल सं० १६२८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

७४७०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४७ । ले० काल सं० १६०५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

अंतिम प्रशस्ति—

पूजा आरम्भ कियो, काशी देश हर्ष भयो,
भेलपुर ग्राम जैनजन को निवास है ।

अकीर्तम मन्दिर है रचा चारि सै अठावन ।
जेतिन को सुपाठ लालजीत यौ प्रकास है ।

७४७१. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० १६७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७४७२. **प्रतिसं० ७** । पत्रसं० १७८ । आ० २२×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१-३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, कोटडियों का डूंगरपुर ।

७४७३. **प्रतिसं० ८** । पत्रसं० १६१ । आ० ११½×६½ इञ्च । ले० काल सं० १६५१ सावन सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—श्रावक केदारमलजी ने फतेहपुर में सोनीराम भोजग से प्रतिलिपि कराई थी ।

७४७४. **अक्षयदशमी पूजा**— × । पत्र सं० ८ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—मुक्तावली पूजा भी है ।

७४७५. **अढाई द्वीप पूजा**— × । पत्र सं० १७६ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १६१५ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२५/३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

७४७६. **अढाई द्वीप पूजा—डालूराम** । पत्रसं० २-३० । आ० १५×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल सं० १८८७ ज्येष्ठ सुदी १३ । ले० काल सं०१६३१ आषाढ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—ईश्वरी प्रसादशर्मा समशावादवालों ने प्रतिलिपि की थी ।

७४७७. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ११३ । आ० १२×६ इंच । ले० काल सं० १६३१ । पूर्ण । वेष्टनसं० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

७४७८. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० १११ । आ० १२¾×४½ इञ्च । ले० काल सं० १६६३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—छोटे दीवानजी के मन्दिर की प्रति से रिषभचन्द बिन्दायक्या ने प्रतिलिपि की थी ।

७४७९. **अढाईद्वीप पूजा—भ० शुभचन्द्र** । पत्रसं० २६८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १६२४ सावण बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७४८०. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ६७ । आ० ११½×७ इञ्च । ले० काल सं० १८६० आषाढ़ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—१ से २८ तथा ६५ व ६६ पत्रों पर सुन्दर रंगीन बेलें हैं ।

बख्तलाल तेरापंथी ने दौसा में प्रतिलिपि करवाई थी ।

७४८१. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० २७३ । ले०काल सं० १८७४ । पूर्ण । वेष्टनसं० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

विशेष—जोधराज कासलीवाल कामा ने प्रतिलिपि कराई थी।

७४८२. **प्रति सं० ४**। पत्र सं० २४३। आ० १३½×७½ इञ्च। ले०काल सं० १६११। पूर्ण। वेष्टन सं० १६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर।

७४८३. **अढाईद्वीप पूजा लालजीत**। पत्रसं० १३७। आ० १३×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय—पूजा। र०काल ×। **ले०काल** सं० १८७० भादों सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन सं० १२५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

७४८४. **अढाईद्वीप पूजा**— ×। पत्र सं० ३६। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

विशेष—अढाई द्वीप पूजा के पहिले और भी पूजाएं दी हैं।

७४८५. **प्रति सं० २**। पत्र संख्या १४०। १२½×६ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २१/४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली।

७४८६. **प्रति सं० ३**। पत्रसं० २१५। आ० १२½×७½ इञ्च। ले०काल सं० १६०६जेठ बुदी ११। पूर्ण। वेष्टन सं० १४/३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली।

७४८७. **प्रति सं० ४**। पत्रसं० २४०। आ० २३×६¾ इञ्च। ले०काल सं० १८८८ पौष सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन सं० १११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

विशेष—रामचन्द्र ने नानगराम से किरौली नगर में दीवान बुधसिंग जी के मन्दिर में प्रतिलिपि करवाई थी।

७४८८. **प्रति सं० ५**। पत्र सं० १०४। आ० १०½×७ इञ्च। ले०काल सं० १८५२। पूर्ण। वेष्टन सं० ११२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मंदिर उदयपुर।

७४८९. **प्रति सं० ६**। पत्रसं० १५४। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ७०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर हुण्डावालों का डीग।

७४९०. **अनंतचतुर्दशी पूजा-श्री भूषणयति**। पत्र सं० २४। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर हुण्डावालों का डीग।

७४९१. **अनन्तचतुर्दशी पूजा—शान्तिदास**। पत्रसं० ११। आ० १२×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। र०काल ×। ले०काल सं० १७६७ वैशाख सुदी ५। वेष्टन सं० ६१४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—नरायण नगर में भ० जगत्कीर्त्ति के शिष्य ब्रह्म दोदराज ने अपने हाथ से प्रतिलिपि की थी।

७४९२. **अनन्त चतुर्दशी पूजा**— ×। पत्रसं० १४। आ० १०×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १२८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

७४९३. **अनन्तचतुर्दशी पूजा—** × । पत्र सं० १८ । आ० ११½×४¾ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

७४९४. **अनन्तचतुर्दशी व्रत पूजा—** × । पत्र सं० २७ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३७० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७४९५. **अनन्तचतुर्दशी व्रत पूजा—विश्वभूषण ।** पत्रसं० १४ । आ० ९½×४½ इञ्च । **भाषा**-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३६८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

७४९६ **अनंत जिनपूजा—पं० जिनदास ।** पत्रसं० २६ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८२३ सावण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४९ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर टोडारायसिंह (टोंक)

७४९७. **अनन्तनाथ पूजा—श्रीभूषण ।** पत्रसं० १३ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८२४ मंगसिर बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४१८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७४९८. **प्रतिसं० २ ।** पत्रसं० १६ । ले० काल सं० १८७९ भादवा बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ९५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अजमेर भण्डार ।

७४९९. **प्रति सं० ३ ।** पत्रसं० १६ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल सं० १८७९ भादवा बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ९५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७५००. **प्रतिसं० ४ ।** पत्रसं० १-२२ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

७५०१. **अनन्तनाथ पूजा—रामचन्द्र ।** पत्र सं० ५ । आ० ६½×८½ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी (पद्य) । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १९९१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

७५०२. **अनन्तनाथ पूजा—** × । पत्रसं० २४ । आ० १०×४½ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय— पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १००७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

७५०३. **अनन्तनाथ पूजा—** × । पत्र सं० १३ । आ० १३ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल सं० १८५३ भादवा बुदी ७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

७५०४. **अनन्तनाथ पूजा—** × । पत्र सं० १८ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी (बूंदी) ।

७५०५. अनन्तनाथ पूजा × । पत्रसं० २७ । आ० ९×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८६६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)

७५०६. अनन्तनाथ पूजा—× । पत्र सं० ३१ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९२५ भादवा बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, (बूंदी)

विशेष-आगरा के नेमीश्वरजी के मन्दिर के भुजबली शास्त्र भिक्षारदासजी की प्रेरणा से ब्राह्मण गिरधारी ने प्रतिलिपि की थी ।

७५०७. अनन्तनाथ पूजा—× । पत्र सं० ३३ । आ० ९×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १९०९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६/३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

७५०८. अनन्तनाथ पूजा मंडल विधान—गुणचन्द्राचार्य । पत्रसं० २९ । आ० १२½×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १६३० । पूर्ण । वेष्टन सं० २५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, (बूंदी)

७५०९. प्रतिसं० २ । पत्रसं० २९ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल सं० १६३० । पूर्ण । वेष्टनसं० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी

७५१०. प्रति सं० ३ । पत्रसं० ५९ । आ० १०×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

७५११. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० २ से २७ । आ० ११×७ इञ्च । ले० काल सं० १९२१ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४/१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर टूनी (टोंक)

७५१२. प्रतिसं० ५ । पत्र सं० ४१ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी (बूंदी)

७५१३. प्रति सं० ६ । पत्र संख्या २६ । आ० १० × ५ इञ्च । ले०काल सं० १८७६ पूर्ण । वेष्टन सं० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

७५१४. प्रतिसं० ७ । पत्रसं० ४२ । आ० ८½ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १९२० । पूर्ण । वेष्टनसं० २०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—श्री शाकमागपुर में रचना हुई थी । नेमीसुर चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी ।

७५१५. अनन्त पूजा विधान । पत्र सं० ३ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५८/२९२ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

७५१६. अनन्त व्रत कथा पूजा—ललितकीर्त्ति । पत्रसं० ८ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १९२२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

७५१७. अनन्तव्रत पूजा – पाण्डे धर्मदास । पत्रसं० २७ । आ० ८ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १६६३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७५१८. अनन्तव्रत पूजा—सेवाराम साह । पत्रसं० ३ । आ० ८½ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १९४७ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६५० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७५१९. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ३ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७५२०. अनन्तव्रत पूजा— × । पत्रसं० १४ । आ० ११ ×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय – पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १९५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७५२१. अनन्तव्रत पूजा— × । पत्र सं० ७ । आ० ५½ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

७५२२. अनन्तव्रत पूजा— × । पत्र सं० १४ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय - पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८८० सावण बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७५२३. अनन्तव्रत पूजा— × । पत्रसं० २० । आ. १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले.काल सं० १९६४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २५/१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर डूंगी (टोंक)

७५२४. अनन्तव्रत पूजा— × । पत्रसं० २३ । आ० ९½ × ६ इञ्च । भाषा-संस्कृत, हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १९०८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—१४ पूजायें है । जयमाल हिन्दी में हैं—कहीं २ अष्टक भी हिन्दी में है ।

७५२५. अनन्त व्रत पूजा — × । पत्रसं० १८ । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

७५२६. अनन्तव्रत पूजा – × । पत्र सं० १३ । आ० १३ × ६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

७५२७. अनन्तव्रत पूजा— × । पत्रसं० १७ । आ० १५ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों डूंगरपुर ।

७५२८. अनन्तव्रत पूजा - × । पत्रसं० १२ । आ० १० × ६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८८१ भादवा सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राजस्थान (टोंक)

विशेष—प्रति जीर्ण है।

७५२९. अनन्तव्रत पूजा—× । पत्र सं० ६ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८६६ सावण सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४-१०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

७५३०. अनन्तव्रत पूजा— × । पत्रसं० १-२१ । आ० ७$\frac{3}{4}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४८-२८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है।

७५३१. अनन्तव्रत पूजा उद्यापन—सकलकीर्त्ति । पत्र सं० १८ । आ० १० × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८८६ आसोज सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३७२ । **प्राप्ति स्थान**---भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

७५३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१ । ले०काल सं० १९२६ मंगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३७६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७५३३. अनन्तव्रत पूजा विधान भाषा—× । पत्रसं० ३२ । आ० ८$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १५३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अजमेर भण्डार ।

७५३४. अनन्तव्रत विधान—शान्तिदास—× । पत्रसं० २४ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९३५ । **पूर्ण** । **वेष्टनसं०** ५४-२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—शिवबक्स ने दौसा में प्रतिलिपि की थी ।

७५३५. अनन्तव्रतोद्यापन—नारायण । पत्र सं० ५० । आ० ९ × ६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १९५५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर ।

७५३६. अनन्तव्रतोद्यापन— × । पत्रसं० २ से ३२ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौखानी मंदिर करौली ।

विशेष---प्रथम पत्र नहीं है ।

७५३७. अनन्तव्रतोद्यापन पूजा—× । पत्र सं० ११ । आ० ११ × ४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी

७५३८. अभिषेक पाठ—× । पत्र सं० ४ । आ० ८$\frac{1}{2}$ × ७ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७५३९. अभिषेक पाठ—× । पत्रसं० ७ । आ० १०½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १६०९ । पूर्ण । वेष्टनसं० २८६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी (बूंदी) ।

विशेष – घृताभिषेक पाठ है ।

प्रशस्ति—संवत् १६०९ वर्षे मार्ग सुदि नक्षमी बृहस्पतिवासरे उत्तराभाद्रपद नक्षत्रे घृत गुण आत्म पठनार्थ लिखितं पं० ज्योति श्री महेस गोपा सुत ।

७५४०. अभिषेक पाठ— × । पत्र सं० ४७ । आ० १० × ८ इञ्च । **भाषा** संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५ । **प्राप्ति स्थान**दि० जैन खंडेलवाल मंदिर उदयपुर ।

७५४१. अभिषेक पूजा—× । पत्र सं० ३ । आ० १०×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७५४२. अभिषेक पूजा—विनोदीलाल । पत्रसं० ५ । आ० ९½ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० १९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७५४३. अभिषेक विधि × । पत्रसं० ४ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—विधान । र०काल × । ले० काल । वेष्टन सं० ५८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७५४४. अष्टद्रव्य महा-अर्घ—× । पत्रसं० १ । आ० ८×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल ×। ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

७५४५. अष्टाह्निका पूजा--सकलकीर्ति । पत्र सं० १९ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६२/५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)

७५४६. अष्टाह्निका व्रतोद्यापन-शोभाचन्द । पत्र सं २० । आ० ११½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८१७ चैत सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७५४७. अष्टाह्निका पूजा—× । पत्रसं० २० । आ० ८¾ × ६¾ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय पूजा । र०काल सं० १८७९ कार्तिक बुदी ९ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११४७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है ।

७५४८. अष्टाह्निका पूजा—× । पत्रसं० १५ । आ० ८ × ६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल ×। ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

७५४९. अष्टाह्निका पूजा—× । पत्रसं० १३ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३८३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

७५५०. अष्टाह्निका पूजा—× । पत्र सं० १६ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । **विषय**—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १६२० । पूर्ण । वेष्टनसं० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

७५५१. अष्टाह्निका पूजा—× । पत्र सं० ३ । आ० ११ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३७/३३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७५५२. अष्टाह्निका पूजा उद्यापन—शुभचन्द्र । पत्रसं० १२ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८५६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खंडेलवाल मंदिर उदयपुर ।

७५५३. अष्टाह्निकापूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्रसं० ४ । आ० ११×५ इञ्च । **भाषा**-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

७५५४. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४५४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७५५५. अष्टाह्निका पूजा—सुमतिसागर । पत्र सं० ८ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८५८ चैत सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७५५६. अष्टाह्निका पूजा—ज्ञानतराय । पत्रसं० १६ । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७५५७. अष्टाह्निका पूजा—× । पत्र सं० १४३ । आ० ८ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १९५४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—२ रु० १५ आना लगा था ।

७५५८. अष्टाह्निका मंडल पूजा—× । पत्र सं० ६ । आ० १० × ७ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी (पद्य) । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिरदौसा ।

७५५९. अष्टाह्निका व्रतोद्यापन पूजा—पं० नेमिचन्द्र । पत्रसं० ३५ । आ० ६ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती टूनी (टोंक)

७५६०. **अष्टाह्निका पूजा**—× । पत्रसं० २७। आ० ८½×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर मालपुरा (टोंक)

७५६१. **अष्टान्हिका पूजा**- × । पत्र सं० १९ । आ० १३×७ इञ्च । र०काल सं० १८७९ । ले० काल सं० १८८५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक)

७५६२. **अष्टाह्निका पूजा**— × । पत्रसं० २२ । आ० १०½×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा ।

७५६३. **अष्ट प्रकारी पूजा**—× । पत्र सं० ४ । भाषा—हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७५६४. **अष्टप्रकारी पूजा जयमाल**—× । पत्रसं० ११ । आ० १३×६ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

७५६५. **असज्झाय विधि** । पत्र सं० २ । भाषा—हिन्दी । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

७५६६. **आकार शुद्धि विधान - देवेन्द्रकीर्त्ति** । पत्रसं० ६ । आ० ११½ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६१-१४८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

७५६७. **आठ प्रकार पूजा कथानक**—× । पत्र सं० ८५ । भाषा—प्राकृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

७५६८. **आदित्यजिन पूजा—केशवसेन** । पत्रसं० ८ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १६४६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

७५६९. **आदित्य जिनपूजा—भ० देवेन्द्रकीर्त्ति** । पत्रसं० १७ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—इसका दूसरा नाम आदित्यवार व्रत विधान भी है ।

७५७०. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १६ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल सं० १६१६ श्रावण सुदी ६ पूर्ण । वेष्टन सं० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—मंगलचन्द श्रावक ने प्रतिलिपि की थी ।

७५७१. **आदित्यवार व्रतोद्यापन पूजा—जयसागर** । पत्रसं० १० । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८१६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७५७२. **आदित्यव्रत पूजा**— ×। पत्र सं० १२। आ० १०½×५ इञ्च। **भाषा**—संस्कृत। **विषय**—पूजा। र०काल ×। ले०काल सं० १८३६ जेठ बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० ५१। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—पं० आलमचन्द ने लिखा था।

७५७३. **आदित्यव्रत पूजा**— × । पत्रसं० ४। आ० १०×५½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। र०काल ×। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ६१२। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७५७४. **इन्द्रध्वज पूजा—भ० विश्वभूषण**। पत्रसं० १११। आ० १२×६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय पूजा। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वे० सं० १५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर उदयपुर।

७५७५. **प्रति सं० २**। पत्रसं० ११८। आ० ११½×५ इञ्च। ले० काल सं० १८८३ फागुण बुदी ३। पूर्ण। वेष्टन सं० १२७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर टूनी (टोंक)

७५७६. **प्रति सं० ३**। पत्रसं० ११२। आ० ११×७½ इञ्च। ले० काल सं० १९८५। पूर्ण। **वेष्टन सं०** १०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा।

७५७७. **इन्द्रध्वज पूजा**— × । पत्र सं० ६०। आ० १२×७½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। **विषय**—पूजा। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—ग्रंथ का लागत मूल्य १३।-) है।

७५७८. **इकवीस विधि पूजा**— × पत्र सं० १३। **भाषा**—हिन्दी गुजराती। **विषय**—पूजा। र०काल × । ले० काल सं० १८७८। पूर्ण। वेष्टन सं० ६५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

७५७९. **ऋषिमंडल पूजा—शुभचन्द**। पत्र सं० १८। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। र०काल × । ले०काल सं० १८१६ जेठ सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन सं० १०। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर भरतपुर।

७५८०. **ऋषि मंडल पूजा—विद्याभूषण**। पत्रसं० २०। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १८३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर।

७५८१. **ऋषि मंडल पूजा—गुणनन्दि**। पत्रसं० २१। आ० १०×५½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। र० काल × । ले०काल सं० १९११। पूर्ण। वेष्टन सं० २८२। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

विशेष—बूंदी में नेमिनाथ चैत्यालय में पं० रतनलाल ने प्रतिलिपि की थी।

७५८२. **प्रति सं० २**। पत्रसं० २-२४। आ० ११×५ इञ्च। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ५१०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर।

७५८३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २० । आ० १०$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन सं० ४३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७५८४. ऋषिमंडल पूजा भाषा—दौलत औसेरी । पत्र सं० १२ । आ० १२$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल सं० १९०० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७५८५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । आ० ८$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

७५८६. ऋषिमंडल पूजा—× । पत्र सं० ४ । आ० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

७५८७. ऋषिमंडल पूजा—× । पत्र सं० ५ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७/३९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—६ प्रतियां और हैं जिनके वेष्टन सं० ३८/३९७ से ४३/४०२ तक हैं ।

७५८८. ऋषिमंडल पूजा- × । पत्र सं० १७ । आ० ११×७ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९२२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

७५८९. ऋषिमंडल पूजा— ×.। पत्र सं० २ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७२९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७५९०. ऋषिमंडल पूजा भाषा— × । पत्र सं० १३ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८९४ फागुण बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२३२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७५९१. ऋषिमंडल यंत्र पूजा— × । पत्र सं० १४ । आ० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

७५९२. ऋषिमंडल स्तोत्र पूजा— × । पत्र सं० १७ । आ० ११×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—प्रतापगढ़ में पं० रामलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

७५९३. अंकुरारोपण विधि—आशाधर । पत्र सं० ६ । आ० ९$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय - प्रतिष्ठा विधान । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७५९४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—प्रतिष्ठा विधान । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० २६९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

७५९५. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० ६ । आ० ८ × ६½ इंच । र०काल × । ले० काल सं० १९४८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

७५९६. **अंकुरारोपण विधि**—**इन्द्रनन्दि** । पत्रसं० ११९ । आ० १२ × ६ इंच । **भाषा**-संस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले०काल सं० १९४० वैशाख शुक्ला ४ । **पूर्ण** । वेष्टन सं० २९७-११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

७५९७. **कमल सप्तद्वादश इतोद्यापन**—× । पत्र सं० १० । आ० १० × ६ इंच । **भाषा**-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२३—× । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

७५९८. **कर्मचूर उद्यापन**— × । पत्रसं० ९ । आ० ११ × ७ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १८८४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक)

७५९९. **कर्मदहन उद्यापन—विश्वभूषण** । पत्र सं० २६ । आ० १०½ × ४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० २९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७६००. **कर्मदहन पूजा—टेकचंद** । पत्रसं० १७ । आ० ११ × ७ इञ्च । **भाषा**-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नागदी बूंदी ।

७६०१. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० १३ । आ० ११ × ७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

७६०२. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० १८ । आ० १० × ७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

७६०३. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० २३ । आ० ९ × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३-१०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

७६०४. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० ५७ । आ० १०½ × ४ इञ्च ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७६०५. **प्रतिसं० ६** । पत्रसं० २२ । ले०काल सं० १९६२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७६०६. **प्रति सं० ७** । पत्रसं० १९ । आ० १२ × ६ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

७६०७. **प्रति सं० ८** । पत्रसं० ३० । आ० ९ × ७ इञ्च । ले०काल सं० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक)

७६०८. **प्रति सं० ९** । पत्रसं० २५ । आ० ९ × ७ इञ्च । ले०काल सं० १८८२ श्रावण बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७ । **प्राप्ति थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर मालपुरा (टोंक)

विशेष— रामलाल पहाड़िया ने प्रतिलिपि की थी ।

७६०९. **प्रतिसं० १०** । पत्रसं० २१ । आ० १० × ४½ इंच । ले०काल सं० १६२७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोट्यों का नैणवा ।

७६१०. **प्रतिसं० ११** । पत्रसं० ३० । आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले०काल सं० १६५५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५६९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७६११. **प्रतिसं० १२** । पत्रसं० ४१ । आ० १२¾ × ८¾ इञ्च । ले० काल सं० १६५६ चैत सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७६१२. **प्रति सं० १३** । पत्रसं० ६६ । ले०काल सं० १८८५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—सदासुख रिषभदास द्वारा प्रतिलिपि कराई गई थी ।

७६१३. **प्रतिसं० १४** । पत्र सं० २२ । आ० ११ × ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७६१४. **कर्मदहन पूजा—शुभचन्द्र** । पत्र सं० १८ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १६३८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

७६१५. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० १८ । आ० ११ × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—हरविंशदास लुहाडिया ने सिकन्दरा में प्रतिलिपि की थी ।

७६१६. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० १० । आ० ११½ × ४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

७६१७. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० १२ । आ० ११×५ इंच । ले०काल स० १७६० वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक)

विशेष—आ० ज्ञानकीर्ति ने नगर में प्रतिलिपि की थी ।

७६१८. **प्रतिसं० ५** । पत्रसं० १७ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १६७३ । पूर्ण । वेष्टन स० १६९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

संवत् १६७३ वर्षे आसोज सुदी ११ इह सागवाडा नगरे श्री आदिनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे भट्टारकाचार्य श्री रत्नकीर्ति तत्पट्टे भट्टारकाचार्य श्री यशःकीर्ति तत्पट्टे भ० महाचन्द्रा ल० मं० भ० श्री जिनचन्द्र मं० सकलचन्द्रान्वये भ० श्री रत्नचन्द्र विराजमाने हुंबड ज्ञातीय संखेश्वर गोत्रे सा० खाणा भार्या सजाणदे तत्पुत्री स० फाला भार्या कडु सा० अरथी भार्या हन्दी तत्पुत्र बलभदास स्वस्वज्ञानावरणी कर्म क्षयार्थं भ० श्री ठाकरा कर्मदहन पूजा लिखाप्यने दत्त ।

७६१९. **प्रति सं० ६** । पत्र स० २२ । आ० १०½ × ६½ इञ्च । ले० काल सं० १६१९ आषाढ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

७६२०. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० १७ । ले०काल सं० १६६५ आषाढ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १८६–३७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७६२१. **प्रति सं० ८** । पत्र सं० १७ । आ० ११½ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १७२१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७६२२. **प्रतिसं० ९** । पत्रसं० १५ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७६२३. **प्रतिसं० १०** । पत्रसं० १६ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १७३१ × । पूर्ण । वेष्टन स० २७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—भाद्रोल नगरे लिखापितं ललितकीर्ति आचार्य ।

७६२४. **प्रतिसं० ११** । पत्र सं० १४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७६२५. **कर्म दहन पूजा**— × । पत्रसं० १२ । आ० ११¾ × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८८० सावण सुदी १० । पूर्ण । **वेष्टनसं०** १५५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७६२६. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ९ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल सं० १८२८ । पूर्ण । वेष्टनसं० २५५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

७६२७. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० १२ । आ० १२ × ५¾ इञ्च । ले०काल सं० १८९२ सावण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०२० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७६२८. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० २३ । आ० १०¾ × ९¾ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५३८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७६२९. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० २३ । आ० १०¾ × ४¾ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** १५२५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—मूल्य ४॥–। लिखा है ।

७६३०. **प्रतिसं० ६** । पत्रसं० १२ । आ० ११ × ४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

७६३१. **प्रतिसं० ७** । पत्रसं० १४ । आ० १२ × ४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

७६३२. **प्रति सं० ८** । पत्रसं० २२९ से २७० । ले०काल × । **पूर्ण** । **वेष्टनसं०** ६९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—यशोनंदि की पंचपरमेष्ठी पूजा भी आगे दी गई है ।

७६३३. **प्रतिसं० ९** । पत्रसं० ११ । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७६३४. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १८७/३४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७६३५. प्रति सं० १० । पत्र सं० १७ । ले०काल × । **पूर्ण** । वेष्टन सं० १८६/३३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

संवत् १५८२ वर्षे आसो वदि ५ भूमे गुर्जरदेशे बीजापुर शुभस्थाने श्री शांतिनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे नंदिसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदिस्तत्पट्टे भ० श्री सकल कीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री भुवनकीर्त्ति तदाम्नाये भ० श्री ज्ञानभूषणस्तत्पट्टे भ०श्री विजयकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभ चन्द्रदेवास्तदाम्नाये चन्द्रावती नगरे नागद्रहा ज्ञातीय साह वाना भार्या धाछ सुत पंडित राजा पठनार्थं ।

७६३६. प्रतिसं० १२ । पत्रसं० १७ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल सं० १८१६ आषाढ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मन्दिर बैर ।

विशेष—महादास अग्रवाल ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

७६३७. प्रति सं० १३ । पत्रसं० २७ । आ० ११½×४½ इञ्च । ले०काल सं० १८१३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन सोगाणी मंदिर करौली ।

७६३८. प्रतिसं० १४ । पत्र सं० १७ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल सं० १८४१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

७६३९ प्रतिसं० १५ । पत्र सं० १७ । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

७६४०. प्रतिसं० १६ । पत्र सं० १६ । आ० ६×६ इञ्च । ले०काल १६५० । पूर्ण । वेष्टन सं० १७ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

विशेष—नैणवा में प्रतिलिपि हुई थी ।

७६४१. कर्मदहन पूजा विधान– × । पत्रसं० ३० । आ० १०×६½ इंच । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १६३३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८६/३१ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

७६४२. प्रतिसं० २ । पत्र सं० २७ । आ० १०×६½ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६०–३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

७६४३. कर्म निर्जरणी चतुर्दशी विधान— × । पत्र सं० १०४ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १६२८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—संवत् १६२८ वर्षे ज्येष्ठ बुदी ५ शनौ श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्द-कुन्दाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भ० सकलकीर्तिस्तत्पट्टे भ० श्री भुवनकीर्त्तिदेवा स्तत्पट्टे श्री विजयकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्रस्तत्पट्टे भ० श्री सुमतिकीर्त्तिदेवास्तदाम्नाये गुरु श्री अभयचन्द्रस्त-शिष्य भ० श्री देवदास पठनार्थं पोभीना वास्तव्य हुंबडज्ञातीय श्रे० बाघा भार्या बनादे । तयो सुत श्रे० गोविंद भार्या गुरादे । भ्राता गोपाल भार्या गगादे एतेषां मध्ये श्री गुरादे .....

७६४४ **कलशविधि**— × । पत्र सं० ९ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

७६४५. **कलशारोहण विधान**—×। पत्रसं० १२ । आ० ८×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले० काल सं० १९४८ । पूर्ण । वेष्टनसं० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—पं० रतनलाल नेमीचन्द की पुस्तक है ।

७६४६. **कलशारोहण विधि**—×। पत्रसं० १४ । आ०८×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३८९-१४६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

७६४७. **कल्याण मन्दिर पूजा—देवेन्द्रकीर्ति** । पत्रसं० ६ । आ० ११½ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८९१ । पूर्ण । वेष्टनस० १०५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—प० सदासुख ने जम्बू स्वामी चैत्यालय में पूजा की थी ।

७६४८. **कल्याण मंदिर पूजा**—× । पत्रसं० १२ । आ० १० × ६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १९३८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

७६४९. **कलिकुण्ड पूजा**—× । पत्रसं० ३ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अजमेर भण्डार ।

७६५०. **कलिकुण्ड पूजा**—× । पत्र सं० ६ । आ० १०×४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

विशेष—पद्मावती पूजा भी दी हुई है ।

७६५१. **कलिकुण्ड पूजा**—× । पत्रसं० ३ । आ० ९½×६ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७६५२. **कलिकुण्ड पूजा**—× । पत्रसं० २ । आ० १४×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०४-५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

७६५३. **कांजी व्रतोद्यापन—रत्नकीर्ति** । पत्र सं० ४ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय पूजा । र०काल । ले०काल सं० १८६८ आसोज बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—पं० चिदानन्द ने लिखा था ।

७६५४. कंजिकाव्रतोद्यापन—मुनि ललितकीर्ति । पत्र सं० ६ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १७९२ अषाढ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० भ० जैन मन्दिर अजमेर ।

७६५५. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ५ । आ० ११½×४¾ इञ्च । **भाषा**-हिन्दी पद्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—महाराज जगतसिंह के शासन काल में सवाईमाधोपुर में अमरचंद कोटेवाले ने लिखा था ।

७६५६. कुण्डसिद्धि—× । पत्र सं० ६ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** २३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

विशेष—मंडप कुण्ड सिद्धि दी गयी है ।

७६५७. कोकिला व्रतोद्यापन— × । पत्रसं० १२ । आ० ६ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १७०४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—गुटका नं. ९ में है ।

७६५८. गणधरवलय पूजा—सकलकीर्ति । पत्र सं० ४ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २-३१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

७६५९. प्रति सं० २ । पत्रसं० ४ । ले०काल सं० १६७३ आषाढ सुदी ९ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३-३१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६७३ वर्षे आषाढ वुदी ९ गुरौ श्री कोटशुभस्थाने श्री आदिनाथ चैत्यालये आचार्य श्री जयकीर्तिना स्वज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थं स्वहस्ताभ्यां लिखितेयं पूजा । श्री हरखाप्रसादत् । ब० श्री सदराजस्येदं ।

७६६०. प्रति सं० ३ । पत्रसं० ६ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७२० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

७६६१. प्रति सं० ४ । पत्रसं० १२ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

७६६२. गणधरवलय पूजा—× । पत्र सं० ५ । आ० १० × ४½ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०१-११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

७६६३. गणधरवलय पूजा × । पत्रसं० ६ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १/३२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७६६४. **गणधरवलय पूजा विधान**— × । **पत्रसं०** १० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय- पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८८७ श्रावण बुदी ५ । **वेष्टनसं०** १७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक)

७६६५. **गिरनार पूजा—हजारीमल** । पत्र सं० ४३ । आ० ११½×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७६६६. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ८८ । आ० १०×६½ इञ्च । ले० काल सं० १९३७ ज्येष्ठ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

विशेष—हजारीमल के पिता का नाम हरिकिशन था । वे लश्कर के रहने वाले थे । वहां तेरहपंथ सैली थी । दौलतराम की सहाय से उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ था ; वे वहां से सायपुर आकर रहने लगे थे गोयल गोत्रीय अग्रवाल थे ।

७६६७. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० १२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७६६८. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० ४२ । आ० १०½×७½ इञ्च । ले० काल सं० १९३२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

७६६९. **गुरावली पूजा—शुभचन्द्र** । पत्रसं० ३ । आ० १० × ४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७६७०. **गुरावली समुच्चय पूजा**—× । पत्र सं० २ । आ० १२ × ५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक)

७६७१. **गुर्वावली (औसठ ऋद्धि) पूजा स्वरूपचन्द बिलाला** । पत्रसं० ३० । आ० ९½ ×५½ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय–पूजा । र०काल सं० १९१० । ले० काल × । अपूर्ण । **वेष्टनसं०** १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है ।

७६७२. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ४५ । आ० १०×६½ इञ्च । ले०काल सं० १९२३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर बयाना ।

७६७३. **गुरु जयमाल—अ० जिनदास** । पत्रसं० ४ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १९७–८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष हिन्दी गद्य में अर्थ भी दिया है ।

७६७४. **गोरस विधि**— × । पत्र सं० २ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय–विधि विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

७६७५. **गुरुशांति विधि**—**वर्द्धमान सूरि** । पत्रसं० १२ । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले० काल सं० १८५६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७६७६. **क्षणवति क्षेत्रपाल पूजा**—**विशेषसेन** । पत्र सं० ८ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८६१ मंगसिर सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक)

७६७७. **क्षेत्रपाल पूजा**— × । पत्रसं० १३ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८५१ आसोज सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४८५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

७६७८. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ५ । आ० १०×६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

७६७९. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ११ । आ० १०×६ इञ्च । ले० काल सं० १९८४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३४४-१३२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

७६८०. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० २ । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २२० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

७६८१. **चतुर्दशी व्रतोद्यापन पूजा**—**विद्यानंदि** । पत्रसं० १२ । आ० ११½ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

प्रारंभ—

सकलभुवनपूज्य वर्द्धमानजिनेन्द्रं ।
सुरपतिकृतसेवं तं प्रणम्यादरेण ॥
विमलव्रतचतुर्दश्या शुभोद्योतनं च ।
भविकजनसुखार्थं पंचमरयाः प्रवक्ष्ये ॥१॥

अन्तिम—

शास्त्राब्धे पारगामी परममतिमान मंडलाचार्यमुख्यः ।
श्रीविद्यनन्दीनामानिखिलं गुणनिधिः पूर्णमूर्तिप्रसिद्धः ॥
तद्दिष्ट्या संप्रधारी विबुधमरो हर्ष सदानंदत्रो ।
साधोलै राम नामा विविरमुमकरोत् पूजनामा विधे ।
श्रीजयसिंहभूपस्य मंत्री मुख्यो गुणी सताम् ।
श्रावकस्ताराचंद्राख्यस्तेनेद कृत समुद्धतं ॥२॥
तर वसर समुद्दिश्य पूर्वशास्त्रानुवृत्ति ।
व्रतोद्योतनमेतेन कारितं पुण्यहेतवे ॥३॥

७६८२. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ११ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३४६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

७६८३. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८०० भादवा बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३५० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७६८४. **चतुर्विंशांति जिन पूजा**—× । पत्र सं० ११५ । आ० १२× ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १९४८ । पूर्ण । वेष्टनसं० १६२४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७६८५. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० २८ । आ० १३× ६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १९४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७६८६. **चतुर्विंशति जिन शासन देवी पूजा**— × । पत्रसं० ३–६ । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३८२/३७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७६८७. **चंदनषष्ठीव्रत पूजा—विजयकीर्त्ति** । पत्र सं० ४ । आ० १२×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी ।

७६८८. **चन्दनषष्ठीपूजा—पं० क्षेमचन्द** । पत्र सं० ६ । आ० १२×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७६८९. **चन्दनषष्ठीव्रत पूजा**— × । पत्र सं० ८ । आ० १२½×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

७६९०. **चमत्कार पूजा—राजकुमार** । पत्रसं० ५ । आ० १२½ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १९९६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—चमत्कार क्षेत्र का परिचय भी आगे के दो पत्रों में दिया गया है ।

७६९१. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ३ । आ० १२ × ६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १९६४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७६९२. **चमत्कार पूजा**— × । पत्रसं० २ । आ० ९×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

७६९३. **चारित्र शुद्धि पूजा—श्रीभूषण** । पत्र सं० ९४ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय पूजा विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी

७६९४. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ११४ । ले०काल सं० १८१६ माघ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—दक्षिण स्थित देवागिरि में श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय में ग्रन्थ रचना की गई थी। पांडे लालचन्द ने लिपि कराकर भरतपुर के मन्दिर में रखी गयी थी।

७६६५. चारित्र शुद्धि विधान—भ०शुभचन्द्र। पत्रसं० ५०। आ० ५½×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। र०काल × । ले०काल सं० १६०३। पूर्ण। वेष्टन सं० ८२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अजमेर भण्डार।

विशेष—गुटका में संग्रहीत है।

७६६६. प्रति सं० २। पत्रसं० ३२। आ० ६¾×४½ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ४२५। **प्राप्ति स्थान**—सं० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७६६७. चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा—शुभचन्द्र। पत्रसं० २–१४। आ० ११ × ५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

७६६८. प्रतिसं० २। पत्र सं० ७। आ० १० × ५ इञ्च। ले० काल सं० १६०८। पूर्ण। वेष्टन सं० ५०२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

प्रशस्ति—संवत् १६०८ वर्षे चैत्रमासे कृष्णपक्षे ५ दिने वागवरदेशे सिरपुरवास्तव्ये श्री आदिनाथ चैत्यालये लिखितं श्री मूलसंघे भ० विजयकीर्त्तिस्तत्पट्टे भ० श्री शुभचंद्रदेवा तत् शिष्य पं० सूरदासेन लिखापितं पठनार्थं आचार्य मेरुकीर्ति।

७६६९. प्रतिसं० ३। पत्रसं० ११। आ० १०×५½ इञ्च। ले० काल सं० १८६१ सावन सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० १०२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी।

७७००. चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा × । पत्र सं० ६। आ० ११ × ५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १२०५। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७७०१. चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा— × । पत्रसं० ११। आ० १०×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय—पूजा। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

७७०२. प्रति सं० २। पत्र सं० २०। आ० ८¾×४½ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगानी मंदिर करौली।

अन्तिम पत्र नहीं है।

७७०३. चतुर्विंशति पूजा—भ० शुभचन्द्र। पत्रसं० ३–३९। आ० १०×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र०काल × । ले०काल १६६०। अपूर्ण। वेष्टन सं० ३०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६६० वर्षे आषाढ सुदी ५ गुरुवारे श्री मूलसंघे भट्टारक श्री वादिभूषण गुरुपदेशात् तत् शिष्य ब्र० श्री वर्द्धमानकेन लिखापितं कर्मक्षयार्थं।

७७०४. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ५८ । ले० काल सं० १९४० कार्तिक सुदी ३ पूर्ण । वेष्टन सं० ७८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

७७०५. **चतुर्विंशति जिन पूजा**—× । पत्रसं० ५-५८ । आ० ९×७ इंच । भाषा संस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले० कालसं० १८९७ । अपूर्ण । वेष्टनसं० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

७७०६. **चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजा**—× । पत्रसं० ४७ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८९९ आषाढ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल(टोंक)

७७०७. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० ४६ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन सं० २७३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७७०८. **चतुर्विंशति जिन पूजा** – × । पत्रसं० ५९ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १९३४ ज्येष्ठ बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

७७०९. **चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजा**—× । पत्रसं० ६८ । आ० १०½ × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

७७१०. **चतुर्विंशति जिन पूजा** × । पत्र सं० ४१ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—४१ से आगे पत्र नहीं है ।

७७११. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ४४ । आ० १० × ५ इञ्च । ले०काल सं० १९५७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७७१२. **चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजा**—× । पत्रसं० १३७ । आ० ८½ × ६½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक)

७७१३. **चतुर्विंशति जिन पूजा**—× । पत्रसं० ५० । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

७७१४. **चतुर्विंशति पंच कल्याणक समुच्चयोद्यापन विधि—ब्र० गोपाल** । पत्रसं० १३ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १९९५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—इति श्रीमाग्रहान्ब्रह्म गोपाल कृत चतुर्विंशति पंच कल्याणक समुच्चयो द्यापन विधि ।

७७१५. **चतुर्दशी प्रति मासोपवास पूजा**—× । पत्र सं० १८ । आ० ११ ½ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय–पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

७७१६. **चौबीस तीर्थंकराष्टक**—× । पत्रसं० २० । आ० ६ × ४ इञ्च । **भाषा**–हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

७७१७. **चौबीस तीर्थंकर पूजा—जवाहरलाल** । पत्र सं० ८६ । आ० १२½ × ७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय–पूजा । र०काल सं० १८६२ फागुण बुदी ७ । ले० काल सं० १६२३ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पंचायती मंदिर बयाना ।

७७१८. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ६७ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल १६०३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

७७१६. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ५७ । ले० काल सं० १६५६ । **पूर्ण** । वेष्टन सं० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

विशेष—प्रतिलिपि किशोरीलाल भरतपुर वाले ने कराई थी । तुलसीराम जलालपुर वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

७७२०. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० ६० । आ० ८½ × ६½ इंच । ले०काल सं० १६५७ वैशाख बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७७२१. **चौबीस महाराज पूजन—बुधीलाल** । पत्रसं० ४७ । भाषा-हिन्दी । विषय पूजा । र०काल सं० १८२७ । ले०काल सं० १६१५ । अपूर्ण । वेष्टन सं० २६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

७७२२. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० १०२ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल सं० १६३० । पूर्ण । वेष्टन सं० १२३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बडा बीसपंथी दोसा ।

विशेष—प्रति नवीन है ।

७७२३. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० ४६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

७७२४. **प्रतिसं० ४** । पत्र सं० ६५ । आ० १०×६½ इञ्च । ले०काल सं० १६३५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—चुन्नीलाल करौली के रहने वाले थे । पूजा करौली में मदनगोपाल जी के शासन काल में रची गई थी । प्रतिलिपि कोट में हुई थी ।

७७२५. **प्रतिसं० ५** । पत्र सं० ६२ । ले०काल सं० १६१७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

७७२६. **चौबीस तीर्थंकर पूजा—जवाहरलाल** । पत्र० सं० ४८ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र०काल सं० १६६२ । ले० काल सं० १६६२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मंदिर बयाना ।

७७२७. **चौबीस तीर्थंकर पूजा**— देवीदास × । पत्र सं० ४३ से ६३ । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल सं० १८२१ सावन सुदी १ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६-२४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर टोडारायसिंह (टोंक)

अन्तिम—

संमत अष्टादस धरी जा उपर इकईस ।
सावन सुदि परिवा सु रविवासर धरा उगीस ।।
बासव धरा उगीस सगाम नाम सुदु गोडौ ।
जैनी जन बस बास ओडछे सोपुर ठोडौ ।।
सांवथ सिंघ सु राज आज परजासबथ बतु ।
अंह निरभै करि रची देव पूजा धरि सबतु ।।१।।
गोलारारे जानियौ बस खरौ आहीत ।
सोनखिपार सु बैंक तसु पुनि कासिल्ल सुगोत ।
पुनि कासल्ल सुगोन सीक-सीक हारा सेरौ ।।
देस भदावर माँहि जो सु बरन्यौ तिन्हि केरौ ।
केलि गांमके बसतहार संनोरु सुभारे ।।
कवि देवी सुपुत्र दुगुडै गोलारारे ।
सेवत श्री निरगंथ गुर अरु श्री अरिहंत देव ।।
पढत सुनत सिद्धान्त श्रुत सदा सकल स्वमेव ।
तुक अक्षर घट बढ कहू अरू अनर्थ सूहोइ ।
अल्प कवि पर कर छिमा धर खोजै बुधि सोइ ।।

इति वर्तमान चौबीसी जिनपूजा देवीदास कृत समाप्त ।।

७७२८. **चौबीस तीर्थंकर पूजा—मनरंगलाल** । पत्र सं० ४२ । आ० १२½ × ८½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय पूजा । र० काल सं० १८८७ मगसिर सुदी १० । ले०काल सं० १९९४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७७२९. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ५० । आ० १२ × ८; इञ्च । ले०काल सं० १९९५ । पूर्ण । वेष्टन सं०५२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

७७३०. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० ४५ । ले० काल सं० १९०८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर हुण्डावालों का डीग ।

७७३१. **चौबीसा तीर्थंकर पूजा—रामचन्द्र** । पत्रसं० ८१ । आ० ११ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८७३ चैत सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १०२८ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

विशेष—नेरोजपुर के जयकृष्ण ने लिखवाया था । इसकी दो प्रतियां और हैं ।

७७३२. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ३२ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७७३३. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० ७५ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७७३४. **प्रतिसं० ४** । पत्र सं० ५४ । आ० १०½×६½ इञ्च । । ले० काल .× । पूर्ण । वेष्टन सं० ८० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७७३५. **प्रतिसं० ५** । पत्रसं० ६६ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल सं० १८१६ मंगसिर सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर ।

विशेष—महादास ने प्रतिलिपि की थी ।

७७३६. **प्रतिसं० ६** । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १८८८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७७३७. **प्रतिसं० ७** । पत्र सं० १६६ । ले०काल सं० १८८८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—सं० १६६५ में लिखाकर इस ग्रंथ को चढाया था ।

७७३८. **चौबीस महाराज पूजन—हीरालाल** । पत्रसं० ३५ । भाषा--हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७७३९. **चौबीस तीर्थंकर पूजा—रामचन्द्र** । पत्रसं० ७७ । आ० ११×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर नागदी बूंदी ।

७७४०. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ६२ । आ० १२½×६½ इञ्च । ले० काल सं० १६५५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मंदिर कामा

७७४१. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० ५१ । आ० ११×६½ इञ्च । ले०काल सं० १६११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्री महावीर बूंदी ।

७७४२ **प्रतिसं० ४** । पत्र सं० ७३ । आ० १०×७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०३ । **प्राप्ति स्थान**---उपरोक्त मन्दिर ।

७७४३. **प्रतिसं० ५** । पत्रसं० १३३ । आ० ११×६½ इञ्च । ले०काल सं० १८२८ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी (कामा)

७७४४. **प्रतिसं० ६** । पत्रसं० १०-६० । ले०काल । अपूर्ण । वेष्टनसं० १६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

७७४५. **प्रतिसं० ७** । पत्रसं० ८७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन बडा पंचायती मन्दिर डीग ।

७७४६. **प्रतिसं० ८** । पत्रसं० ८० । आ० ६×६½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ७१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—प्रारम्भ का पत्र नहीं है ।

७७४७. **प्रतिसं० ९।** पत्रसं० १२०। आ० ७½×६½ इञ्च। ले०काल सं० १९१३। पूर्ण। वेष्टन सं० ९०। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—डीग में प्रतिलिपि हुई थी।

७७४८. **प्रति सं० १०।** पत्रसं० ८६। आ० ८½×७ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ६९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

विशेष—गुटका जैसा आकार है।

७७४९. **प्रतिसं० ११।** पत्रसं० ४१। आ० १२×९ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ९६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर।

विशेष—गुटकाकार हैं।

७७५०. **प्रतिसं० १२।** पत्र सं० ४४। आ० १०×६½ इञ्च। लें० काल सं० १९०४। पूर्ण। वेष्टन सं० १५२। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर।

विशेष—चार प्रतियां और हैं।

७७५१. **प्रति सं० १३।** पत्रसं० ८४। आ० १३ × ७ इञ्च। ले०काल सं० १९४६। **पूर्ण।** वेष्टनसं० ४५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा।

७७५२. **प्रतिसं० १४।** पत्र सं० ६१। ले० काल सं० १८९९। पूर्ण। वेष्टन सं० ४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा।

विशेष—ब्राह्मण भैरुराम उणियारा वाले ने चतुर्भुजजी के मन्दिर के सामनेवाले मकान में प्रतिलिपि की थी। साहजी अमोदरामजी अग्रवाल कासल गोत्रीय ने प्रतिलिपि करायी थी।

७७५३. **प्रतिसं० १५।** पत्रसं० १४९। आ० ८½×६ इंच। ले०काल सं० १८२५। पूर्ण। वेष्टन सं० ४। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

विशेष—साहमल्ल के पुत्र कुंवर मंशाराम नगर निवासी ने कामवन में प्रतिलिपि कराई थी।

७७५४. **प्रतिसं० १६।** पत्रसं० १०३। आ० ८½ × ५¾ इञ्च। ले०काल सं० १८८४ सावन बुदी १२। पूर्ण। वेष्टनसं० ९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर मालपुरा (टोंक)

७७५५. **प्रतिसं० १७।** पत्रसं० ४७। आ० १०×६ इंच। ले०काल सं० १९२४। पूर्ण। वेष्टन सं० १८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर नैणवा

७७५६. **प्रतिसं० १८।** पत्र सं० १२। आ० १०×६½ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० २४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा।

७७५७. **प्रतिसं० १९।** पत्र सं० १५३। आ० ७×५½ इञ्च। ले० काल सं० १८२५। पूर्ण। वेष्टन सं० १८७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर।

७७५८. **प्रति सं० २०।** पत्र सं० १०४। आ० ११×५ इञ्च। ले० काल सं० १९०५। पूर्ण। वेष्टन सं० ३६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—इन्द्रगढ में प्रतिलिपि हुई थी।

७७५९. **प्रतिसं० २१।** पत्र सं० ७१। ले० काल सं० १८६६। पूर्ण। वेष्टन सं० ३६९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—देवेन्द्र विमल ने कुन्दनपुर में प्रतिलिपि कराई थी।

७७६०. **प्रति सं० २२**। पत्रसं० ८८। आ० ६×७ इञ्च। ले० काल सं० १६७१। पूर्ण। वेष्टन सं० २५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

७७६१. **प्रतिसं० २३**। पत्रस० ५६। आ० १३×५$\frac{3}{4}$ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १४७/८७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

७७६२. **प्रतिसं० २४**। पत्र सं० ६१। आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल सं० १६६० पूर्ण। वेष्टन सं० १६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर।

विशेष—२ प्रतियां और हैं जिनकी पत्र स० क्रमशः ६० और ६१ है।

७७६३. **प्रतिसं० २५**।। पत्र सं० ७८। आ० ६×६ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १८। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

७७६४. **प्रतिसं० २६**। पत्र सं० ५४। आ० ६$\frac{1}{2}$× ६$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल सं० १६१२ मंगसिर बुदी ६ । पूर्ण। वेष्टन सं० १५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोट्यों का नैणवा।

विशेष—लोचनपुर नैणवा में प्रतिलिपि की गयी थी।

७७६५. **प्रतिसं० २७**। पत्र सं० ५०। आ० १०×६$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ५६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा।

७७६६. **प्रतिसं० २८**। पत्र स० ७६। आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बघेरवालों का आवां (उणियारा)।

७७६७. **प्रतिसं० २६**। पत्र स० ८६। ले०काल सं० १६०१। पूर्ण। वेष्टन सं० १२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बघेरवालों का आवां।

विशेष—आवां में फतेसिंह जी के शासन काल में मोतीराम के पुत्र राधेलाल तत्पुत्र कान्हा नोरखंड्या बघेरवाल ने प्रतिलिपि की थी।

७७६८. **प्रतिसं० ३०**। पत्र सं० ६५। आ०—१०×५ इञ्च। ले०काल-सं० १८६४। पूर्ण। वेष्टन सं० ४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर खण्डेलवालों का आवां (उणियारा)

७७६६. **प्रतिसं० ३१**। पत्र सं०-६०। आ० ६×६$\frac{3}{4}$ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं—०१४५। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

७७७०. **प्रति सं० ३२**। पत्रसं० ७१। आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल सं०-१६२६ कार्तिक सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० २४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

७७७१. **प्रति सं० ३३**। पत्र सं० ८०। आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल सं०—१६५३। पूर्ण। वेष्टन सं० २५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

७७७२. **प्रतिसं० ३४**। पत्रसं० ७३। आ० १२$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल सं० १६६८। पूर्ण। वेष्टनसं० २५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

७७७३. **प्रतिसं० ३५**। पत्रसं० ७५। आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च। ले० काल सं० × । पूर्ण। वेष्टन सं० ११५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)।

७७७४. **प्रतिसं० ३५** । पत्र सं० ७६ । आ० ६×७ इञ्च । ले०काल सं. १८२१ आसोज सुदी १ अपूर्ण वेष्टनसं०—१५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है ।

७७७५. **प्रतिसं० ३६** । पत्रसं० ५२ । आ० १२×६ इञ्च । ले०काल सं० १९०७ अषाढ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६/११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

७७७६. **प्रतिसं० ३७** । पत्र सं० ४९ । आ० ११$\frac{1}{2}$×७ इञ्च । ले० काल सं० १९०५ मंगसिर बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११५-५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—वैष्णव रामप्रसाद ने तक्षकपुर में प्रतिलिपि की थी ।

७७७७. **प्रतिसं० ३८** । पत्रसं० ४६ । आ० १२$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं०—२८/१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

७७७८. **प्रति सं० ३९** । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

७७७९. **प्रति सं० ४०** । पत्रसं० ७० । आ० १२×६ इञ्च । ले० काल सं० १८७४ । पूर्ण । वेष्टन सं०—१८/५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनमन्दिर भादवा (राज०)

७७८०. **प्रति सं० ४१** । पत्र सं० ९८ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७-५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर भादवा (राज०) ।

७७८१. **प्रति सं० ४२** । पत्रसं० ८१ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३३-३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

७७८२. **प्रतिसं० ४३** । पत्र सं० ९८ । आ० ९×६ इञ्च । ले०काल सं० १८८२ चैत सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—पत्र ९३ वें से आगे अन्य पूजाएं भी हैं ।

७७८३. **प्रतिसं० ४४** । पत्रसं० ६१ । आ० ८$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर तेरहपंथी दौसा ।

७७८४. **प्रतिसं० ४५** । पत्र सं० १०६ । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल सं० १८६० आषाढ सुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—पत्र सं० ९० से १०६ तक चौबीस तीर्थंकरों की विनती है ।

७७८५. **प्रतिसं० ४६** । पत्रसं० ५६ । आ० ९×६ इंच । ले० काल सं० १९१४ पौष सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४१-७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

७७८६. **प्रतिसं० ४७** । पत्रसं० ९१ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल सं० १८५१ वैशाख सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४-८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—दौसा में प्रतिलिपि हुई थी ।

७७८७. **प्रतिसं० ४८** । पत्र सं० ७५ । आ० ८$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । ले० काल सं० १९२९ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—स्योबक्स ने प्रतिलिपि की थी।

७७८८. **प्रति सं० ४६**। पत्र सं० ८५। आ० १०½×६ इञ्च। ले०काल सं० १९०८ ज्येष्ठ सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० १२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—एक प्रति और अपूर्ण है।

७७८९. **चौबीस तीर्थंकर पूजा—श्रीलाल पाटनी**। पत्रसं० ५७। आ० १०½×६ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। र०काल सं० १९७८। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

७७९०. **चौबीस तीर्थंकर पूजा वृन्दावन**। पत्रसं० ८२। आ० १०×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय—पूजा। र०काल सं० १८४७। ले०काल १९२९ भादवा सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० ११५४। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७७९१. **प्रति सं० २**। पत्रसं० ६६। आ० ११½×६½ इञ्च। ले०काल सं० १८५५। पूर्ण। वेष्टन सं० ११०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मंदिर उदयपुर।

७७९२. **प्रति सं० ३**। पत्र सं० ८४। आ० ११½×५½ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १४५/१०५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ़ (कोटा)

७७९३. **प्रति सं० ४**। पत्र सं० १०१। आ० १२×५ इञ्च। ले० काल सं० १९३०। पूर्ण। वेष्टन सं० १२८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा।

७७९४. **प्रति सं० ५**। पत्र सं० ७४। आ० ९×६ इञ्च। ले०काल सं० १९०७ वैशाख सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन सं० २२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

७७९५. **प्रति सं० ६**। पत्र सं० ६४। आ० ११×५ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक)

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं हैं।

७७९६. **प्रति सं० ७**। पत्र सं० १८१। ले० काल सं० १८९५। पूर्ण। वेष्टन सं० १३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—इसकी ४ प्रतियां और हैं।

७७९७. **प्रति सं० ८**। पत्र सं० ८५। आ० १०×५½ इञ्च। ले०काल सं० १९१३ भंत बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० १७१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७७९८. **प्रति सं० ९**। पत्र सं० ४७। आ० १२×८ इञ्च। ले०काल सं० १९८३ प्र० चैत्र सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० १७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७७९९. **प्रति सं० १०**। पत्र सं० १०८। आ० १२½×८ इञ्च। ले०काल सं० १९२९। पूर्ण। वेष्टन सं० १२३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

विशेष—एक प्रति और है।

७८००. **प्रति सं० ११**। पत्र सं० ७७। आ० १२×६ इञ्च। ले०काल सं० १९१२। पूर्ण। वेष्टन सं० ८-५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर।

विशेष—इसकी दो प्रतियां और हैं।

प्रशस्ति—संवत् १९१२ माह सुदी १३ लिखापितं मवोराय जैचन्द गैंदीलाल श्री डूंगरपरना नाखि श्री आगमपुर में हस्ते नौगमी ग्र पुनमचन्द तथा गांदि पूनमचन्द लिखितं समादि आगमेरचन्द।

७८०१. **प्रतिसं० १२**। पत्र सं० १०६। आ० १०×५ इञ्च। ले०काल सं० १९२१। पूर्ण। वेष्टन सं० २८३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, चौगान बूंदी।

७८०२. **प्रति सं० १३**। पत्रसं० ५३। आ० १०×६½ इञ्च। ले० काल सं० १९४१। पूर्ण। वेष्टन सं० १५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

विशेष—नैणवा में प्रतिलिपि हुई थी। साह पन्नालाल बैद बूंदीवाले ने अभिनंदनजी के मन्दिर में ग्रंथ चढाया था।

७८०३. **प्रति सं० १४**। पत्रसं० ६२। आ० १३×७½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

७८०४. **प्रति सं० १५**। पत्र सं० ६१। आ० १३×८ इञ्च। ले० काल सं० १९६४। पूर्ण। वेष्टन सं० ५५६। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

७८०५. **प्रति सं० १६**। पत्रसं० ३७। आ० १२½×७½ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर डबाना।

विशेष—मल्लिनाथ तीर्थंकर की पूजा तक है। एक प्रति और है।

७८०६. **प्रतिसं० १७**। पत्र सं० ९२। आ० १०×७ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर।

विशेष—दो प्रतियां और हैं।

७८०७. **प्रतिसं० १८**। पत्रसं० १०१। आ० ११×६ इञ्च। ले० काल सं० १९१५। पूर्ण। वेष्टनसं० ३६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दयलाना (बूंदी)

७८०८. **प्रति सं० १९**। पत्रसं० ५४। आ० १०½×६½ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बघेरवालों का आवां (उणियारा)

७८०९. **प्रति सं २०**। पत्रसं० ५२। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर हुण्डावालों का डीग।

विशेष—महावीर स्वामी की जयमाल नहीं है।

७८१०. **प्रतिसं० २१**। पत्र सं० ५६। आ० ११×६ इंच। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ७२। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

७८११. **प्रति सं० २२**। पत्रसं० १०१। आ० १३×५½ इंच। ले० काल सं० १९६४ चैत्र सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन सं० ३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बडा बीसपंथी दौसा।

विशेष—सवाई जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

७८१२. **प्रति सं० २३**। पत्रसं० ४०। आ० १२½×८ इञ्च। ले० काल सं० १९००। पूर्ण। वेष्टन ३३/५९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर भादवा (राज०)

७८१३. **प्रति सं० २४** । पत्र सं० ५६ । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

विशेष—एक प्रति और है ।

७८१४. **प्रति सं० २५** । पत्रसं० ५७ । आ० ११½×६½ इञ्च । ले०काल सं० १८८१ सावन बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५/३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

७८१५. **प्रतिसं० २६** । पत्रसं० ४६ । आ० १३×६ इञ्च । ले० काल सं० १९११ पौष सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६/३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

विशेष—एक प्रति और है ।

७८१६. **प्रति सं० २७** । पत्र सं० ६८ । आ० ११×७ इञ्च । ले० काल सं० १९६३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा ।

विशेष—कीमत ३) रुपया बघेरवालों का मन्दिर सं० १९६४ ।

७८१७. **प्रति सं० २८** । पत्रसं० ७१ । आ० १०×६½ इञ्च । ले०काल सं० १९३३ काती सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

विशेष—एक प्रति और है ।

७८१८. **प्रतिसं० २९** । पत्रसं० ४४ । आ० १३½×७½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर डूंगी (टोंक)

७८१९. **प्रति सं० ३०** । पत्रसं० ५८ । आ० १२×६½ इञ्च । ले०काल सं० १८९७ । वेष्टनसं० ६/३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायत मन्दिर डूंगी (टोंक)

विशेष—श्री हजारीलाल कटारा ने दशलक्षण व्रतोद्यापन के उपलक्ष में सं० १९४३ भादवा सुदी १४ को डूंगी के मंदिर में चढ़ाया था ।

७८२०. **प्रतिसं० ३१** । पत्र सं० ७७ । आ० ११×६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

७८२१. **प्रतिसं० ३२** । पत्रसं० ५९ । आ० १० × ६½ इञ्च । ले०काल सं० १९२१ फागुन बुदी ३ । अपूर्ण । वेष्टनसं० १०७ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

विशेष—५५ से ५८ तक पत्र नहीं है ।

७८२२. **चौबीसतीर्थंकर पूजा -सेवग** । पत्रसं० ७१ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १७७५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७८२३. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ४६ । आ० ९½×६ इञ्च । ले०काल सं० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६८, ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटड़ियां का डूंगरपुर ।

७८२४. **चौबीस तीर्थंकर पूजा सेवाराम** । पत्रसं० ४५ । आ० १०½×५ इंच । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-पूजा । र०काल सं० १८५४ मगसिर बुदी ६ । ले०काल सं० १८५४ पौष सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष —

तिनप्रभु को सेवगजु हो बखतराम इहनाम ।
साहगोत्र श्रावकसुधी गुण मंडित कवि राम ।।
तिन मिथ्यात खंडन रच्यो लखि जिनमत के ग्रंथ ।
बुध विलास दूजो रच्यो मुक्ति पुरी के पथ ।
तिन को लघु सुत जानियो सेवागराम सुनाम ।
लखि पूजन के ग्रंथ बहु रच्यो ग्रंथ अभिराम ।
ज्येष्ठ भ्रात मेरो कवि जीवनराम सुजानि ।
प्रभु की स्तुति के पद रचे महाभक्तिवर आनि ।
तातैं नाम धरयो जु है जगजीवन गुण खानि ।
तिन की पाय सहाय को कियो ग्रंथ यह जानि ।।

एक प्रति और है ।

७८२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६२ । आ० ११ × ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७८२६. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० ६५ । आ० ११ × ४½ इञ्च । ले०काल सं० १९१७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्द्रगढ़ (कोटा)

७८२७. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० ११ । आ० ९½ × ४ इञ्च । ले०काल सं० १८८४ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३०-८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पंथी दौसा ।

विशेष—हुकमचन्द बिलाला बिनाई वालों ने प्रतिलिपि की थी ।

७८२८. प्रतिसं० ५ । पत्रसं० ४२ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल सं० १८६२ भादवा सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४०-८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

विशेष - चिमनराम तेरापंथी ने प्रतिलिपि की थी ।

७८२९. प्रतिसं० ६ । पत्र सं० ५६ । आ० १०½ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १९०१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

७८३०. प्रति सं० ७ । पत्रसं० ६० । आ० ११×४ इञ्च । ले० काल सं० १९२८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६८ । प्राप्ति **स्थान** - दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक)

विशेष—सं० दिलसुख ने राजमहल में प्रतिलिपि की थी । तेरहो सेरड़ो श्री शिवचन्द जी चैत वुदी ७ सं० १९२२ के चन्द्रप्रभ चैत्यालय में चढ़ाया था ।

७८३१ प्रतिसं० ८ । पत्र सं० ५२ । आ० ११×७½ इञ्च । ले०काल सं० १९५८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष - बूंदी में प्रतिलिपि हुई थी।

७८३२. प्रतिसं० ९ । पत्र सं० ५३। आ० ११½ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १९२२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

७८३३. **प्रतिसं० १०**। पत्रसं० ६४। आ० १०$\frac{3}{4}$×५ इंच। ले० काल सं० १८५५। पूर्ण। वेष्टन सं० २४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर।

७८३४. **प्रतिसं० ११**। पत्रसं० ५२। आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल सं० १८५६ आषाढ बुदी २। पूर्ण। वेष्टनसं०२५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

७८३५. **प्रतिसं० १२**। पत्रसं० ४३। आ० १०$\frac{1}{2}$×७ इञ्च। ले० काल सं० १८२६ माह सुदी १५। पूर्ण। वेष्टनसं० ४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी।

७८३६. **प्रति सं० १३**। पत्र सं० ४३। आ० ११×७$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल सं० १९५७। पूर्ण। वेष्टन सं० ७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

७८३७. **प्रतिसं० १४**। पत्र सं० ६-५५। आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इंच। ले०काल सं० १८६०। पूर्ण। वेष्टन सं० १६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी।

७८३८. **प्रति सं० १५**। पत्र सं० ३७। आ० १०×६$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल सं० १९५७। पूर्ण। वेष्टनसं० ७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी।

७८३९. **प्रतिसं० १६**। पत्र सं० ५९। आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{3}{4}$ इञ्च। ले०काल स० १८६३ आसोज सुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० ९३-८५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

७८४०. **प्रति सं० १७**। पत्र सं० ८४। आ० ८$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल स० १९०३ माह सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन सं० ५३। **प्राप्ति स्थान**—सोगाणी मंदिर करौली।

७८४१. **चौबीस तीर्थंकर पूजा—हीरालाल**। पत्रसं० ८३। आ० १०×७ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। र० काल ×। ले०काल सं० १९२६ चैत्र सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन सं० १८५। **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल पंचायती मंदिर अलवर।

७८४२. **चौबीस तीर्थंकरों के पंच कल्याणक**—×। पत्र सं० १९। आ० ८×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य) विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ३। **प्राप्ति स्थान**—जैन मन्दिर बैर।

७८४३. **चौबीस तीर्थंकर पंच कल्याणक**—×। पत्र सं० १३। आ० १२×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २४०। ३०३। **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

७८४४. **चतुर्विंशति तीर्थंकर पंचकल्याणक पुजा—जयकीर्त्ति**। पत्रसं० १२। आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १८४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर।

अन्तिम—

देवपल्ली स्थितैतापि सूरिणा जयकीर्तिना।
जिनकल्याणकानां च, पूजेयं विहिता शुभा।
भट्टारक श्री पद्मनंदि तत् शिष्य ब्रह्म रूपसी निमितं।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

७८४५. **चौसठ ऋद्धि पूजा—स्वरूपचन्द्र**। पत्रसं० २८। आ० १२×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र०काल सं० १९१०। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० २२१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

७८४६. **प्रति सं० २**। पत्रसं० २३। आ० १०×७½ इञ्च। ले० काल—×। पूर्ण। वेष्टन सं० १६०। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

७८४७. **प्रति सं० ३**। पत्र सं० २४। आ० ११½×६ इञ्च। ले० काल सं० १९३६। पूर्ण। वेष्टन सं० ५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

७८४८. **प्रतिसं० ४**। पत्रसं० ५५। आ० ११×७ इञ्च। ले० काल सं० १९५७। पूर्ण। वेष्टनसं० १७७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

विशेष पुस्तक साह श्यामलालजी चिरंजीलाल जी नैणवा वालों ने लिखा कर नैणवा सुद्धग्राम के मन्दिर भेंट किया। महनताना २) हीगलू २=)

७८४९. **प्रतिसं० ५** पत्र सं० ५०। आ० ८×६½ इञ्च। ले०काल सं० १९२३। पूर्ण। जीर्ण वेष्टन सं० ७१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सोगाणी मन्दिर करौली।

७८५०. **प्रतिसं० ६**। पत्रसं० ३०। आ० १३×८इञ्च। ले०काल सं० १९६४। पूर्ण। वेष्टनसं० १२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बड़ा बीस पंथी दौसा।

७८५१. **प्रतिसं० ७**। पत्र सं० ४७। आ० ९×६ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १२९ × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पंथी दौसा।

७८५१. **प्रतिसं० ८**। पत्रसं० २०। आ० १३ × ८½ इंच। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १०५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा।

७८५२. **प्रति स० ९**। पत्रसं० ३५। आ० ११× ५ इञ्च। ले० काल सं० १९६३। पूर्ण। वेष्टन सं० ३९/२०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर टूनी (टोंक)

विशेष—प० पन्नालाल के शिष्य सुन्दरलाल ने बसुवा में प्रतिलिपि की थी।

७८५३. **प्रतिसं० १०**। पत्रसं० २०। आ० १४ × ६½ इञ्च। ले०काल सं० १९५६। पूर्ण। वेष्टनसं० १०८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्री महावीर बूंदी।

७८५४. **प्रतिसं० ११**। पत्रसं० ९८। ले०काल सं० १९८०। पूर्ण। वेष्टनसं० ४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर।

७८५५. **प्रतिसं० १२**। पत्रसं० ३४। आ० १२½×७½ इञ्च। ले० काल सं० १९६१। पूर्ण। वेष्टनसं० ५५४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

७८५६. **प्रति सं० १३**। पत्रसं० २९। आ० १३ × ८½ इञ्च। ले०काल सं० १९८९। पूर्ण। वेष्टनसं० ५६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर

७८५७. **प्रति सं० १४**। पत्र सं० ४३। आ० ९½×६½ इञ्च। ले० काल स० १९७२ सावन सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन सं० ३१६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर चौगान बूंदी।

विशेष—मंडल का चित्र भी है।

७८५८. **प्रति सं० १५**। पत्रसं० ५८। आ० १०½×४½ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३१६। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

७८५९. **प्रतिसं० १६**। पत्र सं० २६। आ० १३×५½ इञ्च। ले० काल सं० १९७४। पूर्ण। वेष्टन स० ८४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मंदिर अलवर।

विशेष—एक प्रति और है जिसमें २४ पत्र हैं।

७८६०. **प्रतिसं० १७**। पत्र सं० ३६। ले०काल सं० १८४०। पूर्ण। वेष्टन सं० २। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर हण्डावालों डींग

७८६१. **प्रतिसं० १८**। पत्र स० २५। आ० १२×८ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर टोडारायसिंह (टोंक)

७८६२. **प्रतिसं० १९**। पत्र सं० ५९। आ० १०×७ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ४९। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर मालपुरा (टोंक)

७८६३. **प्रतिसं० २०**। पत्रसं० ३९। आ० ११½ ×७ इञ्च। ले० काल सं० १९७० आसोज बुदी १०। पूर्ण। वेष्टनसं० ५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर मालपुरा (टोंक)

विशेष—हीरालाल के पुत्र मूलचंद सोगाणी ने मन्दिर मंडी मालपुरा में लिखा था।

७८६४. **प्रति सं० २१**। पत्रसं० ४६। आ० ११×६ इञ्च। ले०काल सं० १९३६ कार्तिक बुदी ५। पूर्ण। वेष्टनसं० ४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर टोडारायसिंह (टोंक)

७८६५. **प्रतिसं० २२**। पत्र सं० ५-४१। आ० ८½ × ६ इञ्च। ले० काल सं० १९३४ माह सुदी ५। अपूर्ण। वेष्टन सं० १८५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

७८६६. **अम्बूद्वीप अकृत्रिम चैत्यालय पूजा—जिनदास**। पत्रसं० ३। आ० १२×७ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। र० काल सं० १५२४ माघ सुदी ५। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ११७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना।

विशेष—रचना सम्बन्धी श्लोक

श्रीवैद्यधाचार द्वन्द्वेके वर्तमानजिनेशिना।
फाल्गुणे शुक्लपंचम्यां पूजेयं पं० रचिलामया॥

७८६७. **प्रति सं० २**। पत्र सं० ४२। आ० १२×६½ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर।

विशेष—लक्ष्मीसागर के शिष्य पं० जिनदास ने पूजा रचना की थी।

७८६८. **जम्बूदीप पूजा—पं० जिनदास**। पत्रसं० ३२। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। र०काल × । ले० काल सं० १८१६ माघ बुदी ११। पूर्ण। वेष्टन स० २२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—प० जिनदास धर्मसागर के शिष्य थे।

७८६९. **जम्बूस्वामी पूजा**— × । पत्रसं० २७ । आ० १२×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८९० । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मंदिर दौसा ।

७८७०. **जम्बूस्वामी पूजा जयमाल** । पत्र सं० १० । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १९१२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डावालों का डीग ।

७८७१. **जपविधि** —× । पत्रसं० ६ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × ले०काल सं० १९२१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

विशेष—पूज्य श्री जुनिगादि का बागड पट्टे सागवाडान्वये का श्री १०८ राजेन्द्रभूषणजी लिपि कृतम् सं० १९२१ सागवाडा नगरे

७८७२. **जलयात्रा पूजा विधान**—× । पत्रसं० २ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९४८ । **प्राप्ति स्थान**-- भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७८७३. **जलयात्रा विधान**—× । पत्र सं० ३ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-विधि विधान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

७८७४. **जलयात्रा विधि**—× । पत्रसं० २ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४६-१३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

७८७५. **जलहर तेला उद्यापन**—× । पत्र सं० ११ । आ० ७ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७८७६. **जलहोम विधान**— × । पत्र सं० ५ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले० काल सं०१९३८ । पूर्ण । वेष्टन सं०३४५-१३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—सलूंबर में लिखा गया था ।

७८७७. **जलहोम विधान**—× । पत्र सं० ४ । आ० ११×७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२७-६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

७८७८. **जलहोमविधि**—× । पत्र सं० ५ । आ० ८×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल सं० १९४० । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

७८७९. **जिनगुण संपत्ति व्रतोद्यापन पूजा** × । पत्रसं० ६ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७२१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७८८०. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ८ । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २८९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

७८८१. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० सं० ५ । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल सं० १८६० भादवा बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

७८८२. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० ७ । आ० १०×५इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८३-४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडोरायसिंह (टोंक)

७८८३. **प्रतिसं० ५** । पत्रसं० ६ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण ।वेष्टनसं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर मालपुरा (टोंक)

विशेष —केवल प्रथम पत्र नहीं है ।

७८८४. **जिन पूजा विधि—जिनसेनाचार्य** । पत्रसं० ११ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८८५ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४१-२७ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ जैन मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

विशेष —लिखापितं भ. देवेन्द्र कीर्ति लिपि कृत महात्मा शंभुराम ।

७८८५. **जिन महाभिषेक विधि—आशाधर** । पत्र सं० २४ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल सं० १८३७ मंगसिर बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली (कोटा) ।

विशेष—सूरत मध्ये लिखापितं आचार्य नग्न श्री नरेन्द्रकीर्ति ।

७८८६. **जिन यज्ञकल्प- आशाधर** । पत्रसं० १३५ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय विधान । र०काल सं० १२८५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—भावगढ़ में प्रतिलिपि हुई थी । प्रति प्राचीन एवं संस्कृत में ऊपर नीचे संक्षिप्त टीका है ।

७८८७. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ९४ । आ० १३×६ इञ्च । ले०काल सं० १८५९ पौष सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५ ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक) ।

७८८८. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ९७ । ले० काल १५१९ श्रावण वदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर (बड़ा) डीग ।

७८८९. **प्रतिसं० ४** । पत्र सं० १४७ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल सं० १७४७ । माघ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० ११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी ।

विशेष—कहीं संस्कृत टीका तथा शब्दों के अर्थ भी दिये हुए हैं ।

७८९०. **जिन सहस्रनाम पुजा—सुमति सागर** । पत्रसं० २८ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८१२ माघ बुदी १४ । **पूर्ण** । वेष्टन सं० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

७८९१. **जिनसंहिता—भ० एकसन्धि** । पत्र सं० २१६ । आ० ११½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत ।विषय-विधान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

७८९२. **जैन विवाह पद्धति—जिनसेनाचार्य** । पत्रसं० ४६ । आ० ११½×८ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल सं० १९५२ बैशाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी (कामा)

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है । टीका काल सं० १९३३ ज्येष्ठ बुदी ३ ।

७८९३. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ३५ । आ० १०½×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ तथा टीका सहित है ।

७८९४. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० २८ । आ० १२½×७ इञ्च । ले०काल सं० १९३३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—बीच में संस्कृत श्लोक हैं तथा ऊपर नीचे हिन्दी टीका है ।

७८९५. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० २८ । आ० १२×७ इञ्च । ले०काल सं० १९९३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्री महावीर बूंदी ।

७८९६. **प्रतिसं० ५** । पत्रसं० २६ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल सं० १९६८ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१-१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—पंडित फतेहलाल विरचित हिन्दी भाषा में अर्थ भी दिया हुआ है ।

७८९७. **प्रतिसं० ६** । पत्रसं० ४९ । आ० १२×७ इञ्च । ले०काल सं० १९३३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०९/१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

७८९८. **प्रतिसं० ७** । पत्रसं० ४४ । आ० ११½×८ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

७९९९. **जैन विवाह विधि**—× । पत्रसं० ३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि विधान । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७९००. **जेष्ठ जिनवर व्रतोद्यापन**—× । पत्रसं० ६ । आ० १०½×५ इञ्च ।भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७९०१. **तपोग्रहण विधि**—× । पत्रसं० १ । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७६०२. **तीन चौबीसी पूजा**— ×। पत्रस० ८ । आ० ११ × ५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय पूजा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ३६२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७६०३. **तीन चौबीसी पूजा**—× । पत्रसं० ७। आ० ११ × ५½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय पूजा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १०५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार।

७६०४. **तीन चौबीसी पूजा**—**त्रिभुवनचन्द**। पत्र सं० ६। आ० ११×५ इञ्च। **भाषा**-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल × . ले० काल स० १८०१ असाढ़ बुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० ५३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा

७६०५. **तीन चौबीसी पूजा**—**वृन्दावन**। पत्रसं० १४२। आ० १०×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र० काल × । ले० काल स० १८७०। पूर्ण। वेष्टनसं० १६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर।

७६०६. **प्रति सं० २**। पत्रसं० ८८। ले० काल सं० १६४२। पूर्ण। वेष्टनसं० १६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

७६०७. **तीन लोक पूजा—टेकचंद**। पत्रसं० २८२। आ० १२½×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र०काल सं० १८२८ असो० बुदी ४। ले०काल सं० १६५६ फाल्गुण सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन सं० १४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

विशेष—पं० नीमलाल जी ने बूंदी में प्रतिलिपि कराई थी।

७६०८. **प्रतिसं० २**। पत्र सं० ३२५। आ० १४×८½ इञ्च। ले० काल सं० १६७१। पूर्ण। वेष्टन सं० ६। **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

विशेष—चौधरी मांगीलाल वकील ने प्रतिलिपि करवाई थी।

७६०६. **प्रतिसं० ३**। पत्रस० ३७५। आ० १६ ×६ इञ्च। ले०काल सं० १६६७ माह बुदी २ । पूर्ण। वेष्टन सं० २६। **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

विशेष—पं० लक्ष्मीचन्द नैणवा वाले का ग्रंथ है। सं० १६६८ में उद्यापनार्थ चढ़ाया पन्नालाल चम स्थान (१) बेटा जइचन्द का।

७६१०. **प्रतिसं० ४**। पत्रसं० २४४। आ० १२½×६½ इञ्च। ले०काल सं० १६३८ आषाढ बुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा।

७६११. **प्रति सं० ५**। पत्र स० ५०५ ले०काल स० १६१२। पूर्ण। वेष्टन सं० ११६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

७६१२. **प्रति सं० ६**। पत्रस० ३०८। आ० १३×७½ इञ्च। ले०काल सं० १६३४ चैत सुदी २। पूर्ण। वेष्टनसं० ६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली।

७६१३. **तीन लोक पूजा—नेमाचन्द पाटनी**। पत्रसं० ६५० । आ० १३½×८½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल × । ले० काल स० १६७६ मंगसिर सुदी १५। पूर्ण। वेष्टनस० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक)

विशेष—धन्नालाल सोनी के पुत्र मूलचन्द सोनी ने आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि करवाकर भेंट की थी।

७६१४. तीस चौबीसी पूजा—भ० शुभचन्द्र। पत्र सं० ७४। आ० १०×४ इन्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १३७८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

७६१५. प्रति सं० २। पत्र सं० ६६। आ० १०×४½ इंच। ले०काल सं० १७२८ वैशाख सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन सं० २००। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—ग्रन्था-ग्रन्थ सं० १५००।

७६१६. प्रतिसं० ३। पत्र सं० ५५। ले० काल सं० १८४६। पूर्ण। वेष्टनसं० ८८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—सुखरामजी वसका वाले ने प्रतिलिपि की थी।

लिखतं दयाचन्द वासी किशनकोट का बेटा फतेहचन्द छाबड़ा के पुत्र सात केसरीसिंह के कारण पाय हम भरतपुर में रहे।

७६१७. प्रति सं० ४। पत्रसं० ३६। ले० काल सं० १७६६ माघ सुदी १३। पूर्ण। **वेष्टनसं० ५२। प्राप्ति स्थान** दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—प्रति का जीर्णोद्धार हुआ है।

७६१८. प्रति सं० ५। पत्रसं० ६१। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ८३। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

७६१९. प्रति सं० ६। पत्र सं० ३–४५। आ० १०½×५ इञ्च। ले०काल सं० १६४४। अपूर्ण। वेष्टनसं० १७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सं वत् १६ आषाढादि ४४ वर्षे आश्वन सुदी ७ गुरौ श्री विद्यापुरे शुभस्थाने ब्र० तेजपाल ब्र० पदमा पंडित मांडण चातुर्मासिक स्थिति चतुर्विंशतिका पूजा लिखापिता। ब्र० तेजपाल पठनार्थं मुनि धर्मदत्त लिखितं किंवद गीक यच्छेत्।

७६२०. प्रति सं० ७। पत्रसं० २–४७। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ३७६।२६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर।

७६२१. प्रतिसं० ८। पत्र सं० १०७। आ० ८×८ इञ्च। ले० काल सं० १८४५ भादों सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन सं० ८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चेतनदास दीवान पुरानी डीग।

विशेष—गुटका साइज है। लालजी मल ने दीर्घपुर में लिखा था।

७६२२. प्रतिसं० ९। पत्रसं० ६०। आ० १०×५ इञ्च। ले०काल—×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ३६६। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

७६२३. प्रति सं० १०। पत्र सं० ७२। आ० १०×५½ इञ्च। ले०काल—×। पूर्ण। वेष्टन सं० २४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

७६२४. **प्रतिसं० ११**। पत्रसं० ४२। आ० ११½×३½ इञ्च। ले०काल सं० १७८० चैत्र बुदी ८। पूर्ण। वेष्टन सं० ५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी।

विशेष—मालपुरा नगर में पार्श्वनाथ चैत्यालय में पं० **योदराज** के पठनार्थ लिखा गया था।

७६२५. **तीसचौबीसीपूजा—पं० साधारण**। पत्रसं० ३५। आ० १२½×७½ इञ्च। भाषा-संस्कृत, प्राकृत। विषय-पूजा। र०काल सं० × । ले०काल सं० १८५२ आसोज सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० ८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुराणी डीग।

७६२६. **तीस चौबीसी पाठ—रामचन्द्र**। पत्रसं० ७६। आ० १२½×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र० काल सं० १८८३ चैत्र बदी ५। ले०काल सं० १९०८ सावन बदी ८। पूर्ण। वेष्टनसं० ११५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी सीकर।

विशेष—ईश्वरीप्रसाद शर्मा ने प्रतिलिपि की थी।

७६२७. **प्रतिसं० २**। पत्र सं० ६५। आ० १४½×८½ इञ्च। ले०काल सं० १९२६ भादव सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन सं० ११६। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—लाला कल्याणचन्द ने मिश्र श्री प्रसाद श्यामलाल से प्रतिलिपि कराई थी।

७६२८. **तीस चौबीसी पूजा—वृन्दावन**। पत्र सं० १२७। आ० ११½×५½ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—पूजा। र०काल—× । ले०काल सं० १९२६ कार्तिक सुदी १३। अपूर्ण। वेष्टन सं० ९०-२१८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह टोंक।

विशेष—१०४ का पत्र नहीं है।

७६२९. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० २९६। आ० १०× ५½ इञ्च। ले० काल सं० १८९५। पौष बुदी १४। पूर्ण। वेष्टन सं० १२५। **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना।

विशेष—गुटका साइज में है।

७६३०. **प्रतिसं० ३**। पत्रसं० ११०। आ० १२½×६½ इञ्च। ले०काल सं० १९१० आसोज सुदी ५। पूर्ण। वेष्टनसं०४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना।

विशेष—बयाना में प्रतिलिपि हुई थी।

७६३१. **प्रतिसं० ४**। पत्रसं० १०८। आ० ११×६ इञ्च। ले० काल—×। पूर्ण वेष्टन सं० २०१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ टोडारायसिंह टोंक।

७६३२. **प्रतिसं० ५**। पत्र सं० १०९। आ० १०×७ इञ्च। ले० काल सं० १९५८। पूर्ण। वेष्टनसं० ३९०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर खोरसली कोटा।

७६३३. **प्रतिसं०** । ६। पत्र सं० १०७। आ० ९½×६½ इंच। ले०काल सं० १८८९ माघ सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन सं० २७/१६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

विशेष—प्रतापगढ़ में पंडित रामपाल ने लिखा था।

७६३४. **तीस चौबीसी पूजा**—× । पत्रसं० । आ० १६½×६½इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय—पूजा। र०काल × । ले०काल सं० १८८५ कार्तिक बुदी १० पूर्ण। वेष्टनसं० १३९७। **प्राप्ति स्थान**-अजमेर भण्डार।

७९३५. **तीस चौबीसी पूजा**—× । पत्रसं० ६ । भाषा–हिन्दी । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३७७ २९८ । **प्राप्ति स्था**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

७९३६. **तेरह द्वीप पूजा**—**लालजीत** । पत्र सं० १५८ । आ० ११½×८ इञ्च । **भाषा–विषय**—पूजा । र०काल स० १८७० । ले० काल स० १८९७। पूर्ण । वेष्टन सं० १३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

विशेष—कृष्णगढ मध्ये लिखितं ।

७९३७. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ११५ । आ० १४×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र०काल सं० १८७० । ले०काल सं० १९१९ । वैशाख बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

७९३८. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० २१७ । आ० १२×६½ इञ्च । ले०काल सं० १९६० । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरह पंथी मन्दिर नैणवा ।

विशेष—भट्ट रामचन्द्र ने नैणवा में प्रतिलिपि की थी । आनीलाल जी के पुत्र सांवलरामजी भाई सोदान जी चि० फूलचन्द श्रावक नैणवा वाले ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

७९३९. **प्रतिसं० ४** । पत्र सं० १७५ । आ० १३×६½ इञ्च । ले० काल सं० १९०३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर, बूंदी ।

७९४०. **प्रतिसं० ५** । पत्र सं० २०२ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल सं १९०६ पूर्ण । वेष्टनसं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर भादवा राजस्थान ।

विशेष—मारोठ में भूंथाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

७९४१. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० २०९ । आ० १०×८ इञ्च । ले० काल सं० १९२४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर, बूंदी ।

७९४२. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० १६३ । ले०काल १९६४ । पूर्ण । वेष्टन स० ७१ । **प्राप्ति–स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डावालों का डीग ।

७९४३. **प्रति सं० ८** । पत्रसं० १६६ । आ० १३×७½ इञ्च । ले० काल सं० १९०७ । पौष सुदी । पूर्ण । वेष्टनसं० २५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष— प्रति उत्तम है ।

७९४४. **प्रति सं० ९** । पत्रसं० १४० । आ० १३½×८½ इञ्च । ले० काल सं० १९२३ । आसोज सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी सीकर ।

७९४५. **तेरह द्वीप पूजा स्वरूपचन्द** । पत्रसं० ११७ । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र०काल—× । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०४/५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा ।

७९४६. **तेरह द्वीप विधान**—× । । पत्र सं० ५५ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, (बूंदी) ।

७६४७. **तेरह द्वीप पूजा विधान**—× । पत्रसं० १३६ । आ० १२½×८½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १९६१ भादवा वदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी सीकर ।

विशेष—परशादीलाल पद्मावती पुरवाल ने सिकन्द्रा (आगरे) में प्रतिलिपि की थी ।

७६४८. **त्रिकाल चौबीसी पूजा**—× । पत्रसं० ११ । आ० ११¾ × ५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक) ।

७६४९. **त्रिकाल चतुर्विंशति पूजा—त्रिभुवनचन्द्र** । पत्रसं० १४ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

७६५०. **त्रिकाल चतुर्विंशति पूजा**—× । पत्र सं० ११ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६/१८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर टोडारायसिंह (टोंक) ।

७६५१. **त्रिकाल चतुर्विंशति पूजा**— × । पत्रसं० १६ । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०६/१७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—तक्षकपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

७६५२. **त्रिकाल चतुर्विंशति पूजा**—× । पत्र सं० २२ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र तथा कल्याण मन्दिर पूजा भी है ।

७६५३. **त्रिकाल चतुर्विंशति पूजा**—× । पत्रसं० १३ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

७६५४. **त्रिकाल चतुर्विंशति पूजा—भ० शुभचन्द्र** । पत्र सं० ५६ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सोगाणी मंदिर करौली ।

७६५५. **त्रिकाल चौबीसी पूजा**—× । पत्रसं० १० । आ० ६×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

७६५६. **त्रिपंचाशत् क्रियाव्रतोद्यापन**—× । पत्र सं० ४ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७६५७. **त्रिपंचाशत क्रियाव्रतोद्यापन**— × । पत्र सं० ६ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

७६५८. **त्रिःपंचाशत् क्रियाव्रतोद्यापन**— × । पत्र सं० ४ । आ० १२½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अजमेर भण्डार ।

७६५९. **त्रिपंचाशत् क्रियाव्रतोद्यापन** × । पत्र सं० ६ । आ० १०×७½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७६६०. **त्रिपंचासत् क्रियाव्रतोद्यापन**— × । पत्रसं० ५ । आ० ११½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

७६६१. **त्रिलोक विधान पूजा—टेकचन्द** । पत्रसं० ३०३ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल सं० १८२८ । ले०काल सं० १९४२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

७६६२. **त्रिलोकसार पूजा—नेमीचन्द** । पत्रसं० ६६१ । आ० १४×८½इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १९८४ चैत सुदी १३ । वेष्टन सं० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक)

७६६३. **त्रिलोकसार पूजा—महाचन्द्र** । पत्र सं० १६६ । आ० १०½×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं० १९१५ कार्तिक सुदी ८ । ले० काल सं० १९२४ कार्तिक सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष पं० महाचन्द्र सीकर के रहने वाले थे । समेद शिखर की यात्रा से लौटते समय प्रतापगढ में ठहरे तथा वहीं ग्रन्थ रचना की थी ।

७६६४. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० १७२ । आ० १०½×७ इञ्च । ले० काल सं० १९२४ कार्तिक सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनसं० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—भट्टारक भानुकीर्ति के परम्परा में से पं० महाचन्द थे ।

७६६५. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० १९९ । आ० १०½×६½ इंच । ले० काल सं० १९२५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

७६६६. **प्रतिसं० ४** । पत्र सं० १८१ । आ० १३×८½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३८९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७६६७. **त्रिलोक पूजा—शुभचन्द्र** । पत्र सं० १६६ । आ० ९×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १९४२ । पूर्ण । वेष्टनसं० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर चौधान बूंदी ।

७६६८. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० १३१ । आ० १२½×५ इञ्च । ले०काल सं० १८३० । पूर्ण । वेष्टन सं० २१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर वैर ।

७६६९. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० १४७ । आ० १२×७½ इञ्च । ले०काल सं० १९१२ । पूर्ण । वेष्टनसं० २०० । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

७६७०. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० १२६ । ले०काल सं० १९६३ । पूर्ण । वेष्टन सं०२०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

७६७१. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० ४२ । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

७६७२. **त्रिलोकसार पूजा—सुमतिसागर** । पत्र सं० ८२ । आ० १२½×६½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८५३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२०-४७ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—उदैचन्द ने स्योजीराम बीजावर्गीय खूंटेटा से द्रव्यपुर (मालपुरा) में प्रतिलिपि कराई थी ।

७६७३. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० १०१ । ले०काल सं० १८९४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—गुटका साइज है ।

७६७४. **त्रिलोकसार पूजा**—× । पत्रसं० १० । आ० ११×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २४३ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

विशेष—नित्य पूजा संग्रह भी है ।

७६७५. **त्रिलोकसार पूजा**—× । पत्रसं० ८ । आ० १२×६½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७२-७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—जयमाला हिन्दी में है ।

७६७६. **त्रिलोकसार पूजा** ×। पत्र सं० २२२ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १९५८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १९०–७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नांटडियों का डूंगरपुर ।

७६७७. **त्रिलोकसार पूजा** —× । पत्रसं० १०२ । आ० १३½×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल सं० १९२१ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

७६७८. **त्रिलोकसार पूजा**— × । पत्रसं० १०३ । आ० ९ ×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर दूनी (टोंक)

७९७९. **त्रिलोकसार पूजा**— × । पत्रसं० १३१ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८८८ फागुण बुदी १ । पूर्ण । वेष्टनसं० १९४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल पंचायती मंदिर अलवर ।

७९८०. **त्रैलोक्यसार पूजा**— × । पत्र सं० ७९ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८८७ मंगसिर बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७९८१. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० १३२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

विशेष—ऊपर वाली प्रति की नकल है ।

७९८२. **त्रैलोक्यसार पूजा**—× । पत्र सं० ८१ । आ० १२×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १८८७ कार्तिक बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७२२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७९८३. **त्रेपन क्रिया उद्यापन** । पत्रसं० ५ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

७९८४. **त्रेपन क्रिया व्रतोद्यापन**— × । पत्र सं० ७ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

७९८५. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ९ । आ० ९½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७९८६. **त्रेपनक्रियाव्रत पूजा—देवेन्द्रकीर्ति** । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × ले० काल सं० १७६० वैशाख बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर मालपुरा (टोंक)

विशेष—आचार्य ज्ञानकीर्ति ने अपने शिष्य भानुकेशी सहित बांसी नगर में प्रतिलिपि की थी ।

७९८७. **त्रिंशच्चतुर्विंशति पूजा—शुभचन्द्र** । पत्रसं० ७८ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ९८२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७९८८. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ५४ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि०जैन मन्दिर अजमेर ।

७९८९. **दर्श दिक्पालार्चन विधी**—× । पत्रसं० २ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल सं० × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४२-१३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

७९९०. **दशलक्षण उद्यापन पूजा**— × । पत्रसं० ४१ । आ० ७$\frac{3}{4}$ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १९२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७९९१. **दशलक्षण स्थापन पूजा**—× । पत्रसं० १५ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७९९२. **दशलक्षण उद्यापन पूजा**— × । पत्रसं० १-५ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७९९३. **दशलक्षण उद्यापन पूजा**— × । पत्र सं० ४५ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सवत् १९३३ सावन सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८-७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

७९९४. **दशलक्षण उद्यापन पूजा**— × । पत्रसं० २० । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८२३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

७९९५. **दशलक्षण जयमाल** —× । पत्र सं० १४ । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१-७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

७९९६. **दशलक्षण जयमाल** —× । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल सं० × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १६८ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

७९९७. **दशलक्षण जयमाल पूजा** --**भाव शर्मा** । पत्रसं० १२ । आ० १० × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

७९९८. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ९ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । ले० काल सं० × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—संग्रामपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

७९९९. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० ९ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८०००. **प्रतिसं० ४** । पत्रस० ६ । आ० ११ × ४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

८००१. **प्रतिसं० ५** । पत्रसं० ९ । आ० ११ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा । प्रति संस्कृत टब्बा टीका सहित है ।

८००२. **प्रतिसं० ६** । पत्रस० १० । ले० काल सं० १७५४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२ (क) । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर डीग ।

विशेष—तूतपुर में विमलनाथ के चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी। गाथाओं पर संस्कृत टीका दी हुई है।

८००३. **प्रति सं० ७**। पत्र सं० २२। आ० १२×६½ इञ्च। ले०काल सं० १९४५। पूर्ण। वेष्टन सं० ७८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

८००४. **प्रति सं० ८**। पत्र सं० १३। आ० १०¾×५ इञ्च। ले० काल सं० १८४९। पूर्ण। वेष्टन सं० ३२०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी।

विशेष—सवाई प्रतापसिंह जी के राज्य में प्रतिलिपि हुई थी।

८००५. **दशलक्षण जयमाल** ×। पत्र सं० ६। आ० १२×४½ इञ्च। भाषा प्राकृत। विषय पूजा। र० काल ×। ले०काल सं० १७२१ कार्तिक बुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० १३३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १७२१ वर्षे कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे द्वितीया दिवसे श्रीमत् परमपूज्य श्री श्री १०८ श्री भूषण जी तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री ५ धर्मचन्द्र जी तदाम्नाये लिखितं पाण्डे उधा राजगढ़ मध्ये।

८००६. **दशलक्षण जयमाल** ×। पत्र सं० १९। आ० ८½×८½ इञ्च। भाषा प्राकृत विषय पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ६९६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८००७. **दशलक्षण जयमाल** ×। पत्र सं० १३। आ० १२½×५½ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय पूजा। र०काल×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १२६८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८००८. **दशलक्षण जयमाल** ×। पत्र सं० २०। आ० ६½×४½ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय–पूजा। र०काल ×। ले०काल सं० १९१५। पूर्ण। वेष्टन सं० १४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

विशेष—रत्नत्रय जयमाल भी है। हिन्दी अर्थ सहित है।

८००९. **दशलक्षण जयमाल** ×। पत्र सं० ५। भाषा प्राकृत। विषय पूजा। र० काल×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मंदिर बसवा।

विशेष– प्रति संस्कृत टीका सहित है।

८०१०. **दशलक्षण जयमाल** ×। पत्र सं० ८। आ० १२×५ इञ्च। भाषा प्राकृत। विषय धर्म। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

विशेष—गाथाओं के ऊपर हिन्दी में छापा दी हुई है।

८०११. **दशलक्षण जयमाल** ×। पत्र सं० ८। आ० ६½×५½ इञ्च। भाषा प्राकृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८४१ श्रावण बुदी ११। पूर्ण। वेष्टन सं० २५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—खुशालचन्द ने कोटा में लिखा था।

८०१२. **दशलक्षण जयमाल—ररधू**। पत्र सं० ४ से११। आ० १०×४½ इञ्च। **भाषा**—अपभ्रंश। विषय पूजा। र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ५३–२२५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

८०१३. **प्रति सं० २**। पत्रसं० ८। आ० ९½×४½ इञ्च। ले०काल सं० × । पूर्ण। वेष्टनसं० ५४–९७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

८०१४. **प्रतिसं० ३**। पत्र सं० १४। ले० काल सं० १८५२। पूर्ण। वेष्टन सं० ५३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है।

८०१५. **प्रति सं० ४**। पत्र सं० ५। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—भरतपुर में मुनि कल्याण जी ने प्रतिलिपि लिखी थी।

८०१६. **प्रतिसं० ५**। पत्र सं० १४। आ० ११×४ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३१। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मंदिर बड़ा बीसपंथी दौसा।

८०१७. **प्रति सं० ६**। पत्रसं० १२। आ० ११×५ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १०२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

विशेष—संस्कृत टब्बा टीका सहित है।

८०१८. **प्रतिसं० ७**। पत्रसं० ११। आ० १०×४½ इञ्च। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टनसं० १२०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है। अन्तिम पत्र नहीं है।

८०१९. **प्रतिसं० ८**। पत्रसं० ८। आ० १२×६ इञ्च। ले०काल सं० १८५२ प्रथम भादवा बुदी ८। पूर्ण। वेष्टन सं० १६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक।

विशेष—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है।

८०२०. **प्रतिसं० ९**। पत्र सं० १०। आ० १२×६ इञ्च। ले० काल सं० १७८८। पूर्ण। वेष्टन सं० ७८/४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

विशेष—प्रति हिन्दी छाया सहित है। तूंगा में श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय में पं० मोहनदास के पठनार्थ लिखी थी।

८०२१. **प्रतिसं० १०**। पत्रसं० ८। आ१०½×४½ इञ्च। ले० काल सं० १८०० काती सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन सं० २६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना बूंदी।

विशेष—सीसवालि नग्र मध्ये लिखित।

८०२२. **प्रति सं० ११**। पत्रसं० ५। आ० ९½×५ इञ्च। ले०काल × । वेष्टनसं० २११। पूर्ण। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

८०२३. **प्रतिसं० १२**। पत्र सं० १२। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ३१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा।

विशेष—प्रति टीका सहित है ।

८०२४. **प्रति सं० १३** । पत्र सं० १० । ले०काल सं० १६०४ भादवा बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२ ।

विशेष—बतुआ में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई ।

८०२५. **प्रतिसं० १४** । पत्रसं० १८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७३ (अ) । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८०२६. **प्रतिसं० १५** । पत्रसं० १८ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७३ (ब) । **प्राप्ति स्थान** उपरोक्त मन्दिर ।

८०२७. **प्रति सं० १६** । पत्रसं० १७ । ले०काल सं० १६३७ । पूर्ण । वेष्टन सं० । ७३ (स) । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८०२८. **दशलक्षण जयमाल**—पत्र सं० २० । आ० १२×५½ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले०काल सं० १८८४ सावण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० २८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८०२९. **दशलक्षण जयमाल** —× । पत्रसं० ३५ । आ० १३ × ५½ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—संस्कृत टब्बा-टीका सहित है ।

८०३०. **दशलक्षण जयमाल**—× । पत्र सं० २६ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल । पूर्ण । वेष्टनसं० ३२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८०३१. **दशलक्षण जयमाल**—× । पत्र सं० २८ । भाषा हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल—× । ले० काल सं० १६६५ पूर्ण । वेष्टन सं० ३१२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८०३२. **दशलक्षण पूजा जयमाल**—× । पत्रसं० १४ । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८०३३. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ३७ । आ० १०×६⅜ इञ्च । ले०काल सं० १६४७ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३१८ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—ब्राह्मण गूजर गौड कृष्णचन्द्र ने बूंदी में लिखा था ।

८०३४. **दशलक्षण धर्मोद्यापन** —× । पत्र सं० १२ । आ० ६⅔ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५२२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८०३५. **दशलक्षण उद्यापन विधि**—× । पत्र सं० २५ । आ० ६½×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।विषय पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८०३६. **दशलक्षण पूजा—ज्ञानतराय** । पत्र सं० ७ । आ० ७½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन स० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी सीकर ।

८०३७. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ५ । आ० १२×७ इञ्च । ले० काल सं० १६४७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

८०३८. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० ५ । आ० १०×६½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—दूसरे पत्र से भक्तामर भाषा हेमराज कृत पूर्ण है ।

८०३९. **दशलक्षन पूजा विधान—टेकचन्द** । पत्रसं० ४२ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी ।

८०४०. **दशलक्षण मंडल पूजा—डालूराम** । पत्रसं० ३५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल सं० १८२१ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०८/६२ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा राज० ।

८०४१. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ३० । आ० १२½×८ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

८०४२. **दशलक्षण विधान पूजा**—× । पत्रसं० २६ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

८०४३. **दशलक्षण विधान पूजा** × । पत्र सं० २५ । आ० ११× ८ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १६१० । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२/६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज.) ।

विशेष—मारोठ नगर में प्रतिलिपि की गई ।

८०४४. **दशलक्षण व्रत पूजा**—× । पत्रसं० २१ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८०४५. **दशलक्षण व्रत पूजा** × । पत्र सं० १६ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३७७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८०४६. **दशलक्षण पूजा—विश्व भूषण** । पत्र सं० ३० । आ० ११×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल सं०-१७०४ । ले० काल सं०-१८१७ मंगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर बयाना ।

विशेष - चूरामन बयाना वाले ने करौली में ग्रन्थ की प्रतिलिपि कराई थी।

८०४७. **प्रतिसं० २**। पत्र सं० १९। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं०१२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती भरतपुर।

८०४८. **दशलक्षण व्रतोद्यापन पूजा—सुमतिसागर**। पत्र सं० १८। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३७०। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८०४९. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० १४। आ० १०½×५½ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १६९-७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

८०५०. **प्रति सं० ३**। पत्र सं० ९। आ० १५×४ इञ्च। ले० काल सं० १८४४ पूर्ण। वेष्टन सं० ५१२। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

८०५१. **प्रति सं० ४**। पत्रसं० १८। आ० १०×६ इंच। ले०काल सं० १९३८। पूर्ण। वेष्टन सं० ५२७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

८०५२. **प्रतिसं० ५**। पत्रसं० २०। आ० १४×४ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

विशेष—सवाई माधोपुर में झालरापाटन के जैनी ने प्रतिलिपि कराई थी।

८०५३. **प्रति सं० ६**। पत्र सं० २१। आ० १०½× ५ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ७२। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर नागदी (बूंदी)

८०५४. **प्रति सं० ७**। पत्र सं० १७। आ० १३×५ इञ्च। ले०काल सं० १९३३। पूर्ण। वेष्टन सं० ५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

८०५५. **प्रति सं० ८**। पत्र सं० १४। आ० १०×६ इञ्च। ले०काल सं० १८६७ भादवा सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० २५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी।

विशेष—सुमति सागर श्री अभयनन्दि के शिष्य थे।

८०५६. **प्रतिसं० ९**। पत्रसं० २८। आ० १२×६ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १५८। **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर राजमल (टोंक)

विशेष—गुलाबचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

८०५७. **प्रतिसं० १०**। पत्रसं० २८। ले०काल सं० १७९६। पूर्ण। वेष्टन सं० ६९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

८०५८. **प्रतिसं० ११**। पत्र सं० २४। आ० ८½×६½ इञ्च। ले०काल सं० १९५२। पूर्ण। वेष्टन सं० १८३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर।

८०५९. **प्रतिसं० १२**। पत्रसं० १२। आ० १२×७ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा।

विशेष—आगे षोडश कारण उद्यापन है पर अपूर्ण है।

८०६०. **प्रति सं० १३** । पत्रसं० ११ । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति—

श्री अभयनन्दि गुरु शील सुसागर ।
सुमति सागर जिन धर्म धुरा ॥७॥

८०६१. **दशलक्षण व्रतोद्यापन पूजा—सुधीसागर** । पत्र सं० २५ । आ० ६×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

८०६२. **दशलक्षण व्रतोद्यापन**.— × । पत्रसं० १५ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८८० आषाढ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनसं० १३५१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८०६३. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० १० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३५२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मंदिर अजमेर भण्डार ।

८०६४. **दश लक्षण व्रतोद्यापन**—× । पत्र सं० १२ । आ० ११⅜×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३४६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

विशेष—लिखितं ब्राह्मण फौजूराम ।

८०६५. **दशलक्षण व्रतोद्यापन पूजा—भ० ज्ञानभूषण** । पत्रसं० ३७ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८१६ सावन सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर के पंचों ने करौली में प्रतिलिपि कराई थी ।

८०६६. **दशलक्षण व्रतोद्यापन पूजा—रइधू** । पत्रसं० २६ । आ० ८½×६½ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १६५२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर अलवर ।

विशेष—६ प्रतियां और हैं ।

८०६७. **दशलक्षण व्रतोद्यापन**— × । पत्रसं० ३० । आ० १०½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १६४६ । अपूर्ण । वेष्टन सं० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा ।

८०६८. **दश लक्षण व्रतोद्यापन**—× । पत्रसं० २५ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १८५० भादवा सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा ।

८०६९. **दशलक्षण व्रतोद्यापन**—× । पत्रसं० ४६ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १६५२ । पूर्ण । वेष्टनसं० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

८०७०. **दशलक्षण व्रतोद्यापन**—× । पत्रसं० ३० । आ० १०$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तुति । र०काल × । ले०काल सं० १९१० । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

विशेष—लिखी माली कंवरलाल ने लिखाई घासीराम । वि० भंवरीलाल मारवाड़ा ने अग्रवालों के मन्दिर में चढ़ाई थी ।

८०७१. **दशलक्षण व्रतोद्यापन**—× । पत्रसं० १६ । आ० १०×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौमान, बूंदी ।

८०७२. **दशलक्षण पूजा उद्यापन**—× । पत्रसं० २१ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८४४ सावण सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

विशेष – आचार्य विजयकीर्तिजी तत् शिष्य सदासुख लिपिकृतं ।

८०७३. **दशलक्षण पूजा उद्यापन**— × । पत्र सं० २३ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १८१७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३३/३१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ़ (कोटा) ।

विशेष—भिति चैत्र सुदी २ भृगुवासरे बुन्दावती नगरे सुपार्श्वचैत्यालये लिखितं स्वहस्तेन लिखितं शिवविमल पठनार्थं सं० १८१७ ।

८०७४. **दशलक्षण पूजा उद्यापन**—× । पत्रसं० ५ । आ० ८$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

८०७५. **दशलक्षण पूजा**—× । पत्रसं० ६ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । **भाषा**-संस्कृत ।विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

८०७६. **दशलक्षण पूजा**— ×। पत्रसं० ११ । आ० १०$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १८५० श्रावण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौमान बूंदी ।

८०७७. **दश लक्षण पूजा** — ×। पत्र सं० १६ । आ० १०×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

८०७८. **दशलक्षण पूजा**— × । पत्रसं० ६ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—पूजा । र०काल ×। ले० काल× । पूर्ण । वेष्टनसं० १०७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

८०७९. **दशलक्षण पूजा**—× । पत्रसं० २८ । आ० ११×७ इञ्च । भाषा हिन्दी (पद्य) । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

८०८०. **दशलक्षण पूजा**—× । पत्रसं० ५६ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ इन्द्रगढ़ (कोटा)

विशेष—दो रुपये तेरह आना में खरीदा गया था ।

८०८१. **दश लक्षण पूजा** – × । पत्र सं० ४५ । आ० ११×५ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । **विषय**—पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १९०३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मंदिर दौसा ।

८०८२. **दशलक्षण पूजा**—× । पत्र सं० ५५ । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ९६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८०८३. **दशलक्षण पूजा**— × । पत्र सं० ६७ । आ० ९×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

८०८४. **दश लक्षणीक अंग**— × । पत्र सं० १ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

८०८५. **द्वादश पूजा विधान**— × । पत्र सं० ८ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—८ से आगे पत्र नहीं हैं ।

८०८६. **द्वादश व्रत पूजा—देवेन्द्रकीर्ति** । पत्रसं० १४ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अजमेर भण्डार ।

८०८७ **द्वादश व्रत पूजा—भोजदेव** । पत्रसं० १८ । आ० १०½×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

८०८८. **द्वादश व्रतोद्यापन**—× । पत्र सं० १६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल सं० १८५९ कार्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६-१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष - टोडारायसिंह में लिखा गया था ।

८०८९. **द्वादशांग पूजा**— × । पत्र सं० ७ । आ० ८×६½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

८०९०. **दीपावलि महिमा—जिनप्रभसूरि** पत्र सं० २१ । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८०९१. **दीक्षापटल**— × । पत्र सं० ७ । आ० ९×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—विधान । र० काल × । ले०काल सं० १९२७ । पूर्ण । वेष्टनसं० २५८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८०९२. **दीक्षाविधि**— × । पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—विधि विधान । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८०९३. **दीक्षाविधि**—× । पत्रसं० १४ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले० काल सं० १५३४ ज्येष्ठ सुदी । पूर्ण । वे० सं० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

८०९४. **दुखहरण उद्यापन—यशःकीर्ति** । पत्र सं० ९ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९३८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८०९५. **देवपूजा**—× । पत्रसं० ४ । आ० ८×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८०९६. **देवपूजा**—× । पत्र सं० १५ । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

८०९७. **देवपूजा**— × । पत्रसं० ३३ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५१ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक)

८०९८. **देवपूजा**—पत्रसं० ११ । आ० ९ × ६ इञ्च । भाषा हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७९-१४२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित पूजा है ।

८०९९. **देवपूजा भाषा—पं० जयचन्द छाबड़ा** । पत्रसं० २५ । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १९१९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

८१००. **देवपूजा भाषा-देवीदास** । पत्र सं० २३ । आ० १२½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल सं० × । ले० काल × पूर्ण । वेष्टन सं० ४८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा ।

विशेष—पत्र २१ से दशलक्षण जखड़ी है (अपूर्ण)।

८१०१. देवशास्त्र गुरु पूजा—ज्ञानतराय। पत्रसं० ६। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी विषय-पूजा। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ११५३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८१०२. देवगुरुशास्त्र पूजा जयमाल भाषा--× । पत्रसं० ३०। आ० १२½×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय--पूजा। र०काल × । ले० काल सं० १९.० । पूर्ण। वेष्टन सं० ११०। **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

८१०३. देवसिद्ध पूजा----× । पत्र सं० १५। आ० १२ × ४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। **विषय**-पूजा। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ७१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

८१०४. धर्मचक्र पूजा—खड्गसेन। पत्रसं० ३१। आ० ११ × ५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल × । ले०काल सं० १८२३ फागुन बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० ९०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्दरगढ़ (कोटा)।

विशेष—पं० भागचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

८१०५. धर्मचक्र पूजा—यशोनन्दि। पत्रसं० ४३। आ० ९ × ४½ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय—पूजा। र०काल × । ले०काल सं०---१८१९ माघ बुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० ३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर।

विशेष—मिट्ठूराम अग्रवाल ने यह ग्रंथ महादास के लिये लिखाया था।

८१०६. धर्मचक्र पूजा—× । पत्रसं० २ । आ० १०½ × ४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय पूजा। र०काल × । ले० काल सं०—१८१८। पूर्ण। वेष्टन सं० ३७१। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८१०७. धर्मस्तंभ - वर्द्धमानसूरि। पत्र सं० ३७। भाषा—संस्कृत। विषय × । र०काल × । लेखन काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ५९६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—इत्याचार्य श्री वर्द्धमानसूरिकृते आचारदिनकरे उभयधर्मस्तंभे अभिधान कीर्त्तिनो नाम षट्त्रिंशत्तमो उद्देश।

८१०८. धातकीखंड द्वीप पूजा—× । पत्र सं० २०। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा—संस्कृत. विषय- पूजा। र० काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ६३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

८१०९. ध्वजारोपणविधि—× । पत्रसं० ७। आ० ८×६½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-विधान। र०काल × । ले०काल सं० १९५८। पूर्ण। वेष्टन सं० १५३७। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

८११०. ध्वजारोपणविधि—× । पत्रसं० १२। आ० १२ × ५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-विधान। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २००-११७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

८१११. **ध्वजारोपणविधि**—× । पत्रसं० १० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २८० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८११२. **ध्वजारोपणविधि**— × । पत्रसं० १८ । आ० ८×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—विधान । र० काल × । ले० काल सं० १९४७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—लखमीचन्द सागलपुर नग्र वालों ने प्रतिलिपि कराई थी ।

८११३. **ध्वजारोपणविधि**— × । पत्र सं० ३ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

८११४. **नवकार पूजा**—× । पत्र सं० २२ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८९१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी

विशेष—अनादि मंत्र पूजा भी है ।

८११५. **नवकार पैंतीसी पूजा**—× । पत्रसं० २ । आ० ९½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल ×। ले०काल सं० १८१७ माघ बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—लिखितं चिमन सागरेण । णमोकार मंत्र में पैंतीस अक्षर है और उसी आधार पर रचना की गयी है ।

८११६. **नवकार पैंतीसो पूजा**—× । पत्रसं० २१ । आ० ११½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

८११७. **नवकार पैंतीसो व्रतोद्यापन पूजा**—**सुमतिसागर** । पत्र सं० १५ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८१६आषाढ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

८११८. **नवग्रह पूजा**—× । पत्रसं० ५ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर भण्डार ।

विशेष—रवि सोम एवं राहु केतु आदि नवग्रहों के अनिष्ट निवारण हेतु नो तीर्थंकरों की पूजाएं हैं ।

८११९. **नवग्रह पूजा**—× । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

८१२०. **नवग्रह पूजा**—× । पत्रसं० ५ । आ० १०½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८८० सावण सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १५४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

८१२१. **नवग्रह पूजा**— × । पत्र सं० ४ । आ० १०½×४ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८१२२. **नवग्रह पूजा** । पत्र सं० ७ । आ० १०×४½ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८९२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५७/५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

८१२३. **नवग्रह पूजा** । पत्र सं १५ । आ० १०½×४½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८८६ माघ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६०/५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

८१२४. **नवग्रह पूजा**—× । पत्र सं० ७ ।आ० ८×६½ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय —पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३११-११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—पद्मावती जाप्य भी है ।

८१२५. **नवग्रह पूजा**—× । पत्रसं० ६ । आ० ११×७ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १९२६ । पूर्ण । वेष्टन सं० × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बूंदी ।

८१२६. **नवग्रह पूजा**—×। पत्रसं० ३ । आ० ६×३ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६४-३८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

८१२७. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २६५/३८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

८१२८. **नवग्रह पूजा**—× । पत्रसं० ५ । आ० १२×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

८१२९. **नवग्रह पूजा** —× । पत्रसं० १३ । आ० १२ × ६ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

विशेष—शांतिक विधान भी दिया हुआ है ।

८१३०. **नवग्रह पूजा**—× । पत्र सं० २३ । आ० १०×६ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १९६५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

८१३१. नवग्रह पूजा—× । पत्रसं० ७ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १६४८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७६ (अ) । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

८१३२. नवग्रह पूजा—मनसुखलाल । पत्रसं० १६ । आ० ८½×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । **ले०काल** सं० १६३५ । पूर्ण । वेष्टनसं० १८७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

८१३३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८ । आ० ११×७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टन सं०** १७४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खंडेलवाल मंदिर उदयपुर ।

८१३४. नवग्रह पूजा—× । पत्र सं० १७ । आ० १०× ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८३४ कार्तिक बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८१३५. नवग्रह पूजा -- × । पत्रसं० ८ । आ० १०×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८१३६. नवग्रह पूजा— × । पत्रसं० २८ । आ० ७×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । **ले०काल** सं० १६७६ भादवा बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—गुटका साइज में है ।

८१३७ नवग्रह पूजा— × । पत्रसं० १० । आ० ७×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८६ २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

८१३८. नवग्रह अरिष्ट निवारण पूजा—× । पत्र सं० ४१ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल पंचायती मंदिर अलवर ।

विशेष—निम्न पूजाओं का और संग्रह है --

नंदीश्वर पूजा, पार्श्वनाथ पूजा, रत्नत्रय पूजा ।
(संस्कृत) सिद्धचक्र पूजा, शीतलनाथ पूजा ।
सुगन्ध दशमी पूजा, रत्नत्रय पूजा ।

८१३९. नवग्रह पूजा विधान—×। पत्रसं० १० । आ० ६½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १६११ । पूर्ण । **वेष्टन सं०** ३१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८१४०. नवग्रह विधान—× । पत्र सं०२० । आ० ८½×६ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १६५७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

८१४१. **न्हवण विधि—आशाधर**। पत्र सं० २०। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३१२-११७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

८१४२. **न्हावण पाठ भाषा—बुध मोहन**। पत्रसं० ४। आ. १०×४$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-पूजा। र०काल × । ले.काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

श्री जिनेन्द्र अभिषेक पाठ संस्कृत भाषा
सकलकीर्ति मुनि शिष्य रच्यो धरि जिनमत आसा।
ताको अर्थ विचारि धारि मन में हुलसायो।
बुध मोहन जिन न्हवन देसभाषा में गायो।

इति भाषा न्हावण पाठ संपूर्ण।

८१४३. **नाम निर्णय विधान**—× । पत्र सं० ११। आ० १०×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय-विधान। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—दश बोल और दिये हैं।

८१४४. **नित्य पूजा**—× । पत्रसं० २०। आ० १२×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मंदिर बयाना।

८१४५. **नित्य पूजा**—× । पत्रसं० ६२। आ० ६$\frac{1}{2}$×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल × । ले० काल सं० १६५४। पूर्ण। वेष्टन सं० ७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

८१४६. **नित्य पूजा**—× । पत्र सं० २०। आ० ६×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा।

८१४७. **नित्य पूजा**—× । पत्रसं० १२। आ० ११ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र०काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर मालपुरा (टोंक)

८१४८. **नित्य पूजा**—× । पत्रसं० २ से १२। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय—पूजा। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ११ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मंदिर बसवा।

८१४९. **नित्य पूजा**—× । पत्र सं० ५०। आ० ८×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १८०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बूंदी।

८१५०. **नित्य पूजा**—× । पत्र सं० ३३। आ० ६×६ इंच भाषा—हिन्दी-संस्कृत। विषय— पूजा। र०काल × । ले० काल सं० १६६६। पूर्ण। वेष्टन सं० ६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

८१५१. **नित्यपूजा पाठ—आशाधर।** पत्र सं० २०। आ० ११½×७½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १५१०। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हूंगरपुर।

विशेष—मूल रचना में आशाधर का नाम नहीं है पर लेखक ने आशाधर विरचित पूजा ग्रंथ ऐसा उल्लेख किया है।

८१५२. **नित्य पूजा पाठ**—× । पत्र सं० ६-२५। आ० ९×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत, हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० २४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पाजमहल (टोंक)।

८१५३. **नित्य पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्रसं० २२। आ० ६¾×८½ इञ्च। **भाषा**-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ८९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

८१५४. **नित्य पूजा भाषा—पं० सदासुख कासलीवाल**-पत्र सं० ३१। आ० १३½×८½ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-पूजा। र०काल सं० १९२१ माह सुदी २। ले०काल सं० १९८६ कार्तिक बुदी ८। पूर्ण। वेष्टन सं० ४६१। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

८१५५. **प्रति सं० २**। पत्रसं० ३६। आ० ११×७ इञ्च। ले० काल सं० १९४१। पूर्ण। वेष्टनसं० १६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्री महावीर, बूंदी।

विशेष—नयनापुर में प्रतिलिपि हुई थी।

८१५६. **प्रति सं० ३**। पत्रसं० ३६। आ० १२×५½ इञ्च। ले०काल सं० १९२८ भादवा बुदी ८। पूर्ण। वेष्टनसं० १। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

८१५७. **प्रतिसं० ४**। पत्रसं० ५०। आ० ११½×६ इञ्च। ले०काल सं० १९४०। पूर्ण। वेष्टनसं० ७४। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

८१५८. **प्रति सं० ५**। पत्रसं० ५६। आ० १०½×८ इञ्च। ले० काल सं० १९३६ ज्येष्ठ सुदी ७। पूर्ण। वेष्टनसं० ३६/८७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पंथी दौसा।

८१५९. **प्रतिसं० ६**। पत्रसं० ३४। आ० १२½×८ इञ्च। ले०काल सं०१९४६। पूर्ण। वेष्टनसं० ११४, ६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)।

८१६०. **नित्य पूजा भाषा**—× । पत्रसं० १५। आ० १०½×५ इञ्च। **भाषा**-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं०४७। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पंथी दौसा।

८१६१. **नित्य पूजा पाठ संग्रह**— × । पत्रसं० ६०। आ० ११½×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी, संस्कृत। विषय—पूजा पाठ। र०काल × । ले०काल सं० १९४७। पूर्ण। वेष्टनसं० १३८-५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

८१६२. **नित्य पूजा वचनिका—जयचन्द छाबड़ा।** पत्रसं० ५२। आ० ८$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—पूजा। र० काल × । ले० काल सं० १९३५। पूर्ण। वेष्टन सं० १३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मंदिर अलवर।

८१६३. **नित्य पूजा संग्रह** — × । पत्र सं० ७५। आ० ९×१२$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर।

८१६४. **नित्य नियम पूजा**— × । पत्र सं० १४। आ० १०$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत। हिन्दी। विषय पूजा। र० काल । ले० काल × । सं० १९४२ पौष बुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० २६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर चौगान बूंदी।

विशेष—श्री कृष्णलाल भट्ट ने लोचनपुर में लिखा था।

८१६५. **नित्य नियम पूजा**—× । पत्रसं० १४। आ० १२ × ७ इञ्च। भाषा—हिन्दी-संस्कृत। विषय - पूजा। र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मंदिर बयाना।

विशेष—प्रतिदिन करने योग्य पूजाओं का संग्रह है।

८१६६. **नित्य नियम पूजा**—×। पत्र सं० ४३। आ० १२×८ इञ्च। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय—पूजा। र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १०२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

विशेष—४३ से आगे पत्र नहीं है।

८१६७ **नित्य नियम पूजा**— × । पत्रसं० १९। आ० ९$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा हिन्दी-संस्कृत। विषय पूजा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्दरगढ़ (कोटा)।

८१६८. **नित्य नियम पूजा** — × । पत्रसं० ५०। आ० १२ × ८ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय—पूजा। र० काल × । ले० काल सं० १९५३। पूर्ण। वेष्टन सं० २३९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)।

विशेष—व्रतों की पूजाएं भी हैं।

८१६९. **नित्य नियम पूजा**—× । पत्र सं० ४८। आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। विषय—पूजा। र० काल × । । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ११२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

८१७०. **नित्य नियम पूजा**—× । पत्र सं० १०। आ० ११ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ५८२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

८१७१. **नित्य नियम पूजा**-×। पत्र सं० २४। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

८१७२. **नित्य नियम पूजा**—× । पत्र सं० २२ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८२२ । पूर्ण । वेष्टन सं ३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—मायाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

८१७३. **नित्य नैमित्तिक पूजा**—× । पत्रसं० १०६ । आ० ७×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत । हिन्दी । विषय-पूजा । ले०काल सं० १९६८ । पूर्ण । वेष्टन सं० २९ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान, (बूंदी) ।

विशेष—बजरंगलाल ने बूंदी में लिखा था ।

८१७४. **निर्दोष सप्तमी व्रत पूजा**—**ब्र० जिनदास** । पत्रसं० २१ । आ०१०½×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६० । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

८१७५. **निर्दोष सप्तमी व्रतोद्यापन**—× । पत्रसं० १६ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं०१७४९ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४३५/३५४ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

८१७६. **निर्वाण कांड गाथा व पूजा**—**उदयकीर्त्ति**—पत्र सं० ४ । आ० ८×२½ इञ्च । भाषा-प्राकृत, संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १९२३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

८१७७. **निर्वाणकाण्ड पूजा** - × । पत्रसं० ८ । आ० १२½ × ७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल सं० १८७१ भादवा बुदी ७ । ले० काल । पूर्ण । वेष्टनसं० ५१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—अंत में भैय्या भगवती दास कृत निर्वाण काण्ड भाषा भी है । इस भण्डार में ३ प्रतियां और भी हैं ।

८१७८. **निर्वाण कल्याण पूजा** -× । पत्रसं० १५ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२५३ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष--भगवान महावीर के निर्वाण कल्याणककी पूजा है ।

८१७९. **निर्वाण क्षेत्र पूजा**—× । पत्र सं० १२ । आ० ९½ × ६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल सं० १८७१ भादों सुदी १ । ले०काल सं० १८८६ जेठ बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

विशेष—नानिगराम अग्रवाल से देवीदास श्रीमाल ने करौली में लिखवाई थी ।

८१८०. **निर्वाण क्षेत्र पूजा**—× । पत्र सं० १७ । आ० ७½ × ५½ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—पूजा र०काल × । ले० काल सं० १८८५ चैत वदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० २६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन सौभागी मन्दिर करौली ।

विशेष—लल्लूराम अजमेरा ने अलवर में प्रतिलिपि की थी ।

८१८१. **निर्वाण क्षेत्र पूजा**—× । पत्रसं० १२ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल सं० १८७१ । ले०काल सं० १९३० । पूर्ण । वेष्टन सं० १२९ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मंदिर बड़ा बीस पंथी दौसा ।

८१८२. **निर्वाण क्षेत्र पूजा**—× । पत्रसं० ६ । आ० ८½ × ६ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८९२ आषाढ़ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा राज० ।

८१८३. **निर्वाण क्षेत्र पूजा**—× । पत्रसं० ११ । आ० ११ × ७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल सं० १८७१ । ले०काल सं० १९९९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

८१८४. **निर्वाण क्षेत्र पूजा** ×। पत्र सं० १६ । आ० १३ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल सं० १८७१ भादवा सुदी ७ । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२४ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

८१८५. **निर्वाण क्षेत्र मंडल पूजा**—× । पत्रसं० ४४ । आ० १२ × ४½ इंच । **भाषा**-हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल सं० १९१९ कार्तिक बुदी १३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

८१८६. **निर्वाण क्षेत्र मण्डल पूजा**—× । पत्र सं० २२ । आ० ११½ × ५½ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

८१८७. **निर्वाण मंगल विधान—जगराम** । पत्रसं० २९ । आ० १३ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल सं० १८४६ । ले० काल सं० १८७१ पूर्ण । वेष्टन सं० ११४ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

८१८८. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ३६ । आ० ११½ × ६ इञ्च । ले० काल सं० १८८९ भादौ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर मालपुरा (टोंक) ।

विशेष—पत्र ३४ से आगे **श्रीजिन** स्तवन है ।

८१८९. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० २२ । आ० ९½ × ६ इंच । ले०काल सं० १९५५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

८१९०. **नन्दि मंगल विधान**—× । पत्रसं० ८ । आ० १० × ६½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २९८-११७ । **प्राप्ति स्थान**—ग० दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८१९१. **नंदीश्वर जयमाल**—×। पत्रसं० ८ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२४ । **प्राप्ति स्थान**—ग० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८१९२. **नंदीश्वर जयमाल**— × । पत्रसं० ७ । आ० ८$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३२४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर अजमेर भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति संस्कृत टीका सहित है । अष्टाह्निका पर्व की पूजा भी है ।

८१९३. **नंदीश्वर द्वीप पूजा**— × । पत्रसं० १९ । भाषा हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल सं० १८७९ कार्तिक बुदी ५ । ले० काल सं० १९४१ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७/३३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

८१९४. **नंदीश्वर द्वीप पूजा**— × । पत्रसं० ७२ । आ०— × । भाषा— । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

८१९५. **नंदीश्वर द्वीप पूजा**— × । पत्रसं० ११ । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं०१८६० । पूर्ण । वेष्टन सं० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

८१९६. **नंदीश्वर द्वीप पूजा**— × । पत्र सं० ५२ । आ० ७$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५०/७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

८१९७. **नंदीश्वर द्वीप पूजा**— × । पत्र सं० १५ । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—पूजा । र०काल सं० १८६९ । ले०काल सं० १८८० । पूर्ण । वेष्टन सं० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

विशेष—वीर नगर में प्रतिलिपि हुई थी ।

८१९८. **नंदीश्वर द्वीप पूजा उद्यापन**— × । पत्र सं० १० । आ० ९$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १७३० । पूर्ण । वेष्टन सं० २६४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौधान बूंदी ।

८१९९. **नंदीश्वर पंक्ति पूजा**—**भ० शुभचन्द्र** । पत्रसं० ५-२२ । आ० ११ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २८० ३४७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

८२००. **नन्दीश्वर पंक्ति पूजा**— × । पत्रसं० ६ । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४५३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८२०१. —**नंदीश्वर पंक्ति पूजा**— × । पत्र सं० ८ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८२०२. **नंदीश्वर पंक्ति पूजा**— × । पत्रसं० ११ । आ० १० × ७ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९०१ आसोज बुदी १ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा ।

८२०३. **नंदीश्वर पंक्ति पूजा**—× । पत्र सं० १३ आ० १२×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

८२०४. **नंदीश्वर पंक्ति पूजा**— × । पत्रसं० ५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८२०५. **नंदीश्वर व्रतोद्यापन**—× । पत्रसं० ४ । आ० १५×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८४४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८२०६. **नदीश्वर द्वीप पूजा**—× । पत्रसं० १० । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १९०५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०९ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८२०७. **नंदीश्वर पूजा**—देवचन्द । पत्र सं० ३६ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–स्तोत्र । र० काल सं० १८८५ सावन सुदी १० । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं १२९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

८२०८. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ४१ । आ० १२½ × ६½ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०९ । **प्राप्ति स्थान** भ० दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

८२०९. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० ५७ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले०काल सं० १९०४ सावण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर मालपुरा (टोंक)

८२१०. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० ४३ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५०९ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८२११. **नंदीश्वर पूजा**—डालूराम । पत्र सं० १८ । आ० ११½ × ७ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल सं० १८७९ । ले०काल सं० १९४१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

८२१२. **प्रति सं० २** । पत्रसं०१४ । आ० १२½ × ८ इञ्च । ले०काल सं० १९३४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

८२१३. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० २ । आ० १२½ × ८ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७८ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—भावनराय कृत है ।

८२१४. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० १५ । आ० १२×७½ इञ्च । ले०काल सं० १९१७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

८२१५. **प्रति सं० ५** । पत्रसं० १४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५९ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

८२१६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २७ । आ० १०×६½ इञ्च । ले०काल सं० १९६२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—आमेट के ब्राह्मण किशनलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

८२१७. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० १६ । आ० १२½×६½ इञ्च । ले० काल सं० १९८३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१७-८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८२१८. **नंदीश्वर पूजा—रत्ननंदि** । पत्र सं० १६ । आ० ९½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल× । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

८२१९. **नंदीश्वर पूजा**—× । पत्र सं० १२ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८२२०. **नंदीश्वर पूजा**—× । पत्र सं० ५ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । विषय- पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८७७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८२२१. **नंदीश्वर पूजा**— × । पत्र सं० २ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक) ।

८२२२. **नंदीश्वर पूजा**—× । पत्र सं० ७ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १८२१ मंगसिर बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—सुरोज नगर में पार्श्वनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी । पं० आलमदास ने जिनदास के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

८२२३. **नंदीश्वर पूजा**—× । पत्र सं० १ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८२२४. **नंदीश्वर पूजा**— × । पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६-१०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

८२२५. **नंदीश्वर पूजा**—× । पत्र सं० ६० । आ० १०×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

८२२६. **नंदीश्वर पूजा (बड़ी)**—× । पत्र सं० ६७ । आ० ८×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल× । ले० काल× । पूर्ण । वेष्टन सं० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८२२७. **नंदीश्वर पूजा विधान**— × । पत्र सं० ४५ । आ० ११½ × ८ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १९३५ सावण बुदी ४ । **पूर्ण** । वेष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—इस पर वेष्टन संख्या नहीं है ।

८२२८. **नंदीश्वर द्वीप उद्यापन पूजा**— × । पत्र सं० १७ । आ० ८ × ४ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८५७ चैत बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६-४६ । **प्राप्ति स्थान**-- दि० जैन मन्दिर टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—पं० शिवजीराम की पुस्तक है तक्षकपुर में प्रतिलिपि की गयी थी ।

८२२९. **नन्दीश्वर द्वीप पूजा**—**पं० जिनेश्वरदास** । पत्रसं० ६७ । आ० १३ × ८ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८८१ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४८/१०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

८२३०. **नंदीश्वर द्वीप पूजा**—**लाल** । । पत्रसं० ११ । आ० १०×६½ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । **पूर्ण** । वेष्टनसं० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा ।

८२३१. **नन्दीश्वर द्वीप पूजा**—**विरधीचन्द** । पत्रसं० ४४ । आ० ८ × ६ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं० १९०३ । ले०काल सं० १९०४ । **पूर्ण** । वेष्टन सं० १०६, ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

विशेष—विरधीचन्द मारोठ नगर के रहने वाले थे ।

८२३२. **नन्दीश्वर द्वीप पूजा**— × । पत्रसं० ३२ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--दौलतराम कृत छहढाला तथा नित्य पूजा भी है ।

८२३३. **नैमित्तिक पूजा संग्रह**— × । पत्रसं० ५२ । आ० ११½ × ५½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक)

विशेष--निम्न पूजाओं का संग्रह है

दश लक्षण पूजा, सुख संपत्ति पूजा, पंचमी व्रत पूजा, मेघमाला व्रतोद्यापन पूजा, कर्मचूर व्रतोद्यापन पूजा एवं अनंत व्रत पूजा ।

८२३४. **नैमित्तिक पूजा संग्रह**— × । पत्र सं० ६१ । आ० १२½ × ६½ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल · । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—दश लक्षण, रत्नत्रय एवं सोलह कारण आदि पूजायें हैं ।

८२३५. **पंक्ति माला**— × । पत्रसं० ८६ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १७५६ । अपूर्ण । वेष्टनसं० ६३० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—बीच २ के पत्र नहीं हैं। संख्या दे. हुई है।

८२३६. पंच कल्याणक उद्यापन—गूजरमल ठग। पत्र सं० ७४ । आ० ७×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल। पूर्ण। वेष्टन सं० ६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोट्यों का नैणवा।

८२३७. पंच कल्याणक उद्यापन—×। पत्रसं० ३१। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-पूजा। र०काल×। ले० काल सं० १६४०। पूर्ण। वेष्टन सं० ८७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा।

८२३८. पंच कल्याणक पूजा—टेकचंद। पत्र सं० २३। आ० १२½×५½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल सं० १६८५। पूर्ण। वेष्टनसं० ६००। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

८२३९. प्रतिसं० २। पत्र सं० २२। ले० काल सं० १६२२। पूर्ण। वेष्टन सं० ७६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा।

८२४०. प्रतिसं० ३। पत्र सं० १६। आ० ११×७ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ३०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

८२४१. पंच कल्याणक पूजा—प्रभाचन्द। पत्रसं० १३। आ० १०×७ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल सं० १६३८। पूर्ण। वेष्टनसं० १७-१२। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

विशेष—लिखितं नग्न सलूंबरमध्ये। लिखापितं पंडित जी श्रीलाल चिरंजीव। शुभ संवत् १६३८ वर्षे शाके १५०३ प्र० मास पौष बुदी १२।

८२४२. पंच कल्याणक पूजा—पं० बुधजन। पत्रसं० ३४। आ० १०×६ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल सं० १६३३ आषाढ सुदी २। पूर्ण। वेष्टनसं० ६०-३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बड़ा बीसपंथी मन्दिर दौसा।

विशेष—शिवब्रेक्स ने प्रतिलिपि की थी।

८२४३. पंच कल्याणक पूजा—रामचन्द्र। पत्रसं० १६। आ० ६×५ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल सं० १८२२ ज्येष्ठ सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० १४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना।

विशेष—कुंभेर नगर में प्रतिलिपि हुई थी। चौबीस तीर्थंकरों के पंच कल्याणक का वर्णन है।

८२४४. पंच कल्याणक—वादिभूषण (भुवनकीर्ति के शिष्य)। पत्र सं० १६। आ० १०½×४½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल सं० १७१३। पूर्ण। वेष्टन सं० ५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर।

८२४५. पंच कल्याणक पूजा—सुधा सागर। पत्रसं० १५। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

८२४६. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १६ । आ० ७½×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—प्रथम ५ पत्रों में आशाधर कृत पंच कल्याणक माला दी हुई है ।

८२४७. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० २४ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल सं० १८४४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

विशेष - सदासुख ने कोटा के लाडपुरा में प्रतिलिपि की थी ।

लोकाकास ग्रहोत्तमे सुजिनयो जातः प्रदीपस्सदा ।
सद्रत्नत्रय रत्नदर्शनपरः पापे धनी नाशकः ।
श्रीमद्धी श्रवणोत्तमस्यतनुजः प्रागवाट संशोभधो ।
हंसाख्वाय ततः प्रयच्छतु सताग्रं श्री सुखासागर ।

८२४८. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० २१ । आ० ६½×६ इञ्च । ले०काल सं० १६०३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

विशेष—गुजराती ब्राह्मण हीरालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

८२४९. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० १२ । ले०काल सं० १६०२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मंदिर बसवा ।

८२५०. **प्रति सं० ६** । पत्रसं० २१ । ले०काल सं० १६२० । पूर्ण । वेष्टनसं० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मंदिर बसवा ।

८२५१. **प्रति सं० ७** । पत्रस० २१ । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल सं० १७८····पौष सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनसं० २७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

८२५२. **पंच कल्याणक पूजा—सुमति सागर** । पत्र सं० १५ । आ० ११×६½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८१७ कार्तिक बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मंदिर बयाना ।

विशेष—महाराष्ट्र प्रदेश में बल्लभपुर में नेमीश्वर चैत्यालय में ग्रन्थ रचना हुई थी । लालचन्द पांडे ने करौली मे भूरामल के लिये प्रतिलिपि की थी ।

८२५३. **प्रति सं० २** । पत्र स० १४ । आ० १३½×६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५०-५४ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

८२५४. **प्रति सं० ३** । पत्रस० १६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८२५५. **पंच कल्याण पूजा चन्द्रकीर्ति** । पत्रसं० २६ । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८२५६. **पंच कल्याणक पूजा**—× । पत्रसं० १६ । आ० ११½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

८२५७. **पंच कल्याणक पूजा**—× । पत्र सं० २४ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

८२५८. **पंच कल्याणक पूजा**—× । पत्र सं० १७ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय- पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८२५९. **पंच कल्याणक पूजा**—× । पत्र सं० १८ । आ० १०½×५⅝ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

८२६०. **पंच कल्याणक पूजा**—× । पत्र सं० १५ । आ० १०×७¹ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८२६१. **पंच कल्याणक पूजा**—× । पत्र सं० २५ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८०१ आसोज बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

८२६२. **पंच कल्याणक पूजा**—× । पत्र सं० १४ । आ० ९⅞×६ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८१७ वैशाख सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७८ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

८२६३. **पंच कल्याणक विधान—भट्टारक सुरेन्द्र कीर्ति** × । पत्र सं० ४६ । आ० ९×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३४ । **प्राप्ति-स्थान** दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

८२६४. **पंच कल्याणक पूजा**—× । पत्र सं० १८ । आ० ११×७¹ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२२४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८२६५. **पंच कल्याण पूजा**—× । पत्र सं० १३ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७३ । **प्राप्ति स्थान** भ०दि० जैन मंदिर अजमेर ।

८२६६. **पंच कल्याणक पूजा**—× । पत्र सं० २० । आ० १०¹×५⅜ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

८२६७. **पंच कल्याणक पूजा**—× । पत्र सं० ३७ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १९०७ भादवा बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १० । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा ।

८२६८. **पंच कल्याणक पूजा**—× । पत्रसं० १६ । आ० ६ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

८२६९. **पंच कल्याणक पूजा**—× । पत्र० सं० १३ । आ० ७½ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—नवें कल्याणक तक ही पूजा है । आगे लिखना बन्द कर दिया गया है ।

८२७०. **पंच कल्याणक पूजा**—× । पत्रसं० २१ । आ० ६ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १९४४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६३/३०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

८२७१. **पंच कल्याणक पूजा**—× । पत्र सं० २२ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १९०५ कार्तिक बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

विशेष—दो प्रतियां और हैं ।

८२७२. **पंच कल्याणक पूजा**—× । पत्र सं० ६ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १९८२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

८२७३. **पंच कल्याणक पूजा जयमाल**—× । पत्रसं० १० । आ० १० × ८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राजस्थान) ।

८२७४. **पंच कल्याणक पूजा**—× । पत्रसं० १५ । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १८३९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९९-६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राजस्थान) ।

८२७५. **पंच कल्याणक पूजा**—× । पत्रसं० ३५ । आ० ७×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर करौली ।

विशेष—प्रति गुटकाकार है ।

८२७६. **पंच कल्याणक पूजा**—× । पत्रसं० ३४ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १९८४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४३/१३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८२७७. **पंच कल्याणक पूजा**—× । पत्र सं० २७ । आ० ९ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १९०७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८२७८. **पंच कल्याणक पूजा**—×। पत्रसं० १७। आ० ६$\frac{3}{4}$×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी, पद्य। विषय-पूजा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर।

८२७९. **प्रति सं० २**। पत्र सं० ५८। आ० १२×७ इञ्च। ले०काल × । अपूर्ण वेष्टन सं० १४४। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

८२८०. **पंच कल्याणक विधान—हरीकिशन**—×। पत्रसं० २१। आ० १४×७ इञ्च। **भाषा**-हिन्दी-गद्य। विषय-पूजा। र०काल सं० १८८० असाढ सुदी १५। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

८२८१. **पंच कल्याण व्रत टिप्पण**—×। पत्र सं० ४। आ०—×। भाषा-हिन्दी। विषय—पूजा विधान। र०काल—×। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ४६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

८२८२. **पंचज्ञान पूजा**—पत्र सं० ५। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल—×। ले०काल—×। पूर्ण। वेष्टन सं० ६६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

८२८३. **पंचगुरु गुणमाला पूजा—भ० शुभचन्द्र**। पत्र सं० १६। आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

८२८४. **पंच परमेष्ठी पूजा**—**भ० देवेन्द्रकीर्ति**। पत्रसं० ७। आ० ९×६ इञ्च। **भाषा**-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल × । ले०काल सं० १९३८। **पूर्ण**। वेष्टन सं० ५१९। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

८२८५. **पंच परमेष्ठी पूजा**—**यशोनन्दि**। पत्र सं० ३२। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल × । ले० काल सं० १८५२। पूर्ण। वेष्टन सं० ३५०। **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८२८६. **प्रति सं० २**। पत्र सं० ३५। आ० १२$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल सं० १८८७ आषाढ बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० १४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक)।

विशेष—पं० शिवलाल के पठनार्थ रामनाथ भट्ट ने मालपुरा में प्रतिलिपि की थी।

८२८७. **प्रतिसं० ३**। पत्र सं० ३१। आ० १३×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर।

८२८८. **प्रतिसं० ४**। पत्रसं० ३६। आ० ९×७ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ८५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मंदिर अलवर।

८२८९. **प्रतिसं० ५**। पत्रसं० ४०। आ० ११×६$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल सं० १८१७ भादवा सुदी ५। पूर्ण। वेष्टनसं० ८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

विशेष—उदयराम के पुत्र रूरो ने ग्रंथ की प्रतिलिपि बयाना में करायी थी।

८२९०. **प्रतिसं० ६** । पत्र सं० २९ । ले० काल सं० १८५६ जेठ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १९ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।

८२९१. **प्रति सं० ७** । पत्रसं० २५ । आ० ११½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८८ । प्राप्ति **स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

८२९२. **प्रतिसं० ८** । पत्र सं० ३८ । आ० १०½×६ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

८२९३. **प्रतिसं० ९** । पत्र सं० २८ । आ० ११×५½ इञ्च । ले० काल सं० १८३५ जेठ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

८२९४. **प्रतिसं० १०** । पत्र सं० २७ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर खजूर,जयपुर ।

८२९५. **प्रतिसं० ११** । पत्र सं० २७ । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल सं० १९०५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

८२९६. **प्रतिसं० १२** । पत्र सं० २७ । आ० १०½×७½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०४ । **प्राप्ति स्थान** · दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८२९७. **पंच परमेष्ठी पूजा—भ० शुभचन्द्र** । पत्रसं० २४ । आ० ५½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १७८८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

अंतिम प्रशस्ति—

श्री मूल संघे जननंदसंघ ।
तया भवद्धी विजादिकीर्त्ति ।
ततपट्टधारी शुभचन्द्रदेव ।
कल्यानमालमा कृताप्तपूजा । १२ ।

विशेष—श्री लालचन्द्र ने लिखा था ।

८२९८. **पंच परमेष्ठी पूजा—टेकचन्द** । पत्र सं० ७ । आ० ८×६½ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२८/९१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८२९९. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० २३ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल सं० १८६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मंदिर उदयपुर ।

८३००. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० १५ । आ० १२×६ इञ्च । ले० काल सं० १८५९ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—उदयपुर में नगराज जोशी ने प्रतिलिपि की थी ।

८३०१. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १८५५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७८/३०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

८३०२. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० २३ । आ० ११×४ इञ्च । ले०कालसं०-१८५५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४६-३१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

८३०३. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० १२ । ले० काल × । **अपूर्ण** । वेष्टन स० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८३०४. **प्रतिसं० ७** । पत्र सं० ३४ । आ० ९½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

८३०५. **प्रतिसं० ८** । पत्रसं० १५ । आ० १२×७½ इञ्च । **ले०काल** सं०-१९३५ फागुण सुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीरजी (बूंदी) ।

विशेष—ईसरदासी हीरालाल भांवसा ने लिखवाया था ।

८३०६. **पञ्च परमेष्ठी पूजा—डालूराम** । पत्रसं० ४० । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल सं० १८६२ मंगसिर बुदी ६ । **ले०काल** सं० १९४८ कार्तिक बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर टोडारायसिंह (टोंक) ।

८३०७. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ३२ आ० ९×६ इञ्च । ले०काल सं० १८८१ फागुण बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मंदिर मालपुरा (टोंक) ।

८३०८. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० ३० । आ० १२½×८ इञ्च । **ले०काल** सं० १९६१ आषाढ़ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८३०९. **प्रतिसं० ४** । पत्र सं० ४२ । आ० १४×७½ इञ्च । ले०काल सं० १९६१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मंदिर नैणवा ।

८३१०. **प्रति सं० ५** । पत्रसं० ४७ । आ० १०½×५½ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० २५४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ हन्दरगढ़ (कोटा) ।

८३११. **प्रतिसं० ६** । पत्र सं० ४१ । आ० ८½×६ इञ्च । ले०काल सं० १८७९ श्रावण बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर मादवा (राज०) ।

विशेष—भादवा में प्रतिलिपि हुई थी ।

८३१२. **पंच मंगल पूजा** × । पत्र सं० ३४ । आ० ११×११½ इञ्च । **भाषा** हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० २८४-१११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८३१३. **पंच परमेष्ठी पूजा—बुधजन** । पत्र सं० १९ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा ।

८३१४. **पंच परमेष्ठी पूजा**—× । पत्र सं० १३ । आ० ९½×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं०—१८६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८५-१४८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८३१५. **पंच परमेष्ठी पूजा** × । पत्रसं० १८ । आ० ११×५ इञ्च । विषय-पूजा । भाषा—संस्कृत । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३९५-१४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८३१६. **पंच परमेष्ठी पूजा** × । पत्रसं० ४० । **भाषा**-संस्कृत । र०काल × । ले० काल सं० १९५८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—कुंभावती नगरी में प्रतिलिपि की गई थी ।

८३१७. **पंच परमेष्ठी पूजा** × । पत्रसं० २५ । **भाषा**—संस्कृत । विषय—पूजा । ले०काल-१८५७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८३१८. **पंचपरमेष्ठी पूजा** × । पत्रसं० २-५ आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १६९५ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

नागराज लिखितं । संवत् १६९५ वर्षे आषाढ़ मासे कृष्णपक्षे पंचमीदिने गुरुवासरे लिखितं ।

८३१९. **पंचपरमेष्ठी पूजा** × । पत्र सं० ४ । आ० १५ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

८३२०. **पंच परमेष्ठी पूजा** × । पत्र सं० २ । **भाषा**-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७९-३०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

८३२१. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७९-३०९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—आचार्य सोमकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

८३२२. **पंच परमेष्ठी पूजा** × । पत्र सं० ६६ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन सं० १४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलामा (बूंदी) ।

विशेष—देवेन्द्र विमल ने प्रतिलिपि की थी ।

८३२३. **पंच परमेष्ठी पूजा** । पत्रसं० ३९ । आ० ८$\frac{3}{4}$ - ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । **भाषा** संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

८३२४. **पंच परमेष्ठी पूजा** × । पत्रसं० ३९ । आ० ११$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक) ।

८३२५. **पंच परमेष्ठी पूजा**—× । पत्र सं० ३५ । आ० ९$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८७४ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११४६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८३२६. **पंच परमेष्ठी पूजा** × । पत्रसं० ३९ । आ० ९ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी (पद्य) । विषय—पूजा । र०काल सं० १८६८ मंगसिर सुदी ८ । ले०काल सं०—१८८६ ज्येष्ठ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३०० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८३२७ **पंच परमेष्ठी पूजा** × । पत्रसं० २८ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल—× । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११३७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८३२८. **पंच परमेष्ठी पूजा** × । पत्र सं० ४ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८३२९. **पंच परमेष्ठी पूजा**— × । पत्रसं० १३ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३१/८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

८३३०. **पंच परमेष्ठी पूजा**— × । पत्रसं० ३३ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल× । पूर्ण । वेष्टनसं० १२९ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन तेरहपंथी मंदिर दौसा ।

विशेष—प्रति चूहों ने खा रखी है ।

८३३१. **पंच परमेष्ठी पूजा**—× । पत्रसं० ४२ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ९५ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन बड़ा बीसपंथी मन्दिर दौसा ।

८३३२. **पंच परमेष्ठी पूजा**—× । पत्रसं० ३७ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १८१८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२५ । **प्राप्ति स्थान**···दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

८३३३ **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ४२ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले०काल× । पूर्ण । वेष्टन सं० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

८३३४. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० ४४ । आ० ८½×६½ इञ्च । ले०काल सं० १९५६ कार्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४७ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

८३३५. **पंच परमेष्ठी पूजा**—× । पत्रसं० ५० । आ० १२½×७½ इञ्च । भाषा हिन्दी पद्य । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७२ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

८३३६. **पंच परमेष्ठी पूजा**—× । पत्रसं० ३६ । आ० ११×६½ इञ्च । भाषा हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल सं० १८६२ । ले०काल सं० १९२६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १५६ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन खंडेलवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—अलवर में प्रतिलिपि की गई थी । एक प्रति और है जिसकी पत्र सं० २८ है ।

८३३७. **पंच परमेष्ठी पूजा**—× । पत्रसं० ५२ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल सं० १८६२ मार्गशीर्ष बुदी ८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २२-२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर टूनी (टोंक)

८३३८. **पंच परमेष्ठी नमस्कार पूजा**—× । पत्रसं० ७ । आ० ९½×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८३३९. **पंचबालयती तीर्थंकर पूजा**—× । पत्र सं० १० । आ० ८×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८३४०. **पंचमास चतुर्दशी व्रत पूजा**—× । पत्र सं० ८ । आ० ९½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक)

८३४१. **पंचमास चतुर्दशी व्रतोद्यापन**—भ० सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ५ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८३४२. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ६ । आ० ९½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

८३४३. **पंचमास चतुर्दशी व्रतोद्यापन**—× । पत्रसं० ५ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं०-१८, ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

८३४४. **पंचमास चतुर्दशी व्रतोद्यापन**—× । पत्रसं० ८ । आ० १०½×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

८३४५. **पंचमास चतुर्दशी व्रतोद्यापन विधि**— × पत्रसं० ४७ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × ले० काल सं० १८८६ सावण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—बृजलाल गोकलचन्द बैद ने पंचायती मन्दिर के लिए बालमुकुन्द से प्रतिलिपि करवाई थी ।

८३४६. **पंचमी विधान**—× । पत्रसं० १३ । आ० ११×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

८३४७. **पंचमी व्रत पूजा** - कल्याण सागर । पत्रसं० ६ । आ० १०½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

अन्तिम पाठ—

तीर्थंकरा सकलल कल्हिंकरास्ते ।
देवेन्द्रवृंदमहिता सहिता गुणौर्घं ।

वृंदावती नभशतां वशतां शिवानी
कुर्वंतु शुद्ध वनितासुत वित्तजानि ॥१॥
जगति विदति कीर्ते रामकीर्तेषु शिष्यो
जिनपतिपदभक्तो हर्षनामा सुधरि ।
रचित उदयसुतेन कल्याण भूम्ने
विधिरूप भवनी सा मोक्ष सौख्य ददातु ॥२॥

८३४८. **पंचमी व्रत पूजा**—× । पत्रसं० ३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

८३४९. **पंचमी व्रतो पूजा**—× । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इंच । **भाषा**—संस्कृत । **विषय**-विधान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक)

८३५०. **पंचमी व्रत पूजा**—× । पत्रसं० ५ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । **विषय**-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी बूंदी ।

विशेष—महाराज श्री जगतसिंह विजयराज्ये कोटा वासी अमरचन्द ने सवाई माधोपुर में लिखा था ।

८३५१. **पंचमी व्रत पूजा**—× । पत्रसं० ७ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × ले०काल । पूर्ण । वेष्टन सं० १९७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

८३५२. **पंचमी व्रत पूजा**—× । पत्रसं० ७ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

८३५३. **पंचमी व्रत पूजा**—× । पत्र सं० ६ । आ० १२½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८२५ पौष सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८५, ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष चाटसू में डूंगरसी कासलीवाल वासी फतमी ने प्रतिलिपि की थी ।

८३५४. **पंचमी व्रतोद्यापन-हर्ष कल्याण** । पत्रसं० ८ । आ० १२½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय पुजा । र०काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

८३५५. **पंचमी व्रतोद्यापन**—× । पत्र सं० ८ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-पुजा । र०काल × । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टन सं० ३५१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८३५६. **पंचमी व्रतोद्यापन**—× । पत्रसं० ५ । आ० १०½×६ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय पूजा र०काल × । ले०काल × । **पूर्ण** । वेष्टनसं० ७३७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—महात्मा रिषलाल किशनगढ़ वाले ने अजमेर में प्रतिलिपि की थी ।

८३५७. **पंचमी व्रतोद्यापन**—× । पत्रसं० ६ । आ० ८×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

८३५८. **पंचमी व्रतोद्यापन**—× । पत्रसं० ७ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १७/३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौभाग्यो मन्दिर करौली ।

८३५९. **पंचमी व्रतोद्यापन**— × । पत्र सं० १० । आ० ९×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

८३६०. **पंचमी व्रतोद्यापन पूजा—नरेन्द्रसेन** । पत्रस० ११ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७-१६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ दोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—ज्वाला मालिनी स्तोत्र, पूजा एवं आरती है । ज्वालामालिनी चन्द्रप्रभ की देवी हैं । पूजा तथा आरती नरसेन कृत भी है जिनका नाम मनुजेन्द्र सेन भी है ।

८३६१. **पंचमी व्रतोद्यापन पूजा—हर्षकीर्ति** । पत्रसं० ७ । आ० ९½×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८०८ । पूर्ण । वेष्टनसं० २८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर टबलाना (बूंदी)

८३६२ **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ९ । र० काल × । ले० काल सं० १८३१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८३६३. **पंचमी व्रतोद्यापन विधि**— × । पत्र सं० ७ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८७४ माघ सुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७९ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—एक प्रति और है ।

८३६४. **पंचमेरु पूजा—शुभचन्द्र** । पत्रसं० १४ । आ० १२½×७½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९१४ फागुण बुदी १४ । **पूर्ण** । वेष्टनसं० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मंदिर अलवर ।

विशेष-- नथीरापुरा वासी बंसतलाल ने लिखी थी ।

८३६५. **पंचमेरु पूजा—पं० गंगादास** । पत्र सं० १३ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय— पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

८३६६. **पंचमेरु पूजा—म० रत्नचंद** । पत्र सं० ५ । आ० १२×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १८६० पौष सुदी १ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष – सवाई माधोपुर में जगतसिंह के राज्य में लिखा गया था ।

८३६७. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ५ । आ० ११½×६½ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

८३६८. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० ५ । आ० १२×५ इंच । ले०काल सं० १८३८ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४२ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

८३६९. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० ६ । ले०काल सं० १८५९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

विशेष —दोनों ओर के पुट्ठे सचित्र हैं ।

८३७०. **पंचमेरु पूजा**–× । पत्रसं० २ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७२ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८३७१. **पंचमेरु पूजा** · × । पत्र सं० २–९ । आ० ८×४ इंच । भाषा · संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर दूनी (टोंक) ।

८३७२. **पंचमेरु पूजा** – **टेकचन्द** । पत्रसं० ७ । आ० ११½×५ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय · पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ़ (कोटा) ।

८३७३. **पंचमेरु पूजा**—**डालूराम** । पत्र सं० २४ । आ० ११×६ इंच । भाषा हिन्दी पद्य । विषय–पूजा । र० काल सं० १८७९ । ले०काल सं० × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११६-८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

८३७४. **पंचमेरु पूजा—दयानतराय** । पत्रसं० ३ । आ० ७·×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय -पूजा । र० काल × । ले० काल १९४२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६८ । **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८३७५. **पंचमेरु पूजा—भूधरदास** । पत्रसं० २–५ । आ० ८½×४ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२/१२ । प्राप्ति **स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर बूनी (टोंक) ।

८३७६. **प्रतिसं० ७** । पत्र सं० ३ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८३७७. **पंचमेरु पूजा—सुखानंद** । पत्र सं० १९ । आ० १०½×७ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९३२ कार्तिक बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—श्री रसिकलाल जी अरूपगढ वाले ने स्यौबक्स से प्रतिलिपि करवायी।

८३७८. **पंचमेरु पूजा**—× । पत्र सं० ३६ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल १८७७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८३७९. **पंचमेरु पूजा**—× । पत्र सं० ३३ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९७१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

विशेष—मोतीलाल भौंसा जयपुर वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

८३८०. **पञ्चमेरु पूजा**—× । पत्र सं० ३९ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९३५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौमान बूंदी ।

८३८१. **पञ्चमेरु पूजा विधान**—× । पत्र सं० ४४ । आ० ६×६ इञ्च । **भाषा**-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

८३८२. **पञ्चमेरु पूजा विधान**—**टेकचन्द** । पत्र सं० ५६ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी। विषय—पूजा ।र० काल × । ले० काल सं० १९५४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८३८३. **पंचमेरु मंडल विधान**—× । पत्र सं० ४५ । आ० ६½×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

८३८४. **पंचमेरु तथा नन्दीश्वर द्वीपा पूजा**—**थानमल** । पत्र सं० ११ । आ० ८½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८३८५. **पञ्चामृताभिषेक**—× । पत्र सं० ६ । आ० १२×६ इञ्च । **भाषा**-संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८७० । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक) ।

विशेष—पं० शिवजीराम ने महेश्वर में प्रतिलिपि की थी ।

८३८६. **पद्मावती देव कल्प मंडल पूजा-इन्द्रनन्दि** । पत्र सं० १६ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८३८७. **पद्मावती पटल**—× । पत्र सं० ३२ । आ० ७½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—गुटका आकार में है।

८३८८. **पद्मावती पूजा—दोषण**। पत्र सं० ३७। आ० ६×५½ इंच। भाषा संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल × । ले० काल सं० १७४६। पूर्ण। वेष्टन सं० ३१०-११७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

८३८९. **पद्मावती पूजा**—× । पत्रसं० २। आ० १२×६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल × । ले० काल सं० १८६७। पूर्ण। वेष्टनसं० १५२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार।

८३९०. **पद्मावती पूजा**—× । पत्र सं० २६। आ० ८⅝×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १३७३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार।

८३९१. **पद्मावती पूजा**—× । पत्रसं० २२। आ० ९⅝×४⅝ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १०९३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८३९२. **पद्मावती पूजा**—× । पत्रसं० २२। आ० ८½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १९४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—जैनेतर पूजा है।

८३९३. **पद्मावती पूजा**—×। पत्रसं० १४। आ० १३½×८½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल सं० १९५८। पूर्ण। वेष्टन सं० २१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा।

८३९४. **पद्मावती पूजा**—× । पत्रसं० २६। आ० ७½×५⅝ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—वांक्षागीत (हिन्दी) और है।

८३९५. **पद्मावती पूजा विधान**—× । पत्रसं० २२। आ० १०½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल × । ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ५४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

८३९६. **पद्मावती पूजा स्तोत्र**—×। पत्र सं० ९। आ० १०½×६½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा स्तोत्र। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३२१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

८३९७. **पद्मावती मंडल पूजा**—× पत्रसं० १३। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत, विषय—पूजा। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १३६७। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८३९८. **पद्मावती व्रत उद्यापन**—× । पत्रसं० ७४-९५ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४१३-१५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८३९९. **पल्य विचार**— × । पत्र सं० १ । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८४००. **पल्य विधान**—× । पत्र सं० ९ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

८४०१. **पल्य विधान**—× । पत्र सं० ६ । आ० ९×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५८४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८४०२. **पल्य विधान पूजा**—**विद्याभूषण** । पत्रसं० ६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १९४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

८४०३. **पल्यविधान पूजा**—× । पत्रसं० ७ । आ० ११$\frac{3}{4}$×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८८१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

८४०४. **पल्य विधान पूजा**— × । पत्रसं० ४ । आ० १०$\frac{5}{8}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३४८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८४०५. **पल्य विधान पूजा**—× । पत्रसं० ८ । आ० ११×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १८६० आश्विन बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १५५ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

८४०६. **पल्य विधान पूजा**—**भ० रत्ननंदि** । पत्रसं० ८ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८५० । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८४०७. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १५ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९८/६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राजस्थान) ।

८४०८. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० ११ । आ० ११×४ इंच । ले०काल सं० १६२७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७६, ३४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—सं० १६२७ वर्षे भादवा बुदि सानमिदिनो सागवाडा शुभस्थाने श्री आदिनाथ चैत्यालये सातिम बृहस्पतिवारे श्री मूल संघे आचार्य श्री यशकीर्ति आचार्य श्री गुणचन्द्र ब्र० पूजा स्वहस्तेन लिखितं ।

८४०९. **प्रतिसं० ४।** पत्रसं० ७ । आ० ६×६ इञ्च । **भाषा**-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । **ले०काल** सं० १८५६ श्रावण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

८४१०. **प्रतिसं० ५।** पत्रसं० ११ । आ० ११×४½ इञ्च । **ले०काल** सं० १६४० श्रावण सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—मालपुरा में आचार्य श्री गुणचन्द्र ने पं० जयचंद से लिखवाया था ।

८४११. **प्रतिसं० ६।** पत्रसं० ११ । आ० १०×४ इञ्च । **ले० काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक) ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

८४१२. **पत्य विधान—शुभचन्द्र ।** पत्र सं० ५ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८४१३. **प्रतिसं० २।** पत्र सं० ७ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल सं० १६०८ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—पंडित जीवंधर ने प्रतिलिपि की थी ।

८४१४. **प्रतिसं० ३।** पत्रसं० ८ । आ० १०½×४½ इंच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

८४१५. **प्रतिसं० ४।** पत्र सं० ७ । आ० ११×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८४१६. **प्रतिसं० ५।** पत्र सं० ११ । आ० १०×५½ इञ्च । ले० काल सं० १६५६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रत्येक पत्र में ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४२ अक्षर हैं । उद्यापन विधि भी दी हुई है ।

८४१७. **प्रति सं० ६।** पत्र सं० १० । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७४ । **प्राप्ति-स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

८४१८. **प्रति सं० ७।** पत्रसं० ६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७७ ३४४ । **प्राप्ति-स्थान** दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—गुरु श्री अभयचन्द्र शिष्य शुभं भवतु । दवे महारावजी लिखितं ।

८४१९. **प्रतिसं० ८।** पत्रसं० ६ । ले० काल सं० १६४३ ज्येष्ठ बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनसं० २७८/३४५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रथम पत्र पर एक चित्र है । जिसमें दो स्त्रियां एवं एक पुरुष खड़ा है । आगे वाली स्त्री के हाथ में एक कमल है । मेवाड़ी पगड़ी लगाये पुरुष सामने खड़ा है । वह भी एक हाथ को ऊंचे उठाये हुए है । ओढनियों के छोर लंबे तीखे निकले हुए हैं ।

८४२१. **पल्य विधान व्रतोद्यापन एवं कथा**—**श्रुतसागर**। पत्र सं० १८८। आ० ८½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा एवं कथा। र० काल ×। ले० काल संवत् १८८०। पूर्ण। वेष्टन सं० १०९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक)।

८४२१. **पल्य व्रत पूजा**—×। पत्रसं० २। आ० १०×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार।

८४२२. **पञ्चपरमी पूजा**—**वेणु ब्रह्मचारी**। पत्र सं० ७। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४८८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—प्रारम्भ में ज्ञान बत्तीसी आदि हैं।

धोज पंचमी अष्टमी एकादशी तथा चतुर्दशी इन पांच पर्वों की पूजा है।

८४२३. **पार्श्वनाथ पूजा**—**देवेन्द्रकीर्ति**। पत्र सं० १५। आ० ८×६½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १९२८। पूर्ण। वेष्टन सं० ११४३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

विशेष—अमरावती में प्रतिलिपि हुई थी।

८४२४. **पार्श्वनाथ पूजा**—**वृंदावन**। पत्रसं० ३। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १९३२। पूर्ण। वेष्टन सं० १८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

८४२५. **प्रति सं० २**। पत्र सं० ४। आ० ८½×६ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ९१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

८४२६ **पिंडविशुद्धि प्रकरण**—×। पत्रसं० ५। आ० १०×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय विधान। र० काल ×। ले० काल × अपूर्ण। वेष्टन सं० ५००। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८४२७. **पिण्डविशुद्धि प्रकरण**—×। पत्रसं० ८। आ० १०×४ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १६०१ आषाढ़ बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० १३२। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

विशेष—पं० सलिलकवण ने महिलानगर में प्रतिलिपि की थी।

८४२८. **पुण्याहवाचन**—**आशाधर**। पत्र सं० ७। आ० ९½×७ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५३९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

८४२९. **पुण्याहवाचन**—×। पत्रसं० ६। आ० १०×६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३४७-१३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

८४३०. **पुण्याहवाचन**—× । पत्रसं० ८ । आ० १२½×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—विधान । र०काल × । ले०काल सं० १८९४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८४३१. **पुण्याहवाचन**—× । पत्रसं० ८ । आ० ८½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले०काल सं० १८९४ चैत सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनसं० × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

८४३२. **पुण्याह वाचन**—× । पत्रसं० ७ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल सं० १८८१ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—पं० केशरीसिंह ने शिष्य ने पं० देवालाल के लिए प्रतिलिपि की थी ।

८४३३. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ६ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल सं० १७७३ । पूर्ण । वेष्टनसं० २७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८४३४. **पुण्याहवाचन**—× । पत्र सं० २८ । आ० ९½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८९५ पौष बुदी११ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४२ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८४३५. **पुरंदर व्रतोद्यापन-सुरेन्द्रकीर्ति** । पत्रसं० २ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल सं० १८२७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर बूंदी (टोंक)

विशेष—नेमीचंदजी के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

८४३६. **पुरन्दर व्रतोद्यापन**—× । पत्रसं० ३ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १९१३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

८४३७. **पुण्यमाला प्रकरण**—× । पत्रसं० २२ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-विधान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४२१/२५९ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—केशवराज की पुस्तक है । प्रति प्राचीन है ।

८४३८. **पुष्पांजलि जयमाल**—× । पत्रसं० ७ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

८४३९. **पुष्पाञ्जलि पूजा—ज्ञानतराय** । पत्र सं० ७ । आ० ९×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८४४०. **पुष्पाञ्जलि पूजा—भ० महीचन्द** । पत्र सं० ५ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३०४ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

८४४१. **पुष्पाञ्जलि पूजा—भ० रत्नचन्द्र** । पत्रसं० १७ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८५८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३७६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—पट्टण सहर मध्ये शिषिक्रुतं ।

८४४२. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ६ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४७७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

८४४३. **पुष्पाञ्जलि पूजा**— × । पत्र सं० ६ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

८४४४. **पुष्पाञ्जलि पूजा**— × । पत्रसं० ६ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक)

८४४५. **पुष्पाञ्जलि व्रतोद्यापन—गंगादास** । पत्रसं० ५ । आ० १२×७ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८४४६. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ६ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल सं० १७५३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

विशेष—इति भट्टारक श्री धर्मचन्द्र शिष्य पं० गगादास कृत श्री पुष्पांजलि व्रतोद्यापन संपूर्ण ।

संवत् १७५३ वर्षे शाके १६१८ प्रवर्तमाने आश्विन मासे कृष्णपक्षे दशमी तिथौ शनिवासरे लिखिता प्रतिरियं । संघवी हंसराज मथुरादास पठनार्थं । श्री अमदाबाद मध्ये लिखितं । पं० कुशल सागर गणि ।

८४४७. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० १३ । आ० ६×४ इञ्च । ले०काल सं० १८७६ चैत बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ मालपुरा (टोंक)

८४४८. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० १० । आ० ६×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

८४४९. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० १६ । आ० ८×४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

८४५०. **प्रति सं० ६** । पत्रसं० ५ । आ० १२×५½ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

८४५१. **पुष्पांजलि व्रतोद्यापन टीका**—× । पत्रसं० ४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १६६१ सावन बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० १३४७ । **प्राप्ति स्थान** —भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८४५२. **पूजाष्टक**—**ज्ञानभूषण** । पत्रसं० ५४ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १५२८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४४८/३७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

अन्तिम पुष्पिका—

इति भट्टारक श्री भुवनकीर्ति शिष्य मुनि ज्ञानभूषण विरचितायां स्वकृताष्टक दशक टीकायां विद्वज्जन वल्लभा संज्ञायां नंदीश्वर द्वीप जिनालयार्चनवर्णनीय नामा दशमोधिकारः ।

प्रशस्ति

श्रीमद् विक्रमभूपराज्य समयातीते । संवत् १५२८ वसुद्वीन्द्रिय क्षोणी संमितहायने गिरिपुरे नाभेय-चैत्यालये । अस्ति श्री भुवनादिकीर्ति मुनियस्तस्यागिरं । सेवितास्थो ज्ञानेविभूसणामुनिना टीका शुभेयं कृता ।

८४५३. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ३० । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल । अपूर्ण । वेष्टनसं० ४४६/२८६ **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है एवं अन्तिम पत्र नहीं है ।

८४५४. **पूजाष्टक**—**हरषचन्द** । पत्रसं० ३ । भाषा-हिन्दी । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

८४५५. **पूजाष्टक** · × । पत्र सं० ४ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा —हिन्दी ।विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष-- आदिनाथ पूजाष्टक, ऋषभदेव पूजा तथा सूधरदास कृत गुरु वीनती है ।

८४५६. **पूजा पाठ**-- × । पत्र सं० ४ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४४ ४५० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैनसंभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

८४५७. **पूजापाठ संग्रह** × । पत्रसं० १४ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा —हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १६३८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४५६ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८४५८. **पूजापाठ संग्रह**— × । पत्रसं० ७० । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अजमेर भण्डार ।

विशेष—दशलक्षण पूजा तथा षोडषकारण पूजा भी है ।

८४५९. **पूजापाठ संग्रह**— × । पत्र सं० ५३ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२/८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

८४६०. **पूजापाठ संग्रह**— × । पत्रसं० २१६ । आ० ६×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मंदिर नैणवा ।

विशेष - सामान्य नित्य नैमित्तिक पूजाओं एवं चौबीसी तीर्थंकर पूजाओं का संग्रह है ।

८४६१. **पूजापाठ संग्रह** । पत्रस० २-५० । आ० १२×६½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा एवं स्तोत्र । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष नवग्रह स्तोत्र एवं अन्य पाठ हैं ।

८४६२. **पूजापाठ संग्रह**— × । पत्र सं० ७० । आ० ६½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६०-१४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—विभिन्न पूजाएं एवं स्तोत्र है ।

८४६३. **पूजापाठ संग्रह**— × । पत्रसं० ३७ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-संग्रह । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २३२-६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—जिन सहस्रनाम (जिनसेन) सरस्वती पूजा (ब्र० जिनदास) एवं सामान्य पूजाओं का संग्रह है ।

८४६४. **पूजापाठ संग्रह**— × । पत्रसं० १८ । आ० ६½×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय-संग्रह । र० काल × । ले० काल सं० १९६५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८४६५. **पूजापाठ संग्रह**— × । पत्रसं० ४८ । आ० १०×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७-५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—२७ पूजा पाठों का संग्रह है ।

८४६६. **पूजापाठ संग्रह**— × । पत्र सं० १०६ । आ० ७×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २३०-१२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष- -भक्तामर स्तोत्र भाषा टीका तथा मंत्र ऋद्धि आदि सहित हैं ।

८४६७. **पूजा पाठ संग्रह**— × । पत्र सं० १३२ । आ० ८½×५½ इंच । भाषा - संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३२६-१२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—विभिन्न प्रकार के स्तोत्रों एवं पूजा पाठों का संग्रह है ।

८४६८. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्रसं० १६ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा पाठ । र० काल × । ले० काल । पूर्ण । वेष्टनसं० २०७-८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८४६९. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्र सं० ७० । आ० ८×५$\frac{१}{२}$ इञ्च । **भाषा**-संस्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा पाठ । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३०-१६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८४७०. **पूजा पाठ संग्रह** । पत्रसं० ५६ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ४३६-१६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८४७१. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्र सं० १११ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-संग्रह । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ५११ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८४७२. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्रसं० २३ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-संग्रह । र० काल × । ले०काल सं० १९१५ फाल्गुण बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी सीकर ।

८४७३. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्रसं० ५९ । आ० १३$\frac{१}{२}$×८$\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १९६७ पौष बुदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष ··भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा द्वारा लिखाया गया है ।

८४७४. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्र सं० ९० । आ० ९×६$\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठों का संग्रह है ।

८४७५. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्रसं० ६२ । आ० ८$\frac{१}{२}$×५$\frac{१}{२}$ इञ्च । **भाषा**-हिन्दी । विषय-संग्रह । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

८४७६. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्रसं० ६ से ४८ । आ० ७$\frac{१}{२}$×५$\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—गुटका साइज है ।

८४७७. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्रसं० ३५ । आ० १३×७$\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—निमित्त नैमित्तिक पूजाओं का संग्रह है ।

८४७८. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्रसं० ५२ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २६२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८४७९. **पूजा पाठ संग्रह**—×। पत्र सं० १७२ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९१ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर ।

८४८०. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्रसं० ७२ । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९४ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

८४८१. **पूजा पाठ संग्रह**— × । पत्र स० १०९ । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८४८२. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्र सं० १०७ । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । विषय-संग्रह । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८४८३. **पूजा संग्रह**— × । पत्रसं० १४२ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । र०काल × ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

८४८४. **पूजा पाठ संग्रह**—×। पत्रसं० ९३ । आ० ३½×५½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय-पूजा । ले०काल सं० १८५४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बरसली कोटा ।

विशेष—दुलीचन्द के पठन के बूंदी नगर में लिखा गया है ।

८४८५. **पूजा पाठ संग्रह** × । पत्रसं० १५४ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत, हिन्दी । विषय—पूजा पाठ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३७८ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

८४८६. **पूजा पाठ संग्रह**— × । पत्र सं० ९५ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—प्रति जीर्ण है

८४८७. **पूजा पाठ संग्रह**—×। पत्रसं० २२६ । आ० ७½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोट)

८४८८. **पूजा संग्रह**—× । पत्र सं० ९ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)

विशेष—गुरुविलि पूजा एवं क्षेत्रपाल पूजा है ।

८४८९. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्रसं० १०४ । आ० ७½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्दरगढ़ (कोटा)

८४९०. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्र सं०४९ । आ० १३ × ६ इञ्च । भाषा–हिन्दी, संस्कृत । विषय-संग्रह । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७२ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर मालपुरा (टोंक)

८४९१. **पूजापाठ संग्रह**—× । पत्रसं० ११ । आ०- × । भाषा-संस्कृत, हिन्दी । विषय-संग्रह । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर मालपुरा (टोंक)

८४९२. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्र सं० ३ से २०३ । आ० ७$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी, संस्कृत । विषय-पूजा पाठ। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४३-२८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

८४९३. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्र सं० १४९ । भाषा–संस्कृत-हिन्दी । विषय—संग्रह । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १३० (ब) र । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—निम्न पाठ है—

१. महाशान्तिक विधि—× । संस्कृत । ले०काल सं० १५२३ वैशाख बुदी ९ । पत्रसं० १-८१ नेनवा पत्तने सुरत्राणे अलाउद्दीन राज्य प्रवर्तमाने ।

२. गणधर वलय पूजा–× । पूर्ण । ले०काल सं० १५२३ पत्रसं० ८२–१४० । ९८ से ११२ तक पत्र खाली हैं ।

३. माला रोहण—× ।	संस्कृत ।	पत्र १४१-१४३
४. कलकुण्ड पूजा—× ।	,, ।	पत्र १४४-१४५
५. अष्टाह्निका पूजा-× ।	,, ।	पत्र १४६–१४७

८४९४. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्रसं० २४४ । आ० ७$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत, हिन्दी । विषय संग्रह । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

८४९५. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्र सं० ७२ । आ० ९$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी, संस्कृत । विषय—पूजापाठ । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

८४९६. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्रसं० ५-६९ । आ० ८ × ५ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–संग्रह । र०काल—× । ले०काल सं० १९५१ । अपूर्ण । वेष्टनसं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर टोडारायसिंह (टोंक) ।

८४९७. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्र सं० ६०-१८१ । आ० ९ × ५ इञ्च । भाषा–हिन्दी, संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

८४९८. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्रसं० १२७ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा–हिन्दी, संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १९५८ । पूर्ण । वेष्टनसं० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

विशेष—नैणवा में प्रतिलिपि की गयी थी ।

८४९९. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्रसं० २१६ । आ० ५½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । विषय—पूजा पाठ । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा ।

८५००. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्र सं० १२८ । आ० ६×३ इञ्च । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७१ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा ।

८५०१. **पूजा पाठ संग्रह**— × । पत्रसं० १३० । आ० ६×५ इञ्च । भाषा हिन्दी, संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर नैणवा ।

८५०२. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्र सं० १९६ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा पाठ । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा ।

८५०३. **पूजा पाठ संग्रह** - × । पत्रसं० ४० । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी विषय-संग्रह । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

८५०४. **पूजा पाठ संग्रह**— × । पत्रसं० ७० । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा ।

विशेष—सामान्य पूजा एवं पाठों का संग्रह है ।

८५०५. **पूजा पाठ संग्रह**— × । पत्र सं० ६१ । आ० १०×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । विषय— पूजा एवं स्तोत्र । र०काल × । ले०काल सं० १९११ फागुण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोठ्यों का नैणवा ।

८५०६. **पूजा पाठ संग्रह**—× पत्रसं० ६१ । आ० १०×५½ इञ्च । भाषा हिन्दी-संस्कृत । विषय-पूजा पाठों का संग्रह । र० काल × । ले०काल सं० १८७ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोठ्यों का नैणवा ।

८५०७. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्रसं० १८७ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत, हिन्दी । विषय-पूजा पाठों का संग्रह । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर कोठ्यों का नैणवा ।

८५०८. **पूजा पाठ संग्रह**—× पत्र सं० १४४ । आ० ९×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ९० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोठ्यों का नैणवा ।

८५०९. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्र सं० २-२-४ । आ० १८×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । विषय-संग्रह । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक) ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठों का संग्रह है।

८५१०. पूजा पाठ संग्रह—× । पत्रसं० ८४ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । विषय-संग्रह । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

विशेष—पंच स्तोत्र, पूजा, तत्वार्थ सूत्र, पंच मंगल आदि पाठों का संग्रह है ।

८५११. पूजापाठ संग्रह—× । पत्रसं० ५१ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पाठ संग्रह । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक) ।

८५१२. पूजापाठ संग्रह—× । पत्रसं० ३४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा स्तोत्र आदि का संग्रह । **ले०काल** × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक) ।

८५१३. पूजापाठ संग्रह—× । पत्रसं० २-३२ । आ० ६½×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

८५१४. पूजापाठ संग्रह—× । पत्र सं० ७० । आ० ११×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । विषय-संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—बूंदी में प्रतिलिपि हुई थी । निम्न पाठ एवं पूजायें हैं—
मंगलपाठ, सिद्धपूजा, सोलहकारण पूजा, भक्तामर स्तोत्र, तत्त्वार्थसूत्र सहस्रनाम एवं स्वयंभू स्तोत्र ।

८५१५. पूजापाठ संग्रह —× । पत्रसं० २७८ । आ० ६½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल×। ले०काल×। पूर्ण । **वेष्टनसं०** १७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

८५१६. पूजापाठ संग्रह—×। पत्र सं० ८० । आ० १०½×८ इञ्च । भाषा संस्कृत-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १६३ । **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा तथा स्तोत्र हैं ।

८५१७ पूजापाठ संग्रह—× । पत्रसं० ५६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा संस्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७५ । **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष – नित्य पूजापाठ एवं तत्त्वार्थ सूत्र है ।

८५१८. पूजापाठ संग्रह—× । पत्र सं० ४७ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र । र० काल × । ले०काल सं० १८५७ जेठ बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष – नित्य पूजा पाठ संग्रह हैं ।

८५१९. पूजा पाठ संग्रह—×। पत्रसं० ६-६६ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । विषय-संग्रह । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । **वेष्टनसं०** १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

८५२०. पूजा पाठ संग्रह—× । पत्रसं० ५१ । आ० १२×७½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी। विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—२५ पूजा पाठों का संग्रह है ।

८५२१. पूजा पाठ संग्रह—× । पत्रसं० ६६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-पूजा स्तोत्र । र०काल × । ले० काल सं० १९१८ जेठ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—शिवजीलाल जी ने लिखवाया था ।

८५२२. पूजा पाठ संग्रह—× । पत्रसं० ११० । आ० १३×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र आदि पाठों का संग्रह है ।

८५२३. पूजा पाठ संग्रह—× । पत्रसं० ३५ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । । पूर्ण । वेष्टनसं० ३४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

८५२४. पूजा पाठ संग्रह—× । पत्रसं० १ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । विषय-पूजा । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०२-१०९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर टबाना ।

विशेष—निम्न पूजा पाठों का एक एक का अलग अलग संग्रह है । गुटका आकार में ८ पुस्तकें हैं—भक्तप्रभ पूजा, निर्वाणक्षेत्र पूजा, गुरु पूजा, भक्तामर स्तोत्र, चतुर्विंशति पूजा, (रामचन्द्र) नित्य नियम पूजा एवं भक्तामर स्तोत्र ।

८५२५. पूजा पाठ संग्रह—× । पत्र सं० ११६ । आ० ९×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय संग्रह । ले० काल सं० १८७८ वैसाख बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक) ।

१.	पंच मंगल	— रूपचन्द ।	पत्र १-१९ तक
२.	साधु वन्दना	— बनारसीदास ।	
३.	परम ज्योति	— ,,	
४.	विषापहार	— अचलकीर्ति	
५.	भक्तामर स्तोत्र	— मानतुंग	
६.	ऋषि मंडल स्तोत्र	— ×	पत्र सं० १९ । संस्कृत
७.	रामचन्द्र स्तोत्र	— ×	संस्कृत २०
८.	चौसठ योगिनी स्तोत्र	— ×	,, २१
९.	क्षेत्रपाल पूजा	— शांतिदास ।	,, २२
१०.	क्षेत्रपाल स्तोत्र	— × ।	

११.	ह्वयण	—	× ।	संस्कृत । २३
१२.	क्षेत्रपाल	—	मुनि शुभचन्द ।	हिन्दी पद्य । २४

क्षेत्रापाल की विनती लिख्यते :—

जैन को उद्योत भैरू संकटि भरैं ।
सांति मूरति भव्य जन सुखकारी ।। जैन० ।। टेर

घुघरियालो केस सिंदूर तेल छवि को ।
मोतियां की माला भावी उग्यौ भानू रवि को ।।१।।

सिर पर मुकट कुण्डल कानां सोहती ।
कठी सोहे घुगघुगी हीय हार मोहती ।।२।।

मुख सोहे दांता नैं तंबोल मुख चुकती ।
नैणा रेखा काजल की तिलक सिर सोहती ।।३।।

बाजूबंध भी रख्या प्रौच्यानैं पौंचि लाल की ।
नवग्रह आंगुल्या नैं पकड्यां डोरि स्वान की ।।४।।

कटि परि घूघरा तर्यां लाल पाट कौ ।
जंग घनघोर बाजैं रमे झमि घाट कौ ।।५।।

पहरि कडि मेखला पग तलि पावड़ी ।
चटक मटक बाजैं खुंटया मोहै भावड़ा ।।६।।

छड़ी लियां हाथ में देहुरा के बारणैं ।
पूजा करैं नरच रखवाली कै कारणैं ।।७।।

नृत्य करैं देहुरा कै बारैएकज लाप कै ।
तान तौड़े प्रभु आगै जिन गुण बगाय कै ।।८।।

पहली क्षेत्रपाल पूजै तैल फांवी वाकुलां ।
गुगल तिलोट गुल आठौं द्रव्य मोकला ।।९।।

रोग सोग लाप घाड़ि मरी कौं भगाय दे ।
बालकां की रक्षा करै अन धन पूत दे ।।१०।।

गीत पहली गाय जौ रझाय क्षेत्रपाल कौ ।
मुनि सुभचन्द गायो गीत भैरूंलाल कौ ।।११।।

१३.	चतुर्विंशति पूजाष्टक	—	× ।	संस्कृत । पत्र सं० २५
१४.	बंदेतान जयमाल	—	माघनंदी ।	संस्कृत । पत्र सं० २६
१५.	मुनिश्वरों की जयमाल	—	ब्र० जिणदास ।	हिन्दी । पत्र सं० ३२
१६.	दश लक्षण पूजा	—	× ।	संस्कृत ।
१७.	सोलहकारण पूजा	—	× ।	,,
१८.	सिद्ध पूजा	—	× ।	,,
१९.	पद	—	बनारसीदास ।	हिन्दी । पत्र सं० ३७

श्री चिंतामणि स्वामी सांचा साहिब मेरा ।
सोक हरै तिहुं लोक का उठ लीजत नाम सवेरा ।।

२०.	रत्नत्रय विधान	– × ।	संस्कृत	पत्र सं०	४१
२१.	लक्ष्मी स्तोत्र	— पद्मप्रभदेव ।	,,	,,	४३
२२.	पूजाष्टक	— लोहट ।	हिन्दी	,,	४६
२३.	पंचमेरु पूजा	— भूधरदास ।	,,	,,	५०
२४.	सरस्वती पूजा	— ज्ञान भूषण ।	,,	,,	५५

विशेष—पं० शिवलाल ने वैसाख सुदी ६ रविवार सं० १८७८ में मालपुरा नगर में भौसों के वास के मन्दिर में स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२५.	तत्वार्थसूत्र	— उमास्वामी ।	संस्कृत ।	,,	७३
२६.	सहस्रनाम	— आशाधर ।	,, ।	,,	७३
२७.	विनती	— रूपचन्द ।	,, ।	,,	७४

जय जय जिन देवन के देवा,
सुरनर सकल करैं तुम सेवा ।

२८.	पद	— रूपचन्द ।	हिन्दी ।	,,	७५

भव मैं जिनवर दरसण पायो ।

२९.	विनती	— कनककीर्ति	,, ।	,,	७५

वंदौ श्री जिनराय मन वच काय करेजी ।

३०.	विनती	— रायचन्द ।	हिन्दी ।	,,	

आज दिवस धनि लेखैं लेख्या,
श्री जिनराज भला मुख पेख्या ।

३१.	विनती	— ब्र० जिनदास ।	हिन्दी ।	,,	७६

प्रारम्भ—स्वामी तू आदि जिणंद करौं विनती आप तणी ।
अन्त - श्री सकलकीरति गुरु वंदि जिनवर वीनती ।
ते भणौ ए ब्रह्म भणौ जिनदास मुक्ति वहांगण ते वरै ।।

३२.	निर्वाण काण्डभाषा	- - भैया भगवतीदास ।	हिन्दी ।	पत्र सं०	७९

विशेष- पं० शिवलाल जती वाकलीवाल शिष्य आचार्य माणिकचन्द ने मालपुरा में भौंसे के वास के मन्दिर में सवाई जयसिंह के राज्य में प्रतिलिपि की थी ।

३३.	आरती	— द्यानतराय ।	हिन्दी ।	पत्र सं०	७९
३४.	पंचमवधावा	— × ।	,, ।	,,	८०

पञ्च बधावा म्हां के जीव अति भावा लो ।
भवै हो अरिहंत सिद्ध जी की भावना जी ।।

३५.	विनती	— कुमुदचन्द्र ।	हिन्दी ।	पत्र सं०	८१

प्रारम्भ—दुनियां झूमर झोल बिलूधी ।
भगवंत भगति नहीं सूधी ।।

अन्तिम—नहीं एक की हुई घणा की भरतारी,
नारी कहत कुमदचन्द कौण संगि जलसी धण पुरिषा नारी ।।

३६. पंचमगति वेलि — हर्षकीर्ति । हिन्दी । पत्र सं० ८३
र० काल सं० १६६३

३७. नींदडली — किशोर । हिन्दी । पत्र सं० ८६

३८. विनती — भूधरदास । ,, ,, ८७
हमारी करुणा लै जिनराज हमारी ।

३९. भक्तामर भाषा — हेमराज हिन्दी । पत्र सं० ८८

४०. बीनती — रामदास ,, ,, ९१

४१. बालती — अजैराज ,, ,, ९५

४२. जोगीरासा — जिनदास ,, ,, ९६

४३. पद — अजैराज, बनारसीदास, एवं मनरथ ,, ,,

४४. लूहरी — सुन्दर । ,, ,, ९९
रहैल्यो हे यो संसार असार ।

४५. रविवार कथा — भाऊ । ,, ,, १०९

४६. शनिश्चरदेव की कथा — × । हिन्दी गद्य । पत्र सं० ११२

४७. पार्श्वनाथाष्टक — विश्वभूषण । संस्कृत । ,, ११३

४८. खण्डेलवालों के गोत्र । ८४ ।

४९. अघेर वालों के गोत्र—५२

५०. अग्रवालों के गोत्र—१८

८५२६. पूजापाठ संग्रह—× । पत्र सं० ९० । आ० १२× ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—पूजा । ले० काल १९४३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बघेरवालों का आवां (उणियारा)

विशेष– नित्य नैमित्तिक पूजा पाठों का संग्रह है । लोचनपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

८५२७. पूजापाठ संग्रह—× । पत्रसं० ६३ । आ० ९×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय–पूजा पाठ । र० काल × । ले० काल । पूर्ण । वेष्टनसं० ८६/९२ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेष—पंच मंगल, देवपूजा वृहद् एवं सिद्ध पूजा आदि का संग्रह है ।

८५२८. पूजापाठ संग्रह—× । पत्र सं० ५१ । आ० १२×८ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

८५२९. पूजा पाठ संग्रह—× । पत्रसं० ३–४१ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

८५३०. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्र सं० ८८ । आ० १०$\frac{१}{२}$ × ६$\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत, हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मंदिर उदयपुर ।

८५३१. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्रसं० ७६ । आ० १२ × ८ इञ्च । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर जयपुर ।

८५३२. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्रसं० १०५ । आ० ११$\frac{१}{२}$ × ५$\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २७० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८५३३. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्रसं० ४३ । आ० ११$\frac{१}{२}$ × ५$\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—नित्य उपयोग में आने वाले पूजा पाठों संग्रह है ।

८५३४. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्र सं० १३३४ । आ० १२ × ५$\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६६ । **प्राप्ति स्थान** · दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—इसमें कुल १५२ पूजा एवं पाठों संग्रह है । प्रारम्भ में सूची दी हुई है । कहीं २ बीच में से कुछ पाठ बाहर निकले हुए है । नित्य नैमित्तिक पूजाओं के अतिरिक्त व्रत पूजा, व्रतोद्यापन, पंच स्तोत्र, व्रत कथा आदि का संग्रह है । काष्ठासंघ के भी निम्न पाठ है:—

अनन्त पूजा : श्री भूषण काष्ठा संघीकृत, प्रतिष्ठाकल्प काष्ठा संघ का, प्रतिष्ठा तिलक काष्ठा संघका, सकलीकरण विधि काष्ठा संघ की, ध्वजा रोपण काष्ठा संघ, होम विधान काष्ठा संघ का, वृहद् ध्वजा रोपण काष्ठा संघ का ।

उमा स्वामी कृत पूजा प्रकरण भी दिया है । पत्रसं० २१२ पर १ पत्र है जिसमें पूजा किस ओर मुंह करके और कैसे करना चाहिए इस पर प्रकाश डाला गया है । यह ग्रंथ लकड़ी की रंगीन पेटी में विराजमान है ।

लकड़ी के सुन्दर दर्शनीय पुट्ठे, जिनमें सुन्दर वेल बूंटे तथा पार्श्वनाथ व सरस्वती चित्र है इसी संदूक में है । ग्रंथ के लगे हुए सहित ५ पुट्ठे हैं । २ कागज के सचित्र पुट्ठे भी दर्शनीय है ।

८५३५. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्रसं० २७ । आ० ९ × ६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाओं का संग्रह है ।

८५३६. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्र सं० ४४ । आ० ११$\frac{१}{२}$ × ५$\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा पाठ । र० काल × । ले० काल सं० १९११ । वेष्टन सं० ६०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८५३७. **पूजा पाठ संग्रह**— × । पत्रसं० २-४९ । आ० ५½ × ४½ इञ्च । **भाषा**-संस्कृत-हिन्दी । विषय—पूजा पाठ । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

८५३८. **पूजा पाठ तथा कथा संग्रह**—× । पत्र सं० २९६ । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय पूजा पाठ । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

विशेष – विविध कथायें पूजा एवं स्तोत्र आदि है ।

८५३९. **पूजा पाठ विधान**— × । पत्रसं० १६ । **भाषा**-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८३/३७५ । **प्राप्ति स्थान**— दि०जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

८५४०. **पूजा प्रकरण** -- × । पत्रसं० १३ । आ० ९ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८८६ चैत सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर टूनी (टोंक)

विशेष—गुरुजी गुमानीराम ने प्रतिलिपि की थी ।

८५४१. **पूज्य पूजक वर्णन**— × । पत्रसं० ९ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८५४२. **पूजा विधान**—**पं० आशाधर** । पत्रसं० २५ । भाषा-संस्कृत । विषय-- पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९/३१४ । **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

८५४३. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ४५ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टन सं०** ७९ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८५४४. **पूजा विधान**— × । पत्रसं० ६ । आ० ९½ × ६ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—विधान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टन सं० १९** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—षट् कर्मोपदेश रत्नमाला में से है ।

८५४५. **पूजाविधान**—× । पत्रसं० ५६ । आ. ८½ × ६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले.काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

८५४६. **पूजासार**—× । **पत्रसं०** ८१ । आ० १२½ × ६ इञ्च । **भाषा**-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १९६३ वैशाख बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०२५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

८५४७. **पूजासार**-- × । पत्र सं० ९० । आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । । विषय-पूजा । र०काल । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर चौगान बूंदी ।

८५४८. **पूजासार समुच्चय**—× । पत्र सं० ९३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १९०७ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११७६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

८५४९. **पूजासारसमुच्चय**—× । पत्र सं० १०१ । आ० १२½×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १८९१ ज्येष्ठ बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—मथुरा में प्रतिलिपि हुई थी । संग्रह ग्रंथ हैं ।

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री विद्याविद्यानुवादोपासकाध्ययन जिनसंहिता चरणानुयोगाकाय पूजासार समुच्चय समाप्तम् ।

८५५०. **पूजा संग्रह—ज्ञानतराय** । पत्र सं० १४ । आ० १२½×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९१९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है—
दशलक्षण व्रत पूजा, अनन्त व्रत पूजा, रत्नत्रय व्रत पूजा, सोलहकारण पूजा ।

८५५१. **पूजा संग्रह—ज्ञानतराय** । पत्र सं० ११ । आ० ८½×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९५४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८५५२. **पूजा संग्रह**—× । पत्र सं० १८ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८८० सावण बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८५५३. **पूजा संग्रह**—× । पत्र सं० ३९ । आ० ६½×८½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९४७ फागुण सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ६९४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—पंडित महीपाल ने प्रतिलिपि की थी ।

८५५४. **पूजा संग्रह**— × । पत्र सं० १० । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—सोलह कारण, पंच मेरु, अष्टाह्निका आदि पूजाओं का संग्रह है ।

८५८५. **पूजा संग्रह**— × । पत्र सं० १५ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १९६१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है—

अनन्त व्रत पूजा	सेवाराम	हिन्दी

दशलक्षण पूजा	द्यानतराय	,,
पंचमेरु पूजा	भूधरदास	,,
रत्नत्रय पूजा	द्यानतराय	,,
अष्टाह्निका पूजा	द्यानतराय	,,
शांतिपाठ	—	,,

८५५६. **पूजा संग्रह**—× । पत्रसं० १० । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १९५३ । पूर्ण । वे० सं० ६५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८५५७. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ६ । आ० ४½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

८५५८. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ६ । आ० १०½×७ इञ्च । ले० काल सं० १९६३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—द्यानतराय कृत दशलक्षण पूजा तथा भूधरदास कृत पंच मेरु पूजा है ।

८५५९. **पूजा संग्रह**—× । पत्र सं० ३६–६३ । आ० १२½×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाओं का संग्रह है ।

८५६०. **पूजा संग्रह—शांतिदास** । पत्रसं० २–७ । आ० ९×४½ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–पूजा । र०काल × । ले० काल ।अपूर्ण । वेष्टन सं० २६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—अजितनाथ, संभवनाथ की पूजाएं पूर्ण एवं वृषभनाथ एवं अभिनन्दननाथ की पूजायें अपूर्ण हैं ।

८५६१. **पूजा संग्रह**—× । पत्र सं० ३४–१४६ । आ० १२×५½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर ।

८५६२. **पूजा संग्रह**—× । पत्र सं० १४३ । आ० ७½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत–हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १९२० । पूर्ण । वेष्टन सं० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

विशेष—चौबीस तीर्थंकर पूजाओं का संग्रह है ।

८५६३. **पूजा संग्रह**—× । पत्रसं० ५९ । आ० ११½×६½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

८५६४. **पूजा संग्रह**—× । पत्र सं० ५५ । आ० १२×६ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—वृन्दावन कृत चौबीसी तीर्थंकर पूजा एवं सम्मेद शिखर पूजा का संग्रह है ।

८५६५. **पूजा संग्रह**—× । पत्र सं० २७ । आ० ११×४½ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानाजी कामा ।

८५६६. **पूजा संग्रह**—× । पत्र सं २७६ । आ० १२×७ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—नैमित्तिक पूजाओं का संग्रह है ।

८५६७. **पूजा संग्रह**—× । पत्र सं० १२६ । आ० १३×५ इन्च । भाषा—हिन्दी-पद्य । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १९६७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पूजाओं का संग्रह है । जो विभिन्न वेष्टनों में बंधे हैं ।

सुगन्ध दशमी पूजा, रत्नत्रयव्रत पूजा, सम्मेदशिखर पूजा, (२ प्रति) चौसठ ऋद्धि पूजा (२ प्रति) चौबीसतीर्थंकर पूजा-रामचन्द्र पत्र सं० १४४ । निर्वाण क्षेत्र पूजा (३ प्रति) अनन्तव्रत पूजा (४ प्रति) सिद्धचक्र पूजा ।

८५६८. **पूजा संग्रह**—× । पत्रसं० × । आ० ११½×५½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १९७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खं० पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पूजाओं का संग्रह है ।

श्रुतस्कंध पूजा	संस्कृत	पत्र १३
पंचकल्याणक पूजा	,,	२२
,,	,,	२२
ऋषि मंडल पूजा	,,	२५
रत्नत्रय उद्यापन	,,	१४
पूजा सार	,,	८३
कर्मध्वज पूजा	,,	१६-१७

८५६९. **पूजा संग्रह**—× । पत्रसं० ७१ । आ० ७½×५½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है ।

पंच कल्याणक पूजा	संस्कृत	पत्र १३
रोहिणी व्रतोद्यापन पूजा	,,	१३

सार्द्धद्वय द्वीप पूजा	,,	१५
सुगंध दशमी	,,	१५
रत्नत्रय व्रत पूजा	,,	१५

८५७०. पूजा संग्रह—× । पत्र सं० १४० । आ० ८½×६½ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । **विषय**—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १९६७ । पूर्ण । **वेष्टन सं० १८०** । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन ख० पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—अलवर में प्रतिलिपि हुई थी ।

८५७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८० । ले०काल सं० १९५३ भाद्रव सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

८५७२. पूजा संग्रह—× । पत्र सं० ४२ । आ० ९½×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८९५ अगहन सुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन सं० १९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर टोडारायसिंह (टोंक)

८५७३. पूजा संग्रह—× । पत्र सं० १७ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १९३६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी ।

८५७४. पूजा संग्रह—× । पत्र सं० ४० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । **विषय**—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदा (बूंदी) ।

विशेष—शांतिपाठ, पार्श्वजिन पूजा, अनंतव्रत पूजा, शांतिनाथ पूजा, पञ्चमेरु पूजा, क्षेत्रपाल पूजा एवं चमत्कार की पूजा है ।

८५७५. पूजा संग्रह—× । पत्र सं० ४१ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा- संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । **अपूर्ण** । वेष्टन सं० ४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

८५७६. पूजा संग्रह—× । पत्र सं० २२ । आ० ७×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्रीमहावीर बूंदी ।

८५७७. पूजा संग्रह—× । पत्र सं० ८ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १८६० पौष सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ (बूंदी) ।

विशेष—अक्षयनिधि पूजा सौख्य पूजा, रामो पैंतीसी पूजा है ।

८५७८. पूजा संग्रह—× । पत्र सं० ४७-१४८ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । **अपूर्ण** । वेष्टन सं० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ (बूंदी) ।

विशेष—तीस चौबीसी पूजा शुभचन्द एवं षोडषकारण पूजा सुमति सागर की है।

८५७९. पूजा संग्रह—× । पत्रसं० २४ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १९४४ । **पूर्ण** । वेष्टन सं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी नैणवा ।

विशेष—नैणवा में प्रतिलिपि की गयी थी । दशलक्षण पूजा, रत्नत्रय पूजा आदि का संग्रह है ।

८५८०. पूजा संग्रह—× । पत्र सं० १७९ । आ० ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । **पूर्ण** । वेष्टनसं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी नैणवा ।

८५८१. पूजा संग्रह—× । पत्रसं० ११-२२७ । आ० १३×७½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । **अपूर्ण** । वेष्टन सं० १३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

८५८२. पूजा संग्रह—× । पत्रसं० १०० । आ० ११½×८½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—विविध पूजाओं का संग्रह है ।

८५८३. पूजा संग्रह—× । पत्र सं० ५६ । आ० ५×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा । ले०काल सं० १८५४ वैसाख सुदी ९ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—उदैसागर के पठनार्थ चिम्मनलाल ने प्रतिलिपि की थी । पंचपरमेष्ठी पूजा यशोनदि कृत भी है ।

८५८४. पूजा संग्रह—× । पत्र सं० १८ । आ० १३×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी,-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १९४२ आश्विन सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १०९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—बुन्नीलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

८५८५. पूजा संग्रह—× । पत्र सं० २-५७ । आ० ९×५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । **अपूर्ण** । वेष्टन सं० ३६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाएं हैं ।

८५८५. पूजा संग्रह—× । पत्रसं० ७९ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल× । ले० काल सं० १८५६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५०(ब) । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है ।

रत्नत्रय पूजा, दशलक्षण पूजा, पंचमेरु पूजा, पंचपरमेष्ठी पूजा ।

८५८७. **पूजा संग्रह**—× । पत्रसं० ३५ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५४ । **प्राप्ति स्थान**—खंडेलवाल दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाओं का संग्रह है ।

८५८८. **पूजा संग्रह** × । पत्र सं० ६० । भाषा-हिन्दी । विषय--पूजा । र० काल × ।ले० काल सं० १९४० । पूर्ण । **वेष्टन सं० १६१** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाएं तथा भाद्रपद पूजा संग्रह है । रंगलाल जी गदिया साहपुरा वालों ने जयपुर में प्रतिलिपि करा कर उदयपुर में नाल के मंदिर चढाया था ।

८५८९. **पूजा संग्रह**—× । पत्रसं० ८२ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) ।विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा ।

८५९०. **पूजा संग्रह**—× । पत्रसं० ७० । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १९८६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा ।

८५९१. **पूजा संग्रह**--× । पत्र सं० ११ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भरतपुर ।

८५९२. **पूजा संग्रह**—× । पत्र सं० १९ । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८५९३. **पूजा संग्रह**—× । पत्र सं० ७५ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—छह पूजाओं का संग्रह है ।

८५९४. **पूजा संग्रह**—× । पत्र सं० ३४ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर ।

८५९५. **पूजा संग्रह**—× । पत्रसं० ४८ । भाषा—हिन्दी । विषय--पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८५९६. **पूजा संग्रह**—× । पत्र सं० ५३-१०३ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा ।र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८५९७. **पूजा संग्रह**—× । पत्रसं० ४० । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८६७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—नित्य नैमित्तक पूजाएं हैं ।

८५९८. **पूजा संग्रह**—× । पत्र सं० १६७ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८५९९. **पूजा संग्रह**—× । पत्रसं० ५ से ३५ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८६००. **पूजा संग्रह**—× । पत्र सं० ७० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८६०१. **पूजा संग्रह**—× । पत्रसं० १४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

८६०२. **पूजा संग्रह**—× । पत्रसं० १७८ । आ० ९×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८३३ भादवा बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली (कोटा) ।

विशेष—अन्त में नवसौकथा की चौपई संलग्न है जिसकी रचना काल सं० १७२० है। तथा कर्मबुद्धि की चौपई है ।

मालव देश के सुसनेर नगर के जिन चैत्यालय में आलमचन्द्र द्वारा लिखा गया था ।

८६०३. **पूजा संग्रह**—× । पत्रसं० ६८ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर बोरसली (कोटा) ।

विशेष—निम्नलिखित पूजाएं हैं—

अनंतव्रत पूजा, अक्षयदशमी पूजा, कलिकुण्ड पूजा, शान्ति पाठ (आशाधर), मुक्तावलि पूजा, जलयात्रा पूजा, पंचमेरु पूजा तथा कर्मदहन पूजा ।

८६०४. **पूजा संग्रह**—× । पत्रसं० १५६ । आ० ६ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल० सं १९९१ भादवा बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली (कोटा) ।

विशेष—४० पूजाओं का संग्रह है । चिंतामणि पार्श्वनाथ-शुभचन्द्र, गुरुपूजा-रतनचन्द तथा सिद्ध भक्ति विधान-आशाधर कृत विशेषत : उल्लेखनीय है ।

८६०५. **पूजा संग्रह**—× । पत्रसं० ७-७४ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर बोरसली (कोटा) ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

८६०६. **पूजासंग्रह**—× । पत्र सं० ७० । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठों का संग्रह है ।

८६०७. **पूजा संग्रह**—× । पत्रसं० ६८ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा हिन्दी-संस्कृत । विषय-संग्रह । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

विशेष—विभिन्न प्रकार की ३८ पूजाओं एवं पाठों का संग्रह है ।

८६०८. **पूजा संग्रह**—× । पत्रसं० ६३ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक)

विशेष—मुख्यतः निम्न पूजाओं का संग्रह है—

रत्नत्रय पूजा,	(प्राकृत)
कर्मदहन पूजा,	(,,) (अपूर्ण)

८६०९. **पूजा संग्रह**—× । पत्र सं० १२ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३७-६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—पंचमेरु ज्ञानत एवं नंदीश्वर जयमाल भैया भगवतीदास कृत है ।

८६१०. **प्रतिमा स्थापना**—× । पत्र सं० २१ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-विधि । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५१० । **प्राप्ति-स्थान**—दि०जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—श्री ग्राम श्री थालेदा नगरमध्ये लिखितं पन्डित सुखराम ।

८६११. **प्रतिष्ठा कल्प—अकलंक देव**—× । पत्र सं० १५२ । आ० १३½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

प्रारंभ—

वंदित्वा च गणाधीरां श्रुत स्कंध च ।
ऐदं युगि महाचार्य नधि भक्त्या नमाम्यहं ॥१॥
अथ श्री नेमिचन्द्राय प्रतिष्ठा शास्त्र मार्गतः
प्रतिष्ठायास्तदा श्रुत राजानां स्वयं भंगिना ॥२॥
इन्द्र प्रतिष्ठा ।

८६१२. **प्रतिष्ठा तिलक—आ० नरेन्द्रसेन** । पत्रसं० २७ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३१-१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—मुनि महाराज श्री १०८ भट्टारक जी श्री मुनीन्द्रकीर्त्ति जी की पुस्तक । लिखितं ज्ञानी हूबड मूलसंघी खंडेलवाल वंशु कस्तूरचंद तत् पुत्र चोकचन्द ।

८६१३. **प्रतिष्ठा पद्धति**—× । पत्रसं० २६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल सं० १८२४ कार्तिक सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अजमेर भण्डार ।

८६१४. **प्रतिष्ठा पाठ—आशाधर**। पत्रसं० १६। आ० १२½×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल सं० १८६४। पूर्ण। वेष्टन सं० ६८६। **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८६१५. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० २३। ले० काल सं० १८६५। पूर्ण। वेष्टनसं० ५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर।

विशेष—मंडल विधान दिया है।

संवत् १८६५ के वैशाख बुदी ६ दिने सोमवासरे श्री दक्षिण देशे श्री गिरनी ग्रामें चैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० यशःकीर्ति देवा त० पं० भ० सुरेन्द्रकीर्ति तत्पट्टे गुरु भ्राता पं० खुशालचन्द लिखितं।

८६१६. **प्रति सं० ३**। पत्रसं० २०। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ३४/३६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

८६१७. **प्रतिसं० ४**। पत्रसं० ६२-१६५। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० ३५/३६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

८६१८. **प्रति सं० ५**। पत्रसं० १३। आ० १२½×८½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ३०/१८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

८६१९. **प्रतिसं० ६**। पत्रसं० ७७। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० १६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बड़ा पंचायती मन्दिर डीग।

विशेष—प्रति जीर्ण है।

८६२०. **प्रतिष्ठा पाठ—प्रभाकरसेन**। पत्र सं० ४२-८५। आ० ६¼×६½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-विधान। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ७४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर।

८६२१. **प्रतिष्ठा पाठ**—×। पत्रसं० २७। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय-विधान। र०काल ×। ले०काल सं० १६१३। पूर्ण। वेष्टनसं० ८६-६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

विशेष—शांतिसागर ब्रह्मचारी की पुस्तक से विदुष नेमिचन्द्र ने स्वयं लिखा था।

८६२२. **प्रतिष्ठा पाठ**—×। पत्रसं० १३३। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-विधान। र० काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

विशेष—प्रारम्भ एवं बीच के कितने ही पत्र नहीं हैं।

८६२३. **प्रतिष्ठा पाठ टीका (जिनयज्ञ कल्प टीका)—परशुराम**। पत्रसं० १२६। आ० १२×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-विधान। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० ३५/२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर।

विशेष—१२ पंक्ति और २४ अक्षर हैं।

८६२४. **प्रतिष्ठा पाठ वचनिका**—× । पत्रसं० ११६ । आ० ११×८ इञ्च । **भाषा**–हिन्दी गद्य । विषय—विधान। र०काल × । ले०काल सं० १९६६ बैशाख बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—नटवरलाल शर्मा ने श्रीमान् माहाराजाधिराज श्री माधवसिंह के राज्य में सवाई जयपुर नगर में प्रतिलिपि की थी ।

८६२५. **प्रतिष्ठा मंत्र संग्रह**—× । पत्र सं० १० । आ० १२×७ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–विधान । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१४-११७ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—प्रतिष्ठा में काम आने वाले मंत्रों के विधान सचित्र दिये हुये हैं ।

८६२६. **प्रतिष्ठा मंत्र संग्रह**—× । पत्रसं० ८७ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत-हिन्दी । विषय–विधान । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१५–११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—पहिले विभिन्न प्रतोद्यापनों के चित्र, तीर्थंकर परिचय, गुणस्थान चर्चा एवं त्रिलोक वर्णन है इसके बाद मंत्र हैं ।

८६२७. **प्रतिष्ठा यंत्र**— × । पत्रसं० ८ । आ० १२×७½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—४५ यंत्रों का संग्रह है ।

८६२८. **प्रतिष्ठाविधि**—**आशाधर** । पत्र सं० ७ । आ० १२×४½ इंच भाषा–संस्कृत । विषय–विधिविधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौमान बूंदी ।

८६२९. **प्रतिष्ठाविधि**—× । पत्र सं० २ । भाषा–हिन्दी । विषय—प्रतिष्ठा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

८६३०. **प्रतिष्ठासार संग्रह**—**आ० वसुनंदि** । पत्र सं० २६ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–विधान । र० काल × । ले०काल सं० १६३१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

विशेष—मंडलाचार्य धर्मचन्द्र के शिष्य आचार्य श्री नेमिचन्द्र ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

८६३१. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० २९ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल सं० १६७ : । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

प्रशस्ति—निम्न प्रकार है—

संवत् १६७१ वर्षे श्री मूलसंघे भट्टारक श्री गुणसेन देवाः आर्यिका बाई गौत्तम श्री तस्य शिष्य पण्डित श्री रामाजी जसवन्त बघेरवाल ज्ञानमुखमंडण चमरीया गोत्री ।

८६३२. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० सं० १२ से २२ । आ० १०×५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७४१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८६३३. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० १८-२५ । आ० ६½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११५ (क० स०) । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रथम १७ पत्र नहीं है ।

८६३४. **प्रतिसं० ५** । पत्रसं० २७ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल सं० १८६१ ज्येष्ठ बुदी ३ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ११० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८६३५. **प्रतिसं० ६** । पत्र सं० ३० । आ० ११×६½ इञ्च । ले०काल सं० १६४८ । **पूर्ण** । वेष्टन सं० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमन्दर खोजी बूंदी ।

विशेष— पं० रतनलाल जी ने बूंदी में प्रतिलिपि की थी ।

८६३६. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० ३३ । आ० १३×७ इञ्च । ले० काल । **पूर्ण** । वेष्टन सं० १०४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

८६३७. **प्रति सं० ८** । पत्र सं० २४ । आ० १२×६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०४-११७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८६३८. **प्रतिसं० ६** । पत्रसं० ३६ । ले०काल सं० १८७७ फागुण सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनसं० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डावालों का डीग

८६३९. **प्रतिष्ठासारोद्धार (जिनयज्ञ कल्प)—आशाधर** । पत्रसं० ३-१२१ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८६४०. **प्रोषध लेने का विधान**—× । पत्र सं० २ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-विधान । र० काल × । ले० काल सं० १८४७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६५-१६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

८६४१. **अष्टपूजा**—× । पत्रसं० ७ । आ० ५½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०४६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८६४२. **बारहसौ चौतीस व्रत पूजा—शुभचन्द्र** । पत्र सं० ७१ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८६४३. **बारहसौ चौतीस व्रत पूजा—श्रीभूषण** । पत्रसं० ७६ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८५३ आषाढ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर

विशेष—सवाई जयनगर के आदिनाथ चैत्यालय में सवाई राम गोधा ने प्रतिलिपि की थी ।

८६४४. **बिम्ब प्रतिष्ठा मंडल**—× । पत्रसं० १ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०८/११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर । कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—मंडल का चित्र है ।

८६४५. **बीस तीर्थंकर जयमाले—हर्षकीर्ति**। पत्र सं० २। आ० ११×५ इञ्च। **भाषा**—हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल × । ले०काल १८५१। **पूर्ण**। वेष्टनसं० ६३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

८६४६. **बीस तीर्थंकर पूजा—जौहरीलाल**। पत्रसं० ४५। आ० १३½×८½ इञ्च। **भाषा**—हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १९४९ सावन सुदी ४। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ४८९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

८६४७. **बीस तीर्थंकर पूजा—थानजी अजमेरा**। पत्रसं० ७३। आ० १२½×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १९३४ आसोज सुदी ९। ले० काल सं० १९४४ मंगसिर बुदी १३। पूर्ण। वेष्टनसं० ४८५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर (जयपुर)।

विशेष—अन्तिम पृष्ठ पर पद भी है।

८६४८. **बीस तीर्थंकर पूजा**—× । पत्रसं० ४। आ०९×६ इञ्च। भाषा हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १३७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर (जयपुर)।

८६४९. **बीस तीर्थंकर पूजा**—×। पत्रसं० ५७। **भाषा**-हिन्दी पद्य। विषय पूजा। र० काल × । ले० काल सं० १९४२। पूर्ण। **वेष्टनसं०** ४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा।

८६५०. **बीस विदेह क्षेत्रपूजा—चुन्नीलाल**। पत्रसं० ३६। आ० १२×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र०काल × । ले० काल सं० १९३६। पूर्ण। वेष्टन सं० ११०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

८६५१. **बीस विदेह क्षेत्र पूजा**—**शिखरचंद**। पत्र सं० ४१। आ० ६½×८½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल सं १९२८ जेठ सुदी १। ले० काल सं० १९२९ वैसाख सुदी ७। पूर्ण। वेष्टनसं० ५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खोगाणी मंदिर करौली।

८६५२. **बीस विरहमान पूजा**—×। पत्रसं० ४। आ० १०×६ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल × । ले० काल सं० १९३८ फाल्गुन बुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० ५२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

विशेष—विदेहक्षेत्र बीस तीर्थंकरों की पूजा है।

८६५३. **भक्तामर स्तोत्र पूजा—नंदराम**। पत्रसं० २८। आ० १३½×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल सं० १९०४ वैसाख सुदी १०। ले०काल सं० १९०४ कार्तिक सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन सं० ११८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना।

विशेष—ध्योजीराम बयाना वाले से बक्सीराम ने प्रतिलिपि कराई थी।

८६५४. **भक्तामर स्तोत्र पूजा—सोमसेन**। पत्र सं० १३। आ० १०×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ३८२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८६५५. **प्रति सं० २**। पत्र सं० १७। आ० ९½×४½ इञ्च। ले०काल सं० १९२८ फाल्गुण सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन सं० ११४४। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८६५६. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० १४ । आ० ११×४½ इञ्च । ले०कालसं० १७५१ चैत बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—करवर नगर में पं० मायाचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

८६५७. **प्रतिसं० ४** । पत्र सं० १० । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल सं० १९०४ श्रावण सुदी ९ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८६५८. **प्रतिसं० ५** । पत्रसं० १२ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल +। पूर्ण । वेष्टन सं० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्री महावीर बूंदी ।

८६५९. **भक्तामर स्तोत्र पूजा**—× । पत्रसं०१२ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १९२० । पूर्ण । वेष्टन सं० ३९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८६६०. **भक्तामर स्तोत्र पूजा**—× । पत्र सं० १६ । आ० ९½×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८१४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौभाणी मंदिर करौली ।

८६६१. **भक्तामर स्तोत्र पूजा**—× । पत्रसं० १० । आ० ९×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८२७ ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

८६६२. **भक्तामर स्तोत्र पूजा**—× । पत्र सं० ८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८८० पौष बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर । भण्डार ।

विशेष—अजमेर में प्रतिलिपि हुई थी ।

८६६३. **भक्तामर स्तोत्र उद्यापन पूजा—केशवसेन** । पत्रसं० १७ । आ० ९½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८८७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३-२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती टूनी (टोंक)

विशेष—मथुरा निवासी चंपालाल जी टोंग्या की धर्म पत्नी सेराकवरी ने भक्तामर व्रतोद्यापन में चढाया था ।

८६६४. **भक्तामर स्तोत्र पूजा**—× । पत्रसं० ११ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८४० । पूर्ण । वेष्टन सं० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

८६६५. **भुवनकीर्ति पूजा**—× । पत्रसं० २ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८९० । पूर्ण । वेष्टन सं० १६११ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष - भट्टारक भुवनकीर्ति की पूजा है ।

८६६६. **महाभिषेक विधि**— × । पत्रसं० ३३ । आ० ११×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय – पूजा विधान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

८६६७. **महाभिषेक विधि**—× । पत्रसं० २-२३ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय–विधि विधान । र०काल × । ले०काल सं० १९३५ पौष बुदी १४ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३१५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी (कामा)

विशेष—सारमंगपुर में प्रतिलिपि हुई थी । सं० १९४५ में मंडलाचार्य गुणचन्द्र तत् शिष्य ब्र० जेसा ब्र० स्याणा ने कर्मक्षयार्थ पं० माणक के लिये की थी ।

८६६८. **महावीर पूजा—वृन्दावन** । पत्र सं० ५ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल × । । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बड़ा बीसपंथी मंदिर दौसा ।

८६६९. **महाशांतिक विधि**—× । पत्रसं० ६५ । आ० १०$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८६७०. **मासान्त चतुर्दशी व्रतोद्यापन**— × । पत्र सं० २६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र०काल× । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

८६७१. **मासांत चतुर्दशी व्रतोद्यापन**—× । पत्रसं० १६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल× । ले०काल सं० १८७२ बैशाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० २०/३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

८६७२. **मासांत चतुर्दशी व्रतोद्यापन**—× । पत्रसं० ११ । आ० १०×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल× । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८६७३. **मांगीतुंगी पूजा—विश्वभूषण** । पत्र सं० ११ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र०काल स० १९०४ । ले० काल×। पूर्ण । वेष्टनसं० २७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८६७४. **मुक्तावली व्रत पूजा**— × । पत्रसं० २ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र०काल× । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८४-६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—भट्टारक सकलकीर्ति कृत मुक्तावली गीत हिन्दी में और है ।

८६७५. **मुक्तावली व्रत पूजा**—× । पत्रसं० १९ । भाषा–संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १९२५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

८६७६. **मुक्तावलि व्रतोद्यापन**—× । पत्र सं० १२ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८६७७. **मुक्तावलि व्रतोद्यापन**—× । पत्रसं० १४ । आ × । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८८६ ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०-३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—गुमानीराम ने देवगोंद वास्तव्य में प्रतिलिपि की थी ।

८६७८. **मुक्तावलि व्रतोद्यापन** · × । पत्रसं० १४ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८०-१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—पं० शिवजीराम के शिष्य सदासुख के पठनार्थ लिखी गई थी ।

८६७९. **मेघमाला व्रतोद्यापन पूजा**—× । पत्रसं० ४ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टनसं० ३५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

८६८०. **मेघमालिका व्रतोद्यापन**—× । पत्र सं० ६ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ५३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८६८१. **मेघमाला व्रत पूजा**—× । पत्रसं० ३१ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

८६८२. **मेघमाला व्रत पूजा** × । पत्रसं० ४ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३०-१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

८६८३. **याग मंडल पूजा**— × । पत्रसं० ४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ लोहागान बूंदी ।

८६८४. **याग मंडल विधान**—**पं० धर्मदेव** । पत्र सं० ४० । आ० ६½×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले० काल सं० १९३६ । **पूर्ण** । वेष्टन सं० ३२०-१२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८६८५. **याग मण्डल विधान**—× । पत्र सं० २५-५३ । आ० १०×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

८६८६. **योगेन्द्र पूजा** · ×। पत्रस० ४ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४१२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८६८७. **रत्नत्रय उद्यापन—केशवसेन** । पत्र सं० १२ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १८१७ जेष्ठ बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—पं० आलमचन्द के शिष्य जिनदास ने लिखा था ।

८६८८. **रत्नत्रय उद्यापन पूजा**—× । पत्रसं० ६ । आ० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १८८० सावण बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८६८९. **रत्नत्रय उद्यापन पूजा**—× । पत्र सं० ३६ । आ० १०×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९४९ आसाढ बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा ।

विशेष—नैणवा में बन्नालाल जी छोगालालजी धानोत्या आवां वालों ने प्रतिलिपि कराई थी ।

८६९०. **रत्नत्रय उद्यापन विधान**—× । पत्रसं० ३२ । आ० ११×७ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

८६९१. **रत्नत्रय जयमाल**—× । पत्र सं० १४ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल १८८५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मंदिर उदयपुर ।

८६९२. **रत्नत्रय जयमाल**—× । पत्रसं० १८ । आ० ९$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा र०काल × । ले०काल सं० १८७२ वैशाख सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—खुशालचन्द ने बयाना में प्रतिलिपि की थी । श्लोकों के ऊपर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

८६९३. **रत्नत्रय जयमाल**—× । पत्रसं० ४ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८०५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२६ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष प्रति टब्बा टीका सहित है ।

८६९४. **रत्नत्रय जयमाल**—× । पत्र सं० ८ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९७७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

८६९५. **रत्नत्रय जयमाल**—× । पत्रसं० ४ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८६९६. **रत्नत्रय जयमाल**—× । पत्रसं० ६ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८०५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

८६९७. **रत्नत्रय जयमाल**—× । पत्रसं० ५ । भाषा प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर उदयपुर ।

८६९८. **रत्नत्रय जयमाल** × । पत्रसं० ११ । आ० ८$\frac{3}{4}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १९६३ आषाढ़ बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६९३ । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—मांगीलाल बडजात्या कुचामण वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

८६९९. **रत्नत्रय जयमाल भाषा**—**नयमल** । पत्र सं० १० । आ० १२×७ इञ्च। भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १९२५ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८७००. **रत्नत्रय पूजा—म० पद्मनन्दि** । पत्रसं० १६ । आ० ११×४ इञ्च ।भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

८७०१. **रत्नत्रय पूजा**— × । पत्रसं० १४ । आ० ११×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४७८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८७०२. **रत्नत्रय पूजा**—× । पत्र सं० १२ । आ० १२$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८७०३. **रत्नत्रय पूजा**—× । पत्र सं० १५ । आ० ८×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा ।

८७०४. **रत्नत्रय पूजा** - × । पत्रसं० ५ । आ० १२×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल - । पूर्ण । वेष्टन सं० १६८-११० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

८७०५. **रत्नत्रय पूजा** × । पत्रसं० २२ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८२३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—सवाई जयपुर में लिखा गया था ।

८७०६. **रत्नत्रयपूजा**—×। पत्रस० १६ । आ० ८×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

८७०७. **रत्नत्रय पूजा** -×। पत्रसं० १६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८७६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

८७०८. **रत्नत्रय पूजा**—× । पत्रसं० ६ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६/३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सोगाणी मंदिर करौली ।

८७०९. **रत्नत्रय पूजा**—× । पत्रसं० २६ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टनसं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर डीग ।

विशेष—दोहा शतक-रूपचन्द कृत तथा विवेक जखड़ी-जिनदास कृत हिन्दी में और है ।

८७१०. **रत्नत्रय पूजा**—× । पत्र सं० ४-२५ । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ६०/३१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

८७११. **रत्नत्रय पूजा**—× । पत्र सं० २३ । आ० [illegible]½×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

८७१२. **रत्नत्रय पूजा**—× । पत्रसं० १६ । आ० १२×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

८७१३. **रत्नत्रय पूजा जयमाल**—× । पत्रसं० १७ । भाषा-अपभ्रंश विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल १७९६ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

८७१४. **रत्नत्रय पूजा—टेकचन्द** । पत्र सं० २६ । आ० १४×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १६२६ फागुण सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन तेरह पंथी मन्दिर नैणवा ।

८७१५. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ३५ । आ० १३½×५½ इञ्च । ले० काल सं० १६७२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मंदिर उदयपुर ।

८७१६. **रत्नत्रय पूजा—ज्ञानतराय** । पत्र सं० ८ । आ० ११×५ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी भालपुरा (टोंक) ।

८७१७. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ६ । आ० १०×४½ इंच । ले० काल सं० १६६१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८७१८. **रत्नत्रय पूजा भाषा**—× । पत्रसं० १२ । आ० ११½×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६४६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११५६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

८७१९. **रत्नत्रय पूजा**—× । पत्रसं० ४६ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १६४० । पूर्ण । वेष्टनसं० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

८७२०. **रत्नत्रय पूजा**—× । पत्र सं० २० । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १९०७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक) ।

८७२१. **रत्नत्रय पूजा**—× । पत्रसं० ३० । आ० ११×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६३/६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राजस्थान) ।

८७२२. **रत्नत्रय पूजा**—× । पत्र सं० ३६ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । **ले०काल** सं० १६३२ मांग सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—दौसा में प्रतिलिपि हुई थी ।

८७२३. **रत्नत्रय पूजा**—× । पत्रसं० १६ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६३४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

८७२४. **रत्नत्रय पूजा**—× । पत्र सं० २३ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

८७२५. **रत्नत्रय पूजा विधान**—× । पत्र सं० १६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल—× । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८७२६. **रत्नत्रय पूजा विधान**—पत्र सं० १६ । आ० ८½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक) ।

८७२७. **रत्नत्रय मंडल विधान**—× । पत्र सं० ३६ । आ० १५×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १६५० चैत्र सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक) ।

विशेष—फूलचन्द सोगाणी ने प्रतिलिपि की थी ।

८७२८. **रत्नत्रय मंडल विधान**—× । पत्रसं० १० । आ०८½×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

८७२९. **रत्नत्रय विधान (वृहद)**—× । पत्र सं० ६ । आ० १०½×७½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८७३०. **रत्नत्रय विधान**—× । पत्र सं० २४ । आ० १२×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १६३० पौष बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष - सोमचन्द श्रावक ने फतेहपुर में लिपि कराई थी।

८७३१. **रत्नत्रय विधान**—× । पत्रसं० ११ । आ० १०½×५ इञ्च । **भाषा**–संस्कृत । **विषय**–पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८६३ आसोज बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८८ । **प्राप्ति-स्थान**–दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

८७३२. **रत्नत्रय विधान**—× । पत्र० सं० ४५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८३/६४ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राजस्थान) ।

८७३३. **रत्नत्रय विधान**—× । पत्रसं० १ । आ० १३×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३६/३८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

८७३४. **रत्नत्रय विधान**—× । पत्रसं० ३६ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल ×। ले०काल सं० १६४३ । पूर्ण । वेष्टनसं० २१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८७३५. **रत्नत्रय विधान**—× । पत्रसं० ४७ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय–पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नागदी बूंदी ।

८७३६. **रत्नत्रय विधान**—× । पत्रसं० ३ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६६/१८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह ।

८७३७. **रत्नत्रय व्रतोद्यापन**—× । पत्रसं० १२ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय–पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

८७३८. **रत्नत्रय व्रतोद्यापन**—× । पत्रसं० १५ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८५६ भादों सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६/१५ । **प्राप्ति-स्थान**–दि० जैन मन्दिर पंचायती टूसी (टोंक) ।

८७३९. **रविव्रत पूजा**—भ० **देवेन्द्रकीर्ति** । पत्र सं० ६ । आ० ११½×५ इञ्च । **भाषा**-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८५० । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

८७४०. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ६ । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८७४१. **रविव्रत पूजा**—× । पत्रसं० १० । आ० १०×४ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय–पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२१ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

८७४२. **रविव्रत पूजा एवं कथा—मनोहरदास** । पत्रसं० २० । आ० ५½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय पूजा एवं कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८७ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

८७४३. **रविव्रतोद्यापन पूजा—रत्नभूषण** । पत्रसं० ८ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८७४४. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १३ । आ० १०½×६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५४/६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८७४५. **रविव्रतोद्यापन पूजा—केशवसेन** । पत्र सं० ६ । आ० १२×५½ इञ्च । **भाषा**-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती करौली ।

८७४६. **रेवा नदी पूजा—विश्वभूषण** । पत्रसं० ६ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७८ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—रेवा नदी के तट पर स्थित सिद्धवरकूट तीर्थ की पूजा है—

८७४७. **रोहिणी व्रत पूजा—×** । पत्र सं० ६ । आ० ११½×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३४५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

८७४८. **रोहिणी व्रत पूजा—×** । पत्र सं० ४ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८७४९. **रोहिणी व्रत पूजा** । पत्र सं० २१ । आ० ९×५½ इंच । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

विशेष—मूल पूजा सकलकीर्ति कृत है ।

८७५०. **रोहिणी व्रत मंडन विधान—×** । पत्रसं० ३० । आ० ८½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत हिन्दी । —विषय पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८७५१. **रोहिणी व्रतोद्यापन—वादिचन्द्र** । पत्रसं० २१ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १७१३ मंगसिर सुदी ५ । । पूर्ण । वेष्टनसं० १०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८७५२. **रोहिणी व्रतोद्यापन**—× । पत्रसं० १६ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८६८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ११ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८७५३. **रोहिणी व्रतोद्यापन**—× । पत्रसं० १५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल ×। ले०काल सं० १८६५ । पूर्ण । वेष्टनसं० २५० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

८७५४. **रोहिणी व्रतोद्यापन पूजा**—× । पत्रसं० २० । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टन सं० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक)

८७५५. **रोहिणी व्रतोद्यापन—केशवसेन**—× । पत्रसं० १७ । आ० १४×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल ×। पूर्ण । वेष्टन सं० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

८७५६. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० १३ । आ० १२×५½ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

८७५७. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० १० । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

८७५८. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० १६ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

८७५९. **प्रतिसं० ५** । पत्रसं० ४ । आ० ११×७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** २५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८७६०. **लघु पंच कल्याणक पूजा—हरिभान** । पत्रसं० १७ । आ० १३×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल सं० १६२६ । ले०काल सं० १६२८ मार्गशीर्ष बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—भीकालाल छाबड़ा की बहिन मूलोबाई ने पंचायती मन्दिर करौली में सं० १६८१ में चढाई थी ।

८७६१. **लघुशांति पाठ—सूरि मानदेव** । पत्रसं० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रारम्भ में पार्श्वनाथ स्तवन दिया हुआ है, जिसे घण्टाकर्ण भी कहते हैं ।

८७६२. **लघुशान्ति पाठ**—× । पत्र सं० ३ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६८/४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्द्रगढ़ (कोटा)

८७६३. **लघुशान्तिक पूजा—पद्मनन्दि** । पत्रसं० ३८ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोट्यों का नेणवा ।

८७६४. **लघुशान्तिक विधि—×** । पत्र सं० १७ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल सं० १५४८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति—

सवत् १५४८ वर्षे चैत्र बुदी १० गुरु दिने श्री मूलसंघे नद्याम्नाये स० गच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्द-कुन्दाचार्यान्वये भ० पद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्रदेवा तत् शिष्य भ० रत्नकीर्तिदेवास्तत् शिष्य ब्रह्म गोड्डराज ज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थं लिखापितं ।

ज्ञानवान ज्ञानदानेन निर्भयो ऽभयदानतः ।
अभयदानात् सुखी नित्यंनिर्व्याधी भैषजं भवेत्

८७६५. **लघु सिद्धचक्र पूजा—भ० शुभचन्द्र** । पत्रसं० ४६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८७६६. **लघुस्नपन विधि**—× । पत्रसं० ५ । आ० ८½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

८७६७. **लब्धिविधनोद्यापन पूजा**—× । पत्रसं० ११ । आ०११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १९१० । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४/२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर दूनी (टोंक)

८७६८. **लब्धिविधान—भ० सुरेन्द्रकीर्ति** । पत्रसं० १० । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८९८ फागुण बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५-१०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

८७६९. **लब्धिविधान**—× । पत्र सं० ४-११ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ९५९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८७७०. **लब्धिविधान उद्यापन**— × । पत्र सं० । आ० ९½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

८७७१. **लब्धिविधान उदयापन पाठ** । पत्रसं० १२ । आ० ९½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा एवं विधान । र०काल × । ले० काल सं० १९०५ भादवा सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

८७७२. **लब्धि विधान पूजा—हर्षकीर्ति** । पत्रसं० २ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय–पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

८७७३. **लब्धिविधान पूजा**— × । । पत्रसं० १३ । आ० ६½×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १८८६ भादवा बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर बयाना ।

८७७४. **लब्धि विधानोद्यापन पाठ— ×** । पत्रसं० ७ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६/३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगानी मंदिर करौली ।

८७७५. **वर्तमान चौबीसी पूजा—चुन्नीलाल** । पत्रसं० ७१ । आ० १२½×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

८७७६. **वर्तमान चौबीसी पूजा**— × । पत्र सं० १११ । आ० १०½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९१७ पौष बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

८७७७. **वर्धमान पूजा—सेवकराम** । पत्र सं० २ । आ० ११×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र०काल × । ले० काल १९४६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

८७७८. **वसुधारा**— × पत्रसं० ३ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत विषय-विधि विधान । र०काल × । ले०काल सं० १७५३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८९–१२९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

८७७९. **वास्तुपूजा विधान**— × । पत्र सं० ८/११ । आ० १३×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय–विधान । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४३७/३८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर ।

८७८०. **वास्तुपूजा विधि**— × । पत्रसं० ६ । आ० ६½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १९४४ भादवा सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२१३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८७८१. **वास्तु पूजा विधि**— × । पत्र सं० ७ । आ० ८×६½ इञ्च । भाषा–विधान । विषय–विधान । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २९९/११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८७८२. **वास्तु विधान**— × । पत्रसं० ६ । आ० ९×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–विधान । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २२७/३९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर ।

८७८३. **विदेहक्षेत्र पूजा**—× । पत्रसं० ३८ । आ० ११½ × ८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर खंडेलवाल उदयपुर ।

८७८४. **विद्यमान बीस विरहमान पूजा**—**जौहरीलाल** । पत्रसं० ८ । आ० ७½ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८७८५. **विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजा**—**अमरचन्द** । पत्रसं० २८ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं० १९२५ फाल्गुण सुदी ६ । ले० काल सं० १९२५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

८७८६. **प्रतिसं० २** । । पत्रसं० २९ । ले०काल सं० १९२६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८७८७. **विमानपंक्ति पूजा**—× । पत्रसं० ४ । आ० ११×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३८/३३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

८७८८. **विमानपंक्ति पूजा**—× । पत्रसं० ६ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १९३८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३०६/११७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८७८९. **विमानपंक्ति पूजा**—× । पत्रसं० ७ । आ० १०¾ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५० (अ) । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८७९०. **विमान पंक्ति व्रतोद्यापन**—**आचार्य सकलभूषण** । पत्रसं० ६ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८७९१. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इञ्च । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—आचार्य नरेन्द्र कीर्ति के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

८७९२. **विमान शुद्धि पूजा**—× । पत्रसं० ५१ । आ० १०½ × ६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८२७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान (बूंदी) ।

विशेष - सलेले ग्राम में लिखा गया था ।

८७९३. **विमान शुद्धि शांतिक विधान**—**चन्द्रकीर्ति** । पत्रसं० १४ । आ० ८×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०३/११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८७६४. **विवाह पटल**—× । पत्र सं० ११ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

८७६५. **विवाह पटल**—× । पत्र सं० २७ । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल सं० १७८७ द्वि० भादवा बुदी ६ । **पूर्ण** । वेष्टन सं० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है

८७६६. **विवाह पटल**—× । पत्र सं० ७ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय विधान । र०काल × । ले० काल सं० १६६६ । **अपूर्ण** । वेष्टन सं० १७३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

८७६७. **विवाह पटल**—× । पत्रसं० ६ । आ० १०×४½इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । **पूर्ण** । वेष्टन सं० १०६८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—श्री हरिदुर्ग मध्ये लिपिकृतं ।

८७६८. **विवाह पद्धति**—× । पत्र सं० १६ । आ० ६½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले० काल सं० १८५७ श्रावण बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

८७६९. **विवाह विधि**—× । पत्रसं० २७ । आ० ६×३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले० काल × । **अपूर्ण** । वेष्टनसं० २२१/६६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

८८००. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० १-११ । **ले०काल** × । **अपूर्ण** । वेष्टन सं० २२२/६६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

८८०१. **वेदी एवं अष्टपताका स्थापन नवग्रह पूजा**—× । पत्र सं० ६ । आ० ११×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०२-११७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८८०२. **व्रत निर्णय**—× । पत्रसं० ४० । आ० १३×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र०काल × । **ले०काल** सं० १६५२। पूर्ण । वेष्टनसं० ३२२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८८०३. **व्रत पूजा संग्रह**— × । पत्र सं० २०६ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८०६ श्रावण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८८०४. **व्रत विधान**—× । पत्र सं० १६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०४६ । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—व्रतों का ब्योरा है।

८८०५. व्रत विधान—× । पत्रसं० ४-१५ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल सं० १८६२ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—पं० केसरीसिंह ने जयपुर में प्रतिलिपि कराई थी।

८८०६. व्रत विधान—× । पत्र सं० १८ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

८८०७. व्रत विधान—× । पत्र सं० ४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । र० काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर।

८८०८. व्रत विधान पूजा—**अमरचन्द** । पत्रसं० ४२ । आ० ६½×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना।

विशेष—प्रारम्भ का पाठ—

बन्दौ श्री जिनराय पद, ग्यान बुद्धि दातार ।
व्रत पूजा भाषा कहों, यथा सुश्रुत अनुसार ।

× × ×

अन्तिम पाठ—

तीन लोक मांहि सार मध्य लोक को विचार ।
ताके मध्य दीपोदधि असंख प्रमानजी ।
सब द्वीप मध्य लसै जंबू नामा दीप यह
ताकी दिशा दस तामैं भरत परवान जी ।
तामैं देस मेवात है बसत सुबुद्धी लोग
नगर फिरोजपुर झिरकी महान जी ।
जामे चैत्य तीन बने पूजत है लोग घने
बसत श्रावग वहां बड़े पुन्यवान जी ॥१॥
मूलसंघी संघलसी सरस्वतीगच्छ जिसे
गणसी बलात्कार कुन्दकुन्द आनजी ।
ऐसो कुलमाना है वंश में खंडेलवाल
गोत की लुहाड्या रत्न करौ जिनबानी जी ।
किसन हीरालाल सुत अमरचन्द नित
बाल बो ख्याल व्रत छंद यो बखान जी ।
यामें भूल-चूक होय साध लीज्यो आप्य लोग
मेरो दोष खिमा करो खिमा बड़ो गुण या उर आनो जी ॥२॥

८८०९. **व्रतसार**—× । पत्रसं० ६ । आ० १०$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय—व्रत विधान । र०काल × । ले० काल सं० १८१६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८८१०. **व्रतोद्यापन संग्रह**—× । वेष्टन सं० ३३-१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष -- निम्न संग्रह है—

१. जिनगुण सम्पत्ति व्रतोद्यापन	सुमति सागर ।	संस्कृत
२. कर्मदहन पूजा	विद्याभूषण ।	
३. षोडशकारण व्रतोद्यापन	मुनि ज्ञान सागर ।	,,
४. भक्तामर स्तोत्र मंडल स्तवन	×	,,
५. श्रुत स्कंध पूजा	वीरदास ।	,,
६. पञ्च परमेष्टि पूजा विधान	यशोनन्दि ।	,,
७. रत्नत्रयोद्यापन पूजा	भ० केशवसेन ।	
८. पञ्चमी व्रतोद्यापन पूजा	×	,,
९. कंजिका व्रतोद्यापन	यशःकीर्ति ।	,,
१०. रोहिणी व्रतोद्यापन	×	,,
११. दशलक्षण व्रतोद्यापन	×	,,
१२. पल्य विधान पूजा	अभयनन्दि ।	,,
१३. पुष्पाञ्जली व्रतोद्यापन	×	,,
१४. नवनिधान चतुर्दश रत्न पूजा	लक्ष्मीसेन ।	,,
१५. चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा	विद्याभूषण ।	,,
१६. पंच कल्याणक पूजा	×	,,
१७. सप्त परमस्थान पूजा	×	,,
१८. अष्टाह्निका व्रत पूजा	ब्रह्म सागर ।	,,
१९. अष्ट कर्मचूर्ण उद्यापन पूजा	×	,,
२०. कवल चन्द्रायण पूजा	जिनसागर	,,
२१. सूर्यव्रतोद्यापन पूजा	ब्र० ज्ञानसागर	,,
२२ हवन विधि	×	,,
२३. बारहसौ चौबीसी व्रतोद्यापन	×	,,
२४. तीस चौबीसी व्रतोद्यापन	भ० विद्याभूषण ।	,,
२५. अनन्त चतुर्दशी पूजा	भ० विश्वभूषण ।	,,
२६. त्रिपंचाशत क्रियोद्यापन	×	,,

८८११. **व्रतोद्यापन पूजा संग्रह**—× । पत्र सं० १२-६६ । आ० १०×५ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल १८२१ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

रत्ननन्दि कृत पल्य विधानोद्यापन, नंदीश्वरव्रतोद्यापन, सप्तमी उद्यापन, वेपनक्रिया उद्यापन जिनगुण सम्पत्ति व्रतोद्यापन, बारह व्रतोद्यापन, षोडशकारण उद्यापन, चारित्र व्रतोद्यापन का संग्रह है।

८८१२. **व्रतों का ब्यौरा**—× । पत्रसं० १२ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ़ (कोटा)

८८१३. **वृहद् गुरावली पूजा—स्वरूपचन्द** । पत्रसं० ८२ । आ० ६$\frac{1}{2}$×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय पूजा । र०काल सं० १९१० सावन सुदी ७ । **ले०काल** सं० १९३५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—जीवनलाल गिरधारीलाल के तृतीय पुत्र किशनलाल ने नगर करौली में नेमिनाथाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि करवायी थी ।

८८१४. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० २८ । आ० १५×५ इञ्च । ले०काल सं० १९१० । पूर्ण । वेष्टन सं० ३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

८८१५. **वृहत् पुण्याह वाचन**— × । पत्रसं० ५ । आ० १२×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-विधि विधान । ले०काल सं० १८९४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६३ ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)

८८१६. **वृहद् पूजा संग्रह**—×। पत्रसं० २१६ । आ० ८$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत-प्राकृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८२१ फागुन बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनपंचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—नैमित्तिक पूजाओं का संग्रह है ।

८८१७. **वृहद् पंच कल्याणक पूजा विधान**—× । पत्रसं० २२ । आ० ९$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

८८१८. **वृहत् शांति पूजा**—×। पत्रसं० १२ । आ० ८$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १३१२ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८८१९. **वृहद् शान्ति विधान—धर्मदेव** । पत्रसं० ३६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल सं० १८८२ चैत्र सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—बगरू ग्राम के आदिनाथ चैत्यालय में ठाकुर बाघसिंह के राज्य में झांझूराम ने प्रतिलिपि की थी ।

८८२०. **वृहद् शान्ति विधान**—×। पत्र सं० ५ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

८८२१. **वृहद् शान्ति विधान**—× । पत्रसं० ३ । आ० ११½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरावली कोटा ।

८८२२. **वृहद् शान्ति विधि एवं पूजा संग्रह**—× । पत्र सं० २६ । आ० १०½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

८८२३. **वृहद् षोडशकारण पूजा**—× । पत्रसं० ४५ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

८८२४. **वृहद् षोडशकारण पूजा**—× । पत्रसं० १५ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८१८ सावण सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८८२५. **वृहद् सम्मेद शिखर महात्म्य**—**मनसुखसागर** । पत्रसं० १३७ । आ० १२½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १६३० माघ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२१६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८८२६. **वृहद् सिद्धचक्र पूजा** – भ० **भानुकीर्ति** । पत्रसं० १४६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—**प्रशस्ति**—अच्छी है ।

जयपुर नगर में लश्कर के मन्दिर में पं० केशरीसिंह जी के शिष्य झाँडूराम देवकरण ने प्रतिलिपि की थी ।

८८२७. **शत्रुंजय उद्धार**—**नयनसुन्दर** । पत्रसं० ६ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८१५ । पूर्ण । वेष्टनसं० १६१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८८२८. **शास्त्र पूजा**—× । पत्रसं० ५३-६३ । आ० ७½×५½ इञ्च । **भाषा**-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६८-५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राजस्थान) ।

८८२९. **शास्त्र पूजा**—× । पत्र सं० ७ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८६५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

८८३०. **शांतिकाभिषेक**—× । पत्र सं० १४ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८८३१. **शांतिकाभिषेक**—×। पत्रसं० ३६। आ० १४×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल सं० १६२८ कार्तिक बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० ३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा।

विशेष—नैणवा में प्रतिलिपि हुई थी।

८८३२. **शान्ति पाठ**—पं० धर्मदेव। पत्र सं० २१। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल×। ले० काल×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३६०। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८८३३. **शान्ति पाठ**—×। पत्रसं० २। आ० ८×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १६६१। पूर्ण। वेष्टन सं० ६६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन शास्त्र भण्डार मन्दिर लश्कर, जयपुर।

८८३४. **शांतिक पूजा विधान**—×। पत्र सं० ५। आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३०८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, चौगान बूंदी।

८८३५. **शांतिक विधान**—**धर्मदेव**। पत्रसं० ४७। आ० ८$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-विधान। र०काल ×। ले०काल सं० १८५६ चैत्र वदी १०। पूर्ण। वेष्टनसं० ११७७। **प्राप्ति-स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८८३६. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० ३७। आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। ले०काल सं० १८६४ माह बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० २५-११। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

विशेष—टोडारायसिंह में पं० श्री वृन्दावन के प्रशिष्य एवं सीताराम के शिष्य ग्योजीराम ने प्रतिलिपि की थी।

८८३७. **शान्तिक विधि**—×। पत्रसं० २। भाषा-संस्कृत। विषय विधि। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ×। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

८८३८. **शांतिचक्र पूजा** ×। पत्र सं० ३। आ० १०×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १५६८। **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८८३९. **शान्तिचक्र पूजा**—×। पत्र सं० ७। आ० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल सं० १६४८। पूर्ण। वेष्टन सं० १६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

८८४०. **शांतिचक्र पूजा** ×। पत्रसं० ४। आ० ११$\frac{1}{2}$×६$\frac{3}{4}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा।

८८४१. **शांतिचक्र पूजा** ×। पत्र सं० ४। आ० ६$\frac{1}{2}$×८$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल सं० १८५६ आषाढ सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन सं० ४४-८१। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

विशेष—राजमहल नगर में श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय में सुखेन पंडित ने प्रतिलिपि की थी।

८८४२. **शांतिचक्र पूजा**—× । पत्रसं० ३ । आ० १०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

८८४३. **शांतिचक्र विधि**—× । पत्रसं० ४ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

८८४४. **शांतिचन्द्र मंडल पूजा**—× । पत्रसं० ४ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १९४८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८८४५. **शांतिचक्र मंडल विधान**—× । पत्रसं० ५ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८९४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १५८, ५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्दरगढ (कोटा) ।

८८४६. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ४ । ले०काल सं० १८०८ आषाढ बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १५९/५७ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

८८४७. **शान्तिनाथ पूजा**—× । पत्रसं० १३ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १७०/७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८८४८. **शांतिनाथ (वृहद्) पूजा**—**अ० शांतिदास** । पत्र सं० १६ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३९२-१४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८८४९. **शान्तिमंत्र**—× । पत्रसं० ४ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल सं० १९३८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३४१/१३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८८५०. **शांति होम विधान**—**आशाधर** । पत्र सं० ४ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०३ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

८८५१. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ५ । आ० ११×६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

८८५२. **शीतलनाथ पूजा विधान**—× । पत्रसं० ९ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल× । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३८० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८८५३. **शुक्लपंचमी व्रतोद्योपन**—× । पत्रसं० ११ । आ० १२×४ इंच । **भाषा** संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २३६/३५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—भट्टारक भादिभूषण के शिष्य ब्र० केला के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी प्रति प्राचीन है ।

८८५४. **शुक्लपंचमी व्रतोद्यापन**—× । पत्रसं० १० । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, (बूंदी) ।

८८५५. **शुक्लपंचमी व्रतोद्यापन**—× । पत्र सं० ६ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । लेखन काल सं० १६३८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८८५६. **शुक्लपंचमी व्रतोद्यापन**—× । पत्र सं० ७ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल ×। पूर्ण । वेष्टन सं० १६८/८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८८५७. **शुक्लपचमी व्रतोद्यापन**—× । पत्र सं० ७ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८८५८. **श्राद्ध विधि—रत्नशेखर सूरि** । पत्रसं० १६८ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय विधि विधान । र०काल सं०१५०६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६५-२०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

८८५९. **श्रावक व्रत विधान—अभ्रदेव** । पत्रसं० १५ । आ० १०¾×६¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल सं० १७६५ माघ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४०२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८८६०. **श्रुत पूजा**—× । पत्रसं० ५ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८८६१. **श्रुत पूजा**—× । पत्रसं० ४ । आ० १०½×४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८८६२. **श्रुत पूजा**—× । पत्र सं० ४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८८६३. **श्रुत पूजा**—× । पत्रसं० ४ । आ० १०¾×५¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८८६४. **श्रुतस्कंध पूजा—ज्ञानभूषण** । पत्रसं० ६ । आ० १०×६¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल ×। ले०काल सं० १८६१ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

८८६५. **श्रुतस्कंध पूजा—त्रिभुवनकीर्ति**। पत्रसं० ३। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ४/३१८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

८८६६. **प्रति सं० २**। पत्रसं० ३। ले०काल सं० × । पूर्ण। वेष्टनसं० ५/३१६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

८८६७. **श्रुतस्कन्ध पूजा—भ० श्रीभूषण**। पत्र सं० १६। आ० १५×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल × । ले०काल सं० १७३१। पूर्ण। वेष्टन सं० ५१४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

विशेष—बहादुरमध्ये पं० भोमजी लिखितं।

८८६८. **श्रुतस्कन्ध पूजा—वर्द्धमान देव**। पत्रसं० ७। आ० १०×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय पूजा। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

८८६९. **श्रुतस्कन्ध पूजा**—× । पत्रसं० ६। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल × ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी।

८८७०. **श्रुतस्कन्ध पूजा**—× । पत्र सं० ४। आ० ९$\frac{3}{5}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल × । ले०काल× । अपूर्ण। वेष्टन सं० ५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर।

विशेष—एक प्रति और है।

८८७१. **श्रुतस्कंध पूजा**— × । पत्र सं० ५। आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—पूजा। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३४। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मंदिर बीरसली कोटा।

८८७२. **श्रुतस्कंध पूजा**—×। पत्रसं० ३। आ० १३×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-पूजा। र० काल × । ले०काल सं० १८७१ ज्येष्ठ सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० २७-६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

विशेष—पं० शिवजीराम ने अपने शिष्य चैनसुख नेमीचन्द के पढने के लिए टोडा में प्रतिलिपि की थी।

८८७३. **श्रुतस्कंध पूजा**—×। पत्रसं० ८। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

८८७४. **श्रुतस्कंध पूजा**—× । पत्रसं० १०। आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

८८७५. **श्रुत स्कंध पूजा विधान**—**बालचन्द** । पत्रसं० ३५ । आ० ११$\frac{3}{4}$×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल सं० १९४५ ज्येष्ठ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

८८७६. **श्रुत स्कंध मंडल विधान**—**हजारीमल्ल**—× । पत्रसं० २७ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १९३२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

विशेष—हजारीमल्ल साहिपुरा के रहने वाले थे ।

८८७७. **श्रुत स्कंध मण्डल विधान**—× । पत्रसं० १ । आ० २३×११$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक) ।

विशेष—मण्डल का नक्शा दिया हुआ है ।

८८७८. **षोडशकारण जयमाल**—× । पत्रसं० १४ । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल १७८० श्रावण सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८८७९. **षोडशकारण जयमाल**—× । पत्रसं० १७ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८३२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—ऋषि रामकृष्ण ने भरतपुर में प्रतिलिपि लिखी थी ।

८८८०. **षोडशकारण जयमाल**—× । पत्रसं० ६ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १७८२ भादवा बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२२८ । **प्राप्ति स्थान**—ग० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८८८१. **षोडशकारण जयमाल**—× । पत्रसं० ४१ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १९४० भादवा बुदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर

विशेष—गौरीलाल बाकलीवाल ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । टब्बा टीका सहित है ।

८८८२. **षोडशकारण जयमाल**—× । पत्रसं० १० । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—संस्कृत में टीका है ।

८८८३. **षोडशकारण जयमाल**—× । पत्र सं० १२ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १७१५ माह सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक) ।

८८८४. **षोडषकारण जयमाल**—**रइधू** । पत्रसं० १२ । भाषा-अपभ्रंश । विषय-पूजा र०काल × । ले०काल सं० १८५३ । पूर्ण । वेष्टनसं० × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—गुमानीराम ने भरतपुर में प्रतिलिपि की थी।

८८८५. प्रति सं० २। पत्र सं० २७। आ० ११×५½ इञ्च ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३४/२८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—कहीं २ संस्कृत में शब्दार्थ दिये है।

८८८६. षोडशकारण जयमाल बृत्ति—पं० शिवजीदरुन (शिवजीलाल)। पत्रसं० २६। आ० १२½×७½इञ्च। भाषा-प्राकृत संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। **वेष्टन सं० ५१६। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

८८८७. षोडशकारण पूजा—×। पत्र सं० २४। आ० ११×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २७६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

८८८८. षोडशकारण पूजा—×। पत्र सं० १२। आ० १२½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय पूजा। र० काल×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ११३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली।

८८८९. षोडशकारण पूजा मंडल विधान—टेकचन्द—×। पत्रसं० ४१। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

८८९०. प्रति सं० २। पत्रसं० ५३। आ० ६½×६½ इञ्च। ले०काल सं० १९५६। पूर्ण। वेष्टन सं० १२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

८८९१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५२। ले०काल सं० १९७३। पूर्ण। वेष्टन सं० ३९३-१४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

८८९२. षोडशकारण व्रतोद्यापन—ज्ञानसागर—×। पत्रसं० २३। आ० १२½×७ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल सं० १९३८। पूर्ण। वेष्टन सं० ५२८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर।

८८९३. षोडशकारण व्रतोद्यापन पूजा—सुमति सागर। पत्रसं० ३२। आ० ११×६½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८१७ भादवा सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० ३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मंदिर बयाना।

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

अवन्ति नाम सुदेशमध्ये विशालशालेन विभ्राति भूतले।
सुशान्तिनाथस्तु जयोस्तु नित्यं, मुञ्जेनकेयां परदेव तत्र ॥१॥

श्रीसंघथूले विपुलेयदूरे ब्रह्मी प्रगद्दे बलशालिने गणे।
तत्रास्ति यो गोतम नाम धेया त्वये प्रशांतो जिनचन्द्र सूरि ॥२॥

श्रीपद्मनन्दिभंवतापहारी देवेन्द्रकीर्तिर्भुवनैककीर्ति।
विद्यादिनंदिवरमल्लिभूषः लक्ष्म्यादिचन्द्रो भवचन्द्रदेव ॥३॥

तत्पट्टेऽभयनन्दिसो रत्नकीर्ति गुणाग्रणी ।
जीयाद् भट्टारको लोको रत्नकीर्ति जगोत्तम ।।४।।
सुमति सागरदेव चक्रे पूजा मनोहरां ।
खंडेलवालान्वये यः प्रह्लादो ह्लादवान्सुधी ।।५।।
कर्मनिरोधपूजाया मूलसंघविदाग्रणी ।
सुमतिसागरदेव श्रद्धाषोडशकारणे ।।६।।
इति षोडशकारण व्रतोद्यापनपाठः ।
पंचाशदधिकैः श्लोकैः षट्शतैः प्रमितं महत् ।
तीर्थंकृत्पूजाया सुमतिसागरोदितः ।।७।।

८८९४. प्रति सं० २ । पत्रसं० २७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

८८९५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २१ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १८६७ फागुण बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८१-१०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—अभयचन्द्र के शिष्य सुमतिसागर ने पूजा बनाई । अभयचन्द्र की पूरी प्रशस्ति दे रखी है । टोडा में श्याम चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी । नाथूरामजी लुहाड़िया ने नासिरदा में मन्दिर चढ़ाया था ।

८८९६. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० २९ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८८९७. षोडशकारण व्रतोद्यापन । पत्र सं० २१ । आ० ९$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १७५३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

८८९८. सकलीकरण विधान—× । पत्रसं० ३ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३८४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर

८८९९. सकलीकरण—× । पत्रसं० २ । आ० १२$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८९००. सकलीकरण—× । पत्रसं० ३ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८९०१. सकलीकरण—× । पत्रसं० ४ । आ०-१०×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन आदिनाथ मन्दिर बूंदी ।

८९०२. सकलीकरण विधान × । पत्र सं० ३ । आ० १०$\frac{3}{4}$×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

८९०३. सकलीकरण विधान—× । पत्र सं० २ । आ० १०$\frac{1}{2}$ ×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—विधान । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

८९०४. **सकलीकरण विधि**—× । पत्र सं० १ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन नेमिनाथ मंदिर टोडारायसिंह (टोंक) ।

८९०५. **सकलीकरण विधि**—× । पत्रसं० ३ । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । । ले०काल सं० १९८४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४८-१३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८९०६. **सकलीकरण विधि**—× । पत्र सं० ३४ । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

विशेष—अन्त में शान्तिक पूजा भी है ।

८९०७. **सकलीकरण विधि**—× । पत्र सं० ४ । आ० ९ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल सं० १९११ । पूर्ण । वेष्टनसं० २४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान (बूंदी) ।

८९०८. **सकलीकरण विधि**—× । पत्रसं० ३ । आ० १०$\frac{1}{2}$ ×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-मंत्रशास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान (बूंदी) ।

८९०९. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६७ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान (बूंदी) ।

८९१०. **सत्तर भेदी पूजा**—× । पत्रसं० २ । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल—× । ले० काल सं० १८०० । पूर्ण । वेष्टनसं० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८९११. **सप्तर्षि पूजा—विश्वभूषण** । पत्रसं० ४६ । आ० १०$\frac{3}{4}$ × $\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १३७१ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८९१२. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० १४ । ले०काल सं० १८५२ । **पूर्ण** । **वेष्टनसं०** ६१ । **प्राप्ति—स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८९१३. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ७ । ले० काल × । **अपूर्ण** । वेष्टन सं० ६२ । **प्राप्ति-स्थान**—उपरोक्त मन्दिर भरतपुर ।

८९१४. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० ३ से ९ तक । ले०काल सं० १८५२ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

८९१५. **प्रतिसं० ५** । पत्रसं० १० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर भरतपुर ।

८६१६. **प्रति सं० ६**। पत्र सं० १०। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ६५। **प्राप्ति स्थान**-उपरोक्त मन्दिर भरतपुर।

८६१७. **प्रति सं० ७**। पत्र सं० १२। ले०काल। पूर्ण। वेष्टन सं० ६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

८६१८. **प्रतिसं० ८**। पत्र सं० १७। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ५३। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा।

८६१९. **सप्तर्षि पूजा**—× । पत्रसं० २। आ० ११$\frac{3}{4}$×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—पूजा। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १५२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८६२०. **सप्तर्षि पूजा**—× । पत्र सं० ११। आ० ६×६$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा - संस्कृत। विषय—पूजा। र०काल × । ले० काल सं० १६३६ भादवा बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० १७७। **प्राप्ति स्थान**—सं० पंचायती मन्दिर उदयपुर।

८६२१. **सप्तर्षि पूजा**—× । पत्रसं० ६। आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल—× । ले०काल सं० १७६८। पूर्ण। वेष्टनसं० १६१/५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)।

विशेष—संवत् १७६८ भट्टारक श्री १०८ जगत् कीर्ति शिष्येण दोदराजेन लिखितं।

८६२२. **सप्तर्षि पूजा—मनरंगलाल**। पत्र सं० ३। आ० १२×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र०काल × । ले०काल सं० १६५८। पूर्ण। वेष्टन सं० २०८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी (बूंदी)।

८६२३. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० ४। आ० ६$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इंच। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं०-११३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

८६२४. **सप्तर्षि पूजा -स्वरूपचन्द**। पत्र सं० ११। आ० ६×६$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-हिन्दी विषय-पूजा। र०काल सं० १६०६। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १७८। **प्राप्ति स्थान**—सं० पंचायती मन्दिर अलवर।

विशेष—एक अन्य प्रति १२ पत्रों की और है।

८६२५. **सप्तपरमस्थान पूजा—गंगादास**। पत्रसं० १। आ० १२×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १६० र। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर टोडारायसिंह (टोंक)।

८६२६. **सप्तपरमस्थान पूजा**— × । पत्र सं० ४। आ० १०×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ३८६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८६२७. **समवसरण पूजा—पन्नालाल**। पत्रसं० ७४। आ० १२×८ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र० काल सं० १६२१ आसोज बुदी ३। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)।

विशेष—८४५ पद्य हैं।

८६२८. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० ६८। आ० ११½×५½ इञ्च। ले० काल सं० १६३३ वैशाख बुदी ४। पूर्ण। वेष्टनसं० ४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

८६२६. **प्रतिसं० ३**। पत्रसं० १४०। आ० १२½×६ इञ्च। ले०काल सं० १६२६ ज्येष्ठ सुदी ७। पूर्ण। वेष्टनसं० ११३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना।

विशेष—पं० लामचन्द ने मथुरा में घाटी के मन्दिर में प्रतिलिपि की।

८६३०. **प्रतिसं० ४**। पत्रसं० १४३। आ० १०½×५ इञ्च। ले०काल सं० १६२६ आषाढ बुदी २। पूर्ण। वेष्टनसं० ६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

८६३१. **प्रतिसं० ५**। पत्रसं० ६६। आ० ११½×८ इञ्च। ले०काल सं० १६८३। पूर्ण। वेष्टनसं० ५४०। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

८६३२. **समवसरण पूजा—रूपचन्द**। पत्रसं० ६७। आ० १३×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल सं० १८८४ सावन सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन सं० ३५/१७ **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक)।

८६३३. **प्रति सं० २**। पत्रसं० १६४। आ० १०½×७ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

८६३४. **समवशरण पूजा - विनोदीलाल लालचन्द**। पत्रसं० ४६। आ० १३½×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल सं० १८३४ माह बुदी ८। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १०२६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

८६३५. **प्रतिसं० २**। पत्र स० ६२। आ० १०½×५½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १३६६। **प्राप्ति स्थान**– भ० दि० जैनमन्दिर अजमेर।

विशेष—और भी पाठ संग्रह हैं।

८६३६. **प्रति सं० ३**। पत्र सं० ५४। आ० १२½×६ इञ्च। ले० काल सं० १६६८। चैत सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन सं० १२६७। **प्राप्ति स्थान** – भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

८६३७. **प्रति सं० ४**। पत्र सं० १३२। आ० १०×६½ इंच। ले०काल सं० १६२३। पूर्ण। वेष्टन सं० ६१। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

विशेष—और भी पाठों का संग्रह है।

८६३८. **प्रति सं० ५**। पत्र सं० ११६। आ० ११×५ इञ्च। ले०काल सं० १८८६ भादवा बुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० १०३/७०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा।

विशेष—देवली ग्राम के उदैराम ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी।

८६३६. **प्रति सं० ६**। पत्रसं० ३४। ले०काल सं० १८८२ पूर्ण। वेष्टन सं० ७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

८६४०. **प्रतिसं० ७**। पत्रसं० ६६। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १२७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

८६४१. **प्रति सं ८** । पत्रसं० ४१ । आ० १३½×८ इञ्च । ले०काल सं० १६३६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

विशेष—स्यौलाल श्रीमाल के पुत्र गैंदालाल सुगनचन्द ने लिखवा कर करौली के नेमिनाथ चैत्यालय में चढ़ाया था ।

८६४२. **प्रति सं० ९** । पत्रसं० १४२ । आ० ८½×६½ इञ्च । ले०काल सं० १६५० । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक) ।

विशेष—खाजूलाल जी छावडा ने मालपुरा में प्रतिलिपि करवाई थी ।

८६४३. **प्रतिसं० १०** । पत्र सं० १४२ । आ० ४½×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मंदिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

विशेष—लालजी कनहरदास पद्मावती पुरवाल सकूराबाद निवासी के बड़े लड़के थे ।

८६४४. **प्रतिसं० ११** । पत्र सं० १०४ । आ० १२½×६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मंदिर अलवर ।

८६४५. **प्रतिसं० १२** । पत्र सं० ३४ । आ० १२½×७ इञ्च । ले०काल सं० १६६३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—लालजीन भी नाम है ।

८६४६. **प्रतिसं० १३** । पत्रसं० ११५ । आ० ११½×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टन सं०** १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मंदिर उयदपुर ।

८६४७. **प्रतिसं० १४** । पत्र सं० ७८ । ले० काल सं० १६२४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—लिखितं गुरु उमेदचन्द लोंकागच्छ का अजमेर मध्ये सुखलालजी हरभगतजी अजमेर के हस्ते लिखाई थी ।

८६४८. **प्रतिसं० १५** पत्रसं० ७१ । आ० १४×६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

८६४९. **प्रति सं० १६** । पत्रसं० ८८ । आ० ९½×५½ इञ्च । ले० काल सं० १८४५ मंगसिर बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८६५०. **प्रतिसं० १७** । पत्रसं० ५२ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

८६१५. **प्रतिसं० १८** । पत्रसं० ४३ । आ० १४ × ७ इञ्च । ले०काल सं० १८७८ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८९-११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८६५२. **प्रति सं० १९** । पत्रसं० १२३ । आ० ९½×६ इञ्च । ले०काल सं० १८९४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर बैर ।

८६५३. **प्रतिसं० २०** । पत्रसं० ८६ । आ० ११×६ इञ्च । ले०काल सं० १६४३ श्रावण बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३० । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—भाई चन्दहंस जैसवाल लाइखेडा (आगरा) ने कलकत्ता अमरतल्ला में प्रतिलिपि की थी।

८६५४. **प्रति सं० २१**। पत्रसं० ५४। आ० १३×८ इञ्च। ले० काल सं० १६१६ सावन बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० १०२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

८६५५. **प्रति सं० २२**। पत्रसं० ७१। आ० १०$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इंच। ले०काल सं० १६२६। पूर्ण। वेष्टन सं० १६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर।

विशेष—४२ पत्र की नित्य पूजा और है।

८६५६. **समवसरण पूजा भाषा**—×। पत्रसं० ६७। आ० १२×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय—पूजा। र०काल ×। ले०काल सं० १६४८ पौष बुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० ३०/५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्द्रगढ़ (कोटा)

८६५७. **समवसरण पूजा**—×। पत्र सं० २८। आ० १३×६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

८६५८. **समवसरण पूजा**—×। पत्रसं० ३६। **भाषा**-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल। पूर्ण। वेष्टन सं० ३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

८६५९. **समवशरण पूजा**—×। पत्रसं० १७। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल×। पूर्ण। वेष्टनसं० २८१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

८६६०. **समवसरण पूजा**—×। पत्र सं० १७०। आ० ६$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल सं० १६२३। पूर्ण। वेष्टन सं० ३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

विशेष—बूंदी में लिखा गया था।

८६६१. **समवसरण पूजा**—×। पत्रसं० ३३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल×। पूर्ण। वेष्टनसं० ३५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

८६६२. **समवसरण पूजा**—×। पत्रसं० ६१। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ११३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

८६६३. **समवसरण विधान**—पं० हीरानन्द—×। पत्र सं० २४। आ० ११×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-पूजा। र० काल सं० १७०१। ले० काल सं० १७४१ पौष सुदी ४। पूर्ण। वेष्टनसं० ५०। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा।

विशेष—बनहट्ट नगर में जोशी सांवलराम ने प्रतिलिपि की थी।

८६६४. **समवसरण पूजा**—×। पत्रस० ३४। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १६३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

८६६५. **समवसरण पूजा** —×। पत्र सं० १०० । आ० १२×८½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १९७२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ बौगान बूंदी ।

विशेष—और भी पाठ हैं ।

८६६६. **समवसरण की आचुरी**—× । पत्रसं० ४ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कांटा ।

८६६७. **समवसरण चौबीसी पाठ—थानसिंह ठोल्या** । पत्र सं० २६ । आ० १०½ × ६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल सं० १८४० ज्येष्ठ सुदी २ । ले०काल सं० १८४६ माघ बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

विशेष—करौली में रचना हुई । सेवाराम जती ने प्रतिलिपि की थी ।

८६६८. **समवसरण मंगल चौबीसी पाठ**—× । पत्र सं० ५१ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल सं० १८४८ जेठ बुदी २ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—इसके कर्त्ता करौली निवासी थे लेकिन कहीं नाम देखने में नहीं आया । छंद सं० ४०५ हैं ।

श्रावक के उपदेश सौ सतसंगति परमाया ।
थान करौरी में भाषा छंद बनाया ।।

८६६९. **समवसरण रचना**— × । पत्र सं० ५१ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पूजा एवं वर्णन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—समवसरण के अतिरिक्त नर्क स्वर्ग मोक्ष सभी का वर्णन है ।

८६७०. **समवश्रुत पूजा**— **शुभचन्द्र** । पत्र सं० ३६ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

८६७१. **समवश्रुत पूजा**—× । पत्र सं० ४२ । आ० ८½ × ६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८६७२. **सम्मेदशिखर पूजा—भ० सुरेन्द्रकीर्ति** । पत्रसं० ५ । आ० ११½ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लाश्कर जयपुर ।

८६७३. **सम्मेदशिखर पूजा**— × । पत्र सं० १७ । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

८६७४. **सम्मेदशिखर पूजा—गंगादास** । पत्र सं० १२ । आ० ७½ × ५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४६-६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८६७५. **प्रति सं० २**। पत्र सं० १७। आ० ६½×६½ इंच। ले० काल सं० १८८६। पूर्ण। वेष्टन सं० ६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

८६७६. **प्रति सं० ३**। पत्र सं० ६। आ० १०½×७ इंच। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५२/१६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

८६७७. **प्रति सं० ४**। पत्रसं० २५। आ० ७½×५½ इंच। ले०काल सं० १८८५ फाल्गुन सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० ३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सौंगाणी करौली।

८६७८. **सम्मेदशिखर पूजा—सेवकराम**। पत्रसं० २३। आ० १०½×६½ इन्च। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। र०काल सं० १६११ माघ बुदी ५। ले०काल सं० १६११। पूर्ण। वेष्टन सं० ११५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना।

विशेष—नाई के मन्दिर में सुखलाल की प्रतिलिपि की थी।

८६७६. **सम्मेदशिखर पूजा—संतदास**। पत्र सं० ३। आ० १०½×५ इन्च। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ५७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

८६८०. **सम्मेदशिखर पूजा—हजारीमल्ल**। पत्रसं० २४। आ० १२×५ इन्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—पूजा। र०काल ×। ले०काल सं० १६३२। पूर्ण। वेष्टन सं० ८१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूंदी।

विशेष—मथुरादास ने साहपुरा में प्रतिलिपि की थी।

राहसमल्ल विनती करे हे किरपानिधि देव।
आवागमन मिटाइये अरजी यह सुन लेव॥

८६८१. **सम्मेदशिखर पूजा—ज्ञानचन्द्र**। पत्र सं० १४। आ० ८×६½ इंच। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—पूजा। र०काल सं० १६६६ चैत सुदी २। ले० काल सं० १६८६। पूर्ण। वेष्टन सं० १५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

प्रारम्भ—शिखर समेद से बीस जिनेश्वर सिद्ध भये।
और मुनीश्वर बहुत तहां ते शिव गये॥
वंदू मन वच काय नमूं शिर नायके।
तिष्ठें श्री महाराज सबें इत आयके॥

अन्तिम—उन्नीसो छासठ के मांही।
संवत विक्रम राज कराही॥
चैत सुदी दोयज दिन जान।
देश पंजाब लाहोर शुभ स्थान॥
पूजा शिखर रची हरषाय।
नमें ज्ञानचन्द्र शीश नमाय॥

इसके अतिरिक्त निर्वाण क्षेत्र पूजा ज्ञानचन्द्र कृत और है जिसका र०काल एवं लेखन काल भी यही है।

विशेष - बूंदी नगर वासी गैंदीलाल के पुत्र संतलाल छाबड़ा ने प्रतिलिपि करके ईश्वरीसिंह के शासनकाल में भेंट की थी।

८६८२. **सम्मेदशिखर पूजा—जवाहरलाल**। पत्र सं० २७ । आ० ६½×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल सं० १८६१ वैशाख सुदी । **ले०काल** सं० १६५६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—कवि छत्रपुर के रहने वाले थे। मुक्तागिरि की यात्रा को गये और अमरावती में यह ग्रन्थ रचना करी।

अमरावती नगरी विषै पूजा समकित कीन।
छिमाजी सब जन तुम करो मोहि दोस मत दीन॥

पं० भगवानदास हरलाल वाले ने नन्द ग्राम में प्रतिलिपि की थी। पुस्तक पं० रतनलाल नेमीचन्द की है।

८६८३. **प्रतिसं० ३**। पत्रसं० २३। आ० ११×६ इञ्च। **ले०काल** सं० १६५६। पूर्ण। वेष्टन सं० २०७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नागदी, बूंदी।

विशेष—२-३ प्रतियों का मिश्रण है।

८६८४. **प्रतिसं० ४**। पत्र सं० १४। आ० ११½×६ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २८६/१११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

८६८५. **प्रति स० ५**। पत्र सं० १८। आ० ११×५½ इञ्च। ले० काल सं० १६५४ वैशाख बुदी १०। पूर्ण। वेष्टन स० ५८०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

८६८६. **प्रति सं० ६**। पत्र सं० १५ । आ० १०×६ इञ्च । ले०कालसं०—१६४३ आषाढ़ सुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० १६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ख०डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

८६८७. **प्रतिसं० ७**। पत्र सं० २२। ले० काल सं० १६१४। पूर्ण। वेष्टन सं० ८६/२६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर।

८६८८. **प्रति सं० ८**। पत्रसं० १७। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ३५४-२६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर।

८६८६. **प्रतिसं० ६**। पत्र सं० १२। आ० १२½×७ इञ्च। **ले०काल** × । पूर्ण। वेष्टन सं० १७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

८६६०. **प्रतिसं० १०**। पत्र सं० १७। आ० ११×६ इञ्च। ले० काल सं० १६२६। पूर्ण। वेष्टन सं० ७/४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक)।

विशेष—अमरावती में रचना हुई। मुन्नालाल कटारा ने हजारीलाल शंकरलाल के पठनार्थ व्यास रामवक्स से दूनी में प्रतिलिपि करवाई थी। संवत् १६४३ में हजारीलाल कटारा ने अनन्तव्रत के उपलक्ष में दूनी के मन्दिर में चढ़ाई।

८६६१. **प्रतिसं० ११**। पत्र सं० १२। आ० १२×५ इञ्च। ले० काल सं० १८६१। पूर्ण। वेष्टन सं० १०८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी (कामा)।

८६६२. **प्रतिसं० १२** । पत्र सं० १६ । आ० १०×६½ इञ्च । ले०काल सं० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह और है—

नवग्रह स्तोत्र, पार्श्वनाथ स्तोत्र, भूपाल चतुर्विंशतिका स्तोत्र ।

८६६३. **प्रतिसं० १३** । पत्रसं० १६ । आ० १०½ × ७ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर मालपुरा (टोंक) ।

८६६४. **प्रतिसं० १४** । पत्र सं० ७ । ले०काल सं० १६२६ आषाढ़ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—लालजी लुहाड़िया भरतपुर वाले ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

८६६५. **सम्मेद शिखर पूजा—भागीरथ** । पत्र सं० २८ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८३७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

८६६६. **सम्मेद शिखर पूजा—ज्ञानतराय**—× । पत्रसं० १८ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-चरित्र । र०काल सं० १८३५ । ले०काल × । **अपूर्ण** । वेष्टन सं० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोठ्यों का नैणवा ।

८६६७. **सम्मेद शिखर पूजा—बुधजन** । पत्रसं० १६ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

८६६८. **सम्मेद शिखर पूजा—रामपाल** । पत्र सं० ११ । आ० ९×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल सं० १८८६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २५७-१०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

अन्तिम—मूलसंघ मनुहार भट्टारक गुणचन्द्र जी ।

तस पट सोहे सार हेमचन्द्र गछपती सही ॥
सकलकीर्ति आचारज जी जानो ।
तिन के शिष्य कहे मन आनो ।
रामपाल पंडित मन ल्यावे ।
प्रभु जी के गुण बहुविध गावे ॥
सहर प्रतापगढ़ जानो रे भाई ।
धीडा टेकचन्द तिहा रहाई ॥
सम्मेद शिखर की यात्रा आवे ।
ता दिन ये पूजा रचावे ॥
संमत अठारासै साल में और छियासी लाय ।
फागुण दुज शुभ जानिये रामपाल गुण गाय ।
लिखितं पं० रामपाल स्वहस्तेन ।

जुगादीके सुगेह में पंडित वरवान जी ।।
रतनचन्द ताको नाम बुद्धि को निधान जी ।।
ताको मित्र रामपाल हाथ जोर कहत है ।
हेस्याण मोकू दीजिये जिनेन्द्र नाम लेत है ।

८९९९. **सम्मेद शिखर पूजा—लालचन्द** । पत्रसं० ८२ । आ० ९×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल सं० १८४२ फागुण सुदी ५ । ले० काल सं० १८४५ वैशाख बुदी ऽ ऽ । **पूर्ण** । वेष्टन सं०४ । **प्राप्ति थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी नैणवा ।

विशेष—लालचन्द भ० जगत्कीर्ति के शिष्य थे ।

अन्तिम—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

काष्ठसंघ और माथुरगच्छ पोकरगण कहो शुभगच्छ ।
लोहाचार्य आमनाय जो कहीं हिसार पद मनोक्षा सही ।।३२।।
भट्टारक सत्कीर्ति जानि, भव्य पयोज प्रकाशन भान ।
तासु पट्ट महीन्द्रकीर्ति भयो विद्यागुण भंडार जु भयो ।
देवेन्द्रकीर्ति तत्पट्ट बखान, शील शिरोमणि किरणसमान ।
तिनके पट्ट परम गुणधाम, जगत्कीर्ति भट्टारक जान ।

× × × × × ×

शिष्य लालचन्द सुधी भाषा रची बनाय ।
एकचित्त सुनै पढ़ै भव्य शिवकू जाय ।।३५।।
संवत् अठारासै भयो व्यालिस ऊपर जान ।
पांचै फागुण शुक्लकु पूरण ग्रंथ बखान ।।३६।।
रेवाडी सहर मनोज्ञ बसै श्रावक भव्य सब ।
आदित्य ऐश्वर्य योग तेतीस पट्ट पूरण भयो ।

इति श्री सम्मेदशिखरमहात्म्ये लोहाचार्यानुसारे भट्टारक जगत्कीर्ति तत् शिष्य लालचन्द विरचिते भद्रकूट वर्णनो नाम एक विंशति नमः सर्गः ।

९०००. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ६० । आ० १२½×६½ इञ्च । ले०काल सं० १९१३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मंदिर बयाना ।

९००१. **प्रतिसं० ३** पत्रसं० ३९ । आ० ९½×८½ इञ्च । ले०काल सं० १९७० फागुण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १९२ दि० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ कोटा ।

९००२. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० २६ । ले०काल सं० १८४३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर हण्डावालों का डीग ।

९००३. **प्रतिसं० ५** । पत्रसं० ४ । आ० १३×४½ इंच । ले०काल सं० १९०६ आषाढ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिरफतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—जगतकीर्ति के प्रशिष्य ललितकीर्ति के शिष्य राजेन्द्रकीर्ति के लघु भ्राता के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी । जगह २ प्रति संशोधित की हुई है ।

६००४. **प्रतिसं० ६** । पत्र सं० ४७ । आ० १०½×५½ इञ्च । ले० काल सं० १८५४ आसोज सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी सीकर ।

विशेष—रेवाड़ी में ग्रंथ रचना हुई । देवी सहाय सारसौल वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

६००५. **प्रतिसं० ७** । पत्रसं० ४४ । आ० ११½×५½ इंच । ले०काल स० १९१५ पौष सुदी । पूर्ण । वेष्टन सं० ८० । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी ।

विशेष—

अन्तिम प्रशस्ति—इति श्री सम्मेदशिखरमहात्म्ये लोहाचार्यानुसारेण भट्टारक श्री जगत्कीर्त्ति तत् शिष्य लालचन्द विरचिते सुवर्णभद्रकूटवर्णनोनाम विंशतिका संपूर्ण । जीवनराम ने फतेहपुर में प्रतिलिपि की थी ।

६००६. **प्रतिसं० ८** ।पत्रसं० ५० । आ० ६×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २३०/११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६००७. **प्रतिसं० ९** । पत्रसं० ६६ । आ० ९×७ इञ्च । ले०काल सं० १८८६ । अपूर्ण । वेष्टन सं० । ३४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, दीवानजी कामा ।

६००८. **सम्मेद शिखर महात्म्य पूजा—मोतीराम** । पत्रसं० ४२ । भाषा-हिन्दी, पद्य । विषय-पूजा । र०काल सं० १८४१ भादों सुदी ६ ।ले०काल सं० १८४८ वैसाख सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

६००९. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ७२ । ले०काल स० १९२०। पूर्ण । वेष्टनसं० ५६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

६०१०. **सम्मेद शिखर पूजा**— × । पत्रसं० ७ । आ० १०½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी, पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १७९३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

६०११. **सम्मेद शिखर पूजा**— × । पत्र सं० १२ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १९४४ आसोज बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११५५ । **प्राप्ति-स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

६०१२. **सम्मेद शिखर पूजा**— × । पत्रसं० ३० । आ० १२½×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी, पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल× । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२१० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६०१३. **सम्मेद शिखर पूजा**— × । पत्र सं० ८ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १९४६ आसोज बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२६९ । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

६०१४. **सम्मेद शिखर पूजा**— × । पत्र सं० १७ । आ० १०×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल सं० १८९१ । ले० काल सं० १९०० । पूर्ण । वेष्टन सं० ६० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

६०१५. सम्मेद शिखर पूजा—× । पत्र सं० १८ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी, पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १६१२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६-५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

६०१६. सम्मेद शिखर पूजा—× । पत्रसं० १८ । आ० ७½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी, पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

६०१७. सम्मेद शिखर पूजा—× । पत्र सं० १६ । आ० ८½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १६४२ कार्तिक सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७१-१२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

६०१८. सम्मेद शिखर पूजा—× । पत्र सं० १८ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १६३३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पंथी दौसा ।

६०१६. सम्मेद शिखर पूजा—× । पत्र सं० ६४ । आ० १०½×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १६०४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६४-६६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मंदिर भादवा (राज०) ।

६०२०. सम्मेद शिखर पूजा—× । पत्रसं० ४३ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी, पद्य । विषय पूजा । र० काल × । ले०काल सं० × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोठ्यों का नैणवा ।

६०२१. सम्मेद शिखिर पूजा—× । पत्रसं० ८ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल सं० १८७७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

६०२२. सम्मेद शिखर महात्म्य पूजा—मनसुखसागर । पत्र सं० १०० । आ० १२×६ इंच । भाषा—हिन्दी, पद्य । विषय -पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८६८ । जेठ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १००-८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—ज्ञानचन्द छाबड़ा ने प्रतिलिपि की थी ।

६०२३. सम्मेद शिखर महात्म्य पूजा—मनसुखसागर । पत्रसं० ६३ । आ० १०½×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय -पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १६०७ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्रीमहावीर बूंदी ।

६०२४. सम्मेद शिखर महात्म्य—वीक्षित देवदत्त । पत्रसं० ७६ । आ० ११½×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा एवं कथा । र०काल × । ले०काल सं० १८५१ । पूर्ण । वेष्टनसं० २६० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६०२५. प्रतिसं० २ । पत्र सं० १०६ । आ० १२½×६ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६-८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

६०२६. **सम्मेद शिखरमहात्म्य**—× । पत्रसं० २१ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ़ (कोटा) ।

६०२७. **सम्मेदाचल पूजा उद्यापन**—× । पत्र सं० ८ । आ० १३½×६½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०३ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

६०२८. **सम्यक्त्व चिंतामणि**—× । पत्र सं० १२२६ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

६०२९. **सरस्वती पूजा**— × । पत्र सं० ७ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

६०३०. **सरस्वती पूजा—संघी पन्नालाल** । पत्र सं० ११ । आ० १३½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय पूजा । र० काल सं० १९२१ ज्येष्ठ सुदी ५ । ले० काल सं० १९८५ आषाढ बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—रिषभचन्द विन्दायकया ने लश्कर के मन्दिर के लिये जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

६०३१. **सर्वजिनालय पूजा (कृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालय पूजा)—माधोलाल जैसवाल** । पत्र सं० १६ । आ० ८×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक) ।

६०३२. **सहस्रगुण पूजा—भ० धर्मकीर्ति** । पत्रसं० ६१ । आ० १२½×७½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८७६ मांगसिर बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है --

इति भट्टारक श्री ललितकीर्तिस्तत्शिष्य भट्टारक श्री धर्मकीर्तिविरचित श्री सहस्रगुण पूजा संपूर्ण । लिख्यतं महात्मा राधाकृष्ण सवाई जयपुर मध्ये बासी कृष्णगढ का । मिति मंगसिर बुदी ३ शुक्रवार सं० १८७६ ।

६०३३. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ७२ । आ० ११½×७½ इञ्च । ले०काल सं १९३१ बैसाख सुदी ९ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६०३४. **सहस्रगुणित पूजा**— × । पत्रसं० ६१ । आ० ११½×६इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय–पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८८६ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० १३४२ । **प्राप्ति–स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६०३५. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ४९ । ले०काल सं० १८८६ आसोज सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३४३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

६०३६. **सहस्रगुणित पूजा—भ० शुभचन्द्र**। पत्र सं० १२७। आ० ५½×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल × । ले० काल सं० १७५१ ज्येष्ठ बुदी १२। पूर्ण। वेष्टन सं० ७८३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—आ० कल्याणकीर्ति के शिष्य पं० कबीरदास के पठनार्थ नुटका लिखा गया था।

६०३७. **प्रतिसं० २**। पत्र सं० ५२। **ले०काल** सं० १६६८। पूर्ण वेष्टन सं० ६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर डीग।

विशेष—मानसिंह जी के शासन काल में आमेर में प्रतिलिपि हुई थी। बाई किसना ने कल्पिका वस्त्रोद्यापन में चढाई थी।

६०३८. **सहस्रगुणित पूजा**—× । पत्रसं० ११-७२। आ० १०×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टनसं० ३२०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

६०३९. **सहस्रगुणी पूजा—खड्गसेन**। पत्र सं० ६७। आ० १२×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल × । ले० काल सं० १७२८। पूर्ण। वेष्टन सं० २४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—प्रशस्ति अच्छी दी हुई है।

६०४०. **सहस्रनाम पूजा—धर्मचन्द्रमुनि**—× । पत्र सं० ५०। आ० १२×६½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल × । ले०काल सं० १८६१ चैत सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन सं० १२५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा।

विशेष—सवाई माधोपुर में प्रतिलिपि की गई थी।

६०४१. **सहस्रनाम पूजा—धर्मभूषण**। पत्रसं० ८५। आ० ११×६ भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

६०४२. **सहस्रनाम पूजा—चैनसुख**। पत्र सं० ३६। आ० १३×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल × । ले०काल सं० १९६३। पूर्ण। वेष्टनसं० ५५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

६०४३. **सार्द्धद्वयद्वीप पूजा—विष्णुभूषण**। पत्र स० ११६। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल × । ले०काल सं० १९६१। पूर्ण। वेष्टनसं० ५७६। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर।

६०४४. **सार्द्धद्वयद्वीप पूजा—शुभचन्द्र**। पत्र सं० १३०। आ० १०×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल × । ले०काल सं० १८६८ सावन सुदी १। पूर्ण। वेष्टनसं० ५४। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६०४५. **प्रति सं० २**। पत्रसं० ९३। आ० १०×५½ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १८९। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६०४६. **प्रतिसं० ३**। पत्रसं० ३००। आ० ९½×६ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३८८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बरसली कोटा।

६०४७. **प्रतिसं० ४** । पत्र सं० १२४ । ले०काल सं० १८२६ आषाढ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—आशाराम ने भरतपुर में लिखा था ।

६०४८. **प्रतिसं० ५** । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८६४ ज्येष्ठ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनसं० ११७ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

६०४९. **प्रतिसं० ६** । पत्रसं० २५६ । ले०काल सं० १९६३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर ।

६०५०. **प्रतिसं० ७** । पत्रसं० १०८ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल सं० १८७० । पूर्ण । वेष्टन सं० ११ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बैर ।

६०५१. **प्रतिसं० ८** । पत्रसं० १४४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर झुण्डावालों का डीग ।

६०५२. **सार्द्ध द्वयद्वीप पूजा—सुधा सागर** । पत्रसं० ६८ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८५५ फागुण बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

६०५३. **सार्द्ध द्वयद्वीप पूजा**—× । पत्रसं० २०६ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

६०५४. **सार्द्ध द्वय द्वीप पूजा**—× । पत्रसं० ८८ । आ० १२½×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८६५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष— अथ संवत्सरेस्मिन नृपति विक्रमादित्य गताब्द संवत् १८६५ मिती फाल्गुण बुदी ६ वार आदित्यवार । श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे हिसारपट्टे भट्टारक श्री त्रिभुवनकीर्तिदेवात्पट्टे भट्टारक श्री क्षेमकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री सहसकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री महीचन्ददेवा तत्पट्टे भट्टारक देवेन्द्रकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक जगतकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक ललितकीर्ति वर्तमाने पिंडि लिमत । अग्रवालज्ञाते सहर बारी धर्मसूरति धर्म्मधितारं सुश्रावक पुण्यप्रभावक धर्म्मज्ञः लाला दुनीचन्द तत्पुत्र लाला गज्जमल तत्पुत्र लाला पुसामल तत्पुत्र गंगादास तत्बंधु बहालसिंह तेनेदं अढाईद्वीप पूजा लिखायितवा दत्तं तेन ज्ञानावर्णी कर्म्मक्षै निमित्तार्थं शास्त्र स्थापितु ।

पं० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी तथा उनके शिष्य सुखराम ने धर्मपुरा के पार्श्वनाथ चैत्यालै स्थापितु ।

६०५५. **सार्द्ध द्वय-द्वीप**—× । पत्र सं०१०२ । आ० १०½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल× । अपूर्ण । वेष्टन सं० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—सं० १६२६ या १६६१ की प्रति से प्रतिलिपि की गई है । पं० आशाराम ने भरतपुर में प्रतिलिपि की थी ।

६०५६. **साढ़द्वय द्वीप पूजा**—× । पत्र सं० १६६ । आ० १३×७½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १६०१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मंदिर अलवर ।

६०५७. **प्रति सं० २** । पत्रसं० १२३ । आ० १०⅝×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

६०५८. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० ३१५ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले० काल सं० १८७३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

६०५९. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० ६३ । आ० ११⅝×६⅜ इञ्च । ले०काल सं० १८७६ पौष सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५१ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

६०६०. **सिद्धकूट पूजा**—× । पत्रसं० १० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८८७ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक) ।

६०६१. **सिद्धक्षेत्र पूजा—दौलतराम** । पत्रसं० ८५ । आ० १०½×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं० १८६४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

विशेष—**अन्तिम पद**—

संवतसर दस आठ सत नव्वेचार सुओर ।
असुनीसुतदोयज भलो रविवार सिर मोर ।।४४ ।।
तादिन पूजा पाठ करि पढ़ै सुनै जे जेव ।
ते पावै सुख स्वासतें निजआतम रस पीव ।।४५।।
सोभानन्द सुनन्द हो नंदन सोहनलाल ।
ताको नंद सुनन्द है दौलतराम विसाल ।।४६।।

६०६२. **सिद्धक्षेत्र पूजा—प्रकाशचन्द** । पत्रसं० ४७ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं० १६१६ । ले०काल सं० १६४५ । । पूर्ण । वेष्टन सं० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

६०६३. **सिद्धक्षेत्र पूजा**—× । पत्रसं० १८ । आ० १०½×६⅝ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १६३६ आसोज सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा ।

६०६४. **सिद्धक्षेत्र पूजा**—× । पत्रसं० १६ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १६३६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अग्रवाल नैणवा ।

६०६५. **प्रति सं० २** । पत्रसं० १८ । ले०काल सं० १६३६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

विशेष—लोचनपुर (बैराठ) में प्रतिलिपि हुई थी।

६०६६. सिद्धचक्र पूजा—× । पत्र सं० १८ । आ० १३×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९३६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

६०६७. **सिद्धक्षेत्र पूजा**—× । पत्र सं० ६ । आ० ११×८½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

६०६८. **सिद्धक्षेत्र मण्डल पूजा—स्वरूपचन्द** । पत्र सं० १६ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९१६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६०६९. **सिद्धचक्र पूजा—पं० आशाधर** । पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

६०७०. **सिद्धचक्र पूजा—धर्मकीर्ति** । पत्र सं० १३६ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

६०७१. **सिद्धचक्र पूजा—ललितकीर्ति** । पत्र सं० ६६ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

६०७२. **सिद्धचक्र पूजा—भ. शुभचन्द्र** । पत्र सं० ७० । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८२४ मंगसिर सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सोगानी मन्दिर करौली ।

विशेष—पत्र अलग अलग हैं ।

६०७३. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ६८ । आ० ९½×६ इञ्च । ले० काल सं० १९२६ शाके । पूर्ण । वेष्टन सं० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

६०७४. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० १० । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

६०७५. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० ८ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल सं० १५८३ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

६०७६. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० २३ । आ० १२½×८½ इञ्च । ले० काल सं० १९८५ ज्येष्ठ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६०७७. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० १९ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—समयरससमग्रं पूर्णभावं विभावं,

जनितसुशिवसारं यः स्मरेत् सिद्धचक्रं ॥
अखिल नर सुपूज्यं सौभचन्द्रादि सेव्यं ।
भजति ..... ॥

६०७८. **सिद्धचक्र पूजा—संतलाल** । पत्रसं० १३१ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १९६१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीरजी बूंदी ।

विशेष—इन्दौर में प्रतिलिपि हुई थी ।

६०७९. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० १०५ । आ० १२½×७½ इञ्च । ले०काल सं० १९८६ आषाढ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

विशेष—अजमेर वालों के चौंवारा में जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

६०८०. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० १-१०३ । आ० १३×८ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १५७ र । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

६०८१. **प्रतिसं० ४** । पत्र सं० १४३ । आ० १३×८ इञ्च । ले० काल सं० १९८७ कार्तिक सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५८ र० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

६०८२. **प्रतिसं० ५** । पत्र सं० २५१ । आ० ८×६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक) ।

६०८३. **प्रतिसं० ६** । पत्र सं० १५३ । आ० १३×८½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—पत्र सं० १२४ से आगे २६ पृष्ठों में पंचमेरु एवं नंदीश्वर पूजा दी गयी है ।

६०८४. **सिद्धचक्र पूजा**—× । पत्र सं० ६१ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९८१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन स० पंचायती मन्दिर अलवर ।

६०८५. **सिद्ध पूजा**—× । पत्र सं० ४ । आ० १०½×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७२३ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६०८६. **सिद्ध पूजा**—× । पत्र सं० ७ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक) ।

६०८७. **सिद्ध पूजा**—× । पत्रसं० २ । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३८१/३७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

६०८८. **सिद्ध पूजा भाषा**—× । पत्रसं० ५ । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक) ।

६०८६. **सिद्ध भूमिका उद्यापन**—**बुधजन**। पत्रसं० ४। आ० १२½×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र० काल सं० १८०६। ले०काल सं० १८६३। पूर्ण। वेष्टन सं० ५२७। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हूंगरपुर।

६०६०. **सुगन्ध दशमी पूजा**—×। पत्रसं० ८। आ० ६×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर मालपुरा (टोंक)।

६०६१. **सुगन्ध दशमी व्रतोद्यापन**—×। पत्र सं० १०। आ० ८×६½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

६०६२. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० १०। आ० ८×६½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५७०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

६०६३. **सूतक निर्णय**—**सोमसेन**। पत्र सं० १६। आ० ६×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-विधान। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

६०६४. **सूतक दर्पण**—×। पत्रसं० १। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-विधान शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १००। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

६०६५. **सोनागिरि पूजा**—×। पत्रसं० ८। भाषा-हिन्दी। विषय—पूजा। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

६०६६. **सोनागिरि पूजा**—×। पत्रसं० ८। आ० ६½×४½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

६०६७. **सोनागिरि पूजा**—×। पत्र सं० ५। आ. ६×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल सं० १८८० फागुण बुदी १३। ले० काल सं० १९५६। पूर्ण। वेष्टन सं० ५६८। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

६०६८. **सोलहकारण उद्यापन**—**सुमतिसागर**। पत्रसं० १६। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले०काल सं० १८६७। पूर्ण। वेष्टन सं० २५। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)।

विशेष—नाथूराम साह ने प्रतिलिपि करवाई थी।

६०६९. **सोलहकारण उद्यापन**—**अभयनन्दि**। पत्र सं० २७। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८१७ वैशाख बुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० ४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—सरोज नगर में सुपार्श्व चैत्यालय में पं० आलमचन्द के शिष्य जिनदास ने लिखा।

६१००. सोलहकारण उद्यापन—× । पत्र सं २० । आ० ६½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

६१०१. सोलह कारण जयमाल—भ० **देवेन्द्रकीर्ति** । पत्र सं० २३ । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल १६४३ । ले० काल १८६० । पूर्ण । वेष्टन सं० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

६१०२. सोलहकारण जयमाल—× । पत्र सं० १६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

६१०३. सोलहकारण जयमाल—× । पत्र सं० १० । आ० १०½×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १७५४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी

प्रारम्भ—

सोलहकारण पडयमि गुणगण सायरहं ।
पणवपिण तित्थकरं असुह दूवयंकर ॥

६१०४. सोलहकारण जयमाल—**रइधू** । पत्र सं० ७ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५६ × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बड़ा बीसपंथी मन्दिर दौसा ।

६१०५. सोलहकारण जयमाल—× । पत्र सं० २२ । आ० ६½×६ इञ्च । भाषा—प्राकृत-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

विशेष—गाथाओं पर हिन्दी अर्थ दिया हुआ है ।

६१०६. सोलहकारण जयमाल—× । पत्र सं० २८ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती करौली ।

विशेष—रत्नकरंड एवं अकृत्रिम चैत्यालय जयमाल भी है ।

६१०७. सोलहकारण पूजा—× । पत्र सं० ११ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक) ।

६१०८. सोलहकारण पूजा—× । पत्र सं० ४२ । आ० १२×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १९३६ आसोज बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

विशेष—हीरालाल बड़जात्या ने टोंक में लिखवाया था ।

६१०६. **सोलहकारण पूजा विधान—टेकचन्द**। पत्रसं० ६। आ० ८×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा विधान। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर।

६११०. **प्रतिसं० २**। पत्र सं० ५१। आ० १०×५½ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोट्यों का नैणवा।

विशेष—भट्ट शिवलाल ने प्रतिलिपि की थी।

६१११. **प्रति सं० ३**। पत्रसं० ७५। आ० १०½×५½ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा।

६११२. **प्रतिसं० ४**। पत्रसं० ४६। आ०१२½×६½ इञ्च। ले०काल सं० १६६७ चैत सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० १३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

६११३. **सोलहकारण पूजा**—× । पत्रसं० २७। आ० १०×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल× । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २३५/३२५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

६११४. **सोलहकारण पूजा**—×। पत्रसं० २-१७। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

६११५. **सोलहकारण मण्डल पूजा**—×। पत्रसं० ४०। आ० ११×८ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल × । ले०काल सं० १६११ ज्येष्ठ बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० ४/६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेष—मारोठ में भूंथाराम ने लिखवाया था।

६११६. **सोलहकारण मण्डल विधान**—× । पत्रसं० ८०। आ० ११½×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल × । ले०काल सं० १६५४ सावण बुदी २ । पूर्ण। वेष्टन सं० १३६४। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६११७. **सोलहकारण व्रतोद्यापन पूजा**—× । पत्रसं० १८। आ० ११×७ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा स्तोत्र। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १५३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

६११८. **सोलहकारण व्रतोद्यापन पूजा**—×। पत्रसं० ३२। आ० १०×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-पूजा। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ७८ ७८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा।

६११६. **सोलहकारण व्रत पूजा विधान**—×। पत्रसं० ६। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ६६-६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बड़ा बीसपंथी मन्दिर दौसा।

६१२०. सौख्य काव्य व्रतोद्यापन विधि- ×। पत्रसं० ६। आ० १०½×५¼ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ६११। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

६१२१. संथारा पोरस विधि—×। पत्र सं० १। आ० १०×४½ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय—विधान। ले० काल १६४३। पूर्ण। वेष्टन सं० ६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी।

विशेष—पठनार्थ विरागी रूपाजी।

६१२२. संथारा विधि—×। पत्र सं० १२। आ० १०×४½ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-विधान। र०काल ×। ले०काल। अपूर्ण। वेष्टन सं० ४६६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—टब्बा टीका सहित है।

६१२३. स्तोत्र पूजा—×। पत्रसं० १ से ५। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

६१२४. स्तोत्र पूजा—×। पत्र सं० ६। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ७२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

६१२५. स्नपन विधि—×। पत्र सं० ५। भाषा—संस्कृत। विषय-विधि। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डावालों का डूंगरपुर।

६१२६. स्नपन विधि वृहद्—×। पत्रसं० १५। भाषा-संस्कृत। विषय—विधान। र०काल ×। ले० काल सं० १५५७ कार्तिक सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० २३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

६१२७. होम एवं प्रतिष्ठा सामग्री सूची—×। पत्रसं० २०। आ० १२×५½ इंच। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। विषय—पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २०७-११७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

६१२८. होम विधान—आशाधर। पत्रसं० ३। आ० १०×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा विधान। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३८१। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६१२९. प्रति सं० २। पत्रसं० ३। आ० १२×४½ इंच। ले० काल सं० १६४० चैत सुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० २५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

विशेष—पंडित देवालाल ने चाटसू में प्रतिलिपि की थी।

६१३०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६। आ० १२×५½ इंच। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३२१-१२०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

६१३१. होम विधान—×। पत्रसं० १०। आ० १०½×४½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६१३२. होम विधान—×। पत्र सं० ६। आ० ८$\frac{1}{2}$ × ६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-विधान। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ११७५। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६१३३. होम विधान—× । पत्र सं० २१। आ० १२×७ इञ्च । भाषा-प्राकृत-संस्कृत। विषय-विधान। र० काल × । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टनसं० ८०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

६१३४. होम विधान—×। पत्रसं० २-८। भाषा-संस्कृत। विषय-विधान। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ४३६/३८७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

६१३५. होम विधि—× । पत्रसं० ८। आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—संस्कृत । विषय-विधान। र० काल × । ले०काल। पूर्ण। वेष्टन सं० ६२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर।

६१३६. होम विधि—× । पत्रसं० ६३। आ० ६×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत विषय-विधान। र०काल × । ले०काल सं० १६६०। पूर्ण। वेष्टन सं० १७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ भोंगान बूंदी।

—: ❀ :—

गुटका -- संग्रह

(भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर)

६१३७. **गुटका सं० १** । पत्रसं० ७० । आ० १२×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८३४ माह सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनसं० २३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—विभिन्न पाठों का संग्रह है । मुख्यतः खण्डेलवालों की उत्पत्ति, ८४ गोत्र तथा निम्न रास हैं ।

भविष्यदत्त रास — अ० रासानुक्र

सुदर्शन रास — ,,

श्रीपाल रास — ,,

६१३८. **गुटका सं० २** । पत्रसं० १३१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत-प्राकृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४२ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है । गुटका प्राचीन है ।

६१३९. **गुटका सं० ३** । पत्रसं० १६८ । आ० ८×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११६ ।

विशेष—ब्रह्म रायमल्ल कृत विभिन्न रासाओं का संग्रह है ।

६१४०. **गुटका सं० ४** । पत्र सं० ११५ । आ० ६½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २२७ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६१४१. **गुटका सं० ५** । पत्र सं० ७६ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १६७३ चेत सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४१ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

६१४२. **गुटका सं० ६** । पत्रसं० ५८ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४२ ।

विशेष—विविध पूजाओं का संग्रह है ।

६१४३. **गुटका ७** । पत्रसं० १२८ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८०७ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६३ ।

विशेष—

मुख्य पाठ निम्न प्रकार है--

नाम ग्रंथ	नाम	भाषा
१—मधु मालती कथा—	चतुर्भुज	हिन्दी
		ले० काल सं० १८०७ ।

गुटका संग्रह]

२—दिल्ली के बादशाहों के नाम—×।

६१४४. गुटका सं० ८। पत्रसं० १६०। आ० ६½ × ६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३६४।

विशेष—स्तोत्र, पूजा एवं हिन्दी पदों का संग्रह है।

६१४५. गुटका सं० ६। पत्र सं० २७५। आ० ८½ × ६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल सं० १६६७ मंगसिर सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन सं० ३६५।

विशेष—निम्न प्रकार संग्रह है—

नाम ग्रंथ	ग्रंथ कर्त्ता
समयसार	बनारसीदास
सूक्ति मुक्तावली	,,
कल्याण मन्दिर स्तोत्र भाषा	,,
जकडी	दरिगह
ज्ञान पच्चीसी	बनारसीदास
कर्मछत्तीसी	,,
अध्यात्मबत्तीसी	,,
दोहरा	आलूकवि
द्वादशानुप्रेक्षा	—

६१४६. गुटका सं० १०। पत्रसं० २०२। आ० ६ × ५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। र० काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ५०२।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है।

हर्षचन्द्र आदि कवियों के पदों का संग्रह है। पद संग्रह की दृष्टि से गुटका महत्वपूर्ण है।

६१४७. गुटका सं० ११। पत्रसं० ४६। आ० ५ × ४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। र० काल × । ले० काल सं० १८७६। अपूर्ण। वेष्टन सं० ५०३।

विशेष—स्तोत्र एवं अन्य पाठों का संग्रह है।

६१४८. गुटका सं० १२। पत्र सं० १०८। आ० ८½ × ५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ५०४।

विशेष—गुणस्थान चर्चा आदि है।

६१४९. गुटका सं० १३। पत्र सं० ११८। आ० १० × ५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ५०७।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

समयसार — बनारसीदास

महावीरस्तवन — समयसुन्दर

(वीर सुनो मेरी बीनती कर जोड़ि है कहो
मननी बात बालकनी परिविनऊं)

६१५०. गुटका सं० १४ । पत्रसं० ८८ । आ० ५×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५०८ ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । पूजा पाठ संग्रह है ।

६१५१. गुटका सं० १५ । पत्रसं० २०० । आ० ६½×६½ इंच । भाषा—हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं० १८१२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५१ ।

विशेष—स्तोत्र एवं सामान्य पाठों के अतिरिक्त क्षमा बत्तीसी, (समय सुन्दर), जीव विचार टब्बार्थ सहित, विचारषड्त्रिंशिका टब्बार्थ, पद संग्रह (भव सागर) सीमंधर स्तवन (कवि कमल विजय), धर्मनाथ स्तवन, (आनंदघन) ।

गुटका श्वेतांबरीय पाठों का है ।

६१५२. गुटका सं० १६ । पत्रसं० १५८ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५३ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है । गुटका जीर्ण है ।

६१५३. गुटका सं० १७ × । पत्र सं० ३३ । आ० ५×३½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७७४ चैत सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५४ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

१—शत्रुंजय रास	—	समयसुन्दर
२—मंडोवर पार्श्वनाथ स्तवन	—	सुमति हेम
३—ऋषभदेवस्तवन		—

६१५४. गुटका सं० १८ । पत्र सं० ७३ । आ० ५½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १५७५ भादवा सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं ५५५ ।

विशेष—विभिन्न ग्रंथों में से पाठ हैं सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६१५५. गुटका सं० १९ । पत्रसं० १४४ । आ० ६½×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल सं० १८०७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५७ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

भक्तामर, एकीभाव, सूक्तिमुक्तावली, नीतिशतक (भर्तृहरि) शृंगारशतक (भर्तृहरि) कविप्रिया (केशवदास) ।

६१५६. गुटका सं० २० । पत्र सं० ६७ । आ० ११×७ इञ्च । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५८ ।

विशेष—सामायिक आदि सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६१५७. गुटका सं० २० । पत्र सं० १४० । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १८५८ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५९ ।

निम्न पाठों का संग्रह है—

भविष्य दत्त कथा	ब्र० रायमल्ल
श्रीपाल रास	

सुदर्शन रास	ब्रह्मराय मल्ल	
निर्दोष सप्तमी कथा	,,	
प्रद्युम्न रास	रायमल्ल	
नेमीश्वर रास	,,	
हनुमत चौपई	,,	
शालिभद्र चौपई	जिनराज सूरि	
शीलपच्चीसी	—	
स्थूलभद्र को नव रस	—	
अकलंकनिकलंक चौपई	म० विजयकीर्ति	र०काल सं० १८२४

६१५८. गुटका सं० २१ । पत्रसं० ७० । आ० ५ × ४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । ले०काल सं०–१७८४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६० ।

विशेष—चौरासी बोल—हेमराज के तथा पूजा–पाठ संग्रह है ।

६१५९. गुटका सं० २२ । पत्र सं० १५६ । आ० ५½ × ३½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल–× । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६१ ।

विशेष—पदों का संग्रह है ।

६१६०. गुटका सं० २३ । पत्रसं० ८ । आ० ८ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं०—१८८६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६२ ।

विशेष—नेमिनाथ के नवमंगल एवं पाठ आदि हैं ।

६१६१. गुटका सं० २४ । पत्रसं० ४८ । आ० ७½ × ५ इञ्च । भाषा–हिन्दी संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६३ ।

विशेष—आयुर्वेदिक पाठों का संग्रह है । इसके अतिरिक्त २४ पत्र में काल ज्ञान सटीक है । हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

६१६२. गुटका सं० २५ । पत्रसं० ६२ । आ० ५½ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८८८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६४ ।

विशेष—गोम्मटसार में से चर्चाओं का संग्रह है तथा पद्मावती पूजा भी दी हुई है ।

६१६३. गुटका सं० २६ । पत्रसं० २४२ । आ० ६½ × ६½ इञ्च । भाषा–संस्कृत, हिन्दी । ले० काल सं० १७१६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६५ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

भक्तामर स्तोत्र, तत्वार्थ सूत्र एवं पूजाओं के अतिरिक्त भाउ कृत रविव्रत कथा, ब्र० रायमल्ल कृत नेमिनाथ रास एवं शालिभद्र चौपई आदि का संग्रह है ।

६१६४. गुटका सं० २७ । पत्र सं० ८४ । आ० ३ × ३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । ले०काल सं० १६०१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६६ ।

विशेष—स्तोत्र आदि का संग्रह है तथा अंत में कुछ मन्त्रों का भी संग्रह है ।

६१६५. गुटका सं० २८ । पत्र सं० २६५ । आ० ८$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८८५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६७ ।

विशेष—निम्न प्रकार संग्रह हैं—

	पत्र
इन्द्रजालविद्या	१—४२ प्रारम्भ में
चक्रकेवली	१—२०
शकुनावली	२१-४६
संक्रांति विचार-	
असोदू का शकुन	७६ पत्र तक
कोक शास्त्र	६८ पत्र तक
संवत्सर फल	
सामुद्रिक शास्त्र	१४६ तक
ससार वत्तनिका	१५० तक
रमल शास्त्र	१७३ तक

आगे जन्म कुण्डली आदि भी हैं ।

गुटका महत्वपूर्ण है ।

६१६६. गुटका सं० २६ । पत्रसं० ३७१ । आ० ८$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १७२८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५६८ ।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रह है ।

नाम ग्रंथ	ग्रंथकार	भाषा	रचना सं०	पत्रसं०	विशेष
पार्श्वनाथरास	कपूरचन्द	हिन्दी	१६६७	३८-५६	—
नेमीसुर का रास	पुण्यरत्न	,,	—	६०-६४	६४ पद्य
जैनरास	—	,,	—	६५-८०	—
प्रद्युम्नरास	ब्र० रायमल्ल	,,	—	८१-१०१	—
त्रैलोक्य स्वरूप चौपई	सुमतिकीर्ति	,,	१६२७	१०१-११६	—
शील बत्तीसी	यशकुमल	,,	—	—	पत्र सं० नहीं लगी है
भविष्यदत्त कथा	ब्र० रायमल्ल	,,	—	११७-७३	—
नंद बत्तीसी	विमल कीर्ति	,,	१७०६	१७४-१८१	—
निर्दोष सप्तमी कथा	ब्र० रायमल्ल	,,	—	१८१-८५	—
यशोधर चउपई	—	,,	—	१६५-२०६	—
		लिपिकाल	सं० १७२८	जीवनपुर मध्ये लिपिकृतं ।	
आदित्यवार कथा	भाउ कवि	,,	—	२२०-२२६	—

सीतासतु	भगौतीदास	हिन्दी पद्य	१६८४	२३०-२७० आषाढ सुदी ३	
ज्येष्ठ जिनवर कथा	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी	१६२५	२७१-७४ सांभर में रचना की गयी थी	—
चन्दनमलयागिरि कथा	चन्द्रसेन	,,	—	२७५-८५	—
मृगीसंवाद	देवराज	,,	१६६३	२८६-३०१	—
वसुधरि चरित्र	श्री भूषण	,,	१७०६	चैत सुदी ९ रविवार ३०२-३२१	—
हनुमंत कथा	ब्र० रायमल्ल	,,	—	३२२-५५	—
पाशाकेवली	—	,,	—	३५६-६०	—
मालीरास	जिनदास	,,	—	३६१-६४	—
गौतम पृच्छा	—	,	—	३६५-३७१	—

सीता सतु—भगौतीदास

आदि भाग—

ऊँकार नमौं धरि भाऊ, सुगति बरंगणि वरु जगराऊ ।
सारद पद पंकज सिर नाऊ, जिह प्रसादि रिधिसिधि निधि पाऊ ।।

गुरु मुनि महिंदसेन भट्टारक, भव संसार जलधि जल तारक ।
तासु चरण नमि होत अनंदो, बढइ बुधि जिम दुतिया चंदो ।।

मध्य भाग—

सोरठा—

सीय न हुइ भय भीय करे रूपि रावण घणे ।
हरि करि सरह खिसाय भूत प्रेत वेताल निसि । ५६।।

चौपई—

खग्गु उपसग्गु करइ आभा, सो सुमरइ चिति लछिमनरामा ।
गइय रैनि रवि उग्यौ दिनेसू, हुइ निरास घरि गयो खलेसू ।५०।।

वालु पीडत तेल न लहिये, फणि मस्तकिमणि जिवतन गहिये ।
सतिय पयोहर को करि छावइ बहुनि परसि तनि को जगि जीवइ ।।५८।।

अन्तिम—

बलि विक्रम नृप करन सम सुखर सुभा सुजाण ।
अकबर नंदण अति बली सयल जगति तिस आंण ।।६६।।

सोरठा—

देस कोसु गज बाजि जासु नमहि नृप छत्रपति ।
जहांगीर इक राजि सीता सतु भइ मनि कीया । ६७।।

गुरु गुण चंदुरिसिंदु बखानिए ।
सकल चन्दु तिह पट्टि जगतमहि जानिए ।

तासु पट्टि जस धामु खिमागुण मंडणो ।
पर हा गुरु मुणि महिंद सैण मैणद्रुम खंडणो ।।६८।।

अडिल्ल—

गुरु मुनि महिंदसैण भगौती, रिसि पद पंकज रैणु भगौती ।
कृष्णदास वनि तनुज भगौती, तुरिय गह्यौ अतु मनुज भगौती ।।६७।।

नगरि चूडिये वासि भगौती, जन्म भूमि चिरु आसि भगौती ।
अग्रवाल कुल वंस लगि, पंडितपदि निरखी मनि भगौती ।। ७०।।

चौपई—

जग्गनिपुर पुरपति अति राजइ, राइ पौरि नित नौबति बाजइ ।
बसहि महाजन धन धनवंत, नागरि नारि पवर मतिवंत ।।७१।।

मोतीहटि जिनभवनु विराजइ, पडिमा पास निरखि अघु भाजइ ।
श्रावक समुत सुजान दयाल, षट् जिय जानि करहि प्रतिपाल ।।७२।।

विनय विवेक देहि रिसि दानू, पंडित गुना करहि सनमानू ।
करि करुणा निरधन धनु देही, अति प्रवीण जगमाहि जसु लेही ।।७३।।
जिह जिनहर चौ संघ निवासू, सह कवि भगत भगौतीदासू ।
सीता सतु तिनि कह्यौ बखानी, छंद भेद पद सार न जानी ।।७४।।

दोहरा—

पढहि पढावहि सुनि मनहि, लिखहि लिखावहि गोइ ।
सुर नर नृप सुख पदु लहइ, मुकति वरहि हसि मोहु ।।७५।।

सोरठ—

बरसौ पावस मेहु बाजहु तूर अनंद के ।
दंपति करण सनेहु घर घर मंगल गाइयौ ।।७६।।
फुनि हां नवसतसह वसु चारिसु संवत जानिये ।
सादि सुकल ससि तीज दिवस भनि आनिए ।
मिथुन रासि रवि जोइ चन्दु दूजा गन्यौ ।
पर हां कविस भगौतीदासि आसि सीम सतु भन्यौ ।।६७७।।
इति श्री पद्म पुराणे सीता सतु संपूर्ण समापता ।
संवत् १७३० का द्वतीक भाद्रपद मासे कृष्ण ।
पक्षे एकादश्यां गुरुवासारे लिप्यकृतं महात्मा ।
जसा सुत कलला जोधपुरे मध्ये ।।

मृगी संवाद—(वेष्टन सं० ५६८)

अथ मृगी संवाद लिख्यते—

दूहा—

सकल देव सारद नमौ प्रणामू गौतम पाइ ।
राम भणौ रलिया मणौ, सहि गुरु तणौ पसाइ ।।१।।

जंबू द्वीप सुहावणो, महिधर मेर उत्तंग ।
जहिथे दक्षिण दिसा भली भरथ क्षेत्र सुचंग ।।२।।
नगर निरोपम तिहां वसै कलली पुर विरक्षात ।
देखी राजा नट नृपण, किती कहूं अवदात ।।३।।

मध्य भाग—

कोई नर एक जिमावै जाति, सहु कोई वसै एकणि पांति ।
परूसण हारी ब्यौरा करै, तिहके पाय सूयै थर हरै ।।११३।।
सांचा मासस नै देई आल, माथै मारै नान्हा बाल ।
सासू सूसरा नै जो दमै, सा नारी बागुलि होइ भमै ।।११४।।
घरि आवै चो निरधन पणो, जिनन दो लखै स्वामी तणो ।
सुखै हर्ष दुखै संताप, रहुंति लागै तिह नो पाप ।।११५।।

अन्तिम पाठ—

इहां थे मरि कहां जाइसी, एयौ भांजै सन्देह ।
केवली भाषा संभली, इहां थे मरि सब एह ।।२४७।।
जप तप संजम आदरो टाल्यो मैयै दुख ।
मुक्ति मनोरथ पामिसी, लहसी महुला सुख ।।२४८।।
संवत सोलसै तेसहै चैत्रसुदि रविवार ।
नवमी दिन भला भावस्यौ रास रच्यौ सुविचार ।।२४९।।
बीजागच्छ मांडण पवर पास सूर देवराज ।
श्री धननंदन दिन दिने, देउ आसीस सुकाज ।।२५०।।
इति मृगी संवाद कथा समाप्तं ।।

संवत् १७२३ का वर्षे मिति वदि ५ शुक्रवार लिखितं पांडे वीरू कालाडेहरामध्ये ।

वसुधरि चरित्र (वेष्टन सं० ५६८)

आदि भाग—

ऊंनमो वीतरागाय नमः

दोहडा—

सारद रामणि पय नमी गणपति लागो पाय ।
कहिसि कथा रलियावणी, गोतम तणा पसाय ।।१।।
जंबूदीप सुहावणो, लख जोजन विसतार ।
मध्य सुदरसण मेर है, दिखण दिसा सुखसार ।।२।।
भरतक्षेत्र जन भर तहां दिखण देस सुविसाल ।
वन वापी जिन भवन अति, नदी तीर सुभताल ।।३।।
कुसम नगर अति सोभतो कोट उतंग आवास ।
बाग बाप बहु बावडी तहां भोगी लील विलास ।।४।।

मध्य भाग—

अति आणंद हूको तिणावार, आणंद दोऊ वीर आपार ।
आय पहुंता तव तर वारि, गावै गीत सुभग नर नारि ।
बाजैं बाजा बहु अतिसार, अंगि उवटणा करैं कुमारि ।
जल सनानि जवादि अबीर, अरक उद्योत तिसो वसु धीर ॥
भोजन भगति भई सुमराइ, जिजन वृंद बहुत बणाय ।
मोदक मेवा मिठाइ पकवान, जीमै बाला वृद्ध जवान ॥
सीतल जल सुवास सवाद, पीवत तृषा और जाय विषाद ॥
त्रिपत्या इन्द्री तत्पर वैण, नर नारी स्नेह रस नैण ॥

अन्तिम भाग—

बाग बाप नदि ताल सुभ, शुभ थावग धर्म चेत ।
पोसो सामायक सदा, देव पूज गुरु हेत ।
अक्षर भात न जांणही हांसि तजो कविराव ।
सुणी कथा तैसी रची, लील कतूहल भाव ।
सतरासै निडोतरा काति सुभ गुरुवार ।
सेत सप्तमी कथा रची पढत सुणत सुखसार ।
एकसउ तरेपन दोहडा सोरठ ग्यारह सार ।
इक्यासी अर एक सत सुध चउपई सुढार ।
इति सुधरि चरित्र समाप्त ।

६१६७. गुटका सं० ३०. । पत्र सं० ३६६ । आ० ६½ × ५ इंच । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६६ ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है—

त्रेपन क्रिया पूजा
कर्मदहन पूजा
धर्म चक्र पूजा
वृहद् षोडशकारण पूजा
दशलक्षण पूजा
पद्मावती पूजा आदि

६१६८. गुटका सं० ३१ । पत्रसं० ४२० । आ० ६×६ इंच । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५७० ।

विशेष—पूजा पाठ स्तोत्र कथा आदि का संग्रह है ।

६१६९. गुटका सं० ३२ । पत्रसं० १२५ । आ० ८×६ इंच । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७१ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

मुख्य पाठ निम्न प्रकार है—

पारसनाथ की सहेलो—ब्रह्म नाथू
नेमिनाथ का बारहमासा—हर्षकीर्ति
देवेन्द्रकीर्ति जखडी —

६१७०. गुटका सं० ३३ । पत्रसं० ३७ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५७२ ।

विशेष—चौबीसठाणा चर्चा आदि का संग्रह है ।

६१७१. गुटका सं० ३४ । पत्र सं० ११८ । आ० १५×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल सं० १७६३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७६३ ।

विशेष—

यादवरास	पुण्यरत्न	भाषा हिन्दी	पत्र ६–१३
दानशील तप भावना	समयसुन्दर	,,	१०१

इनके अतिरिक्त अन्य स्तोत्र एवं पदों आदि का संग्रह है ।

६१७२. गुटका सं० ३५ । पत्र सं० १८४ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७४ ।

विशेष—

बावनी	छीहल	हिन्दी	रचना सं० १५८४	५३ पद्य
स्वप्नशुभाशुभ विचार	—	,,	—	पत्र ४६-५०
चतुर्विंशति जिनस्तुति	—	,,	—	५०–६५
बावनी	बनारसीदास	,,	—	१७२–११८

छीहल की बावनी का अन्तिम पद्य:—

चौरासी आगले सोज पनरह संवत्सर ।
शुक्लपक्ष अष्टमी मास कातिग गुरु वासर ।
हिरदै उपनी बुधे नाम श्रीगुरु को लीन्हो ।
सारद तणो पसाइ कवित संपूरण कीन्हो ।
तहा लगि वंस नाथ सुतन अग्रवाल पुर प्रगट रवि ।
बावनी वसुधा विस्तरी कर ककरण छीहल कवि ।।

६१७३. गुटका सं० ३६ । पत्र सं० ४२ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७५ ।

विशेष—गुणस्थान चर्चा का संग्रह है ।

६१७४. गुटका सं० ३७ । पत्रसं० ५७ । आ० ८½×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले०काल सं १७४८ पूर्ण । वेष्टनसं० ६७६ ।

विशेष—अबजद केवली पाशा है ।

६१७५. गुटका सं० ३८ । पत्रसं० १२ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी- । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५७७ ।

विशेष—१५६ पत्र हैं। बीच-बीच में चित्रों के लिये स्थान छोड रखा हैं मधुमालती कथा है।

६१७६. गुटका सं० ३६। पत्र सं० ३०६। आ० ६×४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी-संस्कृत। ले०काल १८३० श्रावण सुदी। पूर्ण। वेष्टन सं० ५७८।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है। बीच के बहुत से पत्र खाली है।

६१७७. गुटका सं० ४०। पत्रसं० २६४। आ० ५×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी-संस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ५७६।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह हैं।

६१७८. गुटका सं० ४१। पत्रसं० १० से २६४। आ० ७½×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १७६५ चैत सुदी १०। अपूर्ण। वेष्टन सं० ५८०।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रहहै—

धर्म परीक्षा	हिन्दी	मनोहर सोनी
ज्ञानचिन्तामणि	,,	मनोहरदास
चौबीस तीर्थंकर परिचय	,,	—
पंचाख्यान भाषा	,,	—
(मित्र लाभ एवं सुहृद भेद)	,,	—
प्रति सटीक है।		—

६१७६. गुटका सं० ४२। पत्रसं० ३१६। आ० ८½×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५८१।

विशेष—गुटके में पूजाएं स्तोत्र, एवं पद्य आदि का संग्रह है।

६१८०. गुटका सं० ४३। पत्रसं० १५०। आ० ६×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५८२।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

सम्यक्त्वकौमुदी, वृषभजिनस्तोत्र, प्रश्नोत्तररत्नमाला(शंकराचार्य), षोडशनियम एवं अन्य पाठ हैं। कुछ पाठ जैनेतर ग्रंथों में से भी है।

६१८१. गुटका सं० ४४। पत्रसं० १७८। आ० ५×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५८३।

विशेष—पद स्तोत्र एवं पूजा पाठ आदि का संग्रह है।

६१८२. गुटका सं० ४५। पत्र सं० ६८। आ० ६½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले० काल सं० १६४१। पूर्ण। वेष्टन सं० ५८४।

विशेष—यंत्रों एवं मंत्रों का संग्रह है। मुख्य मंत्र शत्रुचाटन, संतानोपचार, गर्भबन्धन मंत्र, वशीकरण, शत्रुकीलन, सर्पमंत्र, बालक के पेटबंध, आंखों की वशीकरण मंत्र, शाकिनी यंत्र, शल्यकोपचार आदि मंत्र दिये हुये है।

६१८३. गुटका सं० ४६। पत्रसं० २६०। आ० ७×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५८५।

विशेष – पूजा एवं स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

६१८४. गुटका सं० ४७ । पत्रसं० ४२ । आ० ८½ × ६ इञ्च । भाषा–संस्कृत–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५८६ ।

विशेष—स्तोत्र, पूजा, अमरकोश एवं आयुर्वेदिक नुस्खे आदि का संग्रह है ।

६१८५. गुटका सं० ४८ । पत्रसं० ३६ । आ० ६ × ४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५८७ ।

विशेष—नंददास की मानमंजरी है ।

६१८६. गुटका सं० ४९ । पत्र सं० ५० । आ० ६½ × ४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल सं० १८८५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५८८ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

नीतिशतक	हिन्दी	सवाई प्रतापसिंह
शृंगार मंजरी	,,	सवाई प्रतापसिंह

६१८७. गुटका सं० ५० । पत्रसं० १४२ । आ० ६½ × ६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५८९ ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र हिन्दी टीका सहित है । राजस्थानी भाषा है ।

६१८८. गुटका सं० ५१ । पत्रसं० ६८ । आ० ८ × ५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५९० ।

विशेष— पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है ।

६१८९. गुटका सं० ५२ । पत्रसं० ११० आ० ५ × ४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५९१ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है । गुटका जीर्ण है ।

६१९०. गुटका सं० ५३ । पत्र सं० ६२ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल सं० १८२० भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५९२ ।

निम्न प्रकार संग्रह है—

ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	भाषा	पद्य सं०	विशेष
आराधना प्रतिबोधसार	सकलकीर्ति	हिन्दी	५४	—
पोसह रास	ज्ञानभूषण	,,	—	—
मिथ्यादुक्कड़	ब्र० जिणदास	,,	२४	—
धर्मसरु गीत	पं० जिनदास	,,	—	—
जोगीरास	जिणदास	,,	४१	—
द्वादशानुप्रेक्षा	पं० जिनदास	,,	१२	—
,,	ईसर	,,	१२	—
पाणीगालण रास	ज्ञानभूषण	,,	३३	—
सीखामण रास	—	,,	१३	—

चहुंगति चूपई	—	हिन्दी	५२	—
नेमिनाथरास	अभयचन्द	,,	११७	—
संबोधन सत्तावणी भावना	वीरचन्द	,,	६७	—
दोहावावनी	पं० जिणदास	,,	—	—
जिनवर स्वामी विनती	सुमतिकीर्ति	,,	२३	—
गुणठाणागीत	ब्रह्मवर्द्धन	,,	१७	—
सिद्धचक्रगीत	अभयचन्द्र	,,	—	—
परमात्म प्रकाश	योगीन्दु	अपभ्रंश	१०१	—
ज्येष्ठ जिनवरनी विनती	ब्र० जिनदास	,,	१४	—
शोपन क्रियागीत	शुभचन्द्र	,,	७	—
मुक्तावलीगीत	—	,,	१२	—
आलोचना गीत	शुभचन्द्र	,,	२३	—
आचार्य रत्नकीर्ति वेलि	—	,,	—	—
पद संग्रह	—	,,	विभिन्न कवियों के पद	

६१६१. गुटका सं० ५४ । पत्रसं० ६२ । आ० ६×५½ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६३ ।

निम्न संग्रह है—

ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	भाषा	पद्य सं०	विशेष
गुर्वावलि	—	हिन्दी	४४	—
श्रेणिक पृच्छा	भ० गुणकीर्ति	,,	७२	—
चिंतामणि पार्श्वनाथ विनती	प्रभाचन्द्र	,,	१२	—
भावना विनती	ब्र० जिनदास	,,	—	—
गुणवेलि	भ० धर्मदास	,,	२८	—
जिनाष्टक	—	,,	७२	—
ऋषिमंडल स्तोत्र	—	संस्कृत	—	—
रोहिणीव्रत कथा	ब्र० ज्ञानसागर	हिन्दी	—	—

६१६२. गुटका सं० ५५ । पत्रसं० ७०। आ० ६×५ इंच । भाषा—संस्कृत, हिन्दी । ले०काल सं० १६५५ चैत्र बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६४ ।

विशेष—सर्वया बावनी एवं सुभाषित ग्रन्थ का संग्रह है ।

६१६३. गुटका सं० ५६ । पत्र सं० ११५ । आ० ५×४½ इंच । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६५ ।

विशेष—स्तोत्र, जोगीरासा, नाममाला आदि का संग्रह है ।

६१६४. गुटका सं० ५७ । पत्र सं० १२५ । आ० ५×५ इंच । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६६ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

नेमिनाथ रास	मुनि रत्न कीर्ति	हिन्दी
भक्तामर स्तोत्र	मानतुंग	संस्कृत
कल्याण मन्दिर	कुमुदचन्द	,,
एकीभाव	वादिराज	,,
विषापहार	धनंजय	,,
नेमिनाथ वेलि	ठक्कुरसी	हिन्दी
आदिनाथ विनती	सुमतिकीर्ति	,,
मनकरहा जयमाल	—	,,

६१९५. गुटका सं० ५८ । पत्र सं० २०३ । आ० ८½×५ इंच । भाषा—संस्कृत, हिन्दी । ले० काल सं० १६६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६७ ।

निम्न पाठों का संग्रह है—

कालावलि	—	—	—
चन्द्रगुप्त के स्वप्न	ब्र० राममल्ल	हिन्दी	—
चौबीस ठाणा	—		—
छियालीस ठाणा	—	,,	—
कर्मों की प्रकृतियां	—	,,	—
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वाति	संस्कृत	—
पंचस्तोत्र	—	,,	—
प्रद्युम्न रास	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी	ले० काल सं १७०४
सुदर्शन रास	,,	,,	र० काल सं० १६३७

६१९६. गुटका सं० ५९ । पत्र सं० ११४ । आ० ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत, हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल सं० १६५७ फागुण सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६८ ।

निम्न प्रकार संग्रह है—

संक्षेप पट्टावलि	—	
मूत्र परीक्षा	—	ले० काल सं० १८२६
काल ज्ञान	—	—
उपसर्गहर स्तोत्र	—	—
भक्तामर स्तोत्र	आ० मानतुंग	—
आयुर्वेद के नुस्खे	—	—

६१९७. गुटका सं० ६० । पत्र सं० १५२ । आ० ६×५½ इंच । भाषा—हिन्दी, संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६९ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र भाषा एवं अन्य पाठों का संग्रह है ।

६१९८. गुटका सं० ६१ । पत्र सं० १४० । आ० ६×६ इंच । भाषा हिन्दी । ले० काल सं० १८६० आसोज सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६०० ।

विशेष—आयुर्वेद शास्त्र भाषा है। ग्रन्थ अच्छा है।

अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

इति श्री दुजुलपुराणे वैद्य शास्त्र भाषा हकीम फारसी संस्कृत मसूत विरंचते चुरन समाप्तिता।

६१९९. गुटका सं० ६२। पत्रसं० ३५। आ० ७×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। र०काल ×। ले०काल सं० १६३९। पूर्ण। वेष्टनसं० ७५१।

विशेष—पं० खुशालचन्द काला द्वारा रचित व्रत कथा कोष में से दशलक्षण, शिखरजी की पूजा, कथा एवं सुगन्ध दशमी कथा है।

६२००. गुटका सं० ६३। पत्रसं० १७५। आ० ७×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ७५२।

निम्नपाठों का संग्रह है—

धर्मबुद्धि पाप बुद्धि चौपई	जिनहर्ष	हिन्दी	र० काल सं० १७४२
शालिभद्र चौपई	जिनराज सूरी	,,	१६७८
चन्द्रलेहा चौपई	रामबल्लभ	,,	१७२८ आसोज सुदि १०
हंसराज वच्छराज चौपई	जिनोदय सूरि	,,	ले० काल सं० १८६२। भुवनकीर्ति के शिष्य पं० गंगाराम ने प्रतिलिपि की थी।
कानडरे कहियारा।	—	,,	१७४७
मृगी संवाद चौपई	—	,,	अपूर्ण

६२०१. गुटका सं० ६४। पत्रसं० १५६। आ० ७×५½ इञ्च भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ७५३।

विशेष—पूजा स्तोत्र एवं पदों आदि का संग्रह है

६२०२. गुटका सं० ६५। पत्रसं० १६। आ० ७×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण वेष्टन सं० ७५५।

विशेष—व्याउला शब्द समूह संग्रह है। धातु एवं शब्द लिखे गये है।

६२०३. गुटका सं० ६६। पत्र सं० ८४। आ० ९×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल सं० १८४४। पूर्ण। वेष्टन सं० ७५६।

विशेष—बखतराम साह द्वारा रचित मिथ्यात्व खंडन नाटक है।

६२०४. गुटका सं० ६७। पत्रसं० १४२। आ० ८½×५½ इंच। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ७५७।

विशेष—आयुर्वेदिक नुस्खों की महत्वपूर्ण सामग्री है।

६२०५. गुटका सं० ६८। पत्र सं० १९५। आ० ६½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। ले०काल सं० १६४१। पूर्ण। वेष्टन सं० ७५८।

विशेष—अनुभूति स्वरूपाचार्य की सारस्वत प्रक्रिया है।

प्रशस्ति—निम्न प्रकार है—

संवत् १६४१ वर्षे भादवा सुदी १३ सोमवासरे धनिष्ठानक्षत्रे श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे नंद्याम्नाये भ० पद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे भ० शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० प्रभाचन्द देवा द्वितीय शिष्य रत्नकीर्तिदेवा तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री भुवनकीर्तिदेवा तत् शिष्य श्री जयकीर्तिदेवा सारस्वत प्रक्रिया लिखापितं । लिखतं डालूझांझरी छाजूका ।

६२०६. गुटका सं० ६६ । पत्रसं० ६६ । आ० ६×४½ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७५६ ।

विशेष—निम्न प्रकार संग्रह है । कल्याण मन्दिर भाषा, नेमजी की विनती एवं कानड कहियारानी चौपई आदि का संग्रह है ।

६२०७. गुटका सं० ७० । पत्रसं० २७ । आ० ७×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६० ।

विशेष—आयुर्वेदिक नुस्खों का संग्रह है ।

६२०८. गुटका सं० ७१ । पत्रसं० [illegible] । आ० ५½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६१ ।

विशेष—तत्वार्थसूत्र, स्तोत्र पद्मावती स्तोत्र, कथाओं, मुक्तावलीरास (सकलकीर्ति) सोलहकारण रास (सकलकीर्ति) धर्मगणि, गौतमअष्टच्छा आदि का संग्रह है ।

६२०९. गुटका सं० ७२ । पत्र सं० ६८ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी प्राकृत । ले०काल सं० १८५३ कार्तिक सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६२ ।

विशेष—सामायिक पाठ एवं आप्तमीमांसा (मूल) आदि का संग्रह है ।

६२१०. गुटका सं० ७३ । पत्रसं० ५० । आ० ५×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६३ ।

विशेष—व्रत विधान, एवं त्रिपंचाशत्क्रिया व्रतोद्यापन तथा क्षेत्रपाल विनती है ।

६२११. गुटका सं० ७४ । पत्रसं० ३० । आ० ६×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १८६८ मगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६४ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

शत्रुंजय मंडल, आदिनाथ स्तवन (पासचन्द सूरि) है ।

६२१२. गुटका सं० ७५ पत्रसं० २६ । आ० ५×३ इञ्च । भाष—हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६५ ।

विशेष—सुभाषित पद्यों का संग्रह है । पद्य सं० १६६ हैं ।

६२१३. गुटका सं० ७६ । पत्रसं० ५१ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६६ ।

विशेष—निम्न पद्यों का संग्रह है—

नेमिनाथ स्तवन	रूपचन्द	हिन्दी
विनती	रामचन्द्र	,,

आत्मसंबोध	—	हिन्दी
राजुलय पच्चीसी	—	,,
विनती	बालचन्द	,,
उपदेशमाला	—	,,
राजुलकी सज्झाय	—	,,

६२१४. गुटका सं० ७७ । पत्रसं० १०३ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६८ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठों आदि का संग्रह है ।

६२१५. गुटका सं० ७८ । पत्रसं० १७० । आ० ५½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६६ ।

विशेष—निम्न पूजा पाठों का संग्रह है देवसिद्ध पूजा, सोलहकारण पूजा, कलिकुंड पूजा, चिन्तामणि पूजा, नन्दीश्वर पूजा, सुगंधदशमी पूजा, जिनसहस्र नाम (जिनसेनाचार्य) एवं अन्य पूजाएं ।

६२१६. गुटका सं० ७९ । पत्रसं० १६२ । आ० ३½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७७१ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

स्तंभनक पार्श्वनाथ नमस्कार	संस्कृत	अभयदेव सूरि
अजितशांति स्तवन	,,	नन्दिषेण
अजित शांति स्तवन	,,	—
भयहर स्तोत्र	,,	—
आदिसप्त स्मरण	हिन्दी	—
भक्तामर स्तोत्र	संस्कृत	मानतुंगाचार्य
गौतम स्वामी रास	हिन्दी	र० काल सं० १४१२
नेमिनाथ रास	,,	—
नेमीश्वर फाग	,,	—

(श्वेताम्बरीय पाठों का संग्रह है)

६२१७. गुटका सं० ८० । पत्रसं० १४२ । आ० ८×७ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । पूर्ण । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७७२ ।

विशेष—महाकवि धनपाल की भविसय कहा संग्रहीत है इसकी लिपि सं० १६४३ ज्येष्ठ सुदी ५ की हुई थी ।

मेदनीपुर शुभस्थानो मडलाचार्य धर्मकीर्ति देवाम्नाये खन्डेलवालान्वये पाटनी गोत्रे आर्यका श्री सीलश्री का पठनार्थ ।

६२१८. गुटका सं० । पत्रसं० ८-१०२ । आ० ६½×३½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० सं० ७७३ ।

विशेष—हिन्दी के सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६२१६ गुटका सं० ८२ । पत्रसं० १२४ आ० ८½×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७७४ ।

विशेष––पं० श्रीचन्द रचित आत्मावलोकन ग्रंथ है ।

६२२०. गुटका सं० ८३ । पत्रसं० २४५ । आ० ८×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । ले०काल सं०१६५० चैत सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७७५ ।

विशेष · निम्न पाठों का संग्रह है—

जिनसहस्रनाम	संस्कृत	आशाधर
पंच स्तोत्र	,,	—
रत्नकण्ड श्रवकाचार	,,	समन्तभद्र
तत्वार्थसूत्र	,,	उमास्वामी
जीवसमास	हिन्दी	—
गुणस्थान चर्चा	,,	—
चौबीस ठाणा चर्चा	,,	—
भट्टारक पट्टावली	,,	—
खण्डेलवाल श्रावक उत्पत्ति वर्णन	,,	—
सतों का ब्योरा	,,	—
पट्टावली	,,	—

६२२१. गुटका सं० ८४ । पत्रसं० ८६ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल× । पूर्ण । वेष्टनसं० ७७६ ।

विशेष––सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६२२२. गुटका सं० ८५ । पत्रसं० ४६ । आ० ६½×५ इञ्च । भाषा–पुरानी हिन्दी । ले०काल सं० १५८० चैत्र सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७७७ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह—

उपदेशमाला	धर्मदासगणि
शीलोपदेश माला	जयसिंह मुनि
संबोह सत्तरि	जयशेखर
संबोध रसायण	नयचन्द सूरि

प्रशस्ति—निम्न प्रकार है—

संवत् १५८० वर्षे चैत्र वुदी ६ तिथौ वा० श्रीसागर शिष्य मु० रत्नसागर लिखतं श्री ब्राह्मणे स्थानतः श्री ह्रीरु कृते एषा पुस्तिका कृता ।

६२२३. गुटका सं० ८६ । पत्रसं० ७८ । आ० ६½×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । ले०काल सं० १८१७ द्व० सावण सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७७८ ।

विशेष—निम्न प्रकार संग्रहहै—

आयुर्वेदिक नुस्खे	—	हिन्दी	पत्र ११२–

जिनपंजर स्तोत्र	कमलप्रभ सूरि	संस्कृत	१३
शांतिनाथ स्तोत्र	—	,,	१४-१५
वर्द्धमान स्तोत्र	—	,,	१५
पार्श्वनाथ स्तोत्र	पद्मप्रभदेव	,,	१६-१७
चौबीस तीर्थंकर स्तवन	—	हिन्दी	१८२४
आदित्यवार कथा	—	,,	२५-४१
पार्श्वनाथ चिन्तामणि रास	—	,,	४५-४८
उपदेश पच्चीसी	रामदास	,,	४९-५३
राजुलपच्चीसी	विनोदीलाल	,,	५४-६२
कल्याण मन्दिर भाषा	बनारसीदास	,,	६२-७०

६२२४. गुटका सं० ८७। पत्रसं० ५४। आ० ७×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले०काल सं० १८३४। पूर्ण। वेष्टन सं० ७७६।

विशेष—मुख्य निम्न पाठों का संग्रह है—

भक्तामर स्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत
भक्तामर स्तोत्र भाषा	हेमराज	हिन्दी
आदित्यवार कथा	मु० सकलकीर्ति	हिन्दी
		(र० काल सं १७४४)
कृपणपच्चीसी	विनोदीलाल	हिन्दी

विशेष—आदित्यवार कथा आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

आदिभाग—

अथ आदित्यवार व्रत की कथा लिखते—
प्रथम सुमरि जिनवर चौबीस, चौदहली बैपन जेमुनीस।
सुमरों सारद भक्ति अनन्त, गुरु देवेन्द्रकीर्ति महंत।
मेरे मन इक उपज्यो भाउ, रविव्रत कथा कहन को चाउ।
मैं तुकहीन जु अक्षस करी तुम मुनीवर कवि नीकै धरी।
× × ×

अन्तिम पाठ—

हां जू संवत् विक्रमराइ भले सत्रहसौ मानौ।
ता ऊपर चवालीस जेठ सुदी दशमी जानौ।
वार जु मंगलवार हस्तुन छितु जु परीयौ।
तब यह रविव्रत कथा मुनेन्द्र रचना सुभ करीयौ।
बारबार हौं कहा कहौ रविव्रत फल जु अनन्त।
धरनेंद्रे प्रभु दया करी दीनी लछि अनन्त ॥१०६॥
गर्ग गोत्र अग्रवाल तिहु नगरी के जो वासी।
साहुमल को पुत्तु साहु भाऊ बुधि जुभासी।

तिन जु करी रविव्रत कथा भली तुकै जु मिलाई।
तिनिकैं बुधि मैं कीजियौ सोधे पूरे गुनवंत।
कहत मुनिराइजू, सकलकीर्ति उपदेश सुनी चतुर सुजानजू ॥१०७॥

इति श्री आदित्यवार व्रत की कथा संपूर्ण समाप्त। लिखितं हरिकृष्णदास पठनार्थं लाला हीरामनि ज्येष्ठ बुदी ६ सं० १८३४ का।

६२२५. **गुटका सं० ८८।** पत्रसं० ४६। आ० ८×६ इञ्च। **भाषा**–हिन्दी। ले० काल×। पूर्ण। **वेष्टन सं०** ७८०।

विशेष—प्रस्ताविक दोहा, तीर्थंकर स्तुति, भट्टारक विजयकीर्ति के शिष्यों का ब्यौरा, भट्टारक पट्टावली एवं पद संग्रह आदि है।

६२२६. **गुटका सं० ८९।** पत्र सं० ४–२६। आ० ८×६ इञ्च। **भाषा**–हिन्दी। ले०काल×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ७८१।

विशेष—शृंगार रस के ३६ से ३७६ तक पद्य हैं।

६२२७. **गुटका सं० ९०।** पत्र सं० ६०। आ० ८×६ इञ्च। **भाषा**–संस्कृत–हिन्दी। ले०काल×। पूर्ण। **वेष्टन सं०** ७८२।

विशेष—सोलहकारण भावना, षट्द्रव्य विवरण, षट्लेखा गाथा, नरक विवरण, त्रैलोक्य वर्णन, रामाष्टक, नेमिनाथ जयमाल, नंदीश्वर जयमाल, नवपदार्थ वर्णन, नीतिसार (समय भूषण), नंदिताढ्य छंद त्रिभंगी, प्रायश्चित पाठ आदि पाठों का संग्रह है।

६२२८. **गुटका सं० ९१।** पत्रसं० ७६। आ० ७×६ इञ्च। **भाषा**–हिन्दी। र० काल×। ले० काल×। पूर्ण। वेष्टन सं० ७८४।

विशेष—ब्र० रायमल्ल की हनुमंत कथा है।

६२२९. **गुटका सं० ९२।** पत्र सं० १०७। आ० ७$\frac{1}{2}$×४ इंच। **भाषा**-हिन्दी संस्कृत। ले० काल×। पूर्ण। **वेष्टन सं०** ७८५।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाओं का संग्रह है।

६२३०. **गुटका सं० ९३।** पत्रसं० ७५। आ० ८×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। **भाषा**-हिन्दी। र०काल×। ले०काल×। पूर्ण। वेष्टन सं० ७८६।

विशेष—अनेक कवियों के पदों का संग्रह है।

६२३१. **गुटका सं० ९४।** पत्रसं० १३०। आ० ५$\frac{1}{2}$×६ इंच। **भाषा** हिन्दी–संस्कृत। ले०काल×। पूर्ण। वेष्टन सं० ७८७।

विशेष—संस्कृत एवं हिन्दी में सुभाषित पद्यों का संग्रह है।

६२३२. **गुटका सं० ९५।** पत्र सं० २–३४। आ० ५$\frac{1}{2}$×५ इंच। **भाषा**–संस्कृत। ले०काल×। पूर्ण। वेष्टन सं० ७८८।

विशेष—आयुर्वेद के नुस्खों का संग्रह है।

६२३३. **गुटका सं० ९६।** पत्र सं० १२६। आ० ६×४$\frac{1}{2}$ इंच। **भाषा**-हिन्दी। ले०काल सं० १७५० आसोज सुदी १।। पूर्ण। वेष्टन सं० ७८९।

विशेष —निम्न प्रकार संग्रह है :—

पंचसंधि (प्रक्रिया कौमुदी) समयसुन्दर के पद एवं दानशीलतपभावना नेमिनाथ बारहमासा, ज्ञान-पच्चीसी (बनारसीदास) क्षमाछत्तीसी (समयसुन्दर) एवं विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है गुटका संग्रह की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

६२३४. गुटका सं० ६७। पत्र सं० ३१२। आ० ६½×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी-संस्कृत। **ले०काल** सं० १७०२ माह बुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० ७६०।

विशेष—जोबनेर में प्रतिलिपि की गई थी। निम्न रचनाओं का संग्रह है।

पंचस्तोत्र, तत्वार्थसूत्र, गुणस्थानचर्चा जोगीरासा, बड़ा कल्याणक, आराधनासार, चूनड़ीरास (विनय-चन्द्र), चौबीसठाणा, कर्मप्रकृति (नेमिचन्द्र) एवं पूजाओं का संग्रह है।

६२३५. गुटका सं० ६८। पत्रसं० २२६। आ० ८×४½ इञ्च। **भाषा**-हिन्दी। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ७६२।

विशेष—ब्र० रायमल्ल की हनुमंत कथा है।

६२३६. गुटका सं० ६६। पत्रसं० १८०। आ० ६×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। **ले०काल** सं० १६४२ फाल्गुण सुदी १ पूर्ण। वेष्टन सं० ७६३।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

प्रतिक्रमण	—	पत्र सं० १-८१
गुर्वावली	—	पत्र सं० ८२-८५
आराधनासार	—	—
मेघकुमारगीत (पूजो)	—	—

इत्यादि पाठों का संग्रह है।

६२३७. गुटका सं० १००। पत्रसं० १८५। आ० ७×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। ले०काल सं० १५७६ माघ सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन सं० ७६४।

विशेष—भयरोठा ग्राम में लिखा गया था। निम्न पाठों का संग्रह है—

स्थूलभद्र फागु प्रबन्ध	—	प्राकृत	२७ गाथा
उपदेश रत्नमाला	—	,,	२५ ,,
द्वादशानुप्रेक्षा	—	,,	४५ ,,
परमात्मप्रकाश	योगीन्दु	अपभ्रंश	३४२ पद्य
			(ले० काल सं० १५६१ आषाढ बुदी १)
प्रायश्चित्तविधि	—	संस्कृत	—
दशलक्षण पूजा	—	अपभ्रंश	—
सुभाषित	सकलकीर्ति	संस्कृत	३९० पद्य
द्वादशानुप्रेक्षा	जिनदास	हिन्दी	—

६२३८. गुटका सं० १०१। पत्रसं० ३१६। आ० १२×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। **ले०काल** × । पूर्ण। वेष्टन सं० ७६५।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ एवं स्तोत्रों के अतिरिक्त निम्न महत्वपूर्ण सामग्री और है—

अष्टाह्निका कथा	विश्वभूषण	
अष्टाह्निका रास	विनयकीर्ति	
अनन्तचतुर्दशी कथा	भैरू	र० काल सं० १७८७
चौरासीजाति की जयमाला	ब्र० गुलाल	
दशलक्षण कथा	औसेरीलाल	र० काल सं० १७८८
आदित्यवार कथा	—	
पुष्पाञ्जलि कथा	आचार्य गुणकीर्तिका शिष्य सेवक	—
सुदर्शन सेठ कथा	नन्द	र० काल १६६३
मृगांकलेखा चउपई	भानुचन्द	र० काल सं० १८२५
सम्यक्त्व कौमुदी	—	—
चौरासी जाति की जयमाल	ब्र० गुलाल	

आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

दोहा—जैन धर्म वेषन क्रिया दयाधर्म संयुक्त ।
इक्ष्वाक के कुल वंस में तीन ज्ञान उतपत्त ।।
भवा महोछव नेम को जूनागढ़ गिरिनार ।
जात चौरासी जैनमत जुरे छोहनी चार ।।

अन्तिम पाठ—

प्रगटे लछमी सोई धर्म लगै ।
करि जग्य विधान पुराण अरु दान निमित्त धनै खरचै अरु वढै ।
सुभ देहरे जंत्र सुबिंब प्रतिष्ठा सुभ मंत्र जंत्र सुमंत्र रचै ।।
अथवा कोई कारण मंगल चारण विवाह कुटंब अनंत पगै ।
कहि ब्रह्म गुलाल गहै लसो सो प्रगटै लक्ष्मी सोई धर्म लगै ।।
इति श्री चौरासी जाति की जयमाल सम्पूर्ण ।

६२३६. **गुटका सं० १०२** । पत्रसं० ५४ । आ० ७×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७१६ ।

विशेष—महापुराण चउपई (गंगादास) एवं अन्य पाठों का संग्रह है ।

६२४०. **गुटका सं० १०३** । पत्र सं० ३६ से ८४ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६७ ।

विशेष—दारुण सप्तक एवं महापुराण में से अभिकार कल्प है ।

६२४१. **गुटका सं० १०४** । पत्रसं० २२८ । आ० ६½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-प्राकृत-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६८ ।

विशेष -- मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

भक्तामर स्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामी	,,

समयसार नाटक	बनारसीदास	हिन्दी
वैद्यमनोत्सव	नयनसुख	"

६२४२. गुटका सं० १०५ । पत्र सं० ३६ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल सं० १८४४ सावण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६६ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

कृपणजगावण (ब्र० गुलाल) सामयिक पाठ तथा जोगीरास आदि ।

६२४३. **गुटका सं० १०६** । पत्र सं० १४६ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८०० ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

मधुमालती कथा	चतुर्भुजदास	हिन्दी पद्य सं० ६१६
अर्भपालरी बात		ले०काल शक सं० १८३६
वीरविलास	नथमल	हिन्दी
सावित्री कथा	—	हिन्दी गद्य
		ले०काल शक सं० १८४५

६२४४. **गुटका सं० १०७** । पत्र सं० २० से ३६ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८०१ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

वैद्यमनोत्सव कथा, मृगकपोत कथा एवं चन्दनमलयागिरि कथा ।

६२४५. **गुटका सं० १०८** । पत्र सं० १४–१२८ । आ० ५×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी संस्कृत । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन सं० ८०२ ।

विशेष—सामान्य पाठों के अतिरिक्त निम्न पाठों का संग्रह है—

परमात्म प्रकाश	योगीन्दु	
सप्ततत्त्वगीत	—	
चउदह गुणगीत	—	
बाहुबलि गीत	कल्याणकीर्ति	
नेमिनाथ वेलि	ठक्कुरसी	
पंचेन्द्रीवेलि	ठक्कुरसी	
पद	ठक्कुरसी	
छप	बूचा	
चभणां गीत	—	
धर्मकीर्ति गीत	—	
भुवनकीर्ति गीत	—	
विशालकीर्ति गीत	घेल्ह	
जसकीर्ति गीत	—	र०काल (सं० १६६०)

नेमीश्वर राजुल गीत	रत्नकीर्ति	—
जयकीर्ति गीत	—	—

९२४६. गुटका सं० १०९ । पत्रसं० ११८ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १७५४ चैत सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८०३ ।

विशेष--रविव्रत कथा (भाउ) पंचेन्द्रीबेलि, एवं कलका बत्तीसी आदि पाठों का संग्रह है ।

९२४७. गुटका सं० ११० । पत्रसं० ४० । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८०४ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

९२४८. गुटका सं० १११ । पत्रसं० १५२ । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८०५ ।

विशेष—पूजाएं, स्तोत्र, तत्त्वार्थसूत्र, कर्मप्रकृति विधान (हिन्दी) आदि पाठों का संग्रह है ।

९२४९. गुटका सं० ११२ । पत्र सं० ६० । आ० ८×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८०६ ।

विशेष—गुटका जीर्ण है । आयुर्वेदिके नुस्खों का संग्रह है ।

९२५०. गुटका सं० ११३ । पत्र सं० ७ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८०७ ।

विशेष—धर्मबुद्धि पापबुद्धि चौपई एवं ज्योतिससार भाषा का संग्रह है ।

९२५१. गुटका सं० ११४ । पत्रसं० ६३ । आ० ८×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १७६७ पौष सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८०८ ।

विशेष--भूधरदास कृत पार्श्वपुराण है ।

९२५२. गुटका सं० ११५ । पत्र सं० ६४ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २०९ ।

विशेष—सामान्य चर्चाओं के अतिरिक्त २५ आर्यदेशों के नाम एवं अन्य स्फुट पाठ हैं ।

९२५३. गुटका सं० ११६ । पत्रसं० १७४ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८१० ।

विशेष—बनारसीविलास, समयसार नाटक, सामायिकपाठ भाषा तथा भक्तामर स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

९२५४. गुटका सं० ११७ । पत्रसं० १३८ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८१२ पौष सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८११ ।

विषय—बनारसीदास कृत समयसार नाटक तथा अन्य पाठ विकृत लिपि में हैं ।

९२५५. गुटका सं० ११८ । पत्रसं० ५५० । आ० ६½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८१२ ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है—

सहस्रगुणिस पूजा	शुभचन्द्र	संस्कृत
सोलहकारण पूजा	—	,,
दशलक्षण धर्म पूजा	—	,,
कलिकुण्ड पूजा	—	,,
कर्मदहन पूजा	शुभचन्द्र	,,
धर्मचक्र पूजा	—	,,
तीस चौबीसी पूजा	शुभचन्द्र	,,

इनके अतिरिक्त प्रतिष्ठा सम्बन्धी सामग्री भी है।

६२५६. गुटका सं० ११६ । पत्र सं० १४६ । आ० ८×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८१३ ।

विशेष—सामान्य पूजा स्तोत्र एवं पाठों का संग्रह है ।

६२५७. गुटका सं० १२० । पत्रसं० ४१ । आ० ८×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८१४ ।

विशेष—दर्शन पाठ, कल्याण मन्दिर स्तोत्र एवं समाधान जिन वर्णन आदि पाठों का संग्रह है ।

६२५८. गुटका सं० १२१ । पत्रसं० २४ । आ० ५$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८१५ ।

विशेष—कप्टावलि, गतवस्तु ज्ञान, अंकविचार, कालज्ञान एवं तिथि मंत्र आदि है ।

६२५६. गुटका सं० १२२ । पत्र सं० ८६ । आ० ५$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले०काल सं० १८५६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८१६ ।

विशेष—नित्य पूजा पाठों का संग्रह है।

६२६०. गुटका सं० १२३ । पत्रसं० १६२ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८६७ ज्येष्ठ बुदी १३ पूर्ण । वेष्टन सं० ८१७ ।

विशेष—नाटक समयसार (बनारसीदास) तत्वार्थ सूत्र, अंपाल स्तुति आदि का संग्रह है ।

६२६१. गुटका सं० १२४ । पत्र सं० १५७ । आ० ६×३$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत, हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८१८ ।

विशेष—गुटके में स्तोत्र, अक्षरमाला, तत्वार्थसूत्र एवं पूजाओं का संग्रह है ।

६२६२. गुटका सं० १२५ । पत्रसं० १२६ । आ० ७$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२० ।

विशेष—जिनसहस्रनाम (आशाधर) एवं अंकुरारोपण, सकलीकरण विधान तथा अन्य पाठों का संग्रह है ।

६२६३. गुटका सं० १२६ । पत्र सं० १५३ । आ० ५×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल ×। पूर्ण । वेष्टन सं० ८२१ ।

विशेष—सामयिक पाठ, तत्वार्थसूत्र, समयसार गाथा, आराधनासार एवं समन्तभद्रस्तुति का संग्रह है ।

६२६४. **गुटका सं० १२७** । पत्रसं० १४६ । आ० ६ × इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२२ ।

विशेष--पूजाओं का संग्रह है ।

६२६५. **गुटका सं० १२८** । पत्रसं० ४२ । आ० ६ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२३ ।

विशेष—सुन्दरदास कृत सुन्दर शृंगार है ।

६२६६. **गुटका सं० १२९** । पत्र सं० ६-६२ । आ० ५½×४ इञ्च । **भाषा**-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८२५ ।

विशेष—रत्नावली टीका एवं शुकदेव दीक्षित वार्ता (अपूर्ण) है ।

६२६७. **गुटका सं० १३०** । पत्रसं० ६० । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२६ ।

विशेष—हिन्दी पद संग्रह है ।

६२६८. **गुटका सं० १३१** । पत्र सं० २५ । आ० ७½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८२७ ।

विशेष—हंसराज बच्छराज चौपई है ।

६२६९. **गुटका सं० १३२** । पत्र सं० ६६ । आ० ६×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२८ ।

विशेष--नेमिकुमार वेलि, सामायिक पाठ, भक्तिपाठ एवं गुर्वावलि आदि पाठों का संग्रह है ।

६२७०. **गुटका सं० १३३** । पत्रसं० ८६ । आ० ८½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८३० ।

विशेष---निम्न पाठों का संग्रह है—

कोकसार, रसराज (मनीराम) एवं फुटकर पद्य, दृष्टांत शतक, उषक चिमन (महाराज कुंवर सांवत सिंह) आदि रचनाओं का संग्रह है ।

६२७१. **गुटका सं० १३४** । पत्रसं० १६८ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८३३ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

मंत्र तंत्र, आदित्यवार कथा, जैनबद्री की पत्री, चौदस कथा (टीकम) ।

६२७२. **गुटका सं० १३५** । पत्रसं० २२८ । आ० ५×५ इञ्च । भाषा संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८३२ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठों का संग्रह है ।

६२७३. **गुटका सं० १३६** । पत्रसं० १०० । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८३६ ।

विशेष— सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६२७४. **गुटका सं० १३७** । पत्र सं० ६४ । आ० ७×५½ इञ्च । भाषा- हिन्दी । ले० काल सं० १८१० वैशाख सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८३७ ।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रह है—

श्रीपालरास—ब्र० रायमल्ल

प्रद्युम्नरास—ब्र० रायमल्ल

६२७५. **गुटका सं० १३८** । पत्र सं० १६५ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८३८ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

इश्वरी छंद	कवि हेम
स्थूलभद्र सज्झाय	—
पंचसहेली गीत	छीहल
बलभद्र गीत	अभयचन्द्र सूरि
अमर सुन्दरी विधि	—
चेतना गीत	समयसुन्दर
सामुद्रिक शास्त्र भाषा	—

इसके अतिरिक्त ज्योतिष संबंधी साहित्य भी है ।

६२७६. **गुटका सं० १३९** । पत्रसं० ४६८ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । विषय-पूजा संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८३९ ।

विशेष—सामान्य नित्य पूजाओं के अतिरिक्त धर्मचक्र पूजा, वृहद सिद्धचक्र पूजा, सहस्रनाम पूजा, तीस चौबीसी पूजा, वृहद् पंचकल्याणक पूजा, कर्मदहन पूजा, गणधरवलय पूजा, दशलक्षण पूजा, तीन चौत्रीसी पूजा आदि का संग्रह है ।

६२७७. **गुटका सं० १४०** । पत्रसं० ८४ । आ० ५½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८४० ।

विशेष -- विभिन्न प्रकार के मंत्र एवं यंत्रों का संग्रह है ।

६२७८. **गुटका सं० १४१** । पत्रसं० १७९ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८४१ ।

विशेष- निम्न पाठों का संग्रह है—

प्रद्युम्नरासो	ब्र० रायमल्ल
ज्येष्ठ जिनवर कथा	,,
निर्दोष सप्तमी व्रत कथा	,,
पद संग्रह	—

६२७९. **गुटका सं० १४२** । पत्रसं० ३४ । आ० ८½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १७२६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८४२ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है —

नेमिनाथ रास	ब्र० रायमल्ल

पद हेमकीर्ति

बैरी विसहर सारिखी ।

६२८०. गुटका सं० १४३ । पत्रसं० ८६ । आ० ६×५ इंच । भाषा संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८४३ ।

विशेष—सामान्य पूजा एवं स्तोत्रों का संग्रह है ।

६२८१. गुटका सं० १४४ । पत्र सं० २३ । आ० ७½×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८४५ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६२८२. गुटका सं० १४५ । पत्र सं० २८ । आ० १०½×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८४६ ।

विशेष—गुण स्थानचर्चा है ।

६२८३. गुटका सं० १४६ । पत्रसं० २४० । आ० ६½×५ इंच । भाषा–संस्कृत–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८४७ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

कल्याणमन्दिर स्तोत्र, पंच स्तोत्र, सज्जन चित्तवल्लभ, भामयिक पाठ, तत्वार्थसूत्र, वृहत् स्वयं–भू स्तोत्र, आराधनासार एवं पट्टावलि ।

६२८४. गुटका सं० १४७ । पत्र सं० ७२ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी, संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८४८ ।

विशेष—सामान्य ज्योतिष के पाठों का संग्रह है ।

६२८५. गुटका सं० १४८ । पत्र सं० १०८ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी, संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८४९ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६२८६. गुटका सं० १४९ । पत्र सं० ३१ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।वेष्टन सं० ८५० ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र, पद्मावती पूजा, एवं कविप्रिया का एक भाग है ।

६२८७. गुटका सं० १५० । पत्रसं० ६ । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल सं० १६२० माघ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८५१ ।

विशेष—लुकमान हकीम की नसीहतें हैं ।

६२८८. गुटका सं० १५१ । पत्रसं० १५ । आ० ८×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८५२ ।

विशेष—सोलह कारण पूजा एवं रत्नचक्र पूजाओं का संग्रह है ।

६२८९. गुटका सं० १५२ । पत्र सं० ६० । आ० ४½×३½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल सं० १६०१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८५३ ।

निम्न पाठों का संग्रह है—

युगादिदेव स्तोत्र जिनदर्शन सप्तव्यसन चौपई एवं हिन्दी पदों का संग्रह है ।

६२९०. गुटका सं० १५३ । पत्र सं० २६ । आ० ५½×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १८६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८५५ ।

विशेष—देवगुरुओं के स्वरूप का निर्णय है ।

६२९१. गुटका सं० १५४ । पत्रसं० ५४ । आ० ५×३½ इञ्च । भाषा- हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८५४ ।

निम्न प्रकार संग्रह है—

अष्टकर्मप्रकृति वर्णन पंचपरमेष्ठी पद एवं तत्वार्थसूत्र है ।

६२९२. गुटका सं० १५५ । पत्रसं० १६० । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १६४२ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८५६ ।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रह है ।

भविष्यदत्त रास	हिन्दी	ब्र० रायमल्ल
प्रद्युम्न रास	,,	ब्र० रायमल्ल
आदित्यवार कथा	,,	भाऊ
श्रीपाल रासो	,,	ब्र० रायमल्ल
सुदर्शन रास	,,	,,

बासली मध्ये लिखितं ब्र० हीरा

६२९३. गुटका सं० १५६ । पत्रसं० १६० । आ० ५×४ इंच । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८५७ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६२९४. गुटका सं० १५७ । पत्रसं० ८६ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८५८ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

पद्मावती स्तोत्र टीका मंत्र सहित कर्म प्रकृति ब्यौरा तथा घण्टाकर्ण कल्प, अष्टप्रकारी देवपूजा है ।

६२९५. गुटका सं० १५८ । पत्रसं० १८६ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८५९ ।

विशेष—भैया भगवतीदास के ब्रह्मविलास का संग्रह है ।

६२९६. गुटका सं० १५९ । पत्रसं० १९६ । आ० ७½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १७९७ पोष बुदी बुधवार । पूर्ण । वेष्टनसं० ८६० ।

विशेष—तत्वार्थसूत्र भाषा टीका एवं अ० रायमल्ल कृत नेमीश्वर रास है।

६२६७. गुटका सं० १६०। पत्रसं० २३४। आ० ७×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। ले०काल सं० १७२५ माघ बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० ८६१।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है।

सर्वार्थसिद्धि	—	पूज्यपाद
आलापपद्धति	—	देवसेन

६२६८. गुटका सं० १६१। पत्र सं० ६६। आ० ५×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ८६२।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है।

नीति शास्त्र	संस्कृत	चाणक्य
तेरहकाठिया	हिन्दी	बनारसीदास
इष्टछत्तीसी	,,	बुधजन
अध्यात्म बत्तीसी	,,	बनारसीदास
तत्वार्थ सूत्र	,,	उमास्वामी

६२६९. गुटका सं० १६२। पत्र सं० ६४। आ० ४×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ८६४।

विशेष—सामान्य पाठ, भक्तामर स्तोत्र मंत्र सहित एवं मंत्र शास्त्र का संग्रह है।

६३००. गुटका सं० १६३। पत्रसं० १८६। आ० ६×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ८६३।

विशेष—ब्रह्मविलास एवं बनारसी विलास के पाठों का संग्रह है। इसके अतिरिक्त रत्नचूडरास (र०काल सं० १५०१) एवं सुआ बहत्तरी भी है।

रत्नचूडरास --पद्य सं० ३१२

आदि अंत भाग निम्न प्रकार है---

प्रारम्भ दोहा—

सरस्वति देवि पाय नमी, मांगु चित पसाव।
रतनचूड गुण वर्णउं दान जेणइ जसु नाम ॥१॥
जंबूद्वीप मांहि अछइ, भरत क्षेत्र अतिचंग।
तामली नयरी तिहां, राजा अजित नरिंद ॥२॥
तिण नवरी जे जिन वसइ, करण अठारह लोक।
भोग पुरंदर भोगवइ, सुख संपति सुरलोक ॥३॥

चौपई—

सरोवर वाडि करी आराम, तिहां पाप विफरतु अभिराम।
विषध वृष छइ तिहि वन मांहि वसनइ वास वसइ परवाहि ॥४॥

पोह मिदर पोलि पगार, हार श्रोण नवि लामइ पार ।
चिसह रमण हर लोरणमाल, लंबानी परिभाक झमाल ॥५॥

चउरासी चउहट्टा अतिचंग, नव नव उछा नव नवरंग ।
कोटिधज दीसइ अति घणा, लाखेसरी नीन राही का मणा ॥६॥

मांडइ दोसी भविका पट्ट, भराया दीसइ सोनी दट्ट ।
माणिक चउक जब बहरी रह्या, हीरइ माणिक मोती सह्या ॥७॥

सुद दीया फोफलीया सोनार, नाई तेली न लहु पार ।
संबोली मरदठ घबिटि, एक माडइनी सत फडहट्टा ॥८॥

मध्य भाग—

हाथ घसाविउमाली पाहि. वल तउ कहि काइ छइ माहि ।
माहाराज सींभलिज्यो तम्हे, कुमर कहइ असरामण अम्हे ॥२८२॥

माली प्रीछवीउते तलइ, सूत्रधार आविउ ते तलइ ।
कुमर कहिए अम्हे मालिउसु गामि, कली पाइ थाउ माइ कामि ॥२८३॥

अन्तिम भाग—

नगर मांहि न्याय पेरज हुउ, खोटा लोक ते साचु थयउ ।
करी सजाइ वाले वाभणी, हुई बाहण तणी पुराणी ।
यम घंटा मोकला वीकरी, बालउ कुमर सबाहणज भरी ।
चाल्या बाहण बाथरइ भांणि, खेम कुसल पहुंता निर्वाणि ।
बाहण वस्तु उतारी घणी, आवीसकोडि हिव द्रव्यह तणी ।
हीर वीर धन रोवन बहु, साध्य लखिउ रण घंटा बहु ।
रण घटा नइ सुहग मंजरी, आमइ परणावइ रत्न सुन्दरी ।
नव नव उछव नव नव रंग, भोग भोग चइ अतिह सुचंग ।
तिण नगरी आव्या केवली, तिहां वादु संघ सर्व मिली ।

मणिचूड तिहां पूछइ सिउं, कहउ बेटा नउ करम हुई किसउं ।
रतनचूड नउ सबलउ विचार, पात्र दान दीयउ तिणिवार ।

दान प्रभावइ एव जि रिधि, दान प्रभावइ पामीइय सर्वसिधि ॥३०७॥
दानसील तप भावन सार, दान तणउ उत्तम विस्तार ।

दानइ जस कीरति विस्तरइ, दान दीयता दुरत भरइ ॥३०८॥
पनरइ एकोत्तरइ नीयनु संबंध, रत्नचूड नउ ए संबंध ।
बहुल बीज, भाइ बहू रनी, कवित नीयनु भणुरेवती ॥३०९॥

बड तप गच्छ रत्न सूरिंद उदभत कला अभिनउचंद ।
तास सेवइक इम उभरइ, षट् प द चरण कमल अणसरइ ॥३१०॥

सर्वसुख हुइ दूणइ भणइ, नर नारी जेई दूगुणइ ।
तेह घरि लखमी सदाइ भयइ, चंद सूरज जां निर्मल तपइ ॥३११॥

ए मंगल एहज कल्याण, भणउ भणावहु जां ससि भाण ।
रत्नचूडनउ चारित्रसार, श्री संघनइ करउ जय जयकार ॥३१२॥

इति श्री रत्न चूडरास समाप्तं ।

मिति बैशाख वदि ४ संवत् १८१७ का । वीर मध्ये पठनार्थं चिरंजीवि पंडित सवाईराम ॥

सुवा बहत्तरी (वेष्टन सं० ८६३)

सुवा बहत्तरी की कथा लिख्यते—

करि प्रणाम श्री सारदा, आपणी बुद्धि परमाण ।
सुक सप्तिक वार्तिक करी, नाई तै देवीदान ॥१॥

बीकानेर सुहावनो सुख संपति की ढोर ।
हिंदुथानि हिन्दु धरम, ऐसो सहर न और ॥२॥

तिहां तपै राजा करण, जंगल को पतिसाह ।
ताकै कुंवर अनूपसिंह, दाता सूर सुबाह ॥३॥

तिन मोकौं आज्ञा दई सुखमन्न होइ कै एहु ।
संस्कृत हुंती वार्तिक सुक सप्तति करि देहु ॥४॥

अथ कथा प्रारम्भ—

एक मेदुपुर नाम नगर । ते थि हरदत्त वाणियौ बसै । ते पैरे घरि मदन सुन्दरी स्त्री अरु मदन बेटो । ती पैरे सोमदत्त साहरी बेटी प्रभावती नाम । सोमदत्त आपकी स्त्री प्रभावती सेती लागो रहै । माता पितारो कहियो न करै । ताउ राउ वै मदन सूं देसान तांई हरिदत्त एक सुवो एक सारिका मंगाई । सो पुष्पा गंधर्व रो जीव धणीरा सराप हुंती सुवो । हुवो अर मालती गंधर्वणी रो जीव धणीरां सराप हुंती सारिका हुई । सो जुदै जुदै पिंजरै रहै । एक दिन मदन रो आर देखि शुक अरु सारिका मदन आगै बात कहै छै ॥

दोहा—

जो दुख मात पिता तणौ अथु बात जो होइ ।
तिस पाप करता हरि देइ सपछानि होइ ॥१॥

बात मदन पूछियौ—

वार्ता अपूर्ण है—१२ वीं बात तक पूर्ण है १३ वीं बात बहोडि तेरमैं दिन प्रभावती शृंगार करि रात्रि समै सुवानुं पूछीयो थे कहो तो जावौ, सुवै कह्यो ।

दोहा—

जो भावै प्रभावती सो मोनु न सहाय।
पणिमारग जाता देखिका ज्यो होय बुद्धि सुहाय।
करि हैं सो तु जायकरि अधिरज बुद्धि विचारि।
ब्राह्मण आगै दंभिका जिस हो कीये प्रकास ॥२४॥

वार्ता—

तहरां प्रभावती बोली मारग बहुतां दंभिका किसी बुद्धि उपाई अरु ब्राह्मण आगै किसु प्रकार कीयो वा कहै। अभिलाषा नाम सय, ते थिति लोचन नाम ब्राह्मण। सांवरो पटैल। तिणरै दंभिका नाम स्त्री। तिणरै कामरी अभिलाषा। परिण वै हरै मांटी। हुबिहुंतो कोई मर्थ नहीं। एक दिन दंभिका। घडो ले पाणी नै गई हुती। पाणि भरि लै आवता एक बटाउ जुवान सरूपदीठो बैहनु कीडा रै साई आखिरी सैन दे बुलायो। अर पूछियो तू कौण छै। वैहं कही हूं भाट छौं। आगै मांगण नै जावौं छौं। दंभिका कह्यो आजि राति माहरै ही रहज्यो।

६३०१. गुटका सं० १६४। पत्र सं० ६२। आ० ६×५ इंच। भाषा—हिन्दी। ले० काल सं० १६८६ पौष सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन सं० ८६५।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रह है।

बुद्धिप्रकाश	—	कवि धेल्ह
चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न	—	ब्र० रायमल्ल
द्वादशानुप्रेक्षा	—	ब्र० जिनदास
लेश्या वर्णन	—	—
'रेमन' गीत	—	छीहल
ज्येष्ठ जिनवर व्रत कथा	—	ब्र० रायमल्ल
मेघकुमार गीत	—	पूनो
मनकरहा जयमाल	—	—

बुद्धिप्रकाश कवि धेल्ह पत्र सं० १६-२६ तक

भूखो पंथ न जायहु सीहालो जीवा पंथी न जाहु उन्हालो।
सावणी भादवौ गाय न जाजे आसोजा मौ भौयन सोजो ॥१६॥
अणरचीतो किम नौहि खाजे, अमर पिछाण्या की साथी न आजे।
जाय दिसावरि राती न सोजि, चालतपंथी रोस न कीजे ॥१७॥
अवधरि न्हाय उतरी जे घाटे कन्या न बेची गरथके सांटै॥
पाहुणौ आया आदर दीजे, आपण सारू भगति करीजे

दानदेय लक्ष्मी फल लीजे, जुनो डोर ने कपड लीजे ॥१८॥

पहु न होय की सिही वैचालै वचन थालि तुस जो राखै ।
वणिज न कीजे आस पराय, आरभ्यौ काम त्यौ नीरवहि ॥१९॥

नित प्रतिदान सदाही दीजे, दुणा ऊपरि ब्याज न लीजै ।
धरिही ण राखी हीण कुल नारि, मुक्त उपाय संतोषास्तरी ॥२०॥

बिणसै धीयउ हसि हसीखाय, बीणसै बहु ज परिधरि जाय ।
बीणसै पुत्त पछोकडी छाडी, बीणसै गय गयाडो मीडो ॥२१॥

बीणसै बिण असुयार घोडो, बीणसै सेवग आहर थोडो ।
बीणसै राजु मंत्री नो थोडो, अचगीलह न बोलसिकुडो ॥२२॥

बुद्धि होइ करि सो नर जीवो, मखीभा के घरि पाणी न पीव ।
हरिषन कीजे जेवुठडौ पाणी, अणनीवनै सुकाल न जाणी ॥२३॥

मत्र न कीजे हीयडो कुडौ सील बीण नारी ण पहराय चुडौ ।
ऐसी सीख सुणीरी पुत्र्या, लाज न कीजे मामत कन्या ॥२४॥

ब्राह्मण होय सवेद भणावी, श्रावग होय सश्रण अथपाजीवी ।
वाण्या होय सबीणज करावो, कायथ होय, सलेखो भणावी ॥२५॥

कुल मारगौ जुग छोडौ करमा, सगलीसीख सुणेजे धरमा ।
बुधी प्रगास पढीर विचारो, बीरो न आवौ कदहि सांहुसारी ॥२६॥

ऐसी सीख सुणै सहुकोय, कहता सुणतापुनी जु होय ।
कहौ देल्ह परषोत्तम पुत्ता, करौ राज परिवार संजुता ॥७२॥

संवत् १६८६ मिती पौष सुदी १० बुधीप्रगास समाप्त । लिखितं पंडित रुडा, लिखामतं पंडित सिंघजी ।

६३०२. गुटका सं० १६५ । पत्रसं० १३८ । आ० ५×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८६६ ।

विशेष — निम्न रचनाओं का संग्रह है—

तत्वार्थ सूत्र — उमास्वामी

रत्नकरण्ड श्रावकाचार भाषा — सदासुख कासलीवाल

६३०३. गुटका सं० १६६ । पत्रसं० १४-११० । आ० ६½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १६८७ ज्येष्ठ बुदी अमावस । अपूर्ण । वेष्टनसं० ८६७ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

आदित्यवार कथा — भाऊकवि

अनुप्रेक्षा	—	योगदेव
आदिनाथ स्तवन	—	सुमतिकीर्ति
जिनवर व्रत कथा	—	ब्र० रायमल्ल

गुटका जोबनेर में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में पं० केसो के पठनार्थ लिखा गया था।

६३०४. गुटका सं० १६७। पत्रसं० १३५। आ० ५½×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी–संस्कृत। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ८६६।

विशेष—सामायिक पाठ, भक्तामर स्तोत्र, जोगीरास तथा भक्ति पाठ आदि रचनाओं का संग्रह है।

६३०५. गुटका सं० १६८। पत्रसं० ६५। आ० ६×३ इञ्च। भाषा–हिन्दी-संस्कृत। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ८७०।

विशेष – नित्य पूजा पाठएवं मंगल आदि पाठों का संग्रह है।

६३०६. गुटका सं० १६९। पत्र सं० १००। आ० ५×४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ८७१।

विशेष—आयुर्वेद एवं मंत्रशास्त्र सम्बन्धी सामग्री है।

६३०७. गुटका सं० १७०। पत्रसं० १३८। आ० ७×५ इञ्च। **भाषा** हिन्दी-संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ८७२।

विशेष---सामान्य पूजाएं स्तोत्र एवं पाठों का संग्रह है।

६३०८. गुटका सं० १७१। पत्रसं० १८६। आ० ८½×६इञ्च। **भाषा** हिन्दी–संस्कृत। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ८७३।

विशेष—सामन्य पूजा पाठ, आयुर्वेदिक नुस्खे, काल ज्ञान एवं मंत्र शास्त्र सम्बन्धी साहित्य है।

६३०९. गुटका स० १७२। पत्रसं० ६८। आ० ८½×६½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। ले०काल सं० १७९८ पौष बुदी ८। पूर्ण। वेष्टन सं० ८७४।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रह है—

शालिभद्र चौपई	हिन्दी	जिनराजसूरि
राजुलपच्चीसी	,,	विनोदीलाल
पंचमंगल पाठ	,,	रूपचन्द

६३१०. **गुटका सं० १७३** ।पत्रसं० ११४ । आ० ३½ × ३½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८७५ ।

विशेष—स्तोत्र एवं मंत्रशास्त्र का साहित्य है ।

६३११. **गुटका सं० १७४** । पत्रसं० २३ । आ० ६×२½ इंच । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८७६ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र एवं पूजा पाठ संग्रह है ।

६३१२. **गुटका सं० १७५** । पत्र सं० ११० । आ० ६×५½ इंच । भाषा—हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८७७ ।

विशेष—स्नेपन क्रिया (हेमचन्द्र हिन्दी पद्य) पद, भक्तिपाठ, चतुर्विंशति स्तोत्र (समंतभद्र) भक्तामर स्तोत्र (मानतुंगाचार्य) आदि का संग्रह है ।

६३१३. **गुटका सं० १७६** । पत्रसं० २१८ । आ० ५½ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८७८ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ एवं स्तोत्रों का संग्रह है ।

६३१४. **गुटका सं० १७७** । पत्रसं० २७२ । आ० ५ × ६ इंच । भाषा—हिन्दी । ले०काल-सं० १८२७ कार्ती सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८७९ ।

विशेष—अजमेर के शिवजीदास के पठनार्थ किशनगढ़ में प्रतिलिपि की गई थी । कर्णामृत पुराण (भट्टारक विजयकीर्ति) तथा दानशीलतप भावना (अपूर्ण) है ।

६३१५. **गुटका सं० १७८** ।पत्रसं० ६८ । आ० ४½ × ३½ इञ्च । भाषा—हिन्दी, संस्कृत । ले० काल सं० १८८० श्रावण सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८८० ।

विशेष—पूजा स्तोत्र, चर्चाएं, चौबीस दंडक, नवमंगल आदि पाठों का संग्रह है । अजमेर में प्रतिलिपि हुई थी ।

६३१६. **गुटका सं० १७९** । पत्र सं० ६० । आ० ७ × ५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८८१ ।

विशेष--पल्य विधि, स्नेपनक्रियापूजा, पल्यव्रत विधान, त्रिकाल चौबीसी पूजा आदि का संग्रह है ।

६३१७. **गुटका सं० १८०** ।पत्रसं० ४० । आ० ६ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८८३ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

६३१८. **गुटका सं० १८१** । पत्रसं० २६ । आ० ६ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८७३ माह सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८ ८५।

विशेष—सामुद्रिक भाषा शास्त्र है।

६३१९. गुटका सं० १८२। पत्रसं० ७०। आ० ५×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल-×। पूर्ण। वेष्टन सं० ८८७।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र मंत्र सहित, एवं अनेकार्थ मंजरी का संग्रह है।

६३२०. गुटका सं० १८३। पत्रसं० ४०-२४४। आ० ६×३ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ८८६।

विशेष—सूक्ति मुक्तावली, पदसंग्रह तथा मंत्र शास्त्र सम्बन्धी साहित्य है।

६३२१. गुटका सं० १८४। पत्रसं० ६। आ० ७×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल सं०—१७८४ मंगसर सुदी ८। पूर्ण। वेष्टनसं० ८९१।

विशेष—बीज उजावलीरी हुई है।

६३२२. गुटका सं० १८५। पत्रसं० ११६। आ० ८×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ८९२।

विशेष—नित्य प्रति काम में आने वाली पूजाएं एवं पद हैं।

६३२३. गुटका सं० १८६। पत्रसं० २००। आ० ६×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी ले०काल सं० १८५१ भादवा बुदी ८। पूर्ण। वेष्टनसं० ८९४।

विशेष—

धर्मोपदेशामृत	—	पद्मनंदि
पद्मनंदि पंचविंशति	—	पद्मनंदि
नेमिपुराण	—	.
सुदर्शनरास		ब्र० रायमल्ल ले०काल सं० १६३५ सावण सुदी १३।

लिखापि साह सांतू खण्डेलवाल।

६३२४. गुटका सं० १८७। पत्रसं० ६२। आ० ६×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ८९५।

विशेष—खुशालचन्द, द्यानतराय, आदि कवियों के पद, तथा धर्म पाप संवाद, चरखा चौपई आदि का संग्रह है।

६३२५. गुटका सं० १८८। पत्रसं० २६८। आ० ४×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ८९६।

विशेष—सामान्य पूजाओं के अतिरिक्त वृन्दावनदास कृत चौबीस तीर्थंकर पूजा आदि का संग्रह है।

६३२६. गुटका सं० १९९। पत्रसं० ६४। आ० ५½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ८९७।

विशेष—मंत्रतंत्र एवं आयुर्वेद के नुस्खों का संग्रह है।

६३२७ **गुटका सं० १६०**। पत्र सं० २५०। आ० ५×इंच। भाषा-प्राकृत-संस्कृत। ले०काल सं० १६५० फागुण बुदी ८। पूर्ण। वेष्टन सं० ८६८।

विशेष—मुख्यतः निम्न रचनाओं का संग्रह है।

आराधनासार	प्राकृत	देवसेन
संबोध पंचासिका	—	—
दशरथ की जयमाल	—	—
सामायिक पाठ	संस्कृत	—
तत्वार्थसूत्र	,,	उमास्वामी
पंच स्तोत्र	,,	—

६३२८. **गुटका सं० १६१**। पत्र सं० २२७। आ० ५$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ८६६।

विशेष—सामान्य पूजा पाठों, आयुर्वेद एवं ज्योतिष आदि के ग्रंथों का संग्रह है।

६३२९. **गुटका सं० १६२**। पत्रसं० २२८। आ० ६×३$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-संस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ६००।

विशेष—तीस चतुर्विंशति पूजा त्रिकालचतुर्विंशति पूजा आदि का संग्रह है।

६३३०. **गुटका सं० १६३**। पत्रसं० ८२। आ० ५×४$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-संस्कृत। ले०काल सं० १६६० बैशाख सुदी। १४। पूर्ण। वेष्टन सं० ६०१।

विशेष—गुरावलि, चिंतामणि स्तवन, प्रतिक्रमण, सुभाषित पद्य, गुरुओं की विनती, भ० धर्मचन्द्र का सवैया आदि का संग्रह है।

६३३१. **गुटका सं० १६४**। पत्र सं० ३२४। आ० ८$\frac{1}{2}$×५ इंच। भाषा-संस्कृत। ले० काल सं० १८८० माघ सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन सं० ६०२।

विशेष—पार्श्वनाथ स्तवन, सम्यक्त्व कौमुदी कथा, प्रश्नोत्तर माला, हनुमत कवच एवं वृन्दावन कवि कृत सतसई, सुभाषित ग्रंथ आदि पाठों का संग्रह है।

६३३२. **गुटका सं० १६५**। पत्र सं० १८८। आ० ५$\frac{1}{2}$×५ इंच। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० सं० ६०३।

विशेष—जिनसहस्रनाम, प्रस्तावित श्लोक, भक्तामर स्तोत्र एवं बडा कल्याण आदि पाठों का संग्रह है।

६३३३. **गुटका सं० १६६**। पत्रसं० ७०। आ० ५×४ इंच। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ६०४।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६३३४. **गुटका सं० १९७।** पत्र सं० ९६। आ० ६×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल सं० १८३६ भादवा बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० ९०६।

विशेष—जैनरासो, सुदर्शन रास (ब्रह्म रायमल्ल) शीलरास (विजयदेव सूरि) एवं भविष्यदत्त चौपई आदि का संग्रह है।

६३३५. **गुटका सं० १९८।** पत्र सं० ९६। आ० ५×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। ले०काल सं० १८६३ आसोज सुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० ९०७।

विशेष—नित्य प्रति काम में आने वाले स्तोत्र एवं पाठों का संग्रह है।

६३३६. **गुटका सं० १९९।** पत्र सं० १६-१३९। आ० ६×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। ले० काल सं० १८६३ आसोज सुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० ९०९।

विशेष—आलोचना पाठ, सामायिक पाठ, तत्वार्थ सूत्र आदि पाठों का संग्रह है।

६३३७. **गुटका सं० २००।** पत्र सं० ५०। आ० ५½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ९१०।

विशेष—विभिन्न महीनों में आने वाले एकादशी महात्म्य का वर्णन है।

६३३८. **गुटका सं० २०१।** पत्र सं० ८४। आ० ६½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। ले० काल सं० १८८७ आषाढ सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन सं० ९११।

विशेष—जिनसहस्रनाम (आशाधर) एवं तत्वार्थ सूत्र (उमास्वामी) आदि पाठों का संग्रह है।

६३३९. **गुटका सं० २०२।** पत्र सं० ३०-७०। आ० ६×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। ले०काल सं० १८२३ भादवा सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० ९१२।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रह है:—

संबोध दोहा	हिन्दी	सुप्रभाचार्य
संबोध पंचासिका	,,	गौतमस्वामी
गिरनारी गीत	,,	विद्यानंदि
लाहागीत	,,	—
वास्तुकर्म गीत	,,	—
शांति गीत	,,	—
सम्यक्त्व गीत	,,	—
अभिनन्दन गीत	,,	—
अष्टापद गीत	,,	—
नेमीश्वर गीत	,,	—
चन्द्रप्रभ गीत	,,	—
सप्तऋषि गीत	,,	विद्यानन्दि
नवबाड़ी विनती	,,	—

६३४०. गुटका सं० २०३ । पत्रसं० ३०-१५२ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं० × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६१३ ।

विशेष—पंचस्तोत्र एवं आदित्यवार कथा है ।

६३४१. गुटका सं० २०४ । पत्र सं० ५२ । आ० ६$\frac{१}{२}$×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं० १८०१ आषाढ़ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६१५ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र ऋद्धि मंत्र एवं वचनिका सहित है ।

६३४२. गुटका सं० २०५ । पत्रसं० ६० । आ० ६×४$\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१६ ।

विशेष—फुटकर श्लोक, जिनसहस्रनाम (आशाधर) मांगीतुंगी चौपई, देवपूजा, राजुलपच्चीसी, बारहमासा आदि का संग्रह है ।

६३४३. गुटका सं० २०६ । पत्रसं० २६ । आ० ८×४$\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१७ ।

विशेष—विभिन्न पूजा काम आने वाले पाठों का संग्रह है ।

६३४४. गुटका सं० २०७ । पत्रसं० २५ । आ० ७×५ इंच । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१८ ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र एवं एकीभाव स्तोत्र अर्थ सहित है ।

६३४५. गुटका सं० २०८ । पत्रसं० २३४ । आ० ५×५$\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६१६ ।

विशेष—पूजा पाठ एवं स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

६३४६. गुटका सं० २०९ । पत्र सं० २०८ । आ० ५$\frac{१}{२}$×४$\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी-संस्कृत । ले० काल सं० १७६४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२० ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

६३४७. गुटका सं० २१० । पत्रसं० ७६ । आ० ६×४$\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं० १८०६ ज्येष्ठ बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६२१ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र, कल्याण मंदिर भाषा एवं तत्वार्थ सूत्र आदि पाठों का संग्रह है ।

६३४८. गुटका सं० २११ । पत्र सं० १०० । आ० ६×५$\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल× । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३३ ।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रह है । मुनीश्वर जयमाल (जिनदास) प्रतिक्रमण, तत्वार्थ सूत्र, पट्टावलि, मूठमंत्र, भक्तिगढ़ भट्टारक पट्टावलि एवं मंत्र शास्त्र ।

६३४९. गुटका सं० २१२ । पत्र सं० १५० । आ० ५×६$\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२४ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ एवं स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

६३५०. गुटका सं० २१३ । पत्रसं० १२४ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८२३ भादवा बुदी । पूर्ण । वेष्टनसं० ६२५ ।

विशेष---निम्न रचनाओं का संग्रह है ।

नेमीश्वर रास	—	ब्र० रायमल्ल
कृष्णजी का बारहमासा	—	जीवणराम
छनाल पच्चीसी	—	—

६३५१. गुटका सं० २१४ । पत्र सं० ८२ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२६ ।

विशेष—सोलहकारण जयमाल, गणधरवलय पूजा जिनसहस्रनाम (आशाधर) एवं स्वस्त्ययन पाठ आदि का संग्रह है ।

६३५२. गुटका सं० २१५ । पत्रसं० ६० । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८११ आषाढ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२७ ।

विशेष—अठारह नाता का चौढालया (लोहट), चन्द्रगुप्त के १६ स्वप्न, नेमिराजमति गीत, कुमति सज्झाय एवं साधु वन्दना आदि पाठों का संग्रह है

६३५३. गुटका सं० २१६ । पत्र सं० १६० । आ० ८×६½ इंच । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १७८२ मंगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२८ ।

विशेष—नासिकेत पुराण, (१८ अध्याय तक) एवं सीता चरित्र (कवि बालक अपूर्ण) आदि रचनाओं का संग्रह है ।

६३५४. गुटका सं० २१७ । पत्रसं० १५० । आ० ८½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं० १७७७ पौष बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२९ ।

विशेष—निम्न स्तोत्रों का संग्रह है—

भक्तामर स्तोत्र भाषा	संस्कृत-हिन्दी	हेमराज
कल्याण मंदिर स्तोत्र भाषा	,,	बनारसीदास
एकीभाव स्तोत्र भाषा	,,	—

६३५५. गुटका सं० २१८ । पत्रसं० २८२ । आ० ६½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७८९ कार्तिक बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३० ।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रह है ।

मांगीतुंगी स्तवन	हिन्दी	हिन्दी पत्र ३०-३५	
कुमति की विनती	,,	,,	—
ननद भौजाई का झगड़ा	,,	,,	—
अक्षर बत्तीसी	,,	,,	—
ज्ञान पच्चीसी	,,	,,	—

परमज्योति	—	हिन्दी
निर्दोष सप्तमी कथा	—	,,
जिनाष्टक	—	,,
गीत	विनोदीलाल	,,
आदिनाथ स्तवन	नेमचन्द (जगत्कीर्ति के शिष्य)	,,
कठियारा कानडदे चउपई	मानसागर	,,
नवकार रास	—	,,
अठारह नाता	लोहट	हिन्दी
धर्मरासो	जोगीदास	,,
नेपन क्रियाकोश	—	,,
कक्का बत्तीसी	—	,,
ग्यारह प्रतिमा वर्णन	—	,,
पद संग्रह	विभिन्न कवियों के	,,
सप्तव्यसन गीत	—	,,
पार्श्वनाथ का पहेला	—	,,

६३५६. **गुटका सं० २१६** । पत्रसं० १७४ । आ० ५½×४½ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं० १७४० आसोज बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२१ ।

विशेष—आयुर्वेद एवं मंत्र शास्त्र से सम्बन्धित साहित्य का अच्छा संग्रह है ।

६३५७. **गुटका सं० २२०** । पत्रसं० १५० । आ० ६½×४½ इंच । भाषा—हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं० १८११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३३ ।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रह है ।

सारसमुच्चय ग्रंथ	—	संस्कृत
सुकुमाल सज्झाय	शशिहर्ष (शि० जिनहर्ष)	र० काल १७४१
बोधसत्तरी	—	हिन्दी
ज्ञान गीता स्तोत्र	—	—
ॐकार रास	—	—
चन्द्राकी	दिनकर	—

६३५८. **गुटका सं० २२१** । पत्रसं० ६६ । आ० ६½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३४ ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र, ज्ञानचिन्तामणि एवं अन्य पाठों का संग्रह है ।

६३५९. गुटका सं० २२३ । पत्रसं० २१३ । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १६२२ आषाढ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३५ ।

विशेष—ज्योतिष साहित्य एवं सं० १५८२ से सं० १७०० तक का संवत्सर फल दिया हुआ है ।

६३६०. गुटका सं २२३ । पत्र सं० ७२ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३६ ।

विशेष—शकुनावली लघुस्वयंभू स्तोत्र, षष्टिसंवत्सरी आदि पाठों का संग्रह है ।

६३६१. गुटका सं० २२४ । पत्रसं० ६० । आ० ७½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल सं० १७६५ फागुण बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३७ ।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रह है—

तीस चौबीसी	श्यामकवि	हिन्दी	र० काल सं १७४६ चैत सुदी ५
विनती	गोपालदास	,,	—

इसके अतिरिक्त अन्य पाठों का भी संग्रह है ।

६३६२. गुटका सं० २२५ । पत्र सं० १७५ । आ० ६½×५½ इंच । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल सं० १६१५ माघ सुदी १। पूर्ण । वेष्टन सं० ६३८ ।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रह हैं ।

भक्तिपाठ	—	संस्कृत
चतुर्विंशति तीर्थंकर जयमाल	—	हिन्दी
चतुर्दश गुणस्थान बेलि	ब्र० जीवंधर	हिन्दी
चेतन गीत	जिनदास	,,
लाभालाभ मन संकल्प	महादेवी	संस्कृत
सिद्धिप्रिय स्तोत्र	देवनंदि	,,
परमार्थ गीत	रूपचन्द	हिन्दी
परमार्थ दोहाशतक	रूपचन्द	,,

६३६३. गुटका सं० २२६ । पत्रसं० ६७ । आ० ६½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं० १८२४ आषाढ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६३६ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र, विषापहार, पंचमंगल, तत्वार्थ सूत्र आदि का संग्रह है ।

६३६४. गुटका सं० २८ । पत्र सं० ४६से ७६ । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४० ।

विशेष—दशलक्षण पूजा, अनत व्रत पूजा, एवं भक्तामर स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

६३६५. गुटका सं० २२८ । पत्रसं० ३८ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १७९६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४१ ।

विशेष--निम्न रचनाओं का संग्रह है ।

कर्मप्रकृति	भाषा	बनारसीदास	हिन्दी
मृगीसंवाद		देवराज र० सं० १६६३	,,

६३६६. गुटका सं० २२९ । पत्रसं० १८६ । आ० ७½×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । ले० काल सं० १६८० सावण बुदी १० । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६४२ ।

विशेष--मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है--

आराधना सार	देवसेन	प्राकृत
परमात्म प्रकाश दोहा	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश
द्वादशानुप्रेक्षा	—	अपभ्रंश
आलाप पद्धति	देवसेन	संस्कृत
अष्टपाहुड	कुन्दकुन्दाचार्य	प्राकृत

६३६७. गुटका सं० २३० । पत्र सं० ६८ । आ० ६½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६४३ ।

विशेष--आयुर्वेद के नुस्खे है ।

६३६८. गुटका सं० २३१ । पत्रसं० ७० । आ० ११×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल सं० १६३८ आसोज बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६४४ ।

विशेष--वृहद् सम्मेद शिखर पूजा महात्म्य का संग्रह है ।

६३६९. गुटका सं० २३२ । पत्रसं० ४१५ । आ० ४½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४५ ।

विशेष--निम्न पाठों का संग्रह है ।

नाम ग्रंथ	ग्रंथकार	भाषा	पत्रसं०	विशेष
नेमीश्वर रास	ब्र० राममल्ल	हिन्दी	१-४९	र० सं० १६४४ फागुण सुदी ४
चेतनपुद्गल धमाल	बल्ह	,,	५०-७०	पद्य सं० १३०
शील महिमा	सकल भूषण	,,	७०-७३	पद्य सं० १६
वीरचन्द दूहा	लक्ष्मीचन्द	,,	७४-८६	पद्य सं० ९६
पद	हर्षगणि	,,	८७	पद्य सं० ७
नेमीश्वर राजमति चातुर्मास	सिंहनंदि	,,	६९	पद्य सं० ४ ले० काल सं० १६५५

बलिभद्र गीत	सुमतिकीर्ति	हिन्दी	६१	—
मेघकुमार गीत	पूनो	,,	६८	—
नेमिराजमति बलि	ठक्कुरसी	,,	११३	६१
कृपण षट् पद	,,	,,	१२०	—
पद	,,	,,	१२६	—
पद	साहणु	,,	१२६	—
पद	बूचा	,,	१३०-३३	—
पंचेन्द्रीवेलि	ठक्कुरसी	,,	१४०	—
योगीचर्या	—	,,	१४४	—
गीत	बूचा	,,	१५७	—
म० धर्मकीर्ति भुवन कीर्ति गीत	—	,,	१६५	—
मदनजुद्ध	बूचा कवि	,,	१८४ (र० सं० १५८६	पद्य सं० १५८ से० काल सं० १६१६)
विवेक जकडी	जिणदास	,,	—	—
मुक्ति गीत	—	,,	—	—
पोषहरास	ज्ञानभूषण	,,	३४४	—
शीलरास	विजयदेव सूरि	,,	३६५	६६
नेमिनाथरास	ब्रह्म रतन	,,	३७३	
पद	बूचा	,,	३८२	—
आदिनाथविनती	ज्ञानभूषण	,,	३६५	—
नेमीश्वर रास	भाऊ कवि	,,	४१५	—
चतुर्गतिवेलि	हर्षकीर्ति	,,	—	—

६३७०. गुटका सं० २३३ । पत्र सं० ५८ । आ० १३×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं० १८६६ माघ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४६ ।

विशेष—पूजाओं एवं पदों का संग्रह है ।

६३७१. गुटका सं० २३४ । पत्र सं० ४०३ । आ० ७×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६७ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

सीतासतु	भगवतीदास	हिन्दी	पत्र सं०
शीलबत्तीसी	—	,,	१-५३
राजमतिगीत	—	,,	५४-५८
बावनी छपई	—	,,	—

छहढाल	—	हिन्दी	—
पद एवं गीत	भगवतीदास	,,	७० तक
पद एवं राजमति सतु	—	,,	—
आदित्यवार कथा	—	,,	—
दयारास	गुलाबचंद	,,	—
चूनडीरास	भगवतीदास	,,	—
रविव्रत कथा	—	,,	—
खीचडरास	—	,,	—
रोहिणीरास	—	,,	—
जोगरण रास	—	,,	—
मनकरहारास	—	,,	—
वीर जिणंद	—	,,	—
दशलक्षण पद	—	,,	—
राजावलि	—	,,	—
विभिन्न पद एवं गीत	—	,,	१७६ पत्र तक
बणजारा गीत	—	,,	—
राजमति नेमीश्वरढाल	—	,,	—
समयसार नाटक	बनारसीदास	,,	—
चतुर बणजारा गीत	भगवतीदास	,,	—
अर्गलपुरजिन वंदना	—	,,	—
जलगालन विधि	ब्र० गुलाल	,,	—
गुलाल मथुराबाद पच्चीसी	—	,,	—
बनारसी विलास के पाठों का संग्रह	बनारसीदास	,,	—

६३७२. गुटका सं० २६५। पत्र सं० ८२। आ० ७×५ इन्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १७५८/१७६०। पूर्ण। वेष्टन सं० १४७४।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

नेमीश्वर के पंचकल्याणक गीत, सज्झाय, बुद्धिरासो, आषाढभूति धमालि, धर्मरासो आदि अनेक पाठों का संग्रह है।

६३७३. गुटका सं० २३६। पत्रसं० २४। आ० ८×६ इन्च। भाषा-संस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १४७५।

विशेष—निम्न पूजा पाठों का संग्रह है—

पद्मावती स्तोत्र, पद्मावती पूजा, पद्मावती सहस्रनाम, पार्श्वनाथ पूजा, पद्मावती आरती, पद्मावती गायत्री आदि पाठों का संग्रह है।

६३७४. गुटका सं० २३७ । पत्र सं० १०० । आ० ६½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १८५५ माह सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४८५ ।

विशेष—ज्योतिष संबंधी पाठों का संग्रह है ।

६३७५. गुटका सं० २३८ । पत्र सं० १२० । आ० ८½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल सं० १८४० फागुण बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४८६ ।

विशेष—नाटक समयसार एवं त्रिलोकेन्दु कीर्ति कृत सामायिक भाषा टीका हैं ।

६३७६. गुटका सं० २३९ । पत्र सं० १२६ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल सं० १८८४ फागुण बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४८७ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

नाम ग्रंथ	ग्रंथकार	भाषा	विशेष
व्रत विधान राखो	दौलत राम पाटनी	हिन्दी	र० सं० १७६७
प्रायश्चित ग्रंथ	अकलंक स्वामी	संस्कृत	—
ज्ञान पच्चीसी	—	हिन्दी	—
नारी पच्चीसी	—	,,	—
वसुधारा महाविद्या	—	संस्कृत	—
मिथ्यात्व भजन रास	—	हिन्दी	—
पंचनमस्कार स्तोत्र	उमास्वामी	संस्कृत	—

६३७७. गुटका सं० २४० । पत्र सं० १४४ । आ० ८½×६ इंच । भाषा-हिन्दी । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४८८ ।

विशेष—पद संग्रह है ।

६३७८. गुटका सं० २४१ । पत्र सं० १०६ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । र० काल× । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं १४९० ।

विशेष—पदों का संग्रह है ।

६३७९. गुटका सं० २४२ । पत्र सं० ६८ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा--संस्कृत । र० काल × । ले० काल सं० १७२८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४९१ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६३८०. गुटका सं० २४३ । पत्र सं० ३०८ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । र० काल × । ले० काल सं० १६९२ फागुण बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४९२ ।

विशेष—सागवाडा नगर में प्रतिलिपि की गयी थी । पूजा पाठ एवं स्तोत्र संग्रह है ।

६३८१. गुटका सं० २४४ । पत्र सं० १७० । आ० ६½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४९३ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६३८२. **गुटका सं० २४५** । पत्रसं० ७० । आ० ११×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । र०काल × । ले० काल सं० १८६४ पौष सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४६४ ।

विशेष · भरतपुरवासी पं० हेमराज कृत पदों का संग्रह है ।

६३८३. **गुटका सं० २४६** । पत्रसं० ६७ । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४६५ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

६३८४. **गुटका सं० २४७** । पत्रसं० ५० । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–संग्रह । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४६६ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६३८५. **प्रति सं० २४८** । पत्र सं० १३४ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १६३५ आसोज सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४६७ ।

विशेष—भट्टारक सकलकीर्ति, ब्रह्मजिनदास, ज्ञानभूषण सुमतिकीर्ति आदि के पदों का संग्रह है ।

६३८६. **प्रति सं० २४६** । पत्रसं० ११७ । आ० ६×५ इंच । भाषा–हिन्दी । ले०काल सं० १८१८ ज्येष्ठ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४६८ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६३८७. **गुटका २५०** । पत्रसं० ४१ । आ० ६×६ इञ्च । विषय–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४६६ ।

विशेष—पूजा पाठ एवं स्तोत्र संग्रह है ।

६३८८. **गुटका सं० २५१** । पत्रसं० १३८ । आ० १०½×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल सं० १७६३ । फागुण सुदी १३ पूर्ण । वेष्टन सं० । १५०१ ।

विशेष—स्तवन तथा पूजा पाठ संग्रह है ।

६३८६. **गुटका सं० २५२** । पत्रसं० १२७ । आ० ४½×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५०२ ।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रह है ।

अष्टाह्निका पूजा—

अवन्ति कुमार रास—(जिनहर्ष) र० सं० १७४१ आषाढ सुदी ८ ।

६३६०. **प्रति सं० २५३** । पत्रसं० ६८ । आ० ५×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५०३ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६३९१. गुटका सं० २५४ । पत्रसं० २०२ । आ० १०×४ इंच । **भाषा**-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १५०५ ।

विशेष--ज्योतिष शास्त्र संबंधी सामग्री है ।

६३९२. गुटका सं० २५५ । पत्र सं० २०० । आ० ५×५ इञ्च । **भाषा**-हिन्दी । ले० काल सं० १६५३ कार्तिक सुदी १० । अपूर्ण । वेष्टन सं० १५०६ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

वीरनाथस्तवन, चउसरणपयन्न, गजसुकुमालचरित्र, बावनी, रतनचूडरास, माधवानल चौपई आदि पाठों का संग्रह है ।

६३९३. गुटका सं० २५६ । पत्रसं० २५ । आ० ८½×५ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५०७ ।

विशेष—मंत्रतंत्र एवं रमल आदि का संग्रह है ।

६३९४. गुटका सं० २५७ । पत्रसं० ५७ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १५०८ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६३९५. गुटका सं० २५८ । पत्रसं० ७२ । आ० ४½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १५०९ ।

विशेष- पूजा पाठों का संग्रह है ।

६३९६. गुटका सं० २५९ । पत्र सं० १७४ । आ० ६×५ इंच । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १५१० ।

विशेष—हिन्दी के सामान्य पाठों का संग्रह ।

६३९७. गुटका सं० २६० । पत्र सं० ६२ । आ० ७×५ इंच । **भाषा**-हिन्दी । ले० काल-सं० १८३८ । पूर्ण । वेष्टनसं० १५११ ।

विशेष—वंश भनोत्सव के पाठों का संग्रह है ।

६३९८. गुटका सं० २६१ । पत्रसं० १०० । आ० ६×५ इञ्च । भाषा -हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १५१२ ।

विशेष—गुणस्थान चर्चा एवं रत्नत्रय पूजा है ।

६३९९. गुटका सं० २६२ । पत्रसं० २४ । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५१३ ।

विशेष—आचार्य केशव विरचित षोडषकारण व्रतोद्यापनपूजा जयमाल है ।

६४००. गुटका सं० २६३ । पत्र सं० ७३ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५१४ ।

विशेष— निम्न पाठों का संग्रह है—

चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न, धर्मनाथ रो स्तवन (गुणसागर) उपदेश पच्चीसी, (रामदास) शालिभद्र धन्ना चउपई (गुणसागर)।

६४०१. गुटका सं० २६४। पत्र सं० १०७। आ० ६×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी,। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १५१५।

विशेष— गुणस्थान चर्चा एवं अन्य पाठों का संग्रह है।

६४०२. गुटका सं०२६५। पत्रसं० १२४। आ० ७×५ इञ्च। **भाषा**—हिन्दी। **ले०काल** सं० १८८० पौष सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० १५१६।

विशेष—मुख्यतः रसालुकंवर की वार्ता है।

६४०३. गुटका सं० २६६। पत्र सं० १३०। आ० ६½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी **ले०काल** × । पूर्ण। वेष्टन सं० १५१७।

विशेष— विभिन्न कवियों के हिन्दी पदों संग्रह है।

६४०४. गुटका सं० २६७। पत्र सं० १२७। आ० ६×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १५१८।

विशेष— ज्योतिष सम्बन्धी साहित्य है।

६४०५. गुटका सं० २६८। पत्र सं० १२३। आ० ६½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १५१९।

विशेष—शालिभद्र चौपई के अतिरिक्त विभिन्न कवियों के हिन्दी पदों का संग्रह है।

६४०६. गुटका सं० २६९। पत्र सं १४४। आ० ६½×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १५२०।

विशेष—विभिन्न कवियों के हिन्दी पदों का संग्रह है।

६४०७. गुटका सं० २७०। पत्रसं० २८२। आ० ५½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत–हिन्दी। **ले०काल** सं० १६६०। पूर्ण। वेष्टन सं० १५२२।

विशेष—पूजाएं एवं ब्रह्म रायमल्ल कृत नेमि निर्वाण है।

६४०८. गुटका सं० २७१। पत्र सं० १४०। आ० ८×६ इञ्च। भाषा—हिन्दी। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १५२३।

विशेष—सामान्य पाठ एवं आयुर्वेदिक नुस्खे हैं।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी–बूंदी।

६४०९. गुटका सं० १। पत्रसं० ११५। आ० ५×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत–हिन्दी। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १६३।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

६४१०. गुटका सं० २। पत्रसं० २१६। आ० ६×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। ले०काल×। पूर्ण। वेष्टनसं० १६४।

विशेष—पूजा स्तोत्र एवं ग्रन्थ पाठों का संग्रह है।

६४११. गुटका सं० ३। पत्रसं० २१२। आ० ८×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १६२।

विशेष—गुणस्थान चर्चा आदि का संग्रह है।

६४१२. गुटका सं० ४। पत्र सं० ३४। आ० ६×४ इञ्च। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १८७।

विशेष—आयुर्वेद के नुस्खे हैं।

६४१३. गुटका सं० ५। पत्र सं० ११८। आ० ८×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १८८।

विशेष—पूजा पाठों का संग्रह है।

६४१४. गुटका सं० ६। पत्रसं० ४०। आ० १०×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत, हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १८६।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

६४१५. गुटका सं० ७। पत्रसं० ७८। आ० ५×४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। ले०काल×। पूर्ण। वेष्टनसं० १८५।

विशेष—पूजा पाठ एवं पद संग्रह है।

६४१६. गुटका सं० ८। पत्रसं० ४८। आ० ५½×४ इञ्च। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १८२।

विशेष—गुटका दादू पंथियों का है। दादूदयाल कृत सुमिरण एवं विनती को संग्रह है।

६४१७. गुटका सं० ६। पत्रसं० ७८। आ० ५½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १७५।

विशेष—सुभाषित संग्रह है।

६४१८. गुटका सं० १०। पत्रसं० १५०। आ० ८½×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १७६।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

६४१६. गुटका सं० ११। पत्रसं० ६२। आ० ८×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। ले०काल सं० १५४१ फाल्गुण बुदी १२। पूर्ण। वेष्टन स० १७७।

१. सम्यग्दर्शन पूजा	संस्कृत	बुधसेन।
२. सम्यक चारित्र पूजा	,,	नरेन्द्रसेन।
३. शांतिक विधि	,,	धर्मदेव।

६४२०. **गुटका सं० १२**। पत्रसं० ११८।आ० ७×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा–संस्कृत–हिन्दी। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १७८।

६४२१. **गुटका सं० १३**। पत्रसं० १२६। आ० ६$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा–संस्कृत–हिन्दी। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १७६।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

१. संतोष जयतिलक	बूचराज	हिन्दी
२. चेतन पुद्गल धमालि	बूचराज	,,

६४२२. **गुटका सं० १४**। पत्रसं० ६२। आ० ६×६$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा–संस्कृत–हिन्दी। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १७४।

विशेष—आदित्यवार कथा एवं पूजा संग्रह है।

६४२३. **गुटका सं० १५**। पत्र सं० २५२। आ० ६×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत-हिन्दी। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १७३।

१. भुवनदीपक भाषा टीका सहित	पद्मनन्दि सूरि।	संस्कृत
	ले०काल सं० १७६०	हिन्दी
२. त्रैलोक्य सार	सुमतिकीर्ति	संस्कृत।
४. बोधबोध	काशीनाथ	,,
४. समयसार नाटक	बनारसीदास	हिन्दी पद्य

६४२४. **गुटका सं० १६**। पत्र सं० ४–५७। आ० १०$\frac{1}{2}$×८ इञ्च। भाषा–संस्कृत। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टनसं० १६४।

विशेष—नित्य पूजा पाठ एवं स्तोत्र संग्रह है।

६४२५. **गुटका सं० १७**। पत्रसं० २०८। आ० ६×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं०६६।

विशेष—समयसार नाटक एवं भक्तामर स्तोत्र, एकीभाव स्तोत्र आदि भाषा में है।

६४२६. **गुटका सं० १८**। पत्रसं० ८–३०४ । आ० ६×८ इञ्च। भाषा–संस्कृत–हिन्दी। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ६५।

विशेष—पूजा स्तोत्र आदि है इसके अतिरिक्त विमलकीर्ति कृत आराधना सार है—जिसका आदि अन्त भाग निम्न है।

प्रारम्भ—

श्री जिनवर वाणि नमिवि
गुरु निर्ग्रंथ पाय प्रणमेवि।
कहूं आराधना सुविचार
संखे पइंसारोधार ॥१॥

हो क्षपक वयण अवधारि ।
हुवेइं चात्यु तुं भवपार ।
हास्युं भट कहूं तत्क भेय
धुरि समकित पालिन एह ।।

अन्तिम—

सन्यास तणा फल जोइ ।
हो सारगिरपि सुख होइ ।
बली श्रावकनु कुल पामी
लहर निरवाण मुगतइगामी ।।
जे भड सुणइ नरनारी,
ते जोइ भवनइ पारि ।
श्री विमल कीरति कहयु विचार ।
श्री आराधना प्रतिबोध सार ।।

६४२७. **गुटका सं० १६** । पत्रसं० ३८ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१ ।

विशेष—गुणस्थान चर्चा एवं अन्य स्फुट चर्चाएं हैं ।

प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

६४२८. **गुटका सं० १** । पत्रसं० ४५ । आ० १०½×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६६ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६४२९. **गुटका सं० २** । पत्रसं० १५५ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६४ ।

विशेष—निम्न पाठ है:—गुणस्थान चर्चा, मार्गणा चर्चा एवं नरक वर्णन

६४३०. **गुटका सं० ३** । पत्र सं० ४०८ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५६ ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

६४३१. **गुटका सं० ४** । पत्र सं० २१२ । आ० १०½×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं० १६५७ । अपूर्ण ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ एवं छहढाला, ध्यान बत्तीसी एवं सिंदूर प्रकरण है ।

६४३२. **गुटका सं० ५** । पत्रसं० १४१ । आ० १३½×८½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा तथा पाठों का संग्रह है ।

६४३३. **गुटका सं० ६** । पत्रसं० ४४ । आ० १०½×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ ।

विशेष - निम्न लिखित पाठ हैं—

१. अरिष्टाध्याय (२) प्रायश्चित भाषा (३) सामायिक पाठ (४) शांति पाठ एवं (५) समंतभद्र कृत बृहद् स्वयंभू स्तोत्र ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी बूंदी ।

६४३४. **गुटका सं० १** पत्रसं० ३८ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी ।ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६ ।

विशेष—निम्न पाठ है—चर्चाशतक कलयुग बत्तीसी आदि है ।

६४३५. **गुटका सं० २** । पत्रसं० ५६ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी प० । ले०काल सं० १७८० फागुण वदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० ७५ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१. बिहारी सतसई	—	पत्र १-५४ पद्य सं० ६७६
२. रसिक प्रिया	—	,, ५५-५६

६४३६. **गुटका सं० ३** । पत्र सं० ६४ । आ० ५×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७३ ।

विशेष—पद एवं विनती संग्रह है

६४३७. **गुटका सं० ४** । पत्र सं० ७२ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७१ ।

विशेष—धातु पाठ एवं चौबीसी ठाणा चर्चा है ।

६४३८. **गुटका सं० ५** । पत्र सं० ६० । आ० ७×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७२ ।

विशेष—पूजा स्तोत्र संग्रह है ।

६४३९. **गुटका सं० ६** । पत्रसं० ११६ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ ।

६४४०. **गुटका सं० ७** । पत्र सं० ४७४ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह हैं ।

६४४१. **गुटका सं० ८** । पत्रसं० २७२ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६ ।

विशेष—त्रैलोक्येश्वर जयमाल, सोलहकारण जयमाल, दशलक्षण जयमाल, पुरपरयण जयमाल आदि पाठों का संग्रह है ।

६४४२. **गुटका सं० ९** । पत्र सं० ४० । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५ ।

विशेष—कल्याण मन्दिर भाषा एवं तत्वार्थ सूत्र का संग्रह है ।

६४४३. गुटका सं० १० । पत्रसं० २१८ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४ ।

विशेष— पूजा पाठ स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

६४४४. **गुटका सं० ११** । पत्रसं० ५५ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल ×। अपूर्ण । वेष्टन सं० २८ ।

६४४५. **गुटका सं० १२** । पत्रसं० २६-२१७ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल । अपूर्ण । वेष्टनसं० २१ ।

विशेष—पूजायें, स्तोत्र एवं सामान्य पाठों का संग्रह है ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

६४४६. **गुटका सं० १** । पत्रसं० ३५३ । आ० ८$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत-प्राकृत । ले० काल सं० १७१८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६६ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. ज्ञानसार	पद्मनन्दि	प्राकृत
२. चारित्रसार	×	,,
३. ढाढसी गाथा	×	,,
४. मृत्युमहोत्सव	×	संस्कृत
५. नयचक्र	देवसेन	,,
६. अष्टपाहुड	कुन्दकुन्द	प्राकृत
७. त्रैलोक्यसार	नेमिचन्द	,,
८. श्रुतस्कंध	हेमचन्द	,,
९. योगसार	योगीन्द्र	अपभ्रंश
१०. परमात्म प्रकाश	,,	,,
११. स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा	कार्तिकेय	प्राकृत
१२. भक्तिपाठ	×	प्राकृत
१३. बृहद् स्वयंभू स्तोत्र	समंतभद्र	संस्कृत
१४. संबोध पंचासिका	×	प्राकृत
१५. समयसार पीठिका	×	संस्कृत
१६. यतिभावनाष्टक	×	,,
१७. वीतराग स्तवन	पद्मनन्दि	,,
१८. सिद्धिप्रिय स्तोत्र	देवनन्दि	,,
१९. भावना चौबीसी	पद्मनन्दि	,,
२०. परमात्मराज स्तवन	×	,,
२१. श्रावकाचार	प्रभाचन्द	,,
२२. दशलाक्षणिक कथा	नरेन्द्र	,,

२३. अक्षयनिधि दशमी कथा	×	संस्कृत
२४. रत्नत्रय कथा	ललितकीर्ति	,,
२५. सुभाषितार्णव	सकलकीर्त्ति	,,
२६. अनन्तनाथ कथा	×	,,
२७. पाशाकेवली	×	,,
२८. भाषाष्टक	×	,,

इसके अतिरिक्त अन्य पाठ भी है।

६४४७. गुटका सं० २। पत्र सं० १७२। आ० ८½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३६७।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखों का संग्रह है।

६४४८. गुटका सं० ३। पत्रसं० ३४६। आ० ६×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत-प्राकृत-हिन्दी। ले० काल सं० १७१२ पौष बुदी ५। पूर्ण। वेष्टनसं० ३६८।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है।

१-समयसार नाटक	बनारसीदास	हिन्दी पद्य
२-बनारसी विलास	,,	,,

ले०काल १७१२ पौष वदी ५। लाहौर मध्ये लिखापितं।

३-चौबीसठाणा चर्चा	—	,,
४-सामायिक पाठ	—	संस्कृत
५-तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामि	संस्कृत
६-रयणसार	—	प्राकृत
७-परमानंद स्तोत्र	—	संस्कृत
८-आणन्दा	महानंद	हिन्दी ४२ पद्य हैं।

आराधना सार, सामायिक पाठ, अष्टपाहुड, भक्तामर स्तोत्र आदि का संग्रह और है।

६४४९. गुटका सं० ४। पत्रसं० ४०। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३६४।

विशेष—लिपि विकृत है। विभिन्न पदों का संग्रह है।

६४५०. गुटका सं० ५। पत्र सं० ७८। आ० ६×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ३६२।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६४५१. गुटका सं० ६। पत्र सं० २०। आ० ६×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३२३।

विशेष—कोकशास्त्र के कुछ अंश हैं।

६४५२. **गुटका सं० ७** । पत्रसं० ५६ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२४ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६४५३. **गुटका सं० ८** । पत्र सं० ६-६४ । आ० ५×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३२५ ।

विशेष—श्वे० कवियों के हिन्दी पदों का संग्रह है ।

६४५४. **गुटका सं० ६** । पत्रसं० ६० । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२६ ।

विशेष—स्तोत्र पाठ एवं रविव्रत कथा, बंकका बत्तीसी, पंचेन्द्रिय वेलि आदि पाठों का संग्रह है ।

६४५५. **गुटका सं० १०** । पत्रसं० ५२ । आ० ८½×६ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२७ ।

विशेष—पूजास्तोत्र आदि का संग्रह है ।

६४५६. **गुटका सं० ११** । पत्रसं० १७६ । आ० ५½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२८ ।

विशेष—तत्वार्थसूत्र, सामायिक पाठ स्तोत्र, जेष्ठ जिनवर पूजा, तीस चौबीसी नाम आदि पाठों का संग्रह है ।

६४५७. **गुटका सं० १२** । पत्र सं० १६१ । आ० ४½×४½ इंच । **भाषा**—संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२६ ।

विशेष—सामयिक पाठ, पञ्च स्तोत्र, लक्ष्मी स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

६४५८. **गुटका सं० १३** । पत्रसं० १५३ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३० ।

विशेष—सहस्रनाम स्तोत्र, प्रतिष्ठापाठ सम्बन्धी पाठों का संग्रह है ।

६४५९. **गुटका सं० १४** । पत्रसं० १४१ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३१ ।

विशेष—सहस्रनाम, सकलीकरण, गंधकुटी, इन्द्रलक्षण, लघुस्नपन, रत्नत्रयपूजा, सिद्धचक्र पूजा । अष्टक-पद्मनन्दीकृत, अष्टक सिद्धचक्र पूजा-पद्मनन्दी कृत, जलयात्रा पूजा एवं अन्य पाठ हैं ।

अन्त में सिद्धचक्र यंत्र, सम्यग्दर्शन यंत्र, सम्यग्ज्ञान यंत्र, पंचपरमेष्ठि यंत्र, सम्यक् चारित्र यंत्र, दशलक्षण यंत्र, लघु शान्ति यंत्र आदि यंत्र दिये हुये हैं ।

६४६०. **गुटका सं० १५** । पत्रसं० ११४ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३१ ।

विशेष—रसिक प्रिया-इन्द्रजीत, योगसत-अमृत प्रभव का संग्रह है ।

६३६१. **गुटका सं० १६** । पत्र सं० ११४ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३३ ।

विशेष–– सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६४६२. **गुटका सं० १७** । पत्र सं० ८ । आ० ६×७ इञ्च । भाषा–संस्कृत–हिन्दी । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८६ ।

विशेष —पूजन स्तोत्र, कल्याण मन्दिर स्तोत्र तथा दव्य संग्रह है ।

६४६३. **गुटका सं० १८** । पत्रसं० २१ । आ० १२×६½ इंच । भाषा–संस्कृत–हिन्दी । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६० ।

विशेष—पूजा एवं यज्ञ विधान आदि का वर्णन है ।

६४६४. **गुटका सं० १६** । पत्रसं० १८६ । आ० ७×५½ इञ्च । **भाषा**–संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६ ।

विशेष––पूजा एवं प्रतिष्ठादि सम्बन्धी पाठ हैं ।

६४६५. **गुटका सं० २०** । पत्रसं० २८६ । आ० ६½×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६४६६. **गुटका सं० २१** । पत्रसं० ७२ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४ ।

विशेष—पूजा पाठ आदि का संग्रह है

६४६७. **गुटका सं० २२** । पत्र सं० ८–७० । आ० ६×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २८ ।

६४६८. **गुटका सं० २३** । पत्रसं० ४८ । आ० १०½×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८ ।

विशेष –चौबीसी दण्डक, गुणस्थान चर्चा आदि का संग्रह हैं ।

प्राप्ति स्थान–दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

६४६९. **गुटका सं० १** । पत्रसं० २–१६५ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा—संस्कृत–हिन्दी । ले०काल× । पूर्ण । वेष्टनसं० ३३४ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह हैं ।

(१) प्रतिक्रमण (२) भक्तामर स्तोत्र (३) शांति स्तोत्र (४) गौतम रासा (५) पुन्य मालिका (६) शत्रुंजयरास (समयसुन्दर) (७) सूत्र विधि (८) मंगलपाठ (९) कृष्ण शुकल पक्ष सज्झाय (१०) अनाथी ऋषि सज्झाय (११) नवकार रास (१२) बुद्धिरास (१३) नवरस स्तुति स्थूलभद्रकृत ।

६४७०. गुटका सं० २ । पत्र सं० १०७ । आ० ८½×६½ इञ्च । भाषा–संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३३ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठों का संग्रह है । पत्र फट रहे है ।

६४७१. गुटका सं ३ । पत्रसं० ४१ । आ० ७×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत- हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं०३३१ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६४७२. गुटका सं० ४ । पत्रसं० १८ । आ० ६½×८½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३३० ।

विशेष—धर्म पच्चीसी, कर्म प्रकृति, बारह भावना एवं परीषह आदि का वर्णन है ।

६४७३. गुटका सं० ५ । पत्रसं० ३४१ । आ० ८½×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं० १८३३ वैशाख बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६५ ।

विशेष—जयपुर में पं० दोहराज के शिष्य दयाचन्द ने लिखा था । निम्न पाठ हैं—

(१) त्रिकाल चौबीसी विधान
(२) सौख्य पूजा ।
(३) जिनसहस्रनाम-आशाधर
(४) बृहद् दशलक्षण पूजा—केशवसेन ।
(५) षोडश कारण व्रतोद्यापन
(६) भविष्यदत्त कथा-ब्रह्म रायमल्ल,
(७) नंदीश्वर पंक्ति पूजा ।
(८) द्वादश व्रत मंडल पूजा ।
(९) ऋषिमंडल पूजा–गुणनन्दि ।

६४७४. गुटका सं० ६ । पत्रसं० ६४ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १६४४ श्रावण सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० २६४ ।

विशेष—पारसदास कृत पद संग्रह है, तीस पूजा तथा अन्य पूजायें है ।

६४७५. गुटका सं० ७ । पत्र सं० २१ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६३ ।

विशेष—जेष्ठ जिनवर पूजा एवं जिनसेनाचार्य कृत सहस्रनाम स्तोत्र है ।

६४७६. गुटका सं० ८ । पत्रसं० १८० । आ० ११×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २६२ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

६४७७. गुटका सं० ९ । पत्र सं० १६८–३०१ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २६१ ।

विशेष—स्तोत्र पाठ पूजा आदि का संग्रह है ।

६४७८. गुटका सं० १० । पत्रसं० १७१ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल सं० १७१७ । पूर्ण । वेष्टनसं० २८६ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६४७६. गुटका सं० ११ । पत्रसं० १६४ । आ० ५½×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल सं० १८६६ चैत बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८८ ।

विशेष—रामविनोद भाषा योग शतक भाषा आदि का संग्रह है ।

६४८०. गुटका सं० १२ । पत्रसं० १०६ । आ० ८×६ इंच । भाषा–संस्कृत–हिन्दी । ले० काल सं० १६६८ । पूर्ण । वेष्टनसं० २८६ ।

विशेष—गुटके का नाम सिद्धान्तसार है । आचार शास्त्र पर विभिन्न प्रकार से विवेचन करके दश धर्म का विस्तृत वर्णन किया गया है ।

६४८१. गुटका सं० १३ । पत्र सं० ५–३२ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा संस्कृत–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २८५ ।

विशेष—लघु एवं वृहद् चाणक्य नीति शास्त्र हिन्दी टीका सहित है ।

६४८२. गुटका सं० १४ । पत्र सं० ५७ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २८४ ।

विशेष—अंकुरारोपण विधि, विमान शुद्धि पूजा तथा लघु शान्तिक पूजा है ।

६४८३. गुटका सं० १५ । पत्र सं० ५० । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २४५ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा संग्रह है ।

६४८४. गुटका सं० १६ । पत्र सं० १४५ । आ० १०×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी, संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४४ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

१–एकीभाव स्तोत्र २-विषापहार ३–तत्वार्थ सूत्र ४–छहढाला ५–भक्तामर स्तोत्र टीका ६–मृत्यु महोत्सव ७–मोक्ष मार्ग बत्तीसी दौलत कृत ८-सुपंथ कुपंथ पच्चीसी ६–नरक दोहा १०–सहस्रनाम ।

६४८५. गुटका सं० १७ । पत्रसं० ८० । आ० ८×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २२० ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ व तत्वार्थ सूत्र आदि है ।

६४८६. गुटका सं० १८ । पत्र सं० २३ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । ले०काल सं० १६२३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१५ ।

विशेष—

१. सहस्रनाम भाषा—बनारसीदास

२. द्वादशी कथा —ब्र० ज्ञानसागर

९४८७. गुटका सं० १९। पत्र सं० ८०। आ० ९×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी, संस्कृत। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १७४।

विशेष—परमात्म प्रकाश, पंच मंगल, रत्नकुल पच्चीसी, दशलक्षण उद्यापन पाठ (श्रुतसागर) एवं तीर्थंकर पूजा का संग्रह है।

९४८८. गुटका सं० २०। पत्र सं० ३१२। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा—हिन्दी, संस्कृत। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ७५।

विशेष—पंचस्तोत्र तथा पूजाओं का संग्रह है।

९४८९. गुटका सं० २१। पत्रसं० ११०। आ० ९×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी, संस्कृत। ले०काल सं० १९५२। पूर्ण। वेष्टन सं० ६८।

प्राप्ति स्थान-दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा

९४९०. गुटका सं० १। पत्रसं० १०१। आ० ६×५ इञ्च। भाषा-प्राकृत। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १५।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

अरिष्टाध्याय	प्राकृत	—
आचार शास्त्र	,,	—
त्रिलोकसार	,,	आ० नेमिचन्द्र

९४९१. गुटका सं० २। पत्र सं० ११७। आ० ६×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी, संस्कृत। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टनसं० १७।

विशेष—पूजाओं एवं स्तोत्रों का संग्रह है।

९४९२. गुटका सं० । पत्रसं० २-८५। आ० ६×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी, संस्कृत। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टनसं० १८।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

९४९३. गुटका सं० ३। पत्र सं० १४८। आ० १०×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले०काल सं० १८७७। पूर्ण। वेष्टनसं० १६।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

श्रीपाल चरित्र भाषा	—	हिन्दी	—
जिन सहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	संस्कृत	—
भविष्यदत्त चौपई	ब्रह्म रायमल्ल	हिन्दी	—

९४९४. **गुटका सं० ४**। पत्र सं० १६८। आ० ६×४½ इंच। भाषा—हिन्दी-संस्कृत। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १९।

९४९५. **गुटका सं० ५**। पत्र सं० १४९ । आ० ७×५ इंच। **भाषा**–हिन्दी संस्कृत। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० २०।

विशेष—आयुर्वेद, मंत्र शास्त्र आदि पाठों का संग्रह है।

९४९६. **गुटका सं० ६**। पत्रसं० १७६। आ० ५½×४ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले०काल सं० × । पूर्ण। वेष्टनसं० ६२।

विशेष—आयुर्वेदिक नुस्खों का अच्छा संग्रह है।

९४९७. **गुटका सं० ७**। पत्रसं० १३६। आ० ९×५½ इंच। भाषा-हिन्दी। ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६५।

विशेष —पूजा पाठ तथा स्तोत्रों एवं पदों का संग्रह है।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक)।

९४९८. **गुटका सं० १**। पत्र सं० १८८। भाषा–संस्कृत हिन्दी। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १०६ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाओं का संग्रह है।

९४९९. **गुटका सं० २**। पत्रसं० ७२। आ० ८×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२९।

विशेष—प्रति जीर्ण है तथा लिपि विकृत है। मुख्य निम्न पाठ हैं।

१–धुचरित	परमानन्द	पत्र १–५।	र० काल १८०३ माह सुदी ६।
२–सिहनाभ चरित्र		५–६।	१७ पद्य हैं।
३–जंबुक नामो		६–७।	७ पद्य हैं।
४–सुभाषित संग्रह		७–१५।	३५ पद्य हैं।
५–सुभाषित संग्रह		१६–२८।	१२५ पद्य हैं।
६–सिंहासन बत्तीसी		२९–७२।	—

९५००. **गुटका सं० ३**। पत्रसं० २०४। आ० ९×५ इंच। **भाषा**–संस्कृत–हिन्दी। ले० काल पूर्ण। वेष्टनसं० १३०।

विशेष—सामान्य पूजा पाठों का संग्रह है। कहीं २ हिन्दी के पद भी हैं।

९५०१. **गुटका सं० ४**। पत्र सं० ५५। आ. ७×५ इंच। भाषा–हिन्दी संस्कृत। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १३२।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

६५०२. गुटका सं० ५ । पत्रसं० ७-२६ । आ० ८½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १३२ ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र सहस्रनाम स्तोत्र, आदि पाठों का संग्रह है ।

६५०३. गुटका सं० ६ । पत्रसं० ११५ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३४ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह हैं ।

६५०४. गुटका सं० ७ । पत्र सं० ६८ से १२५ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १३५ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह हैं ।

६५०५. गुटका सं० ८ । पत्रसं० १९२ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३६ ।

विशेष—लिपि विकृत हैं । पूजा पाठ संग्रह हैं ।

६५०६. गुटका सं० ९ । पत्रसं० ७१ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३७ ।

विशेष—सामान्य पाठ हैं । पट्टी पहाड़े भी हैं ।

६५०७. गुटका सं० १० । पत्रसं० ६६ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३८ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६५०८. गुटका सं० ११ । पत्र सं० २२ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १३९

६५०९. गुटका सं० १२ । पत्र सं० ६८ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४० ।

विशेष—निम्न पूजा पाठों का संग्रह है—

(१) भक्तामर स्तोत्र (२) अकृत्रिम चैत्यालय पूजा (३) स्वयंभू स्तोत्र (४) बीस तीर्थंकर पूजा (५) तीस चौबीसी पूजा एवं (६) सिद्ध पूजा (ज्ञानतराय कृत) ।

६५१०. गुटका सं० १३ । पत्रसं० १४५ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८०१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४१ ।

विशेष—साहिपुरा में उम्मेदसिंह के राज्य में प्रतिलिपि हुई थी ।

(१) सुन्दर शृंगार	सुन्दरदास	पत्र १-५७ ।	हिन्दी
(२) बिहारी सतसई	बिहारीदास	५८-१२४ ।	हिन्दी
(३) कलियुग चरित्र	बाण	१२५-२९ ।	,,
		र०काल सं० १६७४	

प्रारम्भ

पहलूं सुमरि पुर गणपति को **महामाय** के पांय ।।
जाके सुमिरत ही सर्व । पाप दूरि है जाय ।।
संवत् सोलासै चोहोत्तरिया चैत दांद उणियारै
श्री यश भयो खानखाना, को तब कविता अनुसारि ।।
शब्द समुझै शब के मनमानै शब को लगै सुहाई ।
मैं कवि बान नाम तैं जानी आखर की शरशाई ।।
ब्रांभन जाति मथरिया पाठक बान नाम जग जानै ।
रांव कियो राजाधिराज यौं महासिंघ मनमानै ।।
कलि चरित्र जब आखिन देख्यौं कलि चरित्र तब कीनों
कहे शुभे ने पाप न परसौं अभैदान कलि दीनों ।।

(४) कलि व्यवहार पच्चीसी	नन्दराम	पत्र १३०-१३४ २५ पद्य हैं	हिन्दी
(५) पंचेन्द्रिका ब्यौरा	—	पत्र १३४-३७	।।
(६) राम कथा	रामानन्द	१३७-१५०	।।
(७) पद्मिनी वखाण	—	१५२ तक	।।
(८) कवित्त	बुधराव बूंदी ।	१४५ तक	।।

९५११. **गुटका सं० १४** । पत्रसं० १३६ । आ० ५×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४२ ।

विशेष निम्न पाठ हैं—

१. सवैया	कुमुदचन्द	पद्य सं० ४
२. सोलह स्वप्न छप्पय	विद्यासागर	।। ६
३. जिन जन्म महोत्सव षट् पद	।।	।। १२
४. सप्तव्यसन	।।	।। ७
५. दर्शनाष्टकसवैया	।।	।। ११
६. विषापहार छप्पय	।।	।। ४०
७. भूपाल स्तोत्र छप्पय	।।	।। २७
८. बीस विरहमान सवैया	।।	।। २१
९. नेमिराजमती का रेखता	विनोदीलाल	।। ११
१०. झूलना	तानुशाह	४२ पद्य हैं
११. प्रस्ताविक सवैया	×	२७
१२. छप्पय	×	४ पद्य हैं
१३. राजुल बारह मासा	गंगकवि	१३ पद्य हैं
१४. महाराष्ट्र भाषा द्वादश मासा	चिमना	१३ पद्य हैं
१५. राजुल बारह मासा	विनोदीलाल	२६ पद्य हैं

प्राप्ति स्थान—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर-आवां

६५१२. गुटका सं० १ । पत्र सं० ७८ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाओं का संग्रह है ।

६५१३. गुटका सं० २ । पत्र सं० ६० । आ० ७×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा स्तोत्र । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन बघेरवाल मन्दिर-आवां

६५१४. गुटका सं० १ । पत्र सं० १५६ । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

६५१५. गुटका सं० २ । पत्रसं० १७८ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५ ।

विशेष- पूजा पाठ संग्रह है । बीच के कई पत्र खाली हैं ।

६५१६. गुटका सं० ३ । पत्रसं० ७४ । आ० ६×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६५१७. गुटका सं० ४ । पत्रसं० ८८ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८ ।

प्राप्त स्थान—दि० जैन मन्दिर, राजमहल (टोंक)

६५१८. गुटका सं० १ । पत्रसं० ७६ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १७४ ।

विशेष—आयुर्वेद, ज्योतिष स्तोत्र आदि का संग्रह है । स्वप्न फल भी दिया हुआ है ।

६५१९. गुटका सं० २ । पत्र सं ११ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत, हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७५ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६५२०. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ७५ । आ० ६½×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १९६१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७६ ।

विशेष—चौबीस तीर्थंकर पूजा गुटकाकार में है । पत्र एक दूसरे के चिपके हुए है ।

६५२१. गुटका सं० ४ । पत्रसं० ८५ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत, हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७७ ।

६५२२. गुटका सं० ५ । पत्र सं० ५६-१२२ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७८ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

भक्तामर स्तोत्र, तत्वार्थसूत्र, सामायिक पाठ आदि ।

६५२३. गुटका सं० ६ । पत्र सं० २८ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत, हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७६ ।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रह है—

पञ्चस्तोत्र	—	संस्कृत
सहस्रनाम स्तोत्र	आशाधर	,,
तत्वार्थसूत्र	उमास्वामी	,,
विषापहार स्तोत्र भाषा	अचलकीर्ति	हिन्दी
चौबीस ठाणा गाथा	—	प्राकृत
शिखर विलास	केशरीसिंह	हिन्दी
पंचमंगल	रूपचन्द	,,
पूजा संग्रह	—	,,
बाईस परीषह वर्णन	—	हिन्दी
नेमिनाथ स्तोत्र	—	संस्कृत
भैरव स्तोत्र	शोभाचन्द	हिन्दी

६५२४. गुटका सं ७ । पत्र सं० ३-६४ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १८० ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

चौबीसतीर्थंकर स्तुति	देवाब्रह्म	हिन्दी
अठारह नाता कथा	—	,,
पद संग्रह	—	,,
खण्डेलवालों की उत्पत्ति	—	,,
चौरासी गोत्र वर्णन	—	,,
चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न	अ० रायमल्ल	,,

६५२५. गुटका सं० ८ । पत्र सं० १२ । आ० ६×१½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८१ ।

विशेष—शेसठ शलाका पुरुष वर्णन है ।

६५२६. गुटका सं० ९ । पत्र सं० २५६ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत, हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८२ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

शत अष्टोत्तरी कवित्त	भैया भगवतीदास	हिन्दी
द्रव्य संग्रह भाषा	,,	,,
चेतक कर्म चरित्र	,,	,,
अक्षर बत्तीसी	,,	,,
ब्रह्म विलास के अन्य पाठ	,,	,,

वैद्य मनोत्सव	तयनसुख	हिन्दी
पूजा एवं स्तोत्र	—	संस्कृत हिन्दी
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामि	संस्कृत
आयुर्वेद के नुस्खे	—	हिन्दी

६५२७. गुटका सं० १०। पत्र सं० ६५। आ० ५×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १८३।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है। तत्वार्थ सूत्र, भक्तामर स्तोत्र आदि भी दिये हुए हैं।

६५२८. गुटका सं० ११। पत्र सं० १४२। आ० ६×४ इञ्च। **भाषा**-हिन्दी संस्कृत। ले० काल × ।पूर्ण। वेष्टन सं० १८४।

विशेष--गुटके में ३८ पाठों का संग्रह है जिनमें स्तोत्र पूजाएं तत्वार्थसूत्र आदि सभी संग्रहीत हैं।

६५२९. गुटका सं० १२। पत्र सं० २४-७२। आ० १२×४ इञ्च। **भाषा**-संस्कृत हिन्दी। ले०काल × । अपूर्ण वेष्टन सं० १८५।

विशेष—पाशा केवली एवं प्रस्ताविक श्लोक आदि का संग्रह है।

६५३०. गुटका सं० १३। पत्रसं० ६-१२ ६३ से १००। आ० ६×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टनसं० १८६।

विशेष—आयुर्वेद नुस्खों का संग्रह है।

६५३१. गुटका सं० १४। पत्र सं० २-६०। आ० ६×५ इञ्च। **भाषा**-संस्कृत। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १८७।

विशेष—पत्रसं० २-३० तक पंचपरमेष्ठी पूजा तथा आयुर्वेदिक नुस्खे दिये हुए हैं।

६५३२. गुटका सं० १५। पत्र सं० १६१। आ० ६×६ इंच। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १८८।

विशेष--निम्न पाठों का संग्रह है—

पंच स्तोत्र	—	संस्कृत
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामि	,,
इष्टोपदेश भाषा	—	हिन्दी
सहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	संस्कृत
आलाप पद्धति	देवसेन	संस्कृत
अक्षर बावनी	कबीरदास	हिन्दी

अक्षर बावनी का आदि भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—

बावन अक्षर लोक त्रयी सब कुछ इनही मांहि।
और अरैंगे छए छिए सो अक्षर इनमें नाहिं ॥१॥

जो कछु अक्षर बोलत आवा, जह अबोल तहं मन न लगावा ।
बोल अबोल मध्य है सोई, जस वो है तस लखे न कोई ।।२।।
तुरक नरीकम जोह कैं हिन्दू वेद पुराण ।
मन समझाया कारणीं कथी में कछू येक ज्ञान ।।३।।
ऊंकार आदि में जाना, लिखकैं मेरे ताहि न माना ।
ऊंकार जस है सोई, तसि लखि मेटना न होई ।।४।।
कका किरण कवल में आवा, ससि विकास तहां संपुर नावा ।
अरजै तहा कुसुम रस पाया जकछु कह्यो नहि कासिम भावा ।।४।।

मध्य भाग

ममा मन स्यों काम है मन मनै सिधि होइ ।
मन ही मनस्यों कही कबीर मनस्यों मिल्या न कोई ।।३६।।

अन्तिम भाग—

बावन अक्षर तेरि आनि एकै अक्षर सक्या न जानि ।।
" सबद कबीरा कहै बूझौ जाइ कहा मन रहै ।।४१।।

इति बावनि ग्यान संपूर्ण ।

६५३३. गुटका सं० १६ । पत्रसं० ३-६३ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं० १८८८ । **अपूर्ण । वेष्टनसं० २२८ ।**

विशेष—साधारण पूजा पाठ संग्रह एवं देवाब्रह्म कृत सास बहू का झगड़ा है ।

६५३४. गुटका सं० १७ । पत्रसं० १४ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं० × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २२६ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६५३५. गुटका सं० १८ । पत्रसं० ५६ । आ० ६×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल सं० १८८७ । पूर्ण । वेष्टनसं० २३० ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

सप्तर्षि पूजा	श्री भूषण	संस्कृत
अनन्त व्रत पूजा	भुमचन्द्र	,,
गणधर वलय पूजा	—	,,
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामि	,,

६५३६. गुटका सं० १६ । पत्रसं० ६६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २३१ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाओं एवं पाठों का संग्रह है ।

६५३७. गुटका सं० २० । पत्रसं० ४४ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २३२ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

चतुर्विंशति जिन-षट्पद बंध स्तोत्र	धर्मकीर्ति	हिन्दी
पद्मनंदिस्तुति	—	संस्कृत

६५३८. गुटका सं० २१ । पत्रसं० ३० । आ० ५×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २३४ ।

विशेष—ज्योतिष शास्त्र सम्बन्धी बातों का विवरण है । भद्दली विचार भी दिया है ।

६५३९. गुटका सं० २२ । पत्रसं० २९ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २३५ ।

विशेष—दोहाशतक परमात्म प्रकाश (योगीन्दुदेव) द्रव्य संग्रह भाषा तथा अन्य पाठों का संग्रह है ।

६५४०. गुटका सं० २३ । पत्रसं० १५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा हिन्दी–संस्कृत । ले०काल सं० १८९० वैशाख बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनसं० २३६ ।

विशेष—ज्योतिष सम्बन्धी सामग्री है ।

६५४१. गुटका सं० २४ । पत्रसं० ५७ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २५४ ।

६५४२. गुटका सं० २५ । पत्रसं० १९० । आ० १४×९ इञ्च । भाषा–संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २५५ ।

विशेष—९९ पाठों का संग्रह है जिसमें पूजाऐं स्तोत्र नित्यपाठ आदि सभी हैं ।

प्राप्त स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ, टोडारायसिंह ।

६५४३ गुटका सं० १ । पत्रसं० ११३ । आ० ७×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । ले०काल सं० १९४१ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२२ र ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६५४४. गुटका सं० २ । पत्रसं० १३ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२३ र ।

विशेष—पूजा स्तोत्र एवं हिन्दी पद संग्रह है ।

६५४५. गुटका सं० ३ । पत्रसं० । आ० ७$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२४ र ।

६५४६. गुटका सं० ४ । पत्रसं० ४४-१५० । आ० ६×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १२५ ।

विशेष—पूजादि संग्रह है ।

६५४७. **गुटका सं० ५** । पत्रसं० १४६ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १२६ र ।

विशेष—पूजा स्तोत्र संग्रह है ।

६५४८. **गुटका सं० ६** । पत्रसं० १२७ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । जीर्ण । वेष्टनसं० १२७ र ।

६५४९. **गुटका सं० ७** । पत्रसं० १७५ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १२८ र ।

६५५०. **गुटका सं० ८** । पत्रसं० ८-७५ । आ० ७×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२९ र ।

विशेष—७२ पद्य से ६९४ पद्य तक वृंद सतसई है ।

६५५१. **गुटका सं० ९** । पत्रसं० ११७ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३० र ।

विशेष—रामचन्द्र कृत चौबीस तीर्थंकर पूजा है ।

६५५२. **गुटका सं० १०** । पत्रसं० ८-६१ । आ० ४½×४ इञ्च । भाषा संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १९० ।

विशेष—हिन्दी में पद संग्रह भी है ।

६५५३. **गुटका सं० ११** । पत्रसं० २९ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी ।पद्य ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १८१९ ।

६५५४. **गुटका सं० १२** । पत्रसं० ८-६१ । आ४½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १९१ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र, तत्वार्थ सूत्र, पद्मावती पूजा वगैरह का संग्रह है ।

६५५५. **गुटका सं० १३** । पत्रसं० ३३-१५१ । आ० ४½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १९४ × ।

१. पुरुष जातक	—	३३ से ३८
२. नारिपत्रिका	—	३९ से ४१
३. भुवन दीपक	—	४२ से ६१
४. जयपराजय	—	६२ से ६६
५. षट पंचाशिका	—	६७ से ७३
६. साठि संवत्सरी	—	७४ से १२३
७. कूपचक्र	—	१२४ से १३४

१४१ मे १४९ तक पत्र नहीं है ।

६५५६. **गुटका सं० १४** । पत्रसं० १०-५२ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २०५ ।

विशेष—पूजा तथा स्तोत्र संग्रह है ।

६५५८. गुटका सं० १५ । पत्र सं० ११२ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०६ ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र, भक्तामर स्तोत्र एवं पूजा पाठ का संग्रह है ।

६५५९. गुटका सं० १६ । पत्र सं० ८८ । आ० ५½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल सं० १५९५ माह सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०७ ।

१-तीस चौबीसी पूजा—१-६८

२-त्रिकाल चौबीसी पूजा - ६८-८८ तक

६५६०. गुटका सं० १७ । पत्र सं० १० । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १८९२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०८ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र है ।

६५६१. गुटका सं० १८ । पत्र सं० ११४ । आ० ७×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०९ ।

विशेष—पत्र १-२१ तक पूजा पाठ तथा पत्र २२-११४ तक कथायें हैं ।

६५६२. गुटका सं० १९ । पत्र सं० ४८ । आ० ७×५ इंच । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१० ।

६५६३. गुटका सं० २० । पत्रसं० १०७ । आ० ६½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २११ ।

६५६४. गुटका सं० २१ । पत्रसं० १६-८८ । आ० ७×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१२ ।

विशेष—पदों का संग्रह है ।

६५६५. गुटका सं० २२ । पत्रसं० १४-१४८ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१३ ।

	पत्र संख्या	
१—पूजा पाठ स्तोत्र	१-११२	हिन्दी संस्कृत
१—शील अत्तीसी-अकमल	११२-१२१	हिन्दी
ले०काल सं० १६३९ पौष सुदी १४ ।		
२—हसनखां की कथा—	१२४-१३५	हिन्दी

६५६६. गुटका सं० २३ । पत्र सं० १५ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१४ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

प्राप्ति स्थान–दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोड़ारायसिंह

६५६७. गुटका सं० १ । पत्र सं० ५० । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६ ।

विशेष—नित्यनैमित्तिक पूजाओं का संग्रह है ।

६५६८. गुटका सं० २ । पत्रसं० २२१ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १० ।

१–देव पूजा × । २–शास्त्र पूजा—भूधरदास । ३–शास्त्र पूजा-ज्ञानतराय । ४–सोलह कारण पूजा × । ५–सोलह कारण पूजा (प्राकृत) । ६–दशलक्षण पूजा-ज्ञानतराय । ७–रत्नत्रय पूजा ज्ञानतराय । ८–पंचमेरु पूजा—ज्ञानतराय । ९–सिद्ध क्षेत्र पूजा । १०–तत्वार्थ सूत्र । ११–स्तोत्र । १२–जोगीरासा-जिनदास । १३–परमार्थ जकड़ी । १४ अध्यात्म पैंड़ी-बनारसीदास । १५–परमार्थ बोहाशतक–रूपचंद । १६-बारह अनुप्रेक्षा-द्यानतराय । १७-चर्चाशतक-द्यानतराय । १८-जैन शतक–भूधरदास । १९—उपदेश तक—द्यानतराय । २०-पंच परमेष्ठी गुण वर्णन–द्यानतराय र० काल १८६५ । २१–ज्ञान चिन्तामणि—मनोहरदास (र० काल १७२८ माह सुदी ७) २२-पद संग्रह । २३–जखड़िया संग्रह । २४—स्तोत्र । २५–मृत्यु महोत्सव । २६–चौपड़ासार एवं आदि का संग्रह है ।

६५६९. गुटका सं० ३ । पत्र सं० २३२ । आ० ९×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११ ।

१—चर्चा समाधान—भूधर मिश्र ।

२—भक्तामर स्तोत्र—मानतुंगाचार्य ।

३—कल्याण मन्दिर स्तोत्र ।

६५७०. गुटका सं० ४ । पत्रसं० १८८ । आ० ८½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

६५७१. गुटका सं० ५ । पत्रसं० × । आ० ५½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१ ।

विशेष—पद संग्रह एवं धनञ्जय कृत नाममाला है ।

६५७२. गुटका सं० ६ । पत्र सं० ६४ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८९६ सावण बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० २२ ।

१—समाधिविलास—× । २७३ पद्य हैं ।

विशेष—चि० लक्ष्मीचन्द के पठनार्थ व्यास रामबक्स ने रावजी जीवण सिंह शिगावत के राज्य में दूणी ग्राम में लिखा था । ले० काल सं० १८९६ सावण बुदी १० ।

२—दोहे—तुलसीदास । ६८ दोहे हैं ।

३—कुण्डलियां—गिरधरराय । ४१ कुण्डलियां हैं ।

४—विभिन्न छन्द—× । जिसमें वरयं छंद-४०, अडिल्ल छंद-२०, पहेलिया-४० एवं मुकुरी छंद २६ हैं।

५ हिय हुलास ग्रंथ—× । ७१ छंद हैं।

६५७३. गुटका सं० ७। पत्रसं० ८। आ० ८×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ४०।

विशेष—पद्मावती मंत्र, खण्डेलवाल जाति की उत्पत्ति तथा वंशावली, तीर्थंकारों के माता पिता के नाम, तीर्थंकर की माता तथा चन्द्रगुप्त के स्वप्न है।

६५७४. गुटका सं० ८। पत्रसं० २६४। आ० ८×७½ इञ्च। भाषा हिन्दी-संस्कृत। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ७३।

विशेष—चौबीस ठाणा चर्चा एवं स्तोत्र पाठ पूजा आदि हैं।

६५७५. गुटका सं० ९। पत्रसं० ६४। आ० ८×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १८९७। पूर्ण। वेष्टन सं० ७४।

१-आदित्यवार कथा—भाऊ कवि

२-चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न

३ पद संग्रह—देवाब्रह्म

४ खण्डेलवालों के ८४ गोत्र

५-सास बहू का झगडा—देवाब्रह्म

६५७६. गुटका सं० १०। पत्र सं० ९१-११६। आ० ८×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। ले०काल सं० १९४६ माघ सुदी ५। अपूर्ण। वेष्टनसं० ७८।

विशेष—बनारसी विलास है।

६५७७. गुटका सं० ११। पत्र सं० ४४। आ० ७×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ७९।

विशेष—पद संग्रह है।

६५७८. गुटका सं० १२। पत्रसं० ३२। आ० ५×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ८०।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र एवं कल्याण मंदिर स्तोत्र हिन्दी में है।

६५७९. गुटका सं० १३। पत्रसं० १६-४९। आ० ५½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। ले०काल सं० × । अपूर्ण। वेष्टनसं० ८१।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

६५८०. गुटका सं० १। पत्रसं० २५०। आ० ७½×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टनसं० २७६।

विशेष—प्रति जीर्ण शीर्ण है तथा बहुत से पत्र नहीं हैं। मुख्यतः पूजा पाठों का संग्रह है।

६५८१. गुटका सं० २ । पत्रसं० २०८ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३७७ ।

विशेष—गुणस्थान चर्चा एवं अन्य चर्चाओं का संग्रह है ।

६५८२. गुटका सं० ३ । पत्रसं० ४-१३८ । आ० ६½×६½ इञ्च । भाषा- हिन्दी । र० काल सं० १६७८ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३७८ ।

विशेष—ससिसागर कृत शालिभद्र चौपई है जिसका रचना काल सं० १६७८ है ।

६५८३. गुटका सं० ४ । पत्र सं० २८ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७९ ।

विशेष—धनपतराय का चर्चा शतक है ।

६५८४. गुटका सं० ५ । पत्रसं० ११५ । आ० ६×६½ इंच । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३८० ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

समवशरण पूजा	रूपचन्द	हिन्दी
समवशरण रचना	—	,,

६५८५. गुटका सं० ६ । पत्र सं० १७५ । आ० ५×३½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०कालसं० १७८२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८१ ।

विशेष—पूजा पाठों के अतिरिक्त मुख्यत: निम्न पाठों का संग्रह है—

जैन रासो	—	हिन्दी
सुदर्शन रास	ब्रह्म रायमल्ल	,,
जोगीरासो	जिनदास	,,

६५८६. गुटका सं० ७ । पत्रसं० १५० । आ० ८½×४ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत, हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८२ ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

रामविनोद एवं अन्य आयुर्वेद नुस्खों का संग्रह है ।

६५८७. गुटका सं० ८ । पत्रसं० ७२ । आ० ८½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । ले०काल सं० १७९३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८३ ।

विशेष—मुख्यत: निम्न रचनाओं का संग्रह है—

श्रीपाल रास	ब्रह्म रायमल्ल	हिन्दी	—
पंचगति की वेलि	हर्षकीर्ति	,,	(ले०काल सं० १७९३)
एकीभाव स्तोत्र भाषा	हीरानन्द	,,	(ले०काल सं० १७९४)
आषाढभूति मुनि का चोढाल्या	कनकसोम	,,	(र० काल सं० १६३८ । ले०काल सं० १७९६)

६५८८. गुटका सं० ६ । पत्रसं० १६० । आ० ८$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । **भाषा**–हिन्दी । ले० काल सं० १७१० आषाढ़ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८४ ।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रह है—

समयसार नाटक	बनारसीदास (ले०काल सं० १७१०)	हिन्दी	
इतिहाससार समुच्चय	लालदास (ले०काल सं० १७०८ अषाढ़ सुदी १५)	,,	

६५८९. गुटका सं० १० । पत्र सं० ४-५४ । आ० ८×५ इञ्च । **भाषा**–हिन्दी–संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३८५ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६५९०. गुटका सं० ११ । पत्रसं० ६८ । आ० ६$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । **भाषा**–हिन्दी, संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३८६ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६५९१. गुटका सं० १२ । पत्रसं० १७ । आ० ५$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । **भाषा**–प्राकृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८७ ।

विशेष—प्रतिक्रमण पाठ है ।

६५९२. गुटका सं० १३ । पत्रसं० ५–२४८ । आ० ५$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । **भाषा**–संस्कृत–हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३८८ ।

विशेष—पूजा स्तोत्र एवं आदित्यवार कथा आदि का संग्रह है ।

६५९३. गुटका सं० १४ । पत्रसं० १२८ । आ० ८$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । **भाषा**–हिन्दी, संस्कृत । ले०काल सं० १७५३ आसोज बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८९ ।

विशेष—मुख्य पाठों का संग्रह निम्न प्रकार से है—

नेमिनाथ स्तवन	—	हिन्दी (र०काल सं० १७२४)	१५ पद्य
सुभद्र कथा	सिंघो	हिन्दी	२३ पद्य
अतिचार वर्णन	—	,,	—
ग्रन्थ विवेक चिलवणी	सुन्दरदास	,,	५६ पद्य

अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है—

सकल सिरोमनि है नर देही
नारायन को निज घर येही
जामहि पइये देव मुरारी
भइया मनुषउ बूझ तुम्हारी ॥५५॥

चेतसि कैसो चेतहु भाई
जिनि उहका वै राम दुहाई
सुन्दरदास कहै जु पुकारी
भइया मनुष जु बूझ तुम्हारी ॥५६॥

विवेक चिंतामणि	सुन्दरदास	हिन्दी
आत्मशिक्षावलि	मोहनदास	,,
शीलबावनी	मालकवि	,,
कृष्ण बलिभद्र सिज्झाय	—	,,
शीलनारास	विजयदेव सूरि	,,

इनके अतिरिक्त अन्य पाठों का संग्रह भी है।

६५६४. गुटका सं० १५ । पत्रसं० ३०६ । आ० ६×५ इञ्च । **भाषा**–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६० ।

विशेष—मुख्यतः निम्न रचनाओं का संग्रह हैं—

प्रद्युम्न चरित	कवि सधारू	हिन्दी	अपूर्ण

विशेष—६८५ पद्य हैं । प्रारम्भ के ६ पत्र नहीं हैं ।

कर्म विपाक	बनारसीदास	,,	—
हनुमत कथा	ब्र० रायमल्ल	,,	—
जम्बू स्वामी कथा	पांडे जिनदास	,,	—
श्रीपाल रास	ब्र० रायमल्ल	,,	—

६५६५. गुटका सं० १६ । पत्रसं० १७६ । आ० ६×५½ इञ्च । **भाषा**–हिन्दी, संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६१ ।

विशेष—पूजा पा० संग्रह है ।

६५६६. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ७४ । आ० ७½×४½ इञ्च । **भाषा**-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६२ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६५६७. गुटका सं० १८ । पत्रसं० १२० । आ० ६×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६३ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६५६८. गुटका सं० १९ । पत्रसं० १०१ । आ० ६×७ इञ्च । **भाषा**–हिन्दी । ले० काल सं० १८२८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६४ ।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रह है—

भाषा भूषण टीका	नारायणदास	हिन्दी (र० काल सं० १८०७)
अलंकार सवैया	बूवखाजी	— (नरवर में लिखा गया)

५५९९. गुटका सं० २० । पत्रसं० ८१ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी-संस्कृत । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३९५ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

९६००. गुटका सं० २१ । पत्रसं० ३२१ । आ० ५×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३९६ ।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रह है—

श्रीपालरास	अ० रायमल्ल	हिन्दी	पद्य (१८१ से २५०)

अन्य पाठों का भी संग्रह है ।

९६०१. गुटका सं० २२ । पत्रसं० १९० । आ० ५×५ इंच । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३९७ ।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रह है—

हितोपदेश दोहा	हेमराज	हिन्दी (र० काल सं० १७२५)	—

इसके अतिरिक्त स्तोत्र एवं पूजा पाठ संग्रह है ।

९६०२. गुटका सं० २३ । पत्र सं० ७४ । आ० ७½×६½ इंच । भाषा—संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३९८ ।

विशेष—शब्दरूप समास एवं कृदन्त के उदाहरण दिये गये हैं ।

९६०३. गुटका सं० २४ । पत्रसं० ९८ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३९९ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

९६०४. गुटका सं० २५ । पत्रसं० ७० । आ० ९×७ इंच । भाषा–संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०० ।

विशेष—मुख्यतः निम्न आयुर्वेदिक ग्रन्थों का संग्रह है—

राम विनोद	प० पद्मरंग (शिष्य रामचन्द्र)	हिन्दी	—
योगचिंतामणि	हर्षकीर्ति	संस्कृत	—

अन्य आयुर्वेदिक रचनाएं भी हैं ।

९६०५. गुटका सं० २६ । पत्रसं० १२६ । आ० ५½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०१ ।

विशेष - सामान्य पूजा पाठों का संग्रह है ।

९६०६. गुटका सं० २७ । पत्र सं० ९० । आ० ५½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०२ ।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रह है—

सवैया		हिन्दी

रणकपुर आदिनाथ स्तवन	—	हिन्दी
रतनसिंहजीरी बात	—	,,

६६०७. गुटका सं० २८ । पत्रसं० ६६ । आ० ५×४ इञ्च । **भाषा**-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ४०३ ।

विशेष—विभिन्न कवियों के पदों एवं पाठों का संग्रह है ।

६६०८. गुटका सं० २९ । पत्रसं० २६ । आ० ७½×७½ इञ्च । **भाषा**-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०४ ।

विशेष—सामन्य पूजा पाठ संग्रह है ।

६६०९. गुटका सं० ३० । पत्रसं० ६४ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०५ ।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रह है—

वसुधारा स्तोत्र	—	संस्कृत
वृद्ध सप्तति यंत्र	—	,,
महालक्ष्मी स्तोत्र	—	,,

६६१०. गुटका सं० ३१ । पत्रसं० ३४ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०६ ।

विशेष—स्वामी वाचन पाठ है ।

६६११. गुटका सं० ३२ । पत्रसं० ६३ । आ० ४½×३½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल सं० १८३६ आषाढ़ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४०७ ।

विशेष—विष्णुसहस्रनाम एवं आदित्यहृदय स्तोत्र हैं ।

६६१२. गुटका सं० ३३ । पत्रसं० १७ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०८ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६६१३. गुटका सं० ३४ । पत्रसं० १५ । आ० ४½×३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४०९ ।

विशेष—पदों का संग्रह है ।

६६१४. गुटका सं० ३५ । पत्रसं० ८८ । आ० ५×३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१० ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

पंचपरमेष्ठी गुण	—	संस्कृत
गुणमाला	—	हिन्दी (पद्य सं० ६५ हैं)
आदित्यहृदय स्तोत्र	—	संस्कृत
निर्वाण कांड	भगवतीदास	हिन्दी

६६१५. गुटका सं० ३६ । पत्रसं० ४२ । आ० ४½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४११ ।

विशेष—ऋषिमंडल स्तोत्र एवं पद संग्रह है ।

६६१६. गुटका सं० ३७ । पत्रसं० ३४ । आ० ५½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१२ ।

विशेष—पूजा पाठ एवं पदों का संग्रह है—

६६१७. गुटका सं० ३८ । पत्रसं० २५ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा- हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१३ ।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रहहै—

ब्याहलो	—	हिन्दी
	(१२५ पद्य हैं । र०काल सं० १८४३)	
बारहमासा वर्णन	क्षेमकरण	,,

प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर मालपुरा (टोंक)

६६१८. गुटका सं० ३१ । पत्रसं० ११६ । आ० ५½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । जीर्ण । वेष्टन सं० ५६ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. तत्वार्थ सूत्र	संस्कृत	उमास्वामी
२. जिनसहस्रनाम	,,	आशाधर
३. आदित्यवार कथा	हिन्दी	भाऊ
४. पंचमगति वेलि	,,	हर्षकीर्ति

इनके अतिरिक्त सामान्य पूजा पाठ हैं ।

६६१९. गुटका सं० २ । पत्रसं० ६४ । आ० × इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५८ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६६२०. गुटका सं० ३ । पत्रसं० १२० । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ ।

विशेष—सैद्धांतिक चर्चाओं का संग्रह है ।

६६२१. गुटका सं० ४ । पत्र सं० १५६ । आ० ६×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२ ।

विशेष—निम्न पाठ है—

१. बनारसी विलास के १७ पाठ (बनारसीदास)

२. समयसार नाटक (बनारसीदास)

विशेष—जीवनराम ने विदरखां में प्रतिलिपि की थी ।

६६२२. **गुटका सं० ५**। पत्रसं० १६०। आ० ५×५ इञ्च। भाषा-प्राकृत—संस्कृत-हिन्दी। ले० काल १६७४ भादवा बुदी १३ । पूर्ण। वेष्टन सं० २३।

विशेष—निम्न पाठ है—

१. तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामी	पत्र १–३१
२. चौबीसठाणा चर्चा	×	पत्र ३२–१३१
३. सामायिक पाठ	×	पत्र १३२–१८३

विशेष—साह श्री जिनदास के पठनार्थ नारायणदास ने लिखा था।

६६२३. **गुटका सं० ६**। पत्र सं० ५५–१८१। आ० ५½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले० काल सं० १७५८ कार्तिक सुदी ५। अपूर्ण। वेष्टन सं० २४।

विशेष—निम्न पाठ है।

१. सुदर्शनरास	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी	पत्र ५६ से ६५ तक
२. दर्शनाष्टक	—	संस्कृत	६५–६६
३. वैराग्य गीत	×	हिन्दी	६७–६८
४. विनती	×	,,	६६
५. फाग की लहुरि	×	,,	१००
६. श्रीपाल स्तुति	×	,,	१०१–१०३
७. जीवगति वर्णन	×	,,	१०४–१०५
८. जिनगीत	हर्षकीर्ति	,,	१०६–२०७
९. टंडाणा गीत	×	,,	१०८–१०९
१०. ऋषभनाथ विनती	×	,,	११०–१११
११. जीवढाल रास	समयसुन्दर	,,	११२–११४
१२. पद	रूपचन्द	हिन्दी	पत्र ११५
	अनन्त चित्त छांड़दे रे भगवन्त चरणा चित्त लाई		
१३. नाममाला	धनञ्जय संस्कृत		११६–१६०
१४. कल्याण मन्दिर स्तोत्र भाषा	—	बनारसीदास	हिन्दी १६१–१६७
१५. विवेक जकड़ी	—	जिनदास	१६८–१६९
१६. पार्श्वनाथ कथा	×	,, अपूर्ण	१८०–१८१

६६२४. **गुटका सं० ७**। पत्रसं० १२८। आ० ७×५½ इञ्च। भाषा संस्कृत-हिन्दी। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २५।

विशेष—पूजा पाठों का संग्रह है।

६६२५. **गुटका सं० ८**। पत्रसं० ३२४। आ० ८×७½ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले०काल सं० १७४६ चैत्र बुदी ५। पूर्ण। वेष्टनसं० २६।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

१. भविष्यदत्त रास	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी
र०काल सं० १६२३ । ले०काल सं० १७६५		
२. प्रबोधबावनी	जिनदास	हिन्दी । ले०काल सं १७४६

अन्तिम पुष्पिका—इति प्रबोध पूजा बावनी साधु जिनदास कृत समाप्त । ५३ दोहे हैं ।

३. श्रीपाल रासो ब्र० रायमल्ल । हिन्दी

४. विभिन्न पूजा एवं पाठों का संग्रह है ।

६६२६. गुटका सं० ६ । पत्र सं० ८६ । आ० ८½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७ ।

विशेष—विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है । ज्ञानतराय के पद अधिक हैं ।

६६२७. गुटका सं० १० । पत्र सं० ४८ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २८ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर चौधरियों का मालपुरा (टोंक)

६६२८. गुटका सं० १ । पत्र सं० १८८ । आ० ५८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल सं० १७६८ भादवा सुदी २ । । पूर्ण । वेष्टन सं० १६ ।

विशेष—निम्न पाठ है—

१. सवैया	विनोदीलाल	हिन्दी ।
२. भक्तामर भाषा	हेमराज	,,
३. निर्वाण काण्ड भाषा	भैया भगवतीदास	,,
४. फुटकर दोहे	×	,,
५. राजुल पच्चीसी	विनोदीलाल	,,
६. यंत्र संग्रह	—	बत्तीसयंत्र हैं ।
७. कछवाहा राज वंशावलि	×	,,

विशेष—११५ राजाओं के नाम हैं माधोसिंह तक सं० १९३७ ।

८. औषधियों के नुस्खे	—	
९. चौरासी गोत्र वर्णन	—	
१०. ढोलमारू की बात	×	हिन्दी अपूर्ण । ५२३ पद्य तक

६६२९. गुटका सं० २ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७ ।

विशेष—विविध जैनेतर कवियों के पद हैं ।

६६३०. **गुटका सं० ३** । पत्र सं० ६७ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३६ ।

विशेष—हितोपदेश की कथायें हैं ।

६६३१. **गुटका सं० ४** । पत्र सं० ४-६६ । आ० ७½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३७ ।

विशेष—सामान्य पूजाओं का संग्रह हैं ।

६६३२. **गुटका सं० ५** । पत्र सं० ६-६४ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३८ ।

विशेष—नित्य पूजाओं का संग्रह है ।

६६३३. **गुटका सं० ६** । पत्रसं० १७२ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६ ।

विशेष—विविध पूजापाठों का संग्रह है ।

६६३४. **गुटका सं० ७** । पत्रसं० ७४ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४० ।

विशेष—नित्य पूजा पाठों का संग्रह है ।

६६३५. **गुटका सं० ८** । पत्रसं० २२ । आ० ७×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१ ।

विशेष—नित्य पूजा संग्रह हैं ।

६६३६. **गुटका सं० ९** । पत्रसं० ९६ । आ० ६×६ इंच । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८ ।

विशेष—आयुर्वेद के नुस्खे तथा पूजा पाठ संग्रह है ।

६६३७. **गुटका सं० १०** । पत्रसं० ९२ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४९ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६६३८. **गुटका सं० ११** । पत्रसं० ३ से २६० । आ० ८½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ५० ।

विशेष—निम्न प्रकार संग्रह है । इसके अतिरिक्त अन्य सामान्य पाठ हैं ।

१-संबोध पंचासिका—मुनि धर्मचन्द्र ।

यह संबोध पंचासिका, देखे गाहा छंद ।
भाषा बंध दूहा रच्या, गछपति मुनि धर्मचंद ।।५१।।

२-धर्मचन्द्र की लहर (चतुर्विंशति स्तवन) ।

३-पार्श्वनाथ रास-ब्र० कपूरचंद । र०काल सं० १६६७ वैशाख सुदी ५ ।

मूलसंघ सरस्वती गच्छ गच्छपति नेमीचन्द ।
उनके पाट जशकीर्ति, उनके पाठ गुणचन्द ।।
तासु सिषि तसु पंडित कपूरजी चंद ।
कीनो रास चिति धरिवि आनन्द ।।

रत्नबाई की शिष्या श्राविका पार्वती गंगवाल ने सं० १७२२ जेठ बदी ५ को प्रतिलिपि कराई थी ।

४-पंच सहेली---छीहल	हिन्दी
५-विवेक चौपई--ब्रह्म गुलाल	,,
६-सुदर्शन रास—ब्र० रायमल्ल	,,

प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर कोठ्यो का नैणवा ।

६६३९. गुटका सं० १ । पत्रसं० १४१ । आ० ९½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले०काल सं० १८१४ आसोज बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५ ।

विशेष---मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

जिन सहस्रनाम	—	संस्कृत	—
शांतिचक्र पूजा	—	,,	—
रविवार व्रत कथा	—	हिन्दी	—
वार्ता	बुलाकीदास	,,	—
भक्तामर स्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	—
कल्याण मंदिर स्तोत्र	कुमुदचंद्र	,,	—
एकीभाव स्तोत्र	वादिराज	,,	—
विषापहार स्तोत्र	धनंजय	,,	—
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामि	,,	—
दशलक्षण पूजा		,,	—

रत्नत्रय पूजा तथा समसार नाटक बनारसीदास

पं० जीवराज ने आंवा नगर में स्वयंसूराम से प्रतिलिपि कराई थी ।

६६४०. गुटका सं० २ । पत्रसं० १४१ । आ० ८½×६½ इञ्च । ले०काल सं० × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७० ।

विशेष—चौबीस तीर्थंकर पूजा है ।

६६४१. गुटका सं० ३ । पत्रसं० २१३ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७१ ।

विशेष—विविध स्तोत्र एवं पाठों का संग्रह है ।

६६४२. गुटका सं० ४ । पत्रसं० १३० । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । वेष्टनसं० ७५ ।

विशेष—पूजा स्तोत्र एवं गुण स्थान चर्चा आदि का संग्रह है ।

६३४३. गुटका सं० ५ । पत्रसं० १४४ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७७ ।

६६४४. गुटका सं० ६ । पत्रसं० १६७ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी–संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८० ।

६६४५. गुटका सं० ७ । पत्रसं० ४२ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ९३ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

१–यशोधर रास जिनदास हिन्दी —
(र० काल सं० १६७९)

सवत् सोलासी परमाण वरष उगुण्यासी ऊपर जाण ।
किसन पक्ष काती भलो तिथि पंचमी सहित गुरवार ।।

कवि रणथंभ गढ (रणथंभौर) के निकट गोरपुर का रहने वाला था ।

२–पूजा पाठ संग्रह संस्कृत-हिन्दी

६६४६. गुटका सं० ८ । पत्रसं० ४७ । आ० ७×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १६६९ । पूर्ण । वेष्टनसं० ९८ ।

६६४७. गुटका सं० ९ । पत्रसं० १२८ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ९९ ।

६६४८. गुटका सं० १० । पत्र सं० १५० । आ० ६½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०२ ।

६६४९. गुटका सं० ११ । पत्रसं० १०–२४७ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । ले०काल सं० १५८५ । अपूर्ण । वेष्टन सं० १०५ ।

विशेष—गुटका प्राचीन है तथा उसमें निम्न पाठों का संग्रह है—

ग्रंथ	ग्रंथकार	भाषा	
१-चन्द्र गुप्त के सोलह स्वप्न	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी	अपूर्ण
२-बारह अनुप्रेक्षा	—	,,	पूर्ण
३-विवेक जकडी	जिणदास	,,	,,
४-धर्मतरु गीत (मालीरास)	,,	,,	,,
५-कर्म हिंडोलना	हर्षकीर्ति	,,	,,
पद-(तज मिथ्या पंथ दुख कारण)	—	,,	,,

पद–(साधो मन हस्ती मद मातो) — " "
पद्य हर्षकीर्ति " "
(हूं तो कांई बोलू रे बोलु भव दुख बोलती न आवै)
६ पोथी के विषय की सूची। इसके ऊपरी भाग पर लिखा है:—
पोथी को टीकै लिख्यते वैसाख सुदी १५ संवत् १६४४ गढ रणथंबर मध्ये ॥

		पत्र	पद्य
१. आराधना प्रतिबोध सार	विमलकीर्ति	१-६	५५
२. मिछादोकड	—	६-८	२८
३. उन्तीस भावना	—	८-१०	२६
४. ईश्वर शिक्षा	—	१०-१३	२६
५. जम्बूस्वामी जकड़ी	साधुकीर्ति	१३-१७	३६
६. जलगालन रास	ज्ञान भूषण	१०-२०	३२
७. पोसहपारवानीविधि तथा रास	—	२०-२७	
८. अनादि स्तोत्र	—	२७-२६	२२ (संस्कृत)
६. परमानद स्तोत्र	—	२६-३१	२५
१०. सीखामणि रास	सकलकीर्ति	३१-३५	
११. देव परीषह चौपई	उदयप्रभ सूरि	६५-३७	२१
१२. बलिभद्र कृष्ण माया गीत	—	३७-३८	—
१३. बलिभद्र भावना	—	३८-४३	४४
१४. रिषभनाथ थूल	सोमकीर्ति	४३-४५	४
१५. जीववैराग्यगीत	—	४५	७
१६. मंत्र संग्रह	—	४६-४७	संस्कृत
१७. नेमिनाथ थुति	—	४८	हिन्दी पद्य (र० काल १५८०)
१८. नेमिनाथ गीत	ब्र० यशोधर	४६-५२	
१६. "	—	५२-५३	
२०. योगीवाणी	यशःकीर्ति	५३	७ पद्य
२१. पद (मन गीत)	—	५४	
२१. (क) मल्लिगीत	सोमकीर्ति	५४-५५	४
२२. मल्लिनाथ गीत	ब्र० यशोधर	५५-५६	६
२३. जखडी	—	५६-५७	४

			पद्य संख्या
२४. कायाक्षेत्र गीत	धनपाल	५७–५८	६
२५. नेमिनाथ गीत	ब्र० यशोधर	५८–६३	६१
२६. चौबीस तीर्थंकर भावना	यशःकीर्ति	६३–६५	२५
२७. रामसीतारास	ब्र० जिणदास	६५–९१	
२८. राकौशलरास	सांसु	९१–१०६	
२९. जिनसेन बोल	जिनसेन	१०६	४
३०. गीत	—	१०६	४
३१. शत्रुंजयगीत	—	१०७–१०८	१४
३२. पार्श्वनाथ स्तवन	मुनि लावण्य समय	१०८–११२	३५

(इति श्री पार्श्वनाथ स्तवन पंडित नरवद पठनार्थ)

३३. पंचेन्द्रिय गीत	जिनसेन	११२	७
३४. मेघकुमार रास	कवि कनक	११३–११६	४८
३५. बलिभद्र चौपई	ब्र० यशोधर	११६–१३२	१८७

(र० काल सं १५८५)

संवत पनर पचासीइ स्कंध नयर मझारि ।
भवणि अजित जिनवर तणि ए मुणा गाथा सार ॥१८८॥

३६. बुधिरास	—	१३२–३६	४८ पद्य
३७. पद	ब्र० यशोधर	१३६	४

(प्रीतडी रे पाली राजिल इम कहिरे)

३८. पद	—	१३६–३७	

चेतु लोई २ थिर २ कहु कोइ

३९. पद	—	१३७	५

(आदि अनादि एक परमेश्वर सयल जीव साधारण)

४०. अपनक्रिया गीत	सोमकीर्ति	१३७	५
४१. रत्नत्रयगीत	—	१३८	१३
४२. देहस्तगीत	—	१४०–४१	४
४३. पर रमणी गीत	खीमराज	१३९	४
४४. ,,	—	१३९	६
४५. वैराग्य गीत	ब्र० यशोधर	१४१	६
४६. आसपाल छंद	—	१४१–१५१	
४७. व्यसन गीत	—	१५१	
४८. मंगल कलश चौपई	—	१५१–६१	४९

"इति मंगलचुपाई समाप्ता ब्रह्म यशोधर लिखितं ।

४९. पद नेमिनाथ	ब्र० यशोधर	१६३	८
(अंगि हो अनोपम सेणरेकरी उग्रसेन घरि जाइ राजुल वरी)			
५०. नेमिनाथ बारह मासा	—	१६३–१६४	१२ पद्य
५१. षट्लेश्या श्लोक	—	१६४–६५	११ संस्कृत
५२. जीरावली स्तवन	—	१६५–६६	११
५३. अराधनासार	सकलकीर्ति	१६६–१६८	२४ पद्य
५४. वासपूज्य गीत	ब्र० यशोधर	१६८	१२
५५. आदिनाथ गीत	—	१६८–६९	३
५६. आदि दिगंबर गीत	—	१६९	३
५७. गीत	यशःकीर्ति	१६९	३
(मयण मोह माया मदिमातु)			
५८. गीत	यशःकीर्ति	१७०	६
लडकि लागि जिम नेह तूटि, अंजलि उदक जिम आऊषु फूटि।			
५९. गीत	ब्र० यशोधर	१७०	७
(वागवाणीवर मांगु माता दि मुझ अविरल वाणी रे)			
६०. गीत	ब्र० यशोधर	१७१	४
(गढ जूनु जस तलहटी रे लाई गिरि सचा माहि सार)			
६१. मेघकुमार रास	पुन्नू	१७१–७३	२१
६२. स्थूलभद्र गीत	लावण्यसमय	१७३–१७७	२१
६३. सुप्पय दोहा	—	१७७–१८२	७८ प्राकृत गाथा
६४. उपदेश श्लोक	—	१८३	५ सं० श्लोक
६५. नेमिनाथ राजिमति बेलि	सिंघदास	१८३–८५	१७ हिन्दी पद्य
६६. नेमिनाथ गीत	—	१८६	हिन्दी पद्य
६७. नेमिनाथ गीत	ब्र० यशोधर	१८६	५
(यान लेई नेमि तो राणी आउ पसु छोडि गढ गिरनार)			
६८. प्रतिबोध गीत	—	१८६	हिन्दी पद्य
(चेतरे प्राणी सुण जिनवाणी)			
६९. गीत (पार्श्वनाथ)	ब्र० यशोधर	१८७	,,
७०. गीत (नेमिनाथ)	—	१८७	,,
(समुद्र विजय सुत यादव राजा तोरणि आया करी दिवाजा)			
७१. चेतना गीत	समयसुन्दर	१८७	,,
७२. अठारह नाते की कथा	—	१८८	प्राकृत
विशेष—हिन्दी में अनुवाद भी दिया है।			
७३. कुवेरदत्त गीत	—	१८८–९०	४
(अठारह नाता रास)			

७४. गीत		ब्र० यशोधर	१६१	हिन्दी पद्य
	(तोरणि आवी वेगे वल्युरे पशूडा पारिध पेखीरे)			
७५. अजितनाथ गीत		ब्र० यशोधर	१६१	,,
७६. गीत		—	१६१-६२	,,
	(प्रणमूं नेमि कुमार जिणि संदभ धरउ)			
७६. नेमिगीत		ब्र० यशोधर	१६२	हिन्दी पद्य
	(पसूडा तोरणि परिहरी)			
७७ नेमिगीत		,,	१६२-६३	,,
	नेमि निरंजन निरोपम तोरणि पशूडा निहाली रे)			
७८. पार्श्वगीत		,,	१६३	,,
	(मूरति मोहण वेल मणीजि अवर उपमा कहु कुण दीजि)			
७६. नेमि गीत		,,	१६३	,,
	(पसूड़ा कारणि परहरयु रे राजिल सरसुं राज)			
८०. नेमिगीत		—	१६३	,,
	(गुख चढीरे निहालि निरोपमउ आवतु नेमिकुंर)			
८१. जैन वणजारा रास		—	१६३-६६	,,
८२. आवर्ग		भीतिसेखर	१६६-२०१	५३
८३. सिद्ध धुल		रत्नकीर्ति	२०१-२०३	,,
८४. राजुल नेमि		लावण्यसमय	२०३-५	१५
अबोला				
८५. यशोधर रास		सोमकीर्ति	२०५-३४	—
			(ले०काल सं० १५८५)	

विशेष—इति यशोधर रास समाप्त । संवत् १५८५ वर्षे सुदि १२ खो ।

८६. कमकमल जयमाल	—	२३४-३५	—
(निर्वाण काण्ड भाषा है)			
८७. शत्रुंजय चित्र प्रवाड	—	२३६-३८	३५
८८. मनोरथ माला	—	२३६	—
८६. सातवीसन गीत	कल्याण मुनि	२३६-४०	१०
६०. पंचेन्द्री वेलि	—	२४०-४२	—
६१. संसार सासरयों गीत	—	२४२-४३	—
६२. रावलियो गीत	सिंहनन्दि	२४३-४४	—
६३. चेतन गीत	नंदनदास	२४४-४५	—
६४. चेतन गीत	जिनदास	२४५	—
६५. जोगीरासा	—	२४५-४७	६८

(केवल २८ पद्य तक है) अपूर्ण

६६५०. गुटका सं० १२ । पत्रसं० २४७ । आ० ६½×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०४ ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक)

६६५१. गुटका सं० १ । पत्रसं० ५१ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५८ ।

६६५२. गुटका सं० २ । पत्रसं० ६५ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७ ।

६६५३. गुटका सं० ३ । पत्रसं० १३ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६ ।

६६५४. गुटका सं० ४ । पत्रसं० ३० । आ० ७×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२ ।

विशेष—मानु कवि कृत आदियतवार कथा है ।

६६५५. गुटका सं० ५ । पत्र सं० २३ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१ ।

६६५६. गुटका सं० ६ । पत्रसं० १८ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५० ।

६६५७. गुटका सं० ७ । पत्र सं० २४० । आ० ७×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४९ ।

विशेष—चौबीसी ठाणा चर्चा है ।

६६५८. गुटका सं० ८ । पत्र सं० २७ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८ ।

६६५९. गुटका सं० ९ । पत्रसं० ३५ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७ ।

६६६०. गुटका सं० १० । पत्रसं० ६४ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१ ।

६६६१. गुटका सं० ११ । पत्रसं० २६ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३० ।

विशेष—स्तुतियों का संग्रह है ।

६६६२. गुटका सं० १२ । पत्रसं० ६१ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा–हिन्दीपद्य । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३१ ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

९६६३. गुटका सं० १३ । पत्र सं० ६-१२४ । आ० ९×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल पूर्ण । वेष्टन सं० ३२ ।

विशेष—रामचन्द्र कृत चौबीस तीर्थंकर पूजा है ।

९६६४. गुटका १४ । पत्रसं० २२५ । आ० ९×६ इञ्च । भाषा-प्राकृत,-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है:—

१. जयतिहुअण स्तोत्र	मुनि अभयदेव	प्राकृत । अपूर्ण ।
२. नव तत्व समाप्त	×	प्राकृत
३. श्रावक अतिचार	×	,,
४. आदिनाथ जन्माभिषेक	×	,,
५. कुसुमाञ्जलि	×	,,
६. महावीर कलश	×	,,
७. लूण पानी विधि	×	,,
८. शोभन स्तुति	×	संस्कृत
९. गणधर वाद	श्री विजयदास मुनि	हिन्दी
१०. जम्बू स्वामी चौपई	कमलविजय	,,
११. ढोलामारूणी	वाचक कुसललाभ	,,

र०काल सं० १६७७ । ले० काल सं १७११ चैत सुदी २ ।

प्रारंभ—

दिविस रमति २ सुमति दातार कासमीर कमलासनी ।
ब्रह्म पुत्रिका वाणि सोहइ मोहण तरु अरि मंजरी ।
मुख मयंक त्रिहुंभुवन मोहइ पय पंकज प्रणमी करी ।
अणी मन आणंद सरस चरित शृंगार रस, मन धर्मणिय धरमाणंद

अन्तिम—

संवत् सोलह सत्तोसरइ भादवा त्रीज दिवस मन थरइ ।
जोडी जेसलमेरु मझारि वाच्या सुख पामइ संसारी ।
समलि गहगहइ वाचक कुसल लाभ इम कहइ
रिधि वृधि सुख संपति सदा संभलता पामइ सवदा ॥७०६ ॥

९६६५. गुटका सं० १५ । पत्रसं० ३५ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी प० । ले०काल × । जीर्ण शीर्ण । पूर्ण । वेष्टनसं० ३४ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

९६६६. गुटका सं० १६ । पत्र सं० ३० । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठों का संग्रह है ।

६६६७. **गुटका सं० १७** । पत्रसं० १०१ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ हैं ।

६६६८. **गुटका सं० १८** । पत्र सं० १५८ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी, संस्कृत । ले० काल सं० १७७६ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३७ ।

विशेष—पूजा पाठों का संग्रह है ।

६६६९. **गुटका सं० १९** । पत्र सं० २० । आ० ६×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी प० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८ ।

६६७०. **गुटका सं० २०** । पत्रसं० ७८ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी प० । ले०काल–सं० १८३३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३९ ।

विशेष—अक्षर घसीट हैं पढ़ने में कम आते हैं । पद, पूजा एवं कथाओं का संग्रह है ।

प्राप्ति स्थान – दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्द्रगढ़ (कोटा)

६६७१. **गुटका सं० १** । पत्र सं० २८ । आ० १२×८½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३–७४ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न रचनाओं का संग्रह है—

पंच स्तोत्र भाषा	—	हिन्दी	—
बारहखडी	सूरत	,,	—
ज्ञान चिंतामणि	—	,,	—

(र० काल सं० १७२८ माघ सुदी)

संवत सतरासै अठाईस सार, माह सुदी सप्तमी शुक्रवार ।।
नगर बुहारन पुर पाखान देस माही, ममारखपुर सेवग गुण गाई ।।

६६७२. **गुटका सं० २** । पत्र सं० ११ । आ० ६½×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पदों का संग्रह है—

पार्श्वनाथ की निशाणी, कल्याण मन्दिर भाषा, विषापहार, वृषभदेव का छंद ।

६६७३. **गुटका सं० ३** । पत्रसं० १४८ । आ० १०×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १८२६ भादवा बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१ ।

विशेष—साधारण पाठों के अतिरिक्त निम्न रचनाएं और हैं—

धर्मपरीक्षा	मनोहरलाल	हिन्दी

(र० काल सं १७०० । ले०काल सं० १८१४)

पार्श्वपुराण	भूधरदास	हिन्दी

सहदेव कर्ण ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

६६७४. **गुटका सं० ४** । पत्र सं० ६४ । आ० १० × ७ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । ले०काल सं० × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२ ।

विशेष- सेवाराम कृत चौबीस तीर्थंकर पूजा एवं व्रत कथा कोष में से एक कथा का संग्रह है ।

६६७५. **गुटका सं० ५** । पत्र सं० १३६ । आ० ६ × ६ इञ्च । भाषा–हिन्दी, संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७५ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है :—

पद्मावती पूजाष्टक, बनारसी विलास तथा भैरव पद्मावती कवच (मल्लिषेण) आदि का संग्रह है ।

६६७६. **गुटका सं० ६** । पत्र सं० २२६ । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४१/७७ ।

विशेष—नित्य नैमित्तक पाठों का संग्रह है ।

६६७७. **गुटका सं० ७** । पत्र सं० ११२ । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४२/८० ।

विशेष—पूजा पाठ एवं स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

६६७८. **गुटका सं० ८** । पत्र सं० १८५ । आ० ४$\frac{1}{2}$ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६२ ।

विशेष—पूजा पाठ के अतिरिक्त सेठ शालिभद्र रास एवं सेठ सुदर्शनरास (अ० रायमल्ल) और हैं ।

शालिभद्र रास फकीर र० काल सं० १७४३

प्रारम्भ—

सकल सिरोमणी जीनवर सार, पार न पावै ते अगम अपार ।
तीन तिरलोक वंदै सदा सुर फुनी इंद नर पूजत ईस ।
नाथ ते वंस में ऊपनो अहो थी वरधमान सामी नमु सीस ।।
सालिभद्र गुण वरनउ ।।१।।

अन्तिम—

अहो वंस वघेरवारै खंडीय्या गोत
वंस वेणा दुहाजी होत ।
तास ते सुत फकीर में साली ते भेद को मंडियो राप्त
मन मणेहु चीते अपनी अहो देखी चारित्र की धोजी परगास ।।२२०।।
अहो संवत सतरासै वरस तीयाल (१७४३)
मास वैसाख पूणिम प्रतिपाल ।
जोग नीरवतर सब भल्या मिल्या गुहा मझी
पूरणदास रावते अनरथ राजई ।
अहो साली भद्र की पूयजी अरु सालिभद्र गुण वरणउ ।।२२१।।

सेठ सुदर्शन रास—

धौलपुर नगर में रचा गया था।
धौलपुर सहर देखरो बणो
वाने देवपुर सोभंजी इन्द्र समाने
सोल छतीस लीलाकर भवी महाजनें वस धनवन्त।
देव गुरु सासत्र सेवा कर ओ हो करेजो पूजन ते अरहंत जी ॥१६८॥

६६७६. गुटका सं० ६। पत्रसं० २५८। आ० ६×४ इञ्च। **भाषा**–हिन्दी–संस्कृत। **ले०काल** सं० १७७६ वैशाख सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० २६३।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

समयसार नाटक	बनारसीदास	हिन्दी
समयसार कलशा	अमृतचन्द्र सूरि	संस्कृत

६६८०. गुटका सं० १०। पत्रसं० २६०। आ० ६×६ इञ्च। **भाषा**–संस्कृत–हिन्दी। **ले०काल** × । पूर्ण। **वेष्टन सं०** २६४।

विशेष—मुख्यतः पूजाओं का संग्रह है।

६६८१. गुटका सं० ११। पत्र सं० १०० । आ० ६×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत–हिन्दी। **ले०काल** × । पूर्ण। **वेष्टन सं०** २६५।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

६६८२. गुटका सं० १२। पत्रसं० २६७ । आ० ६×६$\frac{3}{4}$ इञ्च। भाषा हिन्दी । **ले०काल** × । पूर्ण। वेष्टन सं० २५६।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है।

चतुर्दशी कथा	टीकम	हिन्दी
ज्येष्ठ जिनवर व्रत कथा	ब्र० रायमल्ल	,,
जेपन क्रिया रास	हर्षकीर्ति	,,
		र०काल १६८४
धर्मरासो	—	,,
भविष्यदत्त चौपई	ब्र० रायमल्ल	,,

६६८३. गुटका सं० १३। पत्रसं० २२५ । आ० ६×४$\frac{3}{4}$ इञ्च। **भाषा**–हिन्दी–संस्कृत। **ले०काल** × । पूर्ण। वेष्टन सं० २६७।

विशेष—कथा स्तोत्र एवं पूजा पाठ के अतिरिक्त गुणठाणा गीत और है।

गुणठाणा गीत-बूहा वर्द्धन हिन्दी
र०काल १६ वीं शताब्दी

प्रारम्भ

सोयम गणहर गिरुआ मनि धरि गुणठाणा गुण गाऊं ।
गुण गाऊं रंगिभरी रंगि भरीय गाऊं ।
पुण्य पाऊं भेद गुणठाणा तणा ।
मिथात पहिलाहि गुणह ठाणी असइ जीव अनंतुगुणा ।
मिथ्यात पंच प्रकार पूरचा काल अनंतु निहारइं ।
मति हीन च्युहुगति भमि भूला भलो धर्मते भणि लहइ

अन्तिम

परम चिदानन्द संपद पद धरा ।
अनन्त गुणा कर शंकर शिवकरा ।
शिवकराए श्री सिद्ध सुन्दर गाउ गुण गणठाणारा
जिम मोक्ष साख्य मुखि साधु केवल णाण प्रमाणरा
सुभचन्द सूरि पद कमल प्रणवइं मधुप व्रत मनोहर धर
भणाइति श्री वर्द्धन ब्रह्म एह दासि भवियण सुख करई ॥१७॥
इति गुण ठाणा गीत

९६८४. गुटका सं० १४ । पत्र सं० ९० । आ० ६$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल सं० १९६१ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६८ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

सेवाराम अधेरवाल ने इन्दरगढ़ मे प्रतिलिपि की थी ।

९६८५. गुटका सं० १५ । पत्र सं० २८५ । आ० ९$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६८ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

गुटका लिखवाने में १४। ८॥ व्यय हुआ था ।

९६८६. गुटका सं० १६ । पत्र सं० १०८ । आ० ६$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २७० ।

विशेष—श्वेताम्बर कवियों के पद एवं पाठ संग्रह है ।

९६८७. गुटका सं० १७ । पत्रसं० ४२ । आ० ४$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २७१ ।

विशेष—ढोलामारूवाणी की बात है । पद्य सं० ५०४ है ।

९६८८. गुटका सं० १८ । पत्र सं० १९८ । आ० ६$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८४३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७२ ।

विशेष—गणित छंद शास्त्र है गणित शास्त्र पर अच्छा ग्रंथ है ।

९६८९. गुटका सं० १९ । पत्र सं० ९१ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २७३ ।

विशेष—सामान्य स्तोत्रों एवं पाठों का संग्रह है ।

६६९०. गुटका सं० २०। पत्रसं० ६३ । आ० ६×५ इञ्च । **भाषा**–हिन्दी । ले० काल सं० १८४८ । पूर्ण । वेष्टनसं० २७४ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है, सामायिक पाठ भाषा-जयचन्द छाबड़ा हिन्दी २ चौबीस ठाणा चर्चा ।

६६९१. गुटका सं० २१ । पत्रसं० २४ । आ० ६×६ इञ्च । **भाषा**–संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २७५ ।

विशेष—ऋषि मंडल पूजा, पद्मावती स्तोत्र एवं अन्य पूजा पाठ संग्रह है ।
सेवाराम बघेरवाल ने मीणगण मध्ये चरमनदी तटे लिखितं ।

६६९२. गुटका सं० २२ । पत्रसं० ११० । आ० ६×६ इंच । भाषा–हिन्दी-संस्कृत। ले०काल सं० १९१० । पूर्ण । वेष्टन सं० २७६ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है तथा गुटका फटा हुआ एवं जीर्ण है ।

६६९३. गुटका सं० २३ । पत्रसं० ७६ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २७७ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६६९४. गुटका सं० २४ । पत्र सं० १७१ । आ० ६½×६½ इञ्च । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । ले० काल सं० १८५८ आसोज सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७८ ।

विशेष—पूजा पाठ एवं स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

६६९५. गुटका सं० २५ । पत्रसं० ३१७ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल सं० १९१२ । पूर्ण । वेष्टनसं० २७९ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

गीता तत्वसार	—	हिन्दी पद्य सं० १६० (ले०काल सं० १९१२)

सेवाराम बघेरवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

भक्तिनिधि	—	हिन्दी पद्य सं० ५४१
वेदविवेक एवं	—	,,
भोम का उपदेश	—	,,

ले०काल सं० १९१३ मंगसिर सुदी १२ ।

६६९६. गुटका सं० २६ । पत्रसं० ६१ । आ० ६½×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल सं० १९०४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८० ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र भाषा मंत्र सहित है ।

६६९७. गुटका सं० २७ । पत्रसं० ७० । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल सं० १८३४ फागुण बुदी ५ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र भाषा मंत्र सहित है ।

९६९८. गुटका सं० २८ । पत्रसं० १३८ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल सं० १७६४ सावण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८२ ।

विशेष--निम्न पाठों का संग्रह है—

भक्तामर स्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामी	,,
कल्याण मन्दिर स्तोत्र	कुमुदचन्द्र	,,
भूपाल चतुर्विंशतिका	भूपाल	,,
लघु सहस्रनाम	—	—

कुल १३८ पत्र है जिनमें अगे के बाकी अवशिष्ट ६३ वाली हैं ।

९६९९. गुटका सं० २९ । पत्रसं० ७९ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २८३ ।

विशेष – नित्य पूजा पाठ के अतिरिक्त निम्न पाठों का और संग्रह है—

रत्नत्रय पूजा	—	हिन्दी
योगीन्द्र पूजा	—	,,
क्षेत्रपाल पूजा	—	,,

९७००. गुटका सं० ३० । पत्रसं० १६४ । आ० ८×६½ इञ्च । भाषा-प्राकृत-हिन्दी । ले०काल सं० १९१६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८४ ।

विशेष —निम्न रचनाओं का संग्रह है—

सुगुरु शतक	जिनदास गोधा		हिन्दी पद्य पत्र ८
		र०काल सं० १८५२ । (ले०काल सं० १९१६)	
	करावता नगर में प्रतिलिपि हुई थी ।		
ढाल गणसार	—	,,	१६
सामायिक पाठ	—	प्राकृत	२१
सामायिक पाठ भाषा	श्याम	हिन्दी	५५
	सो सामायिक साधसी लहसी अविचल थान ।		
	करी चौपई भावसु जैसराज सुत स्याम ।।		
	(र०काल सं० १७४६ पौष सुदी १०)		
विषापहार स्तोत्र	धनजय	संस्कृत	१०७
सामायिक वचनिका	जयचन्द छाबड़ा	हिन्दी (ग०)	
जैनबद्री यात्रा वर्णन	सुरेन्द्रकीर्ति	हिन्दी	

मंदिर चैत्यालय आदि का जहां जहां यात्रा गये वर्णन मिलता है । आमेर घाट आदि का भी वर्णन किया हुआ है ।

लंपक पंचासिका	जिनदास	हिन्दी (पद्य)-

जैनेतर साधुओं की पोल खोली गई है ।

हुक्कानिषेध	धूधर	हिन्दी

६७०१. गुटका सं० ३१ । पत्र सं० १०-७०। आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २८५ ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह है ।

६७०२. गुटका सं० ३२ । पत्र सं० १६० । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी, ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २८६ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

षड्दर्शन पाखंड	—	हिन्दी	—

जैन दर्शन व १६ पाखंड—

मूलसंघी काष्ठासंघी निर्ग्रंथ आल
अर्जिका बसना अग्रती श्वेतांबर
इबड़िग भावलिंगी विपर्मय आचार्य
भट्टारक स्तंभ पिछी साख्य

बारहमास पूर्णमासी फल	—	हिन्दी	—
साठ संवत्सरी	—	,,	—

संवत् १७०१ से लेकर १७८६ तक का फल है । हंसराज वच्छराज चौपई जिनोदय सूरि-हिन्दी—
(र० काल सं० १६८०)

कविप्रिया	केशव	—	हिन्दी	—

६०७३. गुटका सं० ३३ । पत्रसं० १४२ । आ० ५×३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २८७ ।

विशेष—राम स्तोत्र एवं जगन्नाथाष्टक आदि का संग्रह है ।

६०७४. गुटका सं० ३४ । पत्रसं० ७६ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २८८ ।

विशेष—भोंऊ कवि कृत रविवार कथा का संग्रह है ।

६७०५. गुटका सं० ३५ । पत्र सं० ८५ । आ० ५½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल सं० १८२४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८९ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

बाईस परीषह	—	हिन्दी
भक्तामर स्तोत्र पूजा	—	,,
देव पूजा	—	,,
कक्का बीनती	—	,,
पार्श्वनाथ मंगल	—	,,

(ले० काल सं० १८२४)

विनती पाठ संग्रह	—	हिन्दी
चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तुति	—	,,

प्राप्ति स्थान–दि० जैन मन्दिर घोरवली कोटा

९७०६. **गुटका सं० १** । पत्रसं० १७ । आ० ९×६ इञ्च । **भाषा**–संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४७ ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र आदि हैं ।

९७०७. **गुटका सं० २** । पत्रसं० ११-९७ । आ० ८×६½ इञ्च । **भाषा**–हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३५१ ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र आदि सामान्य पाठ एवं पूजाओं का संग्रह है । सुरेन्द्रकीर्ति विरचित अनन्तव्रत समुच्चय पूजा भी है ।

९७०८. **गुटका सं० ३** । पत्रसं० १०४ । आ० ६×४ इञ्च । **भाषा**–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३५२ ।

विशेष—वेगराज कृत रचनाओं का संग्रह है ।

१. चूनडी — वेगराज ।
२. ज्ञान चूनडी ,,
३. पद संग्रह ,,
४. नेम व्याह पच्चीसी ,,
५. बारहखड़ी ,,
६. सारद लक्ष्मी संवाद ,,

९७०९. **गुटका सं० ४** । पत्र सं० ११-१६ तथा १ । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल सं० १७२२ । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३५६ ।

१. कवि प्रिया — केशवदास
२. बिहारी सतसई — बिहारीलाल
३. मधुमालती —
४. सदयवच्छयासावलिंग — । अपूर्ण ।

९७१०. **गुटका सं० ५** । पत्रसं० ७-१८५ । आ० ९×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १८०९ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३५८ ।

विशेष—निम्न पाठ मुख्य हैं ।

१. श्रावकातिचार चउपई—पासचन्द सूरि । ले०काल सं० १८०९ ।
२. साधुवंदना—× । सब पद्य हैं ।
३. चउवीसा—जिनराजसूरि ।
४. गौडी पार्श्वनाथ स्तवन—× ।
५. पद संग्रह—× ।

विशेष—गुटका नागौर में कर्मचन्द वांछिया के पठनार्थ लिखा गया था ।

६७११. **गुटका सं० ६** । पत्र सं० ५-२२ १-८० । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल सं० १७६१ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३५७ ।

१. तत्वार्थ सूत्र--उमास्वामी । भाषा-संस्कृत ।
२. भक्तामर स्तोत्र—मानतुंग । ले० काल १७६४ ।
३. पद्मावती रानी रास—× । हिन्दी ।
४. गौतम स्वामी सज्झाय—× । ,,
५. स्तवन —× । ,,
६. चित्तौड बसने का समय (संवत् १०१)
७. दान शील तप भावना—× । हिन्दी । ले० काल १७६१ ।
८. सज्झाय—× । हिन्दी ।
९. पदमव्या की बीहालो—× । हिन्दी ले० काल १७६३ ।
१०. ढोलामारू चौपई—कुशललाभ । हिन्दी ।

६७१२. **गुटका सं० ७** । पत्र सं० ४० । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६५ ।

विशेष—ज्योतिष संबंधी साहित्य है ।

६७१३. **गुटका सं० ८** । पत्रसं० १०० । आ० ६×६ इञ्च । भाषा--हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६६ ।

मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं ।

१. बिहारी सतसई — बिहारीलाल । पद्य सं० ७०६
२. नवरत्न कवित्त — × ।
३. परमार्थ दोहा — रूपचन्द ।
४. योगसार — योगीन्द्र देव

६७१४. **गुटका सं० ९** । पत्रसं० १२६ । आ० ७½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६७ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ एवं स्तोत्रों का संग्रह है ।

६७१५. **गुटका सं० १०** । पत्रसं० ६० । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७० ।

विशेष—पूजा संग्रह के अतिरिक्त गुलाल पच्चीसी तथा भाऊ कृत रविव्रत कथा है । लिपिकार तेनराग है ।

६७१६. **गुटका सं० ११** । पत्र सं० २१६ । आ० ६½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १६३५ फागुन सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७६ ।

प्रशस्ति—श्री मूलसंघे भट्टारक श्री धर्मकीर्ति तत्पट्टे भ० शीलभूषण तत्पट्टे भ० ज्ञानभूषण तदाम्नाये जैसवालान्वये प्रधान श्री दुर्गाराम द्वितीय भ्राता कदूरचन्द तद्भार्या हरिसिंहदे तत्पुत्र श्री लोदी तेनेदं पुस्तकं लिखाप्य दत्तं श्री ब्रह्म श्री बुद्धसेनाय ।

पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है। मुख्यतः पंडितवर सिंघातमज पं० रूपचन्दकृत दशलाक्षणिक पूजा तथा भाउ कृत रविव्रत हैं।

९७१७. गुटका सं० १२ । पत्र सं० १०० । आ० ७½×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७७ ।

विशेष—बनारसीदास, भूधरदास, मोहनदास आदि कवियों के पाठों का संग्रह है।

९७१८. गुटका सं० १३ । पत्रसं० १४० । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १७३४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७९ ।

१. गौतमरास—विनयमल । र० काल १४१२ ।

२. अजितनाथ शांति स्तवन–मेरुनंदन ।

३. आराधाहवनि सज्झाय—× ।

४. आषाढ भूत धमाल—× । र० काल सं० १६३८ ।

५. दान शील तप भावना—समयसुन्दर

९७१९. गुटका सं० १४ । पत्रसं० १५८ । आ० ९×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८५ ।

विशेष—अन्य पूजाओं के अतिरिक्त चौबीस तीर्थंकर पूजा भी दी हुई है।

९७२०. गुटका सं० १५ । पत्रसं० ६४ । आ० ९×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८४ ।

विशेष—मंत्र तंत्र संग्रह है ।

९७२१. गुटका सं० १६ । पत्रसं० ११८ । आ० ८½×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १७७१ द्वि० आसाढ़ बुदी १ । पूर्ण वेष्टन सं० ३८३ ।

१. स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा — कार्तिकेय ।
हिन्दी टीका सहित

२. प्रीतिंकर चरित्र — जोधराज

९७२२. गुटका सं० १७ । पत्रसं० ४६ । आ० ७×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८२ ।

विशेष—विभिन्न पाठों का संग्रह है ।

९७२३. गुटका सं० १८ । पत्रसं० ५० । आ० ९×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी–संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८६ ।

१. भक्तामर स्तोत्र—मानतुंग ।

२. दशलक्षणोद्यापन—× ।

९७२४. गुटका सं० १९ । पत्रसं० ५९६ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १८१९ आसोज बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८७ ।

१. पार्श्वपुराण—भूधरदास । पत्रसं० १–१८८

२. सीता चरित्र—कविबालक । ,, १८९–३४८

३. धर्मसार—× । ,, १–६० तक ।

प्राप्ति स्थान—खण्डेलवाल दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर

६७२५. गुटका सं० १ । पत्रसं० १३८ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० × । पूर्ण वेष्टन सं० २०२ ।

विशेष—बनारसीदास कृत समयसार एवं नेमिचन्द्रिका का संग्रह है ।

६७२६. गुटका सं० २ । पत्रसं० १०२ । आ० ६×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०३ ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

६७२८. गुटका सं० ३ । पत्रसं० ११३ । आ० ७½×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २०४ ।

विशेष—गोम्मटसार, त्रिलोकसार, क्षपणासार आदि सिद्धांत ग्रंथों में से चर्चाएं हैं ।

६७२९. गुटका सं० ४ । पत्र सं० ८० । आ० ८½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८८२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०५ ।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजा संग्रह है ।

६७३०. गुटका सं० ५ । पत्र सं० १४० । आ० १०½×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल ×। पूर्ण । वेष्टन सं० १०६ ।

विशेष—स्फुट चर्चाओं का संग्रह है ।

६७३१. गुटका सं० ६ । पत्रसं० ८१ । आ० ७½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०७ ।

विशेष—निम्न पाठों का मुख्यतः संग्रह है—

१. दर्शन पाठ व पूजाएं आदि

२. धर्मबावनी-चंपाराम दीवान । र०काल सं १८८४ । पूर्ण । चंपाराम वृन्दावन के रहने वाले थे ।

६७३२. गुटका सं० ७ । पत्र सं० २८ । आ० ७×५ इंच । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०८ ।

विशेष—विभिन्न पदों का संग्रह है ।

६७३३. गुटका सं० ८ । पत्रसं० ७८ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल ×। पूर्ण । वेष्टन सं० १०९ ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है ।

६७३४. गुटका सं० ९ । पत्रसं० २३७ । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं० १७३४ भादवा सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११० ।

विशेष—समयसार तथा बनारसी विलास का संग्रह है ।

नोट—३७ छोटे बड़े गुटके और है तथा इनमें पूजा स्तोत्र एवं कथाओं का भी संग्रह है ।

प्राप्ति स्थान–दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर

६७३५. गुटका सं० १ । पत्रसं० ८५ । आ० ११ × ६ इंच भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५६ ।

विशेष—हिन्दी कवियों की विभिन्न रचनाओं का संग्रह है । मुख्य पाठ हैं:—

१. ध्यान बत्तीसी । (२) नेमीश्वर की लहरी ।
३. मंगलहरीसिंह । (४) मोक्ष पैड़ी—बनारसीदास
५. पंचम गति बेलि । (६) जैन शतक—भूधरदास
७. आदित्यवार कथा–भाऊ ।

६७३६ गुटका सं० २ । पत्र सं० ३७ । आ० १० × ५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६० ।

विशेष—नित्य नियम पूजा तथा रविव्रत कथा है ।

६७३७. गुटका सं० ३ । पत्रसं० १४६ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६१ ।

विशेष—मुख्य निम्न पाठ हैं—

१. यशोधर चौपई	—	
२. जम्बूस्वामं. चौपई	पाण्डे जिनराम	
४. पुरंदर चौपई	—	
४. बंकचूल की कथा	—	पद्य ५७२ (अपूर्ण)

६७३८. गुटका सं० ४ । पत्र सं० ४३ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६२ ।

विशेष– समयसार कलशा की हिन्दी टीका पाण्डे राजमल कृत है ।

६७३९. गुटका सं० ५ । पत्रसं० १५८ । आ० ९ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६३ ।

१ अनित्य पचासिका	—	
२. समयसार नाटक	बनारसीदास	अपूर्ण
३. द्रव्य संग्रह भाषा	पर्वत धर्मार्थी	
४. नाममाला	—	

६७४०. गुटका सं० ६ । पत्र सं० २२२ । आ० ८½ × ५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत–हिन्दी । ले० काल सं० १८०४ आषाढ बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६४ ।

१. जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	
२. पूजा संग्रह	×	२५ पूजायें हैं ।
३. आदित्यवार कथा	भाऊ	

६७४१. गुटका सं० ७। पत्रसं० १४०। आ० ७×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत–हिन्दी। ले०काल सं० १८६२। पूर्ण। वेष्टन सं० १६५।

विशेष—जैन शतक (भूधरदास), पार्श्वनाथ स्तोत्र, पंच स्तोत्र एवं पूजाओं का संग्रह है।

६७४२. गुटका सं० ८। पत्रसं० २५। आ० ११×६½ इञ्च। भाषा–प्राकृत–हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १६६।

विशेष—इसके अधिकांश पत्र खाली है द्रव्य संग्रह भाषा एवं जैन शतक टीका है।

६७४३. गुटका सं० ९। पत्रसं० ७३। आ० ६½×६½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। ले०काल सं० १६१६ माहबुदी७। पूर्ण। वेष्टन सं० १६७।

विशेष—निम्न पाठ है।

१. पूजा संग्रह।
२. बारहखड़ी मूरत। र०काल सं० १७४४।
३. नेमिनाथ का बारहमासा—विनोदीलाल।
(२) पंच मंगल–रूपचन्द।
(४) नेमिनाथ नवमंगल—लालचन्द

६७४४. गुटका सं० १०। पत्र सं० २३७। आ० ६×७ इञ्च। भाषा–हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १६८।

विशेष—निम्न पाठ है—

१. प्रीत्यंकर चौपई	नेमिचन्द्र	
२. राजानन्द की कथा	,,	
३. हरिवंश पुराण	र०काल सं० १७६६ आसोज सुदी १०	

६७४५. गुटका सं० ११। पत्रसं० ८६। आ० ७×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत–हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १६९।

विशेष—सामान्य पूजाओं का संग्रह है। ४३ से आगे पत्र खाली हैं।

६७४६. गुटका सं० १२। पत्र सं० ६४। आ० ६×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० १७०।

१ आदित्यवार कथा	—	अपूर्ण
२. शनिश्चर कथा	—	
३, विष्णु पंजर स्तोत्र	—	

६७४७. गुटका सं० १३। पत्रसं० १२८। आ० ६×४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० १७१।

६७४८. गुटका सं० १४। पत्रसं० ११६। आ० ५½×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १७२।

विशेष—प्रतिष्ठा पाठ (हिन्दी)। संवत् १८६१ (जयपुर) तक की प्रतिष्ठाओं का वर्णन तथा श्रावक की चौरासी क्रिया आदि अन्य पाठ भी हैं।

६७४६. गुटका सं० १५ । पत्र सं० ६६ । आ० ५×४ इञ्च । **भाषा**–हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १७३ ।

विशेष—भक्तामर सटीक (श्वे०) । महापुराण संक्षिप्त–गंगाराम । विवेक छत्तीसी तथा चैत्य वंदना ।

६७५०. गुटका सं० १६ । पत्र सं० ५० । आ० ४×४ इञ्च । **भाषा**-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १७४ ।

विशेष—जिन सहस्रनाम, परमानन्द स्तोत्र, स्वयंभूस्तोत्र एवं समाधिमरण आदि का संग्रह है ।

६७५१. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ३४ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७५ ।

विशेष—सम्मेदाचल पूजा गंगाराम कृत, गिरनार पूजा तथा मांगीतुंगी पूजा आदि का संग्रह है ।

६७५२. गुटका सं० १८ । पत्र सं० ११५ । आ० ७½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७६ ।

विशेष—गोम्मटसार, क्षपणासार, लब्धिसार में से पं० टोडरमल एवं रायमल्ल जी कृत चर्चाओं का संग्रह है ।

६७५३. गुटका सं० १६ । पत्रसं० ८६ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७७ ।

विशेष—नित्य नियम पूजा संग्रह है ।

६७५४. गुटका सं० २० । पत्र सं० २० । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८६५ आसोज सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७८ ।

विशेष—इष्ट पिचावनी रघुनाथ कृत तथा ब्रह्म महिमा आदि कवित्त हैं ।

६७५५. गुटका सं० २१ । पत्र सं० ६६ । आ० ८×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७९ ।

विशेष—नित्यनियम पूजा संग्रह, सूरत की बारह खडी, बारहभावना आदि का संग्रह है ।

६७५६. गुटका सं० २२ । पत्र सं० २४८ । आ० ६½×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८० ।

विशेष—निम्न मुख्य पाठ हैं—

१. उपदेश शतक	द्यानतराय ।	र०काल सं० १७५८
२. संबोध अक्षर बावनी	,,	
३. धर्मपच्चीसी	,,	
४. तत्वसार	,,	
५. दर्शन शतक	,,	
६. ज्ञान दशक	,,	
७. मोक्ष पच्चीसी	,,	

८. कविसिंह संवाद ज्ञानतराय

९. दशस्थान चौबीसी ,,

विशेषतः ज्ञानतराय कृत धर्मविलास में से पाठ हैं।

६७५७. गुटका सं० २३। पत्र सं० ६०। आ० ९ × ६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १८१।

विशेष—सामान्य पूजाओं का संग्रह है।

६७५८ गुटका सं० २४। पत्रसं० २८। आ० ८½ × ६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १८२।

विशेष—आदित्यवार कथा, भक्तामर स्तोत्र एवं तत्वार्थ सूत्र का संग्रह है।

६७५९. गुटका सं० २५। पत्रसं० ४४। आ० १०½ × ५½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १८३।

१. तत्वार्थ सूत्र भाषा पद्य छोटीलाल।

२. देव सिद्ध पूजा ×

६७६०. गुटका सं० २६। पत्रसं० ७४। आ० ८½ × ६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टनसं० १८४।

विशेष—बनारसी विलास में से पाठों का संग्रह है। जैन शतक भूधरदास कृत भी है। इसके अतिरिक्त सामान्य पाठों एवं पूजाओं का संग्रह है।

६७६१. गुटका सं० २७। पत्र सं० १०५। आ० ८ × ६ इंच। भाषा-हिन्दी। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टनसं० १५८।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र भाषा, बाईस परीषह एवं कल्याण मन्दिर स्तोत्र भाषा आदि का संग्रह है।

६७६२. गुटका सं० २८। पत्रसं० १३३। आ० ११ × ७½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ८६।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्रों का संग्रह है।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन दीवानजी मंदिर भरतपुर।

६७६२. गुटका सं० १। पत्र सं० २८। भाषा-संस्कृत। ले० काल × । पूर्ण। दशा सामान्य। वेष्टन सं० १।

६७६३. गुटका सं० २। पत्र सं० २०। साइज × । भाषा-संस्कृत। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २।

विशेष—प्रथम गुटके में आये हुये पाठों के अतिरिक्त पार्श्वनाथ स्तोत्र, घंटाकर्ण मंत्र तथा ऋषिमंडल स्तोत्र आदि का संग्रह है।

६७६४. **गुटका सं० ३** । पत्र सं० २६१ से ३२३ तक । भाषा–संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३ ।

विशेष—स्तोत्र, तत्वार्थ सूत्र आदि हैं ।

६७६५. **गुटका सं० ४** । पत्र सं० १५ । भाषा–संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६ ।

विशेष—देवपूजा तथा सिद्ध पूजा है ।

६७६६. **गुटका सं० ५** । पत्र सं० ६७ । भाषा–संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २५ ।

विशेष—गुटका खुले पत्रों में है तथा स्तोत्र तथा पूजाओं का संग्रह है ।

६७६७. **गुटका सं० ६** । पत्र सं० १६७ । भाषा––हिन्दी–संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ ।

६७६८. **गुटका सं० ७** । पत्र सं० २४२ । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३ ।

विशेष—गुटके में विषय-सूची प्रारम्भ में दी गई है तथा पूजा पाठ आदि का संग्रह है ।

६७६९. **गुटका सं० ८** । पत्र सं० ६४ । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५ ।

६७७०. **गुटका सं० ९** । पत्र सं० १०६ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६ ।

६७७१. **गुटका सं० १०** । पत्र सं० १३५ । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७ ।

६७७२. **गुटका सं० ११** । पत्र सं० १७३ । भाषा–हिन्दी । ले०काल सं० १८२४ भादों सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३९ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

(१) पद संग्रह (जगराम गोदीका)
(२) समवशरण मंगल (नथमल रचना सं० १८२१ लेखन सं० १८२३)
(३) जैन बत्री की चिट्ठी (नथमल)
(४) फुटकर दोहा (नथमल)
(५) नेमीनाथजी का काहला (नथमल)
(६) पद संग्रह (नथमल)
(७) भूधर विलास (भूधरदासजी)
(८) बनारसी विलास (बनारसीदासजी) । आशाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

६७७३. **गुटका सं० १२** । पत्रसं० ५८ । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४० ।

विशेष—(१) सभाभूषण ग्रंथ—(गंगाराम) पद्य संख्या ६४ । रचना काल-१७४४ ।
(२) पद संग्रह-(हेतराम) विभिन्न राग रागनियों के पदों का संग्रह है ।

६७७४. **गुटका सं० १३** । पत्रसं० १६० । भाषा-संस्कृत । ले०काल सं० १७७६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५ ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

६७७५. **गुटका सं० १४** । पत्रसं० ७६ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६ ।

विशेष—(१) चौबीस ठाणा चर्चा ।
(२) चौबीस तीर्थंकरों के ६२ ठाणा चर्चा ।

६७७६. **गुटका सं० १५** । पत्रसं० ११८ । भाषा-हिन्दी । र०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५० ।

विशेष—इन्द्रगढ में प्रतिलिपि की गई थी । समयसार (बनारसीदासजी) भी है ।

६७७७. **गुटका सं० १६** । पत्रसं० ५२ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७ ।

६७७८. **गुटका सं० १७** । पत्रसं० १६ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८ ।

विशेष—शनिश्चर की कथा दी हुई है ।

६७७९. **गुटका सं० १८** । पत्रसं० ८५ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१ ।

विशेष—बुधजन सतसई, पद व वचन बत्तीसी है ।

६७८०. **गुटका सं० १९** । पत्रसं० १६३ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २५ ।

विशेष—पूजा पाठ व कथा-संग्रह है ।

६७८१. **गुटका सं० २०** । पत्रसं० ८० । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २५ ।

विशेष—पूजा पाठ आदि संग्रह है ।

६७८२. **गुटका सं० २१** । पत्रसं० ८२ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ ।

विशेष—रत्नकरण्ड श्रावकाचार भाषा वचनिका है ।

६७८३. **गुटका सं० २२** । पत्र सं० १०१ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७ ।

विशेष—चर्चा बारह हैं ।

६७८४. **गुटका सं० २३ ।** पत्रसं० २७० । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २८ ।

विशेष—पूजा पाठ स्तोत्र आदि है ।

६७८५. **गुटका सं० २४ ।** पत्रसं० ४७ । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २९ ।

विशेष—अक्षर बावनी, ज्ञान पच्चीसी, वैराग्य पच्चीसी, सामायिक पाठ, मृत्यु महोत्सव आदि के पाठ हैं ।

६७८६. **गुटका सं० २५ ।** पत्रसं० ४३ । भाषा–हिन्दी । विषय–संग्रह । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३१ ।

विशेष—चेतन कर्म चरित्र है ।

६७८७. **गुटका सं० २६ ।** पत्रसं० २ से २६९ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३२ ।

विशेष– भूधरदास, जिनदास, नवलराम, जगतराम आदि कवियों के पदों का संग्रह है ।

६७८८. **गुटका सं० २७ ।** पत्र सं० ६७ से २२३ । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३४ ।

विशेष—पद, स्तोत्र, पूजादि का संग्रह है ।

६७८९. **गुटका सं० २८ ।** पत्र सं० १०३ । भाषा–प्राकृत । ले०काल सं० १६०१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५ ।

विशेष—परमात्म प्रकास, परमानन्द स्तोत्र, बावनाक्षर, केवली, लेश्या आदि पाठों का संग्रह है ।

६७९०. **गुटका सं० २९ ।** पत्र सं० २२७ । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १९३० । पूर्ण । वेष्टनसं० ४६ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ हैं ।

६७९१. **गुटका सं० ३० ।** पत्र सं० ३७५ । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४७ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ, पंचस्तोत्र एवं जैन शतक आदि हैं ।

६७९२. **गुटका सं० ३१ ।** पत्रसं० ७२ । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५० ।

विशेष—देव पूजा भाषा–टीका जयचन्द जी कृत हैं ।

६७९३. **गुटका सं० ३२ ।** पत्रसं० ३२ । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१

विशेष—देव पूजा तथा भक्तामर स्तोत्र है ।

६७९४. **गुटका सं० ३३ ।** पत्र सं० २९ । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२ ।

विशेष—पूजन संग्रह है ।

६७९५. गुटका सं० ३४ । पत्र सं० २ से ३९ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३ ।

विशेष—नित्य पूजा संग्रह है ।

६७९६. गुटका सं० ३५ । पत्रसं० ४८-१२५ । भाषा—हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५८ ।

विशेष—जिन सहस्रनाम एवं पूजा पाठ हैं —

६७९७. गुटका सं० ३६ । पत्रसं० ७१ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५४ ।

विशेष—जिन सहस्रनाम स्तोत्र-आशाधर, षोडश कारण पूजा, पंचमेरु पूजाएं हैं ।

६७९८. गुटका सं० ३७ । पत्र सं० १४३ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५५ ।

विशेष—पंचमंगल-रूपचन्द । सिद्ध पूजा अष्टाह्निका पूजा, दशलक्षण पूजा, स्वयंभू स्तोत्र, नवमंगल नेमिनाथ, श्रीभंवर जी की जखड़ी—हरष कीर्ति । परम ज्योति, भक्तामर स्तोत्र आदि हैं ।

६७९९. गुटका सं० ३८ । पत्रसं० २४० । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ, सम्मेदाचल पूजा, चौबीस महाराज पूजा, पंच मंगल, व्रत कथा व पूजाएं हैं ।

६८००. गुटका सं० ३९ । पत्र सं० २२३ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५७ ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र, मंगल, पूजा, पंच परमेष्ठी पूजा, रत्नत्रय पूजा, आदित्यवार कथा, राजुल पच्चीसी आदि पाठ हैं ।

पद—१-मक्सी पारसनाथ—भागचन्द ।
२-प्रभु दर्शन का मेला है—बलिभद्र ।
३-मैं कैसी करू साजन मेरा पिया जाता गढ़ गिरनार—इन्द्रचन्द ।
४-सेवक कू जान कै—लाल ।
५-जिया परलोक सुधारो—किशनचन्द ।
६-आगे कहा करसी भैया जब आजासी काल रे—बुधजन ।

६८०१. गुटका सं० ४० । **विशेष**—सभा शृंगार है ।

अन्तिम पाठ—

भाषा करी नाम समाभूषन गिरंथ कह लीजिए ।
यामें रागरागिनी की जात सभै .....यह ले तान
ताल ग्राम सुरगुनी सुनि रीझिऐ ।
गंगाराम विनय करत कवि कान सुनि वरनत
भूले तो सुधारि कीजिए ।

दोहा

सत्रह सत संवत् सरस चतुर अधिक चालीस ।
कातिक सुदि तिथि अष्टमी वार सरस रजनीस ।।६२।।
सांगानेर सुथान में रामसिंह नृपराज ।
तहा कविजन बचपन में राजति सभा समाज ।।६३।।
गंगाराम लहु सरस कायं कीनी बुधि प्रकास ।
श्री भगवंत प्रसाद तें इह सुभ सभा विलास ।।६४।।

इति सभा शृंगार ग्रंथ संपूरन ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

६८०२. गुटका सं० १ । पत्र सं० १३–१४३ । **भाषा**-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टन सं०** ३३४ ।

विशेष—पदों का संग्रह है । मुख्यतः जगगाराम के पद हैं । अंत में हरचंद संघी कृत चौबीस महाराज की बीनती है ।

आतम बिन सुख और कहा रे ।
कोटि उपाय करौ किन कोउ, बिन ग्यानी नहीं जात लहारे ।
भव विरकत जोगी सुर हैगें, जिहि वे थिरवि चिराचिर हारे ।
बरनन करि कहौ कैसे कहिऐ, जिसका रूप अनूपम हारे ।
जिहि दे पाये बिन संसारी, जग अन्दर बिचि जात बहारे ।
जिहि दे बल करि कै पांडव नै घोर तपस्या सकल सहारे ।
जिहि दे भाव अरथ उर कीना, जो पर सेती नांहि फस्यारे ।
कहे दीप नर तेही धन्य है जिस दानौउ सदा रूप चहारे ।।आतम।।

६८०३. गुटका सं० २ । पत्रसं० ४३ । **भाषा**-प्राकृत-हिन्दी । ले०काल × । **पूर्ण** । **वेष्टन सं०** ३०६ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं ।

१. द्रव्य-संग्रह—हिन्दी टीका सहित
टीकाकार वंशीधर है ।

२. तपोद्योतक सत्तावनी, द्वादशानुप्रेक्षा,
पंच मंगल ।

६८०४. गुटका सं० ३ । पत्रसं० ७६ । **भाषा**-संस्कृत । ले० काल सं० १९०७ । **पूर्ण** । **वेष्टन सं०** २८४ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक ५२ पूजाओं का संग्रह है । इनमें नवसेना विधान, दस दान, मतमंतार दर्शनाष्टक आदि भी हैं ।

६८०५. गुटका सं० ४ । पत्र सं० १६० । भाषा–हिन्दी । ले०काल सं० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७४ ।

विशेष—७५ पाठों का संग्रह है जिनमें अधिक स्तोत्र संग्रह हैं । कुछ विनती तथा साधारण कथाऐं हैं । कुछ उल्लेखनीय पाठ निम्न प्रकार हैं ।

१. कलियुग कथा—रचयिता, पांडे केशव, ज्ञान भूषण के उपदेश से । भाषा हिन्दी पद्य ।

२. कर्म हिंडोलना—रचयिता—हर्षकीर्ति । भाषा–हिन्दी पद्य ।

पद—

साधो छाडो कुमति अकेली, जाके मिथ्या संग सहेली ।
साधो लीज्यो सुमति अकेली, जाके समता संग सहेली ।

यह सात नरक..... यह अभयदायक ।।१।।
यह आगे कोध यह दरसन निरमल जिन भाषित धर्म अखाने ।।२।।

यह सुमति तनो व्यवहार चित चेती ज्ञान संभाल ।
यह कवन कीरति गति पावै भवि जीवन के मन भावै ।

पत्र १४७ मालीरासा—

भव तरु सींच हो मालिया, तिह चरु चारु सुढाल ।
चिहुँ डाली फल जुग जुवर, ते फल राखय काल रे ।
प्रानी तू काहे न चेत रे ।।१।।

काल कहै सुनि मालिया, सींच जु माया गवार ।
देखत ही को होछा होइ है, भीतर नहीं कुछ सार रे । ६।।

× × × × ×

काया कारी हो कन करे बीज सुदेशन लोप ।
सील सुकरना मालिया, धरम अंकुरो होय रे प्राणी ।
गहि वैराग कुदाल की, खोदि सुचारत कूप ।
भाव रहट बुत बोलि छट कांधे श्रुत जूपरे ।।१७।।

× × × ×

धरम महा तरु विरष तो, बहु विस्तार करेय ।
अविनासी सुख कारने, मोख महाफल देव रे ।
कहै जिनदास सुरान्यियो हसंत बीज सुभाल ।
मन वांछित फल लागसी, फिल ही भव भव कालरे ।।२६।।

पत्र १६३ से १८१ तक पत्री से काट कर ले जाये गये हैं ।

निम्न पाठ नहीं हैं—

ऋषभदेव जी की स्तुति, बहत्तरि सीख, अष्ट मंत्र की विधि मंत्र, नामावली, मुहूर्त, सरोषा, दिल्ली की जन्म पत्रिका।

यह पुस्तक सं० १९३१ में बछलीराम रामप्रसाद कासलीवाल बैर वाले ने भरतपुर के मंदिर में बढ़ाई।

९८०६. गुटका सं० ५। पत्रसं० २०२। भाषा–संस्कृत-हिन्दी। ले०काल सं० १८८२। पूर्ण। वेष्टन सं० २६७।

विशेष – नित्य पूजा पाठ हैं। पत्र १०३ से १९९ तक बहुत मोटे अक्षर हैं। षोडष कारण तथा दशलक्षण जयमाल हैं। प्राकृत गाथाओं के नीचे संस्कृत अर्थ है। ३५ पाठों का संग्रह है।

९८०७. गुटका सं० ६। पत्र सं० ७५९। भाषा–हिन्दी। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २७२।

विशेष—१२० पाठों का संग्रह है। अक्षर सुन्दर तथा काफी मोटे हैं। प्रारम्भ में पूजा प्राकृत तथा विनोदी लाल कृत मंगल पाठ हैं। प्रारम्भ में विषय सूचना भी दी हुई है। नित्य नैमित्तिक पाठों के अतिरिक्त निम्न पाठ और हैं—

भजन—जगतराम, नवलजी, जोधराज, द्यानतराय जी आदि के पद तथा टोडरमल कृत दर्शन तथा शिक्षा छन्द।

९९०८. गुटका सं० ७। पत्रसं० ६९। भाषा-हिन्दी। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० २६५।

विशेष—निम्न संग्रह हैं—

पार्श्वनाथ स्तोत्र, सिद्ध पूजा, भक्तामर स्तोत्र, संस्कृत तथा भाषा, कल्याण मन्दिर स्तोत्र, भाषा द्वादशानुप्रेक्षा, त्रिलोकसार भाषा-रचना सुमति कीर्ति, र०काल १६२७।

छहढाला—द्यानतराय। र०काल १७५९।

समाधिमरण

९८०९. गुटका सं० ८। पत्रसं० ३१६। भाषा-हिन्दी। ले०काल सं० १८८५। पूर्ण। वेष्टनसं० २६६।

विशेष—४९ पाठों का संग्रह है। सब नित्य पाठ ही हैं। जोधराज जी कासलीवाल कामा वालों ने लिखाई। अक्षर बहुत मोटे हैं एक पत्र पर आठ लाइन हैं तथा प्रत्येक लाइन में १३ अक्षर हैं। एक टोडर मल कृत दर्शन भी है जो गद्य में है।

९८१०. गुटका सं० ९। पत्रसं० १७०। भाषा-हिन्दी। ले०काल सं० १७८५। पूर्ण। वेष्टनसं० २६३।

विशेष—निम्न संग्रह है—

(१) तत्वार्थ सूत्र टीका—पत्र १०२ तक। रचयिता—अज्ञात।

(२) अनित्य पच्चीसी—भगवतीदास

(३) ब्रह्मविलास—भगवतीदास—पत्रसं० ६९। र०काल सं० १७५५।

९८११. **गुटका सं० १०** । पत्र सं० १०६ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २६४ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठों का संग्रह है । मोक्ष शास्त्र के प्रारम्भ में भगवान का एक सुन्दर चित्र है । चित्र में एक ओर गोडी आगे हाथ जोड़े मुनि तथा दूसरी ओर इन्द्र हैं ।

९८१२. **गुटका सं० ११** । पत्र सं० १०८ । भाषा—संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१५ ।

विशेष—भरतपुर में लिखा गया था । पद्मावती स्तोत्र, चतुःषष्टि योगिनी स्तोत्र, लक्ष्मी स्तोत्र, परमानन्द स्तोत्र, णमोकार महिमा, यमक बंध स्तोत्र, कष्ट नाशक स्तोत्र, आदित्यहृदय स्तोत्र आदि पाठों का संग्रह है ।

९८१३. **गुटका सं० १२** । पत्र सं० ४२३ । **भाषा**-हिन्दी । ले०काल सं० १८०० । पूर्ण । वेष्टन सं० १७८ ।

विशेष—

(१) पद्म पुराण—खुशाल चन्द । पत्र सं० १३९ । र०काल १७८३ । पूर्ण ।

(२) हरिवंश पुराण—खुशालचन्द । पत्र सं० १०१ ।

(३) उत्तरपुराण—खुशालचन्द । पत्र सं० १८३ । र०काल सं० १७९९ ।

९८१४. **गुटका सं० १३** । पत्र सं० ३४६ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४८ ।

विशेष—गुटके में निम्न पाठ हैं ।

१. ब्रह्मविलास	भगवतीदास ।	पत्र सं० १३३ ले०काल सं० १७९३ चैत्र शुक्ला १० ।
२. पद ४	—	पत्र सं० १३४ से १३६
३. बनारसी विलास	बनारसीदास ।	पत्र सं० १४१–२०६ तक । ले०काल सं० १८१८ कार्तिक सुदी ६ ।
४. समयसार नाटक	बनारसीदास ।	पत्र सं० १ से १२७ तक
५. पद संग्रह	—	पत्र सं० १ से १७ तक मुख्य रूप से हर्षचन्द के पद हैं ।

पद सुन्दर है—

निजनन्दन हुलरावैं, वामादेवी निजनन्दन हुलरावैं ।
चिरंजीवो त्रिभुवन के नायक कहि कहि कंठ लगावैं ।।१।।

नील कमल दल अंगमनोहर मुखदुतिचन्द दुरावैं
उन्नतभाल विसाल विलोचन देखत ही बलि जावैं ।।२।।

मस्तक मुकुट कान युग कुण्डल तिलक ललाट बनावैं ।
उज्जल उर मुकताफल माला, उडगन मोहि तिहरावैं ।।३।।

सुन्दर सहस अट्टोत्तर लक्षन अंग गुन सुभग सुहावै ।
मुख मृदुहास दंतदुति उज्जल आनन्द अधिक बढावै ॥४॥
जाकी कीरत तीन लोक मैं सुरनर मुनि जन गावै ।
सो भन हरषचन्द बामा दै, ले ले गोद खिलावै ॥५॥

अन्य पाठ संग्रह है—पत्र सं० ३५

६८१६. गुटका सं० १४ । पत्रसं० १३५ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल सं० १८०७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२० ।

विशेष—जगतराम कृत १६५ पदों का संग्रह है । ६१ पत्र तक पद हैं । इसके बाद सिद्ध चक्र पूजा है ।

६८१७. गुटका सं० १५ । पत्रसं० २४६ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०७ ।

विशेष—पूजा भजन तथा पद आदि का सुन्दर संग्रह है ।

६८१८. गुटका सं० १६ । पत्र सं० ३४३ । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८८८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०६ ।

६८१९. गुटका सं० १७ । पत्रसं० २६५ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०५ ।

विशेष—पूजाओं तथा कथाओं आदि का संग्रह है ।

६८२०. गुटका सं० १८ । पत्रसं० ४० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०२ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६८२१. गुटका सं० १९ । पत्रसं० ३१ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०३ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६८२२. गुटका सं० २० । पत्रसं० ५६ । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०३ ।

विशेष—हरिसिंह के पद हैं ।

६८२३. गुटका सं० २१ । पत्रसं० ३६ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०५ ।

विशेष—समाधि मरण तथा जिन शतक आदि हैं ।

६८२४. गुटका सं० २२ । पत्रसं० २०० । भाषा हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०६ ।

विशेष—बुधजन, हेतराम, भूधरदास, भागचन्द, बिनोदीलाल, जगतराम आदि के पदों का संग्रह है ।

६८२५. गुटका सं० २३ । पत्र सं० ६ से १६० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३६७ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार है—

१. कलियुग की कथा	हिन्दी	केशव पाण्डे
२. बारहखडी, अठारह नाते की कथा	हिन्दी	कमलकीर्ति

३. रामदास पच्चीसी	—	रामदास
४. मेघकुमार सिज्झाय	—	पूनो
५. कवित्त जन्म जल्याणक महोत्सव इसमें २६ पद्य हैं।	—	हरिचन्द
६. सुभ सुमती की कथा, परमार्थ जखड़ी	—	रामकृष्ण

६८२६. गुटका सं० २४। पत्रसं० ३० से २०६ । भाषा-प्राकृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३६८।

विशेष—मुख्य पाठ ये है।

पंचेंद्रिय वेलि	ठवकुरसी ।	भाषा-हिन्दी ।
	रचना काल	सं० १५८५ । ले०काल × । अपूर्ण ।
प्रतिक्रमण × ।	प्राकृत ।	रचना काल × । ले०काल × । पूर्ण ।
मनोरथ माला	मनोरथ ।	भाषा-प्राकृत । रचना काल × । पूर्ण ।
द्रव्य संग्रह	नेमिचन्द्राचार्य ।	भाषा-प्राकृत । ले०काल × । पूर्ण ।

६८२७. गुटका सं० २५। पत्र सं० ५४ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६६ ।

विशेष—राजुल पच्चीसी विनोदीलाल, नेमिनाथ राजमति का रेखता—विनोदीलाल

६८२८. गुटका सं० २६ । पत्रसं० ८३ । ले० काल सं० १८६० । पूर्ण । वेष्टन सं० ४००।

विशेष—नित्य पूजा पाठ हैं।

६८२६. गुटका सं० २७। पत्रसं० ४०। भाषा हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०१ ।

विशेष—सेढूराम कृत पद हैं।

६८३०. गुटका सं २८। पत्र सं० ६७ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं० १८१४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०२ ।

विशेष—नित्य पाठ तथा स्तोत्र संग्रह है। गूजरमल पुत्र मेघराज मोजमाबाद वाले की पुस्तक है।

६८३१. गुटका सं० २६। पत्र सं० ५०। भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५६ ।

विशेष—सामान्य पाठ हैं।

६८३२. गुटका सं० ३०। पत्रसं० ४८ । भाषा—हिन्दी-संस्कृत, । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५१ ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र एवं पूजा संग्रह है।

६८३३. **गुटका सं० ३१** । पत्र सं० १० से ४० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३५२ ।

विशेष—स्तोत्र संग्रह है ।

६८३४. **गुटका सं० ३२** । पत्र सं० ६४ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५३ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६८३५. **गुटका सं० ३३** । पत्र सं० ४६से१४३ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३४६ ।

विशेष—धार्मिक चर्चाएँ हैं ।

६८३६. **गुटका सं० ३४** । पत्र सं० ४० । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३५० ।

विशेष—नवमंगल (विनोदीलाल) पद्मावती स्तोत्र (संस्कृत) चक्रेश्वरी स्तोत्र (संस्कृत)

६८३७. **गुटका सं० ३५** । पत्र सं० २३ । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १९६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४५ ।

विषय—बनारसीदास कृत जिन सहस्रनाम स्तोत्र है ।

६८३८. **गुटका सं० ३६** । पत्रसं० २० । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४६ ।

६८३९. **गुटका सं० ३७** । पत्रसं० १६ से । १२० । भाषा-हिन्दी । ले०काल × पूर्ण । वेष्टन सं० ३४८ ।

विशेष—श्वेताम्बरीय पूजाओं का संग्रह है । १०८ पत्र से पंचमतपवृद्धि स्तवन (समय-सुन्दर) वृद्धि गौतम रास है ।

६८४०. **गुटका सं० ३८** । पत्रसं० १६ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३४२ ।

विशेष—दशलक्षण पूजा तथा स्वयम्भू स्तोत्र भाषा है ।

६८४१. **गुटका सं० ३९** । पत्रसं० २५ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४३ ।

विशेष—कोई उल्लेखनीय पाठ नहीं है ।

६८४२. **गुटका सं० ४०** । पत्रसं० ४८ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × पूर्ण । वेष्टनसं० ३४४ ।

६८४३. **गुटका सं० ४१** । पत्रसं० १९ से ७० तक । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३३९ ।

६८४४. गुटका सं० ४२ । पत्र सं० ७४ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४० ।

विशेष—५ पूजाओं का संग्रह है ।

६८४५. गुटका सं० ४३ । पत्रसं० ४७ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४१ ।

विशेष—धार्मिक चर्चाएं हैं ।

६८४६. गुटका सं० ४४ । पत्रसं० ७ से ५७ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३३५ ।

विशेष—ब्रह्मरायमल्ल कृत सोलह स्वप्न किसनसिंह कृत अच्छादना पच्चीसी तथा सूरत की बारहखड़ी है ।

६८४७. गुटका सं० ४५ । पत्रसं० ७२ । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८०६ मंगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३६ ।

विशेष—सामान्य पाठ है ।

६८४७. गुटका सं० ४६ । पत्र सं० १८८ । भाषा हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७७२ ।

विशेष—पूजा पाठ एवं पद संग्रह है ।

६८४८. गुटका सं० ४७ । पत्र सं० २०४ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७७३ ।

विशेष—छोटे २ भजन हैं ।

६८४९. गुटका सं० ४८ । पत्र सं० ३३ से ६० । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६६२ ।

६८५०. गुटका सं० ४९ । पत्रसं० २० । भाषा-प्राकृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६३१ ।

६८५१. गुटका सं० ५० । पत्र सं० ६५ । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५२१ ।

विशेष—त्रिलोकीलाल कृत पद तथा नित्य पूजा पाठ हैं ।

६८५२. गुटका सं० ५१ । पत्र सं० ६० । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । र० काल × । ले०काल सं० १९४४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२५ ।

विशेष—सामान्य पाठ हैं ।

६८५३. गुटका सं० ५२ । पत्र सं० ५ से २२१ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५०१ ।

विशेष—नित्य पूजा पाठों का संग्रह है । उल्लेखनीय पाठ निम्न प्रकार हैं ।

चतुर्विंशति देवपूजा—संस्कृत
जोगीरास—जिनदास कृत

सज्जनचित्तबल्लभ—
श्रुतस्कंध—भ० हेमचन्द्र ।
नवग्रह पूजा—संस्कृत
ऋषि मंडल, रत्न त्रय पूजा—
चिन्तामणि जयमाल—राइमल
माला—इसमें बहुत से देशों के तथा नगरों के नाम गिनाये गये हैं ।

६८५४. गुटका सं० ५३ । पत्र सं० १६-६३ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६६ ।

विशेष—पूजा संग्रह—दशलक्षण जयमाल आदि है ।

६८५५. गुटका सं० ५४ । पत्र सं० ५० । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४६७ ।

६८५६. गुटका सं० ५५ । पत्रसं० ४१ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४६८ ।

विशेष—नित्य पूजा, स्तोत्रादि भी हैं ।

६८५७. गुटका सं० ५६ । पत्र सं० २५ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६८७ ।

६८५८. गुटका सं० ५७ । पत्रसं० १८० । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६३ ।

विशेष—नित्यपूजा पाठ स्तोत्र आदि संग्रह है ।

६८५९. गुटका सं० ५८ । पत्रसं० १७-११३ । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं० १८२४ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४६४ ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

६८६०. गुटका सं० ५९ । पत्र सं० १-२४ । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६५ ।

विशेष—पूजा पाठ आदि का संग्रह है । लालचन्द के मंगल आदि भी हैं ।

६८६१. गुटका सं० ६० । पत्र सं० ४४ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं० १५५६ । भादवा सुदी ५ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४६१ ।

विशेष—निम्न संग्रह है—नित्य पूजा, चारित्र पूजा—नरेन्द्रसेन ।

६७६२. गुटका सं० ६१ । पत्र सं० ६६ से १६३ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८२

६८६३. गुटका सं० ६२ । पत्रसं० ३४ । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८८१ माघ वदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८५ ।

६८६४. गुटका सं० ६३ । पत्र सं० १७-६५ । **भाषा**—हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८६ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र, कल्याण मन्दिर स्तोत्र भाषा स्तोत्र आदि है ।

६८६५. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ५८ । **भाषा**-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७३ ।

६८६६. गुटका सं० ६५ । पत्र सं० ४४ । **भाषा**-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८० ।

विशेष—कर्म प्रकृति, चतुर्विंशति तीर्थंकर बासीठस्थान, बावन ठाणां की चौपई, परमजतक (भगवतीदास) मान बत्तीसी (भगवतीदास) का संग्रह है ।

६८६७. गुटका सं० ६६ । **पत्रसं०** २६१ । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं० १५६३ मंगसिर वदी २ पूर्ण । **वेष्टनसं०** ४७१ ।

विशेष—सुभाषितावलि, सारसमुच्चय, सिद्ध की पापड़ी, योगसार, द्वादशानुप्रेक्षा, चौबीस ठाणा, कर्मप्रकृति, भाव संग्रह (श्रुतमुनि) सुभाषित शतक, गुणस्थान चर्चा, अध्यात्म बावनी आदि का संग्रह हैं।

६८६८. गुटका सं० ६७ । **पत्रसं०** । २६८ । भाषा-प्राकृत-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४७२ ।

विशेष- पूजा संग्रह हैं ।

६८६९. गुटका सं० ६८ । पत्रसं० ६८ । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४६५ ।

विशेष—सामायिक पाठ, पूजा पाठ, स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

६८७०. गुटका सं० ६९ । पत्रसं० ३८। भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ४५६ ।

६८७१. गुटका सं० ७० । पत्रसं० ३६० । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । **वेष्टनसं०** ४६२ ।

विशेष—पूजा पाठ एवं पद संग्रह हैं ।

६८७२. गुटका सं० ७१ । पत्रसं० १६४ । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ४६४ ।

विशेष—षडभक्ति, भावना बत्तीसी, आणंदा । गीतडी आदि पाठों का संग्रह है ।

६८७३. गुटका सं० ७२ । पत्र सं०३४० । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५६ ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	**विशेष**
घंटाकर्ण मंत्र	....	संस्कृत	(पत्र ७)
देवपूजा बह्मजिनदास	—	,,	
शास्त्र पूजा ,, ,,	—	,,	

जिनशतक	भूधरदास	हिन्दी	
अठारह नाता का चौढालया		,,	
अक्षर बावनी	दौलतराम	,,	
वैराग्य उपजावन अंग	चरनदास	,,	१०७
दानशील तप भावना	समयसुन्दर	,,	
भैरवपूजा	—	,,	
लोहरी दीवार कथा	भानुकीर्ति रचना १६७२	,,	
भडली वचन	ले०काल १८२८	,,	
निपट के कवित्व	—	,,	
ज्ञानस्वरोदय	[illegible]	,,	
सबद	—	,,	
पद व स्तुति संग्रह	—	,,	
सामुद्रिक	र० काल सं० १६७८	,,	पद्य २४७
आदित्यवार कथा	भाउ कवि	,,	
जीवको सिज्झाय	—	,,	
पद व भजन संग्रह	—	,,	

९८७४. गुटका सं० ७३ । पत्र सं० ७२ । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५० ।

विशेष—भक्तामर ऋद्धि स्तोत्र मंत्र सहित, सूरत की बारहखड़ी, पूजा संग्रह, भरतबाहुबलि रास (२८ पद्य) आदि पाठ हैं ।

९८७५. गुटका सं० ७४ । पत्र सं० ३७ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५२ ।

विशेष—पूजा संग्रह है ।

९८७६. गुटका सं० ७५ । पत्र सं० १०१ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०८ ।

९८७७. गुटका सं० ७६ । पत्र सं० २३ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१९ ।

विशेष—ज्ञान चिन्तामणि 'मनोहरदास' जैन बारहखड़ी, 'सूरत' लघु बारहखड़ी 'कनक कीर्ति' । वैराग्य पच्चीसी, धर्मपच्चीसी, कलियुग कथा, जैन शतक, राजुल पच्चीसी, बहत्तर सीख आदि हैं ।

९८७८. गुटका सं० ७७ । पत्र सं० १५० । भाषा- × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८०० ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह है ।

६८७६. गुटका सं० ७८ । पत्रसं० ७० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८०१ ।

विशेष—चौरासी गोत्र आदि का वर्णन है ।

६८८०. गुटका सं० ७६ । पत्रसं० १५६ । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६६ ।

६८८१. गुटका सं० ८० । पत्र सं० ७० । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६७ ।

विशेष—साधारण पाठ एवं पूजाएं हैं ।

६८८२. गुटका सं० ८१ । पत्रसं० १५० । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७६६ ।

६८८३. गुटका सं० ८२ । पत्रसं० ६६ । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं० × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७८६ ।

विशेष—स्तोत्र व पूजा पाठ संग्रह है ।

६८८४. गुटका सं० ८३ । पत्रसं० ७७ । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६० ।

विशेष—पूजा, स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

६८८५. गुटका सं० ८४ । पत्रसं० ८७ । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८१८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६१ ।

विशेष—पत्र ६२ तक जैन शतक (भूधरदास) तथा ६३-८७ तक बलभद्र कृत नखसिखवर्णन दिया हुआ है ।

६८८६. गुटका सं० ८५ । पत्रसं० २२६ । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७८६ ।

विशेष—पूजा संग्रह है ।

६८८७. गुटका सं० ८६ । पत्रसं० ४६ । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७८७ ।

६८८८. गुटका सं० ८७ । पत्रसं० ११४ । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७८८ ।

विशेष—पद, स्तोत्र एवं पूजाओं का संग्रह है ।

६८८६. गुटका सं० ८८ । पत्रसं० २७० । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७८६ ।

विशेष—पाठों का अच्छा संग्रह है ।

६६००. गुटका सं० ८६ । पत्रसं० १५५ । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं० १६२१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७८४ ।

विशेष—पूजा संग्रह है ।

६८६१. गुटका सं० ६० । पत्रसं० १८२ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७८५ ।

विशेष—पूजा संग्रह है ।

६८६२. गुटका सं० ६१ । पत्रसं० १८० । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८२३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७८० ।

विशेष—अनुक्रमणिका जिन स्तुति

जिनवर सात बोल स्तवन-जसकीर्ति ।
उपधान विधि स्तवन-साधुकीर्ति ।
सिज्झाय-जिनरंग ।
नणद भोजाई गीत-आनन्द वर्द्धन ।
दिगम्बरी देव पूजा-पोसह पांडे ।
कम्मरण विधि-रतनसूरि ।
समीरणा पार्श्वनाथ स्तोत्र, भानुकीर्ति स्थूलभद्र रासो उदय रतन ।
कलावती सती सिज्झाय तथा भैरू संवाद ।

६८६३. गुटका सं० ६२ । पत्र सं० १४२ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७७८ ।

विशेष—पद संग्रह सिज्झाय, अर्बुदाचल तीर्थ स्तवन, संवत् १८२६ पौष बुदी ११ से १८३१ माघ बुदी ६ तक की यात्रा का ब्यौरा, गौडी पार्श्वनाथ स्तवन, सिद्धाचल स्तवन ।

६८६४. गुटका सं० ६३ । पत्र सं० २ से १६१ भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७७६ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६८६५. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० २० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७७६ ।

विशेष—ज्ञानकल्याण स्तवन तथा चर्चा है ।

६८६६. गुटका सं० ६५ । पत्र सं० ८४ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × ।पूर्ण । वेष्टन सं०

विशेष—दानशील तप भावना आदि पाठों का संग्रह है । समयसुन्दर । सिद्धाचल स्तवन, आनन्द रास, गौतम स्वामी रास, विजयभद्र पार्श्वनाथ स्तवन-विजय वाचक । कल्याण मन्दिर भाषा-बनारसीदास । क्षमा छत्तीसी-समय सुन्दर ।

६८६७. गुटका सं० ६६ । पत्रसं० २३६ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७७४ ।

विशेष—छोटे २ पदों का संग्रह है ।

६८६८. गुटका सं० ६७ । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ७७५ ।

विशेष—पूजा पाठ आदि है ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर (बयाना)

६८६६. गुटका सं० १ । पत्र सं० ३१२ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५० ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. भक्तामर स्तोत्र	—		संस्कृत हिन्दी
विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।			
२, पद	लक्ष्मणदास	हिन्दी	४ अंतरे
	राजमति सुनु हो रानी		
पद	घनश्याम	,,	३ अंतरे
	जषरथ दूर गयो जब चेती	,,	—
अठारह नाते का चौढाल्या	लोहट	,,	—
तीन चौबीसी के नाम	—	,,	६६–६० पत्र
तथा चौपई	—	,,	र०काल सं० १७४६
			ले०काल सं० १८०६

विशेष—

अन्तिम—पद्य निम्न प्रकार है—

नाम चौपई ग्रंथ में रख्यो नाम दास विस्राम ।
जैसराज सुत ठोलिया जोबिनपुर सुथान ।
सत्तरासै उनचास में पूरण ग्रंथ सुभाय ।
चैत्र उजासनी पंचमी विजैसिंह नृपराय ।
एक बार जो सरधहै अथवा करसी पाठ ।
नरक नीच गति के विषै रोपै कीली गाढ ।

इति श्री तीस चौपई नाम ग्रंथ समाप्ता । रूपचन्दजी विजैरामजी विनायक्या कासली के ने प्रतिलिपि की थी ।

नेमजी की डोरी	ब्र० नाथु	हिन्दी	७६
पांवापुर गीत	अखैराम	,,	७६
शालिभद्र चौपई	जिनराजसूरि	,,	१०८

र०काल सं० १६७८ आसोज सुदी ६ ले०काल सं० १८०३ भादवा बुदी ११ ।

जयपुर के पार्श्वनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी । बिजैराम कासली के ने प्रतिलिपि की थी ।

मेघकुमार गीत	पूनो	हिन्दी	१०२
नन्दू की सप्तमी कथा	—	,,	१०३
आदित्यवार	भाऊ	,,	११६

धन्ना चउपई	—	,,	१२५
नित्य पूजा पाठ	—	,,	—
नेमिश्वर रास	ब्र० रायमल्ल	,,	१७५
धन्ना सज्झाय	त्रिलोकप्रसाद	हिन्दी	१८२
		ले०काल सं० १८०१	
मृगीसंवाद	—	,,	
		२०काल सं० १६६३	

संवत सोलसै बेसठे चैत्र सुदि रविवार ।
नवमी दिन काला भावस्यौ रास रच्यौ सुविचार ।
बिजागच्छ मांडणपुर वास सूरदेव राज ।
श्री धनभंदन दिये हुई सुसीस सुकाज ।

इति मृगी संवाद संपूर्ण ।

चौरासी जाति की उत्पत्ति	—	हिन्दी	२०१
श्रीपाल रास	ब्र० रायमल्ल	,,	२३२
पंच मंगल	रूपचन्द	,,	२३४
जन्म कुण्डली	—		

१. साह रूपचन्द के पौत्र तथा टेकचन्द के पुत्र की सं० १८२५ का
२. साह टेकचन्द की पुत्री (मानबाई) की सं० १८२६ की ।

प्रद्युम्न रासो	ब्र० रायमल्ल	,,	२८३
	२०काल सं० १६२८ ले०काल सं० १८०७		

पं० रुडमल ने प्रतिलिपि की थी ।

भविष्यदत्त कथा	ब्रह्म रायमल्ल	हिन्दी	३१२ अपूर्ण

६६००. गुटका सं० २ । पत्रसं० १६६ । आ० ६½×४ इंच । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४८ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठों का संग्रह है ।

६६०१. गुटका सं० ३ । पत्रसं० ८० । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण-जीर्ण । वेष्टन सं० १४६ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६६०२. गुटका सं० ४ । पत्रसं० ७३ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४७ ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है—

बृहत् सिद्ध पूजा	शुभचन्द	संस्कृत	१-४६
अष्टाह्निका पूजा	—	,,	५०-७३

९९०३. गुटका सं० ५ । पत्रसं० ३६ । आ० ५×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १४५ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

स्तुति अर्हंत देव	वृन्दावन	हिन्दी	पत्र १-१६
मंगलाष्टक	,,	,,	१७-१९
स्तवन	,,	,,	१९-२५
मरहट्टी	,,	,,	२६-२९
जम्बूस्वामी पूजा	,,	,,	३०-३६

९९०४. गुटका सं० ६ । पत्रसं० २८ । आ० ५½×३½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४३ ।

विशेष— जैन गायत्री विधान दिया हुआ है ।

९९०५. गुटका सं० ७ । पत्र सं० ८४ । आ० ७×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १४० ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

९९०६. गुटका सं० ८ । पत्रसं० २४ । आ० ५×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४२ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

९९०७. गुटका सं० ९ । पत्र सं० ९३ । आ० ७½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १४० ।

विशेष—सामान्य पूजा एवं अन्य पाठों का संग्रह है ।

९९०८. गुटका सं० १० । पत्रसं० ७-१४० । आ० ४⅜×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १३७ ।

विशेष—नित्य पूजाओं का संग्रह है ।

९९०९. गुटका सं० ११ । पत्र सं० ८१ । आ० ५×३½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३८ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

कल्याणमन्दिर स्तोत्र भाषा	बनारसीदास	हिन्दी	—
जिनसहस्रनाम स्तोत्र	जिनसेनाचार्य	संस्कृत	—
भक्तामर स्तोत्र	मानतुंगाचार्य	,,	—

९९१०. गुटका सं० १२ । पत्र सं० ३० । आ० ६½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३६ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

जम्बूस्वामी पूजा	जगतराम	हिन्दी	१-१३

चमत्कारजी पूजा	—	हिन्दी	१३-१६
रोटतीज व्रत कथा	खुशीलाल बैनाडा	,,	१८-२६

र० काल सं० १६०६

विशेष—कवि करौली के रहने वाले थे।

६६११. गुटका सं० १३। पत्रसं० ८१। आ० ८½×५½ इंच। भाषा-हिन्दी। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १३४।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है—

चौबीस महाराज पूजा	रामचन्द्र	हिन्दी	१-७३
पंचमेरु पूजा	—	—	७३-८१

६६१२. गुटका सं० १४। पत्रसं० १०१-१६६। आ० ६½×६ इंच। भाषा—हिन्दी। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १३५।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है

६६१३. गुटका सं० १५। पत्रसं० ४८। आ० ७×६ इंच। भाषा—संस्कृत-हिन्दी। ले० काल सं० १८५१। पूर्ण। वेष्टन सं० १३३।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

पंच नवकार	—	प्राकृत	१
भक्तामर स्तोत्र मंत्र सहित	—	संस्कृत	२-११
ऋषि मंडल स्तोत्र	—	,,	१२-१७
श्रीपाल को दर्शन	—	हिन्दी	१७-२०
नवलादेव जी	—	,,	२०-२२
महा सरस्वती स्तोत्र	—	संस्कृत	२२-२४
पद्मावती स्तोत्र	—	,,	२४-२६
कल्याण मन्दिर स्तोत्र	कुमुदचन्द्र	,,	३०-३६
चिंतामणि स्तोत्र	—	संस्कृत	३७
नेमि राजुल के बारह मासा	—	हिन्दी	४२-४६
पार्श्वनाथ स्तोत्र	—	संस्कृत	४७
लक्ष्मी स्तोत्र	पद्मप्रभदेव	,,	४७
स्तवन	गुणसूरि	हिन्दी	४८

ले०काल सं० १८५१

६६१४. गुटका सं० १६। पत्रसं० २६। आ० ७½×६ इंच। भाषा-हिन्दी। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १३२।

विशेष—देवाब्रह्म के पदों का संग्रह है।

६६१५. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ३२ । आ० ७½ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३१ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

१. भक्तिमाल पद	बलदेव पाटनी	हिन्दी	चौबीस तीर्थंकरों का स्तवन है ।
२. पद	,,	—	—

पदों की संख्या १८ है ।

६६१६. गुटका सं० १८ । पत्र सं० ६६ । आ० ५ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८२३ द्वितीय चैत बुदी १३ । **पूर्ण** । **वेष्टन सं० १३०** ।

विशेष—तत्वार्थसूत्र की चतुर्थ अध्याय तक हिन्दी टीका है ।

६६१७. गुटका सं० १६ । पत्र सं० १२७ । आ० ६½ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२६ ।

विशेष— पूजा एवं स्तोत्र तथा सामान्य पाठों का संग्रह है । बीच के तथा प्रारम्भ के कुछ पत्र नहीं हैं ।

६६१८. गुटका सं० २० । पत्रसं० ३७४ । आ० ६ × ३½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२८ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

तत्वार्थ सूत्र के प्रथम सूत्र की टीका	कनककीर्ति	हिन्दी
सामायिक पाठ टीका	सदासुखजी	,,

६६१६. गुटका सं० २१ । पत्र सं० ३६ । आ० ८½ × ७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२७ ।

विशेष—स्वामी हरिदास के पदों का संग्रह है । पत्र २२ तक हरिदास के १२६ पदों का संग्रह है । २३ वें पत्र से २६ वें पत्र तक विट्ठलदास के २८ पदों का संग्रह है । २६ पत्र से ३६ पत्र तक बिहारीदास का पद रहस्य लिखा हुआ है ।

६६२०. गुटका सं० २२ । पत्र सं० ११४ । आ० ६½ × ६ इंच । भाषा-संस्कृत-प्राकृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टन सं० १२६** ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

ग्रंथ	ग्रंथकार	भाषा	विशेष पद्य
प्रतिक्रमण	----	प्राकृत	१-४
पद	महमद	हिन्दी	५

प्रारम्भ—

भूल्यो मन गमरारे काइ भमै दिवसनि राति ।
मायानौ बांध्यो प्राणीयौ भमै प्रमलजाय ॥१॥

अन्तिम—

महमद कहै वस्त्र बहुरीयो जो कोई आवै रे साथ ।
आपनो लोभनी वाहिते लेखो साहिब हाथ ॥७०॥ भूल्यो

कल्याण मंदिर स्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत
भक्तामर स्तोत्र	मानतुंगाचार्य,	,,
कलियुग की कथा	—	हिन्दी
आरती	दीपचंद	,,
चौबीस तीर्थंकर आरती	मोतीराम	,,
वैराग्य षोडश	ज्ञानतराय	,,
चौबीस तीर्थंकर स्तुति	—	,,
उदर गीत	छीहल	,,
आदिनाथ स्तुति	अचलकीर्ति	,,
अनुप्रेक्षा	भवधू	,,
नेमिराजुल गीत	गुणचन्द्र	,,

प्रारम्भ के ७ पद्य नहीं हैं । ८ वां पद्य निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—

मंजन साला हरि गये खेलत संग जिन राय रे ।
करजु गह्यो प्रभु नेम को हरि करि अंगुलि लपटाइ हो ॥
देव तहां जय जय करैं बाजै दुंदुभिनाद रे ।
पुष्प वृष्टितहां अति भई विलख भई कर वाहुरे ॥

× × ×

अन्तिम—

पुर सुलतान सुहावणी जहां बसैं सरावग लोगजी ।
पुर परियन आनन्द स्यौं कर है विविधरस भोगी जी ॥७१॥
काष्ठा संघ सुहावणा मथुरा गच्छ अनूपरे ।
शीलचन्द्र मुनि जानिये सब जतियन सिर भूपजी ॥७२॥
तासु पट जस कीर्ति मुनि काष्ठा संघ सिंगार रे ।
तासु सिस गुणचंद मुनि विद्या गुणह भंडारू रे ॥७३॥
मन वच काया भावस्यों पढहि सुनहि नर नारि रे ।
रिद्धि सिद्धि सुख संपदा तिन चरणन पर वारि रे ॥७४॥

इस से आगे के पद नहीं हैं ।

द्वादशानुप्रेक्षा सूरत हिन्दी —

अन्तिम—

हंसा दुर्ल्लभी हो मुकति सरोवर तीर ।
इन्द्रिय बाहिया उहो पीवत विषयह नीर ॥
अति विषयनीर पियास लागी विरह वेदन व्याकुले ।
बारह प्रेक्षा सुरति छांडी एम भूलो बावले ।
अब होउ एतनु कहऊ तेतउ बुद्ध बंसइ जम्मणु ।
संज्ञा समरणउ आय सरनउ परम रयनत्तय गुणु ॥१२॥

इति द्वादशानुप्रेक्षा समाप्तिता ।

आदिनाथ स्तुति	विनोदीलाल	हिन्दी
खिचरी	कमलकीर्ति	,,

प्रारम्भ—

संजम की प्रभु सेज मंगाऊं स्याद्वाद को गैदुवा ।
पानी हो जिन पानी मंगऊ चरचा चौविध संघकी ।
आरज जाय अजवाइन लाइ, पीपर कोमल जावरी ।
धनिया हो जिन पद को लाइ मूढ महामद छांडिये ।
श्रीरज को प्रभु जीरो लाई सब विसयारसु वेक्षणा ।
सुकल ध्यान की सूंठ मंगाऊं कर्मकांड ईंधनु पणे ।

× × ×

अन्तिम —

श्री आदिनाथ जिनराज.....आवग हो तहां चतुर सुजान ।
धर्म ध्यान गुण आगरी कीजे.....परमारथि जानि ।
यह विनती जिनराज की चहुँ संघ के.....कल्याण ।
श्री कमल कीर्ति मुनिहर कही..... ।

इति खिचरी समाप्ता

सोलहसती की सिज्झाय	प्रेमचंद	हिन्दी	
क्षेत्रपाल गीत	सोभाचंद	,,	
भक्तामर स्तोत्र भाषा	हेमराज	,,	ले०काल सं० १८२८ वैशाख बुदी ६

विशेष —जतीमान सागर ने जती सेवाराम के पठनार्थ पिंगोरा में प्रतिलिपि की थी। श्री महावीर जी के प्रसाद से ।

गणपति स्तोत्र	—	संस्कृत
बारहखडी	सुदामा	हिन्दी
वीर परिवार	—	,,
स्थूल भद्र सिज्झाय	गुणवर्द्धन सूरि	,,
पद्मजी की बीनती	—	,,

शत्रुंजय स्तवन	समयसुन्दर	हिन्दी
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामी	संस्कृत
भक्तामर स्तोत्र	मानतुंग	,,
लक्ष्मी स्तोत्र	—	,,
चौसठ योगिनी स्तोत्र	—	,,
वृषभदेव वंदना	आनंद	हिन्दी
ऋषि मंडल स्तोत्र	—	संस्कृत
षोलह कारण गाथा	—	,,
गौतम पृच्छा	—	,,
जिनाष्टक	—	,,

६६२१. गुटका सं० २३ । पत्रसं० ४८ । आ० ५½×४½ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६२ ।

विशेष—पूजाओं तथा अन्य सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६६२२. गुटका सं० २४ । पत्रसं० ७६ । आ० ७×५½ इंच । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६१ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

१. बाहुबलिछंद कुमुदचन्द हिन्दी र०काल सं० १४६७

विशेष—कुल २११ पद्य हैं रचना का आदि एवं अंत भाग निम्न प्रकार है—

आदि का पाठ (पत्र १३)

प्रथमविपद आदीश्वर केरा, जेह नामे छुटे भव फेरा ।
ब्रह्म सुता समरूं मति दाता, गुण गण पंडित जगविदत्ता ।।२।।
भरत महीपति कृत मही रक्षण, बाहूबलि बलवंत विचक्षण ।
तेह भणो करसुं नवछंद, सांभलता भणतां आनंद ।।३।।
देह मनोहर कौशल सोहै, निरखतां सुरनर मन मोहे ।
तेह मांहि राजे अति सुन्दर, साकेता नगरी तव मंदिर ।
× × ×

मध्य पाठ —

विकसति कमल अमल दलपंती,
कोमल कमल समुज्जल कांती ।
बनवाडी श्री राम सुरंगी अंब कदंबा ऊंवर तुंगा ।।४२।।
करणा केतकी कमरख केली, नव नारंगी नागर वेली ।
अगर नगर तरु तुंदुक ताला, सरल सुपारी तरल तमाला ।।४३।।
बदनि बकुल बादाम विजोरी, जाई जुई, जंबू जंभीरी ।
चंदन चंपक चारु चारोली, वर वासंति वर सोली ।।४४।।

अन्तिम पाठ—

संवत चौदस में सतसठो, ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी तिथि छठे ।
कवीवर वारे घोघा नयरे, अति उतंग मनोहर शुभ घरे ।।२०७।।
अष्टम जिनवर ने प्रासादे सांभलियो जिनगाना सुखारे ।
रत्नकीर्ति पदवी गुण पूरे, रचियो छंद कुमुद शशी सूरे ।।२०८।।
सोभलतां भनतां आनंद, भव आतप नासे सुख कंद ।
दुख दरिद्र बहु पीडा नासे, रोग शोक नहि आवै पासै ।।२०९।।
शाकिनी डाकिनी करे चकचूरं भूत प्रेत जावे सहू पूरं ।
रोग भगंदर नविपासे, सुख संपति भविजन परकासे ।।२१०।।

कलस—

उत्कट विकट कठोर रोर गिरि भंजन रत्यवि ।
विहित कोह संदोह मोहतम ओघ हरण रवि ।
विहित रूप रति भूप चारु गुण कूप विनुत कवि ।
धनुष पांच सै पचीस वरत सहुँय तनू छवी ।।
संसार सारि त्यागं गतं विबुद्ध वृंद वंदित चरणं ।
कहे कुमुदचन्द्र भुजबल जयो सकल संघ मंगल करण ।।२११।।

इति बाहुबलि छंद संपूर्ण ।

२. नेमिनाथ को छंद हेमचन्द्र हिन्दी —
(श्री भूषण के शिष्य)

विशेष—यह रचना २०५ पद्यों की है ।

रचना का आदि अंत भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ –

विदेहं विमलं वेषं स्तंभ तीर्थस्य नायकं ।
गीराधं गौतमं वीरं छंद प्रारंभ सिद्धये ।।१।।

छंद बाल—

प्रथम नमोहूं जिन मुखजेहं बज बज नादे सकल विदेहं ।
वदन सुचंदे निर्मल कंदे त्रिभुवन वंदे भगत सुछंदे ।।२।।
झलकति झल्ले झगमग गल्ले, चतुर भुजाय गणगण चल्ले ।
कमंडल पोथी कमल सुहस्ती मधुर वचेना शुभ वांचती ।।३।।

मध्य भाग—

राय मनोहर धारिनी नारी पतिवरतानो व्रत धर नारी ।
समरीराय निज चित्त मझारी, इम अनुभवता सुख संसारी ।।९८।।
गूंथी त्रिनस पेत्त पत्रारी, सोम मुखी सोभांति गोरी ।
नेत्र जीति चकित चकोरी, साहन की गज गमन विहारी ।।९९।।

मल पति होंडे जोबन भारी, पैंव पवति विषय विकारी ।
अंत विधि कादि सिधारी, ऐसी भांति छल: अधिकारी ॥१००॥

× × ×

अन्तिम पाठ—

काष्ठा संघ विख्यात धर्म दिगंबर धारक ।
तस नंदी तटगच्छ गण विद्या भक्तितारक ।
गुरु गोयम कुल गोत्र, रामसेन गच्छ नायक ।
नरसिंघ पुरादि प्रसिद्ध द्वादश ख्याति विधायक ।
तद अनुक्रमे भागु भन्या गच्छ नायक श्री कार ।
श्री भूषण सिष्य कहे हेमचन्द विस्तार ॥२०५॥

× × ×

३-राजुल पच्चीसी	विनोदीलाल	हिन्दी	—
४-नेमिनाथ रेखता	क्षेम	,,	—
५-राजुल का बारहमासा	विनोदीलाल	,,	—
६-बलिभद्र बीनती	मुनिचन्द्र सूरि	,,	—
७-बारह खड़ी	—	,,	—
८-अनित्य पंचासिका	त्रिभुवनचन्द	,,	—
९-जैन शतक	भूधरदास	,,	—

९९२३. **गुटका सं० २५** । पत्रसं० १३५ । आ० ५½×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ९९ ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है ।

९९२४. **गुटका सं० २६** । पत्रसं० ११४ । आ० ७×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ९० ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

९९२५. **गुटका सं० २७** । पत्रसं० २१-१२१ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८७ ।

विशेष—आयुर्वेद के नुस्खे हैं ।

९९२६. **गुटका सं० २८** । पत्र सं० ३६-३२० । आ० ६×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८५ ।

विशेष—पूजा तथा स्तोत्र संग्रह है अमर कोष एवं आदित्य कथा संग्रह आदि है ।

९९२७. **गुटका सं० २९** । पत्र सं० ३-२८६ । आ० ६×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं०

विशेष—वृन्दावन कृत चौबीसी पूजा है । तथा सुखसागर कृत अष्टाह्निका रासो भी है ।

६६२८. गुटका सं० ३०। पत्र सं० ७८८। आ० ८½ × ७ इंच। भाषा--संस्कृत-हिन्दी। विषय-संग्रह। र०काल × । ले० काल सं० १८६३ माघ सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन सं० ८४।

निम्न पाठों का संग्रह है:—

ग्रंथ	ग्रंथकार	भाषा	विशेष
पद्मनंदि पच्चीसी भाषा	जगतराम	हिन्दी, संस्कृत	र० काल सं० १७२२ फागुण सुदी १०
ब्रह्म विलास	भगवतीदास	हिन्दी	—
समयसार नाटक	बनारसीदास	,,	र० काल सं० १६६३
स्तोत्रत्रय भाषा	—	,,	—
तत्वसार	द्यानतराय	,,	—
चौबीस दण्डक आदि पाठ	—	,,	—
चेतन चरित्र	भैया भगवतीदास	,,	—
श्रावक प्रति क्रमण	—	प्राकृत	—
सामायिक पाठ	—	हिन्दी	—
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	—
सामायिक पाठ भाषा	जयचन्द	हिन्दी	—
चरचा शतक	द्यानतराय	हिन्दी	—
त्रिलोक वर्णन	....	हिन्दी	—
आचार्यादि के गुण वर्णन	—	,,	—
पट्टावली	—	,,	सं० १२४८ तक है।

आगे लिखा है कि १२४८ तक तो शुद्ध आम्नाय रही। लेकिन सं० १३१६ के साल भट्टारक प्रभाचन्द्र जी नै फीरोजसाह पातिसाह के जोग थकी वस्त्रांगीकार करया इन्द्र ग्रस्थ मध्ये।

अकृत्रिम चैत्यालय वर्णन	—	,,	—
चर्चा संग्रह	—		—
सिद्धांतसार दीपक	नथमल	,,	—
पंच इन्द्री चौपई	भूधरदास	,,	—
चर्चा समाधान	भूधरदास	,,	—

गुटके के अन्त में निम्न पाठ लिखा हुआ है—

चांदण ग्राम सुजाण महावीर मन्दिर जहां।
नन्दराम अस्थान ऊंठा पाठ बैठे पढ़ें ॥६॥
सुनयन मैं जुभाई जैसिंह बहालसिंह
हरपरसाद अभिचन्द जदि जानियो।
रोसनचन्द गंगादास आसानन्द मलचन्द
सज्जन अनेक तिहां पढ़ें सरधानियो।

ता भाइयों की कृपा सेती लिख्यो रामसनी पाठ
नन्दलाल के पढने कूं सुनो जू ज्ञानियौ ।।
यामें भूलचूक होइ ताहि सोध सुध कीजो
मोहि अल्प बुधजान छिमा उर आनियौ ।।२।।

चौपई—

संवत् ठारासै आणवै जान, माघ शुक्ल पूर्णमासी बखान ।
सोमवार दिन हैगो श्रेष्ठ, पूरण पाठ लिख्यो अति श्रेष्ठ ।

६६२६. गुटका सं० ३१ । पत्र सं० ३७० । आ० १२×७ इञ्च । **भाषा**–हिन्दी । ले० काल सं० × । पूर्ण । **वेष्टन सं०** ८३ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

ग्रंथ	ग्रंथकार	भाषा	विशेष
द्रव्य संग्रह भाषा	—	हिन्दी	—
नक्षत्र एवं वार विचार	—	—	—

विशेष—विभिन्न नक्षत्रों में होने वाले फलों का वर्णन है ।

पंच स्तोत्र एवं तत्वार्थ सूत्र तथा पंच मंगल पाठ	—	संस्कृत हिन्दी	—
अनन्त व्रत कथा	मुनि ज्ञानसागर	संस्कृत	—
जिनसहस्रनाम ।	जिनसेनाचार्य	,,	—
आदित्यवार कथा	सुरेन्द्रकीर्ति	हिन्दी	—
लघु आदित्यवार कथा	मनोहरदास	,,	३५ पद्य
पूजा संग्रह	—	,,	—
जैन शतक	भूधरदास	हिन्दी	—
पूजा संग्रह	—	,,	—
शील कथा	भारामल्ल	हिन्दी	—
निशि भोजन कथा	—	,,	—
अठारह नाता	अचलकीर्ति	,,	—
जैन विलास	भूधरदास		
पद संग्रह	बनारसीदास, जगराम, कनककीर्ति, हर्षचन्द्र, नवलराम, देवाब्रह्म, विनोदीलाल, आनतराय,		
चौबीस महाराज पूजा,	वृन्दावन	हिन्दी	—

९९३०. गुटका सं० ३२ । पत्रसं० २३१ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८२ ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

९९३१. गुटका सं० ३३ । पत्रसं० ७-२९५ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६ ।

विशेष—मुख्य पाठों का संग्रह निम्न प्रकार है ।

ग्रंथ	ग्रंथकार	भाषा	विशेष
कल्याण मन्दिर स्तोत्र	कुमुदचन्द	संस्कृत	—
शास्त्र पूजा	ज्ञानतराय	हिन्दी	—
आदित्यवार कथा	—	,,	—
नवमंगल	खालचन्द	,,	—
अनन्त व्रत कथा	मुनि ज्ञानसागर	,,	—
भक्तामर तथा अन्य स्तोत्र	—	संस्कृत	—
जिन सहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	,,	—
पूजा संग्रह	—	संस्कृत, हिन्दी	—
आदित्यवार कथा	सुरेन्द्रकीर्ति	हिन्दी	र० काल सं० १७४४
जैन शतक	भूधरदास	,,	र० काल सं० १७८१
चौबीस महाराज पूजा	वृन्दावन	,,	

९९३२. गुटका सं० ३४ । पत्रसं० २६३ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल सं० १९१२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७५ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

ग्रंथ	ग्रंथकार	भाषा	विशेष
कल्याण मन्दिर भाषा	बनारसीदास	हिन्दी	—
भक्तामर स्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	—
भक्तामर भाषा	हेमराज	हिन्दी	—
लक्ष्मी स्तोत्र	पद्मप्रभदेव	संस्कृत	—
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामी	,,	—
पूजा संग्रह	—	,,	

नित्य पूजा, षोडष कारण, दशलक्षण, रत्नत्रय, पंचमेरू, नंदीश्वर द्वीप एवं चौबीस तीर्थंकर पूजा रामचन्द्र कृत हैं ।

आदित्यवार कथा	भाऊ	हिन्दी	,,

पंचमंगल	रूपचन्द	हिन्दी	,,
नेमिनाथ के नवमंगल	विनोदीलाल	,,	र० काल सं० १७०४
सामायिक पाठ	—	संस्कृत	—
व्रत कथाएं	खुशालचन्द	हिन्दी	—
जिन सहस्रनाम	—	संस्कृत	—

६६३३. गुटका सं० ३५ । पत्रसं० २८० । आ० १२×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७६५ चैत बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

पाण्डव पुराण	बुलाकीदास	हिन्दी	र० काल सं० १७८४
सीता चरित्र	कविबालक (रामचन्द्र)	,,	१७१३

६६३४. गुटका सं० ३६ । पत्र सं० ६८ । आ० ८×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

सूरत की बारहखड़ी	सूरत	हिन्दी	पत्र १–१३
आदित्यवार कथा	भाऊ	,,	१३–१६
पद	भूधरदास, जगतराम	,,	१६–१७
चौबीस महाराज पूजा	वृन्दावन	,,	१७६८

प्राप्ति स्थान—दि० जैन छोटा मन्दिर, बयाना

६६३५. गुटका सं० १ । पत्रसं० १६६ । आ० ५½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १५१ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

बारहखड़ी	सूरत	हिन्दी	१२
नवमंगल	—	,,	३२
रविव्रत कथा	भाऊ	,,	१७
बाईस परीषह वर्णन	—	,,	—
लावणी	जिनदास	,,	१३५
पद	—	,,	—
	लाभ नहिं लीया जिनन्द भजिकै		१३६
,,	,,	,,	
	अब अजब रसीलो नेम	,,	
लावणी	रूडागुरुजी	,,	१४०
		र०काल १८७४	
पद	खान मुहम्मद	,,	१४५

सोरठा करषा—

तोसौं कौन करिबो करैं काम भवथर हरैं ।
करत बीनती बलभद्र राजा ।
करत टंकार हुंकार बर बक्यो
तीन लोक भय चक्कत जाग्या ।
बांई कर अंगुली कृष्ण हिण्डोलियो
नेमनरनाथ राजाधिराजा ।।२।। तोसौं

स्वामी नग्र पुखवर भरयो मान दुर्जन गरयो
कंप [illegible] आज इन्द्र पाया ।
हिरण रोझ सारंग हरित्रास झडकत
फिरैं स्वंघ गजराज बहु दुक्ख पाया ।।३।।
संतनौ दंतनौ अजरतो अमरतो
सुद्धतो बुद्धतो ज्ञानवंता ।
माई सिवादेवी के उदर उपन्नियो
चित्त चिन्तामनी रतनवंता ।।४।। तोसौं
स्वामी जिन नाग सिज्यादली नेम जिन
अति बली बाई कर अंगुली धनुष साजा ।
ब्रह्म ब्रह्मापुरी इन्द्र आसन टरी
कंपियो सेष जब संख बाजा ।।५।। तोसौं
छपन कोटि जादौ तुम मुकुट मनि
तीन लोक तेरी करत सेवा
खानमहमुद करत है बीनती
राखिले शरण देवाधिदेवा ।।६।।
तोसौं कौन करबो करैं काम भय थर हरैं
करत बीनती बलभद्र राजा ।।७।।

इनके अतिरिक्त जगतराम, भूधरदास, द्यानतराय, सुखानन्द आदि के पदों का संग्रह है। भूधरदास का जैन शतक भी है।

६६३६. गुटका सं० २ । पत्र सं० २७४ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८५० भादवा सुदी ६ । अपूर्ण । वेष्टन सं० १५० ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

शार्ङ्गधर टीका	हिन्दी	ले० काल सं० १८५० भादवा सुदी ६ । अपूर्ण ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है । बैर में प्रतिलिपि हुई थी ।

अब्जद प्रश्नावली	—	हिन्दी	पूर्ण

अजीर्ण मंजरी	वैद्य पद्मनाभ	हिन्दी	,,
			ले० काल सं० १८५१
वैद्य वल्लभ	लोलिम्बराज	संस्कृत	,,
			ले० काल सं० १८५०

६६३७. गुटका सं० ३ । पत्र सं० १३३ । आ० १०$\frac{1}{4}$×७ इञ्च । **भाषा**-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४६ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

चौबीस महाराज पूजा	रामचन्द्र	हिन्दी पद्य	पत्र सं १७
शास्त्र पूजा	ब्र० जिनदास	,,	२३
गुरु पूजा	,,	,,	२३
बीस तीर्थंकर जखडी	हर्षकीर्ति	,,	२८
पंचमेरु पूजा	सुखानन्द	,,	४६
दोषन क्रिया कोष	ब्र० गुलाल	,,	११८
		र० काल सं० १६६५ कार्तिक सुदी ३	
बारहखडी	सूरत	हिन्दी	
शनिश्चर की कथा	—	हिन्दी गद्य	१२१
कलियुग की कथा	पांडे केशव	,,पद्य	१२१

विशेष—पांडे केशवदास ने ज्ञान भूषण की प्रेरणा से रचना की थी ।

ओंकार की चौपई	भैया भगवतीदास	हिन्दी पद्य	१४०
आदिनाथ स्तुति	विनोदी लाल	,,	१४१
राजुल बारहमासा	,,	,,	,,
राजुल पच्चीसी	,,	,,	,,
रेखता	,,	,,	,,
रविव्रत कथा	सुरेन्द्र कीर्ति	,,	१७७
		र० काल सं० १७४४	

६६३८. गुटका सं० ४ । पत्र सं० ५० । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १११ ।

विशेष—पंच मंगल रूपचन्द के एवं तत्वार्थ सूत्र आदि पाठ हैं ।

६६३९. गुटका सं० ५ । पत्र सं० १०-६५ । आ० ५$\frac{1}{2}$×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११० ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

पद संग्रह	नवल, जगतराम	हिन्दी (पद्य)	पत्र १०-१४
जैन पच्चीसी	नवल	,,	१६

बारह भावना	नवल	,,	१८
आदित्यवार कथा	सुरेन्द्र कीर्ति	,,	२३
			र० काल सं० १७४४
बारहखडी	सूरत	,,	४०
राजुल पच्चीसी	लालचन्द विनोदीलाल	,,	४५
अक्षर बावनी	ज्ञानतराय	,,	४८
			(र० काल सं० १७५८)
नवमंगल	विनोदीलाल	,,	५६
पद	देवा ब्रह्म	..	६०
धर्म पच्चीसी	बनारसीदास	,,	६२
अठारह नाते की कथा	अचलकीर्ति	,,	६२
विनती	अखैमल	,,	६५

कौन जाने कल की खबर नहीं इह जग में पल की।
यह देह तेरी मसम होयसी चंदन चरची ॥
सतगुरु तैं सीखन मानी विनती अखैमल की

इनके अतिरिक्त देवा ब्रह्म, विनोदीलाल, सूरदास आदि के पदों का संग्रह है।

६६४०. गुटका सं० ६ । पत्रसं० ११२ । आ० ७½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

भक्तामर स्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामी	,,
पंच मंगल	रूपचन्द	हिन्दी
जिन सहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	संस्कृत
पद	माणक, रत्नकीर्ति	हिन्दी
लक्ष्मी स्तोत्र	पद्म प्रभ	संस्कृत
विनती	वृन्द	हिन्दी
चिंतामणि स्तोत्र	—	,,
ध्यान वर्णन	—	,,
बावनी	हरसुख	,, पद्य

६६४१. गुटका सं० ७ । पत्रसं० २२ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ ।

विशेष—नित्य पाठ संग्रह है ।

६६४२. गुटका सं० ८ । पत्र सं० ५२ । आ० ७×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६७ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

अठारह नाते की कथा	अचलकीर्ति	हिन्दी
आदित्यवार कथा	—	,,

इसके अतिरिक्त नित्य पूजा पाठ भी है ।

६६४३. गुटका सं० ९ । पत्र सं० १०८ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

जैन शतक	भूधरदास	हिन्दी	र०काल सं० १७८१
शील महात्म्य	वृन्द	,,	—

नित्य पूजा पाठ एवं नवल, बुधजन, भूधरदास आदि के पदों का संग्रह है ।

६६४४. गुटका सं० १० । पत्र सं० ४२ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठों का संग्रह है ।

६६४५. गुटका सं० ११ । पत्र सं० ६५ । आ० ६½×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५ ।

६६४६. गुटका सं० १२ । पत्र सं० ८ से ८८ । आ० ६½×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६३ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

आदित्यवार कथा	विनोदीलाल	हिन्दी (पद्य)
जखडी बीस विरहमान	हर्षकीर्ति	,,

विशेष—इनके अतिरिक्त नित्य नैमित्तिक पूजाएं भी हैं ।

६६४७. गुटका सं० १३ । पत्र सं० १०४ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८८ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पाठ संग्रह एवं जवाहरलाल कृत सम्मेद शिखर पूजा है ।

६६४८. गुटका सं० १४ । पत्र सं० ३०० । आ० ६½×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८५ ।

विशेष—बीच के पत्र सं० ७१–२३३ तक के नहीं हैं । मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

बारहखडी	सूरत	हिन्दी	
राजुल बारहमासा	विनोदीलाल	,,	पूर्ण

९९४९. गुटका सं० १५ । पत्रसं० ३७ । आ० ९½×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८४ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

नेमि नव मंगल	विनोदी लाल	हिन्दी (पद्य)	र० काल सं० १७४४ सावण सुदी ६ ।
बारह भावना	भगवतीदास	,,	—
रविव्रत कथा	सुरेन्द्रकीर्ति	,,	र० काल सं० १७४४ जेठ बुदी १० ।
बारहखडी	सूरत	,,	—

इनके अतिरिक्त नित्य पाठ और हैं ।

९९५०. गुटका सं० १६ । पत्रसं० १४० । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८६ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

पंच मंगल	आशाधर	संस्कृत	अर्हद् भक्ति में से है ।
सज्जनचित्त वल्लभ	मल्लिषेण	,,	हिन्दी अर्थ सहित पर अपूर्ण । ले०काल सं० १८९७
श्रावक प्रतिज्ञा	नेमराम सौगाणी	हिन्दी	पत्रसं० १८
द्रव्य संग्रह	नेमिचन्द्राचार्य	प्राकृत	१९
चौबीस ठाणा चर्चा	,,	,,	६०
प्रतिष्ठा विवरण	—	हिन्दी	७०
ऋषि मंडल स्तोत्र	—	संस्कृत	१००
वज्रपंजर स्तोत्र	—	,,	१०१

प्रारम्भ—परमेष्ठी नमस्कारं सारं स्वपदात्मकं ।
आत्मरक्षां करं वीरं वज्रपिंजर स्वराग्यहं ।।

योगसार	योगीन्द्र देव	अपभ्रंश	११४
आहार वर्णन	—	,,	१२२

इनके अतिरिक्त भक्तामर स्तोत्र, चौबीसी के नाम पट्टावलि, सूतक निर्णय, चौरासी गोत्र, सामायिक पाठ, बारह भावना, विषापहार, बाईस परिषह, एवं निर्वाण काण्ड आदि पाठों का संग्रह है ।

९९५१. गुटका सं० १७ । पत्रसं० ९ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं० × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५६ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

आदित्यवार कथा	—	हिन्दी
अन्य पाठ	—	—

६६५२. गुटका सं० १८ । पत्रसं० ७ । आ० ७×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५३ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

ज्ञानांकुश	—	संस्कृत	१-५
मृत्यु महोत्सव	—	,,	५-६
योग पाठ	—	,,	७

६६५३. गुटका सं० १६ । पत्रसं० २६ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १६०७ । अपूर्ण । वेष्टनसं० ५० ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

बुधजन सतसई	बुधजन	हिन्दी	अपूर्ण
जयपुर के जैन मन्दिर चैत्यालयों का वर्णन	—	,,	पूर्ण ले०काल सं० १६०७
अन्य पाठ संग्रह	—	,,	—

६६५४. गुटका सं० २० । पत्र सं० १२४ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४ ।

विशेष—निम्न पाठों संग्रह का है—

भक्तामर सवैया	—	हिन्दी	१६-४२
चरचा शतक	द्यानतराय	,,	४३-८१
जैन शतक	भूधरदास	,,	८१-१२४

६६५५. गुटका सं० २१ । पत्रसं० ७०-१०६ । आ० ५½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल सं० १६०१ । अपूर्ण । वेष्टनसं० ४२ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

जैन संध्या	—	संस्कृत	१-५ अपूर्ण
सोम प्रतिष्ठापन विधि	—	,,	—
चरचा शतक	द्यानतराय	हिन्दी	७७-१०६पूर्ण

६६५६. गुटका सं० २२ । पत्रसं० २६७ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं० १६०७ । पूर्ण । । वेष्टनसं० ४१ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

श्रावक प्रतिक्रमण	—	प्राकृत-हिन्दी	पत्र १-६६ ले०काल सं० १६०७
सामायिक पाठ	—	प्राकृत-संस्कृत	६७-१०४
तत्वार्थ सूत्र टीका	—	संस्कृत-हिन्दी	१०५-२०७

सामायिक पाठ भाषा	—	—	२०८-२३३
तत्वसार भाषा	द्यानतराय	हिन्दी	५-१५
पंच मंगल	आशाधर	—	१५
सज्जन चित्त वल्लभ	मल्लिषेण	संस्कृत	१६-२८
		हिन्दी अर्थ सहित है।	
व्रतसार	—	,,	२८-३०
लघुसामायिक	किशनदास	—	३१-३४

६६५७. **गुटका सं० २३**। पत्रसं० ११५। आ० ७×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ४०।

विशेष—निम्न पदों का संग्रह है—

स्वयंभू स्तोत्र	संस्कृत	समन्तभद्र
अष्ट पाहुड भाषा	हिन्दी	—

६६५८. **गुटका सं० २४**। पत्रसं० ३३-१४७। आ० ५½×३½ इञ्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ३५।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६६५९. **गुटका सं० २५**। पत्र सं० ८६। आ० ५½×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २६।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६६६०. **गुटका सं० २६**। पत्र सं० ८५। आ० ८×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। ले० काल सं० १८८.... ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २५।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

एकीभाव स्तोत्र	संस्कृत	वादिराज
देवसिद्ध पूजा	,,	—
आत्म प्रबोध	,,	—

६६६१. **गुटका सं० २७**। पत्रसं० ६५। आ० ६½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २४।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है।

एकीभाव स्तोत्र	वादिराज	संस्कृत
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामी	संस्कृत
जिनसहस्रनाम स्तोत्र	जिनसेनाचार्य	,,
अमरकोश	अमरसिंह	

६६६२. गुटका सं० २८ । पत्रसं० २० । आ० ६ × ३½ इञ्च । भाषा-संस्कृत प्राकृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२ ।

विशेष—मूलाचार आदि ग्रन्थों में से गाथाओं का संग्रह है ।

६६६३. गुटका सं० २६ । पत्रसं० १४० । आ० ६½ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

आदित्यवार कथा	भाऊ	हिन्दी	१–३०
संबोध पंचासिका	बुधजन	,,	१००–१०७

इसके अतिरिक्त पूजाओं, भक्तामर एवं कल्याणमन्दिर आदि स्तोत्र पाठों का संग्रह है ।

६६६४. गुटका सं० ३० । पत्रसं० ३८ । आ० ४½ × ३½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

पार्श्वनाथ स्तोत्र	—	संस्कृत	—
कल्याणमन्दिर स्तोत्र	कुमुदचन्द	,,	—
दर्शन	—	,,	—
एकीभाव स्तोत्र	वादिराज	,,	—

६६६५. गुटका सं० ३१ । पत्रसं० ७३ । आ० ६ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २० ।

विशेष गुटका जीर्ण है । सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६६६६. गुटका सं० ३२ । पत्रसं० ८२ । आ० ७½ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १६१०। पूर्ण । वेष्टन सं० १३ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

चेतनगारी	विनोदीलाल	हिन्दी	पत्र १–२
शिक्षा	मनोहरदास	,,	२–३
नेमिनाथ का बारहमासा	विनोदीलाल	,,	३–५
राजुल गीत	—	,,	५–७
शांतिनाथ स्तवन	—	,, (र०काल सं० १७४७)	७–८
भविष्यदत्त रास	ब्र० रायमल्ल	,, र०काल सं० १६३३	६–८२

प्राप्ति स्थान–दि० जैन मन्दिर बैर (बयाना)

६६६७. गुटका सं० १ । पत्रसं० १६४ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १७२० । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५६ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न–ब्र० रायमल्ल । हिन्दी । ले०काल सं० १७२० । आनन्दराम ने प्रतिलिपि की थी एवं कुशला गोदीका ने प्रतिलिपि कराई थी ।

श्रीपाल स्तुति	—	हिन्दी	—
रविवार कथा	भाऊ	,,	१७२०
जकड़ी	रूपचन्द	,,	—
बारह अनुप्रेक्षा	—	,,	१७२५
निमित्त उपादान	बनारसीदास	,,	
बीस तीर्थंकर जकड़ी	—	,,	—
चन्द्रप्रभ जकडी	खुशाल	,,	—
पद	बनारसीदास	,,	—

जाको मुख दरस तै भगत को नैनन को
थिरता बनि बढी चंचलता विनसी
मुद्रा देखि केवली की मुद्रा याद आवे
जेह जाके आगै इन्द्र की विभूति दीसी त्रणसी ।
जाको जस जपत प्रकास जग्यो हिरदानै
सोही सूधमती होई हुती सो मलिनसी ।
कहत बनारसी महिमा प्रगट जाकी
सोहै जिनकी सवीह विद्यमान जिनसी ॥

इनके अतिरिक्त नित्य पूजा पाठ और है ।

६६६८. गुटका सं० २ । पत्रसं० १०१ । भाषा-हिन्दी (पद्य) । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५ ।

६६६९. गुटका सं० ३ । पद । दरगाह कवि । वेष्टन सं० ३६ ।

६६७०. गुटका सं० ४ । पत्र सं० २०२ । आ० ६×७ इञ्च । भाषा–संस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं० १८१३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

षोडषकारण पूजा	सुमतिसागर	संस्कृत	पत्र १८–२८
सूर्यमंडलोद्यापन	ब्र० जयसागर	,,	२९–३७
ऋषिमंडल पूजा	—	,,	३७–५५

त्रिशच्चतुर्विंशति पूजा	शुभचन्द्र	,,	५५-१०४
णमोकार पैंतीसी	सुमति सागर	,,	५५-११६
रत्नत्रय व्रतोद्यापन	अपूर्ण	,,	१२०-१३२
श्रुत स्कंध पूजा	—	,,	१३२-१३५
भक्तामर स्तोत्र पूजा	—	,,	१३५-१४६
गणधर वलय पूजा	शुभचन्द्र	,,	१४१-१४६
पंच परमेष्ठी पूजा	यशोनंदी	संस्कृत	१५०-१८५
पंच कल्याणक पूजा	—	,,	१८६-२०२

६६७१. गुटका सं० ५ । पत्रसं० १७६ । आ० ७×५ इञ्च । **भाषा** हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३१ ।

६६७२. गुटका सं० ६ । पत्र सं० १६५ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३५ ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र पाठों का संग्रह है ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा (भरतपुर)

६६७३. गुटका सं० १ । पत्रसं० १२० । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११२ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

आदित्यवार कथा, तेरह काठिया, पच्चीसी ।

६६७४. गुटका सं० २ । पत्र सं० १७० । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी। ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११३ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

६६७५. गुटका सं० ३ । पत्र सं० १०८ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११० ।

विशेष—स्फुट पाठों का संग्रह है ।

६६७६. गुटका ४ । पत्रसं० १०८ । आ० ७×५ इञ्च । **भाषा**-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १११ ।

विशेष—पूजा संग्रह है ।

६६७७. गुटका सं० ५ । पत्र सं० ७७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत-हिन्दी ।ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०८ ।

विशेष—गुणस्थान पीठिका दी हुई है ।

६६७८. गुटका सं० ६ । पत्र सं० २१० । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत-हिन्दी । ले०काल पूर्ण । वेष्टन सं० १०६ ।

विशेष—स्फुट पूजा पाठों का संग्रह है ।

६६७६. गुटका सं० ७ । पत्रसं० २१० । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

सम्मेदशिखर पूजा	जवाहरलाल	हिन्दी
चौबीसी नाम	—	,,
आदित्यवार कथा	भाऊ	,,
नित्य पाठ संग्रह	—	,,

६६८०. गुटका सं० ८ । पत्रसं० ८७ । आ० ७×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

नित्य पाठ संग्रह, आदित्यवार कथा (भाऊ) परमज्योति स्तोत्र आदि ।

६६८१. गुटका सं० ६ । पत्र सं० १६ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८५ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६६८२. गुटका सं० १० । पत्र सं० १८० । आ० ७½×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

१. तत्वार्थ सूत्र हिन्दी टीका सहित ।
२ ज्ञानानन्द श्रावकाचार ।
३. निर्वाण काण्ड आदि ।

६६८३. गुटका सं० ११ । पत्र सं० ६-१६ । आ० ७×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७२ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६६८४. गुटका सं० १२ । पत्रसं० १३२ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७३ ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह है ।

६६८५. गुटका सं० १३ । पत्र सं० ६० । आ० १०×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं० १६८६ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६६ ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ, तत्वार्थसूत्र, भक्तामर स्तोत्र, आदि का संग्रह है । सूरत की बारहखड़ी भी है ।

६६८६. गुटका सं० १४ । पत्र सं० ६-१६ । आ० ७×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७० ।

विशेष—बारहमासा वर्णन है ।

९९८७. **गुटका सं० १५** । पत्रसं० १०० । आ० ७×६½ इञ्च । **भाषा**–हिन्दी । ले०काल सं० १९०३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

लघु ज्ञाणवय नीतिशास्त्र भाषा	काशीराम	हिन्दी	विशेष
			रे० काल सं० १७०५
कृष्ण रुक्मिणी विवाह	—	,,	२२० पद्य
दानलीला	—	,,	१९ पद्य

९९८८. **गुटका सं० १६** । पत्रसं० २०८ । आ० ८×६½ इञ्च । **भाषा**–हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ ।

विशेष—स्फुट पाठों का संग्रह है ।

९९८९. **गुटका सं० १७** । पत्रसं० ३५३ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २० ।

विशेष—पत्र २८ तक संस्कृत में रचनाएं हैं । फिर ३२५ पत्र तक सिद्धांतसार दीपक भाषा है । वह अपूर्ण है ।

९९९०. **गुटका सं० १८** । पत्रसं० २८० । आ० ८½×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४ ।

विशेष—विविध पूजाएं हैं ।

९९९१. **गुटका सं० १९** । पत्रसं० १९५ । आ० १२×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११ ।

विशेष—३४ पूजा पाठों का संग्रह है ।

प्राप्ति स्थान–दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा (भरतपुर)

९९९२. **गुटका सं० १** । पत्रसं० १९० । आ० ६×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४४ ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

९९९३. **गुटका सं० २** । पत्र सं० १५५ । आ० ७×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३५९ ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह तथा तत्वार्थ सूत्र आदि हैं ।

९९९४. **गुटका सं० ३** । पत्रसं० १५५ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३४६ ।

विशेष—नित्य काम आने वाले पाठों का संग्रह है ।

९९९५. **गुटका सं० ४** । पत्र सं० १२३–१८५ पुनः १–५९ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३४२ ।

विशेष—पूजा तथा अन्य पाठों का संग्रह है ।

९९९६. गुटका सं० ५ । पत्र सं० ४०२ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३४३ ।

विशेष—विविध पाठों स्तोत्रों तथा पूजाओं का संग्रह है ।

९९९७. गुटका सं० ६ । पत्रसं० २३५ । आ० ६ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले०काल सं० १७५६ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३३९ ।

विशेष—फुटकर पद्य हैं । भविष्यदत्तरास तथा पंचकल्याणक पाठ भी हैं । बीच में कई पत्र नहीं हैं ।

९९९८. गुटका सं० ७ । पत्र सं० ५३-१६२ । आ० ६ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३४० ।

विशेष—भविष्यदत्त रास तथा श्रीपाल रास हैं । प्रति जीर्ण है ।

९९९९. गुटका सं० ८ । पत्र सं० १४१ । आ० ६ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले०काल सं० १६४३ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३३८ ।

विशेष—हिन्दी के विविध पाठों का संग्रह है ।

आलोचना जयमाल	ब्र० जिनदास	हिन्दी	
नेमीश्वर रास	—	,,	

१००००. गुटका सं० ९ । पत्र सं० ३८५ । आ० ८$\frac{1}{2}$ × ७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३३१ ।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रह है—

पद	गुणचन्द्र	हिन्दी	—
बारव्रतउत	यशःकीर्ति	,,	—
सामुद्रिकशास्त्र	—	संस्कृत	—
गुरु शिष्य प्रश्नोत्तर	—	,,	—
मदन जुज्झ	बूचराज	हिन्दी	रचना काल सं० १५८९
जिन सहस्रनाम	जिनसेन	संस्कृत	—
पूजा संग्रह	—	,,	—
गणधर वलय पूजा	—	,,	—
ज्वालामालिनी स्तोत्र	—	,,	—
आराधनासार	देवसेन	,,	—
रविव्रत कथा	भाऊ	हिन्दी	—
श्रावकाचार	—	,,	—
धर्मचक्रपूजा	—	संस्कृत	—
तत्वार्थसूत्र	उमास्वामी	,,	—
ऋषि मंडल स्तोत्र	—	,,	—

चेतनपुद्गल धमाल	बूचराज	हिन्दी	—
पद	बल्ह (बूचराज)	,,	—
पद (राजमति)	बूचराज	,,	—
पूजा	—	,,	—
चूनडी	—	,,	—
सखियारास	कोल्हा	,,	—
नेमीश्वररास	ब्रह्मदीप	,,	—

विशेष—रचनाकार संबंधी पद्य निम्न प्रकार है—

रणथंभोर की तलहटी जी रणपुरु सावथ वासु।
नेमिनाथु को देहुरोजी बंभ दीप रचि रासु।
यह संसारु असारु किव होसै भवपारु ॥ हो स्वामी ॥२५॥

अवधू परीक्षा (अध्रुवानुप्रेक्षा)	—	हिन्दी	—
रोस की पाथडी	—	,,	—
जय जय स्वामी पाथडी	पल्हणु	,,	—
पंडित गुण प्रकाश	नल्ह	,,	—
चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न	अ० रायमल्ल	,,	—
मनकरहारास	अ० दीप	,,	—

विशेष—ब्रह्मदीप टोडा भीमसेन के रहने वाले थे।

खटोला	अ० धर्मदास	हिन्दी	—
हिंदोला	भैरवदास	,,	—
पंचेन्द्रियबेलि	ठक्कुरसी	,,	—
सुगंधदशमीव्रत कथा	मलयकीर्ति	,,	—
कथा संग्रह	जसकीर्ति	,,	—
परमात्मप्रकाश	योगीन्द्र	अपभ्रंश	—
पाशोकेवली	—		—
धन्यकुमार चरित्र	रइधू	अपभ्रंश	—

१०००१. गुटका सं० १०। पत्र सं० १०३। आ० ९$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ३३०।

विशेष—मुख्यतः निम्न पूजाओं का संग्रह है—

गणधरवलय पूजा, तीस चौबीसी पूजा,
धरणेन्द्र पद्मावती पूजा, योगीन्द्र पूजा,
सप्त ऋषि पूजा, जलयात्रा, व हवन विधि आदि हैं।

१०००२. गुटका सं० ११ । पत्र सं० ४६ । आ० ८×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३२८ ।

विशेष—ज्ञानतराय, भूधरदास, जगतराम आदि के पद हैं ।

१०००३. गुटका सं० १२ । पत्र सं० ४-८३ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३२६ ।

विशेष—हर्षकीर्ति, मनराम, द्यानत आदि की पूजायें तथा जिनपंञ्जर स्तोत्र आदि पाठों का संग्रह है ।

१०००४. गुटका सं० १३ । पत्रसं० २२६ । आ० ६½×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३०६ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह, भूपाल स्तोत्र, पंच परमेष्ठी पूजा, पंच कल्याणक पाठ (रूपचन्द कृत) भक्तामर स्तोत्र एवं तत्वार्थ सूत्र आदि का संग्रह है ।

१०००५. गुटका सं० १४ । पत्र सं० ११६ । आ० ७×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २८८ ।

१०००६. गुटकासं० १५ । पत्रसं० ४२ । आ० ७×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २८५ ।

विशेष—स्तोत्र एवं पद संग्रह है ।

१०००७. गुटका सं० १६ । पत्र सं० २१-२८६ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण ।वेष्टन सं० २८६ ।

विशेष—गुटका जीर्ण है । पूजाओं का संग्रह है ।

१०००८. गुटका सं० १७ । पत्र सं० २७३ । आ० ५½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २८७ ।

विशेष—बीच के अधिकांश पत्र नहीं हैं । हिन्दी पाठों का संग्रह है ।

१०००९. गुटका सं० १८ । पत्र सं० २६ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल सं० १७८३ ।पूर्ण । वेष्टन सं० २८३ ।

विशेष—आदित्यवार कथा (भाऊ कवि) तथा राजुलपच्चीसी (लाल विनोदी) एवं पूजा पाठ संग्रह है ।

१००१०. गुटका सं० १९ । पत्र सं० ९६ । आ० ८½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल सं० १७५३ पौष बुदी ६ । अपूर्ण वेष्टनसं० २८४ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र, कल्याण मन्दिर स्तोत्र, तत्वार्थ सूत्र हिन्दी टीका आदि का संग्रह है ।

१००११. गुटका सं० २० । पत्रसं० १२५ । आ० ७×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १७५८ । पूर्ण । वेष्टनसं० २७७ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

नेमिनाथ रास — ले०काल सं० १७५८

चंदन मलयागिरि कथा — ले०काल सं० १७५८

गुटका पढ़ने में नहीं आता । अक्षर घिट से गये हैं ।

१००१२. गुटका सं० २१ । पत्रसं० १२५ । आ० ७×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल सं० १७४६ । पूर्ण । वेष्टनसं० २७६ ।

विशेष—पदों का अच्छा संग्रह है । इसके अतिरिक्त हनुमत रास, श्रीपाल रास आदि पाठ भी हैं ।

१००१३. गुटका सं० २२ । पत्रसं० २४४ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २६१ ।

विशेष—विविध पाठों व पूजाओं का संग्रह है ।

१००१४. गुटका सं० २३ । पत्रसं० ३५४ । आ० ७×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २५८ ।

विशेष—सैद्धांतिक चर्चाएं हैं ।

१००१५. गुटका सं० २४ । पत्रसं० ३७ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत–हिन्दी । ले०काल सं० १७६४ । अपूर्ण । वेष्टनसं० २५७ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है । एकीभाव स्तोत्र एवं कल्याणमन्दिर स्तोत्र भाषा ।

१००१६. गुटका सं० २५ । पत्रसं० ४४ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २०२ ।

१००१७. गुटका सं० २६ । पत्रसं० ७० । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १७१ ।

विशेष—स्तोत्र आदि पाठों का संग्रह है ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डावालों का डीग (भरतपुर)

१००१८. गुटका सं० १ । पत्रसं० ३० । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २३ । पूजा पाठ हैं ।

१००१९. गुटका सं० २ । पत्रसं० १३३ । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २७ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

१००२०. गुटका सं० ३ । पत्रसं० ७७ । भाषा–संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २८ ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र एवं पूजा आदि हैं ।

१००२१. गुटका सं० ४ । पत्रसं० २४ । भाषा–हिन्दी संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २६ ।

विशेष—पूजा संग्रह है ।

१००२२. गुटका सं० ५ । पत्रसं० १८६ से २१३ । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० सं० ३१ ।

विशेष—अध्यात्म बत्तीसी, अक्षर बावनी आदि हैं ।

१००२३. **गुटका सं० ६** । पत्र सं० १८२ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन-सं० ३५ ।

विशेष—सम्बोध अक्षर बावनी, धर्म पच्चीसी तथा धर्मविलास द्यानतराय कृत हैं एवं तत्वसार भाषा है ।

१००२४. **गुटका सं० ७** । पत्रसं० ४० से १०३ । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८०७ । अपूर्ण । वेष्टन सं० २७ ।

विशेष—पूजा संग्रह है ।

१००२५. **गुटका सं० ८** । पत्रसं० २से ११४ ।भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३८ ।

विशेष—बख्तराम, जगराम आदि के पदों का संग्रह है ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन बड़ा पंचायती मन्दिर डीग

१००२६. **गुटका सं० १** । पत्रसं० १०३ । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २९ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

१००२७. **गुटका सं० २** । पत्रसं० २६१ । भाषा–हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३० ।

विशेष—पूजा पाठ है ।

१००२८. **गुटका सं० ३** । पत्रसं० १८० । भाषा–हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २६ ।

विशेष—प्रति जीर्ण है, नाममाला, पूजा पाठ आदि का संग्रह है ।

१००२९. **गुटका सं० ४** । पत्रसं० ११९ ।भाषा--हिन्दी । ले० कालX । अपूर्ण । वेष्टनसं० २७ ।

विशेष—धर्म विलास में से पद लिखे हुए हैं ।

१००३०. **गुटका सं० ५** । पत्रसं० ६० । भाषा--संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २८ ।

विशेष—जिन सहस्रनाम, प्रतिष्ठा सारोद्धार आदि के पाठ है ।

१००३१. **गुटका सं० ६** । पत्र सं० २४७ । भाषा--हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १४ ।

विशेष—बनारसी विलास, समयसार नाटक तथा पूजा पाठ आदि का संग्रह है ।

१००३२. **गुटका सं० ७** । पत्र सं० १२० । भाषा–हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १५ ।

विशेष—पूजा पाठ हैं ।

१००३३. गुटका सं० ८ । पत्र सं० १७४ । भाषा-अपभ्रंश-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २५ ।

विशेष—कथा तथा पूजा पाठ संग्रह है ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर चेतनदास दीवान, पुरानी डीग

१००३४. गुटका सं० १ । पत्रसं० ७२ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण वेष्टन सं० १७ ।

विशेष—चौबीस तीर्थंकर पूजा तथा भक्तामर स्तोत्र मंत्र सहित है ।

१००३५. गुटका सं० २ । पत्रसं० १६६ । आ० ८½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १७५७ वैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६ ।

विशेष—श्रीपाल चरित्र भाषा (परिमल्ल) सोलह क्रिया, त्रिलोकसार आदि रचनाएं हैं ।

१००३६. गुटका सं० ३ । पत्रसं० २५ । आ० ११×७½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण । वेष्टन सं० ४४ ।

विशेष—[illegible] सूत्र एवं रोमनन्द पूजा पाठ संग्रह है ।

१००३७. गुटका सं० ४ । पत्र सं० ३६ । आ० १०½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६ ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

१००३८. गुटका सं० ५ । पत्रसं० ४२ । आ० ६½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८५८ चैत्र बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४८ ।

विशेष—सूहरी रामदास
विनती ,,
पद संग्रह —

१००३९. गुटका सं० ६ । पत्रसं० २४५ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४९ ।

विशेष—समयसार नाटक, बनारसी विलास तथा मोह विवेक युद्ध आदि पाठ हैं ।

१००४०. गुटका सं० ७ । पत्रसं० १३४ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५१ ।

विशेष—जगतराम के पदों का संग्रह है । अन्त में भक्तामर स्तोत्र भाषा तथा पंच मंगल पाठ हैं ।

१००४१. गुटका सं० ८ । पत्रसं० ६० । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १६०० । अपूर्ण । वेष्टनसं० ५२ ।

विशेष—ज्योतिष सम्बन्धी पद्य हैं ।

१००४२. गुटका सं० ९ । पत्रसं० ४४ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ५३ ।

विशेष—भर्तृहरि शतक तथा अन्य पाठ हैं लेकिन अपूर्ण हैं । २२ से आगे के पत्र नहीं हैं । आगे शृंगार मंजरी सवाई प्रतापसिंह देव विरचित है जिससे कुल १०१ पद्य हैं तथा पूर्ण है ।

१००४३. गुटका सं० १० । पत्रसं० ६० । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४ ।

विशेष—गुटका नवीन है । हिन्दी पदों का संग्रह है ।

१००४४. गुटका सं० ११ । पत्रसं० २२-५४ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ५५ ।

विशेष—जैन शतक एवं भक्तामर स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

१००४५. गुटका सं० १२ । पत्र सं० ६-५४ । आ० ७×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५६ ।

विशेष—लक्ष्मी स्तोत्र, ऋषिमंडल, जिनपंजर आदि स्तोत्रों का संग्रह है ।

१००४६. गुटका सं० १३ । पत्र सं० ६५ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८२३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७ ।

विशेष—चेतन कर्म चरित्र (भगवतीदास) पद-जिनलाभ सूरि, दादाजी स्तवन, पार्श्वनाथ स्तवन आदि विभिन्न कवियों के पाठ हैं ।

१००४७. गुटका सं० १४ । पत्रसं० २३२ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५८ ।

विशेष—षोडश कारण, तीन चौबीसी, षोडश कारण मंडल पूजा, दशलक्षण पूजा-सहस्रनाम आदि का संग्रह है ।

१००४८. गुटका सं० १५ । पत्रसं० ५१ । आ० ७×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५९ ।

विशेष—हिन्दी के विविध पाठों का संग्रह है ।

१००४९. गुटका सं० १६ । पत्रसं० ६० । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६० ।

विशेष—पंच स्तोत्र, तत्वार्थ सूत्र, सिद्ध पूजा, षोडशकारण तथा दशलक्षण पूजा का संग्रह है ।

१००५०. गुटका सं० १७ । पत्रसं० ४४ । आ० ७½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१ ।

विशेष—सामान्य हिन्दी पदों का संग्रह है ।

१००५१. गुटका सं० १८ । पत्र सं० १४४ । आ० ८×५ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२ ।

विशेष—पूजा संग्रह, समाधुक, बारहमासा, नेमिनाथ का ब्याहला, संवत्सर फल, पाशा केवली पाठों का संग्रह है ।

१००५२. गुटका सं० १६ । पत्रसं० ४६ । आ० ७×७ इंच । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८२४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३ ।

१. परमात्म विधि	×	६५ पद्य
२. पदस्थ ध्यान लक्षण	×	७४ पद्य
३. बारह भावना	—	
४. दोहा पाहुड	योगीन्द्रदेव	

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है । सेवाराम पाटनी ने कुम्हेर में प्रतिलिपि की थी ।

१००५३. गुटका सं० २० । पत्रसं० २० । आ० ७×५ इंच । भाषा—संस्कृत—हिन्दी । ले०काल सं० १८८३ पौष सुदी ११ । । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

भक्तामर स्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत
जम्बूस्वामी पूजा	—	हिन्दी
प्राणीडा गीत	—	,,
मंगल प्रभाती	विनोदीलाल	,,

१००५४. गुटका सं० २१ । पत्रसं० ८४ । आ० ६×४½ इंच भाषा—हिन्दी । ले०काल सं० १७६७ पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न प्रकार संग्रह है—

फुटकर सवैया	—	हिन्दी
सिद्धांत गुण चौबीसी	कल्याणदास	,,
कल्याण मन्दिर भाषा	बनारसीदास	,,
बारहखड़ी	—	,,
कालीकवच	—	,,
विनती नेमिकुमार	भूधरदास	,,
पद नेमिकुमार	हूंगरसीदास	,,

१००५५. गुटका सं० २२ । पत्र सं० ७६ । आ० ६½×४½ इंच । भाषा—हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७७ ।

विशेष—पूजा पाठ, जिनदास कृत जोगीरास, विषापहार स्तोत्र, भानुकीर्ति कृत रविव्रत कथा (र० काल सं० १६८७) क्षेत्रपाल पूजा संस्कृत एवं सुमति कुमति की जखड़ी विनोदीलाल की है ।

१००५६. गुटका सं० २३ । पत्रसं० २५१ । आ० ७½×५½ इंच । भाषा—हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६ ।

विशेष—करीब ७८ पाठों का संग्रह है । प्रारम्भ में ७२ सीखें दी हुई हैं । मुख्य पाठ निम्न हैं—

१. अठारह नाता—कमलकीर्ति । (२) घंटाकरण मंत्र । (३) मंगलाचरण-हीरानन्द । (४) गोरख चक्कर । (५) रोटतीज कथा (६) चेतनगारी (७) सास-बहू का झगड़ा-देवाब्रह्म । (८) सूरत की बारहखड़ी आदि ।

१००५७. गुटका सं० ४ । पत्रसं० ९० । आ० ८ × ६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं० १८८७ माह सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८० ।

विशेष—गुणस्थान चर्चा तत्वार्थ सूत्र हिन्दी अर्थ (अपूर्ण) सहित है ।

पं० जयचन्द जी छाबड़ा ने प्रतिलिपि की थी ।

१००५८. गुटका सं० २५ । पत्रसं० १७० । आ० ७½ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १७८५ द्वि० बैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८५ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१. श्रेपन क्रिया कोश-किशनसिंह । ले०काल सं० १७८५ । पूर्ण । १६२ पत्र तक ।

२. ८४ आसादन दोष-हिन्दी ।

१००५९. गुटका सं० २६ । पत्र सं० ९२ । आ० ८½ × ६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८९ ।

१. रत्नकरण्ड श्रावचार भाषा	×	पत्र १५ तक । र०काल सं० १७७० फागुण बुदी २ ।
२. समाधि तंत्र भाषा	×	पत्र २८ तक । र०काल सं० १७७० चैत्र बुदी ८ ११२ पद्य है ।
३. रयणसार भाषा	×	पत्र ३५ तक । र०काल सं० १७६८
४. उपदेश रत्नमाला	×	पत्र ४३ तक । र०काल सं० १७०२ चैत सुदी १४
५. दर्शनसार	×	पत्र ४६ तक । र०काल सं० १७७२
६. दर्शन शुद्धि प्रकाश	×	पत्र ४९ तक ।
७. अष्टकर्म बंध विधान	×	प ५९ तक ।
८. विवेक चौवीसी	×	पत्र ६२ तक । र०काल सं० १७६६ ।
९. पंच नमस्कार स्तोत्र भाषा	×	पत्र ६३ तक ।
१०. दर्शन स्तोत्र भाषा	रामचन्द्र	
११. शुभतवादी जयाष्टक	—	६६
१२. चौरासी आसादना	×	६७
१३. बत्तीस दोष सामायिक	×	,,
१४. जिन पूजा प्रतिक्रमण	×	,,
१५. पूजा लक्षण	×	,,
१६. कषायजय भावना	×	६७-७२ तक
१७. वैराग्य बारहमासा प्रश्नोत्तर चोपई	×	७५ ,,
१८. जयमाल	×	७९ ,,
१९. परमार्थ विंशतिका	×	८१
२०. कलिकाल पंचासिका	×	८३
२१. फुटकर वचनिका एवं कवित्त	×	९२

१००६०. गुटका सं० २७ । पत्रसं० १०६ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१ ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह है ।

१००६१. गुटका सं० २८ । पत्रसं० ६२ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३ ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र, पूजा पाठ संग्रह, लक्ष्मी स्तोत्र एवं पदों का संग्रह है ।

१००६२. गुटका सं० २९ । पत्रसं० ७० । आ० ७×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८६० । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६४ ।

विशेष—सैद्धांतिक चर्चा, कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य वंदना, बारह भावना, त्रेपन भाव एवं औषधियों के नुसखे हैं ।

१००६३. गुटका सं० ३० । पत्र सं० २३२ । आ० ७½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

चतुर्विंशति पूजा, भक्तामर, सहस्रनाम, राजुल पच्चीसी, ज्ञान पच्चीसी, पार्श्वनाथ पूजा, अनंत व्रत कथा, सुवा बत्तीसी, ज्ञान पच्चीसी एवं पद (हरचन्द) हैं ।

१००६४. गुटका सं० ३१ । पत्रसं० ३८ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ ।

विशेष—

१. रविव्रत कथा	सुरेन्द्र कीर्ति	र०काल सं० १७०४ ।
२. पद	ब्रह्म कपूर	प्रभुजी थांकी मूरत मनडो मोहियो ।

१००६५. गुटका सं० ३२ । पत्र सं० ३२१ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

१. तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामी ।	संस्कृत ।
२. भक्तामर स्तोत्र	मानतुंग ।	,,
३. भक्तामर पूजा	विश्वभूषण ।	,,

श्रीकाष्ठसंघे मुनि राम सेनो
नंदी तटाख्यो गुरु विश्वसेन ।
तत्पट्टधारी जनसौख्यकारी
विद्याविभूषो मुनिराय बभूव ।
तत्पादपद्मार्चनशुद्धभानुः
श्रीभूषणे वाग्विगजेन्द्रसिंह ।
भट्टारकाधीश्वर सेव्यमाने
दिल्लीश्वरैणार्पितराजमान्यः ॥

तस्यास्ति शिष्यो व्रतमारधार
ज्ञानाब्धि नाम्ना जिनसेवको य ।
तेनैं नदर्थ्य प्रपूर्वपूजा भक्तामरस्यात्मज विशुद्ध जैवैः ॥
इति भक्तामरस्तोत्रस्य पूजा पुन्य भवार्द्धनो ।

१००६६. गुटका सं० ३३ । पत्र सं० ३५६ । आ० ६½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं० १८३७ वैशाख सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०० ।

विशेष—निम्न संग्रह है—

व्रत विवरण । प्रतिक्रमण । दश भक्ति । तत्वार्थसूत्र । वृहत् प्रतिक्रमण । पंच स्तोत्र । गर्भ-एकार स्तोत्र-देवनन्दि । स्वप्नावली-वीरसेन । जिनसहस्रनाम-जिनसेन । रविव्रत कथा-भाऊ ।

१००६७. गुटका सं० ३४ । पत्र सं० २०० । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत, हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०१ ।

विशेष—६० पाठों एवं पदों का संग्रह है । प्रारम्भ के ४ पत्र तक पाठों की सूची है ।

मुख्य पाठ ये हैं—चेतन जखडी बाई मेघश्री जखडी-कविदास । रोगापहार स्तोत्र मनराम । जखडी साहण लूवरी वर्णन ।

अवका-मनरामा जन्म-पत्रिका खुशालचन्द की पत्र १५७ स्वति श्री गणेश कुल देव्या प्रसादात् ।

जननि जन्म सौख्यानां वर्द्धनी कुलसंपदा ।
पदवी पूर्वपुन्यानां लिख्यते जन्म पत्रिका ॥

अथ शुभ संवत्सरेस्मिन श्री नृपति विक्रमादित्य राज्ये संवत् १७५६ वर्षे शाके १६२१ प्रवर्तमाने महामांगल्यप्रदुत्तमासोत्तममासे पौषमासे शुभ शुक्लपक्षे सूर्य उत्तरायणे हेमऋतौ पुण्यस्तिथौ एकादशी शुक्रवारे घटी ४० भरणीनक्षत्रे घटी·····उमाभादेश संवादे आदौ विंशोत्तरी श्री भृगु दशा मध्ये जन्म गौरी जात के अष्टोत्तरी श्री शुक्र दसामध्ये जन्म सनि संध्या सनि पाचके, माता पिता आनन्दकारी आत्मा दोष विवर्जितं संवने अर्क गतांस दिन २२ । भोग्यांस दिन दिन प्रमाण घटी २६ । रात्रिप्रमाण घटी २४ । अहो रात्रि प्रमाण घटी ६० । सांगानेरि वास्तव्य साहू जी श्री रामचन्द बैनाडा गोत्रे तत्पुत्र चिरंजीव दयाराम ग्रहे भार्या । पुत्र जन्म मास ८ वर्ष ८ मास १२ वर्ष १२ वर्ष ६ वर्ष ६ वर्ष १३ शुभं भवत् । कष्टजयधर्म करणं । कांता नवग्रहा वस्त्र स्वर देवहीणी । दालिद्र दुख दाइंड मलई प्रपीपिते सकल लोक विरुद्धि वर्द्धी केमद गुणा पार्थव वंस लोपी ॥१॥

प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली

१००६८ गुटका सं० १ । पत्रसं० १४८ । आ० ७½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं० १८१४ । भादों सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० २५ ।

विशेष—नित्य एवं नैमित्तिक पूजाओं का संग्रह है ।

१००६९. गुटका सं० २ । पत्रसं० १२४ । आ० १०×७½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २६ ।

विशेष—पूजा स्तोत्र, पाठ एवं पदों का संग्रह है ।

१००७०. **गुटका सं० ३** । पत्र सं० ७८ । आ० ४$\frac{1}{2}$×६ इन्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७८ ।

विशेष—पद विनती आदि हैं ।

१००७१. **गुटका सं० ४** । पत्रसं० ७४ । आ० ४$\frac{1}{2}$×३$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८२ ।

विशेष—जिनसेन कृत सहस्रनाम तथा रूपचंद कृत पंच मंगल पाठ हैं ।

१००७२. **गुटका सं० ५** । पत्र सं० ६४ । आ० ५×४ इन्च । भाषा–संस्कृत–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०६ ।

विशेष—सामान्य पूजा स्तोत्र एवं पाठ हैं ।

१००७३. **गुटका सं० ६** । पत्रसं० ६३ । आ० ५×४$\frac{3}{4}$ इंच । भाषा–हिन्दी । ले०काल सं० १८४२ कार्तिक बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०६ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

(१) सूरसगाई—सूरदास । पद्य सं० ५

(२) बारहमासा—मुरलीदास । १२

अगहन अगम अपार सखी री
या दुख मैं कासों कहूँ ।
एक एक जीय में एसी आवत है
जाय यमुना मैं बहुं ।।
बहू यमुना जरु पावक
सीस करवत सारि हों ।
पंथ निहारत ए दिन बीते
की लगि पंथ निहारि हों ।।
निहार पंथ अनाथ मैं भई
या दुख मैं कासों कहूँ ।
भनत मुरली दास जाय
यमुना मैं बहु ।।६।।

अन्तिम—

भनत गिरधर सुन हो देवा
गति मुकति कैसे पाइये ।
कोटि तीरथ किये को
फल बारामासा गाइये ।।

(३) पौवनी लीला—× ।

(४) कविल—नागरीदास । पत्रसं० १२० ।

(५) पंचाध्यायी—नंददास । पत्रसं० १२७ ।

इति श्री भागवतपुराणे दशमस्कंध राज क्रीडा वर्णन मो नाम पञ्चाध्याय प्रथम अध्याय पूर्ण । इसके बाद ८६ पद्य और हैं ।

अब हरनी मन हरनी सुन्दर प्रेम बीसतानी ।
नंददास कै कंठ बसो सदा मंगल करनी ।

संवत् १८४२ वर्षे पोथी दरबार री पोथी थी उतारी ।

१००७४. गुटका सं० ७ । पत्रसं० २२४ । आ० ९×६½ इञ्च । भाषा हिन्दी । ले०काल सं० १७९६ चैत सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनसं० १३९ ।

विशेष—धर्मविलास का संग्रह है ।

१००७५. गुटका सं० ८ । पत्रसं० ४४४ । आ० ९×१३ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं० १८९० ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४८ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक एवं मंडल विधान आदि का है ।

१००७६. गुटका सं० ९ । पत्रसं० ११७ । आ० ६½×९½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं० १८४८ भादों वदी ९ । पूर्ण । वेष्टनसं० १६८ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सौगाणियों का करौली

१००७७. गुटका सं० १ । पत्रसं० ३६ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ७३ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र आदि हैं ।

१००७८. गुटका सं० २ । पत्रसं० १२-१२८ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७४ ।

विशेष—सामान्य पूजाओं का संग्रह है ।

१००७९. गुटका सं० ३ । पत्रसं० १० से ६२ । आ० ६×९ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ७५ ।

१००८०. गुटका सं० ४ । पत्रसं० २४ से ११५ । आ० ९×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-प्राकृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ७६ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ संग्रह है ।

१००८१. गुटका सं० ५ । पत्रसं० ६ से ४५ । आ० ४½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७७ ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका—

इति सदैवच्छसावलिंगा की बात संपूरण ।

१००८२. गुटका सं० ६ । पत्रसं० ३ से १२६ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७८ ।

विशेष—पूजाओं के अतिरिक्त लघु रविव्रत कथा, राजुल पच्चीसी, नव मंगल और रविव्रत कथा (अपूर्ण) है ।

१००८३. गुटका सं० ७ । पत्र सं० ११ से ८० । आ० ६¾×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । ले०–काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७६ ।

विशेष—पूजा एवं पाठों का संग्रह है ।

१००८४. गुटका सं० ८ । पत्र सं० ६८ से ३०६ । आ० ६¾×६½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८० ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ हैं ।

१००८५. गुटका सं० ६ । पत्रसं० ४७ से १४१ । आ० ६½×४¾ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत। ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८१ ।

विशेष—पूजा, स्तोत्र एवं विनतियों का संग्रह है ।

१००८६. गुटका सं० १० । पत्रसं० २२ से १५५ । आ० ६½×४¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी ले०काल सं० १८४० चैत्र बुदी ८ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८२ ।

१००८७. गुटका सं० ११ । पत्र सं० ४–७७ । आ० ८¾×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत–प्राकृत । ले० काल ×। अपूर्ण । वेष्टन सं० ८३ ।

१००८८. गुटका सं० १२ । पत्रसं० ४१ । आ० ८×६¾ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८४ ।

१००८९. गुटका सं० १३ । पत्रसं० ५१ । आ० ८×६¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं० १७८५ आसोज बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८५ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. मोक्ष शास्त्र	उमास्वामी	संस्कृत	ले०काल सं०
		१७८५	
		हिन्दी	
२. रविवार कथा	×		
३. जम्बूस्वामी कथा	पाण्डे जिनदास	,,	र०काल सं०

१६४२ भादवा बुदी ५ । ले०काल सं० १८२८ ।

१००९०. गुटका सं० १५ । पत्रसं० २ से ३६८ । आ० ८×६¾ इंच । भाषा–संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८७ ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी बसवा

१००९१. गुटका सं० १ । पत्रसं० × । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

पद	दीपचन्द	हिन्दी

अब मोरी प्रभु सूं प्रीति लगी

अनेक कवियों के पदों का संग्रह है। रचना सुन्दर एवं उत्तम है।

१००९२. गुटका सं० २ । पत्र सं० × । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७२ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

मेघकुमार गीत	समयसुन्दर	हिन्दी
धन्ना ऋषि सिज्झाय	हर्षकीर्ति	,,
सुमति कुमति संवाद	विनोदीलाल	,,
पांचो गति की बेलि	हर्षकीर्ति	,,
	(र० काल सं० १६८३)	
माली रासो	जिनदास	,,

१००९३ गुटका सं० ३ । पत्रसं० २४२ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६ ।

विशेष—पूजा पाठों का संग्रह है । राजुल पच्चीसी तथा राजुल नेमजी का बारहसामा भी दिया है ।

१००९४. गुटका सं० ४ । पत्रसं० ३० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७४ ।

विशेष—बनारसी विलास में से कुछ संग्रह किया हुआ है ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा

१००९५. गुटका सं० १ । पत्रसं० १५० । आ० ५$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १३० ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठों का संग्रह । गुटका भीगा होने से अक्षर मिट गये हैं इसलिए अच्छी तरह से पढ़ने में नहीं आसकता है ।

१००९६. गुटका सं० २ । आ० ६$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १३१ ।

प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा

१००९७. गुटका सं० १ । पत्र सं० १८४ । आ० १२×७$\frac{1}{2}$ भाषा-हिन्दी-प्राकृत । ले० काल सं० १६९९ फागुण बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३९ ।

विशेष—निम्न पाठों संग्रह है —

ज्ञान पच्चीसी, पंचमंगल, द्रव्य संग्रह, त्रेपन क्रिया, ढाउसं गाथा, पापभेद, षट् पाहुड गाथा, उत्पत्ति महादेव नारायण (हिन्दी) श्रुत ज्ञान के भेद, छियालीसठाणु, षट् द्रव्यभेद, समयसार, दर्शनसार सुभाषितावलि, कर्मप्रकृति, गोम्मटसार गाथा ।

१००९८. **गुटका सं० २** । पत्रसं० २४९ । आ० ८×६½ इञ्च । **भाषा**-हिन्दी-संस्कृत । × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १४० ।

विशेष—पूजाओं के संग्रह के अतिरिक्त तत्त्वार्थसूत्र परमात्म प्रकाश, इष्ट छत्तीसी, शीलरास परमानन्द स्तोत्र, जोगीरासो, सज्जनचित्तवल्लभ तथा सुप्पय दोहा, आदि का संग्रह है । दो गुटकों को एक में सी रखा है ।

१००९९. **गुटका सं० १४** । पत्रसं० ३ से १०८ । आ० ८×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८६ ।

विशेष—पंच कल्याणक पूजा एवं सामायिक पाठ हैं ।

१०१००. **गुटका सं० ४** । पत्रसं० २२५ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-प्राकृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३८ ।

विशेष—गुणस्थान चर्चा है । गुटका जीर्ण है ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

१०१०१. **गुटका सं० १** । पत्रसं० १५६ । आ० ७½×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७५९ पोष बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन सं० १९२ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

समयसार	बनारसीदास	हिन्दी
सुदामा चरित्र	—	,,
संज्ञा प्रक्रिया	—	संस्कृत ।

१०१०२. **गुटका सं० २** । पत्रसं० १४८ । आ० ७×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३० ।

विशेष—मुख्यत: निम्न पाठों का संग्रह है—

समाधितन्त्र भाषा	—	पर्वत धर्मार्थी
द्रव्य संग्रह भाषा	—	(ले०काल सं० १७०० आषाढ सुदी १५ ।

जोधनेर में प्रतिलिपि हुई थी ।

१०१०३. **गुटका सं० ३** । पत्रसं० × । वेष्टनसं० १३१ ।

विषय—भीग जाने के कारण सभी अक्षर धुल गये हैं ।

१०१०४. **गुटका सं० ४** । भाषा-हिन्दी-। ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३३ ।

विशेष— फुटकर पद्यों में धर्मदास कृत धर्मोपदेश श्रावकाचार है ।

१०१०५. **गुटका सं० ५** । पत्रसं० ६४ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर

(अवशिष्ट)

१०१०६. गुटका सं० १। पत्रसं० १८८। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २०३।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

१०१०७. गुटका सं० २। पत्रसं० ६५। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २०४।

१०१०८. गुटका सं० ३। पत्रस० १३४। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। ले०काल सं० १९५० भादवा सुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० २०८।

विशेष—कोई उल्लेखनीय पाठ नहीं है।

१०१०९. गुटका सं० ४। पत्रसं० १४८। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २०९।

१०११०. गुटका सं० ५। पत्रसं० ६३-८४। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० १९४।

१०१११. गुटका सं० ६। पत्रसं० ३४। भाषा-संस्कृत। ले०काल सं० १९५२। पूर्ण। वेष्टन सं० १९५।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र भक्तामर स्तोत्र आदि पाठ है।

१०११२. गुटका सं० ७। पत्र सं० ८०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १९२१पौष सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन सं० २००।

विशेष—सूतक वर्णन, मृत्यु महोत्सव, गुणस्थान वर्णन, व्रतों का वर्णन, अर्थप्रकाशिका से लिया गया है। आदित्यवार की कथा भी है।

१०११३. गुटका सं० ८। पत्र सं० १४१। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २११।

विशेष—सम्यक्त्व के ६७ भेद, निर्वाण काण्ड, भक्तामर स्तोत्र सटीक (हर्षकीर्ति) नवमंगल, राजुल पच्चीसी (विनोदीलाल) सूरत की अठारह नाता, मोक्ष पैडी, पद संग्रह है।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर

१०११४. गुटका सं० १। पत्रसं० ७३। आ० ७×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २२१।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

१.	पंच बधावा (हर्षकीर्ति)	भाषा हिन्दी
२.	आदिनाथ मंगल (रूपचन्द)	,,
३.	खण्डेलवाल जाति उत्पत्ति	,,
४.	सरस्वती पूजा	,,
५.	कक्का मनराम	,,
६.	पद भूलो मन भ्रमरा भाई	

१०११५. गुटका सं० २ । पत्रसं० ८–१०२ । आ०६½×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२२ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

१. जिनस्तवन—गुणसागर	हिन्दी
२. बड़ा फक्का ।	,,
३. बारहमासा—तेतसी ।	,,
४. राजुल पच्चीसी—विनोदीलाल–लालचन्द ।	,,
५. विनती—दीपचन्द ।	,,
६. पद—हर्षकीर्ति	,,
७. शीलरथ—शुभचन्द (१५ पद्य) ।	,,
८. बटोई गीत ।	,,
९. पद-रूपचन्द ।	,,
१०. विनती—कनककीर्ति ।	संस्कृत
११. भक्तामर स्तोत्र ।	हिन्दी
१२. छोटा मंगल—रूपचन्द ।	,,
१३. नेमिनाथ की लहुरि	,,
१४. पद—सुन्दर ।	,,
१५. करम घटा—कनककीर्ति ।	,,
१६. पद-जीवां ते तो नर भव वादि गमायो—कनककीर्ति ।	,,
१७. संबोध पंचासिका—द्यानतराय ।	,,
१८. आरती संग्रह ।	,,
१९. पद—भूधर, द्यानतराय, भागचन्द ।	,,

२०. पद—मति चेतन खेलो फागुण हो ।
अहो तुम चेतन-जगजीवन ।
जिनराज चरण मन.....। भूधर ।

२१. चौबीस तीर्थंकर जैमाल—विनोदीलाल ।	हिन्दी
२२. निर्वाण काण्ड (भैय्या भगवतीदास)	
२३. बारह-अनुप्रेक्षा ।	
२४. बारह-भावना ।	
२५. प्राणीडा गीत ।	

२६ सं० १८७३ की सीताराम जी की, सं० १७९४ की फतेराम की, सं० १८०३ की बाई खुशमाला की—आदि—जन्म-पत्रियां भी हैं ।

मुनि मायाराम ने दोसा में वि० दीपचन्द की पुस्तक से प्रति की थी ।

१०११६. गुटका सं० ३ । पत्र सं० १५० । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२३ ।

विशेष—निम्न संग्रह है ।

१. पद—मनराम	हिन्दी
२. भक्तामर भाषा—हेमराज	,,
३. नाटक समयसार—बनारसीदास	,,
४. नेमीश्वर रास—ब्र० रायमल्ल सं० १६१५	,,
५. श्रीपाल स्तुति	,,
६. चिंतामणि पार्श्वनाथ	
७. पंचमगति वेलि—हर्षकीर्ति	

१०११७. गुटका सं० ४ । पत्र सं० १४१ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२४ ।

विशेष—निम्न प्रकार संग्रह है—

१. सीता चरित्र—रामचन्द्र । पत्र सं० ११६ तक हिन्दी पद्य । र० काल सं० १७१३ । ले० काल सं० १८४१ ।

मोतीराम अजमेरा मौजाद के ने सवाई जयपुर में महाराज प्रतापसिंह के शासन में लिखा था ।

२. जम्बू स्वामी कथा—पाण्डे जिनदास । र० काल सं० १६४२ । ले० काल सं० १८४५ । सं० १९९६ में लश्कर के मन्दिर में चढ़ाया था ।

१०११८. गुटका सं० ५ । पत्र सं० २९७ । आ० ८×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २२५ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

१. जिन सहस्रनाम भाषा
२. सिन्दूर प्रकरण
३. नाटक समयसार—भाषा—हिन्दी ।
४. स्फुट दोहा—भाषा हिन्दी । ७१ दोहे

१०११९. गुटका सं० ६ । पत्र सं० ५२ । आ० ६½×५½ इंच । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २२६ ।

विशेष—पट्टी पहाड़े तथा सीधावर्ण समाना आदि पाठों का संग्रह है ।

१०१२०. गुटका सं० ७ । पत्र सं० १६१ । आ० ७×५½ इञ्च । भाषा × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २२७ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है

पट्टावली—भलात्कार गण गुर्वावली है ।

पडिकम्मण, सामयिक, भक्ति पाठ, पञ्च स्तोत्र, बन्देतान जयमाल, यशोधर रास—जिणदास, आकाश पंचमी कथा-ब्रह्म जिनदास, अठाईस मूल गुण रास—जिणदास, पाणी गालण रास-ब्र० जिनदास।

प्रति प्राचीन है।

१०१२१. गुटका सं० ८। पत्र सं० २७। आ० ८½×१½ इञ्च। भाषा हिन्दी। ले० काल अपूर्ण। वेष्टन सं० २२८।

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह है।

१०१२२. गुटका सं० ९। पत्रसं० १४६। आ० १०×६ इञ्च। भाषा–संस्कृत। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २२९।

विशेष—विशेषतः पूजा पाठों का संग्रह है।

पद—जिन बादल चढ़ि आयो,
भया अपराध क्या किया—विजय कीर्ति
समझि नर जीवन थोरो—रूपचन्द। जगतराम आदि के पद भी हैं।
पूजा संग्रह, सात तत्व, ११ प्रतिमा विचार—त्रिलोक चन्द्र—हिन्दी (पद्य)
पार्श्वपुराण—भूधरदास।

१०१२३. गुटका सं० १०। पत्र सं० ३४९। आ० ७×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। ले० काल सं० १६९८। अपूर्ण। वेष्टन सं० २३०।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

पडिकोणा, श्रुत स्कन्ध—ब्रह्म हेम, भक्ति पाठ संग्रह, पट्टावलि, (मूल संघ) पंडित जयमाल, जसोधर जयमाल, सुदंसण की जयमाल, फुटकर जयमाल।

१०१२४. गुटका सं० ११। पत्रसं० १४३। आ० ५½×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ७७७।

विशेष—मुख्यतः निम्न कवियों के पदों का संग्रह है—

किशन गुलाब, हरखचन्द, जगतराम, राज, नवल जोधा, प्रभाती लालचन्द विनोदी लाल, रूपचन्द, सुरेन्द्रकीर्ति, नित्य पूजन, मंगल, जगतराम। नित्य पूजन भी है।

सम्मेदशिखर पच्चीसी—खेमकरण—र० काल सं० १८२६
रविवार कथा—भाऊ कवि
भक्तामर भाषा—हेमराज
सभी पद अनेक राग रागिनियों में हैं।

१०१२५. गुटका सं० १२। पत्र सं० ९९। आ० ६×४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ७७८।

विशेष—नित्य पाठ एवं स्तोत्रों के अतिरिक्त कुछ मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

स्तवन—ज्ञानभूषण
पद—भानुकीर्ति

पद—पं० नाथू	हिन्दी
पद—मनोहर	,,
पद—जिनहरष	,,
पद—विमलप्रभ	,,
बारहमासा की विनती—पांडे राज भुवन भूषण—	,,
पद—चन्द्रकीर्ति	,,
आरती संग्रह	,,

१०१२६ गुटका सं० १३ । पत्रसं० ६६ । आ० ८$\frac{1}{2}$ × २$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७७६ । गुटका प्राचीन है ।

विशेष—मुनीश्वर जयमाल—ब्र० जिणदास	हिन्दी
नन्दीश्वर जयमाल—सुमतिसागर	हिन्दी
चतुर्विंशति तीर्थंकर जयमाल	हिन्दी
गुरु स्तवन—नरेन्द्र कीर्ति	—
सामायिक पाठ	संस्कृत
सहस्रनाम—आशाधर	संस्कृत
नित्य नैमित्तिक पूजा	संस्कृत
रत्नत्रय विधि पूजा	

१०१२७. गुटका सं० १४ । पत्रसं० २६ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७८० ।

विशेष—निम्न संग्रह है—

पार्श्वनाथ स्तोत्र
आदित्यवार कथा (अपभ्रंश)
मानबावनी—मनोहर (इसका नाम संबोधन बावनी भी है)
सवैया बावनी—मन्ना साह
बावनी—डूंगरसी

१०१२८. गुटका सं० १५ । पत्र सं० १८४ । आ० ६×५$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७८१ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

सामायिक पाठ
भक्ति पाठ
तत्वार्थ सूत्र—आदि का संग्रह है ।

१०१२९. गुटका सं० १६ । पत्र सं० १७० । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७८२ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

मदन जुज्झ—बूचराज—र०काल १५८६ ।	हिन्दी
मात भावनी—मनोहर	,,
हनुमान कथा—ब्र० रायमल्ल र०काल १६१६ ।	,,
टंडाना गीत	,,
दशलक्षण जयमाल	,,
देवपूजा, गुरु पूजा—शास्त्र पूजा	,,
सिद्ध पूजा	,,
सोलह कारण पूजा	,,
कलिकुंड पूजा	,,
चिंतामणि पूजा जयमाल	,,
नेमीश्वर पूजा	,,
शांतिचक्र पूजा	,,
गणधर वलय पूजा	,,
सरस्वती पूजा	,,
शास्त्र पूजा	,,
गुरु पूजा	,,

१०१३०. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ४२ । आ० ६½×४½ इञ्च । वेष्टन सं० ७८३ ।

विशेष—मानमंजरी-नन्ददास । ले०काल सं० १८१६ द: जीवनराज पांड्या का ।

इसके आगे औषधियों के नुस्खे तथा बनारसीदास कृत सिन्दूर प्रकरण है ।

१०१३१. गुटका सं० १८ । पत्रसं० १०२ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी-संस्कृत । वेष्टन सं० ७८४ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ संग्रह है ।

१०१३२. गुटका सं० १९ । पत्र सं० १६-९६ । आ० ६×४½ इञ्च । वेष्टनसं० ७८५ ।

राजुल पच्चीसी	—	लालचन्द
पंच मंगल	—	रूपचन्द

पूजा एवं स्तोत्र

१०१३३. गुटका सं० २० । पत्र सं० ४-६७ । भाषा-हिन्दी-संग्रह । वेष्टन सं० ७८६ ।

बधाई—

विशेष—पद-सर्वसुख हरीकिशन, सेवग, जगजीवन, रामचन्द नवल, नेमकीर्ति, ज्ञानत, कर्म-चरित, १३ पद्य हैं ।

१०१३४. गुटका सं० २१ । पत्रसं० १२६ । आ० ५×६ ५च । भाषा-हिन्दी-संग्रह । वेष्टनसं० ७८७ ।

विशेष—नित्य पाठ संग्रह एवं विनती आदि है—

कल्याण मन्दिर भाषा
नेमजी की विनती

१०१३५. गुटका सं० २२ । पत्र सं० ६६ । आ० ६½×४½ इन्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । वेष्टन सं० ७८८ ।

कोकशास्त्र आनन्द अपूर्ण

१०१३६. गुटका सं० २३ । पत्र सं० १६ । आ० ६½×४½ इन्च । भाषा-हिन्दी । वेष्टन सं० ७८९ ।

विशेष—पूजा संग्रह है ।

१०१३७. गुटका सं० २४ । पत्रसं० ७४ । आ० ६×५ इन्च । वेष्टनसं० ७९० ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रहहै—

१. रविवार कथा
२. जोगीरासा — जिणदास
३. ज्ञान जकड़ी — जिनदास
४. उपदेश वेलि — पं० गोविन्द

पडित गोविंद प्रबल महोछव उपदेसी बेलीसार ।
आधर्म सचि ब्रह्म हेतु भणी कीधी जासि ने भकपार ।।

५. जिन गेह पूजा जयमाल ६ बाहुबलि वेलि — शान्तिदास
७. पद ब्रह्म राजपाल
८. तीर्थंकर माता-पिता नाम वर्णन हेमलु ३० पद, र० काल सं० १५४८

९. कवि परिचय—

हूं मतिहीन अयानो प्रक्षिरु कानो जोड़ि ।
जो यह पढ़इ पढ़ावइ भविजन लावइ खोड़ि ।।
कविता सुर कहायो नारी कवीश्वर पूतु ।
कानो मानु न जानो पंद्रहसय अड़तालो ।
वरसा सुगति सुआला सीतु नो असराला ।।
वस्त डारनी रूमप सोखा मलिहइ गाऊ ।
गोल पूर्व महाजनु हेमलु हइ तसु नाउ ।।
तिसकी माता देल्हा पिता नाउ जिनदास ।
जो यह कवि पढ स्यो कछु पुन्य को आणु ।।

१०. मुक्तावली गीत ११. आराधना प्रतिबोध सार दिगम्बर १२. राम सीता गीत-ब्रह्म श्री वर्द्धन
१३. द्वादशानु प्रेक्षा-अवधू १४. सरस्वती स्तुति-ज्ञानभूषण-हिन्दी

१५. कलिकुंड पूजा			
१६. मांगीतुंगी गीत	अभयचन्द सूरि	हिन्दी	४५ पद्य
१७. जंबू कुमार गीत	—		४५ पद्य
१८. रोहिणी गीत	श्रुतसागर	हिन्दी	

१०१३५. गुटका सं० २५। पत्र सं० ४–६८। आ० ६×६$\frac{1}{2}$ इंच। वेष्टन सं० ७६१।

१. शतक संवत्सरी—

विशेष—प्रारम्भ के ३ पत्र नहीं हैं। सं० १७०० से १७९९ तक १०० वर्ष का वर्षफल दिया गया है।

महात्मा सदानीदास ने लवाण में प्रतिलिपि की। प्रशस्ति निम्न प्रकार है—सं० १७८५ वर्षे शाके १६४० प्रवर्तमाने मिति आषाढ सुदी ६ वार गुरुवासरे सपूर्ण दिल्ली तखतपति साहु श्री महमदसाहि। आंबेर नगर महाराजा श्री सवाई जयसिंहजी लवाण ग्रामे महाराजाधिराज श्री बांका बहादुर श्री रणंदरामजी राज करंतां।

२. चितोड़ की गजल— कवि खेताल हिन्दी २०काल सं १७४८

प्रारम्भ के चार पद्य नहीं हैं।

खरतर जती कवि खेताक अखै भोजसू एसाक।
संवत् सतरासै अडताल, श्रावण मंगसिर साल॥
वदि पाख बारसी ते रीक कीन्हीं गजल पढियो ठीक।

कवि ने ५६ पद्यों में चित्तौड़गढ का वर्णन किया है। प्रारंभ के ३७ पद्य नहीं हैं।

रचनाएं ऐतिहासिक हैं।

३. शंकर स्तोत्र	शंकराचार्य	संस्कृत	
४. कर्म विपाक	सूर्यसिंह	अपूर्ण	अन्तिम २५ पद्य संस्कृत में हैं।

१०१३६. गुटका सं० २६। पत्र सं० ४१–१२८। आ० ६×५ इंच। **भाषा**-हिन्दी। वेष्टन सं० ७६२।

१. मनोरथ माला	—	साहु अचल
२. जिन धमाल.....		
३. धर्म रासा		
४. संबोध पंचासिका	प्राकृत	
५. साधु गीत	—	मनोहर
६. जकडी	—	रूपचन्द
७. पद	ब्रह्मदीप, देवगुन्दर, कबीरदास, बील्हो,	
८. धर्मतत्व सवैया	—	सुन्दर
९. षट्लेश्या वर्णन		(संस्कृत)
१०. ढाढसी गाथा	११	बीस विरहमान गाथा

१०१४०. गुटका सं० २७ । पत्रसं० २-२३ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७९३ ।

विशेष—गुटका प्राचीन है । भोज चरित्र है पर लेखक का नाम नहीं है) इसमें रतनसेन और पद्मावती की भी कथा है ।

१०१४१. गुटका सं० २८ । पत्रसं० ४-२४४ । आ० ६½ × ५इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७९४ ।

विशेष—मुख्यतः नित्य नैमित्तिक पाठ पूजा का संग्रह है । पत्र खुले हुए हैं ।

१०१४२. गुटका सं० २९ । पत्रसं० १५-११८ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण । वेष्टनसं० ७९५ ।

विशेष—भूधरदास, द्यानतराय व बुधजन आदि कवियों के पदों का संग्रह है ।

१०१४३. गुटका सं० ३० । पत्र सं० ६ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १८४९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७९६ ।

विशेष—लक्ष्मी स्तोत्र, शान्ति स्तोत्र आदि । देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य पं० नोनंदराम ने किशनपुरा में प्रतिलिपि की थी ।

१०१४४. गुटका सं० ३१ । पत्रसं० १६ । आ० ३½ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । पूर्ण । वेष्टन सं० ७९७ ।

विशेष—नित्य पाठ करने योग्य स्तोत्र पूजा एवं पाठों का संग्रह है ।

१०१४५. गुटका सं० ३२ । पत्रसं० ७८ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी-संस्कृत । पूर्ण । वेष्टनसं० ७९८ ।

विशेष—इसमें कछुवाहा राजाओं की वंशावली है महाराजा ईसरीसिंह जी तक १८७ पीढ़ी मिलाई है । आगे वंशावली की पूरी विगत भी दी है ।

१०१४६. गुटका सं० ३३ । पत्रसं० ३१ । आ० ८×६½ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । पूर्ण । वेष्टन सं० ७९९ ।

विशेष—नित्य पूजा पाठों का संग्रह है ।

१०१४७. गुटका सं० ३४ । पत्र सं० ४८ । आ० ४½ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । पूर्ण । वेष्टन सं० ८००।

विशेष—औषधियों के नुस्खे हैं तथा कुछ पद भी हैं ।

१०१४८. गुटका सं० ३५ । पत्रसं० ७० । आ० ५½ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । पूर्ण । वेष्टनसं० ८०१ ।

विशेष—पद स्तोत्र एवं अन्य पाठों का संग्रह हैं । गणेश स्तोत्र (१७९५ का लिपिकाल)

१०१४९. गुटका सं० ३६ । पत्रसं० ३०-६२ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । पूर्ण । वेष्टनसं० ८०२ ।

१. मुनीश्वरों की जयमाल			
२. पंचम गति वेलि	हिन्दी	हर्षकीर्ति	र० काल सं० १६८३
३. पद संग्रह	"	—	—

१०१५०. गुटका सं० ३७। पत्र सं० ८२ । आ० ५×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । पूर्ण । वेष्टन सं० ८०३ ।

१. पद संग्रह २ पूजा पाठ संग्रह
३. शनिश्चर की कथा-विक्रम ले०काल १८१६
४. सूर्य स्तुति-हिन्दी । ५१ पद्य । ले०काल १८१६

विशेष—हीरानन्द सौगाणी ने प्रतिलिपि की थी ।

५. नवकार मंत्र—लालचन्द—ले०काल १८१७
६. सुरज जी की रसोई ७ चौपई ८ कवित्त
९. सज्झाय १० पद

१०१५१. गुटका सं० ३८ । पत्रसं० ४१–८६ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । पूर्ण । वेष्टन सं० ८०४ ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह है ।

१०१५२. गुटका सं० ३९ । पत्रसं० २८ । आ० ८½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । पूर्ण । वेष्टन सं० ८०५ ।

विशेष—बाल सहेली शुक्रवार की तरफ से चढाई गई नित्य नियम पूजा की प्रति सं० १९७८

१०१५३. गुटका सं ४० । चतुर्विंशतिपूजा—जिनेश्वरदास । पत्रसं० ८७ । आ० ९×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १९५६ । पूर्ण । लिपिकाल १९९१ । वेष्टन सं० ८०६ ।

विशेष—(जिनेश्वरदास सुजानगढ के थे ।)

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

१०१५४. गुटका सं० १ । पत्रसं० ८८ । आ० ६½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण ।

१. पद संग्रह	×	पत्र १–४
२. विनती (अहो जगत गुरु)	भूधरदास	पत्र ४–५
३. पद संग्रह	—	पत्र ५–१०
४. सहेल्यो पद	सुन्दरदास	पत्र १०–११
५. पद संग्रह	—	पत्र १२–६२
६. स्वप्न बत्तीसी	भगौतीदास	पत्र ६२–६५

विशेष—३४ पद्य हैं ।

७. पद संग्रह	—	पत्र ६६–८८

विशेष—विभिन्न कवियों के पद हैं । पदों का अच्छा संग्रह है । पदों के साथ राग रागिनियों का नाम भी दिया है ।

१०१५५. गुटका सं० २ । पत्रसं० ११२ । आ० ५½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल ×। पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

१. जैन शतक	भूधरदास		पत्र १–२७ ।र०काल सं० १७८१
२. कवित्त छप्पय	×	हिन्दी	पत्र २८–३७
३. विषापहार स्तोत्र	अचलकीर्ति	,,	पत्र ३८–४२
४. पूजा पाठ	—	,,	४२–५२
५. कमलामती का सिज्झाय	—	,,	५२–५६
		३२ पद्य हैं । कथा है ।	
६. चौबीस दंडक	दौलतराम	हिन्दी	५७–६३
७. सिखरजी की चौपई	केशरीसिंह	हिन्दी	६४–६९
		४५ पद्य हैं ।	
८. एकसौ अष्टोत्तर नाम	—	हिन्दी	७०–७१
९. स्तुति ज्ञानतराय	—	हिन्दी	७२–७३
१०. पार्श्वनाथ स्तोत्र	ज्ञानतराय	हिन्दी	७३–७४
११. नेमिनाथ के १० भव	×	,,	७५–७७
१२. रिषभदेव जी लावणी	दीपविजय	,,	७७–८३

६२ पद्य हैं । र०काल सं० १८७४ फागुन सुदी १३ ।

विशेष—उदयपुर के भीवसिंह के शासन काल में लिखा था ।

१३. पद संग्रह	×	हिन्दी	पत्र ८४–९०
१४. सर्वैय्या	मनोहर	,,	९१–९६
१५. प्रतिमा बहोत्तरी	ज्ञानतराय	हिन्दी	९६–१०५
१६. नेमिनाथ का बारहमासा	विनोदीलाल	,,	१०६–११२

१०१५७. गुटका सं० ३ । पत्रसं० १८३ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ।

१. पंच मंगल–	रूपचन्द	हिन्दी	पत्र १–१४
२. बीस विरहमान पूजा	—	,,	पत्र १४–२१
३. राजुल पच्चीसी	—	,,	पत्र २२–३१
४. आकाश पंचमी कथा	ब्र० ज्ञान सागर	,,	पत्र ३१–४३
५. नेमिनाथ बारहमासा	विनोदीलाल	,,	पत्र ४४–५२
६. आदित्यवार कथा	भाऊ कवि	,,	पत्र ५३–७६
७. निर्वाण पूजा	—	,,	पत्र ७६–८०
८. निर्वाण काण्ड	—	,,	पत्र ८०–८३
९. देव पूजा विधान	—	,,	पत्र ८३–१०८
१०. पद संग्रह	—	,,	पत्र १०९–१८३

विशेष—विभिन्न कवियों के पद हैं । लिपि विकृत है इसलिये अपाठ्य है ।

१०१५८. गुटका सं० ४ । पत्र सं० १२२८ । आ० ५½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १९१७ जेठ बदी २ । पूर्ण ।

विशेष—इसमें ज्योतिष, आयुर्वेदिक एवं मंत्र शास्त्र सम्बन्धी साहित्य का उत्तम संग्रह है । लिपि बारीक है लेकिन स्पष्ट एवं सुपाठ्य है ।

पं० जीवनराम ने फतेहपुर में प्रतिलिपि की थी ।

१. नाडी परीक्षा—× । संस्कृत । पत्र १ अपूर्ण
२. गृह प्रवेश प्रकरण—× । हिन्दी । पत्र २ अपूर्ण
३. आयुर्वेदिक नुसखे—× । हिन्दी । पत्र ३-५
४. नेत्र रोग की दवा—× । हिन्दी । पत्र ६-८
५. सारणी सं० ६५-६९ की—× । हिन्दी । ८-१२
६. हयकर्म कला—× । संस्कृत । १३-१४
७. सारणी सं० १७८२ से १८१२ तक संस्कृत । १४-२१
८. निषेक—× । संस्कृत । २२-२४
९. निषेकोदाहरण—× । हिन्दी गद्य । २५-३४
१०. मास प्रवेश सारणी, पत्र ३५-५२ ।
११. ग्रहण वर्णन शक संवत् १७६२ से १८२१ तक पत्र ५९-६२ ।
१२. १८ प्रकार की लिपियों

के नाम..... हंस लिपि, भूतलिपि, यक्षलिपि, राक्षस लिपि, उड्डी लिपि, पाक्षनी लिपि, मालवी लिपि, नागरी लिपि, लाटी लिपि, पारसी लिपि, अनिमित्त लिपि, चाणदी, मौलवी, देशाविशेष ।

इनके अतिरिक्त—लाटी, चोटी, माहली, कानडी, गुर्जरी, सोरठी, मरहट्ठी, कौंकणी, खुरासणी, मागधी, सिंहली, हाडी, कीरी, हम्मीरी, परतीस, मसी, मालवी, महाजेवी और नाम गिनाये हैं ।

१३. पुरुष की ७२ कलायें, स्त्री की ६४ कला,
वृत्तादि भेद (हिन्दी) नुसखे—६४ पत्र तक
१४. सारिणी सं० १८७५ शक संवत् १७४० से १९२५ तक १६५ तक
१५. आयुर्वेदिक नुसखे—हिन्दी-पत्र १६६-२०६ तक एवं अनेकों प्रकार की विधियां ।
१६. ,, विभिन्न ग्रंथों से पत्र २०७-२४७ हिन्दी में ।
१७. ग्रहसिद्ध श्लोक—महादेव । संस्कृत । २४८-२४९
१८. उपकरणानि एवं घटिका वर्णन—अंकों में । २५०-३५५
१९. गोरखनाथ का जोग—× । हिन्दी । ३५६-३७७
२०. दिनमानकरण—× । हिन्दी । ३७८-३८२
२१. दिनमान एवं लग्न आदि फल अंकों में । ३८३-४२९
२२. लग्न फल आदि—× । संस्कृत । ४३०-५८२
२३. ज्योतिष सार संग्रह—× । संस्कृत । ५८२-६१८

२४. गिरधरानन्द—× । संस्कृत । पत्र ६१६–६७६

ले० काल सं० १८६५ मंगसिर बुदी १२ ।

विशेष—पं० जीवणराम ने चूरू में प्रतिलिपि की थी ।

२५. तिथिसारणी—लक्ष्मीचंद । संस्कृत । ६८०–६६६

र० काल सं० १७६० ।

विशेष—ये जयचंद सूरि के शिष्य थे ।

२६. कामधेनु सारणी—अंकों में । ६६७–७१६

२७. सारोद्धार—हर्षकीर्ति सूरि । संस्कृत । ७१७–७८८

२८. पल्ली विचार—× । संस्कृत । ७८६–७६०

२६. आनन्द मणिका कल्प—मानतुंग । संस्कृत । ७६१–७६५

विशेष—अस्तिमपुष्पिका—श्वेताम्बराचार्य श्री मानतुंग कृते श्री मानतुंग नंदाभिधानो पर ब्रह्मसागरे उत्पन्न मणिसंकेतस्थान लक्षणोनामत्वमानंद मणिका कल्प समाप्तः ।

३०. केशवी पद्धति भाषा उदाहरण—× । संस्कृत । पत्र ७६६–८३७

३१. योगिनी दशाफल—× । संस्कृत । पत्र ८३८–८६६

३२. षड् वर्गफल—× । संस्कृत । पत्र ८६७–६०३

३३. मुष्टिका ज्ञान—× । संस्कृत । ६०४

३४. आषाढी पूर्णिमाफल—श्री अनूपाचार्य संस्कृत ६०५

३५. वस्तुज्ञान—× । संस्कृत । ६०६–६०६

३६. रमल चिंतामणि—× । संस्कृत । ६१०–६६६

३७. शीघ्रफल—अंकों में । ६६७–६६५

३८. शूलमंत्र, मेघस्तंभन गर्भबंधन, वंशीकरण मंत्र आदि—× । संस्कृत । पत्र ६६६–६६७ यंत्र भी दिया हुआ है ।

३६. ताजिक नीलकंठोक्त षोडश योग—× । संस्कृत । पत्र ६६८–१००५ । ले० काल सं० १८६६ माघ बुदी ७

विशेष—पं० जीवणराम ने चूरू में लिखा था ।

४०. अरिष्टाध्याय—× । संस्कृत । पत्र १००६–१००८
(हिल्लाज जातके वर्ष मध्ये)

४१. दुर्भंग योग—× । संस्कृत । १००८–१०१० ।

४२. घोरकालानंतचक्र— । संस्कृत । १०१०–१०११

४३. तिथि, चक्र तिथि, सौरभ, योगसौरभ, वाटिका, वालि, गृहफल, शीघ्रफल-अंकों में ।
१०१२ से १०४३

४४. आयुर्वेदिक नुसखे—× । हिन्दी । १०४४–१०५७

४५. विजययंत्र परिकर—× । संस्कृत । १०५८–१०६१

४६. विजय यंत्र प्रतिष्ठा विधि संस्कृत १०५८–१०६१

४७. पन्द्रह अंक यंत्र—संस्कृत । १०६५-६६
४८. पन्द्रह अंक विधि एवं यंत्र साधन—संस्कृत-हिन्दी । १०६६-६९
४९. सुभाषित—। हिन्दी । १०७०-१०८८
५०. सूतक श्लोक—। संस्कृत । १०८८-८९
५१. प्रात संध्या—। संस्कृत । १०९४-९६
५२. ब्रह्मस्वरूप-भट्टारक सोमसेन । संस्कृत । १०९०-९३
५३. अरिष्टाध्याय-धनपति । संस्कृत । १०९७-११०८
५४. कर्म चिंताध्याय—। संस्कृत । ११०९-११५
५५. ग्रहराशिफल (जातका भरणे)—× । संस्कृत । १११६-३६
५६. शुद्ध कौष्टक—× । संस्कृत । ११३७-११४८
५७. टिप्पण—× । हिन्दी । ११४९-११५३
५८. आयुर्वेदिक नुसखे—× ।
५९. चन्द्रग्रहण मारक
मारक क्रिया—× । हिन्दी । ११७०-११७३
६०. आयुर्वेदिक नुसखे—× । हिन्दी । [illegible]
६१. गणपति नाममाला—× । संस्कृत । ११९०-१२०४
६२. रत्न दीपिका—चंडेश्वर । संस्कृत । १२०५-१२११
ले०काल सं० १६१७ ।

विशेष—फटेहपुर में लिखा गया ।

६३. मथुरा परीक्षा—× । संस्कृत । १२१२-१२१४
६४. सारणी—× । संस्कृत । १२१५-१२२८

१०१५९. गुटका सं० ५ । पत्रसं० १७५ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

१. पूजा संग्रह—× । हिन्दी ।
२. तत्वार्थसूत्र—उमास्वामी । संस्कृत ।
३. पार्श्वनाथ जयमाल—× । हिन्दी ।
४. पांडे की जयमाल—नल्ह । हिन्दी ।
५. पुण्य की जयमाल—× । हिन्दी ।
६. भरत की जयमाल—× । हिन्दी।
७. न्हवण एवं पूजा व स्तोत्र—× । हिन्दी-संस्कृत ।
८. अनन्त चौदश कथा—ज्ञानसागर । हिन्दी-संस्कृत
९. भक्तामर स्तोत्र—मानतुंग । संस्कृत
१०. नेमिनाथ बारहमासा—× । हिन्दी
११. सिद्धभाय—मान कवि हिन्दी ।
१२. पार्श्वनाथ के छंद—× । हिन्दी । ४७ पद्य हैं ।

१३. पद एवं विनती संग्रह— × । हिन्दी ।
१४. बारहमासा— × । हिन्दी ।
१५. क्षमा छत्तीसी—समयसुन्दर । हिन्दी ।
१६. उपदेश बत्तीसी—राज कवि । हिन्दी ।
१७. राजमती चूनरी—हेमराज । हिन्दी ।
१८. सवैया—धर्मसिंह । हिन्दी ।
१९. बारहखड़ी—दत्तलाल । ,,
२०. निर्दोष सप्तमी कथा—रायमल्ल ।

ले०काल सं० १८३२ फाल्गुण सुदी १२ ।

विशेष—चुरू में हरीसिंह के राज्य में बख्तमल्ल ने प्रतिलिपि की थी ।

१०१६०. गुटका सं० ६ । पत्र सं० १३० । आ० १२×७ इञ्च । **भाषा**-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं० १९२६ पौष बुदी २ । पूर्ण ।

विशेष—पंडित महीचन्द के प्रशिष्य पं० माणिकचन्द के पठनार्थ लिखा गया था । सामान्य पाठों का संग्रह है ।

आदित्यवार की छोटी कथा भानुकीर्ति कृत है जिसमें १२४ पद्य हैं—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है-

रस भुंति सोरह संत यदा कथा रचो दिनकर की ।
तदा यह व्रत कर वे सुख लहै, भानुकीरत मुनि अमै कहै ।।१२४।।

१०१६१. गुटका सं० ७ । पत्र सं० १-६+१-७९+१५+१८+९×८९+५५+२४×२ १+१+५+२+२+२+३+३+४+२+२×४ =१२६ ।

ले० काल सं० १८५७ । पूर्ण ।

१. भक्तामर स्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	पत्र १-६
२. तीन चौबीसी पूजा	शुभचन्द्र	,,	१-७९
		ले०काल सं० १८५७ भादवा बुदी ५ ।	
३. चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा	×	संस्कृत	१-१५
४. कर्मदहन पूजा	शुभचन्द्र	संस्कृत	१-१८
५. जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	,,	१-९
६. सहस्रनाम पूजा	धर्मभूषण	,,	१-८९
७. सिद्धचक्र पूजा	देवेन्द्रकीर्ति	,,	१-५५
८. भक्तामर सिद्ध पूजा	ज्ञानसागर	,,	१-१३
९. पंचकल्याणक पूजा	×	संस्कृत	१-२४
१०. विंश विद्यमान तीर्थंकर पूजा	×	,,	१-२
११. अष्टाह्निका पूजा	×	संस्कृत	१
१२. पंचमेरु की आरती	ज्ञानतराय	हिन्दी	१
१३. अष्टाह्निका पूजा	×	संस्कृत	१-५

१४. गुरु पूजा	हेमराज	हिन्दी	१-२
१५. धारा विधान	×	,,	१-२
१६. अठाई का रासा	विनयकीर्ति	,,	१-३
१७. रत्नत्रय कथा	ज्ञानसागर	,,	१-३
१८. दशलक्षण व्रत कथा	—	,,	१-४
१९. सोलहकारण रास	सकलकीर्ति	,,	१-२
२०. पखवाडा	जती तुलसी	हिन्दी	१-२
२१. सम्मेद शिखर पूजा	×	संस्कृत	१-४

१०१६२. गुटका सं० ८ । पत्र सं० ३८ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल सं० १९६१ पौष बुदी ३ । पूर्ण ।

विशेष—भारामल्ल कृत दान कथा है ।

१०१६३. गुटका सं० ९ । पत्रसं० ४२ । आ० ८×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन × ।

विशेष—आचार्य जिनसेन कृत पंच निर्वाण क्रिया की हिन्दी भाषा है । भाषाकर्ता-पं० फतेहलाल । श्रावक पन्नालाल ने लिखवाया था ।

१०१६४. गुटका सं० १० । पत्रसं० ४९ । आ० ७×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र ऋषि यंत्र सहित है । यन्त्रों के चित्र दिये हुये हैं । परमादीलाल बनिया (सिकन्दरा) आगरे वाले ने लिखा था ।

१०१६५. गुटका सं० ११ । पत्रसं० ११६ । आ० ९×६½ इंच । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १९१७ प्रथम आसोज सुदी ७ । पूर्ण ।

विशेष—रामचन्द्र कृत चौबीस तीर्थंकर पूजा है । नारायण जालझावासी ने लश्कर में लिखा था ।

१०१६६. गुटका सं० १२ । पत्रसं० ७५ । आ० ९×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

१. छहढाला वचनिका	—	हिन्दी ग०	पत्र १-१४

विशेष—ज्ञानतराय कृत अक्षर बावनी की गद्य भाषा है ।

२. ,,	×	,,	पत्र १५-३०

विशेष—बुधजन कृत छहढाला की गद्य टीका है ।

३. दर्शन कथा	भारामल्ल	हिन्दी पद्य	१-४४
४. दर्शन स्तोत्र	×	संस्कृत	४५

१०१६७. गुटका सं० १३ । पत्रसं० ४५ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १९६५ । पूर्ण ।

विशेष—आरा नगर का लिखा हुआ बीज अथवा है। परसादीलाल ने नगले सिकन्दरा (आगरे) में लिखा था ।

१०१६८. गुटका सं० १४ । पत्र सं० ११७ । आ० ८$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल सं० १९२० पौष बुदी ३ । पूर्ण ।

विशेष—पंडित रूपचन्द कृत समवसरण पूजा है ।

१०१६९. गुटका सं० १५ । पत्रसं० १२८ । आ० ६×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल सं० १९९६ । पूर्ण ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है । पीताम्बरदास पुत्र मोहनलाल ने लिखा था ।

१०१७०. गुटका सं० १६ । पत्रसं० ८१ । आ० ६$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र, सहस्रनाम एवं पूजाओं का संग्रह है ।

१०१७१. गुटका सं० १७ । पत्रसं० २७ । आ० ७$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. कल्याण मन्दिर भाषा	बनारसीदास	हिन्दी	१-३
२. भक्तामर भाषा	हेमराज	हिन्दी	३-८
३. एकीभाव स्तोत्र	×	संस्कृत	८-१२ अपूर्ण
४. सामायिक पाठ	×	,,	१२-२६
५. सरस्वती मंत्र	—	संस्कृत	२६
चौबीसी स्तोत्र	बीज मंत्र सहित	,,	२७

१०१७२. गुटका सं० १८ । पत्रसं० ८०। आ० ७$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं० १९९६ ज्येष्ठ सुदी १२ । पूर्ण ।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजाओं का संग्रह है ।

१०१७३. गुटका सं० १९ । पत्र सं० ७३ । आ० ६$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं० १८८१ । पूर्ण ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. समोसरण पूजा	लालजीलाल	हिन्दी
		र०काल सं० १८३४

विशेष—छोटेराम ने लिखा था ।

२. चौबीस जिन पूजा	देवीदास	हिन्दी

इनके अतिरिक्त सामान्य पूजायें और हैं ।

१०१७४. गुटका सं० २० । पत्र सं० ३१ । आ० ५$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{4}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १८१६ माह सुदी १२ । पूर्ण ।

विशेष—धरणीदास विरचित स्वरोदय है ।

१०१७५. गुटका सं० २१ । पत्रसं० १२० । आ० ६×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–पूजा पाठ । ले०काल सं० १९८१ भादवा सुदी ४ । पूर्ण ।

विशेष—पूजा एवं विभिन्न पाठों का संग्रह है ।

१०१७६. गुटका सं० २२ । पत्र सं० १६ । आ० ७×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । ले०काल सं० १९४० पौष बुदी ११ । पूर्ण ।

विशेष—उमास्वामी कृत तत्वार्थ सूत्र है । लालाराम श्रावक ने लिखा था ।

१०१७७. गुटका सं० २३ । पत्र सं० ३९ । आ० ७×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । ले०काल सं० १९६२ मंगसिर बुदी ५ । पूर्ण ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र, तत्वार्थ सूत्र एवं जिनसहस्रनाम जिनसेनाचार्य कृत है । परशादीलाल ने सिकन्दरा (आगरा) में प्रतिलिपि की थी ।

१०१७८. गुटका सं० २४ । पत्रसं० ६ । आ० ७×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र है ।

१०१७९. गुटका सं० २५ । पत्र सं० ३–१३४ । आ ७×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल सं० १९१३ । पूर्ण ।

विशेष—सामायिक पाठ, दशलक्षण पूजा, एवं देव शास्त्र गुरु की पूजा हिन्दी टीका सहित है । तत्वार्थ सूत्र अपूर्ण है ।

१०१८०. गुटका सं० २६ । पत्र सं० १३३ । आ० ७×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी–संस्कृत । ले०काल सं० १९८१ भादवा सुदी ८ पूर्ण ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह हैं ।

१०१८१. गुटका सं० २७ । पत्र सं० ९५ । आ० ७×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८८७ जेठ शुक्ला १५ । पूर्ण ।

विशेष—मनसुख सागर विरचित यशोधर चरित है । मूलकर्त्ता वासवसेन हैं ।

७ ८ ८ १

मुनि वसु वसु शशि समय मत विक्रम राज महान् ।
जेष्ठ शुक्ल ए अंत तिथ, पूरण मासी ज्ञान ॥
चित शुध सागर सुगुरु दीनों रह उपदेश ।
लिखो पढो चित दे सुनो बाढै धर्म विशेष ॥

१०१८२. गुटका सं० २८ । पत्रसं० १८६ । आ० ७×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. भक्तामर स्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत
२. तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामी	,,
३. जिनसहस्रनाम	जिनसेन	,,
४. भैरवाष्टक	—	,,
५. ऋषि मंडल स्तोत्र	×	,,
६. पार्श्वनाथ स्तोत्र	×	,,
७. कल्याण मन्दिर स्तोत्र भाषा	बनारसीदास	हिन्दी पद्य
८. भक्तामर स्तोत्र भाषा	हेमराज	,,
९. भूपाल चौबीसी भाषा	जगजीवन	,,
१०. विषापहार भाषा	अचलकीर्ति	,,
११. एकीभाव स्तोत्र	भक्तरदास	,,

१०१८३. गुटका सं० २९ । पत्र सं० ५० । आ० ७×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

१००८४. गुटका सं० ३० । पत्र सं० ४२ । आ० ८×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १९६६ श्रावण शुक्ला १२ । पूर्ण ।

विशेष—भारामल्ल कृत दर्शन कथा है ।

१०१८५. गुटका सं० ३२ । पत्र सं० ९३ । आ० ९×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल सं० १९५३ श्रावण बुदी ११ । पूर्ण ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

१००८६. गुटका सं० ३३ । पत्र सं० १७७ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पूजा, स्तोत्र एवं कथाओं का संग्रह है ।

१०१८७. गुटका सं० ३४ । पत्रसं० ३३ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १९६६ । पूर्ण ।

विशेष—चर्चाओं का संग्रह है ।

१०१८८. गुटका सं० ३५ । पत्र सं० १३७ । आ० ६½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं० १७६५ कार्तिक सुदी ७ । पूर्ण ।

विशेष—उल्लेखनीय पाठ—

१. क्षेत्रपाल पूजा—बुधटोंटर । हिन्दी । १-३

२. रोहिणी व्रत कथा-वंशीदास । ,, । ६-१४ ।ले० काल सं० १७६५ ।

विशेष—आचार्य कीर्तिसूरि ने प्रतिलिपि की ।

३. तत्वार्थ सूत्र बाल बोध टीका सहित—× । हिन्दी संस्कृत । २६-६७

४. सहस्रनाम—आशावर । संस्कृत । ६८-८२

५. देवसिद्ध पूजा × । ,, ८३-११२

६. त्रेपन क्रिया व्रतोद्यापन—विक्रमदेव । संस्कृत ११२-२२

७. पंचमेरु पूजा—महीचन्द । संस्कृत । १२५-१३३

८. रत्नत्रय पूजा × । संस्कृत । १४५-१६६

विशेष—कासम बाजार में प्रतिलिपि हुई ।

१०१८६. गुटका सं० ३६ । पत्र सं० ३२८ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

१. नेमिनाथ नव मंगल × । हिन्दी

२. रत्नत्रय व्रत कथा—ज्ञानसागर । हिन्दी

३. षोडश कारण कथा—भैरुदास । ,, र० काल १७६१ । ७४ पद्य हैं ।

४. दशलक्षण कथा—ज्ञानसागर । ,,

५. दशलक्षण रास—विनयकीर्ति । ,, । ३३ पद्य हैं ।

६. पुष्पांजलि व्रत कथा—सेवक । हिन्दी । पत्र सं० ५२-६४

७. अष्टाह्निका कथा-विश्वभूषण । ,, ६४-७८

८. ,, रास—विनयकीर्ति । ,, ७६-८४

९. आकाशपंचमी कथा-घासीदास ,, ८५-१०१ र० काल सं० १७६२ आसोज बुदी १२ ।

१०. निर्दोष सप्तमी कथा × । ,, १०१-११० । ४२ पद्य हैं ।

११. निशल्याष्टमी कथा—ज्ञानसागर । हिन्दी । ११०-१२० । ६४ पद्य हैं ।

१२. दशमी कथा—ज्ञानसागर । ,, । १२१-१२६ ।

१३. श्रावण द्वादशी कथा—ज्ञानसागर । हिन्दी । १२६-१३२ ।

१४. अनन्त चतुर्दशी कथा—भैरुदास । ,, १३२-१४१ ।

र० काल सं० १७२७ आसोज सुदी १० ।

विशेष—कवि लालपुर के रहने वाले थे ।

१५. रोहिणी व्रत कथा—हेमराज । हिन्दी । १४१-१५४

र० काल सं० १७४२ पौष सुदी १३ ।

१६. रसीव्रत कथा—भ० विश्वभूषण । हिन्दी । १५४-५७ ।

१७. दुधारस कथा—विनयकीर्ति ,, १५७-१५९

१८. ज्येष्ठ जिनवर व्रत कथा—खुशालचन्द । हिन्दी । १५९-१७१ ।

१९. बारहमासा—पांडेजीवन । हिन्दी । २८०-१९० ।
२०. पद संग्रह × । ,, १९१-२१५ ।
२१. शील चूनडी—मुनि गुणचन्द । हिन्दी । २१६-२२५ ।
२२. ज्ञान चूनडी—भगवतीदास ,, २२६-२३० ।
२३. नेमिचन्द्रिका × । ,, २३१-२७८ ।
रचनाकाल सं० १८८० ।
२४ रविव्रत कथा × । ,, २७९-३०८ ।

१०१९०. गुटका सं० ३७ । पत्रसं० ५६ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र ऋद्धि मंत्र सहित एवं हिन्दी अर्थ सहित है । कल्याण मन्दिर स्तोत्र भाषा भी है ।

१०१९१. गुटका सं० ३८ । पत्रसं० २४ । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल पूर्ण ।

विशेष—वृत्त बंध पद्धति है ।

१०१९२. गुटका सं० ३९ । पत्रसं० ३१९ । आ० ४½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं० १८९१ वैशाख सुदी १५ । पूर्ण ।

विशेष—नवलगंज में गोपालचन्द वृन्दावन के पोते सोहनलाल के लड़के ने प्रतिलिपि की थी ।

५५ स्तोत्रों का संग्रह है । जिल्द लकड़ी के फ्रेम पर है जिसमें लोहे के बकसुए तथा खटके का ताला है । पुट्ठों में दोनों ओर ही अन्दर की तरफ कांच में जड़े हुए नेमिनाथ एवं पद्मप्रभ के पद्मासन चित्र है । चित्र श्वेताम्बर आम्नाय के हैं । प्रारम्भ के ८ पत्रों में दोनों ओर मिलाकर ४६ बेलबूटों के सुन्दर चित्र हैं । चित्र भिन्न प्रकार के हैं । इसी तरह अन्तिम पत्रों पर भी पेड़पौधों आदि के १६ सुन्दर चित्र हैं ।

१. ऋषिमंडल स्तोत्र—गौतमस्वामी । संस्कृत । पत्र ९ तक
२. पद्मावती स्तोत्र—× । संस्कृत । १८ तक
३. नवकार स्तोत्र—× । ,, २० तक
४. अकलंकाष्टक स्तोत्र—× । ,, २३ तक
५. पद्मावती पटल—× । संस्कृत । २७ तक
६. लक्ष्मी स्तोत्र—पद्मप्रभदेव , २८ तक
७ पार्श्वनाथ स्तोत्र—राजसेन ,, ३१ तक

मदन मद हर श्री वीरसेनस्य शिष्यं,
सुभग वचन पूरं राजसेन प्रणीतं ।
जयति पठिति नित्यं पार्श्वनाथाष्टकाय,
स भवत सिव सौख्यं मुक्ति श्री शांति वीम ।।
विगत व्रजन यूथं नौम्महं पार्श्वनाथं ।।

८. भैरव स्तोत्र—× । संस्कृत । ३२ तक । ६ पद्य हैं ।
९. वर्द्धमान स्तोत्र—× । हिन्दी । ३४ तक । ८ पद्य हैं ।
१०. हनुमत्कवच—× । संस्कृत । ३८ तक ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री सदर्शन संहितायां रामचन्द्र मनोहर सीतायां पंचमुखी हनुमत्कवच संपूर्णं ।

११. ज्वालामालिनी स्तोत्र—× । संस्कृत । ४२ तक ।
१२. वीतराग स्तोत्र— पद्मनंदि ,, ४४ तक ।

विशेष—६ पद्य हैं ।

१३. सूर्याष्टक स्तोत्र—× । संस्कृत । ४४ पर
१४. परमानन्द स्तोत्र—× । संस्कृत । ४७ तक । २३ पद्य हैं ।
१५. शांतिनाथ स्तोत्र—× । ,, ४६ तक । ६ पद्य हैं ।
१६. पार्श्वनाथ स्तोत्र—× । ,, ५३ तक । ३३ ,,
१७. शांतिनाथ स्तोत्र—× । ,, ५५ तक । १८ ,,
१८. पद्मावती दण्डक—× । ,, ५६ तक । ६ ,,
१९ पद्मावती कवच—× । ,, ६१ तक ।
२०. आदिनाथ स्तोत्र—× । हिन्दी ६२ तक ६ पद्य हैं ।

प्रारम्भ— संसारसमुद्र महाकालरूपं,
नहीं वार पारं विकारं विरूपं ।
जरा जाय रोमावली भाव रूप ।
तहं मोहि सरणं नमो आदिनाथं ॥

२१. उपसर्गहर स्तोत्र—× । प्राकृत । पत्र ६४ तक ।
२२. चौसठ योगिनी स्तोत्र—× । संस्कृत । ६५
२३. नेमिनाथ स्तोत्र—पं० शालि । ,, । ६७
२४. सरस्वती स्तोत्र—× । हिन्दी । ६६ तक । ६ पद्य है ।
२५. चिन्तामणि स्तोत्र—× । संस्कृत । ७० तक ।
२६. शांतिनाथ स्तोत्र—× । संस्कृत । पत्र ७१ तक ।
२७. सरस्वती स्तोत्र—× । ,, ७४ तक । १६ पद्य हैं ।

विशेष—१६ नामों का उल्लेख है ।

२८. सरस्वती स्तोत्र (दूसरा)—× । संस्कृत । ७६ तक । १५ ॥
२९. सरस्वती दिग्विजय स्तोत्र- संस्कृत । ७८ । १३ ॥
३०. निर्वाण काण्ड गाथा—× । प्राकृत । ८२ तक ।
३१. चौबीस तीर्थंकर स्तोत्र-× । संस्कृत । ८३ तक ।

विशेष—अन्तिम

सकल गुण निधानं यंत्रमेनं विसुद्धं
हृदय कमल कोसं धारता धैर्य रूपं ।
जयति तिलक गुरो शूर राजस्य शिष्यं
वदत सुख निधानं मोक्ष लक्ष्मी निवासं ।।

३२ रावलादेव स्तोत्र—× । हिन्दी । ८४ तक ।

श्री रावलादेव करु जुहारा, स्वामी करु सेवक निज सारा ।
तूं विश्व चिन्तामणि एक देवा, करैं सदा चौसठ इन्द्रसेवा ।।१।।
सेवा करैं लक्षण नाग राजा, सारैं सदा सेवक ना कोई काजा ।
पीडा तणा दुखता मूल तोड़ें, घटो घटी सकट लां विछोड़ैं ।।२।।
जे साहरो नाव जगत जाणैं, वलि वलि महिमा ते बखाणैं ।
जो बूडता पोहण माझ ध्यावैं, ते ऊतरी सकट पारी जावैं ।।३।।
जे दुष्टयों को तरीपात वाजैं, जे वितरा वितरी दोष दाझैं ।
जे प्रेत पीम प्रभु तुझ ध्यावैं । जे ऊतरि संकट पारि नावे ।।४।।
जे काल किकाल थे सांच लीजैं,
जे भूत वैताल पैमाल कीजैं ।
जे डाकणी दुष्ट पडिलाज ध्यावैं,
ते ऊतरि संकट पार जावैं ।।५।।
जे नाग विषै विषझाल मूकैं,
तिण विषैं भूमिया झाड़ सूकैं ।
ते तिणों डस्या प्रभु तुझ ध्यावैं,
ते ऊतरि संकट पार जावैं ।।६।।
जे द्रव्य हीणा मुख दीन भासैं,
जे देह खीणा दिनरात सांसैं ।
जे अग्नि माझ पडियाज ध्यावैं,
ते ऊतरि संकट पार जावैं ।।७।
जे चक्षु पीडा मुख वंब फाड़ैं,
जे रोग रुध्या निज देह ताड़ैं ।
जे वेदनी कटुनी कटु पडियाज ध्यावैं,
ते ऊतरि संकट पार जावैं ।।८।।
जे राज विग्रह पडियात थटैं,
फिरी फिरी पार का देह कूटैं ।
ते लोह बंध्या प्रभु तुझ ध्यावैं,
ते ऊतरि संकट पार जावैं ।।९।।

श्री पाश्वासा हम एक पूरौ,
दुःकर्मणा कष्ट समग्र चूरौ ।
सुभ कर्मजा संपदा एक आपौ,
कृपा करि सेवक मुझ थापौ ॥१०॥

इति श्री रावल देव स्तोत्र संपूर्ण ।

३३-सर्वजिन नमस्कार—× । सं० । पत्र ९० ।

(सर्व चैत्य वंदना)

३४-नेमिनाथ स्तोत्र — × । संस्कृत । पत्र ९१ तक । २० पद्य हैं ।
३५-मुनिसुव्रतनाथ स्तोत्र— × । संस्कृत । ९३ तक ।
३६-नेमिनाथ स्तोत्र— × । संस्कृत । ९६ तक ।
३७-स्वप्नावली—देवनंदि । संस्कृत । १०० तक ।
३८-कल्याण मन्दिर स्तोत्र—कुमुदचन्द । संस्कृत । १०० तक ।
३९-विषापहार स्तोत्र—धनंजय । संस्कृत । १२१ ।
४०-भूपाल स्तोत्र—भूपालकवि । संस्कृत ।
४१-भक्तामर स्तोत्र ऋद्धि मंत्र सहित— × । संस्कृत ।
४२-भगवती आराधना— × । संस्कृत । २८ पद्य हैं ।
४३-स्वयंभू स्तोत्र (बड़ा) समंतभद्र । संस्कृत ।
४४-स्वयंभूस्तोत्र (लघु)—देवनन्दि । संस्कृत । पत्र १९० तक ।
४५-सामयिक पाठ— × । संस्कृत । पत्र २१७ तक ।
४६-प्रतिक्रमण— × । प्राकृत-संस्कृत । पत्र २४१ तक ।
४७-सहस्रनाम—जिनसेन । संस्कृत । पत्र २६३ तक ।
४८-तत्त्वार्थसूत्र—उमास्वामी । संस्कृत । पत्र २६३ तक ।
४९-श्री सुगुरु चिंतामणि देव —× । हिन्दी । पत्र २८७ ।
५०-चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र—पं० पदार्थ । संस्कृत । पत्र २९ ।
५१-पार्श्वनाथ स्तोत्र—पद्मनंदि । संस्कृत । पत्र २९५ ।
५२-पार्श्वनाथ स्तोत्र— × । संस्कृत । २९७ तक ।
५३-ब्रह्मा के ९ लक्षण— × । संस्कृत । २९७ ।
५४-फुटकर श्लोक— × । संस्कृत । २९९ ।
५५-घंटाकरण स्तोत्र व मंत्र— × । संस्कृत ।
५६-सिद्धि प्रिय स्तोत्र—देवनंदि । संस्कृत । ३१० ।
५८-लक्ष्मी स्तोत्र— × । संस्कृत । ३१९ ।

१०१९३. गुटका सं० ४० । पत्र सं० १४१ । आ० ५ × ४ इंच । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । ले० काल । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

१०१९४. गुटका सं० ४१ । पत्रसं० २२७ । आ० ५×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न हैं—

१-शालिभद्र चौपई—सुमति सागर । हिन्दी । पत्र २८-१४० ।

र० काल सं० १६०८ । ले०काल सं० १९१६ चैत बुदी ६ ।

२-राजमती की चूनडी—हेमराज । हिन्दी । १५२-१७३ ।

प्रारम्भ—

श्री जिनवर पद पंकजं, सदा नमो धर भाव हो ।
सोरीपुर सुरपति छनौ, अति ही अनुपम ढांम हो ।।

अन्तिम—

काष्ठासंघ सुहावनौ, मथुरा नगर अनूप हो ।
हेमचन्द मुनि जांणये, सब जतीयन सिर भूप जी ।।७६।।

तास पट जसकीर्ति मुनि, काष्ठ संघ सिंगार हो ।
तास शिष्य गुणचन्द्रमुनि, विद्या गुणह भंडार हो ।।७०।।

इहां बदराग हीवडौ धरौ, निसप्रह ओर निरधारे ।
हेम भणें ले जाणीयो ते पावे भवचार हो ।।८।।

इति राजमति की चूनडी संपूर्णम् ।

३. नेमिनाथ का बारह मासा—पांडेजी पंत । हिन्दी । पत्र २११-२२५ ।

१०१९५. गुटका सं० ४२ । पत्रसं० १८५ । आ० ४½×३½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल× । पूर्ण ।

विशेष—पद एवं विनती संग्रह है । लिपि अच्छी नहीं है ।

१०१९६. गुटका सं० ४३ । पत्रसं० ४० । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पार्श्वनाथ स्तोत्र, देवपूजा, बीस विरहमान पूजा, वासुपूज्य पूजा (रामचन्द्र) एवं विषापहार स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

१०१९७. गुटका सं० ४४ । पत्रसं० ६२-११७ । आ० ४×३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

१. नेमिनाथ का बारहमासा—पांडेजीवन । हिन्दी । ७४-९६

२, ,, ,, —विनोदीलाल । ,, । ९६-११२

३. पद संग्रह—× । हिन्दी । ११२-११७

१०१९८. गुटका सं० ४५ । पत्रसं० ३३ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

देवसिद्ध पूजा, भक्तामर स्तोत्र, सहस्रनाम (जिनसेन कृत) है ।

१०१९९. गुटका सं० ४६ ।पत्रसं० २६ । आ० १०½×७ इञ्च । भाषा हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र भाषा (हेमराज) बाईस परीषह, पद एवं विनती, दर्शनपच्चीसी (बुधजन) समाधिमरण (ज्ञानतराय), तेरह काठिया (बनारसीदास) सोलह सती (मेघराज), बारहमासा (दौलतराम) चेतनगारी (विनोदीलाल) का संग्रह है।

१०२००. गुटका सं० ४७ । पत्रसं० २४ । आ० ५×४½ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत-हिन्दी । **ले०काल** × । पूर्ण ।

विशेष—देवपूजा, निर्वाणकाण्ड, चौबीस दण्डक (दौलतराम) पाठ का संग्रह है ।

१०२०१. गुटका सं० ४८ । पत्रसं० ५६ । आ० ७×५ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत-हिन्दी । ले० काल सं० १८९६ माघ शुक्ला १३ । पूर्ण ।

विशेष—

१. विमलनाथ पूजा, अनन्तनाथ पूजा (ब्रह्म शांतिदास कृत) एवं सरस्वती पूजा जयमाल हिन्दी (ब्रह्म जिनदास कृत) हैं ।

अज्ञानतिमिरहरं, सज्ञान गुणाकरं
पढई गुणइ जे भावधरी ।
ब्रह्म जिनदास भाणइ, विवुह पपासइ,
मन वंछित फल बुधि धनं ॥१३॥

१०२०२. गुटका सं० ४९ । पत्रसं० ३६ । आ० ६½×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल सं० १९३२ । पूर्ण ।

विशेष—भगवतीदास कृत चेतनकर्मचरित्र है ।

१०२०३. गुटका सं० ५० । पत्रसं० ५६ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा--संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—देवपूजा, भक्तामर स्तोत्र, पद्मावतीसहस्रनाम धरणेन्द्र पूजा, पद्मावती पूजा, शांतिपाठ एवं ऋषि मण्डल स्तोत्र का संग्रह है ।

१०२०४. गुटका सं० ५१ । पत्र सं० २–१२४ । आ० ६½×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल सं० १९०२ श्रावण सुदी १५ । पूर्ण ।

विशेष – निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. श्रीपाल दरस—× । हिन्दी । पत्र १–२ ।
२. निर्वाण काण्ड गाथा—× । प्राकृत । ३–४ ।
३. विषापहार स्तोत्र—हिन्दी पद्य । ५–९ ।
विशेष—१२ से १८ तक पत्र नहीं है ।
४. सीता जी की बीनती—× । हिन्दी । १९–२० ।
५. कलियुग बत्तीसी—× । हिन्दी । २१–२४ ।
६. चौबीस भगवान के पद—हिन्दी । २५–५९ ।
७. नेमिनाथ विनती—धर्मचन्द्र । ६०–६४ ।

८. हितोपदेश के दोहे—× । हिन्दी । ६५-७२ ।
९. अठारह नाता वर्णन—कमलकीर्ति । हिन्दी । ७५-८० ।
१०. चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न—× । हिन्दी ८०-८२ ।
११. अरहंतों के गुण वर्णन—× । हिन्दी । ८३-८४ ।
१२. नेमिनाथ राजमती संवाद—ब्रह्म ज्ञानसागर । हिन्दी । ८७-९४ ।
१३. पंच मंगल—रूपचन्द । हिन्दी । ९४-१०४ ।
१४. विनती एवं पद संग्रह—× । हिन्दी । १०५-१२४ ।

१०२०५. गुटका सं० ५२ । पत्रसं० १२ । आ० ७×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—अर्चाओं का संग्रह है ।

१०२०६. गुटका सं० ५३ । पत्रसं० १०१ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा--हिन्दी । ले०काल सं० १९७१ पौष शुक्ला १५ । पूर्ण ।

विशेष—चम्पाबाई दिल्ली निवासी के पदों का संग्रह है । जिसने अपनी बीमारी की हालत में भी पद रचना की थी और उससे रोग की शांति हो गई थी । यह संग्रह चम्पाशतक के नाम से प्रकाशित हो चुका है ।

१०२०७. गुटका सं० ५४ । पत्रसं० ९९ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

१०२०८. गुटका सं० ५५ । पत्र सं० १८१ । आ० ९½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल सं० १९३१ । पूर्ण ।

विशेष—२० पूजाओं का संग्रह है । बड़ी पंचपरमेष्ठी पूजा भी है ।

१०२०९. गुटका सं० ५६ । पत्र सं० १९१ । आ० ५½×३ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं० १९१४ श्रावण सुदी २ । पूर्ण ।

विशेष—सामायिक पाठ, श्रावक प्रतिक्रमण, पंच स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

१०२१०. गुटका सं० ५७ । पत्रसं० १८३ । आ० ५½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल सं० १८९७ पौष सुदी १३ । पूर्ण ।

विशेष—चौबीस तीर्थंकर पूजा-रामचन्द्र कृत हैं ।

१०२११. गुटका सं० ५९ । पत्र सं० ५४ । आ० ६½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पद एवं स्तोत्र तथा सामान्य पाठों का संग्रह है ।

१०२१२. गुटका सं० ६० । पत्रसं० ५३-१५३ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं० १९३७ मंगसिर बुदी १३ । पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—
१. पाशा केवली—× । संस्कृत । १-१७
२. पद संग्रह— × । हिन्दी । १८-४४

३. पांच परवी कथा — ब्रह्म विक्रम ४५-५३

४. चौवीसी तीर्थंकर पूजा—नखतावरसिंह । १-१५३

१०२१३. गुटका सं० ६१ । पत्र सं० १६८ । आ० ५$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—स्तोत्र एवं अन्य पाठों का संग्रह है ।

१०२१४. गुटका सं० ६२ । पत्रसं० ६० । आ० ५×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८८६ आषाढ बुदी १४ । पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. शालिभद्र चौपई	मतिसागर	हिन्दी	१४४
२. पद	×	हिन्दी	४५-५५
३. गोराबादल कथा	जटमल	,,	५६-६०

र०काल सं० १६८० फागुण सुदी १२ । पद्य सं० २२५

विशेष—जोगीदास ने प्रतिलिपि की थी ।

१०२१५. गुटका सं० ६३ । पत्र सं० १३६ । आ० ५$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

१०२१६. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० १०७ । आ० ५$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८७६ आसोज बुदी १३ । पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. आदित्यवार कथा	भाऊकवि	हिन्दी	१-२२
२. मानगीत	×	हिन्दी	२७-२६
३. बूढा चरित्र	जतीचन्द	,,	३०-४६

र०काल संवत् १८३६

विशेष—वृद्ध विवाह के विरोध में है ।

४. शालिभद्र चौपई	मतिसागर	हिन्दी	४४-१०७

१०२१७. गुटका सं० ६५ । पत्रसं० १६५ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—पूजायें, स्तोत्र एवं चेतनकर्मचरित्र (भगवतीदास) का संग्रह है ।

प्रारम्भ में—षट्लेश्या, आदित्यवार व्रतोद्यापन का मंडल, चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा का मंडल, कल्याणमन्दिरस्तोत्र की रचना, विषापहार स्तोत्र की रचना, कर्म-दहन मंडल पूजा, एकीभाव रचना, नंदीश्वर द्वीप का मंडल आदि के चित्र हैं । चित्र सामान्य हैं ।

१०२१८. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० ६ । आ० ८$\frac{1}{2}$×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—जलगालन विधि है ।

१०२१९. गुटका सं० ६७। पत्रसं० १२। आ० ८½×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल सं० १९६४ । पूर्ण।

विशेष—दौलतराम कृत छहढाला है।

१०२२०. गुटका सं० ६८। पत्रसं० ५५। आ० ८½×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल × । पूर्ण।

विशेष—पद संग्रह है।

१०२२१. गुटका सं० ६९। पत्र सं० ४१। आ० ५½×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र एवं दौलतराम के पद हैं।

१०२२२. गुटका सं० ७०। पत्रसं० १२। आ० ८×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। ले०काल × । पूर्ण।

विशेष—बिम्ब निर्माण विधि है।

१०२२३. गुटका सं० ७१। पत्रसं० ३५। आ० ६×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। ले० काल × । पूर्ण।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र एवं निर्वाण काण्ड आदि पाठ हैं।

१०२२४. गुटका सं० ७२। पत्र सं० १२। आ० ६×४ इञ्च। भाषा—हिन्दी। ले० काल × । पूर्ण।

१०२२५. गुटका सं० ७३। पत्रसं० १४। आ० ६½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल × । पूर्ण।

विशेष—सामान्य पाठ संग्रह है।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर

१०२२६. गुटका सं० १। पत्रसं० ५०। भाषा-हिन्दी। पूर्ण। वेष्टन सं० १००।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

जम्बूस्वामी वेलि	वीरचन्द	हिन्दी पद्य
जिनांतररास	,,	,,
चौबीस जिन चौपई	कमलकीर्ति	,,
विनती	कुमुदचन्द्र	,,
वीर विलास	वीरचन्द	,,
		ले०काल सं० (१६८६)
अमर गीत	वीरचन्द	,,
		(र०काल सं० १६०४)
आदीश्वर विवाहलो	,,	हिन्दी पद्य
पाणी गालनरो रास	ज्ञानभूषण	,,

रुक्मिणिहरण	रत्नभूषण	हिन्दी
द्वादश भावना	वादिचन्द्र	,,
गौतमस्वामी स्तोत्र	,,	,,
नेमिनाथ समवशरण	,,	,,
फुटकर पद	—	,,

१०२२७. **गुटका सं० २** । पत्रसं० ११-७२ । आ० ८½+४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८०६ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६७ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

त्रिभुवन बीनती	गंगादास	हिन्दी प०
सत्ताणु दूहा	वीरचन्द	,,
जिनराज बीनती	—	,,
चैत्यालय वंदना	महीचन्द	,,
अष्टकर्म चौपई	रत्नभूषण	,,

(र०काल सं० १६७७)

इस रचना में ६२ पद्य हैं ।

१०२२८. **गुटका सं० ३** । पत्रसं० ३७-१४६ । आ० १०½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल सं० १८७८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३० ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

१. कक्का बत्तीसी	—	हिन्दी पद्य

(र०काल सं० १७२५)

२. जैनशतक	भूधरदास	,,
३. दृष्टांत पच्चीसी	भगवतीदास	,,
४. मधु बिन्दु चौपई	—	,,

(र०काल सं० १७४०)

५. अष्टोत्तरी शतक	भगवतीदास	,,
६. चौरासी बोल	—	,,
७. सूरत की बारहखड़ी	सूरत	,,
८. बाईस परीषह कथन	भगवतीदास	,,
९. धर्मपच्चीसी	भगवतीदास	हिन्दी
१०. ब्रह्म विलास	भगवतीदास	एवं

बनारसी विलास (बनारसीदास) के अन्य पाठों का संग्रह है ।

प्राप्ति स्थान—दि. जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर

१०२२९. **गुटका सं० १** । पत्रसं० ६३ । आ० ९×९ इञ्च । भाषा-प्राकृत । ले०काल सं० १७१८ मगसिर बुदी १४ । पूर्ण ।

विशेष—षट् पाहुड की संस्कृत टीका सहित प्रति है ।

१०२३०. **गुटका सं० २** । पत्र सं० ४०-८२ । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं० १६७० । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३८८ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

लघु तत्वार्थ सूत्र	—	संस्कृत
दान तपशील भावना	ब्रह्म वामन	हिन्दी
गीत	मतिसागर	,,
ऋषिमंडल स्तवन	—	संस्कृत
संबोध पंचासिका	—	,,

गुटका जीर्ण है ।

१०२३१. **गुटका सं० ३** । पत्रसं० १८-२९८ । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं० १६४३ आसोज बुदी ८ । अपूर्ण । वेष्टनसं० ।

विशेष—गुटका बहुत ही महत्वपूर्ण है । इसमें हिन्दी एवं संस्कृत की अनेक अज्ञात एवं महत्वपूर्ण रचनाएं हैं । गुटके में संग्रहीत मुख्य रचनाओं का विवरण निम्न प्रकार है—

सं०	नाम ग्रंथ	ग्रंथकार	पत्र सं०	भाषा	विशेष
१.	सीमंधर स्तवन	—	९	हिन्दी	पद्य सं० ३१
२.	स्त्री लक्षण	—	११	,,	—
३.	श्री रामचन्द्र स्तवन	—	११		पद्य सं० १०
			धवालिखतं		
४.	बंकचूल कथा	—	११-१३		पद्य सं० १०३
५.	विषम सूची	—	१६-१७	,,	
६.	चौवीसी तीर्थंकर स्तवन	विद्याभूषण	पत्र १७	हिन्दी	

विशेष—वृषभदेव थी अजित सकल संभव अभिनन्दन ।
सुमति पद्म सुपार्श्व श्रीचतुर चन्द प्रभ वंदन ॥

७.	जिनमंगल	—	१८	संस्कृत
८.	मेवाड़ीनां गीत्र	—		हिन्दी

३० गीत्रों का वर्णन है ।

९.	अठारह पुराणों की नामावली	—	,,	,,

विशेष—पुनः पत्र सं १ से चालू हैं—

१०.	गुरुराशि गत विचार	—	१	संस्कृत (ज्योतिष)

११. निरंजनाष्टक	—	१	संस्कृत
१२. पल्यविधान कथा	—	२-४	,,
			(पद्य गद्य)

विशेष—संवत् १६....वर्षे आचार्य श्री विनयकीर्ति तत्शिष्य ब्र० श्री धन्ना लिखतं ।

१३. विनती	ब्र०जिनदास	४	हिन्दी
१४. गुणठाणावेलि	जीवन्धर	४-६	,, पद्य

विशेष—जीवन्धर यशःकीर्ति के शिष्य थे ।

१५. जीवनी आलोचना	—	६	,,
१६. महाव्रतीनि चौमासानुबंध	—	६	हिन्दी

विशेष—चतुर्मास में मुनियों के दोषपरिहार विधान है ।

१७. चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा	शुभचन्द्र	७-११	संस्कृत
		(लि० काल सं० १६१६)	

विशेष—चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र भी है ।

प्रशस्ति—संवत् १६११ वर्षे भिरि ग्रामे श्री काष्ठासंघे श्री मुनिसुव्रतचैत्यालये आचार्य श्री विजय कीर्ति शिष्ये ब्र० धन्ना नैन पठनार्थं ।

१८. नीतिसार	—	११-१३	संस्कृत
१९. राजन चित्तवल्लभ	—	१३-१४	,,
२०. साठिसंवत्सरी	—	१४-२१	हिन्दी
	(ऐतिहासिक विवरण है)		

संवत् १६०९ से १६६९ तक की संवत्सरी दी गयी है ।

२१. संवत्सर ६० नाम	—	२१	,,
२२. वर्षनाम	—	२१	संस्कृत
२३. तीस चौवीसी नाम	—	२१-२४	हिन्दी
२४. संक्रांतिफल	—	२६	संस्कृत
	(श्री विनयकीर्ति ने धन्ना के पठनार्थ लिखा था)		
२५. गुरु शिष्यावली	विद्याभूषण	२६-२८	संस्कृत
२६. वेसठशलाका पुरुष भवावलि	—	२८-३०	हिन्दी
२७. भक्तामर स्तोत्र सटीक	—	३१-३६	संस्कृत
२८. दर्शनप्रतिमा का ब्यौरा	—	३८	हिन्दी
२९. छंद संग्रह	गंगादास	३८-३९	हिन्दी
		१७ छंद हैं ।	
३०. षट् कर्म छंद	—	३९	,,
३१. आदिनाथ स्तवन	—	३९	संस्कृत
३२. बलभद्र रास	ब्र० यशोधर	४०-४८	हिन्दी

विशेष—स्कंध नगर में रचना की गयी थी।

३३- बीस तीर्थंकर स्तवन	ज्ञान भूषण	४३	संस्कृत
३४- दिगम्बरों के ४ भेद	—	४३	संस्कृत
३५- व्रतसार	—	४३	संस्कृत
३६. दश धर्म वर्णन	—	४३	,,
३७. श्रेणिक कथा	—	४४–४७	,,
३८- लब्धि विधान कथा	पं० अभ्रदेव	४७–४६	,,
३६. पुष्पांजलि कथा	—	४६–५१	,,
४०.जिनरात्रि कथा	—	५१–५२	,,
४१. जिनमुखावलोकन कथा	सकलकीर्ति	५२–५३	,,
४२, एकावली कथा	—	५३–५४	,,
४३. शील कल्याणक व्रत कथा	—	५४–५५	,,
४४. नक्षत्रमाला व्रत कथा	—	५५	,,
४५. व्रत कथा	—	—	,,
६३. विधान करनेकी विधि	—	५५	संस्कृत
६४. अकृत्रिम चैत्यालय विनती	—	७३	संस्कृत
६५- आलोचना विधि	—	७३	,,
६६–७७ भक्तिपाठ संग्रह	—	७६ तक	,,
७८. स्वयंभू स्तोत्र	समंतभद्र	८१	,,
७६. तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामी	८२	,,
८०. लघु तत्वार्थ सूत्र	—	८२	,,

विशेष—सं० १६१६ माह वदि ५ को धन्ना ने प्रतिलिपि की। ५ अध्याय हैं।

८१. प्रतिक्रमण (श्रावक)	—	८४	संस्कृत
८२. लघुआलोचना	—	,,	,,
८३. महाव्रती आलोचना	—	८६	,,
८४. सीताहरण रास	—	८७	हिन्दी
८५. जीवन्धर रास	त्रिभुवनकीर्ति	८७–६३	,,

विशेष—रचनाकाल सं० १६०६ है इसकी रचना कल्पवल्ली नगर में हुई थी।

अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है—

श्री जीवंधर मुनि तप करी पुहुतु शिव पद ठाम
त्रिभुवनकीरति इम वीनवि देयो तम गुण ग्राम ॥८१॥

८६. पाशाकेवली	गर्गमुनि	६३–६५	संस्कृत
८७. यति भावनाष्टक	—	६५	,,
८८. जीरावलि वीनती	—	,,	हिन्दी

८९. कर्मविपाक रास ब्र० जिणदास ९९ हिन्दी
(ले०काल सं० १६१६)

९०. नेमिनाथ रास विद्याभूषण १००-१०४ हिन्दी

विशेष—देवपल्ली स्थान में विनयकीर्ति के शिष्य धन्ना ने प्रतिलिपि की थी।

९१. श्रावकाचार प्रतापकीर्ति १०४-७ हिन्दी
(र०काल सं० १५७५ मंगसिर सुदी २)

९२. यशोधर रास सोमकीर्ति १०७-१३ हिन्दी

९४. भविष्यदत्त रास विद्याभूषण ११४-२० ,,
(र०काल सं० १६०० श्रावण सुदी ५)

९५. उपासकाध्ययन प्रभाचन्द्र — संस्कृत
ले०काल सं० १६०० मगसर बुदी ६

९६. सामुद्रिक शास्त्र — १२०-१२४ संस्कृत
ले०काल सं० १६१६ मंगसिर बुदी ११

९७. शालिहोत्र — १२४-२५ संस्कृत

९८. सुदर्शनरास ब्र० जिनदास १२५-२९ हिन्दी पद्य
ले०काल सं० १६१६ मंगसिर बुदी ४

९९. नागश्रीरास ,, १२९-३२ ले०काल सं० १६१६ पौष सुदी ३
(रात्रि भोजन रास)

१००. श्रीपालरास ,, १३२-३६ ,,

१०१. महापुराण विनती गंगादास १३७-३९ ,,
ले०काल सं० १६१६ पौष बुदी

१०२. सुकौशल रास गंगुकवि १३९-४१ ,,

१०३. पल्य विचार वार्ता — १४१ ,,

१०४ पोसानुरास — १४२ ,,

१०५. चहुंगति चौपई — १४३ ,,

१०६. पार्श्वनाथ गीत मुनिलक्ष्मण्य समय १४३ ,,

राग अथरस—

दीनानाथं त्रिजगनाथं दशगणधर रचि साथं ।
देहूनवहाथं पारिश्वनाथं नु तारिभव पाथं रे ।।

१०७. ग्यारहप्रतिमा वीनती ब्र०जिणदास १४३ हिन्दी

१०८. पानीगालन रास — १४४ ,,

१०९. आदित्यव्रतरास — १४५ ,

११०. मालसी मूछ कथा — १४५-४६ ,,
९४ पद्य हैं

१११. गुणठाणा चौपई वीरचन्द १४६ ,,

११२. रत्नत्रयगीत — १४६ हिन्दी

जीव रत्नत्रय मन मांहि धरीनि कहि सु चारित्र सार

११४. अंबिकासार ब्र० जिणदास १४८-४८ ,,

१५८ पद्य हैं।

११५. आराधना सकलकीर्ति १४८-४९ हिन्दी ५५ पद्य

प्रतिबोध सार

११६. गुणतीसी सीवना — १४९ ,, ३२ पद्य

११७. मिच्छादोकरण ब्र० जिणदास ,, हिन्दी पद्य

(मिथ्यादुक्कड) ले० काल सं० १६१६ माह सुदी १४

११८. संताण भावना वीरचन्द १५०-५१ हिन्दी ९७ प०

अंतिम पद्य निम्न प्रकार है:—

सूरि श्री विद्यानंदि जय श्री सल्लिभूषण मुनिचन्द।
तस पट महिमानिलु गुरु श्रीचन्द लक्ष्मीचन्द।
तेह कुल कमल दिव संपती जंयति जपि वीरचन्द।
सुणतां भणतां ए भावना पामीइ परमानन्द ॥८७॥

११९. नेमिकुमार गीत मुनि १५१ हिन्दी

(हमची नेमनाथ) लावण्य समय र० काल सं० १५६४ ७८ प०

१२०. कलियुग चौपई — १५२ हिन्दी ७७ प०

१२१. कर्मविपाक चौपई — १५२-५३ ,, ६४ प०

१२२. बृहद् गुरावली — १५३ संस्कृत

१२३. ज्योतिष शास्त्र — १५४-५६ ,,

१२४. जम्बूस्वामी रास ब्र०जिणदास १५६-६६ हिन्दी

१००६ पद्य हैं।

१२५. चौबीस अतिशय — १६६-६७ ,, २७ पद्य

विनती

१२६. गणधर विनती — १६७ हिन्दी २६ पद्य

१२७. लघु बाहुबलि वेलि शांतिदास १६७ ,,

विशेष —शांतिदास कल्याणकीर्ति के शिष्य थे।

अंतिम पद्य निम्न प्रकार है—

भरत नरेश्वर आवीया नाम्यु निजवर शीस जी।
स्तवन करी इम जंपए हुँ किंकर तुं ईस जी।
ईस तुमनि छांडीराज मझनि आपीउ।
इम कही मन्दिर गया सुन्दर ज्ञान भुवने व्यापीउ।
श्री कल्याणकीरति सोम मूरति चरण सेव मितणि कह।
शांतिदास स्वामी आहुवलि सरण राखु पुत्र तम्ह तणी।

१२८. तीन चौबीसी पूजा विद्याभूषण १६८ ७१ संस्कृत
ले०काल सं० १६१६ ज्येष्ठ बुदी १३

१२९. पल्य विधान पूजा ,, १७१-७३ संस्कृत

१३०. ऋषिमंडल पूजा — १७३-७८ संस्कृत
ले०काल सं० १६१७ आषाढ सुदी ११

१३१. बृहद्कलिकुण्ड पूजा — १७८-७९ संस्कृत

१३२. कर्मदहन पूजा शुभचन्द्र १७९-८४ ,,
ले०काल सं० १६१७ आषाढ बुदी ७

१३३. गणधरवलयपूजा — १८४-८५ ,,

१३४. सकलीकरण विधान — १८५-८६ ,,

१३५. सहस्रनाम स्तोत्र जिनसेनाचार्य १८६-८८ ,,
ले०काल सं० १६१७ आषाढ सुदी ११

१३६. बृहद् स्नपन विधि — १८८-९४ संस्कृत
ले०काल सं० १६१७ सावण सुदी १०

प्रशस्ति—निम्न प्रकार है—

संवत् १६१७ वर्षे श्रावण सुदी १० गुरौ देवपल्यां श्री पार्श्वनाथभुवने श्री काष्ठासंघे भट्टारक श्री विद्याभूषण आचार्य श्री ५ विनयकीर्ति तच्छिष्य ब्रह्म धन्ना लिखतं पठनार्थं ।

१३७. लघुस्नपन विधि — १९४-९६ ,,

१३८-४१ सामान्य पूजा पाठ — १९६-२०० ,,

१४२. सोलहकारणपाखंडी — २०० ,,

१४३-१४७ नित्य नैमित्तिक पूजा — २००-५ ,,
ले०काल सं० १६१७

१४८. रत्नत्रय विधान नरेन्द्रसेन २०५-६ संस्कृत
(बड़ा अर्घ्य क्षमावणी विधि)

इति भट्टारक श्री नरेन्द्रसेन विरचिते रत्नत्रयविधि समाप्त । ब्र० धन्ना केन लिखितं ।

१४९. जलयात्रा विधि — २०६ संस्कृत
ले०काल सं० १६१७ भादवा बुदी ११

प्रशस्ति—सं० १६१७ वर्षे भादवा बुदी ११ श्री काष्ठासंघे म० श्री रामसेनान्वये । भट्टारक श्री विश्वसेन तत्पट्टे भट्टारक श्री विद्याभूषण आचार्य श्री विनयकीर्ति तच्छिष्य श्री धन्नाख्येन लिखतं । देवपल्यां श्री पार्श्वनाथ भुवने लिखितं ।

१५०. जिनवर स्वामी वीनती सुमतिकीर्ति २०६-६ हिन्दी

श्रीमूलसंघ महंत संत गुरु श्री लक्ष्मीचन्द ।
वीरचन्द विबुध बोधन्याय भूषण मुनिन्द ।
जिनवर वीनती जे भणि मनिधरी आणंद ।
भगति सुगति मुनिवर ते लहि जिटा परमानंद ।

सुमतिकीर्ति भवि भणि ये ध्यावो जिनवर देव ।
संसार माहि नवतयु पाम्बु सिवपरु देव ॥२३॥

इति जिनवर स्वामी विनती समाप्त ।

१५१- लक्ष्मी स्तोत्र सटीक	—	२०७-२०८	संस्कृत
१५२. कर्म की १४८ प्रकृतियों का वर्णन	—	२०८-१०	हिन्दी
१५३. विनती पार्श्वनाथ	—	२१०-११	,,

पद्य सं० १४

जय जगगुरु देवाधिदेव तुं त्रिभुवन तारण ।
रोग शोक अपहरणधरि सवि संपद कारण ।
रागादिक अंतरंग रिपु तेह निवारण ।
तिहुं अण सल्य जे मयण मोह भड़ देवि भंजण ।
चिन्तामणि श्रीपास जिनवर प्रद्युनवर शृंगार ।
मनह मनोरथ पूरणुए वांछित फल दातार ॥

१५४. विद्युत्प्रभ गीत	×	२११-१२	हिन्दी
१५५. बाईस परीषह वर्णन	—	२१२-१४	संस्कृत

ले०काल सं० १६३२ वैशाख सुदी १०

प्रहलादपुर में ब्र० धन्ना ने अपने पठनार्थ लिखा था ।

१५६. षट्काल भेद वर्णन	—	२१५	संस्कृत
१५७- दुर्गा विचार	—	२१६	,,
१५८. ज्योतिष विचार	—	२१६	,,

विशेष—इसमें वायस विचार, शकुन विचार, पल्ली विचार छींक विचार, स्वप्न विचार, अंगस्फुरक विचार, एवं वायस घट विचार आदि दिये हुए हैं ।

१५९. अकलंकाष्टक	—	२१६-१७	संस्कृत
१६०. परमानंद स्तोत्र	—	२१७	,,
१६१. ज्ञानांकुश शास्त्र	—	२१७-१८	,,
१६२ श्रुत स्कंध शास्त्र	—	२१८-१९	,,
१६३. सप्ततत्त्व वार्ता	—	२१९-२०	,,
१६४. सिद्धांतसार	—	२२०-२२	,,
१६५-६८ कर्मों की १४८ प्रकृतियों का वर्णन			
जैन सिद्धांत वर्णन चौबीसी ठाणा			
चर्चा, तीर्थंकर आयु वर्णन			
		२२३-३४	हिन्दी

ले०काल सं० १६१८ आसोज सुदी १

१६९. सुकुमाल स्वामी रास	धर्मरुचि	२५१-६५	हिन्दी

अन्तिमभाग—

वस्तु—

रास मनोहर २ किधु मि सार ।
सूकुमालनु अति रुअडु सुणता दुखदालिद्र टालि अति ऊजल ।
भण्यो तह्यो भविजलव्यु अनेक कथा इस वर्ण वीलोहु जल ।
श्री अभयचन्द्र गुरु प्रणमीनि ब्रह्मधर्म रुचि मणिसार ।
भणि गुणिज सोभलि ते पामि सुख अपार ।

इति श्री सूकुमाल स्वामी रास समाप्त ।

१७०. श्री नेमिनाथ प्रबंध	लावण्य समय मुनि	२६५-७०	हिन्दी	
१७१. उत्पत्ति गीत	—	२७१	,,	
१७२. नरसंगपुरा गोत्र छंद	—	२७१	,,	
१७३. हनुमंत रास	ब्र० जिणदास	२७३-२८६	,,	

अन्तिम पाठ—

वस्तु—रास कहयु २ सार मनोहर सहितयुग सार सहोजल ।
हनुमंत वीनु निर्मल अंजल ।
भांति केडवा अतिधणी भवीयणसुणआसार अजल
श्री सकलकीरति गुरु प्रणमीनि भवनकीरति भवसार ।
ब्रह्मजिणदास एणी परिभणी पढता पुण्य अपार ॥७२७॥

७२७ पद्य हैं ।

१७४. जिनराज वीनती	—	२६२	हिन्दी	
१७५. जीरावलदेव वीनती	—	,,	,,	
		ले०काल सं० १६३६		

संवत् १६२२ वर्षे दोमडी ग्रामे लिखितं ।

१७६. नेमिनाथ स्तवन	—	२६१	,,	३६ पद्य
१७७ होलीरास	ब्र० जिणदास	२६६	,,	
		ले०काल सं० १६२५ चैत सुदी ५		
१७८. सम्यक्त्व रास	ब्र० जिणदास	२६६-२६७	,,	
		ले०काल सं० १६२५ पौष सुदी २		
१७९. मुक्तावली गीत	सकलकीर्ति	२६७	हिन्दी	
		ले०काल सं० १६२६ पौष बुदी १३		
१८०. वृषभनाथ छंद	—	२६८	,,	
		ले०काल सं० १६४३ आसोज बुदी ३ ।		

१०२३२. गुटका० सं०४ । पत्रसं० १३० । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८३३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३८६ ।

विशेष—निम्न दो रचनाओं का संग्रह है—

क्रोपनक्रिया विधि—दौलतराम । भाषा-हिन्दी । पूर्ण । र०काल सं० १७६५ भादवा सुदी १२ । ले० काल सं० १८३३ ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १८३३ वर्षे मासोत्तमासे शुभज्येष्ठ मासे कृष्ण पक्षे पांडिवा शुक्रवासरे श्री उदयपुर नगरे मध्ये लिखितं साह मनोहरदास तोलेशलालजी सुत श्री जिनधरमी दौलतराम जी सीष ग्रंथ करता जणारी आज्ञा थकी राखा आनी तेरेपंथी देवधरम गुरु सरधा शास्त्र प्रमाणे वा ग्रंथ गुरु भक्ति कारक ।

२. श्रीपाल मुनीश्वर चरित ब्रह्म जिनदास हिन्दी

(ले०काल सं० १८३४)

१०२३३ गुटका सं० ५ । पत्रसं० १८० । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८५ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न रचनाओं का संग्रह है—

कवित्त	भानकवि	हिन्दी
ऋषि मंडल जाप्य	—	संस्कृत
देव पूजाष्टक	—	"

अन्य साधारण पाठ हैं ।

१०२३४. गुटका सं० ६ । पत्रसं० १६६ । आ० ११×८ इंच । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८४ ।

विशेष—निम्न प्रकार संग्रह है—

पूजा पाठ, पद, विनती एवं तत्वार्थसूत्र आदि पाठों का संग्रह है ।

बीच बीच में कई पत्र खाली हैं ।

१०२३५. गुटका सं० ७ । पत्रसं० १८५ । आ० ७×४ इंच । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८३ ।

मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

विशेष—सामायिक पाठ, भक्ति पाठ, आराधनासार, पट्टावलि, द्रव्य संग्रह, परमात्म प्रकाश, द्वादशानुप्रेक्षा एवं पूजा पाठ संग्रह है ।

१०२३६. गुटका सं० ८ । पत्रसं० १४० । आ० ६×४ इंच । भाषा-प्राकृत-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३८२ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

गुणस्थान चर्चा		प्राकृत
तत्वार्थसूत्र सार्थ	—	हिन्दी (गद्य)
भाव त्रिभंगी	नेमिचन्द्राचार्य	प्राकृत
आश्रव त्रिभंगी	—	"
पंचास्तिकाय	—	हिन्दी

हिन्दी गद्य टीका सहितहै

१०२३७. गुटका सं० ९ । पत्रसं० २१-१३१ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं० १७८१ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३८१ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

अनन्तनाथव्रत रास	ब्र० जिनदास		हिन्दी
भक्तामर स्तोत्र	आचार्य मानतुंग		संस्कृत
दान चौपई	समय सुन्दर वाचक		हिन्दी
पार्श्वनाथजी छंद संबोध	—		,,
		(ले०काल १७८१)	
बाहुबलिनी निपद्या	—		,,
		(ले०काल १७८१)	
रविव्रत कथा	जयकीर्ति		,,
सोलहकारण कथा	ब्र० जिनदास		,,
पाणीमालन रास	ज्ञानभूषण		,,

१०२३८. गुटका सं० १० । पत्रसं० ४९-९९ । आ० ८½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । ले०काल सं० १७८१ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३८० ।

विशेष - निम्न रचनाओं का संग्रह है—

हनुमंत कथा	ब्र० राममल्ल	हिन्दी	अपूर्ण
जम्बू स्वामी चौपई	पांडे जिनदास	,,	पूर्ण
मृगी संवाद	—	,,	अपूर्ण

१०२३९. गुटका सं० ११ । पत्रसं० ४२० । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८२० काती सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७९ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

अनन्तव्रत कथा	ब्र० जिनदास	हिन्दी	पत्रसं० ९
सोलहकारण रासा	,,	,,	१५
दशलक्षण व्रत कथा	,,	,,	२१
चारुदत्त प्रबंध रास	,,	,,	४५
गुरु जयमाला	,,	,,	५६
पुष्पांजलि पूजा	—	संस्कृत	७९
अनन्त व्रत पूजा	शांतिदास	हिन्दी	
पुष्पांजलि रास	ब्र० जिनदास	,,	
महापुराण चौपई	गंगदास	,,	
अकृत्रिम चैत्यालय विनती	लक्ष्मण	,,	

काष्ठासंघ विख्यात सूरी श्री भूषण शोभताए
चन्द्रकीर्ति सूरि राय तस्य शिष्य लक्ष्मण वीनती करूंए ।।

लुंकामत निराकरण रास	वीरचन्द	हिन्दी (र०काल सं० १६२७ माघ सुदी ५)	
मायागीत	ब्र० नारायण (विजयकीर्ति का शिष्य)	हिन्दी	१७७
त्रिलोकसार चौपई	सुमतिकीर्ति	,,	
होली भास	ब्र० जिनदास	,,	

विशेष—१४ पद्य हैं। उदयपुर नगर में प्रतिलिपि की थी।

सिन्दूर प्रकरण भाषा	बनारसीदास	हिन्दी (ले०काल सं० १७८५)	

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १७८५ वर्षे फागुण मासे शुक्लपक्षे प्रतिपदातिथौ सोमवासरे पूर्व भाद्रपदनक्षत्रे साका नामि गोत्रे मेवाडदेशे श्री उदयपुरनगरे महाराणा श्री संग्रामसिंह जी विजयराज्ये श्री मूलसंघे श्री संभवनाथ चैत्यालये भ० श्री विजयकीर्ति जी आम्नाये श्री हूमड ज्ञातीय वृद्धि शाखायां सु श्रावक पुण्य प्रभाव श्री देवगुरु भक्ति कारक श्री जिनाज्ञाप्रतिपालक द्वादशव्रतधारक लिखापितं बालेसा देवजी तत् सुत एक विंशति गुण विराजमान बाले सा श्री रतन जी पठनार्थं।

सुदर्शन रास	ब्र० जिनदास	हिन्दी	पत्रसं० २४३
रात्रि भोजनरास	,,	—	२८५
		(ले०काल सं० १७८७)	
दानकथा रास	—	—	२९५
		कथा लुब्धदत्त साहूकी)	
दानकथा रास	—	—	
		साह धनपाल की दान कथा है।	
अकलंक यति रास	ब्र० जयकीर्ति	हिन्दी (र०काल सं० १६६७)	

कोटा नगर में रचना की गई थी।

नामावलि छंद	ब्र० कामराज	हिन्दी	
तूर की शकुनावली	तूर	—	
		आंख फड़कने संबन्धी विचार	
बारह व्रत गीत	ब्र० जिनदास	हिन्दी	पत्रसं० ३५३
ग्यारह प्रतिमा रास	—	—	
मिथ्या दुक्कड जयमाल	—	—	
जीवडा गीत	—	—	
दर्शन बीनती	—	—	
भारथी राग जिणंद गीत	—	—	
बणजारा गीत	—	—	३६९

चेतन प्राणी गीत	—	—
काया जीव सुंवाद गीत	ब्रह्मदेव	—

श्री मूल संघे गच्छपति रामकीर्ति भवतार ।
तस पट कमल दिवसपति पद्मनंदि गुणधीर ।
तेहणा चरण कमल नमी गंगदास ब्रह्म पसाये ।
काया जीव सुवाडडो देवजी ब्रह्मगुण गाय ।

पोषह रास	ज्ञानभूषण	हिन्दी
ज्ञान पच्चीसी	बनारसीदास	,,
गोरखकवित्त	गोरखदास	,,
जिनदत्त कथा	रत्न भूषण	,,

संवत् १८२० में उदयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

१०२४०. गुटका सं० १२ । पत्र सं० ११० । आ०७×५ इञ्च । **भाषा**–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टन सं०** ३७८ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

क्षेत्रपाल पूजा	—	संस्कृत
ऋषिमंडज पूजा	—	संस्कृत
मांगी तुंगीजी की यात्रा	अभयचन्द सूरि	हिन्दी

विशेष—इसमें ४२ पद्य हैं । अन्तिम पंक्तियां निम्न प्रकार हैं—

भाव में भवियण सांभलोरे भणें अभयचन्द सूरी रे ।
जाइ ने बलभद्र जुहारिजो पापु जाइ जिमि दूरि रे ।

योगीरासा	जिनदास	हिन्दी
कलिकुंडपार्श्वनाथ स्तुति ।	—	,,

१०२४१. गुटका सं० १३ । पत्र सं० ६० । आ० ५½×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । **वेष्टन सं०** ३७७ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

कलिकुंड स्तवन, सोलहकारण पूजा दशलक्षण पूजा, अनन्तव्रत पूजा ।

अन्य पूजा पाठ संग्रह है ।

१०२४२. गुटका सं० १४ । पत्र सं० २०६ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७६ ।

मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

विरह के फुटकर दोहे	लालकवि	हिन्दी

नित्य पूजा हिन्दी

बुधरासा — ,, ले०काल सं० १७३७

प्रारम्भ का पाठ निम्न प्रकार है—

प्रणमीइ देव माय, पांचाइण कमसी ।
समरिए देव सहाय जैन सालग सामणी ।
प्रणमीइ गण हर गोम सामणी ।
दुरियणासे जेने नानि सद्गुरु वेसिणिरो कीजे ।

अन्त में—

संवत् १७३७ मंगसर सुदी ११ सेंगडी किसणजी खीमजी पठनार्थं ।

राजा यशोधर चरित्र— हिन्दी —

काया जीव संवाद गीत हिन्दी लेखक ब्रह्म

अंतिम भाग निम्न प्रकार है—

गंगदास ब्रह्म पसाये राणी काय जीव सुवादडो ।
देवजी ब्रह्म गुण गाय राणीला ।

इति काया जीव सुवादजीघ संपूर्ण ।

मढी आड का लाल जी कलाणजी स्वलिखिता ।
संवत् १७१२ वर्षे आषाढ बदी ११ गुरौ श्री उज्जेणी नगरे लिखता ।

यशोधररास हिन्दी ब्रह्म जिनदास

श्रेणिकरास ,, ,,

ले०काल सं० १७१३ माघ सुदी ५ ।

विशेष—अहमदाबाद नगर में प्रतिलिपि हुई थी ।

जिनदत्तरास हिन्दी पद्य ।

१०२४३. गुटका सं० १५ । पत्र सं० ११० । आ० ८×७ इंच । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं० १७३० । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३७२ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

अनन्तव्रत रास	,,	ब्र० जिनदास	हिन्दी	
जिनसहस्रनाम स्तोत्र	,,	आशाधर	संस्कृत	ले०काल सं० १७१६
प्रद्युम्न प्रबंध	,,		हिन्दी	

१०२४४. गुटका सं० १६ । पत्र सं० ३६ । आ० ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७३ ।

विशेष—नंदीश्वर पूजा जयमाल आदि है ।

१०२४५. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ८-८४ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३७४ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

प्रतिक्रमण पाठ	—	संस्कृत
राजुल पच्चीसी	—	हिन्दी
सामायिक पाठ	—	हिन्दी

१०२४६. गुटका सं० १८ । पत्रसं० ५६ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७५ ।

विशेष—मनोहरदास सोनी कृत धर्म परीक्षा है ।

१०२४७. गुटका सं० १९ । पत्रसं० ३-५३ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३७६ ।

विशेष—पूजा पाठ तथा विनती एवं पदों का संग्रह है ।

१०२४८. गुटका सं० २० । पत्रसं० ७५ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३६८ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

भक्तिपाठ	—	संस्कृत
बृहद् स्वयंभू स्तोत्र	—	,,
गुर्वावलि	—	,,
नेमिनाथ की विनती	—	हिन्दी

१०२४९. गुटका सं० २१ । पत्रसं० २०७ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६९ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

हनुमतरास	ब्र० जिनदास	हिन्दी
जम्बूस्वामीरास	,,	,,
पोषहरास	ज्ञानभूषण	,,
संबोध सनाणु दूहा	वीरचन्द	,,
नेमकुमार	वीरचन्द	,,
		ले०काल सं० १६३८
सुदर्शनरास	ब्र० जिनदास	हिन्दी
धर्मपरीक्षारास	ब्र० जिनदास	,,
		ले०काल सं० १६४४
अजितनाथ रास	,,	हिन्दी

१०२५०. गुटका सं० २२ । पत्र सं० २२८ । आ० ६½×६ इञ्च । भाषा-प्राकृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३६७ ।

विशेष—प्रारम्भ में पूजा पाठ हैं । तत्पश्चात् जम्बूद्वीप पण्णत्ति दी हुई है । यह तेरह उद्देश तक है ।

१०२५१. गुटका सं० २३ । पत्र सं० ६४ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३६६ ।

विशेष—गुणस्थान चर्चा एवं समाधि मरण का संग्रह है ।

१०२५२. गुटका सं० २४ । पत्रसं० ८६ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६४ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

आदित्यवार कथा	—	भाऊ	हिन्दी
विषापहार भाषा	—	अचलकीर्ति	,,
कल्याण मंदिर भाषा	—	बनारसीदास	,,
सर्वजिनालय पूजा	—	—	संस्कृत

१०२५३. गुटका सं० २५ । पत्रसं० १५ । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३६५ ।

विशेष—आचार शास्त्र संबंधी ११८ गाथाएं हैं ।

१०२५४. गुटका सं० २६ । पत्र सं० २८-१२३ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २८४ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं ।

आदित्यवार कथा	—	भाऊ कवि	हिन्दी
श्रीपाल स्तुति	—	महाराम	ले०काल सं० १८१०
भक्तामर भाषा	—	हेमराज	हिन्दी
विनती	—	कनककीर्ति	, ले०काल सं० १८०८

१०२५५. गुटका सं० २७ । पत्रसं० १० से १८० । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २८५ ।

१०२५६. गुटका सं० २८ । पत्र सं० १४८ । आ० १०½×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २८६ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

सामायिक पाठ सटीक.....हिन्दी गद्य । ले०काल सं० १८२३

कर्म विपाक भाषा विचार— ढूंढारी पद्य । पद्य सं० २४०५ हैं ।

सम्यक्त्व कौमुदी—जोधराज गोदीका । हिन्दी गद्य । ले०काल सं० १८३२

महाराजा हमीरसिंह के शासन काल में उदयपुर में प्रतिलिपि हुई ।

१०२५७. गुटका सं० २९ । पत्र सं० २६६ । आ० ७½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८२३ अपूर्ण । वेष्टन सं० २८७ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

नाटक समयसार	—	बनारसीदास	र० काल सं० १६६३। हिन्दी
पंचास्तिकाय भाषा	—	हीरानन्द	,,
भक्तामर भाषा	—	हेमराज	,,

१०२५८. गुटका ३० । पत्रसं० १७६ । आ० १२×६ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २८८ ।

रत्नत्रय पूजा — संस्कृत

विशेष—नरेन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि कराई थी ।

आदित्यवार कथा	अर्जुन	प्राकृत	
कल्याणस्तोत्र वृत्ति	विनयचंद्र	संस्कृत	×

१०२५९. गुटका सं० ३१ । पत्र सं० ७० । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २८९ ।

१०२६०. गुटका सं० ३२ । पत्र सं० ८६ । आ० १२×८इंच । **भाषा**–हिन्दी–संस्कृत । ले० काल सं० १७६० । पूर्ण । वेष्टन सं० २९० ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

सरस्वती स्तवन एवं पूजा—ज्ञानभूषण		संस्कृत
मुनीश्वर जयमाल	पाण्डे जिनदास	हिन्दी
सम्यक्त्वकौमुदी	जोधराजगोदिका	,,

१०२६१. गुटका सं० ३३ । पत्र सं० ४० । आ० ६×५ इंच । **भाषा**–हिन्दी। ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २९३ ।

१०२६२. गुटका सं० ३४ । पत्र सं० १०० । आ० ६×५½ इंच । भाषा—हिन्दी । ले० काल अपूर्ण । वेष्टनसं० २९४ ।

विशेष—निम्न मुख्य पाठों का संग्रह है—

पार्श्वनाथ जी की विनती	मुनि जिनहर्ष	हिन्दी
योगसार	क्षेमचन्द्र	,, ले० काल सं० १८२४
आत्मपटल	—	,,
जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	संस्कृत
परमात्मप्रकाश	योगीन्द्र देव	अपभ्रंश

१०२६३. गुटका सं० ३५ । पत्रसं० ९३ । आ० ८×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल सं० १६८९ । पूर्ण । वेष्टनसं० २९६ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

१०२६४. गुटका सं० ३६ । पत्रसं० ४३ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २९७ ।

विशेष--पूजा पाठ एवं सामायिक पाठ आदि का संग्रह है।

१०२६५. गुटका सं० ३७। पत्रसं० १०४। आ० ४½×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० २६८।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

१०२६६. गुटका सं० ३८। पत्रसं० १६ । आ० ५×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० २६६।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

१०२६७. गुटका सं० ३६। पत्रसं० ३-२३०। आ० ५½×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टनसं० ३००।

विशेष—बनारसीदासकृत नाटक समयसार है।

१०२६८. गुटका सं० ४०। पत्रसं० ३००। आ० ८½×७ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले०काल सं० १६८६ वैशाख बुदी १४। वेष्टनसं० ३३१।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार है—

परमात्म प्रकाश, द्रव्य संग्रह, योगसार, समयसार भाषा (राजमल्ल—आगरा में सं० १६८६ में प्रतिलिपि हुई थी) एवं गुणस्थान चर्चा आदि हैं।

१०२६९. गुटका सं० ४१।

विशेष—

समयसार वृत्ति है। अपूर्ण। वेष्टनसं० ३३२।

१०२७०. गुटका सं० ४२। पत्रसं० १४०। आ० ४½×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टनसं० ३३३।

विशेष—अक्षर घसीट हैं।

१०२७१. गुटका सं० ४३। पत्रसं० २५ । आ० ६×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ३३४।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

१०२७२. गुटका सं० ४४। पत्रसं० २२६। आ० ८×६ इञ्च। भाषा—हिन्दी। ले० काल सं १८३३। पूर्ण। वेष्टनसं० ३३५।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रह है—

समयसार नाटक—बनारसीदास		हिन्दी
पोषहरास	ज्ञानभूषण	,,

१०२७३. गुटका सं० ४५। पत्रसं० १२०। आ० ५×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ३३६।

विशेष—बारहखड़ी आदि पाठों का संग्रह है।

१०२७४. गुटका सं० ४६ । पत्र सं० ४१ । आ० ६×५ इञ्च । **भाषा**-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३३७ ।

विशेष—पद एवं स्तोत्रों का संग्रह है ।

१०२७५. गुटका सं० ४७ । पत्रसं० १५५ । आ० ५½×३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३३८ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

मधु बिंदु चौपई	भगवतीदास	हिन्दी (पद्य)	
		(र०काल सं० १७४०)	
सिद्ध चतुर्दशी	,,	,,	
सम्यक्त्व पच्चीसी	,,	,,	
		(ले०काल सं० १८२५)	
द्यानविलास के अन्य पाठ	,,	,,	

१०२७६. गुटका सं० ४८ । पत्र सं० ३४५ । आ० ६×५ इञ्च । **भाषा**-प्राकृत-संस्कृत । ले०काल सं० १८१२ बैशाख सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० ३३९ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

गुणस्थान एवं लोक चर्चा, पंचस्तिकाय टब्बा टीका ।

तत्वज्ञान तरंगिणि—ज्ञानभूषण की भी दी हुई है ।

उदयपुर नगरे राजाधिराज महाराजा श्रीराजसिंहजी विजयते संवत् १८१२ का बैशाख सुदी १० ।

१०२७७. गुटका सं० ४९ । पत्र सं० ६० । आ० ६×४ इञ्च । **भाषा**-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४० ।

१०२७८. गुटका सं० ५० । पत्र सं० ९३ । आ० १०×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४१ ।

विशेष—पूजा, स्तोत्र एवं सामायिक आदि पाठों का संग्रह है ।

१०२७९. गुटका सं० ५१ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

कक्का बत्तीसी	—	हिन्दी	
बणजारो रासो	नागराज	,,	७ पद्य हैं
पंचगति बेलि	हर्षकीर्ति	,,	
पंचेन्द्रिय बेलि	बेलह	,,	

इनके अतिरिक्त पद, विनती एवं छोटे मोटे पदों का संग्रह है—

१०२८०. गुटका सं० ५२ । पत्रसं० १३४ । आ० १०×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३४२ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	संस्कृत

दशलक्षण पूजा	—	संस्कृत
क्षमावणी पूजा	नरेन्द्रसेन	—
पूजा पाठ संग्रह	—	—
वृहद चतुर्विंशति-तीर्थंकर पूजा	—	संस्कृत
चौरासीजाति जयमाल	ब्र० जिनदास	हिन्दी
शील बत्तीसी	अकूमल	हिन्दी
चिंतामणि पार्श्वनाथ	विद्यासागर	,,
वृहद् पूजा	—	—
स्फुट पद	भानुकीर्ति एवं महेन्द्रकीर्ति	,,

१०२८१. गुटका सं० ५३ । पत्रसं० १५१ । आ० ११X४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३४४ ।

विशेष—विभिन्न ग्रन्थों के पाठों का संग्रह है ।

१०२८२. गुटका सं० ५४ । पत्र सं० ८० । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३४५ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर

१०२८३. गुटका सं० १ । पत्रसं० १०० । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५३ ।

१०२८४. गुटका सं० २ । पत्रसं० × । वेष्टनसं० ५५२ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

१. नेमि विवाहलो—× । हिन्दी । पद्य । र०काल सं० १६९१ ।

२. चौबीस स्तवन—× । ,, ।

३. शेषनक्रिया विनती—ब्रह्मगुलाल । हिन्दी पद्य ।

४. महापुराण की चौपाई—गंगदास । हिन्दी पद्य ।

५. चिन्तामणि जयमाल—× । हिन्दी पद्य ।

१०२८५. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ९२ । आ० ५½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५५१ ।

विशेष—कल्याणमन्दिर स्तोत्र, भक्तामर स्तोत्र आदि स्तोत्र, मैनासुन्दरी सज्झाय एवं पद संग्रह है ।

१०२८६. गुटका सं० ४ । पत्र सं० ८० । आ० ४×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४९९ ।

विशेष—आयुर्वेद के नुस्खों का संग्रह है ।

१०२८७. गुटका सं० ५ । पत्र सं० ६४ । वेष्टन सं० ६८ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१. प्रतिक्रमण सूत्र—× । **भाषा**—प्राकृत ।
२. स्तुति संग्रह—× । **भाषा**—हिन्दी ।
३. स्त्री सज्झाय—× । **भाषा**—हिन्दी ।

१०२८८. गुटका सं० ६ । पत्र सं० ६३ । आ० ८½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८५ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१. बारहखड़ी—× । हिन्दी । पत्र १—७
२. बारहभासा—× । हिन्दी ।
३. अनित्य पंचाशिका—त्रिभुवनचन्द । हिन्दी ।
४. जैनशतक—× । भूधरदास । हिन्दी ।
५. शनिश्चर देव कथा—× । ,, ।

१०२८९. गुटका सं० ७ । पत्र सं० ४५ । आ० ८½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८८४ ।

विशेष—निम्न स्तोत्रों का संग्रह है—

१. शिवकवच—× । संस्कृत ।
२. शिवछन्द—× । ,, ।
३. वसुधारा स्तोत्र—× । संस्कृत ।
४. नवग्रह स्तोत्र—× । । ,,
५. सूर्य सहस्रनाम—× । ,,
६. सूर्य कवच—× । ,,

१०२९०. गुटका सं० ८ । पत्र सं० १ । **भाषा**-हिन्दी । ले०काल सं० × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८० ।

विशेष—नेमिनाथ के नव मंगल हैं ।

१०२९१. गुटका सं० ९ । पत्र सं० १६ । आ० ५½×४ इञ्च । भाषा संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७९ ।

विशेष—संध्या पाठ आदि हैं ।

१०२९२. गुटका सं० १० । पत्र सं० १६० । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७८ ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ, स्तवन, चिन्तामणि स्तोत्र, कर्म प्रकृति, जीव समास आदि का वर्णन है ।

स्नेह परिक्रम—नरपति । हिन्दी ।

विशेष—नारी से मोह न करने का उपदेश दिया है ।

नेमीश्वर गीत—× ।

१०२९३. गुटका सं० ११ । पत्रसं० २०० । आ० ६×५ इंच । भाषा—संस्कृत-प्राकृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७७ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

१. कंजिकावतोद्यापन—ललितकीर्ति । संस्कृत ।
२. सप्त भक्ति—× । प्राकृत । मालपुरा नगर में प्रतिलिपि हुई थी ।
३. स्वयंभू स्तोत्र—× । संस्कृत ।
४. तत्वार्थ सूत्र—उमास्वामि । ,,
५. लघुसहस्रनाम—× । ,,
६. इष्टोपदेश—पूज्यपाद । ,,

१०२९४. गुटका सं० १२ । पत्रसं० ४० । आ० ५×४ इंच । भाषा-संस्कृत । ले०काल सं० १७८१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७६ ।

विशेष—मंत्र शास्त्र, विषापहार स्तोत्र (संस्कृत) तथा यंत्र आदि हैं ।

१०२९५. गुटका सं० १३ । पत्रसं० १८० । आ० ७×५ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७५ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. भद्रबाहु गुरु की नामावली—× ।

विशेष—संवत् १५९७ से १६०७ पौष सुदी १५ तक । गोपाचल में प्रतिलिपि हुई थी । भट्टारक पद्मनंदि तक पट्टावली दी है ।

२. गच्छभेद	मूलसंघे	संघ ४	गच्छ	१६ भेद नामानि			
नंदि संघे	नंदि	१	चन्द्र	२	कीर्ति	३	भूषण ४
देवसंघे	देव	१	दत्ते	२	नाग	३	तुंग ४
सेनघ संघे	सिंह	१	कुंभ	२	आसक	३	सागर ४
श्रेणी संघे	सेन	१	भद्र		वीर	३	राज ४
श्री नदि संघे	सरस्वतीगच्छे				बलात्कारगणे		
श्री देवसंघे	पुस्तकगच्छे				देसीगणे		
श्री सेनसंघे	पुष्करगच्छे				सुरस्थगणे		
श्री सिंहसंघे	चन्द्रकपाटगच्छे				कानुरगणे		

३. सामायिक पाठ ४ भक्तिपाठ ५ तत्वार्थ सूत्र
६. भक्तामर स्तोत्र ७ स्तोत्रसंग्रह ८ नंदीश्वर की जयमाल ।
९. संबोध पंचासिका रइधू । अपभ्रंश ।

ले०काल सं० १५९७

प्रशस्ति—संवत् १५६७ वर्षे कार्तिकमासे कृष्णपक्षे मंगल त्रयोदश्यां मुसनेर नगरे श्री पद्म प्रभ चैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदि देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सकलकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक भुवनकीर्तिदेवातत्पट्टे भट्टारक श्री ज्ञानभूषणदेवास्तद् बृहद् गुरुभ्रातृश्री रत्नकीर्तिस्वधिराचार्यदेवातत्शिष्याचार्य श्री देवकीर्तिदेवा तद्शिष्यार्थ श्री शीलभूषण तच्छिष्य ब्र० क्षेमचन्द पठनार्थ स्वज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थं परोपकारायसाचन्द षडावश्यक ग्र थ स्वहस्तेनालेखि आचार्य श्री गुणचन्द्रेयं । शुभ भवतु ब्र० क्षेमचन्द पण्डित आत्मर्थी कूं षडावश्यक की पोथी दी थी । कल्याणमस्त

संवत् १६६१ वर्षे शाके सागवाडा नगरे आदिनाथ चैत्यालये मंडलाचार्य श्री सकलचन्द्रेण इदं पुस्तकं पण्डित वीरदासेण गृहीतं ॥

१०. जिन सहस्रनाम	×	संस्कृत
११. पद संग्रह	×	हिन्दी
१२. पंच परमेष्ठी गीत	यशःकीर्ति	हिन्दी
१३. नेमिजिन जयमाल	विद्यानन्दि	,,
१४. मिथ्या दुक्कड	ब्र० जिनदास	,,
१५. विनती	×	,,

१०२९६. गुटका सं० १४ । पत्र सं० १०१ । आ० ४×३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७४ ।

विशेष—नीति के श्लोक हैं ।

१०२९७. गुटका सं० १५ । पत्र सं० २६ । आ० ४×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७३ ×।

विशेष—विनती एवं पद आदि है ।

१०२९८. गुटका सं० १६ । पत्र सं० १०२ । आ० ५×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४७२ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

१. नवमंगल	लालविनोदी	
२. लेखपावली	हर्षकीर्ति	र०काल सं० १६८३
३. पद संग्रह	बखतराम, भूषण आदि के हैं ।	

१०२९९. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ५२ । आ० ६½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७१ ।

विशेष—पट्टी पहाड़े तथा स्तोत्र एवं मंत्र आदि हैं ।

१०३००. गुटका सं० १८ । पत्रसं० २३३ । आ० ५×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७० ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार है—

१. क्षेत्रपालाष्टक	विद्यासागर

२. गुरु जयमाल जिनदास
३. पट्टावली × ले०काल सं० १७५७

विशेष—ब्रह्म रूपसागर ने बारडोली में प्रतिलिपि की थी।

१०३०१. गुटका सं० १६। पत्रसं० २४०। आ० ५×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत-प्राकृत। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ४६६।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ संग्रह है। प्रति प्राचीन है।

१०३०२. गुटका सं० २०। पत्रसं० २२५। आ० ७×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ४६८।

विशेष—आयुर्वेद के नुसखों का संग्रह है।

१०३०३. गुटका सं० २१। पत्रसं० ७७। आ० ६½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ४६७।

विशेष—मुख्य निम्न पाठ हैं—

१. गौतमस्वामी रास	विनयप्रभ	हिन्दी र०काल सं० १४१२
२. चौबीस दण्डक	गजसागर	" ले०काल सं० १७६६
३. मुनिमालिका	चारित्रसिंह	" ले०काल सं० १६३२

अन्तिम—

संवत् सोल बत्तीस ए श्री विमलनाथ सुए साख।
दीक्षा कल्याणक दिने गूंथी श्री मुनिमाल ॥३२॥
श्री रिणीपुरे रलिया मणी श्री शीतल जिणचन्द।
सुर विजय राजे तदा संघ अधिक आणंद ॥३३॥
श्री मतिभद्र सुगुर तणें सु पसाये सुखकार।
मनुहर श्री मुनिमालिका गण गण परिमल पूर ॥३४॥
महामुनीसर गांवता सुर नर सफल विहाण।
अष्ट महानिधि घरै फलै सदा सदा कल्याण ॥

इति श्री मुनिमालिका संपूर्ण।

पद संग्रह विमलगिरि, दुर्गादास आदि के —

१०३०४. गुटका सं० २२। पत्रसं० १३१। आ० ५½× ६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० सं० ४६६।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है।

आरती संग्रह, विजया सेठनी वीनती, सुभद्रा वीनती, रत्नगुरु वीनती, निर्वाण काण्ड भाषा, चन्द्र-गुप्त के सोलह स्वप्न, चौवीस तीर्थंकर वीनती, गर्भवेलि-देवमुरार

ल०रेमास गरभ में रह्यो
ते दिन प्राणी विसरि गयो।
देवमुरार जी वीनती कही
आपेन पाई प्रभु आये लहि ॥७॥

बलभद्र वीनती, जिनराज वीनती, विनती संग्रह आदि हैं।

१०३०५. गुटका सं० २३ । पत्रसं० ११२। आ० × । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६५।

विशेष—निम्न लिखित पाठ हैं—

१. पंच कल्याणक	रूपचन्द	हिन्दी
२. आदित्यवार कथा	भानुकीर्ति	,,
३. अनन्तव्रतरास	ब्र० जिनदास	,,

मंत्र तथा यंत्र भी दिये हैं।

१०३०६. गुटका सं० २४। पत्र सं० २१। आ० ६×६ इंच। भाषा-संस्कृत। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ४६४।

विशेष—केवल पूजाएं हैं।

१०३०७. गुटका सं० २५। पत्रसं० ८०। आ० ६×५½ इंच। भाषा-हिन्दी। ले०काल सं० १८१३। पूर्ण। वेष्टन सं० ४६३।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१. भद्दली विचार	×	हिन्दी	ज्योतिष

विशेष—पाचोला में लिखा गया था।

२. सम्मेद विलास	देवकरण	हिन्दी

अन्तिम—

लोहाचार्य मुनिंद सुधर्म विनीत है।
तिन कृत गाथा बंध सुग्रंथ पुनीत है॥
साह तने अंबुसार सम्मेद विलास जु।
देवकरण विनवै प्रभु को दासजु॥
श्री जिनवर कूं सीस नमावं सोय।
धर्म वृद्धि तहां संचरै सिद्ध पदारथ सोय।

३. जीवदया छंद	भूधर	हिन्दी
४. अंतरीक्ष पार्श्वनाथ छंद	भाव विजय	,,
५. रेखता	मांडका	,,

६. भूलना	—	हिन्दी
७. छंदसार	नारायणदास	,,
८. छंद	केशवदास	हिन्दी
९. राग रत्नाकर	राधाकृष्ण	हिन्दी
१०. ज्ञानार्णव	शुभचन्द	संस्कृत

१०३०८. गुटका सं० २६ । पत्रसं० ८५ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६२ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार है—

वृषभनाथ लावणी मयाराम

विशेष—इसमें धूलेव नगर के वृषभनाथ (रिखबदेव) का वर्णन है। धूलेव पर चढाई आदि का वर्णन है।

१०३०९. गुटका सं० २७ । पत्र सं० ५० । आ० ५½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६१ ।

विशेष—मुख्यत: निम्न पाठ हैं—

१. वृषभदेवनी छंद	×	हिन्दी
२. सुभाषित संग्रह	×	संस्कृत
३. शान्तिनाथ की लावणी	×	हिन्दी

१०३१०. गुटका सं० २८ । । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५९ ।

विशेष—पद पूजा पाठ आदि हैं ।

१०३११. गुटका सं० २९ । पत्रसं० ६५ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५७ ।

विशेष— पद स्तुतियों का संग्रह है ।

१०३१२. गुटका सं० ३० । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५६ ।

विशेष— अभिषेक स्नपन पूजा पाठ एवं मंत्र विधि आदि है ।

१०३१३. गुटका सं० ३१ । पत्र सं० ५५ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५५ ।

विशेष विभिन्न कवियों के पद, स्तुति गिरधर की कुंडलियां, पिंगल विचार तथा स्तुतियां हैं।

१०३१४. गुटका सं० ३२ । पत्रसं० ८० । आ० ७×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५४ ।

विशेष—आयुर्वेद एवं ज्योतिष सम्बन्धी विवरण है ।

१०३१५. गुटका सं० ३३ । पत्र सं० ६६ । आ० × । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५३ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१. त्रिलोकसार चौपई	सुमतिसागर	हिन्दी
२. गीत सलूना	कुमुदचन्द	,,

१०३१६. गुटका सं० ३४ । पत्र सं० १०० । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २५२ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१. पद संग्रह—

२. विनती रिखवदेव जी धुलेव — अ० देवचन्द

विशेष—मागड देश में धुलेव के वृषभदेव (केशरिया जी) की दिगम्बर विनती है । मंदिर ५२ शिखर होने का विवरण है । कुल २६ पद्य है ।

अ० रामपाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३ पंच परमेष्ठी स्तुति — अ० चन्द्रसागर

अन्तिम—

दिगम्बरी गच्छ महा सिणगार ।
सकलकीर्ति गच्छपति गुणधार
तास शिष्य कहे मधुरी वाणि ।
ब्रह्म चन्द्र सागर बखाण ॥३२॥
नयर सज्यंत्रा परसिद्ध जाण ।
सासन देवी देवल मनुहार ॥
भणे गुणे तिहुं काल उदार ।
तह घर होसे जय-जयकार ॥३३॥

४. नेमिनाथ लावणी — रामपाल

विशेष—रामपाल ने स्वयं अपने हाथ से लिखा था ।

५. चौबीस ठाणाचर्चा	×	हिन्दी
६. औषधियों के नुसखे	×	,,
७. भ्रमर सिज्झाय	×	,,

विशेष—परनारी की प्रीत का वर्णन हैं ।

१०३१७. गुटका सं० ३५ । पत्रसं० १०० । भाषा-संस्कृत । ले०काल सं० × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४५० ।

विशेष—निम्न मुख्य पाठ है—

१. मेघमाला — संस्कृत ले०काल सं० १७२१

प्रशस्ति—संवत् १७२१ वर्षे [illegible] सुदी १० [illegible] (जयपुरनगर) स्थाने श्री शांतिनाथ चैत्यालये ब्र० श्री गणदास तत् शिष्य ब्र० श्री आत्मेन स्वहस्तेन लिखितेयं मेघमाला संपूर्ण ।।

संवत् १११५ से ११६२ तक के फल दिये हैं।

२. ग्रह नक्षत्र विचार, लाजिक शास्त्र एवं वर्षफल (सरस्वती महादेवी वाक्यम)।

ज्योतिष संबंधी गुटका है।

१०३१८. गुटका सं० ३६। पत्र सं० १५०। आ० ५×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। ले० काल सं० १७१४ व १७२२। पूर्ण। वेष्टन सं० ४४६।

निम्न उल्लेखनीय पाठ है—

१. पूजा अभिषेक पाठ	×	संस्कृत
२. ऋषिमंडल जाप्य विधि	×	संस्कृत

ले० काल सं० १७२२ माघ सुदी १५

प्रशस्ति—१७२२ वर्षे माघ सुदी १५ शुक्रे श्री मूलसंघे आचार्य श्री कल्याणकीर्ति शिष्य ब्र०चारि संघ जिष्णुना लिखितं पंडित हरिदास पठनार्थं।

३. नरेन्द्रकीर्ति गुरु अष्टक	×	संस्कृत
४. जिन सहस्रनाम	×	संस्कृत
५. गणधर वलय	भ० सकलकीर्ति	संस्कृत

ले०काल सं० १७२४

प्रशस्ति—सं० १७१४ वर्षे माघ बुदी २ भौमे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री रामकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री पद्मनंदि तत्पट्टे भ० देवेन्द्रकीर्ति तत् गुरु भ्राता मुनि श्री देवकीर्ति तत् शिष्याचार्य स्त्री कल्याणकीर्ति तत् शिष्य क० चंदिसंघि निष्पुणा लिखितं पं० अमरसी पठनार्थं।

६ चार यंत्र हैं— जलमंडल, अग्निमंडल, नाभिमंडल वायुमंडल।

७. पट्टावलि	हिन्दी	भट्टारक पट्टावलि दी हुई है।
८. सरस्वती स्तुति	आशाधर	संस्कृत

१०३१९. गुटका सं० ३७। पत्र सं० ५४। आ० ७×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४४८।

विशेष—औषधियों के नुसखे, यंत्र मंत्र तंत्र आदि, सूर्य पताका यंत्र, चौसठ योगिनी यंत्र लावणी-जसकलि।

अन्तिम— कोट अपराध मैं कीना तारा क्षमा करो जिनवर स्वामी।
तीन लोक नाइक साहिब सर्व जीव अन्तर जामी।।
जसकीर्ति की अरज सुनीले राखो सेवक तुम पाइ।
दीनदयाल कृपा निधि सागर आदिनाथ प्रभु सुखदायी।।

१०३२०. गुटका सं० ३८ । पत्र सं० ३२२ । आ० ६×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४७ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. सूक्ति मुक्तावली	सोमप्रभाचार्य	सुभाषित
२. सुभाषितावली	×	,,
३. सारोद्धार	—	,,
४. भर्तृहरि शतक	भर्तृहरि	,,
५. विष्णुकुमार कथा	×	,,
६. सुकुमाल कथा	×	,,
७. सागरचक्रवर्ति की कथा	×	,,
८. सोहं स्तोत्र	×	,,

१०३२१. गुटका सं० ३९ । पत्र सं० १८१ । आ० ६×५ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४५ ।

विशेष—गुटका महत्वपूर्ण है । वाजीकरण औषधियां, यंत्र मंत्र तंत्र, रासायनिक विधि, अनेक रोगों की औषधियां दी हुई हैं । पं० श्यामलाल की पुस्तक है ।

१०३२२. गुटका सं० ४० । पत्र सं० १४८ । आ० ६×७ इंच । भाषा–संस्कृत–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४१ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न हैं —

१. महावीर वीनती—प्रभाचन्द्र । हिन्दी ।

अन्तिम—डाकिनी साकिनि भूत बैताल
बाघ सिंघ ते नडे विकराल
तुझ नाम ध्याता दयाल ॥२८॥
जग मंगलकारी जिनेन्द्र ।
प्रभाचन्द्र वादिचन्द्र जोगिन्द्र ॥
स्तव विक्रम देवेन्द्र ॥२९॥

२. पार्श्वनाथ वीनती—वादिचन्द्र । हिन्दी । र० काल सं० १६४८ ।

३. सामायिक टीका — × । संस्कृत ।

४. लघु सामायिक — × । संस्कृत ।

५. शांतिनाथ स्तोत्र—मेरुचन्द्र । संस्कृत ।

अन्तिम -

व्यापारे नगरे रम्ये शांतिनाथजिनालये ।
रचितं मेरुचन्द्रेण पठंतु सुधियो जनाः ॥

६. वासुपूज्य स्तोत्र—मेरुचन्द्र । संस्कृत ।
७. तत्वार्थसूत्र—उमास्वामी । ,,
८. ऋषि मंडल पूजा—× । ,,
९. चैत्यालय वंदना—महीचन्द । हिन्दी ।

अन्तिम - मूलसंघे गछपति वीरचन्द्र पट्टे ज्ञानभूषण मुनींद ।
प्रभाचन्द्र तस पटे हुसे, उदयो धन्य ते हुंवड वंशे ।
तेह पट्टे जेणे प्रकट ज करो
श्री वादिचन्द्र जगमोर अवतरयो ।
तेह पट्टे सूरि श्री महीचन्द्र,
जेह दीठे होय आनन्द ।
चैत्याला भणसि नर नार,
तेह घट होसि जयजयकार । संपूर्ण ।
लिखितं ब्र० मेघसागर सं० १७२४ आसोज सुदी १ ।

१०३२३. गुटका सं० ४१ । पत्र सं० १६७ । आ० ९×६ इंच भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८६३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२२ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

१. पंचाख्यान कथा—× । हिन्दी ।

विशेष—हितोपदेश की कथा है । मंढा ग्राम में प्रतिलिपि हुई थी ।

२. चंदनमलयागिरि कथा—भद्रसेन । हिन्दी ।

विशेष—मारोठ में आचार्य सकलकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

३. चतुर मुकुट और चन्द्र किरण की कथा—× । हिन्दी ।

विशेष—२२७ पद्य हैं । रचनाकार का नाम नहीं दिया हुआ है ।

१०३२४. गुटका सं० ४२ । पत्र सं० २१० । आ० ६×६ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४३ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है । मुख्य पाठ निम्न हैं—

भक्तामर भाषा—हेमराज ।

छप्य—

सोरठ देश मझार गाम नंदीयर जाणो ।
मूलसंघ महंत तिजग मांहि बखाणो ।।
सील रोग सरीर तहां आचारिय निपनो ।
लेह गया समसान काष्ट मो भलो निपनो ।।
संवत १८ सौ तले बैपन गुरु वसना लोपी करि ।
सोम श्री ब्रह्म वाणी वंदे चमरी पीछी कर धरी ।।

२. यशोधर चरित्र—खुशालचंद ।

१०३२५. गुटका सं० ४३ । पत्र सं० ७६ । आ० ८×५½ इंच । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४४ ।

विशेष– नित्य तथा नैमित्तिक पूजा पाठ एवं स्तोत्र आदि हैं ।

१०३२६. गुटका सं० ४४ । पत्र सं० ४५ । आ० ५½×६½ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३३-१६३ ।

विशेष—पूजा एवं अन्य पाठों का संग्रह है ।

१०३२७. गुटका सं० ४५ । पत्र सं० ९९ । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३२-१६३ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१. पद्मावती गायत्री	संस्कृत	पत्र २१
२. पद्मावती सहस्रनाम	,,	पत्र २३
३. पद्मावती कवच	,,	पत्र २८
४. घण्टा कर्ण मंत्र	,,	पत्र ३२
५. हनुमस्त कवच	,,	पत्र ३२
६. मोहनी मंत्र	,,	पत्र ३८

१०३२८. गुटका सं० ४६ । पत्र सं० २२१ । आ० ५×५½ इंच । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल सं० १८९५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३१-१६३ ।

विशेष—निम्न मुख्य पाठ हैं—

१ आदित्य व्रत कथा—पांडे जिनदास ।	हिन्दी	पत्र १३७
२ ,, ब्र० महतिसागर	,,	पत्र १४४
३. अनन्तकथा—जिनसागर ।	,,	पत्र १७५

सामायिक पाठ, भक्तामर स्तोत्र एवं पूजा पाठों का संग्रह है ।

१०३२९. गुटका सं० ४७ । पत्र सं० १७८ । आ० ७×७ इंच । भाषा-संस्कृत-प्राकृत । ले०काल सं० १८११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२९-१६२ ।

विशेष—लघु एवं बृहद् प्रतिक्रमण पाठ, काष्ठासंघ पट्टावलि आदि पाठ हैं ।

१०३३०. गुटका सं० ४८ । पत्र सं० १८५ । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १८८२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२६-१६० ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. क्षेत्रपाल स्तोत्र—मुनि शोभाचन्द	हिन्दी	पत्र ३
२. स्नपन	,,	पत्र ६
३. पूजा संग्रह एवं जिन सहस्रनाम	संस्कृत ।	पत्र ५२
४. पुष्पांजलि व्रत कथा—ब्र० जिनदास ।	हिन्दी	पत्र ५८
५. सोलहकारण व्रत कथा	,,	पत्र ६३

६. दशलक्षण व्रत कथा —	—	हिन्दी	पत्र ६८
७. अनन्तव्रत रास	—	,,	पत्र ७४
८. रात्रि भोजन वर्णन	ब्र० वीर	,,	पत्र ७६

विशेष—श्री मूल संघे मंडणो जयो सरसीत गच्छराय ।
रतनचन्द पाटे हवो ब्रह्मवीर जी गुणगाय ॥

९. बाहुबलि नो छन्द—वादीचन्द्र ।		हिन्दी ।	पत्र ८४

विशेष—तस पाय लागे प्रभासचन्द ।
वाणि बोल्ये वादिचन्द्र ॥५८॥

१०. पारसनाथ नो छन्द— × ।		हिन्दी ।	पत्र ८७
११. नेमि राजुल संवाद—कल्याणकीर्ति ।		हिन्दी	पत्र ९३

१०३३१. गुटका सं० ४९ । पत्र सं० ३४ । **भाषा–हिन्दी । ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२५–१६० ।

विशेष—तीन लोक एवं गुणस्थान वर्णन हैं ।

१०३३२. गुटका सं ५० । पत्र सं० १२ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२३–१५९ ।

विशेष—निम्न पाठ है—

१. भट्टारक परम्परा २ बघेरवाल छंद

१०३३३. गुटका सं० ५१ । पत्रसं० ५४ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४१४–१५४ ।

विशेष—पहिले पद संग्रह हैं तथा पश्चात् भट्टारक पट्टावलि है ।

१०३३४. गुटका सं० ५२ । पत्र सं० ४०३ । **भाषा**-संस्कृत–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०७ १५३ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

१०३३५. गुटका सं० ५३ । पत्र सं० १८९ । आ० $3\frac{1}{2}$ × ४ इञ्च । भाषा–संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८४–१४३ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

१. आदित्यवार कथा	वादिचन्द्र सूरि के शिष्य महीचन्द	पत्र १४७ तक
२. आराधना प्रतिबोधसार	सकलकीर्ति	पत्र १५८ ,,
३. आदित्यवारनी वेल कथा	—	१८४ ,,

१११ पद्य हैं ।

१०३३६. **गुटका सं० ५४** । पत्र सं० ४० । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६७-१४० ।

विशेष—गुणस्थान चर्चा, स्तोत्र एवं आराधना प्रतिबोधसार है ।

१०३३७. **गुटका सं० ५५** । पत्र सं० ४६४ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५६-१३८ ।

विशेष—विभिन्न प्रकार की १०० पूजा एवं स्तोत्रों का संग्रह है । गुटके में सूची दी हुई है ।

१०३३८. **गुटका सं० ५६** । पत्र सं० १०० । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५५-१३७ ।

मुख्य निम्न पाठ है—

१. गुणस्थान चर्चा	×	हिन्दी	पत्र १-६६ पर
२ त्रैलोक्यसार	×	,,	६७-९६ ,,
३. भद्रपुराण विनती	गंगादास	,,	

१०३३९. **गुटका सं० ५७** । पत्र सं० ५९४ । आ० ६×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५२-१३४ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न हैं—

१.भक्तिपाठ	×	प्राकृत-संस्कृत	
२. स्वयंभू स्तोत्र	समंतभद्र	,,	
३. भक्तामर स्तोत्र (समस्या पूर्ति)	भुवनकीर्ति	,,	४६ पद्य हैं ।
४. ,, (द्वितीय स्तोत्र)	×	,,	
५. पंच स्तोत्र	×	,,	
६. महिम्न स्तोत्र	पुष्पदंत	,,	
७. सकलीकरण मंत्र	×	,,	
८. सरस्वती स्तोत्र	×	,,	१६० पत्र पर
९. अन्नपूर्णा स्तोत्र	×	,,	१६१ पत्र
१०. चक्रेश्वरी स्तोत्र	×	,,	१६२ ,,
११. इन्द्राक्षी स्तोत्र	×	,,	१६६ ,,
१२. ज्वालामालिनी स्तोत्र	×	,,	१६८ ,,
१३. पंचमुखी हनुमान कवच	×	,,	१७१ ,,
१४. शनिश्चर स्तोत्र	×	संस्कृत	१८७ पत्र पर
१५. पार्श्वनाथ पूजा	×	,,	१९२ ,,
१६. पद्मावती कवच एवं सहस्रनाम	×	,,	२१४ ,,
१७. पार्श्वनाथ आरति	×	हिन्दी	
१८. भैरव सहस्रनाम पूजा	×	संस्कृत	२१३ ,,

१९. भैरव मानभद्र पूजा एवं स्तोत्र	शान्तिदास	,,	२४९	,,
२०. नवग्रह पूजा	×	,,	२५४	,,
२१. क्षेत्रपाल पूजा	×	संस्कृत	२६१	,,
२२. गुरावलि	×	संस्कृत गद्य	२६७	
२३. जिनाभिषेक विधान	सुमतिसागर	,,	२७४	
२४. सप्तर्षि पूजा	सोमदेव	संस्कृत	२८०	,,
२५. पुण्याहवाचन	×	,,	२९२	,,
२६. देवसिद्ध पूजा	आशाधर	,,	२९९	,,
२७. विद्यादेवतार्चन	×	,,	३०७	,,
२८. चतुर्विंशति पद्मावती स्थापित पूजा		,,	३३४	,,
२९. जिनसहस्रनाम	जिनसेन	,,	३४३	,,
३०. विविध पूजा संग्रह	×	,,	३७४	,,
३१. छप्पय	जिनसागर	हिन्दी	३७६	,,
३२. चौबीसी	रत्नचन्द	,, र० काल सं० १९७६	३८२	,,
३३. सर्वांकुशषटपद	भ० महीचन्द	,,	३९४	,,
३४. रविव्रत कथा	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी	४१०	,,
३५. पञ्चकल्याण	×	,,	४२०	
३६. अनन्त व्रत कथा	×	हिन्दी	४३१ पत्र पर	
३७. अन्तरीक्ष पार्श्वनाथ स्तवन	×	,,	४६१	,,
३८. मांडणा भूतना	×	,,	४७०	
३९. कवित्त	सुन्दरदास	,,	४८०	
४०. भवबोध	×			
४१. भगवद् गीता	×		४९३-५९५	

१०३४०. गुटका सं० ५८ । पत्र सं० ३७७ । आ० ४×४½ इञ्च । **भाषा**–हिन्दी–संस्कृत–प्राकृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २५१–१३३ ।

विशेष— पूजा स्तोत्र पद एवं अन्य पाठों का संग्रह है । गुटके में पूरी सूची दी हुई है ।

१०३४१. गुटका सं० ५९ । वेष्टन सं० २५०–१३२ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है :–

१. रत्नत्रय विधान—	काष्ठासंघी भ० नरेन्द्रसेन ।	संस्कृत ।	
२. बृहद्स्नपन विधि—	×	,,	
३. गुरु अष्टक —	श्रीभूषण	,,	
४. कर्मदहनपूजा —	शुभचन्द	,,	
५. जलयात्रा विधि —	×	,,	

६. पल्य विधान — × संस्कृत
७. जिनदत्तरास — × ,,

शक संवत् १६२५ सर्वगति नाम संवत्सरे आषाढ सुदी ८ गुरुवारे लिखितं कारंजामाहिनगरे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये भट्टारक श्री छत्रसेन गुरूपदेशात् लिखितं वाया बाइन लेहविलं ।

८. लघुस्नपन विधि— ब्र० ज्ञानसागर । संस्कृत ।

१०३४२. गुटका सं० ६० । पत्र सं० × । वेष्टन सं० ३३४-१२८ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१. दानशीलतप भावना	—	श्री भूषण	हिन्दी पद्य	ले० काल १७६५
२. आषाढ भूतनी चौपई	—	×	,,	—
३. बंधक ग्रंथ	—	नयनसुख	,,	ले० काल १८१४
४. मुकौशल रास	—	×	,,	—
५. प्रद्युम्नरास	—	×	,,	—

प्रशस्ति—संवत् १८१४ वर्षे शाके १६७९ प्रवर्तमाने मासोत्तम मासे शुभकारीमासे आश्विनमासे शुक्लपक्षे तिथि ५ चंद्रवारे श्रीमत् काष्ठासंघे नन्दितटगच्छे विद्यागणे भ० श्री रामसेनान्वये तदनुक्रमेण भ० श्री सुमतिकीर्ति जी तत्पट्टे आ० श्री रूपसेन जी तत्पट्टे आ० विनयकीर्ति जी तत् शिष्य श्री विजयसागर जी पं० केशव जी पंडित नाथ जी लिखितं ।

१०३४३. गुटका सं० ६१ । पत्र सं० १९६ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६०-११४ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१. श्रेणिक चरित्र	—	हूंगा वैद	र० काल सं० १६९९ भादवा बदी १३
२. जसोधर चौपई	—	लक्ष्मीदास	
३. सम्यक्त्व कौमुदी	—	जोधराज	
४. जम्बूस्वामी चौपई	—	पांडे जिनदास	र० काल सं० १६४२
५. प्रद्युम्न कथा	—	ब्र० वेणीदास	,,
६. नागश्री कथा	—	किशनसिंह	ले० काल सं० १८१९

विशेष—अहिपुर में प्रतिलिपि हुई ।

१०३४४. गुटका सं० ६२ । पत्रसं० ३२१ । आ० ९×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टनसं० २७६–१०८ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१–विनती एवं भावनाएं—× । हिन्दी
२–पंच मंगल—रूपचन्द—× । ,,
३–सिंदूर प्रकरण—बनारसीदास । हिन्दी
५–भक्तिबोध—दासकृत । गुजराती

६-लघु आदित्यवार कथा—भानुकीर्ति । हिन्दी
७-आदित्यवार कथा—माऊ हिन्दी ।
८-अखडी—रामकृष्ण । हिन्दी ।
९-अखडी—भूधरदास । हिन्दी ।
१०-ऋषभदेवगीत—रामकृष्ण । हिन्दी ।
११-बनारसी विलास—बनारसीदास । हिन्दी ।
१२-बलिभद्र विनती—× । हिन्दी ।
१३-छन्द—नारायनदास । हिन्दी ।

१०३४५. गुटका सं० ६३ । पत्र सं० २५ । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७६५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७५-१०७ ।

विशेष—देव, बिहारी, केशव आदि की रचनाओं का संग्रह है । गुटका बडा है बारहमासा सुन्दर कवि का भी है ।

१०३४६. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ४६ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २२०-८७ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१-अनुरुद्ध हरण	—	जयसागर ।
२-श्रीपाल दर्शन	—	× ।
३-पद्मावती छद	—	× ।
४-सरस्वती पूजा	—	× ।

१३४७. गुटका सं० ६५ । पत्र सं० फुटकर । आ० ६$\frac{3}{5}$×४$\frac{1}{5}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टन सं० २१३-८६ ।

विशेष—सप्तव्यसन चौपई, आदित्यवार कथा आदि हैं ।

१०३४८. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० ६२ । आ० ७$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८०-७५ ।

विशेष—लघु चाणक्य एवं आदिनाथ स्तवन और धर्मसार हिन्दी में है ।

१०३४९. गुटका सं० ६७ । पत्र सं० १०४ । आ० ८×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६९-७२ ।

विशेष-निम्न ग्रंथ हैं—

१-भाषा भूषण—जसवंत सिंह । २०८ पद्य हैं ।
२-सुन्दर शृंगार-महाकविराज ।
३-बिहारी सतसई—बिहारीलाल । ले० काल सं० १८२८ ।
४-मधुमालती कथा—चतुर्भुजदास । ८७७ छन्द हैं ।

१०३५०. गुटका सं० ६८ । पत्रसं० २१५ । आ० ८×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं० १८८६ । वैशाख वदी ४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४२-६४ ।

विशेष—इसी वेष्टनसं० पर एक गुटका और है ।

१०३५१. गुटका सं० ६६ । पत्र संख्या १४२ । आ० ९$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं० १८७० । पूर्ण । वेष्टनसं० १४१-६४ ।

विशेष—निम्न संग्रह है ।

१-नैमित्तिक पूजायें ।

२-मानतुंग मानवती—मोहन विजय । हिन्दी ।

३-साढ समझरी—× । सं० १८०१ से १८६८ तक का वर्णन है ।

४-अनंत व्रत रास—जिनसेन ।

१०३५२. गुटका सं० ७० । पत्र सं० फुटकर पत्र । आ० ७$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ११२-५४ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

१०३५३. गुटका सं० ७१ । पत्र सं० १०० । आ० ९×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७२-४२ ।

विशेष—भक्तिपाठ के अतिरिक्त मुख्य निम्न पाठ हैं—

१. आदित्यवार कथा—महीचन्द । हिन्दी । पत्र ७८

महिमा आदित्य व्रत तणोए हवै जगत विख्यात ।
जे कर सी नर नारी एह ते पाये सुख भन्डार ।
मूल संघ महिमा उत्तंग सूरि आदी चंद्र ।
गछ नायक तस पटेधर कहे श्री महीचन्द्र ।

२. महापुराण विनती—गंगदास । हिन्दी पत्र ९२ ।

१०३५४. गुटका सं० ७२ । पत्रसं० १९९ । आ० ९×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७-४१ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाओं का संग्रह है ।

१०३५५. गुटका सं० ७३ । पत्र सं० १३८ । आ० ६$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८-६ ।

विशेष—पूजा पाठ एवं स्तोत्र संग्रह है ।

प्राप्ति स्थान—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर

१०३५६. गुटका सं० १ । पत्रसं० २२३ । भाषा-हिन्दी (पद्य) । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४८३ ।

विशेष—अश्वचिकित्सा सम्बन्धी पूर्ण विवरण है ।

१०३५७. गुटका सं० २ । पत्र सं० ७२ । आ० ६×६ इंच । भाषा–हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४१ ।

विशेष—पूजा पाठ तथा विरुदावली है ।

१०३५८. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ६० । आ० ६×६ इंच । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४४० ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह है ।

१०३५९. गुटका सं० ४ । पत्र सं० ७-१२२ । आ० ५×६ इंच । भाषा—हिन्दी । ले० काल ×। अपूर्ण । वेष्टन सं० ३७३ ।

विशेष—कबीरदास के पदों का संग्रह है ।

१०३६०. गुटका सं० ५ । पत्र सं० ३० । आ० ६×४ इंच । भाषा—प्राकृत-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३२६ ।

विशेष—सुभाषित तथा गोम्मटसार चर्चा संग्रह है ।

१०३६१. गुटका सं० ६ । पत्र सं० २-२३ । आ० ६×४ इंच । भाषा–हिन्दी । ले० काल× । अपूर्ण । वेष्टन सं० २५१-६४० ।

विशेष—वैद्य रसायन ग्रंथ है ।

१०३६२. गुटका सं० ७ । पत्र सं० ४६ । आ० ५×४ इंच । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २३० ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

अनंत पूजा	ब्र० शांतिदास	हिन्दी	—
अनंतव्रतरास	ब्र० जिणदास	,,	—

प्रति प्राचीन है ।

१०३६३. गुटका सं० ८ । पत्र सं० ११३ । आ० ८½×५ इंच । भाषा–संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२६ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

चरचा बासठ	बुधलाल	हिन्दी	स्तवन

विशेष—चौबीस तीर्थंकरों के पंचकल्याणक तिथि, महिमा वर्णन, शरीर की ऊंचाई वर्णन, शरीर का रंग तथा तीर्थंकरों के शासन व उपदेश निरूपण का वर्णन है ।

अन्तिम भाग—

अन्त एकादश पूरब चौदह और प्रज्ञापति पंच बखाणे ।
चूलीका पंच है प्रथमानुयोग सुभ सिद्धान्त सु एकही जानी ।।
प्रकीर्णक चौदह कहे जगदीस सर्व मिलि सूत्र एकावत मानो ।
ए जिन भाषित सूत्र प्रमाण कहे बुधलाल सदाचित आनो ।।६२।।

दोहा

देव शास्त्र गुरु नमी करी ए जिनगुण पुण्य महान ।
मुझ बुधि सूत्रे करी माल गूंथि सुखदान ॥१॥
भविजन पावें पहरज्यों एक अपूरव हार ।
यशःकीर्ति गुरुनाम करि कहे लाल सुखकार ॥२॥
संवत् ओगणि दश साल में शुद फागुणना सुभमास ।
दशमिदिन पूरण भया चरचा बासठ भास ॥३॥
पढें सुणे जे भावथी भविजन को सुख करणं ।
लाल कहे मुझ भव भव थो प्रभु हो जो तुम चरण ॥४॥

इति चरचा बासठि संपूर्ण ।

२. सार संग्रह		संस्कृत		पूर्ण
३. शान्तिहोम विधान	—	उपाध्याय व्योमरस	संस्कृत	—
अन्तिम पुष्पिका	—	इति श्री उपाध्याय व्योमरस विरचिते शांति होम विधान समाप्तं		
४. मंगलाष्टक	—	भ० यशःकीर्ति	संस्कृत	—
५. वृषभदेव लावणी	—	लाल	हिन्दी	—

(भट्टारक यशःकीर्ति के शिष्य लाल)

गुजरात देश में चोरीवाड नामक स्थान के आदिनाथ की लावणी है ।
उनकी प्रतिष्ठा का संवत् निम्न प्रकार है—

संवत् उगणी सा साला वरषे वैशाख मास शुक्लपक्षे ।
षष्ठदिन सिंगासण जिनकी प्रतिष्ठा कीधी मनहरषे ॥

इसके अतिरिक्त नित्यनैमित्तिक पूजाओं का संग्रह है ।

चित्र व यंत्र

यंत्र कागज व कपडे पर

१०३६४. १-हाथी के चित्र में यंत्र—

विशेष—यह चित्र कागज पर है किन्तु कपडे पर चिपका हुआ है। यह १५ वीं शताब्दी की कला का द्योतक है। हाथी काफी बड़ा है। उस पर देव (इंद्र) बैठा है। सामने बच्चे को गोद में लिये हुए एक देवी है संभव है इन्द्राणी हो। ऐसा लगता है कि भगवान के जन्मोत्सव का हो। चित्र में लोगों की पगडियां उदयपुरी हैं।

१०३६५. २-पंच हनुमान वीर—

विशेष—कपडे पर (२०×२० इंच) हाथी, घोड़े तथा हनुमानजी का चित्र है।

१०३६६. ३-श्रुत ज्ञान यंत्र—

विशेष—भट्टारक हेमचन्द्र का बनाया हुआ यह यंत्र कपड़े पर है। इसका आकार ३६×४४ इंच है।

१०३६७. ४-काल यंत्र—

विशेष—यह उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल चक्र का यंत्र कपड़े पर है। इसका आकार २२×२२ है। इस पर सं० १७४७ का निम्न लेख है—

संवत् १७४७ भादवा सुदी १५ लिखतं तेजपाल संघई अगरवाला गर्गगोत्रि वांचै ज्यानै म्हां को श्री जिनाय नमः।

१०३६८. ५—तीन लोक चित्र—

विशेष—यह यंत्र ४०×२२ इंच के आकार वाले कपड़े पर है। यह काफी प्राचीन प्रतीत होता है। इसमें स्वर्ग, नरक तथा मध्यलोक का सचित्र वर्णन है। सभी चित्र १५ वीं या १६ वीं शताब्दी के हैं।

१०३६९. ६-शांतिनाथ यंत्र—

विशेष—१२×१२ इंच के आकार वाले कपड़े पर यह यंत्र है।

१०३७०. ७-अढाई द्वीप मंडल रचना—

विशेष—यह ३६×३६ इंच आकार वाले कपड़े पर है। इसमें तीर्थंकरों तथा देवदेवियों आदि के सैकड़ों चित्र हैं। चित्र १६ वीं शताब्दी की कला के द्योतक हैं तथा श्वेताम्बर परंपरा के पोषक हैं।

१०३७१. ८-नेमीश्वर बारात तथा सम्मेदशिखर चित्र—

विशेष—यह ७२×३६ इंच के आकार के कपडे पर है। इसमें गिरनार तथा सम्मेदाचल तीर्थ वहां के मंदिरों तथा यात्रियों आदि के चित्र हैं। चित्र-कला प्राचीन है।

प्राप्ति स्थान—(संभवनाथ मंदिर उदयपुर)

अवशिष्ट रचनायें

१०३७२. **अठारह नाता का गीत**—**शुभचन्द्र**। पत्रसं० ९। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–कथा। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३१८। **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

१०३७३. **अथर्ववेदप्रकरण**—× । पत्र सं० ५९। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–वैदिक साहित्य। र०काल × । ले०काल सं० १८४४ भादवा बुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० ९४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक।

विशेष—आचार्य विजयकीर्ति ने नन्दग्राम में प्रतिलिपि की थी।

१०३७४. **अनाश्व कर्मनुपादान**—× । पत्रसं० २। आ० ११×४ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ५७। **प्राप्ति स्थान**—खंडेलवाल दि० जैन मंदिर उदयपुर।

१०३७५. **आदीश्वर फाग**—**भट्टारक ज्ञानभूषण**। पत्र सं० ३९। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत–हिन्दी। विषय–फागु काव्य। र०काल × । ले० काल सं० १५८७ आषाढ़ सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० १९१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—म० शुभचन्द्र के शिष्य विद्यासागर के पठनार्थ लिखा गया था।

१०३७६. **आत्मावलोकन स्तोत्र**—**दीपचन्द**। पत्र सं० ६६। आ० ११×६½ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–अध्यात्म। र०काल × । ले० काल सं० १८६०। पूर्ण। वेष्टन सं० ५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा।

विशेष—इसका दूसरा नाम दर्पण दर्शन भी दिया है। श्री हनूलाल तेरहपंथी ने माथोपुर निवासी ब्राह्मण भोपत से प्रतिलिपि करवाकर दौसा के मन्दिर में रखी थी।

१०३७७. **आदिनाथ देशनाद्वार**—× । पत्र सं० ५। आ० १०×४ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १४१४। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—भगवान आदिनाथ के उपदेशों का सार है।

१०३७८. **इष्टोपदेश**—**पूज्यपाद**। पत्र सं० ४। आ० १०×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय अध्यात्म। र०काल × । ले०काल सं० १६४७। पूर्ण। वेष्टन सं० ७९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

१०३७९. **उज्झर भाष्य**—**जयन्त भट्ट**। पत्र सं० ३९। आ० × । भाषा संस्कृत। विषय–सिद्धान्त। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ७०४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

विशेष—इति श्री मज्जयन्त भट्ट विरचिते वादि घटमुझर वृदन्त समाप्तमिति।

१०३८०. **उपदेश रत्नमाला—सकलभूषण**। पत्रसं० ११७। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। र०काल-सं० १६२७। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ६। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा।

विशेष—प्रति जीर्ण है।

१०३८१. **उपदेश रत्नमाला—धर्मवास गणि**। पत्र सं० १३। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय-सुभाषित। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ७३३। **प्राप्ति-स्थान**-म० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

१०३८२. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० २ से २३। आ० १०×४½ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० २५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—प्रति प्राचीन है। प्रथम पत्र नहीं है।

१०३८३. **प्रतिसं० ३**। पत्र सं० २३। आ० ११¾×४½इञ्च। ले०काल सं० १५९७ आषाढ़ सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० १४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन आदिनाथ मन्दिर बूंदी।

विशेष—योगिनीपुर (दिल्ली) में लिखा गया था।

१०३८४. **प्रतिसं० ४**। पत्र सं० १०। आ० ९½×४½ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन आदिनाथ मन्दिर बूंदी।

१०३८५. **उपदेश सिद्धान्त रत्नमाला भाषा—भागचन्द**। पत्रसं० ४०। आ० ११×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-सुभाषित। र०काल सं० १९१४ माघ बुदी १३। ले०काल सं० १९४५। पूर्ण। वेष्टन सं० २८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर टोडारायसिंह (टोंक)।

विशेष—मोहीलाल मौंसा ने चोरू में प्रतिलिपि की थी।

र०काल निम्न प्रकार और मिलता है।

दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर जयपुर सं० १९१२।

दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा सं० १९२२ आषाढ़ बुदी ९।

१०३८६. **प्रतिसं० २**। पत्र सं० २९। आ० १२×७½ इञ्च। ले० काल सं० १९५७। पूर्ण। वेष्टन सं० ३१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा।

१०३८७. **उपदेशसिद्धान्त रत्नमाला**—× । पत्रसं० ४०। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय-सुभाषित। र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० २००। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर।

१०३८८. **प्रतिसं० २**। पत्र सं० ४३। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ६१/१८०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर।

१०३८९. **ऋषिपंचमी उद्यापन**—× । पत्र सं० १०। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय-वैदिक साहित्य। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ११०६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

१०३९०. कृष्ण युधिष्ठिर संवाद— ✗ । पत्र सं० १६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—वार्ता (कथा) । र० काल × । ले० काल सं० १७८४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२० । । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—लि० सदासुख ने प्रतिलिपि की थी । पत्र दीमकों ने खा रखा है ।

१०३९१. कृष्ण रुक्मणि वेलि—पृथ्वीराज (कल्याणमल के पुत्र) । पत्र सं० २-१९ । आ० ९×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—पद्य सं० २०८ हैं ।

१०३९२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २३ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल सं० १७३४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—श्री रंग विमल शिशुदान मिल लिखतं सं० १७३४ ईंटडिया मध्ये ।

१०३९३. करणामृत पुराण—भट्टारक विजयकीर्ति । पत्र सं० ४१ । आ० १२×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । र० काल सं० १८२६ काती बुदी १२ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा ।

विशेष—भगवान आदिनाथ के पूर्व भवों की कई कथाएं दी हैं ।

१०३९४. कलजुगरास—ठक्कुरसी कवि । पत्र सं० २१ । आ० ९×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—विविध । र० काल सं० १८०८ । ले० काल सं० १८३९ द्वि ज्येष्ठ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७/११ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

विशेष—ग्रन्थ का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—

वीतराग जति नमुं बंदु गुर के पांव ।
मनिष जन्म वह दोहिला गुरू भाख्यो चितलाय ।
साध ऋषि स्वर आगै माषिमा कलजुग एसा आवे ।
साध ऋषिस्वर सांच तो बोलिया ठाकुरसी ऋषि गावै ।
प्राणी कुडाररे कलजुग आया ।।
नग देखियो गांव सारीखा उजर वास बसाया ।
राज हुआ बाजम सारिखा भजा तो दुख पाया रे ।।३।।

अन्तिम—

संवत् अठारसै आठ बरसै जुजु बारसैहर भक्ता रै ।
तिथ बारस मंगलवार सावण सुद जग सार रे ।
प्राणी कुडार के कलजुग आया ।।
पाखंडि की बहुत जो पूजा साध देख दुख पावै ।
ठाकुरसी ऋषि सांची भाखै चतुर नार चित आवै ।।३।।

१०३९५. **कलियुग की विनती—देवा ब्रह्म** । पत्र सं० ६ । आ० ५×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-विविध । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर (जयपुर) ।

१०३९६. **कल्पद्रुम कलिका**-× । पत्रसं० १८० । भाषा-संस्कृत । विषय-विविध । र० काल ले० काल सं० १८८२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०३९७. **कल्पसूत्र बखाण**.....। पत्र सं० १५७ । **भाषा**-हिन्दी । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६१८, ६१९, ६२०, ७४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—कल्पसूत्र चतुर्थ, पंचम एवं सप्तम २ वेष्टनों में है ।

१०३९८. **कल्याणमाला—पं० आशाधर** । पत्रसं० ४ । आ० ११½×५ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय—विविध । र० काल—× । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२-१५८ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह टोंक ।

विशेष—तीर्थंकरों के कल्याणक की तिथियाँ दी हुई हैं ।

१०३९९. **कंवरपाल बत्तीसी—कंवरपाल** । पत्र सं० ५ । आ० १०½×४½ इंच । **भाषा**-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

१०४००. **कविकाव्य नाम**—× । पत्र सं० ३-१४ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—सुलि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१५/६५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर ।

१०४०१. **कविकाव्य नाम गर्भचक्रवृत्त**—× । पत्र सं० १६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—स्तुति । र० काल × । ले० काल सं० १६९८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५५/२४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर ।

विशेष—कुल ११६ श्लोक हैं । प्रति संस्कृत टीका सहित है । ११६ श्लोकों के आगे लिखा है—कवि काव्य नाम गर्भ चक्र वृत्त । ७ चक्र नीचे दिये हुए हैं । टीका के अंत में निम्न प्रशस्ति है—

संवत् १६९८ वर्षे ज्येष्ठ सुदी २ शनौ जिनशतका ख्यालंकृते स्वज्ञानावर्णी कर्मक्षयार्थं पंडित सहज वीराख्येण स्वहस्ताभ्यांलिखिता ।

टीका का नाम जिनशतका ख्यालंवृति है ।

१०४०२. **कवि रहस्य-इलायुध** । पत्रसं० ४ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१०४०३. **कार्त्तिक महात्म्य**—× । पत्रसं० ३७ । आ० १०×५⅝ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-वैदिक साहित्य । र० काल—× । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—३७ से आगे पत्र नहीं हैं ।

१०४०४. **काली तंत्र**—× । पत्रसं० ८१ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा एवं यंत्र शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

१०४०५. **क्षेत्र गणित टीका**—× । पत्रसं० १८ । आ० १०½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—गणित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । अंत में निम्न प्रकार लिखा है—
"इति उत्तर क्षेत्री टीका संपूर्ण"

१०४०६. **क्षेत्र गणित टीका**—× । पत्र सं० २१ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—गणित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—इसका नाम उत्तर छत्तीसी टीका भी है । भट्टारक श्री विजयकीर्ति जित् ब्रह्म नारायण दत्तमुत्तरछत्तीसी टीका ।

१०४०७. **क्षेत्र गणित व्यवहार फल सहित**—× । पत्र सं० १४ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—गणित शास्त्र । र०काल × । ले० काल ×। पूर्ण । वेष्टन सं० ५२ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति रेखा चित्रों सहित है ।

१०४०८. **क्षीरार्णव—विश्वकर्मा** । पत्रसं० ४१ । आ० ८½×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—शिल्प शास्त्र । र०काल—× । ले० काल सं० १९५३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४-२ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—इति श्री विश्वकर्माकृते क्षीरार्णवे नारद पृच्छते शतागुण एकोनविंशोऽध्याय ॥ १९॥ संपूर्ण । संवत् १९५३ वर्षे कार्तिक सुदी ११ रवौ लिखितं दशोश ब्राह्मण ज्ञाति व्यास पुरुषोत्तमेन हस्ताक्षरं नग्र डूंगरपुर मध्ये शुभं भवतु ।

१०४०९. **खण्ड प्रशस्ति**—× । पत्रसं० ३ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१०४१०. **खंड प्रशस्ति श्लोक**—× । पत्रसं० २-४ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-काव्य । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

१०४११. **गंगड प्रायश्चित**—× । पत्र सं० १५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आचार शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

१०४१२. गणितनाममाला—हरिदत्त। (श्रीपति के पुत्र)—पत्र सं० ५। आ० ११×४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—गणित। र०काल ×। ले० काल सं० १७३४। पूर्ण। वेष्टन सं० ४७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

प्रारम्भ—

गणितस्य नाममाला वक्ष्ये गुरु प्रसादतः
बालानां सुखबोधाय हरिदत्तो द्विजाग्रणी।

अन्तिम—

श्री श्रीपतिसुतेनैते बालानां बुद्धिवृद्धये।
गणितस्य नाममाला प्रोक्तं गुरुप्रसादतः।

१०४१३. गणितनाममाला—×। पत्र सं० १०। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—गणित शास्त्र। र०काल ×। ले०काल सं० १९०८ मंगसिर सुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० १४०६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

१०४१४. गणितनाममाला—×। पत्र सं० ३। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—गणित। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १०१७। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

१०४१५. गणित शास्त्र—×। पत्र सं० २६। आ० ६×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-गणित। र०काल ×। ले०काल सं० १५५०। अपूर्ण। वेष्टन सं० ४७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर।

विशेष—संवत् १५५० वर्षे श्रावण बुदी ३ गुरौ अद्येह कोट नगरे वास्तव्य सूत्रा देवा सुत कान्हादे भ्रातृणां पठनार्थं लिखितमया।

निमित्त शास्त्र भी है। अंत में है—

इति गणित शास्त्रे शोर छाया तलहणं समाप्तं।

१०४१६. गणित शास्त्र—×। पत्र सं० फुटकर। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—गणित। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ३२०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर।

१०४१७. गणितसार—हेमराज। पत्र सं० ५। आ० ११½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय—गणित। र०काल ×। ले०काल सं० १७८४ जेठ सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० १६२। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी।

१०४१८. गणितसार संग्रह—महावीराचार्य। पत्र सं० ५३। आ० ११×७ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-गणित। र०काल ×। ले०काल सं० १७०५ श्रावण सुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० ×। **प्राप्ति स्थान**—खंडेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

१०४१९. प्रति सं० २। पत्र सं० ३९। आ० १२½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर।

१०४२०. **गाथा लक्षण** × । पत्रसं० १-८ । आ० १२×४½ । भाषा-प्राकृत । विषय-लक्षण ग्रंथ । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा संस्कृत टीका सहित है ।

१०४२१. **गोत्रिरात्रव्रतोद्यापन**—× । पत्र सं० ७ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—वैदिक साहित्य । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७२७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०४२२. **ग्रहणराहुप्रकरण**—× । पत्र सं० ४ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७०४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०४२३. **चन्द्रोमीलन—मधुसूदन** । पत्र सं० ३२ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १९३ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—इसका दूसरा नाम शिष्य निर्णय प्रकरण तथा शिष्य परीक्षा प्रकरण भी है । चन्द्रोन्मीलन जैन ग्रंथ से उद्धृत है । प्रारम्भ में चन्द्रप्रभ भगवान एवं सरस्वती को नमस्कार किया है ।

अन्तिम—

लक्ष्यपादमहाज्ञानं स्वयं जैनेन्द्रभाषितं ।
चन्द्रोन्मीलनकं शास्त्रं तस्य मध्यान्मयो धृतं ।।
रुद्रेण भाषितं पूर्वं ब्राह्मणा मधु सूदने ।
न च दृष्टं मया ज्ञानं भाषितं च अनौकसा १० ।
एतत् ज्ञानं महाज्ञानं सर्व ज्ञानेषु चोत्तमं ।
गोपितव्यं प्रजन्तेन विदुषी रपि दुर्लभं ।।

इति चन्द्रोन्मीलने शास्त्रार्थत्रि विनर्गतिषु शिष्य निर्णय प्रकरणं ।

प्रस्तुत ग्रंथ में शिष्य किसे, कब और कैसे बनाया जाय इसका पूर्ण विवरण है ।

प्रति प्रचीन है ।

१०४२४. **चरणव्यूह—वेदव्यास** । पत्रसं० ४ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-वैदिक साहित्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०४७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०४२५. **चेतन कर्म संवाद—भैया भगवतीदास** । पत्रसं० २१ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-रुपक काव्य । र०काल सं० १७३२ ज्येष्ठ बुदी ७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

१०४२६. **प्रतिसं०** २ । पत्रसं० ५६ । ले०काल सं० १९३९ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

१०४२७. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० ५६ । ले०काल सं० १६३६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी बसवा ।

१०४२८. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० १६ । आ० १३½×४ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

१०४२९. **चेतनगारी—विनोदीलाल** । पत्रसं० १५ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । र०काल सं० १७४३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामां ।

१०४३०. **चेतन गीत**—× । पत्रसं० १ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २११-८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर ।

१०४३१. **चेतन पुद्गल धमाल—भूचराज** । पत्र सं० १८ । आ० ५½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—रूपककाव्य । र०काल × । ले० काल सं० १६२६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८८६ । **प्राप्ति-प्राप्ति**—ग्रं० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—आ० भानुकीर्ति के शिष्य मु० विजयकीर्ति ने लिखा था ।

गुटके में संग्रहित है ।

१०४३२. **चेतन मोहराज संवाद—खेमसागर** । पत्र सं० ४६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—रूपक कथा र०काल × । ले०काल सं० १७३७ । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३५४ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—भीलोड़ा नगर में शांतिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई ।

१०४३३. **चौढाल्यो—भृगु प्रोहित** । पत्र सं० ३ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—स्फुट । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना बूंदी ।

१०४३४. **चौदह विद्यानाम** × । पत्र सं० १ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-लक्षण ग्रन्थ । ले०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—चौदह विद्याओं का नाम कवित्त दोहा तथा गोरोचन छन्द (कल्प) दिया हुआ है ।

१०४३५. **चौबीस तीर्थंकर पूजा—वृन्दावन** । पत्र सं० ८५ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । ले०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५३-६९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटड़ियों का डूंगरपुर ।

१०४३६. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ६५ । आ० १३×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २२४-६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर ।

१०४३७. **छेदपिंड**—पत्रसं० ४ । आ० १३×३ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । ले०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ७० । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर

१०४३८. **जम्बूद्वीप पट**—× । पत्रसं० १ । आ० × । वेष्टनसं० २७४-१०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर डूंगरपुर ।

विशेष—जंबूद्वीप का नक्शा है ।

१०४३९. **जिनगुण विलास—नथमल** । पत्र सं० ६१ । आ० ७½×१०½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—स्तवन । र०काल सं० १८२२ आषाढ बुदी १० । ले० काल सं० १८२२ आषाढ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० २९/१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मंदिर करौली ।

विशेष—५२ पत्र से भक्तामर स्तोत्र हिन्दी में है ।

साह श्री खुशालचन्द के पुत्र रतनचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

१०४४०. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ५६ । आ० १२½×६ इञ्च । ले०काल सं० १८२३ काती सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—सवाई राम पाटनी ने भरतपुर में प्रतिलिपि की थी ।

१०४४१. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० ६५ । आ० १३×५½ इञ्च । ले०काल सं० १८२३ भादवा बुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनसं० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—नौनिधिराम ने आसाराम के पास प्रतिलिपि करवायी थी ।

१०४४२. **प्रतिसं० ४** । पत्र सं० ८६ । आ० ८½×६ इञ्च । ले०काल सं० १८२२ भादवा सुदी १२ । वेष्टनसं० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

विशेष—दोदराज ने करौली नगर में लिखवाया था ।

१०४४३. **जिनप्रतिमास्वरूप वर्णन—छीतर काला** । पत्रसं० ३८ । आ० १२½×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—लक्षण । र०काल सं० १९२४ वैशाख सुदी ३ । ले०काल सं० १९४५ वैशाख सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—छीतर काला अजमेर के रहने वाले थे । आजीविका वश इन्दौर आये वहीं १९२५ में ग्रंथ को पूर्ण किया ।

सहर वास अजमेर में तहां एक सरावग जान ।
नाम तास छीतर कहे गोत्र ज कालो मान ।
कोई दिन वहां सुख सो रह्यो फेर कोई कारण पाय ।
नमत काम आजीविका सहर इन्दौर में आय ।

× × ×

अन्तिम—

नगर सहर इन्दौर में सुद्धि सहसि होय ।
तहां जिन मन्दिर के विषै पूरो कीनो सोय ।

सं० १९२३ सावन सुदी १५ को इन्दौर आये । और सं० १९२४ में ग्रंथ रचना प्रारम्भ कर सं० १९२५ वैशाख सुदी ३ को समाप्त किया ।

छोगालाल लुहाडिया आकोदा वालों ने इन्दौर में प्रतिलिपि की थी ।

१०४४४. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० ४६। आ० ११×६½ इञ्च। ले०काल सं० १९६०। पूर्ण। वेष्टनसं० ४०२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

१०४४५. **जिनबिम्बनिर्माण विधि**—×। पत्र सं० ५७। आ० ६½×३½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—बिंब निर्माण शिल्प शास्त्र। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ९१४। **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

विशेष—गुटका साइज है।

१०४४६. **जिनबिम्ब निर्माण विधि**—×। पत्रसं० ११। आ० १३×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय—शिल्प शास्त्र। र०काल ×। ले०काल सं० १९४५। पूर्ण। वेष्टनसं० ११३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्री महावीर बूंदी।

१०४४७. **जिनबिम्ब निर्माण विधि**—×। पत्रसं० १०। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय—शिल्प शास्त्र। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० २०-१६। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मंदिर भादवा।

१०४४८. **जिनशतिका**—×। पत्रसं० १६। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—लक्षण ग्रंथ। र०काल ×। ले०काल ×। वेष्टनसं० ६९१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—अंत में इति श्री जिनशतिकायां हस्त वर्णन द्वितीय परिछेदाय चूर्ण ॥२॥

१०४४९. **जीभदांत-नासिका-नयनकर्णसंवाद—नारायण मुनि**। पत्रसं० २। आ० १०×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय—संवाद। र०काल ×। ले० काल सं० १७८१ आसोज बुदी ८। पूर्ण। वेष्टनसं० ५३५। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

१०४५०. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० २। आ० १०×४ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

१०४५१. **ज्ञानभास्कर**—×। पत्र सं० २९। आ० १२×४ इञ्च। **भाषा**—संस्कृत। विषय-वैदिक शास्त्र। र०काल ×। ले० काल सं० १६८५। पूर्ण। वेष्टनसं० ३४५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—इति श्री ज्ञानभास्करे कर्मविपाके सूर्यारुणसंवादे कालनिर्णयो नाम प्रथमं प्रकरणं। सं० १६८५ वर्षे चैत सुदी ७ सोमे महेषेण लेखि।

१०४५२. **ज्ञानस्वरोदय—चरनदास**। पत्रसं० ४३। आ० ५×३½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-उपदेश। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १८१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी (बूंदी)।

१०४५३. **ढाढसी गाथा**-×। पत्रसं० २। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। र०काल ×। ले०काल १८२१, भादवा बुदी ११। वेष्टनसं० ६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर (जयपुर)।

विशेष—पं० सुखराम के लिये लिखा था।

१०४५४. णमोकार महात्म्य—× । पत्र सं० ५ । आ० ८$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तवन । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० ४२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर (जयपुर) ।

१०४५५. तत्वज्ञान तरंगिणी—**ज्ञानभूषण** । पत्र सं० ८३ । आ० १२$\frac{3}{4}$×६$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल सं० १५६० । ले० काल सं० १८४६ आसोज बुदी १ । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—अन्त में निम्न प्रकार लिखा है—

भट्टारक श्री भूषणी के प्रसाद्य पठनार्थ लिखाया । १६८५ चैत बुदी १२ ।

१०४५६. तत्वसार—**देवसेन** । पत्र सं० १२ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । **विषय**-सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टन सं०** २२२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—आचार्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

१०४५७. तत्वार्थ सूत्र-उमास्वामि । पत्र सं० १३ । आ० ६$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल सं० १६६५ । **वेष्टन सं०** ६५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर (जयपुर) ।

१०४५८. तत्वार्थ सूत्र भाषा-पं० सदासुख कासलीवाल । पत्र सं० १७७ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । **भाषा**-राजस्थानी (ढूंढारी-गद्य) । **विषय**-सिद्धान्त । र०काल सं० १६१० फागुण बुदी १० । ले०काल सं० १६५२ । अपूर्ण । **वेष्टन सं०** ३६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

१०४५९. तम्बाखू सज्झाय-आणंद ऋषि । पत्र सं० १ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी (प०) । । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टन सं०** ३१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

१०४६०. तीस चौबीसी पूजा—**सूर्यमल** । पत्र सं० १६ । आ० ११$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । **विषय**-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टन सं०** २०१-१०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

१०४६१. दर्जिजयणिया—× । पत्र सं० ६ । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०४६२. दस अंगों की नामावली—× । पत्र सं० ६ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आगम । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०४६३. दशचिन्तामणि प्रकरण—× । पत्र सं० ११ । भाषा-प्राकृत । विषय-विविध । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०४६४. **दश प्रकार ब्राह्मण विचार** × । पत्रसं० १ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० ८२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०४६५. **दातासूम संवाद** × । पत्रसं० २१ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-संवाद । र०काल × । ले०काल सं० १९४८ आषाढ़ बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—जीर्ण एवं फटा हुआ है ।

१०४६६. **दिशानुवाई**—× । पत्रसं० १ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—ठाणांग सूत्र के आधार पर है ।

१०४६७. **दिसानुवाई**—× । पत्रसं० १ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-फुटकर । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

१०४६८. **दूरियरय समीर स्तोत्र वृति—समय सुन्दर उपाध्याय** । पत्र सं० १४ । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल १८७६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०४६९. **देवागम स्तोत्र—समंतभद्राचार्य** । पत्र सं० ५ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र एवं दर्शन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२८-४३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१०४७०. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० १२ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—इसका नाम आप्तमीमांसा भी है । प्रति प्राचीन है ।

१०४७१. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० ८ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०५-२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ़ (कोटा) ।

१०४७२. **प्रतिसं० ४** । पत्र सं० ८ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ़ (कोटा) ।

१०४७३. **प्रतिसं० ५** । पत्र सं० ५ । आ० १०$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १८७७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

१०४७४. **प्रतिसं० ६** । पत्रसं० ८ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

१०४७५. **प्रतिसं० ७** । पत्रसं० ५ । आ० ६½×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

१०४७६. **देवागम स्तोत्र वृत्ति—आचार्य वसुनंदि** । पत्रसं० ४३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

१०४७७. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० २५ । आ० ११×५ इञ्च । **ले०काल** सं० १८५३ कार्तिक सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनसं० १३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बीरसली कोटा ।

विशेष—जयपुर में सवाई राम गोधा ने प्रतिलिपि की थी ।

१०४७८. **द्वादशनाम—शंकराचार्य** । पत्रसं० ५ । आ० ८×३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–वैदिक साहित्य । र० काल × । **ले०कालसं०** १८३४ सावण बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ़ कोटा ।

१०४७९. **द्वासप्तति कला काव्य** —× । पत्रसं० २ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–लक्षण ग्रंथ । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण वेष्टन सं० ५२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—पुरुष की ७२ कला एवं स्त्री की चौंसठ कलाओं का नाम है ।

१०४८० **धर्मपाप संवाद—विजयकीर्ति** । पत्रसं० ५६ । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चर्चा । र० काल सं० १८२७ मंगसिर सुदी १४ । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५६५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०४८१ **धर्म प्रवृत्ति (पाशुपत सूत्रगण) नारायण**—× । पत्रसं० १२३ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–वैदिक साहित्य । र० काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११०३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०४८२. **धर्मयुधिष्ठिर संवाद**—× । पत्रसं० १४ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–महाभारत (इतिहास) । र० काल × । **ले०काल** सं० १७६४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—महाभारते शत सहस्रगीतायां । अश्वमेध यज्ञं धर्मयुधिष्ठर संवादे ।।

१०४८३. **धातु परीक्षा** –× । पत्रसं० १३ । भाषा–संस्कृत । विषय–लक्षण ग्रंथ । र० काल × । **ले०काल** × । अपूर्ण । वेष्टन सं ६२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०४८४. **ध्रु चरित्र**—× । पत्रसं० ४६ । आ० ५½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चरित काव्य । र० काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—इसमें २०० पद्य हैं ।

१०४८५. नलोदय काव्य—× । पत्रसं० २० । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र०काल × । ले०काल सं० १७१६ वैशाख सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—नलदमयंती कथा है ।

१०४८६. नवपद फेरी—× । पत्रसं० ६ । भाषा-संस्कृत । विषय विविध । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०४८७. नवरत्न कवित्त—× । पत्रसं० १ । आ० १२ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च । **भाषा**-हिन्दी । विषय-विविध । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५३१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०४८८. नवरत्न काव्य:—× । पत्रसं० २ । आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत विषय-काव्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०४८९. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १ । आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०४९०. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० १ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन सं० २६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१०४९१. नारचन्द्र ज्योतिष ग्रंथ—नारचन्द्र । पत्रसं० २४ । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल सं १७८६ माह बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर (बसवा)

विशेष—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है । केलवा नगर में मुनि सोभाग्यमल ने प्रतिलिपि की थी ।

१०४९२. नारदीय पुराण—× । पत्रसं० ३० । आ० ९$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{3}{4}$ इञ्च । **भाषा**-संस्कृत । विषय-वैदिक-साहित्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

१०४९३. नित्य पूजा पाठ संग्रह—× । पत्रसं० १९ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २१९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

१०४९४. निर्वाण काण्ड भाषा—भैया भगवतीदास । पत्रसं० ४ । आ० ८$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-स्तवन, इतिहास । र०काल सं० १७४१ । ले०काल सं० १९५० पौष सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० १५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरों में लिखी हुई है । मुंशी रिसकलालजी ने लिखवाकर प्रति विराजमान की थी ।

१०४९५. निर्वाण काण्ड गाथा—× । पत्रसं० २ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-इतिहास । र०काल × । ले०काल सं० १८२७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०४९६. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० ३। आ० १२×५½ इञ्च। ले०काल सं० १९६२ आसोज बुदी ७। पूर्ण। वेष्टनसं० ५३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

१०४९७. **प्रतिसं० ३**। पत्रसं० २-३। आ० १०⅜×५ इञ्च। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ५३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

१०४९८. **प्रतिसं० ४**। पत्रसं० ३। आ० १०½×४¾ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३९५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

१०४९९. **प्रतिसं० ५**। पत्रसं० २५। आ० १०×५ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २२८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

१०५००. **नेमिराजमती शतक—लावण्य समय**। पत्रसं० ४। भाषा-हिन्दी। विषय-फुटकर। र०काल सं० १५६४। ले०काल × । **पूर्ण**। वेष्टन सं० ५५/६४१।

विशेष- अन्तिम भाग निम्न प्रकार है -

हम वीर हम वीर इम चलइउ रासी
मुनि लावण्य समय इमावलि हमनि हर्षे इवासी रे ॥
संवत् पनरचउसठि इरे गायउ नेमिकुमार।
मुनि लावण्य समइ इमा बालिह वरतिउ जय जयकार।

इति श्री नेमिनाथ राजमती शतक समाप्त।

१०५०१. **नेमिराजुल बारहमासा—विनोदीलाल**। पत्रसं० २। आ० १०⅜×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-वियोग शृंगार। र०काल × । **ले०काल** × । पूर्ण। वेष्टन सं० ६४८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—नेमिनाथ द्वारा तोरण द्वार से मुंह मोड़कर चले जाने एवं दीक्षा धारण कर लेने पर राजुलमती एवं नेमिनाथ का बारहमासा का रोचक संवाद रूप वर्णन है।

१०५०२. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० २। आ० ९×४ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

१०५०३. **पंच कल्याणक फाग—ज्ञानभूषण**। पत्रसं० २-२६। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। विषय-स्तवन। र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ४९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

१०५०४. **पञ्च कल्याणक गीत**—× । पत्रसं० ८। आ० ८×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी प०। विषय-गीत। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३३९-१३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

१०५०५. **पंचदल अंक पत्र विधान**--× । पत्रसं० १। आ० १२½×५½ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय-वैदिक। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २७५। **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

विशेष—शिव तांडव से उद्धृत।

१०५०६. पंचमी शतक पद— × । पत्रसं० १ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–विविध । र० काल × । **ले०काल सं०** १४६१ सावण सुदी १० । **पूर्ण** । **वेष्टन सं०** १८०-१५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—अग्रवालान्वये पं० फरेण लिखापितं गोपाश्चलदुर्गे गोलाराडान्वये पं० खेमराज । तस्यपुत्र पं० हरिराण लिखितं ।

१०५०७ पंचम कर्मग्रंथ—× । पत्रसं० १६ । आ० १०½×५ इञ्च । **भाषा**–संस्कृत । विषय–सिद्धांत । र० काल × । ले० काल × । **पूर्ण** । **वेष्टन सं०** १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

१०५०८. पंच लब्धि—× । पत्रसं० ५ । आ० ११×४½ इञ्च । **भाषा**–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल× । **अपूर्ण** । **वेष्टन सं०** १८२ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

१०५०९. पंचेन्द्रिय संवाद—**भैय्या भगवतीदास** । पत्रसं० ४ । आ० १०×४½ इञ्च । **भाषा**–हिन्दी (पद्य) । विषय–वाद–विवाद । र०काल सं० १७५१ । ले०काल × । **पूर्ण** । **वेष्टन सं०** १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—१५२ पद्य हैं ।

१०५१०. पंचेन्द्रिय संवाद—**यशःकीर्ति सूरि** । पत्रसं० १४ । आ० ६×५ इञ्च । **भाषा**–हिन्दी (पद्य) । विषय–पांचों इन्द्रियों का वाद विवाद है । र०काल सं० १८६० चैत सुदी २ । ले०काल × । **पूर्ण** । **वेष्टन सं०** ४६७-२५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

१०५११. पज्जुण्ण कहा (प्रद्युम्न कथा)—**महाकवि सिंह** । पत्रसं० ३६ । आ० १०४×४½ इञ्च । **भाषा**–अपभ्रंश । विषय–काव्य । र०काल × । ले०काल सं० १५४८ कार्तिक बुदी १ । **वेष्टन सं०** १६६ । प्रशस्ति अच्छी है । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

१०५१२. प्रति सं० २ । पत्रसं० ६४ । आ० ११½×४ इञ्च । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नागदी बूंदी ।

१०५१३. पद स्थापना विधि—**जिनवत्त सूरि** । पत्र सं० २ । भाषा–संस्कृत । विषय–विधान । र०काल × । ले०काल सं० १८५७ । **पूर्ण** । **वेष्टन सं०** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

१०५१४. पद्मनंदि पंचविंशति भाषा—**मन्नालाल खिन्दूका** । पत्रसं० २०६ । आ० १३×८½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–आचार शास्त्र । र०काल सं० १९०५ । ले० काल सं० १९३५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—खंडेलवाल दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

१०५१५ परदेशीमतिबोध—**ज्ञानचन्द** । पत्र सं० २१ । भाषा–हिन्दी । विषय–उपदेशात्मक । र०काल × । ले० काल सं० १७८६ कार्तिक वदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

विशेष—बैराठ शहर में लिखवाई थी ।

१०५१६. परमहंस कथा चौपई—ब्र० रायमल्ल । पत्रसं० ३० । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-रूपक काव्य । र०काल सं० १६३६ ज्येष्ठ बुदी १३ । ले०काल सं० १७६४ ज्येष्ठ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६०४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—गुटका आकार में है ।

१०५१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल सं० १८४४ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बड़ा बीस पंथी दौसा ।

विशेष—प्रशस्ति में तक्षकगढ का वर्णन है । राजा जगन्नाथ के शासन काल में सं० १५३५ में पार्श्वनाथ मंदिर था । ऐसा उल्लेख है ।

पंडित दयाचंद ने सारोला में ब्रह्मजी शिवसागर जी के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१०५१८. पल्य विचार × । पत्रसं० ६ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्फुट । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४६–२७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ डोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—आईस परीषह पार्श्वपुराण 'भूधर कृत' में से और है ।

१०५१६. पाकशास्त्र— × । पत्रसं० ५८ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पाकशास्त्र । र०काल × । ले०काल सं० १९१६ चैत्र सुदी १ सोमवार । पूर्ण वेष्टन सं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

१०५२०. पाकावली × । पत्रसं० २८ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पाक शास्त्र । र०काल × । ले० काल सं० १७५१ फाल्गुण शुक्ला ६ । वेष्टन सं० ३४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१०५२१. पाण्डव चन्द्रिका—स्वरूपदास । पत्र सं० ६२ । आ० ११½×५ इंच । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-वैदिक साहित्य । र०काल × । ले० काल सं० १६०६ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

१०५२२. पाण्डवपुराण —× । पत्रसं० ३४६ । आ० ११¾×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०५२३. पुण्यपुरुष नामावलि—× । पत्रसं० ३ । आ० १०×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्फुट । र०काल × । ले०काल सं० १८८१ माघ वदि ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२०६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—पं० देव कृष्ण ने अजयदुर्ग में प्रतिलिपि की थी ।

१०५२४. पुण्याह मंत्र—× । पत्रसं० १ । आ० ११¾×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-वैदिक साहित्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०५२५. पोसहरास—ज्ञानभूषण । पत्रसं० ८ । आ० १०½×४¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी प० । विषय-कथा काव्य । र०काल × । ले०काल सं० १८०६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६४-७२ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

१०५२६. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ५ । आ० ११½×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २८७-१११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

१०५२७. **प्रवूर्ण गाथाना अर्थ**—× । पत्रसं० ६० । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा–प्राकृत हिन्दी । विषय–सुभाषित । र०काल × । ले०काल सं० १७६८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४६-१३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

१०५२८. **प्रज्ञाबल्लरीय**—× । पत्रसं० २ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय—काव्य । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० ७३२ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर लश्कर (जयपुर) ।

१०५२९. **प्रतिमा बहत्तरी**—**ज्ञानतराय** । पत्रसं० ३ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी प० । विषय-स्तवन । र०काल सं० १७८१ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१-१५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—अन्तिम –

दिल्ली तखत वखत परकास, सतौसै इक्यासी वारा ।
जेठ सुकल जगचन्द उदोत, ज्ञानत प्रगट्यो प्रतिमा जोत ।।७१।।

१०५३०. **प्रत्यान पूवलिपूठ**—× । पत्रसं० ५४ । भाषा–प्राकृत । विषय-विविध । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भरतपुर ।

१०५३१. **प्रबोध चन्द्रिका**—**बैजल भूपति** । पत्रसं० २३ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३१५ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०५३२. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ३१ । आ० ६×६ इञ्च । ले० काल सं० १६४३ फागुण बुदी ६ सोमवार । पूर्ण । वेष्टन सं० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

१०५३३. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० ३१ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

१०५३४. **प्रबोध चिंतामणि**—**जयशेखर सूरि** । पत्रसं० ४-४० । आ० १०½×४½ इञ्च । विषय-विविध । र०काल × । ले० काल सं० १७२० चैत सुदी १२ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर (जयपुर) ।

१०५३५. **प्रशस्ति काशिका**—**त्रिपाठी बालकृष्ण** । पत्रसं० १८ । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्फुट लेखन विधि । र०काल × । ले० काल सं० १८४१ बैशाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

१०५३६. **प्रस्तुतालंकार**— × । पत्रसं० ३ । भाषा–संस्कृत । विषय–विविध । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—प्रशस्ति में प्रयोग होने वाले अलंकारों का वर्णन है ।

१०५३७. प्रस्ताविक श्लोक—× । पत्रसं० १–७ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर (जयपुर) ।

१०५३८. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १–८ । आ० १०×५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर (जयपुर) ।

१०५३९. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० १–३३ । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर (जयपुर) ।

विशेष– कवित्त संग्रह भी है ।

१०५४०. प्रासाद वल्लभ—मंडन । पत्रसं० ४० । आ० ९½×७ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–शिल्प शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १९५३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

अन्तिम—इति श्री सूत्रधारमडनविरचिते वास्तुशास्त्रे प्रासादमंडन साधारण अष्टमोध्याय ॥ इति श्री प्रासाद वल्लभ ग्रंथ संपूर्ण । डूंगरपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

१०५४१. प्रिया प्रकरन—× । पत्रसं० १७–७६ । भाषा–प्राकृत । विषय–विविध । र० काल × । ले० काल सं० १८७८ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५९७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०५४२. प्रेमपत्रिका दूहा—× । पत्रसं० २ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–विविध । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

१०५४३. प्रीतिंकर चरित्र—× । पत्रसं० ४८ । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चरित्र । र० काल सं० १७२१ । ले० काल सं० १९४३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

१०५४४. फुटकर ग्रन्थ—× । पत्रसं० १ । भाषा–कर्णाटी । वेष्टन सं० २१०/६५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—कर्णाटी भाषा में कुछ लिखा है । लिपि नागरी है ।

१०५४५. बखाण—× । पत्रसं० १८–२१ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—हिन्दी गद्य टीका सहित है ।

१०५४६. बणजारा गीत—कुमुदचन्द्र सूरि । पत्रसं० २ । आ० ९×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय—रूपक काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मंदिर खण्डेलवाल उदयपुर ।

१०५४७. **बारहमासा**—× । पत्रसं० १ । आ० १०½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—विरह वर्णन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मंदिर उदयपुर ।

१०५४८. **बिहारीदास प्रश्नोत्तर**—× । पत्रसं० ६ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—विविध । र०काल × । ले०काल सं० १७६० मंगसिर सुदी ४ । पूर्ण । ले०काल १२४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर भादवा ।

विशेष—साह दीपचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

१०५४९. **ब्रह्म वैवर्त पुराण**—× । पत्रसं० ५५ । आ० ६½×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—वैदिक साहित्य । र०काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० २०७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

इति श्री ब्रह्मवैवर्त पुराणे श्रावण कृष्णपक्षे कामिका नाम महात्म्यं ।

१०५५०. **ब्रह्मसूत्र**— × । पत्रसं० ७ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-वैदिक साहित्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १००१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०५५१. **भक्तामर पूजा विधान श्रीभूषण** । पत्रसं० १४ । आ० ६½ × ६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८६५ फागुण सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ़ कोटा ।

विशेष—भीलवाड़ा में चि० सेवाराम बघेरवाल दूधारा वाले ने पुस्तक उतारी पं० ऋषभदास जी बघेरवाल गोत लोल्यामाले गांव सुं कोस २० तुंगीगिरि में प्रतिलिपि हुई थी ।

१०५५२. **भक्तामर भाषा**—**हेमराज** । पत्रसं० ३६ । आ० ११×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य विषय स्तोत्र । र० काल सं० १७०६ माघ सुदी ५ । ले०काल सं० १८८३ फागुण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३ । प्राप्ति **स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर डमाना ।

विशेष—अमीचन्द पाटनी ने प्रतिलिपि की थी ।

१०५५३. **भर्तृहरि**—**भर्तृहरि** । पत्रसं० ५७ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति टिप्पणी सहित है ।

१०५५५ **प्रतिसं० २** । पत्रसं० १३ । आ० १०½ × ५ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन सं० ४६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०५५५. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० ७० । आ० १०½×५½ इञ्च । ले०काल सं० १८६७ कार्तिक बुदी ५ । वेष्टन सं० ४५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—लिपिकार चिरंजीव जैकृष्ण । प्रति सटीक है ।

१०५५६. **भलेबावनी—विनयमेरु**। पत्र सं० ५। आ० १०×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-सुभाषित। र० काल × । ले० काल सं० १८६५ माह सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० ३५१। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मंदिर दबलाना बूंदी।

१०५५७. **भागवत**—× । पत्र सं० ८। आ० ९×३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पुराण। र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० २९३। **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मंदिर उदयपुर।

१०५५८. **भगवद् गीता**—× । पत्रसं० ६०। आ० ९½×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। र० काल × । ले० काल सं० १७३१। भादवा बुदी ९। पूर्ण। वेष्टन सं० ५३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बून्दी)

विशेष—मोहनदास नागजी ने प्रतिलिपि की थी।

१०५५९. **भगवद् गीता**—× । पत्रसं० ८०। आ० ५½×३½ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १०४४। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

१०५६०. **भावनासार संग्रह (चारित्रसार)—चामुंडराय**। पत्रसं० ९६। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चारित्र। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २९४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा।

विशेष—संस्कृत में कठिन शब्दों के अर्थ दिये हुए हैं। प्रति जीर्ण एवं प्राचीन है। कुछ पत्र चूहे काट गये हैं।

१०५६१. **भावशतक—नागराज**। पत्रसं० ३०। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-शृंगार। र० काल × । ले० काल सं० १८५३ भादवा बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० ५९०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर।

१०५६२. **भाषाभूषण—भ० जसवन्तसिंह**। पत्रसं० ११। आ० ११×५। भाषा-हिन्दी। विषय-लक्षण ग्रंथ। र० काल × । ले० काल सं० १८५३। वेष्टन सं० ६०२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

१०५६३. **भुवनद्वार**—× । पत्रसं० ९४-११६। आ० ९×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-चर्चा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ७९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

१०५६४. **भूधर शतक—भूधरदास**। पत्रसं० ६। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-सुभाषित। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३००। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

विशेष—९७ पद्य हैं। इसका दूसरा नाम जैन शतक भी है।

१०५६५. **मृत्यु महोत्सव—सदासुख कासलीवाल**। पत्रसं० २९। आ० १२½×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-अध्यात्म। र० काल सं० १९१८। ले० काल सं० १९४५। पूर्ण। वेष्टन सं० ४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्री महावीर बूंदी।

१०५६६. **प्रति सं० २**। पत्रसं० ११। आ० १२×६½ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मंदिर उदयपुर।

१०५६७. **प्रति सं० ३**। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

१०५६८. **प्रतिसं० ४**। पत्रसं० १४। आ० ८×६½ इञ्च। ले०काल सं० १६४८ माघ बुदी १४। पूर्ण। वेष्टन सं० १२८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

१०५६९. **प्रतिसं० ५**। पत्रसं० १२। आ० १२×५½ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

१०५७०. **प्रतिसं० ६**। पत्रसं० ५३। आ० ११×६¾ इञ्च। ले०काल सं० १६६५ माघ बुदी ६। वेष्टन सं० ११६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—रत्नकरण्ड श्रावकाचार में से है।

१०५७१. **प्रतिसं० ७**। पत्रसं० २१। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

१०५७२. **प्रतिसं० ८**। पत्रसं० ६। आ० १४×७½ इञ्च। ले० काल सं० १६७६। पूर्ण। वेष्टन सं० ८४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी।

१०५७३. **प्रतिसं० ९**। पत्रसं० ६। आ० १०×५ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ८८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी।

१०५७४. पत्रसं० १०। आ० ११×५½ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

१०५७५. **मृत्यु महोत्सव**—× । पत्रसं० २। आ० १२×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-अध्यात्म। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३६३/४७१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर।

१०५७६. **मृत्यु महोत्सव पाठ**—× । पत्रसं० ३। आ० १०¾×५ इंच। भाषा संस्कृत। विषय-चिन्तन र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी।

१०५७७. **मणकरहा जयमाल**— × । पत्रसं० ३। आ० ११¾×४¾ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-रूपक काव्य। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १७८। **प्राप्ति स्थान**—ग० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—मनरूपी करहा (घोड़ा) की जयमाल गुण वर्णन किया है।

१०५७८ **मदान्ध प्रबोध**—× । पत्रसं० २६१। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। र०काल ×। ले०काल सं० १६७६। पूर्ण। वेष्टन सं० ६००। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

१०५७९. **मनमोरड़ा गीत - हर्षकीर्ति**। पत्रसं० १। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-गीत। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष - म्हारा रे मन मोरडा तू तो उडि उडि गिरनार जाइ", यह गीत के प्रथम पंक्ति है।

१०५८०. **महादेव पार्वती संवाद**—× । पत्रसं० १-२६। आ० १२½×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय-वैदिक-साहित्य (संवाद)। र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० २२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

विशेष—कई रोगों की औषधियों का भी वर्णन है।

१०५८१. **महासती सज्झाय**—× । पत्रसं० १। आ० १०×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी ग०। विषय-विविध। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २०१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—सतियों के नाम दिये हैं।

१०५८२ **मानतुंग मानवती चौपई—रूपविजय**। पत्रसं० ३१। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र०काल ×। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ६५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती मन्दिर भरतपुर।

१०५८३. **मिच्छा दुक्कड़**—× । पत्रसं० १। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १८४/४२२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभव-नाथ मन्दिर उदयपुर।

१०५८४. **मौन एकादशी व्याख्यान**—पत्र सं० २। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ७३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

१०५८५. **यत्याचार**— × । पत्र सं० २। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-मुनि आचार धर्म। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० २९९/१५५। **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मंदिर उदयपुर।

१०५८६ **रत्नपरीक्षा**— × । पत्र सं० १-३५। भाषा-संस्कृत। विषय-लक्षण ग्रंथ। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ६१४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

१०५८७. **रयणसारस वनिका—जयचन्द छाबड़ा**। पत्र सं० ७। आ० ११×८ इञ्च। भाषा-राजस्थानी (गद्य)। विषय-आचार शास्त्र। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १०२। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

१०५८८. **रविवार कथा एवं पूजा**—पत्रसं० ८। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १९२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक।

१०५८९. **राजुल छत्तीसी—बालमुकन्द।** पत्रसं० ८। भाषा-हिन्दी। विषय-वियोग शृंगार। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ४६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भरतपुर।

१०५९०. **राजुल पच्चीसी**—× । पत्रसं० ३। आ० ६×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-वियोग शृंगार। र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक।

१०५९१. **राजुल पच्चीसी**—× । पत्रसं० ६। आ० ६×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-वियोग शृंगार। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ७०-४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर।

विशेष—निम्न पाठ और है :—

मुनीश्वर जयमाल भूधरदास कृत तथा चौबीस तीर्थंकर स्तुति।

१०५९२. **राजुल पत्रिका—सोमकवि।** पत्रसं० १। भाषा-हिन्दी। विषय-पत्र-लेखन (फुटकर)। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं ५६/६२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—

प्रारम्भ—

स्वस्ति श्री पहुगति पाय नमि गढ गिरनार सुठायरे सामलिया।
लखितु राजुल रंगि वीनती संदेसइ परिणामरे पीयारा ॥१॥
एक बार अबोरे मन्दिर मा हुरइ जिम तलिय मन हेजरे सामलिया।
तुम बिन सूना मन्दिर मालिया सूनी राजुल सेजरे पीयारा ॥२॥
अब कुशल ते मुजीना ध्यान की तुम कुशल नित मेव रे सभलिया।
चरणनी चाकरी चाहुं ताहरी दरसन दिखवहु देव पीयारा ।३॥

× × ×

अन्तिम—

वेणीमालण करी जेवां लही ढील भणे रहि कामरे।
पाणि नखइ मह पीउडा पातली दोहिलो विरह विरायरे पीयारारे ॥२०॥
माह वदि सातिम दिन इति मंगल लेख लिख्यो लख बोलरे सामलिया।
अस सोम कवि सीस साहि प्रीति राजुल मनरंग रोलरे पीयारा ॥२१॥
पूज्याराध्य तुमे प्राणिसरु श्री यदुमति चरणनुरे सामलिया।
राजुल पतियां पाठवी प्रेम की गढ गिरनाप सुठामरे पीयारा ॥२२॥
एक बार आवोरे मन्दिर माहरे ॥

१०५९३. **रामजस—केसराज।** पत्र सं० २५२। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-विविध। र०काल सं० १६८० आसोज बुदी १३। ले०काल सं० १८७४ अषाढ सुदी ८। पूर्ण। वेष्टनसं० ८१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना बूंदी।

विशेष—इसका नाम रामरस भी दिया है। अंतिम—श्री राम रसोधिकारे संपूर्ण।

१०५६४. **रावण परस्त्री सेवन व्यसन कथा**—× । पत्रसं० २४ । आ० ११½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३२०/६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष - ६५७ श्लोकों से आगे नहीं है ।

१०५६५. **रूपकमाला बालाबोध—रत्नरंगोपाध्याय** । पत्रसं० १० । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-विविध । र०काल × । ले०काल सं० १६५१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३४ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—

सं० १६५१ वर्षे श्रावण वदी ११ दिने शुक्रवारे श्री मुलतानमध्ये पं० श्री रंगवर्द्धन गणिवराणां शिष्य पं० विरउजस्स शिष्येण लिखितो बालावबोध ।

१०५६६. **लघियस्त्रय टीका—अभयचन्द्र सूरि** । पत्रसं० २६ । आ० १४×५½ इञ्च । भाषा-सं० टी० । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

१०५६७. **लघुक्षेत्र समास वृत्ति—रत्नशेखर** । पत्रसं० २६ । आ० १०½×४½ इञ्च । **भाषा**-संस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०५६८. **लब्धिसार भाषा—पं० टोडरमल** । पत्रसं० १५ । आ० १५—७ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-सिद्धांत । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

१०५६९. **लीलावती—भास्कराचार्य** । पत्रसं० २१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष-गणित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०६००. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० १० । आ० १०½×५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १८ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—१० से आगे के पत्र नहीं हैं ।

१०६०१ **लीलावती**— × । पत्रसं० ३३ । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष-गणित । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०६०२. **लीलावती**—× । पत्रसं० २० । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष-गणित । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

१०६०३. **लीलावती**—× । पत्रसं० ६७ । आ० १०½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष-गणित । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)

१०६०४. **लीलावती भाषा**—लालचन्द सूरि । पत्रसं० २८ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय-ज्योतिष-गणित । र०काल सं० १७३६ अषाढ बुदी ५ । ले०काल सं० १६०१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर (बयाना)

विशेष—ग्रंथ का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—

शोभित सिन्दूर पूर गज सीस नीकइ ।
नूर एक सुन्दर विराजै भाल चन्द जु
सूर कोरि कर जोरि अभिमान दूरि छोरि
प्रणमत जाके पद पंकज अनन्दजू ।
गौरीपूत सेवै जोउ मन चिंत्यो,
पावै रिद्धि वृद्धि सिद्धि होत है अखंडजू ।
विघन निवारै संत लोक कूं सुधारै
ऐसे गणपति देव जय जय सुखकंदजू ।।१।।

दोहा

गणपति देव मनाय के सुमरि वात सुरसति
भाषा लीलावती करूं चतुर सुणो इक चित्त ।।२।।
श्री भास्कराचार्य कृत संस्कृत भाषा सप्तसती ।।
लीलावती नाम इस ऊपरि सिद्ध ।।३।

अन्तिम पाठ—

संपूरण लीलावती भाषा में भल रीति ।
ज्युं कीधि जिणदिन हुई तिको कहुं धरि प्रीति ।।
सतरासै छत्तीस समै वदि अषाढ बखान ।
पाचम तिथि बुधवार दिन ग्रंथ संपूरण जान ।।
गुरु मौ चउरासी गच्छ्यं गच्छ खरतर सुवदीत ।
महिमंडल मोटा मनुष्य पूरी करै प्रतीत ।।११।।
गछनायक गुणवंत अति प्रकट पुन्य अंकूर ।
सोभागी सुन्दर वरण श्री जिनचंद सुरिंद ।।१२।।
सेवग तासु सोभागनिधि खेम साख सुखकार ।
शांति हर्ष वाचक भन्यो जस सोभाग्य अपार ।।१३।।
शिष्य तास सुविनीत मति लालचन्द इण नाम ।
गुरु प्रसाद कीधौ भलौ ग्रंथ भण्या अभिराम ।।१४।।
भला शास्त्र यद्यपि भला तो पणि चित्त उल्टास ।
गणित शास्त्र धुरि अन्ति लगि कीयो विशेष अभ्यास ।।१५।।
बीकानेर बडो सहर चिहुं दिस में प्रसिद्ध ।
घरघर कचन घन प्रबल घरघर ऋद्धि समृद्धि ।।१६।

घरघर सुन्दर नारि सुत झिगमिग कंचन देह ।
फोकल अंका कामनी नित नित बंछती नेह ।।१७।।

गढमढ मिंदर देहुरा देखत हरषत नैन ।
कवि औपम ऐसी कहै स्वर्ग लोग मनु ऐन ।।१८।।

राजै तिहां राजा बडो श्री अनोपसिंह भूप ।
राष्ट्रवंश नृप करण सुत सुन्दर रूप अनूप ।।१९।।

[illegible] तामें रचैं जात जगत लीकाह ।
लक्षुवय में विद्याभणी कियो शास्त्र अभ्यास ।।२०।।

सप्तसती लीलावती भणी बहुकीध अभ्यास ।
लालचन्द सुं विनय करि कीध अर्थी अरदास ।।२१।।

भाषा लीलावती करी ग्रंथ सुगम ज्युं होइ ।
देस देस मैं विस्तरै भणी चतुर सहु कोइ ।।
ग्रंथ सातसै सातहु ठहरायो करि ठीक ।
मूलशास्त्र जिमरी कियो कह्यो न ग्रंथ अलीक ।।२२।।

इति लीलावती भाषा लालचन्द सूरि कृत संपूर्ण ।

संवत् १९०१ मिती असाढ बुदी ११ मंगलवारे लिखतं श्रावग पाटणी ओंकार नलपुर मध्ये लिखी छै । श्रावग उदासी सोगाणी वासी जैपुर भाई के नन्दराम वाचनार्थं । श्रावक गोत्र बाकलीवाल मूलाजी कनी-राम वीरचन्द लिखाय दीदी ।।

१०६०५. लीलावती टीका—**दैवज्ञराम कृष्ण** । पत्रसं० १४८ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष, गणित । र० काल × । **ले०काल** सं० १८३७ असाढ बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२५ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—सवाई जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

१०६०६. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १०९ । आ० ९×४ इञ्च । **ले०काल** सं० १६०९ (शक सं०) । पूर्ण । वेष्टन सं० १९८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—इति श्री नृसिंह दैवज्ञात्मज लक्ष्मण दैवज्ञ सुत सिद्धांत वि० दैवज्ञ रामकृष्णेन विरचित लीलावती वृत्ति ।

१०६०७. लेख पद्धति—× । पत्रसं० ७ । आ० ११½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विविध । र० काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—पत्र लेखन विधि दी हुई है ।

१०६०८ वृन्द विनोद सतसई—**वृन्दकवि** । पत्रसं० ४८ । आ०११×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी. (पद्य) । विषय-शृंगार रस । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजभवन (डीग)

१०६०६- वृषभदेव गीत— ब्रह्ममोहन । पत्रसं० २ । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । र०काल× । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६/४७८ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--अंतिम पाठ निम्न प्रकार है—

वारि धारि विधान हारे संसार सागर तारिणी
पुनि धर्मभूषण पद पंकज प्रणमी करिमोहन ब्रह्मचारिणी

१०६१०. वज्र उत्पत्ति वर्णन—× । पत्रसं० ३ । भाषा-संस्कृत । विषय-विविध । र०काल × । ले०काल× । वेष्टन सं० ६१५ । पूर्ण वेष्टन ६१५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

१०६११. वज्रसूची (उपनिषत्)—श्रीधराचार्य । पत्र सं० ४ । आ० ११×४ इंच । भाष-संस्कृत । विषय-वैदिक (शास्त्र) । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४१६/५०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

१०६१२. वरुण प्रतिष्ठा—× । पत्र सं० १६ । आ०१०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । ले०काल सं० १८२४ कार्तिक बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११०५ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०६१३. वाकद्वार पिंड कथा— × । पत्रसं० २१ । आ० ६×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६७ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०६१४. वाजनेय संहिता—× । पत्र सं० १ से १७ । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७५१ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

१०६१५. वाजनेय संहिता—× । पत्रसं० २०६ । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार-शास्त्र । र०काल × । ले०काल सं० १६४६ । अपूर्ण ; वेष्टन सं० ७०-७०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--बीच २ के बहुत से पत्र नहीं है ।

१०६१६. वाच्छा कल्प—× । पत्रसं० २५ । आ० ६½×३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-वैदिक साहित्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०४५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०६१७. वास्तुराज—राजसिंह । पत्रसं० ४७ । आ० ८×६½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-वास्तु शास्त्र । र०काल × । ले०काल सं० १६५३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

अन्तिम—इति श्री वास्तुशास्त्रे वास्तुराज सूत्रधार राजसिंह विरचिते शिखर प्रमाण कथनं नाम दशमेध्याय ।।

संवत् १६५३ वर्षे भृगमास सुदी १५ रवौ लिखितं दशोरा ब्राह्मण ज्ञाति व्यास पुरुषोत्तमे हस्ताक्षरं नग्र डूंगरपुर मध्ये ।

१०६१८. **वास्तु स्थापन**—× । पत्रसं० १८ । आ० ९×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-वास्तु शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन २२८/३८९ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

१०६१९. **वास्तु शास्त्र**—×। । पत्र सं० १-१७ । आ० ९½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-वास्तु शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०६२०. **जिनदत्त क्षेत्रपाल गीत**—ब० नेमिदास । पत्रसं० १ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६७/४७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—अन्तिम—

नित नित आवि बधावणा चन्द्रनाथ ना भुवन मझार रे ।
धवल मंगल गाइया गोरडी तहां करत्यो जय जयकार रे ।।
इणि परि भगति भली करो जिम विधन तणु दुख नासि रे ।
इति नरेन्द्र कीरति चरणे नमी इम बोलि ब० नेमिदास रे ।

१०६२१. **विदग्ध मुखमंडन**—**धर्मदास** । पत्रसं० २२ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२२१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है ।

१०६२२. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ५ । आ० ९×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११७ । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०६२३. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० १३ । ले०काल सं० १७४० जेष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०६२४. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० ४२ । आ० ९½×४½ इञ्च । ले०काल सं० १८०० पोष बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४२९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०६२५. **विदग्ध मुखमंडन टीका**—**विनय सागर** । पत्रसं० १०८ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—टीका काल—

अंकर्तु रसराकेश वर्षः तेजपुरे वरे ।
मार्ग शुक्ल तृतीयायां स्वावेषा विनिर्मिता ।।

इति खरतरागच्छालंकार श्री जिनहर्ष सूरि तत् शिष्य श्री विनयसागरमुनि विरचितायां विदग्ध मुखमंडनालंकारटीकायां शब्दार्थसंदर्भकिन्यां महेलादि प्रदर्शको नाम चतुर्थोध्याय ।

१०६२६. विद्वज्जन बोधक—हिंदी पद्यानुवाद। पत्र सं० [illegible]। आ० ११½×७½ इंच। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-सुभाषित। र०काल सं० १६३६ माघ सुदी ५। ले०काल सं० १६६७ पौष सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० ४६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

१०६२७. वीतराग देव चैत्यालय शोभा वर्णन—× । पत्रसं० ६। आ० १२×५ इंच। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय- चैत्य वंदना। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ४६६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—ब० सवाज की पोथी।

१०६२८. वेलि काम विडम्बना—समयसुन्दर। पत्रसं० १। आ० ६½×४½ इंच। भाषा—हिन्दी। र०काल × । ले०काल। अपूर्ण। विषय—वेलि। वेष्टनसं० ७१७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—बनारसीदास कृत चिंतामणि पार्श्वनाथ भजन भी है। "चिंतामणि सांचा साहिब मेरा"

१०६२९. वैराग्य शांति पर्व (महाभारत)—× । पत्रसं० २-१४। आ० ६×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय—वैदिक शास्त्र। र०काल × । ले०काल सं० १६०५। अपूर्ण। वेष्टन सं० २३३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)।

विशेष—लिखी तंतु वाडिशी कृष्णपुर नंदगांव मध्ये।

१०६३०. शृंगार वैराग्य तरंगिणी—सोमप्रभाचार्य। पत्रसं० ६। आ० १२½×५¾ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय—सुभाषित। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १०२। प्राप्ति-स्थान—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली।

विशेष—४७ श्लोक हैं। अकबरा बाद में ऋषि बालचंद्र ने प्रतिलिपि की थी।

१०६३१. शंकर पार्वती संवाद—× । पत्रसं० ७। आ० १०×४¾ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—संवाद। र०काल × । ले०काल सं० १६३०। पूर्ण। वेष्टन सं० २०१। प्राप्ति स्थान— दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक)।

१०६३२. शतरंज खेलने की विधि × -पत्र सं० ७। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। विषय-विविध। र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टनसं० ७००। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

विशेष—४ पत्र नहीं हैं। ७१ दाव दिये हुए हैं। हाथी, घोड़ा, ऊंट, प्यादा आदि का प्रमाण दिया हुआ है।

१०६३३. शत्रुंजय तीर्थ महात्म्य—धनेश्वर सूरि। पत्रसं० २-२३८। भाषा—संस्कृत। विषय—इतिहास-शत्रुंजय तीर्थ का वर्णन है। र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टनसं० ४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपंथी मंदिर बसवा।

१०६३४. शब्दभेदप्रकाश—× । पत्र सं० १७। आ० ११×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय—कोष। र० काल × । ले०काल सं० १६२६ जेष्ठ सुदी १। पूर्ण। वेष्टनसं० २८८। प्राप्ति स्थान भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—मंडलाचार्य धर्मचन्द्र के शिष्य नेमिचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

१०६३५. शब्दानुशासन—**हेमचन्द्राचार्य** । पत्र सं० ७ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १०१३ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०६३६. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ५६ । आ० १३×५½ इञ्च । **ले०काल सं० १५१४** । पूर्ण । **वेष्टन सं० ४२८** । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर । प्रति सटीक है ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५१४ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ३ गुरुदिने पुनर्वसुनक्षत्रे वृद्धियोगी श्री हिसारपेरोजापत्तने तत्र लब्धावजयेपुर सुरत्राणे श्री बहलोल साह राज्य प्रवर्त्तमाने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्रीहेमकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री कमलकीर्तिदेवाः तस्य गुरु भ्राता मुनि श्री धर्मचन्द्रदेवास्तच्छिष्य श्री प्रभाचन्द्रदेवः तस्य शिष्यो मुनि श्री शुभचन्द्र देवः श्री धर्मचन्द्रः शिष्यिणी क्षान्तिकापुष्यश्री तस्या शिष्यणी क्षांतिकाज्ञानश्री अग्रोतवंशजातसाधु उद्धरण पुत्रः पं० मीहासंज्ञः । एतेषांमध्ये अग्रोतवंशे बंसल गोत्रे परम श्रावक साधु भूंगड नामा तस्य भार्या विनयसरस्वती साधु मीघाजी नामी तयो पुत्राश्चत्वारः प्रथम पुत्र चतुर्विधदानवितरण कल्पवृक्षः साधु छाजूसंज्ञस्तत् भार्या साधुणी पोल्हणती तयो पुत्रचिरंजीवी लुणाभिधः द्वितीय पुत्र साधु राजुनामा । तद्भार्या साधुनी लूणी नाम्नी । तृतीय पुत्र साधु-देवाख्यः तस्य भार्या साधुनी जीव्हाही । चतुर्थ पुत्र साधु सेवराज-तस्य भार्या मोहणही । एतेषांमध्ये परम श्रावकेन साधु छाजुनाम्ना इमं प्राकृत वृत्ति पुस्तकं निज द्रव्येण लिखाप्य पंडित श्री मेघावि संज्ञाय प्रदत्तं निजज्ञानावरणकर्मक्षयाय शुभम् सुलेखक पाठकयोः ।

१०६३७. शारङ्गधर संहिता—**दामोदर** । पत्र सं० ३१५ । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । **ले०काल सं० १६०७** वैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक) ।

विशेष—लाल कृष्ण मिश्र ने काशी में प्रतिलिपि की थी ।

१०६३८. शील विषये वीर सेन कथा—× । पत्र सं० ११ । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—कथा । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी) ।

१०६३९. श्रमण सूत्र भाषा—× । पत्र सं० ७ । आ० १० × ७½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

१०६४०. षट् कर्म वर्णन—× । पत्र सं० १० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—वैदिक शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

१०६४१. श्रुतपंचमी कथा—**धनपाल** । पत्र सं० ४४ । आ० १०½×३ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल सं० १५०१ फागुण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथीय मन्दिर दौसा ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है । संवत् १५०१ वर्षे फाल्गुन सुदी ५ । शुक्र दिने तिजारा

नगर वास्तव्ये श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री सहस्रकीर्ति देवाः तत्पट्टे श्री गुणकीर्ति देवाः तत्पट्टे श्री यशः कीर्ति देवाः तत्पट्टे प्रतिष्ठाचार्य श्री मलयकीर्ति देवाः तेषामाम्नाये ।

१०६४२. संख्या शब्द साधिका—× । पत्र सं० २ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—गणित । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० [illegible] । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०६४३. संकल्प शास्त्र—× । पत्र सं० १२ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—वैदिक साहित्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११०४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

१०६४४. संध्या वंदना—× । पत्र सं० ४ । आ० ८ × २½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—वैदिक साहित्य । र० काल × । ले०काल सं० १९२६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०१८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०६४५. सज्जनचित्त वल्लभ—मल्लिषेण । पत्र सं० ६ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दयलाना (बूंदी) ।

विशेष—मूल के नीचे हिन्दी में अर्थ दिया है । किन्तु गुजराती मिश्रित हिन्दी है ।

१०६४६. सत्तरी कर्म ग्रन्थ—× । पत्र सं० ३९ । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

१०६४७. सत्तरिरूपठाणा—पत्र सं० २ से १२ । भाषा—प्राकृत । विषय-सिद्धांत । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

१०६४८ समाचारी—पत्र सं० ३९-८३ । भाषा-संस्कृत । विषय-विविध । र०काल × । ले०काल सं० १८२७ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६२९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०६४९. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ११३ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६२५ । **प्राप्ति-स्थान**-दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

१०६५०. सर्वरसी--× । पत्र सं० ३९ । आ० ९½ × ६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

१०६५१. सर्वार्थसिद्धि भाषा-जयचन्द छाबड़ा । पत्रसं० २८२ । आ० १४½ × ७½ इञ्च । भाषा-राजस्थानी (ढूंढारो गद्य) । विषय-सिद्धान्त । र०काल सं० १८६५ चैत सुदी ५ । ले० काल सं० १९३२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

१०६५२. साठि—× । पत्रसं० १२ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल सं० १८११ चैत बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० २०२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ़ ।

विशेष—रूपचन्द ने लिखा था ।

१०६५३. **सामुद्रिक शास्त्र**—× । पत्रसं० १६ । आ० ८½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-लक्षण ग्रन्थ । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

१०६५४. **सामुद्रिक शास्त्र**—× । पत्रसं० १७ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-लक्षणग्रंथ । र० काल × । ले० काल सं० १५८६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौगान बूंदी ।

विशेष—जैनाचार्य कृत है ।

१०६५५. **सामुद्रिक शास्त्र**—× । पत्रसं० १० । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-लक्षण ग्रन्थ । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

१०६५६. **सामुद्रिक शास्त्र**—× । पत्र सं० २० । भाषा—हिन्दी । विषय—लक्षण ग्रन्थ । र० काल × । ले० काल सं० १८९९ वैशाख बदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दीवानजी, भरतपुर ।

१०६५७. **सामुद्रिक शास्त्र (स्त्री पुरुष लक्षण)**—× । पत्र सं० ४ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सामुद्रिक शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० १४० । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर बारा ।

१०६५८. **सामुद्रिक शास्त्र (स्त्री पुरुष लक्षण)**—× । पत्र सं० ३६ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सामुद्रिक (लक्षण ग्रन्थ) । र० काल × । ले० काल सं० १८५० काती सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल टोंक ।

विशेष—तक्षकपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

१०६५९. **सामुद्रिक सुरूप लक्षण**—× । पत्रसं० १६ । आ० ९×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । विषय-सामुद्रिक । र० काल × । ले० काल सं० १७९२ भादवा सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४१३ । **प्राप्ति स्थान**—स० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—इस प्रति की जोधनेर में पंडित प्रवर टोडरमल जी के पठनार्थ लिपि की गई थी ।

१०६६०. **सार संग्रह-महावीराचार्य** । पत्रसं० ५१ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-गणित । र० काल × । ले० काल सं० १९०६ । वेष्टन सं० १०९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर (जयपुर) ।

विशेष—महाराजा रामसिंह के राज्य में लिखा गया था । इसका दूसरा नाम गणितसार संग्रह है ।

१०६६१. **सारस्वत प्रक्रिया—परिव्राजकाचार्य** । पत्रसं० ९२ । भाषा-संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ९८/५८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

१०६६२. सिद्धचक्र पूजा—शुभचन्द्र । पत्र सं० १०८ । भाषा–संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५६/३१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर ।

विशेष—इसका नाम सिद्ध यंत्र स्तवन भी दिया है ।

१०६६३. सुदृष्टितरंगिनी भाषा—टेकचन्द । पत्र सं० ४२६ । आ० १४½×७ इंच । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–सुभाषित । र० काल सं० १८३८ सावण सुदी ११ । ले० काल सं० १९०७ वैशाख सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—सवाई जयपुर में ब्राह्मण जमनालाल ने वि० सदासुखजी तथा पं० चिमनलालजी बूंदी वालों के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी । ग्रंथाग्रंथ १६२२२ पंडितजी की प्रशस्ति:—

आचार्य हर्षकीर्ति—सं० १९०७ आचार्य श्री हरिकीर्तिजी संवत् १६६९ के साल टोडा में हुआ, ज्यांकी वान छत्री हाल मौजूद । त्यांके शिष्य रामकीर्ति, तत्शिष्य भवनकीर्ति, टेकचंद, पेमराज, सुखराम, पद्मकीर्ति दोदराज पंडित हुए । तत्शिष्य छाजूराम, तत्शिष्य पं० दयाचंद, तत्शिष्य ऋषभदास त० शि० सेवाराम, द्वितीय डूंगरसीदास, तृतीय साहिबराम एतेषां मध्ये पं० डूंगरसीदास के शिष्य सदासुख शिवलाल तत्शिष्य रतनलाल, देवालाल मध्ये बृहत् शिष्येन लिपीकृता । पं० चिमनलाल पठनार्थं ।

ऐसा हुआ बूंदी के खेडे पंडित शिवलाल ।
बाग बणाया तसि जिनने तलाब ऊपर न्यारा ।
सब दुनियां में शोभा जिनकी रुपया देव उधारा ।
जिनका शिष्य रतनलाल पौत्र नेमीचंद प्यारा ।।
संवत् १९०७ के मई ग्रंथ लिखाया सारा ।
जाग दुकानां कटला का दरवाजा बणाया नागदी माई ।।

१०६६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५२६ । आ० ११×८ इंच । ले० काल सं० १९६८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ ।

विशेष—ईश्वरलाल खांदवाड ने प्रतिलिपि की थी ।

१०६६५. सूक्तावली—× । पत्र सं० १–५८ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ७२१ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०६६६. सूर्य सहस्रनाम— × । पत्र सं० ११ । आ० ७¾×३½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११०७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—भविष्य पुराण में से है ।

१०६६७. **स्तोत्र पूजा संग्रह**— × । पत्र सं० २ से ४१ । आ० ११×५½ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा स्तोत्र । र०काल × । ले०काल सं० १८४७ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—प्रारम्भ का केवल एक पत्र नहीं है ।

१०६६८ **स्थरावली चरित्र**—**हेमचन्द्राचार्य** । पत्र सं० १२७ । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल सं० १८७६ जेठ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

१०६६९ **प्रतिसं० २** । पत्र सं० २ से १५० । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

१०६७०. **हिण्डोर का दोहा**— × । पत्र सं० १ । आ० १०½×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पुटकर । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

॥ समाप्त ॥

ग्रंथानुक्रमणिका

अकारादि स्वर

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
अकलंक चरित्र—		हि०	३१४
अकलंक निकलंक चौपई—भ० विजयकीर्ति		हि०	६४३
अकलंक यति रास—ब्र० जयकीर्ति		हि०	११४४
अकलंकाष्टक—अकलंकदेव		सं०	७०६, ११२४, ११४०
अकलंकाष्टक भाषा	जयचन्द छाबड़ा	हि०	७०६
अकलंकाष्टक भाषा	सदासुख कासलीवाल	हि०	७०६
अकलंकदेव स्तोत्र भाषा—	चंपालाल बागड़िया	हि०	७१०
अकृत्रिम चैत्यालय जयमाल—भैया	भगवतीदास	हि०	७७७
अकृत्रिम चैत्यालय पूजा—चैनसुख		हि०	७७७
अकृत्रिम चैत्यालय पूजा—मल्लिसागर		सं०	७७७
अकृत्रिम चैत्यालय पूजा	लालजीत	हि०	७७६, ७७८
अकृत्रिम चैत्यालय पूजा		हि०	१००२
अकृत्रिम चैत्यालय विनती	लक्ष्मण	हि०	११४५
अकृत्रिम चैत्यालय विनती		सं०	११२६
अक्षय नवमी कथा		सं०	४२६
अक्षय दशमी कथा—	ललितकीर्ति	सं०	४७६
अक्षय दशमी पूजा		सं०	७७८
अक्षय निधि दशमी कथा		सं०	६६५
अक्षर बत्तीसी		हि०	६८०
अक्षर बत्तीसी—भैया	भगवतीदास	हि०	१००५
अक्षर बावनी		हि०	१०१७
अक्षर बावनी		हि०	१०६१
अक्षर बावनी—कबीरदास		हि०	१००६
अक्षर बावनी—केशवदास		हि०	६८१
अक्षर बावनी	---	हि०	६८१
अक्षर बावनी--दौलतराम		हि०	१०५६
अक्षर बावनी—ज्ञानतराय		हि०	१०७८, १११६
अक्षर माला		सं०	६६४
अक्षर माला—मनराम		हि०	४५
अगलदत्तक कथा—जयशेखर सूरि		सं०	४२१
अग्रवालों के १८ गोत्र-		हि०	८७७
अजितनाथ रास—ब्र० जिनदास		हि०	६३०, ११४७
अजित शांति स्तवन		सं०	६५६
अजित शांति स्तवन—नन्दिषेण		प्रा०	७१०
अजित शांति स्तवन	---	सं०	७१०
अजित शांति स्तवन—मेरुनंदन		हि०	१०३६
अजीर्ण मंजरी—न्यामत खां		हि०	५७३
अजीर्ण मंजरी—वैद्य पद्मनाभ		हि०	१०७७
अठाई का रासा—विनयकीर्ति		हि०	१११६
अठाईस मूलगुण रास—ब्र० जिणदास		हि०	११०७
अठारह नाता—अचलकीर्ति		हि०	१०७३, १०७८, १०७९
अठारह नाता कथा		हि०	१००५
अठारह नाते की कथा		प्रा०	१०२६
अठारह नाते की कथा—कमलकीर्ति		हि०	१०५३, १०६५, ११३०
अठारह नाते की कथा—देवालाल		हि०	४२१,
अठारह नाते की कथा	श्रीवंत	सं०	४२१
अठारह नाता का गीत—शुभचन्द्र		हि०	११७३
अठारह नाता का चौढ़ालया		हि०	१०५६
अठारह नाता का चौढ़ालया—लोहट		हि०	४२६, ६७०, ६८१ १०६२
अठारह पुराणों की नामावली		हि०	११३४०
अट्ठोत्तरी स्तोत्र विधि		हि०	७१०

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
अढ़ाई द्वीप पूजा		सं०	७३८
अढ़ाई द्वीप पूजा	बालूराम	हि०	,,
अढ़ाई द्वीप पूजा	भ० शुभचन्द्र	सं०	,,
अढ़ाई द्वीप पूजा	लालजीत	हि०	७७६
अढ़ाई द्वीप मंडल			६२५
अढ़ाई द्वीप मंडल रचना			११७२
अतिचार वर्णन		हि०	६०,१०१४
अथर्ववेद प्रकरण			११७३
अध्यात्म कल्पद्रुम	मुनि सुन्दर सूरि	सं०	१८०
अध्यात्म तरंगिणी	आ० सोमदेव	सं०	१८०
अध्यात्म पैंडी	बनारसीदास	हि०	१०११
अध्यात्म बत्तीसी		हि०	१०६१
,,	बनारसीदास	हि०	६६६
,,	,,	हि०	६४१
अध्यात्म बारहखड़ी : दौलतराम	कासलीवाल	हि० —	१८०
			१८१
अध्यात्म बावनी	—	हि०	१०५८
अध्यात्म रामायण	—	सं०	१८१
अध्यात्मोपनिषद : हेमचन्द्र :		सं०	१८०
अध्यात्मोपयोगिनी स्तुति : महिमाप्रभसूरि :		हि०	७१०
अनगार धर्मामृत : पं० आशाधर :		सं०	६०
अनंगरंग : कल्याणमल्ल		सं०	६२६
अनन्तकथा : जिनसागर :		हि०	११६३
अनन्तचतुर्दशीकथा : भैरुदास		हि०	६६१
			११२३
अनन्तचतुर्दशी व्रतकथा : खुशालचंद		हि०	४२१
अनन्तचौदश कथा : ज्ञानसागर		हि०	१११७
अनन्त चतुर्दशी पूजा : श्री भूषणयति :		सं०	७७६
,, ,, ,,	शान्तिदास	सं०	७७६
अनन्त चतुर्दशी व्रतपूजा : विश्वभूषण		हि०	७८०
अनन्त जिन पूजा : पं० जिनदास		सं०	७८०
अनन्त पूजा : ब्र० शान्तिदास		हि०	११७०
अनन्तनाथ कथा	—	सं०	६६५
अनन्तनाथ पूजा : ब्र० शान्तिदास		हि०	११२६
अनन्तनाथ पूजा : श्रीभूषण		सं०	७७०
,, ,,	रामचन्द्र	हि०	,,
,, ,,	—	सं०	७८१
अनन्तनाथ पूजा मंडल विधान : गुणचन्द्राचार्य			
अनंतव्रत कथा		सं०	७८१
अनन्त पूजा विधान—		सं०	७८०
अनन्त व्रत पूजा—		हि०	१०१७
,,	: मुनि ज्ञानसागर	सं०	४२२
			१०७३ १०७४
,,	: ब्र० जिनदास	हि०	११४३
,,	: भ० पद्मनन्दि	सं०	४२१, ४३४
,,	: ब्र० श्रुतसागर	सं०	४३४
,,	: ललित कीर्ति	सं०	४७८
,,	—	हि०	४८४
,,	: हरिकृष्ण पाण्डे	हि०	४३३
अनन्त व्रत कथा पूजा : ललितकीर्ति		सं०	७८१
अनन्त व्रत पूजा : पाण्डे धर्मदास		सं०	७८२
,,	सेवाराम साह	हि०	७८२
,,	—	सं० हि०	७८२
,,	—	सं०	७८३
अनन्त व्रत पूजा उद्यापन : भ० सकलकीर्ति		सं०	७८३
अनन्त व्रत पूजा : ब्र० शांतिदास		सं०	११४३
,,	: शुभचन्द्र	सं०	१००७
,,	: सेवाराम	हि०	८८०
अनन्त व्रत पूजा विधान भाषा—		हि०	७८३
अनन्त व्रत विधान : ब्र०शान्तिदास		हि०	७८३
अनन्त व्रत राय	—	हि०	११६४
,,	: ब्र० जिनदास	हि०	११५७, ११७०, ११४६, ११४३

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
अनन्तव्रत रास	: जिनसेन	हि०	११६६
अनन्तव्रतोद्यापन	: नारायण	सं०	७८३
,,	—	,,	,,
,,	पूजा —	,,	,,
अनाथी मुनि सज्झाय	—	हि०	६६७
अनादि स्तोत्र	—	सं०	१०२४
अनाश्व कर्मनुपादान	—	प्रा०	११७३
अनिट कारिका	—	स०	५१०
अनित्य पंचाशत	: त्रिभुवनचन्द्र	हि०	६०
अनित्य पचासिका	—	हि०	१०४१
अनित्य पंचासिका	त्रिभुवनचन्द	हि०	११५३, १०७१
अनित्य पच्चीसी	: भगवतीदास	हि०	१०५१
अनिरुद्धहरण	: जयसागर	हि०	११६८, ४२३, ४२४
अनिरुद्धहरण (उषहारण)	रत्नभूषण सूरि	हि०	४२२
अनुप्रेक्षा	: अवतू	हि०	१०६७
अनुप्रेक्षा	: योगदेव	सं०	६७४
अनुप्रेक्षा संग्रह	—	हि०	१८१
अनुभव प्रकाश	: दीपचन्द कासलीवाल	हि०	१८१
अनुयोगद्वार सूत्र	—प्राकृत	प्रा०	१
अनेकार्थध्वनि मंजरी	: क्षपणक	सं०	५२१
,,	,, —	,,	,,
अनेकार्थ नाममाला	: भ० हर्षकीर्ति	स०	५२१
,,	—	,,	,,
अनेकार्थ मंजरी		हि०	६७६
,,	जिनदास	हि०	५३१
,,	—	सं०	५३२
अनेकार्थ शब्द मंजरी	—	सं०	५३३
अनेकार्थ संग्रह	: हेमराज	सं०	५१०
अपराजित ग्रंथ (गौरी महेश्वरावार्ता)		सं०	४२४
अपराजित मंत्र साधनिका	—	सं०	७११
अपामार्जन स्तोत्र	—	सं०	७११
अब्जद प्रश्नावली	—	हि०	१०७६
अर्बुदाचल स्तवन	—	हि०	१०६१
अभयकुमार कथा	—	हि०	४२४
अभयकुमार प्रबंध		हि०	४२५
अभयपालरी वात	—	हि०	६६२
अभिधान चिंतामणि नाममाला	: हेमचन्द्राचार्य	सं०	५३२
अभिधानसारसंग्रह	—	सं०	५३३
अभिनन्दन गीत	—	हि०	६७८
अभिषेक पाठ	—	सं०	७८३, ७८४
अभिषेक पूजा	: विनोदीलाल	हि०	७८४
अभिषेक विधि	—	सं०	७८४
अमरकोश	—	सं०	१०७१
अमरकोश	: अमरसिंह	सं०	५३३ ५३४, ५३५, १०८२
अमरदत्त मित्रानंद रासो	: जयकीर्ति	हि०	६३०
अमरसुन्दरीविधि	—	हि०	६६६
अमरुक शतक	—	सं०	३१४
अभिलिगति श्रावकाचार भाषा	: मागचन्द	हि०प०	६०
अमृतमंजरी	: काश्मीराज	सं०	५७३
अमृतसागर	: सवाई प्रतापसिंह	हि०	५७३, ५७४
अमोलपुर जिनवन्दना	—	हि०	६८५
अर्चा निर्णय	— × —	हि०	६०
अर्थप्रकाशिका—सदासुख कासलीवाल—राज०गद्य			१
अर्थ संदृष्टि—		प्रा० सं०	२
अर्हत प्रवचन	— × —	सं०	६०
अरहंत केवली पाठा—		सं०	५४१
अरिष्टध्याय—		प्रा०	१०००, १११६, ५४१, ६६३
अरिष्टध्याय	: धनपति	सं०	१११७
अरिहंतों के गुण वर्णन	—	हि०	११३०

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
अलंकारचन्द्रिका : अप्पय दीक्षित		सं०	५९३
अलंकार सर्वया : कुंवरखाजी		हि०	१०१५
अवधू परीक्षा (अध्यात्मानुप्रेक्षा)		हि०	१०८९
अवमूत—		सं०	५७४
अवन्तिकुमार रास : जिनहर्ष		हि०	९८७
अवंती सुकुमाल स्वाध्याय : पं० जिनहर्ष		हि०	४२५
अव्ययार्थ—		सं०	५१०
अश्व चिकित्सा		हि०	११९९
अशोकरोहिणी कथा		सं०	४२५
अष्टक : पद्मनन्दि		सं०	९९६
अष्टकर्मचूर उद्यापन पूजा—		सं०	९०७
अष्टकर्म चौपई : रत्न भूषण		हि०	११३३
अष्ट कर्म प्रकृति वर्णन—		सं०	९९८
अष्ट कर्म बंध विधान—		हि०	१०९६
अष्ट द्रव्य महा अर्घ		हि०	७८४
अष्ट प्रकारी पूजा		हि०	७८६
अष्ट प्रकारी पूजा जयमाला—		,,	,,
अष्ट प्रकारी देव पूजा—		हि०	९६८
अष्ट पाहुड : कुन्दकुन्दाचार्य		प्रा०	१८१, ९८३, ९९४, ९९५
अष्ट पाहुड भाषा		हि०	१०८२
अष्ट पाहुड भाषा : जयचन्द छाबड़ा		राज०	१८१, १८२, १८३
अष्ट सहस्त्री : आ० विद्यानन्दि		सं०	२४८
अष्ट सहस्त्री (टिप्पण)—		सं०	२४८
अष्टापद गीत—		हि०	९७८
अष्टावक्र कथा टीका : विश्वेश्वर		सं०	४२५
अष्टांग सम्यक्त्व कथा : ब्र० जिनदास		हि०	४२५
अष्टाह्निका कथा : विश्वभूषण		हि०	९६१ ११२३
अष्टाह्निका रास : विनयकीर्ति		हि०	९९१,११२३
अष्टाह्निका पूजा—		हि०	९८७, १०६३, १११८
अष्टाह्निका पूजा : सकलकीर्ति		सं०	७८४
अष्टाह्निका पूजा : शुभचन्द्र		सं०	७८५
,, व्रतोद्यापन : शोभाचन्द्र		सं०	७८४
,, पूजा—		सं०हि०	७८५
,, ,, उद्यापन : शुभचन्द्र		सं०	७८५
,, ,, — सुमतिसागर		हि०	७८५
,, ,, ज्ञानतराय		हि०	७८५, ८८१
,, ,, —		सं०हि०	७८६
अष्टाह्निका रास :		हि०	९६१
,, : सुखसागर		हि०	१०७१
अष्टाह्निका व्रत कथा —		सं०	४२५, ४२६
,, : भ० शुभचन्द्र			४२५,४२६
,, ब्र० ज्ञानसागर		हि०	४२६
,, भ० सुरेन्द्रकीर्ति		सं०	४३४
,, सोमकीर्ति		सं०	४७८
अष्टाह्निका व्रतोद्यापन पूजा : पं० नेमिचन्द्र		सं०	७८५
अष्टाह्निका व्याख्यान : हृदयरंग		सं०	९१
अष्टोत्तरीदशा करण—		सं०	५४१
अष्टोत्तरी शतक भगवतीदास		हि०	११३३
असज्झाय निर्युक्ति —		प्रा०	१८१
असज्झाय विधि —		हि०	७८६
असिज्झाय कुल —		प्रा०	७११
असोदू का शकुन —		हि०	९४४
अहर्गणविधि		हि०	५४१
अहिंसा धर्म महात्म्य		सं०	९१
अंकफल			१११६
अंक बत्तीसी : चन्द		हि०	६८१
अंकुरारोपण		सं०	९६४

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
अंकुरारोपण विधि—		सं०	६६६
अंकुरारोपण विधि : आशाधर		सं०	७८८
,, ,, : इन्द्रनन्दि		सं०	७८६
अंगपण्णत्ती	—	प्रा०	६
अंगविद्या	—	सं०	५४१
अंग स्पर्शन	—	सं०	५४१
अंजना चरित्र	भुवनकीर्ति	हि०	३१४
अंजणा रास	—	हि०	६३१
अंजना सुन्दरी चउपई : पुण्यसागर		हि०	३१४
अंजना सु-दरी सतानो रास		हि०	६३२
अन्तकृत दशांग वृत्ति	—	प्रा०	२
अन्तगड दसाओ	—	प्रा०	२
अंतर दशा वर्णन	—	स०	५४१
अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ स्तवन : भावविजय वाचक		हि०	७१५
,,	— लावण्य समय	हि०	७१५
अंतरीक्ष पार्श्वनाथ छंद : भावविजय		हि०	११५७
अंबड चरित्र—		हि०	३१४
अंबिका रास—		हि०	६२३
अंबिकासार : ब्र० जिणदास		हि०	११३८
अंकार शुद्धि विधान : देवेन्द्र कीर्ति		सं०	७८६
आकाश पंचमी कथा : घासीदास		हि०	११२३
,, : ब्रह्म जिनदास		हि०	११०७
,, : ब्र० ज्ञानसागर		हि०	१११४
,, : ललितकीर्ति		सं०	४७६,४८०
,, : हरिकृष्ण पाण्डे		हि०	४३३
आंख के १३ दोष वर्णन	—	हि०	५७४
आख्यात प्रक्रिया : अनुभूतिस्वरूपाचार्य		सं०	५११
आगमसारोद्धार : देवीचन्द		हि०	२
आगम विलास : ज्ञानतराय		हि०	६५८
आचार शास्त्र—		प्रा०	१०००
आचार सार वचनिका : पन्नालाल चौधरी		हि०	६१
आचारांग सूत्र वृत्ति	—	प्रा०	३
आचार्य गुण वर्णन	—	सं०	६१
आचार्यादि गुण वर्णन	—	हि०	१०७२
अजितजिन पुराण : पण्डिताचार्य अरुणमणि		सं०	२६४
आठ प्रकार पूजा कथानक—		प्रा०	७८५
आणंद श्रावक संधि : श्रीसार		हि०	७११
आणंदा—		हि०	१०५८
आणदा : महानंद		हि०	६६५
आणन्दमणिका कल्प : मानतुंग		सं०	१११६
आत्मपटल—		हि०	११४६
आत्मप्रकाश आत्माराम		हि०	५७४
आत्मप्रबोध—		सं०	१०८२
आत्मप्रबोध : कुमार कवि		सं०	१८१,१८४
आत्मरक्षामंत्र		सं०	६२०
आत्मशिक्षावणि : मोहनदास		हि०	१०१५
आत्मसंबोध		हि०	६५६
आत्मानुशासन : गुणभद्राचार्य		सं०	१८४
आत्मानुशासन टीका : पं० प्रभाचन्द्र		सं०	१८४,१८५
आत्मानुशासन भाषा—		हि०	१८५
,,	पं० टोडरमल	हि०	१८५, १८६, १८७, १८८, १८६
आत्मानुशासन भाषा टीका		सं० हि०	१८५
आत्मावलोकन : दीपचन्द कासलीवाल		हि०	१८६,६५७
आत्मावलोकन स्तोत्र : दीपचन्द		हि०	११७२
आदिजिनस्तवन : कल्याण सागर		हि०	७११
आदित्यजिन पूजा : केशवसेन		सं०	७८६
,,	: भ० देवेन्द्रकीर्ति	सं०	७८६

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
आदित्य व्रत कथा :	पांडे जिनदास	हि०	११६३
,,	: ब्र० महति सागर	हि०	११६३
आदित्यव्रत पूजा		सं०	७८७
आदित्यव्रत रास—		सि०	११३७
आदित्यवार कथा—		हि०	४२७
			६५८, ६६१, ६६५, १०७४
आदित्यवार कथा :	अपभ्रंश		६६०८
आदित्यवार कथा :	अर्जुन	प्रा०	११४६
,,	: पं नगावास	हि०	४२७
,,	: ब्र० नेमिदत्त	हि०	४२८
,,	: भाऊ	हि०	४२८,१०१८, ११४८, ११३१, ९७३, ६४४, ६६८, १०६०, १०१२, १०४१, १०४२, १०४४, १०४१, १०५६, १०६२, १०८३, १०८६, १११४, ११६८, १०७४, १०७५,
आदित्यवार कथा :	भानुकीर्ति	हि०	१११८, १०२८, ११५७, ११६८,
,,	: मनोहरदास	हि०	१०७३
,,	: महीचन्द	सं०	११६४, ११६६
,,	: विनोदीलाल	हि०	१०७६
,,	: मु० सकलकीर्ति	हि०	६५८
,,	: सुरेन्द्रकीर्ति	हि०	४२६, १०७३, १०७४, १०७८, १०७६
आदित्यकथा संग्रह		हि०	३७१
आदित्यवार पूजा व कथा—		सं० हि०	६६१
आदित्यवारनी वेल कथा—		हि०	११६४
आदित्यवार व्रतोद्यापन पूजा :	जयसागर	सं०	७८६
आदित्य हृदय स्तोत्र—		सं०	७११, १०१७, १०५२
आदिनाथ गीत—		हि०	१०२६
आदिनाथ चरित्र		सं०	३१५
आदिनाथ जन्माभिषेक		प्रा०	१०२६
आदिनाथ के दस भव		हि०	३१४
आदिनाथ देशनाद्वार—		प्रा०	११७३
आदिनाथ फागु :	भ० ज्ञानभूषण	हि०	६३१
आदिनाथ मंगल :	नयनसुख	हि०	७११
,,	: रूपचन्द	हि०	११०४
आदिनाथ की बीनती :	किशोर	हि०	४५
आदिनाथ विनती :	ज्ञानभूषण	हि०	६८४
आदिनाथ विनती :	सुमतिकीर्ति	हि०	६५२
आदिनाथ स्तवन—		हि०	११६८, ७११, ११३५
आदिनाथ स्तवन :	हेमचन्द	हि०	६८१
आदिनाथ स्तवन—	पासचन्द सूरि	हि०	६५५
आदिनाथ स्तवन—	मेहउ	हि०	७१२
आदिनाथ स्तवन :	सुमतिकीर्ति	सं०	६७४
आदिनाथ स्तुति :	अचलकीर्ति	हि०	१०६७
आदिनाथ स्तुति :	कुमुदचन्द्र	हि०	४५
आदिनाथ स्तुति :	विनोदीलाल	हि०	१०६८ १०७७
आदिनाथ स्तोत्र		हि०	११२५ ७१२
आदिपुराण :	ब्र० जिनदास	राज०	२६७
आदिपुराण :	पुष्पदन्त	अपभ्रंश	२३६
आदि पुराण :	भ० सकलकीर्ति	सं०	२६६,२६७
आदि पुराण भाषा :	पं दौलतराम कासलीवाल	हि०	२६७ २६८, २६६, २७०
आदि पुराण महात्म्य—		सं०	२६४
आदि पुराण रास :	ब्र० जिनदास	हि०	६३१
आदिसत स्मरण		हि०	६५६
आदीश्वर विवाहलो :	वीरचन्द	हि०	११३२
आनन्द रास		हि०	१०६१
आनन्द लहरी :	शंकराचार्य	सं०	७११
आप्त परीक्षा :	विद्यानन्दि	सं०	२४८

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
आप्त मीमांसा	आ० समन्तभद्र	सं०	२४८
			२४६ ६५५
आप्त-मीमांसा भाषा	जयचन्द छाबड़ा	राज०	२४६, ६५०
आप्तस्वरूप विचार		सं०	२५०
आयुर्वेद ग्रन्थ—		सं०	५७४
		हि०	५७४ ५७५
आयुर्वेद निदान		सं०	५७५
आयुर्वेद के नुस्खे—		हि०	५७५ ६५३
	६५६, ६५७, ६६०, १०१३, १११५, १११६, १११६		
आयुर्वेद महोदधि	सुखदेव	सं०	५७५
आयुर्वेदिक शास्त्र		हि०	५७५
आराधना		हि०	६२
आराधना		सं०	७१२
आराधना कथाकोश—		सं०	४२६
आराधना ,,	वख्तावरसिंह रतनलाल	हि०	४३०
आराधना ,,	ब्र० नेमिदत्त	सं०	४३०
आराधना ,,	श्रुत सागर	सं०	४३०
आराधना ,,	हरिषेण	सं०	४३०
आराधना सार कथा प्रबंध	प्रभाचन्द	सं०	४३०
आराधना चतुष्पदी	धर्मसागर	हि०	४३०
आराधना पंजिका	देवकीर्ति	सं०	६३
आराधना प्रतिबोधसार		हि०	१११०
आराधना प्रतिबोधसार	विमलकीर्ति	हि०	१०२४
आराधना प्रतिबोधसार	सकलकीर्ति	हि०	२१, ६५१ ११३४, ११३८
आराधनासार—		हि०	६५०
आराधनासार—		सं०	६२५ ११४२
आराधनासार	अमितिगति	सं०	६२
आराधनासार	देवसेन	प्रा०	६१, ६७७ ६८३, १०८८
आराधनासार	विमलकीर्ति	हि०	६६१
आराधनासार	सकलकीर्ति	हि०	१०२६
आराधनासार टीका	पं जिनदास मगवाल	हि०	६२
आराधनासार टीका	नदिगणि	सं०	६२
आराधनासार भाषा	दुलीचन्द	हि०	६२
आराधनासार भाषा टीका—		प्रा० हि०	६२
आराधनासार वचनिका	पन्नालाल चौधरी	हि०	६२
आराधना सूत्र	सोमसूरि	प्रा०	६३
आलाप पद्धति	देवसेन	सं०	२५०, २५१ ६६६, ६८३, १००६
आलोचना		हि० सं०	१८६
आलोचना गीत	शुभचन्द्र	हि०	६५२
आलोचना जयमाल	ब्र० जिनदास	हि०	१८६ १०८८
आलोचना पाठ		सं०	१८६
आलोचना विधि		सं०	११३६
आवश्यक सूत्र		प्रा०	३
आवश्यक सूत्र निर्युक्ति	ज्ञान विमलसूरि	सं०	३
आश्रव त्रिभंगी—		प्रा०	११४२
आश्रव त्रिभंगी	नेमिचन्द्राचार्य	प्रा०	३
आशाधर ज्योतिर्ग्रंथ	आशाधर	सं०	५४१
आषाढी पूर्णिमा फल	श्री अनूपाचार्य	सं०	११३६
आषाढ़ भूतनी चौपई—		हि०	११६७
आषाढ़ भूति धमाल		हि०	६८५
आषाढ़भूत धमाल—		हि०	१०३६
आषाढ़भूति मुनिका चौढालया	कनकसोम	हि०	१०१३
आषाढ़-भूतरास ज्ञानसागर		हि०	६३१
आसपाल छंद		हि०	१०२५
आहार वर्णन		अप	१०८०
आहार पचखाण		प्रा०	७१२

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
आसादना कोश :		सं०	६३
आसपाल छंद		हि०	१०२५
ओंकार की चौपई :	भैया भगवतीदास	हि०	१०७७
ओंकार वचनिका		हि०	६२०
औषधियों के नुस्खे		हि०	१०२०
औषधिविधि :		हि०	५७५
औषध संग्रह :		हि० सं०	११६१
ढंकावन सूत्र :		हि०	६३
इकतीस ठाणा प्रकरण :	नेमिचन्द्राचार्य	प्रा०	४
इकवीस विधिपूजा—		हि०	७८४
इतिहास सार समुच्चय :	लालदास	हि०	१०१४
इन्द्रजाल विद्या :		हि०	६४४
इन्द्रध्वजपूजा :	भ० विश्वभूषण	सं०	७८७
"	—	सं०	७८७
इन्द्रनन्दि नीतिसार :	इन्द्रनन्दि	सं०	६८२
इन्द्रमहोत्सव :		हि०	६३
इन्द्रलक्षण :		सं०	६६६
इन्द्रिय नाटक :		हि०	६०३
इन्द्रिय विवरण :		प्रा०	१६०
इलायची कुमार रास :	ज्ञान सागर	हि०	६११
इक्क चिमन :	महाराज कुंवर सावंतसिंह	हि०	६६५
इश्वरी छन्द :	कवि हेम	हि०	६६६
इष्ट छत्तीसी :		हि०	११०३
इष्ट छत्तीसी :	बुधजन	हि०	६३,६६६
इष्ट विचावनी :	रघुनाथ	हि०	१०४३
इष्टोपदेश :	पूज्यपाद	सं०	६३,१६०, ११५४,११७३
इष्टोपदेश भाषा :		हि०	१००६
ईश्वर शिक्षा :		हि०	१०२४
ईश्वर का सृष्टि कर्तृत्व खंडन—		सं०	२५१
उजफर भाष्य :	जयन्त भट्ट	सं०	११७३
उत्पत्ति गीत		हि०	११४२
उत्पत्ति महादेव नारायण—		हि०	११०२
उत्तम चरित्र—		हि०	३१५
उत्तरपुराण :	गुणभद्राचार्य	सं०	२७०,२७१
उत्तर पुराण :	पुष्प-दन्त	अपभ्रंश	२७२
उत्तर पुराण :	सकलकीर्ति	सं०	२७२
उत्तर पुराण भाषा :	खुशालचन्द	हि०	२७२, २७३, २७४, १०५२
उत्तर पुराण भाषा :	पन्नालाल	हि०	२७४
उत्तर प्रकृतिवर्णन :		हि०	४
उत्तराध्ययन टीका :		प्रा० सं०	४
उत्तराध्ययन सूत्र—		प्रा०	४
उत्तराध्ययन सूत्र बालावबोध टीका		प्रा० सं०	५
उत्सव पत्रिका :		हि०	६५१
उपधि निरूपण :		हि०	४
उदर गीत :	छीहल	हि०	१०६७
उद्धार कोश :	दक्षिणा-मूर्ति मुनि	सं०	५३५
उन्तीस भावना :		हि०	१०२४
उपकरणादि एवं घटिका वर्णन :		हि०	१११५
उपदेश पच्चीसी :	रामदास	हि०	६५८,६८६
उपदेश बत्तीसी :	राजकवि	हि०	१११८
उपदेश बावनी :	किशनदास	हि०	६८२
उपदेश बीसी :	रामचन्द्र ऋषि	हि०	६५६
उपदेशमाला :		हि०	६५६
उपदेश माला :	धर्मदास गणि	प्रा०	६५७
उपदेश रत्नमाला—		प्रा०	६६०,१०६६
उपदेश रत्नमाला :	धर्मदास गणि	प्रा०	६५,११७४
उपदेश रत्नमाला .	सकल भूषण	सं०	६४,६५
उपदेश वेलि :	पं० गोविन्द	हि०	१११०
उपदेश शतक :	ज्ञानतराय	हि०	१०११, १०४३
उपदेश सिद्धान्त रत्नमाला :	भागचन्द		६५,६६,११७४
उपदेश श्लोक :		हि०	१०२६
उपदेश सिद्धान्त रत्नमाला :		हि०	११७४
उपदेश सिद्धान्त रत्नमाला :	नेमिचन्द्र भण्डारी	प्रा० सं०	६५

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला	पाण्डे लालचन्द	हि०	६५
उपधान विधि स्तवन	साधुकीर्ति	हि०	१०६१
उपसर्ग वृत्ति		सं०	५११
उपसर्गहर स्तोत्र		प्रा०	७१२
उपसर्गहर स्तोत्र		सं०	७१२,६५३, ११२५
उपाधि प्रकरण		सं०	२५१
उपासकाचार	पद्मनन्दि	सं०	६६,६४
उपासकाचार	पूज्यपाद	सं०	६६
उपासका दशांग		प्रा०	५
उपासकाध्ययन	प्रभाचन्द्र	सं०	११३७
उपासकाध्ययन	विमल श्रीमाल	हि०	६७
उपासकाध्ययन टिप्पण		सं०	६७
उपासकाध्ययन विवरण		सं०	६७
उपसकाध्ययन श्रावकाचार	श्रीपाल	हि०	६७
उपासकाध्ययन सूत्र भाषा टीका		प्रा० हि०	६८
उवाई सूत्र		प्रा०	५
एकषष्टि प्रकरण		प्रा०	५
एकसौ अडतालीस प्रकृति का व्यौरा		सं०	६
एकसौ अष्टोत्तर नाम		हि०	१११४
एकाक्षरी छंद		हि०	७१२
एकाक्षरी नाममाला		सं०	५३५
एकाक्षर नाम मालिका	विश्वशंभु	सं०	५३५,५३६
एकाक्षर नामा		सं०	५३६
एकादशी महात्म्य		सं०	४३०,४३१
एकादशी व्रत कथा		प्रा०	४३१
एकादशी स्तुति	गुणहर्ष	हि०	७१३
एकावली कथा		सं०	११३६
एकावली कथा	ललित कीर्ति	सं०	४७६
एकावली व्रतकथा	विमलकीर्ति	सं०	४७६
एकीभाव स्तोत्र	वादिराज	सं०	६५३, ६६६, १०६१,११२०
एकीभाव स्तोत्र	भूधरदास	हि०	७१४, ११२२
एकीभाव स्तोत्र	वादिराज	सं०	७१३, ७७१,७७२,७७५,१०२२,१०८२,१०८३
एकीभाव स्तोत्र टीका		सं०	७१४
एकीभाव स्तोत्र भाषा		हि०	७१४,६६१, ६८०
एकीभाव स्तोत्र भाषा	हीरानन्द	हि०	१०१३
एकीभाव स्तोत्र वृत्ति	नागचन्द्र सूरि	सं०	७१४
ऋतुचर्या	वागभट्ट	सं०	५७५
ऋतु संहार	कालिदास	सं०	३१५
ऋद्धि नवकार मंत्र स्तोत्र		सं०	७१४
ऋषभदेवगीत	राम कृष्ण	हि०	११६८
ऋषभदेव स्तवन		हि०	६४२
ऋषभदेव स्तवन	रत्नसिंह मुनि	हि०	७१४
ऋषभनाथ विनती		हि०	१०१६
ऋषिदत्ता चौपई	मेघराज	हि०	४३१
ऋषि पंचमी उद्यापन		सं०	११७४
ऋषि मंडल जाप्य		सं०	११४२
ऋषि मंडल जाप्य विधि		सं०	११६०
ऋषि मंडल पूजा		सं०	८८२, १०८४, ११३६, ११४५
ऋषि मंडल पूजा	गुणनन्दि	हि०	७८७,६६८
ऋषि मंडल पूजा	शुभचन्द्र	सं०	७८७
ऋषि मंडल पूजा	विद्याभूषण	सं०	७८७
ऋषि मंडल भाषा	दौलत औसेरी	हि०	७८८
ऋषि मंडल महात्म्य कथा		सं०	४३१
ऋषि मंडल यंत्र		सं०	६२४,७८८
ऋषि मंडल स्तवन		सं०	७८८, ११३४
ऋषि मंडल स्तोत्र		सं०	७७३, ६५२,१०१८,१०४४,१०६५,१०८८,११२२,११२६
ऋषि मंडल स्तोत्र	गौतम स्वामी	सं०	४८,७१४, ७१५,११२४

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
क			
ककका—मनराम		हि०	१०९८
			११०४, ११०५
ककका बत्तीसी		हि०	९६३,
			९८१, ९९६, ११३३, ११५१
ककका बीनती		हि०	१०३६
कछवाहा राज वंशावलि		हि०	१०२०
			१११२
कंजिका व्रतोद्यापन	ललितकीर्ति	सं०	११५४
कठियार कानडरी चौपई	मानसागर	हि०	
			४३१,९८१
कर्णामृत पुराण	भ० विजयकीर्ति	हि०	२७४,
			११७५
कथाकोश	चन्द्र कीर्ति	सं०	४३१
कथाकोश	ब्र० नेमिदत्त	सं०	४३२
कथाकोश	भारामल्ल	हि०	,,
कथाकोश	मु० रामचन्द्र	सं०	,,
कथाकोश	श्रुतसागर	सं०	,,
कथाकोश	हरिषेण	सं०	,,
कथाकोश		हि०	४३३
कथा संग्रह		स०	४३३,४३४
कथा संग्रह		प्रा०	,,
कथा संग्रह	विजयकीर्ति	हि०	४३५
कथा संग्रह	जयकीर्ति	हि०	१०८९
कमकमल जयमाल		हि०	१०२७
कमलचन्द्रायण व्रतोद्यापन		सं०	७८९
कमलावती का सज्झाय		हि०	१११४
कम्मपयडि विधि	रत्न सूरि	हि०	१०६१
कर्मचिंताध्याय		सं०	१११७
कर्मचूर उद्यापन		स०	७८९
कर्म छत्तीसी	बनारसीदास	हि०	९४१
कर्मदहन पूजा		प्रा०	८८७
			९४८, १११८, ११३९, ११६६

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
कर्मदहन उद्यापन	विश्वभूषण :	सं०	७८९
कर्मदहन उद्यापन पूजा	टेकचन्द	हि०	७८९,७९०
कर्मदहन उद्यापन पूजा	शुभचन्द्र	सं०	७९०, ७९१
कर्मदहन उद्यापन पूजा विधान		हि०	७९२
कर्मध्वज पूजा		सं०	८८२
कर्म निर्जरारव्रत कथा	ललितकीर्ति	सं०	४७९,४८०
कर्म निर्जरणी चतुर्दशी विधान		सं०	७९२
कर्म प्रकृति		हि०	९९८
			१०५८
कर्मों की प्रकृतियां		हि०	९५३
कर्मप्रकृति	नेमिचन्द्राचार्य	प्रा०	६,९६०
कर्म की १४८ प्रकृतियां		हि०	११४०
कर्म प्रकृति टीका	अभयचन्द्राचार्य	सं०	७
कर्म प्रकृति टीका	भ० सुमतिकीर्ति एवं ज्ञान भूषण		
		सं०	८
कर्म प्रकृति भाषा	बनारसीदास	हि०	९८२
कर्म प्रकृति वर्णन		हि०	८
कर्म प्रकृति विधान		हि०	९६३
कर्म विपाक	बनारसीदास	हि०	८, १०१५
कर्म विपाक	वीरसिंह देव	सं०	५७५
कर्म विपाक	भ० सकलकीर्ति	सं०	८
कर्म विपाक	सूर्यदेव	हि०	१११९
कर्म विपाक कथा	हरिकृष्ण	हि०	४३०
कर्म विपाक चौपई		हि०	११३८
कर्म विपाक भाषा		हि०	११४८
कर्म विपाक सूत्र		प्रा०	१०
कर्म विपाक सूत्र	देवेन्द्र सूरि	प्रा०	१०
कर्म विपाक सूत्र चौपई		हि०	९
कर्म विपाक रास		हि०	१०
कर्म विपाक रास	ब्र जिनदास	हि०	६३२
			११३७
कर्म सिद्धान्त मांडणी		प्रा०	१०
कर्मस्तव स्तोत्र		प्रा०	७१६
कर्म हिंडोलना	हर्षकीर्ति	हि०	१०२३
			१०५०

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्रसंख्या
करकण्डु चरित्र	मुनि कनकामर	अप०	३१५
करकण्डु चरित्र	भ० शुभचन्द्र	सं०	३१५
करकण्डुनोरास	ब्र० जिनदास	हि०	६३२
करुणाष्टक	पद्मनन्दि	सं०	७१६
कल्पद्रुम कलिका		सं०	११७६
कल्पलता टीका	समयसुन्दर उपाध्याय	सं०	१२
कल्पसूत्र	भद्रबाहु स्वामी	प्रा०	१०
कल्पसूत्र बखाण		हि०	११७६
कल्पसूत्र—बालावबोध		प्रा० हि०	११
कल्पसूत्र टीका		हि०	११
कल्पसूत्र वृत्ति :		प्रा० सं०	११
कल्पार्थ—		प्रा०	६८
कल्पाध्ययन सूत्र		प्रा०	११
कल्पावचूरि		प्रा०	१२
कल्याण कल्पद्रुम	वृन्दावन	हि०	७१६
कल्याण मन्दिर	कुमुदचन्द्र	सं०	७७२, ७७३, ७७५, ६५३
कल्याण मन्दिर स्तोत्र	कुमुदचन्द्र	सं०	१०२२, १०३५, १०६५, १०७४, १०८३, ११२७
कल्याण मन्दिर पूजा	देवेन्द्रकीर्ति	सं०	७६३
कल्याण मन्दिर भाषा		हि०	६६३, ६५५, १११०, १०३०
कल्याण मन्दिर भाषा	बनारसीदास	हि०	६४१, ६५८, ६८०, १०१६, १०६४, १०७४, १०६१, १०६५, ११२२, ११२४, ११४८
कल्याण मन्दिर स्तवनावचूरि	गुणरत्नसूरि	सं०	७१६
कल्याण मन्दिर स्तोत्र		सं०	६६७, १०११, १०१२
कल्याणमन्दिर टीका	हर्षकीर्ति	सं०	७१८
कल्याण मन्दिर	चरित्रवर्द्धन	सं०	७१८, ७१६
कल्याण मन्दिर		सं०	७१८, ७१६
कल्याण मन्दिर स्तोत्र भाषा		हि०	१०४४, १०६१
कल्याण मन्दिर स्तोत्र भाषा	अमरराज श्रीमाल	हि०	७१६
कल्याण मन्दिर स्तोत्रवचनिका	प० मोहनलाल	हि०	७१६
कल्याण मन्दिर वृत्ति	देवतिलक	सं०	७२०
कल्याण मन्दिर वृत्ति	गुरुदत्त	सं०	७२०
कल्याण मन्दिर वृत्ति	नागचन्द्रसूरि	सं०	७२०
कल्याण मन्दिर वृत्ति		सं०	७२०
कल्याणमाला	पं आशाधर	सं०	११७६
कल्याण मन्दिर स्तोत्रवृत्ति	विनयचन्द्र	सं०	११५३
कलजुगरास	ठक्कुरसी कवि	हि०	११७५
कलयुग बत्तीसी		हि०	६६३
कलश विधि		सं०	७६३
कलशारोहण विधान		हि०	७६३
कलशारोहण विधि		सं०	७२०
कलावती सती सिज्झाय		हि०	१०६१
कलिकाल पंचासिका		हि०	१०६६
कलियुग कथा	पांडे केशव	हि०	१०५०, १०५३, १०५६, १०६७, १०७७
कलियुग चरित्र	बाण	हि०	१००२
कलियुग चौपई		हि०	११३८
कलियुग बत्तीसी		हि०	११२६
कलियुग की विनती	देवा ब्रह्म	हि०	११७६
कलिकुंड पूजा		हि०	७६३, ६५६, ६६४, १११९
कलिकुंड पार्श्वनाथ स्तुति		हि०	११४५
कलि चौवस कथा	भ० सुरेन्द्रकीर्ति	हि०	४२५
कलि व्यवहार पचीसी	मन्धराम	हि०	१००३
कंवरपाल बत्तीसी	कंवरपाल	हि०	११७६
कवल चन्द्रायण पूजा		सं०	६०७

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
कविकल्पद्रुम	कवीन्द्राचार्य	सं०	५६३
कविकाव्य नाम		सं०	११७६
कविकाव्य नाम गर्भ चक्रबृत्त		सं०	११७६
कवि रहस्य	हलायुध	सं०	११७६
कवित्त		हि०	६५८
कवित्त	बनारसी दास	हि०	६५८
कवित्त	बुधराव बूंदी	हि०	१००३
कवित्त	मानकवि	हि०	११४२
कवित्त	सुन्दरदास	हि०	११६६
कवित्त छप्पय		हि०	११११
कवित्त जन्म कल्याणक महोत्सव	हरिचन्द	हि०	१०५४
कवित्त नागरीदास		हि०	१०६६
कवित्त व स्तोत्र संग्रह		हि०	६५६
कविप्रिया		सं०	६७
कविप्रिया	केशवदास	सं०	६४२,१०३७
कविसिंहविवाद	ज्ञानतराय	हि०	१०४४
कष्ट नाशक स्तोत्र		सं०	१०५२
कष्ट विचार		हि०	५४२
कष्टावलि		सं०	६६४
कषाय जय भावना		हि०	१०६६
कषाय मार्गणा		सं०	१२
कांजिकाव्रत कथा	ललितकीर्ति	सं०	८४
कांजी प्रतीद्यापन	रत्नकीर्ति	सं०	७६३
,, ,,	मुनि ललितकीर्ति	सं०	७६४
कातन्त्र रूपमाला	शिवधर्मा	सं०	५११
कातन्त्र रूपमाला टीका	वीर्यसिंह	सं०	५११
कातन्त्र रूपमाला वृत्ति	भावसेन	सं०	५१२
कातन्त्र विभ्रम सूत्र	शिवधर्मा	सं०	५११
कार्तिकेयानुप्रेक्षा	स्वामी कार्तिकेय	प्रा०	१६०,१६१
कार्तिकेयानुप्रेक्षा टीका	शुभचन्द्र	सं०	१६१,१६२
कार्तिकेयानुप्रेक्षा भाषा	जयचन्द्र छाबड़ा राज		१६२,१६३,१६४
कार्तिक पंचमी कथा		सं०	४३५
कार्तिक महात्म्य		सं०	४३५
कार्तिक महात्म्य		सं०	११७६
कार्तिक सेठ को चौढाल्यो		हि०	४३५
कानड कठियारानी चौपई		हि०	६५५
कानडरे कठियारा		हि०	६५४
कामधेनु सारणी		हि०	१११६
कामणिकाय योग प्रसंग		सं०	१२
कार्यक्षेत्र गीत	धनपाल	सं०	१०२५
काया जीव संवाद	देवा ब्रह्म	हि०	१११६
काया जीव संवाद गीत	ब्रह्म देव	हि०	११४५
कारक खंडन	भीष्म	सं०	५१२
कारक विचार		सं०	५१२
कारिका		सं०	५१२
कालक कथा		प्रा०	४२५
कालकाचार्य कथा	समयसुन्दर	हि०	४३५
कालकाचार्य कथा	माणिक्य सूरि	सं०	४२५
कालकाचार्यप्रबंध	जिनसुखसूरि	हि०	४३५
कालज्ञान		सं०	५४२, ५७५, ५७६,६५३
कालज्ञान भाषा	लक्ष्मीवल्लभ	हि०	५७६
कालज्ञान सटीक		सं०	५७६
कालयंत्र			११७२
कालावलि		हि०	६५३
कालीकवच		हि०	१०६५
कालीतत्व		सं०	११७७
काव्य संग्रह		सं०	३१५
काशिका वृत्ति	वामनाचार्य	सं०	५१२
क्रियाकलाप	विजयानन्द	सं०	५१३
क्रियाकलाप टीका	प्रभाचन्द्राचार्य	सं०	६८, ६६,१००
क्रियाकोश भाषा	किशनसिंह	हि०	१०० १०१,१०२,१०३,१०४
क्रियाकोश भाषा	दुलीचन्द	हि०	१०४

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
क्रिया पद्धति		सं०	१०४
क्रियासार—मद्रबाहु		प्रा०	१०४
किरातार्जुनीय—भारवि		सं०	३१६,३१७
कुण्डलियां—गिरधरराय		हि०	१०११
कुण्डसिद्धि		सं	७६४
कुतूहल रत्नावली—कल्याण		सं०	५४२
कुदेव स्वरूप वर्णन		हि०	६८
कुंदकुंदाचार्य कथा		हि०	४३५
कुन्दकुन्द के पांच नामों का इतिहास		हि०	६५१
कुबेरदत्त गीत (अठारह नाता रास)		हि०	१०२६
कुमति को विनती		हि०	६८०
कुमति सज्झाय		हि०	६८०
कुमारपाल प्रबन्ध—हेमचन्द्राचार्य		सं०	३१७
कुमार संभव—कालिदास		सं०	३१७,३१८
कुमार संभव—सटीक मल्लिनाथ सूरि		सं०	३१८
कुवलयानन्द—अप्पय दीक्षित		सं०	५६३
कुलकरी		सं०	६५१
कुष्ठी चिकित्सा		हि०	५७७
कुसुमांजलि		प्रा०	१०२६
कूट प्रकार		सं०	१२
कूपचक्र		स०	१००६
केवली		हि०	१०७
केशर चन्दन निर्णय		हि० ग०	६८
केशवी पद्धति—केशव दैवज्ञ		सं०	५४२
केशवी पद्धति भाषोदाहरण		सं०	१११६
कोकमंजरी—आनन्द		हि०	६२६
कोकशास्त्र		हि०	६५४
कोकशास्त्र—आनन्द		हि०	१११०
कोकशास्त्र—कोक देव		हि०	६२६
कोकसार		हि०	६२६
कोक शास्त्र के अंग		हि०	६६५
कोकसार		हि०	६६५
कोकिला व्रतोद्यापन		सं०	७३४
कोण सूची		स०	५४२
कौमुदी कथा		सं०	४३६
कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यवंदना		हि०	१०६७
कृदन्त प्रक्रिया—अनुभूतिस्वरूपाचार्य		सं०	५१२
कृपण कथा—वीरचन्द्र सूरि		हि०	४२१
कृपण जगावण—ब्र० गुलाल		हि०	८१२
कृपण पच्चीसी—विनोदी लाल		हि०	६५८
कृपण षट्पद—ठक्कुरसी		हि०	६८४
कृमिरोग का ब्यौरा		हि०	५७६
कृष्ण बलिभद्र सज्झाय		हि०	१०१५
कृष्ण बलिभद्र सज्झाय—रतनसिंह		हि०	७२०
कृष्णजी का बारहमासा—जीवनराम		हि०	६८०
कृष्ण युधिष्ठिर संवाद		सं०	११७५
कृष्ण रुक्मिणी विवाह		हि०	१०८७
कृष्ण रुक्मणि वेलि—पृथ्वीराज		हि०	११७५
कृष्ण शुक्ल पक्ष सज्झाय		हि०	६६७

ख

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
खटोला—ब्र० धर्मदास		हि०	१०८६
खण्ड प्रशस्ति		स०	११७७
खण्डेलवालों की उत्पत्ति		हि०	१००५
			११०४
खण्डेलवाल जाति की उत्पत्ति व वंशावली		हि०	१०१२
खण्डेलवालों के ८४ गोत्र		हि०	१०१२
खण्डेलवालों के ८४ गोत्र		हि०	८७७
खण्डेलवाल श्रावक उत्पत्ति वर्णन		हि०	९५७
खिचरी—कमलकीर्ति		हि०	१०६८
खीचड़ रास		हि०	६८५
खडन खाद्य प्रकरण		स०	२५१
खड प्रशस्ति काव्य		सं०	३१८

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
खंड प्रशस्ति श्लोक		सं०	११७७

ग

गर्ग मनोरमा—गर्ग ऋषि		सं०	५४२
गज सुकुमाल चरित्र		हि०	६८८
गज सुकुमाल चरित्र—जिनसूरि		हि०	३१८
गजसिंह कुमार चरित्र—विनयचन्द्र सूरि		सं०	३१६
गजसिंह चौपई—राजसुन्दर		हि०	४३१
गणधरवलय पूजा		हि०	८८०
			१००७, १०८८, ११३६
गणधरवलय पूजा		हि०	७६४
गणधरवलय पूजा		प्रा०	
गणधरवलय पूजा		सं०	
गणधरवलय पूजा विधान		सं०	७६५
गणधरवलय पूजा—शुभचन्द्र		हि०	१०८५
गणधरवलय पूजा—भ० सकलकीर्ति		स०	११६०, ७६४
गणधरवाद—विजयदास मुनि		हि०	१०२६
गणधर विनती		हि०	११३८
गणपति नाम माला		सं०	१११७
गणपति मुहूर्त—रावल गणपति		सं०	५४२
गणपति स्तोत्र		स०	१०६८
गणसुन्दरी चउपई—कुशललाभ		राज०	४३६
गणितनाममाला—हरिदास		सं०	५४२
			११७८
गणित शास्त्र		हि०	१०३३, १ ८
गणित सार—हेमराज		हि०	११७८
गणितसारवस्तु संग्रह—महावीराचार्य		सं०	११७८
गणेश स्तोत्र		सं०	१११२
गतवस्तुज्ञान		सं०	६०४०
गर्भचक्रवृत		स०	५४३
गर्भचक्रवृत संख्या परिणाम		प्रा०	१२
गर्भ बंधन		सं०	१११६
गर्भषडारचक्र—देवनन्दि		सं०	७२०
			१०६८
गरुड पुराण		सं०	२७४
गुरुप्रतिक्रमण सूत्र टीका—रत्नशेखर गणि		सं०	१०५
गृह प्रवेश प्रकरण		हि०	१११५
गृह शान्ति विधि—[illegible] सूरि		सं०	७६६
गाथा लक्षण		प्रा०	११७६
गिरिधर की कुंडलिया		हि०	११५८
गिरधरानन्द		सं०	१११६
गिरनार पूजा		हि०	१०४३
गिरनार पूजा—हजारीमल		हि०	७६५
गिरनार बीनती		हि०	११३३
गिरनारी गीत—विद्यानन्दि		हि०	६७८
गीत—मतिसागर		हि०	११३३
गीत—यशःकीर्ति		हि०	१०२६
गीत—विनोदीलाल		हि०	६८१
गीत गोविन्द—जयदेव		सं०	७२०
गीत सलूना—कुमुदचन्द		हि०	११५६
गीता सत्वसार		हि०	१०३४
गुणकरण्ड गुणावली—ऋषि दीप		हि०	६५६
गुणघटितविचार		सं०	५४३
गुणठाणागीत—ब्रह्म वर्द्धन		हि०	६५२, १०३२
गुणठाणा चौपई—वीरचन्द		हि०	११३७
गुणठाणा वेलि—जीवधर		हि०	११३५
गुणतीसी भावना		हि०	१६४
गुणतीसी सोवना		हि०	११३७
गुणदोष विचार		सं०	१०४
गुणमाला		हि०	१०१७
गुणमाला—ऋषि जयमल्ल		हि०	७२१
गुणरत्नमाला—मिश्रभाव		सं०	५७७

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
गुणधर्मा चरित्र	– माणिक्य सुन्दर सूरि	सं०	३१६
गुणविलास	—नथमल बिलाला	हि०	१६४
गुणवेलि	भ० धर्मदास	हि०	६५२
गुणस्थान क्रमारोह		सं०	१३
गुणस्थान गाथा		प्रा०	१३
गुणस्थान चर्चा		सं०	१२, १३, ६६०, ६६७, ६०८, ६०६, ६६०, १०५८, १०३६
गुणस्थान चर्चा		प्रा०	११४२
गुणस्थान चौपई	- ब्र० जिनदास	हि०	१४
गुणस्थान पीठिका		हि०	१०८५
गुणस्थान मार्गणा चर्चा		सं०	१४
गुणस्थान मार्गणा वर्णन	—नेमिचन्द्राचार्य	प्रा०	१४
गुणस्थान रचना		हि०	१५
गुणस्थाने वर्णन		प्रा०	१४
गुणस्थान वृत्ति	—रत्नशेखर	सं०	१५
गुरावली		सं०	६५१
गुरावली पूजा		हि०	६५६
गुरावली पूजा	: शुभचन्द्र	सं०	७६५
गुरावली समुच्चय पूजा	—	सं०	७६५
गुरावली स्तोत्र		सं०	७२१
गुरु अष्टक	—श्री भूषण	सं०	११६६
गुरु जयमाल	—ब्र० जिनदास	हि०	७६५, ११४३, ११५६
गुरुपदेश श्रावकाचार	—डालूराम	हि०	१०४,१०५
गुरु पूजा	—ब्र० जिनदास	हि०	१०७७
गुरु पूजा	—हेमराज	हि०	११११
गुरु राशि गत विचार		सं०	११३४
गुरु विनती		सं०	६७७
गुरु विरुदावली	—विद्याभूषण	सं०	११३५
गुरु शिष्य प्रश्नोत्तर		सं०	१०८८
गुरु स्तवन	—नरेन्द्र कीर्ति	हि०	११०८
गुरु स्तोत्र	—विजयदेव सूरि	हि०	७२१
गुलाल मथुरावाद पच्चीसी	—	हि०	६८५
गुर्वावलि		हि०	६५२, ६६०, ११४७
गुर्वावली (चौसठ ऋद्धि) पूजा	—स्वरूपचन्द बिलाला	हि०	७६५
गुर्वावली सज्झाय		प्रा०	६५१
गोत्रिरात्र व्रतोद्यापन		सं०	११७६
गोपाल सहस्र नाम		सं०	७२१
गोम्मट सार	—नेमिचन्द्राचार्य	प्रा०	१५, १६
गोम्मटसार भाषा	—पं० टोडरमल	राज०	१८, १६
गोम्मटसार कर्म काण्ड टीका	—नेमिचन्द्र	प्रा० सं०	१७
गोम्मटसार चर्चा		हि० ग०	१७
गोम्मटसार चूलिका		सं०	१७
गोम्मटसार टीका	—सुमतिकीर्ति	सं०	१६
गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) भाषा	: हेमराज	हि०	१६
गोम्मटसार पूर्वार्द्ध (जीवकाण्ड)	—सं०		१७
गोम्मटसार पूर्वार्द्ध भाषा	—पं० टोडरमल	राज०	१८,१६
गोम्मटसार जीवकाण्ड वृत्ति (तत्व प्रदीपिका)	—	सं०	२१
गोम्मटसार (पंच संग्रह) वृत्ति	—अभयचन्द्र	सं०	२१
गोम्मटसार वृत्ति	—केशववर्णी	सं०	२१
गोम्मटसार संदृष्टि	—आ० नेमिचन्द्र	प्रा०	२१
गोम्मट स्वामी स्तोत्र		सं०	७२१
गोरख कवित्त	—गोरखदास	हि०	११४५
गोरख चक्कर		हि०	१०६५
गोरखनाथ का जोग		हि०	१११५
गोरस विधि		सं०	७६५
गोराबादल कथा	—अटमल	हि०	११३१
गोरोचन कल्प		हि०	६२०

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
गौडी पार्श्वनाथ छंद	—कुशल लाभ	हि०	७२१
गौडी पार्श्वनाथ स्तवन		हि०	१०३७
			१०६१
गौतम ऋषि सज्झाय		गु०	७२१
गौतम पृच्छा		सं०	२१,२२
		४३६, ५४३, ६४५,	१०६६
गौतमपृच्छा सूत्र		प्रा० हि०	२१
गौतमरास		हि०	६३२
			६६७
गौतमरास	—विनयप्रभ	हि०	१०२६
गौतम स्वामी चरित्र	—धर्मचन्द्र	सं०	३१६
			३२०
गौतमस्वामीरास		हि०	६५६
गौतमस्वामीरास	—विजयभद्र	हि०	१०६१
गौतमस्वामीरास	—विनयप्रभ	हि०	११६५
गौतमस्वामी सज्झाय		हि०	१०३८
गौतम स्वामी स्तोत्र	—आदिचन्द्र	हि०	११३८
गंगड प्रायश्चित		हि०	११७७
गंगालहरी स्तोत्र	—भट्ट जगन्नाथ	सं०	७२१
गंधकुटी		सं०	६६६
ग्यारह प्रतिमा रास		हि०	११४४
ग्यारह प्रतिमा वर्णन		हि०	६८१
ग्यारह प्रतिमा बीनती	—ब्र जिनदास	हि०	११३७
ग्रन्थ विवेक चितवणी	—सुन्दरदास	हि०	१०१४
ग्रन्थ सूची शास्त्र भण्डार दबलाना		हि०	६५६
ग्रहणवर्णन		हि०	१११५
ग्रहणविचार		सं०	५४३
ग्रहपंचवर्णन		सं०	५४३
ग्रहभावप्रकाश		सं०	५४३
ग्रहराशिफल		सं०	५४३
ग्रहराशिफल		सं०	१११७
ग्रहण राहु प्रकरण		सं०	११७६
ग्रहलाघव	—गणेश दैवज्ञ	सं०	५४३
ग्रहलाघव	—देवदत्त	सं०	५४३
ग्रहसिद्धश्लोक	—महादेव	सं०	१११५

घ

घोरकालानलचक्र		सं०	१११६
घण्टाकर्णकल्प		हि०	६२०,
			६६८
घण्टाकर्णमंत्र		हि०	६२०
		१०४४, १०५८,	११६३, १०६५
घण्टाकर्णविधिविधान		सं०	६२०
घण्टाकरणस्तोत्र व मंत्र		सं०	११२७

च

चउदह गुणगीत		हि०	६६२
चउबोली की चौपई	—चतरु	हि०	१०८
चउबीसा	—जिनराज सुरि	हि०	१०३७
चउसरणी पयन्न		हि०	६०८
चउसरण वृत्ति		प्रा०	१०५
चक्र केवली		हि०	६४४
चक्रेश्वरी देवी स्तोत्र		सं०	७२२
चतुर्गतिरास	—वीरचन्द	हि०	६३२
चतुर्गति वेलि	—हर्षकीर्ति	हि०	६८४
चतुरचिंतारणी	—दौलतराम	हि०	१०५
चतुर्दश भक्ति पाठ		सं०	७२२
चतुर्दशीकथा	—टीकम	हि०	१०३२
चतुर्दशीकथा	—हालूराम	हि०	४३१
चतुर्दश गुणस्थान वेलि	—ब्र० जीवंधर	हि०	६८२
चतुर्दशी चौपई	—चतुरमल	हिन्दी	१०५
चतुर्दशी प्रतिमासोपवास पूजा		सं०	७६६
चतुर्दशी व्रतोद्यापन पूजा	—विद्यानन्दी	सं०	७६६
			७६७

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
चतुर बणजारा गीत :	भगवतीदास	हि०	६८५
चतुर्मास वर्णव्याख्यान—		हि०	१०५
चतुर्मास व्याख्यान :	समयसुन्दर उपाध्याय	सं०	१०५, १०६
चतुर मुकुट-चन्द्रकिरण की कथा—		हि०	११६२
चतुर्विधदान कवित्त—	ब्रह्म ज्ञानसागर	हि०	६८३
चतुर्विध स्तवन—		सं०	७२२
चतुर्विंशति जयमाला—	माधवसेन व्रती	सं०	७२२
चतुर्विंशति जिन दोहा—		हि०	७२२
चतुर्विंशति जिन नमस्कार—		सं०	७२२
चतुर्विंशति जिन पूजा—		हि०	७६७, ७६६
चतुर्विंशति जिन शासन देवी पूजा —		सं०	७६७
चतुर्विंशति जिन षट् पद बंध स्तोत्र—	धर्मकीर्ति	हि०	१००८
चतुर्विंशति जिन स्तवन—		प्रा०	७२२
चतुर्विंशति जिन स्तुति—		हि०	७२२, ६४६, १०६१
चतुर्विंशति जिन स्तोत्र टीका—	जिनप्रभ सूरि	सं०	७२२
चतुर्विंशति तीर्थंकर जयमाल		हि०	११०८
चतुर्विंशति तीर्थंकर जन्मी स्थान—		हि०	१०५८
चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तुति—		हि०	१०३६
चतुर्विंशति पूजा—		सं०	१०५६
चतुर्विंशति पूजा—	जिनेश्वरदास	हि०	१११३
चतुर्विंशति पूजा	भ० शुभचन्द्र	सं०	७६८, ७६६
चतुर्विंशति पूजाष्टक—		सं०	८७५
चतुर्विंशति पंच कल्याणक समुच्चयोद्यापन विधि	ब्र० गोपाल	सं०	७६६
चतुर्विंशति स्तवन—		सं०	७२२
चतुर्विंशति स्तवन—	पं० जयतिलक	सं०	७२३
चतुर्विंशति स्तुति—	शोभन मुनि	सं०	७२३
चतुर्विंशति स्तोत्र—	पं० जगन्नाथ	सं०	७२३
चतुर्विंशति स्तोत्र—	समन्तभद्र	सं०	६७५
चतुः शरण प्रकीर्णक सूत्र—		सं०	२२
चतुः षष्ठि योगिनी स्तोत्र—		सं०	१०५२
चतुष्क वृत्ति टिप्पण—	पं गोल्हण	सं०	५१३
चतुष्कशरण वर्णन		प्रा०हि०	१०५
चतुः सरणप्रज्ञप्ति		प्रा०	२२
चन्दनमलयागिरि कथा		हि०	६६२, १०६०
चन्दन मलयागिरि कथा—	चन्द्रसेन	हि०	६४५
चन्दन मलयागिरि कथा—	भद्रसेन	हि०	११८२
चन्दन मलयागिरी चौपई—	भद्रसेन	हि०	४३७
चन्दन षष्ठि पूजा—	पं० सोमचन्द	सं०	७६७
चन्दन षष्ठी व्रत कथा—	खुशालचन्द	हि०	४३८
चन्दन षष्ठी व्रत कथा :	श्रुतसागर	सं०	४७६
चन्दन षष्ठि व्रत पूजा—	विजयकीर्ति	सं०	७६७
चन्दना चरित्र—	भ० शुभचन्द्र	सं०	३२०
चन्दराजानीढाल—	मोहन	हि०	४३७
चन्द्र गुप्त के १६ स्वप्न		हि०	६८०, ६८६, १०१२, ११३०
चन्द्र गुप्त के सोलह स्वप्न	ब्र० रायमल्ल	हि०	६५३, ६७२, ६८६, ६८०, १००५, १०१२, १०२३, १०८४, १०८६, ११३०
चन्द्रग्रहण कारक मारक क्रिया			१११७
चन्द्र दूत काव्य—	विनयप्रभ	सं०	३२०
चन्द्रप्रभ काव्य भाषा टीका		हि०	३२२
चन्द्रप्रभगीत		हि०	६७८
चन्द्रप्रभ जकडी—	खुशाल	हि०	१०८४
चन्द्रप्रभ चरित्र—	यशकीर्ति	अपभ्रंश	३२०
चन्द्रप्रभ चरित्र—	वीरनन्दि	सं०	३२०, ३२१
चन्द्रप्रभ चरित्र—	सकलकीर्ति	सं०	३२१

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
चन्द्रप्रभ चरित्र—श्रीचन्द्र		अपभ्रंश	३२१
चन्द्रप्रभ चरित्र भाषा—हीरालाल		हि०	२७६, ३२२
चन्द्रप्रभ छन्द—ब्र० नेमचन्द		हि०	७२५
चन्द्रप्रभ पुराण—जिनेन्द्र भूषण		हि०	२७५
चन्द्रप्रभ पुराण—शुभचन्द्र		सं०	२७४
चन्द्रप्रभपुरतवन—अनन्तदेवा		हि०	७२३
चन्द्रप्रभ स्तोत्र		सं०	७७४
चन्द्रप्रभ स्वामिनो विवाह—भ० सुरेन्द्रकीर्ति		राज०	४३७
चन्द्रप्रज्ञप्ति		सं०	६१०
चन्द्रलेहा चौपई—रामवल्लभ		हि०	६५४
चन्द्रार्की—दिनकर		हि०	६८१
चन्द्रावलोक		सं०	५४४
चन्द्रावलोक टीका—विश्वेसर (गंगाभट्ट)		सं०	५४४
चन्द्रोदय कर्ण टीका—कविराज शंखधर		सं०	५७७
चन्द्रोदय विचार		हि०	५४४
चन्द्रोन्मीलन—मधुसूदन		सं०	११७६
चमत्कार चिन्तामणि—नारायण		सं०	५४४
चमत्कार पूजा—राजकुमार		हि०	७६७
चमत्कार पूजा		सं०	७६७
चमत्कारफल		सं०	५४४
चमत्कार षट् पंचाशिका—महात्मा विद्याविनोद		सं०	६५६
चम्पाशतक—चम्पाबाई		हि०	६५६
चरखा चौपई		हि०	६८६
चर्चा		सं०	२२,२३
चर्चा—भ० सुरेन्द्रकीर्ति		सं०	२२
चर्चाकोश		हि०	२३
चर्चा ग्रन्थ		हि०	२३
चर्चा नामावली		हि०	२३
चर्चा पाठ		हि०	२३
चर्चा बासठ—सुखलाल		हि०	११७०
चर्चा बोध		हि०	२३

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
चर्चा शतक		हि०	६६३
चर्चा शतक—द्यानतराय		हि०	२३ २४, २५, १०११, १०१३, १०७२, १०८१
चर्चा शतक टीका—नाथूलाल दोसी		हि०	२७
चर्चा शतक टीका—हरजीमल		हिन्दी	२६,२७
चर्चा समाधान—भूधरदास		हि०	२७ २८, २९, १०७२
चर्चा समाधान—भूधर मिश्र		हिन्दी	२९ १०११
चर्चा सागर—पं० चम्पालाल		हि०ग०	३०
चर्चा सागर वचनिका		हि०	३०
चर्चासार—धन्नालाल		हि०	३०
चर्चासार—पं० शिवजीलाल		हि०	३०
चर्चा सार संग्रह—भ० सुरेन्द्रभूषण		सं०	३१
चर्चा संग्रह		प्रा० सं०	हि० ३१
चर्चा संग्रह		हि०	१०१३, ११३०
चरणी व्यूह—वेद व्यास		सं०	११७६
चतुर्गति चौपई		हि०	६५२, ११३७
चाणक्य नीति—चाणक्य		सं०	६८३ ६८४, ६८५
चार कषाय सज्झाय—पद्मसुन्दर		हि०	१६४
चार मित्रों की कथा		सं०	४३८
चारित्र पूजा—नरेन्द्रसेन		सं०	१०५७
चारित्र शुद्धि पूजा—श्री भूषण		सं०	७६७
चारित्र शुद्धि विधान—भ० शुभचन्द्र		सं०	७६७
चारित्र सार		प्रा०	६६८
चारित्र सार—चामुण्डराय		सं०	१०६
चारित्र सार—वीरनन्दि		प्रा०	१०६
चारित्र सार वचनिका—धन्नालाल		हि०	१०६
चारुदत्त कथा		सं०	४३६
चारुदत्त चरित्र—दीक्षित देवदत्त		सं०	३२२

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
चारुदत्त प्रबन्ध	—कल्याण कीर्ति	हि०	४२६
चारुदत्त प्रबंध रास	—ब्र० जिनदास	हि०	११४३
चारुदत्त सेठ रास (णमोकार रास)	—ब्र० जिनदास	हि०	४३६
चारुदत्त श्रेष्ठीरास	—भ० यश कीर्ति	हि०	६३२
चारों गति का चौढालिया	—	हि०	१०६
चार्वाकमतीभङ्गी		हि०	२५१
चिकित्सासार	—धोरजराम	सं०	५७७
चित्तौड़ की गजल	—कवि खेताल	हि०	११११
चित्तौड़ बसने का समय		हि०	१०३८
चिदविलास	दीपचन्द कासलीवाल	हि०	१६४,१६५
चिद्रूप चिन्तन फागु		हि०	६३२
चित्रबंध स्तोत्र		सं०	७२३
चित्रबन्ध स्तोत्र		प्रा०	७२३
चित्रित यंत्र			११६२
चित्रसेन पद्मावती कथा	: गुणसागर	सं०	४३६
चित्रसेन पद्मावती कथा	: राजवल्लभ	सं०	४३६
चिन्तामणि जयमाल		हि०	११५२
चिन्तामणि जयमाल	: रायमल्ल	हि०	१०५७
चिन्तामणि पार्श्वनाथ	: विद्यासागर	हि०	११५२
चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा		सं०	१११८
चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा	—भ० शुभचन्द्र	सं०	७६८,११०५
चिन्तामणि पार्श्वनाथ विनती	: प्रभाचन्द्र	हि०	६५२
चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र		सं०	७२३
चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र	—पं० पदार्थ	सं०	११२७
चिन्तामणि पूजा		हि०	६५६
चिन्तामणि यंत्र		सं०	६२४
चिंतामणि स्तवन		सं०	६७७
चिंतामणि स्तोत्र		सं०	१०६५, १०७७,११२५
चुरादिगण		सं०	५१३
चूनडी		हि०	१०८६
चूनडी	—देवराज	हि०	१०३७
चूनडीरास	—भगवतीदास	हि०	६८५
चूनडीरास	—विनयचन्द्र	हि०	६६०
चेतनकर्म चरित्र		हि०	१०४७
चेतनकर्मचरित्र	—भैया भगवतीदास	हि०	१००५, १०७२, १०६४, ११२६, ११३१
चेतनकर्मसंवाद	—भैया भगवतीदास	हि०	११७६
चेतनगारी		हि०	१०६५
चेतनगीत	—विनोदीलाल	हि०	११८०, ११२६,१०८३
चेतनगीत		हि०	११८०
चेतनगीत	—ब्र० जिनदास	हि०	६८२, १०२७
चेतनगीत	—नंदनदास	हि०	१०२७
चेतनजखडी		हि०	१०६८
चेतन नमस्कार		हि०	७२३
चेतन पुद्गल धमाल	—बूचराज	हि०	६६१, १०८६,११८०
चेतन पुद्गल धमाल	—बल्ह	हि०	६८३
चेतनप्राणी गीत		हि०	११४५
चेतनमोहराज संवाद	—खेमसागर	हि०	११८०
चेतनविलास	—परमानन्द जौहरी	हि०	६५६
चेतनागीत	—समय सुन्दर	हि०	६६६, १०२६
चेतावणी ग्रन्थ	—रामचरण	हि०	१६५
चेलणा सतीरो चोढालियो	—ऋषि रामचन्द्र	राज०	४३६
चैत्यवंदना		प्रा०	७२४, १०४३
चैत्यालय वन्दना	—महीचन्द	हि०	११३३, ११६२
चैत्याल वीनती	—दिगम्बर शिष्य	हि०	७२४
चैत्यालयों का वर्णन		हि०	१०८१

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
चौघड़िया निकालने की विधि		सं०	५४४
चौढालियो — भूधु प्रोहित		हि०	११८०
चौदस कथा—टीकम		हि०	६६५
चौदह गुणस्थान चर्चा		हिन्दी	३२
चौदह गुणस्थान वचनिका—अभयराज श्रीमाल		राज०	३२,३३
चौदहगुणस्थान वर्णन—नेमिचन्द्राचार्य		प्रा०	३१,३२
चौदह मार्गणा टीका		हिन्दी	३८
चौदह विद्या नाम		हि०	११८०
चौबोली लीलावती कथा—जिनचन्द		हि०	४३६
चौरासी आसादन दोष		हि०	१०६६
चौरासी आसादना		हि०	१०६६
चौरासी गोत्र		हि०	११६०
चौरासी गोत्र वर्णन		हि०	१००५, १०२०
चौरासी गोत्र विवरण		हि०	६५१
चौरासी जयमाल (माला महोत्सव)— विनोदी लाल		हि०	६५१
चौरासी जाति की उत्पति		हि०	१०६३
चौरासी जाति जयमाल		हि०	६५२
चौरासी जाति की जयमाल—ब० गुलाल		हि०	६६१
चौरासी जाति जयमाल—ब्र० जिनदास		हि०	११५२
चौरासी जाति की पिहाडी		हि०	६५२
चौरासी बोल		हि०	३८,१०८, ११३३,६६०
चौरासी लाख योनना विनती—सुमतिकीर्ति		हि०	७२४
चौवनी लीला		हि०	१०६६
चौबीस अतिशय बीनती		हि०	११३८
चौदह गुणस्थान चर्चा—गोविन्ददास		हि०	३४
चौबीस जिन चौपई—कमलकीर्ति		हि०	११३२
चौबीस जिन पूजा—देवीदास		हि०	११२०
चौबीस ठाणा		संस्कृत	३४,६५३, ६६०,६६३,१०५८
चौबीस ठाणा गाथा		प्रा०	१००५
चौबीस ठाणा चर्चा		हि०	३८,६५७, ६६५,१०१६,१०२८,१०४६,११५६
चौबीस ठाणा चर्चा—नेमिचन्द्राचार्य		प्रा० सं०	३४,३५,३६,३७,१०८०
चौबीस ठाणा पीठिका			३८
चौबीस तीर्थंकराष्टक		हि०	८००
चौबीस तीर्थंकर पूजा—अक्षयरसिंह		हि०	११३१
चौबीस तीर्थंकर पूजा—अखावरलाल		हि०	८००
चौबीस तीर्थंकर पूजा—अमाहरलाल		हि०	८००
चौबीस तीर्थंकर पूजा—चुन्नीलाल		हि०	८००
चौबीस तीर्थंकर पूजा—देवीदास		हि०	८०१
चौबीस तीर्थंकर पूजा—मनरंगलाल		हि०	८०१
चौबीस तीर्थंकर पूजा—रामचन्द्र		हि०	८०१, ८०२, ८०३, ८०४, ८०५
चौबीस तीर्थंकर पूजा—हीरालाल		हि०	८०२, ८१०
चौबीस तीर्थंकर पूजा—श्रीलाल पाटनी		हि०	८०६
चौबीस तीर्थंकर पूजा—वृन्दावन		हि०	८०६, ८०७, ८०८
चौबीस तीर्थंकर पूजा—सेवग		हि०	८०८
चौबीस तीर्थंकर पूजा—सेवाराम		हि०	८०८, ८०९, ८१०, १०३६
चौबीस तीर्थंकर भावना—यशकीर्ति		हि०	१०२५
चौबीस तीर्थंकर पूजा—रामचन्द्र		हि०	१००६, १११६, ११३०
चौबीस तीर्थंकर पूजा—वृंदावनदास		हि०	६७६, ११८०
चौबीस तीर्थंकर पूजा—सेवाराम		हि०	१०३१
चौबीस तीर्थंकरों के पंचकल्याणक		हि०	८१०
चौबीस तीर्थंकर पचकल्याणक—जयकीर्ति		सं०	८१०

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
चौबीस तीर्थंकर भवान्तर—		हि०	२७४
चौबीस तीर्थंकर मात-पिता नाम		हि०	१०६
चौबीस तीर्थंकर वीनती—देवाब्रह्म		हि०	७२४
चौबीस महाराज की वीनती—चन्द्र कवि		हि०	७२४
चौबीस महाराज की वीनती—हरिश्चन्द्र		हि०	७२५
चौबीस तीर्थंकर स्तवन		हि०	७२१, ९५८
चौबीस तीर्थंकरस्तवन—विद्याभूषण		हि०	११३४
चौबीस तीर्थंकर स्तुति		सं०	७२४
चौबीस तीर्थंकर स्तुति—(लघु स्वयंभू)		सं०	७२४
चौबीस तीर्थंकर स्तुति—देवाब्रह्म		हि०	१००५
चौबीस तीर्थंकर स्तोत्र		सं०	११२५
चौबीस दण्डक		हि०	९७५, १०७२
चौबीस दण्डक—गजसागर		हि०	११५६
चौबीस दण्डक—धवलचन्द्र		प्रा०	१०७
चौबीस दण्डक—सुरेन्द्रकीर्ति		सं०	१०७
चौबीस दण्डकभाषा—पं० दौलतराम		हि०	१०७, १०८, १११४, ११२९
चौबीस भगवान के पद		हि०	११२९
चौबीस महाराज पूजा—रामचन्द्र		हि०	१०६५, १०७७
चौबीस महाराज पूजन—वृंदावन		हि०	१०७३, १०७४
चौसठ योगिनी स्तोत्र		सं०	१०६९
चौबीस स्तवन		हि०	११५२
चौबीसी कथा		सं०	४३९
चौबीसी व्रत कथा		हि०	४४०
चौबीसी व्रतकथा—ब्रह्मकीर्ति		स०	४८०
चौसठ ऋद्धि पूजा—स्वरूपचन्द्र		हि०	८११, ८१२
चौसठ ठाणा चर्चा		हि०	१०११
चौसठ योगिनी स्तोत्र		सं०	७२५, ११२५
चंपकमाला सती रास		हि०	६३२
चंपावती सील कल्याणदे—मुनिराजचंद		हि०	४३८

छ

छप्पीसी ग्रन्थ		सं०	३९
छनाल पच्चीसी		हि०	९८७
छप्पय		हि०	१००३
छहढाला		हि०	९८५, ९९२, ९९९
छहढाला—ऐकचन्द		हि०	१२६
छहढाला—दौलतराम		हि०	११३२
छहढाला—दौलतराम पल्लीवाल		हि०	१९६
छहढाला—धानतराय		हि०	१०५१, १११९
छहढाला—बुधजन		हि०	१९६, १११९
छांदसीय सूत्र—भट्टकेदार		सं०	५९४
छियालीस ठाणा		हि०	९५३
छियालीस ठाणा चर्चा		हि०	३९
छियालीस गुण वर्णन		सं०	१०८
छींक शोष निवारक विधि		सं०	५४४
छींक विचार		हि०	९६४
छेद पिंड		प्रा०	११८०
छंद—केशवदास		हि०	११५८
छंद - नारायण दास		हि०	११६८
छंदकोश टीका—चन्द्रकीर्ति		प्रा०सं०	५९३
छंद रत्नावलि—हरिराम दास निरंजनी		हि०	५९३
छंद वृत्तरत्नाकर टीका—पं० सदहण		स०	५९४
छंदानुशासन स्वोपज्ञ वृत्ति—हेमचन्द्राचार्य		सं०	५९४
छंद देसतरी पारसनाथ—लक्ष्मी वल्लभ गणि		हि०	७२५

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
छदसार	—नारायणदास	हि०	११५८
छद संग्रह	—गंगादास	हि०	११३५

ज

जकडी	—हरिराज	हि०	३५१
जकडी	—मनोहर	हि०	१११९
जकडी	—रूपचन्द	हि०	१०८४
जखडिया संग्रह		हि०	१०११
जखडी	—	हि०	१०२४
जखडी	—कविदास	हि०	१०९८
जखडी	—रामकृष्ण	हि०	११६८
जखडी	—भूधरदास	हि०	११६८
जखडी बीस विरहमान	—हर्षकीर्ति	हि०	१०७९
जखडी साहण जूबरी वर्णन		हि०	१०९८
जगन्नाथ अष्टक		हि०	१०३६
जन्म कुन्डली		सं०	५४४
			१०६३
जन्म कुन्डली ग्रह विचार		सं०	५४५
जन्म जातक चिह्न		सं०	५४५
जन्म पत्रिका	—खुशालचन्द	स०	१०९६
जन्मपत्री पद्धति		सं०	५४५
जयविलि		स०	८१३
जम्बुकुमार सज्झाय		हि०	४०
जम्बू द्वीप अकृत्रिम चैत्यालय पूजा	—ब्र० जिनदास		
		स०	८१२
जम्बू द्वीप पट		सं०	११८१
जम्बू द्वीप पण्णत्ति		प्रा०	६१०
जम्बू द्वीप पूजा	—पं० जिनदास	सं०	८१२
जम्बू द्वीप संघयणि	—हरिभद्र सूरि	प्रा०	६१०
जम्बू स्वामी अध्ययन	—पद्मशिलक गणि		
		प्रा०	४८०
जम्बू स्वामी कथा		हि०	४४०
जम्बू स्वामी कथा	—पं० दौलतराम कासलीवाल		
		हि०	४४०

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
जम्बू स्वामी कथा	—पांडे जिनदास	हि०	१०१५
			११०१, ११०६
जम्बू स्वामी चरित्र	—महाकवि वीर	अप०	२२२
जम्बू स्वामी चरित्र	—भ० सकलकीर्ति	सं०	३२१,
			३२३
			१०४९, ११६७
जम्बू स्वामी चरित्र	—ब्र० जिनदास	सं०	३२३
जम्बू स्वामी चरित्र	—पांडे जिनदास	हि०	३२४
			३२५
जम्बू स्वामी चरित्र	—नाथूराम लेमेचू	हि०	३२५
जम्बू स्वामी चरित्र	—	प्रा०सं०	३२५
जम्बू स्वामी चौपई	—कमल विजय	हि०	१०२९
जम्बू स्वामी जकडी	—साधुकीर्ति	हि०	१०२४
जम्बू स्वामी पूजा		हि०	८१३
जम्बू स्वामी पूजा जयमाल		सं०	८१३
जम्बू स्वामी पूजा		हि०	१०९५
जम्बू स्वामी पूजा	—जगतराम	हि०	१०६४
जम्बू स्वामी पूजा	—वृन्दावन	हि०	१०६४
जम्बू स्वामी रास	—ब्र० जिनदास	हि०	६३३
जम्बू स्वामी रास	—नयविमल	हि०	६३३
जम्बू स्वामी रास	—ब्र० जिणदास	हि०	११३८,
			११४७
जम्बू स्वामी वेलि	—वीरचन्द	हि०	११३२
जयकीर्ति गीत		हि०	९६३
जयकुमार चरित्र	—ब्र० कामराज	सं०	३२६
जय जय स्वामी पाथडी	—पल्हण	हि०	१०८९
जय तिहुअण प्रकरण	—अभयदेव	प्रा०	७२५
जय तिहुअण स्तोत्र	—मुनि अभयदेव	प्रा०	१०२९
जय पराजय	—	सं०	१००९
जयपुर जिन मन्दिर यात्रा	—पं० गिरधारी		
		हि०	६५२
जयपुर के जैन मन्दिर	—	हि०	१००१
जयपुराण	—ब्र० कामराज	सं०	२७६

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
जलगालन रास—ज्ञान भूषण		हि०	१०२४
जलगालन विधि - ब्र० गुलाल		हि०	६८५
जलगालन विधि		हि०	११३१
जयमाल		हि०	१०६६
जलयात्रा पूजा		स०	६६६
जलयात्रा पूजा विधान		सं०	८१३
जलयात्रा विधान		सं०	८१३
जलयात्रा विधि		सं०	८१३, ११३६, ११६६
जलहर तेला उद्यापन		सं०	८१३
जल होम विधान		सं०	८१३
जल होम विधि		सं०	८१३
जसकीर्ति गीत		हि०	६६२
जसहर चरिउ—पुष्पदन्त		अप०	३२६
जसोधर चौपई—लक्ष्मीदास		हि०	११६७
जसोधर जयमाल		हि०	११०७
ज्येष्ठ जिनवर कथा—श्रुतसागर		सं०	४०६
ज्येष्ठ जिनवर कथा—ललित कीर्ति		सं०	४७९
ज्येष्ठ जिनवर कथा—हरिकृष्ण पाण्डे		हि०	४३३
ज्येष्ठ जिनवर कथा—ब्र० रायमल्ल		हि०	६८५, ९६६, ६७२
ज्येष्ठ जिनवर पूजा		हि०	६६६
ज्येष्ठ जिनवर व्रत कथा—खुशालचन्द		हि०	११२३ ११३२
ज्येष्ठ जिनवर व्रतोद्यापन		सं०	८१५
ज्येष्ठ जिनवरनी विनती—ब्र० जिनदास		अप०	६५२
ज्योतिष ग्रंथ — नारचन्द्र		सं०	११-६
ज्योतिष ग्रंथ — भास्कराचार्य		सं०	५८६
ज्योतिष ग्रंथ		हि०	५-६
ज्योतिष ग्रंथ भाषा—कालूराम ब्रह्मराम		हि०	५४७
ज्योतिष रत्नमाला—केशव		स०	५४७
ज्योतिष रत्नमाला टीका — पं० वैजा			५४७
ज्योतिष विचार—		सं०	११८०
ज्योति विद्याफल—		सं०	५४६
ज्योतिष शास्त्र—		सं०	११३८
ज्योतिष शास्त्र—हरिभद्रसूरि		सं०	५४७
ज्योतिष शास्त्र—चिंतामणि पंडिताचार्य		सं०	५४७
ज्योतिष शास्त्र		सं०	५४८
ज्योतिष सार—		सं०	११८०
ज्योतिष नारचन्द्र		सं०	५४८, ११८६
ज्योतिसार भाषा—		हि०	६१६
ज्योतिषसार संग्रह		सं०	११८७
ज्योतिषसार संग्रह—मुंजादित्य		सं०	५८५
ज्योतिष सारणी—		सं०	५४८
ज्वर त्रिशती—शार्ङ्गधर		सं०	५०७
ज्वर पराजय—		स०	५७७
ज्वालामालिनी स्तोत्र—		स०	७३० १०८८ ११२५
जातक नीलकण्ठ		सं०	५४५
जातक पद्धति—केशवदैवज्ञ		सं०	५४५
जातकाभरण—ढुंढिराज दैवज्ञ		सं०	५४५
जातक संस्कार—		सं०	५४६
जिनकल्पी स्थविर आचार विचार		हि०	१०८
जिन कल्याणक	पं० आशाधर	स०	१०८
जिन गीत—हर्षकीर्ति		हि०	१०१६
जिनगुण विलास—नेमसुख		हि०	११८१
जिन गुण सम्पत्ति कथा—ललितकीर्ति		हि०	४३२
जिन गुण सम्पत्ति व्रतोद्यापन—सुमतिसागर		स०	६०७
जिन गुण संपति व्रतोद्यापन पूजा—सं०			८१४
जिनगेह पूजा जयमाल —		हि०	११९०

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
जिन जन्म महोत्सव षट्पद	विद्यासागर	हि०	१००३
जिनदत्त कथा	रत्नभूषण	हि०	११४५
जिनदत्त कथा		सं०	४४०
जिनदत्त चरित	गुणभद्राचार्य	सं०	३२७, ३६६, ४४१
जिनदत्त कथा भाषा		हि०	४४१
जिनदत्त चरित्र	पं० लाखू	अपभ्रंश	३२६
जिनदत्त चरित्र	रत्नभूषण सूरि	हि०	३२७
जिनदत्त चरित्र	विश्वभूषण	हि०	३२७, ५२८
जिनदत्त चरित्र भाषा	कमलनयन	हि०	३२६
जिनदत्तरास	रत्नभूषण	हि०	६३३, ६४५
जिनदत्तरास		हि०	११४६, ११६७
जिनदर्शन सप्तव्यसन चौपई		सं०	६६८
जिनदर्शनस्तवन भाषा		हि०	७२७
जिनदर्शन स्तुति		स०	७२६
जिनधर्माल		हि०	११११
जिनपाल ऋषि का चौढालिया	जिनपाल	हि०	७२६
जिनपिंजर स्तोत्र	कमलप्रभ	सं०	७२६
जिनपूजा प्रतिक्रमण		हि०	१०६६
जिनपूजा विधि	जिनसेनाचार्य	स०	८१४
जिनपंजर		स०	१०६४
जिनदर्शनस्तवन भाषा		हि०	७२७
जिनपंजर स्तोत्र	कमल प्रभसूरि	सं०	६५८
जिनप्रतिमा स्वरूप		हि०	१०८
जिनप्रतिमा स्वरूप भाषा	छीतरमल कासा	हि०	१०८
जिनप्रतिमा स्वरूप वर्णन	छीतर कासा	हि०	१११८
जिनबिम्ब निर्माण विधि		सं०	११८२
जिनबिम्ब निर्माण विधि		हि०	११८२
जिनमहाभिषेक विधि	आशाधर	सं०	८१४
जिनमुखावलोकन कथा	सकलकीर्ति	सं०	११३६
जिन मंगल		सं०	११३४
जिनयज्ञ कल्प	आशाधर	स०	८१४
जिनरक्षा स्तोत्र		सं०	७२६
जिनराज बीनती		हि०	११४१
जिनरात्रि कथा		सं०	११३६
जिनरात्रि विधान		सं०	४४१
जिनरात्रि व्रत महात्म्य	मुनि पद्मनन्दि	सं०	४४१
जिनरात्रि कथा	ललित कीर्ति	स०	४७८, ४८०
जिनवर दर्शन स्तवन	पद्मनन्दि	प्रा०	७२६
जिनवर व्रत कथा	अ० रायमल्ल	हि०	६७४
जिनवर सात बोल स्तवन	जसकीर्ति	हि०	१०६१
जिनवर स्वामी विनती	सुमति कीर्ति	हि०	६५२
जिनशतक		सं०	७२६
जिनशतक	भूधरदास	हि०	१०५६
जिनप्रतिका		सं०	११८२
जिनसमवशरण मंगल	नथमल	हि०	७२६
जिनसहस्र नाम		सं०	१०२२, ४५
जिनसहस्र नाम	आशाधर	सं०	६५७, ६६४, ६६८, १०१८, १०४८, ११४६
जिनसहस्र नाम	आशाधर	सं०	७२४
जिन सहस्र नाम	जिनसेनाचार्य	सं०	७०४, ७२८, ६५६, १०००, १०४१, १०४२, १०६४, १०७२, १०७४, १०७८, १०८२, १०८८, १०६६, १११८, ११२२, ११४६, ११५१
जिनसहस्र नाम	जिनसेनाचार्य	सं०	७२४, ७२८

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्रसंख्या
जिनसहस्रनाम टीका	—अमरकीर्ति	सं०	७२८,७२९
जिनसहस्रनाम वचनिका		हि०	७२९
जिनसहस्रनाम टीका	—श्रुतसागर	सं०	७२९
जिनसहस्रनाम	—जिन सेनाचार्य	सं०	९५६, १००७, १०४१, १०४३, १०६४, १०८२, १०८८, १०९९, ११२२, ११२८, ११४९, ११५१, ११७१, ११७४, ११७८,
जिनसहस्रनाम स्तोत्र	—बनारसीदास	हि०	१०५५
जिनसहस्रनाम पूजा	—सुमति सागर	सं०	८१५
जिनसेन बोल	—जिनसेन	हि०	१०२५
जिनसंहिता	—भ० एकसंधि	सं०	८१५
जिनस्तवन	—गुण सागर	हि०	११०५
जिनस्तोत्र		हि०	७२८
जिनवर स्वामी वीनती	—सुमतिकीर्ति	हि०	११३१
जिनाष्टक		हि०	९५२,९८१ १०९९
जिनांतररास	—वीरचन्द	हि०	११३२
जीभदांत नासिका नयन कर्ण संवाद	—नारायण मुनि	हि०	११८२
जीरावल देव वीनती		हि०	११४१
जीरावलि वीनती		हि०	११३७
जीरावली स्तवन		हि०	१०२९
जीव उत्पत्ति सज्झाय	—हरखसूरि	हि०	३९
जीवको सज्झाय		,,	१०५९
जीवगति वर्णन	—हर्षकीर्ति	हि०	१०१९
जीवडा गीत		हि०	११४४
जीवडा रास	—समयसुन्दर	हि०	१०१९
जीवतत्व स्वरूप	—	स०	३९
जीव दया	—भावसेन	सं०	४३४
जीव दया छंद	—मूधा	हि०	११५७
जीवनी आलोचना		हि०	११३५
जीवन्धर चरित्र	—शुभचन्द्र	सं०	३२९
जीवन्धर चरित्र	—रइधू	अप०	३३०
जीवन्धर चरित्र	—दौलतराम कासलीवाल		३३०
जीवन्धर प्रबन्ध	—भ० यशकीर्ति	हि०	३३०
जीवन्धर चरित्र	—नथमल बिलाला	हि०	३३० ३३१, ३३२,
जीवन्धर रास	—ब्र० जिनदास	हि०	६३४
जीवन्धररास	—त्रिभुवनकीर्ति	हि०	११३६
जीव विचार		हि०	९४२
जीव विचार		प्रा०	१०९
जीव विचार प्रकरण		प्रा०	१०९
जीव विचार प्रकरण	—शान्तिसूरि	प्रा०	४०
जीव विचार सूत्र		सं०हि०	३९
जीव वैराग्य गीत		हि०	१०२४
जीवसमास		हि०	९५७
जीवसमास विचार		प्रा०सं०	४०
जीवसार समुच्चय		सं०	१०९
जीवस्वरूप		प्रा०	३९
जीवस्वरूप वर्णन		सं०प्रा०	४०
जीवाजीव विचार		प्रा०	३९
जैनगायत्री		सं०	९२० ७२९
जैनगायत्री विधान		हि०	१०६४
जैनपच्चीसी	—नवल	हि०	१०७७
जैनप्रबोधिनी द्वि० भाग		हि०	१०९
जैनबद्री की चिट्ठी	—नथमल	हि०	१०४५
जैनबद्री की पत्री		हि०	९६५
जैनबद्री यात्रा वर्णन	—सुरेन्द्रकीर्ति	हि०	१०३५
जैनरास		हि०	९४४ ९७८, १०१३
जैनवनजारा रास		हि०	१०२७
जैनविलास	—भूधरदास	हि०	१०७३ ६६०
जैनविवाह पद्धति	—जिनसेनाचार्य	सं०	८१५
जैनविवाह विधि		सं०	८१५,१११९

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
जैन शतक		हि०	१०४७
			१०५७
जैनशतक—भूधरदास		हि०	१०११
१०४२, १०६०, १०७१, १०७३, १०७४, १०७६			
१०८१, १११४, ११३३, ११५३			
जैनशतक दोहा		हि०	६८५
जैन श्रावक आम्नाय—समतारामं		हि०	१०६
जैन सदाचार मार्तण्ड—नामक पत्र का उत्तर			
		हि०	१०६
जैन संध्या		सं०	१०८१
जैनेन्द्र व्याकरण—देवनन्दि		सं०	५१३
जोगीरासा		हि०	६६०
६७४, १०२७, ११०३			
जोगणरास		हि०	६८५
जोगीरासा—जिनदास		हि०	६३४
८७७, ६५१, १०११, १०१३, १०५६,			
१०६५, १११०			
जोग विचार		सं०	५४६
जोरा की विधि		हि०	५७७
जंबूकुमार गीत		हि०	११११
जंबू स्वामी चौपई—पाण्डे जिनदास		हि०	११४३
जंबुक नामो		हि०	१००१

झ

झूलना		हि०	११५८
झूलना—तानुसाह		हि०	१००३

ट

टंडाणा गीत		हि०	१०१६
टंडाणा गीत		हि०	११०६

ठ

ठाणांग सुत्त		प्रा०	४१

ढ

ढाढसी गाथा—ढाढसी		प्रा०	४१
ढाढसी गाथा		प्रा०	११८२
ढाढसी गाथा		प्रा०	६६४
ढाढसी गाथा		हि०प्रा०	११०२
ढाढसी गाथा भाषा		हि०	११११
ढालगणसार		हि०	१०३५
ढालसागर—गुणसागरसूरि		हि०	६६०
ढालसंग्रह—जयमल		हि०	६६०
ढूंढिया मत उपदेश		हि०	१११
ढोलामारु चौपई—कुशललाभ		हि०	१०२६,
			१०३२
ढोला मारणी चौपई		राज०	४४१
ढोलामारु की बात		हि०	१०२०
ढोलामारुणी री बात		हि०	१०३३

ण

णमोकार पैंतीसी—सुमतिसागर		सं०	१०८५
णमोकार महिमा		सं०	१०५२
णमोकार मंत्र महात्म्य कथा		हि०	४४१
णमोकार महात्म्य		सं०	११८३
णमोकाररास		हि०	६८१
णेमिचरिउ—दामोदर		अप०	३३२
णायकुमार चरिउ—पुष्पदन्त		अपभ्रंश	३३२

त

तकाराक्षर स्तोत्र		सं०	७३०
तत्वकौस्तुभ—पं० पन्नालाल पांडया		हि०	४१
तत्वज्ञान तरंगिणी—भ० ज्ञानभूषण			
		सं०	४१
तत्वदीपिका		हि०	१११
			५१३

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
तत्वधर्मामृत		सं०	१११
तत्वप्रकाशिनी टीका		सं०	२०२
तत्व वर्णन		हि०	४२
तत्वसार		हि०	१०६२
तत्वसार	देवसेन	अप०	४२
			११८३
तत्वसार	ज्ञानतराय	हि०	१०४३
			१०७२
तत्वसार भाषा		हि०	१०८५
तत्वानुशासन	रामसेन	सं०	४२
तत्वार्थबोध	नुधासन	हि०	४२
तत्वार्थरत्नप्रभाकर	भ० प्रभाचन्द्र	सं०	४२, ४३
तत्वार्थराजवार्तिक	भट्ट अकलंक	सं०	४३
तत्वार्थवृत्ति	पं० योगदेव	सं०	४३
तत्वार्थश्लोकवार्तिक	आ० विद्यानन्दि	सं०	४३
तत्वार्थसार	अमृतचन्द्राचार्य	सं०	४३
तत्वार्थसार दीपक	भ० सकलकीर्ति	सं०	४४
तत्वार्थ सूत्र		सं०	६५७
			६७७, ६६६, १०११, १०६७
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामी	सं०	४४
			४५, ४६, ४७, ४८, ४६, ५०, ८७६, ६५३, ६६६
			६७३, ६६५, ११०५, १००६, १०१८, १०१६
			१०२२, १०३५, १०७२, १०८२, १०८८, १११७,
			११२२, ११२७, ११३६, ११५४, ११८३
तत्वार्थ सूत्र टीका		सं०हि०	१०८१
तत्वार्थ सूत्र टीका	गिरिधरसिंह	हि०	५२
तत्वार्थ सूत्र टीका	श्रुतसागर	सं०	५०,५१
तत्वार्थ सूत्रटीकावबोध टीका		हि०सं०	११२३
तत्वार्थ सूत्र भाषा		हि०	५०
			५५, ५६, ५७, ५८, ५६
			१०६५
तत्वार्थसूत्र भाषा	कनककीर्ति	हि०	५१,५२
तत्वार्थसूत्र भाषा	छोटेलाल	हि०	५३
तत्वार्थसूत्र भाषा	महाचन्द्र	हि०	५१
तत्वार्थसूत्र भाषा	पं० सदासुख कासलीवाल	हि०	५३,५४
			११८३
तत्वार्थसूत्र भाषा	साहिबराम पाटनी	हि०	५३
तत्वार्थसूत्र भाषा टीका		हि०	६६६
तत्वार्थसूत्र भाषा पद्य	छोटीलाल	हि०	१०४४
तत्वार्थसूत्र भाषा (वचनिका)	जयचन्द छाबड़ा	राज०	५४,५५
तत्वार्थसूत्र भाषा (वचनिका)	पन्नालाल संघी	राजस्थानी	५४
तत्वार्थसूत्र मंगल		हि०	४४
तत्वार्थसूत्र वृत्ति		सं०	६०
तत्वार्थसूत्र सार्थ		हि०	११४२
तत्वार्थसूत्र संग्रह		सं०	६६३
तद्धितप्रक्रिया	अनुभूति स्वरूप पाचार्य	सं०	५१३
तद्धितप्रक्रिया	भट्टीभट्टी	सं०	५१३
तपोग्रहण विधि		सं०	८१५
तपोद्योतक सत्तावनी		प्रा०	१०४६
तर्क दीपिका	विश्वनाथाश्रम	सं०	२५२
तर्क परिभाषा	केशव मिश्र	सं०	२५२
तर्क परिभाषा प्रकाशिका	चेन्नभट्ट	सं०	२५२
तर्क परिभाषा प्रक्रिया	चिन्नभट्ट	सं०	५१४
तर्क भाषा		सं०	२५२
तर्कभाषा वार्त्तिक		सं०	२५२
तर्कसंग्रह	अन्नभट्ट	सं०	२५२,२५३
ताजिक ग्रन्थ	नीलकंठ	सं०	५४६
ताजिकालंकृति	विद्याधर	सं०	५४६
ताजिक नीलकंठोक्तषोड़शयोग		सं०	११११६
ताजिक सार		सं०	४४२
ताजिक सार	हरिभद्रगणि	सं०	५४६
तारणतरण स्तुति (पंचपरमेष्ठी जयमाल)		हि०	७३०
तालस्वरज्ञान		सं०	६०८

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
तिथि दीपक यंत्र		हि०	५४६
तिथि मंत्र		सं०	६६४
तिथि सारणी—लक्ष्मीचन्द		सं०	१११६
तिथि सारिणी		सं०	५४६
तिलोयपण्णत्ति—आ० यतिवृषभ		प्रा०	६१०
तीन चौबीसी पूजा		सं०	८१६
तीन चौबीसी पूजा		हि०	८१६
तीनचौबीसी पूजा—त्रिभुवनचन्द		सं०	८१६
तीनचौबीसी पूजा—वृन्दावन		हि०	८१६
तीनलोक चित्र			११७२
तीनलोक पूजा—टेकचन्द		हि०	८१६
तीनलोक पूजा—नेमीचन्द पाटनी		हि०	८१७
तीर्थमहात्म्य (सम्मेद शिखर विलास)—मनसुखराय		हि०	७३०
तीर्थंकरमाता-पिता नाम वर्णन—हेमलु		हि०	१११०
तीर्थंकरों के माता-पिता के नाम		हि०	१०१२
तीर्थमालास्तवन		हि०	६५२
तीर्थवंदनालोचन कथा		सं०	१११
तीर्थंकरस्तुति		हि०	६५६
तीसचौबीसी		हि०	१११
तीसचौबीसी—श्याम कवि		हि०	६८२
तीसचौबीसीनाम		हि०	११३५, १०६२
तीसचौबीसी पाठ—पं० रामचन्द्र		हि०	८१८
तीसचौबीसी पूजा		हि०	१००२, १०१०
तीनचौबीसी पूजा—विद्याभूषण		सं०	११३६
तीसचौबीसी पूजा—वृन्दावन		हि०	८१८
तीसचौबीसी पूजा—शुभचन्द्र		सं०	६६४, ८१७, ८१८, १११८
तीसचौबीसी पूजा—पं० साधारण		सं०प्रा०	८१८
तीसचौबीसी पूजा—सूर्यमल		हि०	११८३
तीसचौबीसीव्रतोद्यापन		सं०	६०७

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
तेरहकाठिया		हि०	१०८५
तेरहकाठिया—बनारसीदास		हि०	६६६, ११२६
तेरहद्वीप पूजा—लालजीत		हि०	८१६
तेरहद्वीप पूजा—स्वरूपचन्द		हि०	८१६
तेरहद्वीप विधान		सं०	८१६
तेरहद्वीप पूजा विधान		हि०	८२०
तेरहपंथखंडन—पन्नालाल दूनीवाले		हि०	१११

द

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
दर्जिबहिया		हि०	११८३
दयारास—गुलाबचन्द		हि०	६८६
दण्डक		सं०हि०	११२
दण्डकप्रकरण—जिनहंस मुनि		प्रा०	११३
दण्डकप्रकरण—वृन्दावन		हि०	११३
दण्डकवर्णन		हि०	११३
दण्डकस्तवन—गजसार		प्रा०	११३
दमयन्ती कथा—त्रिविक्रम भट्ट		सं०	४४३
दर्शन कथा—भारामल्ल		हि०	४४३, ४४४, ११९६, ११२२
दर्शनपच्चीसी - सुमानीराम		हि०	७३०
दर्शनपच्चीसी—बुधजन		हि०	११२६
दर्शनप्रतिमाकाव्यौरा		हि०	११३५
दर्शनविशुद्धि प्रकरण—देव भट्टाचार्य		सं०	११४
दर्शनवीनती		हि०	११४४
दर्शनशतक - ज्ञानतराय		हि०	१०४३
दर्शनशुद्धि प्रकाश		हि०	१०६६
दर्शनसप्ततति		प्रा०	११४
दर्शन सप्ततिका		प्रा०	११४
दर्शनसार		हि०	१०६६
दर्शनसार—देवसेन		प्रा०	२५३, २५४
दर्शनस्तोत्र—भ० सुरेन्द्रकीर्ति		सं०	७३०
दर्शनस्तोत्र भाषा—रामचन्द्र		हि०	१०६६

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
दर्शनाष्टक—		सं०	१०९
दर्शनाष्टकसवैया—विद्यासागर		हि०	१००३
दशचिन्तामणि प्रकरण		हि०	११८३
दशदिक्पालार्चनविधि		सं०	८२३
दशधर्मवर्णन		स०	११३६
दशपरमस्थान कथा—ललितकीर्ति		सं०	४८०
दशप्रकारब्रह्मणविचार		सं०	११८४
दशभक्ति		हि०	१०९८
दशमीकथा— ज्ञानसागर		हि०	११२३
दशरथकीजयमाल		हि०	९७७
दशलक्षणउद्यापनपाठ—श्रुतसागर		सं०	१०००
दशलक्षणउद्यापन पूजा		सं०	८२४
दशलक्षणउद्यापन पूजा		हि०	८२४
दशलक्षणउद्यापन विधि		सं०	८२८
दशलक्षण कथा— श्रीसेरीलाल		हि०	९६१
दशलक्षण कथा—ज्ञानसागर		हि०	११२३
दशलक्षण कथा—हरिचन्द		अप०	४४४
दशलक्षण कथा		सं०	४४४
दशलक्षण कथा—ब्र० जिनदास		हि०	४४५
दशलक्षण कथा		हि०	४४६
दशलक्षण कथा—ललितकीर्ति		सं०	४७९,४८०
दशलक्षण कथा - हरिकृष्ण पाण्डे		हि०	४३३
दशलक्षण जयमाल		हि०	८२४
			८२५, ८२७, ८२८, ९९३, ११०९
दशलक्षण जयमाल पूजा—भावशर्मा			
		प्रा०	८२४, ८२५
दशलक्षण जयमाल — रइधू		अप०	८२६
दशलक्षण धर्मपूजा		सं०	९६४
दशलक्षणधर्मवर्णन		हि०	११३
दशलक्षणधर्म वर्णन		सं०	११३
दशलक्षणधर्म वर्णन—रइधू		अपभ्रंश	११४
दशलक्षणधर्मोद्यापन		सं०	८२७
दशलक्षणपद		हि०	९८५
दशलक्षण पूजा		सं०	९४८,९६०
दशलक्षण पूजा—ज्ञानतराय		हि०	८२८,८८१, १०११,
दशलक्षण पूजा विधान — टेकचन्द		हि०	८२८
दशलक्षण पूजा — विश्वभूषण		सं०	८२८
दशलक्षण पूजा		हि०	८३२
दशलक्षण पूजा		सं०	८३२
दशलक्षण भावना—पं० सदासुख कासलीवाल		राज०	११४
दशलक्षण मंडल पूजा—भालूराम		हि०	८२८
दशलक्षणरास—विनयकीर्ति		हि०	११२३
दशलक्षणविधान पूजा		हि०	८२८
दशलक्षणविधान पूजा		हि०	८२८
दशलक्षण व्रत कथा		हि०	१११९, ११६४
दशलक्षण व्रत कथा		हि०	११६४
दशलक्षण व्रत कथा—ब्र० जिनदास		हि०	११४३
दशलक्षण व्रत पूजा		स०	८२८
दशलक्षण व्रत पूजा		हि०	८२८
दशलक्षण व्रतोद्यापन		सं०	८३०
दशलक्षण व्रतोद्यापन		हि०	८३१
दशलक्षण व्रतोद्यापन		हि०	८३१
दशलक्षण व्रतोद्यापन पूजा—सुमतिसागर		सं०	८२९
दशलक्षण व्रतोद्यापन—सुधीसागर		सं०	८३०
दशलक्षण व्रतोद्यापन		सं०	८३०
दशलक्षण व्रतोद्यापन—भ० ज्ञान भूषण		सं०	८३०
दशलक्षण व्रतोद्यापन—रइधू		अप०	८३०
दशलक्षण व्रतोद्यापन		प्रा०सं०	८३१
दशलक्षणस्तोत्र		सं०	७७४
दशलक्षणीकअंग		सं०	८३२
दशलाक्षणिक कथा—नरेन्द्र		सं०	९९४
दशलाक्षणिक पूजा—पं० रूपचन्द		हि०	१०३९

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
दशवैकालिक सूत्र		प्रा०	६२
दशलक्षण चौबीसी	—ज्ञानतराय	हि०	१०४४
दसअंगों की नामावली		हि०	११८३
दसदान		सं०	१०४६
द्रव्य गुण शतक		सं०	५७७
द्रव्यपदार्थ		सं०	२५४
द्रव्यसमुच्चय	—कंजकीर्ति	सं०	६२
द्रव्यसंग्रह		हि०	११४२, ११५०
द्रव्यसंग्रह	—नेमिचन्द्राचार्य	प्रा०	६२ ६३, १०५४, १०८०
द्रव्यसंग्रह टीका		प्रा०हि०	६५
द्रव्यसंग्रह टीका		सं०हि०	६५
द्रव्यसंग्रह टीका	—प्रभाचन्द्र	सं०	६४
द्रव्यसंग्रह भाषा		हि०	६५ ६६, ६७, १००८, १०७३, ११०३
द्रव्यसंग्रह भाषा	—पं० जयचन्द छाबड़ा	राज०	६७, ६८
द्रव्यसंग्रहभाषा	—पर्वत धर्मार्थी गु०		६६, १०८१
द्रव्यसंग्रह भाषा	—भैया भगवतीदास	हि०	१००५
द्रव्यसंग्रह भाषा टीका		हि०	६५
द्रव्यसंग्रह भाषा टीका	—बंशीधर	हि०	६७
द्रव्यसंग्रह वृत्ति	—ब्रह्मदेव	संस्कृत	६४,६५
द्रव्यसंग्रह सटीक		प्रा०हि०	६६
द्रव्यसंग्रह सटीक	—बंशीधर	प्रा०हि०	१०४६
दातासूम संवाद		हि०	११८४
दानकथा	—भारामल्ल	हि०	४४६
दानकथा	—भारामल्ल	हि०	१११६ ४४७
दानशील कथा	—भारामल्ल	हि०	४४७
दानशील संवाद	—समयसुन्दर	हि०	४४७
दानकथा रास		हि०	११४४
दानचौपई	—समयसुन्दर वाचक	हि०	११४३
दानडी की कथा		हि०	४४७
दानतपशील भावना	—ब्रह्मसागर	हि०	११३४
दानफलरास	—ब्र० जिनदास	हि०	६३४
दानलीला		हि०	१०८७
दानशीलतप भावना		हि०	१०३८, १०६१
दानशीलतप भावना	—मुनि असोग	प्रा०	११५
दानशीलतप भावना	—श्री भूषण	हि०	११६७
दानशीलतप भावना	—समयसुन्दर	हि०	६४६, १०३६, १०५६
दानशीलभावना	—भगौतीदास	हि०	११४
दानादिकुलवृत्ति	—	सं०	११५
द्वादशनाम	—शंकराचार्य	सं०	११८५
द्वादशमासा	—चिमना भाषा महा०		१००३
द्वादशानुप्रेक्षा		हि०	६४१, ६६०, ६८३, १०४६, १०५१, १०५८, १११०, ११४२
द्वादशानुप्रेक्षा	—कुन्दकुन्दाचार्य	प्रा०	२०३
द्वादशानुप्रेक्षा	—गौतम	प्रा०	२०३
द्वादशानुप्रेक्षा	—पं० जिनदास	हि०	६५१
द्वादशानुप्रेक्षा	—ईसर	हि०	६५१
द्वादशानुप्रेक्षा	—जिनदास	हि०	६६०
द्वादशानुप्रेक्षा	—ब्र० जिनदास	हि०	६७२
द्वादशपूजाविधान		सं०	८३२
द्वादशभावना	—आदिचन्द्र	हि०	११३३
द्वादशराशिसंक्रान्तिफल		सं०	५५०
द्वादशव्रत कथा	—पं० अभ्रदेव	सं०	४४७
(अक्षय निधि विधान कथा)		सं०	४४७
द्वादशव्रतकथा	—ललितकीर्ति	सं०	४७६, ४८०
द्वादशव्रत पूजा	—देवेन्द्रकीर्ति	सं०	८३२
द्वादशव्रत पूजा	—भोजदेव	सं०	८३२
द्वादशव्रतमंडल पूजा		हि०	६६८
द्वादशव्रतोद्यापन		सं०	८३२

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
द्वादशीव्रथा	—ब्र० ज्ञानसागर	हि०	६६६
द्वादशांग पूजा		सं०	८३३
द्वात्रिंशिका (युक्त्यष्टक)		सं०	७३१
द्वासप्ततिकला काव्य		हि०	११८५
दिगम्बरीदेव पूजा	—पोसह पांडे	हि०	१०६१
दिगम्बरों के ४ भेद		सं०	११३६
दिनचर्यासुहागम कुतुहल	—भास्कर	सं०	५४६
दिनप्रभपरा		सं०	५४२
दिनभानकरण		हि०	१११५
दिशानुवाई		हि०	११८४
दृष्टांतपच्चीसी	—भगवतीदास	हि०	११३३
दृष्टांतशतक		हि०	६६५
दृष्टान्तशतक		सं०	६६०
दृष्टान्तशतक	— कुसुमदेव	सं०	६८६
द्विग्रहयोगफल		सं०	५५०
द्विजमतसार		सं०	११५
द्विजवदनचपेटा		सं०	२५४
दृढ़प्रहार	— लावण्यसमय	हि०	४४८
दीपमालिकाकल्प		सं०	४४८
दीपमालिकाचरित्र		सं०	३३२
दीपावलीकल्पनी कथा		हि०	४४८
दीपावलि महिमा	— जिनप्रभसूरि	सं०	८३३
दीक्षापटल		सं०	८३३
दीक्षाविधि		सं०	८३३
दुखहरणउद्यापन	—यशकीर्ति	सं०	८३३
दुधडिया मुहूर्त		सं०	५४६
दुधारस कथा	—विनयकीर्ति	हि०	११२३
दुर्गभंगयोग		सं०	११११
दुर्गमबोधसटीक		सं०	३३२
दुर्घटकाव्य		सं०	३३३
दुर्गाविचार		सं०	११४०
दूरियरयसमीर स्तोत्रवृत्ति	—समयसुन्दर	सं०	११८४
देवकीनीहाल		हि०	४४८
देवपरीषह चौपई	—उदयप्रभसूरि	हि०	१०२४
देवपूजा		हि०	८३३
			१०३६
देवपूजा	—ब्रह्म जिनदास	सं०	१०५८
देवपूजा भाषा	—पं० जयचन्द छाबड़ा	हि०	८३३, १०४७
देवपूजा भाषा	—देवीदास	हि०	८३३
देवपूजाष्टक		सं०	११४२
देवशास्त्रगुरु पूजा	—ज्ञानतरंग	हि०	८३४
देवशास्त्रगुरु पूजा	—जैजयमाल भाषा	हि०	८३४
देवसिद्ध पूजा		सं०	८३४, ६५६, १०४४, १०८२, ११२३, ११२८
देवागमस्तोत्र	—समन्तभद्राचार्य	सं०	११८४
देवागमस्तोत्र वृत्ति	—आ० वसुनन्दि	सं०	११८५
देवीमहात्म्य		सं०	४४८
देशनाशतक		प्रा०	६८६
देहस्तवगीत		हि०	१०२५
दोषावली		हि०	५४६, ५७७
दोहरा	—आलूकवि	हि०	६४१
दोहापाहुड़	—योगीन्द्रदेव	अ०	१०६५
दोहाबावनी	—पं० जिणदास	हि०	६५२
दोहाशतक		हि०	६८६, १००८
दोहे	—तुलसीदास	हि०	१०११
द्रौपदीशीलगुणरास	—आ० नरेन्द्रकीर्ति	हि०	६३४
दौलतविलास	—दौलतराम	हि०	६६०
दौलतविलास	—दौलतराम पल्लीवाल	हि०	६६०

ध

धनकलश कथा	—ललितकीर्ति	सं०	४७६
धनञ्जय नाममाला	—कवि धनंजय	सं०	५३६, ५३७, ५३८
धन्नाऋषि सज्झाय	—हर्षकीर्ति	हि०	११०२
धन्नाचउपई		हि०	१०६३
धन्नाचउपई	—मतिशेखर	हि०	४४८

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
धन्नाजी की बीनती		हि०	१०६८
धन्ना सज्झाय	—त्रिलोकीनाथ	हि०	१०६३
धन्यकुमार चरित्र	—गुणभद्राचार्य	सं०	३३३
धन्यकुमार चरित्र	—सकलकीर्ति	सं०	३३३, ३३४, ३३५
धन्यकुमार चरित्र	—ब्र० नेमिदत्त	सं०	३३५, ३३६
धन्यकुमार चरित्र	—भ० मल्लिभूषण	सं०	३३६
धन्यकुमार चरित्र	—खुशालचन्द काला	हि०	३३६, ३३७, ३३८
धन्यकुमार चरित्र	—रइधू	अपभ्रंश	१०८६
धन्यकुमार चरित्र वचनिका		हि०	३३८
धन्यकुमार चरित्र भाषा	—जोधराज	हि०	३३८
धन्यकुमारराास	—ब्र० जिनदास	हि०	६३५
धरणेन्द्र पूजा		सं०	११२६
धर्मकथा चर्चा		हि०	६८
धर्मकीर्ति गीत		हि०	६६२
धर्मकुंडलिया	—बालमुकुन्द	हि०	११५
धर्मचक्र पूजा		सं०	६४८, ६६४, ६६६, १०८८
धर्मचक्र पूजा	—सकलसेन	सं०	८३४
धर्मचक्र पूजा	—यशोनन्दि	सं०	८३४
धर्मचक्र यंत्र		सं०	६२४
धर्मचन्द्र की लहर (चतुर्विंशति स्तवन)		हि०	१०२१
धर्मचर्चा		हि०	६८
धर्मढाल		हि०	११५
धर्मतत्व सवैया	—सुन्दर	हि०	१११९
धर्मतरुगीत	—पं० जिनदास	हि०	६५१
धर्मतरुगीत (मालीरास)	—जिणदास	हि०	१० ३
धर्मदत्त चरित्र	—दयासागर सूरि	हि०	३३८
धर्मदत्त चरित्र	—माणिक्यसुन्दर सूरि	सं०	३३८
धर्मनाथस्तवन	—आनंदघन	हि०	६४२
धर्मनाथ रो स्तवन	—गुणसागर	हि०	६८६

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
धर्मपच्चीसी		हि०	९९८, १०५६, १०६२
धर्मपच्चीसी	—ज्ञानतरंग	हि०	१०४३
धर्मपच्चीसी	—बनारसीदास	हि०	१०७८
धर्मपच्चीसी	—भगवतीदास	हि०	११३३
धर्मपरीक्षा	—अमितिगति	सं०	११५, ११६
धर्मपरीक्षा कथा	—देवचन्द्र	सं०	४४६
धर्मपरीक्षा भाषा	—दशरथ निगोत्या	हि०	१२१
धर्मपरीक्षा भाषा	—बाबा दुलीचन्द	हि०	२२१
धर्मपरीक्षा भाषा	—मनोहरदास सोनी	हि०	११७ ११८, ११९, १२० ६५०, १०३०, ११४७
धर्मपरीक्षा भाषा	—सुमतिकीर्ति	हि०	१२१, ६३५
धर्मपरीक्षा रास	—ब्र० जिनदास	हि०	६३५, ११४७
धर्मपरीक्षा वचनिका	—पन्नालाल चौधरी	हि०	१२१
धर्मपाप संवाद		हि०	६७६
धर्मपाप संवाद	—विजयकीर्ति	हि०	११८५
धर्मपंचविंशतिका	—ब्र० जिनदास	प्रा०	१२२
धर्म प्रवृत्ति (पाशुपत सूत्राणि)	नारायण	हि०	११८५
धर्मप्रश्नोत्तरी		हि०	१२२
धर्मबावनी	—बंशीराम दीवान	हि०	१०४०
धर्मबुद्धि कथा		हि०	४४६
धर्मबुद्धि पापबुद्धि चौपई		हि०	६६३
धर्मबुद्धि पापबुद्धि चौपई	—जिनहर्ष	हि०	६५४
धर्मबुद्धिमंत्री कथा	—बखतराम	हि०	४५०
धर्ममंडन भाषा	—लाला नथमल	हि०	१२२
धर्मयुधिष्ठिर संवाद		सं०	११८५

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
धर्मरत्नाकर	जयसेन	सं०	१२२, १२३
धर्मरसायन	पद्मनन्दि	प्रा०	१२३,
धर्मरासा		हि०	१११९
धर्मरास		हि०	६३५ ९८५, १०३२
धर्मरासो	जोगीदास	हि०	९८१
धर्मविलास		हि०	११००
धर्मविलास	ज्ञानतराय	हि०	६६१ ६९१, १०४६, १०४२
धर्मशर्माभ्युदय	महाकवि हरिचन्द	सं०	३३९
धर्मशर्माभ्युदय टीका	यश कीर्ति	सं०	३३९
धर्मशुक्लध्यान निरूपण		सं०	१२३
धर्मस्तम्भ	वर्द्धमान सूरि	सं०	८३४
धर्मसार		हि०	११६८
धर्मसार	पं० शिरोमणि दास	हि०	१२३, १२४
धर्मसंग्रह श्रावकाचार	पं० मेधावी	सं०	१२३
धर्मसंग्रहसार	सकलकीर्ति	सं०	१२४
धर्मामृतसूक्ति संग्रह		स०	६८६
धर्मोपदेश		हि०	१२५
धर्मोपदेश	रत्नभूषण	सं०	१२५
धर्मोपदेश रत्नमाला	नेमिचंद	प्रा०	१२५
धर्मोपदेश श्रावकाचार	पं० जिनदास	सं०	१२६
धर्मोपदेश श्रावकाचार	धर्मदास	हि०	१२६, ११०३
धर्मोपदेश श्रावकाचार	ब्र० नेमिदत्त	सं०	१२५ १२६
धर्मोपदेशसिद्धान्त रत्नमाला	भागचन्द	हि०	१२६
धर्मोपदेशामृत	पद्मनन्दि	सं०	९७६
ध्यानबत्तीसी		हि०	९९२ १०४१
ध्यानवर्णन		हि०	१०७८
ध्यानसार		सं०	२०३

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
ध्यानामृतरास	ब्र० करमसी	हि०	६३५
ध्वजारोपण विधि		सं०	८३४
धातकीखण्डद्वीप पूजा		सं०	८३५
धातुतरंगिणी	हर्षकीर्ति	सं०	५१४
धातुनाममाला		स०	५१४
धातुपदनर्थावि		सं०	५१४
धातु परीक्षा		सं०	११८५
धातुपाठ		स०	९९३
धातुपाठ	पाणिनी	सं०	५१४
धातुपाठ	शाकटायन	सं०	५१४
धातुपाठ	हर्षकीर्ति	सं०	५१४
धातुपाठ		सं०	५१४
धातु शब्दावली		सं०	५१५
धातुसमास		सं०	५१५
धारावियान		हि०	१११९
ध्रुवचरित्र	परमानन्द	हि०	१००१
ध्रुवचरित्र		हि०	११८५

न

नक्षत्रफल		सं०	५५०
नक्षत्रमालास्तव कथा		सं०	११३३
नक्षत्र एवं वार विचार		हि०	१०७३
नख सिख वर्णन	बलभद्र	हि०	१०६०
नणदभोजाई गीत	आनन्द वर्द्धन	हि०	१०६१
नणदभोजाई का झगड़ा		हि०	९८०
नन्दबत्तीसी	नन्द कवि	सं०	६८७
नन्द बत्तीसी	विमलकीर्ति	हि०	९४४
नन्दिमंगल विधान		सं०	८४२
नन्दीश्वर जयमाल		सं०	९५९
नन्दीश्वर जयमाल	सुमतिसागर	हि०	११०८
नन्दीश्वरतीर्थ नमस्कार		प्रा०	७३१
नन्दीश्वर पूजा		हि०	९५६
नन्दूसप्तमी की कथा		हि०	१०६२
नमस्कारमहात्म्य		स०	१२६

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
नयचक्र—देवसेन		सं०	२५४, ६६४
नयचक्र भाषा—निहालचन्द		हि०	२५५, २५६
नयचक्रभाषा वचनिका—हेमराज		हि०	२५४, २५५
नरकदुख वर्णन—भूधरदास		हि०	१२६
नरकदोहा		हि०	६६६
नरकवर्णन		हि०	६६७
नरकविदरण		हि०	६५६
नरकसुढाल—गुणसागर		हि०	४५०
नरपति जयचर्या—नरपति		सं०	५५०
नरसंगपुरा गीत छंद		हि०	११४१
नरेन्द्रकीर्तिगुरु अष्टक		सं०	११६०
नलदमयंती चउपई		हि०	४५०
नलदमयंती संबोध—समयसुन्दर		हि०	४५०
नलोपाख्यान		सं०	४५०
नलोदय काव्य		सं०	११८६
नलोदय काव्य—कालिदास		सं०	३३६
नलोदय काव्य टीका		सं०	३३६
नलोदय काव्य टीका—रामऋषि		सं०	३४०
नलोदय काव्य टीका—रविदेव		सं०	३४०
नवकार—अर्थ		हि०	१२६
नवकार पूजा		सं०	८३५
नवकार पैंतीसी पूजा		सं०	८३५
नवकार पैंतीसी व्रतोद्यापन पूजा—सुमतिसागर		सं०	८३५
नवकार बालावबोध		हि०	१२७
नवकार मंत्र		सं०	७७५
नवकार मंत्र—लालचन्द		हि०	११११
नवकारमंत्र गाथा		प्रा०	६२१
नवकाररास		हि०	६८१, ६६७
नवकाररास—ब्र० जिणदास		हि०	६३५
नवकार सज्झाय		हि०	७२१
नवकार सवैया—विनोदीलाल		हि०	७३१
नवकारस्तोत्र		सं०	११२४
नवग्रहअरिष्ट निवारण पूजा		हि०	८३७
नवग्रह पूजा		सं०	८३५, ८३६, ८३७, १०४७
नवग्रह पूजा—मनसुखलाल		हि०	८३७
नवग्रह पूजा		हि०	८३७
नवग्रह पूजा विधान		हि०	८३७
नवग्रह स्तवन		प्रा० सं०	७३१
नवग्रह स्तोत्र—भद्रबाहु		सं०	७३१
नवग्रहपार्श्वनाथ स्तोत्र		सं०	७३१
नवग्रहस्तोत्र		सं०	११५३
नवतत्वगाथा		प्रा०	६८
नवतत्वगाथा भाषा—पन्नालाल चौधरी		हि०	६८
नवतत्व प्रकरण		प्रा०	६६
नवतत्वप्रकरण टीका—पं० भानविजय		सं०हि०	६६
नवतत्वशब्दार्थ		प्रा०	६६
नवतत्वसमास		प्रा०	१०२६
नवतत्व सूत्र		प्रा०	७०
नवनिधान चतुर्दश रत्न पूजा—लक्ष्मीसेन		सं०	६०७
नवबदफेरी		सं०	११८६
नवपदार्थ वर्णन		हि०	६५६
नवमंगल		हि०	६७५
नवमंगल—लालचन्द		हि०	१०७४
नवमंगल विनोदीलाल		हि०	१०७५, १०७८, ११५५
नवरत्नकवित्त		हि०	१०३८, ११८६
नवरत्न काव्य		सं०	११८६
नवरत्न काव्य		सं०	६८६
नवरस स्तुति—स्थूलभद्र		हि०	६६७

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
नवलादेवज		हि०	१०६५
नवलाडीविनती		हि०	६७८
नवसेनाविधान		सं०	१०४६
नसीहत—चुकमानहकीम		हि०	६६७
नसीहतबोल		हि०	६८६
न्यायग्रंथ		सं०	२५६
न्यायचन्द्रिका—भट्टकेदार		सं०	२५६
न्यायदीपिका—धर्मभूषण		सं०	२५६
न्यायदीपिका भाषा वचनिका—संघी पन्नालाल		सं०	२५६
न्यायबोधिनी		सं०	२५७
न्यायविनिश्चय—अकलंकदेव		सं०	२५७
न्यायसिद्धान्तदीपक टीका—शशिधर		सं०	२५७
न्यायसिद्धान्त [illegible]		सं०	२५७
न्यायावतार वृत्ति		सं०	२५६
न्हवण एवं पूजा स्तोत्र		हि०सं०	१११७
न्हवणविधि—आशाधर		सं०	८३८
न्हावणपाठ भाषा—बुधमोहन		हि०	८३८
नागकुमारचरित्र—मल्लिषेण		स०	३४०, ४५०, ४५१
नागकुमारचरित्र			
नागकुमारचरित्र—विबुधरत्नाकर		सं०	३४१
नागकुमारचरित्र—नथमल बिलाला		हि०	३४१, ३४२
नागकुमाररास—ब्र० जिनदास		हि०	६३६
नागश्री कथा—किशनसिंह		हि०	११६७
नागश्रीरास (रात्रि भोजन रास)—ब्र० जिनदास		हि०	११३७
नागश्री कथा—ब्र० नेमिदत्त		सं०	४५१
नाडीपरीक्षा		सं०	५७७, ५७८, १११५
नाम व भेद संग्रह		हि०	७०
नाममाला		हि०	१०४१, १०६२
नाममाला—धनञ्जय		सं०	१०११, १०१६
नाममाला—नन्ददास		हि०	५३८
नाममाला—हरिदत्त		सं०	५३८
नाममाला बनारसीदास		हि०	५३८
नामरत्नाकार		हि०	५३८
नामनिर्णयविधान		हि०	८३८
नामलिंगानुशासन—आ० हेमचन्द्र		सं०	५३८
नामलिंगानुशासन वृत्ति		सं०	५३८
नामलिंगानुशासन—अमरसिंह		सं०	५३८
नामावलिछंद—ब्र० कामराज		हि०	११४४
नारचन्द ज्योतिष—नारचन्द		सं०	५५०, ५५१
नारदीय पुराण		सं०	११८६
नारिपत्रिका		सं०	१००६
नारी पच्चीसी		हि०	६८६
नासिकेतपुराण		हि०	६८०
निघंटु		सं०	५७८
निघंटु टीका		सं०	५७८
नित्यकर्म पाठ संग्रह		हि०	१२७
नित्यनियम पूजा		सं०	८४०, ८४१
नित्यनियम पूजा		हि०	८४०
नित्यनियम पूजा संग्रह		हि०	१०४३
नित्यनैमित्तिक पूजा		सं०	८४१, ११३६
नित्यपाठ संग्रह		सं०	६६३
नित्य पूजा		सं०	८३८
नित्य पूजा		हि०	८३८
नित्यपूजा पाठ—आशाधर		सं०	८३६
नित्यपूजा पाठ		स०	८३६
नित्यपूजा संग्रह		हि०	८३६
नित्यपूजा भाषा—प० सदासुख कासलीवाल		हि०	८३६
नित्यपूजा पाठ संग्रह		हि०सं०	८३६

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
नित्यपूजा संग्रह		सं०	८४०
नित्यपूजा वचनिका—जयचन्द छावड़ा		हि०	८४०
नित्यपूजापाठ संग्रह		सं०	११८६
निदान		सं०	५७८
निदान भाषा—श्रीपत भट्ट		हि०	५७८
निदाननिरुक्त		सं०	५१५
निषद के कवित्व		हि०	१०५६
निमित्तउपादान—बनारसीदास		हि०	१०८४
निमित्तशास्त्र		सं०	५५१
नैमित्तकशास्त्र—भद्रबाहु		स०	५५१
नियमसार टीका—पद्मप्रभमलधारिदेव		सं०	७०
नियमसार भाषा—जयचन्द छाबड़ा		हि०	७०
नियमावलिसुत्त		प्रा०	७०
निरंजनाष्टक		सं०	११३५
निर्जरानुप्रेक्षा		हि०	२०३
निर्झरपंचमीविधान		अप०	४५२
निर्दोषसप्तमी कथा		हि०	६०१
			११२३
निर्दोषसप्तमी कथा—ब्र० रायमल्ल		हि०	४५२, ४८०, ६४३, ६४४, ६६६, १११८
निर्दोषसप्तमी कथा—हरिकृष्ण		हि०	४३३
निर्दोषसप्तमी व्रत पूजा—ब्र० जिनदास		हि०	८४१
निर्दोषसप्तमी व्रतोद्यापन		सं०	८४१
निर्वाणकल्याण पूजा		सं०	८४१
निर्वाणकाण्ड—भैया भगवतीदास		हि०	१०१७, ११०५
निर्वाणकाण्ड गाथा		प्रा०	११२५, ११२६, ११८६, ११८७
निर्वाणकाण्ड गाथा		प्रा०	६५२
निर्वाणकाण्ड भाषा—भैया भगवतीदास		हि०	६५२ ७३०, १०२०, ११८६
निर्वाणकाण्ड गाथा व पूजा—उदयकीर्ति		प्रा०सं०	८४१
निर्वाणकाण्ड पूजा		हि०	८४१
निर्वाणक्षेत्र पूजा		हि०	८४१,८४२
निर्वाणक्षेत्र मंडल पूजा		हि०	८४२
निर्वाण मंगल विधान—जयराम		हि०	८४२
निशल्याष्टमी कथा—ज्ञानसागर		हि०	११२३
निशिभोजन कथा		हि०	१०७३
निशिभोजन कथा—किशनसिंह		हि०	४५२,४५३
निशिभोजन भारामल्ल		हि०	४५३,४५४
निश्शल्य अष्टमी कथा	हरिकृष्ण		४३३
निषेक		सं०	१११५
निषेकोदाहरण		हि०	१११५
नीतिभंजरी		हि०	६८६
नीतिवाक्यामृत—आ० सोमदेव		सं०	६८६
नीतिशतक—स० प्रतापसिंह		हि०	६५१
नीतिशतक—भर्तृहरि		सं०	६४२
नीतिश्लोक—		सं०	६८७
नीतिशास्त्र—चाणक्य		स०	६६६
नीतिसार		सं०	११३५
नीतिसार—आ० इन्द्रनन्दि		सं०	६८७
नीतिसार—चाणक्य		सं०	६६६
नीतिसार—समय भूषण		हि०	६५६
नीलकण्ठज्योतिष—नीलकण्ठ		सं०	५५१
नींदड़ली—किशोर		हि०	८७७
नूरकी शकुनावलि—नूर		हि०	११४४
नेत्ररोग की दवा		हि०	१११५
नेमकुमार—वीरचन्द		हि०	११४७
नेमजी की झोरी—ब्र० नाथू		हि०	१०६७
नेमजी की विनती		हि०	६५५, १११०
नेमव्याहपच्चीसी—देवराज		हि०	१०३७
नेमिकुमार गीत—मुनि लावण्यसमय		हि०	११३८
नेमिकुमारवेलि		हि०	६६५
नेमिचन्द्रिका		हि०	१०४० ११२४

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
नेमिचन्द्रिका भाषा		हि०	३४२
नेमिचरित्र	हेमचन्द्र	सं०	३४२
नेमिजिनचरित्र	ब्र० नेमिदत्त	सं०	३४२
नेमिजिनजयमाल	विद्यानन्दि	हि०	६६५
नेमिजिनस्तवन	ऋषि वर्द्धन	सं०	७३१
नेमिदूतकाव्य	विक्रम	सं०	३४२, ३४३
नेमिनवमंगल	विनोदीलाल	हि०	१०८०
नेमिनाथजी का ब्याहला	नथमल	हि०	१०४५
नेमिनाथ गीत		हि०	१०२४
नेमिनाथ गीत	ब्र० यशोधर	हि०	१०२५
नेमिनाथ चरित्र		प्रा०	३४३
नेमिनाथ चरित्र		सं०	३४३
नेमिनाथ छंद	हेमचन्द्र	हि०	७३१, १०७०
नेमिनाथ जयमाल		सं०	६५६
नेमिनाथ के दशभव		हि०	११११४
नेमिनाथनवमंगल		हि०	११२३
नेमिनाथनवमंगल	लालचन्द	हि०	१०४२
नेमिनाथनवमंगल	विनोदीलाल	हि०	७३२
नेमिनाथपुराण	ब्र० नेमिदत्त	सं०	२७७, २७८
नेमिनाथ प्रबंध	लावण्य समय	हि०	११४१
नेमिनाथफागु	विद्यानन्दि	हि०	६३६, ६३७
नेमिनाथबारहमासा		हि०	१०२६, १११७, ११२८
नेमिनाथ का बारहमासा	पांडे जीवन	हि०	११२८
नेमिनाथ का बारहमासा	विनोदीलाल	हि०	१०४२ १०८३, १११४, ११२८
नेमिनाथ का बारहमासा	हर्षकीर्ति	हि०	६४६
नेमिनाथ का ब्याहला		हि०	१०६४
नेमिनाथराजिमति वेलि	सिंघदास	हि०	१०२६
नेमिनाथराजमति का रेखता	विनोदीलाल	हि०	१००३, १०५८
नेमिनाथराजमतीसंवाद	ब्र० ज्ञान सागर	हि०	११३०
नेमिनाथरास		हि०	६५६, १०६०
नेमिनाथरास	अभयचन्द	हि०	६५२
नेमिनाथरास	पुण्यरत्न मुनि	हि०	६३६
नेमिनाथरास	ब्र० रतन	हि०	६८४
नेमिनाथरास	मुनि रत्नकीर्ति	हि०	६५३
नेमिनाथरास	ब्र० रायमल्ल	हि०	६६६
नेमिनाथरास	विद्याभूषण	हि०	११३७
नेमिनाथरेखता	क्षेम	हि०	१०७१
नेमिनाथकीलहुरि		हि०	११०५
नेमिनाथलावणी	रामपाल	हि०	११५६
नेमिनाथकीविनती		हि०	११४७
नेमिनाथविनती	धर्मचन्द्र	हि०	११२६
नेमिनाथविवाहलो	खेतसी	हि०	६३६
नेमिनाथ वेलि	ठक्कुरसी	हि०	६५३, ६६२
नेमिनाथसमवसरण	वादिचन्द्र	हि०	११३३
नेमिनाथस्तवन		हि०	१०१४, ११४१
नेमिनाथस्तवन	रूपचन्द	हि०	६५५
नेमिनाथस्तुति		हि०	१०२४
नेमिनाथस्तोत्र		हि०	१००५, ११२७
नेमिनाथस्तोत्र	पं० शालि	सं०	११२५
नेमिनिर्वाण	ब्र० रायमल्ल	हि०	६८६
नेमिनिर्वाण	वाग्भट्ट	सं०	३४३, ३४४
नेमिपुराण		हि०	६७६
नेमिपुराण भाषा	भागचन्द	हि०	२७७
नेमिराजमतिगीत		हि०	६८०
नेमिराजमतिवेलि	ठक्कुरसी	हि०	६८४

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
नेमिराजमतीशतक—लावण्य समय		हि०	११८७
नेमिराजुलगीत—गुणचन्द्र		हि०	१०६७
नेमिराजुल का बारहमासा		हि०	१०६५
नेमिराजुल बारहमासा—विनोदीलाल		हि०	११८७
नेमिराजुलसंवाद—कल्याणकीर्ति		हि०	११६४
नेमि विवाहलो		हि०	११५२
नेमिस्तोत्र		सं०	७७५
नेमीश्वरगीत		हि०	६७८
			११५४
नेमिश्वर के पंचकल्याणक गीत		हि०	६८५
नेमीश्वरफाग		हि०	६५६
नेमीश्वरबारातचित्र			११७२
नेमीश्वरराजमति—सिंहनन्दि		हि०	६८३
नेमीश्वरराजुलगीत—रत्नकीर्ति		हि०	६६३
नेमीश्वररास		हि०	१०८८
नेमीश्वररास—ब्र० विनयदास		हि०	८२०
नेमीश्वररास—ब्रह्मद्वीप		हि०	१०८६
नेमीश्वररास—भाऊकवि		हि०	६८४
नेमीश्वररास—ब्र० रायमल्ल		हि०	६८३, ६८४, ६६६, १०६३, ११०६
नेमीश्वरकीलहूरी		हि०	१०४१
नेमीसुर का रास—पुण्यरत्न		हि०	६४४
नैमित्तिक पूजा संग्रह		सं०	८४६
नैमित्तिक पूजा संग्रह		हि०	८४६
नैषधचरित्र टीका		सं०	३४४
नैषधीयप्रकाश—नरसिंहु पांडे		सं०	३४४
नंदिसाढ्यम छंद		हि०	६५६
नंदीयछंद—नंदिताढ्य		प्रा०	५६४
नंदीश्वर कथा—शुभचन्द्र		सं०	४५४
नंदीश्वर व्रत कथा		सं०	६५४
			४५५
नंदीश्वर कथा—रत्नपाल		सं०	४७६
नंदीश्वर कथा—हेमराज		हि०	४८३
नंदीश्वर जयमाल		प्रा०	८४२
			८४३
नंदीश्वरद्वीप पूजा		हि०	८४२
नंदीश्वरद्वीप पूजा		सं०	८४५
नंदीश्वरद्वीप पूजा उद्यापन		सं०	८४३
नंदीश्वर व्रतोद्यापन		सं०	८४४
नंदीश्वर पूजा		सं०	८४४
नंदीश्वरद्वीप पूजा—टेकचन्द		हि०	८४४
नंदीश्वर पूजा—डालूराम		हि०	८४४
नंदीश्वर पूजा रत्ननन्दि		सं०	८४४
नंदीश्वरद्वीप पूजा—पं० जिनेश्वरदास		सं०	८४६
नंदीश्वरद्वीप पूजा—लाल		हि०	८४६
नंदीश्वरद्वीप पूजा—शिरधीचन्द्र		हि०	८४६
नंदीश्वरद्वीप उद्यापन पूजा		सं०	८४६
नंदीश्वरपूजाविधान		सं०	८४६
नंदीश्वरद्वीपमंडल			६२५
नंदीश्वरपंक्ति पूजा—भ० शुभचन्द्र		सं०	८४३
नंदीश्वरपंक्ति पूजा		हि०सं०	८४४
नंदीश्वरपंक्ति पूजा		हि०	६६८

प

पंचविंशय सुत्त		प्रा०	७५
पखवाड़ा—जती तुलसी		हि०	१११६
पञ्चकल्याण भाष्य		प्रा०	२०३
पट्टावलि		हि०	६५३, ६५४, ६५७, १०७२, ११०६, ११४२, ११५६, १५६०
प्रतिष्ठापट्टावली		हि०	६५४
भट्टारकपट्टावली		हि०	६५४
मुनि पट्टावली		हि०	६५४
पडिक्कमण		हि०	११०७
पडिकोणा		हि०	११०७
पतंजलि महाभाष्य—पतंजलि		सं०	५१६

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
पत्र परीक्षा	विद्यानन्दि	सं०	२५७
पथ्य निर्णय		हि०	५७६
पथ्य निर्णय		सं०	५७६
पथ्यापथ्य निर्णय		सं०	५७६
पथ्यापथ्य विचार		सं०	५७६
पथ्यापथ्य विबोधक	वैद्य जयदेव	सं०	५७६
पद	करबीदास	हि०	११७०
पद	गुणचन्द्र	हि०	१०८८
पद	जिनलाभ सूरि	हि०	१०६४
पद	ठक्कुरसी	हि०	६८४
पद	साहणु	हि०	६८४
पद	सूवा	हि०	६८४
पद	ब० दीप, देव सुन्दर कबीरदास, बीलही	हि०	१११९
पद	दीपचन्द	हि०	११०२
पद	ज्ञानतराय	हि०	१०२०
पद	बनारसीदास	हि०	८७५, ८७७, १०८४
पद	बल्ह (बूचराज)	हि०	१०८६
पद	बखतराम, जगराम	हि०	१०६२
पद	जगतराम, ज्ञानतराय	हि०	१०६०
पद	भूधरदास	हि०	१०६०
पद	ब्रह्मकपूर	हि०	८७५, १०६७
पद	रूपचन्द	हि०	८७६ ११०५
पद	बनारसीदास	हि०	८७७
पद	मनरथ	हि०	८७७
पद	ब्र० यशोधर	हि०	१०२५, १०२६, १०२७
पद	हर्ष कीर्ति	हि०	११०५
पद	सुन्दर	हि०	११०५
पद	भूधर	हि०	११०५
पदकीर्ति		हि०	११०५
पद	ज्ञानतराय	हि०	११०५
पद	भागचन्द	हि०	११०५
पद	मनराम	हि०	११०६
पद	विजयकीर्ति	हि०	११०७
पद	जगतराम	हि०	११०७
पद	रूपचन्द	हि०	११०७
पद	हर्षगणि	हि०	६८३
पद एवं हाल		हि०	६६३
पद नेमिकुमार	हंगरसीदास	हि०	१०६५
पद ब्रह्म	राजपाल	हि०	१११०
पदमव्या की बीहालो		हि०	१०३८
पद संग्रह		हि०	१०५३, ११०६
पद संग्रह	किशन गुलाब	हि०	११०७
पद संग्रह	हरखचन्द	हि०	११०७
पद संग्रह	जगतराम	हि०	११०७
पद संग्रह	नवल जोधा	हि०	११०७
पद संग्रह	प्रभाती, लालचन्द	हि०	११०७
पद संग्रह	रूपचन्द	हि०	११०७
पद संग्रह	सुरेन्द्रकीर्ति	हि०	११०७
पद संग्रह	मंगल	हि०	११०७
पद संग्रह	भानुकीर्ति	हि०	११०८
पद संग्रह	पं० नाथू	हि०	११०८
पद संग्रह	मनोहर	हि०	११०८
पद संग्रह	जिनहर्ष	हि०	११०८
पद संग्रह	विमल प्रभ	हि०	११०८
पद संग्रह	चन्द्रकीर्ति	हि०	११०८
पद संग्रह	खुशालचन्द	हि०	६६३
पद संग्रह	चैनसुख	हि०	६६३
पद संग्रह	देवा ब्रह्म	हि०	६६३
पद संग्रह	पारसदास निगोत्या	हि०	६६३
पद संग्रह	हीराचन्द	हि०	६६४
पद संग्रह		हि०	६६४
पद संग्रह		हि०	६६५
पद संग्रह		हि०	६६६

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
पद संग्रह	जगतराम, भूधरदास	हि०	१०७६
	ज्ञानतराय, सुखानन्द, नवल	हि०	१०७७
पद संग्रह	जगराम गोदीका	हि०	१०४५
पद संग्रह	नथमल	हि०	१०४५
पदसंग्रह	हेतराम	हि०	१०४६
पद संग्रह	भूधरदास	हि०	१०४७
पद संग्रह	जिनदास	हि०	१०४७
पद संग्रह	नवलराम	हि०	१०४७
पद संग्रह	जगतराम	हि०	१०४७
पद संग्रह	पारसदास	हि०	९९८
पद संग्रह	बनारसीदास	हिन्दी	१०७३
पद संग्रह	जगराम	हिन्दी	१०७३
पद संग्रह	कनककीर्ति	हिन्दी	१०७३
पद संग्रह	हर्षचन्द्र	हिन्दी	१०७३
पद संग्रह	नवलराम	हिन्दी	१०७३
पद संग्रह	ज्ञानतराय	हि०	१०७३
पद संग्रह	देवाब्रह्म	हिन्दी	१०७३
पद संग्रह	विनोदीलाल	हिन्दी	१०७३
पद संग्रह		हि०	१०१२, १०६५
पद संग्रह	भव सागर	हि०	९४२
पद संग्रह	वेमराज	हि०	१०३७
पद संग्रह	भ० सकलकीर्ति	हि०	९८६, ९८७
	ब्र० जिनदास, ज्ञानभूषण, सुमतिकीर्ति		
पद संग्रह	स्वामी हरिदास	हि०	१०६६
पद संग्रह	सिद्धभाय	हि०	१०६१
पदस्थ ध्यान लक्षण		हि०	१०९५
पदस्थापना विधि	जिनदत्त सूरि	सं०	११८८
पद्म चरित्र		सं०	३४४
पद्म चरित्र	विनयसमुद्र गणि	हि०	३४४
पद्मचरित्र टिप्पण	श्रीचन्द मुनि	सं०	२७८
पद्मनन्दि भट्टारक की पट्टावली	देवाब्रह्म	हि०	६५२
पद्मनन्दि पंचविंशति	पद्मनन्दि	सं०	१२८, १२९, १३०, १३१, ९७६
पद्मनन्दि पंचविंशति टीका		सं०	१३१, १३२
पद्मनन्दि पच्चीसी भाषा	जगतराय	हि०	१३२
पद्मनन्दि पच्चीसी भाषा	मन्नालाल खिन्दूका	राज०	१३२, ११८८
पद्मनन्दि महाकाव्य टीका	प्रह्लाद	सं०	३४४
पद्मनन्दि श्रावकाचार	पद्मनन्दि	सं०	१३३
पद्मनन्दि स्तुति		सं०	१००८
पद्मपुराण	कुशालचन्द काला	हि०	२८४, २८५, १०५२
पद्मपुराण	ब्र० जिनदास	स०	२७९
पद्मपुराण	भ० धर्मकीर्ति	सं०	२८०
पद्मपुराण	रविषेणाचार्य	सं०	२७८, २७९
पद्मप्रभ पुराण	भ० शुभचन्द्र	सं०	२७८
पद्मपुराण	भ० सोमसेन	सं०	२८०
पद्मपुराण भाषा	दौलतराम कासलीवाल	हि०	२८०, २८१, २८२, २८३, २८४
पद्मावती कवच		सं०	११२५
पद्मावती गायत्री		सं०	११६३
पद्मावती सहस्रनाम		सं०	११६३
पद्मावती कवच		सं०	११६३
पद्मावती गीत	समयसुन्दर	हि०	७३२
पद्मावती स्तोत्र		सं०	७३२
पद्मावती छंद		हि०	११६८
पद्मावती दण्डक		सं०	११२५
पद्मावती देवकल्प मंडल पूजा	इन्द्रनन्दि	सं०	८६०
पद्मावती पटल		सं०	८६०, ११२४
पद्मावती पूजा		सं०	९४८, ९६७, ११२९
पद्मावती पूजा	टोपण	सं०	८६१

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
पद्मावती पूजाष्टक		हि०	१०३१
पद्मावती पूजा विधान		सं०	८६१
पद्मावती पूजा स्तोत्र		सं०	८६१
पद्मावती मंडल पूजा		सं०	८६१
पद्मावती पंचांग स्तोत्र		सं०	७३२
पद्मावती मंत्र		हि०	१०१२
पद्मावती व्रत उद्यापन		सं०	८६२
पद्मावती राणी रास		हि०	१०३८
पद्मावती सहस्रनाम		सं०	११२९
पद्मावती स्तोत्र		सं०	७७३, ९५५, १०२७, १०५२, १०६५, ११२४
पद्मावती स्तोत्र पूजा		सं०	९८५
पद्मिनी बखाण		हि०	१००३
पन्द्रह अंक यंत्र		सं०	१११७
पन्द्रह अंक विधि		सं०	१११७
पन्द्रह पात्र चौपई	ब्र० भगवतीदास	हि०	१२७
परदारी परशील सज्झाय	कुमुदचन्द	हि०	४५६
परदेशी मतिबोध	ज्ञानचन्द	हि०	११०८
परदेशी राजानी सज्झाय		हि०	४५६
परमज्योति		हि०	९८१
परमज्योति (कल्याण मन्दिर स्तोत्र) भाषा	बनारसीदास	हि०	७१३ ८७४
परमज्योति स्तोत्र		सं०	१०८३
परम शतक	भगवतीदास	हि०	१०५८
परमहंस कथा चौपई	ब्र० रायमल्ल	हि०	११०९
परमहंस रास	ब्र० जिनदास	हि०	६३७
परमहंस संबोध चरित्र	नवरंग	सं०	३४४
परमहंस संबोध चरित्र		प्रा०	३४४
परमात्मपुराण	दीपचन्द कासलीवाल	हि०	२०३,२०४
परमात्म प्रकाश	योगीन्द्रदेव	अप०	२०४, २०६, ९५२, ९६०, ९६२, ९९४, १००८, १०४७, १०८९, ११०३, ११४२, ११४९, ११५०
परमात्म प्रकाश टीका		सं०	२०५
परमात्म प्रकाश टीका		अप०सं०	२०६
परमात्म प्रकाश टीका	ब्र० जीवराज	हि०	२०४,२०६
परमात्म प्रकाश टीका	पाण्डवराम	सं०	२०४
परमात्म प्रकाश टीका	ब्रह्मदेव	अप०सं०	२०५
परमात्म प्रकाश भाषा		हि०	२०६
परमात्म प्रकाश भाषा	दौलतराम कासलीवाल	हि०	२०७,२०८
परमात्म प्रकाश भाषा	बुधजन	हि०	२०६
परमात्म प्रकाश भाषा	पांडे हेमराज	हि०	२०६
परमात्म प्रकाश वृत्ति		सं०	२०६
परमात्म प्रकाश		हि०	१०००
परमात्मराज स्तवन		सं०	९९४
परमात्म स्वरूप		सं०	२०८
परमानन्द पच्चीसी		सं०	६८०
परमानन्द स्तोत्र		सं०	७३३, ७७३, ९९५, १०२४, १०४३ १०४७, १०५२, ११०३, ११२५, ११४०
परमार्थ गीत	रूपचन्द	हि०	९८२
परमार्थ जकडी		हि०	१०११
परमार्थ जकडी	रामकृष्ण	हि०	१०५४
परमार्थ दोहा	रूपचन्द	हि०	१०३८
परमार्थदोहा शतक	रूपचन्द	हि०	९८२, १०११,
परमार्थ विंशतिका		हि०	१०९६
परमार्थ शतक	भगवतीदास	हि०	२०३
पररमणी गीत		हि०	१०२५
पर्वरत्नावली	उपा० जयसागर	सं०	४५६
परिकर्म विधि		सं०	१३६

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
परिकर्माष्टक		हि०	७४
परीक्षा मुख—माणिक्यनन्दि		सं०	२५७
परीक्षा मुख (लघु वृत्ति)		सं०	२५७
परीक्षामुख भाषा—जयचन्द छावड़ा		राज०	२५७
पल्यव्रत पूजा		सं०	८७४
पल्यव्रत फल		सं०	४५६
पलविचार		हि०	५५१, ५५२, ८६२, ११८६
पल्यविचार वार्ता		हि०	११३७
पल्यविधान		सं०	८६२, ११६७
पल्यविधान कथा		सं०	४५६, ११३५
पल्यविधान कथा—खुशालचन्द काला		हि०	४५६
पल्यविधान व्रतोद्यापन कथा—श्रुतसागर		सं०	४५६
पल्यविधान पूजा		सं०	८६२, ८६३, ११३६
पल्यविधान रास—भ० शुभचन्द्र		हि०	६३७, ६३८
पल्यविधान व्रतोद्यापन एवं कथा—श्रुतसागर		सं०	८६४
पल्य विधि		स०	६७५
पल्यव्रत विधान		सं०	६७५
पल्लीविचार		सं०	१११६
पवनंजय चरित्र—भुवनकीर्ति		हि०	३४४
पाक शास्त्र		सं०	५७६, ११८६
पाकावली		सं०	११८६
पाठ संग्रह		हि०	६६६
पाठ संग्रह		प्रा० सं०	६६६
पाठ संग्रह		स०	६६७
पाठ संग्रह		सं०हि०	६६७
पाठ संग्रह		हि०	६६७
पाठ संग्रह		हि०	११०२
पाणिनी व्याकरण—पाणिनी		सं०	५१६
पाणिनीय लिंगानुशासन वृत्ति		सं०	५३६
पाणीगालनरास		हि०	११३७
पाणीगालणरास—ब्र० जिनदास		हि०	११०७
पाणीगालनरास—ज्ञानभूषण		हि०	६३८, ६५१, ११३२, ११४३
पाण्डवचन्द्रिका—स्वरूपदास		हि०	११८६
पाण्डवचरित्र—ब्र० जिनदास		सं०	३४५
पाण्डवचरित्र—देवभद्रसूरि		सं०	३४५
पाण्डव पुराण—		सं०	११८६
पाण्डव पुराण—ब्र० जिनदास		सं०	२८७
पाण्डव पुराण—देवप्रभसूरि		सं०	२८७
पाण्डव पुराण—बुलाकीदास		हि०	२८८, २८६, १०७५
पाण्डव पुराण—यशःकीर्ति		अपभ्रंश	२८७
पाण्डव पुराण—भ० शुभचन्द्र		सं०	२८६, २८७
पाण्डव पुराण—श्रीभूषण		सं०	२८५, २८६
पाण्डव पुराण वचनिका—पन्नालाल चौधरी		हि०	२६०
पाण्डवी गीता		सं०	१३६
पांडे को जयमाल नल्ह		हि०	१११७
पात्र केशरी स्तोत्र—पात्र केशरी		सं०	७३३
पात्र केशरी स्तोत्र टीका		सं०	७३३
पात्र भेद		हि०	११०२
पारखीसूत्र		प्रा०	७५
पारसनाथ की सहेली—ब्र० नाथू		हि०	६४६
पारसविलास—पारसदास निगोत्या		हि०	६६८
पाराशरी टीका		स०	५५२
पारिजात हरण—पंडिताचार्य नारायण		सं०	३४५
पार्श्वचरित्र—तेजपाल		अपभ्रंश	३४५
पार्श्वजिन स्तुति		सं०	७३३
पार्श्वजिन स्तोत्र—जिनप्रभसूरि		सं०	७३३
पार्श्वदेव स्तवन—जिनलाभसूरि		हि०	७३३
पार्श्वपुराण—चन्द्रकीर्ति		स०	२६०, ३४५

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्रसंख्या
पार्श्वपुराण	पद्मकीर्ति	अपभ्रंश	२६०
पार्श्वपुराण	भूधरदास	हि०	३४६,३४७, ३४८, ३४९, ३५०, ३५१, ३५२, ६६३, १०३०, १०३६, ११०७
पार्श्वपुराण	रइधू	अपभ्रंश	२६०
पार्श्वपुराण	वादिचन्द्र	सं०	२६०
पार्श्वनाथ अष्टक	विश्वभूषण	स०	८७७
पार्श्वनाथ कथा	जिनदास	हि०	१०१६
पार्श्वनाथ कवित्त	भूधरदास	हि०	६६८
पार्श्वनाथ गीत	मुनिलावण्यसमय	हि०	११३७
पार्श्वनाथ चरित्र	म० सकलकीर्ति	सं०	३४६
पार्श्वनाथ चिन्तामणिदास		हि०	६५८
पार्श्वनाथ के छंद		हि०	१११७
पार्श्वनाथ छंद	हर्षकीर्ति	हि०	७३३
पार्श्वनाथ छंद	लब्धरुचि	हि०	७१४
पार्श्वनाथजी छंद संबोध		हि०	११४३
पार्श्वनाथ जयमाल		हि०	१११७
पार्श्वनाथ की निसाणी		हि०	१०३०
पार्श्वनाथजी की निशानी	जिनहर्ष	हि०	७३४
पार्श्वनाथ पूजा		सं०	६८५, १०६७
पार्श्वनाथ पूजा	देवेन्द्रकीर्ति	सं०	८६४
पार्श्वनाथ पूजा	वृन्दावन	हि०	८६८
पार्श्वनाथ मंगल		हि०	१०३६
पार्श्वनाथरास	कपूरचन्द	हि०	६४४, १०२२
पार्श्वनाथ विनती		हि०	११४०
पार्श्वनाथ विनती	मुनि जिनहर्ष	हि०	११४६
पार्श्वनाथ का सहेला		हि०	६८१
पार्श्वस्तवन		सं०	७३४
पार्श्वनाथ स्तवन		हि०	७३४
पार्श्वनाथ (देसंतरी) स्तुति	पासकवि	सं०	७३४
पार्श्वनाथ स्तवन		स०	६७७, १०२५
पार्श्वनाथ स्तवन	विजय वाचक	हि०	१०६१
पार्श्वनाथ स्तुति	बलु	हि०	४५
पार्श्वनाथ स्तोत्र		स०	७३५, ७७४, १०४२, १०४४, १०६५, १०८३, ११०८, ११२२, ११२५
पार्श्वनाथ स्तोत्र	ज्ञानतराय	हि०	१११४
पार्श्वनाथ स्तोत्र	पद्मनन्दि	सं०	७३५, ११२७
पार्श्वनाथ स्तोत्र	पद्मप्रभदेव	सं०	७३५, ६५८
पार्श्वनाथ स्तोत्र	राजसेन	सं०	११२४
पाशा केवली		हि०	५५२, ५५३ ६४५, ६६५, १००६, १०८६, १०६४, ११३०
पाशा केवली	गर्गमुनि	सं०	५५२, ११३६
पाशाकेवली भाषा		हि०	५५३, ५५४
पाहुड दोहा	योगचन्द्रमुनि	अपभ्रंश	२०८
पांचपखी कथा	ब्रह्म विक्रम	हि०	११३१
पांचोंगति की वेलि	हर्षकीर्ति	हि०	११०२
पांडवपुर गीत	अखैराज	हि०	१०६२
पिंगल रूपदीप भाषा		हि०	५६५
पिंगल विचार		हि०	११५८
पिंगल शास्त्र	नागरीज	प्रा०	५६४
पिंगल सारोद्धार		सं०	५६५
पिंडविशुद्धि प्रकरण		प्रा०	८६४
पिंडविशुद्धि प्रकरण		सं०	८६४
पुण्णासव कहा	पं० रइधु	अप०	४६०
पुण्यास्रव कथा कोश	मुमुक्षु रामचंद्र	सं०	४५६, ४५७
पुण्यास्रव कथाकोश भाषा	दौलतराम कासलीवाल	हि०	४५७, ४५८ ४५९, ४६०
पुण्य की जयमाल		हि०	१११७
पुण्य पुरुष नामावलि		सं०	११८९
पुण्यफल		प्रा०	१३६
पुण्यसार चौपई	पुण्यकीर्ति	हि०	४६३
पुण्याह मंत्र		सं०	११८९

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
पुण्याहवाचन	– आशाधर	सं०	८६४,८६५
पुण्यास्रविका		सं०	६६
पुरंदर कथा	—भावदेव सूरि	हि०	४६१
पुरंदर विधान कथा		सं०	४८०
पुरंदर विधान कथा	—हरिकृष्ण	हि०	४३३
पुरन्दर चौपई		हि०	१०४१
पुरन्दर व्रतोद्यापन	—सुरेन्द्रकीर्ति	सं०	८६५
पुरपरयण जयमाल		हि०	६९३
पुराणसार (उत्तर पुराण)	—भ० सकलकीर्ति	सं०	२९०,२९१
पुराणसार	—सागरसेन	सं०	२९१
पुरुष जातक		सं०	१००६
पुरुषार्थ सिद्धयुपाय	—अमृतचन्द्राचार्य	सं०	१३३, १३४, १३५, १३६
पुरुषार्थ सिद्धयुपाय भाषा		ह०	१३३
पुरुषोत्पत्ति लक्षण		सं२	५५४
पुष्पमाला प्रकरण		प्रा०	८६५
पुष्पांजलि कथा		सं०	११३६
पुष्पाञ्जलि कथा	- आ० गुणकीर्ति	हि०	६६१
पुष्पांजलि जयमाल		हि०	८२५
पुष्पांजलि पूजा	—ज्ञानतराय	हि०	८६५
पुष्पांजलि पूजा	—भ० महीचन्द	सं०	८६६
पुष्पांजलि पूजा	—रत्नचन्द्र	सं०	८६६
पुष्पांजलि व्रतोद्यापन	—गंगादास	सं०	८६६
पुष्पाजलि व्रतोद्यापन टीका	—गंगादास	सं०	८६६
पुष्पांजलि पूजा		सं०	११८३
पुष्पांजलिरास	—ब्र० जिनदास	हि०	११४३
पुष्पांजलि व्रत कथा	– ब्र० जिनदास	हि०	११६३
पुष्पांजलि व्रत कथा	—श्रुतसागर	सं०	४३४
पुष्पांजलि व्रत कथा	—खुशालचन्द	राज०	४११
पुष्पांजलि व्रत कथा	– गंगादास	सं०	४११
पुष्पांजलि व्रत कथा	— मेधावी	सं०	४११
पुष्पांजलि कथा सटीक		प्रा०सं०	४६१
पुष्पांजलि विधान कथा		सं०	४६१
पुष्पांजलि व्रत कथा	– ललितकीर्ति	सं०	४०६
पुष्पांजलि व्रत कथा	—सेवक	हि०	११२३
पूज्य पूजक वर्णन		हि०	८७६
पूजा कथा (मेंढक की)	—ब्र० जिनदास	हि०	४६१
पूजापाठ		सं०	८६७
पूजापाठ संग्रह		सं०	८६७
पूजापाठ संग्रह		हि०	८७७
पूजापाठ संग्रह		सं०हि०	८६८, ८६९, ८७०, ८७१, ८७२, ८७३, ८७४, ८७५, ८७६, ८७७, ८७८, ८७९
पूजापाठ तथा कथा संग्रह		हि० सं०	८७९
पूजापाठ विधान		सं०	८७९
पूजापाठ विधान	—पं० आशाधर	सं०	८७९
पूजापाठ संग्रह			९८६,९८७
पूजा प्रकरण		सं०	८७९
पूजालक्षण		हि०	१०९६
पूजाष्टक	—लोहट	हि०	८७६
पूजाष्टक	—ज्ञानभूषण	सं०	८६७
पूजाष्टक	—हरखचन्द	हि०	८६७
पूजासार		सं०	८७९,८८२
पूजासार समुच्चय		सं०	८८०
पूजा संग्रह		हि०	१००५, ११०६, १११७, ११६६
पूजा संग्रह	– ज्ञानतराय	हि०	८८०
पूजा संग्रह		हि०सं०	८८१, ८८२, ८८३, ८८४, ८८५, ८८६, ८८७
पूर्ण बंधन मन्त्र		हि०	६२१
पोषह गीत	— पुण्यलाभ	हि०	७३५
पोषहरास	—ज्ञानभूषण	हि०	६३८ ९५१, ९८४, ११४५, ११४७, ११५०, ११८९
पोसहकारण गाथा		हि०	१०६९
पोसह पारवानी विधि तथा रा		हि०	१०२४
पोसानुरास		हि०	११३७

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
पंचइन्द्री चोपई	भूधरदास	हि०	१०७२
पंचकल्याणक	रूपचन्द	हि०	११५७
पंचकल्याणक उद्यापन	गूजरमल ठग	हि०	८४७
पंचकल्याणक गीत		हि०	११८७
पंचकल्याण पाठ	रूपचन्द	हि०	१०६०
पंचकल्याणक पूजा		सं०	८८२
पंचकल्याणक पूजा		सं०	१०८५, १११८
पंचकल्याणक पूजा	टेकचन्द	हि०	८४७
पंचकल्याणक पूजा	प्रभाचन्द	सं०	८४७
पंचकल्याणक पूजा	बुधजन	हि०	८४७
पंचकल्याणक पूजा	रामचन्द्र	हि०	८४७
पंचकल्याणक पूजा	वादिभूषण	सं०	८४७
पंचकल्याणक पूजा	सुधीसागर	सं०	८४७,८४८
पंचकल्याणक पूजा	सुमतिसागर	सं०	८४८
पंचकल्याणक पूजा	चन्द्रकीर्ति	सं०	८४८,८४९
पंचकल्याणक विधान	भ० सुरेन्द्रकीर्ति	हि०	८५०,८५१
पंचकल्याणक फाग	ज्ञानभूषण	सं०हि०	११८७
पंचकल्याणकव्रत टिप्पण		हि०	८५१
पंचकल्याणक विधान	हरिकिशन	हि०	८५१
पंचकल्याणक विधान	भ० सुरेन्द्रकीर्ति	सं०	८४९
पंचकल्याणक स्तोत्र		सं०	७३६
पंचखमाण		प्रा०	७३७
पंचगुरु गुणमाला पूजा	भ० शुभचन्द्र	सं०	८५१
पंचज्ञान पूजा		हि०	८५१
पंचतंत्र	विष्णुशर्मा	सं०	६८७,६९८
पंचदल अंकपत्र विधान		सं०	११८७
पंचदशाक्षर	नारद	सं०	५५१
पंचनवकार		प्रा०	१०६५
पंचनमस्कार स्तोत्र	उमास्वामी	सं०	६८६
पंचनमस्कार स्तोत्र भाषा		हि०	१०९६

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
पंचपरमेष्ठी गीत	यशकीर्ति	हि०	११५५
पंचपरमेष्ठी गुण		सं०	७३६, १०१७
पंचपरमेष्ठी गुणवर्णन		सं०	७३६,१२७
पंचपरमेष्ठी गुणवर्णन	डालूराम	हि०	१०११
पंचपरमेष्ठी नमस्कारपूजा		सं०	८५६
पंचपरमेष्ठीपद		सं०	६६८
पंचपरमेष्ठी पूजा	भ० देवेन्द्रकीर्ति	सं०	८५१
पंचपरमेष्ठी पूजा	यशोनन्दि	सं०	८५१,८५२
पंचपरमेष्ठी पूजा	भ० शुभचन्द्र	सं०	८५१,८५२
पंचपरमेष्ठी पूजा	टेकचन्द	हि०	८५१, ८५२, ८५३
पंचपरमेष्ठी पूजा	डालूराम	हि०	८५३
पंचपरमेष्ठी पूजा	बुधजन	हि०	८५३
पंचपरमेष्ठी पूजा		सं० हि०	८५४, ८५५
पंचपरमेष्ठी पूजा	यशोनन्दी	सं०	१०८५
पंचपरमेष्ठी स्तुति	भ० चन्द्रसागर	हि०	११५९
पंचपक्षीकथा	ब्रह्मविनय	हि०	४५५
पंचपक्षी पूजा	वेणु ब्रह्मचारी	हि०	८६४
पंचपरावर्तन वर्णन		हि०	७१, १२७
पंचपरावर्तन टीका		सं०	७१
पंचपरावर्तन स्वरूप		सं०	७१
पंचपादिका विवरण	प्रकाशात्मज भगवत	सं०	२६०
पंचप्रकार संसारवर्णन		सं०	१२७
पंचबधावा	हर्षकीर्ति	हि०	११०४
पंचबालयती तीर्थंकर पूजा		हि०	८५६
पंचमास चतुर्दशी व्रतपूजा		सं०	८५६
पंचमास चतुर्दशीव्रतोद्यापन	भ० सुरेन्द्रकीर्ति	सं०	८५६
पंचमास चतुर्दशीव्रतोद्यापन विधि		सं०	८५६
पंचमेरु की आरती	ज्ञानतेराम	हि०	१११७
पंचमेरु तथा नन्दीश्वर द्वीप पूजा	थानमल	हि०	८९०

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
पंचमेरु पूजा		हि०	१०४८, १०६५
पंचमेरु पूजा—डालूराम		हि०	११२३
पंचमेरु पूजा—ज्ञानतराय		हि०	१०११, ११२३
पंचमेरु पूजा—भूधरदास		हि०	८७६,८८१
पंचमेरु पूजा—सुखानन्द		हि०	१०७७
पंचमेरु पूजा		हि०	८६०
पंचमेरु पूजा विधान		सं०	८६०
पंचमेरु पूजा विधान—टेकचन्द		हि०	८६०
पंचमेरु मंडल विधान		हि०	८६०
पंच मंगल		हि०	१०००
पंचमंगल—आशाधर		सं०	१०८०, १०८२
पंचमंगल—रूपचन्द		हि०	७३६, ८७४, १००५, १०४२, १०४८, १०६३, १०७५, १०७७, १०७८, ११०६, १११४, ११३०, ११६७,
पंचमंगल पाठ—रूपचन्द		हि०	६७४
पंचमंगल पूजा		हि०	८५३
पंचलब्धि		सं०	११८८
पंचवटी सटीक		सं०	७३६
पंचसहेली गीत—बीहल		हि०	६६६, १०२२
पंचसंग्रह—नेमिचन्द्राचार्य		प्रा०	७१
पंचसंग्रह वृत्ति—सुमतिकीर्ति		प्रा०सं०	७१
पंच सधि (प्रक्रिया कौमुदी)		हि०	६५६
पंच सधि		सं०	५१५,५१६
पंचसंसार स्वरूप निरूपण		सं०	७१
पंचस्तोत्र		सं०	७३७,६५३, ६५७, ६६७, ६७७, ६६६, १०००, १००५, १००६, १०४२, १०४७, १०६४, १०६८
पंच स्तोत्र एवं पाठ		सं०	१०७३
पंच स्तोत्र भाषा		हि०	१०३०
पंच हनुमानवीर चित्र			११७२
पंचम कर्म ग्रंथ		सं०	११८७
पचम गति वेलि		हि०	१०४१
पंचमगति वेलि—हर्षकीर्ति		हि०	८७७, १०१३, १०१८, ११०६, ११११२, ११५२
पंचमतपवृद्धि स्तवन—समयसुन्दर		हि०	१०५५
पंचमी कथा—सुरेन्द्र भूषण		हि०	४३२,४८३
पंचमी कथा टिप्पण—प्रभाचन्द्र		अप०सं०	४५५
पंचमी व्रत कथा—सुरेन्द्र भूषण		हि०	४५३
पचमी व्रत पूजा—कल्याण सागर		सं०	८५६,८५७
पंचमी विधान		सं०	८५६
पंचमी व्रतोद्यापन—हर्षकल्याण		सं०	८५७
पंचमी व्रतोद्यापन पूजा—नरेन्द्रसेन		सं०	८५८
पंचमी व्रतोद्यापन पूजा—हर्षकीर्ति		सं०	८५८
पंचमी व्रतोद्यापन विधि		सं०	८५८
पंचमीशतक पद		सं०	११८८
पंचमी स्तोत्र—उदय		हि०	७३७
पंचाख्यान		सं०	६००
पंचाख्यान—विष्णुदत्त		सं०	४५५
पंचाख्यान कथा		हि०	११६२
पंचाख्यान भाषा		हि०	६५०
पंचामृत नाम रस		सं०	५७६
पचामृताभिषेक		सं०	८६०
पंचायण्याई—नंददास		हि०	११००
पंचासीनी व्याह—गुणसागर सूरि		हि०	४५६
पंचाशप्त प्रश्न—महाचन्द्र		सं०	५५१
पंचास्तिकाय		हि०	११४२
पंचास्तिकाय—आ० कुन्दकुन्द		प्रा०	७१,७२
पंचास्तिकाय टब्बा टीका		प्रा०हि०	७३
पंचास्तिकाय टीका—अमृतचन्द्राचार्य		प्रा०सं०	७२, ७३
पंचास्तिकाय बालावबोध		सं० हि०	७३

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
पंचास्तिकाय भाषा—बुधजन		हि०	७४
पञ्चास्तिकाय भाषा—पाण्डे हेमराज		हि०प०	७३, ७४
पंचास्तिकाय भाषा—हीरानन्द		हि०प०	७३, ११४६
पंचांग		सं०	५५१
पंचांग		हि०	५५१
पंचेन्द्रिय गीत—जिनसेन		हि०	१०२५
पंचेन्द्रियका व्यौरा		हि०	१००३
पञ्चेन्द्रिय वेलि		हि०	६६३, ६६६, १०२७
पंचेन्द्रियवेलि—ठक्कुरसी		हि०	६६२, ६८४, १०५४, १०८६
पंचेन्द्रियवेलि—वेल्ह		हि०	११५१
पंचेन्द्रिय संवाद—भैया भगवतीदास		हि०	११८८
पंचेन्द्रिय संवाद—यशःकीर्ति सूरि		हि०	११८८
पंक्तिगुण प्रकाश—नल्ह		हि०	१०८६
पंडित जयमाल		हि०	११०७
पंक्तिमाला		हि०	८४६
पंथराह शुभाशुभ		सं०	५५१
प्रक्रिया कौमुदी—रामचन्द्राचार्य		सं०	५१६
प्रक्रिया व्याख्या—चन्द्रकीर्ति सूरि		सं०	५१६
प्रक्रिया संग्रह		सं०	५१६
प्रकृति विच्छेद प्रकरण—जयतिलक		सं०	५७६
प्रज्ञापना सूत्र (उपांग)		प्रा०	७५
प्रज्ञाप्राकाश षट्त्रिंशिका—रूपसिंह		सं०	६८८
प्रज्ञावल्लरीय		सं०	११६०
प्रचुर्ण गाथाना अर्थ		प्रा०	११६०
प्रतिक्रमण		प्रा०सं०	२०८, २०६
प्रतिक्रमण		सं०	६६०, ६७७, १०५४, १०६८, ११२७, ११३६
प्रतिक्रमण—गौतम स्वामी		प्रा०	२०६
प्रतिक्रमण टीका—प्रभाचन्द्र		सं०	२०६
प्रतिक्रमण पाठ		प्रा०हि०	२०६
प्रतिक्रमण पाठ		सं०	११४७
प्रतिक्रमण सूत्र		प्रा०	२०६, २१०, ११५३
प्रतिज्ञा पत्र		हि०	१३६
प्रतिमा बहत्तरी—ज्ञानतराम		हि०	१३६, १११४, ११६०
प्रतिमा स्थापना		प्रा०	८८७
प्रतिष्ठा कल्प—अकलंक देव		सं०	८८७
प्रतिष्ठा तिलक—आ० नरेन्द्र सेन		सं०	८८७
प्रतिष्ठा पद्धति		सं०	८८७
प्रतिष्ठापाठ		सं०	६६६, १०४२
प्रतिष्ठा पाठ—आशाधर		सं०	८८८
प्रतिष्ठा पाठ—प्रभाकर सेन		सं०	८८८
प्रतिष्ठा पाठ		सं०हि०	८८८
प्रतिष्ठा पाठ टीका—परशुराम		सं०	८०८
प्रतिष्ठा पाठ वचनिका		हि०	८८६
प्रतिष्ठा मंत्र संग्रह		सं०	८८६
प्रतिष्ठा मंत्र संग्रह		सं०हि०	८८६
प्रतिष्ठा मंत्र		सं०	८८६
प्रतिष्ठा विधि—आशाधर		सं०	८८६
प्रतिष्ठा विवरण		हि०	१०८०
प्रतिष्ठासार संग्रह—आ० वसुनन्दि		सं०	८८० ८६०
प्रतिष्ठा सारोद्धार—आशाधर		सं०	८६०
प्रत्याख्यान पूर्वलि पाठ		प्रा०	११६०
प्रत्येक बुद्ध चतुष्टय कथा		सं०	४६१
प्रद्युम्न कथा—ब्र० त्रेणीदास		हि०	११६७
प्रद्युम्न कथा—सिंहकवि		अप०	११८८
प्रद्युम्न कथा प्रबंध—भ० देवेन्द्रकीर्ति		हि०	४६१
प्रद्युम्न चरित्र		हि०	३५३, ३५४

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
प्रद्युम्न चरित्र	महासेनाचार्य	सं०	३५२
प्रद्युम्न चरित्र	सोमकीर्ति	सं०	३५२
			३५३
प्रद्युम्न चरित्र	शुभचन्द्र	सं०	३५३
प्रद्युम्न चरित्र टीका		सं०	३५३
प्रद्युम्न चरित्र	रत्नचन्द्र गणि	सं०	३५३
प्रद्युम्न चरित्र	सधारु	हि०	३५३
			१०१५
प्रद्युम्न चरित्र	मन्नालाल	हि०	३५३
प्रद्युम्न चरित्र वृत्ति	देवसूरि	सं०	३५४
प्रद्युम्न चरित्र भाषा	ज्वालाप्रसाद बख्तावरसिंह	हि०	३५४
			३५५
प्रद्युम्न चरित्र	खुशालचन्द	हि०	३५५
प्रद्युम्न प्रबन्ध		हि०	११४६
प्रद्युम्न प्रबन्ध	भ० देवेन्द्र कीर्ति	हि०	३५५
			३५६
प्रद्युम्न रास		हि०	११६७
प्रद्युम्न रासो	ब्र० रायमल्ल	हि०	६३८
		६४३, ६४४, ६५३, ६६६, ६६६,	१०६२
प्रद्युम्न लीला वर्णन	शिवचन्द गणि	सं०	३५३
प्रबन्ध चिन्तामणि	राजशेखर सूरि	सं०	६५४
प्रबन्ध चिन्तामणि	आ० मेरुतुंग	सं०	६५४
प्रबोध चन्द्रिका		सं०	३५६
प्रबोध चन्द्रिका	बैजल भूपति	सं०	५१७
प्रबोध चन्द्रिका		सं०	५१७
			११६०
प्रबोध चन्द्रोदय नाटक	कृष्ण मिश्र	सं०	३५६,
			६०६
प्रबोध चिंतामणि	जयशेखर सूरि	सं०	११६०
प्रबोध बावनी	जिनदास	हि०	१०२०
प्रबोध बावनी	जिनरंग सूरि	हि०	७३७
प्रभंजन चरित्र		सं०	३५६
प्रमाणनयतत्वालोकालंकार	वादिदेव सूरि	सं०	२५७

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
प्रमाणनयतत्वालोकालंकार वृत्ति	रत्नप्रभाचार्य	सं०	२५८
प्रमाणनय निर्णय	श्री यशसागर गणि	सं०	२५८
प्रमाण निर्णय	विद्यानन्दि	सं०	२५८
प्रमाण परीक्षा	विद्यानन्दि	सं०	२५८
			२५९
प्रमाण परीक्षा भाषा	जयचन्द छाबड़ा	हि०	२५९
प्रमाण प्रमेय कलिका	नरेन्द्रसेन	सं०	२५९
प्रमाण मंजरी टिप्पणी		सं०	२५९
प्रमेयरत्नमाला	अनन्तवीर्य	सं०	२५९
			२६०
प्रवचनसार	कुंदकुंदाचार्य	प्रा०	२१०
प्रवचनसार टीका		प्रा०	२१०
प्रवचनसार टीका	पं० प्रभाचन्द	सं०	२१०
प्रवचनसार भाषा		हि०	२१०
			२११
प्रवचन सार भाषा वचनिका	हेमराज	सं०	२११
			२१२, २१३
प्रवचनसार वृत्ति	अमृतचन्द्र सूरि	हि०	२१३
प्रवचनसारोद्धार		सं०हि०	२१३
प्रव्रज्याभिधान लघुवृत्ति		सं०	१३६
प्रश्नचूडामणि		सं०	५५४
प्रश्नमाला		हि०	७७
प्रश्नमाला भाषा		हि०	१३६
प्रश्नमाला वचनिका		हि०	७६
प्रश्नषष्टि शतक काव्य टीका	पुण्यसागर	सं०	३५६
प्रश्न सार		सं०	५५४
प्रश्नावली	श्री देवीनन्द	सं०	५५४
प्रश्नोत्तरी		सं०	५५४
प्रश्नशास्त्र		सं०	५५४
प्रश्नोत्तरमाला		सं०	७६
			६७७
प्रश्नोत्तरमालिका		सं०	१३७

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
प्रश्नोत्तर रत्नमाला		हि०	१३७
			६५०
प्रश्नोत्तर रत्नमाला—अमोघहर्ष		सं०	७७
			६८८
प्रश्नोत्तर रत्नमाला—बुलाकीदास		सं०	६८८
प्रश्नोत्तर रत्नमाला—विमलसेन		सं०	६८८
प्रश्नोत्तर रत्नमाला		सं०	६८६
प्रश्नोत्तर रत्नमाला वृत्ति	आ० देवेन्द्र	सं०	१३७
प्रश्नोत्तर श्रावकाचार	भ० सकलकीर्ति		
		सं०	१३७
		१३८, १३९,	१४०
प्रश्नोत्तर श्रावकाचार भाषा वचनिका			
		सं०हि०	१४१
प्रश्नोत्तरी		सं०	७७
प्रश्नोत्तरोपासकाचार	बुलाकीदास	हि०	१४३
			१४४
प्रश्नव्याकरणसूत्र		प्रा०	७६
प्रश्नव्याकरणसूत्र वृत्ति	अभयदेव गणि		
		प्रा०सं०	७६
प्रश्न शतक	जिनवल्लभ सूरि	सं०	७६
प्रशस्तिकाश्रिका	त्रिपाठी बालकृष्ण	सं०	११६६
प्रसाद संग्रह		सं०	५१७
प्रस्ताविक दोहा		हि०	६५६
प्रस्ताविक श्लोक		सं०	६८६
प्रस्ताविक श्लोक		सं०	६८१
			११६१
प्रस्ताविक सवैया		हि०	१००३
प्रस्तुतालंकार		सं०	११६२
प्राकृत कोश		सं०	५६५
प्राकृत छंद		प्रा०	५६५
प्राकृत लक्षण	चंडकवि	सं०	५६५
प्राकृत व्याकरण	चन्डकवि	प्रा०	५१७
प्राचीन व्याकरण	पाणिनि	सं०	५१७
प्राणायाम विधि		हि०	१०६५

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
प्राणीड़ा गीत		हि०	१०६५
प्रातः संध्या		सं०	१११७
प्रायश्चित ग्रंथ		प्रा०सं०हि०	१४१
प्रायश्चित ग्रन्थ	अकलंक स्वामी	सं०	६८६,
			१४०,
		१४१,	२१४,
प्रायश्चित पाठ			६५६
प्रायश्चित भाषा		हि०	६६३
प्रायश्चित विधि		सं०	२१४
			६६०
प्रायश्चित शास्त्र	मुनि वीरसेन	सं०	१४१
प्रायश्चित समुच्चय	नन्दिगुरु	सं०	२१४
प्रायश्चित समुच्चय वृत्ति	नंदिगुरु	सं०	१४२
प्रासाद वल्लभ	मंडन	सं०	११६१
प्रियमेलक चौपई		हि०	४६२
प्रियमेलक चौपई	समयसुन्दर	राज०	४६२
प्रिया प्रकरण		प्रा०	११६१
प्रीत्यंकर चौपई	नेमिचन्द्र	हि०	१०४२
प्रीतिंकर चरित्र		हि०	११६१
प्रीतिंकर चरित्र	जोधराज	हि०	३५६
			१०३६
प्रीतिंकर चरित्र	ब्र० नेमिदत्त	सं०	३५७
प्रीतिंकर चरित्र	सिंहनन्दि	सं०	३५७
प्रेम पत्रिका दूहा		हि०	११६१
प्रेम रत्नाकर		हि०	६२६
प्रोषध विधान		हि०	८६०

फ

फाग की लहुरि		हि०	१०१६
फुटकर ग्रन्थ			११६१
फुटकर दोहा	नथमल	हि०	१०४५
फुटकर वचनिका एवं कवित्त		हि०	१०६६
फुटकर सवैया		हि०	६१६

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
ब			
बखाण		प्रा०	११६१
बगलामुखी स्तोत्र		सं०	७३७
बघेरवालों के ५२ गोत्र—		हि०	८७७
बघेरवाल छंद		हि०	११५४
बटोई गीत		हि०	११०५
बड़ा पिंगल		सं०	५६५
बणजारा गीत		हि०	६८५
			११४४
बणजारा गीत—कुमुदचन्द्र सूरि		हि०	११६१
बणजारो रासो—नागराज		हि०	११५१
बत्तीस दोष सामयिक		हि०	१०६६
बत्तीस लक्षण छप्पय—गंगादास		हि०	५५५
बनारसी विलास—जगजीवन		हि०	६६८
			६६६, ६३३
			६६५, १०१२,
			१०१८, १०३१,
			१०४५, १०५२, ११६८
बभणां गीत		हि०	६६२
बलिभद्र कृष्ण माया गीत		हि०	१०२४
बलभद्रगीत—अभयचन्द्र सूरि		हि०	६६६
बलिभद्र गीत—सुमति कीर्ति		हि०	६८४
बलिभद्र चौपई		हि०	१०२५
बलिभद्र भावना		हि०	१०२४
बलभद्ररास—ब्र० यशोधर		हि०	११३५
बलिभद्र विनती		हि०	११६८
बलिभद्र वीनती—मुनिचन्द्र		हि०	१०७१
बलि महानरेन्द्र चरित्र		सं०	३८७
बसन्तराज टीका—भानुचन्द्र गणि		सं०	५५५
बसंत वर्णन—कालिदास		सं०	२५७
बहत्तर सील		हि०	१०५६

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
ब्याहलो		हि०	१०१८
ब्रह्मज्योति स्वरूप—श्री वराचार्य		स०	२१४
ब्रह्मतुल्यकरण—भास्कराचार्य		सं०	५५५
ब्रह्म के ६ लक्षण		सं०	११२७
ब्रह्म पूजा		सं०	८६०
ब्रह्म बावनी—निहालचन्द		हि०	१४३
ब्रह्म महिमा		हि०	१०४३
ब्रह्म विलास—भैया भगवतीदास		हि०	६७०
			६७१, ६७२, ६६८, १०५१, १०७२, ११३३
ब्रह्म विलास के अन्य पाठ—भैया भगवतीदास		हि०	१००५
ब्रह्म वैवर्त पुराण		सं०	११६२
ब्रह्म सूत्र		सं०	११६२
बाईस अभक्ष्य वर्णन		हि०	१४२
बाईस परीषह		हि०	१०३६
			१०४४, ११२६
बाईस परीषह—भूधरदास		हि०	१४२
बाईस परीषह कथन—भगवतीदास		हि०	११३३
बाईस परीषह वर्णन		हि०	१००५
			११४०
बारह अनुप्रेक्षा		हि०	१०२३
			१०२३
बारह अनुप्रेक्षा—डालूराम		हि०	१०११
बारहखडी		हि०	१०६५
			११५३
बारहखडी—कमल कीर्ति		हि०	१०५३
बारहखडी—कनक कीर्ति		हि०	१०५६
बारहखडी—दसलाल		हि०	१११८
बारहखडी—वेगराज		हि०	१०३७
बारहखडी—सुदामा		हि०	१०६८
बारहखडी—सूरत		हि०	१०३०
१०४२, १०४३, १०५६, १०७५, १०७७, १०७८			
१०७८, १०७६, १०८०, १०६५			
बारह भावना		हि०	२१४
१०४३, १०६५, १०६७			

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
बारह भावना व परिषह		हि०	९९८
बारह भावना — नवल		हि०	१०७८
बारह भावना — भगवतीदास		हि०	१०८०
बारह मासा		हि०	९९९
			१०९४, १११४, ११५३, ११९२
बारहमासा — खेतसी		हि०	११०५
बारहमासा — पांडेजीवन		हि०	११२४
बारहमासा — दौलतराम		हि०	११२९
बारहमासा — सुरजीदास		हि०	१०९९
बारहमासा वर्णन		हि०	१०८६
बारहमासावर्णन — क्षेमकरण		हि०	१०१८
बारहमासा की बीनती — पांडे राजभुवन भूषण		हि०	११०८
बारहमासी पूर्णमासी फल		हि०	१०३६
बारह व्रत — यश कीर्ति		हि०	१०८८
बारह व्रत गीत — ब्र० जिनदास		हि०	११४४
बारहसै चौबीसी व्रतोद्यापन		सं०	९०७
बारहसौ चौतीस व्रत पूजा — शुभचन्द्र		सं०	८९०
बारहसौ चौतीस व्रत पूजा — श्रीभूषण		सं०	८९०
बारा आरा महा चौपई बंध — ब्र० रूपजी		हि०	३५७
बारा आरा का स्तवन — ऋषभो		हि०	७३७
बाल चिकित्सा		सं०	५८०
बालतंत्र		सं०	५८०
बालतंत्र भाषा — पं० कल्याणदास		सं०	५८०
बाल त्रिपुर सुन्दरी पद्धति		सं०	६२१
बाल प्रबोध त्रिशतिका — मोतीलाल पन्नालाल			
बालबोध — मंजादित्य		सं०	५५५
बालबोध ज्योतिष		सं०	५५५
बावनाक्षर		प्रा०	१०४७
बावन ठाणों की चौपई		हि०	१०५८
बावन वीरा का नाम		सं०	६२१
बावनी		हि०	९८८
बावनी — छीहल		हि०	९४९
बावनी — बनारसीदास		हि०	९४९
बावनी — भूंगरसी		हि०	११०८
बावनी — जिनहर्ष		हि०	६८९
बावनी — दयासागर		हि०	६८९
बावनी — ब्र० मालक		हि०	६८९
बावनी छपई		हि०	९८४
बावनी — मतिशेखर		हि०	१०२७
बावनी — हरमुख		हि०	१०७८
बासठ मार्गणा बोल		हि०	७७
बाहुबलि गीत — कल्याण कीर्ति		हि०	९६२
बाहुबलि छंद — कुमुदचन्द्र		हि०	१०६९
बाहुबलिनो छंद — वादीचन्द्र		हि०	११६४
बाहुबलिनी निशधा		हि०	११४३
बाहुबलि बेलि — वीरचन्द सूरि		हि०	६३८
बाहुबलि बेलि — शान्तिदास		हि०	१११०
बिम्ब निर्माण विधि		हि०	११३२
बिम्ब प्रतिष्ठा मंडल		स०	८९०
बियालीस ठाणी		हि०	७७
बिहारीदास प्रश्नोत्तर		हि०	११९२
बिहारी सतसई — बिहारीलाल		हि०	६२६
			६२७, १००२, १०३७, १०३८, ११३८
बिहारी सतसई टीका		हि०	६२७
बीजउजावलीरी थुई		हि०	९७६
बीज कोष		सं०	६२१
बीस तीर्थंकर अकडी		हि०	१०८४
बीस तीर्थंकर जकडी — हर्षकीर्ति		हि०	१०७७
बीस तीर्थंकर जयमाल — हर्षकीर्ति		हि०	८९१
बीस तीर्थंकर पूजा — जौहरीलाल		हि०	८९१
बीस तीर्थंकर पूजा — थानजी अजमेरा		हि०	८९१
बीस तीर्थंकर पूजा		हि०	१००२
बीसतीर्थंकर स्तवन — ज्ञानभूषण		सं०	११३६
बीस विरहमान गाथा		हि०	११११
बीस विरहमान पूजा		सं०	८९१
		हि०	१११४
			११२८

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
बीस विरहमान सर्वया—विद्यासागर		हि०	१००३
बीस विदेहक्षेत्र पूजा—शिखरचन्द		हि०	८६१
बीस विदेहक्षेत्र पूजा—चुन्नीलाल		हि०	८६१
बुद्धि प्रकाश—टेकचन्द		हि०	१४२ १४१
बुद्धि प्रकाश—कवि धेल्ह		हि०	६७२
बुद्धि प्रकाश रास—पाल		हि०	६६८
बुद्धि रास		हि०	६३८ ६८५, ६६७
बुद्धि विलास—बखतराम		हि०	१४३ ६६६
बुधजन विलास—बुधजन		हि०	६६६
बुधजन सतसई		हि०	६६०, १०४६ १०८१
बुधिरास		हि०	१०२५ ११४६
बुधाष्टमी कथा		सं०	४६३
बूढ़ा चरित्र—जतीचन्द		हि०	११३१
बोध सत्तरी		हि०	६८१
बंकचूल की कथा		हि०	१०४१ ११३४
बंकचूलरास—ब० जिनदास		हि०	६३८
बंकचोर कथा (धनदत्त सेठ की कथा)—नथमल		हि०	४६४
बंधतत्व—देवेन्द्र सूरि		प्रा०	७७
बंधफल		सं०	५८०
बंध्या स्त्री कल्प		हि०	५८०

भ

भक्तामर पूजा—विश्वभूषण		सं०	१०६७
भक्तामर पूजा विधान—श्री भूषण		हि०	११६२
भक्तामर भाषा—हेमराज		हि०	८७७ १०२०, ११२०, ११४८, ११४६, ११६२, ११६२
भक्तामर सटीक		हि०	१०४३
भक्तामर सर्वया		हि०	१०८१
भक्तामर सिद्ध पूजा—ज्ञानसागर		सं०	१११८
भक्तामर स्तोत्र—मागतुंगाचार्य		सं०	७३८ ७३६, ७४०, ७४१, ७४२, ८७४, ६५३, ६५६, १०११, १०१२, १०२२, १०३५, १११७, १११८, ११२२, ११२४, ११२७, ११४३
भक्तामर ऋद्धिमंत्र—अर्थ सहित		सं०	११२७
भक्तामर स्तोत्र (ऋद्धि मंत्र सहित)		सं०	७४२
भक्तामर स्तोत्र (ऋषि यंत्र सहित)		सं०	१११६
भक्तामर स्तोत्र कथा—विनोदीलाल		हि०	४६४
भक्तामर स्तोत्र कथा		सं०	४६४ ४६५
भक्तामर स्तोत्र कथा—नथमल		हि०	४६५
भक्तामर स्तोत्र टीका—अमरप्रभसूरि		सं०	७४२
भक्तामर स्तोत्र टीका		सं०	७४३ ७४४
भक्तामर स्तोत्र पूजा		हि०	१०३६ १०८५
भक्तामर स्तोत्र पूजा—नंदराम		हि०	८६१
भक्तामर स्तोत्र पूजा—सोमसेन		सं०	८६१
भक्तामर स्तोत्र पूजा		सं०	८६२
भक्तामर स्तोत्र उद्यापन पूजा—केशवसेन		सं०	८६२
भक्तामर स्तोत्र बालावबोध टीका		सं०	७४४
भक्तामर स्तोत्र भाषा—अखयराज		हि०	७४४
भक्तामर स्तोत्र भाषा—नथमल बिलाला		हि०	७४४
भक्तामर स्तोत्र भाषा—जयचन्द छाबडा		हि०	७४५
भक्तामर स्तोत्र भाषा टीका—विनोदीलाल		हि०	७४६
भक्तामर स्तोत्र भाषा टीका—लब्धिवर्द्धन		हि०	७४६

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
भक्तामर स्तोत्र भाषा	हेमराज	हि०	७४६, ७४७, ६५८, ६८०, १०६८, ११२२, ११२६
भक्तामर स्तोत्र भाषा (ऋद्धि मंत्र सहित)		हि०	७४१, ७४२
भक्तामर स्तोत्र भाषा टीका	गुणाकर सूरि	सं०	७४७
भक्तामर स्तोत्र वृत्ति	कनक कुशल	सं०	७४७
भक्तामर स्तोत्र वृत्ति	रत्नचन्द्र	सं०	७४७, ७४८
भक्तामर स्तोत्र वृत्ति	ब्र० रायमल्ल	सं०	७४७, ७४६
भक्तामर स्तोत्रावचूरि		सं०	७४६
भक्तामर स्तोत्रावचूरि		सं०	७५०
भक्तामर स्तोत्र सटीक	हर्षकीर्ति	सं०	११०४
भक्तामर स्तोत्र सटीक		सं०	११३५
भक्ति लिखि		हि०	१०३४
भक्ति पाठ		सं०	६८२, ६६४
भक्ति पाठ		सं०	११४७
भक्ति पाठ संग्रह (७७)		सं०	११३६
भक्तिमाल पद	बलदेव पाटनी	हि०	१०६६
भक्ति बोध	दासदूँत	गु०	११६७
भगवती आराधना		सं०	११२७
भगवती आराधना	शिवार्य	प्रा०	१४५
भगवती आराधना (विजयोदया टीका)	अपराजितसूरि	सं०	१४५, १४६
भगवती आराधना टीका		प्रा०सं०	१४५
भगवती आराधना टीका	नन्दिगणि	प्रा०सं०	१४६
भगवती आराधना भाषा	पं० सदासुख कासलीवाल	राज०	१४६, १४७
भगवती स्तोत्र		हि०	७५०
भगवती सूत्र		प्रा०	७७
भगवती सूत्र वृत्ति		सं०	७७
भगवद् गीता		सं०	२१४, ११६३
भज गोविन्द स्तोत्र		सं०	७५०
भट्टारक पट्टावली		हि०	६५७, ११५४
भट्टारक परम्परा		हि०	११६४
भडली		सं०	५५५
भडली		हि०	५५५, ५५६
भडली पुराण		हि०	५५६
भडली वर्णन		हि०	५५६
भडली विचार		हि०	५५६
भडली वाक्य पृच्छा		हि०	५५६
भडली वचन		हि०	१०५६
भडली विचार		हि०	११५७
भद्रबाहु कथा	हरिकृष्ण	हि०	४६५
भद्रबाहु गुरु की नामावली		हि०	११५४
भद्रबाहु चरित्र	रत्ननन्दि	सं०	३५८, ३५६
भद्रबाहु चरित्र भाषा	किशनसिंह पाटनी	हि०	३५६
भद्रबाहु चरित्र भाषा	चम्पाराम	हि०	३६१
भद्रबाहु चरित्र सटीक		हि०	३६२
भद्रबाहु चरित्र	श्रीधर	अप०	३६२, ३६३
भद्रबाहु रास	ब्र० जिनदास	हि०	६२६
भद्रबाहु संहिता	भद्रबाहु	सं०	१४७, ५५६

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
भयहर स्तोत्र		सं०	६५६
भयहर स्तोत्र (गुरु गीता)		सं०	७५०
भरटक कथा		सं०	४६५
भरत की जयमाल		हि०	१११७
भरत बाहुबलि रास		हि०	१०५२
भर्तृहरि शतक		हि०	१०६४
भर्तृहरि शतक—भर्तृहरि		सं०	६६१, ६६२, ११६१, ११६२
भर्तृहरि शतक भाषा		हि०	६६२
भर्तृहरि शतक टीका		सं०	६६२
भर्तृहरि शतक भाषा—सवाई प्रतापसिंह		हि०	६६२
भले आवनी—विनयमेरु		हि०	११६३
भवदीपक भाषा—जोधराज गोदीका		हि०	२१४
भव वैराग्य शतक		प्रा०	२१४
भवानी बाई केरा दूहा		राज०	६७२
भवानी सहस्र नाम स्तोत्र		सं०	७५०
भविसयत्तकहा—धनपाल		अप०	४६२ ६५६
भविष्यदत्त कथा—ब्र० रायमल्ल		हि०	४६६ ६४२, ६४४, ६६८, १०६४
भविष्यदत्त चौपई		हि०	६७८
भविष्यदत्त चौपई—ब्र० रायमल्ल		हि०	३६३ १०००, १०३२
भविष्यदत्त रास—ब्र० रायमल्ल		हि०	६४० ६६८, १०२०, १०८३
भविष्यदत्त रास—ब्र० जिनदास		हि०	६३६
भविष्यदत्त रास—विद्याभूषण सूरि		हि०	६३६ ११३७
भ्रमरगीत—मुकुंददास		हि०	६२७
भ्रमरगीत—वीरचन्द		हि०	११३२
भ्रमर सिज्झाय		हि०	११५६
भागवत		सं०	११६३
भागवत महापुराण		हि०	२६१
भागवत महापुराण		सं०	२६१
भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (प्रथम स्कंध)	श्रीधर		२६२
भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (द्वि० स्कंध)	श्रीधर		२६२
भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (तृ० स्कंध)	श्रीधर		२६१
भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (च० स्कंध)	श्रीधर		२६२
भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (षष्ठ स्कंध)	श्रीधर		२६२
भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (सप्तम स्कंध)	श्रीधर		२६२
भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (अष्टम स्कंध)	श्रीधर		२६२
भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (नवम स्कंध)	श्रीधर		२६२
भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (दशम स्कंध)	श्रीधर		२६२
भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (एकादश स्कंध)	श्रीधर		२६१
भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (द्वादश स्कंध)	श्रीधर		२३१
भामिनी विलास—पं० जगन्नाथ		सं०	६२७
भारती राग जिणंद गीत		हि०	११४४
भारती लघु स्तवन—भारती		सं०	७५०
भारावाहवनि सज्झाय		हि०	१०३६
भाव त्रिभंगी—नेमिचन्द्राचार्य		प्रा०	७७ ११४२

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
भाव दीपक भाषा		हि०	१४७
भावदीपिका		हि०	२१५
भावप्रकाश—भाव मिश्र		सं०	५८०
भावप्रदीपिका		सं०	१४७
भावफल		सं०	५५६
भावना बत्तीसी		हि०	१०५८
भावशतक - नागराज		सं०	१४७, ७५१, ११९२
भावसंग्रह—देवसेन		प्रा०	१४८
भावसंग्रह—वामदेव		सं०	१४८
भावसंग्रह—श्रुतमुनि		प्रा०	६८, १४६, १०५८
भावसंग्रह टीका		सं०	१४८
भाइनाष्टक		सं०	७५०
भावना चौबीसी—पद्मनन्दि		सं०	६९४
भावना बत्तीसी—अमितगति		सं०	७५०
भावना विनती—ब्र० जिनदास		हि०	६५२
भावनासार संग्रह—चामुण्डराय		सं०	११९३
भावि समय प्रकरण		सं०	५५७
भाषाष्टक		सं०	६९५
भाषा परिच्छेद—विश्वनाथ पंचानन भट्टाचार्य		सं०	२६०
भाषा भूषण—असवन्तसिंह		हि०	५९५, ११६८, ११९३
भाषा भूषण टीका—नारायणदास		हि०	१०१५
भुवनकीर्ति गीत		हि०	६६२
भुवनकीर्ति पूजा		सं०	८९२
भुवन द्वार		हि०	११९३
भुवन दीपक		सं०	१००६
भुवन दीपक—पद्म प्रभ सूरि		सं०	५५७
भुवन दीपक टीका		सं०	५५७
भुवन दीपक वृत्ति—सिंहतिलक सूरि		सं०	५५७
भुवन विचार		सं०	५५७
भुवन दीपक भाषा टीका—पद्मनन्दि सूरि		सं०	६६१
भुवन भानु केवली चरित्र		सं०	३६४
भूकंप एवं भूचाल वर्णन		हि०	६१६
भूधर विलास—भूधरदास		हि०	६७३, १०४५, ११९३
भूपाल चतुर्विंशतिका—भूपाल कवि		सं०	७५१, ७७१, ७७५, १०३५, ११२७
भूपाल चतुर्विंशतिका टीका—म० चन्द्रकीर्ति		सं०	७५१
भूपाल चौबीसी भाषा—अभयराज		हि०	६५१, ७५२
भूपाल चौबीसी भाषा—जगजीवन		हि०	११२२
भूपाल स्तोत्र सप्तत्य—विद्यासागर		हि०	१००३
भैरवाष्टक		सं०हि०	७५२,
भैरवा कल्प		सं०	६२१
भैरवा पद्मावती कल्प—आ मल्लिषेण		सं०	६२२
भैरवा पद्मावती कवच—मल्लिषेण		हि०	१०३१
भैरवा पूजा		हि०	१०५९
भैरवा स्तोत्र		सं०	११३५
भैरवा स्तोत्र—शोभाचन्द		हि०	१००५
भैरू संवाद		हि०	१०६१
भोज चरित्र		हि०	११११
भोज चरित्र—भवानीदास व्यास		हि०	३६४
भोज प्रबन्ध—पं० वल्लाल		सं०	३६४
भोज प्रबन्ध		सं०	३६५
भोज राज काव्य		सं०	३६५

म

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
मकरंद (मध्यलग्न ज्योतिष)		सं०	५५७
मक्सी पारसनाथ—भागचन्द		हि०	१०४८
मणकरहा जयमाल		हि०	११९४
मणि पति चरित्र—हरिचन्द सूरि		प्रा०	३६५
मणिभद्रजी रो छन्द—राजरत्न पाठक		हि०	७५२
मतमतांतर दर्शनाष्टक		सं०	१०४९

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
मदनजुज्झ	—बूचराज	हि०	६८४, १०८८, ११०६
मदनपराजय	—जिनदेव सूरि	सं०	६०६, ६०७
मदान्ध प्रबोध		सं०	११६४
मधुकर कलानिधि	—सरसुति	हि०	६२७
मधुमालती		हि०	१०३७
मधुमालती कथा		हि०	४६६
मधुमालती कथा	—चतुर्भुज	हि०	६४०, ६६२, ११६८
मधुविन्दु चौपई		हि०	११३३
मधुविन्दु चौपई	—भगवतीदास	हि०	११५१
मनकरहा जयमाल		हि०	६७६, ६७२
मनकरहा रास		हि०	६८५
मनकरहा रास	—ब्र० दीप	हि०	१०८६
मन गीत		हि०	१०२४
मनराज शतक	—मनराज	हि०	६६२
मन मोरड़ा गीत	—हर्षकीर्ति	हि०	११६५
मनुष्यभव दुर्लभ कथा		सं०	४६६
मनोरथ माला		हि०	१०२७
मनोरथ माला	—साहु अचल	हि०	१११९
मनोरथ माला	—मनोरथ	प्रा०	१०५४
मनोरथमाला गीत	—धर्म भूषण	हि०	६७३
मयण रेहा चरित्र		हि०	३६५
मरकत विलास	—मोतीलाल	हि०	६७३
मरण करंडिका		सं०	६६२
मरहठी	—वृन्दावन	हि०	१०६४
मलय सुन्दरी कथा	—जय तिलक सूरि	सं०	३६५, ४६३
मलय सुन्दरी चरित्र भाषा	—अखयराम लुहाड़िया	हि०	३६५
मल्लि गीत	—सोमकीर्ति	हि०	१०२४
मल्लिनाथ गीत	—ब्र० यशोधर	हि०	१०२४
मल्लिनाथ चरित्र	—म० सकलकीर्ति	सं०	३६५
मल्लिनाथ चरित्र	—सकल भूषण	स०	३६६
मल्लिनाथ चरित्र भाषा	—सेवाराम पाटनी	हि०	३५६, ३६७
मल्लिनाथ पुराण		सं०	२६३
मल्लिनाथ पुराण भाषा	—सेवाराम पाटनी	हि०	२६३
मल्लिनाथ स्तवन	—धर्मसिंह	हि०	७५२
महर्षि स्तवन		सं०	७५३
महाकाली सहस्रनाम स्तोत्र		सं०	७५३
महा दण्डक		सं०	२६३
महादण्डक	—विजयकीर्ति	हि०	१४६, २६३
महादेव पार्वती संवाद		हि०	११६५
महापुराण		हि०	१०४३
महापुराण	—जिनसेनाचार्य गुणभद्राचार्य	सं०	२६३, २६४
महापुराण चौपई	—गंगदास	हि०	६६१, २६४, ११४३, ११५२
महापुराण विनती	—गंगादास	हि०	११३६, ११६५, ११६६
महापुरुष चरित्र	—आ० मेरुतुंग	स०	६५४
महाभारत		स०	२६४
महाभिषेक विधि		सं०	८६३
महायक्ष विद्याधर कथा	—ब्र० जिनदास	हि०	४६६
महालक्ष्मी स्तोत्र		सं०	१०१६
महाव्रती आलोचना		सं०	११३६
महाव्रतोंनि चौमासानुदण्ड		हि०	११३५
महाविद्या		सं०	२६०
महाविद्या चक्रेश्वरी स्तोत्र		सं०	७५५
महाविद्या स्तोत्र मंत्र		सं०	७५३
महावीर कलश		प्रा०	१०२६

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
महावीर जिनऋद्धि स्तवन	समयसुन्दर	हि०	७२१
महावीर निर्वाण कथा		सं०	४६६
महावीर पूजा	वृन्दावन	हि०	८९३
महावीर बीनती	आदिचन्द्र	हि०	११६१
महावीर सत्ताबीस भव चरित्र		प्रा०	३६७
महावीर समस्या स्तवन		सं०	७७४
महावीर स्तवन	जिनवल्लभ सूरि	प्रा०	७५३
महावीर स्तवन	विनयकीर्ति	हि०	७५३
महावीर स्तवन	सकलचन्द्र	हि०	७५३
महावीर स्वामीनो स्तवन		हि०	७५४
महावीर स्तोत्र वृत्ति	जिनप्रभ सूरि	सं०	७५४
महावीर स्तवन	समयसुन्दर	हि०	९४१
महावीर स्तोत्र	विद्यानन्दि	सं०	७७५
महासरस्वती स्तोत्र		सं०	१०६५
महा शांतिक विधि		सं०	८९३
महासती सज्झाय		हि०	११९५
महिम्न स्तोत्र	पुष्पदंताचार्य	स०	७५४
महीपाल चरित्र	वीरदेव गणि	प्रा०	३६७
महीपाल चरित्र	चारित्र भूषण	सं०	३६७, ३६८
महीपाल चरित्र भाषा	नथमल दोसी	हि०	३६८
महीभट्ट काव्य	महीभट्ट	सं०	३६९
महीभट्टी प्रक्रिया	अनुभूति स्वरूपाचार्य	सं०	५१७
महीभट्टी व्याकरण	महीभट्टी	स०	५१७, ५१८
महुरा परीक्षा		सं०	१११७
मृग चर्म कथा		०	४६७
मृगापुत्र बेलि		हि०	६३९
मृगापुत्र सज्झाय		हि०	४६७
मृगावती चरित्र	समयसुन्दर	हि०	३७०
मृगांक लेखा चौपई	मानुचन्द	हि०	९६१
मृगी संवाद	देवराज	हि०	९४५, ९८३, १०६३
मृगी संवाद चौपई		हि०	९५४
मृत्यु महोत्सव		सं०	९९४, ९९९, १०११, १०४७, १०८१
मृत्यु महोत्सव भाषा	सदासुख कासलीवाल	हि०	११९३, ११९४
मृत्यु महोत्सव		सं०	११९४
मल्लण मूछ कथा		हि०	११३७
माणक पद संग्रह	माणकचन्द	हि०	६७३
मातृका निघंटु	महीधर	सं०	६२२
माधवनिदान	माधव	सं०	५८९, ५८१
माधवनिदान टीका	वैद्यवाचस्पति	सं०	५८१
माधवानल कामकन्दला चौपई	कुशल लाभ	राज०	४६६
माधवानल चौपई		हि०	४६७
माधवानल चौपई		हि०	९८८
माधवानल प्रबन्ध	गणपति	हि०	६२७
मानगीत		हि०	११३१
मानतुंग मानवती	मोहन विजय	हि०	११६९
मानतुंग मानवती चौपई	रूपविजय	हि०	११९५
मान बत्तीसी	भगवतीदास	हि०	१०५८
मान बावनी		हि०	६७१
मान बावनी	मनोहर	हि०	११०८
मान बावनी	मनोहर	हि०	११०९
मान भद्र स्तवन	माणक	हि०	७५४
मान मंजरी	नन्ददास	हि०	५२९१ ११०९
मान विनय प्रबन्ध		हि०	६७२
माया कल्प		सं०	६२९
मायागीत		हि०	११४४
मायागीत	ब्र० नारायण	हि०	११४४
मार्गणा चर्चा		हि०	९९२
मार्गणा स्वरूप		प्रा०सं०	७८
मार्गणा सत्ता त्रिभंगी	नेमिचन्द्राचार्य	प्रा०	७८
मार्तण्ड हृदय स्तोत्र		सं०	७५४

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
मालीरासा		हि०	१०५०
मालीरास—जिनदास		हि०	६४५, ११०२
मास प्रवेश सारणी		हि०	१११५
मासान्त चतुर्दशी व्रतोद्यापन		सं०	८६३
मांगीतुंगी गीत—अभयचन्द सूरि		हि०	१११९
मांगीतुंगी चौपई		सं०	६७६
मांगीतुंगी पूजा		हि०	१०४६
मांगीतुंगी पूजा—विश्वभूषण		सं०	८६३
मांगीतुंगीकी यात्रा—अभयचन्द सूरि		हि०	११४५
मांगीतुंगी सज्झाय—अभयचन्द सूरि		हि०	७५५
मांगीतुंगी स्तवन		हि०	६८०
मित्रलाभ-सुहृदभेद		हि०	६५०
मिथ्या दुक्कड		हि०	११६५
मिथ्या दुक्कड़—ब्र० जिनदास		हि०	६५१, ११३८, ११५५
मिथ्या दुक्कड़ जयमाल		हि०	११०४
मिथ्यात्व खंडन—बखतराम		हि०	१४६, ६०७, ६०८
मिथ्यात्व खंडन नाटक		हि०	६०८, ६५४
मिथ्यात्व दुक्कड़ (मिछा दोकड़)		हि०	१०२४
मिथ्यात्व निषेध		हि०	१४९, १५०
मिथ्यात्व भजनरास		हि०	६८६
मुकुट सप्तमी कथा—सकलकीर्ति		सं०	४७६
मुक्तावली गीत		अप०	६५२
मुक्तावली गीत		हि०	१११०
मुक्तावली गीत—सकलकीर्ति		हि०	११४१
मुक्तावली रास—सकलकीर्ति		हि०	६५५
मुक्तावली व्रत कथा—सुरेन्द्र कीर्ति		हि०	४६७
मुक्तावली व्रत कथा—सकल कीर्ति		सं०	४६७
मुक्तावली व्रत पूजा		सं०	८६३
मुक्तावली व्रतोद्यापन		सं०	८६४
मुक्ति गीत		हि०	६८४
मुक्ति स्वयंवर—वेणीचन्द		हि०	१५०
मुनि गुणरास वेलि—ब्र० गांगजी		हि०	६३६
मुनि मालिका		हि०	७५४
मुनि मालिका—चारित्रसिंह		हि०	११५६
मुनिराज के छियालीस अन्तराय—भैया भगवतीदास		हि०	१५०
मुनिरंग चौपई—लालचन्द		हि०	३६६
मुनिव्रत पुराण—ब्र० कृष्णदास		सं०	२६५
मुनिसुव्रत नाथ स्तोत्र		सं०	११२७
मुनीश्वर जयमाल—जिनदास		हि०	८७५, ६७६, ११०८
मुनीश्वर जयमाल—पाण्डे जिनदास		हि०	११४६
मुष्टिका ज्ञान		सं०	१११६
मुहूर्त चिंतामणि—विमलल		सं०	५५७
मुहूर्त चिंतामणि—दैवज्ञराम		सं०	५५७, ५५८
मुहूर्त परीक्षा		सं०	५५८
मुहूर्त तत्व		सं०	५५८
मुहूर्त मुक्तावली—परमहंस परिव्राजकाचार्य		सं०	५५८
मुहूर्त विधि		सं०	५५६
मुहूर्त शास्त्र		सं०	५५६
मूत्र परीक्षा		सं०	५८१
मूत्र परीक्षा		हि०	६५३
मूल गुण सज्झाय—विजयदेव		हि०	७५४
मूलाचार प्रदीप—सकलकीर्ति		सं०	१५१
मूलाचार भाषा—ऋषभदास निगोत्या राज०			१५१, १५२
मूलाचार सूत्र—वट्टकेराचार्य		प्रा०	१५०
मूलाचार वृत्ति—वसुनन्दि		सं०	१५१
मेघकुमार गीत—पुनो		हि०	६६०, ६८४, ६७२, १०६२

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
मेघकुमार गीत	—समयसुन्दर	हि०	११०२
मेघकुमार का चौढालया	—गणेश	हि०	४६७
मेघकुमार रास	—कवि हरिकृष्ण	हि०	१०२५
मेघकुमार रास	—पूनो	हि०	१०२६
मेघकुमार सिज्झाय	—पूनो	हि०	१०५४
मेघदूत	—कालिदास	सं०	३६६
मेघदूत टीका	—मल्लिनाथ सूरि	सं०	३७०
मेघमाला		सं०	५५६, ११५६
मेघमाला प्रकरण		सं०	५५६, ११५६
मेघमालिका व्रतोद्यापन		सं०	८६४
मेघमालिका व्रतोद्यापन पूजा		सं०	८६४
मेघ स्तवन		सं०	१११६
मेवाडीनां गीत		हि०	११३४
मैना सुन्दरी सज्झाय		हि०	११५२
मोक्ष पच्चीसी	—ज्ञानतराय	हि०	१०४३
मोक्ष पाहुड	—कुंदकुंदाचार्य	प्रा०	२१५
मोक्ष पैडी		हि०	११०४
मोक्ष पैडी	—बनारसीदास	हि०	१०४१
मोक्षमार्ग प्रकाशक	—पं० टोडरमल	राज०	१५३, १५४, १५५
मोक्षमार्ग बत्तीसी	—दौलतराम	हि०	६६६
मोक्षमार्ग बावनी	—मोहनदास	हि०	१५५
मोक्षस्वरूप		हि०	१५५
मोहविवेक युद्ध		हि०	१०६३
मोहिनी मंत्र		सं०	६२२, ११६३
मौन एकादशी व्याख्यान		सं०	११६५
मौन एकादशी व्रत कथा	—ब्र० ज्ञानसागर	हि०	४६७
मंगलाष्टक	—म० यशःकीर्ति	सं०	११७१
मंगलाष्टक	—वृन्दावन	हि०	१०६४
मंगलकलश चौपई		हि०	१०२५
मंगलाचरण	—होरानन्द	हि०	१०६५
मंगल पाठ		हि०	६६७
मंगल प्रभाती	—विनोदीलाल	हि०	१०६५
मंगल स्तोत्र		सं०	७५
मंगल	—हरीसिंह	हि०	१०४१
मंडोवर पार्श्वनाथ स्तवन	—सुमति हेम	हि०	६४२
मंत्र प्रकरण सूचक टिप्पण	—भावसेन त्रैविद्य देव	सं०	६२२
मंत्र यंत्र		सं०	६२२
मंत्र शास्त्र		हि०	६२२
मंत्र शास्त्र		हि०सं०	६२२
मंत्र संग्रह		हि०सं०	६२२
मंत्र संग्रह		सं०हि०	६५०, १०२४

य

यक्षिणी कल्प	—मल्लिषेण	सं०	६२३
यति भावनाष्टक		सं०	६६४, ११३६
यत्याचार		सं०	११६५
यत्याचार वृत्ति	—वसुनन्दि	सं०	१५५
यम विलास		हि०	६७७
यमक बंध स्तोत्र		सं०	७५५, १०५२
यमक स्तोत्र		सं०	७५५
यमक स्तोत्राष्टक	—विद्यानन्दि	सं०	७५५
यशस्तिलक चम्पू	—आ० सोमदेव	सं०	३७०
यशस्तिलक चम्पू टीका	—श्रुतसागर	सं०	३७१
यशस्तिलक टिप्पण		सं०	३७१
यशोधर कथा	—विजयकीर्ति	सं०	४६७
यशोधर चरित्र		हि०	११४६
यशोधर चरित्र	—पुष्पदन्त	अप०	३७१

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
यशोधर चरित्र—टिप्पणी	प्रभाचन्द्र		३७१
यशोधर चरित्र—वादिराज	सं०		३७२
यशोधर चरित्र—वासवसेन	सं०		३७२
यशोधर चरित्र—पद्मनाभ कायस्थ	सं०		३७३
यशोधर चरित्र—पद्मराज	सं०		३७३
यशोधर चरित्र—आ० पूर्णदेव	सं०		३७३
यशोधर चरित्र—सोमकीर्ति	सं०		३७३
यशोधर चरित्र—सकलकीर्ति	सं०		३७४, ३७५
यशोधर चरित्र—खुशालचन्द	हि०		३७७, ३७८, ११६२
यशोधर चरित्र—मनसुख सागर	हि०		११२१
यशोधर चरित्र—साहु लोहट	हि०		३७८
यशोधर चरित्र—विक्रम सुत देवेन्द्र	सं०		३७६
यशोधर चरित्र पीठिका	सं०		३७२
यशोधर चरित्र पीठबंध—प्रभजंन गुरु	सं०		३७२
यशोधर चौपई	हि०		३७८, ६४४, १०४१
यशोधर रास—ब्र० जिनदास	हि०		६३६, १०२३, ११०७, ११४६
यशोधर रास—सोमकीर्ति	हि०		१०२७, ११३७
याग मंडल पूजा	सं०		८६४
याग मंडल विधान—पं० धर्मदेव	सं०		८६४
यादवरास—पुण्यरत्न	हि०		६४६
यात्रा वर्णन	हि०		६५५
यात्रावली	हि०		६५५
यात्रा समुच्चय	सं०		६७३
युगादि देव स्तोत्र	सं०		६६८
योग चिंतामणि—हर्षकीर्ति	सं०		५८१, १०१६
योग चिंतामणि टीका—अमरकीर्ति	सं०		५८२
योग तरंगिणी—त्रिमल्ल भट्ट	सं०		५८२
योग मुक्तावली	सं०		५८२
योग पाठ	सं०		१०८१
योगमाला	स०		५६०
योगशत	सं०		५८३
योगशत टीका	सं०		५८३
योग शतक—धन्वन्तरि	सं०		५८३
योग शतक भाषा	हि०		६६६
योग शास्त्र—हेमचन्द्र	सं०		२१५
योगसत—अमृत प्रभव	सं०		६६६
योगसार	हि०		१०५८
योगसार—क्षेमचन्द्र	हि०		११४६, ११५०
योगसार—योगीन्द्र देव	अप०		२१५, २१६, ६६४, १०३८, १०८०
योगसार वचनिका	हि०		२१६
योगसार संग्रह	सं०		५८३
योगातिसार—भागीरथ कायस्थ कानूगो	हि०		५६०
योगिनी दशा	स०		५६०
योगिनी दशाफल	सं०		१११६
योगीचर्या	हि०		९८४
योगीरासा—जिनदास	हि०		११४५
योगीवाणी—यशःकीर्ति	हि०		१०२४
योगीन्द्र पूजा	सं०		८६४
योगीन्द्र पूजा	हि०		१०३५
योगेन्दुसार—बुधजन	हि०		२१६
यंत्र	सं०		६६६
यंत्र संग्रह	हि०सं०		१०२०, ११६०
यंत्रावली—अनूपाराम	सं०		६२३

र

रक्षक विधान कथा—ललितकीर्ति	सं०		४७६
रक्षाख्यान—रत्ननन्दि	सं०		४७१

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
रक्षा बंधन कथा	ब्र० ज्ञानसागर	हि०	४७०
रक्षा बंधन कथा	विनोदीलाल	हि०	४७०
रक्षा विधान कथा	सकलकीर्ति	सं०	४७०, ७६१,३८०
रघुवंश	कालिदास	सं०	३७८, ३७६, ३८०
रघुवंश टीका	मल्लिनाथ	सं०	३८०
रघुवंश टीका	समयसुन्दर	सं०	३८१
रघुवंश काव्यवृत्ति	सुमति विजय	सं०	३८१
रघुवंश काव्यवृत्ति	गुण विनय	सं०	३८२
रघुवंश सूत्र		सं०	३८२
रणकपुर आदिनाथ स्तवन		हि०	१०१७
रतनचूड रास		हि०	६८८
रतनसिंहजी री बात		हि०	१०१७
रतना हमीर री बात		राज०	४६७
रत्नकरण्ड श्रावकाचार	आ० समन्तभद्र	सं०	१५४, १५७ ६५७
रत्नकरण्ड श्रावकाचार टीका	प्रभाचन्द	सं०	१५६, १५६
रत्नकरण्ड श्रावकाचार भाषा		हि०	१०६६
रत्नकरण्ड श्रावकाचार भाषा	पं० सदासुख कासलीवाल	राज०	१५७ १५८, १५६, ६७३,
रत्नकरण्ड श्रावकाचार भाषा वचनिका	पन्नालाल दूनीवाले	राज०	१५६
रत्नकरण्ड श्रावकाचार भाषा वचनिका		हि०	१०४६
रत्नकीर्ति बेलि	आ० रत्नकीर्ति	सं०	६५२
रत्नकोश		सं०	७८
रत्नकोश	उपा० देवेश्वर	सं०	५८३
रत्नकोश सूत्र व्याख्या		सं०	१६०
रत्नचूड रास		सं०	६६६
रत्नचूड़ामणि		सं०	५६०
रत्नदीप		सं०	५६०
रत्नदीपक		सं०	५६०
रत्नदीपिका	चंडेश्वर	सं०	१११७
रत्नत्रय उद्यापन		सं०	८८२
रत्नत्रय कथा	ज्ञानसागर	हि०	१११६, ११२३
रत्नत्रय कथा	ललितकीर्ति	सं०	४७८, ४७६, ६६५
रत्नत्रय कथा	मु० प्रभाचन्द्र	सं०	४६८
रत्नत्रय कथा	देवेन्द्र कीर्ति	सं०	४६८
रत्नत्रय गीत		हि०	१०२५ ११३८
रत्नत्रय जयमाल		सं०	८६५
रत्नत्रय जयमाल		प्रा०	८६५, ८६६
रत्नत्रय जयमाल भाषा	नथमल	हि०	८६६
रत्नत्रय पूजा		सं०	८८३, ८८७, ६८८, ६६६, १०२३, १०३५
रत्नत्रय पूजा	ज्ञानतराम	हि०	८८१, ८६७, ८६८, १०११
रत्नत्रय पूजा	टेकचन्द	हि०	८६६
रत्नत्रय पूजा	भ० पद्मनन्दि	सं०	८६६
रत्नत्रय मंडल विधान		हि०	८६८, ६८६
रत्नत्रय वर्णन		सं०	१६०
रत्नत्रय विधान		सं०	८७६, ८६८, ८६६
रत्नत्रय विधान	नरेन्द्रसेन	सं०	११३६, ११६६
रत्नत्रय विधान कथा	ब्र० श्रुतसागर	सं०	४३४, ४७८
रत्नत्रय विधान कथा	पद्मनन्दि	सं०	४६८
रत्नत्रय व्रतोद्यापन	धर्मभूषण	सं०	१०८५
रत्न परीक्षा		सं०	११६५

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
रत्नपाल चउपई बात	—भावतिलक	हि०	४६७
रत्नपाल प्रबंध	—भ० श्रीपति	भाषा०	३८२
रत्नपाल रास	—सूरचन्द	हि०	६५६
रत्नमाला	– महादेव	सं०	५६०
रत्नशेखर रत्नावली कथा		प्रा०	४६८
रत्न संग्रह	—तनसूमल	हि०	६७३
रत्नावली टीका		सं०	६६५
रत्नावली न्यायवृत्ति	—जिनहर्ष सूरि	सं०	२६०
रमल गीत	—छीहल	हि०	६६२
रमल		हि०	५६१
रमल प्रश्न		सं०	५६१
रमल ज्ञान		सं०	५६१
रमल प्रश्न पंच		सं०	४६१
रमल शकुनावली		हि०	५६१
रमल शास्त्र		सं०	५६१
रमल शास्त्र		हि०	५६१
रमल चिंतामणि		सं०	११९६
रमल शास्त्र		हि०	६४४
रयणसार	—कुंदकुंदाचार्य	प्रा०	७८, ६६५, ७९
रयणसार भाषा		हि०	१०६६
रयणसार वचनिका	—जयचन्द छाबड़ा	राज०	११६५
रयणागर कथा		प्रा०	४६८
रविव्रत कथा		हि०	६८५, ६६६, १०२२, १०४१, ११२४
रविव्रत कथा	—अकलंक	हि०	४२३
रविव्रत कथा	—जयकीर्ति	हि०	११४३
रविव्रत कथा	—भ० जिनदास	हि०	४६६, ११६६
रविवार कथा	—भाऊ	हि०	४२३, ८७७, ६६३, १०३६, १०८४, १०८८, ११६२, ११०७
रविव्रत कथा	—भानुकीर्ति	हि०	१०६५
रविवार कथा	—रइधू	अप०	४६६
रविवार कथा	—विद्यासागर	हि०	४६६
रविव्रत कथा	—सुरेन्द्रकीर्ति	हि०	११७७,
रविवार कथा एवं पूजा		सं०	११६५
रविव्रत पूजा	—भ० देवेन्द्र कीर्ति	सं०	७६६
रविव्रत पूजा कथा	—मनोहरदास	हि०	८६६
रविव्रतोद्यापन पूजा	—रत्नभूषण	सं०	६००
रविव्रतोद्यापन पूजा	—केशवसेन	सं०	६००
रस चिंतामणि		सं०	५८३
रस तरंगिणी	—भानुदत्त	सं०	५८३
रस तरंगिणी	—वेणीदत्त	सं०	५८४
रस पद्धति		सं०	५८४
रस मंजरी		हि०	६२७
रस मंजरी	—भानुदत्त मिश्र	सं०	५६६, ६२८, ५८४
रस मंजरी		सं०	५८४
रस मंजरी	—शालिनाथ	सं०	५८४
रस रत्नाकर	—नित्यनाथसिद्धि	सं०	५८४
रस रत्नाकर	—रत्नाकर	सं०	५८४
रस राज	—मतिराम	सि०	६२८
रस राज	—मनीराम	हि०	६६५
रसायन काव्य	—कवि राधूराम	सं०	३८२
रसालुकंवर की वार्ता		हि०	६८६
रसिक प्रिया	—इन्द्रजीत	सं०	६६६, ६२८
रविव्रत कथा	—भ० विश्वभूषण	हि०	११२३
राक्षस काव्य		सं०	३८२
रागमाला		सं०	६०८
रागमाला		हि०	६०६
राघ रत्नाकर	—राघाकृष्ण	हि०	११५८
रागरागिनी		हि०	६०६
राघव पाण्डवीय	- धनंजय	सं०	३८२
राघव पाण्डवीय टीका	—नेमीचंद	सं०	३८२

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
राघव पाण्डवीय टीका	—चरित्रवर्द्धन	सं०	३८३
राघव पाण्डवीय	—कविराज पण्डित	सं०	३८३
राघव पाण्डवीय टीका	—कविराज पण्डित	सं०	३८३
राजनीति समुच्चय	—चाणक्य	सं०	६६३
राजनीति सवैया	—देवीदास	हि०	६६३
राजमति गीत		हि०	६८४
राजमती की चूनडी	—हेमराज	हि०	११२८, ११११
राजमति नेमीश्वर ढाल		हि०	६८५
राजाचन्द्र की कथा	—नेमिचन्द्र	हि०	१०४२
राजावलि		हि०	६८५
राजा विक्रम की कथा		हि०	४७१
राजा हरिचंद की कथा		हि०	४७१
राजादिगण वृत्ति		सं०	५१८
राजावली		सं०	५६२
राजावली संवत्सर		सं०	५६२
राजुल गीत		हि०	१०८३
राजुल छत्तीसी	—बाल मुकुन्द	हि०	११६६
राजुल नेमि अबोला	—लावण्यसमय	हि०	१०२७
राजुल पच्चीसी		हि०	६५६, ६७६, १०००, १०५६, १०६७, १११४, ११४०, ११६६
राजुल पच्चीसी	—लालचन्द	हि०	११०६
राजुल पच्चीसी	—विनोदीलाल	हि०	६५८, ६७४, १०२०, १०५४, १०७१, १०७७, १०७८, १०६०, ११०५
राजुल पच्चीसी पाठ		हि०	१०४८
राजुल पत्रिका	—सोमकवि	हि०	११६६
राजुल बारहमासा	—गंग कवि	हि०	१००३
राजुल बारह मासा	—विनोदीलाल	हि०	१००३, १०७१, १०७७, १०७६
राजुल की सज्झाय		हि०	६५६
रात्रि भोजन कथा	—ब्र० नेमिदत्त	सं०	४७१
रात्रि भोजन कथा	—भ० सिंहनंदि	सं०	४७१
रात्रि भोजन चौपई	—हंस	हि०	४७१
रात्रि भोजन त्याग कथा	—श्रुतसागर	सं०	४७२
रात्रि भोजन रास	—ब्र० जिनदास	हि०	११४४
रात्रि भोजन वर्णन	—ब्र० वीर	हि०	११६४
रात्रि विधान कथा		सं०	४७१
राम कथा	—रामानन्द	हि०	१००३
रामचन्द्र रास	—ब्र० जिनदास	हि०	६४०
राम रास	—माधवदास	हि०	६४०
श्री रामचन्द्र स्तवन		हि०	११३४
रामचन्द्र स्तोत्र		सं०	७५५
रामजस	—केसराज	हि०	११६६
रामदास पच्चीसी	—रामदास	हि०	१०५४
रामपुराण	—सकलकीर्ति	सं०	२६५
राम पुराण	—भ० सोमसेन	सं०	२६५
राम यश रसायन	—केशराज	हि०	४७२, ४७३
राम विनोद		हि०	१०१३
राम विनोद	—नयनसुख	हि०	५८४
राम विनोद	—रामचन्द्र	हि०	५८५
राम विनोद		सं०	५८५
राम विनोद	—पं० पद्मरंग	हि०	१०१६
राम विनोद भाषा		हि०	६६६
राम सहस्र नाम		सं०	७५५
राम सीता गीत	—ब्रह्म श्रीवर्द्धन	हि०	१११०
राम सीता प्रबन्ध	—समयसुन्दर	हि०	४७४
राम सीता रास	—ब्र० जिनदास	हि०	१०२५
राम स्तोत्र		सं०	१०३६
रामाष्टक		सं०	६५६
रामाष्टक		हि०	१०६४
रायण परस्त्री सेवन व्यसन कथा		सं०	११६७
रावलादेव स्तोत्र		हि०	११२६

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
रावलियो गीत	सिंहनन्दि	हि०	१०२७
राशिफल		सं०	५६२
राशिफल		हि०	५६२
रास संग्रह	ब्र० रायमल्ल	हि०	६४०
राहुफल		सं०	५६२
रिषभदेवजी लावणी	दीप विजय	हि०	१११४
रिषभनाथ धूल	सोमकीर्ति	सं०	१०१४
रुक्मिणी कथा	छत्रसेनाचार्य	सं०	४३४
रुक्मिणी हरण	रत्नभूषण	हि०	६४०, ११३३
रुक्मिणी बालावबोध	रत्नरंगोपाध्याय	हि०	११६६
रूप दीपक पिंगल		हि०	५६६
रूप माला	भावसेन त्रिविद्यदेव	सं०	५१८
रूपावली		सं०	५१८
रूपसेन चौपई		हि०	४७६
रूपसेन राजा कथा	जिनसूरि	सं०	४७६
रेखता	मांडका	हि०	११५७
रेखता	विनोदीलाल	हि०	१०७७
रेवा नदी पूजा	विश्व	सं०	६००
रोगापहार स्तोत्र	मनराय	सं०	१०३८
रोटजीत कथा		सं०	४७४
रोटतीज व्रत कथा	चुन्नीराय वैद	हि०	४७४, १०६५
रोटतीज कथा	गुणनन्दि	सं०	४७४
रोस की पाथडी		हि०	१०८६
रोहिणी गीत	श्रुतसागर	हि०	१११९
रोहिणी व्रत कथा	ब्र० ज्ञान सागर	हि०	६५२
रोहिणी व्रत कथा	भानुकीर्ति	सं०	४७५
रोहिणी व्रत कथा	ललितकीर्ति	सं०	४७६
रोहिणी व्रत कथा		हि०	४७५
रोहिणी व्रत कथा	वंशीदास	हि०	११२३
रोहिणी व्रत कथा	हेमराज	हि०	४८२, ११२३
रोहिणी रास		हि०	६८५
रोहिणी रास	ब्र० जिनदास	राज०	६४१
रोहिणी व्रत पूजा		हि०	६००
रोहिणी व्रत पूजा		हि०सं०	६००, ६७१
रोहिणी व्रत पूजा	केशवसेन	सं०	६०१
रोहिणी व्रत मंडल विधान		सं०हि०	६००
रोहिणी व्रतोद्यापन	वादिचन्द्र	सं०	६००
रोहिणी व्रतोद्यापन		सं०	६०१
रोहिणी व्रतोद्यापन पूजा		सं०	८८२
रोहिणी स्तवन		हि०	७५५

ल

लक्ष्मी विलास	पं० लक्ष्मीचन्द	हि०	६७४
लक्ष्मी सुव्रत कथा		सं०	४७७
लक्ष्मी स्तोत्र		सं०	७७५, ६६६, १०५२, १०६६, १०६४, १०६७, ११२७
लक्ष्मी स्तोत्र	पद्मप्रभदेव	सं०	७५५, ७५६, ८७६, १०६५, १०७४, १०७८, ११२४
लक्ष्मी स्तोत्र गायत्री		सं०	७५६
लक्ष्मी स्तोत्र सटीक		सं०	७५६, ११४०
लग्न चन्द्रिका	काशीनाथ	सं०	५६३
लग्न फल		हि०	१११५
लघियस्त्रय टीका	यममचन्द्र सूरि	सं०	११६७
लघु आलोचना		सं०	११३६
लघु उप सर्गवृत्ति		सं०	५१८
लघुक्षेत्र समास		प्रा०सं०	५१८
लघुक्षेत्र समास विवरण	रत्नशेखर सूरि	प्रा०	७८
लघुक्षेत्र समास वृत्ति	रत्नशेखर	सं०	११६७
लघु चाणक्य		हि०	११६८
लघु चाणक्य नीति (राजनीति शास्त्र)	चाणक्य	सं०	६६३
लघु चाणक्य नीति शास्त्र भाषा	काशीराम	हि०	१०८७

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
लघु जातक	—भट्टोत्पल	सं०	५६३
लघु जात टीका		सं०	५१८
लघु तत्वार्थ सूत्र		सं०	११२४
लघुनाम माला	—हर्षकीर्ति	सं०	५१८
लघु पंच कल्याणक पूजा	—हरिभान	हि०	६०१
लघु बाहुबलि बेलि	—शांतिदास	हि०	११३८
लघु शेखर (शब्देन्दु)		सं०	५१८
लघु शांति पाठ	-सूरि मानदेव	सं०	६०१
लघु शांतिक पूजा		सं०	६६६
लघु शांतिक पूजा	—पद्मनन्दि	सं०	६०२
लघु शांतिक विधि		सं०	६०२
लघु सहस्र नाम		सं०	७५६, १०३५, ११५४
लघुसामायिक	—किशनदास	हि०	१०८२
लघु सिद्धचक्र पूजा	—भ० शुभचन्द्र	सं०	६०२
लघु सिद्धान्त कौमुदी	—भट्टोजी दीक्षित	सं०	५१७
लघु सिद्धान्त कौमुदी	—वरदराज	सं०	५१६
लघु संग्रहणी सूत्र		प्रा०	७६
लघु स्तोत्र टीका		सं०	७५६
लघु स्तोत्र टीका	—भाव शर्मा	सं०	७५६
लघु स्तोत्र विधि		सं०	७६५
लघु स्नपन		सं०	६६६
लघु स्नपन विधि		सं०	६०२, ११३६
लघु स्नपन विधि	—ब्र० ज्ञानसागर	सं०	११६७
लघु स्वयंभू स्तोत्र		सं०	६८२
लघु स्वयंभू स्तोत्र	—देवनन्दि	सं०	७५७
लघु स्वयंभू स्तोत्र टीका		सं०	७५७
लब्धि विधान	—भ० सुरेन्द्रकीर्ति	सं०	६०२
लब्धि उद्यापन		सं०	६०२
लब्धि उद्यापन पाठ		सं०	६०२
लब्धि विधान कथा	—पं० अभ्रदेव	सं०	४३४, ४७६, ४७६, ११३६
लब्धि व्रत कथा	—किशनसिंह	हि०	४७६, ४७७
लब्धि विधान पूजा	—हर्षकीर्ति	सं०	६०३
लब्धि विधानोद्यापन पाठ		सं०	६०३
लब्धि विधानोद्यापन पूजा		सं०	६०२
लब्धिसार		हि०	१०४३
लब्धिसार भाषा वचनिका	—पं टोडरमल राज०		७८, ११६७
लब्धिसार क्षपणासार भाषा वचनिका	—पं०टोडरमल राज०		७६
लाटी संहिता	—पांडे राममल्ल	सं०	६६०
लाभालाभ मन संकल्प	—महादेवी	सं०	६०२
लावणी	—जिनदास	हि०	१०७५
लावणी	—रूडा गुरुजी	हि०	१०७५
लाहागीत		हि०	६७८
लिपियां		हि०	१११५
लिंगानुशासन (शब्द संकीर्ण स्वरूप)	धनंजय सं०		५२६
लिंगानुसारोद्धार		सं०	५३६
लीलावती	—भास्कराचार्य	सं०	११६७
लीलावती भाषा	- लालचन्द सूरि	हि०	११६७
लीलावती टीका	—दैवज्ञ रामकृष्ण	सं०	११६६
लुकमान हकीम की नसीहत		हि०	६६४
लुंकामत निराकरण रास	—वीरचन्द	हि०	११४४
लूण पानी विधि		प्रा०	१०२६
लूहरी	—रामदास	हि०	१०६३
लूहरी	—सुन्दर	हि०	८७७
लेख पद्धति		सं०	११६६
लेश्या		प्रा०	१०४७
लेश्या वर्णन		हि०	६७२
लेश्यावली	—हर्षकीर्ति	हि०	११५५
लोंकामत निराकरण रास	—सुमतिकीर्ति	हि०	१६०
लोहरी दीतवार कथा	—भानुकीर्ति	हि०	१०५६
लंघन पथ्य निर्णय		सं०	५८५

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
लंपक पंचासिका	—जिनदास	हि०	१०३५

व

वचनकोश	—धुलाकीदास	हि०	५३६
वज्रदली	—पं० वल्लह	प्रा०	६६४
वज्र उत्पत्ति वर्णन		सं०	१२००
वज्रनाभि चक्रवर्ती वैराग्य भावना		हि०	२१६
वज्रपंजर स्तोत्र यंत्र सहित			७५७
वज्र पंजर स्तोत्र		सं०	१०८०
वज्र सूची (उपनिषद)	श्रीवराचार्य	सं०	१२०
वन्देतान जयमाल		हि०	११०७
वन्देतान जयमाल	—माधवनन्दी	सं०	८७५
वर्तमान चौबीसी पूजा	—चुन्नीलाल	हि०	६०३
वर्द्धमान काव्य	—जयमित्र हल	अप०	३८६
वर्द्धमान चरित्र	—श्रीधर	अप०	३८६
वर्द्धमान चरित्र	—असग	सं०	३८६
वर्द्धमान चरित्र	—मुनि पद्मनन्दि	सं०	३८६
वर्द्धमान चरित्र	—विद्याभूषण	सं०	३८६
वर्द्धमान चरित्र	—सकलकीर्ति	सं०	३८६
वर्द्धमान पुराण		हि०	२६६
वर्द्धमान पुराण	—कवि असग	सं०	२६६
वर्द्धमान पुराण	—नवल शाह	हि०	२६६, २६७
वर्द्धमान पुराण	—सकलकीर्ति	सं०	२६७
वर्द्धमान पुराण भाषा		हि०	२६६
वर्द्धमान पुराण भाषा	—नवलराम	हि०	२६८
वर्द्धमान पूजा	—सेवकराम	हि०	६०३
वर्द्धमान रास	—वर्द्धमान कवि	हि०	६४१
वर्द्धमान विलास स्तोत्र	—जगद् भूषण	सं०	७५७
वर्द्धमान समवशरण वर्णन	—ब्र० गुलाल	हि०	१६२
वर्द्धमान स्तुति		हि०	७५७
वर्द्धमान स्तोत्र		सं०	७७४, ६५८, ११२५
वर्द्धमान स्वामी कथा	—मुनि श्री ब्रह्मनन्दि	सं०	४७७
वर्ष तंत्र	—नीलकण्ठ	सं०	५६३
वर्षफल	—आसन	सं०	५६३
वर्षभावफल		सं०	५६३
वर्षनाम		सं०	११३५
वरांग चरित्र	—तेजपाल	अप०	३८३
वरांग चरित्र	—भ० वर्द्धमानदेव	अप०	३८३, ३८४
वरांग चरित्र	—कमलनयन	हि०	३८४
वरांग चरित्र	—पांडे लाभचन्द	हि०	३८५
वरुण प्रतिष्ठा		सं०	१२००
वशीकरण मंत्र		सं०	११११६
वसुदेव प्रबंध	—जयकीर्ति	हि०	४८४
वसुधीरचरित्र	—धीभूषण	हि०	६४५
वसुधारा		सं०	६०३
वसुधारा महाविद्या		सं०	६८६
वसुधरा स्तोत्र		सं०	७५७, ७५८, १०१७, ११५७
वसुनन्दि श्रावकाचार	—आ० वसुनन्दि	सं०	१६०, १६१
वसुनन्दिश्रावकाचार भाषा		हि०	१६२
वसुनन्दि श्रावकाचार भाषा	—ऋषभदास	हि०	१६१
वसुनन्दि श्रावकाचार भाषा	—दौलतराम	हि०	१६२
वसुनन्दि श्रावकाचार भाषा	—पन्नालाल	हि०	१६२
वसुनन्दि श्रावकाचार वचनिका		हि०	१६२
वस्तुज्ञान		सं०	११११६
व्यसनगीत		हि०	१०२५
व्रतकथा		सं०	११३६
व्रतकथा	—खुशालचन्द	हि०	१०७५
व्रतकथा कोश	—श्रुतसागर	सं०	४७७
व्रतकथाकोश	—देवेन्द्रकीर्ति	सं०	४७७
व्रतकथाकोश	—ब्र० नेमिदत्त	सं०	४७७

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्रसंख्या
व्रतकथाकोश	मल्लिभूषण	सं०	४७७
व्रतकथाकोश	गु० रामचन्द्र	सं०	४७७
व्रतकथाकोश	सकलकीर्ति	सं०	४७८
व्रतकथाकोश	पं० अभ्रदेव	सं०	४७८, ४७९, ४८०
व्रतकथाकोश	खुशालचन्द	हि०	४८०, ४८१, ४८२
व्रतकथा रासो		हि०	४८२
व्रतकथा संग्रह		सं०	४८३
व्रतकथा संग्रह		हि०	४८३
व्रतकथा संग्रह		हि०	४८४
व्रत निर्णय		सं०	१६४, ६०५
व्रत पूजा संग्रह		सं०	६०५
व्रतविधान		सं०	६०५
व्रतविधान		सं०	६०६
व्रतविधान पूजा	अमरचन्द	हि०	६०६
व्रतविधानरासो	दिलाराम	हि०	६४१
व्रतविधानरासो	दौलतराम पाटनी	हि०	६८६
व्रत विवरण		हि०	१०६८
व्रत समुच्चय		हि०	१६४
व्रतसार		सं०	१६४, ६०७, १०८२, ११३६
व्रत स्वरूप	भ० सोमसेन	सं०	११६७
व्रतोद्यापन संग्रह		सं०	६०७
व्रतोद्यापन पूजा संग्रह		सं०	६०७
व्रतोद्योतन श्रावकाचार	अभ्रदेव	सं०	१६४ ६०८, ६५७
व्रतों का व्यौरा		हि०	१६४,
वृत्त चन्द्रिका	कृष्णकवि	हि०	५६८
वृत्त रत्नाकर	भट्ट केदार	सं०	५६८, ५६९
वृत्त रत्नाकर	भट्ट केदार	प्रा०	५६९
वृत्त रत्नाकर टीका	पं० सोमचन्द्र	सं०	५६९
वृत्त रत्नाकर टीका	जनार्दन विबुध	सं०	५६९
वृत्त रत्नाकर वृत्ति	रामसुन्दर	सं०	५६९
वृत्त रत्नाकर वृत्ति	हरि भास्कर	सं०	६००
वृत्त बंध पद्धति		सं०	११२४
वृद्ध समाति यंत्र		सं०	१०१७
वृद्धि गौतमरास		हि०	१०५५
वृन्द विनोद सतसई	वृन्दकवि	हि०	११९९
वृन्द विलास	कविवृन्द	हि०	६७६
वृन्द शतक	कवि वृन्द	हि०	६९४
वृन्द संहिता	परम विधराज	सं०	५६४
वृषभजिन स्तोत्र		सं०	९५०
वृषभदेव गीत	ब्रज मोहन	हि०	१२००
वृषभदेव का छन्द		हि०	१०३०
वृषभदेवजी छन्द		हि०	११५८
वृषभदेव लावणी	लाल	हि०	११७१
वृषभदेव वन्दना	आनन्द	हि०	१०६९
वृषभदेव स्तवन	नारायण	हि०	७६०
वृषभ स्तोत्र	पं० पद्मनन्दि	सं०	७६०
वृषभनाथ चरित्र	सकलकीर्ति	सं०	३८७, ३८८
वृषभनाथ छन्द		हि०	११४१
वृषभनाथ लावणी	मायाराम	हि०	११५८
वृहद कलिकुण्ड पूजा		सं०	११३९
वृहद गुरावली		सं०	११३८
वृहद गुरावली पूजा	स्वरूपचन्द	हि०	९०८
वृहज्जातक		सं०	५६४
वृहज्जातक टीका	वराहमिहिर	सं०	५६४
वृहद्तपागच्छ गुरावली		सं०	६५५
वृहद् तपागच्छ गुरावली	मुनि सुन्दरसूरि	सं०	६५५
वृहद् दशलक्षण पूजा	केशवसेन	हि०	९९८

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
वृहद् पुण्याहवाचन		सं०	६०८
वृहद पूजा संग्रह		सं०प्रा०	६०८
वृहद पंच कल्याणक पूजा विधान		सं०	६०८
वृहद शांतिपाठ		सं०	७६०
वृहत शांति पूजा		सं०	६०८
वृहत शांति विधान—धर्मदेव		सं०	६०८
			६०६
वृहत शांति विधि एवं पूजा संग्रह		सं०	६०६
वृहद शांति स्तोत्र		सं०	७६०
वृहद षोडशकारण पूजा		सं०	६०६, ९४८
वृहद सम्मेद शिखर महात्म्य—मनसु	सागर	हि०	६०६
वृहद सिद्धचक्र पूजा—भ० भानुकीर्ति		सं०	६०६
वृहत सिद्ध पूजा—शुभचन्द्र		सं०	१०६६
वृहद स्नपन विधि		सं०	११३६, ११९६
वृहद स्वयंभू स्तोत्र—समंतभद्र		सं०	६६३, ६६४
वाकट्टार पिंडकथा		हि०	१२००
वाक्य मंजरी		सं०	५१६
वाग्भट्टालंकार—वाग्भट्ट		सं०	५३६, ५६७
वाग्भट्टालंकार टीका—जिनवर्द्धन सूरि		सं०	५६७
वाग्भट्टालंकार टीका—वर्द्धमान सूरि		सं०	५६७
वाग्भट्टालंकार टीका—वादिराज		सं०	५६७
वाग्भट्टालंकार वृत्ति—ज्ञान प्रमोदवाचक गणि		सं०	५६७
वाच्छा कल्प		सं०	१२००
वाजनेय संहिता		सं०	१२००
वार्ता—बुलाकीदास		हि०	१०२२
वासपूज्य गीत—ब्र० यशोधर		हि०	१०२६
वासुपूज्य पूजा—रामचन्द्र		हि०	११२८
वासुपूज्य स्तोत्र—मेरुचन्द्र		सं०	११६२
वास्तु कर्म गीत		हि०	६७८
वास्तु पूजा [illegible]न		सं०	६०३
वास्तु पूजा विधि		सं०	६०३
वास्तु विधान		सं०	६०३
वास्तुराज—राजसिंह		सं०	१२००
वास्तु शास्त्र		सं०	१२०१
वास्तु स्थापन		सं०	१२०१
विक्रम चरित्र—रामचन्द्र सूरि		सं०	३८७
विक्रम चरित्र चौपई—भाऊ कवि		हि०	३८७
विक्रमलीलावती चौपई—जिनचन्द्र		हि०	४८५
विक्रमसेन चउपई—विक्रमसेन		हि०	६५५
विचारषड्त्रिंशिका		सं०	६४२
विचारषट् त्रिंशिकाधचूरि		स०	१६३
विचारषड्त्रिंशिकास्तवन टीका—राजसागर		प्रा०हि०	७५८
विचारसार षडशीति		स०	६७५
विचार सूक्ष्मी		सं०	१६३
विचार संग्रहणी वृत्ति		प्रा०	८०
विचारामृत संग्रह		सं०	६७४
विजयचन्द चरित्र		प्रा०	३८७
विजयमंद्र क्षेत्रपाल गीत—ब्र० नेमिदास		हि०	१२०१
विजय यंत्र			६२३
विजय मंत्र		सं०	६२३
विजय यंत्र परिकर		सं०	१११६
विजय यंत्र प्रतिष्ठा विधि		सं०	१११६
विज्जु सेठ विजया सती रास—रामचन्द		हि०	६४१
विदग्ध मुखमंडन—धर्मदास		सं०	२६०,
विदग्ध मुख मंडन टीका—विनयसागर		सं०	१२०१

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
विदग्ध मुख मंडन	—शिवचन्द	सं०	२११
विदुज्जन बोधक	—सखी पन्नालाल दूनीवाला राज०		१६३, १२०२
विद्वद्भूषण काव्य		सं०	३८८
विदरभी चौपई	—पारसदत्त	हि०	४८५
विदेहक्षेत्र पूजा		हि०	६०४
विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजा	—अमरचन्द हि०		६०४
विद्यमान बीस विरहमान पूजा	—जौहरीलाल हि०		६०४
विद्यानुशासन	—मल्लिषेण	सं०	६२३
विद्याविलास प्रबंध	—आशासुन्दर	हि०	७५८
विद्युत्प्रभ गीत		हि०	११४०
विधान विधि		स०	११५६
विनती	—अर्खमल	हि०	१०७८
विनती	—अजयराज	हि०	८७७
विनती	—ऋषभदेव —ब्र० देवचन्द	हि०	११५६
विनती	—कनककीर्ति	हि०	८७६, ११४८,
विनती	—कुमुदचन्द्र	हि०	८७६, ११३२
विनती	—गोपालदास	हि०	६८२
विनती	—ब्र० जिनदास	हि०	८७६, ११३५
विनती	—दीपचन्द	हि०	११०५
विनती नेमिकुमार	—भूधरदास	हि०	१०६५, ८७७
विनती	—रामचन्द्र	हि०	६५५
विनती	—रामदास	हि०	८७७ १०६३,
विनती	—रायचन्द	हि०	८७६
विनती	—रूपचन्द	सं०	८७६
विनती	—वृन्द	हि०	१०७८
विनती का अंग	—दादूदयाल	हि०	६६०
विनती आदीश्वर	—त्रिलोककीर्ति	हि०	७५८
विनती पाठ संग्रह		हि०	१०३६
विनती संग्रह	—देवा ब्रह्म	हि०	६७५, ६७६, ७५८
विनती संग्रह		हि०	११५७
विपाक सूत्र		प्रा०	८०
विमलनाथ पुराण	—ब्र० कृष्णदास	सं०	२६६
विमलनाथ पुराण भाषा	—पांडे लालचन्द हि०		२६६
विमलनाथ पूजा		हि०	११२६
विमान पंक्ति पूजा		सं०	६०४
विमान पंक्ति व्रतोद्यापन	—आ० सकलभूषण सं०		६०४
विमान शुद्धि पूजा		स०	६०४, ६६६
विमान शुद्धि शांतिक विधान	—चन्द्रकीर्ति सं०		६०४
विरदावली		हि०	६५५
विरदावली		सं०	६५५
विरह दोहे	—लालकवि	हि०	११४५
विल्हण चौपई	—कवि सारंग	हि०	४८५
विवाह पटल		स०	६०५, ५६४
विवाह पद्धति		सं०	६०५, ५६४
विवाह विधि		सं०	६०५
विविध मंत्र संग्रह		सं०	६२३
विवेक चिन्तामणि	—सुन्दरदास	हि०	१०१५
विवेक चौपई	—ब्र० गुलाल	हि०	१०२२
विवेक चौबीसा		हि०	१०६६
विवेक छत्तीसी		हि०	१०४३
विवेक जकड़ी	—जिणदास	हि०	६८४, १०१६, १०२३
विवेक विलास	—जिनदत्त सूरि	सं०हि०	१६३, ६७६
विवेकशतक	—थानसिंह ठोल्या	हि०	६६४

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
विशालकीर्ति गीत—वेलह		हि०	६६१
विशेषसत्ता त्रिभंगी—नेमिचन्द्राचार्य		प्रा०	८०
विषापहार छप्पय—विद्यासागर		हि०	१००३
विषापहार—धनंजय		सं०	७५६, ७५६, ७७१, ७७३, ७६५, ६५३, ६६६, १०२२, १०३५, १०६५, ११२७, ११२८
विषापहार टीका—नागचन्द्र		सं०	७५६
विषापहार टीका—प्रभाचन्द्र		सं०	७५६
विषापहार स्तोत्र		हि०	१०३७, ११२६
विषापहार स्तोत्र भाषा—अखयराज		हि०	७५६
विषापहार स्तोत्र भाषा—अचलकीर्ति		हि०	४५, ७६०, ८७४, १००५, १११४, ११२२, ११४८
विष्णुकुमार कथा.		सं०	४८७, ११६१
विष्णु पुराण		हि०	३००
विष्णुपंजर स्तोत्र		सं०	१०४२
विष्णु सहस्रनाम		सं०	१०१७
विसर्ग सन्धि		सं०	५१६
विंश विद्यमान तीर्थंकर पूजा		सं०	१११८
विंश स्थान		हि०	१६४
वीतराग देव चैत्यालय शोभावर्णन		हि०	१२०२
वीतराग स्तवन		सं०	७६०
वीतराग स्तवन—पद्मनन्दि		स०	६६४, ११२५
वीरचन्द बूहा—लक्ष्मीचन्द		हि०	६८३
वीर जिणंद		हि०	६८१
वीर जिन स्तोत्र—अभयसूरि		प्रा०	७६०
वीर स्तुति		प्रा०	७६०
वीरनाथ स्तवन		हि०	६८८
वीरपरिवार		हि०	१०६८
वीरविलास—नथमल		हि०	६६१
वीरविलास—वीरचन्द		हि०	११३२
वेद विवेक		हि०	१०३४
वेदान्त संग्रह		सं०	२६१
वेदी एवं अष्टपताका स्थापन नवग्रह पूजा		स०	६०५
वेलि क्राम विडम्बना—समयसुन्दर		हि०	१२०२
वैताल पच्चीसी		हि०	४६३, ४६४
वैताल पंचविंशतिका—शिवदास		सं०	४६३
वैदिक प्रयोग		सं०	५३६
वैद्यक ग्रंथ—नयनसुख		हि०	११६७
वैद्यक प्रश्न संग्रह		सं०	५८८
वैद्य मनोत्सव—नयनसुख		हि०	५८८, ५८६
वैद्य मनोत्सव—केशवदास		सं०	५८८
वैद्य मनोत्सव		ह०	६८८
वैद्य मनोत्सव—नयनसुख		हि०	६६२, १००६
वैद्य रत्न भाषा—गोस्वामी जनार्दन भट्ट		सं०	५८६
वैद्य वल्लभ—गोस्वामी जनार्दन		सं०	५८६
वैद्य वल्लभ—हस्तिरुचि		सं०	५८६
वैद्य वल्लभ टीका—हस्ति रूचि		हि०	५६०
वैद्य विनोद		सं०	५६०
वैद्य रसायन		हि०	११७०
वैद्यवल्लभ—लोलिम्बिराज		सं०	१०५७
वैद्यकग्रन्थ		सं०	५८५
वैद्यकग्रन्थ		सं०	५८६
वैद्यकनुस्खे		सं०	५८६
वैद्यकशास्त्र		हि०	५८६

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
वैद्यकशास्त्र		सं०	५८६
वैद्यक समुच्चय		हि०	५८६
वैद्यकसार		सं०	५८६
वैद्यकसार	हर्षकीर्ति	सं०	५८६
वैद्यकजीवन	लोलिम्बराज	सं०	५८६, ५८७
वैद्यकटीका	हरिनाथ	सं०	५८८
वैद्यकटीका	रुद्रभट्ट	सं०	५८८
वैराग्यउपजावन अंग	चरनदास	हि०	१०५६
वैराग्य गीत		हि०	१०१६
वैराग्य गीत	ब० यशोधर	हि०	१०२५
वैराग्यछत्तीसी		हि०	१०४७, १०५६
वैराग्य जकड़ी		हि०	१०५६
वैराग्य बत्तीसी		हि०	२१६
वैराग्यशतक		प्रा०	२१६
वैराग्य शतक	यानसिंह डोल्या	हि०	२१६
वैराग्य शांतिपर्व (महाभारत)		सं०	१२०२
वैराग्य सोड़श	द्यानतराय	हि०	१०६७
वंशसेन सूत्र	वंशसेन	सं०	५६०
वंदना जखडी		हि०	७५७

श

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
शकुन वर्णन		हि०	५६४
शकुन विचार		सं०	५६४
शकुन विचार		हि०	५६५
शकुनावली	गौतमस्वामी	प्रा०	५६५
शकुनावली	गौतमस्वामी	सं०	५६५
शकुनावली	गौतमस्वामी	हि०	६४४, ६८२
शत अष्टोत्तरी कवित्त	भैया भगवतीदास	हि०	१००५
शतक संवत्सरी		हि०	१११६
शतपदी		सं०	६५५
शतरंजक्रीडा विधि		हि०सं०	१२०२
शत्रुंजय उद्धार	नयनसुन्दर	हि०	६०६
शत्रुंजय गीत		हि०	१०२५
शत्रुंजय गीत गिरिस्तवन	केसराज	हि०	७६०
शत्रुंजय चित्र प्रवाह		हि०	१०१७
शत्रुंजय तीर्थ महात्म्य	धनेश्वर सूरि	सं०	१२०२
शत्रुंजय तीर्थ स्तुति	ऋषभदास	हि०	७६१
शत्रुंजय भास	विलास सुन्दर	हि०	७६१
शत्रुंजय मंडल	सुठकर	सं०	७६१
शत्रुंजय मंडल		हि०	९५५
शत्रुंजय स्तवन		सं०	७६१
शत्रुंजय रास	समय सुन्दर	हि०	६४२, ६६७
शत्रुंजय स्तवन	समयसुन्दर	हि०	१०६
शनिश्चर कथा		हि०	१०४२
			१०४६, १०७७, १११३
शनिश्चर देव की कथा		हि०	८७७, ११५३
शब्दकोश	धर्मदास	सं०	५३६
शब्दभेद प्रकाश		सं०	१२०२
शब्दभेद प्रकाश	महेश्वर	सं०	५१६
शब्दरूपावली		सं०	५१६
शब्दानुशासन	हेमचन्द्राचार्य	सं०	१२०३
शब्दानुशासन वृत्ति		प्रा०सं०	५४०
शब्दालंकार दीपक	पौंडरीक रामेश्वर	सं०	६००
शतश्लोक टीका	मल्लभट्ट	सं०	३५८
शतश्लोकी टीका	त्रिमल्ल	सं०	८०
शलाका पुरुष नाम निर्णय	भरतदास	हि०	१६५
शाकटायन व्याकरण	शाकटायन	सं०	५१६
शार्ङ्गधर		सं०	५१६
शार्ङ्गधर टीका		हि०	१०७६
शार्ङ्गधर दीपिका	आढमल्ल	सं०	५६१
शार्ङ्गधर पद्धति	शार्ङ्गधर	सं०	५१६
शार्ङ्गधर संहिता	शार्ङ्गधर	सं०	५१६
शारङ्गधर संहिता	दामोदर	सं०	१०२३
शारदीय नाम माला	हर्षकीर्ति	सं०	५४०

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
शालिभद्र चौपई	—जिनराज सूरि	हि०	४८७, ३९१, ९४९, ९५४, ९७४
शालिभद्र चरित्र	—पं० धर्मकुमार	सं०	३९१
शालिभद्र चौपई	—मतिसागर	हि०	१०१३, ११३१
शालिभद्र चौपई	—सुमति सागर	हि०	११२८
शालिभद्र चौपई		हि०	४८७
शालिभद्र चौपई	—विजयकीर्ति	हि०	४८८
शालिभद्र धन्ना चौपई	—सुमति सागर	हि०	४८८
शालिभद्र धन्ना चउपई	—गुण सागर	हि०	९८९
शालिभद्र रास		हि०	१०३१
शालि होत्र		सं०	११२७
शाश्वत जिन स्तवन		प्रा०	७५१
शास्त्रदान कथा	—अभ्रदेव	सं०	४३४
शास्त्र पूजा		हि०	९०९
शास्त्र पूजा	—ब्रह्म जिनदास	हि०	१०५८
शास्त्रपूजा	—ज्ञानतराय	हि०	१०११, १०७४, १०७७
शास्त्र पूजा	—भूधरदास	हि०	१०११
शास्त्र समुच्चय		सं०	१६५
शास्त्र सूची		हि०	६७६
शांतिकाभिषेक		सं०	९०९, ९१०
शांतिकर स्तवन		प्रा०	७६१
शान्तिक विधि		स०	९१०
शांतिक विधि	—धर्मदेव	सं०	९९०
शांति गीत		हि०	९७४
शांति चक्र पूजा		सं०	९१०, ९११, १०२२
शांति चक्र मंडल पूजा विधि		सं०	९११
शांति जिन स्तवन	—गुण सागर	हि०	७६१
शांति जिन स्तवन		प्रा०	७६१
शांतिनाथ चरित्र		स०	३८९
शान्तिनाथ चरित्र	—अजितप्रभ सूरि	सं०	३८९
शान्तिनाथ चरित्र	—आनंद उदय	हि०	२८९
शान्तिनाथ चरित्र	—भावचन्द्र सूरि	स०	३८९
शान्तिनाथ चरित्र	—सकलकीर्ति	स०	३८९, ३९०
शान्तिनाथ चरित्र	—मुनिदेव सूरि	सं०	३९१
शान्तिनाथ चरित्र भाषा	—सेवाराम	हि०	३९१
शान्तिनाथ पुराण	—सेवाराम पाटनी	हि०	३०१
शान्तिनाथ पूजा		सं०	९११
शान्तिनाथ पूजा	—ब्र० शांतिदास	सं०	९११
शान्तिनाथ की बारह भावना		हि०	२१९
शान्तिनाथ यंत्र			११७२
शान्तिनाथ की लावणी		हि०	११५८
शान्तिनाथ स्तवन		हि०	१०८३
शान्तिनाथ स्तवन	—उदय सागर सूरि	हि०	७६१
शान्तिनाथ स्तवन	पद्मनन्दि	स०	७६२
शान्तिनाथ स्तवन	—मालदेव सूरि	सं०	७६२
शान्तिनाथ स्तुति		सं०	७६२
शान्तिनाथ स्तोत्र		सं०	७६२, ९५८, ११२५
शान्तिनाथ स्तोत्र	—मेरुचन्द्र	सं०	११६१
शान्ति पाठ		हि०	९१०, ९९३, ११२९
शान्ति पाठ	—धर्मदेव	सं०	९१०
शान्ति पुराण		सं०	३००
शांति पुराण	—पं० आशाधर कवि	सं०	३००
शान्ति पुराण	—ठाकुर	हि०	३००
शान्ति पुराण	—सकल कीर्ति	सं०	३०१
शान्ति पुराण भाषा		हि०	३०१
शान्ति पूजा मंत्र		सं०	६२३

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
शांतिक पूजा विधान		सं०	६१०
शांतिक पूजा विधान	—धर्मदेव	सं०	६१०
शान्ति मंत्र		सं०	६११
शान्ति स्तवन	—गुण सागर	हि०	७२१
शांति होम विधान	—आशाधर	सं०	६११
शांति होम विधान	—उपा० ब्योमरस	सं०	११७१
शिक्षा	—मनोहरदास	सं०	१०८३
शिक्षा छंद		हि०	१०५१
शिखर गिरिरास		हि०	६४१
शिखर विलास	—केशरीसिंह	हि०	१००५
शिखर विलास	—लालचन्द	हि०	६७६
शिव कवच		सं०	११५३
शिव छन्द		हि०	११५३
शिव मन्दिर स्तोत्र टीका		सं०	७६२
शिव विधान टीका		हि०सं०	१६५
शिशुपाल वध	—माघ कवि	सं०	३६१, ३६२
शिशुपाल वध टीका	—मल्लिनाथ सूरि	सं०	३६२
शीघ्रबोध	—काशीनाथ	सं०	५६६, ५६७, ६११
शीघ्रफल		हि०	११११
शीतलनाथ पूजा विधान		सं०	६११
शीतलनाथ स्तवन	—रायचन्द	हि०	७६२
शील कथा	—भारामल्ल	हि०	४८८, ४८६, १०७३, ११२०
शील कथा	—भैरोलाल	हि०	४६०
शील कल्याणक व्रत कथा		सं०	११३६
शील चूनडी	—मुनि गुणचन्द	हि०	११२४
शील तरंगिणी(मलय सुन्दरी कथा)		अखयराम लुहाड़िया हि०	४६०
शीलनोरास	—विजयदेव सूरि	हि०	१०१५
शील पच्चीसी		हि०	६४३
शील पुरन्दर चौपई		हि०	४६०
शील प्रकाश रास	—पद्म विजय	हि०	६४१
शील प्राभृत	—कुन्दकुन्दाचार्य	प्रा०	२१७
शील बत्तीसी		हि०	६८४
शील बत्तीसी	—अकमल	स०	१०१०
			६४४
			११५२
शील बावनी	—मालकवि	हि०	१०१५
शील महात्म्य	—चन्द	हि०	१०७६
शील महिमा	—सकलभूषण	हि०	६८३
शीलरथ	—शुभचन्द	हि०	११०५
शील रास		हि०	११०३
शीलरास	—विजयदेव सूरि	हि०	६७८, ६८४
शील विलास		सं०	६७७
शील विषये वीर सेन कथा		सं०	१२०३
शील व्रत कथा	—मलूक	हि०	४८३
शील सुदर्शन रास		हि०	६४१
शील सुन्दरी प्रबन्ध	—जयकीर्ति	हि०	४६०
शीलोपदेश माला	—जयसिंह मुनि	हि०	६५७
शीलोपदेश माला	—सोमतिलक	सं०	१६५
शीलोपदेश रत्नमाला	—जसकीर्ति	प्रा०	४६०
शीलोपदेश माला	—मेरुसुन्दर	सं०	४६०
शुकदेव दीक्षित दार्ता		सं०	६६५
शुक्ल पंचमी व्रतोद्यापन		सं०	६१२
शुद्ध कोष्टक		सं०	१११७
शूल मंत्र		सं०	१११६
शोभन स्तुति		सं०	१०२६
शोभन स्तुति		हि०	७६३
शंकर पार्वती संवाद		सं०	१२०२
शंकर स्तोत्र	—शंकराचार्य	सं०	१११९
श्लोकवार्तिक	—विद्यानन्दि	सं०	८०
श्लोकवार्तिका लंकार		सं०	८०
श्लोक संग्रह		सं०	६७६
श्लोक संग्रह		सं०हि०	६७७
श्लोकावली		सं०	७६३
श्वास भैरव रस		सं०	५६१

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
श्वेताम्बर पट्टावली		हि०	६५६
श्वेताम्बर मत स्तोत्र संग्रह		प्रा०	७६१

ष

षट् कर्म छंद		हि०	११३५
षट्कर्मरास—ज्ञान भूषण		हि०	६४४
षट् कर्म वर्णन		सं०	१२०३
षट् कर्मोपदेश रत्नमाला—अमरकीर्ति		अप०	१६७
षट् कर्मोपदेश रत्नमाला—सकलभूषण		सं०	१६८
षट् कर्मोपदेश रत्नमाला भाषा—पांडे लालचन्द		हि०	१६८,१६९
षट् कारक —विनयचरनन्दि आचार्य		सं०	५१९
षट् विवरण		सं०	५१९
षट् कारिका		सं०	५२०
षष्ठ पाद		सं०	५२०
षट्काल भेद वर्णन		सं०	११४०
षट् त्राणमय स्तवन—जिनकीर्ति		सं०	७६३
षट् त्रिंशति		सं०	६७७
षट् त्रिंशति का सूत्र		सं०	६७७
षट् दर्शन		सं०	२६१, ४३३
षट् दर्शन के छिनवे पाखण्ड		हि०	२६२
षट् दर्शन पाखण्ड		हि०	१०३६
षट् दर्शन वचन		सं०	२६१
षट् दर्शन विचार		सं०	२६१
षट् दर्शन समुच्चय		सं०	२६१
षट् दर्शन समुच्चय—हरिभद्र सूरि		सं०	२६१, २६२
षट् दर्शन समुच्चय टीका		सं०हि०	२६२
षट् दर्शन समुच्चय टीका—राजहंस		सं०	२६२
षट् द्रव्य विवरण		हि०	९५९
षट् पदी—शंकराचार्य		सं०	७६३
षट् पाठ		हि०	६७७
षट् पाहुड- आ० कुन्दकुन्द		प्रा०	२१७, २१८,११०२
षट् पाहुड टीका		हि०ग०	२१९
षट् पाहुड भाषा—जयचन्द छाबड़ा		हि०ग०	२१९
षट् पाहुड भाषा—देवीसिंह छाबड़ा		हि०	२१९
षट् पाहुड वृत्ति—श्रुतसागर		सं०	२२०,२२१
षट् पंचाशिका		सं०	१००९
षट् पंचाशिका—भट्टोत्पल		सं०	५६७
षट् प्रकार मंत्र		हि०	६२३
षट् रस कथा—ललितकीर्ति		सं०	४७९
षट् रस कथा—शिव मुनि		सं०	४७९
षट् लेश्या गाथा		हि०	९५९
षट् लेश्या वर्णन		हि०	११११
षट् लेश्या श्लोक		हि०	१०२६
षट् वर्ग फल		सं०	५६८, १११९
षड् भक्ति		सं०	१०५८
षडावश्यक		प्रा०	१७०
षडावश्यक		हि०	४९१
षड़ावश्यक बालावबोध		प्रा०सं०	१७०
षडावश्यक बालावबोध—हेमहंस गणि		हि०	१७०
षडावश्यक बालावबोध टीका		प्रा०हि०	१७०
षडावश्यक विवरण		स०	१७१
षड् शीतिक शास्त्र		सं०हि०	१७०
षष्ठि योग प्रकरण		स०	५६८
षष्ठि शतक - भंडारी नेमिचन्द्र		प्रा०	७६३
षष्ठि संवत्सरी		सं०	९८२
षष्ठि संवत्सरी—दुर्गदेव		सं०	५६८
षष्ठि संवत्सर फल		सं०	५६८
षोड़शकारण		सं०	१०९४
षोड़शकारण कथा—भैरुदास		हि०	११२३
षोड़शकारण कथा – ललित कीर्ति		सं०	४७९
षोडशकारण जयमाल		सं०	९१४
षोडशकारण जयमाल रइधू		अप०	९१४

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
षोडशकारण जयमाल वृत्ति	—शिवजीलाल	प्रा०सं०	६१५
षोड़शकारण दशलक्षण जयमाल	रइधू	अप०	१७१
षोड़शकारण पूजा		सं०	६१५,
षोड़शकारण पूजा मंडल विधान	—टेकचन्द	हि०	६१५ १०२८
षोड़शकारण पूजा	—सुमति सागर	सं०	१०८४
षोड़शकारण भावना	—पं० सदासुख कासलीवाल	हि०	१७१
षोड़शकारण व्रतोद्यापन		हि०	६६८
षोड़शकारण व्रतोद्यापन	—ज्ञानसार	सं०	६१५
षोड़शकारण व्रतोद्यापन पूजा	—सुमति सागर	हि०	६१५ ६१६
षोड़शकारण व्रतोद्यापन		सं०	६१६
षोड़शकारण व्रतोद्यापन जयमाल		प्रा०	६७८
षोड़श नियम		सं०	६५०
षोडशयोग टीका		सं०	२२०
भ० सकलकीर्तिनुरास	—ब्र० सांवल	हि०	६५६

स

सकल प्रतिबोध	—दौलतराम	हि०	७६३
सकलीकरण		सं०	६१६, ६६६
सकलीकरण विधान		सं०	६१६,
सकलीकरण विधान		सं०	६१७, ९६४, ११३६
सकलीकरण विधि		हि०	६१७
सकलीकरण विधि		सं०	६१७
सखियारास	—कोल्हा	हि०	१०८६
सगर चरित्र	—दीक्षित देवदत्त	सं०	४०६
सगर प्रबन्ध	—आ० नरेन्द्रकीर्ति	हि०	४६१
सज्जन चित्त वल्लभ		हि०	६६७, १०५७
सज्जन चित्त वल्लभ		सं०	११३५
सज्जन चित्त वल्लभ	—मल्लिषेण	सं०	१०८०, १२०४
सज्झाय		हि०	६८५, १०३८, १११३
सज्झाय	—समय सुन्दर	हि०	७६३
सज्झाय एवं बारहमासा		हि०	६७८
सत्तर भेदी पूजा		हि०	६१७
सत्तरी कर्म ग्रन्थ		प्रा०	१२०४
सत्तरी रूपठाणा		प्रा०	१२०४
सतसई	—वृंदावन	हि०	६७७
सत्ता त्रिभंगी	—आ० नेमिचन्द्र	प्रा०	८०
सत्ता स्वरूप		हि०	८१
सत्तासी दूहा	—बीरचन्द	हि०	११२३
सदयवच्छसावलिंगा		हि०	१०३७, ११००
सदयवच्छ सावलिंगा चौपई		हि०	४६१
सनत्कुमार रास	—ऊदो	हि०	६४४
सन्तान होने का विचार		हि०	५६२
सन्निपात कलिका		सं०	५६१, ५६२
सप्त ऋषि गीत	—विद्यानन्दि	हि०	६७८
सप्तर्षि पूजा	—श्री भूषण	सं०	१००७
सप्तर्षि पूजा	—विश्वभूषण	सं०	६१७, ६१८
सप्तर्षि पूजा	—मनरंगलाल	हि०	६१८
सप्तर्षि पूजा	—स्वरूपचन्द	हि०	६१८
सप्त तत्व गीत		हि०	६६२
सप्त तत्व वार्ता		सं०	११४०
सप्ततिका		सं०	८१
सप्ततिका सूत्र सटीक		प्रा०	१७१
सप्तदश बोल		हि०	१७१
सप्त पदार्थ वृत्ति		सं०	८१
सप्त पदार्थी	—शिवादित्य	सं०	२६२
सप्त पदार्थी टीका	—माधव विश्वेश्वर	सं०	८१
सप्त परमस्थान पूजा		सं०	६०७
सप्त परमस्थान पूजा	—गंगादास	सं०	६१८

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
सप्त भक्ति		प्रा०	११५४
सप्त भंगी न्याय		सं०	२६२
सप्त भंगी वर्णन		सं०	२६२
सप्तव्यसन—विद्यासागर		हि०	१००३
सप्तव्यसन कथा—सोमकीर्ति		सं०	४६१, ४६२, ४६३
सप्तव्यसन कथा—भारामल्ल		सं०	४६३, ४६४
सप्तव्यसन गीत		हि०	६८१
सप्तव्यसन चन्द्रावल—ज्ञानभूषण		हि०	६६५
सप्तव्यसन चौपई		हि०	११६८
सप्तवार घटी		सं०	५६८
सप्तसमास लक्षण		सं०	५२०
सप्त स्तवन		सं०	७६३
सबद		हि०	१०५६
सभातरंग		सं०	६६६
सभाभूषण ग्रंथ—गंगाराम		हि०	१०४६
सभाविनोद (राग माला)—गंगाराम		हि०	६०६
सभाविलास		हि०	१०११
सभाशृंगार ग्रन्थ		हि०	१०४०, १०४६
समकित वर्णन		हि०	१७१
समन्तभद्र स्तुति		सं०	६६४
समन्तभद्र स्तुति—समन्तभद्र		सं०	७६३, ७६४
समयभूषण—इन्द्रनन्दि		सं०	८१
समयसार कलशा—अमृतचन्द्राचार्य		सं०	२२०, २२१, १०३२
समयसार कलशा—पाण्डे राजमल्ल		हि०	१०४१
समयसार कलशा टीका—नित्य विजय		सं०	२२२
समयसार टीका (आत्म ख्याति)—अमृतचन्द्राचार्य		प्रा०सं०	२२३, २२४, २२५
समयसार टीका—भ० देवेन्द्रकीर्ति		सं०	२२५
समयसार टीका (अध्यात्म तरंगिणी) भ० शुभचन्द्र		सं०	२२२
समयसार नाटक—बनारसीदास		हि०	२२८, २२९, २३०, २३१, २३२, २३३, २३४, ६४१, ६६२, ६६३, ६६४, ६८५, ६९१, ६९५, १०१४, १०१८, १०२२, १०३२, १०४०, १०४१, ११०३, ११५०, १०५२, १०७२
समयसार पीठिका		सं०	६६४
समयसार प्रकारण प्रतिबोध		प्रा०	२२६
समयसार प्राभृत—कुंदकुंदाचार्य		प्रा०	२२०
समयसार भाषा—रूपचन्द		हि०	२२८
समयसार भाषा टीका—राजमल्ल		हि०	२२६, २२७
समयसार वृत्ति—प्रभाचन्द		सं०	२२५
समयसार—रामचन्द्र सोमराजा		सं०	५६८
समवशरण पूजा—रूपचन्द		हि०	१०१३, ११२०
सम्यक्त्व कौमुदी		स०	६५०
सम्यक्त्व कौमुदी		हि०	६६१
सम्यक्त्व कौमुदी—धर्मकीर्ति		सं०	४६४
सम्यक्त्व कौमुदी—भ० खेता		सं०	४६५
सम्यक्त्व कौमुदी—जोधराज गोदिका		हि०	४६५, ४६६, ४६७, ४६८
सम्यक्त्व कौमुदी—विनोदीलाल		हि०	४६८
सम्यक्त्व कौमुदी—जगतराय		हि०	४६६
सम्यक्त्व कौमुदी भाषा—मुनि दयाचन्द		हि०	४६८
सम्यक्त्व कौमुदी कथा		सं०	४६६, ५००, ५०१

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
सम्यक्त्व कौमुदी		हि०	५००, ६७७
सम्यक् चारित्र पूजा	—नरेन्द्रसेन	सं०	६६६
सम्यक्त्व गीत		हि०	६७८
सम्यक्त्व चिंतामणि		सं०	६२६
सम्यग्दर्शन पूजा	—बुधसेन	सं०	६६०
सम्यक्त्व पच्चीसी	—भगवतीदास	हि०	११५१
सम्यक्त्व प्रकाश भाषा	—डालूराम	हि०	१७२
सम्यक्त्व बत्तीसी	—कंवरपाल	हि०	१७२
सम्यक्त्व रास	—ब्र० जिणदास	हि०	११४१
सम्यक्त्व लीला विलास कथा	—विनोदीलाल	हि०	५०१
सम्यक्त्व सप्त षष्टि भेद		प्रा०	१७३
सम्यग्दर्शन कथा		सं०	५०१
समवसरण की आरती		सं०	६२२
समवशरण पाठ	—रेखराज	सं०	७६४
समवशरण मंगल	—मायाराम	हि०	७६४
समवशरण स्तोत्र	—विष्णुसेन	सं०	७६४
समवशरण स्तोत्र		सं०	७६४,७६५
समवशरण मंगल चौबीसी पाठ	—धानसिंह ठोल्या	हि०	६२२
समवशरण पूजा	—पन्नालाल	हि०	६१८
समवशरण पूजा	—रूपचन्द	सं०	६१६
समवशरणपूजा	—विनोदीलाल लालचन्द	हि०	६१६ ६२०, ६२१ ६२२
समवशरणपूजा	—लालजीलाल	हि०	११२०
समवशरण मंगल	—नथमल	हि०	१०४५
समवश्रुत पूजा	—शुभचन्द्र	सं०	६२२
समवशरण रचना		हि०	६२२
समवशरण विधान	—पं० हीरानन्द	हि०	६२१
समवायांग सूत्र		प्रा०	८१
समाचारी		सं०	१२०४
समाधान जिन वर्णन		हि०	६६४
समाधितंत्र	—पूज्यपाद	सं०	२३४
समाधितंत्र भाषा		हि०	२३८, १०६६
समाधितंत्र भाषा	—नाथूलाल दोषी	हि०	२३८
समाधितंत्र भाषा	—पर्वत धर्मार्थी	हि० गु०	२३४, २३५, २३६, २३७, २३८, ११०३
समाधितंत्र भाषा	—मानकचन्द	हि०	२३८
समाधितंत्र भाषा	—रायचन्द	हि०	२३८
समाधिमरण		हि०	१०४३
समाधिमरण भाषा	—ज्ञानतराय	हि०	२३८ ११२६
समाधिमरण भाषा		हि०	२३६
समाधिमरण भाषा	—सदासुख कासलीवाल	हि०	२३८
समाधिमरण स्वरूप		हि०	२३६
समाधिशतक	—पन्नालाल चौधरी	हि०	२४०
समाधि शतक	—पूज्यपाद	हि०	२३६
समाधिशतक टीका	—प्रभाचन्द्र	सं०	२४०
समाधिस्वरूप		सं०	२३६
समासचक्र		सं०	५२१
समास प्रक्रिया		सं०	५२१
समास लक्षण		सं०	५२१
समीरण पार्श्वनाथ स्तोत्र	—भानुकीर्ति	सं०	१०६१
सम्मेद विलास	—देवकरण	सं०	११५७
सम्मेद शिखर चित्र			११७२
सम्मेद शिखर पच्चीसी	—खेमकरण	हि०	११०७
सम्मेद शिखर पूजा		सं०	१११६
सम्मेद शिखर पूजा	—बुधजन	हि०	६२५
सम्मेद शिखर पूजा	—रामपाल	हि०	६२५

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
सम्मेद शिखर पूजा	—लालचन्द	हि०	६२२, ६२७ ६२८
सम्मेद शिखर पूजा	—जवाहरलाल	हि०	१०८६
सम्मेद शिखर पूजा	—भ० सुरेन्द्रकीर्ति	सं०	६२२
सम्मेद शिखर पूजा	– गंगादास	सं०	६२२
सम्मेद शिखर पूजा	—सेवकराम	हि०	६२३
सम्मेद शिखर पूजा	—संतदास	हि०	६२३
सम्मेद शिखर पूजा	—हजारीमल्ल	हि०	६२३
सम्मेद शिखर पूजा	—ज्ञानचन्द्र	हि०	६२३
सम्मेद शिखर पूजा	—जवाहरलाल	हि०	६२४, ६२५
सम्मेद शिखर पूजा	- भागीरथ	हि०	६२५
सम्मेद शिखर पूजा	—द्यानतराय	हि०	६२५
सम्मेद शिखर महात्म्य पूजा	—मोतीराम	हि०	६२७
सम्मेद शिखर महात्म्य पूजा	—सनसुख सागर	हि०	६२८
सम्मेद शिखर महात्म्य पूजा	— दीक्षित देवदत्त	सं०	६२८
सम्मेद शिखर महात्म्य पूजा		हि०	६२४
सम्मेद शिखर यात्रा वर्णन	—पं० गिरधारी लाल	हि०	६५७
सम्मेद शिखर वर्णन		हि०	६५७
सम्मेद शिखर विलास	—रामचन्द्र	हि०	६५७
सम्मेद शिखर स्तवन		हि०	७६५
सम्मेदाचल पूजा	—गंगाराम	हि०	१०४३
सम्मेदाचल पूजा उद्यापन		सं०	६२६
समोसरन रचना	—ब्र० गुलाल	हि०	४३३
सरवंग सार विचार	—नवलराम	हि०	२४६
सर्वज्ञ महात्म्य		सं०	२६२
सर्वज्ञ सिद्धि		सं०	२६३
सर्वज्ञ स्तुति		सं०	७६५
सर्वजिन नमस्कार		सं०	११२७
सर्व जिनालय पूजा		सं०	११४८
सर्व जिनालय पूजा	—माधोलाल जयसवाल	हि०	६२६
सर्वरसी		हि०	१२०४
सर्वार्थसिद्धि-पूज्यपाद		संस्कृत	८१ ६६६
सर्वार्थ सिद्धि भाषा	—पं० जयचन्द राज०		८२, ८३, १२०४
सरस्वती दिग् विजय स्तोत्र		सं०	११२५
सरस्वती पूजा		हि०	११०४, ११६८
सरस्वती पूजा	—ज्ञान भूषण	हि०	८७६
सरस्वती पूजा	—संघी पन्नालाल	हि०	६२६
सरस्वती पूजा		सं०	६२६
सरस्वती पूजा जयमाल	—ब्र० जिनदास	हि०	११२६
सरस्वती मंत्र		हि०	६२४, ११२०
सरस्वती स्तवन		सं०	७६४
सरस्वती स्तवन	—अरुवलायन	सं०	७६५
सरस्वती स्तुति	—पं० आशाधर	सं०	७६५ ११६०
सरस्वती स्तोत्र		सं०	७६५
सरस्वती स्तवन	—ज्ञानभूषण	सं०	१११० ११४६
सरस्वती स्तोत्र		हि०	११२५
सरस्वती स्तोत्र		सं०	७७४
सरस्वती स्तोत्र	—ज्ञानभूषण	सं०	७७४
सलुणारी सज्झाय	—वृद्धचन्द	हि०	७६६
सवैया	—कुमुदचन्द	हि०	१००३
सवैया	— धर्मचन्द्र	हि०	८७७
सवैया	— धर्मसिंह	हि०	१११८
सवैया	—मनोहर	हि०	१११४
सवैया	— विनोदीलाल	हि०	१०२०
सवैया-सुन्दरदास		हि०	६७८

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
सवैया बावनी	—भगवतीदास	हि०	११०८
सहस्र गुण पूजा	—भ० धर्मकीर्ति	सं०	६२६
सहस्र गुणित पूजा		सं०	६२६
सहस्र गुणित पूजा	—भ० शुभचन्द्र	सं०	६३०,
सहस्र गुणी पूजा	- खड्गसेन	हि०	६३०
सहस्रनाम		सं०	६६६
सहस्रनाम	—आशाधर	सं०	८७६,
			११०८, ११२३
सहस्रनाम	—जिनसेन	सं०	११२७
सहस्रनाम पूजा	—धर्मचन्द्र मुनि	सं०	६३०
सहस्रनाम पूजा	—धर्मभूषण	सं०	६३०,
			११६८
सहस्रनाम पूजा	—चैनसुख	हि०	६३०
सहस्रनाम भाषा	—बनारसीदास	हि०	६६६
सहस्राक्षी स्तोत्र		सं०	७६६,६६६
सहस्रनाम स्तोत्र	—आशाधर	सं०	१००५,
सहस्रनाम स्तोत्र	—जिनसेनाचार्य	सं०	७७२,
			६६८, १००६, ११३६
सागर चक्रवर्ती की कथा		सं०	११६१
सागर धर्मामृत	—आशाधर	सं०	१७३, १७४
सागर धर्मामृत भाषा		हि०	१७४
साठ संवत्सरी		सं०	५६८,
			१००६
साठ संवत्सरी		हि०	५६८,
			५६६, १०३६, ११३५, ११५६
साठि संवत्सर ग्रहफल	—पं० शिरोमणि	सं०	५६६
साठि		सं०	१२०४
सातबीसन गीत	—कल्याण मुनि	हि०	१०२७
साधारण जिन स्तवन	—भानुचन्द्र गणि	सं०	७६६
साधारण जिन स्तवन वृत्ति	—कनककुशल	सं०	७६६
साधु आहार लक्षण		हि०	१७५
साधुगीत		हि०	१११६
साधु प्रतिक्रमण सूत्र		प्रा०	२४२
साधु वन्दना	—आ० कुंवरजी	हि०	७६६
साधु वन्दना	—बनारसीदास	हि०	७६६,
			८३४
साधु वन्दना		हि०	६८०,
			५०३७
साधु समाचारी		सं०	१७५
साम्य भावना		सं०	२४६
सामायिक प्रतिकरण		हि०	२४५
सामायिक पाठ		प्रा०	२४०,
			२४१, १०३५, १०८१
सामायिक पाठ		सं०	२४२,
			२४३, ६७७, ६६५, ११२० ११२७
सामायिक पाठ	—बहुमुनि	सं०	२४३
सामायिक पाठ		हि०	२४४,
			६६२, ६६३, १०४७, १०७२, ११४७
सामायिक पाठ टीका	—सदासुखजी	हि०	१०६६
सामयिक पाठ टीका		हि०	२४५,
			२४६
सामायिक पाठ भाषा	—जयचन्द	हि०	२४३,
			२४४, १०३४, १०७२
सामायिक पाठ भाषा	—भ० तिलोकेन्दुकीर्ति		
		हि०	२४४
सामायिक पाठ भाषा	—पन्नालाल	हि०	२४४
सामायिक पाठ भाषा	—श्यामराम	हि०	२४८
			१०३५
सामायिक पाठ भाषा		हि०	१०८२
सामायिक पाठ संग्रह		सं०	२४५
सामायिक भाषा टीका	—त्रिलोकेन्दु कीर्ति		
		सं०	६८६
सामायिक वचनिका	—जयचन्द छाबड़ा	हि०	१०३५
सामुद्रिक		हि०	१०५६
सामुद्रिक शास्त्र		सं०	५६६,
			१०८०, ११३७, १२०५
सामुद्रिक शास्त्र		सं०	५६६,
			६४४

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
सामुद्रिक शास्त्र भाषा		हि०	६६६
सामुद्रिक सुरूप लक्षण		स०	१०२५
सारचतुर्विंशतिका—सकलकीर्ति		सं०	१७५
सार चौबीसी—पार्श्वदास निगोत्या		हि०	१७५
सारसमुच्चय		सं०	१७५, ६६६, ८८१
सारसमुच्चय—कुलभद्राचार्य		स०	८३, १७५
सार समुच्चय		हि०	१०५८
सार सिद्धान्त कौमुदी		सं०	५२१
सार संग्रह		सं०	५२१, ५६६, ११७१
सार संग्रह—महावीराचार्य		सं०	१२०५
सार संग्रह—वरदराज		सं०	६६३
सार संग्रह—सुरेन्द्र भूषण		सं०	६७८
सार संग्रह		प्रा०	१७५
सारणी		हि०	१११५, १११७
सारद लक्ष्मी संवाद—वेणराज		हि०	१०३७
सारस्वत चन्द्रिका—अनुभूति स्वरूपाचार्य		सं०	५२१
सारस्वत टीका		सं०	५२१
सारस्वत टीका		सं०	५२१, ५२२
सारस्वत दीपिका वृत्ति—चन्द्रकीर्ति		सं०	५२२
सारस्वत धातुपाठ—अनुभूति स्वरूपाचार्य		सं०	५२२
सारस्वत प्रकरण		सं०	५२२
सारस्वत प्रक्रिया—अनुभूति स्वरूपाचार्य		सं०	५२३, ५२४, ५२५, ५२६, ६५४
सारस्वत प्रक्रिया		सं०	५२६
सारस्वत प्रक्रिया—परिव्राजकाचार्य		सं०	१२०५
सारस्वत प्रक्रिया वृत्ति—महीभट्टाचार्य		सं०	५२६
सारस्वत वृत्ति		सं०	५२६
सारस्वत वृत्ति—नरेन्द्रपुरी		सं०	५२६
सारस्वत व्याकरण		सं०	५२६
सारस्वत व्याकरण दीपिका—भ० चन्द्रकीर्ति सूरि		सं०	५२६
सारस्वत व्याकरण पंत्र संधि—अनुभूति स्वरूपाचार्य		सं०	५२६
सारस्वत सूत्र		सं०	५२७
सारस्वत सूत्र—अनुभूति स्वरूपाचार्य		सं०	५२७
सारस्वत सूत्र		सं०	५२७
सारस्वत सूत्र पाठ		सं०	५२७
सारोद्धार		सं०	११६१
सारोद्धार—हर्षकीर्ति		सं०	१११६
सार्द्धद्वयद्वीपपूजा—विष्णुभूषण		सं०	६३०
सार्द्धद्वय द्वीप पूजा—शुभचन्द्र		सं०	६३०, ६३१
सार्द्धद्वय द्वीप पूजा—सुधासागर		सं०	६३१
सार्द्धद्वय द्वीप पूजा		सं०	८८२, ६३१, ६३२
सालिभद्र चौपई—जिनराजसूरि		हि०	१०६२
सावित्री कथा		हि०	६६२
सास बहू का झगड़ा—देवा ब्रह्म		हि०	१००७, १०१२, १०६५
सांख्य प्रवचन सूत्र		सं०	२६३
सांख्य सप्तति		सं०	२६३
सिखरजी की चौपई—केशरीसिंह		हि०	१११४
सिज्झाय—जिनरंग		हि०	१०६१
सिज्झाय - मान कवि		हि०	१११७
सिद्ध कूट पूजा		सं०	६३२
सिद्ध क्षेत्र पूजा		सं०	१०११
सिद्ध क्षेत्र पूजा—दौलतराम		हि०	६३२
सिद्ध क्षेत्र पूजा—प्रकाशचन्द्र		हि०	६३२
सिद्ध क्षेत्र पूजा		हि०	६३३
सिद्ध क्षेत्र पूजा—स्वरूपचन्द		हि०	६३३
सिद्ध गिरि स्तवन—क्षेम विजय		सं०	७६६

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
सिद्ध चक्र कथा	—शुभचन्द्र	सं०	५०१
सिद्ध चक्र कथा	—श्रुतसागर	सं०	५०१
सिद्ध चक्र कथा	—भ० सुरेन्द्र कीर्ति	सं०	५०२
सिद्ध चक्र व्रत कथा	—सेमिचन्द्र	सं०	५०२
सिद्ध चक्र व्रत कथा	—नथमल	हि०	५०२
सिद्ध चक्र गीत	—अभयचन्द्र	हि०	६५२
सिद्ध चक्र पूजा		सं०	६६६
सिद्ध चक्र पूजा	—पं० आशाधर	सं०	६३३
सिद्ध चक्र पूजा	—धर्मकीर्ति	सं०	६३३
सिद्ध चक्र पूजा	—ललितकीर्ति	सं०	६३३
सिद्ध चक्र पूजा	—भ० शुभचन्द्र	सं०	६३३, १२०६
सिद्ध चक्र पूजा	—संतलाल	हि०	६३४
सिद्ध चक्र पूजा	—देवेन्द्रकीर्ति	सं०	१११८
सिद्ध चक्र पूजा	—पद्मनन्दि	सं०	५६६
सिद्ध चक्र यंत्र		सं०	६२४
सिद्ध चक्र स्तुति		प्रा०	७६६
सिद्ध चतुर्दशी	—भगवतीदास	हि०	११५१
सिद्धि दण्डिका स्तवन		प्रा०	७६७
सिद्ध धुल	—रत्नकीर्ति	हि०	१०६७
सिद्ध पूजा	—द्यानतराय	हि०	१००२
सिद्ध पूजा		सं०	६३४
सिद्ध पूजा भाषा		हि०	६३४
सिद्ध पंचासिका प्रकरण		प्रा०	२४७
सिद्ध प्रिय स्तोत्र	—देवनन्दि	सं०	६८२
सिद्ध भक्ति		प्रा०	७६६
सिद्ध भूमिका उद्यापन	—बुधजन	हि०	६६५
सिद्धहेमशब्दानुशासन	—हेमचन्द्राचार्य	सं०	५२०
सिद्धहेमशब्दानुशासन सोपज्ञ वृत्ति	—हेमचन्द्राचार्य	सं०	५२०
सिद्धाचल स्तवन		हि०	१०६१
सिद्धान्त कौमुदी		स०	५२७
सिद्धान्त चन्द्रिका	—रामचन्द्राश्रम	सं०	५२८, ५२९
सिद्धान्त चन्द्रिका		स०	५२९
सिद्धान्त चन्द्रिका टीका	—सदानन्द	सं०	५३०
सिद्धान्त चन्द्रिका टीका	—हर्षकीर्ति	सं०	५३०
सिद्धान्त गुण चौवीसी	—कल्याणदास	हि०	१०६५
सिद्धान्त मुक्तावली		सं०	२६३
सिद्धान्त रस शब्दानुशासन		सं०	५४०
सिद्धान्त शिरोमणि	—भास्कराचार्य	सं०	५६६
सिद्धान्त सागर प्रदीप		सं०	८७
सिद्धान्तसार		सं०	६६६, ११४०
सिद्धान्तसार	—जिनचन्द्राचार्य	प्रा०	८३
सिद्धान्तसार दीपक	—नथमल बिलाला	हि०	८५, ८६, ८७, १०७२
सिद्धान्तसार दीपक	—भ० सकलकीर्ति	सं०	८०, ८४, ८५
सिद्धान्तसार संग्रह	—नरेन्द्रसेन	सं०	८७
सिद्धिप्रिय स्तोत्र	—देवनन्दि	सं०	७६७, ७६८, ६६४, ११२७
सिद्धिप्रिय स्तोत्र		सं०	७७५
सिद्धिप्रिय स्तोत्र टीका	—आशाधर	सं०	७६८
सिद्धिप्रिय स्तोत्र भाषा	—सेमराज	हि०	७६८
सिन्दूर प्रकरण		हि०	६६२
सिन्दूर प्रकरण	—बनारसीदास	हि०	६६६, ६६७ ११४४, ११६७
सिंध की पायडी		हि०	१०५८
सिंहलाम चरित्र		हि०	१००१
सिंहासन बत्तीसी	—ज्ञानचन्द्र	सं०	५०२
सिंहासन बत्तीसी	—विनय समुद्र	हि०	५०२
सिंहासन बत्तीसी	—हरिफूल	हि०	५०३
सिंहासन बत्तीसी		हि०	५०४
सिंहासन बत्तीसी		हि०	१००१
सीखामण रास		हि०	६५१, ११३६
सीखामणि रास	—सकलकीर्ति	हि०	१०२४

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
सीता चरित्र	रामचन्द्र (कवि बालक)	हि०	४०६, ४१०, ६८०, १०३६, १०७५ ११०६
सीताजी की बीनती		हि०	६२६
सीता शील पताका गुण वेलि	ग्रा० जयकीर्ति	हि०	६४५
सीता सतु	भगवतीदास	हि०	६४५, ६८४
सीताहरण रास	जयसागर	हि०	६४६, ६४७
सीमंधर स्तवन	कमलविजय	सं०	६४२
सीमंधर स्तवन		हि०	११३४
सीमंधर स्तुति		सं०	७६८
सीमंधर स्वामी स्तवन	पं० जयवन्त	हि०	७६६
सुआ बहत्तरी		हि०	६६६
सुकुमार कथा		सं०	५०५
सुकुमाल कथा		सं०	११६१
सुकुमाल चरित्र	मुनि पूर्णभद्र	अप०	४११
सुकुमाल चरित्र	श्रीधर	अप०	४११
सुकुमाल चरित्र	भ० सकलकीर्ति	सं०	४११, ४१२, ४१३
सुकुमाल चरित्र	साधूराम दोसी	हि०	४१३
सुकुमाल चरित्रभाषा	गोकल गोत पूर्व		
सुकुमाल चरित्र भाषा		हि०	४१४
सुकुमाल चरित्र वचनिका		हि०	४१३
सुकुमाल चरित्र		हि०	४१४
सुकुमाल चरित्र	भ० यशकीर्ति	हि०	४१४
सुकुमाल सज्झाय	शान्तिहर्ष		६८१
सुकुमाल स्वामी छंद	ब्र० धर्मदास	हि०	५०५
सुकुमाल स्वामी रास	धर्मरुचि	हि०	११४०
सुकौशल रास		हि०	११६७
सुकौशल रास	गंग कवि	हि०	११३७
सुकौशल रास	वेणीदास	हि०	६४७
सुकौशल रास	सांसु	हि०	१०२५
सुखनिधान	जगन्नाथ	स०	४१५
सुखविलास	जोधराज कासलीवाल	हि०	१७६, ६७८
सुख संपत्ति विधान कथा		ग्रा०	५०५
सुगुरु चिंतामणि देव		हि०	११२७
सुगुरु शतक	जिनदास गोधा	हि०	१०३५
सुगुरु शतक	जोधराज	हि०	६६७
सुगंध दशमी		सं०	८८३
सुगन्ध दशमी कथा	राजचन्द्र	हि०	५०५,
सुगन्ध दशमी कथा	खुशालचन्द्र	सं०	५०५, ६५२
सुगन्ध दशमी कथा		हि०	५०५
सुगन्ध दशमी कथा	हेमराज	हि०	४३३
सुगन्ध दशमी पूजा		हि०	९३५
सुगन्ध दशमी उद्योतापन		सं०	६३५
सुगन्ध दशमी व्रत कथा	मकरंद	हि०	४८३
सुगन्ध दशमी व्रत कथा	मलयकीर्ति	हि०	१०८६
सुदर्शन चरित्र	दीक्षित देवदत्त	सं०	४१५
सुदर्शन चरित्र	ब्र० नेमिदत्त	सं०	४१६
सुदर्शन चरित्र	गु० विद्यानन्दि	सं०	४१५
सुदर्शन चरित्र	भ० सकलकीर्ति	सं०	४१५
सुदर्शन चरित्र	नयनन्दि	अप०	४१५
सुदर्शन चरित्र भाषा	भ० यशकीर्ति	हि०	४१७
सुदर्शन रास	ब्र० जिनदास	हि०	६४८, ११३७, ११४४, ११४७
सुदर्शन रास	ब्र० रायमल्ल	हि०	६४०, ६४३, ६५१, ६६८, ६७६, ६७८, १०१३ १०१६, १०२२, १०३१
सुदर्शन सेठ कथा	नन्द	हि०	६६१
सुदामा चरित्र		हि०	११०३
सुदंसण जयमाल		हि०	११०७
सुदृष्टि तरंगिणी	टेकचन्द	हि०	१७७, १७८
			१२०६
सुन्दर शृंगार	महाकविराज	हि०	६२६, ११६८

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
सुन्दर शृंगार	सुन्दरदास	हि०	६२६, ६६५, १००२
सुन्दर स्तोत्र		सं०	७६६
सुपथ दोहा		हि०	१०२६, ११०३
सुपंथ कुपंथ पच्चीसी		हि०	६६६
सुप्रभातिक स्तोत्र		सं०	७६६
सुबुद्धि प्रकाश	थानसिंह	हि०	६६७
सुबोधिका		सं०	५३०
सुभद्रकथा	सिंघो	हि०	१०१४
सुभद्र सज्झाय		हि०	७६६
सुभाषित		हि०	६९७, १११७
सुभाषित		सं०	६६७
सुभाषित	सकलकीर्ति	सं०	६६०
सुभाषित कथा		सं०	५०६
सुभाषित प्रश्नोत्तर रत्नमाला	ज्ञानसागर	सं०	६६७
सुभाषितरत्न संदोह	अमितिगति	सं०	६६८
सुभाषित रत्नावली		सं०	७०१
सुभाषित शतक		हि०	१०५८
सुभाषित संग्रह		हि०सं०	६५६, ६६०, १००१, ११५८
सुभाषितार्णव	सकलकीर्ति	सं०	६६५, ६६८, ६६६, ७०१, ६६५
सुभाषितावली		सं०	६६५, ७००, ७०१, ११६१
सुभाषितावली	कनककीर्ति	सं०	७००
सुभाषितावली		हि०	१०५८
सुभाषितावलि भाषा	खुशालचन्द	हि०	७००, ७०१
सुभाषितावली	दुलीचन्द	हि०	७००
सुभाषितावलि भाषा	पन्नालाल चौधरी	हि०	६६५
सुभाद्र चरित्र	पुण्य सागर	हि०	४१७
सुभौम चरित्र	रत्नचन्द्र	सं०	४१८
सुमतवादी जयाष्टक		हि०	१०६६
सुमति-कुमति की जखडी	विनोदी लाल	हि०	१०६५
सुमति कुमति संवाद	विनोदीलाल	हि०	११०२
सुमतिनाथ पुराण	दीक्षित देवदत्त	हि०	३०१
सुमिरण	दादूदयाल	हि०	६६०
सुरसुन्दरी कथा		हि०	५६०
सुलोचना चरित्र	वादिराज	सं०	४१८
सुवेण चरित्र		सं०	४१८
सूक्तावली		सं०	१२०६
सूक्ति मुक्तावली		हि०	६७६
सूक्ति मुक्तावलीभाषा	बनारसीदास	हि०	६४१
सूक्ति मुक्तावली भाषा	सुन्दरलाल	हि०	७०७
सूक्ति मुक्तावली वचनिका		हि०	७०७
सूक्ति मुक्तावली	आ० मेरुतुंग	सं०	७०१
सूक्ति मुक्तावली	आ० सोमप्रभ	सं०	७०१, ७०२, ७०३, ७०४, ७०५, ७०६, ११६१
सूक्ति मुक्तावली टीका	हर्षकीर्ति	सं०	७०६
सूक्ति संग्रह		सं०	७०७
सूतक निर्णय	सोमसेन	सं०	६३५
सूतक वर्णन		सं०	१७६, ६३५
सूतक वर्णन	भ० सोमसेन	सं०	१७६
सूतक वर्णन		हि०	११०४
सूतक श्लोक		सं०	१११७
सूत्र प्राभृत	कुन्दकुन्दाचार्य	प्रा०	८७
सूत्र विधि		सं०	६६७
सूत्रसार		सं०	५३०
सूत्र सिद्धान्त चौपई		हि०	८७
सूत्र स्थान		सं०	८७
सूप सुमनी की कथा	रामकृष्ण	हि०	१०५४
सूरज जी की रसोई		हि०	१११३

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
सूरत की बारहखड़ी—सूरत		हि०	११३४
सूरसगाई—सूरदास		हि०	१०६६
सूर्याष्टक स्तोत्र		सं०	११२५
सूर्यकवच		सं०	११५३
सूर्यग्रहण		सं०	५७०
सूर्यप्रकाश – आ० नेमिचन्द्र		सं०	१७६
सूर्यव्रतोद्यापन—ब्र० जयसागर		सं०	१०८४
सूर्यव्रतोद्यापन पूजा—ब्र० ज्ञानसागर		सं०	६०७
सूर्यसहस्रनाम		सं०	११५३, ११०६
सूर्यस्तुति		हि०	१११३
सूवा बत्तीसी		हि०	१०६७
सेठ सुदर्शन स्वाध्याय—विजयलाल		हि०	५०६
सैद्धान्तिक चर्चा		हि०	१०६७
सैद्धान्तिक चर्चा संग्रह		हि०	१०१८
सोनागिरि पूजा		हि०	६३५
सोमप्रतिष्ठापन विधि		सं०	१०८१
सोमवती कथा		सं०	५०६
सोलहकारण उद्यापन—सुमति सागर		सं०	६३५
सोलहकारण उद्यापन—अभयनन्दि		सं०	६३५, ६३६
सोलहकारण कथा—ब्र० जिनदास		हि०	११४३
सोलहकारण जयमाल		प्रा०	६३६
सोलहकारण जयमाल—रइधू		अप०	६३६
सोलहकारण जयमाल		प्रा०हि०	६३६
सोलहकारण जयमाल		हि०	६६३
सोलहकारण पाखण्डी		सं०	११३६
सोलहकारण पूजा		सं०	६३६, ६६४
सोलहकारण पूजा		हि०	६३६, ६५६
सोलहकारण विधान—टेकचन्द		हि०	६३७
सोलहकारण पूजा विधान		सं०	६३७
सोलहकारण पूजा		प्रा०	१०११
सोलहकारण भावना		सं०	६५६
सोलहकारण भावना		हि०	१७६
सोलहकारण मंडल पूजा		सं०	६३७
सोलहकारण मंडल विधान		हि०	६३७
सोलहकारणरास—ब्र० जिनदास		हि०	६४८, ११४३
सोलहकारणरास—सकलकीर्ति		हि०	६५५, १११६
सोलहकारण व्रत कथा		हि०	११६३
सोलहकारण व्रतोद्यापन पूजा		सं०	६३७
सोलहकारण व्रतोद्यापन पूजा		हि०	६३७
सोलहकारण पूजा विधान		हि०	६३७
सोलह सती —मेघराज		हि०	११२६
सोलहसती की सिज्झाय—प्रेमचन्द		हि०	१०६८
सोलह स्वप्न छप्पय—विद्यासागर		हि०	१००३
सोहं स्तोत्र		सं०	७६६, ११६१
सौख्यकाव्य व्रतोद्यापन विधि		सं०	६३८
सौख्य पूजा		हि०	६६८
सौभाग्य पंचमी कथा		सं०	५०६
संकट दशा		सं०	५७०
संकल्प शास्त्र		सं०	१२०४
संक्रान्ति फल		सं०	११३५
संक्रान्ति विचार		हि०	६४४
संक्षेप पट्टावली		हि०	६५३
संख्या शब्द साधिका		सं०	१२०४
संगीतशास्त्र		सं०	६०६
संगीत स्वर भेद		सं०	६०६
संग्रह		हि०	६७८
संग्रह ग्रंथ		सं०	६७८
संग्रह ग्रंथ		सं०	६७६
संग्रहणी सूत्र		प्रा०	८७
संग्रहणी सूत्र भाषा		हि०	८८
संग्रहणी सूत्र—देवभद्र सूरि		प्रा०	८८
संग्रहणी सूत्र—मल्लिषेण सूरि		प्रा०	८८
संग्रहणी सूत्र भाषा—दयासिंह गणि		प्रा०हि०	८

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
संघचूल		हि०	५०६
संघपट्टक टीका	—ब्र०जिनवल्लभ सूरि	सं०	६५७
संघ पट्ट प्रकरण		सं०	६५७
संघण सूत्र		प्रा०	८६
संघायणि	—हेमसूरि	प्रा०	६१६
संज्ञा प्रक्रिया		सं०	११०३
सन्ताणु भावना	—वीरचन्द	हि०	११३८
संतोष जयतिलक	—खूबराज	हि०	६६१
संधारा पोरस विधि		प्रा०	६३८
संथारा विधि		प्रा०	६३८
संदेह समुच्चय	—ज्ञान कलश	सं०	१७१
संध्या वन्दना		सं०	१२०४
संध्या मंत्र	—गौतम स्वामी	सं०	६२४
संबोध अक्षर बावनी		हि०	१०६२
संबोध अक्षर बावनी	—ज्ञान [illegible]	हि०	१०४८
संबोध दोहा	—सुप्रभाचार्य	हि०	६७८
संबोध पंचासिका		प्रा०	७०७, १३११
संबोध पंचासिका		प्रा० सं०	६७७
संबोध पंचासिका		सं०	१७२, ६६४, ११३४
संबोध पंचासिका		हि०	११०५
संबोध पंचासिका	—गौतम स्वामी	प्रा०	१७२
संबोध पंचासिका		हि०	६७८
संबोध पंचासिका	—मुनि धर्मचन्द्र	हि०	१०२१
संबोध पंचासिका	—ज्ञानतराय	हि०	१७२
संबोध पंचासिका	—बुधजन	हि०	१०८३
संबोध पंचासिका	—रइधू	अप०	११५४
संबोध रसायन	—नयचन्द सूरि	हि०	६५७
संबोध सत्तरी		प्रा०	१७२
संबोध सत्तरी	—जयशेखर सूरि	प्रा०	१७२
संबोध सत्तरी प्रकरण		सं०	१७२
संबोध सत्तरी बालावबोध		हि०	१७२
संबोध सत्तावणु दूहा	—वीरचन्द	हि०	७०७, ११४७
संबोध सत्तावणी भावना	—वीरचन्द	हि०	६५२
संबोध सत्तरि	—जयशेखर	हि०	६५७
संभवजिनचरित्र	—तेजपाल	अपभ्रंश	४१८
संवरजलादि साधन	—सिद्ध नागार्जुन	हि०	६२४
संवत्सर फल		हि०	६४४, १०६४
संवत्सर ६० नाम		हि०	११३५
संवत्सरी		हि०	५७०, ६५७
संवत्सर महात्म्य टीका		सं०	५७०, ६५७
संवरानुप्रेक्षा	—सूरत	हि०	२४६
संवाद सुन्दर		सं०	५०६
संवेग चौथ कथा	—देवेन्द्रभूषण		४३३
संस्कृत मंजरी		सं०	५३०, ६०२
संस्कृत मंजरी	—वरदराज	सं०	५२०
संसार वनिनिका		हि०	६४४
संसार सांसरयोगीत		हि०	१०२७
संसार स्वरूप		सं०	२४६
स्तवन	आनंद	हि०	७७०
स्तवन	—गुणसूरि	हि०	७६६, १०६५
स्तवन	—ज्ञानभूषण	हि०	११०७
स्तवन पाठ		सं०	७७०
स्तवन संग्रह		हि० सं०	७७०
स्तुति अर्हत देव	—वृन्दावन	हि०	१०६४
स्तुति	—ज्ञानतराय	हि०	१११४
स्तुति	—भूधरदास	हि०	७२१
स्तुति पंचासिका	—पाण्डेसिंहराज	सं०	७७०
स्तुति संग्रह		हि०	७७०, ११५३

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
स्तुति संग्रह		सं०	७७०
स्तोत्र चतुष्टय टीका	आशाधर	सं०	७७०
स्तोत्रत्रय भाषा		हि०	१०७२
स्तोत्र पार्श्व		हि०	७७०
स्तोत्र पूजा		हि०	६३८
स्तोत्र पूजा		सं०	६३८
स्तोत्र पूजा संग्रह		हि०	१२६७
स्तोत्र संग्रह		प्रा० सं०	७७१ ७७५, ११६५
स्तोत्र संग्रह		सं०	७७०, ७७१, ७७२, ७७३, ७७४, ७७५, ६६७
स्तंभनक पार्श्वनाथ नमस्कार		सं०	६५६
स्त्री जन्म कुण्डली		सं०	५६०
स्त्री द्रावण विधि		सं०	५६२
स्त्री लक्षण		हि०	११३४
स्त्री सज्झाय		हि०	११५३
स्थराश्ली चरित्र	हेमचन्द्राचार्य	सं०	१२०७
स्थानक कथा		सं०	५०७
स्थान माला		हि०	१०५७
स्थूलभद्र गीत	लावण्य समय	हि०	१०२६
स्थूलभद्र को नव रास			६४३
स्थूलभद्र फागु प्रबन्ध		प्रा०	६६०
स्थूलभद्रनुरास	उदय रतन	हि०	६४८, १०६१
स्थूलभद्र सज्झाय		हि०	६६६
स्थूलभद्र सिज्झाय	गुणवर्द्धन सूरि	हि०	१०६८
स्नपन		हि०	११६३
स्नपन विधि		सं०	६३८
स्नपन वृहद		सं०	६३८
स्नेह परिक्रम	नरपति	हि०	११५४
स्फुट पत्र संग्रह		सं०	६७९
स्फुट पाठ संग्रह		हि०	६८०
स्फुट संग्रह		हि०	६८०
स्याद्वाद मंजरी	मल्लिषेण सूरि	सं०	२६३

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
स्वप्न बत्तीसी	भगौतीदास	हि०	१११३
स्वप्न विचार		हि०	५७०
स्वप्न शुभाशुभ विचार		हि०	६४६
स्वप्नसती टीका	गोवर्द्धनाचार्य	सं०	५७०
स्वप्नाध्याय		सं०	५७०
स्वप्नाध्यायी		सं०	५७६, ५७१
स्वाप्नावली		सं०	५७०
स्वप्नावली	देवनन्दि	सं०	११२७
स्वप्नावली	वीरसेन	सं०	१०६८
स्वयंभू स्तोत्र	आ० समंतभद्र	सं०	७७५, ७७६, १००२, १०४३, १०८२, ११२७, ११३६, ११४७, ११५४
स्वयंभू स्तोत्र	देवनन्दि	सं०	११२७
स्वयंभू स्तोत्र भाषा	द्यानतराय	हि०	७७६
स्वयंभू स्तोत्र रेखा	प्रभाचन्द्र	सं०	७७६
स्वर विचार		हि०	५७०
स्वरोदय	चरणदास	हि०	११२१
स्वरोदय	कपूरचन्द	हि०	५७२
स्वरोदय	प्रहलाद	हि०	५७२
स्वरोदय	मोहनदास कायस्थ	हि०	५६२
स्वरोदय टीका		सं०	५७१
स्वरूपानन्द	दीपचन्द	हि०	२४७
स्वरूप संबोधन पचासी		सं०	१७६
स्वस्त्ययन पाठ		सं०	६८०
स्वाध्याय भक्ति		सं०	१७६
स्वामीकीर्तिकेयानुप्रेक्षा	कार्तिकेय	प्रा०	६४४, १०३६
श्रमण पार्श्वनाथ स्तवन		प्रा०	७३०
श्रमण सूत्र भाषा		हि०	१२०३
श्राद्ध विधि	रत्नशेखर सूरि	सं०	६१२

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
श्रावक अतिचार		प्रा०	१०२६
श्रावक क्रिया		सं०	१६५
श्रावक क्रिया		हि०	१६६
श्रावक गुण वर्णन		प्रा०	१६६
श्रावक धर्म प्ररूपणा		प्रा०	१६६
श्रावक प्रतिक्रमण		सं०	२१७
श्रावक प्रतिक्रमण		प्रा०	२१७
श्रावक प्रतिक्रमण		प्रा०	१०७२
श्रावक प्रतिक्रमण		प्रा०हि०	१०८१
श्रावक प्रतिक्रमण		हि०	१०३०
श्रावक प्रतिज्ञा	नन्दराम सीमाणी	हि०	१०८०
श्रावक व्रत विधान	अभ्रदेव	सं०	६१२
श्रावकाचार		प्रा०	१६६
श्रावकाचार		सं०	१६६
श्रावकाचार		हि०	१०८८
श्रावकाचार	अमितिगति	सं०	१६६
श्रावकाचार	उमास्वामी	हि०	१६६
श्रावकाचार	प्रतापकीर्ति	हि०	११३७
श्रावकाचार	प्रभाचन्द	सं०	६६४
श्रावकाचार रास	पद्मा	हि०	१६७
श्रावकाचार रास	जिणदास	हि०	६४१
श्रावकाचार सूचनिका		हि०	६७७
श्रावकातिचार चउपई	पासचन्द्र सूरि	हि०	१०३७
श्रावकाराधना	समयसुन्दर	सं०	१६६
श्रावण द्वादशी कथा	ज्ञानसागर	हि०	११२३
श्रीपाल चरित्र	रत्न शेखर	प्रा०	३६२
श्रीपाल चरित्र	पं० नरसेन	अप०	३६१
श्रीपाल चरित्र	जयमित्रहल	अप०	३६३
श्रीपाल चरित्र	रइधू	अप०	३६३
श्रीपाल चरित्र	सकलकीर्ति	सं०	३६३, ३६४
श्रीपाल चरित्र	ब्र० नेमिदत्त	सं०	३६४
श्रीपाल चरित्र	परिमल्ल	हि०	३६५, ३६६, ३६७, ३६८, १०६३
श्रीपाल चरित्र	चन्द्रसागर	हि०	३६८, ३६६, ४००, ४०१
श्रीपाल चरित्र	लाल	हि०	४०१
श्रीपाल चरित्र भाषा		हि०	१०००
श्रीपाल दर्शन		हि०	११६८, ११२६, १०६५
श्रीपाल प्रबन्ध चतुष्पदी		हि०	४०१
श्रीपाल राज सिज्झाय	खेमा	हि०	७६२
श्रीपालराम		हि०	१०६१
श्रीपालरास	ब्र० जिनदास	हि०	६४२, ११३६
श्रीपालरास	जिनहर्ष	हि०	६४२
श्रीपाल रास	ब्र० रायमल्ल	हि०	६४२, ६४०, ६४१, ६६६, ०६८, १०१३, १०१५, १०१६, १०२०, १०६३
श्रीपाल सीमाणी आख्यान	चादिचन्द्र	हि०	४६१
श्रीपाल स्तुति		हि०	६६४, १०१६, १०८४
श्रीपाल स्तुति	महाराम	हि०	११४८
श्रीमंधरजी की अखडी	हर्षकीर्ति	हि०	१०४८
श्रुतपंचमि रास	ब्र० जिनदास	हि०	६४२
श्रुत ज्ञान के भेद		हि०	११०२
श्रुतज्ञान मंत्र			११७२
श्रुत पूजा		सं०	६१२
श्रुत पंचमी कथा	धनपाल	अप०	१२०३
श्रुतबोध	कालिदास	सं०	६००, ६०१
श्रुतबोध टीका	मनोहर शर्मा	सं०	६०१
श्रुतबोध टीका	हर शर्म्म	सं०	६०१
श्रुत स्कन्ध	ब्र० हेमचन्द्र	प्रा०सं०	६५६, ६६४, १०५५७, ११०७
श्रुत स्कन्ध सूत्र		सं०	११०७
श्रुत स्कन्ध कथा		सं०	४८०

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
श्रुत स्कन्ध पूजा		संस्कृत	८८२
श्रुत स्कन्ध पूजा	ज्ञानभूषण	सं०	६१२
श्रुत स्कन्ध पूजा	त्रिभुवन कीर्ति	सं०	६१३
श्रुत स्कन्ध पूजा	भ० श्रीभूषण	सं०	६१३
श्रुत स्कन्ध पूजा	वर्द्धमान देव	सं०	६१६
श्रुत स्कन्ध पूजा विधान			६१४
श्रुत स्कन्ध मंडल विधान	हजारीलाल	हि०	६१४
श्रुत स्कन्ध मंडल विधान		सं०	६१४
श्रुत स्कन्ध शास्त्र		सं०	११४०
श्रुतावतार		सं०	६५६
श्रुतावतार कथा		सं०	४६१
श्रेणिककथा		सं०	११३६
श्रेणिक चरित्र	ब्रह्मगवेद	हि०	११६६
श्रेणिक चरित्र	भ० शुभचन्द्र	सं०	४०२, ४०३
श्रेणिक चरित्र भाषा	भ० विजयकीर्ति	हि०	४०३, ४०४, ४०५
श्रेणिक चरित्र भाषा	दौलतराम कासलीवाल	हि०	४०५
श्रेणिक चरित्र भाषा	दौलत औसेरी	हि०	४०४
श्रेणिक प्रबन्ध	कल्याणकीर्ति	हि०	४०६
श्रेणिक चरित्र	लिखमीदास	हि०	४०७, ४०८
श्रेणिकपुराण	विजयकीर्ति	हि०	३००
श्रेणिक प्रबन्ध रास	ब्र० संघजी	हि०	६४२
श्रेणिक रास	भ० गुणकीर्ति	हि०	६५२
श्रेणिक मंगलमागलिक प्रबन्ध	कल्याणकीर्ति	हि०	४६१
श्रेणिक रास	ब्र० जिनदास	हि०	६४३,
श्रेणिकरास	सोमविमल सूरि	हि०	११४६
शृंगार कवित्त		हि०	६२८
शृंगार शतक	भर्तृहरि	सं०	६२८
शृंगार शोभिका	कोमट भूपाल	सं०	६०१
शृंगार मंजरी	प्रतापसिंह	हि०	६५१, १०६४
शृंगाररस		हि०	६५६
शृंगार वैराग्य तरंगिणी	सोमप्रभाचार्य	सं०	१२०१
शृंगारशतक	भर्तृहरि	सं०	६४२

ह

हक्कार्म कला		सं०	१११५
हनुमंत कथा	ब्र० रायमल्ल	हि०	५०७, ६४५, ६५६, ६६०, १०१५, ११०६, ११४३
हनुमत कवच		सं०	६७७, ११२५, ११६२
हनुमच्चरित्र	ब्र० अजित	सं०	४१८, ४१६
हनुमच्चरित्र	ब्र० जिनदास	सं०	४१६
हनुमच्चरित्र	यशःकीर्ति	हि०	४१६
हनुमच्चरित्र	ब्र० ज्ञानसागर	हि०	४१६
हनुमत चौपई	ब्र० रायमल्ल	हि०	६४६, ६५०, ६५३
हनुमन्नाटक	मिश्र मोहनदास	सं०	६०८
हनुमतरास		हि०	१०६१
हनुमंतरास	ब्र० जिनदास	हि०	६४८, ६४६, ११४१, ११४७
हरियाली छप्पय		हि०	७०८
हरिवंश पुराण		सं०	१०४२
हरिवंश पुराण	खुशालचन्द	हि०	३१०, ३११, ३१२, ३१३, १०५२
हरिवंश पुराण	ब्र० जिनदास	सं०	३०६, ३०७ ३०८, ३०६, ३१०
हरिवंश पुराण	जिनसेनाचार्य	सं०	३०२
हरिवंश पुराण	दौलतराम कासलीवाल	सं०	३०४, ३०५, ३०६
हरिवंश पुराण	यशःकीर्ति	अप०	३०३
हरिवंश पुराण	शालिवाहन	हि०	२०३

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
हरिवंश पुराण	श्रीभूषणसूरि	सं०	३०३
हरिवंश पुराण भाषा	खड्गसेन	हि०	३०३
हरिश्चन्द्र चौपई	कनक सुन्दर	हि०	४२०
हरिश्चन्द्र राजा की सज्झाय		हि०	५०७
हरिषेण चक्रवर्ती कथा	विद्यानन्दि	सं०	५०७
हवन विधि		सं०	६०६
हसनखां की कथा		हि०	१०११
हिकमत प्रकाश	महादेव	सं०	५६२
हिण्डौर का दोहा		हि०	१२०७
हितोपदेश	विष्णु शर्मा	सं०	७०८
हितोपदेश	बाजिद	हि०	७०८
हितोपदेश चौपई		हि०	७०८
हितोपदेश की कथाएं		हि०	१०२१
हितोपदेश दोहा	हेमराज	हि०	१०१६
हितोपदेश के दोहे		हि०	११३०
हियहुलास ग्रन्थ		हि०	१०१२
हिंदोला	भैरवदास	हि०	१०८६
हीयाली	रिष	हि०	७७६
हुक्का निषेध	भूधर	हि०	१०३५
हेमीनाममाला	हेमचन्द्राचार्य	सं०	५४०
होम एवं प्रतिष्ठा सामग्री सूची		हि० सं०	६२८
होम विधान		सं०	६३८
होम विधान		सं०	६३८, ६३६
होम विधान		प्रा० सं०	६३६
होम विधि		सं०	६३६
होरा प्रकाश		सं०	५७२
होरा मकरन्द		सं०	५७२
होरा मकरन्द - गुणाक		सं०	५७२
होलिका चरित्र		सं०	४२०
होली कथा		सं०	५०७, ५०८
होली कथा	मुनि शुभचन्द्र	हि०	५०८
होली कथा - छीतर ठोलिया		हि०	५०८
होली चरित	पं० जिनदास	सं०	४२०
होली पर्व कथा	श्रुतसागर	सं० सं०	४७६
होलीपर्व कथा		सं०	५०६
होलीरास	ब्र० जिणदास	हि०	११४१, ११४४
होलीरेणुकापर्व	पं० जिनदास	सं०	५०६
हंसराज बच्छराज चौपई	जिनोदय सूरि	हि०	५०६, ६५४
हंसराज बच्छराज चौपई		हि०	६६५

क्ष

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
क्षणवति क्षेत्रपाल पूजा	विश्वसेन	सं०	७६६
क्षत्रचूड़ामणि	वादीभसिंह	सं०	३१८
क्षपणासार	माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव	सं०	१२
क्षपणासार		हि०	१०४०, १०४३
क्षमा छत्तीसी	समयसुन्दर	हि०	६६०, १०६१, १११८
क्षमा बत्तीसी	समयसुन्दर	हि०	६४२
क्षमावणी पूजा	नरेन्द्रसेन	हि०	११५२
क्षीरार्णव	विश्वकर्मा	सं०	११७७
क्षेत्र गणित टीका		सं०	११७७
क्षेत्र गणित व्यवहार फल सहित		सं०	११७७
क्षेत्र न्याम		हि०	६१६
क्षेत्रपाल गीत	शोभाचन्द	हि०	१०६८
क्षेत्रपाल पूजा		सं०	७६६, १०३५, १०६५, ११४५
क्षेत्रपाल पूजा	बुध टोडर	हि०	११२३
क्षेत्रपाल पूजा	शान्तिदास	हि०	८७५
क्षेत्रपाल पूजा	मु० शुभचन्द	हि०	८२५
क्षेत्रपाल स्तुति	मुनि शोभा चन्द	हि०	११५३
क्षेत्रपाल स्तोत्र		सं०	७७४
क्षेत्रपालाष्टक		सं०	७२०

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
क्षेत्रपालाष्टक	—विद्यासागर	हि०	११५५
क्षेत्र समास		प्रा०	१०४, ६१६
क्षेत्र समास प्रकरण		प्रा०	१०४

त्र

त्रिकाण्ड कोश	—पुरुषोत्तम देव	सं०	५३६
त्रिकाल चौबीसी कथा	—पं० अभयदेव	सं०	४३४, ४३४
त्रिकाल चौबीसी पूजा		सं०	८२०, ६७७, ६७५, १०१०
त्रिकाल चौबीसी पूजा	—त्रिभुवनचन्द्र	सं०	८२०
त्रिकाल चौबीसी पूजा	—भ० शुभचन्द्र	सं०	८२०
त्रिकाल चौबीसी विधान		हि०	६६८
त्रिकाल संध्या व्याख्यान		सं०	७३०
त्रिपुर सुन्दरी यंत्र		सं०	६२१
त्रिपंचाशत क्रिया व्रतोद्यापन		सं०	८२०
त्रिपंचाशत क्रिया व्रतोद्यापन		सं०	८२१, ६५५
त्रिपंचाशत क्रियोद्यापन	—भ० विश्वभूषण	सं०	६०७
त्रिभुवन बीनती	—गंगादास	हि०	११३३
त्रिभंगी		सं०	६५६
त्रिभंगीसार	—नेमिचन्द्राचार्य	प्रा०	६०, ६१
त्रिभंगीसार टीका	—विवेकनन्दि	सं०	६१
त्रिभंगीसार भाषा		हि०	६१
त्रिभंगी सुबोधिनी टीका	—पं० आशाधर	सं०	६१
त्रिलोक दर्पण	—खड्गसेन	हि०	४४२, ६१६, ६१७ ४४३
त्रिलोक दीपक	—वामदेव	सं०	६११, ६१६
त्रिलोक प्रज्ञप्ति टीका		प्रा०	६११

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
त्रिलोक वर्णन		हि०	१०७२
त्रिलोक वर्णन	जिनसेनाचार्य	सं०	६११
त्रिलोक वर्णन		प्रा०	६११
त्रिलोक विधान पूजा	—देवेन्द्र	हि०	८२१
त्रिलोक सप्तमी व्रत कथा	—ब्र० जिनदास	हि०	४४३
त्रिलोकसार	—नेमिचन्द्राचार्य	प्रा०	६१२, ६१३, ६६४, १०००
त्रिलोकसार	—सुमति कीर्ति	हि०	६१६ ६६१, १०५१, ११४४, ११५६
त्रिलोकसार	—सुमति सागर	सं०	६१६
त्रिलोकसार	—सचनिका	हि०	६१६
त्रिलोकसार		हि०	१०४०, १०६३
त्रिलोकसार पट		हि०	६१६
त्रिलोकसार चर्चा		प्रा०	६१५
त्रिलोकसार पूजा	—सहजचन्द्र	हि०	८२१
त्रिलोकसार पूजा	—शुभचन्द	सं०	८२१
त्रिलोकसार पूजा	—सुमतिसागर	सं०	८२२
त्रिलोकसार पूजा		सं०	८२३
त्रिलोकसार भाषा		हि०	६१७
त्रिलोकसार भाषा	—पं० टोडरमल	राज०	६१८
त्रिलोक सार सटीक		प्रा०	६१४
त्रिलोक सार भाषा		हि०	६१४
त्रिलोकसार टीका	—नेमिचन्द्र गणि	सं०	६१५
त्रिलोकसार टीका	—माधवचन्द त्रैविद्यदेव	सं०	६१५
त्रिलोकसार टीका	—सहस्रकीर्ति	सं०	६१५
त्रिलोकसार संहृष्टि		प्रा०	६१३
त्रिवर्णाचार	—श्री ब्रह्म सूरि	सं०	११
त्रिवर्णाचार	—सोमसेन	सं०	११२
त्रिषष्टि शलाका पुरुष च रत्र	—हेमचन्द्राचार्य	सं०	२७६, ३३२

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
त्रिषष्ठि स्मृति		सं०	२७६
त्रिश्चत्चतुर्विंशति पूजा	—शुभचन्द्र	सं०	८२३, १०८५
त्रेपन क्रिया	—हेमचन्द्र	सं०	६७५, १०६३
त्रेपन क्रिया कोश		हि०	६८१
त्रेपन क्रिया कोश	—किशनसिंह	हि०	१०६६
त्रेपन क्रिया कोश	—ब्र० गुलाल	हि०	१०७७
त्रेपन क्रिया गीत	—शुभचन्द्र	अप०	६५२
त्रेपन क्रिया गीत	—सोमकीर्ति	हि०	१०२५
त्रेपन क्रिया पूजा		सं०	६४८
त्रेपन क्रिया पूजा	—देवेन्द्र कीर्ति	सं०	८२३
त्रेपन क्रिया रास	—हर्षकीर्ति	हि०	१०३२
त्रेपन क्रिया व्रतोद्यापन		सं०	८२३
त्रेपन क्रिया व्रतोद्यापन	—विक्रमदेव	सं०	११२३
त्रेपन क्रिया विधि	—दौलतराम	हि०	११४२
त्रेपन क्रिया विनती	—ब्र० गुलाल	हि०	१०५२
त्रेपन भाव		हि०	१०६७
त्रेपन भाव चर्चा		हि०	६२
त्रेसठ शलाका वर्णन		सं०	१००५
त्रेसठ शलाका पुरुष वर्णन		हि०	२७६
त्रेसठ शलाका पुरुष भवावलि		हि०	११३५
त्रैलोक्य मोहन कवच		सं०	६२१
त्रैलोक्य मोहनी मंत्र		सं०	६२१
त्रैलोक्य वर्णन		हि०	६५६
त्रैलोक्यसार		हि०	११६५
त्रैलोक्य सार संदृष्टि		प्रा०	६१३
त्रैलोक्य स्वरूप	—सुमति कीर्ति	हि०	६४४
त्रैलोक्य स्थिति वर्णन		हि०	६१६
त्रैलोक्येश्वर जयमाल		हि०	६६३

ज्ञ

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
ज्ञातृधर्म कथा टीका		प्रा०	४४१
ज्ञातृ धर्म सूत्र		प्रा०	४०
ज्ञान कल्याण स्तवन		हि०	१०६१
ज्ञान गीता स्तोत्र		हि०	६८१
ज्ञानचर्चा		सं०	४०, १६६
ज्ञान चालीसा		हि०	६८३
ज्ञान चिन्तामणि		सं०	६८१, १०३०
ज्ञान चिन्तामणि	—मनोहरदास	हि०	१०६, ६५०, १०११, १०५६
ज्ञान चूनडी	—भगवतीदास	हि०	११२४
ज्ञान चूनडी	—वेगराज	हि०	१०३७
ज्ञान जकडी	—जिनदास	हि०	१११०
ज्ञान दर्पण	—दीपचन्द कासलीवाल	हि०	१०८, ११६
ज्ञान प्रशंक	—ज्ञानतराय	हि०	१०४३
ज्ञान दीपिका भाषा		हि०	१०६
ज्ञान पच्चीसी		हि०	६८०, ६८६, १०४७, १०६७, ११०२
ज्ञान पच्चीसी	—बनारसीदास	हि०	११०, ६४१, ६६०, ११४५
ज्ञान पंचमी व्याख्यान	—कनकशील	सं०	११०
ज्ञान भास्कर		सं०	११८२
ज्ञान मंजरी		सं०	६२१
ज्ञान लावणी		सं०	५४६
ज्ञान समुद्र	—जोधराज गोदीका	हि०	१६७, ६८३
ज्ञानसार	—पद्मनन्दि	प्रा०	६६४
ज्ञानसार	—मुनि पोमसिंह	प्रा०	४१

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
ज्ञान सूर्योदय नाटक	—वादिचन्द्र	सं०	६०४
ज्ञान सूर्योदय नाटक	—भा[illegible]	हि०	६०५
ज्ञान सूर्योदय नाटक	—पारसदास	हि०	६०५
ज्ञान सूर्योदय		हि०	६०६
ज्ञान स्वरोदय	—चरनदास	हि०	५०६, १०५६, ११८२
ज्ञानार्णव	—आ० शुभचन्द्र	सं०	१६७, १६८, १६६, २००, ११५८
ज्ञानार्णव गद्य टीका		सं०	२००
ज्ञानार्णव गद्य टीका	—ज्ञानचन्द	हि०	२००
ज्ञानार्णव गद्य टीका	—श्रुत सागर	सं०	२००
ज्ञानार्णव भाषा		सं०	२००
ज्ञानार्णव भाषा	—जयचन्द छाबड़ा	हि०	२०१, २०२, २०३
ज्ञानार्णव भाषा	—टेकचन्द	हि०	२००
ज्ञानार्णव भाषा	—लब्धि विमल मणि	हि०	२००, २०१
ज्ञानानन्द श्रावकाचार		सं०	१०८६
ज्ञानानन्द श्रावकाचार	—भाई रायमल्ल	राज०	११०, १११
ज्ञानांकुश		सं०	१०८१
ज्ञानांकुश शास्त्र		सं०	११४०

ग्रंथ एवं ग्रंथकार

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
अकलंक देव -	अकलंकाष्टक सं०	७०६
	तत्वार्थराजवार्तिक सं०	४३
	न्यायविनिश्चय सं०	२५७
	प्रतिष्ठाकल्प सं०	८८७
	प्रायश्चित शास्त्र सं०	१४१, २१४
	प्रायश्चित ग्रंथ सं०	६८६
अकलंक—	रविव्रत कथा हि०	४३२
अकमल—	शील बत्तीसी हि०	६४४, १०१०, ११५२
अखयराज श्रीमाल—	कल्याण मन्दिर स्तोत्र भाषा हि०	७१६
	चौदहगुणस्थान पंचाशिका राज०	३२
		३३
	भूपाल चौबीसी भाषा हि०	७५१
	भक्तामर स्तोत्र भाषा हि०	७४४
	विषापहार स्तोत्र भाषा हि०	७५६
अमर प्रभसूरी—	भक्तामर स्तोत्र टीका सं०	७४२
अखेमल—	विनती हि०	१०७८
अखैराम—	परवांपुर हि०	१०६२
अखयराम लुहाडिया-	मलयसुन्दरी चरित्र भाषा हि०	३६५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	शीलतरंगिणी	४६०
अचलकीर्ति—	आदिनाथ स्तुति हि०	१०६७
	अठारह नाते की कथा हि०	१०७३, १०७८, १०७६
	विषापहार स्तोत्र भाषा हि०	४५, ७६०, ८७४, १००५, १११४, ११२२, ११४८
अचल साहु—	मनोरथ माला हि०	११११
अजयराज—	बीनती हि०	८७७
	पद हि०	८७७
ब्र० अजित—	हनुमच्चरित्र सं०	४१८, ४१६
अजितप्रभ सूरि—	शान्तिनाथ चरित्र सं०	३८६
अर्जुन—	आदित्यवार कथा प्रा०	११४६
अनन्तवीर्य—	प्रमेयरत्न माला सं०	२५६
अनन्तसूरि—	न्यायसिद्धान्त प्रभा सं०	२५७
अनुभूति स्वरूपाचार्य-	आख्यात प्रक्रिया सं०	५११
	कृदन्त प्रक्रिया सं०	५१२
	तद्धित प्रक्रिया सं०	५१३
	महीभट्टी प्रक्रिया हि०	५१७
	सारस्वत चन्द्रिका सं०	५२१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	सारस्वत धातु पाठ सं०	५२२
	सारस्वत प्रक्रिया सं०	५२३, ६५४
	सारस्वत व्याकरण पंचसंधि सं०	५२६
	सारस्वत सूत्र सं०	५२७
अनूपाचार्य --	आषाढी पूर्णिमाफल सं०	१११६
अनूपाराम—	यंत्रावली सं०	६२३
अप्पयदीक्षत—	अलंकार चन्द्रिका सं०	५६३
	कुवलयानन्द सं०	५६३
अपराजित सूरि—	भगवती आराधना (विजयोदया टीका) स०	१४५
अभयचन्द्र--	गोम्मटसार (पंच संग्रह) वृत्ति स०	२०
	लघीयस्त्रय टीका सं०	११६७
अभयदेव गणि---	प्रश्न व्याकरण सूत्र	प्र०सं० ७६
अभयदेव सूरि --	स्तंभनक पार्श्वनाथनमस्कार सं०	६५६
अभयचन्द्र—	नेमिनाथ रास हि०	६५२
	सिद्धचक्र गीत हि०	६५२
	बलभद्र गीत हि०	६६६
अभयचन्द्राचार्य—	कर्म प्रकृति टीका सं०	७
	आचारांगसूत्र वृत्ति प्रा०सं०	३
अभयदेव—	जयतिहुयण प्रकरण प्रा०	७२५, १०२६
	वीर जिन स्तोत्र प्रा०	७६०
	स्तंभनक पार्श्वनाथनमस्कार सं०	६५६
अभयचन्द्र सूरि—	मांगीतुंगी जी की यात्रा हि०	७५५ ११४५
	मांगीतुंगी गीत हि०	१११९
अभयनन्दि—	पल्यविधान पूजा सं०	६०७
	सोलहकारण उद्यापन सं०	६३५
पं० अभयदेव—	लब्धि विधान कथा सं०	४३४, ४७६
	व्रत कथा कोश स०	४७८
	लब्धि विधान कथा सं०	४७६, ११३६
	चतुर्विंशति कथा सं०	४८०
	त्रिकाल चौबीसी कथा सं०	४२६, ४३४
	द्वादश व्रत कथा सं०	४४७
	व्रतोद्यातन श्रावकाचार सं०	
	शास्त्र दान कथा सं०	४३४
	श्रावक व्रत कथा सं०	६१२
अमरकीर्ति	जिनसहस्र नाम टीका सं०	७२८, ७२६
	योगचिन्तामणि टीका सं०	५०२
अमरकीर्ति—	षट्कर्मोपदेशरत्नमाला अप०	१६८
अमरचन्द—	विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजा हि०	६०४
	व्रतविधान पूजा हि०	६०६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
अमरसिंह—	अमरकोश सं०	५२३, १०८२
	नामलिंगानुशासन सं०	१०८२
अमोघवर्ष—	प्रश्नोत्तर रत्नमाला सं०	७७, ६०८
अमृतचन्द्राचार्य—	तत्वार्थसार सं०	४३
	पुरुषार्थ सिद्धयुपाय सं०	
	समयसार कलशा सं०	२२०, २२१
	समयसार टीका सं० (आत्म ख्याति)	२२३ २२४, २२५
अमृत प्रभ—	योगसत सं०	६६६
अमितिगति—	आराधनासार सं०	६२
	धर्मपरीक्षा सं०	११५
	भावना बत्तीसी सं०	७७३
	श्रावकाचार सं०	६६६
	सुभाषितरत्न सन्दोह सं०	२६४
अरुणमणि—	अजितजिनपुराण सं०	२६४
अवधू—	अनुप्रेक्षा हि०	१०६७, १११०
कवि असग—	वर्द्धमान पुराण सं०	२६६, ३८६
	शान्ति पुराण सं०	३००
अश्वलायन—	सरस्वती स्तोत्र सं०	७६५
मुनि असोग—	दानशीलतप भावना प्रा०	११५
आशासुन्दर—	विद्याविलास प्रबन्ध हि०	७५८
आशमल्ल—	भाद्रबंधर दीपिका सं०	५६१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
आशाधर—	शान्तिनाथ चरित्र सं०	३८६
आशाधर ऋषि—	तम्बाखू सज्झाय हि०	११८३
आत्माराम—	आत्मप्रकाश हि०	५७४
आनन्दघन—	चन्द्रप्रभु स्तवन हि०	७२३
	धर्मनाथ स्तवन हि०	६४२
आनन्द—	वृषभदेव वन्दना हि०	१०६६
	स्तवन हि०	७७०
आनन्द वर्द्धन—	नणद भोजाई गीत हि०	१०६१
आनन्द—	कोकमंजरी हि०	६२६
आलूकवि—	दोहरा हि०	६४१
	अंकुरारोपण विधि सं०	७८८
आशाधर—	अनगार धर्मामृत सं०	६०
	आशाधर ज्योति ग्रन्थ सं०	५४१
	कल्याणमाला	११७६
	जिनयज्ञकल्प सं०	८१४
	जिनकल्याणक सं०	१०८
	जिनसहस्रनाम सं०	७२४, ८७६, ६५७, ६६४, ६७८, ६७६, ६६८, १००५, १०१८, १०४८, ११०८, ११२०, ११४६,
	पंच मंगल	१०८०, १०८२
	त्रिभंगी सुबोधिनी टीका सं०	६१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	देवसिद्ध पूजा	११७६
	न्हवण विधि सं०	८३८
	नित्यपूजा पाठ सं०	८३६
	पुण्याहवाचन सं०	८६४
	पूजा विधान सं०	८७६
	प्रतिष्ठा पाठ सं०	८८८
	प्रतिष्ठा विधि सं०	८८६
	प्रतिष्ठा सारोद्धार सं०	८६०
	शान्तिपुराण सं०	३००
	सरस्वती स्तुति सं०	७६५
		१९६०
	सिद्धि प्रिय स्तोत्र टीका सं०	७६८
	स्तोत्र चतुष्टय टीका सं०	७७०
	सागारधर्मामृत सं०	१७३
	शान्ति होम विधान सं०	
	सिद्ध चक्र पूजा सं०	६११
	होम विधान सं०	६३८
इन्द्रचन्द्र—	पद सं०	१०४८
इन्द्रजीत—	रसिक प्रिया हि०	६२८, ६६६
इन्द्रनन्दि—	अंकुरारोपण विधि	७८६
	इन्द्रनन्दि नीति सार सं०	६८२, ६८७
	पद्मावती देव कल्प मंडल पूजा सं०	८६०
	सभाभूषण सं०	८१
इलायुध—	कविरहस्य सं०	११७६
ईसर—	द्वादशानुप्रेक्षा हि०	६५१
उदय—	पंचमी स्तोत्र हि०	७३७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
उदयकीर्ति —	निर्वाण काण्ड गाथा व पूजा प्रा०सं०	८४१
उदयसूरि—	देव परीषह चौपई हि०	१०२४
उदय रतन—	स्थूल भद्रनुरास हि०	६४८
	स्थूल भद्र रासो हि०	१०६१
उदय सागर सूरि—	शान्तिनाथ स्तवन हि०	७६१
उपाध्याय व्योमरस	—शान्ति होम विधान सं०	११७१
उमास्वामी—	तत्वार्थसूत्र सं०	४४ ४५,४७,४८,४६,५०,१६६, ६५३, ६५७, ६५८, ६६१, ६६६, १००५, १००६, १००७, १०१६, १०२२, १०३२, १०३५, १०६६, १०७२, १०७४, १०७८, १०८२, १०८८ १०६७, ११०१, १११७, ११२१, ११२२, ११३६, ११५४, ११८३,
उमास्वामी—	श्रावकाचार हि०	१६६
ऊदौ—	सनत्कुमार रास हि०	६४४
भ० एकसन्धि—	जिन संहिता सं०	८१५
ओंसेरीलाल—	दशलक्षण कथा हि०	६६१
ऋषभदास—	वसुनन्दि श्रावकाचार भाषा हि०	१६१
	सज्जनचित्त वल्लभ भाषा हि०	६६४
ऋषभदास—	शत्रुंजय तीर्थ स्तुति हि०	७६१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
ऋषभ—	बारा आरा का स्तवन हि०	७२७
ऋषभदास निगोत्या—	सूत्राचार भाषा राज०	१५१
ऋषि जयमल्ल—	गुणमाला हि०	७२१
ऋषि दीप —	गुणकरण्ड गुणावली हि०	६५६
ऋषि वर्द्धन—	नेमिजिन स्तवन सं०	७३१
कवि कनक —	मेघकुमार रा० हि०	१०२५
	कर्मघटा	११०५
कनककीर्ति—	तत्वार्थसूत्र भाषा हि०	५१, ५२, १०६६
	पद हि०	१०७३, ११०५
	बारहखडी हि०	१०५६
	विनती हि० सं०	८७६, ११०५, ११४८
	सुभाषितावली	७००
कनक कुशल—	भक्तामर स्तोत्रवृत्ति सं०	७४७
	साधारण जिनस्तवन वृत्ति सं०	७६६
कनकशील—	ज्ञानपंचमी व्याख्यान सं०	११०
कनक सुन्दर—	हरिश्चन्द्र चौपई हि०	४६०
कनक सोम—	आषाढभूति मुनि का चौढाल्या हि०	१०१३
मुनि कनकामर—	करकण्डु चरित्र अपभ्रंश,	३१५
ब्रह्मकपूर—	पद हि०	१०६७
	पार्श्वनाथ रास हि०	६४४, १०२२
मुनि कपूरचन्द—	स्वरोदय हि०	५७२
कबीरदास—	अक्षर बावनी हि०	११०६
	पद हि०	१११९, ११७०
कमलकीर्ति—	अठारह नाता हि०	१०५३, १०६५, ११३०
	खिचरी हि०	११६८
	चौवीसजिन चौपई हि०	११३२
	बारहखडी हि०	१०५३
कमलनयन—	जिनदत्त चरित्र भाषा, हि०	३२६
कमलभद्र—	जिनपंजर स्तोत्र सं०	७२६, ६५८
कमलविजय—	जम्बू स्वामी चौपई हि०	१०२६
	सीमंधर स्तवन हि०	६४७
ब्र० कर्मसी	ध्यानामृत हि०	६३५
कल्याण—	कुतुहल रत्नावली सं०	५४२
कल्याणकीर्ति—	नेमि राजुल संवाद हि०	११७४
	चारुदत्त प्रबंध हि०	४५६
	बाहुबलि गीत हि०	६६२
	श्रेणिक प्रबन्ध हि०	४०६, ४६१
कल्याणदास—	सिद्धांत गुण चौबीसी हि०	१०६५
	बालतन्त्र भाषा हि०	५८०
कल्याणमल्ल—	अनंग रंग सं०	६२६
कल्याणमुनि—	सात बीसत गीत हि०	१०२७
कल्याणसागर—	आदि जिन स्तवन हि०	७११
	पंचमीव्रत पूजा सं०	८५६
कंवरपाल —	कंवरपाल बत्तीसी हि०	११७६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	सम्यक्त्व बत्तीसी हि०	१७१
कविराज पंडित—	राघवपांडवीय टीका सं०	७८३
कवीन्द्राचार्य—	कवि कल्पद्रुम सं०	५६३
श्र० कामराज—	जयकुमार चरित्र रा०	३२६
	जयपुराण सं०	२७६
	नामावलि छंद हि०	११४४
(स्वामी) कार्तिकेय—	कार्तिकेयानुप्रेक्षा प्रा०	१६०, १६१, ६६४, १०३६
कालिदास—	ऋतुसंहार सं०	३१५
	कुमारसंभव सं०	३१७
	ललोदय काव्य सं०	३३६
	बसंत वर्णन सं०	३५७
	मेघदूत सं०	३६६
	रघुवंश सं० ३७८,	३७६
	वृत्तरत्नाकर सं०	५६६
	श्रुतबोध सं०	६००
काशीनाथ—	लग्न चन्द्रिका सं०	५६३
	शीघ्रबोध सं०	५६६, ६६१
काशीराज—	अमृत मंजरी सं०	५७३
काशीराम—	लघु चाणक्य नीतिशास्त्र भाषा हि०	१०८७
किशनचन्द्र—	पद हि०	१०४८
किशनदास—	उपदेश बावनी हि०	६८२
	लघुसामायिक हि०	१००२
किशनसिंह—	अच्छादना पच्चीसी हि०	१०५६
	क्रोपन क्रियाकोश हि०	१००, १०१, १०६६
	नागश्री कथा हि०	११६७
	निशिभोजन कथा हि०	४५२
	भद्रबाहु चरित्र हि०	३५६, ३६०, ३६१
	लब्धिविधान व्रत कथा हि०	४७६
किशोर—	आदिनाथ बीनती हि०	४५
	नींदडली हि०	८७७
कुंदकुन्दाचार्य—	अष्टपाहुड़ प्रा० १८१,	६८३, ६६४
	द्वादशानुप्रेक्षा प्रा०	२०३
	पंचास्तिकाय प्रा०	७१, ७२
	प्रवचनसार प्रा०	२१०
	मोक्षपाहुड प्रा०	२१५
	रयणसार प्रा०	७८
	शीलप्राभृत प्रा०	२१७
	षट्पाहुड प्रा०	२१८
	समयसार प्राभृत प्रा०	२२०
	सूत्र प्राभृत प्रा०	८७
कुमार कवि—	आत्म प्रबोध सं०	१०३
कुमुदचन्द्र—	कल्याण मंदिर स्तोत्र सं०	७१६, ७१७, ७१८, ७७२, ६५३, १०२२, १०३५, १०६५, १०६७, १०७८, १०८३, ११२६
भ० कुमुदचन्द्र—	आदिनाथ स्तुति हि०	४५
	गीत सलूना	११५६
	परदारो परशील सज्झाय	
	बणजारा गीत हि०	४५६, ११६१
	बाहुबलि छंद हि०	१०६६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	कुमुद चं० विनती	८७६, ११३२
	सवैया हि०	१०३०
कुलभद्राचार्य—	राठसमुच्चय सं०	८३
आ० कुंवरजी —	साधु वन्दना हि०	७६५
कुशललाभ —	गुणसुन्दरी चउपई राज०	४५६
	गौडीपार्श्वनाथ छंद हि०	७२१
	ढोलामारणी चौपई हि०	१०२६, १०३८
	माधवानल कामकंदला चौपाई राज०	४६६
कुसुमदेव—	दृष्टान्त शतक सं०	६८६
कूवरखाजी —	अलंकार सवैया हि०	१०१५
कृष्णकवि—	वृत्तचन्द्रिका हि०	५६८
भ० कृष्णदास—	मुनिसुव्रत पुराण सं०	२६५
	विमलनाथ पुराण सं०	२६६
कृष्णमिश्र—	प्रबोधचन्द्रोदय सं०	३५६, ६०६
भट्टकेदार—	छंदसीय सूत्र सं०	५६४
	वृत्तरत्नाकर सं०	५६८
	न्यायचन्द्रिका सं०	६५६
केशवदास—	अक्षर बावनी हि०	६८१
	छंद हि०	११५८
केशवदास—	वैद्य मनोत्सव सं०	५८८
केशवदास—	कविप्रिया हि०	६४२, १०३६, १०३७
केशव—	ज्योतिष रत्नमाला सं०	५४७
आ० केशव—	षोडशकरण क्षतोद्यापन जयमाल सं०	६८८
केशराज—	रामयश रसायन हि०	४७२, ११६६
केशवदैवज्ञ—	केशवी पद्धति सं०	५४२
	जातक पद्धति सं०	५४५
केशव मिश्र —	तर्क परिभाषा सं०	२५२
केशराज—	शत्रुंजय गिरिस्तवन हि०	७६०
केशरीसिंह —	शिखरजी की चौपई हि०	१११४
	शिखरविलास हि०	१००५
पाण्डे केशव—	कलियुग कथा हि०	१०५०, १०५३, १०७७
	आदित्यजिन पूजा सं०	७८६
केशवसेन—	भक्तामर स्तोत्र उद्यापन पूजा सं०	८६२
	रत्नत्रय उद्यापन सं०	८६५
	रविव्रतोद्यापन पूजा सं०	६००
	रोहिणीव्रतोद्यापन सं०	६०१
	रत्नत्रयोद्यापन पूजा सं०	६७७
	वृहद् दशलक्षण पूजा सं०	६६८
केशव वर्णी—	गोम्मटसार वृत्ति सं०	२१
कोकदेव—	कोकशास्त्र हि०	६२६
कोमट भूपाल—	शृंगार दीपिका सं०	६०२
कोल्हा—	सखियारास हि०	१६६
कंजकीर्ति—	द्रव्य संग्रह सं०	६२
क्षपणक—	अनेकार्थ ध्वनि मंजरी सं०	५३१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
क्षेमकरण—	बारहमासा वर्णन हि०	१०१८
क्षेमचन्द्र—	योगसार हि०	११४६
खड्गसेन—	त्रिलोक दर्पण कथा हि०	४४२, ६१६
	धर्मचक्र पूजा हि०	८३४
	हरिवंशपुराण भाषा हि०	३०३
	सहस्रगुणीपूजा हि०	६३०
खानमुहम्मद—	पद हि०	१०७५
खीमराज—	पद रमणीगीत हि०	१०२५
खुशालचन्द—	अनन्तव्रतपूजा हि०	४२१
	उत्तरपुराण भाषा हि०	२७२, २७३, २७४ १०५२
	चन्दनषष्ठीव्रतकथा हि०	४३८
	चन्द्रप्रभ जकड़ी हि०	१०८४
	ज्येष्ठ जिनवर व्रतकथा हि०	११२३
	धन्यकुमार चरित्र हि०	३३६
	पद संग्रह हि०	६६२
	पद्मपुराण भाषा हि०	२०४, १०५२
	पल्य विधान कथा हि०	४५६
	पुष्पांजलिव्रत कथा हि०	४६१
	प्रद्युम्नचरित्र भाषा हि०	३५५
	यशोधर चरित्र भाषा हि०	३७७, ११६३
	व्रतकथाकोश हि०	४६१, ४८०, १०७५
	सुगन्धदशमी कथा हि०	५०५
	सुभाषितावली भाषा हि०	७००
	हरिवंशपुराण भाषा हि०	३१०, ३११, ३१२, ३१३, १०५२
खेतसी—	नेमिनाथ विवाहलो हि०	६३६
	बारहमासा हि०	११०५
० खेता—	सम्यक्त्व कौमुदी सं०	४९५
कवि खेताल—	चित्तौड़ की गजल हि०	११११
खेमकरण—	सम्मेदशिखर पच्चीसी हि०	११०७
खेमराज—	सिद्धप्रियस्तोत्र भाषा हि०	७६८
खेमविजय—	सिद्धगिरि स्तवन सं०	७६६
खेमसागर—	खेतनमोहनराज संवाद, हि०	११८०
खेमा—	श्रीपालराज सिज्झाय हि०	७६२
गंग—	हरियाली छप्पय हि०	७०८
गंग कवि—	राजुल बारह मासा हि०	१००३
पं० गंगादास—	आदित्यवार कथा हि०	४२७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	छंद संग्रह हि०	११३५
	त्रिभुवन विनती हि०	११३३
	पंचमेरु पूजा सं०	८५८
	पुष्पांजलि व्रत कथा सं०	४६१
	पुष्पांजलि व्रतोद्यापन सं०	८६६
	बत्तीस लक्षण छप्पय हि०	५५५
	महापुराण चौपई हि०	७६४, ६६१, १०६३, ११४३, ११५२
	महापुराण विनती हि०	११३७, ११६५, ११६६
	सप्त परम स्थान पूजा सं०	६१८
	सम्मेद शिखर पूजा सं०	६२२
मंगाराम—	सभा भूषण ग्रन्थ हि०	१०४६
	सभा विनोद हि०	६०६
मंगुकवि—	सुकौशल रास हि०	११३७
मजसार—	दंडक स्तवन प्रा०	११३
मजसागर—	चौबीस दण्डक हि०	११५६
गणपति—	माधवानल प्रबन्ध हि०	६२७
रावल गणपति—	गणपति मुहूर्त सं०	५४२
गणेश दैवज्ञ—	ग्रहलाघव सं०	५४३
गर्गऋषि—	गर्ग मनोरमा सं०	५४२
गर्गमुनि—	पाशाकेवली सं०	५५२
		११३६
ब्र. गांग जी—	मुनिसुव्रतरास वेलि हि०	६३६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
पं. गिरधारी लाल—	सम्मेद शिखर यात्रा वर्णन हि०	६५७
	जयपुर जिन मंदिर यात्रा हि०	६५२
गिरिवरसिंह—	तत्वार्थ सूत्र टीका हि०	५२
गोकल गोलापूर्व—	सुकुमाल चरित्र भाषा हि०	४१३
ब्र. गोपाल—	चतुर्विंशति पंचकल्याणक समुच्चयोद्यापन विधि सं०	७६६
गोपालदास—	विनती हि०	६८२
गोरखदास—	गोरख कवित्त हि०	११४५
पं. गोल्हण—	चतुष्क वृत्ति टिप्पण सं०	५१२
गोवर्द्धनाचार्य—	स्वप्नसती टीका सं०	५७०
पं गोविन्द—	उपदेशवेलि हि०	१११०
गोविन्ददास—	चौबीस गुणस्थान चर्चा हि०	३४
गौतम—	द्वादशानुप्रेक्षा प्रा०	२०३
गौतम स्वामी—	ऋषि मंडल स्तोत्र सं०	७१४, ७७४ ११२४
	प्रतिक्रमण प्रा०	२०६
	शकुनावली प्रा०	५६५
	संध्यामंत्र सं०	६२४
	संबोधपंचासिका प्रा०	१७२, ६७८
भ० गुणकीर्ति—	थेरिक पुच्छा हि०	६५२
गुणचन्द्र—	नेमिराजुल गीत हि०	१०६७
	पद हि०	१०८८
	शील चूनडी हि०	११२४

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
गुणचन्द्राचार्य—	नागवाल पूजा संग्रह लिखान	सं० ७८१
गुणनन्दि—	ऋषि मंडल पूजा सं०	७८७, ७९८
	रोटसीज कथा सं०	४७४
गुणभद्राचार्य—	आत्मानुशासन सं०	१८४
	उत्तर पुराण सं०	२७०, २७१
	जिनदत्त चरित्र सं०	२२६, ४४१
	धन्यकुमार चरित्र सं०	३३३
	महापुराण सं०	२९३
गुणरत्नसूरि—	कल्याण मन्दिर स्तवनावचूरि सं०	७१६
गुणवर्द्धनसूरि—	स्थूलभद्र सिज्झाय हि०	१०६८
गुणविनय—	रघुवंश काव्य वृत्ति सं०	३८२
गुणसागर—	श्रीपाल चरित्र सं०	३९४, ३९५
गुणसागर सूरि—	पंचाख्यानी साह हि०	४५६
	जिन स्तवन हि०	११०५
	ढाल सागर हि०	६६०
	धर्मनाथरो स्तवन हि०	९८९
	नरकनुढाल हि०	४५०
	शांतिजिनस्तवन हि०	७६१
	शालिभद्र धन्ना चौपई हि०	९८९
गुणसाधु—	चित्रसेन पद्मावती कथा सं०	४३९
गुणसूरि—	स्तवन हि०	७९९, १०६५
गुणहर्ष—	एकादशी स्तुति हि०	७१३
गुणाकरसूरि—	भक्तामर स्तोत्र टीका सं०	७४७
	हीरामकरंद सं०	५७२
गुमानीराम—	दर्शन पच्चीसी हि०	७३०
गुरुदत्त—	कल्याणमन्दिर स्तोत्र वृत्ति सं०	७२०
गुलाबचन्द—	दयाराम हि०	९८५
	कृपण जगावण हि०	९६२
ब्र० गुलाल—	चौरासी जाति की जयमाल हि०	९६१
	जलगालण विधि हि०	९८५
	क्षेपनक्रियाकोश हि०	१०७७, ११५२
	वर्द्धमान समवशरण दर्शन हि०	१६२
	विवेक चौपई हि०	१०२२
	समोसरण रचना हि०	४३३
गूजरमल ठग—	पंचकल्याणक उद्यापन हि०	५४७
घट कर्पर—	घटकर्पर काव्य सं०	३२०
घनश्याम—	पद हि०	१०६२
घासीराम—	आकाश पंचमी कथा हि०	११२३
चंडकवि—	प्राकृत लक्षण सं०	५९५
	प्राकृत व्याकरण सं०	५१७
चन्द—	अंकवत्तीसी हि०	६८१
चक्रेश्वर—	रत्नदीपिका सं०	१११७
चतरु शिष्य	चउबोली की चौपई हि०	१०८
सांवलजी—		

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
चतुर्भुजदास—	मधु मालती कथा हि०	९४०, ९६२, ११६८
चतुरमल—	चतुर्दशी चौपई हि०	१०५
(जाति) चन्द	बूढ़ा चरित्र हि०	११३१
चन्द्रकवि—	चौबीस महाराज की विनती हि०	७२४
चन्द्रकीर्ति—	कथाकोश सं०	४३१
	छंदकोश टीका सं० प्रा०	५९३
	पंच कल्याणक पूजा सं०	४८
	पार्श्वपुराण सं०	२९०, ३४५
	भूपाल चतुर्विंशति की टीका सं०	७५१
	विमान शुद्धि शांतिक विधान सं०	९०४
चन्द्रकीर्ति—	पद हि०	११०८
चन्द्रकीर्ति सूरि—	प्रक्रिया व्याख्यान सं०	५१६
	सारस्वत दीपिकावृत्ति सं०	५२२
	सारस्वत व्याकरण दीपिका	५२६
चन्द्रसागर—	श्रीपाल चरित्र हि०	३९८
ब्र० चन्द्रसागर—	पंच परमेष्ठी हि०	११५९
चन्द्रसेन—	चन्दनमलयागिरि कथा हि०	९४५
चम्पाबाई—	चम्पा शतक हि०	६५९
	पद हि०	११३०
चम्पाराम—	भद्रबाहु चरित्र भाषा हि०	३६१
चम्पालाल बागड़िया—	अकलंकदेव स्तोत्र भाषा हि०	७१०
पं० चम्पालाल—	चर्चासागर हि०	३०
चंपाराम दोशान—	धर्म बावनी हि०	१०४०
चरनदास—	ज्ञानस्वरोदय सं०	५४६, ५७२, १०५९, ११२१, ११८२
	वैराग्य सुधजीवन अंग हि०	१०५९
चरित्रवर्द्धन—	कल्याण मन्दिर स्तोत्र टीका सं०	७१८
	राघव पाण्डवीय टीका सं०	३८३
चाणक्य—	चाणक्य नीति सं०	६८३, ६८४, ६८५,
	राजनीति शास्त्र सं०	६९३, ९६९
	राजनीति समुच्चय सं.	६९३
चामुण्डराय—	चारित्रसार सं०	१०६
	भावनासार संग्रह सं०	११९३
चारित्र भूषण—	महीपाल चरित्र सं०	३६७
चारित्रसिंह—	मुनिमालिका हि०	११५६
पं० चिंतामणि—	ज्योतिष शास्त्र सं०	५४७
चिमना—	द्वादशमासा महाराष्ट्री	१००३
चुन्नीलाल—	चौबीस महाराज पूजन हि०	८००
	(वर्तमान चौबीसी पूजा)	९०३
	बीस विदेह क्षेत्र पूजा हि०	८९१
	रोटतीज व्रत कथा हि०	४७४, १०६५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
चिम्र भट्ट—	तर्क परिभाषा प्रकाशिका	सं० २५२, ५१४
(दैवज्ञ) चिंतामणि—	रमलप्रश्न तंत्र	सं० ५६१
चैनसुख—	अकृत्रिम चैत्यालय पूजा	हि० ७७७
	पद संग्रह	हि० ६६३
	सहस्रनाम पूजा	हि० ६३०
पं० चोखचन्द—	चन्दन षष्ठी पूजा	सं० ७६७
छत्रसेनाचार्य—	रुक्मिणी कथा	सं० ४३४
छीतर ठोलिया—	होली कथा	हि० ५०८
छीतरमल काला—	जिन प्रतिमा स्वरूप भाषा	हि० १०८, ११८१
छीहल—	उदरगीत	हि० १०६७
	पंचसहेली गीत	हि० ६६६, १०२२
	बावनी	हि० ६४६
	रेमन गीत	हि० ६७२
छोटेलाल—	तत्वार्थ सूत्र भाषा	हि० ५३, ७४४
जगजीवन—	बनारसी विलास	हि० ६६८
	भूपाल चौबीसी भाषा	हि० ११२२
जगतराय—	सम्यक्त्व कौमुदी	हि० ४६६
जगतराम—	जम्बू स्वामी पूजा	१०६४
	पद	१०४७, १०५३, १०६०, १०६३
	पद्मनंदिपचीसी भाषा	हि० १३२, १०७२
	भजन	१०५१
जगराम—	निर्वाण मंगल विधान	हि० ८४२
	पद संग्रह	हि० १०४५ १०४६, १०५३
जगद् भूषण—	वर्द्धमान विलास स्तोत्र	सं० ७५७
भट्ट जगन्नाथ—	गंगा लहरी स्तोत्र	सं० ७२१
पं० जगन्नाथ—	भामिनी विलास	सं० ६२७
पं० जगन्नाथ—	चतुर्विंशति स्तोत्र	सं० ७२३
	सुखनिधान	सं० ४१५
जटमल—	गोरा बादल कथा	हि० ११३१
जनार्दन विबुध—	वृत्त रत्नाकर टीका	सं० ५६६
गो० जनार्दन भट्ट—	वैद्यरत्न भाषा	सं० ५८६
जयकीर्ति—	अकलंक यतिरास	हि० ११४४
	अमरदत्त मित्रानंद रासो	हि० ६३०
	रविव्रत कथा	हि० ११४३
	वसुदेव प्रबन्ध	हि० ४८४
	शीलसुन्दरी प्रबन्ध	हि० ४६०
	सीता शील पताका गुणवेलि	हि० ६४५
जयकीर्ति—	चतुर्विंशति तीर्थंकर पंच कल्याणक पूजा	सं० ८१०
जयचन्द छाबड़ा—	अकलंकाष्टक भाषा	हि० ७०८
	अष्टपाहुड भाषा	हि० १८१, १८२, १८३
	आप्तमीमांसा	२४६
	कार्तिकेयानुप्रेक्षा	हि० १६२, १६३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	ज्ञानार्णव भाषा	हि० २०१, २०२, २०३
	तत्वार्थ सूत्र भाषा	हि० ५४, ५५
	देव पूजा भाषा	हि० ८३३
	द्रव्य संग्रह भाषा	हि० ६७, ६८
	नित्य पूजा वचनिका	हि० ८४०
	नियमसार भाषा	हि० ७०
	परीक्षामुख भाषा	हि० २५७
	प्रमाण परीक्षा भाषा	हि० २५६
	भक्तामर स्तोत्र भाषा	हि० ७४५
	रयणसार वचनिका	हि० ११६५
	षट्पाहुड भाषा वचनिका	हि० २१६
	समयसार भाषा	हि० २२७, २२८
	सर्वार्थसिद्धि भाषा	हि० ८२, १२०४
	सामायिक पाठ भाषा	हि० २४३, १०३५, १०७२
जयतिलक सूरि—	मलयसुन्दरी चरित्र	सं० २६५, ४६६
जयतिलक—	प्रकृति विच्छेद प्रकरण	सं० ५७६
पं० जयतिलक—	चतुर्विंशत स्तवन	सं० ७२३
जयदेव —	गीत गोविन्द	सं० ७२०
वैद्य जयदेव —	पथ्यापथ्य विबोधक	सं० ५७६
जयन्त भट्ट—	उच्छर भाष्य	सं० ११७३
जयमल—	ढाल संग्रह	हि० ६६०
जयमित्र हल्ल—	वर्द्धमान काव्य	अपभ्रंश ३८६
	श्रीपाल चरित्र	अपभ्रंश ३६३
पं० जयवन्त —	सीमंधर स्वामी स्तवन	हि० ७६६
जयशेखर सूरि—	अगड दत्तक कथा	सं० ४२१
	प्रबोध चिंतामणि	सं० ११६०
जयशेखर—	संबोह सत्तरि	प्रा० ६५७ १७२
उपा० जयसागर—	आदित्यव्रतोद्यापन पूजा	सं० ७८६
	पर्वरत्नावलि	सं० ४५६
	सूर्यव्रतोद्यापन	सं० १०८४
ब्र० जयसागर—	अनिरुद्ध हरण कथा	हि० ४२३, ११६८
	सीताहरण रास	हि० ६४६
जयसिंह मुनि—	शीलोपदेशमाला	हि० ६५७
जयसेन—	धर्मरत्नाकर	सं० १२२
जवाहरलाल—	चौबीस तीर्थंकर पूजा	हि० ८००
	सम्मेदशिखर पूजा	हि० ६२४, १०८६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
जसकीर्ति –	शीलोपदेश रत्नमाला प्रा०	४६०
जसकीर्ति—	कथा संग्रह	हि० १०८६
	जिनवर स्तवन	हि० १०६१
जसवंतसिंह—	भाषाभूषण	हि० ५६५, ११६८, ११६३
जिनकीर्ति—	षट् आणमय स्तवन	सं० ७६३
जिनचन्द—	चौबोली लीलावती कथा	हि० ४३६
	विक्रम लीलावती चौपई	हि० ४८५
जिनचन्द्राचार्य—	सिद्धान्तसार	प्रा० ८३
जिनदत्त सूरि—	पद स्थापना विधि	सं० ११८८
जिनदत्त सूरि—	विवेक विलास	सं० हि० १६३, ६७६
पं० जिनदास गोधा—	अकृत्रिम चैत्यालय पूजा	सं० ८१२
	जम्बूद्वीप पूजा	स० ८१२
	सुगुरु शतक	हि० १०३५
पं० जिनदास गंगवाल —	अनन्त जिन पूजा	सं० ७८०
	अनेकार्थ मंजरी	हि० ५३१
	आराधना सार टीका	हि० ६२
	द्वादशानुप्रेक्षा	हि० ६६०
	धर्मोपदेश श्रावकाचार	सं० १२६, हि० १०४७
	पार्श्वनाथ कथा	हि० १०१६
	लंपक पंचासिका	हि० १०३५
	लावणी	हि० १०७५
	विवेक जकड़ी	हि० ६८४ १०१६, १०२३
	विनती	हि० ८७६
	होली चरित्र	सं० ४२०
	होलीरेणुका पर्व	सं० ५०६
पाण्डे जिनदास—	आदित्य व्रत कथा	हि० ११६३
	चेतन गीत	हि० ६८२, १०२७
	जम्बू स्वामी चौपई	हि० ३२४, १०१५, १०४१, ११०१, ११०६, ११४३, ११६७
	जोगीरासा	हि० ६२४, ६५१, १०११, १०१३, १०५६, १०६५, १११०, ११४५
	दोहा बावनी	हि० ६५२
	धर्मतरु गीत	हि० ६५१, १०२३
	प्रबोध बावनी	हि० १०२०
	माली रासा	हि० ६४५, ११०२
	मुनीश्वर जयमाल	हि० ८७५, ६७६, ११०८, १२४६
ब्रह्म जिनदास—	अजितनाथरास	हि० ६३०, ११४७
	अष्टांग सम्यक्त्व कथा	हि० ४२५
	आदिपुराणरास	हि० २६७, ६३१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	आलोचना जयमाल	हि० १८६, १०१८
	अनन्तव्रत रास	हि० ११४३, ११४५, ११५७, ११७०
	अनन्तव्रत कथा	हि० ११४३
	आदिकासार	हि० ११३८
	आकाशपंचमी कथा	हि० ११०७
	अठाईस मूलगुणरास	हि० ११०७
	कर्मविपाक रास	हि० ६३२, ११३७
	करकंडुनो रास	हि० ६३२
	गुणस्थान चौपई	हि० १४
	गुरु जयमाल	हि० ७६५, ११४३, ११५६
	गुरु पूजा	हि० १०७७
	ग्यारह प्रतिमा विनती	हि० ११३७
	चारुदत्त प्रबंध रास	हि० ११४३
	चौरासी जाति जयमाल	हि० ११५२
	जम्बू स्वामी चरित्र	सं० ३२३
	जम्बू स्वामी रास	हि० ६३३, ११३८, ११४७
	जीवन्धर रास	हि० ६३४
	ज्येष्ठ जिनवर विनती	हि० ६५२
	णमोकार रास	हि० ४३६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	(चारुदत्त सेठ रास)	
	दशलक्षण कथा	हि० ४४५, ११४३
	दानफल रास	हि० ६३४
	द्वादशानुप्रेक्षा	हि० ६७२
	धन्यकुमार रास	हि० ६३५
	धर्म पंचविंशतिका	प्रा० १२२
	धर्मपरीक्षा रास	हि० ६३५, ११४७
	नागकुमार रास	हि० ६३६
	नागश्री रास	हि० ११३७
	निर्दोष सप्तमी व्रत पूजा	हि० ८४१
	नेमीश्वर रास	हि० ६३७
	पद्मपुराण	सं० २७६
	परमहंस रास	हि० ६३७
	पाण्डवपुराण	सं० २८७, ३४५
	पाणीगालणरास	हि० ११०७
	पुष्पांजलि व्रत कथा	हि० ११६३
	पूजाकथा	हि० ४६१
	बंक चूल रास	हि० ६३८
	बारहव्रत गीत	हि० ११४४
	भद्रबाहु रास	हि० ६३९
	भविष्यदत्त रास	हि० ६३९
	भावना विनती	हि० ६५२

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	महायक्ष विद्याधर कथा	हि० ४६६
	मिथ्या दुक्कड	हि० ६५१, ११३८, ११५५
	यशोधर रास	हि० ६३६, १०२३, ११०७, ११४६
	रथिग्रत कथा	हि० ११६६
	रविवार प्रबंध	हि० ४६६
	रात्रि भोजन रास	हि० ११४४
	रामचंद्र रास	हि० ६८०
	राम रास	हि० ६४०
	रामसीता रास	हि० १०२५
	रोहिणी रास	हि० ६४१
	विनती	हि० ११३५
	शास्त्र पूजा	हि० १०७७
	श्रावकाचार रास	हि. ६८२ ६४१
	श्रीपाल रास	हि० ६४२, ११३७
	श्रुत केवलि रास	हि०
	श्रेणिक रास	हि० ६४३
	सम्यक्त्व रास	हि० ११४१
	सरस्वती पूजा जयमाल	हि. ११२६
	दर्शन रास	हि० ६४८, ११३७, ११४४, ११४७
	सोलहकारण रास	हि० ६४८, ११४३
	हनुमच्चरित्र	सं० ४१६
	हनुमंत रास	हि० ६४८, ११४१, ११४७
	हरिवंश पुराण	सं० ३०६, ३०७, ३०८, ३०६
	होली रास	हि० ११४१, ११४४
जिनरंग---	सिज्झाय	हि० १०६१
जिनरंग सूरि—	प्रबोध बावनी	हि० ७३७
जिनराज सूरि—	चउबीसा	हि० १०३७
	शालिभद्र चौपई	हि० ६४३, ६५४, ६७४, ३६१, १०६२, ४८७
ब्र० जिनवल्लभ सूरि—	संघ पट्टक टीका	सं० ६५७
जिनसूरि—	गज सुकुमाल चरित्र	हि० ३१८
जिनदेव सूरि—	मदन पराजय	सं० ६०६
जिनपाल—	चौडालिया	हि० ७२६
जिनप्रभसूरि—	दीपावली महिमा	सं० ८३३
जिनप्रभसूरि—	चतुर्विंशति जिन स्तोत्र टीका	सं० ७२२
	पार्श्वजिनस्तोत्र	सं० ७३३
	महावीर स्तोत्र वृत्ति	सं० ७५४
जिनवल्लभसूरि—	प्रश्न शतक	सं० ७६
	महावीर स्तवन	प्रा० ७५३
जिनवर्द्धन सूरि—	वाग्भट्टालंकार टीका	सं० ५६७
जिनलाभसूरि —	पार्श्वदेवस्तवन	हि० ७३३
जिनसागर—	कवलचन्द्रायण पूजा	सं० ६०७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
जिनसागर—	अनन्त कथा	हि० ११६३, ११६६
	छापय	हि० ११६६
जिनसुख सूरि—	कालकाचार्य प्रबन्ध	हि० ४३५
जिनसूरि—	रूपसेन राजा कथा	सं० ४७४
	अनन्तव्रतरास	हि० ११६९
जिनसेन—	जिनसेन बोल	हि० १०२५
	पंचेन्द्रिय गीत	हि. १०२५
जिनसेनाचार्य—	आदि पुराण	सं० ८१४ २६४, २६५, २६६
	जिन पूजा विधि	सं०
	जिनसहस्रनाम स्तोत्र	सं० ७२७, ७२८, ७७२, ६५६, १००० १००६, १०४१, १०६४, १०७३, १०७४, १०७८, १०८२, १०८८, १०६८, १११८, ११२२, ११३९, ११५१, ११६६
	जैन विवाह पद्धति	सं० ८१५, १११६
	त्रिलोक वर्णन	सं० ६११
	महापुराण	सं० २६३
जिनसेनाचार्य—	हरिवंश पुराण	सं० ६०३
जिनहर्ष—	अवन्तीकुमार रास	हि० ६८७
	अवन्ती सुकुमाल	हि० ४२५
	स्वाध्याय	६८७
	धर्मबुद्धि पापबुद्धि चौपई	हि० ६१४

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	पद	हि० ११०८
	पार्श्वनाथ की विनती	हि० ११४६ २६०
	श्रीपाल रास	हि० ६४२
	पार्श्वनाथ की निशानी	हि० ७३४
	बावनी	हि० ६८६
जिनहर्ष सूरि—	रत्नावली न्यायवृत्ति	सं०
जिनहंस मुनि—	दंडक प्रकरण	प्रा० ११३
जिनेन्द्र भूषण—	चन्द्रप्रभपुराण	हि० २७५
जिनेश्वरदास—	नन्दीश्वर द्वीप पूजा	सं० ८४६
	चतुर्विंशति पूजा	हि० १११३
जिनोदय सूरि—	हंसराज वच्छराज चौपई	हि० ५०६, ६५४
जीवन्धर—	गुण ठाणावेलि	हि० ६८२, ११३५ (चौदहगुणस्थान वेलि)
जीवणराम—	कृष्णजी का बारहमासा	हि० ६८०, ११२४, ११२८
ब्र० जीवराज—	परमात्मप्रकाश टीका	हि० २०५, २०६
जोगीदास—	धर्मरासो	हि० ६८१
जोधराज कासलीवाल	सुख विलास	हि०
जोधराज गोदीका—	ज्ञान समुद्र	हि० १६७, १७६, ६७८
	धन्यकुमारचरित्र भाषा	हि० ३३८
	प्रीतिंकर चरित्र	हि० ३५७, १०३६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	भजन हि०	१०५१
	भवदीपक भाषा हि०	२१४
	सम्यक्त्व कौमुदी भाषा हि० ४६५, ४६६, ४६७, ४६८, ११४६, ११६७	
	सुगुरुशतक हि०	६६७
जौहरी लाल—	बीस तीर्थंकर पूजा हि०	८६१
	विद्यमान बीस विरहमान पूजा हि०	६०४
ज्ञानचन्द—	ज्ञानार्णव पद्य टीका हि०	ग० २००
	परदेशी प्रतिबोध हि०	११८८
	सम्मेदशिखर पूजा हि०	६२३
	सिंहासन बत्तीसी सं०	५०२
ज्ञान प्रमोद वाचकगणि—	वागभट्टालंकार वृत्ति सं०	५६७
म० ज्ञान भूषण—	आदिनाथ फागु हि. ६२१,	११७३
	आदिनाथ विनती हि०	६८४
	तत्वज्ञानतरंगिणी सं०	४१, ११८३
	दशलक्षण व्रतोद्यापन पूजा सं०	८३०
	पंचकल्याणक फाग सं० हि०	११८७
	पाणीगालन रास हि०	६३८, ६५१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	(जलगालन रास)	१०२४, ११३२, ११४३
	पूजाष्टक सं०	८६७
	पोषहरास हि०	६३८, ६५१, ६८४, ११४५, ११४७, ११५०, ११८६
	बीस तीर्थंकर पूजा सं०	११३६
	षट्कर्मरास हि०	६४४
	श्रुतस्कंध पूजा सं०	६१२
	सप्तव्यसन चंदावल हि०	६६५
	सरस्वती पूजा हि०	८७६ ११४६
	सरस्वती स्तुति सं०	७७४, १११०, ११४६
	स्तवन हि०	११०७
ज्ञानविभव सूरि—	आवश्यकसूत्र निर्युक्ति सं०	३
म० ज्ञानसागर—	अष्टाह्निका व्रत कथा हि०	४२६
	अनन्तव्रतकथा हि०	४२२, १०७३, १०७४
	अनन्त चौदस कथा हि०	१११७
	आषाढभूत रास हि०	६३१
	इलायची कुमार रास हि०	६३१
	चतुर्विध दान कवित्त हि०	६८३
	दशलक्षणकथा हि०	११२३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	दशमीकथा	हि० ११२३
	निशल्याष्टमी कथा	हि० ११२३
	नेमिराजमति संवाद	हि० ११३०
	भक्तामरसिद्ध पूजा	हि० १११८
	मौन एकादशीव्रत	हि० ४६७
	रक्षाबंधन कथा	हि० ४८०
	रत्नत्रयकथा	हि० १११९, ११२३
	लघुस्नपनविधि	सं० ११६७
	षोडशकारण व्रतोद्यापन	सं० ९०७, ९१५
	श्रावण द्वादशी कथा	हि० ९९९, ११२३
	सुभाषित प्रश्नोत्तरमाला	सं० ६९७
	सूर्यव्रतोद्यापन पूजा	सं० ९०७
	हनुमान चरित्र	हि० ४१९
ज्वालाप्रसाद ब्रह्मचारी सिंह—	प्रद्युम्नचरित्र भाषा	हि० ३५४
टीकम—	चतुर्दशी कथा	हि० १०३२, ९६५
टेकचन्द—	ज्ञानार्णव भाषा	हि० २००
	छहढाला	हि० १९६
	कर्मदहन पूजा	हि० ७८९
	तीन लोक पूजा	हि० ८१६
	त्रिलोक विधान पूजा	हि० ८२१
	दशलक्षण पूजा विधान	हि० ८२८
	नंदीश्वर पूजा	हि० ८४४
	पंचकल्याणक पूजा	हि० ८४७
	पंचपरमेष्ठी पूजा	हि० ८५२
	पंचमेरु पूजा	हि० ८५९
	,, ,, विधान	हि० ८६०
	बुद्धिप्रकाश	हि० १४२
	रत्नत्रयपूजा	हि० ८९७
	षोडशकारण पूजा मंडल विधान	हि० ९१५, ९३७
	सुदृष्टितरंगिणी	हि० १७७, १२०६
पं० टोडरमल -	आत्मानुशासन भाषा	हि० १८५, १८६, १८७, १८८, १८९
	गोम्मटसार	राज १८
	त्रिलोकसार भाषा	राज० ६१८
	पुरुषार्थसिद्धयुपाय भाषा	राज० १२४, १२५
	मोक्षमार्ग प्रकाशक	राज० १५३
	लब्धिसार भाषा	हि० ११९७
	लब्धिसार क्षपणासार भाषा	राज० ७९

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
टोडरमल—	दर्शन	हि० १०५१
टोपण—	पद्मावती पूजा	सं० ८६१
ठक्कुरसी—	कलजुग रास	हि० ११७५
	कृपण षट्पद	हि० ६८४
	नेमिनाथ बेलि	हि० ६५३, ६६२
	नेमिराजमति	हि० ६८४
	पद	हि० ६६२, ६८४
	पंचेन्द्रिय बेलि	हि० ६६२, ६८४, १०५०, १०८६
ठाकुर—	शान्तिनाथ पुराण	हि० ३००
डूंगरसी—	बावनी	हि० ११०८
डूंगरसीदास—	पद नेमिकुमार	हि० १०६५
डूंगा बेद—	श्रेणिक चरित्र	हि० ११६७
डालूराम—	अढाईद्वीप पूजा	हि० ७७८
	गुरूपदेश श्रावकाचार	हि० १०४
	चतुर्दशी कथा	हि० ४३६
	दशलक्षणमंडल पूजा	हि० ८२८
	नंदीश्वर पूजा	हि० ८४४
	पंचपरमेष्ठीगुणबेलि	हि० १०११
	पंचपरमेष्ठी पूजा	हि० ८५३
	पंचमेरु पूजा	हि० ८५६
	सम्यक्त्व प्रकाश भाषा	हि० १७२
ढाढसी—	ढाढसी गाथा	प्रा० ४१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
ढुंढिराज दैवज्ञ—	जातकाभरण	सं० ५४५
तानुसाह—	भूलना	हि० १००३
भ० तिलोकेन्दुकीर्ति—	सामायिक पाठ भाषा	हि० २४४
(जती)तुलसी—	पखवाड़ा	हि० १११६
तुलसीदास—	दोहे	हि० १०११
तेजपाल—	पार्श्वनाथचरिउ	अपभ्रंश ३४५
	वरांगचरित्र	,, ३८३
	संभव जिन चरिउ	,, ४१८
त्रिभुवनकीर्ति—	जीवन्धर रास	हि० ११३६
	श्रुतस्कंध पूजा	सं० ६१३
त्रिभुवन चन्द—	अनित्यपंचाशत	हि० प० ६०
	अनित्यपंचासिका	हि० ११५३
	तीन चौबीसी पूजा	स० ८१६
	(त्रिकालचतुर्विंशति पूजा)	८२०
त्रिमल्ल (भट्ट)—	मुहूर्त चिंतामणि	सं० ५५७
	योग तरंगिणी	सं० ५८२
	शतश्लोकी टीका	सं० ८०
त्रिलोकचन्द्र—	पद	हि० ११०७
त्रिलोक प्रसाद—	धन्ना सज्झाय	हि० १०६३
थानजी अजमेरा—	नंदीश्वर द्वीप पूजा	हि० ८६०
	पंचमेरु पूजा	हि० ८६०
	बीस तीर्थंकर पूजा	हि० ८६१
थानसिंह ठोल्या—	विवेक शतक	हि० ६६४
	वैराग्य शतक	हि० २१६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	रामवशरण चौबीसी पाठ	हि० ६२२
	सुबुद्धि प्रकाश	हि० ६६०
दत्तलाल--	बारहखड़ी	हि० १११८
मुनि दमाचन्द—	सम्यक्त्व कौमुदी भाषा	हि० ४६८
दयाराम—	वृषभनाथ लावणी	हि० ११५८
दयासागर—	धर्मदत्त चरित्र	हि० ३३८
	बावनी	हि० ६८६
दयासिंह गणि—	संग्रहणी सूत्र भाषा	प्रा० हि० ८८
दरिगह—	जकड़ी	हि० ६४१
दशरथ निगोत्या—	धर्मपरीक्षा भाषा	हि० १२१
दादूदयाल—	सुमिरण	हि० ६६०
दामोदर—	णेमिचरिउ अपभ्रंश	३३२
दामोदर	शारङ्गधर संहिता	सं० १२०३
दासकृत—	भक्तिबोध	गुज० ११६७
दिगम्बर शिष्य—	चैत्यालय बीनती	हि० ७२४
दिनकर—	चन्द्राकी	हि० ६८१
दिलाराम पाटनी— (दौलतराम)	व्रत विधान रासो	हि० ६४१, ६८६
दीपचन्द कासलीवाल—	अनुभव प्रकाश	हि० १८१
	आत्मावलोकन	हि० १८६, ११७३
	आरती	हि० १०६७
	चिद्विलास	हि० ४६४, ४६५
	ज्ञानदर्पण	हि० १६६
	परमात्म पुराण	हि० २०४
	बिनती	हि० ११०५
	स्वरूपानंद	हि० २४७
दीप विजय—	ऋषभदेव की लावणी	हि. ११११४
दुर्गदेव—	षष्ठि सवत्सरी	सं० ५६८
दुलीचन्द—	आराधनासार भाषा	हि० ६२
	क्रियाकोश भाषा	हि० १०४
	धर्मपरीक्षा भाषा	हि० १२१
	सुभाषितावली	हि० ७००
देवकरण—	सम्मेदविलास	हि० ११५७
देवकीर्ति—	आराधना पंजिका	सं० ६३
देवचन्द्र—	धर्मपरीक्षा कथा	सं० ४४६
क० देवचन्द—	बिनती ऋषभदेव धूलेव	हि० ११५६
देवतिलक—	कल्याणमन्दिरस्तोत्र वृत्ति	सं० ७२०
दैवदत्त दीक्षित—	ग्रहलाघव	सं० ५४३
	सगर चरित्र	सं० ४०६
	सम्मेद शिखर महात्म्य	सं० ६२८
	सुदर्शन चरित्र	सं० ४१५
	सुमतिनाथ पुराण	हि० ३०१
देवनन्दि—	गर्भपडारचक्र	सं० ७२०, १०६८

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	जैनेन्द्र व्याकरण	सं० ५१३
	सिद्धिप्रिय स्तोत्र	सं० ७६७, ७६८, ६८२, ६९४, ११२७
	स्वप्नावली	सं० ११२७
	लघु स्वयंभू स्तोत्र	सं० ७५७, ११२७
देवभट्टाचार्य—	दर्शन विशुद्धि प्रकरण	सं० ११४
देवप्रभ सूरि—	पाण्डवपुराण	सं० २८७, ३४५
देवमद्र सूरि—	संग्रहणी सूत्र	प्रा० ८८
देवराज—	मृगी संवाद	हि० ६४५, ६८३
देवसुन्दर—	पद	हि० ११११
देवसूरि—	प्रद्युम्न चरित्र वृत्ति	सं० ३५४
देवसेन—	आराधनासार	प्रा० ६१, ६७७, ६८३, १०८८
	आलाप पद्धति	सं० २५०, ६६६, ६८३, १००६
	तत्वसार	प्रा० ४२, ११८३
	दर्शनसार	प्रा० २५३,
	नयचक्र	सं० २५४, ६६४
	भाव संग्रह	प्रा० १४८
देवाब्रह्म—	कलियुग की विनती	हि० ११७६
	कायाजीव संवाद गीत	हि० ११४५
	चौबीस तीर्थंकर विनती	हि० ७२४, १००५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	पद संग्रह	हि० ६६३, १०१२, १०६५
	पद्मनंदिगच्छ की पट्टावली	हि० ५४९
	विनती संग्रह	हि० ६७५, ६७६
	विनती व पद संग्रह	हि० ६७६, ७५८
	सास बहू का झगड़ा	हि० १०१२, १०६५
देवालाल—	अठारह नाते की कथा	हि० ४२१
देवोत्तन्द—	आगम सारोद्धार	हि० २
देवीदास—	चौबीस तीर्थंकर पूजा	हि० ८०१, ११२०
देवीदास—	राजनीति सर्वया	हि० ६९३
देवीनन्द—	प्रश्नावली	सं० ५५४
देवीसिंह छावड़ा—	षट्पाहुड भाषा	हि० २१९
देवेन्द्र भूषण—	संकट घोष कथा	हि० ४३३
आचार्य देवेन्द्र—	प्रश्नोत्तर रत्नमाला वृत्ति	सं० १३७
देवेन्द्र (विक्रम सुत)	यशोधर चरित्र	हि० ३७६
देवेन्द्र सूरि —	कर्म विपाक सूत्र	प्रा० १०
	ध तत्व	प्रा० ७७
उपा० देवेश्वर—	रत्नकोश	सं० ५८३
भ० देवेन्द्रकीर्ति — (भ० जगत्कीर्ति के शिष्य)	समयसार टीका	सं० २२५
भ० देवेन्द्र कीर्ति—	प्रद्युम्न प्रबन्ध	हि० ३५५, ४६१
देवेन्द्रकीर्ति—	आकार शुद्धि विधान	सं० ७८६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	आदित्य जिन पूजा सं०	७८६
	कल्याण मन्दिर पूजा सं०	७६३
	त्रेपनक्रियावत पूजा सं०	८२३
	द्वादशव्रत पूजा सं०	८३२
	पंचपरमेष्ठी पूजा सं०	८५१
	पार्श्वनाथ पूजा सं०	८६४
	रत्नत्रय व्रत कथा सं०	४६८
	रविव्रत पूजा सं०	८६६
	व्रत कथा कोश सं०	४७७
	सिद्ध चक्र पूजा सं०	१११८
	सोलहकारण जयमाल सं०	६३६
दीर्घसिंह—	कातंत्र रूपमाला सं०	५११
दौलत औसेरी—	ऋषि मंडल पूजा भाषा हि०	७८८
	श्रेणिक चरित्र हि०	४०५
दौलतराम कासलीवाल —	अक्षर बावनी हि०	१०५६
	अध्यात्म बारहखडी हि०	१८०
	आदिपुराण भाषा हि०	२६७
		२६८, २६६, २७०
	क्रियाकोश हि०	६६, १००

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	चतुरविंशतिस्तुति हि०	१०५
	चौबीस दण्डक हि०	१०७, १११४, ११२६
	जम्बूस्वामी कथा हि०	३३०
	जीवन्धर चरित्र हि०	४४०
	त्रेपनक्रियाविधि हि०	११४२
	पद्मपुराण भाषा हि०	२८०
	परमात्म प्रकाश भाषा हि०	२०७
	पुण्याश्रव कथाकोश हि०	४५७, ४५८, ४५६, ४६०
	वसुनंदि श्रावकाचार भाषा हि०	१६१
	श्रेणिक चरित्र भाषा हि०	४०५
	सकल प्रतिबोध हि०	७६३
	हरिवंश पुराण हि०	३०४, ३०५
दौलतराम पल्लीवाल	छहढाला हि०	१६६, ११३२
	दौलत विलास हि०	६६०
	पद हि०	११३२
	बारहमासा हि०	११२६
	सिद्धक्षेत्र पूजा हि०	६३२

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
ज्ञानसरा०—	अक्षर बावनी हि०	१०७८, १११६
	अष्टाह्निका पूजा हि०	७८५ ८५६
	आगम विलास हि०	६५८
	आरती पंचमेरु हि०	८७६, १११६
	उपदेश शतक हि०	१०४४
	कविसिंह संवाद हि०	१०४३
	चर्चाशतक हि०	२३, २४, २५, १०११, १०१३ १०८१
	छहढाला हि०	१०५१
	ज्ञान दशक हि०	१०४३
	तत्वसार भाषा हि०	१०४३, १०७२, १०८२
	दर्शन शतक हि०	१०४३
	दशलक्षण पूजा हि०	८१८, ८८१
	दशस्थान चौबीसी हि०	१०४४
	देवशास्त्र गुरु पूजा हि०	८३४
	धर्मपच्चीसी हि०	१०४३, १०६२
	धर्मविलास हि०	६६१, ६६२, १०४३, १०६२
	पद संग्रह हि०	१०७३
	पंचमेरु पूजा हि०	८५६, १०११
	पार्श्वनाथ स्तोत्र हि०	१११४
	पुष्पांजलि पूजा हि०	८६५
	पूजा संग्रह हि०	८८०
	प्रतिमा बहोत्तरी हि०	११४, ११६०
	मोक्ष पच्चीसी हि०	१०४३
	रत्नत्रय पूजा हि०	८८१, ८६७, १०११
	वैराग्य षोडश हि०	१०६७
	संबोध अक्षर बावनी हि०	१०४३
	संबोध पंचासिका हि०	१७२, ११०५
	समाधिमरण भाषा हि०	२३८, ११२६
	सम्मेदशिखर पूजा हि०	६२५
	स्वयंभूस्तोत्र भाषा हि०	७७६
धनंजय कवि—	धनंजय नाम माला सं०	५३६, १०११, १०१६
	राघव पाण्डवीय सं०	३८२
	लिंगानुशासन (शब्द संकीर्ण स्वरूप) सं०	५३६
	विषापहार स्तोत्र सं०	७५८, ७७१, ७७३, ६५३, १०२२, १०३५, ११२७
धनपति—	अरिष्टाध्याय सं०	११११७
धनपाल—	कायास्थिति गीत हि०	१०२५
धनपाल—	भविसयत्तकहा अप०	४६५, ६५६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	श्रुतपंचमी कथा अप०	१२०३
	(भविसय तका दूसरा नाम)	
धन्नालाल—	चर्चासार हि०	३०
	सामायिकपाठ भाषा हि०	२४४
धन्वन्तरि—	योगशतक सं०	५८३
धनेश्वर सूरि—	शत्रुंजय तीर्थ महात्म्य सं०	१२०२
भ० धर्मकीर्ति—	पद्मपुराण सं०	२८०
	सम्यक्त्व कौमुदी सं०	४६४
	सिद्धचक्र पूजा सं०	६३३
धर्मकीर्ति—	चतुर्विंशतिजिन छद् पद्य	
	देवस्तोत्र हि०	१००८
पं० धर्मकुमार—	शालिभद्र चरित्र सं०	३६१
धर्मचन्द्र—	गौतम स्वामी चरित्र सं०	३१६
	नेमिनाथ विनती हि०	११२६
	संबोध पंचासिका हि०	१०२१
	सहस्रनाम पूजा सं०	६३०
धर्मदास—	धर्मोपदेश श्रावकाचार हि०	१२६, ११०३
धर्मदास—	विदग्धमुखमंडन सं०	२६०, १२०१
	शब्दकोश सं०	५३६
धर्मदास गणि—	उपदेशरत्नमाला प्रा०	६५, ६५७, ११७४
पाण्डे धर्मदास—	अनन्त व्रत पूजा सं०	७८२
ब्र० धर्मदास—	खटोला हि०	१०८६
	सुकुमाल स्वामी छंद हि०	५०५
भ० धर्मदास—	गुणवेलि हि०	६५२
पं० धर्मदेव—	यागमंडल विधान सं०	६६४
	बृहद शांति विधान सं०	६०८
	शान्ति पाठ सं०	६१०
	शान्तिक विधान सं०	६१०, ६६०
	सहस्रगुण पूजा सं०	६२६
धर्मभूषण—	न्याय दीपिका सं०	२५६
धर्मभूषण—	मनोरथ गीत माला हि०	६७३
धर्मभूषण—	रत्नत्रय व्रतोद्यापन सं०	१०८५
	सहस्रनामपूजा सं०	६३० ११११८
धर्मरुचि—	सुकुमालस्वामीरास हि०	११४०
धर्मसागर—	आराधना चतुष्पदी हि०	४३०
धर्मसिंह—	मल्लिनाथ स्तवन हि०	७५२
	सर्वया हि०	१११८
धवलचन्द्र—	चौवीस दण्डक प्रा०	१०७
धीरजराम—	चिकित्सासार सं०	५७७
धेल्ह—	पंचेन्द्रिय वेलि हि०	११५१
	विशालकीर्ति गीत हि०	६६२
	बुद्धि प्रकाश हि०	६७२
लाला नथमल—	धर्मखण्डन भाषा हि०	१२२

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
नथमल दोसी—	महिपाल चरित्र भाषा हि०	३६८
नथमल बिलाला—	गुण विलास हि०	१६४, ११८१
	जीवन्धर चरित्र हि०	३३०
	जैनबद्री की चिट्ठी हि०	१०४५
	नागकुमार चरित्र हि०	३४१
	नेमिनाथजी का काहला हि०	१०४५
	पद संग्रह हि०	१०४५
	फुटकर दोहा हि०	१०४५
	भक्तामरस्तोत्र कथा (भाषा सहित) हि०	४६५, ७०४
	रत्नत्रय जयमाला भाषा हि०	६६
	वीर विलास हि०	६६२
	समवशरण मंगल हि०	७२६, १०४५
	सिद्धचक्रव्रत कथा हि०	५०२
	सिद्धांतसार दीपक हि०	८५, १०४२
नन्द—	सुदर्शन सेठ कथा हि०	६६१
नन्द कवि—	नन्द बत्तीसी सं०	६८७
नन्दनदास—	चेतन गीत हि०	१०२७
	नाममाला हि०	५३८
नन्दराम—	कलि व्यवहार पच्चीसी हि०	१००३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	भक्तामरस्तोत्र पूजा हि०	८६१
नन्दराम सौगाणी—	श्रावक प्रतिज्ञा हि०	१०००
नन्दि गणि—	भगवती आराधना टीका प्रा० सं०	६२, १४६
नन्दि गुरु—	प्रायश्चित समुच्चय वृत्ति सं०	१४२, २१४
नन्दिताढ्य—	नन्दीयछंद प्रा०	५६४
नन्दिषेण—	अजितशांति स्तवन प्रा०	७१०, ६५६
नन्नूमल—	रत्नसंग्रह हि०	६७३
नयचन्द सूरि—	संबोध रसायण हि०	६५७
नयनन्दि—	सुदंसण चरिउ अपभ्रंश०	४१५
नयनसुख—	आदिनाथ मंगल हि०	७११
नयनसुख—	राम विनोद हि०	५८४
	वैद्यमनोत्सव हि०	५०८, ६६२, १००६, ११६७
नयनसुन्दर—	शत्रुंजय उद्धार हि०	६०६
नयविमल—	जम्बूस्वामीरास हि०	६३३
नरपति—	नरपति जयचर्या सं०	५५०
नरसिंहपाण्डे—	नैषधीय प्रकाश सं०	३४४
पं० नरसेन—	श्रीपाल चरित्र अपभ्रंश	३६२
नरेन्द्र—	दशलाक्षणिक कथा सं०	६६४

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
भ्रा० नरेन्द्रकीर्त्ति—	गुरुस्तवन हि०	११०८
	चन्द्रप्रभ स्वामिनो विवाह (राज०)	४३७
	द्रोपदीशील गुणरास (राज०)	६३४
	समर प्रबन्ध हि०	४६१
नरेन्द्रसेन—	प्रमाण प्रमेयकलिका सं०	२५६
भ्रा० नरेन्द्रसेन—	प्रतिष्ठा तिलक सं०	८८७
(पण्डिताचार्य)	सिद्धान्तसार संग्रह सं०	८७
	सम्यक् चरित्र पूजा सं०	६६०, १०५७
	क्षमावनी पूजा सं०	११५२
	पंचमी व्रतोद्यापन पूजा सं०	८५८
	रत्नत्रय विधान पूजा सं०	११३६, ११६६
नल्ह—	पंडितगुण प्रकाश हि०	१०८६
नवरंग —	परमहंस संबोध चरित्र सं०	३४४
नथलराम —	वर्द्धमानपुराण भाषा	२६८
नथलशाह —	वर्द्धमानपुराण हि०	२६६
नवल —	जैन पच्चीसी हि०	१०७७
	पद हि०	१०४७
	बारह भावना हि०	१०७८
	भजन हि०	१०५१
नवलराम—	सरवंगसार संत विचार हि०	२४६
नागचन्द्र सूरि—	एकीभाव स्तोत्र वृत्ति सं०	७१४
	कल्याण मन्दिर स्तोत्र-वृत्ति सं०	७२०
	विषापहार स्तोत्र टीका सं०	७५६
नागराज—	पिंगलशास्त्र प्रा०	५६४
नागराज—	बणजारा रासो हि०	११५१
नागराज—	भावशतक सं०	१४७, ७५१, ११६३
नागरीदास—	कवित्त हि०	१०६६
पं० नाथू—	पद हि०	११०८
ब्र० नाथू—	रेमजी की डोरी हि०	१०६२
	पारसनाथ की सहेली हि०	६४६
नाथूराम—	रसायन काव्य सं०	३८२
नाथूराम कायस्थ—	ज्योतिषग्रन्थ भाषा हि०	५४७
नाथूराम दोसी —	चर्चाशतक टीका हि०	२७
	समाधितन्त्र भाषा हि०	२३८
	सुकुमालचरित्र हि०	४१३
नाथूराम लमेचू —	जम्बू स्वामी चरित्र हि०	३२५
नारचंद्र—	नारचन्द्रज्योतिष सं०	५५०, ११८६
	ज्योतिषसार सं०	५४८
नारद—	पंचदशाक्षर सं०	५५१
पंडिताचार्य नारायण-	पारिजात हरण सं०	३४५
नारायण—	अनन्तव्रतोद्यापन सं०	७८३
	वृषभदेव स्तवन हि०	७६०

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
नारायण—	चमत्कार चिन्तामणि सं०	५४८
	धर्म प्रवृत्ति सं०	११८५
ब्र० नारायण — नारायण मुनि	मात्रागीत हि०	११४४
	जीभदांत नासिका नयन-कर्ण संवाद हि०	११८२
नारायणदास—	छंदसार हि०	११५८ ११६८
	भाषाभूषण टीका हि०	१०१५
निहालचन्द—	नयचक्र भाषा हि०	२५५
	ब्रह्मबावनी हि०	१४३
नित्यनाथ सिद्ध—	रसरत्नाकर सं०	५८४
नित्यविजय—	समयसार कलशाटीका सं०	२२२
नीलकण्ठ—	जातक सं०	५४५
	ताजिक ग्रन्थ सं०	५४६
	नीलकण्ठ ज्योतिष सं०	५५१
	वर्षतन्त्र सं०	५६३
नूर—	नूर की शकुनावली	११४४
नेमिचन्द—	राधवपाण्डवीय टीका सं०	३८२
ब्र० नेमचन्द—	चन्द्रप्रभछंद हि०	७२५
	आदिनाथ स्तवन हि०	९८१
नेमिचन्द्र—	प्रीतंकर चौपई हि०	१०४२
	राजा चन्द की कथा हि०	१०४२
नेमिचन्द्र भण्डारी—	उपदेशसिद्धान्त रत्नमाला प्रा० सं०	९५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	धर्मोपदेश रत्नमाला प्रा०	१२५
आ० नेमिचन्द्र— पं० नेमिचन्द्र—	सूर्यप्रकाश सं०	१७९
	अष्टाह्निकाव्रतोद्यापन पूजा सं०	७८५
	कर्मप्रकृति सं०	९६०
	त्रिलोकसार पूजा हि०	
	तीनलोक पूजा हि०	८१६ ८२१
नेमिचन्द्र गणि—	त्रैलोक्यसार टीका सं०	६१४
नेमिचन्द्राचार्य—	आश्रव त्रिभंगी प्रा०	३
	इक्कीस ठाणा प्रकरण प्रा०	४
	कर्मप्रकृति प्रा०	६
	गुणस्थान मार्गणा वर्णन प्रा०	१४
	गोम्मटसार प्रा०	१५, १७
	गोम्मटसार संदृष्टि प्रा०	२१
	चौदहगुण स्थान वर्णन चौबीस ठाणाचर्चा प्रा० प्रा०	३१ ३४, ३५, १०८०
	त्रिभंगीसार प्रा०	६०, ६१
	त्रिलोकसार प्रा०	६१२, ६१४, ९९४ १०००
	द्रव्य संग्रह प्रा०	६२, ६३, ६४, १०५४, १०८०
	पंचसंग्रह प्रा०	७१
	भावत्रिभंगी प्रा०	७७, ११४२
	मार्गणा सत्तात्रिभंगी प्रा०	७८

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	विशेषसत्ता त्रिभंगी प्रा०	८०
	षष्ठीशतक प्रा	७६३
ब्र० नेमिदत्त—	आदित्यवार कथा हि०	४२८
	आराधना कथा कोश सं०	४३०
	कथाकोश सं०	४३२
	धन्यकुमार चरित्र सं०	३३५
	धर्मोपदेश श्रावकाचार सं०	१२५
	नेमिजिन चरित्र सं०	३४२
	प्रीतिंकर चरित्र सं०	३५७
	रात्रिभोजन कथा सं०	४७१
	व्रतकथा कोश सं०	४७७
	सुदर्शन चरित्र सं०	४१६
ब्र० नेमिदास—	विजयभद्र श्रीपाल गीत हि०	१२०१
न्यामतखां—	अजीर्ण मंजरी हि०	५७३
पतंजलि—	पतंजलि महाभाष्य सं०	५१६
पद्मराज—	अभयकुमार प्रबंध हि०	४२५
पद्मकीर्ति—	पार्श्वपुराण अपभ्रंश	२६०
पद्मतिलक गणि—	जम्बूस्वामी अध्ययन प्रा०	४४०
पद्मनंदि —	उपासक संस्कार सं०	६७
	पद्मनंदि पंचविंशति सं०	१२८, १२९, १३०, १३१ ६७६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	पद्मनंदि श्रावकाचार सं०	१३३
	ज्ञानसार प्रा०	६६४
	धर्मोपदेशामृत सं०	६७६
	वर्द्धमान चरित्र सं०	२८६, ४७७
पद्मनंदि—	धर्मरसायन प्रा०	१२३
भ० पद्मनंदि —	अनन्तव्रतकथा सं०	४२१, ४३४
	करुणाष्टक सं०	७१६
	जिनवर दर्शन स्तवन सं०	७२६
	जिनरात्रिव्रत महात्म्य सं०	४४१
	पार्श्वनाथ स्तोत्र सं०	७३५, ११२७
	भावना चौबीसी सं०	६६४
	रत्नत्रय पूजा सं०	८६६
	रत्नत्रय विधान कथा सं०	४६८
	लक्षणोत्तिक पूजा सं०	६०२
	वीतराग स्तवन सं०	६६४, ११२५
	वृषभ स्तोत्र सं०	७६०
	शांतिनाथ स्तवन सं०	७६२
	सिद्धचक्रपूजा सं०	६६६
वैद्य पद्मनाभ —	अजीर्ण भंजरी हि०	१०७७
पद्मनाभ कायस्थ —	यशोधर चरित्र सं०	३७३
पद्मप्रभदेव —	लक्ष्मी स्तोत्र सं०	७५५
	७७४ ८७६,	१०६५, १०७४, १०७८, ११२४
	पार्श्वनाथ स्तोत्र सं०	७६५ ६५८

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
पद्मप्रभमल धारिदेव—	नियमसार टीका	सं० ७०
पद्मप्रभ सूरि—	भुवन दीपक	सं० ५५७, ६६१
पं० पद्मरंग—	राम विनोद	हि० १०१६
पद्मराज —	यशोधर चरित्र	सं० ३७३
पद्मविजय —	शीलप्रकास रास	हि० ६४१
पद्मसुन्दर —	चारकषाय सज्झाय	हि० १६४
पद्मा —	श्रावकाचार रास	हि० १६७
पांड्या पन्नालाल चौधरी—	आचारसार वचनिका	हि० ६१
	आराधनासार वचनिका	हि० ६२
	उत्तरपुराण भाषा	हि० २७४
	तेरहपंथखंडन	हि० १११
	तत्वकौस्तुभ	हि० ४१
	धर्मपरीक्षा भाषा	हि० १२५
	नवतत्व गाथा भाषा	हि० ६८
	न्यायदीपिका भाषा	हि० २५६
	पाण्डवपुराण भाषा	हि० २६०
	रत्नकरण्ड श्रावकाचार वचनिका	हि० १५६
	वसुनंदि श्रावकाचार भाषा	हि० १६२
	सद्भाषितावलि	हि० ६६५
	समाधिशतक	हि० २४०
संघी पन्नालाल— (दूनी वाला)	विद्वज्जनबोधक	हि० १६३, १२०२
	समवशरण पूजा	हि० ६१८
	सरस्वती पूजा	हि० ६२६
परम विद्याराज—	वृन्द संहिता	सं० ५६४
परमानन्द—	धु चरित	हि० १००१
परमानन्द जौहरी—	चेतन विलास	हि० ६५६
परशुराम—	प्रतिष्ठापाठ टीका	सं० ८८८
पद्मिमल्ल -	श्रीपाल चरित्र	हि० ३६५, ३६६, ३६७, ३६८, १०९३
परमहंस	मुहूर्त मुक्तावली	सं० ५५८
परिव्राजकाचार्य —	सारस्वत प्रक्रिया	सं० १२०५
पर्वत धर्मार्थी—	द्रव्य संग्रह भाषा	६६, १०४१
	समाधितंत्र भाषा	गु० २३४, २३५, २३६, २३७
पल्हण—	जय जय स्वामी पार्श्वदी	हि० १०८६
पाणिनि—	धातुपाठ	सं० ५१४
	पाणिनि व्याकरण	सं० ५१५
	प्राचीन व्याकरण	सं० ५१७
पाण्डवराम—	परमात्म प्रकाश टीका	सं० २०४
पात्रकेशरी—	पात्रकेशरीस्तोत्र	सं० ७३३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
पारसदत्त—	विदरभी चौपई	हि० ४८५
पारसदास निगोत्या—	ज्ञानसूर्योदय नाटक	हि० ६०५
	पद संग्रह	हि० ६६३, ६६८
	पारस विलास	हि० ६६८
	सार चौबीसी	हि० १७५
पाल—	बुद्धिप्रकाश रास	हि० ६६०
पास कवि—	पार्श्वनाथ स्तुति	सं० ७३४
पासचन्द सूरि—	आदिनाथ स्तवन	हि० ६५५
	श्रावकविचार चउपई	हि० १०३७
पुंजराज—	सारस्वत टीका	सं० ५२१
पुन्यकीर्ति—	पुण्यसार चौपई	हि० ४६३
पुण्यरतनमुनि—	नेमिनाथ रास	हि० ६३६, ६०४
	यादव रास	हि० ६४६
पुण्यलाभ—	पोषहगीत	हि० ७२५
पुण्यसागर—	अंजना सुन्दरी चउपई	हि० २१४
	प्रश्नषष्ठिशतक काव्य टीका	सं० ३५६
	सुबाहु चरित्र	हि० ४१७
पुरुषोत्तमदेव—	त्रिकाण्डकोश	सं० ५३६
पुष्पदन्त—	आदिपुराण	अपभ्रंश २६६
	उत्तर पुराण	अपभ्रंश २७२
	जसहर चरिउ	अपभ्रंश २२६
	णायकुमार चरिउ	अपभ्रंश २३२
	महापुराण	अपभ्रंश २६४ ६७१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
पुष्पदन्ताचार्य—	महिम्नस्तोत्र	सं० ७२४, ११६५
पूज्यपाद—	इष्टोपदेश	सं० ६३, १६०, ११५४, ११७३
	उपासकाचार	सं० ६६
	समाधितंत्र	सं० २३४
	समाधिशतक	सं० २३६
	सर्वार्थसिद्धि	सं० ८१, ६६६
पूनो—	मेघकुमार गीत	हि० ६७२ ६८४, १०२६, १०५४, १०६२
आचार्य पूर्णदेव—	यशोधर चरित	सं० ३७३
मुनि पूर्णभद्र—	सुकुमाल चरित्र	अपभ्रंश ४११
पृथ्वीराज—	कृष्णरुक्मिणी वेलि	हि० ११७५
मुनि पोर्मसिंह—	ज्ञानसार	प्रा० ४१
पोसह पाण्डे—	दिगम्बरी देव पूजा	हि० १०६१
पौंडरीक	शब्दालंकार दीपक	सं० ६००
रामेश्वर—	सिद्धक्षेत्र पूजा	हि० ६३२
प्रकाशचन्द—	श्रावकाचार	हि० ११३६
प्रतापकीर्ति—	अमृतसागर	हि० ५७३
महाराजा सवाई प्रतापसिंह—	नीतिशतक	हि० ६५१
	भर्तृहरि शतक भाषा	हि० ६६२
	शृंगार मंजरी	हि० ६५१
प्रतिबोध—	समयसार प्रकरण	प्रा० २२६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
प्रभंजन गुरु—	यशोधर चरित्र पीठबंध	सं० ३७२
प्रभाकर सेन—	प्रतिष्ठा पाठ	सं० ८८८
प्रभाचन्द्र—	आत्मानुशासन	सं० १८४, १८५
	आराधनासार कथा प्रबंध	सं० ४३०
	उपासकाध्ययन	सं० ११३७
	क्रियाकलाप टीका	सं० ६८
	द्रव्यसंग्रह टीका	सं० ६४
	पंचकल्याणक पूजा	सं० ८४७
	चमीकथा टिप्पण अपभ्रंश	४५५
	प्रतिक्रमण टीका	सं० २०६
	प्रवचनसार टीका	सं० २१०
	यशोधरचरित्र टिप्पण	सं० ३७१
	रत्नत्रय कथा	सं० ४६८
	विषापहारस्तोत्र टीका	सं० ७५६
	श्रावकाचार	सं० ६६४
	समयसार वृत्ति	सं० २२५
	समाधिशतक टीका	सं० २४०
	स्वयंभूस्तोत्र टीका	सं० ७७६
भ० प्रभाचन्द्र— (हेमकीर्ति के शिष्य)	तत्वार्थरत्नप्रभाकर	सं० ४२
प्रभाचन्द्र—	रत्नकरण्ड श्रावकाचार टीका	सं० १५६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
प्रभाचन्द्र—	चिंतामणि पार्श्वनाथ विनती	हि० ६५२
	महावीर विनती	हि० ११६१, २१३
प्रह्लाद—	पद्मनन्दि महाकाव्य टीका	सं० ३४४
प्रह्लाद—	स्वरोदय	हि० ५७२
प्रेमचंद—	सोलहसती की सिज्झाय	हि० १०६८
पं० फतेहलाल—	जैनविवाहविधि	हि० १११६
बखतराम साह—	धर्मबुद्धि मन्त्री कथा	हि० ४५०
	पद संग्रह	हि० ११५५
	बुद्धि विलास	हि० १४३, ६६६
	मिथ्यात्व खंडन	हि० १४६, ६०७, ६५४
बख्तावर लाल—	चौबीस तीर्थंकर पूजा	हि० ८००, ११३१
बख्तावर सिंह	आराधना कथ कोश	हि० ४३०
रतन लाल—		
बनारसीदास—	अध्यात्मपैडी	हि० १०११
	अध्यात्म बत्तीसी	हि० ६६६
	अनित्य पंचासिका	हि० १०४१
	कर्म छत्तीसी	हि० ६४१
	कर्म प्रकृति	हि० ६८३
	कर्म विपाक	हि० ८, १०१५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	कल्याणमंदिर स्तोत्र भाषा	हि० ७१६, ७३३, ८७४, ६५८, ६८०, १०१६, १०६१, १०६४, १०७४, १०६५, ११२०, ११२२, ११४८
	कवित्त	हि० ६५८
	जिनसहस्रनाम स्तोत्र भाषा	हि० ६६६, १०५५
	ज्ञान पच्चीसी	हि० ११०, ६६०, ११४५
	तेरह काठिया	हि० ६६६, ११२६
	धर्म पच्चीसी	हि० १०७८
	नाममाला	हि० ५३८
	निमित्त उपादान	हि० १०८४
	पद	हि० ८७५, १०८४
	बनारसी विलास	हि० ६६५, १०१८, १०४५, १०५२, ११२३, ११६८
	बावनी	हि० ६४६
	मोक्ष पैंडी	हि० १०४१
	रत्नत्रय पूजा	हि० १०२२
	समयसार नाटक	हि० २२८, २२६, २३०, २३१, २३२, २३३, २३४, ६४१, ६६२, ६८५, ६६१, ६६५, १०१४, १०१८, १०२२, १०३२, १०४०, १०४६, १०५२, १०७२, ११०३, ११०६, ११४६, ११५०
	साधु वंदना	हि० ७६६, ८७४
	सिन्दूर प्रकरण भाषा	हि० ६६६, ६६७, ११४४, ११६७
	मुक्ति मुक्तावली	हि० ६४१
बंसीदास—	रोहिणी व्रत कथा	हि० ११०३
बंसीधर—	द्रव्य संग्रह भाषा टीका	राज० ६७, १०४६
बलदेव पाटनी—	भक्तिमाल पद	हि० १०६६
बलिभद्र—	पद	हि० १०४८
बहुमुनि—	सामायिक पाठ	सं० २४३
बाण—	कलियुग चरित्र	हि० १००२
कवि बालक (रामचन्द्र)—	सीता चरित्र	हि० १०३६, १०७५
बालकृष्ण त्रिपाठी —	प्रशस्ति काशिका	सं० ११६०
बालचन्द—	राजुल पच्चीसी	हि० ६५६
	श्रुतस्कंध पूजा विधान	हि० ६१४
बालमुकुन्द—	धर्म कुंडलिया	हि० ११५
	राजुल छत्तीसी	हि० ११६६
बिरधीचन्द—	नन्दीश्वर द्वीप पूजा	हि० ८४६
बिहारीदास—	पद	हि० १०६६
बिहारी लाल—	बिहारी सतसई	हि० ६२६, १००२, १०३७, १०३८, ११६८
बुधचन्द—	सतुसारी सज्झाय	हि० ७६६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
बुधजन —	इष्ट छत्तीसी	हि० ६३, ६६६
	छहढाला	हि० १६६, १११६
	तत्वार्थबोध	हि० ४२
	तर्कसंग्रहभाषा	हि० ११२६
	पंचकल्याणक पूजा	हि. ८४७
	पंचपरमेष्ठी पूजा	हि० ८५३
	पंचास्तिकाय भाषा	हि० ७४
	पद	हि० १०४८, १०५३
	परमात्मप्रकाश भाषा	हि० २०६
	बुधजन विलास	हि० ६६६
	बुधजन सतसई	हि० ६६०, १०८१
	योगेन्दुसार	हि० २१६
	संबोध पचासिका	हि० १०८३
	सम्मेद शिखर पूजा	हि० ६२५
	सिद्धभूमिका उद्यापन	हि० ६३५
बुधटोडर—	क्षेत्रपाल पूजा	हि० ११२३
बुध मोहन—	न्हावण पाठ भाषा	हि० ८३८
बुधराव—	कवित्त	हि० १००३
बुधलाल—	चरचा बासठ	हि० ११७०
बुधसेन—	सम्यग्दर्शन	सं० ६६०
बुलाकीदास—	पाण्डव पुराण	हि० २८८, २८६, १०७५
	प्रश्नोत्तर रत्नमाला	सं० ६८८
	प्रश्नोत्तरोपासकाचार	हि० १४३, १४४
	वचनकोश	हि० ५३६
	वार्ता	हि० १०२२
बूचराज—	चेतनपुद्गल धमाल	हि० १०८६, ११८०
	पद	हि० ६६२, ६८४, १०८६
	मदन जुज्झ	हि० ६८४, १०८८
	संतोष जयतिलक	हि० ६७१
बैजलभूपति —	प्रबोध चन्द्रिका	सं० ५१७, ११६०
ब्रह्मदीप —	नेमीश्वररास	हि० १०८६
	मनकरहा रास	हि० १०८६
	पद	हि० १११६
ब्रह्मदेव—	द्रव्यसंग्रह वृत्ति	सं० ६४
	परमात्मप्रकाश टीका	सं० २०५
ब्रह्ममोहन—	वृषभदेव गीत	हि० १२००
ब्रह्मसूरि—	त्रिवर्णाचारि	सं० १११
भवानीदास व्यास—	भोज चरित्र	हि० ३६४
भट्टोजी दीक्षित—	लघुसिद्धान्त कौमुदी	सं० ५१७
भट्टोत्पल—	लघुजातक टीका	सं० ५१८, ५६३
	षट् पंचाशिका	सं० ५६७
भद्रबाहु स्वामी I —	कल्पसूत्र	प्रा० १०
भद्रबाहु स्वामी II—	क्रियासार	प्रा० १०४

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	नवग्रह स्तोत्र सं०	६३१
	नैमित्तिक शास्त्र सं०	५५१
	भद्रबाहु संहिता सं०	५५६
भद्रसेन—	चन्दनमलयागिरी चौपई हि०	४३७, ११६२
भरतदास—	शलाकापुरुष नाम निर्णय हि०	१६५
भर्तृहरि—	भर्तृहरि शतक सं०	६६१ ६६२, ११६१, ११६२
	नीतिशतक सं०	६४२
	शृंगारशतक सं०	६२८ ६४२
भवसागर—	पद संग्रह हि०	६४२
भाउ कवि—	आदित्यव्रत कथा हि०	४२८, ४३३, ८७७ ६४३, ६४४, ६६३, ६६८
	(रविव्रत कथा)	६७३, १०१२, १०१८, १०२८, १०३६, १०४१, १०५६, १०६२, १०७५, १०८३, १०८४, १०८६, १०८८, १०६८, ११०७, १११४, ११११, ११४८, ११६८
	नेमीश्वररास हि०	६८४
	विक्रम चरित्र चौपई हि०	३८७
भागचन्द—	अमितगतिश्रावकाचार हि०	६०
	उपदेश सिद्धान्त रत्नमाला भाषा हि०	६५, ६६ ११७४
	आदित्यवार व्रत कथा भाषा हि०	६०५
	धर्मोपदेशसिद्धांतरत्नमाला हि०	१२६
	नेमिपुराण भाषा हि०	२७७
	पद हि०	१०४८, १०५३
भागीरथ कायस्थ—	योगसारसार हि०	५६०
भागीरथ—	सम्मेदशिखर पूजा हि०	६२५
भान विजय—	नवतत्व प्रकरण टीका सं० हि०	६६
भ० भानुकीर्ति—	बृहद सिद्धचक्र पूजा सं०	६०६
भानुकीर्ति—	आदित्यवार कथा हि०	१०६५, १११८, ११५७, ११६८
	(रविव्रत कथा) पद	११०७, ११५२
	रोहिणीव्रत कथा सं०	४७५
	लोहरी दीतवार कथा सं०	१०५६
	समोसण पार्श्वनाथ स्तोत्र हि०	१०६१
भानुचन्द—	मृगांकलेखा चौपई हि०	६६१
भानुचन्द्र गणि—	वसन्तराज टीका सं०	५५५
	साधारण जिनस्तवन सं०	७६६
भानुदत्त मिश्र—	रसतरंगिणी सं०	५८३
	रसमंजरी सं०	५८४, ५९६, ६२८

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
भारती—	भारती लघु स्तवन सं०	७५०
भारवि—	किरातार्जुनीय सं०	३१६
भारामल्ल—	कथाकोश हि०	४३२
	ज्ञातरास हि०	६५१
	दर्शनकथा हि०	१११६
	दानकथा हि०	४४६
	दानशीलकथा हि०	४४७
	निशिभोजन कथा हि०	४५३, ४५४
	शीलकथा हि०	४८८, १०७३, ११२०, ११२१
	सप्तव्यसन कथा हि०	४६३, ४६४
भावचन्द्र सूरि—	शान्तिनाथ चरित्र सं०	३८६
भावतिलक—	रत्नपाल चौपई हि०	४६७
भावदेव सूरि—	पुरन्दर कथा हि०	४६१
भावमिश्र—	भावप्रकाश सं०	५८०
भावविजय वाचक—	अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ स्तवन हि०	७१५, ११५७
भावविद्येश्वर—	सप्त पदार्थ टीका सं०	८१
भावशर्मा—	दशलक्षण जयमाल पूजा प्रा०	८२४
	लघुस्तवन सं०	७५६
भावसेन—	कातंत्ररूपमाला वृत्ति सं०	
	जीवदया सं०	४३४
भावसेन त्रैविद्य देव—	मंत्रप्रकरण सूचक टिप्पण सं०	६२२
	रूपमाला सं	५१८
भास्करचार्य—	ज्योतिष ग्रन्थ सं०	५४६
	दिनचर्या ग्रहाभमकुतूहल सं०	५४६
	बृहत्तुल्यकरण सं०	५५५
	लीलावती सं०	११६७
	सिद्धांत शिरोमणी सं०	५६६
भीष्म—	कारक खंडन सं०	५१२
भुवनकीर्ति—	भक्तारस्तोत्र समस्यापूर्ति सं०	११६५
भुवनकीर्ति—	अंजना चरित्र हि०	३१४
	पवनंजय चरित्र हि०	३४४
पाण्डे राजभुवन	बारहमासा की विनती हि०	११०८
भूषण—	एकीभाव स्तोत्र भाषा हि०	११२२
सूधरदास—	जखडी हि०	११६८
	जीवदया छंद हि०	११५७
	जैन विलास हि०	६६०, १०७३
	जैन शतक हि०	१०११, १०४१
	(भूधर शतक)	१०४२, १०४४, १०५९, १०६०, १०७१, १०७३, १०७४ १०७९, १०८१, १११४, ११३३, ११५३, ११९३
	नरकदुःख वर्णन हि०	१२६
	पद हि०	१०४७, १०५३
	पंच इन्द्री चौपई हि०	१०७२
	पंचमेरुपूजा हि०	८५९, ८७६, ८८१
	पार्श्वनाथ कवित्त हि०	६६८

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	पार्श्वपुराण हि०	६६३, १०२६, १०३६, ११०७
	भूधर, विलास हि०	६७३, १०४५
	विनती हि०	८७७, ११११
	विनती नेमिकुमार हि०	१०६५
	शास्त्र पूजा हि०	१०११
	हुक्का निषेध हि०	१०३५
भूधर मिश्र—	चर्चा समाधान हि०	२७, २८, २६, १०११, १०७२
भूपाल कवि—	भूपाल चतुर्विंशतिका सं०	७५१, ७७३, १०३५
	भूपालस्तोत्र सं०	७७१
भृगु प्रोहित—	चौढाल्यो हि०	११८०
भैया भगवतीदास—	अकृत्रिम चैत्यालय जय-माल हि०	७७७
	अक्षर बत्तीसी हि०	१००५
	अनित्य पच्चीसी	१०५१
	अष्टोत्तरी शतक हि०	११३३
	(शतअष्टोत्तरी कवित्त) हि०	१००५
	ओंकार चौपई हि०	१०७७
	चतुरवणजारा गीत हि०	६८५
	चूनडी रास हि०	६८५
	चेतनकर्मचरित्र हि०	१००५, १०७२, १०६४, ११२६, ११३१ ११७६
	ज्ञानचूनडी हि०	११२४
	दानशीलतप भावना हि०	११४
	द्रव्य संग्रह भाषा हि०	१००५
	दृष्टांत पच्चीसी हि०	११३३
	धर्मपच्चीसी हि०	११३२
	निर्वाणकाण्ड भाषा हि०	६५२, ७२१, ८७६, १०१७, १०२०, ११०५ ११८६
	पंचेन्द्रिय संवाद हि०	११८८
	पंद्रह पात्र चौपई हि०	१२७
	पद एवं गीत हि०	६८५
	परमशतक हि०	१०५८
	परमार्थशतक हि०	२०३
	बाईस परीषह कथन हि०	११३३
	बारह भावना हि०	१०८०
	ब्रह्मविलास हि०	६७०, ६६८, १००५, १०५१, १०५२, १०७२, ११३३, ११५१
	मधुबिन्दु चौपई हि०	१.५१
	मानबत्तीसी हि०	१०५८
	मुनिराज के ४६ अन्तराय हि०	१५०
	सम्यक्त्व पच्चीसी हि०	११५१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	सिद्धचतुर्दशी	हि० ११५१
पं० भगवतीदास	सीतासतु	हि० ६४५, ६८४
	स्वप्नबत्तीसी	हि० १११३
भैरुदास—	अनन्त चतुर्दशी कथा	हि० ६६१, ११२३
	षोडशकारण कथा	हि० ११२३
भैरवदास—	हिंदोला	हि० १०८६
भैरोलाल—	शीलकथा	हि० ४६०
भोजदेव—	द्वादशव्रत पूजा	सं० ८३२
मकरन्द—	सुगन्ध दशमी व्रत कथा	हि० ४८३
मंडन—	प्रासाद वल्लभ	सं० ११६१
मतिराम—	रसराज	हि० ६२८
मतिशेखर—	गीत	हि० ११३४
	धन्नाचउपई	हि० ४४८
	बावनी	हि० १०६७
मतिसागर—	शालिभद्र चौपई	हि० १०१३, ११३१
मधुसूदन—	चन्द्रोन्मीलन	सं० ११७६
मनरंगलाल —	चौबीस तीर्थंकर पूजा	हि० ८०१
	सप्तर्षि पूजा	हि० ६१८
मनराज—	मनराज शतक	हि० ६६२
मनराम -	अक्षरमाला	हि० ४५
	कक्का	हि० १०६८, ११०४
	पद	हि० ११०६
	रोगापहार स्तोत्र	हि० १०६८
मनसार—	शालिभद्र चौपई	हि० ४८७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
मनसुखराय—	तीर्थ महात्म्य	हि० ७३०
मनसुखलाल—	नवग्रह पूजा	हि० ८३७
मनसुखसागर—	यशोधर चरित्र	हि० ११२१
	बृहद सम्मेदशिखर महात्म्य (पूजा)	६०६, ६२८
मन्नालाल—	चारित्रसार वचनिका	हि० १०६
मन्नालाल खिन्दूका—	पद्मनन्दि पंचविंशति भाषा	हि० १३२, ११८८
	प्रद्युम्न चरित्र	हि० ३५४
मन्नासाह—	सवैया बावनी	हि० ११०८
मनीराम—	रसराज	हि० ६६५
मनोरथ—	मनोरथ माला	हि० १०५४
मनहर—	पद	हि० ११०८
	मानबावनी	हि० ११०८, ११०६
	सवैया	हि० १११४
	साधु गीत	हि० १११२
मनोहरदास सोनी—	ज्ञान चिंतामणि	हि० १०६, ६५०, १०११, १०५६
	धर्म परीक्षा भाषा	हि० ११७, ६५०, १०३०, ११४७
	रविव्रत पूजा एवं कथा	हि० ६०७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	लघु आदित्यवार कथा	हि० १०७३
	शिक्षा	हि० १०८३
मनोहर शर्मा—	श्रुत बोध टीका	सं० ६०१
मलयकीर्ति—	सुगन्ध दशमी व्रत कथा	हि० १०८९
मल्लभट्ट—	शतश्लोक टीका	सं० ३८८
	कुमार संभव सटीक	सं० ३१८
मल्लिनाथ सूरि—	मेघदूत टीका	सं० ३७०
	रघुवंश टीका	सं० ३८०
	शिशुपाल वध टीका	सं० ३९२
मल्लिषेण सूरि—	संग्रहणी भूत्र	प्रा० ८८
	स्याद्वाद मंजरी	सं० २६३
मल्लिषेण—	भैरव पद्मावती कल्प	सं० ६२२
	यक्षिणी कल्प	सं० ६२३
	विद्यानुशासन	सं० ६२३
मल्लिषेण—	नागकुमार चरित्र	सं० ३४३, ४५०
	सज्जनचित्तवल्लभ	सं० ६६४, १०८०, १०८२, ११०४
भ० मल्लिभूषण—	धन्यकुमार चरित्र	सं० ३३६
	व्रत कथाकोश	सं० ४७०
मल्लिसागर—	अकृत्रिम चैत्यालय पूजा	सं० ७७७
मलूक—	शील व्रत कथा	हि० ४८३
महाचन्द्र—	पंचाशत प्रश्न	सं० ५५१
महाचन्द्र—	तत्वार्थसूत्र भाषा	हि० ५१
	त्रिलोकसार पूजा	हि० ८२१
महादेव—	ग्रहसिद्ध श्लोक	सं० ११११
	रत्नमाला	सं० ५६७
	हिकमत प्रकाश	सं० ५९२
महादेवी—	लाभालाभ मन संकल्प	हि० ९८२
महानन्द—	आणन्दा	हि० ९९५
महाराम—	श्रीपाल स्तुति	हि० ११४८
महावीराचार्य—	गणितसार संग्रह	सं० ११७८
महासेनाचार्य—	प्रद्युम्न चरित	सं० ३५२
ब्र० महीतिसागर—	आदित्यव्रत कथा	हि० ११६३
महिमा प्रभसूरि—	अध्यात्मोपयोगिनी	हि० ७१०
भ० महीचन्द—	आदित्यवार कथा	हि० ११६४, ११६९
	चैत्यालय वंदना	हि० ११३३, ११६२
	पंचमेरु पूजा	हि० ११२३
	पुष्पांजलि पूजा	सं० ८९६
	लवांकुश षट्पद	हि० ११६६
महीधर—	मातृका निघंटु	सं० ६२२
महीभट्टी—	तद्धित प्रक्रिया	सं० ५१३
	महीभट्टी काव्य	सं० ३९९
	महीभट्टी आकरण	सं० ५१७
	सारस्वत प्रक्रिया वृत्ति	सं० ५२६
महेन्द्रकीर्ति—	पद	हि० ११५२

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
महेश्वर—	शब्दभेद प्रकाश सं०	५१२
माघकवि—	शिशुपाल वध सं०	३६१
माघनन्दि व्रती—	चतुर्विंशति जयमाल सं०	७२२
	बंदेतान जयमाल सं०	८७५
माणकचन्द—	समाधितंत्र भाषा हि०	३२८
माणकचन्द—	माणकपद संग्रह हि०	६७३
	पद हि०	१०७८
ब्र० माणक—	बावनी हि०	६८६
	मानभद्र स्तवन हि०	७५४
माणिक्यनंदि—	परीक्षामुख सं०	२५७
माणिक्यसुन्दरसूरि—	गुणवर्मा चरित्र सं०	३१६
	धर्मदत्त चरित्र सं०	३३८
माणिक्य सूरि—	कालकाचार्य कथा सं०	४३५
माधव—	माधव निदान सं०	५८०
माधवचन्द्र त्रिविधदेव—	क्षपणासार सं०	१२
माधवदास—	रामरास हि०	६४०
माधोलाल जैसवाल—	सर्वजिनालय पूजा हि०	६२६
महाकवि—	कवित्त हि०	११४२
	सिज्झाय हि०	१११७
	शीलबावनी हि०	१०१५
मांडन—	रेखता हि०	११५७
मानतुङ्गाचार्य—	भक्तामर स्तोत्र सं०	७१८, ७३६, ७४०, ७४१, ७७२, ८७४, ६५३, ६५६, १०११, १०२२, १०३५, १०३८, १०६४, १०६७, १०६६, १०७४, १०७८, १०६५, १०६७, १११६, ११४३
मानतुंग—	आनंद मणिका काल सं०	१११६
सूरि मानदेव—	लघुशांति पाठ सं०	६०१
मानसागर—	कठियार कानडरी चौपई हि०	४३१, ६८१
मायाराम—	समवशरण मंगल हि०	७६४
मानराय—	पद हि०	८७७
मालदेव सूरि—	शांतिनाथ स्तवन सं०	७६२
मिश्र भाव—	गुणरत्नमाला सं०	५७७
मिश्र मोहनदास—	हनुमन्नाटक सं०	६०८
मुकुंददास—	भ्रमरगीत हि०	६२७
मुंजादित्य—	ज्योतिषसार संग्रह सं०	५४८
	बालबोध सं०	५५५
मुनिदेव सूरि—	शान्तिनाथ चरित्र सं०	३६१
मुरलीदास—	बारहमासा हि०	१०६६
मेघराज—	ऋषिदत्ता चौपई हि०	४३१
	सोलहसती हि०	११२६
पं० मेधावी—	धर्मसंग्रह श्रावकाचार सं०	
	पुष्पांजलिव्रत कथा सं०	४६१
मेरुचंद्र—	वासुपूज्य स्तोत्र सं०	११६२
	शांतिनाथ स्तोत्र सं०	११६१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
आ० मेरुतुंग—	प्रबन्ध चिंतामणि	सं० ६५४
	महापुरुष चरित्र	सं० ६५४
	मुक्तिमुक्तावली	सं० ७०१
मेरुनंदन—	अजितशांति स्तवन	हि० १०२६
मेरुसुंदर—	शीलोपदेशमाला	सं० ४९०
मेहउ—	आदिनाथ स्तवन	हि० ७१२
मोतीराम—	चौबीस तीर्थंकर आरती	हि० १०६७
	सम्मेदशिखर महात्म्य	हि० ६२७
मोतीलाल (पन्नालाल)—	बालप्रबोध विंशतिका	हि० १४२
	मरकत विलास	हि० ६७२
मोहन—	चन्दराजानी ढाल	हि० ४३७
मोहनदास—	आत्मशिक्षावणी	हि० १०१५
	मोक्षमार्ग बावनी	हि० १५५
मोहनदास कायस्थ—	स्वरोदय	हि० ५६२
पं० मोहनलाल—	कल्याणमन्दिरस्तोत्र वचनिका	हि० ७१६
मोहन विजय—	मानतुंग मानवती	हि० ११६९
आ० यतिवृषभ—	तिलोयपण्णत्ति	प्रा० ६१०
यशकीर्ति सूरि—	पंचेन्द्रिय संवाद	हि० ११८८
यशकीर्ति—	कांजिका व्रतोद्यापन	सं० ६०७
	गीत	हि० १०२६
	चारुदत्त रोहिणी रास	सं० ६३२
	चौबीस तीर्थंकर भावना	हि० १०२५
	दुःखहरण उद्यापन	सं० ८३३
	पंचपरमेष्ठी गीत	हि० ११५५
	बारहव्रत	हि० १०८८
	मंगलाष्टक	स० ११०१
	योगीवाणी	हि० १०२४
भ० यशकीर्ति—	सुकुमाल चरित्र	हि० ४१४
	सुदर्शन चरित्र भाषा	हि० ४१६
	हनुमच्चरित्र	हि० ४१६
यशकीर्ति—	जीवन्धर चरित्र प्रबन्ध	हि० ३३०
	धर्मशर्माभ्युदय टीका	सं० ३३६
	चन्द्रप्रभ चरित्र	अप० ३२०
	पाण्डवपुराण	अपभ्रंश २८७
	हरिवंशपुराण	अपभ्रंश ३०३
श्री यशसागर मणि—	प्रमाणनय निर्णय	सं० २५८
ब्रह्म यशोधर—	गीत पद	हि० १०२६, १०२७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	नेमिनाथ गीत	हि० १०२४
		१०२५
	बलिभद्र चौपई (रास)	हि० १०२५, १०३५
	मल्लिनाथ गीत	हि० १०२४
	वैराग्यगीत	हि० १०२५
यशोनन्दि—	धर्मचक्र पूजा	सं० ८३४
	पंचपरमेष्ठी पूजा	सं० ८३१, ९०७, १०८५
योगदेव I—	तत्वार्थ वृत्ति	सं० ४३
योगदेव II—	अनुप्रेक्षा	हि० ९७४
योगीन्द्रदेव—	दोहा पाहुड	अप० २०८, १०९५
	परमात्म प्रकाश	अप० २०४, ९५२, ९६०, ९९२, ९८३, ९९४, १००८, १०८९, ११४९
	योगसार	अप० २१५, ९९४, १०२८, १०८०
रइधू—	आत्म संबोध	अप० १८४
	जीवंधर चरित्र	अप० ३३०
	दशलक्षण जयमाल	अप० ८२६
	दशलक्षण धर्म वर्णन	अप० ११४
	दशलक्षण व्रतोद्यापन पूजा	अप० ८३०
	धन्यकुमार चरित्र	अप० १०८९
	पार्श्वपुराण	अप० २९०
	पुण्यासवकहा	अप० ४६०
	रविवार कथा	अप० ४६९
	षोडशकारण जयमाल	अप० १७१
	(सोलहकारण जयमाल,	अप० ९१४, ९३६
	श्रीपाल चरित्र	अप० ३९३
	संबोध पंचासिका	अप० ११५४
रघुनाथ—	हंस पिंगलवर्णन	हि० १०४३
ब्र० रतन—	नेमिनाथ रास	हि० ९८४
रत्नकीर्ति—	कांजीव्रतोद्यापन	सं० ७९३
मुनि रत्नकीर्ति—	नेमिनाथ रास	हि० ९५३
	नेमीश्वर राजुल गीत	हि० ९६३
	पद	हि० १०७८
	सिद्धथूल	हि० १०२७
रत्नचंद्र गणि—	प्रद्युम्न चरित्र	सं० ३५४
रत्नचंद—	चौबीसी	हि० ११६६
पं० रत्नचंद—	पंचमेरु पूजा	सं० ८५९
	पुष्पांजलि पूजा	सं० ८६६
	भक्तामर स्तोत्र वृत्ति	सं० ७४७
	सुभौम चरित्र	सं० ४१८
रत्ननंदि—	नंदीश्वर पूजा	सं० ८४५
	पल्य विधान पूजा	सं० ८६२
	भद्रबाहु चरित्र	सं० ३५८
	रक्षाख्यान	सं० ४७१
रत्नपाल—	नन्दीश्वर कथा	सं० ४७९
रत्नप्रभाचार्य—	प्रमाणनयतत्वा लोकालंकार	सं० २५८
रत्नभूषण—	धर्मोपदेश	सं० १२५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	रविव्रतोद्यापन पूजा	सं० ६००
रत्नभूषण सूरि—	अनिरुद्ध हरण	हि० ४२२
	अष्टकर्म चौपई	हि० ११३३
	जिनदत्त रास	हि० २२७, ६३३, ११४५
	रुक्मिणीहरणरास	हि० ६४०, ११३३
रत्नरंगोपाध्याय—	रुपकमाला बालावबोध	हि० ११६७
रत्नशेखर गणि—	गृहप्रतिक्रमण सूत्र टीका	संस्कृत १०५
रत्नशेखर सूरि—	श्राद्धविधि	सं० ६१२
रत्नशेखर—	लघुक्षेत्र समासवृत्ति	सं० ११६७
	श्रीपाल चरित्र	प्रा० ३६२
रत्नसूरि—	कम्मरण विधि	हि० १०६१
रत्नसिंह मुनि—	ऋषभदेव स्तवन	हि० ७१४
	कृष्णअलिभद्र सज्झाय	हि० ७२०
रत्नाकर—	रस रत्नाकर	सं० ५८४
रविदेव—	नलोदय काव्य टीका	सं० ३४०
रविषेणाचार्य—	पद्मपुराण	सं० २७८
राजकवि—	उपदेश बत्तीसी	हि० १११८
	सुन्दर शृंगार	हि० ६२६, ११६८
राजकुमार—	चमत्कार पूजा	हि० ७६७
राजचंद्र—	सुगन्धदशमी कथा	सं० ५०५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
मुनि राजचंद्र—	चम्पावती सीलकल्याणरास	हि० ४३८
राजपाल—	पद्मब्रह्म	हि० ११०
पांडे राजमल्ल—	लाटी संहिता	सं० १६०
	समयसार भाषा टीका	हि० २२६, ५०७, ११५०
राजरत्न पाठक—	मणिभद्र जी रास छन्द	हि० ७५२
पाठक राजवल्लभ—	चित्रसेन पद्मावती कथा	सं० ४३६
राजशेखर सूरि—	प्रबन्ध चिन्तामणि	सं० ६५४
राजसागर—	विचारषट् त्रिंशिकास्तवन	प्रा० हि० ७५८
राजसिंह—	वास्तुराज	सं० १२००
राजसुन्दर—	गजसिंह चौपई	हि० ४३६
राजसेन—	पार्श्वनाथ स्तोत्र	सं० ७७४, ११२४
राजहंस—	षट्दर्शन समुच्चय	सं० २६२
राधाकृष्ण—	रागरत्नाकर	हि० ११५८
दैवज्ञ राम—	मुहूर्त चिंतामणि	सं० ५५७
	लीलावती टीका	सं० ११६६
राम ऋषि—	नलोदय टीका	सं ३४०
रामकृष्ण—	ऋषभदेव गीत	हि० ११६८
	परमार्थ जखडी	हि० १०५४, ११६८
	सूमसुमनी कथा	हि० १०५४
रामचंद्र—	रामविनोद	हि० ५८५
रामचंद्र सूरि—	विक्रम चरित्र	सं ३८७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
रामचंद ऋषि—	उपदेश बीसी	हि० ६८२
	चेलना सतीरो चौढालियो	रा० ४३९
	विज्जु सेठ विजयासती रास	हि० ६४१
रामचंद्र (कवि बालक)—	सीता चरित्र	हि० ४०६, ४१०, ११०६
मुमुक्षु रामचंद्र—	कथा कोश	सं० ४३२
	पुण्याश्रव कथाकोश	सं० ४५६, ४५७
	व्रतकथाकोश	सं ४७८
	अनन्तनाथ पूजा	हि० ७८०
रामचंद्र—	चौबीस तीर्थंकर पूजा	हि० ८०१, ८०२, ८०३, ८०४, ८०५, १००६, १०२६, १०६५, १००६, ११७७, ११३०
	तीस चौबीसी पाठ	हि० ८१८
	दर्शन स्तोत्र भाषा	हि० १०६६
	पंच कल्याणक पूजा	हि० ८१७
	विनती	हि० ६५५
	सम्मेदशिखर विलास	हि० ६५७
रामचंद्राचार्य—	प्रक्रिया कौमुदी	सं० ५१६
	सिद्धांत चन्द्रिका	सं० ५२८
रामचंद्र सोमराजा—	समरसार	सं० ५६८
रामचरण—	चेतावणी ग्रंथ	हि० १६५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
रामदास—	उपदेश पच्चीसी	हि० ६५८, ६८६, १०५४
	लूहरी	हि० १०६३
	विनती	हि० ८७७, १०६३
रामपाल—	नेमिनाथ लावणी	हि० ११५६
	सम्मेदशिखर पूजा	हि० ६२५
रालवरलभ—	चन्द्रलेहा चौपई	हि० ६५४
रामसेन—	तत्वानुशासन	सं० ४२
रामानंद—	राम कथा	हि० १००३
रायचंद—	विनती	हि० ८७६
	शीतलनाथ स्तवन	हि० ७६२
	समाधितंत्र भाषा	हि० २३८
रूपराममल्ल—	चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न	हि० ६५३, ६७२, १००५, १०२३, १०५६, १०८६
	चितामणि जयमाल	हि० १०५७
	ज्येष्ठ जिनवर व्रत कथा	हि० ६४५, ६६६, ६७२, ६७३, १०३२
	निर्दोष सप्तमी कथा	हि० ४५२, ६४३, ६४४, ६६६, १११८
	नेमि निर्वाण	हि० ६८३
	नेमिश्वर रास	हि० ६४०, ६६६, ६६८, ६८०, ६८३, १०८३, ११०६
	परमहंसकथा चौपई	हि० ११८६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	प्रद्युम्न रासो	हि० ६३८, ६७४, ६५३, ६६६, ६६८, १०६३
	भक्तामर स्तोत्र वृत्ति	सं० ७४८
	भविष्यदत्त चौपई (रास)	हि० ३६३, ४६६, ६४०, ६४२, ६४४, ६६८, ६६८, १०००, १०१५ १०२०, १०३२, १०४२, १०६२
	श्रीपाल रास	हि० ६४२, ६४०, ६४२, ६६६, १०१३, १०१५, १०१६, १०६३
	सुदर्शनरास	हि० ६४०, ६४३, ६५३, ६७६, ६७८, ६६८, १०१२, १०१६, १०२२
	हनुमंत कथा (रास)	हि० ५०७, ६४६, ६४०, ६४५, ६५६, ११०६, ११४३
भा० रायमल्ल—	ज्ञानानंद श्रावकाचार	राज० ११०
रत्नभट्ट—	वैद्य जीवन टीका	सं० ५०८
रूड़ा गुरुजी—	लावणी	हि० १०७५
रूपचन्द —	आदिनाथ मंगल	हि० ११०४
	छोटा मंगल	हि० ११०५
	जकड़ी	हि० १०८४, ११११
	दश लक्षण पूजा	हि० १०३६
	नेमिनाथ स्तवन	हि० ६५५
	पंच मंगल	हि० ८७४, ६७४, १००५, १०४२, १०४८, १०६६, १०७५, १०७८, १०६६, १११४, ११३०, ११५०, ११६७
	पद	हि० ८७६, १०१६, ११०५
	परमार्थ गीत	हि० ६८२
	परमार्थ दोहा-शतक	हि. ६८२, १०३८
	विनती	हि० ८७६
रूपचन्द—	समवसरण पूजा	सं० ६१६,१०१३,११२०
ब्र० रूपजी—	बारा अर महाचोपईबंध	हि० ६२७
रूप विजय—	मानतुंग मानवती चौपई	हि० ११६५
रूपसिंह—	प्रज्ञा प्रकाश	सं० ६८८
रेखराज—	समवशरण पाठ	सं० ७६४
लक्ष्मण—	अकृत्रिम चैत्यालय विनती	हि० ११४३
लक्ष्मणदास- -	पद	हि० १०६२
लक्ष्मणसिंह—	सूत्रधार	स० ५३०
पं० लक्ष्मीचंद	लक्ष्मीविलास	हि० ६७४
	वीरचन्द दूहा	हि० ६८३
लक्ष्मीचन्द—	तिथिसारणी	सं० ११११६
लक्ष्मीवल्लभ—	कालज्ञान भाषा	हि० ५७६
	छंददेसंतरी पारसनाथ	हि० ७२५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
लक्ष्मीसेन—	नवविधान चतुर्दशरत्नपूजा सं०	६०७
लक्ष्यरुचि—	पार्श्वनाथ छन्द हि०	७३४
लब्धिवर्द्धन—	भक्तामर स्तोत्र टीका सं०	७४६
लब्धिविमलगणि—	ज्ञानार्णव भाषा हि०	२००, २०१
ललितकीर्ति—	अक्षयदशमी कथा सं०	४७६
	अनन्तव्रत कथा सं० ४७८,	७८१
	आकाश पंचमी कथा सं०	४७६
	एकावली कथा सं० ४७६	
	कर्मनिर्जरा व्रत कथा सं०	४७६
	कांजिकाव्रत कथा सं०	४७६
	जिनगुणसंपत्ति कथा हि० ४३३, ४८०, ११४४	
	जिनरात्रिव्रत कथा सं०	४७८
	ज्येष्ठ जिनवर कथा सं०	४७६
	दशपरमस्थान व्रत कथा सं०	४८०
	दशलाक्षणिक कथा सं०	४७६, ४८०
	द्वादशव्रत कथा सं० ४७६	
	धनकलश कथा सं० ४७६	
	पुष्पांजलिव्रत कथा सं०	४७६
	रक्षाविधान कथा सं०	४७६
	रत्नत्रय व्रत कथा सं०	४७८, ४७६, ६६५
	रोहिणीव्रत कथा सं०	४७६
	षट्रस कथा सं०	४७६
	षोडस कारण कथा सं०	४७६
	सिद्धचक्रपूजा सं०	६३३
पं० लाखू—	जिनदत्त कहा अप०	३२७
लाल—	पद हि०	१०४८
लालकवि—	विरह के दोहे हि०	११४५
	वृषभदेव लावणी हि०	११७१
	श्रीपाल चरित्र हि०	५०१
लालचन्द—	पंचमंगल हि०	११०६
	नवकार मन्त्र हि०	१११३
	सम्मेदशिखर पूजा हि०	६२६
पाण्डेलालचन्द—	उपदेशसिद्धांत रत्नमाला हि०	६५
	वरांग चरित्र हि०	५८५
	विमलपुराण भाषा हि०	२६६
	षट्कर्मोपदेश रत्नमाला हि०	१६८
	सम्मेदशिखर विलास हि०	६७६
लालचन्द—	मुनिरंग चौपई हि०	३६६
लालचंदसूरि—	लीलावती भाषा हि०	११६८

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
लालजीलाल—	समवशरण पूजा	हि० ११२०
लालजीत—	अकृत्रिम चैत्यालय जिन पूजा	हि० ७७७
	अढ़ाईद्वीप पूजा	हि० ७७६
	तेरहद्वीप पूजा	हि० ८१६
लालदास—	इतिहाससार समुच्चय	हि० १०१४
लावण्यसमय—	अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ स्तवन	हि० ७१५
	इढ प्रहार	हि० ४४८
	नेमिकुमार गीत	हि० ११३८
	नेमिनाथ प्रबन्ध	हि० ११४१
	नेमिराजमती शतक	हि० ११३७
	पार्श्वनाथस्तवन गीत	हि० ११२५, ११३७
	राजुलनेमि अबोला	हि० १०२७
	स्थूलभद्र गीत	हि० १०२६
लिखमीदास—	जसोधर चौपई	हि० ११६७
	श्रेणिक चरित्र	हि० ४०७, ४०८
लोलिम्बराज—	वैद्यजीवन	सं० ५६६
	वैद्यवल्लभ	सं० १०७७
साह लोहट—	अठारह नाते का चौढालिया	हि० ४२१, ६८१, १०६२
	पूजाष्टक	हि० ८७६
	यशोधर चरित्र भाषा	हि० ३७८

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
वट्टकेराचार्य—	मूलाचार	प्रा० १५०
वंगसेन—	वंगसेन सूत्र	सं० ५६०
वरदराज—	लघु सिद्धान्त कौमुदी	सं० ५१६
	सस्कृत मंजरी	सं० ५२०
	सार संग्रह	सं० २६३
वर शर्म्मा—	श्रुत बोध टीका	स. ६०१
व० वर्द्धन—	गुणठाणा गीत	हि० ६५२, १०३२
	राम सीता गीत	हि० ११२०
भ० वर्द्धमान देव—	वरांग चरित्र	सं० ३८३, ८३४
वर्द्धमान कवि—	वर्द्धमान रास	हि० ६४१
वर्द्धमान देव—	श्रुतस्कन्ध पूजा	सं० ६१३
वर्द्धमान सूरि—	गृह शांति विधि	सं० ७६६
	धर्मरत्नभ	स० ८३४
	वाग्भट्टालंकार टीका	सं० ५६७
वराह मिहिर—	बृहज्जातक	सं० ५६४
वल्ह—	चेतन पुद्गल धमाल	हि० ६८३
पं० वल्लह—	बज्जबज्जी	प्रा० ६६४
पं० वल्लाल —	भोज प्रबन्ध	सं० ३६४
वलु—	पार्श्वनाथ स्तुति	हि० ४५
आ० वसुनन्दि—	देवागम स्तोत्र वृत्ति	स० ११८५
	प्रतिष्ठासार संग्रह	सं० ८८६
	मूलाचार वृत्ति	सं० १५१
	वसुनंदि श्रावकाचार	सं० १६०
ब० वस्तुपाल—	रोहिणी व्रत प्रबंध	हि० ४५७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
वाग्भट्ट—	ऋतुचर्या	सं० ५७५
	नेमि निर्वाण	सं० ३४३
	वाग्भट्टालंकार	सं०
वाजिद—	हितोपदेश	हि० ७०८
वादिचन्द्र—	गौतम स्वामी स्तोत्र	हि० ११३३
	ज्ञानसूर्योदय नाटक	सं० ६०४
	द्वादश भावना	हि० ११३३
	नेमिनाथ समवशरण	हि० ११३३
	पार्श्वनाथ पुराण	सं० २६०
	पार्श्वनाथ वीनती	हि० ११६१
	बाहुबलिनो छंद	हि० ११६४
	श्रीपाल सौभागी आख्यान	हि० ४६१
वादिदेव सूरि—	प्रमाणनयतत्त्वालोकालंकार	सं० २५७
वादिभूषण—	पंचकल्याणक	सं० ८४७
वादिराज—	एकीभाव स्तोत्र	सं० ७१३, ७७१, ७७२ ७७२, ६५३, १०२२, १०८२, १०८३
	यशोधर चरित्र	सं० ३७२
	वाग्भट्टालंकार टीका	सं० ५६७
	सुलोचना चरित्र	सं० ४१८
वादीभसिंह सूरि—	क्षत्र चूड़ामणि	सं० ३१८१
वामदेव—	त्रिलोक दीपक	सं० ६११ ६१६
	भावसंग्रह	सं० १४८
ब्रह्मवामन—	दानतपशील भावना	हि० ११३४
वामनाचार्य—	काशिका वृत्ति	सं० ५१२
	वर्षफल	सं० ५६३
वासवसेन—	यशोधर चरित्र	सं० ३७२
कवि विक्रम—	नेमिदूत काव्य	सं० ३४२
ब्र० विक्रम—	पांच परवी कथा	हि० ११३१
विक्रमदेव—	त्रेपन क्रियाव्रतोद्यापन	सं० ११२३
विक्रमसेन—	विक्रमसेन चउपई	हि० ६४५
भ० विजयकीर्ति—	अकलंक निकलंक चौपई	हि० ६४३
	कथा संग्रह	हि० ६३५
	कर्णामृत पुराण	हि. २७४, ६७५, ११७५
	चंदनषष्ठीव्रत पूजा	सं० ७६७
	धर्मपापसंवाद	हि० ११८५
	पद	हि० ११०७
	महादण्डक	हि० १४६, २६३
	यशोधर कथा	सं० ४६७
	शालिभद्र चौपई	हि. ४८८
	श्रेणिक पुराण	हि० ३००, ४०३, ४०४, ४०५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
विजयदास मुनि—	गणधरवाद	हि० १०२९
विजयदेव सूरि—	गुरु स्तोत्र	हि० ७२१
	मूलगुण सज्झाय	हि० ७५४
	शील रास	हि० ९७८, ९८४, १०१५
	सेठ सुदर्शन स्वाध्याय	हि० ५०६
विजयानंद—	क्रियाकलाप	सं० ५१३
विट्ठलदास—	पद	हि० १०६९
विद्याधर—	तार्किकालंकृति	सं० ५४९
आ० विद्यानंदि—	अष्टसहस्री	सं० २४७
	आप्त परीक्षा	सं० २४८
	तत्वार्थश्लोकवार्तिक	सं० ४३, ८०
	पत्र परीक्षा	सं० २५७
	प्रमाण निर्णय	सं० २५८
	प्रमाण परीक्षा	सं० २५८
विद्यानन्दि—	गिरनारी गीत	हि० ९७८
	चन्द्रप्रभ गीत	हि० ९७८
	नेमिजिन जयमाल	हि० ११५५
	नेमिनाथ फागु	हि० ६३६
मुमुक्षु विद्यानंदि—	चतुर्दशी व्रतोद्यापन पूजा	सं० ७९६
	महावीर स्तोत्र	सं० ७७५
	यमक स्तोत्राष्टक	सं० ७५५
	सुदर्शन चरित्र	सं० ४१५
	हरिषेण चक्रवर्ती कथा	सं० ५०७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
विद्या भूषण—	ऋषिमंडल पूजा	सं० ७८७
	कर्मदहन पूजा	सं० ९०७
	गुरु विरुदावली	सं० ११३५
	चिंतामणि पार्श्वनाथ पूजा	सं० ९०७
	चौबीसतीर्थंकर स्तवन	हि० ११३४
	तीन चौबीसी पूजा	हि० ११३९
	तीस चौबीसी व्रतोद्यापन	सं० ९०७
	पल्यविधान पूजा	सं० ८६२
	नेमिनाथ रास	हि० ११३७
	भविष्यदत्त रास	हि० ६३९, ११३७
	वर्द्धमान चरित्र	सं० ३८६
महात्मा	चमत्कार षट्पंचाशिका	सं० ६५९
विद्याविनोद—	क्षेत्रपालाष्टक	हि० ११५५
विद्यासागर—	चिंतामणि पार्श्वनाथ	हि० ११५२
	रविव्रत कथा	हि० ४६९
	सोलह स्वप्न छप्पय	हि० १००३
अ० विनय—	पंचपरमी कथा	हि० ४५५
विनयकीर्ति—	अठाईका रासा	हि० ९६१, ११९९
	दशलक्षण रास	हि० ११२३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	दुधारस कथा	हि० ११२३
	महावीर स्तवन	हि० ७५३
विनयचन्द्र—	कल्याणमन्दिरस्तोत्र वृत्ति	सं० ११४६
	चूनडीरास	हि० ६६०
विनयचन्द्र सूरि—	गजसिंहकुमार चरित्र	सं० ३१६
विनयप्रभ—	गौतमस्वामी रास	हि० १०३६, ११५६
	चन्द्रदूत काव्य	सं० ३२०
विनयमेरु—	भले बावनी	हि० ११६३
विनय समुद्र वाचक गणि—	पद्मचरित्र	हि० ३४४
	सिंहासन बत्तीसी	हि० ५०२
विनयसागर—	विदग्धमुख मंडन टीका	सं० १२०१
विनश्वर नंदि	षट्कारक	सं० ५१६
विनोदीलाल— लालचंद	अभिषेक पूजा	हि० ७८४
	आदिनाथ स्तुति	हि० १०६८, १०७७
	आदित्यवारकथा	हि० १०७६
	कृपण पच्चीसी	हि० ६५८, ६७४
	गीतसागर	हि० ६८१
	चेतनगारी	हि० १०८३, ११२६, ११८७
	चौबीस तीर्थंकर जयमाल	हि० ११०५
	चौरासी जयमाल	हि० ६५१
	नवकार सवैया	हि० ७३१
	नेमिनाथ नवमंगल	हि० ७३२, १०४२, १०४५, १०५५, १०७८, १०८०, ११०४
	नेमिनाथ का बारहमासा	हि० १०४२, १०८३, १११४, ११२८, ११८०
	नेमिराजमती का रेखता	हि० १००३, १०५४, १०७७
	पद	हि० ४३३, १०५३
	भक्तामर स्तोत्र कथा	हि० ४६४, ७४५, ७४६
	मंगल प्रभाती	हि० १०६५
	रक्षाबन्धन कथा	हि० ४७०
	राजुल पच्चीसी	हि० ६५८, ६७४, १०५०, १०५४, १०७१, १०७८, ११०५
	राजुल बारहमासा	हि० १००३, १०७१, १०७७, १०७९
	समवशरण पूजा	हि० ६१६
	सम्यक्त्व कौमुदी	हि० ४६८
	सम्यक्त्वलीलाविलास कथा	हि० ५०१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	सवैया	हि० १०२०
	सुमति कुमति की जखड़ी	हि० १०६५, ११०२
विबुध रत्नाकर—	नागकुमार चरित्र	सं० ३४१
विमलकीर्ति—	आराधना प्रतिबोधसार	हि० ६६१, १०२४
	त्रिकालचौबी व्रत कथा	सं० ४७६
	नंद बत्तीसी	हि० ६४४
विमलप्रभ—	पद	हि० ११०८
विमल श्रीमाल—	उपासकाध्ययन	हि० ६७
विमलसेन—	प्रश्नोत्तर रत्नमाला	सं० ६८८
विलास सुन्दर—	शत्रुंजयमास	हि० ७६१
विवेकनन्दि—	श्रृंगारसार	सं० ६१
विश्वकर्मा—	क्षीरार्णव	सं० ११७७
विश्वनाथ पंचानन भट्टाचार्य—	भाषा परिच्छेद	सं० २६०
विश्वनाथाश्रम—	तर्कदीपिका	सं० २५२
भ० विश्वभूषण—	अनन्तचतुर्दशी व्रतपूजा	हि० ७८०, ६०७
	अष्टाह्निका कथा	हि० ६६१, ११२३
	इन्द्रध्वज पूजा	सं० ७०४
	कर्मदहन उद्यापन	सं० ७८६
	जिनदत्त चरित्र	हि० ३२७
	दशलक्षण पूजा	सं० ८१८
	पार्श्वनाथाष्टक	सं० ८७७
	भक्तामर पूजा	सं० १०६७
	मांगीतुंगी पूजा	सं० ८६३
	रविव्रत कथा	हि० ११२३
	रेवा नदी पूजा	सं० ६००
	सप्तर्षि पूजा	सं० ६१७
विष्णुदत्त—	पंचाख्यान	सं० ४५५
विष्णु भूषण—	सार्द्धद्वयद्वीप पूजा	सं० ६३०
विष्णु शर्मा—	पंचतंत्र	सं० ६८७
	हितोपदेश	सं० ७०८
विष्णुसेन—	समवसरण स्तोत्र	सं० ७६४
विश्वशंभु—	एकाक्षर नाममालिका	सं० ५३५
विश्वसेन—	क्षणवति क्षेत्रपाल पूजा	सं० ७६६
विश्वेश्वर—	अष्टावक्र कथा टीका	सं० ४२५
विश्वेसर (गंगाभट्ट)—	चन्द्रावलोक टीका	सं० ५४४
वीर—	जम्बूस्वामी चरित	अपभ्रंश ३२२
भ० वीर—	रात्रिभोजन वर्णन	हि० ११६४
वीरचन्द—	आदीश्वर विवाहलो	हि० ११३२
	गुणठाणा चौपई	हि० ११३७
	चतुर्गति रास	हि० ६३२
	जम्बूस्वामि वेलि	हि० ११३२
	जिनांतर रास	हि० ११३२
	नेमकुमार	हि० ११४७
	बाहुबलि वेलि	हि० ६३८

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	भ्रमर गीत	हि० ११३२
	लुंकामत निराकरण रास	हि० ११४४
	वीर विलास	हि० ११३२
	संबोधसत्तरणु दूहा	हि० ७०७, ११३३, ११४७
	संबोधसत्तरणु भावना	६५२, ११३८
वीरचन्द्र सूरि—	कृपण कथा	हि० ४३१
वीरदास—	श्रुतस्कन्ध पूजा	सं० ६०७
वीरसिंह देव—	कर्मविपाक	सं० ५७५
वीरदेव गणि—	महीपाल चरित्र	प्रा० ३६७
वीर नन्दि—	आचारसार	सं० ६१
	चन्द्रप्रभु चरित्र	सं० ३२०
	चरित्रसार	प्रा० १०६
मुनि वीरसेन—	प्रायश्चित शास्त्र	सं० १४१
	स्वप्नावली	हि० १०६८
वील्हो—	पद	हि० ११११
वृन्दावन—	कल्याण कल्पद्रुम	हि० ७१६
	चौबीस तीर्थंकर पूजा	हि० ८०६, ८०७, ८०८, ६७६, १०७१, १०७३, १०७४
	जम्बू स्वामी पूजा	हि० १०६४, ११८०
	तीन चौबीसी पूजा	हि० ८१६
	तीस चौबीसी पूजा	हि० ८१८
	दंडक प्रकरण	हि० ११३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	पार्श्वनाथ पूजा	हि० ८६४
	मंगलाष्टक	हि० १०६४
	मरहठी	हि० १०६४
	महावीर पूजा	हि० ८६३
	स्तवन	हि० १०६४
	स्तुति अर्हद्देव	हि० १०६४
वृंद कवि—	वृन्दविनोद चौपई	हि० ११६६
	वृन्दविलास	हि० ६७६
	वृन्दशतक	हि० ६६४
	विनती	हि० १०७८
	शीलमहात्म्य	हि० १०७६
	षूनडी	हि० १०३७
वेगराज—	मुक्ति स्वयंवर	हि० १५०
वेणीचन्द—	रसतरंगिणी	सं० ५८४
वेणीदत्त—	प्रद्युम्न कथा	हि० ११ ७
ब्र० वेणीदास—	सुकौशल रास	हि० ६४७
वेद व्यास—	चरण व्यूह	सं० ११७६
वेणु ब्रह्मचारी—	पंचपरवी पूजा	हि० ८६४
पं० वैजा—	ज्योतिष रत्नमाला टीका	सं० ५४७
वैद्य वाचस्पति —	माधव निदान टीका	सं० ५८१
शंकराचार्य—	आनन्द लहरी	सं० ७१२
	द्वादशनाम	सं० ११८५
	प्रश्नोत्तर रत्नमाला	सं० ६५०
	शंकर स्तोत्र	सं० ११११
कविराज शंखधर—	चन्द्रोदयकरणी टीका	सं० ५७७
शशिधर—	न्याय सिद्धान्त दीपक	सं० २५७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
शाकटायन—	धातुपाठ	सं० ५१४
	शाकटायन व्याकरण	सं० ५१६
शान्तिदास—	अनन्त चतुर्दशी पूजा	सं० ७७६
	अनन्तव्रत विधान	हि० ७८२
	अनन्तनाथ पूजा	हि० ११४३, ११२६, ११७०
	क्षेत्र पूजा	हि० ८७४
	पूजा संग्रह	हि० ८८१
	बाहुबलिबेलि	हि० १११०, ११३८
	भैरव मानभद्र पूजा	हि० ११६६
	शांतिनाथ पूजा	सं० ६११
शांति सूरि—	जीवविचार प्रकरण	प्रा० ४०
शान्तिहर्ष—	सुकुमाल सज्झायसं०	१८१
शार्ङ्गधर—	ज्वर त्रिंशति	सं० ५७७
	शार्ङ्गधर पद्धति	सं० ५६१
	शार्ङ्गधर संहिता	सं० ५६१
पं० शालि—	नेमिनाथ स्तोत्र	सं० ११२५
शालिनाथ—	रसमंजरी	सं० ५८४
शालिवाहन—	हरिवंशपुराण	हि० ३०३
शिखरचन्द—	बीस विदेह क्षेत्र पूजा	हि० ८६१
पं० शिरोमणि—	साठि संवत्सर ग्रहफल	सं० ५६६
पं० शिरोमणिदास—	धर्मसार	हि० १२३
शिवचन्दगणि—	प्रद्युम्न लीला वर्णन	सं० ३५३
	विदग्ध मुखमंडन	सं० २६१
पं० शिवजीदरून— (शिवजीलाल)	चर्चासार	हि० ३०
	षोडशकारण जयमाल वृत्ति	प्रा० सं० ६१५
शिवदास—	वैशाल पंचविंशतिका	सं० ४६३
शिवमुनि—	षट्रस कथा	सं० ४७६
शिववर्मा—	कातंत्र रूपमाला	सं० ५११
	कातंत्र विक्रम सूत्र	सं० ५११
शिवादित्य—	सप्त पदार्थी	सं० २६२
शुभचन्द्र—	शीलपथ	हि० ११०५
आचार्य शुभचन्द्र—	आनार्णव	सं० १६७, १८८ १६६, २००
भ० शुभचन्द्र—	ऋषि मंडल पूजा	सं० ७८७
	अठारहनाता का गीत	हि० ११७३
	अनन्तव्रत पूजा	सं० १००७
	अष्टाह्निकाव्रत कथा	सं० ४२६
	अष्टाह्निका पूजा	सं० ६८५
	अष्टाह्निकापूजा उद्यापन	सं० ७८५
	अढाई द्वीप पूजा	सं० ७७८
	आलोचना गीत	हि० ६५२
	करकण्डु चरित्र	सं० ३१५
	कर्मदहन पूजा	सं० ७६० ६३४, १११८, ११३६, ११६६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	कार्तिकेयानुप्रेक्ष	सं० १९१, १९२
	गणधर वलय पूजा	हि० १०८५
	गुरावली पूजा	सं० ७२५
	चतुर्विंशतिपूजा	सं० ७२८
	चन्दना चरित्र	सं० ३२०
	चन्द्रप्रभ पुराण	सं० २७४
	चिंतामणि पार्श्वनाथ पूजा	सं० ७९८, ११३५
	जीवंधर चरित्र	सं० ३२९ १९७, १९८, १९९, २००
	तीन चौबीसी पूजा	सं० १११८
	तीस (त्रिंशत)चौबीसी पूजा	सं० ८१७, ८२३, ९६४, १०८५
	त्रिकाल चतुर्विंशति पूजा	सं० ८२०
	त्रिलोक पूजा	सं० ८२१
	त्रेपन क्रिया गीत	सं० ९५२
	नंदीश्वर कथा	सं० ४१४
	नंदीश्वरपंक्ति पूजा	सं० ८४३
	पंचगुरुमाला पूजा	सं० ८५१
	पंचपरमेष्ठी पूजा	सं० ८५२
	पंचमेरु पूजा	सं० ८५८
	पद्मनाभ पुराण	सं० २७८
	पद्मविमान रास	हि० १३७
	पल्य विधान	सं० ८६३
	पाण्डव पुराण	सं० २८६
	प्रद्युम्न चरित्र	सं० ३५३
	बा॰ चौंतीस व्रत पूजा	सं० ८९०
	लघुसिद्धचक्र पूजा	सं० ९०२
	वृहद्सिद्ध पूजा	सं० १०६३
	श्रेणिक चरित्र	सं० ४०२, ४०३
	समयसार टीका (अध्यात्म तरंगिणी)	सं० २२२
	समयश्रुत पूजा	सं० ९२२
	सहस्रगुणित पूजा	सं० ९०२, ९९४
	सार्द्धद्वयद्वीप पूजा	सं० ९ ९२०
	सिद्धचक्र कथा	सं० ५०१
	सिद्धचक्र पूजा	सं० ९३३, १२०६
	सुभाषितार्णव	सं० ७०१
	होली कथा	हि० ५०८
मुनि शुभचन्द्र— शोभन मुनि—	चतुर्विंशति स्तुति	सं० ७२३
शोभाचन्द—	अष्टाह्निका व्रतोद्यापन	सं० ७८४
	क्षेत्रपालस्तोत्र	हि० ११६३
	भैरव स्तोत्र	हि० १००५
श्याम कवि— श्यामराम—	तीस चौबीसी	हि० ९८२
	सामयिक पाठ भाषा	हि० २४४, १०३५
श्रीचन्द—	चन्द्रप्रभचरित्र	अपभ्रंश ३२१
श्रीचन्द मुनि—	पद्मचरित टिप्पण	सं० २७८

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
श्रीधर—	भगवत महापुराण भावार्थ दीपिका (प्रथम स्कन्ध से १२ स्कन्ध तक)	सं० २६१, २६२
	भविष्यदत्त चरित्र	अप० २६२, ३६३
	वर्द्धमान चरित्र	अप० ३०१
	सुकुमाल चरित्र	अप० ४११
श्रीधराचार्य—	ब्रह्मज्योति स्वरूप	सं० २१४
	वज्रसूची	सं० १२००
श्रीपतिभट्ट—	ज्योतिष रत्नमाला	सं० ५४७
	निदान भाषा	हि० ५७७
ब्र० श्रीपति—	रत्नपाल प्रबन्ध	हि० ३८२
श्रीपाल—	उपासकाध्ययनश्रावकाचार	हि० ६७
श्रीभूषणयति—	अनन्तचतुर्दशी पूजा	सं० ७७६
	अनन्तनाथ पूजा	सं० ७८०
	गुरु अष्टक	सं० ११३६
	चरित्रशुद्धि पूजा	सं० ७६७
	दानशीलतप भावना	हि० ११६७
	पद संग्रह	हि० ११५५
	बारह सौ चौंतीस व्रत पूजा	सं० ८६०
	भक्तामर पूजा विधान	सं० ११६२
	वसुधोर चरित्र	हि० ६४५
	श्रुत स्कन्ध पूजा	सं० ६१३
	सप्तऋषि पूजा	सं० १००७
श्रीभूषण सूरि—	पाण्डव पुराण	सं० २८५
	हरिवंश पुराण	सं० ३०३
श्रीलाल पाटनी—	चौबीस तीर्थंकर पूजा	हि० ८०६
श्रीवंत—	अठारह नाते की कथा	सं० ४२१
श्रुतमुनि—	भावसंग्रह	प्रा० ७८, १४८, १०५८
श्रुतसागर—	अनन्तव्रत कथा	सं० ४२२
	आराधना कथा कोष	सं० ४३०
	उद्यापन पाठ	सं० १०००
	कथा कोष	सं० ४५२
	चन्दन षष्ठि कथा	सं० ४७६
	जिनसहस्रनाम टीका	सं० ७२६
	ज्ञानार्णव गद्य टीका	सं० २००
	ज्येष्ठ जिनवर कथा	सं० ४७६
	तत्वार्थसूत्र टीका	सं० ५०
	पल्यविधान व्रतोद्यापन कथा	सं० ४५६, ८६४
	पुष्पांजलिव्रत कथा	सं० ४३४
	यशस्तिलकचम्पू टीका	सं० ३७१
	रत्नत्रय विधान कथा	सं० ४३४, ४६८

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	रात्रिभोजन त्याग कथा	सं० ४७२
	व्रतकथा कोश	सं० ४७७
	षट् पाहुड वृत्ति	सं० २१६, २२०
	सिद्धचक्र कथा	सं० ५०१
	होली पर्व कथा	सं० ४७६
श्रुतसागर—	रोहिणी गीत	हि० १११
भ० सकलकीर्ति—	अनन्तव्रतपूजा उद्यापन	सं० ७८३
	अष्टान्हिका पूजा	सं० ७२४
	आदित्यवार कथा	हि० ६५८
	आदिपुराण	सं० २६६, २६७
	आराधना प्रतिबोधसार	हि० ६१, ६२१, १०२६ ११२८, ११६४
	उत्तर पुराण	सं० २७२
	कर्म विपाक	सं० ८
	गणधरवलय पूजा	सं० ७६४, ११६०
	चन्द्रप्रभ चरित्र	सं० २२१
	जम्बूस्वामी चरित्र	सं० ३५२
	जिनमुखावलोकन कथा	सं० ११३६
	तत्वार्थसार दीपक	सं० ४४
	धन्यकुमार चरित्र	सं० ३३३
	धर्मसारसंग्रह	सं० १२४
	पार्श्वनाथ चरित्र	सं० ३४३, ३४७, ३४८, ३४९, ३५०, ३५१, ३५२
	पुराण सार	सं० २६०
	प्रश्नोत्तर श्रावकाचार	सं० १३७, १३८, १३९
	मल्लिनाथ चरित्र	सं० ३६५
	मुकुटसप्तमी कथा	सं० ४७६
	मुक्तावली गीत	हि० ११४१
	मुक्तावलि रास	हि० ६५५
	मूलाचार प्रदीप	सं० १५१
	यशोधर चरित्र	सं० ३७३, ३७४
	रक्षाविधान कथा	सं० ४७०
	रामपुराण	सं० २६५
	वर्द्धमान पुराण	सं० २६७, २६८, ३८६
	व्रतकथाकोश	सं० ४७८
	वृषभ नाथ चरित्र	सं० ३८७
	शांतिनाथ पुराण	सं० ३००, ३२६
	श्रीपालचरित्र	सं० ३६३
	सद्भाषितावली	सं० ६२५
	सारचतुर्विंशतिका	सं० १७५
	सिद्धांतसारदीपक	सं० ८३
	सीखामणि रास	हि० १०२४

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	सुकुमाल चरित्र	सं० ४११, ४१२, ४१३
	सुदर्शन चरित्र	सं० ४१५
	सुभाषित	सं० ६८५, ६६६, ७००
	(सुभाषितार्णव)	६६०, ६६५
	सोलहकारण रास	सं० ६५५, १११६
सकलचन्द्र—	महावीरनी स्तवन	हि० ७५३
सकलभूषण—	उपदेश रत्नमाला	सं० ११७४,
	मल्लिनाथ चरित्र	सं० ३६६
	विमानपंक्ति व्रतोद्यापन	सं० ६०४
	षट्कर्मोपदेशरत्नमाला	सं० १६८
	शीलमहिमा	हि० ६८३
अ० संघजी—	श्रेणिक प्रबन्ध रास	हि० ६४२
संतदास	सम्मेदशिखर पूजा	हि० ६२३
सदानन्द—	सिद्धान्तचन्द्रिका	टीका सं० ५३०
सदासुखजी कासलीवाल—	अकलंकाष्टक भाषा	हि० ७०६
	अर्थ प्रकाशिका	हि० १
	तत्वार्थसूत्र भाषा	हि. ५३, ५४, ११, ८३
	दशलक्षण भावना	हि० ११४
	नित्यपूजा भाषा	हि० ८३६
	भगवती आराधना भाषा	हि० १४६, १४७
	मृत्युमहोत्सव	हि० ११६३
	रत्नकरण्ड श्रावकाचार भाषा	हि० १५७, ६७३
	षोड़शकरण भावना	१७१
	समाधिमरण भाषा	हि० २३८
	सामयिक पाठ टीका	हि० १०६६
सधारु—	प्रद्युम्न चरित	हि० ३५४
समताराम—	जैन श्रावक आम्नाय	हि० १०६
आ० समन्तभद्र—	आप्त मीमांसा	सं० २४८
	चतुर्विंशति स्तोत्र	सं० ६७५
	देवागम स्तोत्र	सं०, ११८४
	रत्नकरण्डश्रावकाचार	सं० १५५, ६५७
	समन्तभद्र स्तुति	सं० ७६३
	स्वयंभू स्तोत्र	सं० ७७५, ७७६, ६६३, ६६४, १०८२, ११२७, ११३६, ११६५,
समय भूषण—	नीतिसार	सं० ६५६
समयसुंदर—	कालकाचार्य कथा	हि० ४३५
	क्षमा छत्तीसी	हि० ६६०, १०६१, १११८
	क्षमा बत्तीसी	हि० ६४२
	चेतन गीत	हि० ६६६, १०२६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	जीव ढाल रास	हि० १०१६
	दान चौपई	हि० ११४३
	दानशीलतप भावना	हि० ६४६, १०३६, १०५६
	दान शील संवाद	हि० ४४७
	नल दमयंती संबोध	हि० ४५०
	पंचमतप वृद्धि	हि० १०५५
	पद्मावती गीत	हि० ७३२
	प्रियमेलक चौपई	राज० ४६२
	बेलिकाम विडम्बना	हि० १२०२
	महावीर स्तवन	हि० ६४१
	मृगावती चरित्र	हि० ३७०
	मेघकुमार गीत	हि० ११०१
	रामसीता प्रबंध	हि० ४७४
	शत्रुंजय रास	हि० ६४२, ६६७
	शत्रुंजय स्तवन	हि० १०६६
	सज्झाय	हि० ७६३
समय सुन्दर उपध्याय—	कल्पलता टीका	सं० १२
	चतुर्मास व्याख्यान	संस्कृत १०५
	दुरितारस्य समीर स्तोत्र वृत्ति	सं० ११८४
समय सुन्दर—	रघुवंश टीका	सं० ३८१
	वृत्तरत्नाकर वृत्ति	सं० ५६६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	श्रावकाराधन	सं० १६७
सरस्वति—	मधुकर कलानिधि	हि० ६२७
पं० सल्हण—	छन्दवृत्त रत्नाकर	सं० ५६४
सहस्रकीर्ति—	त्रैलोक्यसार टीका	सं० ६१५
ब्र० सागर—	अष्टाह्निका व्रत पूजा	सं० ६०७
सागरसेन—	पुराणसार	सं० २६१
पं० साधारण—	तीस चौबीसी पूजा	सं० प्रा० ८१८
साधुकीर्ति—	उपधान विधि स्तवन	हि० १०६१
	जम्बूस्वामी की जखडी	हि० १०२४
कवि सारंग—	विल्हण चौपई	हि० ४८५
कु० सावलसिंह—	इश्क चिमन	हि० ६६५
ब्र० सांवल—	भ० सकलकीर्तिनु रास	हि० ६५६
सांसु—	सुकौसल रास	हि० १०२५
साहगु—	पद	हि० ६८४
साहिबराम पाटनी—	तत्वार्थ सूत्र भाषा	हि० ५३
सिद्ध नागार्जुन—	संवर्जनादि	सं० ६२४
सिंघदास—	नेमिनाथ राजमति बेलि	हि० १०२६
सिंधो—	सुभद्र कथा	हि० १०१४
महाकवि सिंह—	प्रद्युम्न कथा	अप० ११८८
सिंहतिलक सूरि—	भुवन दीपक वृत्ति	सं० ५५७
सिंहनन्दि—	नेमीश्वर राजमति	हि० ६८३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	प्रीतिंकर चरित्र	सं० ३५७
	रात्रिभोजन कथा	सं० ४७१
	रावलियो गीत	हि० १०२७
पाण्डे सिंहराज—	स्तुति पंचाशिका	सं० ७०७
सुखदेव—	आयुर्वेद महोदधि	सं० ५७५
सुखसागर—	अष्टान्हिका रासो	हि० १०७१
सुखानन्द—	पचमेरु पूजा	हि० ८५६, १०७७
	पद	हि० १०७६
सुधामा—	बारहखडी	हि० १०६८
सुन्दर—	लूहरी	हि० ८७७
सुंदरदास—	कवित्त	हि० ६५६, ११६६
	पद	हि० ११०५, १११३
	विवेक चिंतामणि	हि० १०१५
	विवेक चिंतामणी	हि० १०१४
	सवैया	हि० ६७८, १११९
	सुन्दर शृंगार	हि० ६६५, १००२
सुंदरलाल—	सूक्ति मुक्तावली भाषा	हि० ७०७
मुनि सुंदर सूरि—	अध्यात्म कल्पद्रुम	१८०
	बृहत्सपागच्छ गुरावली	सं० ६५५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
सुधासागर—	दशलक्षण व्रतोद्यापन पूजा	सं० ८३०
	पंच कल्याणक पूजा	सं० ८४७
	सार्द्धद्वय द्वीप पूजा	सं० ६३१
सुप्रभाचार्य—	संबोध दोहा	हि० ६७८
भ० सुमतिकीर्ति—	आदिनाथ विनती	हि० ५५३, ६७४
	कर्मप्रकृति टीका	सं० ८
	गोम्मटसार टीका	सं० १६
	चौरासी लाख जोनी विनती	हि० ७२४
	जिनवर स्वामी विनती	हि० ६५२, ११३६
	त्रिलोकसार चौपई	हि० ६१६, ६६१, ११५१, ११४४
	त्रैलोक्य स्वरूप	हि० ६४४
	धर्मपरीक्षाभाषा	हि० १२१
	धर्मपरीक्षा रास	हि० ६३५
	पंचसंग्रह वृत्ति	सं० ७१
	बलिभद्र	हि० ६८४
	लोकामतनिराकरणरास	हि० १६०
सुमति विजय—	रघुवंश काव्य वृत्ति	सं० ३८१
सुमतिसागर—	अष्टान्हिका पूजा	हि० ७८५
	जिनगुणसंपत्ति व्रतोद्यापना	सं० ६०७
	जिनसहस्र नाम पूजा	सं० ८१५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	जिनाभिषेक विधान	हि० ११६६
	णमोकार पैंतीसी	सं० १०८५
	त्रिलोकसार चौपई	हि० ११५६
	त्रिलोकसार	सं० ६१६
	त्रिलोकसारपूजा	सं० ८२२
	दशलक्षण व्रतोद्यापन पूजा	सं० ८२६
	नवकार पैंतीसी व्रतोद्यापन पूजा	सं० ८३५
	पंचकल्याणक पूजा	सं० ८४८
	षोडशकारण व्रतोद्यापन पूजा	सं ६१५, १०८४,
	शालिभद्र चौपई	हि० ४८८ ११२८
	सोलहकारण उद्यापन	सं० ६३५
सुमतिहंस—	रात्रिभोजन चौपई	हि० ४७१
सुमति हेम—	मंडोवर पार्श्वनाथ स्तवन	हि० ६४२
भ० सुरेन्द्र कीर्ति—	अनन्तव्रत समुच्चय	हि० १०३७
	अष्टाह्निका कथा	सं० ४३४
	आदित्यवार कथा	हि० ४२६, ४६६, १०७३
	(रवि व्रत कथा)	१०७४, १०७७, १०७८, १०८६ १०६७
	कलि चौदस कथा	हि० ४२५
	चर्चा	सं० २२
	चौबीस दण्डक	सं० १०७
	जैनबद्री यात्रा वर्णन	हि० १०३५
	दर्शन स्तोत्र	सं० ७३०
	पंच कल्याणक विधान	सं० ८४६
	पंचमास चतुर्दशी व्रतोद्यापन	सं० ८५६
	पुरन्दर व्रतोद्यापन	सं० ८६५
	मुक्तावलीव्रत कथा	हि० ४६७
	लब्धिविधान	सं० ६०२
	सम्मेदशिखर पूजा	सं० ६२२
	सिद्धचक्र कथा	सं० ५०२
	चर्चासार संग्रह	सं० ३१
सुरेन्द्र भूषण—	पंचमी कथा	हि० ४८३
	सार संग्रह	सं० ६७८
सुहकर—	शत्रुंजय मंडल	सं० ७६१
सूरती—	द्वादशानुप्रेक्षा	हि० १०६७
	बारहखडी	हि० १०३०, १०५६, १०५६, १०७५, १०७८, १०७६, १०८०, १०६५
	संवर अनुप्रेक्षा	हि० २४६
सूरदास—	सूरसगाई	हि० १०६६
सूरचंद—	रत्नपाल रास	हि० ६३६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
सूर्यमल—	तीस चौबीसी पूजा	हि० ११८३
सूर्यसेन—	कर्म विपाक	सं० ११११
सेदूराम—	पद	हि० १०५४
सेवक—	पुष्पांजलि कथा	हि० ६६१, ११२३
सेवकराम—	वर्द्धमान पूजा	हि० ६०३
	सम्मेदशिखर पूजा	हि० ६२३
सेवग	चौबीस तीर्थंकर पूजा	हि० ८०८
सेवाराम पाटनी—	मल्लिनाथ पुराण भाषा	हि० २६३, ३६६
	शांतिनाथ पुराण	हि० ३०१, ३६१
सेवाराम साह—	अनन्तव्रतपूजा	हि० ७८२, ८८०
	चौबीस तीर्थंकर पूजा	हि० ८०८, ८०६, १०३१
सोभाचंद—	क्षेत्रपाल गीत	हि० १०६८
सोमकवि—	राजुल पत्रिका	हि० ११६६
भ० सोमकीर्ति—	अष्टाह्निकाव्रत कथा	सं० ४७८
	त्रेपनक्रिया गीत	हि० १०२५
	प्रद्युम्न चरित्र	सं० ३५२, ३५३
	मल्लिगीत	हि० १०२४
	रिषभनाथ धूल	हि० १०२४
	यशोधर चरित्र	सं० ३७३
	यशोधर रास	हि० १०२७
	सप्तव्यसन कथा	सं० ४६१, ४६२, ३६३
पं० सोमचन्द्र—	वृत्तरत्नाकर टीका	सं० ५६६
सोमतिलक—	शीलोपदेशमाला	सं० १६५
सोमदेव—	राष्ट्रर्षि पूजा	सं० ११६६
आ० सोमदेव —	अध्यात्म तरंगिणी	सं० १८०
	नीतिवाक्यामृत	सं० ६८६
	यशस्तिलकचम्पू	सं० ३७०
आ० सोमप्रभ—	शृंगार वैराग्य तरंगिणी	सं० ११०२
	सूक्तिमुक्तावली	सं० ७०१, ७०२, ७०३, ७०४, ७०५, ७०६, ११६१
सोमविमल सूरि —	श्रेणिकरास	हि० ६४३
सोमसूरि—	आराधना सूत्र	प्रा० ६३
भ० सोमसेन—	त्रिवर्णाचार	सं० ११२
	पद्मपुराण	सं० २८०
	भक्तामर स्तोत्र पूजा	सं० ८६१
	रामपुराण	सं० २६५
	व्रतस्वरूप	सं० १११७
	सूतक वर्णन	सं० १७६, ६३५
स्थूलभद्र—	नवरस	हि० ६६७
स्वरूपचन्द बिलाला	गुणावली पूजा	हि० ७६५, ६०८
	चौसठ ऋद्धि पूजा	हि० ८११, ८१२,
	तेरहद्वीप पूजा	हि० ८१६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	सप्तर्षि पूजा	हि० ६१८
	सिद्धक्षेत्रमंडल पूजा	हि० ६३३
स्वरूपदास —	पाण्डव चन्द्रिका	हि० ११८६
सुन्दर दास—	सुन्दरदास	हि० ६२६
हजारीमल्ल—	श्रुतस्कन्धमन्डल विधान	हि० ९१४
हरखूलाल—	सज्जनचित्त वल्लभ भाषा	हि० ६६४
हरजीमल —	चर्चाशतक	हि० २६
हरखसूरि—	जीवउत्पत्ति सज्झाय	हि० ३९
हरसुख—	बावनी	हि० १०७८
हर्ष कल्याण—	पंचमी व्रतोद्यापन	सं० ८५७
हर्षकीर्ति I.	अनेकार्थ नाममाला	सं० ५३१
	कल्याणमन्दिर स्तोत्र टीका	सं० ७१८
	पंचमीव्रतोद्यापन पूजा	सं० ८५८
	धातुपाठ	सं० ५१४
	धातु तरंगिणी	सं० ५१४
	योगचिन्तामणि	सं० ५८१, १०१६
	लघु नाममाला	सं० ५१८
	वैद्यकसार	सं० ५८६
	शारदी नाममाला	सं० ५४०
	श्रुतबोध टीका	सं० ६०१
	सिद्धान्त चन्द्रिका टीका	सं० ५३०
	सुक्ति मुक्तावली टीका	सं० ७०६
	हर्षकीर्ति विधान पूजा	सं० ६०३
हर्षकीर्ति II	कर्म हिंडोलना	हि० १०२३, १०५०
	चतुर्गतिबेलि	हि० ६८४
	जिनगीत	हि० १०१६
	नेमन क्रियारास	हि० १८३२
	धन्ना ऋषि सज्झाय	हि० ११०२
	निनाथ का बारहमासा	हि० ६४६
	पंचमगति बेलि	हि० ८७८, १०१३, १०१८ ११०२, ११०६, १११२, ११५१
	पंच बखावा	हि० ११०४
	पदसंग्रह	हि० १०१४, १०५२ ११०५,
	पार्श्वनाथ छंद	हि० ७३३
	बीसतीर्थंकर जखड़ी	हि० १०७७, १०७६
	बीसतीर्थङ्कर जयमाल	हि० ८६१
	भक्तामर स्तोत्र	हि० ११०४
	मनमोरडा गीत	हि० ११६५
	लेश्यावली	हि० ११५५
	श्रीमंधरजी की जखडी	१०४८

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	सारोद्धार हि०	११९६
हर्षगणि—	पद हि०	६८३
हर्षचन्द्र-	पद हि०	१०७३
	पूजाष्टक हि०	८६७
हस्तिरुचि—	वैद्यवल्लभ सं०	५८६
हरिकृष्ण पाण्डे—	अनन्तव्रत कथा हि०	४३३
	आकाश पंचमी कथा हि०	४३३
	कर्मविपाक कथा हि०	४३३
	ज्येष्ठजिनवर कथा हि०	४३३
	दशलक्षणव्रत कथा हि०	४३३
	निर्दोषसप्तमी कथा हि०	४३३
	निःशल्य अष्टमी कथा हि०	४३३
	पुरन्दर विधान कथा हि०	४३३
	रत्नत्रय कथा हि०	४३३
हरिचन्द—	दशलक्षण कथा अपभ्रंश०	४४४
	कवित्त हि०	१०५४
हरिचन्द संघी—	चौवीस महाराज की विनती हि०	७२५, १०४९
हरिचन्द—	धर्मशर्माभ्युदय सं०	३२९
हरिचन्द सूरि—	मणिपति चरित्र प्रा०	३६५
	षड्दर्शन समुच्चय सं०	२९१
हरिदत्त—	नाममाला सं०	५३८, ५४२, ११७८
(स्वामी) हरिदास—	पद संग्रह हि०	१०६६
हरिनाथ—	वैद्यजीवन टीका सं०	५८८
हरिफूला—	सिंहासन बत्तीसी हि०	५०३
हरिभद्र सूरि—	जम्बूद्वीप संग्रहणि प्रा०	६१०
हरिभद्र गणि—	ज्योतिषशास्त्र सं०	५४७
	ताजिकसार सं०	५४९
हरिभान—	लघु पंचकल्याण पूजा हि०	९०१
हरिभास्कर—	वृत्तरत्ना वृत्ति सं०	६००
हरिरामदास निरंजनी—	छंदरत्नावलि हि०	५९३
हरिषेण—	आराधना कथाकोश सं०	४३०
	कथाकोश सं०	४२२
हरिकिशन—	पंचकल्याणक विधान हि०	८५१
	भद्रबाहु कथा हि०	४६५
हीराचन्द—	पद संग्रह हि०	६६४
हीरालाल—	चन्द्रप्रभचरित्र भाषा हि०	२७६, ३२२
	चौबीसतीर्थङ्कर पूजा हि०	८०२, ८१०
हीरानंद—	एकीभाव स्तोत्र भाषा हि०	१०१३
	पंचास्तिकाय भाषा हि०	७३, ११४९
	मंगलाचरण हि०	१०९५
	समवशरण विधान हि०	९२१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
हेतराम —	पद संग्रह हि०	१०८६, १०५३
कवि हेम—	ईश्वरी छंद हि०	६६६
हेमकीर्ति —	पद हि०	६६७
हेमचन्द्राचार्य—	अभिधानचिन्तामणि नाममाला सं०	५३२
	आत्मामोपनिषद् सं०	१८०
	कुमारपाल प्रबन्ध सं०	३१६
	छंदानुशासन स्वोपज्ञवृत्ति सं०	५६४
	त्रिषष्ठिशलाकापुरुष चरित्र सं०	२७६, ३३२
	नामलिंगानुशासन सं०	५३८
	शब्दानुशासन सं०	१२०३
	सिद्धहेमशब्दानुशासन सं०	५३०
	सटु हेमशब्दानुशासन स्वोपज्ञवृत्ति सं०	५३०
	स्वरावली चरित्र सं०	१२०७
	हेमीनामाला सं०	५४०
ब्र० हेमचंद्र—	श्रुतस्कन्ध प्रा०	६५६, ६६४
भ० हेमचन्द्र—	श्रुतस्कन्ध हि०	१०५७
हेमचंद्र—	अंजन क्रिया हि०	६७५
	नेमिचरित्र सं०	३४२
	नेमिनाथ छंद हि०	७२१, १०७०
	योगसार सं०	२१५
पांडे हेमराज—	अनेकार्थ संग्रह सं०	५१०
	गणितसार हि०	११७८
	गुरुपूजा हि०	१११६
	गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) भाषा हि०	१६
	चौरासीबोल सं०	६४३
	नयचक्रभाषा वचनिका हि०	२५४
	नन्दीश्वरव्रत कथा हि०	४८३
	पंचास्तिकाय भाषा हि०	७२
	परमात्मप्रकाश भाषा हि०	२०६
	प्रवचनसार भाषा वचनिका हि०	२११, २१२, २१३
	भक्तामरस्तोत्र भाषा हि०	७४६, ७४७, ८७७, ६५८, ६८०, १०२०, १०६८, ११०६, ११०७, ११२०, ११२२, ११२६, ११४८, ११४६, १२६१
	रात्रमती चूनरी हि०	१११८
	रोहणीव्रत कथा हि०	८४३, ११८३
	सुगन्धदशमी की कथा	४३३,
	हितोपदेश दोहा हि०	१०१६
हेमलु—	तीर्थङ्कर माता पिता नाम वर्णन हि०	१११०
हेमहंस—	षडावश्यक बालावबोध हि०	१७०
सूरि—	संघायणि प्रा०	६१६

शासकों की नामावलि

अकबर ७३, १२१, ६०, ३०७, २२४, ३३०, ४१७, ४३६, ५४७, ६५८, ६४५
अकबर (जलालुद्दीन) २४८, ३०३
महाराजा अजयमल्ल १६५
अजीतसिंह २२६
अतूपसिंह ६७१
अमरसिंह ३१६
अलाउद्दीन ८७१
अल्लावल खान ७२
(रावल) आसकरण ३२६
(सवाई) ईश्वरसिंह २७२
ईश्वरीसिंह ६२४, १११२
उदयसिंह ३०६
(महाराव) उम्मेदसिंह ८४
उम्मेदसिंह ३२६, १००२
औरंगजेब ३६४, ५८५, ६५६
(राजा) करण ६७१
कर्मसिंह ७३
(महाराजा) कल्याण ५०६
कीर्तिसिंहदेव २०६
किल्हण ४४५
कुमारपाल २१५
क्यामखान ५७३
(राजल) गंगदास १३८
गयासुद्दीन १४८
गुमानसिंह महाराव २१६
गोवर्द्धनदास २८६
चन्द्रभाण ३७३
चन्द्रसेन ४१८
(रावराजा) चांदसिंह ३६६
(महाराजा) जगतसिंह १६०, २८६, ७६४, ८५७, ८५६
राणा जगतसिंह ३८८, ४७८
राजाधिराज जगन्नाथ ३८३, ११८६
जयसिंह ६४, ७२६
(महाराणा) जयसिंह ३१६
(महाराजा) जयसिंह ७, २६५
(महाराजा) सवाई जयसिंह २१६, ३३४, १११९
जरासिंध ४२३
जयाहरसिंह ११६
जसवंतसिंह ५६५
जहांगीर १३१, १६६, ३२३, ४१७, ६४५
जालिमसिंह ८४
जितसिंह ७
जीवणसिंह डिंगावल १०११
राजा जैतसिंह ६१७
(रावराजा) दलेलसिंह २७०
(झाड़ा) दुर्जनसाल ७८, २३७
देवीसिंह १६६
दौलतिराव महाराज ३२३
नूरमोहम्मद १६६
महाराजा प्रतापसिंह ११८
(महाराजा सवाई) प्रतापसिंह ३५, १८८, ३१६, ५०३, ८२५, १०६४, ११०६
राजा प्रतापसिंह १२०, ११३, २८१
पृथ्वीराज १६१, ६५८
पृथ्वीसिंह २६१

सवाई पृथ्वीसिंह ४४, २४५, ५२२
पुंजराज ५२२
पुंज विजय २६
(खान) पेरोज १०
पेरोजसाहि २२५
फतेसिंह ८०४
फर्रुक शाह ३०८
बब्बर (बाबर) ६५८
बलभद्र ५५०
बलवन्तसिंह ५२४, ५४४, ६७०
(सवाई) बलवन्तसिंह ३६७
बहलोल साह १२०३
(राजा) बीठलदास ६
रावराजा बुधसिंह ३०२
महाराजा भावसिंह २८६
राव भावसिंह २७६, ५८५
(रावराजा) भीमसिंह ३४१
भैंरोसिंह १११४
राजा भैरवसेन ६२६
ठाकुर भैरूबक्श ५६२
भोज ५०४
मदनसिंह १६१
महमदशाह ३३४, ११११
महमूद ३२१
महमूदसाहि २२३
महाराजसिंह ६६५
महासिंह १००३
माधवसिंह १३८, १७४, १७३, २८६, ७२३, ८८६
माधवेश ६२७
माधोसिंह ५८५, १०२०
मानसिंह ११६, १८५, ३२३, ३८४ ३६७, २७८, २८६, ६१३ ६३०
मानसिंहदेव १६६
(राजाधिराज) मानस्यंघ ३६३
ठाकुर मानसिंह ३०८
मालदेव ५२६
शाहजादा मुरादखान ३६३
राव मोकल ६१२
मोहम्मदशाह ३०४, ३६५, ६५४, ७०३
रणजीत १८, ३६७
राणावेतजी ६८८
राजसिंह २०६, २६८, ११५१
राणा राजसिंह ३४३
रामचन्द्र ४१८
रामचन्द्र (सोलंकी) ३३३, ७०३
ठाकुर रामबक्श ५६२
रामसिंह १०४६, १२०५
महाराजा रामसिंह ६४, १४५, ३६०
(सवाई) रामसिंह ४६१
(राजा) रामस्यंघ ३६३
रामस्यंघ (हाड़ा) ५०८
रणंदराम १११९
वसुदेव ४२३
विक्रमनृप ४६२
विक्रमराय ५०४
विक्रमादित्य ३७, ६०६
विजयसिंह ८७
विशनसिंह ३११
वीरसिंह देव ५७५
(रावत) वैरसल्ल ३३३
शाहजहां २१८, ६५८, ६६७
शिवदानसिंह ८०, ३८७
(राणा) संग्राम २६०
(महाराणा) संग्रामसिंह २७१, ११४४
सन्मतिसिंह ३७६
सभासिंह २६८
समुद्र विजय ४२२, ६३६
सरदारसिंह १२६, ६०६

सलेमशाह	१३१, १४०, २२५, ३८३	सूर्यमल्ल	१७३, ३७०
राणा सांगा	३८४	हुमायूं	४१७, ६५८
सबुलसिंह	३६४	(महाराजा) हरिकृष्ण	२१६
सार्थसिंह	८०१	हरीसिंह	१११८
सुलतानसिंहजी	५८३	हीरसिंह	५२३
सुमेरसिंह	७१७	हमीरसिंह	११४८

ग्राम एवं नगर नामावलि

अउडक्ष देश
अकबरपुर
अकबराबाद
अक्षयगढ़
अक्षयगढ़
अगलपुर (आगरा)
अगरतल्ला
अचनेरा
अजबगढ़
अजमेर

अजयगढ़

अजयदुर्ग
अजैनगर
अजीर्णगढ़ (अजमेर)
अटेर
अणसर ग्राम
अणहिलपुरपत्तन
अमरापुर (दक्षिण)
अमरावती
अम्बावती

३६३ अरुपगढ़
३१२ अर्गलपुर
७३, २२६, १२०२ अर्गलापुर
४५६ अलवर
१५८, १७२, १८५
२४८
६२१
१८६ अलीगढ़
४०४, ४१० अयवंतीपुर
१, ४१, ६२, ८२, १२२, अवन्ति
१३७, १४६, १०९, १६८, अष्टा नगर
२२५, २८४, २९१, ३१६, अहमदाबाद
३३९, ६६७, ३८९, ४०२,
४२०, ५७७, ५९१, ६३१,
८५८, ८९२, ९२०, ९७५ अहमदाबाद
११८१ आकोदा
११८, १९८, २९३, ३१९, आकोला
४४८, ४५०, ५४४, ५७७ आगरा
११८९
४७८
७१६
७२५
२५६ आरणी
५३२ आशदा
४९५ आनन्दपुर (बूंदी)
८६४, ९२४ आमेट
७, ७९, ९४, २७९, २८१, आमेर
२८६, २९५, ३३५, ३३७,
३४०, ४०२, ४०८, ५२४,
९१३, ६९५, ७५६ आबेर
आल्हणपुर

८६०
१२०, २२४
७०, ७५०
१, १०४, १४०, १८०
१८२, १८७, २८३, ३४८,
३५३, ७७६, ८४१, ८५५,
८९३,
५३, ६७४
७७०
९१५
३३५
१७०, २६५, २७६, ३६५,
६४३, ६४८, ६५६, ६८८,
७०५, ११४६

८६६
११८१
५२७
२८, ७१, ९१, ९५, २०१,
२२६, २३०, ३०२, ३२४,
३३१, ३९५, ३९७, ४०५,
४१७, ४५७, ४९०, ६७४,
६९७, ७५७, ११५०

५८४
२१८, ५७२
४५५, ४८२
८४५
१२०, १६१, १८६, २०४,
५०८, ९३०, १०३५

१११
७६६

आबाँ १८३, १२०, ३९८,४३६
८०४, ८९५, १०२२
इटावा २७५
इटावी ४८३
इन्दरगढ़ १, ६५, ६९, ८६, १०२,
२१८, २१९, २४९,३२३,
३४५, ३७८, ३७९,३८७,
४१६,४४३, ५०५, ५८३,
६००, ८०३,१०३३,१०४६
इन्दौर १४२, १५० ३४८,३५९,
६५१, ७६८,९३४, ११८१
इन्द्रपुरी ११८
इंटडिया ११७५
ईडर (गुजरात) १२९, ३९३, ४५७,
ईलदुर्ग ३७४
ईल ३१०
ईलचपुर ६४८
ईसावा १९०
उज्जैनी (उज्जैन) १७१, ११४६
उग्रवास ३२५
ईसरदा २२५, २२६, ८५३,
उणियारा १०३, १२०, १३५, ३००,
३६८, ३९४, ७१५, ८०३
उदयपुर २, ३३, ३५, ५१, १००,
१२४, १५१, १९४,२०९,
२१९, २५९, २७१, २८७,
३३०, ३४३, ३७०, ३७४,
३८८, ४०१, ४७८, ४९१,
४९२, ६३७, ६५१, ६७१,
६८६,७७३, ८५२, ८८५,
१११४, ११४३, ११४४,
११४५, ११४८, ११५१
उदैगढ (उदयपुर) ७६३
उदैनगर १३७
एटा ६१८
ओवेर २२०
औरंगाबाद ७५४
कठूमर ४४७, ७०९,
कनवाडा ३३४
कनोज ५९२
करवर ६८८, ८९२,
करवाड ७०४
करवार ५५८
करावता १०३५
करौली ७, २९, ६७, १००,
१३८, १६९, २०१, २०२,
२१२, २२७, २६९, २७०,
२७१, २७८, २९७, २९९,
३०६, ३२८, ३२९, ३३०,
३४१, ३४२, ३४८, ३९६,
३६७, ३८५, ४४४, ४६५,
४७४, ४९७, ५००, ६०४,
६०५, ६५०, ६९४, ७०१,
७१९, ८००, ८३०, ८४१,
९०१, ९०८, ९२०, ९७२,
१०६५, ११८१
कर्णपुरी २१५, २३२,
कर्णाटक ५१९
कर्वटाञ्चपुर २८६
कलकत्ता ९२१
कल्पवल्ली नगर ११६६
कललीपुर ९४७
कलुखेड़ी ५६२
कल्याणपुर ४६५
कल्याणपुरी (करौली) ११२, ४१९
काकुस्थपुर २२४
कानपुर २५५
कामवन ६१७
कामदन (कामा) ६६८
कामवन ८०३

कामा २, ५०, १०१, १७६, १७७, १८४, १८६, १६७, २२७, २३०, २३६, २६८, ३२४, ३३७, ३६६, ३६७, ५२४, ६११, ६७०, ७४६, ७७६, १०५१
कामागढ़ २१३
३६१
कामपुर २६६
कामावती नगर २१२
गढ़ कामावती ७२
कारंजा ३००, ४२७, ४३७, ६४८, ११६७
कालपी नगर २२३
कालाडेहरा ५३८, ६६१, ६४७
काशी ७५७, १२०३
कासम बाजार ११२३
कासली १०६२
किशनकोट ८१७
किशनगढ़ ५६, १४०, १६८, २६३, ४६६, ५८३, ५८८, ५८६, ७४७, ८५८, ६७५
किशनपुरा ११११
कुचामण ८६६
कुजड़ ५०८
कुण्ड (गांव) २३५
कुन्दनपुर ८०४
कुम्भावती (कुम्हेर ?) ३०५, ८५४
कुम्हेर १८, ५३, ३४८, ७४६, ८४७, १०६५
कुरुक्षेत्र ५६२
कुरुजांगलदेश ७३, ३६३
कुशलगढ़ १३७, ६३६
कुसमनगर ६३७
कृष्णगढ़ ३५, ४८२, ४५८, ५७७, ५७६, ५८३, ८१६, ६२६
कृष्णापुर १२०२
केकडी ४८६, ६०३, ६६१
केथूरि ७८
केलवा ११८७
केलिग्राम
केसी २६८
कांकिंदनगर ११०
कोटनगर २१४, ४०६, ४४७, ४५१, ४८५, ५०५, ५१२, ५२७, ६४७, ७६४, ८००, ११७८
कोटडा ८८
कोटा १, ७४, ६६, १०२, १३८, १४८, १५५, १७५, २२७, २५१, २५६, ३२६, ३३४, ३६८, ४०२, ४१८, ४६२, ५७६, ६६८, ६८८, ७०६, ८५७, ११४४
कोटी ग्राम ४०६
कोसी २६३
कोशलदेश १०६६
खंक नगर २२५
खडगदेश ६३२
खंवार ३७०
खतौली २५३, ५८७
खाजुंरिकपुर ५६१
खुरई १५०
खुश्यालाडपुर ४०२
खोखरा २२६
खोहरी (डीगके पास) २०१, ४५६
गजपुर ४५६
गढ़वाल २७७

गधार ३२१, ३६२, ३७१
गंधारापुर ६१०
गंगरडू ३०३
गाजीका थाना ६८
गिरधरवा २०
गिरनार १०३, २६६, ३८६, ४२३, ६५५, ६६१, १०२६, १०४३, ११७२, ११६५, ११६६
गिरवी ८८८
गिरिपुर ६, ३५, ११८, २२७, ३६६, ३८८, ३६०, ४११, ५१०, ६१२, ७२१, ८६७
गीरसोपा नगर (कर्णाटक) ५१६
गुहा १०३१
गुजरात ८४८, ११७१
गुजर देश ३३०, ४३७
गुपाजी ३१०
गुर्जर देश ७६२
गुरुवासपुरी ४८३
गेगला ६३४
गैणोली २२०
गोठडा ३४१, ३६८, ४१६, ५६३, ५६५, ५७०, ६६१
गोपाचल १५०, १८५, १६६, २०६, २६६, ४६६, ६७०, ११५४, ११८८
गोगागिरी ४४५
गौडदेश ५५५
गौडीपार्श्वनाथ १०६१
गौणीलीय पत्तन १८४
ग्वालियर १३६ १५०, ६७०
घोघापुर ७४६
घटयाली ३५३
घनेरिया ३६२
घाट १०३५
घाणा ४५६
घिलोई दुर्ग १३६
घोघाशिल ३३६
घोघा १०७०
चन्दनपुर ३१२
चन्देरी ७०, १३६, १५६, १७५, १६६, २४६, २८०, ४५४, ७४२
चन्देशी २७७
चन्द्रपुर ६६०
चन्द्रपुरी, १६३, १६६
चन्द्रापुरी १३३, ४१३, ७४२
चन्द्रावतीपुरी ३६३
चमत्कारजी ७६७
चम्पानगरी ४३६
चम्पापुरी ३१८, ३२७, ५०४
चम्पावती ६५, १२६, १७४, २४७, ३२३, ३३३, ३३४, ३६०, ३८२, ४७४, ५४७, ५८१, ६१४, ६५६, ६६५, ७०१
चाउण्ड ५१४
चाकसू १६, ५०२
चाटसू १, १३४, १५२, २०५, ३६२, ४४२, ४६५, ५७६, ८५७, ६३८
चांदनगांव महावीर २६४
चित्तौड ५६०
चित्रकूट २६०
चिरआसि ६४६
चूरू १३२, ४५८, ११२६ ११२८

वंडपुर ६७१
चोमू ५५२
चोरीवाड ११७१
चोरू ११७४
चौथ का बरवाडा ३५६
चौरासी (मथुरा) १५७, ६५५
छत्रपुर ६२४
छबडा (बूंदी) ६६,४५६
जगदाल्हादनपुर ५१२
जगनिवपुर (योगिनिपुर) ६४६
जम्बूद्वीप ४७२, ४८१
६६६
जयताणा १६०
जयनगर २५२,६२३,७२,३३८६०
जयनगर १४६
जयनगर २८१
जयपुर २,३५,४४,५०.८६,११०,
१५२,१८६,२२७. २५०,
२६३,२६५,२६८, २४६,
२७०
२७२,२७३, २८०,२८४,
३०१,३२०, ३४७,३७१,
३७२,३८१, ३८८,३९२,
४०१,४०६. ४२६,४४३,
४५४,४५७, ४८१,४६१,
५०७
५३४, ५३५, ५५२,५६८,
६६१,६६२, ७५७,८६०,
८८५,६०६,६०६, ६२६,
६६८, १०४२,१०६२,
१०८१, ११०४, ११८५,
११६६
सवाई जयनगर ६२०
सवाई जयपुर ८१,७६१,४०,१४६, १४६
१५१,१५०,१६२, १८३,
२०४,२०६,२४५, २७५,
३२०,३२४,३३१, ३३४,
३६३,३७७,४०२, ५२२,
६०१,६१७,६१८, ६६६,
८६६, ६२६, ११०६,
११६६, १२०६
जयसिंहपुरा (जहांनाबाद) ४८१
जलालपुर ८००
जवाछा ३७३, ३६०
जवालापुर ४८७
जसराणापुर ३३८
जाहण ४६३
जालडा १११६
जालोर ६६२
जहानाबाद ८४,८७,१६८,२४६,४८१
झूंथाझड ६६१
जैसलमेर ५,
२६३,४१८,४२५, १०२६
जैसिंहपुर ३१२
जैसिंहपुरा १६८
जोडीगांव ४८३
जोधपुर ३८८, ५२६
जोधाण ३६४
जोबनेर १६४,२००, २३०,२३५,
२७१,६१७,६४६, ६६०,
६७४, १२०५
झबूवा ६४०
झाडोल ७६१
झाफरी ४१०
झालरापाटन १४१,२५४,३१२,७१०,
८२६
झालावाड १६१
झिरि ११३५
झिलाय २७,३३५,६८५

टोडा ६५,७४,१०३,११२,२३२
३०४,३०८,३११, ३६७,
३७४,३९३,४१५, ४८०,
५५३,६१३,६१६, १२०६
टोडाभीम ६७, १०८६
टोडारायसिंह १, ५१, २६६, ४०५,
८३२
रायसिंह का टोडा ३२१
टौंक ३, ११०, २३४, ३१७,
७२०
ठिगी १९६
डींग १५, २९३, ३९७, ४९८,
५०५, ५६६,६७२, ८०३,
डहुका ग्राम ७
डीडवाना ४१
डूंगरपुर ११, ६१२,११७७, १२००
ढिलावटीपुर ६१७
ढूंढार ५४
ढूंढाहर देश (ढूंढाड) २९५, ३१२, ३९१, ४०८
तक्षकपुर (टोडारायसिंह) २८, ११२, ११९, १९९,
१९७, २२३,२६६, ३०८,
३३३, ४०५,४१२, ४५५,
४९४, ५०९,५९६, ६०७,
६०८, ७४४,८०५, ८४६,
११८९, १२०५
तक्षक महादुर्ग (टोडारायसिंह) ३६२, ७०३,
सरुजजिनगरे २२५
तलपुर ४००
ताजगंज ३२४
तिजारा ७२, १२०५,
तिलुनगरी ९५८
तुंगी ३६६, १०४३
१०४३
तुंगीगिरि ११९२
तुरकपुर ६८३, ८२०
तेजपुर १२०१
तोड़ागढ(टोडागढ) २७२, ४१८,
धनोट दुर्ग २४२
धर्मपुरा ९३१
धर्मपुरी ८५
धूलेव ६३२, ११५८, ११५९
धूलेवगढ़ ७५८
धौलपुर १०३२
थंभणपुर ७२५
थाणा १२५
थालेडा ८८७
दबलाना ४, १८३, ३५१, ३७५,
४९३, ५७२
दिल्ली २, १०१, २७३, ३०४,
३९५, ५७२, ६५४, ६५८,
९४१, १०९७, १११९,
११३०, ११७४, ११९०
दिलिका मंडल ५८६
दीघ (डीग) ३३१
दीपपुर ४४८
दीर्घपुर (डीग) २९५, ३२१, ८१७
दूणी २२, २८, १३१,
१४६, १६०,२८८, ३९८,
४०४, ६०७,६८४, ९२४,
१०११
देवल ग्राम ६४१
देलवाडा ४३५
देलुलिग्राम ४१२
देवगढ़ १२५, ३०१,३७८, ५२३,
५५०, ७१९
देवगिरि (दौसा) १८७, २०५, २४१,
देवगिरि (दक्षिणदेश) ७९८
देवगोंद ८९४
देवग्राम ६०८
देवडा ४६७

देवनाम ६३३
देवपल्ली ८१०, ११३७, ११३९
देवपुरी ३३४, ७१७
देवली ६६०
देवसाह नगर १८
देव्याङ्ग ३६१
देहली (दिल्ली) २१८
दौसा १०, ६० ,११८, १२३, १३१, १३५,१४८, १७१, १८०, २०७,२१६, २३५, २४६, २६८,२६३, ३०६, ३३०, ३४१, ३६१,३६७, ३६५, ४०२, ४६८,५००, ६७१, ६६६, ७७८, ७८३, ८०५, ८६८, १०६५, ११७३
द्वारपुर (मालपुरा) १२३, १३३, ५२५, ८२२
द्वारावती ४२२
द्रोणीपुर (द्रुणी) ४५५
नगर १३६, ७६०, ८०३
नगले ६७४
नधीणापुर ८५८
नन्दग्राम ८४, ७१६,६२४, ११७३, १२०२
नयनापुर ८३६
नरवर १०१५
नारायसा ७४३, ७४७, ७७६,
(गढ़) नलपुर ३०८
नलपुर ११६६
नवग्रामपुर १३०
नवाबगंज ३८५, ११२४
नसीराबाद ४६
नाई (देवलाना के पास) ४६७
नागद्ध नगर ५४८
नगरचालदेश १३१
नागपुर १०, ६४, १३४, २४,१ ३६४, ५२२, ५३२, ६१४ ७०६, ७६४
नागौर ४०४, ६३१. १०३७
नाथद्वारा ५
नारनौल ४५, ६२७
नासरदा ३४, ६१६
निखौली कला ६१८
निवाई ८०६
नीमच ५००
नुगामा ३०६
नूतनपुर ३७५, ८२५
नृपसदन (राजमहल) ५२५
नृपहर्म्य (राजमहल) ५७८
नेवटा ४२५
नैणपुर १३०, २२१
नैणवा २,५७,१०३, १३०,१७८, २१६, २३३,२३७, २८६, ३०८, ३५०, ३६० ३६८, ६००, ८१७,८११, ८१६, ८१६, ८७१,८८४, ८६५, ६१०, ११७४
नैन १७८
नैमसार ५९२
नोलाही (नीवाई) २०५
नौलाई ५६०
नौतनपुर (नूतनपुर) २६०, ३४७
पचनाद ५८२
पचेवर ५१८
पंजाब ६२३
पटमस्थल (केशोरायपाटन) २६३
पट्टण ८६६
पथ १३१
परतापपुर २३५

परानपुर ३६४
पलरूपुर ४१७
पाखण्डदेश १०३०
पाञ्चोला ११५७
पाटसा ७०४
पानीपत २६, २७
पार्थपुर ११७
पालम २, ६०५,
पालव ५८६
पालंब (पालम) २६०
पिंगोरा १०६८
पिरोजपुर ६०६
पुलिंदपुर २१, २७७
पूर्ण नगर ३२४
फेरोजपुर ८०१
पोटलग्राम ३१६
पोसीना ७६२
प्रतापगढ़ २४, ३६८, २७६, ४८२, ६६६, ७८८, ८१८, ८२१, ६२५
प्रतापपुर ३२६, ४२४, ७०२
प्रयाग ४६२
प्रहलादपुर ११४०
फतेहपुर (शेखावाटी) २, ८४, १०१, १५१, १५८, १८७, १६८, २३०, २३५, २८६, २६७, ३०४, ३१६, ३३०, ४६०, ४६५, ४७६, ५७३, ५६७, ६७४ ७५८, ८६६, ६२७, १११५ १११७
फरुक ६७३
फर्रुखाबाद ११६
फलटन १५०
फागी ८३, १५२, १८७, २४६, ३०४, ३१०, ३६८, ६४६, ८५७
फागुई (फागी) ४१८, ५०६
बगरू २३७, ७४८, ६०८
बड़वत नगर (बड़ौत) ३२२
बड़याल १४८
बड़ौत ३६३
बणाहटा (बणेठा) २३७, ५००
बनारस ४२७
बम्बई २३६, २६७
बराड़ ४२७
बयाना १,२६, ५३, ६६, ६६, १४७, १५४, १६४, २३१, २३६, २८३, ३०१, ३३१, ३४२, ३६६, ४०५, ४०८, ४१०, ४५६, ५६६, ५७०, ६६२, ८१८, ८२६, ८५१, ८६१, ८६५
बसक ८१७
बसवा ५, ३८, ६६, २१६, २४०, २५०, ३४१, ३४४, ४६४, ८११, ८२७
बसंतपुर (राजमहल के पास) ७१७
बहादुर ६१३
बहोड़ा नगर ८८
बागड़देश २०४, २०६, २१०, २७४, ४०६, ५७३, ६८८
बागीडोरा ११६०
बाणपुर ४४१
बारडोली ११५३
बालीग्राम ५५५
बाल्मीकपुर २१०
बावीडारे ३६४
बासली ६६८
बांसवाड़ा ११६०
बांसी ८२३

बिलाडा ३६४
बीकानेर ४६०, ५०३, ७५२, ६७१, ११६८
बीजलपुर ६७
बीजापुर ५५७, ७६२
बीलही ८३
बुरहानपुर ४८८
बुहारनपुर १०३०
बूंदी १, ३१, ५३, ८०, ८१, २६६, २७०, २८६, ३०२, ३०६, ३३४, ३६०, ३६६, ३७५, ३७८, ३६४, ४१६, ४५७, ६६३, ७४१, ७८०, ८०७, ८०६, ८१६, ८२७, ८४१, ८७०, ८६०, ६२४, १२०६
बेगमपुर २३१
बोरी ७३१
बोली ५०२
ब्यावर ६०४
भगवतगढ ३६४
भडरूदा नगर १७०
भदावर ८०१
भयरोठा ६६०
भरतपुर १, ४४, ५०, ६७, ८४, ६३, ११२, ११६, ११६, १२१, १४६, १८६, १६३, १६४, १६५, २०१, २१२, २२७, २३६, ३१३, ३२६, ३३५, ३६६, ३६४, ३६७, ४०३, ४२८, ४३०, ५०५, ६१८, ६४६, ६६१, ६६२, ६७०, ६६८, ७०६, ७५६, ७६४, ७६८, ८००, ८२६, ८३०, ६१४, ६१५, ६२५, ६३१, ६८७, १०५१, १०५२, ११६१
भरतक्षेत्र ६६६
भाडल १४३
भारवा १३, ३८, ६८, ११८, १५४, ७३६, ८५३
भादसोडा ७५०
भानपुर ६२, ५६६
भावगढ ८१४
भांडारेज ५८६
भिलडी २२६
भीलवाडा ११६२
भीलोडा ग्राम ६४२, ११८०
भींडर ५१, ४०१
भुसावर १६५
भूड़ा १६६
भेदकीपुर ३६३
भेलपुर ७५७
भेलसा ४६२
भैंसरोड़दुर्ग ५८३
भैंसलाणा २१५
भोजपुर ३५७
मकसूदाबाद ७५
मगधाक्ष देश ३२३
मंडनदुर्ग २१५
मंडलगढ १४५
मंडलदुर्ग १६६
मंडू ६७४
मंडोवर ६४२
मंडा ११६२
मथुरा (चौरासी) १५७, १८२, २११, ८८०, ८६३, ६१६, ११२८
मम्मई (बम्बई) १५५
ममारखपुर १०३०
मरहठदेश ५१२

मलयखेड ३००
मलारगढ़ ४६१
मलारना ४६०
मलारना डूंगर १०६
महाराष्ट्र ६, ८४८
महारौठ ८७, २८६
(भारो०) ४०२
महावीरजी ३१२, ३५४, ६५५
महिम नगर ८६४
महिसाणा ३२८
महीसान (महिसाणा) ४३७
महुआ १४७, १५२, ३६७
मांगलखेर नगर ८८
मांगीतुंगी १०४३
मांडणपुर १०६३
मांडणा ५६८
माणपुर ७१६
माधवपुर २५०, २८६
(सवाई माधोपुर) ६४१
माधोगढ ३७
माधोराजपुरा ३६०
मानगढ ७३६
मारवाड ५७६
मारोठ ७१०, ८१६, ८२८, ८४६
९३७, ११६२
मालपुरा ४, ५१, ५६, ६१, १०३,
१२५, १५३, १८५, २०७
२६६, ३५०, ३८६, २४३,
५१२, ५२७, ५५३, ६१६,
८१२, ८१६, ८५१, ८६३
८७६, ६२०, ११५४
मालव देश ३०१, ३०६, ४००, ८८६,
मालव मंडल १०१
मालव २५२, २७१, २८७
मालवा २३५, ५६०, ६१४
माले गांव ११९२
माहेश्वर ३५५
मिझल ५०६
मिर्जापुर १८७, २९६, ३११
७४०
मीणाणा १०३४
मुक्तागिरि ६२४
मुमोई (बंबई) ३३०
मुरमग्राम ३३०
मुलताण ११६७
मुहम्मदपुरा ६७४
मेडता ४६३
मेदनापुर ३१४
मेवाड ५५०, ७०४
मेवात देश ३१६, ३६०, ५६१
मेदुपुर ६७१
मेदनीपुर ९५६
मेरपाट ३४३
मेलखेडा ५६१
मेवाड ११०, ६३४, ८६३,
११४४
मेवाडा ३६६
मैनपुरी २८५
मोडी ६२२
मोजवा ११६
मोजिमपुर ४३
मोजी मिया का गुहा ५८५
मोरटका १६०
मोहा ३४८
मौजपुर ८४, ६८८
मौजमाबाद ११६, १७४, २८८,
४७०, ५०७,
६९६, ७०५
मौजाद ११०६

योगिनीपुर (दिल्ली) ७३, ७५, ८२, २२५, ३६३, ११७४
योधपुर ८८
रणकपुर १०१७
रणछोड़पुरी ३८०
रणथम्भौर १२०, २६४, ६२६, १०२३, १०८६
रणथंबर (रणथंभौर) १०२४
रणपुर १०८६
रणथर नगर ३०६
राजपुर ७१२
राघवपुर ७६५
राजगढ़ १५१, ८२५
राजनगर २०३, ४६६
राजपाटिका नगर ५, ७२
राजपुर ६४३
राजमहल १०, २८, १०२, १३६, १६६, २०७, २८०, ३०४, ३५०, ३६७, ४०५, ४११, ४४२, ४६५, ५०८, ८०६, ६१९
राजस्थान १, ४०८
रामगढ़ २७०, ३३५, ४२८
रामपुर ७२, ८८, १०७, १५५, २७६, ४५२
रामपुरा (कोटा) १८७, १६६, २०४, २१६, २४७, ३४३, ३५३, ३५६, ३६८, ३७४, ४६५, ५५६
रायदेश २१, १२६
गढ़ रायसेन ३७४
रिखबदेव ११५८
रिणी नगर ४३४
रिणीपुर ११५६
रितिवासानगर १७३
रुक्मनाथगढ़ १११
रूदावलकीगढ़ी १८६, ३८५
रूहलगपुर ७५०
रूस्तमगढ़ ६१८
रेवाड़ी ६२६, ६२७
रोहतक ७७६
रोहितगढ़ नगर (रोहतक) २२४
रोहितगढ़ (रोहतक) ३३०
रोहितास नगर (रोहतक) २२३
लंकानगरी ४७२
लघुदेवगिरी ३६
लक्ष्मविजयपुर १२०३
ललितपुर ४५१
लवाण २२४, ६०६, १११
लश्कर २, ३५, १५०, ३६५, ४२६, ४५७, ४६१, ५५२, ७१४, ६०६, ६२६, १११८
लाडलेडा (आगरा) २२१
लालेरी १०३, ४१२, ४६१, ५२१, ७४३
लाडपुरा (कोटा) ६८८
व्रजभूमि ३११
शाकंभरी (सांभर) २६०, ७०६
शाकमाशपुर ७८१
शमशाबाद ४०५
शागमपुर ८०७
शाहजहांनाबाद ३०४
शाहपुरा ३६७
शिवपुरी ५८१
शेखावाटी १२४
शेरगढ़ ३६, ४६०, ४६३, ५६७, ५८६, ६८४

शेरपुर ३८३, ७०३, १०२३
शेषपुर ६३१
शौरीपुर बटेश्वर ७२५
श्रीपत्तननगर १०
श्रीपत्तनपुर ७९
श्रीपथा १८४
श्रीपुरा ७५५
सईवारी ११५
सकूराबाद ६२०
संकाश्यद्वंग (मध्यदेशस्थल) ७२३
सगरवाडापुर ७५२
संग्रामपुर १८५, २६५, ७५२, ८२४
सरोले ६०४
सदारा नगर ६१८
सम्मेदशिखर ८२१, १०७६
सम्मेदाचल १०४३, ११७२
सरवाड ३७०
सरूंज नगर २६७
सरोज ४०३
सरोजनगर ६३५
सरोजपुर ७६, ६२७
सरोला २६७
सलूंबर ६३१, ८१२, ८४७
सवाई माधोपुर ८५, ९८, १००, ११०, १२० १२३, १३५, १४८, १७८ १८०, १८८, २३७. २६२,२८२, ५११, ५३४, ६४१, ७९४,८२९, ८५७,८५९, ६३०,११७३
सहारनपुर ६९४
साकेत। १०६९
साछूण ३४६, ३८५
सागलंवपुर ६५१
सागपत्तन ३६, ६५, ३०२, ३२१, ५६८
सागपुर ६००
सागलपुर ८३५
सागवाड़ा ३६, ४४, १०८, २३५, ३०९, ३९०, ४८७,५२५, ५३६, ५४५. ६४१,६८८, ६९२, ७९०, ८१३,८६२, ९८६, ११५५
सांगानगर २९३,
सांगानेर १०३, ११६, ११९,२१८, २५०, २५१,३११, ३८४, ४०९, ४६३,५३५, ७५२, १०४९, १०९८
सांगावती २६५, ४०८
सांभर (शाकंभरी) ८३, ६६१, ९४५
साजपुर ३२५
सामगिरपुर ६४२
सायपुर ७९५
सारभंगपुर ८९३
सारंगपुर २५२, २६५
सालो १०३१
सालोडा ६१२
सावला ४१४
सासनी ४६०
सासवाली ३८७
साहपुरा ५८७, ८८५, ९१४,९१४, ९२३, १००२
साहोसेडा ५५०
सिकंदरपुर ७१५
सिकन्दरा ३०१, १४६,२०१, ३०१, ६७४, ६९८, ७९०
सिकंदरा (आगरा) ८२०, १११९, ११२०
सिद्धवरकूट ९००
सिरपुर ७९८
सिरोज १९८, २१७, २८०,३६२, ६१४, ७५६

सिरोजपुर १९९
सिंहपुरा ३७१
सीकर ८२१
सीगोली ४८४
सीलोर ४४६
सीसवाली ३०८, ५६७, ८२६
सुजानगढ ११९३
सुजालपुर ३०९
सुदारा ५४५
सुनेल १९५
सुरोज नगर ८४५
सुलतान (पुर) १०३७
सुवर्णपथ (सोनीपत) १२२, ३९३
सुसनेर २७१, ८८६, ११५५
सुस्थान नगर २५२
सूईनगर ५५५
सूरत (बंदर) ९९, १९०, ३५५, ८१४
सूरतगढ ५०४
सूर्यपुर ४०७,५०५
सेगला ४२३
सोजत्या ३९९
सोजूर ८०१
सोरठदेश ११६३
सोरीपुर ४८५,९३६,६५५
सोलापुर ५१
स्कंधनगर ११३६
स्वामी ६५०
(गढ) हरसोर ६३८
(श्री) हरिदेश २९८
हरिद्रुमं (किशनगढ) ५७३,५९०, ५९१, ९०५
हरियाणा १३१
हसनपुर ३३३
हस्तिकांतपुर ४८४
हस्तिकांतिपुर ६१
हसपत्तन २७१
हाजीपुर १३९
हाडौतीदेश ५०८,५८९,६८८
हाथरस ९१
हांसोट ३२७,४२४,६३३
हिण्डोन ८९,९६,२९९,३३१,३८६,
४०८,७०९
हीरापुर (हिण्डोन) ९५,३३१,५००,६५०
हीरापुरी (हिण्डोन) २०१,३३१,३४२,१०८
हिम्मतपुर ६७४
हिसार १०६,१८५,९२६,९३१
हिसार (हिसार) ५०३
हिसार फेरोजपत्तन १२०३
हींडोली ३३५,६८३,७१९

शुद्धाशुद्धि विवरण

पत्र संख्या	पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
२	२४	देवेन्द्र चन्द्र मणि	देवेन्द्र कीर्ति गणि
३३	४	जयार्थं	जयार्थी
३६	१६	सभाज्य	सज्झाय
४२	७	अपभ्रंश	प्राकृत
७०	१६	निपलावति	नियलावलि
७७	६	बियालीस दाणी	बियालीस दाणी
७८	२	सिद्धान्त	धर्म
८०	१३	तदान्माये	तदाम्नाये
१०५	१६	चतुंदशी	चतुर्दशी
११५	१	दानशील तप भावना	दानशील तप भावना
१२२	१६	दीवन जी	दीनानजी
१२५	२	प्रतिउ णियारा	प्रति उणियारा
१३८	९,११,१३,१५,१७,१९	प्रति सं० २,३,४,५, ६,७	प्रति सं० २(क) ३(क) ४(क) ५(क) ६(क) ७(क)
१४१	२८	वीरसेनामिधै :	वीरसेनाभिधैः
१४२	५	चन्द्रप्रभा चैत्यालये	चन्द्रप्रभ चैत्यालये
१४३	८	बुद्धि बि.....	बुद्धि विलास
१४६	१	तलपि	में प्रतिलिपि
१४८	२५	भाषा संस्कृत	भाषा-प्राकृत
१५१	२०	१-४७	१५४७
१५३	१	महा-पं०	—महा पं०
१६०	२०	लोकांमत	लोंकामत
१७३	४	सागर धर्मामृत	सागारधर्मामृत
१७६	४	मंगसिर सुदी १४	मंगसिर सुदी ५
२१४	२१	ब्रह्म ज्योति स्वरुप	ब्रह्म ज्योति स्वरूप
२०३	१२	द्वदशानुमोक्षा	द्वादशानुप्रेक्षा
२१९	२४	रचलिका	वचनिका
२२२	३०	सम्प्रक	सम्यक्
२२२	३५	जपतु	जयतु

पत्र संख्या	पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
२२६	१७	प्रकरण-प्रतिरोध	प्रकरण प्रतिबोध
२२६	२०	समसार	समयसार
२३८	५	नाथूलाल	नाथूराम
२३८	८	समाधि तंत्र	समाधि तंत्र
२४६	१५	संवराश्नुभप्रेक्षा	संवरानुप्रेक्षा
२४८	२	अवसहस्री	अष्टसहस्री
२६१	२२	समुच्च	समुच्चय
२६१	२५	हरिचन्द्र	हरिभद्र
२६७	३	भवि	कवि
२६८	३, ८, १०	६, ७,८	७, ८, ९
३१३	१४	बढा	बडा
३१५	१३	श्वेताम्बरनाय	श्वेताम्बराम्नाय
३१५	२	पुरतकं	पुस्तक
३३०	५	भावा	भाषा
३३०	६	जानन्धर	जीवंधर
३३८	२५	धन्कुमार	धन्यकुमार
३४०	८	संकृत	संस्कृत
३४८	५	तेरहपथी	तेरहपंथी
३५८	३५	संकृत	संस्कृत
३६०	१८	दि० जैन मन्दिर बघेर वालों का	दि० जैन मन्दिर बघेर वालों का आवां
३६४	२८	कविपरा	कवियरा
३७१	१०	सवाई मानसिंह	सवाई रामसिंह
३७६	१३	यशोधर	यशोधर चरित्र-परिहानन्द
३७३	२८	जनसेन	जयसेन
३८७	१३	र० काल X	र० काल सं० १५८८ से काल X
४०१	१२	र० काल X	र० काल सं० १८३७
४०७	३४	प्रति सं० ७	प्रति सं० १
४१६	११	यशःकीर्ति	भ० यशःकीर्ति
४१७	३१	सुसाहु चरित्र	सुआहु चरित्र
	१	तजी	तणी
	२०	आदितवार कथा	आदित्यवार कथा
	२२	कालाका चार्य कथा	कालकाचार्य कथा

पत्र संख्या	पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
४३७	४	म० नरेन्द्र कीर्ति	आ० नरेन्द्र कीर्ति
४४३	१७	भाषा-कथा	भाषा–हिन्दी/विषय – कथा
४४८	३	उदयसुर	उदयपुर
४६१	२३	मँडक	मँढक
४६४	४	नथमल	—× ।
४६८	२६	रत्नावती कथा	रत्नावली कथा
४७२	२३	श्रतसागर	श्रुतसागर
४७४	२३	चुन्नीराम वेद	चुन्नीलाल वैनाडा
४७६	२१	यक्षदेव	यक्षदेव
४८०	४	कजिका व्रत कथा	कांजिका व्रत कथा
४८२	१५	भीवसी	धनराज
४९१	१६	श्रणिक	श्रेणिक
४९२	२४	वादीभ कुमस्थ	वादीभ कुंभस्थ
४९२	२८	प्रति पूदय	प्रतिष्ठोदय
४९४	२७	स्वल्य	स्वरूप
५०८	७	ग्रंथ उतें द्धृत	ग्रंथ तैं उद्धृत
५११	२६	कातन्त्रत रूप माला	कातन्त्र रूप माला
५२८	७	कृपन्द	कृदन्त
५६८	७	षष्ठि संवतत्सरी	षष्ठि संवत्सरी
५९७	१९	कवि चन्द्रका	कविचन्द्रिका
६०७	५	जिन पूजा पुरदर	जिन पूजा पुरंदर
६३३	७	५१५४	६१५१
६४०	१४	रामराम	रामरास
६४०	१४	रामसीतारास	रामसीतारास
६४५	१८	अरोपम	अनोपम
६४५	१२	१६०४	१६७×
६४६	३४	सुखधाम	सुखधाय
६५२	४	विहाडी	विहाडी
६५५	२५–२६	तथागच्छ	तपागच्छ
६५६	३१	ब्र० सागाल	ब्र० सांवल
६७१	६	ज्ञान	ज्ञात
६७५	१०	वशेष	विशेष
६७६	२६	संग्रह ग्रन्थ	समग्र ग्रन्थ
६८२	२०	किशनदास	वाचककिशन

पत्र संख्या	पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
७११	१	साधमिका	साधनिका
७१६	१	४८५०	६८५०
७२४	६	सफलकीरती	सकलकीरती
७२१	२१	प्राकृत	संस्कृत
७३०	२२	थमण पार्श्वनाथ	थंभण पार्श्वनाथ
७३४	२४	संस्कृत	हिन्दी
७७१	१४	स्तोत्रय	स्तोत्रत्रय
७६७	३	चतुर्विसंति जिन पूजा	चतुर्विंशति जिन पूजा
८११	११	सुद्ध आगम	सुद्धाम्नाय
८१२	२५	पं०	
८१४	२०	नग्न	रत्न
८१७	२३	चतुर्ति शतिका	चतुर्विंशतिका
८२४	४	दशलक्षण द्यापन	दशलक्षणोद्यापन
८२७	४	वसुआ में चन्द्रपभ	वसुआ में चन्द्रप्रभ
८३६	३१	शातिक	शांतिक
८४१	२०	निवार्ण कांड	निर्वाण कांड
८५७	१०	पंचमी व्रतो पूजा	पंचमी व्रत पूजा
८५६	२६	प्रति सं० ७	प्रति सं० २
८७६	१०	उमार स्वामी	उमा स्वामी
८७६	१२	संस्कृत	हिन्दी
८८०	८	विद्या विद्यानु वादा	विद्यानुवादो
८८३	३०	णमो पैंतीसो	णमो कार पैंतीसी
६०३	२८	भाषा-विधान	भाषा-संस्कृत
६४६	३४	प्रणाम्	प्रणम्
६८८	१६	सुधरि	वसुधरि
६५२	१७	—	प्राकृत
६५६	६	,,	हिन्दी
६५६	१८	—	संस्कृत
६५८	१६	भ० सकलकीर्ति	मुनि सकलकीर्ति
६७०	१८	निर्याणि	निवाणि
६६१	१३	पद्मनंदि सूरि	पद्म प्रभसूरि
६६२	५	मन्तिम	अन्तिम
१००२	३०	बिहारीदास	बिहारीलाल

पत्र संख्या	पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१००३	३४-३५	महाराष्ट्र भाषा	द्वादश मासा
		द्वादश मासा	महाराष्ट्र भाषा
१००५	३२	चेतक कर्म चरित्र	चेतन कर्म चरित्र
१०११	१२	उपदेशतक	उपदेश शतक
१०१३	६	धनपतराय	ज्ञानतराय
१०२६	४	षट्लेश्या	षट्लेश्या
१०४१	१६	पाण्डे जिनराम	पाण्डे जिनदास
१०४३	३	गंगाराम	गंगादास
१०४५	२८	काहला	व्याहुला
१०४८	२६	सभाःशृंगार	सभाशृंगार
१०६९	२४	देह	देश
१०७४	१७	सूधरदास	भूधरदास
१०८४	३१	ब्र० जयसागर	उपा० जय सागर
१०८९	१	चेतन पुद्गल धमाल	चेतन पुद्गल धमाल
१०९६	१४	रमण सार भाषा	रयण सार भाषा
१०९८	६	स्वना=वली	स्वप्नावली
१०९८	१५	मनरामा	मनराम
११०१	१	पंचापध्यायी	पंचाध्यायी
११०३	१६	बनासरीदास	बनारसीदास
१११०	२४	अक्षिस	अक्षिरु
११२२	१	बुधटोडर	बुधटोडर
११२३	१४	भधरदास	भूधरदास
११२८	१८	पांडेजी पंत	पाण्डे जीवन
११३१	२	बख्तावर सिंह	बख्तावर लाल
११३७	२७	लवण्य समय	लावण्य समय
११३८	६	गुणतीसी सीवना	गुणतीसी भावना
११३९	२०	सोलह कारण पार्खंडी	सोलह कारण पाखंडी
११४४	५	होली भास	होलीरास
११४४	३०	मिथ्या दुकड	मिथ्या दुक्ख
११४७	२६	संबोध सनाशु	संबोध सत्ताशु
११५७	११	मोडका	मोडन
११५८	६	मथाराम	मथाराम
११६२	२७	रूप्प	रूप्पय
११७१	५	अथर्वण वेद	अथर्व वेद

पत्र संख्या	पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
११७३	६	वैद्धिक	वैदिक
११७५	—	गुटका संग्रह	अवशिष्ट साहित्य
११७६	२०	गर्भचक्रवृत्त	गर्भचक्रवृत्त
११७६	२४	जिनशतका रव्यालं कते	जिनशतकारव्यलंकृति
११७६	२५	हलायुध	हलायुध
११७६	११	चन्द्रोमीलन	चन्द्रोन्मीलन
११८०	१६	पज्जुण्ण कहा	पज्जुण्णकहा
११८५	२६	परदेशी मतिबोध	परदेशी प्रतिबोध
११९२	२४	रयणसारक वनिका	रयणसार वचनिका
११९५	२६	भर्तृहरि	भर्तृहरि शतक
११९६	११	सोभकवि	सोमकवि